सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भंडार

सोलवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती–सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
१२ मग्घर २०२० बिक्रमी	करतारा सिँघ दे घर	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	०१
१२ मग्घर २०२० बिक्रमी	हजारा सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	०६
१२ मग्घर २०२० बिक्रमी	उसमान शहीद सड़क	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	०८
१२ मग्घर २०२० बिक्रमी	अरजन सिँघ दे गृह	सलीम पुर	हुशिआरपुर	१०
१३ मग्घर २०२० बिक्रमी	जोगिंदर सिँघ दे गृह	फ़तिह गड़्ह	हुशिआरपुर	१५
१३ मग्घर २०२० बिक्रमी	भगवान सिँघ दे गृह	उरमुड़	हुशिआरपुर	२०
१४ मग्घर २०२० बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	रूपोवाल	हुशिआरपुर	२८
१४ मग्घर २०२० बिक्रमी	अमरीक सिँघ दे गृह	सराई	हुशिआरपुर	३४
१५ मग्घर २०२० बिक्रमी	प्यारा सिँघ दे नवित	भोगपुर मिल	हुशिआरपुर	४२
१६ मग्घर २०२० बिक्रमी	प्यारा सिँघ द गृह	किशन पुरा महल्ला	जलंधर	४५
१६ मग्घर २०२० बिक्रमी	हरदिआल सिँघ दे गृह	किशन पुरा महल्ला	जलंधर	५२
१७ मग्घर २०२० बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	करतार पुर	जलंधर	६१
१ पोह २०२० बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६२
२ पोह २०२० बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	७१
३ पोह २०२० बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	७७
३ पोह २०२० बिक्रमी	नरैण सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	७८
३ पोह २०२० बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	८०
३ पोह २०२० बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	८१
३ पोह २०२० बिक्रमी	दर्शन सिँघ दे गृह	दरगा पुर		८२
३ पोह २०२० बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर	छाउणी	८५

1

४ पोह २०20 बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह	फिरोजपुर		९६
४ पोह २०20 बिक्रमी राम सिँघ दे गृह	फिरोजपुर	छाउणी	१००
५ पोह २०20 बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह	बसती ख़लील	फिरोज़पुर	११२
५ पोह २०20 बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह	मोगा	फिरोज़पुर	११४
५ पोह २०20 बिक्रमी लच्छमण सिँघ दे खूह ते	रुड़का कलां	जलंधर	११६
६ पोह २०20 बिक्रमी लच्छमण सिँघ दे खूह ते	रुड़का कलां	जलंधर	१२६
७ पोह २०20 बिक्रमी गरदवार सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१४२
७ पोह २०20 बिक्रमी संसार सिँघ दे गृह	डविडा रिहाणा	हुशिआरपुर	१४३
८ पोह २०20 बिक्रमी नसीब कौर दे गृह	डविडा रिहाणा	हुशिआरपुर	१५३
८ पोह २०20 बिक्रमी	मंडी अहिमद गड़		१५६
२५ पोह २०20 बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१६७
२६ पोह २०20 बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१७४
२७ पोह २०20 बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२०१
२७ पोह २०20 बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२१३
१ माघ २०20 बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२२३
३ माघ २०20 बिक्रमी गिरधारी लाल दे गृह	भोले के	गुरदास पुर	२२६
३ माघ २०20 बिक्रमी जसबीर सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदास पुर	२३२
३ माघ २०20 बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदास पुर	२३४
४ माघ २०20 बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदास पुर	२४२
४ माघ २०20 बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह	वहीला	गुरदास पुर	२४५
४ माघ २०20 बिक्रमी बीबी गुरो दे गृह	चुमिआरी	गुरदास पुर	२५४
४ माघ २०20 बिक्रमी प्रीतम कौर दे गृह	जटां	गुरदास पुर	२५५

2 १६

2 १६

५ माघ २०२० बिक्रमी समाधां पर संतां नाल बचन होए रमदास २६०
५ माघ २०२० बिक्रमी बीबी जीतो दे गृह सरजा चौक गुरदास पुर २६५
५ माघ २०२० बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह छोहण गुरदास पुर २६९
६ माघ २०२० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह सोन गुरदास पुर २७६
६ माघ २०२० बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह जीउ जुलाई गुरदास पुर २८१
६ माघ २०२० बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह दोसत पुरा गुरदास पुर २८३
७ माघ २०२० बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह गड्डीआं गुरदास पुर २८८
७ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर २९२
८ माघ २०२० बिक्रमी अच्छर सिँघ दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर २९८
८ माघ २०२० बिक्रमी बीबी लाजी दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३००
९ माघ २०२० बिक्रमी बिशन कौर दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३०३
3 १६ ९ माघ २०२० बिक्रमी साईं दास दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३०६ 3 १६
९ माघ २०२० बिक्रमी सरूप सिँघ दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३०७
९ माघ २०२० बिक्रमी सांझी राम दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३०८
९ माघ २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ खड़ग सिँघ दे गृह अलॄड़ पिंडी गुरदास पुर ३०९
१० माघ २०२० बिक्रमी संत सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३१६
१० माघ २०२० बिक्रमी भाग सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३२०
१० माघ २०२० बिक्रमी मेला सिँघ मुनशा सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३२३
११ माघ २०२० बिक्रमी मुनशा सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदास पुर ३२७
११ माघ २०२० बिक्रमी गंढा सिँघ ते बलवंत कौर दे घर बाबूपुर गुरदास पुर ३३०
११ माघ २०२० बिक्रमी बख़शीश सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३३२
१२ माघ २०२० बिक्रमी वरखा सिँघ विरसा सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३४०

१२ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३४३
१३ माघ २०२० बिक्रमी मक्खण सिँघ दे घर बाबू पुर गुरदास पुर ३४७
१३ माघ २०२० बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह छंनां गुरदास पुर ३५१
१३ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलूड़ पिंडी गुरदास पुर ३५२
१३ माघ २०२० बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह बाबू पुरा गुरदास पुर ३५३
१४ माघ २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदास पुर ३५७
१४ माघ २०२० बिक्रमी खेड़ा सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदास पुर ३६१
१४ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदास पुर ३६२
१४ माघ २०२० बिक्रमी आसा सिँघ बलाका सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर ३६६
१५ माघ २०२० बिक्रमी हजारा सिँघ प्यारा सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर ३७५
१५ माघ २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे घर नौशैहरा गुरदास पुर ३८०
१६ माघ २०२० बिक्रमी ३८५
१६ माघ २०२० बिक्रमी हरदीप सिँघ दे घर उगरा गुरदास पुर ३८७
१७ माघ २०२० बिक्रमी अतर सिँघ चतर सिँघ उगरा गुरदास पुर ३९२
१७ माघ २०२० बिक्रमी तरलोक सिँघ दे घर उगरा गुरदास पुर ३९५
१७ माघ २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे घर उगरा गुरदास पुर ३९६
१८ माघ २०२० बिक्रमी मुनशा सिँघ ज्ञान सिँघ उगरा गुरदास पुर ४००
१८ माघ २०२० बिक्रमी उजागर सिँघ दे नवित चेबे गुरदास पुर ४०६
१८ माघ २०२० बिक्रमी सिमल सकोर नूं जांदया रावी दे कंडे गुरदास पुर ४०८
१८ माघ २०२० बिक्रमी बचन सिँघ दे घर सिंमल सकोर गुरदास पुर ४०९
१९ माघ २०२० बिक्रमी चरन सिँघ दे घर सिंमल सकोर गुरदास पुर ४१९
१९ माघ २०२० बिक्रमी बीबी बचनी दे घर सिंमल सकोर गुरदास पुर ४२२

4 १६

१६ माघ २०२० बिक्रमी रावी विचों लंघण समें गड्डे उत्ते संडयां दे प्रथाए ४२५
१६ माघ २०२० बिक्रमी चरन सिँघ दे घर अनतोर गुरदास पुर ४२८
२० माघ २०२० बिक्रमी सड़क दे उत्ते महात्मा नाल ४३६
२० माघ २०२० बिक्रमी बीबी प्रकाश कौर दे घर साहलेवाल गुरदास पुर ४३८
२० माघ २०२० बिक्रमी बीबी बंती दे घर साहलेवाल गुरदास पुर ४४०
२० माघ २०२० बिक्रमी बाहर सड़क उत्ते गुरदास पुर ४४१
२० माघ २०२० बिक्रमी लाल चंद दे गृह गुजरात गुरदास पुर ४४१
२१ माघ २०२० बिक्रमी दुरगा देवी दे गृह गुजरात गुरदास पुर ४४८
२१ माघ २०२० बिक्रमी महिंगा सिँघ गृह सद्दा गुरदास पुर ४५०
२१ माघ २०२० बिक्रमी हेमराज पुरा गुरदास पुर ४५६
२२ माघ २०२० बिक्रमी खेड़ा सिँघ दे घर हेमराज पुरा गुरदास पुर ४६५
२२ माघ २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे घर हयात नगर गुरदास पुर ४६८
२२ माघ २०२० बिक्रमी बीबी हरबंस कौर दे घर गज़री पुर गुरदास पुर ४७३
२३ माघ २०२० बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर गज़री पुर गुरदास पुर ४८०
२३ माघ २०२० बिक्रमी धिरता सिँघ दे घर कला नोर गुरदास पुर ४८४
२४ माघ २०२० बिक्रमी सरदारा सिँघ दे घर कला नोर गुरदास पुर ४६१
२४ माघ २०२० बिक्रमी बीबी जीतो दे घर राम पुरा गुरदास पुर ४६४
२४ माघ २०२० बिक्रमी तेजा सिँघ सरीर छड़ौण दे समें अलड़ पिंडी गुरदासपुर ४६६
किशन सिँघ ने फेर कहणा चौधरी तेजा सिँघ दा नाम अवाज मारी ५०५
२४ माघ २०२० बिक्रमी तेजा सिँघ दी सिड़ी उत्ते अलड़ पिंडी गुरदासपुर ५०७
२४ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिंडी गुरदासपुर ५१०
२४ माघ २०२० बिक्रमी दीदार सिँघ दे घर तारा सिँघ दे कपड़े उतार के ५१४

5 १६

5 १६

6 ١ 6

१६ १६

२५	माघ	२०२०	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	बाबू पुर गुरदास पुर	५२२
२५	माघ	२०२०	बिक्रमी	मेला सिँघ दे कमाद विच	बाबू पुर गुरदास पुर	५३६
२५	माघ	२०२०	बिक्रमी	बीबी सुलखणी दे गृह	अलॢड़ पिंडी गुरदास पुर	५४४
२६	माघ	२०२०	बिक्रमी	चरन कौर दे गृह	अलॢड़ पिंडी गुरदास पुर	५५६
२७	माघ	२०२०	बिक्रमी	किशन सिँघ दे गृह	अलॢड़ पिंडी गुरदास पुर	५६६
२८	माघ	२०२०	बिक्रमी	हरि भगत दवार विच अजीत सिँघ दे नवित	जेठूवाल	५६६
२६	माघ	२०२०	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल अमृतसर	६०५
१	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल अमृतसर	६०८
११	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल अमृतसर	६२७
१२	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल अमृतसर	६२६
१३	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	करतार पुर जलंधर	६३१
१३	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	धंनोवाली जलंधर	६३३
१३	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	थान सिँघ मस्सा सिँघ	कोटली जलंधर	६३७
१४	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	गुरमीत सिँघ दे गृह	हरदो फराला जलंधर	६४२
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	मनसा सिँघ, राम सिँघ	हरदो फराला जलंधर	६५०
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	हरदो फराला जलंधर	६५४
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	बीबी चरन कौर दे गृह	हरदो फराला जलंधर	६५५
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	बीबी हरबंस कौर दे गृह	आरीआ महल्ला लुधिआणा	६५७
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	नछत्तर सिँघ दे गृह	दोराहा लुधिआणा	६६०
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	बरकत पुरा पटिआला	६६३
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरी छंनां करनाल	६६४
१५	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	जस्सा सिँघ दे गृह	पहेवा नहर कलोनी करनाल	६७२

१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	मोहण सिँघ दे गृह	गड़ी लांगरी	करनाल	६७८
१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	गड़ी लांगरी	करनाल	६८१
१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फ़ारम	करनाल	६८६
१७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	गुरमेज सिँघ दे गृह	खरका	करनाल	६६६
१७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	करनैल सिँघ, जरनैल सिँघ	खरका	करनाल	७००
१७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	चानण सिँघ दे गृह	हंडोला	करनाल	७०३
१८	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	अरजण सिँघ गुरदीप सिँघ	बलोच पुर	करनाल	७०८
१७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	७१७
१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	७२२
१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	गुरूकुल फारम	करनाल	७२५
१६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	मान सिँघ दे गृह	बोडी	करनाल	७३२
२१	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	उत्तर प्रदेश	७४२
२२	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	शिव सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	उत्तर प्रदेश	७५१
२२	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	विशवा मितर दे गृह	मेरठ छाउणी	उत्तर प्रदेश	७५३
२२	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	दिल्ली दरबार विच	दिल्ली	दिल्ली	७५५
२४	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७६४
२६	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	ओरंगाबाद, इटारसी संगत दे नवित		इटारसी	७७४
२७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	संत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७८०
२७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	हरीदत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७८१
२७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	सविंदर सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७८३
२७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७८४
२७	फग्गण	२०२०	बिक्रमी	टोपन लाल दे गृह	इटारसी	मध्या प्रदेश	७८५

7 १६

२७ फग्गण २०२० बिक्रमी कला बाई, पटोला बाई इटारसी मध्या प्रदेश ७८५

२७ फग्गण २०२० बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश ७८७

१ चेत २०२१ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ७९०

२ चेत २०२१ बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ८१६

२ चेत २०२१ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर ८२३

२ चेत २०२१ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर ८३५

३ चेत २०२१ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर ८३८

३ चेत २०२१ बिक्रमी पशौरा सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर ८४०

३ चेत २०२१ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला गुरदासपुर ८४५

५ चेत २०२१ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदासपुर ८४८

६ चेत २०२१ बिक्रमी आसा सिँघ, बलाका सिँघ, हज़ारा सिँघ
प्यारा सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदासपुर ८६२

६ चेत २०२१ बिक्रमी संत सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदासपुर ८६८

६ चेत २०२१ बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर ८७१

६ चेत २०२१ बिक्रमी मेला सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदासपुर ८७४

७ चेत २०२१ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह बाबू पुर गुरदासपुर ८७७

१२ चेत २०२१ बिक्रमी नाज़र सिँघ, अजीत सिँघ जेठूवाल दरबार विच ८७९

२१ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरैण दे गृह मूसला पुर हाट पटना बिहार ८८२

२२ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरैण दे गृह मूसला पुर हाट पटना बिहार ८८६

२२ चेत २०२१ बिक्रमी पटणा साहिब गोबिंद घाट बिहार ८९१

२२ चेत २०२१ बिक्रमी पटणा साहिब गुरू का बाग बिहार ८९३

२२ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरैण दे गृह मूसला पुर हाट पटना ८९४

8 १६

9 १६

२३ चेत २०२० बिक्रमी लछमण पांडे दे गृह पटना साहिब बिहार ६०५
२३ चेत २०२१ बिक्रमी सुदंर दास दे गृह मूसल पुर हाट पटना साहिब बिहार ६११
२४ चेत २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६१६
२५ चेत २०२१ बिक्रमी बालमीक दी कुटीआ उत्ते बिठूर कानपुर उत्तर प्रदेश ६२४
२५ चेत २०२१ बिक्रमी सतवंत कौर दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६२८
२५ चेत २०२१ बिक्रमी बीबी भगवंती दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६३१
२५ चेत २०२१ बिक्रमी किरपा सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६३४
२५ चेत २०२१ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६३५
२५ चेत २०२१ बिक्रमी गोविंद सरन श्रीवासतव ६३६
२५ चेत २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उत्तर प्रदेश ६३७
२६ चेत २०२१ बिक्रमी दिल्ली दरबार पहाड़ गंज दिल्ली ६४८
१ वसाख २०२१ बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६५१
२ वसाख २०२१ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ६६४
३ वसाख २०२१ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ६७२
३ वसाख २०२१ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ६७५
४ वसाख २०२१ बिक्रमी बख़शीश सिँघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ६७७
४ वसाख २०२१ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह बल गुरदास पुर ६८०
४ वसाख २०२१ बिक्रमी अमराओ सिँघ दे गृह बल गुरदास पुर ६८८
४ वसाख २०२१ बिक्रमी सड़क उत्ते ६६१
४ वसाख २०२१ बिक्रमी किरपाल सिँघ नाल अमृतसर ६६३
१४ वसाख २०२१ बिक्रमी डा० पाल सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगरां अमृतसर ६६४
१ जेठ २०२१ बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १००१

9 १६

२ जेठ २०२१ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०१४
२ जेठ २०२१ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०१८
प जेठ २०२१ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फिरोज़ पुर	१०२४
६ जेठ २०२१ बिक्रमी बगीचा सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फिरोज़ पुर	१०३१
६ जेठ २०२१ बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह	मोगा	फिरोज़ पुर	१०३३
६ जेठ २०२१ बिक्रमी साईं फ़ैज़ मुहंमद तों पुण गिछ	तखाण वध	फिरोज़ पुर	१०३७
६ जेठ २०२१ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह	निधां वाली	फिरोज़ पुर	१०४२
८ जेठ २०२१ बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०४४
८ जेठ २०२१ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०४७
८ जेठ २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह	काउँ के	अमृतसर	१०४७
९ जेठ २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे खूह ते	काउँ के	अमृतसर	१०५५
९ जेठ २०२१ बिक्रमी हजारा सिँघ दे गृह	काउँ के	अमृतसर	१०५६
९ जेठ २०२१ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	लेलीआं	अमृतसर	१०५९
९ जेठ २०२१ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	१०६२
१० जेठ २०२१ बिक्रमी गुरबचन सिँघ, नवतेज सिँघ	प्रीतलड़ी	अमृतसर	१०६९
१० जेठ २०२१ बिक्रमी सविंदर सिँघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	१०७३
१० जेठ २०२१ बिक्रमी अरजन सिँघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	१०७६
१० जेठ २०२१ बिक्रमी नाजर सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	१०८२
११ जेठ २०२१ बिक्रमी चरन सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	१०८८
११ जेठ २०२१ बिक्रमी हजारा सिँघ दे गृह	छीने जसतरवाल	अमृतसर	१०८८
११ जेठ २०२१ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह	जसराऊर	अमृतसर	११९५
१३ जेठ २०२१ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदास पुर	११०३

१३	जेठ	२०२१	बिक्रमी	मैहंगा सिँघ दे गृह	सद्दा	गुरदास पुर	११०४
१३	जेठ	२०२१	बिक्रमी	चेला सिँघ दे गृह	वजारत रोड	जम्मू	११०७
१४	जेठ	२०२१	बिक्रमी	बीबी अमरो देवी, सधरो देवी दे गृह		जम्मू	१११५
१४	जेठ	२०२१	बिक्रमी	प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	१११६
१५	जेठ	२०२१	बिक्रमी	लाल चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	११२०
१५	जेठ	२०२१	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	शेख़सर	जम्मू	११२३
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	शेख़सर	जम्मू	११२८
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	राम चंद दे गृह	शेख़सर	जम्मू	११३३
१७	जेठ	२०२१	बिक्रमी	शिव सिँघ दे गृह	शेख़सर	जम्मू	११३७
१७	जेठ	२०२१	बिक्रमी	गुरदित्त सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	११४१
१७	जेठ	२०२१	बिक्रमी	गूड़ा राम दे गृह	छंब	जम्मू	११४३
१७	जेठ	२०२१	बिक्रमी	गुरा राम दे गृह	सरदारी	जम्मू	११४५
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	सरदारी	जम्मू	११४८
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	बसो देवी दे गृह	सरदारी	जम्मू	११५०
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	नानक चंद दे गृह	सरदारी	जम्मू	११५१
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	राम लाल दे गृह	सरदारी	जम्मू	११५३
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	बेलू राम दे गृह	सरदारी	जम्मू	११५३
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	नंदू राम दे गृह	सरदारी	जम्मू	११५४
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	बेला सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११५६
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	सेवा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६०
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६०
१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	खोमो देवी दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६१

11
१६

१८	जेठ	२०२१	बिक्रमी	वकील सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६१
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	फग्गा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६६
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	चूड़ सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	११६७
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	देवा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११६८
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	रूड़ सिँघ दे नवित	धंगाली	जम्मू	११६८
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११७०
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	इन्दर राम दे गृह	धंगाली	जम्मू	११७१
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	मेला राम दे गृह	धंगाली	जम्मू	११७२
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११७३
१६	जेठ	२०२१	बिक्रमी	कुलवंत सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	११७५
२०	जेठ	२०२१	बिक्रमी	बीबी प्रेमी देवी दे गृह	धंगाली	जम्मू	११८०
२०	जेठ	२०२१	बिक्रमी	फरंगी राम दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	११८१

12 १६

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* १२ मग्घर २०२० बिक्रमी करतार सिँघ दे घर पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुशियार पुर *

१ १६ पुरख अकाल तेरा वड प्रताप, बेपरवाह बेअन्त तेरी वड्याईआ। सचखण्ड दवारे तेरा निवास, मुकामे हक़ तेरी रुशनाईआ। निरगुण नूर तेरा प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। निरवैर तेरा खेल तमाश, ख़ालक समझ किसे ना आईआ। धुर दरगाही बेऐब पाक, पुनीत तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दास, निउँ निउँ बैठण सीस झुकाईआ। त्रैगुण माया तेरी गाथ, पंज तत तेरा रंग समाईआ। गुर अवतार तेरा साक, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। पीर पैगम्बर तेरा हाथ, दस्त बदस्त आप मिलाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। नित नवित्त तेरा भोग बिलास, लख चुरासी चारे खाणी जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज बणत बणाईआ। चारे बाणी तेरी सिफ्त अवाज़, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बैठी ढोला गाईआ। दो जहानां तेरा राज, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा साज, साजनहारे हथ्थ तेरे चतुराईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आत्म परमात्म तेरा काज, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा अंग वखाईआ। शब्द स्वामी सदा निहकामी जुग चौकड़ी रिहा भाज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। सति धर्म प्रभ तेरा समाज, समझ सके कोई ना राईआ। समुंद सागर तेरा जहाज, धरनी धरत धवल आप तराईआ। सेवा करे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर सीस निवाईआ। पवण पवणी तेरा स्वास, घट घट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल तेरा खेल अवल्ला, ब्रह्मण्ड तेरी शरनाईआ। आदि जुगादी इक इकल्ला, जुग चौकड़ी राह वखाईआ। सच सिँघासण धुर दा मल्ला, दर घर साची सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण फड़ा पल्ला, गुर अवतार पीर पैगम्बर दिती वड्याईआ। धाम वखा निहचल इक अकल्ला, महल उच्च करी रुशनाईआ। भेव चुका जला थला, डूंग्घे सागर दित्ता समझाईआ। दीपक जोती आपे बला, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। धुर संदेस

सब नूं घल्ला, बोध अगाध शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरा भेव कोए ना आईआ। पुरख अकाल सर्ब गुण दाते, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि पिता माते, बालक तेरे नज़री सारे आईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाशे, वेखी खेल हर घट थाईंआ। मण्डल मण्डप पैंदी वेखी रासे, गोपी काहन नाच नचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के दासी दासे, तेरी सेवा गए कमाईआ। शब्द अनादी नाद खोलॖ भेव बोध अगाधे, तेरा मन्त्र गए दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान मार अवाज़े, धुर संदेसा रहे सुणाईआ। अञ्जील कुरान रच रच काजे, तेरी करनी गए दृढ़ाईआ। खाणी बाणी तेरा खेल भूपत राजे, रईयत समझ सके ना राईआ। घट घट अन्दर तेरे वज्जदे अनहद वाजे, धुन आत्मक राग अलॖाईआ। जोत निरँजण लख चुरासी अन्दर प्रकाशे, प्रकाशवान तेरा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, प्रभ तेरा संग इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल दीनां नाथ, दीनन ओट इक तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ पढ़ थक्के तेरी गाथ, चारे वेद समझ कोए ना पाईआ। पुराण अठारां मारन आवाज़, उच्ची कूक कूक अलाईआ। गीता ज्ञान हो हो दास, दस अड्ड दए दुहाईआ। अञ्जील कुरान पढ़न निमाज, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। धुर दी बाणी तेरा वजाए नाद, नादी राग इक अलाहीआ। गुर अवतार होए विस्माद, पीर पैगम्बर बिस्मिल रूप वटाईआ। तेरा कोई ना जाणे भेव पुरख समराथ, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। रसना जिह्वा कथनी कथ कथ गई थक्क, तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। तेरे हथ्थ हकीकत हक़, लाशरीक तेरी शरनाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा मार्ग धुर दा दस्स, साचा पड़दा दे उठाईआ। तेरे चरण कँवल जाईए वस, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तेरा लईए सच्चा रस, अमृत इक्को जाम प्याईआ। बिन रसना जिह्वा तेरा गाईए जस, साचा ढोला सिफ्त सालाहीआ। जुग चौकड़ी पैंडा मुक्कया नस्स नस्स, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बैठे पन्ध मुकाईआ। निरवैर पुरख बण प्रधान हो प्रगट, प्रगट आपणा नूर दरसाईआ। सच दवारा खोलॖ हट्ट, इक्को सौदा नाम विकाईआ। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। राउ रंकां दे इक्को दात, नाम निधाना झोली पाईआ। गुप्त ज़ाहर बातण कर बात, आप आपणा राह जणाईआ। नज़री आ साख्यात, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी कहाणी दस्सदे आए बात, तेरा लेखा सर्ब जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लिख्या नाल कलम दवात, शाही शहिनशाह तेरे भेंट चढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार अन्तिम आवे मात, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जिस दा राह तक्कण पृथ्मी आकाश, दो जहान बैठे ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रखण आस,

नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्याइण स्वास स्वास, रसना जिह्वा सेव कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भाग लगाए जंगल जूह पहाड़ विच भरवास, डूंघे समुंद सागर वेख वखाईआ। लख चुरासी दर दर घर घर काया मन्दिर अन्दर पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले वेखे आप, आप आपणा पड़दा लाहीआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के सुरत सुआणी फड़के दस्से आपणा जाप, अनरागी आपणा राग समझाईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा साक, कूड़ा बन्धन दए कटाईआ। चार वरन मेटे अन्धेरी रात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नूर नज़री आईआ। अठारां बरन सुटे मूँह दे खात, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। सर्ब जीआं दा पुरख समराथ, अबिनाशी करता दए समझाईआ। हर घट अन्दर रखे वास, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अगम्मी वर, शाह पातशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल प्रभू प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख भेख, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। भरमे भुल्ले मुल्लां शेख़, पंडत पांधे सार कोए ना आईआ। निरगुण तेरा नाउँ कोई ना लए चेत, चेतन सुरती ना कोए कराईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया हउमे हंगता करन सारे हेत, हितकारी सतिगुर नजर कोए ना आईआ। आत्म ताकी खोल्ह तेरा दरस सके ना कोई पेख, दोए दोए लोचण लभ्भण जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, वर दाते तेरे हथ्थ सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल प्रभू प्रभ माही, महाबली तेरी वड्याईआ। कलयुग जीव भुल्ले राही, पांधी नजर कोए ना आईआ। साचा मार्ग ना रिहा कोई वखाई, चारों कुण्ट सगला संग ना कोए निभाईआ। कूड़ कुड़यारा गल पा के बैठा फाही, हउमे हंगता गढ़ सके ना कोए तुड़ाईआ। जन्म कर्म दी लग्गी शाही, तुध बिन दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग जीव सारे रहे भुलाई, साहिब स्वामी नज़र किसे ना आईआ। तीर्थ तट जगत किनार होए हैरानी, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख आदि जुगादि अन्तरजामी, अन्तरगत तेरे हथ्थ नज़री आईआ। सब नूं भुल्ली धुर दी बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए लगाईआ। कूड़ कुड़यारा खाए चारे खाणी, चारों कुण्ट फिरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, लोकमात पई दुहाईआ। लोकमात आ प्रभ, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। आपणा खेल वेख झब्ब, बेपरवाह अक्ख खुल्हाईआ। जगत विकारा सब नूं रिहा दब्ब, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी जाम प्याला पीता मदि, अमृत रस रसना ना कोए लगाईआ। नौ दवारे पार करे ना कोई हद्द, सुखमन टेडी बंक पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरा दरस करे ना कोई अन्दर लँघ, काया मन्दिर ना कोए वड्याईआ।

सेज सुहञ्जणी सोहे ना आत्म पलँघ, जोती दीपक नूर ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म निज मिले ना किसे अनन्द, साचा अनन्द ना कोए वखाईआ। भाण्डा भरम दूई द्वैत कोई ना ढाहवे कंध, कन्ढी मिले ना बेपरवाहीआ। तेरा सोहला गीत गोबिन्द कोई ना गावे छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर बैठे मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण मंग, दर सच्चे अलख जगाईआ। गुर अवतार कहिण सूरे सरबँग, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण चाढ़ रंग, चोली इक्को कफ्नी रूप वटाईआ। अल्फ़ी वेख सर्ब मलंग, हरफ़ी तेरी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। अल्फ़ ये होई नंग, पड़दा सके ना कोए पाईआ। चौदां तबक दिसण भंग, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। चौदां विद्या किसे ना पावे ठंड, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भेख पखण्ड, सत्त दीप अन्धेरा नज़री आईआ। आत्म सब दी होई रंड, परमात्म कन्त ना कोए हंढाईआ। चार वरनों टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। वरनां बरनां पा ठंड, कलयुग जीव करे ना कोए लड़ाईआ। रूप नज़र आए इक्को हँ, हँ ब्रह्म दे जणाईआ। पिछला पैंडा मुक्के पन्ध, अग्गे मार्ग इक वखाईआ। तेरा खेल सदा सचखण्ड, लोकमात तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वखा सच्चा घर, जिस घर, मिलयां दूजा नज़र कोए ना आईआ। विष्न कहे दे विश्व धार, वासतक आपणा जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्मा कहे पारब्रह्म प्रभ कर प्यार, ब्रह्म आपणे लेखे लाईआ। शंकर कहे मेरी त्रिसूल करे निमस्कार, निउँ निउँ लागे पाईआ। त्रैगुण माया मंगे चरण छार, धूढ़ी टिक्का इक्को लाईआ। पंज तत करन निमस्कार, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा नूर जुग जुग अन्दर वाड़, साची सेव कमाईआ। तेरा खेल गुर अवतार, पीर पैगम्बर तेरी रुशनाईआ । तेरा महल उच्च अटल मनार, तेरी महिफ़ल इक्को नज़री आईआ। तूं साहिब सुल्तान प्रभ सब दा सांझा यार, सगला संग निभाईआ। सदी चौधवीं वेख हाल, इक चार डेरा ढाहीआ। बीस बीसे बण दलाल, निरगुण सरगुण तेरा ध्यान लगाईआ । चारों कुण्ट कूकदा काल, सीस नगारा सर्ब वजाईआ। सन्त सुहेले प्रभ आ के भाल, गुर चेले लै रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, निरगुण सरगुण तेरी ओट तकाईआ। निरगुण सरगुण बेपरवाह, पारब्रह्म प्रभ इक्को ठाकर नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए सलाह, साची सिख्या इक समझाईआ। पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा सच मलाह, एथे ओथे बेड़ा दो जहानां पार कराईआ। इष्ट देव तेरा रहे मना, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान तेरी सिफ्त रहे गा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त अलाईआ।

तेरे मिलण दा जन भगतां सदा चाअ, चाउ घनेरा इक वखाईआ। कलयुग भँवरी विच्चों बाहर कढ्ढ, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। तेरे अग्गे इक सदा, सद्दा तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वखा दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। पुरख अकाल खोल्ह दरवाज़ा, चार अठारां तेरा ध्यान लगाईआ। ग़रीब निमाणयां मेल ग़रीब निवाज़ा, कूड़ी गुरबत डेरा ढाहीआ। साचे काअबे करा हाजा, हजरत तेरा सजदा इक्को भाईआ। नाम अगम्मी वजा वाजा, राग धुन इक शनवाईआ। साचा राम दिसे साथा, सगला संग निभाईआ। नानक गोबिन्द मेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी तेरा नूर नज़री आईआ। तेरा भेव किसे ना जाता, तेरी समझ कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर जन भगतां बण पिता माता, पूत सपूते गोद उठाईआ। चरण कँवल जोड़ नाता, धरत धवल दे वड्याईआ। हो सहाई अनाथ अनाथा, दीनन तेरी ओट तकाईआ। लहिणा देणा चुका मस्तक माथा, पूरब सब दी झोली पाईआ। बिन तेरे काया दिसे ख़ाली कासा, वस्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा घर, जिस घर बहि के धुर दा हुक्म जणाईआ। पुरख अकाल प्रभ किरपा कर, करनहार करतारे। कूड़ी क्रिया मात हर, सच सोहे तेरा इक दरबारे। चार वरनां चुक्के डर, भाण्डा भरम भउ नवारे। बंक सुहा सच्चा गढ़, जिस गृह तेरा नूर उज्यारे। काया पौड़े सच्चे चढ़, पा सार डूंघी गारे। साचा नाम इक्को पढ़, शब्द अनादी बोल जैकारे। ग़रीब निमाणे आपे फड़, डुबदे ला पार किनारे। कलयुग अग्नी रहे सड़, तुध बिन अन्त ना कोई ठारे। किरपा कर नरायण नर, दर तेरे सर्ब पनहारे। आदि जुगादी तेरा लेखा चोटी जड़, सद तेरा रूप अपारे। भगत भगवान लगा लड़, जुग दे विछड़े मेल प्यारे। दरस दिखा उपर शाह रग, निर्मल नूर कर उज्यारे। जोती दीपक जाए जग, मिटे अमावस कूड़ रैण अँध्यारे। कलयुग लेखा चुक्के कूड़ी हद्द, सतिजुग वज्जणे तेरे नाम नगारे। प्रेम प्रीती दे मद, सदा चढ़े रहिण खुमारे। लोकमात रख लज्ज, लज्यावन्त सिरजणहारे। ठाकर हो के पर्दा कज्ज, ओढण दे आप करतारे। शब्द गुरु गुरदेव हो के गज्ज, दो जहान तेरे पनिहारे। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव जुग चौकड़ी तैनूं रहे सद्द, भगत भगवान राह तक्कण तेरे दुलारे। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठां दब्ब, किरपा कर एकँकारे। लोकमात आ के सज, साचा धाम कर उज्यारे। सम्बल नगर आ के वस, गोबिन्द मिल मीत मुरारे। नाम नगारा हो के वज्ज, नौ खण्ड तेरे सहारे। जन भगतां अन्तर आ के वस, भाग लगा काया महल मुनारे। सब दी पूरी कर आस, आसावन्त सच्ची सरकारे। तेरे मिलण दी रखी प्यास, तृखा कोई ना अवर उतारे। पुरख अकाल दीन दयाल सदा सुहेले वस पास, जगत विछोड़ा पन्ध निवारे। तेरा सिमरन तेरा पाठ, तेरी पूजा तेरे शिवदुआले मट्ठ गुरूदवारे। कलयुग अन्तिम आ

के रख, प्रतख रूप निस्तारे। आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, निज नेत्र नैण उग्घाड़े। तेरी सरन जाईए ढट्ठ, दोए जोड़ जोड़ निमस्कारे। सदी बीसवीं रही नट्ठ, आप आपणा पन्ध विचारे। किरपा कर पुरख समरथ, अलख निरँजण शहिनशाह वड बलकारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां दे धुर दा वर, दर मंगण भीख भिखारे। दर मंगण भीख पा प्रभ भिच्छया, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम कर रच्छया, रच्छक पालक इक्को नज़री आईआ। नानक गोबिन्द लेख जो लिख्या, ना सके कोए मिटाईआ। चार वरनां अन्दर तेरा नूर दिस्सया, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तुध बिन कोई ना देवे धुर दी सिख्या, साची करे ना कोए पढ़ाईआ। नौ रस होए फिकया, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। साहिब सतिगुर तेरा नूर कदे ना जाए भिटया, दीन मज़्हब ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल सदा अनडिठया, जगत जीव बिन तेरे समझ कोए ना पाईआ। जन भगतां बण माई पितया, पिता पुरख तेरी सरनाईआ। काया मन्दिर अन्दर आ के कर हितया, हित आपणा दे जणाईआ। वड्डे वड्डे वड अति नीकण निक्कया, निरगुण सरगुण तेरी धार तेरे रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि तेरी आसा हरिजन जनहरि इक्को इक रखाईआ।

६ ६

१६ १६

✻ १२ मग्घर २०२० बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुशियार पुर ✻

जन भगतां प्रभ सच्चा मीत, सो पुरख निरँजण नज़री आइंदा। चरण कँवल बंधाए सच प्रीत, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। घर वखाए इक अनडीठ, एकँकारा पढ़दा लाहइंदा। इक इकल्ला वसे चीत, आदि निरँजण नूर रुशनाइंदा। सच सति सुणाए गीत, अबिनाशी करता राग अल्हाइंदा। काया करे ठांडी सीत, श्री भगवान मेघ बरसाइंदा। आत्म पूरी करे उडीक, पारब्रह्म प्रभ आपणा मेल मिलाइंदा। दूर दुराडा नज़र आए नज़दीक, घर सच्चा इक सुहाइंदा। जुग चौकड़ी दस्से अवल्लड़ी रीत, मार्ग पांधी आप बणाइंदा। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, घर घर विच आप वखाइंदा। करनहारा नीचों ऊँच, ऊँचों नीच आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां आप प्रगटाइंदा। जुग जुग जन भगतां जोग, जग जीवन दाता आप जणाईआ। आत्म परमात्म कर के धुर संजोग, साचा मेला लए मिलाईआ। भाग लगा काया कोट, बंक दवारा दए सुहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। लेखा चुक्के हरख सोग, चिन्ता ग़म ना कोए वखाईआ। नाम सुणाए इक श्लोक, सोहँ ढोला राग अलाईआ। आसा करे पूरी लोचण लोच,

निज नेत्र दरस दिखाईआ। वज्जे वधाई लोक परलोक, दो जहान रहे जस गाईआ। सच प्रीती दस्से इक्को ओट, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। काम कामनी कढ्ढे विच्चों खोट, माया ममता दए गंवाईआ। जन्म कर्म दा कटे रोस, मेल मिलावे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम भण्डार अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। भगतां देवे प्रभ धुर दी रास, वस्त अमोलक नाम झोली पाईआ। निरगुण हो के वसे पास, निराकार नज़री आईआ। काहन हो के पावे रास, मण्डल नाच नचाईआ। सेवक हो के बणे दास, साची सेव कमाईआ। ठाकर हो के पूरी करे आस, तृष्ना आपणी झोली पाईआ। प्रीतम हो के अन्दर करे वास, प्रेम प्रीती आपणे नाल रखाईआ। शहिनशाह हो के देवे शाबास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां लए तराईआ। जुग जुग भगतां देवे टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। बुद्धि करे आप विवेक, मन मति ना कोए जणाइंदा। पूरब लेखा जाणे लेख, जन्म कर्म आप बणाइंदा। खेल खिलाए नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाइंदा। भेव खुल्हाए आपणा भेत, भेख आपणा आप जणाइंदा। बिन अक्खां लवे वेख, बिन रसना राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा। जन भगतां दया कमाए ठाकर, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। पार कराए काया कवरी डूंग्घा सागर, चप्पू इक्को नाम वखाईआ। लेखा जाणे माटी गागर, काची गगरीआ खोज खुजाईआ। वणज कराए बण सौदागर, सौदा आपणे हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। जन भगत वेखे प्रभ ठाकर आप, हरि आपणी दया कमाईआ। जिन्हां दस्से धुर दा जाप, सोहँ ढोला दए जणाईआ। रसना कहिण तूं मेरा मैं तेरा साक, हँ ब्रह्म विछड़ कदे ना जाईआ। सो पुरख निरँजण अनाथां नाथ, दीन दयाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां गोद सुहाईआ। जन भगत बहाए आपणी गोदी, कुक्ख जननी लेखे लाइंदा। कोई ना जाणे ज्ञानी ध्यानी बोधी, बुद्धि विचार विच कदे ना आइंदा। जिन्हां बख्शे आपणी सोझी, सो गुरमुख चतुर सुघड़ सुजान मूर्ख मूढ़े धंदे लाइंदा। फड़ चढ़ावे धुर दी चोटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। करे प्रकाश आपणी जोती, जोती जाता नूर चमकाइंदा। हरि का भेव समझे ना कोई जीव जंत लोकी, अलोकक आपणी खेल रचाइंदा। भाग लगाए जिउँ रविदास चम्यारे मोची, मुश्किल आपणी हथ्थीं हल्ल कराइंदा। तिस साहिब दी सोच किसे ना सोची, सोचयां सोच विच ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्को सोटी, नाम धारा हथ्थ फड़ाइंदा। जन भगत जनां प्रभ चाढ़े रंग, रंग गुलाला आप रंगाईआ। साची सेजा वेख पलँघ, बिन पावा चूल सुहाईआ। उते बैठ

सूरा सरबँग, निरगुण आपणा आसण लाईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंग, तुरिया तुरत राग सुणाईआ। जोत निरँजण चमके चन्द, रवि शशि नज़र कोए ना आईआ। निज आत्म मिले इक अनन्द, रसना रस ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया ना कोई गंद, मदिरा पान ना कोए जणाईआ। गुरमुख नार ना होए रंड, दुहागण रूप ना कोए वटाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी गंढु, बन्धन आपणा नाम रखाईआ। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के दस्म दवारी खड़ के सोहँ ढोला सुणाए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को नज़री आईआ। अग्गे पिच्छे दो जहानां मुक्के पन्ध, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। भगत भगवान रल मिल इक दूजे दे वसण संग, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां दए वड्याईआ। जुग जुग प्रभ भगत सुहेला, सालस आपणा खेल रचाइंदा। दर दर घर घर करे मेला, जन्म विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। किरपा कर सज्जण सुहेला, सही सलामत इक्को नज़री आइंदा। कलयुग अन्त सुहाए आपणा वेला, वार थित वंड ना कोए वंडाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त समझ ना कोए रखाइंदा। जन भगतां चाढ़े धुर दा तेला, जोत निरँजण सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन साचे लाए जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। अन्तर उपजाए इक वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया कर त्याग, सच सुच्च झोली पाईआ। जन्म जन्म दा धो दाग, निर्मल रूप वटाईआ। फड़ के हँस बणा काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। दीपक जोत जगा चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। देवे वड्याई वड वड भाग, भगवन सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिन्हां मिल्या प्रभ साहिब सतिगुर आज, सो कल लभ्भण किते ना जाईआ। तिन्हां स्वारे धुर दे काज, एथे ओथे वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कर प्यार देवे साथ, हरि रघुनाथ टेक एक अनक कलधारी आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस अन्तर माणे साची सेज, तिस आपणे अंग लगाईआ।

* १२ मग्घर २०२० बिक्रमी उसमान शहीद सड़क उते सन्त नाल ज़िला हुश्यिारपुर *

धन्न भाग होवण धन्न भाग, हरि वडभागी सतिगुर पाया। दुरमति मैल धोवे दाग, निर्मल रूप वटाया। दीपक जोत जगाए चराग़, अन्ध अन्धेर गंवाया। सुरत सवाणी शब्द बणाए साक, सज्जण इक वखाया। घर घर विच मेल मिलाए कन्त सुहाग, दुहागण आपणे गले लगाया। चरण प्रीती बख्श दात, दुतर पार कराया। महल अटल खोल्ह के वेखे ताक, बंद

कवाड़ी कुण्डा लाहया। दीन दयाल हो के वसे साथ, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणा संग निभाया। ओस वेले गुरसिख कहे मेरे धन्न भाग, जिस वेले सतिगुर दर्शन पाया। सतिगुर मिले सति अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। भाग लग्गा काया मन्दिर मसीत, गृह साचा हज्ज कराईआ। कूड़ी क्रिया कर कर ठंडी सीत, निझर झिरना अमृत धार मुख चुआईआ। आत्म परमात्म मिलण दी आपणी दस्से रीत, दूई द्वैती दूर कराईआ। इक्को कलमा इक्को नाम पढ़ाए हदीस, हज़रत राम इक्को रूप नज़री आईआ। खेले खेल जगत जगदीश, जगदीश्र आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत पारब्रह्म ब्रह्म बन्न्हाए सच प्रीत, सुरती शब्दी जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिख ओस वेले कहे मेरे वडभाग ठीक, प्रभ ठाकर इक्को नज़री आईआ। धन्न भाग होवे काया तन, पंज तत वज्जे नाम वधाईआ। भरम भुलेखा निकले जन, भय भउ नज़र कोए ना आईआ। निर्मल जोत चढ़े चन्न, चौदस चन्द नैण शरमाईआ। मन की वासना मेटे मन, मन मणका आप भवाईआ। साचा दे नाम धन, ख़ाली झोली दए भराईआ। ओस वेले गुरमुख कहे मेरे वड भाग धन्न, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। धन्न भाग कहे केहड़ा, गुरमुख विरला नज़री आईआ। जिस दा सतिगुर बन्न्हया बेड़ा, बण खेवट खेटा आपणे कंध उठाईआ। भेव चुकाया तेरा मेरा, मैं तूं रहिण कोए ना पाईआ। नज़री आया नेरन नेरा, घर घर विच वेख वखाईआ। काया मन्दिर वसे खेड़ा, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड जिस दा डेरा, सो वेखणहारा थाउँ थाईंआ। लख चुरासी मुकाए गेड़ा, आवण जावण पन्ध कटाईआ। चरण कँवल कराए इक वसेरा, बिस्तर सोहणी सेज सुहाईआ। अट्ठे पहर रखे सञ्झ सवेरा, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। ओस वेले जन भगत कहे धन्न भाग प्रभ महल वखाया उच्च उच्चेरा, जिस घर आपणा आसण लाईआ। धन भाग कहे जन साध, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर पूरा देवे दाद, दौलत आपणा नाम वरताईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप दरसाईआ। कोट जन्म दे मेट अपराध, पतित पापी आपणे रंग रंगाईआ। अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के शब्द अगम्मी सुणाए आवाज़, धुन आत्मक राग अलाईआ। ओस वेले सन्त जी सन्त कहिण वड भाग, हरि दाता दानी गहर गम्भीर बिन काया तत शरीर बेनज़ीर नूर नुराना नज़री आईआ। धन भाग कहे तत काया चोली, पंचम पंच मिले वड्याईआ। सदके वारी घोल घोली, पीसन पीस सेव कमाईआ। जिस सतिगुर चुक्की मेरी डोली, बण कहार कंध उठाईआ। प्रेम प्यार कर के दस्सी आपणी बोली, बिन रसना जिह्वा गाईआ। तिस प्रेम प्रीती अन्दर मौली, सो मौला इक्को रूप दरसाईआ। जिन उलटी कीती नाभ कौली, अमृत झिरना रिहा झिराईआ। जिस दी जोत नूर नुरानी इक्को अवल्ली, आलमीन रिहा समाईआ। उस पिच्छे वैरागण होई बवली, भज्जां वाहो दाहीआ।

धन्न भाग ओस धरनी धरत धवली, जिस गृह सन्त सतिगुर बैठे डेरा लाईआ। धन्न भाग कहे धरनी धरत, घर वज्जे मेरे वधाईआ। सोभावन्त प्रभ नज़री आया कन्त, कन्त कन्तूल वड्डी वड्याईआ। जिस ने सेवा लाए गुरमुख सन्त, दिवस रैण इक्को नाम ध्याईआ। तिन्नां मिल के मेरी चोली चढ़े रंग बसन्त, आदि जुगादि उतर कदे ना जाईआ। धूढ़ी मस्तक टिक्का ला करां मिन्नत, दोए दोए जोड़ लागां पाईआ। कलयुग अन्तिम किसे विच ना वेखी हिम्मत, जो हरि जू रुस्सयां लए मनाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे करदे इलत, आलम उल्मा बणी लोकाईआ। बिन भगतां गुरमुखां हरि मिलण दी कोई ना करे मेहनत, मज़दूरी सच ना कोए कमाईआ। धन्न भाग गुरमुखां प्रभ नाम शीशा दिती ऐनक, पर्दा दूई द्वैत उठाईआ। सन्त जी साहिब सतिगुर मारो इक्को सैनत, घर इशारे नाल आईआ।

* १२ मग्घर २०२० बिक्रमी अर्जण सिंघ दे गृह सलीम पुर ज़िला हुशियार पुर *

किरपा कर पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। विष्नूं दोए जोड़ रिहा हथ्थ, निमस्कार सीस झुकाईआ। ब्रह्मा नेत्र रो रो रिहा दस्स, ब्रह्म आपणा भेव जणाईआ। शंकर कहे मेरी होई बस्स, बलहीण दए दुहाईआ। त्रैगुण माया रही नच्च, मुख घूँगट रही उठाईआ। पंज तत कहिण असीं रहे तप, सांतक सति ना कोए वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद कहिण साडी कोई ना लए मति, मनमति बैठी डेरा लाईआ। अञ्जील कुरान कहे कोई ना वेखे धुर दी अक्ख, जगत नेत्र नैण उठाईआ। बाणी कहे कूड़ी क्रिया विछिआ सथ्थ, सत्थर यारड़ा ना कोए हंढ्ढाईआ। गुर अवतार कहिण साचा लए ना कोई रस, अनरस भरी जगत लोकाईआ। पीर पैगम्बर सरन सरनाई रहे ढठ, सजदा सीस इक निवाईआ। धाईं मारन अठसठ, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआर धीर ना कोए धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लोकमात विच्चों गया नट्ठ, कलयुग बैठा डेरा लाईआ। सार ना जाणे कोई तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पर्दा ना कोए उठाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया सारे रहे भक्ख, भाख्या धुर दी सके ना कोए जणाईआ। लख चुरासी काया मन्दिर नाद सुणे ना कोई अनहद, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। रसना अमृत जाम पीए ना कोई मदि, मदिरा पान करे लोकाईआ। सच दवारा कोई ना वेखे लँघ, बजर कपाटी पर्दा ना कोए उठाईआ । साची सेजा कोई ना बहे सज, आत्म अन्तर सोभा कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत हँस होए कग्ग, माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। किसे दरस ना मिले उपर शाह रग, श्री भगवान नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़ूब पार करे

१०
१६

ना कोई हद्द, ज़ात पात झगड़ा ना कोए मुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ निरगुण तेरे नालों होए अड्ड, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ।
साढे तिन्न हथ्थ डिगे डूंघी खड्ड, भँवरी पार ना कोए कराईआ। पतिपरमेश्वर बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, तिन्न
सौ सठ्ठ हाडी रही कुरलाईआ। बहत्तर नाड़ी उबले रत, रती रत ना कोए वखाईआ। तेरी जाणे ना कोई मित गत, गतमित
समझ कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा चले रथ, चारों कुंट अग्न लगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार साधां
सन्तां पाई नथ्थ, दहि दिशा रही भवाईआ। रवि शशि सूरज चन्न कोह करोड़ी चल चल गए थक्क, तेरा आर पार नज़र
किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किरपा कर पुरख समरथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। साचा मार्ग धुरदरगाही
इक्को दस्स, रहिबर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर,
जुग चौकड़ी तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा ध्यान श्री भगवन्त, चारे जुग रहे लगाईआ। तेरा माण साचे कन्त, चारे वरन रहे
रखाईआ। तेरा गाण महिमा अगणत, चारे वेद करन पढ़ाईआ। तेरा निशान चारे कुण्ट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सोभा
पाईआ। किरपा कर श्री भगवान निवासी सचखण्ड बैकुण्ठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
११ आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कलयुग सारे झोली ख़ाली रहे वखाईआ। ख़ाली वेख सब दी झोली, पारब्रह्म
प्रभ आपणी अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश बण के गए गोली, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ।
१६ तेरे नाम दी दस्सदे गए अगम्मी बोली, धुर दा साचा राग सुणाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत नईया डोली,
किनारा नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया घर घर खेले होली, लाल गुलाला रंग ना कोए चढ़ाईआ। पंडत पांधे मुल्लां
शेख़ मुसायक अञ्जील कुराना वेद पुराणा पत्रे रहे फोली, तेरा पड़दा सके ना कोए उठाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल
दीन दयाल साचे कंडे आपे तोली, नाम कंडा इक वखाईआ। तेरी जोत निरँकार निराकार निरगुण सरगुण बणे वचोली, दो
जहानां वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर तेरे आस रखाईआ।
चार जुग मंगण दात, दाते दानी तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साडा दे दे गए साथ, सगला संग निभाईआ।
कलम छाही दवात लिख के गए तेरा नाम अनाथां नाथ, काग़ज़ वंडण वंड वंडाईआ। पुरख अकाल सर्ब स्वामी परवरदिगार
रखणा याद, बेपरवाह फेरा पाईआ। जिस ने रचना रची आदि, जो खेल करे ब्रह्माद, जिस दा वज्जे धुर दा नाद, शब्द
अनादी राग सुणाईआ। जो दो जहान सदा विस्माद, पुरीआं लोआं देवे दाद, ब्रह्मण्ड खण्ड रचे काज, करनी करता आप
कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे तेरा नूर नज़री आईआ।

चार जुग कहिण प्रभ तेरे गोले, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम सारे होए पोले, वस्त हथ्थ नजर कोए ना आईआ। बिन तेरे लोकमात रहे डोले, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ना कोई चुकावे पड़दे ओहले, नूरी मुख ना कोए वखाईआ। गुर अवतार कर कर गए कौले, लेखा लिख्त भविक्ख्त जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल अन्तिम प्रगट होवे उपर धौले, धरनी धरत दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकारा भार करे हौले, साचा मार्ग इक समझाईआ। भाग लगाए सच मनारे काया चोले, चोली काया दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर ठांडा नज़री आईआ। चार जुग तैनूं रहे उडीक, बेअन्त बेअन्त गोसाईंआ। कलयुग अन्तिम आई तारीख, तरीका आपणा दे समझाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे मंगदे गए भीख, अलख निरँजण अलख जगाया। तेरे नाम दा गाउँदे गए गीत, जगत संदेसा राग अल्लाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी चलाउँदे गए रीत, धुर दा हुक्म सीस टिकाया। निरगुण सरगुण बणदे गए मीत, सज्जण सुहेला नाउँ प्रगटाया। अन्तिम तेरी रखदे गए उडीक, जुग जुग इक्को आस तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाया। चार जुग कहिण प्रभ चौकड़ी रही लँघ, नव नौ चार दए दुहाईआ। सुहञ्जणी दिसे ना सेज पलँघ, सिँघासण सोभा कोए ना पाईआ। लख चुरासी होई रंड, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। गीत ना गाए कोई छन्द, सोहला राग ना कोए अल्लाईआ। मंज़ल मुक्के ना किसे पन्ध, चोटी चढ़ तेरा दरस कोए ना पाईआ। जगत अन्धेरा होया अन्ध, जल्वा नूर ना कोए दरसाईआ। तेरे दर ते इक्को मंग, भिखक भिच्छया दे वरताईआ। दया कर सूरे सरबँग, मेहरवान हो सहाईआ। कलयुग अन्त वेख भुक्ख नंग, ग़रीब निमाणयां रही सताईआ। राज राजान देवण डंन, डंका सच ना कोए सुणाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात कोई ना ढावे कंध, शरअ शरीअत करे जगत लड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जिह्वा कहि के गए बत्ती दन्द, कलमा नबी रसूल सुणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे शाह पातशाह सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई देवे इक अनन्द, अनन्द आत्म इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, सब दा लेखा दे मुकाईआ। सब दा लेखा करदे पूर, प्रभ तेरी पूरी आस रखाईआ। कलयुग अन्तिम वेख ज़रूर, ज़रूरत तेरी नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे चले गए दूर, पिच्छा तक्कण कोए ना आईआ। कलयुग पाया कूड़ फ़तूर, फ़तवा सब दे उते लगाईआ। तेरे भगत होए मजबूर, मज़बूरी सके ना कोए कटाईआ। श्री भगवान क्यों लुक्कयों बण मफ़रूर, सचखण्ड आपणा मुख छुपाईआ। नज़री आ हाजर हज़ूर, हज़रत तेरा नूर नज़री आईआ। दर दरवेश खड़े मज़दूर,

दोए जोड़ मंगण चाईं चाईंआ। तूं साहिब सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। कलयुग नाता तोड़ कूड़ो कूड़, जूठ झूठ पन्ध मुकाईआ । त्रैगुण अग्नी तपे वेख तन्दूर, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, अन्तिम आ के हो सहाईआ। अन्तिम आ के हो सहायक, हरि जू साहिब सच्चे सुल्ताना। आदि जुगादी धुर दे नायक, लेख चुका दो जहानां। नित नवित्त सदा सुखदायक, आत्म परमात्म दे ब्रह्म ज्ञाना। शब्द संदेसा दे हदाइत, कलमा इलाही सुणा तराना। इक्को तेरे दर तेरी हमायत, नाता छुटया जीव जहानां। आपणे नाँ दी कर ना कोए किफ़ायत, मेहरवान मेहरवान मेहरवान भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, महाबली नौजवाना। महाबली प्रभ नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। सच संदेसा दे श्री भगवान, धुरदरगाही आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करो ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। तिन्न पंज प्रभ वेखे आण, लहिणा देणा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो दे के गए ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान फोल फुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत सिदक सबूरी वेखे सर्ब ईमान, धर्म अधर्म पड़दा दए उठाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा देवे आण, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। वरन बरन ऊँच नीच राउ रंक इक हो जाण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवे दान, साची झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या देवे आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम सतिजुग देवे दात, सति सतिवादी राह वखाइंदा। सृष्ट सबाई करे इक्को जाप, साचा मन्त्र इक समझाइंदा। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण अग्नी तत बुझाइंदा। पतित पुनीत करे पाक, दुरमति मैल धवाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खोल्ह वखाए ताक, बजर कपाटी पड़दा लाहइंदा। आत्म परमात्म देवे साथ, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण जोत जगाए ललाट, जोती नूर नूर रुशनाइंदा। नाम सुणाए अनहद नाद, धुर दा रागी राग अल्हाइंदा। सुरती शब्द कर विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा। लेखा जाण बोध अगाध, साचा पंडत इक हो जाइंदा। मेल मिलावा माधव माध, मोहणी आपणा रंग रंगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर श्री भगवान सुणे फ़रियाद, लेखा सब दा फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्तिम धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। धुर दी धार दस्से एक, एकँकारा दया कमाईआ। पुरख अकाल साची टेक, सति पुरख निरँजण इक्को नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भेख, जूठ झूठ दए खपाईआ। सतिजुग लिखे तेरा लेख, कलयुग लेखा झोली

पाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। रुत्त बसन्ती मौले चेत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जन भगतां नाल खेले खेड, वड खिलाड़ी बेपरवाहीआ। धुर संदेसा इक्को भेज, भजन बंदगी इक जणाईआ। रल मिल माणे साची सेज, सखी सहेली आपणे अंग लगाईआ। जोती जलवा देवे तेज, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जिस दा भेत ना पाया चार वेद, शास्त्र सिमरत कहिण कुछ ना पाईआ। जिस दी महिमा करे जगत कतेब, कुतबख़ाना सिफ्त सालाहीआ। सो कलयुग अन्त मेटे कूड़ फ़रेब, फ़ैसला इक्को वार कराईआ। सतिजुग साचे करे सच बंधेज, बंदगी इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दी साची धारा, आप चलाए हरि निरँकारा, सतिजुग उपजाए सुत दुलारा, कलयुग करे पार किनारा, मँझधारा आप रुढ़ाईआ। सुण संदेसा धुर फ़रमाण, घर घर खुशी मनाईआ। किरपा करे श्री भगवान, भगवन आपे होए सहाईआ। निरगुण नूर करे प्रधान, जोती जाता रूप वटाईआ। लख चुरासी बण के काहन, घनईया आपणा वेस वटाईआ। सुरती शब्दी देवे दान, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, कोझे कमल्यां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। जुग जुग भेव चुकाए नर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खोल्हे दर, सतिजुग साचा मात टिकाईआ। सृष्ट सबाई इक्को घर, ग़रीब निवाजा दए वखाईआ। वरन बरन नहावे इक्को सर, सरोवर इक्को सोभा पाईआ। आत्म परमात्म ढोला सारे लैण पढ़, शरअ शरीअत वंड ना कोए वखाईआ। भाग लगाए काया गढ़, मिले माण बंक मन्दिर सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा सच महल्ले चढ़, सच संदेसा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म हुक्मरान, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी मिटे दुकान, माया ममता मोह चुकाईआ। सृष्ट सबाई पाए एका आण, धुर दा हुक्म आप मनाईआ। नव नौ दिसे ना कोई बेईमान, बेवा रूप ना रहे लोकाईआ। सच दसाए इक ईमान, धर्म इक्को इक दृढ़ाईआ। शब्द चढ़ा धुर बबाण, ब्रह्मण्ड खण्ड फिराईआ। आपणी देवे आप पहचान, मूर्ख मुग्ध अञ्याण आपणे गले लगाईआ। नाता तोड़ जगत शैतान, पंच विकारा दए रुढ़ाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर मकान, घर मक्का काअबा मन्दिर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। कलयुग अन्तिम भगतन भेव, अभेदा आप जणाईआ। दाता दातार वड देवी देव, देवत सुर आप समझाईआ। सचखण्ड निवासी सदा निहकेव, निहचल बैठा डेरा लाईआ। नित नवित्त जन भगतां करे साची सेव, बण सेवक वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाए जागरत जुगत, हरि करता आप जगाईआ। सृष्ट सबाई आपणी करनी रही भुगत, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। नज़र ना आए अकाल मूर्त, सूरत सच ना कोए वखाईआ। सुणे नाम ना कोए तूरत, नाद धुन ना कोए जणाईआ। नाता जुड़या क्रिया कूड़ी कूड़त, मूर्ख मूढ़ रूप वटाईआ। बिन सतिगुर पूरे शब्द स्वामी आसा करे ना कोई पूरत, सांतक सति ना कोए वरताईआ। पुरख अकाल शब्दी शब्द सति सति करे महूरत, महिमा अकथ कथ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सर्ब कला भरपूरत, भरपूरी भाण्डे ख़ाली आप भराईआ।

*** १३ मग्घर २०२० बिक्रमी जोगिन्दर सिंघ दे गृह फ़तिह गढ़ ज़िला हुशियार पुर ***

पुरख अकाल धुर दी रीत, श्री भगवान खेल कराइंदा। शब्द स्वामी सतिगुर अतीत, निरगुण निरवैर धार चलाइंदा। करे खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां दस्से अवल्लड़ी प्रीत, प्रीतम आपणा मेल मिलाइंदा। नाम सुणाए सुहागी गीत, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। नाता तोड़ हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाइंदा। साची देवे सति बख़्शीश, बख़्शश इक्को झोली पाइंदा। गुरमुखां भण्डारा दे के धुर दी भीख, भिच्छया आपणी आप वरताइंदा। मन वासना बदले नीत, बुध बबेक आप कराइंदा। घर मन्दिर वखाए ठाकर दुआर मसीत, शिवदुआला मट्ठ इक्को नज़री आइंदा। दूर दुराडा नज़र आए नज़दीक, नेत्र नैण अक्ख इक खुल्ह्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। पुरख अकाल वेस अवल्लड़ा, नित नवित्त लए प्रगटाईआ। आदि पुरख इक इकल्लड़ा, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ। जोती दीपक आपे बलड़ा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटलड़ा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। शब्द संदेस जन भगतां घल्लड़ा, धुर दी धार आप जणाईआ। निरवैर हो फड़ाए पलड़ा, पल्लू आपणी गंढु बन्ह्हाईआ। सच सिंघासण आत्म सेजा मलड़ा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भाग लगाए काया माटी चम्मड़ा, पंज तत देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन लए जगाईआ। पुरख अकाल सूरा सरबँग, शाह पातशाह वड्डा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी नाम निधान वजाए मृदंग, दो जहानां राग सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लँघ, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। लख चुरासी आत्म सेजा वेख पलँघ, दर दर घर घर फोल फुलाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले प्रभ चरण प्रीती रहे मंग, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। दूई

१५ १६

द्वैती घर घर दिसे कंध, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। आत्म परमात्म मिल के कोई ना गाए छन्द, सोहँ रूप ना कोए वटाईआ। गुरमुख मंगण इक अनन्द, अनन्द आत्म विच रसाईआ। खुशी करे बंद बंद, श्री भगवान जिस आपणी बंदगी दए जणाईआ। जगत रंडेपा तोड़ रंड, कन्त सुहागी मेल मिलाईआ। अंगीकार लगाए अंग, अंगण आपणे लए बहाईआ। गुरसिख लोकमात चाढ़े चन्द, रवि शशि दोवें नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी हरि भगतां लए मिलाईआ। पुरख अकाल चौकड़ी जुग, जुग करता खेल खलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग औध जाए मुक्क, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। निरगुण निरवैर दीन दयाल सति स्वामी प्रगट होवे जो बैठा लुक, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। किरपा कर प्रेम प्रीती अन्दर भगत सुहेले लए चुक्क, शब्दी गोद आप बठाइंदा। उजल करे मात मुख, मुख मुखड़ा आप सुहाइंदा। जन्म कर्म दा मेट दुःख, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा। जन भगतां दया कमाए एक, एकँकार दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लए वेख, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। शब्द अगम्मी देवे भेत, चौदां विद्या ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म दस्से हेत, साची रीती इक जणाईआ। हरिजन सुंञा होवे कदी ना खेत, मेहरबान वेखे नज़र उठाईआ। रुत सुहञ्जणी मौले चेत, पतझड़ नज़र कोए ना आईआ। हरि सन्त सुहेले प्रभ सरन सरनाई रहे खेड, दूजा दर ना कोए वखाईआ। हुक्मे अन्दर देवे भेज, माणस विच्चों माणस रूप वटाईआ। आत्म परमात्म सेजा माणे आप सुहञ्जणी सेज, सोभावन्त आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत प्रीती इक दरसाईआ। जन भगत प्रीती आत्म नाता, अन्तर आपणी बूझ बुझाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी धार चलाइंदा। हो सहाई नाथ अनाथां, दीन दयाल दीनन आपणे गले लगाइंदा। नाम निधान देवे दाता, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम मेट अन्धेरी राता, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। उत्तम करे गुरमुख जाता, ज़ात पात डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस आपणा रंग वखाइंदा। भगत भगवान चाढ़े रंग, रंग रंगीला वड वड्याईआ। सति सतिवादी देवे सति अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, निहकर्मी आपणे नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणाए सच्चा छन्द, संसा रोग लैणा मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे तृष्ना गंग, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जन भगत दुआर जन भगतां अन्दर लँघ, दस्म दवारी कुण्डा लाहीआ। साख्यात हो के कहे आत्म परमात्म दान मंग, देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी देवणहार दातार, दयानिध ठाकर इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे चार, चारों कुण्ट फोल फुलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी कार आप कमाइंदा। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाइंदा। कलमा नबी रसूल बोल जैकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप पढ़ाइंदा। कलम शाही कर के ख़बरदार, काग़ज़ आपणे गंढु पवाइंदा। रसना जिह्वा दे आधार, बत्ती दन्द सिफ्त अलाइंदा। निरगुण सरगुण खोल्ह किवाड़, भेद अभेदा आप जणाइंदा। जन भगतां कर इक प्यार, प्रीती आपणी नाल बंधाइंदा। तिस भगत दी सिफ्त करे संसार, जिस हरि जू आपणा मेल मिलाइंदा। खाणी बाणी जिस दी करे पुकार, जो हरिमन्दिर बहि बहि हरि हरि दर्शन पाइंदा। गुरमुख गुरसिख मौका मिल्या अन्तिम वार, लोकमात दया कमाइंदा। कल कल्की लए अवतार, नर निरँकार वेख वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों करे पार, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। सच दवारा दए वखाल, जिस घर आपणा आसण लाइंदा। निर्मल दीप जोत जगे बेमिसाल, कोटन कोटि शमा नैण शरमाइंदा। सच दुआर नज़री आए इक सुल्तान, शाह पातशाह इक्को डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाया आपणा घर, सो गुरमुख मिल मिल खुशी मनाइंदा। भगतां उपर दया कर, दीन दयाल दया कमाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, मन वासना दिती मिटाईआ। सुरत सुआणी शब्दी पढ़, साचा राह जणाईआ। पंच विकारा जाए झड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी जाए सड़, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। गुरमुख वेखे परत आपणा घर, घर घर विच्चों नज़री आईआ। जिस सेजा पुरख अकाल बैठा चढ़, सो सोभावन्त सुहागण आपणे दर खुशी मनाईआ। इक्को ढोला रही पढ़, तूं मेरा मैं तेरा दूजा माही नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे पल्लू ल्या फड़, दरगाह साची खुशी मनाईआ। जीउदयां जग ना जाए मर, मरयां जन्म ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां देवे नाम वर, तिन्हा लेखे दए चुकाईआ। गुरमुख मिल्या पारब्रह्म, घर वज्जे नाम वधाईआ। लहिणा चुक्कया जन्म कर्म, वरन बरन डेरा ढाहीआ। दो जहानां देवे साची सरन, एथे ओथे होवे सहाईआ। धुरदरगाही आया फड़न, नीकन नीका फेरा पाईआ। भगतां दवारे साचे पौड़े आया चढ़न, काया मन्दिर वेख वखाईआ। सोहँ ढोला आया पढ़न, आदि जुगादि राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस प्रीती इक लगाईआ। गुरमुख प्रीती जाए लग्ग, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। किरपा कर सूरा सरबग्ग, सो साहिब आपणा मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया बुझा अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाइंदा। घर काया काअबा करा हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाइंदा। शब्द नाम सुणाए

अनहद, धुर दा रागी राग अलाइंदा। अमृत प्या अगम्मी मदि, सच सरूर इक बणाइंदा। जगत दवारा पार करा हद्द, गृह
आपणा मेल मिलाइंदा। जन भगत कूड़ी सृष्टी जाए छड्ड, सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। लख चुरासी नालों होवे अड्ड,
हरि मन्दिर बहि बहि खुशी मनाइंदा। जिस दी खाणी बाणी गावे छन्द, सो गुरमुख हरि जू इक्को भाइंदा। जिस दे मिलयां
धुर अनन्द, सच्चा रस इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक जणाइंदा। सच
प्रीती जोड़ भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। साचा मन्त्र दस्स मकान, घर घर विच करे रुशनाईआ। अमृत देवे
पीण खाण, जाम इक्को वार प्याईआ। आवण जावण जम की चुकाए कान, राए धर्म ना दए सजाईआ। शब्द सरूपी दए
बबान, गुरमुख सज्जण आप चढ़ाईआ। लै के जाए सचखण्ड दुआर नौजवान, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। विष्न
ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द सीस सर्ब झुकाण, निउँ निउँ लागे पाईआ। जिस पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल
दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार मिल्या आण, तिस मुकामे हक़ इक तौफ़ीक नज़र खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम जन भगतां देवे पिछला हक़, चार जुग दा लेखा वेख पुरख समरथ, समरथ
आपणी दया कमाईआ। भगत जनां प्रभ मेल स्वामी, हरि सज्जण आप मिलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल महानी, ख़ालक
१८ ख़लक समझ किसे ना आईआ। लख चुरासी बीती चार जुग दी पढ़ो कहाणी, गुरमुख हाज़र हज़ूर वेख खुशी मनाईआ। १८
१६ जिस दी महिमा बोध अगाध सिफ्त करे अगम्मी बाणी, सो सतिगुर बाण निराला तीर इक चलाईआ। जिस नूं सजदा करदे १६
नेत्र रो रो अठसठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी नैण शरमाईआ। जिस दर भिच्छया मंगदे गुर अवतार
पीर पैगम्बर चरण विटहों जाण कुरबानी, तन माटी काया ख़ाकी भेंट चढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी
दस्सदे गए निशानी, वाक भविक्खत जगत सुणाईआ। जिस दे दर मिले पद निरबानी, निरबाण पद इक्को चरण कँवल
वड्याईआ। सो पुरख अकाल साहिब सतिगुर लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले भगत करे कुरबानी, परवाना आपणा नाम
फड़ाईआ। कोई समझ ना सके पंडत पांधा मुल्लां शेख़ जगत विद्वानी, आकल अक्ल किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला एका थाईंआ। हरिजन मेला थान थनंतर, काया बंक
दए वड्याईआ। घर वखाए गगन गगनंतर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। जन्म कर्म बुझा बसन्तर, कर्म कांड डेरा ढाहीआ।
तूं मेरा मैं तेरा सच सुणा मन्त्र, सोहँ करे नाम पढ़ाईआ। मानस जन्म बणा बणतर, आप आपणी गोद उठाईआ। जिस
दा रूप हथ्थ ना आया धनवन्तर, सो रोग सोग आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

जिस जन देवे आपणा वर, तिस प्रीती आप बंधाईआ। बिन सतिगुर किरपा ना उपजे प्रीत, प्रेम नज़र किते ना आईआ। डूंग्घा राज गहर गम्भीर हर घट भीतर भीत, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। गुरमुख विरले प्रभ चरणी झुके सीस, लख चुरासी बैठी मुख भवाईआ। हरिजन विरला जाणे सच हदीस, जिस कलमा नबी आप समझाईआ। सो सन्त सुहेला होए अतीत, जिस मेला मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख गुरसिख लए तराईआ। गुरमुख गुरसिख तारे आप, हरि सतिगुर दया कमाईआ। जन्म कर्म दा मेट पाप, पतित पुनीत बणाईआ। सच सुच्च दा इक्को जाप, धुर दा राग समझाईआ। काया माटी कर के पाक, आपणा रंग रंगाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, ऊँच नीच दए वड्याईआ। आत्म परमात्म दस्से सज्जण साक, सगला संग वखाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, घर दीपक जोत करे रुशनाईआ। अमृत बूँद प्याए स्वांत, ठांडी ठार आप वहाईआ। अनहद नाद वजाए साज, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। कर किरपा रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सृष्टी सुत्ती गुरमुख आप उठाए मार आवाज, बिन कन्नां अन्दरे अन्दर सुणाईआ। साचे बेड़े चाढ़ जहाज, चप्पू आपणा नाम लगाईआ। कलयुग अन्तिम सतिजुग काज, हरि करता आप वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तेरा सिमरन पूजा इक्को पाठ, प्रभ सरन सच्ची सरनाईआ। सजदा सीस झुके निमाज, परवरदिगार नज़री आईआ। तेरा खेड़ा रहे अबाद, प्रभ देवणहार वड्याईआ। जुग जन्म दी पिछली याद, बेपरवाह भुल्ल ना जाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों काढ, साची माला मणका नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे आत्म प्रीती साचा दान, सो गुरमुख प्रीती जगत नालों बदलाईआ।

गाए बैल ना मरे मज्झ, मजबूरी सब दी पूर कराईआ। घर घर सीर दुद्ध पीओ रज्ज, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। खुरली किल्ला जाए सज, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल रखे दे कर हथ्थ, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। सुण पुकार देवे वथ, झोली इक भराईआ। ख़ाली होवे ना किसे दा हथ्थ, दर दर घर घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दुखियां दुःख दलिद्रीआं दलिद्र दोवें दए मिटाईआ।

* १३ मग्घर २०२० बिक्रमी भगवान सिँघ दे गृह उरमुड़ ज़िला हुश्यिारपुर *

२०

१६

शाह पातशाह शाह सुल्तान, शहिनशाह तेरी वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। हरि पुरख निरँजण हुक्मरान, धुर फ़रमाना तेरा इक्को नज़री आईआ। एकँकार राज राजान, भूपत भूप नूर इलाहीआ। आदि निरँजण जोत महान, जोती जाता इक्को नज़री आईआ। अबिनाशी करते तेरा खेल महान, समझ सके कोए ना राईआ। श्री भगवान तेरा उच्च मकान, नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। पारब्रह्म तेरा बोध अगाध ज्ञान, कर सके ना कोए पढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, योधा सूरबीर अख्वाईआ। आदि जुगादि खेले खेल वड बलवान, बेअन्त आपणी धार चलाईआ। धुर दी इच्छया कर बलवान, साची भिच्छया झोली पाईआ। निरगुण निरगुण करे खेल आप भगवान, भगवन आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप प्रगटाईआ। साची धार श्री भगवन्त, सो सतिगुर आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल बेअन्त, महिमा कथ सके ना कोए राईआ। एकँकार आदि जुगादि धुर दा कन्त, सति सतिवादी नज़री आईआ। आदि निरँजण नूर महंत, दो जहान करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दा लेखा दए जणाईआ। श्री भगवान वेस धरे अनन्त, अकल कलधारी आपणी कल जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सोभावन्त, सच दवारे बैठा आसण लाईआ। आपणी इच्छया खेले खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरगुण बणाए बणत, नार कन्त रूप वटाईआ। सेज सुहञ्जणी चाढ़े रंग बसन्त, रूप रेख नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। सचखण्ड दवारा श्री भगवान, सतिपुरख निरँजण आप सुहाइंदा। जोती जाता खेल महान, हरि करता आप वखाइंदा। महल अटल उच्च मकान, दरगाह साची सोभा पाइंदा। मुकामे हक़ हक़ निशान लाशरीक आप झुलाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। भूपत भूप बण राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। धुर संदेसा पाए आण, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड इक्को डेरा लाइंदा। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण, सो सतिगुर आप लगाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल खेले खेल आप अबिनाशन, अबिनाशी आपणी कल जणाईआ। निरगुण निरगुण बण के साथन, सगला संग आप रखाईआ। दरगाह साची वेखे खेल तमाशन, मण्डल आपणी रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उच्च महल्ले इक्को नूर करे रुशनाईआ। सच महल नूर उज्यारा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। इक इकल्ला एकँकारा, अकल कलधारी बैठा सोभा पाईआ। दो जहानां

बण वणजारा, त्रै पंज बैठा हट्ट चलाईआ। लख चुरासी खेल न्यारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अनाद बोल जैकारा, धुर दी धारा आप प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, चरण कँवल दए सरनाईआ। नाम निधान कर प्यारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट आपणा डेरा लाईआ। घट घट आपणा डेरा ला, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप प्रगटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा । त्रैगुण माया झोली पा, पंचम नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडा, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण घाड़त लए घड़ा, बण ठठियारा खेल खिलाइंदा। भेद अभेदा आप जणा, अनभव आपणी धार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे मन्दिर चढ़, दर घर साचे सोभा पाइंदा । सचखण्ड दवारे एकँकार, सो साहिब आसण लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। धुर संदेसा इक्को वार, आदि पुरख आप जणाईआ। रचना रच रच संसार, साची सेवा इक दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण दे अधार, पंज तत मेला सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी खेल करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर वंड कलयुग नाल मिलाईआ। धुर दा लेखा कर त्यार, ब्रह्मा वेता कर पढ़ाईआ। चारे वेदां दे अधार, चारे जुग करे रुशनाईआ। चारे खाणी बोल जैकार, चारे बाणी लए समझाईआ। चारे कुण्ट कर के ख़बरदार, चार वरन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी हरि निरँकारा, हरि करता आप कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल न्यारा, निरगुण सरगुण आप रखाइंदा। पंज तत अन्दर हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। नाउँ रख गुर अवतारा, धुर संदेसा राग अलाहइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सलाहइंदा। लेख लेख लिख्त अपारा, कलम शाही अंक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड निवासी भेव अवल्ला, समझ किसे ना आईआ। नर निरँकार इक अकल्ला, एकँकार खेल रचाईआ । सचखण्ड वसाए धुर महल्ला, दरगाह साची डेरा लाईआ। जोत दीपक आपे बला, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। शब्दी सुत फड़ाया पल्ला, विष्न ब्रह्मा शिव करी कुड़माईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपे घल्ला, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ । धाम वखाया उच्च अटला, निरवैर निरँकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्को इक सुहाईआ। सचखण्ड दवारे चढ़ भगवान, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, ख़ालक ख़लक आप वखाईआ। दात दे दे धुर दा दान, तेई अवतार हुक्म मनाईआ। अठारां भगत कर प्रधान, नाम अमोलक इक समझाईआ।

ईसा मूसा मुहम्मद दे कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द कर परवान, मन्त्र सति सति जणाईआ। डंका वज्जे दो जहान, फ़तह आपणे हथ्थ रखाईआ। लेख लिखा शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान गंढु पवाईआ। अञ्जील कुरान दस्स ईमान, सिदक सबूरी इक समझाईआ। धुर दी बाणी ला के बाण, लख चुरासी अणयाला तीर चलाईआ। आत्म परमात्म दे के ब्रह्म ज्ञान, लख चुरासी करी पढ़ाईआ। घट घट अन्दर नज़री आए एकँकारा नौजवान, सति सरूपी बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे वड़, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे जुग चार, हरि करता वड वड्याईआ। नाम संदेस दे गुरू अवतार, लोकमात दिती वड्याईआ। लिख लिख गए धुर दी धार, नाता जोड़ कलम शाहीआ। उच्ची कूक गए पुकार, जीव जंत जगत समझाईआ। आत्म परमात्म करो प्यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए अधार, घर मेला सहिज सुभाईआ। कूड़ी क्रिया कोई ना होए ख्वार, पंच विकार डेरा ढाहीआ। इक्को बोलो नाम जैकार, जै जै कार घर साचे राग अलाहीआ। सुरत सुआणी शब्द हाणी मिल के गाए मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक अलाहीआ। मुरीद मुर्शद करे दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, लाशरीक नूर खुदाईआ। आदि जुगादी सांझा यार, सगला संग निभाईआ। रसना जिह्वा बुद्धि करो विचार, मति आपणी आपणे नाल रलाईआ। मन वासना देवो मार, नौ दवारे खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी धुर दा हुक्म आप वरताईआ। धुर दा हुक्म गुरू अवतार, पीर पैगम्बर गए मात सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखार, अट्ठ दस भेव झुकाईआ। तीस बतीस करे हाहाकार, राग छत्तीस रहे कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा गुर का शब्द करे ख़बरदार, धुर संदेसा इक सुणाईआ। ग़फलत विच ना सौं होवो बेदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। काया मन्दिर वेखो घर विच घर सच्ची धर्मसाल, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल करो दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। माणस जन्म ना आए हार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भरमे भुलो ना जीव गंवार, नानक गोबिन्द राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद लिख लिख कलमा गए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज पावे सार, टिल्ले पर्बत समुंद सागर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी इक्को हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी दे फ़रमान, लोकमात राह चलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल कर महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाया। नाम संदेसा दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाया। बोध अगाध शब्द नाद

आत्म धुन्कान, अनहद नादी नाद सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण धुर दे घर, लख चुरासी घर घर फोल फुलाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर संदेसा दे दे गए थक्क, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। मूर्ख मुग्ध अंझाणा कोलों गए अक्क, आप आपणा पल्लू गए छुड़ाईआ। इक्को इक सच संदेसा गए दस्स, धुर फ़रमान आप जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होए पुरख समरथ, निहकलंक नाउँ रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त शब्द डोरी पाए नथ्थ, तन्दी तार आपणे हथ्थ रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया विच्चों कोई बाहर ना सके नस्स, अन्दरे अन्दर बंद कराईआ। वेखणहारा घट घट, गृह गृह पड़दा दए उठाईआ। हकीकत जाणे आप हक़, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के गए पुकार, लोकमात डंक वजाईआ। कलयुग अन्त कल कल्की लए अवतार, कल आपणे हथ्थ रखाईआ। लहिणा देणा मंगे जुग चौकड़ी चार, नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख सर्ब खुल्हाईआ। गुर अवतार दरस दे सद्दे आपणी वार, हुक्म इक्को इक जणाईआ। लेखा मंगे धुर दरबार, पर्दा उहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि शाह सुल्ताना, हुक्मरान इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी पहरे बाना, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक तराना, धुर दा राग आप अल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे विच जहाना, नव नौ आपणा खेल रचाइंदा। लख चुरासी विच्चों भगत भगवन्त कढ्ढे बाल निधाना, बचपन आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे इक्को आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड दवारे हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां खोल्हे अक्ख, नेत्र लोचण पर्दा रिहा उठाईआ। उठो वेखो लोकमात लओ तक्क, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कलयुग जीव माया ममता कूड़ी क्रिया गए फस, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नौ दवारे मानण रस, आत्म रस हथ्थ किसे ना आईआ। रसना जिह्वा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गुरू ग्रन्थ साध सन्त गाउँदे जस, अन्दर वड़ के प्रभ तेरा दरस कोए ना पाईआ। माया कारण करन तेरा पाठ, पूजा लै लै थक्की जगत लोकाईआ। नेत्र रोवे तीर्थ तट, जमना सुरस्ती गंगा गुदावरी नैणा नीर वहाईआ। पारब्रह्म प्रभ साडी रखे कोई ना पत, नारी पुरुष नंगे तारीआं लाईआ। माँ पुत्तर इक दूजे वल रहे तक्क, नेत्र अक्ख ना किसे शरमाईआ। जो गुर अवतार पीर पैगम्बर मार्ग गए दस्स, सो भुल्ले जीव शदाईआ। सज्जण सज्जणा

रहे ठग्ग, नार कन्त पई जुदाईआ। किसे नज़र ना आया निरगुण निराकार उपर शाह रग, घर साचे वज्जी ना कोई वधाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना कूड़ी लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। काया हुजरे सच महिराबे तेरा कोई ना करे हज्ज, मक्के काअबे फिरन वाहो दाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तैनूं रहे लभ्भ, घर विच घर खोजण कोए ना आईआ। सच दवारा प्रभ तेरा गए छड्ड, नाता जुड़या जगत लोकाईआ। प्रेम करन माटी चाम काया हड्ड, परमात्म आत्म तेरे नाल ना कोए प्रनाईआ। तेरी कोई ना बणे यद्द, पुरख अकाल पिता ना कोए मिलाईआ। सृष्ट सबाई चार कुण्ट दहि दिशा तेरे नालों होई अड्ड, कलयुग आपणा कूड़ महल रही वसाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर जोड़न हथ्थ, सजदा कर सरन सरनाई गए ढट्ठ, खाली झोली अड्ड इक्को मंग रहे मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, कलयुग अन्त ध्यान लगाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। गुर का शब्द सब नूं भुल्लया अनन्द, रस रसना होए हल्काईआ। बत्ती दन्द खा खा गंद, तेरा ढोला राग ना कोए सुणाईआ। बिन तेरे प्रभू सृष्ट सबाई होई रंड, जगत दुहागण दए दुहाईआ। सतिगुरू दवारे कोई ना गावे छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम इक्को दे वर, आप आपणे वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ आ के वेख, तेरी इक्को ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ा वध्या भेख, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। तेरा साध सन्त दस्से कोई ना भेत, तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। जगत वासना होया हेत, कूड़ी क्रिया रहे प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे इक अदेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निउँ निउँ सीस झुकाए गुर अवतार ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार बौहड़, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। लख चुरासी तेरा फल होया कौड़, तुध बिन मिट्ठा रस ना कोए भराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप साचे मन्दिर कोई ना लाए पौड़, मंज़ल चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात झगड़े अन्दर रहे दौड़, बण के पांधी राहीआ। मेहरवान वेख कर के गौर, गहर गम्भीर तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आखण बोल, इक आवाज़ उठाईआ। अबिनाशी करते लख चुरासी आ के तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। खाणी बाणी वज्जदा सुणे ना कोई ढोल, पढ़ पढ़ भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बिन तेरी किरपा अन्दर कोई ना जाए मौल, मौला रूप नज़र किसे ना आईआ। कर प्रकाश उपर धौल, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। नानक गोबिन्द नाल कीता कौल, मुहम्मद बैठा अक्ख उठाईआ। ईसा कहे मेरा परवरदिगार सद वसे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। वेद व्यास

दस्स के गया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ वजावे ढोल, मृदंगा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आ स्वामी साहिब सतिगुर पुरख अकाल अडोल, तेरी ओट सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल अलख, अलख अलखणे रहे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल नज़री आ सर्ब प्रतख, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। कलयुग दे सतिजुग हक़, कलयुग जीवां लहिणा देणा झोली पाईआ । सतिजुग सच्चा धरनी रख, धरत गोद सुहाईआ। भगत सुहेले कर प्रगट, आप आपणा नाम जपाईआ। सति धर्म दा खोल्ह हट्ट, वणज इक्को इक वखाईआ। धुरदरगाही चला रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। चौथे जुग सदी चौधवीं बीस बीसे सब दी होई बस्स, पिछले बसते रहे बंधाईआ। अग्गे दित्ता तैनूं हक़, तेरी हकीकत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, रक्षक तेरी इक सरनाईआ। सच्चा मार्ग धुर दा दस्स, चार वरन अठारां बरन कर इक्को पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, तुध बिन दाता नज़र कोए ना आईआ। दे दात हरि दातार, दयावान तेरी सरनाईआ। दर दरवेश खड़े भिखार, दोए जोड़ मंगण चाईं चाईंआ। सति पुरख निरँजण हो उज्यार, जोती जाते नूर धराईआ। सतिजुग साचा मार्ग दे वखाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। साचे भगत लै उठाल, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। तेरा नाउँ दीन दयाल, दीनां अनाथां गले लगाईआ। मुर्शद आ के वेख हाल, मुरीद रहे कुरलाईआ। जलवा नूर दे जलाल, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर ठांडे खुशी मनाईआ। घर ठांडा तेरा दरबारा, उच्च अथाह नज़री आईआ। दीआ बाती इक उज्यारा, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरारा, सो साहिब सोभा पाईआ। शब्द अनाद धुर जैकारा, अनरागी राग अल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, साचा मार्ग इक समझाईआ। गुर अवतार कर वणजारा, हट्ट लोकमात चलाईआ। पीर पैगम्बर दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी बण लिखारा, कातब आपणी कलम आपणे रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी करनहारा पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, डेरा ढाहीआ। सचखण्ड सुहावणहार दवारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण निरगुण करनहार प्यारा, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। दर सद्द गुर अवतारा, पीर पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग वेख की वरते वरतारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धूंआँधार सर्ब संसारा, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। राउ रंक करन हाहाकारा, साध सन्त देण दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ जगत सियासत बणया अखाड़ा, मनमति बैठी नाच नचाईआ। चारों कुण्ट आई हारा, जित बैठी मुख छुपाईआ । किरपा कर परवरदिगारा, बेपरवाह तेरी आस रखाईआ।

कल कल्की लै अवतारा, महाबली तेरे हथ्थ वड्याईआ। बिन मात पित हो उज्यारा, बूँद रक्त मेल ना कोए मिलाईआ। जोती नूर तेरा चमत्कारा, दो जहान करे रुशनाईआ। तेरा वज्जे नाम नग़ारा, लख चुरासी सोई सुरती दए जगाईआ। साचा नाम दस्स अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े अगम्मड़ी कार कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वसें बाहरा, सच दवारे सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम तुध बिन दिसे ना कोए सहारा, सिर हथ्थ समरथ ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं पार किनारा, चौदां विद्या दए दुहाईआ। चौदां विद्या करन पुकारा, चौदां लोक रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन पार ना कोए कराईआ। तुध बिन पार ना होए बेड़ा, कलयुग सागर रिहा रुढ़ाईआ। जीव जंत कहे मेरा मेरा, तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। कूड़ कुड़यारे पाया घेरा, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। पंच विकारे लाया डेरा, घर घर धूणी ताईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए नबेड़ा, सुरती शब्दी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। बिन तेरे पुरख अकाल उजड़या खेड़ा, वसदा घर नज़र कोए ना आईआ। मन कहे मैं सतिगुर तेरा, सति नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, वर दाते बेपरवाहीआ। दे वर मेरे भगवन्त, भगवन तेरी आस रखाईआ। आ के वेख लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगती सारे गए भुलाईआ। बिन गुरमुख नारी किसे ना मिले हरि जू कन्त, सुहञ्जणी सेज जगत लोकाईआ। भेव कोई ना जाणे बोध अगाधा पंडत, तेरा पर्दा सके ना कोए उठाईआ। दर दरवेश भिखारी दर दे मंगत, इक्को ओट इक्को आस इक्को ध्यान लगाईआ। श्री भगवान मन्न लै मिन्नत, मेहरवान मेहर अक्ख उठाईआ। साडी कोई ना रही हिम्मत, तेरा वेला अन्तिम आईआ। तेरे नाम दी कोई ना पावे कीमत, सौदे हट्टो हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, कलयुग अन्तिम लेख चुकाईआ। कलयुग लेखा जाए चुक, प्रभ तेरे अग्गे अरजोईआ। कूड़ा पैंडा जाए मुक, सच सुच्च मिले ढोईआ। माया ममता मिटे भुक्ख, तृष्ना कोए रहिण ना पाईआ। सफ़ल करा जननी कुक्ख, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। भगत भगवान गोदी चुक्क, मात पित हो के नज़री आईआ। हरिजन बूटा जाए ना सुक्क, अमृत सिंच हरा कराईआ। आपणी धारों निरगुण उठ, तैनूं जन्मे कोए ना माईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे पुत्त, पोतरे गुरसिख गोद सुहाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां कलयुग अन्तिम आ के पुछ, जो तेरा बैठे ध्यान लगाईआ। अन्तिम वेला गया ढुक, रुत्त सुहञ्जणी नैण उठाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, काया बुत्त दए दुहाईआ। तुध बिन पंज तत कोई ना मौले रुत्त, कँवल फुल नाभ ना कोए वड्याईआ। आवण जावण पतित पावण गेड़ा मुका उलटा रुख, मात गर्भ दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरीआं सुखणा रहे सुख, आपणी प्रेम प्रीती भेंट चढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे हरि निरँकारे चढ़ के बैठों उच्ची चोट, तेरी चोटी नज़र किसे ना आईआ। तेरे भगत श्री भगवान आहलणयों डिगे बोट, तुध बिन गले ना कोए लगाईआ। कर किरपा आ के कलयुग जीवां विच्चों कढु खोट, खोटी वासना दे गंवाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर शब्द राग सुणाईआ। बंद किवाड़े खोल्ह सोत, सुरती आपणे नाल रलाईआ। आत्म उते हो मोहत, परमात्म मुहब्बत आपणी इक समझाईआ। तेरी कोई सोच ना सके सोच, कर कर मिन्नत सारे बैठे ध्यान लगाईआ। सचखण्ड दवारे वेखीए तेरी मौज, किस बिध आपणा घर वसाईआ। कलयुग किसे हथ्थ ना आएयों कीत्यां खोज, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। पारब्रह्म तेरे अचरज चोज, चोजी प्रीतम तेरी बेपरवाहीआ। तेरे भगत तेरा दर्शन मंगण रोज़, अठ्ठे पहर तेरे विच समाईआ। तेरे प्यार दा खाणा पीणा मंगण भोज, तेरी प्रीती वस्त्र ओढण नज़री आईआ। तेरे दर्शन नूं अन्तर अक्ख रही लोच, बाहर दो लोचण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा मेल मिलाईआ। भगत जन जन रहे कूक, हाहाकार मचाईआ। फिरी दरोही चार कूट, यामबीन तेरी सरनाईआ। लग्गी अग्ग तन कलबूत, काया कब्रिस्तान नज़री आईआ । तेरा देवे ना कोई सबूत, साख्यात मेल ना कोए मिलाईआ। सारे कहिण वसे काया पंज तत भूत, भेद सके ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग सारे होए ऊत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण तेरा राह नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर स्वामी किरपा कर आप महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। दूर दुराडे हाज़र हो मौज़ूद, निरगुण पांधी पन्ध मुकाईआ। तेरा वेखीए सच अरूज, अर्श कुर्श डेरा ढाहीआ। आपणे चरण रख महफ़ूज़, महिफल आपणी दे वखाईआ। तेरा जलवा वेखीए विच मख़लूक, ख़ालक तेरा रंग इक्को नज़री आईआ। पीर पैगम्बर सारे सदी चौधवीं छड्ड गए हकूक, तेरा हक़ तेरे चरण टिकाईआ। इक्को वार सारे कर मौकूफ़, मुकम्मल हुक्म सुणाईआ। दीन मज़्हब सारे होए माअरूफ़, सगला संग नज़र कोए ना आईआ। मुरीद मुर्शद दे दीदार आपणा घर वखा सबूत, साबत सूरत इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे मंग अगम्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। किरपा कर श्री भगवन, भगवन आपणी वस्त वरताईआ। नाम निधान दे धन, अतोट अतुट झोली पाईआ। पूत सपूते बणा आपणे जन, धन्न जणेंदी बण माईआ। इक्को राग सुणा कन्न, धुर दा ढोला आप अल्हाईआ। मन वासना मेट मन, मन का मणका दे भवाईआ। तेरे लेखे लग्गे भगतां तन, तेरे चरणां भेंट चढ़ाईआ। जे हउँ बालक मूर्ख अन्ध, दे मति आप समझाईआ। कर किरपा मिटा कूड़ा गंद, तेरी सुगंध इक्को नज़री

आईआ। श्री भगवान कहे सूरा सरबँग, दो जहानां हुक्म मनाईआ। कलयुग अन्त सारे रल मिल गाओ सोहँ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दवारे चढ़्हे चन्द, रवि ससि बैठण नैण शरमाईआ। माणस जन्म ना होए भंग, लख चुरासी पैंडा दए मुकाईआ। एथे ओथे दो जहान नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख नार सुहागण चार जुग कदे ना होवे रंड, रंडेपा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल मिल के दूजा दर कोई ना लए मंग, देवणहार इक्को इक गोसाईंआ। जिस दा लेखा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म भेव चुकाईआ। गुरसिख गुरमुख घर सतिगुर जाणा जम्म, मात पिता लेखा पिछला मूल चुकाईआ। अग्गे बेड़ा सतिगुर शब्द देवे बन्न्ह, खेवट खेटा आपणे कंध उठाईआ। मार्ग दस्स इक्को सति धर्म, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। कलयुग अन्त तिन्नां लेखे लग्गा जन्म, जिन्नां प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। लख चुरासी भरमी विच भरम, बिन सतिगुर पूरे भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रखे आपणी सरन, सरनगति इक्को इक जणाईआ।

* १४ मग्घर २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड रूपोवाल ज़िला हुश्यिारपुर *

सो पुरख निरँजण तेरा दरबार, आदि जुगादि इक्को नज़री आईआ। हरि पुरख निरँजण सिरजणहार, सति सतिवादी तेरी ओट तकाईआ। एकँकार वेखणहार, अनभव तेरी धार बेपरवाहीआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, जोती जाते लख चरासी तेरी रुशनाईआ। अबिनाशी करते देवणहार, अतोट अतुट नाम वरताईआ। श्री भगवान सांझे यार, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। पारब्रह्म प्रभ कर प्यार, ब्रह्म नेत्र नैण उठाईआ। सचखण्ड निवासी किरपा धार, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर भिखार, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, पंज तत दए दुहाईआ। कलयुग धाहां रिहा मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, दर ठांडे सीस निवाईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, लाशरीक तेरी सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दीदार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले चरण धूढ़ मंगण छार, ख़ाक मस्तक टिक्का इक लगाईआ। गुरमुख गुर सतिगुर चरण कँवल जाण बलिहार, बलिहारी प्रभ आपणा फेरा पाईआ। गुरसिख नेत्र नैण अक्ख रहे उठाल, प्रतख आपणा नूर दरसाईआ। मुरीद मुर्शद तेरी करन भाल, दहि दिशा वेख वखाईआ।

सूफ़ी राह तक्कण डूंग्घी गार, काया काअबा पड़दा इक उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप चार कुण्टां दिसे धूंआँधार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण जगत अन्धेरा छाईआ। जूठ झूठ घर घर गया पसार, माया ममता बैठी डेरा लाईआ। लख चुरासी होई नार विभचार, नर हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। किरपा कर पुरख अकाल दीन दयाल साहिब स्वामी सांझे यार, बेऐब तेरा रूप इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म साची दस्स इक गुफ्तार, धुर संदेसा राग सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए हार, जगत जीवां कर पढ़ाईआ। गीता ज्ञान करे ना कोए प्यार, अठ्ठ दस बैठी डेरा ढाहीआ। अञ्जील कुरान नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, सच हदीश कलमा नबी ना कोए समझाईआ। खाणी बाणी समुंद सागर वेखे डूंग्घी गार, तेरी सार साहिब कोए ना पाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ कलयुग अन्त होए ख्वार, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। काग़ज़ कलम छाही डिगी मूँह दे भार, तेरी सिफ्त सालाह सके ना कोए लिखाईआ। नव नौ चार लेखा बीतया विच जहान, दो जहानां वाली प्रभ तेरा ध्यान इक लगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सुल्तान तेरा इक्को नाम, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम तेरा लभ्भे किसे ना धाम, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरदवारे तेरा रूप नज़र ना आईआ। किरपा कर श्री भगवान, तुध बिन दूजा ना कोए सहाईआ। सति धर्म दा दिसे ना कोई निशान, राज राजान बैठे मुख भवाईआ। अनहद नाद सुणे ना कोई सच्ची धुन्कान, साध सन्त अन्तर आत्म जोत ना कोए जगाईआ। शब्द अणयाला मारे ना कोए बाण, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। तेरा मन्दिर सके ना कोई पहचान, घर विच घर समझ कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत कलयुग अन्त होया वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। दीन मज़्हब सर्ब कुरलाण, ज़ात पात करे लड़ाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, धर्मी धर्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, दर साचे आस रखाईआ। साहिब स्वामी ठाकर एक, आदि पुरख तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल ल्या वेख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढ्ढाईआ। तेई अवतार करन आदेस, भगत अठारां सीस झुकाईआ। सजदा करन ईसा मूसा मुहम्मद औलीए शेख़, निउँ निउँ लागण पाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्त मेट रेख, रेखा सब दी दे बदलाईआ। तेरे घर इक आदेस, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ निरगुण आ के वेख, सरगुण भुल्लया तेरा नाउँ खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर साचे आस रखाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कलधारी तेरी वड्याईआ। जुग बीते चौकड़ी नव नौ चार, तेरी समझ किसे ना आईआ। सेवा कर कर थक्के गुर अवतार, पीर पैगम्बर बण बरदे मात फेरा

पाईआ। कलम छाही बण लिखार, तेरा संदेस गए सुणाईआ। सृष्ट सबाई कर ख़बरदार, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम ग़फ्लत भरया सर्ब संसार, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। घर घर दर दर मन्दिर अन्दर दिसे धूंआँधार, दीआ बाती कमलापाती जोत नूर ना कोए जगाईआ। मदि प्याला अमृत रस प्याए ना कोई साकी, नाम खुमार ना कोए चढ़ाईआ। अन्दर वड़ काया मन्दिर चढ़ बंद किवाड़ी खोल्हे कोई ना ताकी, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। चार जुग दी पिछली पढ़न सारे साखी, अगला लेखा ना कोए समझाईआ। तुध बिन चुकाए कोई ना बाकी, पूरब लहिणा झोली कोए ना पाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी राती, चार वरन साचा चन्द नज़र ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे तेरे बणे पाठी, अन्तर आत्म परमात्म तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। दर दर घर घर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ संध्या करन दीवा बाती, घर जोत निरँजण नज़र किसे ना आईआ। चार वरन अठारां बरन रातीं सोवण सेज उपर खाटी, आत्म सेजा सच दवारे डेरा कोए ना लाईआ। सज्जण साक सैण मिल मिल करन बाती, तेरी गुफ्तार बेपरवाह सुणन कोए ना पाईआ। दोए लोचण चम्म दृष्टी रहे झाकी, तीजे लोचण तेरा दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोई ना मन्ने आखी, कलयुग अन्तिम भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। लेखा चुका ज़ात पाती, कमलापति इक्को नज़री आईआ। पर्दा खोल्ह काया तन खाकी, ख़ालस आपणा रूप वखाईआ। सर्ब जीआं बण पिता माती, पूत सपूते गोद बहाईआ। जन्म कर्म दे विछड़यां आ के पुछ वाती, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दर मंगण दर दरवेश, गुर अवतार पैगम्बर ध्यान लगाईआ। नेत्र रोवे विष्न ब्रह्म महेष, शंकर आपणा हाल सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदा करन आदेस, दोए दोए वास्ता पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जुग चौकड़ी आदि जुगादि नित नवित्त रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। कलयुग अन्त जगत अन्धेरा आ के पेख, आपणा नूर कर रुशनाईआ। तेरे भगत तेरे सन्त तेरे गुरमुख तेरे गुरसिख तैनूं रहे चेत, चेतन आपणा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, हरि स्वामी बेपरवाहीआ। आ के वेख भगत भगवान, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। अन्दर वड़ तेरा करन ध्यान, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म मिल के ढोला गाण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। कलयुग जीव होण हैरान, भेव अभेदा सके ना कोए खुल्हाईआ। किरपा कर नौजवान, नर हरि आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, कलयुग अन्तिम तेरी आस रखाईआ। कलयुग अन्तिम कर आसा पूर, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। आदि जुगादी वसणहारा नेड़े दूर,

दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। घर मन्दिर दर्शन दे हाज़र हज़ूर, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई नाता तोड़ कूड़ो कूड़, अन्तर आत्म मेल मिलाईआ। जोती बख्श साचा नूर, नूर आपणे विच मिलाईआ। भेव खुल्हे ज़ाहर ज़हूर, बेनज़ीर तेरी सिफ्त सालाहीआ। कोट जन्म दे बख्श कसूर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त तेरे भगत होए मज़बूर, अन्दरे अन्दर रहे हाल सुणाईआ। लेखा जाण चतुर सुघड़ मूढ़, मूर्ख आपणे धंदे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आत्म परमात्म तेरा राह तकाईआ। आत्म परमात्म तक्के राह, घर घर विच नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी मिल आ, अनडिठ आपणा फेरा पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर बण मलाह, काया गागर डूंघा सागर पार कराईआ। अनहद नादी नाद सुणा, रसना जिह्वा छुटे पढ़ाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी दरस दिखा, जोती नूर कर रुशनाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी डेरा ला, सच सिंघासण सोभा पाईआ। सुरत सुआणी कोझी कमली पकड़ बांह, आप आपणे गले लगाईआ। साचा मन्दिर इक वखा, जिस घर वसे शहिनशाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दूजा दिसे कोई ना, नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक विखाउणा साचा घर, हरिजन बैठे ध्यान लगाईआ। भगत कहे मेरे भगवान, मै तेरी ओट तकाईआ। निरगुण हो के दे दान, सरगुण आसा पूर कराईआ। नाता तुटे जगत जहान, जीवण जुगत दे जणाईआ। मन वासना मिटे शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। इक्को सुणां तेरा फ़रमान, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत देणा पीण खाण, नौ रस डेरा देणा ढाहीआ। साचा वेखणा मन्दिर मकान, जिस घर वसें नूर खुदाईआ। लोकमात मैं आया तेरा महमान, अन्तिम तेरे लेखे आपणा लेखा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख के दे के गए ब्यान, धुर संदेसा राग अलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे योधा सूरबीर बलवान, निहकलंक आपणा नाम रखाईआ। रूप रंग जिस दा लभ्भे ना कोए निशान, मात पित समझ कोए ना पाईआ। धुर संदेसा सुणाए आण, दो जहान करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतां वेखे आण, आत्म परमात्म कुण्डा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दे वर प्रभू भगवन्त, हरि वडे वड वड्याईआ। सच स्वामी धुर दे कन्त, तेरे चरण मिले सरनाईआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तेरा भेव ना पावे कोई पंडत, चौदां विद्या तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। दर दरवेश दर ते मंगत, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। मेल मिला अगम्मी संगत, निरगुण शब्दी धार बंधाईआ। लेखा चुक्के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। नेहकर्मी ला आपणे अंगण, अंगीकार

इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर मेला मेल मिलाईआ। दर घर मेला कर मिलाप, हरि परम पुरख सुल्ताना। चार वरन दे इक्को जाप, आत्म परमात्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। त्रैगुण माया मिटे ताप, पंज तत ना रहे शैताना। सच संदेसा धुर दा आख, उच्ची बोल बिन रसना जिह्वा ज़बाना। तेरा खेल इलाही पाक, परवरदिगार नौजवाना। वस्त अमोलक दे दे हाथ, निरगुण निरवैर वाली दो जहानां। पारब्रह्म ब्रह्म दे दे साथ, सगला संग निभाना। हो सहाई अनाथां नाथ, दीनन दे अगम्मी दाना। लहिणा देणा चुका ज़ात पात, ऊँच नीच इक्को घर विखाना। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग वेखे तेरा भाणा। कूड़ी क्रिया सुट्टे डूंघे खात, सच सुच्च होए प्रधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्याला प्या आबेहयात, अमृत रस इक्को मुख लगाना। अमृत रस दे स्वामी, मुरीद मुर्शद तेरा ध्यान लगाईआ। धुरदरगाही अन्तरजामी, घट घट वेख वखाईआ। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरी दस्सदी गई निशानी, निशाना तेरा नाम लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त तेरी करदे गए अकथ कहाणी, कहि कहि जगत सुणाईआ। किरपा कर वड मेहरवान कलयुग अन्तिम शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरे चरण सीस निवाईआ। मेल मिलावा कर सुरती शब्दी धुर दे हाणी, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आसा तृष्ना दे मिटाईआ। जन भगत आसा तृष्ना जाए लथ, माया ममता रहिण ना पाईआ। कर किरपा जिस दिती वथ, नाम अमोलक इक वरताईआ। सगल वसूरे गए लथ, दुरमति मैल धवाईआ। निझर दित्ता अमृत रस, कँवल नाभ उलटाईआ। सनमुख हो के सतिगुर हस्स, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। पद निरबाण चौथा पद, घर साचा दे वखाईआ। नौ दवारे पार हद्द, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नाम सुणाए अनादी नद, अनहद नाद अलाहीआ। अमृत आत्म देवे मदि, बिन रसना जिह्वा रस चखाईआ। घर विच घर मन्दिर लए सद्द, महल अटल दए वड्याईआ। निरगुण निरगुण करे लाड, सरगुण लेखा आपणी झोली पाईआ। उच्ची कूक सुणाए अवाज़, दरगाह साची नाद वजाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान घर मेला कन्त सुहाग, सुहंझणी सेज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन सच्चे आप उठाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। किरपा कर दीन दयाल, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। लख चुरासी विच्चों वेख अमुलड़े लाल, करता कीमत आपे पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरब जन्म जो घालण आए घाल, तिनां मस्तक लेख वेख वखाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा हट्ट चलाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखा सच्ची धर्मसाल, धुर दवारा इक जणाइंदा।

जिथ्थे लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाइंदा। सतिगुर पूरा निरगुण रूप चले नाल नाल, जोती जाता पुरख बिधाता सद आपणा संग रखाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाइंदा। लेखा तोड़ काल महाकाल, आप आपणी गोद बहाइंदा। त्रैगुण माया रहे ना कोई जंजाल, पंज तत अग्न ना कोए तपाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर बहाल, आप आपणे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे गोद उठाइंदा। भगत भगवान गोद चुक, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, लख चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जन्म कर्म दी मेटे भुक्ख, तृष्ना पोह ना सके राईआ। लेखे लाए जननी कुक्ख, वेखे धन्न जणेंदी माईआ। शब्द नगारे लाए चोट, तन नौबत इक वजाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, सच सुच्च साचे मन्दिर दए टिकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, भगत भगवान आपणा दरस दिखाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां मिलण दा रखे शौक, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। बिन भगतां प्रभ जी जाए औंत, लोकमात नाम नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन वेखे लोकमात, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। ठाकर हो के देवे दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। प्रीतम हो के पुच्छे वात, परम पुरख बेपरवाहीआ। सज्जण हो के बणे साक, सगला संग निभाईआ। चाकर हो के खोल्ह्े ताक, बंद किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। दरवेश हो के मारे आवाज़, धुर दा नाद सुणाईआ। करता हो के करे काज, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। शहिनशाह हो के रखे लाज, सिर भगतां हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिन भगत भगवान साचा बणे ना कोए समाज, समग्री सच हथ्थ किसे ना आईआ। नित नवित्त कर कर हित मात पित पिता पूत देवे दात, दाता दानी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण रूप सति सरूप सन्त सुहेले घर साचे मेल मिलाईआ। भगत भगवान मेला घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, घर मन्दिर दए वड्याईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, महल अटल करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़, सोहँ रूप दए समझाईआ। नाता जुड़े नारी नर, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। जुग जन्म विछड़े लै के जाए आपणे दर, आप आपणी गोद बहाईआ। भगत भगवान दोवें मिल के ना जन्मे ना जाए मर, मरन जन्म विच कदे ना आईआ। एथे ओथे दो जहान देवे धुर दा वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे घर वसाईआ। जिन्हां फड़ाए शब्दी लड़, तिन्हां बिन पौड़ी डण्डे आपणे घर चढ़ाईआ। सो गुरमुख

गुरसिख हरिजन हरिभगत सति सरूप दर्शन कर, बिन रंग रूप विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी सेव कमाईआ।

* १४ मग्घर २०२० बिक्रमी अमरीक सिँघ दे गृह पिण्ड सराईं ज़िला हुशियार पुर *

सो पुरख निरँजण शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। एकँकार धुर मलाह, खेवट खेट तेरी ओट तकाईआ। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाते तेरा नूर इक्को नज़री आईआ। श्री भगवान आदि जुगादी हुक्मरान, भूपत भूप तेरी इक सरनाईआ। अबिनाशी करते तेरा खेल महान, समझ सके कोए ना राईआ। पारब्रह्म तेरा सच निशान, निरगुण इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड सोहे इक मकान, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ । दरगाह साची नूर महान, मुकामे हक़ तेरी रुशनाईआ। लाशरीक नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। निरगुण निरगुण खेले खेल आप भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। किरपा कर वड मेहरवान, मेहर नज़र नाल उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे चरण मंगण पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। त्रैगुण नेत्र रो मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पंज तत रिहा कुरला, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश धीर ना कोए धराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश तेरा राह रहे तका, रहिबर नज़र कोए ना आईआ। निरगुण सरगुण तेरी धूढ़ी ख़ाक मंगण दोए जोड़ करन दुआ, अन्तर आत्म वेख वखाईआ । गुर अवतार कहिण किरपा कर सच्चे शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी ओट रखाईआ। पीर पैगम्बर सजदा सीस रहे झुका, निउँ निउँ लागण पाईंआ। चारे वेद तेरे दर अलख रहे जगा, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ। पुराण अठारां कोई ना लभ्भे राह, मार्ग समझ कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी लेखा रहे मुका, वस्त अमोलक झोली कोई ना पाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी बणे ना कोई गवाह, शहादत देवे ना कोई बेपरवाहीआ । चार वरन अठारां बरन राउ रंक राज राजान होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप घट घट अन्दर वड़या कल शैतान, आप आपणा बल धराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे आण, समुंद सागर फोल फुलाईआ। तेरे भगतां मिले ना कोई माण, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। सन्त साजण होए अञ्याण, बाली बुध बैठे नैण उठाईआ। गुरमुखां नैण जगत शरमाण, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। गुरमुख तेरी चरण प्रीती मंगण दान, गुरसिख इक्को ओट रखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकया विच जहान, पांधी नज़र कोए ना आईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सति सन्तोखी भुल्लया सर्ब ज्ञान, आत्म परमात्म भेव ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, अबिनाशी करते तेरी ओट रखाईआ। तेरी ओट लई रख, शाह पातशाह सच्चे सुल्ताना। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी मार्ग गए दस्स, शब्द अगम्मी तेरा नाम दे ब्याना। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप होए प्रतख, जोत सरूपी पहरे बाना। विष्न ब्रह्मा शिव दो जहानां वखाए हट्ट, ब्रह्मण्ड खण्ड फोलणहार दुकाना। साचा मार्ग इक्को देवे दस्स, चार वरन इक ज्ञाना। जन भगतां अन्दर जाए वस, प्रेम प्रीत करे महाना। धुर दा अमृत देवे रस, निझर झिरना इक झराना। सच जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाना। साचे मण्डल पावे रास, गोपी काहन रूप विखाना। पीर पैगम्बर करे दास, धुर संदेसा दे परवाना। गुर अवतारां भेव खुलाए ख़ास, ख़ालस आपणा रंग रंगाना। नव नौ चार पूरी करे आस, निरगुण रूप होए प्रधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा दर इक्को इक सुहाना। सोहे दर प्रभू तेरा भगत, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तैनूं मन्न के गए साचा कन्त, बण नारी सेव कमाईआ। तेरा बोध अगाधा नाम मंत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। तेरा लेखा कोई ना जाणे पंडत, मुल्लां शेख़ मुसायक देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे झुके चार जुग, जुग चौकड़ी सीस निवाईआ। पुरख अकाल आ के पुछ, बेपरवाह फेरा पाईआ। निरगुण निरवैर क्यों बैठा लुक, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जगत विकारा रिहा कुठ, कूड़ी क्रिया घर घर नज़री आईआ। तेरा कोई ना दिसे साचा सुत, सुत अपराधी रूप वटाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली बुत्त, लख चुरासी नज़री आईआ। मात गर्भ दे उलटे रुक्ख, तेरा मुख वेख कोए ना पाईआ। तेरे नालों तेरे गए रुस्स, साचा मेल ना कोए वखाईआ। निरगुण धारों निरवैर पुरख अकाल उठ, अनभव आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडा नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम करन पुकार, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी लेखा लिख के गए विच संसार, नाता जोड़ कलम शाहीआ। शब्द अगम्मी दे के गए धार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। चारों कुण्ट सृष्ट सबाई होई ख्वार, ख़ालस रूप नज़र कोए ना आईआ। तेरा नूर नज़र ना आए सिरजणहार, सच तौफ़ीक ना कोए ख़ुदाईआ। मिहबान बीदो बीखैर या अल्ला नूर इलाही परवरदिगार, बेऐब तेरी वड वड्याईआ। राम रहीम सिरजणहार, वड काहन वेस वटाईआ। तेरी बंसुरी वज्जे दो जहान, नाद धुन इक शनवाईआ। तेरा मन्त्र सतिनाम,

सति सतिवादी दे समझाईआ। तेरा डंका इक महान, राउ रंकां लए जगाईआ। घर घर विच्चों कढ्ढे कूड़ शैतान, माया ममता डेरा ढाहीआ। मन्दिर वखाए इक मकान, काया काअबा नज़री आईआ। सच महिराबे नज़री आए तेरा नूर महान, महिबूब तेरी वड वड्याईआ। चौदां लोक होए हैरान, चौदां तबक तेरी समझ किसे ना पाईआ। चौदां विद्या जीव जंत करनी प्रधान, सति प्रधानगी हथ्थ ना कोए रखाईआ। कर किरपा श्री भगवान, कलयुग अन्तिम वेख लख चुरासी धर के भेख, नव नौ चार रोवे मारे धाईआ। नव नौ चार रही रो, धीरज धीर ना कोए धराईआ। आत्म परमात्म किसे सके ना छोह, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। धुर दा ढोआ देवे कोई ना ढोअ, ढोलक छैणे घर घर दर दर रहे खड़काईआ। सो पुरख निरँजण तेरी कोई ना देवे सो, सति संदेस ना कोए सुणाईआ। तेरे जिहा दूजा कोई ना जाए हो, होका देवे सर्ब लोकाईआ। जीव जंत साध सन्त कूड़ी ममता लग्गे मोह, मुहब्बत तेरे नाल ना कोए रखाईआ। निझर झिरना दर साचे आ के चोअ, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा फेरा पाईआ। आपणा फेरा पा प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरी टेक, मेहरवान तेरी ओट रखाईआ। कलयुग अन्तिम त्रैगुण माया लख चुरासी लाए सेक, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिन तेरी किरपा बुद्धि होवे ना कोई विवेक, मनमति घर घर डेरा लाईआ। तेरे चरण कँवल मन वासना करे कोई ना भेंट, खण्डा खड़ग नाम सिरी ना कोए वखाईआ। सन्त साध तेरा अन्दर वड़ के दस्से कोई ना भेत, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले रहे सुणाईआ। आत्म परमात्म मिल के दस्स आपणा हेत, हितकारी आपणा रंग रंगाईआ। रुत्त सुहञ्जणी मौले चेत, पत डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, चार वरन अठारां बरन तेरा बैठे राह तकाईआ। चार वरन तेरा तक्कण राह, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, निरगुण सरगुण लए उठाईआ। सच संदेसा देवे आ, धुर दी बाणी आप पढ़ाईआ। दूई द्वैती पड़दा देवे लाह, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। आत्म सेजा सच सुहञ्जणी दए सुहा, सच सिंघासण सोभा पाईआ। अनहद नादी नाद धुन दए वजा, आत्मक राग इक अलाईआ। साचे मन्दिर दए वसा, खेड़ा इक्को इक वड्याईआ। जुग जन्म दा विछोड़ा पन्ध दए गंवा, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर मंगे मंग धरनी धरत धवल, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरे नाउँ नूर खुदाई अवल्ल, आलमीन तेरी सरनाईआ। बिरहों वैरागण होई बवल, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। नज़र ना आए साँवल सवल, मुकन्द मनोहर तेरा रूप लखमी नरायण रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडे फेरा पाईआ। दर ठांडा तेरा दिसे इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। दाते दानी पा भिक्ख, भगत बैठे झोली डाहीआ। कलयुग अन्तिम सतिजुग लेखा लिख, लिखणहार गोपाल गोसाईंआ। तेरा कोई ना जाणे पित, पारब्रह्म प्रभ तेरे हथ्थ सर्ब चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच संदेसा दे सुणाईआ। सच संदेसा हरि जणाउँदा ए। सचखण्ड निवासी सचखण्ड तख्त सोभा पाउँदा ए। धुर फ़रमाना आप अलाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर मंगाउँदा ए। जुग चौकड़ी वेख घर, लोकमात पड़दा लाहुँदा ए। लेखा जाण नारी नर, लख चुरासी फोल फुलाउँदा ए। साची विद्या जो रहे पढ़, तिन्हां आपणे रंग रंगाउँदा ए। दूर दुराडे जो रहे खड़, तिन्हां पल्लू लड़ छुड़ाउँदा ए। चार वरन अठारां बरन कलयुग अन्तिम देवे वर, सच सुनेहड़ा इक घलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे धुर दा वर, हुक्म सच सच्च समझाउँदा ए। हुक्म देवे धुर फ़रमाना, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग अन्त पहरे बाना, मेहरबान दया कमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा लभ्भदे गए टिकाणा, सो भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुर अवतार जिस दा रखदे गए माणा, सो अभिमान मेटे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम सति धर्म झुलाए इक निशाना, साची धार आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक जणाईआ। सच संदेसा हरि जणाउँदा ए। धुर दा लेखा आप समझाउँदा ए। निरगुण निरवैर धरे भेसा, वेस अगम्मा आप वटाउँदा ए। ना कोई रूप रंग ना रेखा, ज़ात पात ना वंड वंडाउँदा ए। दीन मज़्हब ना कोई चेता, जोती नूर डगमगाउँदा ए। जन भगतां करे अन्तर हेता, बाहरों नज़र किसे ना आउँदा ए। जुग जन्म दा वेखे लेखा, पूरब लहिणा झोली पाउँदा ए। नाता जोड़े मात पित पिता पूत बेटी बेटा, पुरख अकाल बन्धन पाउँदा ए। इक सुहाए सुहञ्जणी सेजा, सोभावन्त आसण लाउँदा ए। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द स्नेहड़ा धुर दा भेजा, वाक भविख आप दृढ़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाउँदा ए। साची करनी आप कमावेगा। निरगुण निरवैर पुरख वेस वटावेगा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोई जणावेगा। लख चुरासी कर के परख, गुरमुख साचे बाहर कढ्ढावेगा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां उते कर के तरस, नाथ अनाथां गोद बहावेगा। अमृत मेघ इक्को बरस, जन्म जन्म दी तृखा अग्ग बुझावेगा। जो बिरहों विछोड़े विच रहे तड़फ, तिन्हां आपणा मेल मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी कार कमावेगा। निरगुण आपणी कार कमाएगा। पुरख अकाल फेरा पाएगा।

परवरदिगार नज़री आएगा। तेई अवतार खेड़ा वखाएगा। भगत अठारां भेव चुकाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख खुल्हाएगा। नानक गोबिन्द जोत जगाएगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पड़दा लाहेगा। शब्द अगम्मी दे ज्ञान, निहकर्मी आपणा कर्म कमाएगा। कलयुग अन्त होए प्रधान, दो जहानां राग जोग कमाएगा। जन भगतां दे धर्म निशान, सति सतिवादी आप झुलाएगा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सूफ़ी कर चतुर सुजाण, बुध बबेकी रूप वटाएगा। मुरीदां मुर्शद मिले आण, दीद ईद चन्द चमकाएगा। साचा कलमा बोले बेज़बान, शरीअत आपणी वंड वखाएगा। साचा धर्म कर प्रधान, चारे वरन गंढ्ढ पुआएगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप रल मिल इक्को ढोला गाण, दूजा राग ना कोए अल्हाएगा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा मन्दिर इक मकान, महिफल इक्को इक रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी कल वरताएगा। निरगुण वरताए आपणी कल, कलधारी फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी अछल अछल्ल, वल छलधारी आपणी धार जणाईआ। जोती शब्दी बैठा रल, जगत नेत्र दिस किसे ना आईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, लोकमात फेरा पाईआ। पाए सार जल थल, महीअल आपे खोज खुजाईआ। सच प्रकाश दीपक जाए बल, तेल बाती संग ना कोए लिआईआ। जन भगतां अन्दर दूई द्वैती मेटे सल, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति धर्म दा इक दरवाज़ा, आपे खोल्हे ग़रीब निवाज़ा, सतिजुग साचा राह जणाईआ। सच दरवाज़ा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। धुर संदेसा देवे बोल, अनबोलत राग अल्हाईआ। नाम निधान वजाए ढोल, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान सुणाईआ। सच वस्त प्रभ लै के आए कोल, लख चरासी जीव जंत दए वरताईआ। हर घट अन्दर जाए मौल, मौला रूप नज़री आईआ। उलटा करे नाभ कौल, झिरना बूँदो बूँद झिराईआ। भाग लगाए धरनी धरत धौल, धवला हौला भार रखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना जाए डोल, अडुल बैठा बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म आबे हयात सच प्याए अमृत साची पौहल, जगत विकारा मेट मिटाईआ। हरि का भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, ग्रन्थी पन्थी समझ किसे ना आईआ। नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद वेद व्यास कीता कौल, पुराण अठारां देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दे घर, सचखण्ड साचे ख़ुशी मनाईआ। सचखण्ड प्रभ चाउ घनेरा, घर वज्जे नाम वधाईआ। कलयुग अन्तिम बन्न्हे बेड़ा, कल कल्की फेरा पाईआ। सम्बल नगर लाए डेरा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दो जहानां खुल्ल्हा करे वेहड़ा, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। शब्द सरूपी पाए घेरा, चार दीवारी नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को

नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम दया कमाईआ। कलयुग दया कमाए ठाकर, हरि करता होए सुहाईआ। लख चुरासी वेखे काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। डूंग्घी धार कढ्ढे बाहर समुंद सागर, जलधार ना कोए वहाईआ। जन भगतां देवे इक्को आदर, आदर्श आपणा दए समझाईआ। मेहरवान करता करीम कादर, कुदरत हो के रंग वखाईआ। दो जहानां वड बहादर, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं कैहन्दे ज़बर ज़ाबर, ज़बरदस्त बेपरवाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा रिहा जणाईआ। साचा लेखा सुणो प्रभ अन्त, निरगुण निरवैर आप जणाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली गुर का मंत, मन्त्र सच ना कोए दृढ़ाईआ। जगत विकारी होए कलयुग साध सन्त, अन्तष्करन शुद्ध ना कोए कराईआ। झगड़ा प्या हउमे हंगत, कूड़ा गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। दर दर घर घर फिरदे मंगत, झोली ख़ाली रहे वखाईआ। चार वरन बणी ना साची संगत, ज़ात पात भेव ना कोए चुकाईआ। लेखा चुक्कया किसे ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध ना कोए मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चरण कँवल कोई ना करे बन्दन, बंदगी डण्डोत समझ किसे ना आईआ। मस्तक लाउँदे पंडत चन्दन, जोत ललाट करे ना कोए रुशनाईआ। अन्तर आत्म मिले ना किसे अनन्द अनन्दन, निजा नंद ना कोए रसाईआ। दूई द्वैती शरअ शरैती ढाए कोई ना कंधन, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। सतिगुर गोदी कोई ना बहे अंगण, नौ दवारे भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम इक्को गुण गुणवन्ता दए जणाईआ। गुणवन्ता गुण देवे दात, दाता दानी दया कमाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, अमावस रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग मौले सच प्रभात, प्रभाती आपणा रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी नाता तोड़े ज़ात पात, वरन गोत इक्को ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए लगाईआ। साचा मार्ग लाए जग, हरि करता दया कमाईआ। जुग चौकड़ी जाए लँघ, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा चमके चन्द, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। गीत गोबिन्द सुणाए सुहागी छन्द, साचा ढोला राग अल्लाईआ। आत्म परमात्म वसे संग, सगला संग निभाईआ। हरिजन हरिभगत आवण जावण चुक्के पन्ध, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। सुरत सुहागण होवे कदे ना रंड, कन्त इक्को नज़री आईआ। लेखा चुके भेख पखण्ड, सच सुच्च सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां रंग रंगे चलूल, हरि करता आप रंगाईआ। अबिनाशी करता कदे ना जाए भूल, धुर दा लेखा लेख चुकाईआ। पिछला लहिणा चुकाए मूल, अग्गे

मार्ग इक्को लाईआ। चरण धूढ़ी मस्तक लाए धूल, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरसी विच्चों भगत सुहेले आप जगाईआ। भगत सुहेला जाए जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया करे त्याग, सच सुच्च इक अपनाईआ। प्रभ मिलण दा उपजे इक वैराग, मन वासना डेरा ढाहीआ। दिवस रैण रखे तांघ, अट्ठे पहर इक्को लिव रखाईआ। कवण वेला प्रभ मिले कन्त सुहाग, सुहञ्जणी सेज दए वड्याईआ। घर दीप जगाए चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। नाम निधान सुणाए राग, अनहद धुन उपजाईआ। बिन रसना जिह्वा मारे आवाज़, आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस आदि साजण ल्या साज, सो अन्त आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे प्रभ, हरि जू आपणी दया कमाईआ। जुग जुग सन्त सुहेले लभ्भ, पर्दा दूई दए उठाईआ। अमृत झिराए आपणी नभ, कँवल कँवला मुख भवाईआ। जगत दवारा पार हद्द, नौ दर डेरा ढाहीआ। दरस वखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। एथे ओथे पर्दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी बीसवीं शब्द नगारा दो जहानां रिहा वज्ज, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण भज्ज भज्ज, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। करे की खेल पुरख समरथ, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। चौथे जुग किसे दा चले कोई ना वस, सारे बैठे ढेरीआं ढाहीआ। नेत्र रोवण तीर्थ अठ्ठसठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। घर साचे सत्थर बैठे सारे घत, यारड़ा इक्को मंग मंगाईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर सुक्की रत, नाड़ी नाड़ी दए दुहाईआ। कलयुग अन्तिम परवरदिगार दीन दयाल पुरख अकाल सर्ब स्वामी पत रख, रक्षक हो हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जन भगतां पड़दा दे चुकाईआ। जन भगतां चुक्के पड़दा उहला, द्वैत नज़र कोए ना आईआ। भाग लग्गे काया चोला, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। तेरे दर दा होवे गोला, दूजे दर ना सेव कमाईआ। तेरे नाम दा पावे रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा आपणा घर, जिस घर बहि के सोभा पाईआ। भगत कहिण दस्स भगवान, की तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, जुग जुग तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम होए हैरान, सार कोए ना पाईआ। दर दरवेश मंगदे दान, चरण कँवल सीस झुकाईआ। रहमत कर वड महिबान, महिबान बीदो तेरी इक सरनाईआ। सिदक सबूरी सबर ना आए किसे ईमान, हकीकत हक़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्यों बैठा मुख छुपाईआ।

क्यों मुख छुपाया विच पर्दा, प्रभ आपणा घर रिहा दसाईआ। कलयुग अन्तिम वेख तेरा जीव जंत सड़दा, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तैथों डरदा, अन्तिम तेरा ढोला गए सुणाईआ। सदी चौधवीं खेल होवे नर हरि दा, ईसा मूसा मुहम्मद चले ना कोए चतुराईआ। दो जहान तेरा कलमा पढ़दा, इष्ट देव स्वामी इक्को इक मनाईआ। गुर अवतार भिखारी तेरे दर दा, अलख निरँजण इक्को अलख जगाईआ। कलयुग अन्तिम वेस निहकलंक नरायण नर दा, जोती जामा सारे गए गाईआ। ना जीउदा ना कदे मरदा, जन्म मरन विच ना आईआ। आपणी तरनी दो जहानां तरदा, लख चुरासी जीव जंत तराईआ। जिउँ भावे तिउँ करनी करदा, करता पुरख आप अख्वाईआ। लोकमात लेखा जाणे निक्के जिहे घर दा, जिस विच लख चुरासी रिहा बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, सुंञी दिसे लोकाईआ। पुरख अबिनाशी क्यों बैठा लुक, प्रभ आपणा नैण छुपाईआ। कलयुग जीव ग़रीब निमाणे मरदे भुक्ख, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। राज राजान देवण दुःख, रय्यत रही कुरलाईआ । कोझे कमल्यां कोई ना गोदी लए चुक्क, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्तिम वेला सदी बीसवीं गया ढुक्क, तेरा लेखा लेखे विच समाईआ। किरपा निधान सतिगुर पूरे ठाकर आपे उठ, परवरदिगार फेरा पाईआ। दूर दुराडे नेरन नेरे नेड़े आ के पुच्छ, पश्चाताप करे लोकाईआ। नाता तुटा पिता पुत्त, मात देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा दर, घर साचे फेरा पाईआ। दर घर आ के वेख निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सति धर्म ना कोए प्यार, कूड़ी क्रिया जगत रिहा प्रनाईआ । दर दर घर घर दिसे हाहाकार, हरि मन्दिर बहि के तेरा गीत कोए ना गाईआ। नव नौ चार दिसे ख्वार, अट्ठ दस ना कोए आधार, तिन्न पंज करे लड़ाईआ। नौ दस ना कोए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख पिछला घर, मेहरवान फेरा पाईआ। मेहरवान वेख पिछला लेखा, तेरे लेखे विच लोकाईआ। सृष्ट सबाई मेट भरम भुलेखा, भाण्डा भउ भंनाईआ। मात गर्भ दा सब नूं भुल्लया चेता, तेरा नाउँ ना कोए ध्याईआ। बिन तेरे सुंञा होया खेता, राखा नज़र कोए ना आईआ। निरवैर पुरख पुरख अकाल सति सरूपी धार भेखा, वेस अवेस रूप वटाईआ। कलयुग कूड़ी जड़ उखड़े मेखा, सतिजुग साचा बूटा लाईआ। कलयुग नींहां हेठां गोबिन्द भेंट चढ़ाया बेटा, बेटे बेटे नाल कर कुड़माईआ। अन्तिम सब दा पूरा कर ठेका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख कलयुग घर, घर साचा रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग वेख रंग काला, काली धार रिहा जणाईआ। जगत सियासत नाच नचाए मन्दिर मस्जिद गुरूदवारा शिवदुआला, मसीत मट्ठ सोभा कोए ना पाईआ। अन्तर आत्म मिले

ना किसे गुर गोपाला, गहर गम्भीर संग ना कोए रखाईआ। बजर कपाटी कोई ना खोले ताला, तालब तुलबा करे जगत पढ़ाईआ। मणका मणका साध सन्त इक्को तेरी फेरदे माला, अट्ठ तत तेरे रंग ना कोए रंगाईआ। चौंकड़ा मारदे उपर मृगछाला, आत्म सेजा सोभा कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ तेरे नाम दा दस्सदे हाला, अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। अग्नी धूंआँधार बैठे सड़दे, डूंघी धार वेखे हड़दे, अक्खर अक्खर पाठ पढ़दे, तेरा निरअक्खर रूप नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा दे पत्र, पाती कमलापाती इक्को नाम जणाईआ। साची पाती दे दे पत्र, पतित पापी पार कराना। सचखण्ड दवारयों आई उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण तेरा दिसे ना कोई टिकाणा। लख चुरासी जीव जंत तेरा मनाए शुकर, शहिनशाह तेरे चरण ध्यान लगाना। नानक गोबिन्द कीता कौल ना जाईं मुक्कर, वेद व्यासा दए ब्याना। जन भगतां कर मुख उजल, कूड़ी क्रिया मेट मिटाना। अन्दर वड़ के खोल् आपणी गुंझल, भेव खुले श्री भगवाना। नाल इशारे समझा उँगल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख निक्का घर, लख चुरासी कर ध्याना। लोकमात तेरा घर निक्का, निक्की जिही वड्याईआ। पुरख अकाल बण के सब दा पिता, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। हर घट अन्दर वसे चिता, चेतन रूप वखाईआ। कलयुग आ के वेख रंग झूठा होया फिका, रस नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल वेखीए सदा अनडिठा, जग रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अन्तिम वर, आप आपणे घर वसाईआ। भगत कहे भगवान तेरे दर वसेरा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। वज्जे वधाई चाउ घनेरा, घनईया मिले इक गोसाईंआ। सच दवारे लग्गे डेरा, दूजा मन्दिर नज़र कोए ना आईआ। दोहां मिल के नाता जुड़े तूं मेरा मैं तेरा, बन्धन इक्को इक रखाईआ। निरगुण सरगुण उते कर मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग अन्तिम चुक्के झेड़ा, नाता छुटे मात लोकाईआ। डुब्बदे सागर तार बेड़ा, पार किनारा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण तेरे हथ्थ गेड़ा, नित नवित्त आपणे हुक्म रिहा फिराईआ।

* १५ मग्घर २०२० बिक्रमी प्यारा सिँघ दे नवित्त भोगपुर मिल विच *

अनभव अन्दर ना अन्ध विश्वाश, झूठ सच ना रूप वटाईआ। अनभव अन्दर इक्को नूर जोत प्रकाश, सति सरूप नज़री आईआ। अनभव अन्दर कोटन कोटि चरणां हेठ वसन ब्रह्मण्ड खण्ड पृथ्मी आकाश, मण्डल मण्डप बैठे सीस निवाईआ।

अनभव अन्दर रवि ससि सूरज चन्द्र बण बण दासी दास, भज्जण वाहो दाहीआ। अनभव अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत निउँ निउँ मंगे दात, खाली झोली रही वखाईआ। अनभव अन्दर नज़री आए गुर अवतार पीर पैगम्बर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता इक्को बेपरवाहीआ। जिस जन अनभव सतिगुर कोलों मिले दात, सो गुरमुख भरम भुलेखे विच कदे ना आईआ । सुरती शब्दी घर पए साची रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। मन वासना मन ख़ाहिश, मन रूप अनूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे अगम्मी वर, तिस अनभव अन्दर काया मन्दिर महल अटल इक्को इक बूझ बुझाईआ। अनभव अन्दर ना कोई भुलेखा, भरम रूप ना कोई वटाईआ। निज नेत्र जिस नर हरि पेखा, नर नरायण बेपरवाहीआ। सो एथे ओथे दो जहान सन्त सुहेले रखे चेता, चेतन सुरती आपणी आप बणाईआ। मन वासना कदे ना खेडा, मति बुध ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस देवे अनभव प्रकाश, सो दो जहानां इक्को घर वेख वखाईआ। अनभव अन्दर दो जहान, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। अनभव अन्दर ज़िमी असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। अनभव अन्दर भाग लग्गे काया साढे तिन्न हथ्थ मकान, घर विच घर पर्दा लए उठाईआ । अनभव अन्दर लख चुरासी जीव जंत वेखे खेल महान, घट घट अन्दर इक्को नूर नजरी आईआ। अनभव अन्दर मन वासना ना फिरे शैतान, पंच विकार ना कोई लड़ाईआ। अनभव अन्दर इक्को सच ज्ञान, अज्ञान रूप ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन जणाए आपणा घर, तिस अन्दर पड़दा दए उठाईआ। अनभव अन्दर वेखे सागर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फोल फुलाईआ। अनभव अन्दर काया माटी लेखा जाणे डूंघी गागर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। अनभव अन्दर निर्मल कर्म कर उजागर, जोती जोत जोत नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अनभव खोल्ह धुर दा दर, तिस मंज़ल विच मंज़ल ना कोई अटकाईआ । अनभव मंज़ल वड्ड दूरन दूर, जग नेत्र नज़र ना आईआ। हरि भगत सुहेला वेखे साचे पौड़े चढ़ हाज़र हज़ूर, हज़रत इक्को बेपरवाहीआ। जो गुरमुख सतिगुर दवारे होण मंज़ूर, तिन्हां पड़दा दए चुकाईआ। अनभव अन्दर ना कोई शरअ ना कोई कसूर, भरम भुलेखा रंग ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे अनभव प्रकाश, तिस सेवा करे बण दासी दास, दर घर गृह मन्दिर रूप अनूप सति सरूप शब्द स्वामी अन्तरजामी इक्को इक वखाईआ। दया किरपा करे कृपानिध, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। जन्म कर्म दा कारज सिध, बिध आपणी नाल लेखे लाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी बिध, अन्तरगत दए जणाईआ। दरस दिखाए घर निझ, पर्दा दूई द्वैत चुकाईआ । जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दयावान ठाकर गहर गम्भीर, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। पंज तत काया माटी ठांडा कर शरीर, त्रैगुण अग्नी तत बुझाइंदा। अमृत आत्म बख्शे नीर, निझर झिरना आप झिराइंदा। हउमे हंगता कढु पीड़, माया ममता मोह कटाइंदा। दरस दखाए बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दयावान दातार स्वामी नाम निधान काया चोली आप टिकाइंदा । गुरमुख कदे ना कहे बस्स, अन्तर आत्म प्यार वधाईआ। दोहां मिल के आए रस, जिह्वा कहिण किछ ना पाईआ। जगत विखावण ख़ाली हथ्थ, अन्दर नाम ख़ज़ाना अतोट अतुट भण्डार नज़री आईआ। सतिगुर पूरा जिस चलाए साढे तिन्न हथ्थ हट्ट, तिस वज्जे घर वधाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देवे रख, सच श्लोक इक समझाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी देवे कट, राए धर्म ना दए सजाईआ। मात गर्भ उलटा रुख़ ना दिसे मास दस, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस गुरमुख नाल अन्दर वड़ के निज नेत्र अक्ख नाल मिलाए अक्ख, आखर आपणा रंग रंगाईआ। बस्स कहिण विच बस्ती, काया मन्दिर मिले वड्याईआ। जिस दे अन्दर गुरमुख हस्ती, सति सरूप डेरा लाईआ। दिवस रैण नाम मस्ती, सच ख़ुमारी इक चढ़ाईआ। कूड़ विकारा होया नष्टी, सच सुच्च वज्जे वधाईआ।
सतिगुर मिल्या इक्को इष्टी, इष्ट दृष्ट देवे खुल्लाईआ । लेखा चुक्के कूड़ी सृष्टी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा मुके स्वर्ग बहिश्ती, चरण कँवल दए सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिगुर लभ्भे लिखी लेख लिख्ती, साख्यात गुरमुख विरले नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पार कराए वैरागी गृहस्ती, गृह आपणा इक वखाईआ।

रोटी अन्दर जगत धन्दा, श्री भगवान खेल रचाईआ। धंदे अन्दर गुरमुख बंदा, प्रभ बंदगी रिहा कमाईआ। बंदगी अन्दर सतिगुर बख़्शंदा, बख़्शिश आपणा नाम वरताईआ। कर प्रकाश चाढ़े चन्दा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। लेख चुकाए जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। पार कराए डूंघी कंधा, समुंद सागर तारनहार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रोटी रिज़क रहीम करीम दाता दानी आपणा हुक्म वखाईआ। रोटी कारण फिरे संसार, प्रभ साची खेल खलाईआ। जिस रोटी पिच्छे दर्शन दित्ते धन्ने जट्ट गंवार, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाईआ। सेवा करे नर निरँकार, बाल बाला रूप वखाईआ। सो रोटी लख चुरासी जीव जंत रोजगार, अबिनाशी

करते धार बंधाईआ । रोटी कमाउदयां लभ्भो हरि करतार, हर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखावे आपणा दर, काया मन्दिर अन्दर दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजां करनी कार विच खुल्हाईआ।

* १६ मग्घर २०२० बिक्रमी प्यारा सिँघ दे घर किशन पुरा महल्ला जलन्धर *

किरपा कर पुरख समरथ, अदि जुगादि तेरी वड्याईआ। सचखण्ड दवारे रिहों वस, मुकामे हक़ तेरी रुशनाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दासी दास, सेवक सेवक रूप नजरी आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण अनाथां नाथ, दीना नाथ तेरी वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ निरगुण सरगुण दे साथ, सगला संग निभाईआ। कलयुग अन्त नौ खण्ड पृथमी वध्या पाप, सत दीप रिहा कुरलाईआ। आत्म सब नूं भुल्लया जाप, भरमे भुल्ली जगत लोकाईआ। साचे पतन कोई ना जाए घाट, पार किनारा ना किसे दसाईआ । चारों कुण्ट अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर ना कोई चुकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे तेरा पाठ, अन्तर लिव ना कोए लगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह जगत तृष्ना कोई ना करे घात, जीवां जंतां घाउ रही लगाईआ। घर सुहागण नार मिले ना कन्त सुहाग, लख चुरासी खुशीआं जगत मनाईआ। कलयुग अन्तिम माया पाई बेअन्त, त्रैगुण सके ना कोई मिटाईआ। साडे तिन्न हथ्थ गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई बण के बोध अगाधा पंडत, अनभव धार नज़र किसे ना आईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश साची बणे ना कोई संगत, ज़ात पात करे लड़ाईआ। साध सन्त दर दर घर घर फिरदे मंगत, तेरे दर भिखारी फेरा कोई ना पाईआ। जगत ख़ाहिश बहिस्त जंनत, तेरे चरण कँवल मिले ना कोई सरनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीन दयाल कलयुग वेख अन्तिम, निज नेत्र नैण उठाईआ। दर दर घर घर नारी नर दिसे नार कमज़ातन, सुहागन रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि दे धुर दा वर, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म प्रभ पर्दा खोल्ह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। शब्द अगम्मी नाद सुण धुरदा ढोल, ढोलक छैणा कम्म किसे ना आईआ। सच सिँघासण आत्म सेजा वसणा कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सुरती शब्द जाए मौल, तेरे रंग समाईआ। मात गर्भ दा पूरा कर कीता कौल, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। साचे कंडे अगम्मी तोल, तराजू नाम हथ्थ उठाईआ। कलयुग जीव जगत रैण अन्धेरी सुत्ते अनभोल, अक्ख नैण ना कोई खुल्हाईआ । जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, साचा मार्ग इक जणाईआ। साचा मार्ग दस्स भगवन्त, जन भगत बैठे ध्यान लगाईआ। लेखा चुके जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे कर अन्त, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। सृष्ट सबाई पारब्रह्म ब्रह्म इक्को दे आपणा मंत, मन्त्र सच सच्च समझाईआ। लहिणा देणा चुक्के लख चुरासी जीव जंत, तेरे सरन मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे अलख अलख निरँजण, आदि पुरख तेरी सरनाईआ। दाते दानी दर्द दुःख भय भंजन, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। शब्द निधान नेत्र ज्ञान पा अंजन, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। तेरे नाम दी चढ़े रंगन, कसुम्बड़ा रूप नज़र कोई ना आईआ। आत्म परमात्म अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के सच दवारा सुणा सुहागी छन्दन, सोहँ आपणा राग अल्हाईआ। दर दर वेख नर नरेश दर तेरे आए मंगन, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सद वज्जे तेरे घर वधाईआ। सद वज्जे घर तेरे नाद, अनादी तेरे हथ्थ वड्याईआ। लेखा चुक्के ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी सरनाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, तेरे भगत तेरे जन तेरे सन्त तेरी ओट तकाईआ। धुरदरगाही अगम्म अथाह बेपरवाह दे दात, वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। मन वासना मिटे नार कमज़ात, सुरत सवाणी सुहागण इक्को रूप नज़री आईआ। अमृत आत्म प्या आबे हयात, हयाती विच्चों हयाती दे बदलाईआ। सजदा झुके सीस तैनूं करे अदाब, नमों नमों तेरी सरनाईआ। तेरा नूर चमके महान महताब, जलवा इक्को नज़री आईआ। तैनूं सजदा करे कोटन आफ्ताब, पर्दानशीन आपणा पर्दा दे चुकाईआ। महल नज़री आए तेरी इक महिराब, महिबूब तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जिस घर वज्जे तेरे नाम वधाईआ। भगत कहिण प्रभ ठाकर मीते, मित्र प्यारे मेहर नज़र नैण उठाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरे पिछले बीते, बीती कहाणी सुणन कोई ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी दस्स दस्स गए रीते, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए हदीसे, खाणी बाणी धुर फ़रमाण सुणाईआ। भगत भगवान इक्को मंगण तेरी चरण प्रीते, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। तैनूं मिल के होण ठांडे सीते, अग्नी तत पोह सके ना राईआ। लेखा चुक्के हस्त कीटे, ऊँच नीच इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। लाशरीक नौजवान, मर्द मर्दाने फेरा पाईआ। मुरीद मुर्शद वेख आण, दीद ईद कर रुशनाईआ।

भगत भगवान मंगण दान, दोवे जोड़ सीस झुकाईआ। ठांडे दर कर परवान, मेहर नज़र नैण तकाईआ। चौदां लोक दिसण वैरान, चौदां तबक फुल फुलवाड़ी ना कोई महकाईआ। चौदां विद्या होई शैतान, शरअ नाल मिल के करे लड़ाईआ। गुरदर मन्दिर शिवदुआले मट्ठ साचा दिसे ना धर्म निशान, जगत सियासत बैठी डेरा लाईआ। तीर्थ तट नेत्र नैणां नीर वहाण, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती धीरज धीर ना कोए धराईआ। जीआं जंतां साधां सन्तां कलयुग अन्त साबत रिहा ना कोई ईमान, सिदक सबूरी संग ना कोई रखाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात चढ़या तेरा तुफान, डूंघे सागर रिहा वहाईआ। तुध बिन चरण कँवल कोई ना करे परवान, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। पढ़यां किसे हथ्थ ना आया ज्ञान, अन्दर वड़ के निरगुण तेरी धार ना कोई समझाईआ। कोटन कोटि अग्नी अग्ग बैठे सड़ के, जल जल धारा बैठे तन सीतल रूप वटाईआ। तेरा नगर सच महल अटल मुनार पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी कोई ना वेखे चढ़ के, दर घर साचे दरस कोई ना पाईआ। तेरे भगत कलयुग कोलों फिरदे डरदे, काया मन्दिर अन्दर वड़ वड़ तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। किरपा कर ठाकर स्वामी, सो पुरख निरँजण वड मेहरवाना। आदि जुगादी अन्तरजामी, हरि पुरख निरँजण नौजवाना। एकँकार दे पद निरबाणी, शाह पातशाह सच्चे सुल्ताना। आदि निरँजण तेरा नूर महानी, जोती जोत डगमगाना। श्री भगवान तेरी सच निशानी, निशाना झुल्ले दो जहानां। अबिनाशी करते तेरा खेल महानी, समझ सके ना कोई बाल अञ्याणा। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधानी, ब्रह्म देवे इक ज्ञाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर साचा मंग मंगाना। दर साचा मंगण जन भगत, प्रभ तेरा ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुट्टे जगत, जगजीवण दाते आपणे चरण दे वड्याईआ। लेखे लग्गे बूँद रक्त, काया माटी हड्ड मास नाड़ी चमड़ी तेरी झोली पाईआ। आत्म परमात्म घर विच घर दे ब्रह्म मति, कूड़ी क्रिया छुट्टे पढ़ाईआ। अमृत झिरना मिले रस, निझर आपणी धार वहाईआ। शब्द सुणा अनादी अनहद, अनरागी राग अलाईआ। आत्म सेजा कर प्रकाश, तेरा नूर नज़री आईआ। तूं ठाकर हउँ सेवक दास, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति पुरख निरँजण सदा स्वामी वस साथ, विछोड़ा तेरा जन भगत सह सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपणा मेल प्रभ मेल आप, तेरे हथ्थ वड्याईआ। धुरदरगाही धुर दा दे जाप, अजपा जाप इक समझाईआ। हउँ बालक सेवक चाकर तूं माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। चरण कँवल बंधा नात, नाता बिधाता इक वखाईआ। दरस दिखा इक इकांत, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। बंद किवाड़ी

खोल्ह ताक, बज़र कपाटी पड़दा दे उठाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, आपणा नूर कर रुशनाईआ। ज़ाहर बातन कर बात, गुफ़त शुनीद तेरी सुणां शनवाईआ। खोल्ह वखा डूंघा खात, अखुट तेरा भण्डार इक्को नज़री आईआ। लेखा चुक्के ज़ात पात, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लै तराईआ। जन भगत करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम किरपा धार, किरपा निध बेपरवाहीआ। काया मन्दिर अन्दर दीपक बाल, जोती जोत कर रुशनाईआ। घर विच घर वखा सच्ची धर्मसाल, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। नाम अनमुलड़ा दे लाल, सचखण्ड भण्डारा झोली पाईआ। भाग लग्गे काया माटी खाल, घर वज्जे नाम वधाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, हक़ हकीकत दे जणाईआ। मिसल बणाए बेमिसाल, लेखा लिखे ना कलम छाहीआ। जन भगतां मिले श्री भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई ना जाणे बाल नादान, मनमति समझ कोए ना पाईआ। निरगुण निरवैर पुरख सुल्तान, हरिजन साचे आप उठाईआ। अन्दर वड़ के दे ज्ञान, पर्दा दूई द्वैत चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नाल मिलाईआ। हरिजन मेला कर भगवन्त, हरि भगवन दया कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ लभ्भ साचे सन्त, हरि सज्जण मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दी बणाए बणत, कर्म कर्म दा गेड़ मुकाइंदा। माणस जन्म बणाए बणत, घड़न भंनणहार समरथ स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे आप प्रभ, हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन लभ्भ, मेल मिलावे हर घट थाईंआ। अमृत नाभ कँवल चवाए झब्ब, झिरना आपणा आप बरसाईआ। जगत दवारा पार हद्द, घर मन्दिर दए बहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत घर सज्जण लए सद्द, सद्दा आपणा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन चाढ़े साचा रंग, कलयुग वज्जे नाम वधाईआ। किरपा कर सूरा सरबँग, शाह पातशाह होए सहाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, बिन पावा चूल सुहाईआ। उते बैठ वजाए मृदंग, अनरागी राग अल्हाईआ। कर प्रकाश निरगुण जोत चन्द, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। आत्म परमात्म जुग जन्म दी विछड़ी आपणे नाल लए गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी निरगुण आपणी दया कमाईआ। अगला पिछला मेट पन्ध, साचा घर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगतां गोद उठाईआ। जन भगत सुहेले कलयुग आप, आपणी गोद उठाइंदा। त्रैगुण माया मेट ताप, त्रैगुण अतीता दया कमाइंदा। साची थापणा धुर दी थाप, पिछला लेखा मूल चुकाइंदा। पतित पापी कर के पाक, पुनीत आपणा रूप वखाइंदा। आत्म

परमात्म लेखा सज्जण साक, धुर दा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। शब्द अगम्मी दे दात, सर्ब स्वामी झोली आप भराइंदा। पार उतार आपणे घाट, पत्तण माही इक्को नज़री आइंदा। हो सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे गले लगाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप सति सरूप सोहँ जणाए सच्चा जाप, कोट जन्म दे पाप आप धवाइंदा। सेज सुहञ्जणी सहाए खाट, खटीआ इक्को वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप उपाइंदा। जन भगत उपाए सतिगुर मीत, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग अन्दर सतिजुग चलाए रीत, सति सतिवादी फेरा पाईआ। जन भगतां नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण बैठा डेरा ढाहीआ। काया काअबा वखाए मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ गुर दर इक्को नज़री आईआ। इक्को रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म सर्ब जीआं दा सांझा दस्से गीत, नव नौ चार करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां खेल खलाईआ। जन भगतां खेल खलाए अनोखा, अकल कल आपणी धार जणाइंदा। गुरमुखां नाल कदे ना करे धोखा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। हरिजन हरिभगत तेरी काया अन्दर पारब्रह्म दा वड्डा पोथा, जिस दा पढ़यां अन्त कोए ना आइंदा। कर किरपा जिस मार्ग देवे सौखा, सो हरिजन जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर खोजण कोए ना जाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर घर विच घर वखाए उच्चा, महल अटल इक्को सोभा पाइंदा। जिस अन्दर साचा नाम दिसे सुच्चा, झूठी वस्त ना कोए वखाइंदा। अग्गे राए धर्म कदे ना टंगे पुट्ठा, चित्रगुप्त ना लेख जणाइंदा। मात गर्भ कदे ना होवे उलटा रुख़ा, दस दस मास अग्न ना कोए तपाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां कहे आ मेरे लाडले पुत्ता, बिनां भगतां भगवान सोभा कोए ना पाइंदा। तिस गुरमुख सोहे सुहञ्जणी रुत्ता, घर सतिगुर नज़री आइंदा। सो हरिजन जागे जिस उपर प्रभू तुट्ठा, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। प्रभ दा मीत लुक्या रहे ना किसे गुट्ठा, नौ खण्ड सत दीप चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरब जन्म जो रुस्सा, तिस अन्तिम मेला आपणे नाल कराइंदा। भगतां उते श्री भगवान कदे ना करे गुस्सा, कोझे कमले आपणे गले लगाइंदा। ख़ुशी मनाए घर खा के टुक्कर रुक्खा, मेहरवान निरगुण सरगुण साची सेव कमाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुता, चेतन धार आप समझाइंदा। उजल करे लोकमात मुक्खा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कोई ना खावे जगत हलाली झटका कुट्ठा, इक्को अमृत आत्म रस सतिगुर पूरा मुख चवाइंदा। एथे ओथे दो जहान तिन्हां पैंडा मुक्का, जिस आपणा मुख वखाइंदा। भगत प्रीती श्री भगवान सदा भुक्खा, जुग जुग लोकमात वेखण आइंदा। कलयुग अन्त कदे ना रहे लुका, निरगुण निरवैर

निराकार अकाल मूर्त अजूनी रहित अनभव प्रकाश आप कराइंदा। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला गुर शब्दी आपे झुका, निउँ निउँ सजदा सीस निवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसेरा प्रभ चरण कँवल, मिले पारब्रह्म सुल्ताना। सो सुहाए धरनी धवल, जिस घर वज्जे राग तराना। नूर इलाही खुदाए अवल्ल, नूर नूरानी पहरे बाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह वाली दो जहानां। दो जहाना वाली हरि निरँकार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण इक्को नज़री आईआ। सर्ब स्वामी रमत रमया अन्तरजामी वड बलकार, योद्धा सूर इक्को नज़री आईआ। परवरदिगार लाशरीक देवे इक निशानी, नूर ज़हूर जलवा इक दरसाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे नाम सिफ्त दी दस्सदे गए बाणी, धुर संदेसा जगत सुणाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कोए कलम छाही कानी, कातब बैठे मुख भवाईआ। जिस दा भेद किसे हथ्थ ना आया विद्वानी, लिख लिख खोज खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। सो शाह सुल्तान पुरख इक्को इक नौजवानी, जोबन आपणा आप हंढाईआ। कलयुग अन्त करे मेहरवानी, जन भगतां लए जगाईआ। तिक्खी मुक्खी मारे तीर कानी, सोहँ चिल्ले आप चढ़ाईआ। प्रेम प्रीत दी दस्से कहाणी, आत्म परमात्म कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे अंग लगाईआ। हरिजन लगाए अंग अंगीकार, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। पंज तत काया चोली करे स्वीकार, साढे तिन्न हथ्थ आपणी गंढु रखाईआ। अन्तर आत्म दे आधार, लेखा उदर दए मुकाईआ। सुरती शब्दी कर के ख़बरदार, बेख़बर आपणी ख़बर दए सुणाईआ। उठ सखी वेख सांझा यार, श्री भगवान इक्को नज़री आईआ। जिस दे नाल गुरू अवतार पीर पैगम्बर सारे करदे गए प्यार, मुहब्बत नाता जोड़ जुड़ाईआ। निउँ निउँ करदे गए निमस्कार, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। सो साहिब सतिगुर जन भगतां रिहा उठाल, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आपणे लेखे लाए अनमुलड़े लाल, हरि करता कीमत पाईआ। नाम कुठाली लए डाल, कंचन आपणा रंग वखाईआ। दीन दयाल प्रभ होए दयाल, दयानिध सदा सहाईआ। लेख चुका शाह कंगाल, नीचों ऊँच रिहा बणाईआ। जिस जन आपणा दरस दए दिखाल, सो गुरमुख सति सरूप समाईआ। नाता तोड़ जगत जंजाल, हरि चरण इक्को इक ध्यान रखाईआ। सृष्ट सबाई दिसे गुरमुख सदा कंगाल, गुरमुख कहे प्रभ अतोट अतुट ख़ज़ाना मेरी झोली दित्ता पाईआ। बिन सतिगुर पूरे एथे ओथे दो जहान कोई ना करे संभाल, अग्गे ला के घर लै के कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आपणे गृह वसाईआ। हरिजन वसे

गृह साचे खेड़ा, हरिमन्दिर आप जणाईआ। अगला पिछला चुक्के झेड़ा, झेड़ा जगत ना रहे लोकाईआ। जन्म जन्म दा बन्ने बेड़ा, बन्धन दूई द्वैत कटाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरा, साचे मन्दिर दए वसाईआ। जिथ्थे नाद वज्जे इक्को तूं मेरा मैं तेरा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। सति दवारा खुल्ला दिसे वेहड़ा, दूजी वंड ना कोए वखाईआ। आवण जावण पतित पावण लख चुरासी जम की फाँसी कटाए जेड़ा, डोर नाम आपणे तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगत सुहेले आपणे गले लगाईआ। हरि भगत सुहेला गले जाए लग्ग, हरि आपणा मेल मिलाईआ। कलयुग अग्न बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। साचा मार्ग धुर दा दस्स, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, आप आपणे घर बहाईआ। रखे सिर दे कर हथ्थ, बख्शे सच सरनाईआ। हरि का मन्दिर आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना जाए ढट्ठ, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत साचे सन्त जिस मन्दिर रहे वस, सो मन्दिर सोभा पाईआ। चरण कँवल प्रीती माणन रस, अनरस बैठे सर्ब तजाईआ। निरगुण वेख निरगुण रहे हस्स, सरगुण नाता गए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवन्त नाता जोड़ नार कन्त, आत्म सेज सेज सुहञ्जणी इक्को इक सुहाईआ। आत्म सेजा कर प्रकाश, दीपक लो उज्यारा। शब्द स्वामी वसे पास, निरगुण निरवैर निराकारा। घर मण्डल पावे रास, गोपी काहन खेल न्यारा। सीता सुरती राम कदे होण ना देवे उदास, मिल साची सखी मंगलाचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सद वसे पास, जगत विछोड़ा पार किनारा। जगत विछोड़ा तुटे नाता, हरस हवस ना कोए रखाईआ। परम पुरख प्रभ सर्ब सुखदाता, हरिजन साचे आपणी गोद बहाईआ । पूरब जन्म दा पूरा करे घाटा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। अन्तर आत्म पूरी करे ख्वाहिशा, ख़ालस आपणा रूप वटाईआ । एथे ओथे माणस जन्म हार ना आए पासा, जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। घर नूर दीपक प्रकाशा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अनहद शब्द सुणाए अगम्मी वाजा, सुर ताल नज़र किसे ना आईआ। शाहो भूप बण राजन राजा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। भगत भगवान चढ़ाए आप जहाजा, खेवट खेटा हो के सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम रच के काजा, करनी करता आप कमाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत प्यारा सिँघ आया भाजा, अग्गा पिच्छा नज़र कोई ना आईआ। साक सज्जण सैण संबंधी मारदे रहे आवाजां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । क्यों फिरदा भुल्लया पिच्छे साधां, साधना समझ किसे ना पाईआ। कर किरपा जिस प्रभ शब्द सुणावे बोध अगाधा, सो दूजी सुणे ना कोए पढ़ाईआ । पूरन अन्दर प्रकाश लाधा, प्रकाश विच्चों पूरन रूप नज़री आईआ। सो पूत जिस पिता नाल

मिलाया धुर दे दादा, नानक दादक दोवें छुटे जगत लोकाईआ। दोहां बुज्झया आपणा आपा, घर विच घर प्रभ सच्चा नज़री आईआ। एथे ओथे माई बापा, बैठा गोद उठाईआ। जिस दा आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जपदे गए जापा, सो सोहँ रूप समाईआ। रोग सोग चिन्ता दुःख ना कोई तापा, मढ़ी गोर दफ़न कर कफ़न ना कोए टिकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत तेरा अन्त करे ना कोई सयापा, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान हरिभगत आपणी गोद उठाए निक्का जिहा काका, वड्डा छोटा छोटा वड्डा इक्को रंग वखाईआ। गुरसिख सचखण्ड प्रभ चरण दुआर जा बिन तत तूं कहीं मेरा पापा, पिता पुरख तेरी सरनाईआ। निरगुण तेरी धार तेरे नाल जुड़या नाता, तेरे नालों विछड़ अन्त तेरे विच समाईआ। भगत भगवान दा इक्को साका, बिन भगत बिन भगवान दोवें विच जगत कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे तत आठा, नौ दर वेखे खेल तमाशा, दसवें घर गुरमुख वासा, कर किरपा आप कराईआ।

* १६ मग्घर २०२० बिक्रमी हरदयाल सिंघ दे गृह महल्ला किशन पुरा जलन्धर *

सो पुरख निरँजण कर तरस, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दे दरस, हरि पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। एकँकार वाली दो जहान जुग जुग दी मिटा तड़प, बिहबल हो हो देण दुहाईआ। निरगुण जोत नूर प्रकाश कर साची दे परख, आदि निरँजण तेरा जलवा इक्को नज़री आईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी दरस दिखा घर घर विच परत, अबिनाशी करते फेरा पाईआ। जन्म जन्म दा रोग सोग चिन्ता दुःख मिटा हरख, श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरी करा लिख्त पढ़त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कुरान अञ्जील नेत्र नैण रहे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, हरि ठाकर तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण भीख, दर भिखक रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी तेरी मन्नदे रहे हदीस, हज़रत तेरी सच पढ़ाईआ। लेखा लिख शास्त्र सिमरत सिफ्त कर कर राग छत्तीस, दन्द बत्तीस ढोला गाईआ। निरगुण सरगुण चलाउँदे रहे रीत, आत्म परमात्म नाता पंज तत जुड़ाईआ। सच संदेसा धुर दा गाउँदे रहे तेरा गीत, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुर दर तेरा नाद सुणाईआ। हर घट वसया दस्सदे रहे अतीत, त्रैगुण अतीता बेपरवाहीआ। एका रंग वखाउँदे रहे

हस्त कीट, राउ रंक ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली तेरी हदीस, साचा कलमा ना कोए सुणाईआ। मन वासना कोई ना सके जीत, जगत तृष्ना फिरे हल्काईआ। मिट्ठा कौड़ा कोई ना करे रीठ, विख अमृत रूप ना कोए वटाईआ। काया करे ना कोई ठांडी सीत, अठसठ तीर्थ तारीआं रहे जगत लाईआ। तेरे चरण कोई ना बन्न्हे प्रीत, प्रीतीवान नज़र कोए ना आईआ। छत्र झुले ना किसे सीस, राज राजान शाह सुल्तान बैठे ढेरीआं ढाहीआ। कर खेल आप अनडीठ, साहिब सतिगुर तेरी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल तेरी ओट, दो जहान ध्यान लगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रखण तेरी ओट, लोक परलोक तेरा राह तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण सच नगारे ला चोट, नाम डंका इक सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी घर घर अन्दर भरया कूड़ा खोट, सच सुच्च रूप ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर किसे नज़र ना आए जगदी जोत, जोती जाता रूप ना कोए वखाइंदा। कूड़ी वासना सारे भोगण भोग, आत्म सेजा कोई ना सोभा पाइंदा। मदि प्याले कीते मधहोश, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। तेरा लेखा कोई ना सके सोच, सोचयां हथ्थ किसे ना आइंदा। पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार क्यों बैठा ख़ामोश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। दर मंगे मंग पृथ्मी आकाश, मण्डल मण्डप ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। साचे मण्डल पावे कोई ना रास, गोपी काहन रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया खेल तमास, नारी नर रहे वखाईआ। सच घर ना दिसे कोई वास, मण्डल मण्डप बैठे डेरा लाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। साची पटी पढ़े ना कोई किताब, चौदां विद्या होई हल्काईआ। कलमा हक़ ना जाणे कायनात, नबी रसूल पड़दा सके ना कोए उठाईआ। मुख पर्दा वेख नक़ाब, परवरदिगार फेरा पाईआ। सच रबाब वजाए ना कोए अहिबाब, तार सितार ना कोए हिलाईआ। साचे सजदे करे ना कोए आदाब, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। हुजरा दिसे ना किसे महिराब, महिबूब दरस कोए ना पाईआ। ख़ालक ख़लक वेख आप, मख़लूक आपणा वेस वटाईआ। पीर पैगम्बर तेरे दास, बण बरदे सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम रखी आस, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। चौदां तबक बुझा प्यास, आबे हयात मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, धुरदरगाही वेख वखाईआ। धुरदरगाही पुरख अकाल, अकल कल तेरी सरनाईआ। सति स्वामी हो दयाल, दीनां नाथ वेख वखाईआ। नव नौ चार दिसे बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। लग्गी अग्ग

काया माटी खाल, पंज तत सीतल धार ना कोए वहाईआ। निरगुण सरगुण दिसे ना किसे नाल, पड़दा उहला सारे बैठे पाईआ। बिन तेरे नाम होए कंगाल, शाह पातशाह देण दुहाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाईआ। चारों कुण्ट त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। साची घालण कोई ना रिहा घाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, वर दाते बेपरवाहीआ। धरनी धरत धवल रही कूक, नाअरा इक्को इक जणाईआ। कलयुग अग्नी रही कूक, सांतक सति ना कोए वरताईआ। किसे घर ना दिसे कोई सुख, दुक्खां भरी लोकाईआ। चार वरन उजल दिसे ना कोई मुख, बरन अठारां कालख टिक्का शाही ना कोए धुआईआ। श्री भगवान तेरे नालों तेरे बैठे रुट्ठ, गुर का शब्द सारे रहे भुलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार सब ने कीता रुख़, मन वासना चारों कुण्ट भवाईआ। किसे मन्दिर गृह घर खेड़े दिसे ना सच सुच्च, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार ख़ालक ख़लक आ के पुच्छ, बेनज़ीर शाह हकीर शहिनशाह उठाईआ। जगत विकार वड हँकार आ के कुट्ट, नाम खण्डा तेज कटारा हथ्थ चमकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त परम पुरख पैंडा रिहा मुक्क, दूर दुराडी वाट अन्तिम नेड़े आईआ। भगत भगवान सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण आपणी गोदी चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। तेरा बूटा कदे ना जाए सुक्क, अमृत मेघ सिंच हरा कराईआ। सचखण्ड दवारे गिरवर गिरधारे क्यों बैठा लुक, मुख पर्दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साजण फेरा पाईआ। घर सज्जण आ प्रभ मेरे, नेत्र नैण नैण ध्यान लगाईआ। तुध बिन वसदे उजड़े खेड़े, ख़ाली बुत्त देण दुहाईआ। तेरे नाम दे पए झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। कलयुग वेख कूड़े गेड़े, लख चुरासी रिहा भवाईआ। कोई ना वसे तेरे नेड़े, दूर दुराडे भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, लोकमात वेस वटाईआ। लोकमात खोल्ह ताकी, ताकतवर तेरी ओट तकाईआ। समरथ पुरख मार झाती, बंद किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। लेखा वेख मानस ख़ाकी, ख़ाक विच रुली तेरी लोकाईआ। तेरे नाम तों सारे होए आकी, अक्ल कम्म किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता विके हाटी, कलयुग बण वणजारा हट्ट विकाईआ। साचा मिले ना कोए साथी, सगला संग ना कोए रखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पाठी, अन्तर आत्म तेरा नाउँ नज़र किसे ना आईआ। भरमे भुले ज़ात पाती, तेरा रूप ना कोए दरसाईआ। किरपा कर कमलापाती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, सच तेरी ओट तकाईआ। तेरी ओट रहे तक्क, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाइंदा। गुर अवतार रहे थक्क, जुग चौकड़ी पन्ध ना कोए

मुकाइंदा। पीर पैगम्बर दर मंगण हकीकत हक़, दोए जोड़ सीस निवाइंदा। त्रैगुण माया रही ढट्ठ, पंज तत वेख कुरलाइंदा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम गई फस, फैसला सच ना कोए सुणाइंदा। तेरे नाम दा मिले ना किसे रस, रसना जिह्वा जगत हल्काइंदा। आ के वेख खेड़ा अट्ठ तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो तेरा राह तकाइंदा। आत्म परमात्म तेरा सत्थर रही घत्त, तुध बिन यारड़े सत्थर ना कोए हंढाइंदा। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती रत ना कोए वखाइंदा। किरपा कर पुरख समरथ, नेत्र नैण सर्ब बिल्लाइंदा। आ के खोल्ह आपणी अक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। नेत्र नैण रहे खोल्ह, अक्ख प्रतख जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सच वजा ढोल, ढोल दो जहानां नाद सुणाईआ। धर्म दवारा इक्को खोल्ह, जन भगत लै जगाईआ। हर घट अन्दर जा मौल, मौला आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां नाल जो कीता कौल, अन्तिम पूरा दे कराईआ। कर प्रकाश उपर धौल, धरनी धरत धवल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। दर रखी आस श्री भगवन्त, चार जुग नैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे बेअन्त, महिमा अकथ कथ सके कोए ना राईआ। भेद ना जाणे कोई सन्त, रूप रेख सके ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण बेअन्त, बेअन्त बेअन्त कहि कहि पल्लू सर्ब छुड़ाईआ। बिन तेरे तेरा कोई ना जाणे मंत, मंतव हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा खेल जुगो जुगन्त, जुग चौकड़ी धार बंधाईआ। बोध अगाधा बणे पंडत, साची सिख्या सच समझाईआ। देवे दात जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रूप वखाईआ। दूजे दर कदे ना जावे मंगत, देवणहार इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा सोभा पाईआ। दर मंगण अठारां भगत, कबीर जुलाहा नाल रलाईआ। पारब्रह्म तेरा साचा वक्त, गुर अवतार लेखा देवे लिखाईआ। निरगुण हो के मात परत, सरगुण तत ना कोए जणाईआ। ग़रीब निमाणे उते कर तरस, कोझे कमले गले लगाईआ। लख चुरासी विच्चों परख, नाम कसवटी इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे अग्गे इक्को आस रखाईआ। कबीर कहे प्रभ ठाकर स्वामी, सोभावन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम दे निशानी, सति सरूप इक समझाईआ। पढ़ पढ़ सारे थक्के तेरी बाणी, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। तेरी किरपा किसे ना मिले पद निरबाणी, चौथे घर ना कोए समाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी महिमा दी अकथ कहाणी, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। कलम शाही जगत बणी बाल अञ्याणी, तेरी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, इक्को देणा सच्चा वर, जन भगतां हो आप सहाईआ। भगत कहिण प्रभ भगत जन, आपणे रंग रंगाईआ। लेखा चुक्के वासना मन, मन मनसा रहिण ना पाईआ। लग्गे भाग पंज तत तन, ततव तत दे समझाईआ। कर प्रकाश नेत्र अन्न्, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धुर दा राग सुणा कन्न, शब्द अनादी नाद वजाईआ। भाण्डा भरम भउ दे भन्न, घड़न भंनणहार तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। वस्त अमोलक दे धन, सच भण्डारा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा सच्चा घर, जिस घर तेरा खेल नज़री आईआ। सच्चा खेल दस्स भगवान, चौथे जुग सारे ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा लिख लिख दित्ता ब्यान, कलम शाही बंद कराईआ। ढोला गाया रसना ज़बान, बेज़बान तेरी करी पढ़ाईआ। कलमा नबी रसूल जणाया कलाम, कायनात कर शनवाईआ। किरपा कर वड अमाम, मुहम्मद तेरी ओट तकाईआ। ईसा मूसा बरदे बण गुलाम, धूढ़ी ख़ाक रहे रमाईआ। परवरदिगार कर पहचान, वेला वक्त आप सुहाईआ। साडी तेरे अग्गे सलाम, दूजा काअबा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग वेख अन्त हैरान, उम्मत नबी रसूल गई भुलाईआ। तेरा जाणे ना कोई पैग़ाम, आयत शरायत ना कोई वड्याईआ। हउँ बाले तेरे अंझाण, तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। बण पेशवा मंगदे गए दान, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, वड पीरन पीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा दर, दर बदर आपणा फेरा पाईआ। दर बदर वेख प्रभ ख़ालक, खलील तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट दिसे ना कोई पालक, प्रितपालक करे ना कोए लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लोकमात बणाए सालस, सारे पल्लू गए छुड़ाईआ। तुध बिन लख चुरासी करे ना कोई ख़ालस, सति सरूप ना कोए वटाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां कूड़ी निंद्रा लाह आलस, सच हुलारा इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक विखाउणा धुर दा दर, जिस गृह बहि के आपणा काज रचाईआ। जिस घर बहि के करे काज, सो मन्दिर देणा वखाईआ। जिस मन्दिर बहि के मारे आवाज, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जिस संदेसे अन्दर तेरा राग, कोई समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा इक घर, जिस गृह बहि के आपणा राग अलाहीआ। जिस मन्दिर बहि सुणावें राग, तिस मिले माण वड्याईआ। जिस घर जगे चराग़, बिन तेल बाती रुशनाईआ। जिस दर रखें लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा आपणा दर, दर दरवेश बैठे ध्यान लगाईआ। दर वखाउणा प्रभ ठाकर एक, एकँकार तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम जिस बिध भगतां देवें टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मन मति बुध इक्को वार करें विवेक, नाम रंग सच रंगाईआ।

कूड़ी क्रिया आपणे चाढ़ें भेंट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अगम्मी वर, मेहरवान आपणा रंग वखाईआ। मेहरवान वखाउणा रंग, सब बैठे ध्यान लगाईआ। सदी बीसवीं रही लँघ, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा सुणना चाहुंदे छन्द, शहिनशाह साचा राग अलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत किस बिध देवें इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवें गंढु, डोरी नाम तन्द बंधाईआ। तेरी आत्म परमात्म कदे ना होवे रंड, बण सुहागण खुशी मनाईआ । साचे मन्दिर लावें अंग, अंगीकार इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। घर साचा वेखो वसे भगवान, हरि भगवन दया कमाईआ। वीह दस दा खेल महान, हरि करता दए जणाईआ। निरगुण सरगुण मिले आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सन्त सुहेले लए पहचान, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। सच दवारे बहि बहि देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। गुरमुख बणाए सच्चा काहन, मुख बंसुरी नाम वजाईआ। धुर दुआर वखाए इक मकान, सचखण्ड साचे पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई ग़रीब निमाणे, रहमत आपणी सच कमाईआ। तख्तों लाहे राजे राणे, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां बन्ने धर्मी गाने, डोरी तन्द नज़र किसे ना आईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान देवे माणे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साची वार साची थित, पुरख अबिनाशी कर के हित्त, दीन दयाल साचा मित्त, मित्र प्यारा दए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ अग्गे, दूर दुराडे ल्या बुलाईआ। करे खेल सूरा सरबग्गे, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। हरिजन वेखे आपणे रंग रंगे, रंग रंगीला इक्को नज़री आईआ। ग़रीब निमाणे आपे जाणे चंगे मंदे, वड दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे वल तक्कण, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलयुग वेखो पारब्रह्म प्रभ भगतां आया रखण, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ आया पुट्टण, लोकमात रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेले मार्ग साचा आया दस्सण, धुर दी करे पढ़ाईआ। हिरदे अन्दर आया वसण, सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी विच्चों विरोले मक्खण, सच मधाणा नाम रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे वेखण उठ, लोकमात ध्यान लगाईआ। परम पुरख प्रभ गया तुठ, दीन दयाल दया कमाईआ। जन भगतां दुआरे रिहा झुक, सीस जगदीश रिहा निवाईआ। निर्धनां निमाणयां रिहा पुछ, घर घर सद्दा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे नूं कहिण वेखो थित आई सोलां मग्घर, दो जहानां वज्जे वधाईआ। वीह सौ दस बिक्रमी जिस पूरी कीती सधर, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। सो निरवैर पुरख निरगुण रूप आया बदल, जोती जाता नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम करे साचा अदल, अदालत इक्को इक रखाईआ। जन भगत चढ़ाए आपणी मंज़ल, सच दवारे दए पुचाईआ। आपे होए जन भगतां हरदिल, अजीज़ आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुतड़ी इक सुहाईआ। आओ वेखो रुत सुहंदी, गुर अवतार रहे जस गाईआ। दीन दयाल बण बख्शंदी, बख्शिश आपणी रिहा कमाईआ। जन भगतां फूलन देवे नाम सुगंधी, धुर दी वस्त इक वरताईआ। कर किरपा कढ्ढे विच्चों वासना गंदी, दुरमति मैल धुआईआ। सति धर्म दी दस्से इक्को डण्डी, आत्म परमात्म राह चलाईआ। करे सुहागण आत्म रंडी, हरि कन्त मेल मिलाईआ। दर ते रहिण ना देवे कोई भेख भखण्डी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। इक्को ढोला सुणाए सच्चा छन्दी, शहिनशाह आपणा राग अलाईआ। तोड़नहारा ख़ाना बंदी, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे रिहा वड्याईआ। आओ वेखो प्रभ खेल करे अनमुल्ल, हरि करता भेव चुकाईआ। लोकमात दा गुलशन वेखो सच्चा गुल्ल, गुरमुख रिहा महकाईआ। प्रभ गुंनचे विच्चों प्रगट होया फुल्ल, वासना आपणा प्रेम रखाईआ। सच प्रीती गया भुल्ल, हरि घोली घोल घुमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत लोकमात ना जाण रुल्ल, फड़ बाहों लए उठाईआ। साचे कंडे तोले तोल, तोलणहारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे चाईं चाईंआ। जन भगतां वेख प्रभ हरि ठाकर, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। कलयुग पार कराए डूंग्घा सागर, नईआ नौका नाम इक चढ़ाईआ। मेहरवान हरि करता कादर, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। सबर प्याला देवे इक्को सागर, सिदक सबूरी आपणे चरण रखाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुआईआ । साचा वणज इक वखाए बण सौदागर, सौदा आपणे हट्ट वकाईआ , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई मग्घर थित, वदी सुदी ना नाल रलाइंदा। ग़रीब निमाणयां कर कर हित्त, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। जिस नूं जुग चौकड़ी सारे लभ्भदे नित्त, सो नवित्त भगतां आपणी कार कमाइंदा। निरगुण हो के बणयां पित, सरगुण रूप रंग ना कोए वखाइंदा। सन्त सुहेले प्रेम प्रीती नाल लए खिच, रसना जिह्वा ना बोल सुणाइंदा । काया मन्दिर अन्दर डूंग्घी भँवरी वड़े विच, आप आपणा मुख छुपाइंदा। भेव चुकाए घर निज, निज आत्म अमृत रस चुआइंदा। सच्चे मिलण दी धुर दी बिध, शब्दी शब्दी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा

लेखा वेख वखाइंदा। धुर दा लेखा रिहा वेख, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां करे सच्चा हेत, हितकारी फेरा पाईआ। हरि भगत फुलवाड़ी मौले रुत्त बसन्ती चेत, ख़िज़ां रूप ना कोए वटाईआ। परम पुरख दा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेड, कोई समझ सके ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे जुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा भेज, अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत दे दे गए संदेस, गुर अवतार पीर पैगम्बर वाक भविक्ख्त जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मिल्या ठाकर इक्को, प्रभ एका नजरी आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवे धुर दी टेको, टिक्का धूढ़ी मस्तक नाम इक लगाईआ। पतित पुनीत करे बुध बबेको, विवेकी आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हरिजन सन्त सुहेले सदा चेतो, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। अन्तर आत्म परमात्म निज नेत्र पेखो, बाहर दोए लोचण लभ्भण कोए ना जाईआ। साहिब सतिगुर गोदी बहि बहि खेडो, सच हुलारा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण रंग रंगाए आत्म चम्म, माटी नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल करे आपणा कम्म, निहकरनी आपणी कार कमाईआ। जिस दे हथ्थ मरन जन्म, जन्म मरन दोवें आपणी झोली पाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम बख़्शे इक्को सरन, सरनगति इक समझाईआ। भय भ्यानक भउ चुक्के मरन डरन, डरन मरन रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा घर इक्को इक वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घर वेखो सच्च, हरि साचा सच बुझाइंदा। श्री भगवान नौ जवान मर्द मर्दान जन्म भगतां मिले हस्स हस्स, रुत्त सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मार्ग दस्स, रहिबर इक्को राह चलाइंदा। जोत प्रकाश घर घर निवास, बण दासी दास सेवक सेव कमाइंदा। दूर दुराडे सद्दे पास, जन्म जन्म दी पूरी करे आस, कर्म कर्म दा रोग कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे प्रभ आपणी कुल, कुलवन्ता वेख वखाईआ। जन भगतां पाए कीमत मुल्ल, हरि करता आप चुकाईआ। वीह सद उन्नी पंज अस्सू जो गए भुल्ल, सो भुल्ल लेखे रिहा लगाईआ। दुआबा संगत देवे इक इक फुल्ल, पंज पोह वेख वखाईआ। सच दवारे फुलवाड़ी जाए फुल्ल, नाम महक इक महकाईआ। करे खेल आप अभुल्ल, भुल्ल विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। पंज पोह दा विहारा सति, सति सति वडियाइंदा। जांदा जांदा दए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा।

हरिसंगत आपणे नाल लै के आउणी फुल्ल वथ, धुर संदेसा आप अलाइंदा। किरपा करे पुरख समरथ, समरथ साची कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न पंज आप वडियाइंदा। तिन्न पोह बद्धक लेखा, हरि सतिगुर पूर कराईआ । पंज पोह आशक भुलेखा, माशूक दए समझाईआ। दोहां रख्या धुर दा चेता, श्री भगवान होए सहाईआ। पंज सिख नाल बणाए नेता, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जन्म विच्चों जन्म दी फेर बदले रेखा, मानस मानस नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कारण आया पैज संवारन, बणाए साची धारन, धरनी देवणहार वड्याईआ। तिन्न पोह बद्धक मुक्कण वाला पन्ध, लोकमात पैंडा नज़र ना आईआ। पंज पोह डुब्बण वाला चन्द, आप आपणा मुख छुपाईआ। हरिसंगत तेरे नाल मिल के दोहां बेड़ा देवे बन्न्, आप आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान सदा सुखदायक, सुख सागर वेख वखाईआ । परम पुरख प्रभ साचा नायक, निरगुण दाता वड वड्याईआ। हरिसंगत करे इक हदाइत, हाज़र हो समझाईआ। बख्शिश रहमत जन भगतां उते अनाइत, परवरदिगार आप जणाईआ। पंज पोह दर आउण दी करे ना कोए किफ़ायत, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार अट्ठ लेखा लिखे थाउँ थाईंआ । चार अट्ठ अंक जोड़ अठताली, सोलां पहर सोलां मग्घर दए वड्याईआ। जन भगतां पिच्छे बणे पाली, प्रितपालक फेरा पाईआ । लेखे लाए पत डाली, फुल्ल पाती वेख वखाईआ। पूरब जन्म जिन्हां घाल घाली, तिन्हां लेखा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। इक इक फुल्ल दयो वंड, हरि वंडण वंड वंडाईआ। जिस विच भरी नाम सुगंध, खुशीआं रूप वटाईआ। सो भगतां नाल घर जाए नसंग, बण के पांधी राहीआ। रातीं सुत्तयां दए अनन्द, दिनें खुमार चढ़ाईआ। तिन्न दिन सारे घर विच मंगणी मंग, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ । किरपा कर प्रभू बख्शंद, बख्शणहार तेरी वड्याईआ। गुरमुखां नालों ना टुट्टे साडा संग, सदी बीसवीं ना होए जुदाईआ । अग्गे वेखीए तेरा रंग, की वज्जे सच वधाईआ। आशक छुपे ना तेरा चन्द, बधक घाउ ना कोए लगाईआ। हरिसंगत तेरे पिच्छे टुट्टी दए गंढु, जन्म कर्म कर्म जन्म फेर बणाईआ। किरपा करे सूरा सरबँग, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। फूलन बरखा लाइण फुल्ल, कली कली महकाईआ । तेरे नालों विछड़े गए भुल्ल, भरम प्या लोकाईआ। जुग चौकड़ी माया ममता गए रुल्ल, करते कीमत कोए ना पाईआ। धन्न भाग तूं बणाईं आपणी कुल, कुलवन्त तेरी शरनाईआ। तेरा बूटा

कदे ना जाए हुल्ल, सिम्मल रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरिजन साचे फेर जवाईआ।

* १७ मग्घर २०२० बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर *

साची भगती भगवन प्रीत, श्री भगवान आप बणाईआ। जिस दी करे ना कोई रीस, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। हरि सरनाई जगत वासना लए जीत, सति सरूप समाईआ। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठ, अमृत रस सच भराईआ। सदा सुहेला वसे चीत, सगला संग निभाईआ। लोकमात साची रीत, सो साहिब सतिगुर आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। साची भगती सतिगुर चरण प्यार, लोकमात इक जणाईआ। गुरमुख गुरसिख देवे आधार, सन्त सुहेले धीर धराईआ। भगत भगवान लए उठाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा वणज आप कराईआ। लेखे लाए हरिजन घाल, करता कीमत आपे पाईआ। सच प्रीती जो जन रहे भाल, तिन्हां आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक्को बूझ बुझाईआ। साची भगती सतिगुर हित्त, हितकारी इक्को नज़री आइंदा। लेख अलेखा दए लिख, लिख्या लेख आप मिटाइंदा। अन्दर वड़ के खोल्हे भेत, भेद अभेद चुकाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र दरस दिखाइंदा। जगत माया ना लाए सेक, तत अग्नी आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। साची भगती सतिगुर संग, हरि करता आप जणाइंदा। काया चोली चढ़े रंग, सति सरूप वखाइंदा। घर सुणाए आपणा छन्द, साचा राग अलाइंदा। अगला पिछला मेट पन्ध, ठांडे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी भगती लाइंदा। जिस जन भगती लाए आप भगवन्त, आपणी दया कमाईआ। तिस लेखा लिखे बोध अगाधा महिमा अगणत, पर्दा दूई द्वैत उठाईआ। माणस जन्म बणाए बणत, लख चुरासी विच्चों दए वड्याईआ। नाउँ धराए हरि सज्जण सन्त, सन्त सतिगुर रूप वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणे राह चलाईआ। भगती मार्ग दस्से आप, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। घर मिलावा हरि सतिगुर सज्जण साक, बाहर टोलण कोए ना जाईआ। गृह मन्दिर खोल्हे बंद कवाड़ी ताक, पर्दा आपणा आप परे हटाईआ। साचा दे नाम निधान जाप, इश्नान चरण धूढ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती देवे पाठ, पुस्तक हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। पुस्तक पाठ ना

कोए किताब, अक्खर अक्खर ना कोए समझाईआ। हरिभगत अन्दरे अन्दर कराए आपणा जाप, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। आत्म परमात्म सुणाए गाथ, धुर संदेसा इक जणाईआ। पत्तण वेख प्रभ बैठा घाट, बण खेवट खेट मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। जन भगत भगती रंग रता, रती रत रत सुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरे टेको इक्को मथ्था, दूजे सीस ना किसे निवाईआ। जगत विकार करे हत्ता, हत्या बिन छुरी कटार हलाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन लेखा लेखे विच्चों समझाईआ। भगती लेखा अगम्म अथाह, बिन सतिगुर हथ्थ किसे ना आइंदा। लभ्भ लभ्भ थक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ थल अस्गाह, समुंद सागर खोज खुजाईआ। अग्गे हो कोई ना पकड़े बांह, बाहों पकड़ पार ना कोए कराईआ। दूर दुराडे सारे करन ना, सगला संग ना कोए निभाईआ। नाता तुटे पुत्तरां माँ, पिता पूत गोद ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरा जन भगतां इक्को करे हां, आप आपणे अंग लगाईआ। सच वसाए धुर मकान, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। साची भगती प्रभ चरण ध्यान, सच ज्ञान इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे सच प्रीती भगती दान, भगवन आपणे दर रखाईआ।

* १ पोह २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सो, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। निरवैर निरँकार प्रभ आपे हो, साकार खेल वखाईआ। अनभव प्रकाश अगम्मी लो, जोती जाता वड वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दा मोह, सति सतिवादी आप बंधाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी आपे छोह, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। दो जहानां देवे ढोआ ढो, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अमृत रस इक्को चो, धुर दी धार सति वहाईआ। नर नरेश सच संदेस शब्द अगम्म आपे हो, होका सति सति दृढ़ाईआ। जुगा जुगन्तर भेव ना जाणे को, अलख अलखना लख सके कोई ना राईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहा निरमोह, मुहब्बत हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त रिहा टोह, घर घर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी साची कार, धुर दी धार आप बंधाइंदा। नित नवित्त खेल निरँकार, नर निरँकारा आप कराइंदा।

जुग चौकड़ी वेखणहार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। बोध अगाधा बोल जैकार, नाम नाअरा इक लगाइंदा। कातब बण वड लिखार, कलम छाही रंग चढ़ाइंदा। संदेसा दे सर्ब संसार, साखी सच आप समझाइंदा। कुदरत कादर दे आधार, कलमा आपणा आप समझाइंदा। महिबूब मुहब्बत करे सच दरबार, दरगाह साची वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। निरगुण सरगुण करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। वसणहार सच दुआर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मनार, निरगुण जोती नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। निरगुण सरगुण बण के आप, प्रभ आपणी खेल खलाइंदा। सरगुण दे के निरगुण जाप, धुर संदेसा राग सुणाइंदा। निरवैर हो के सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। पवित्र हो के खोल्हे ताक, पतित पार कराइंदा। अन्दर वड़ के दस्से बात, हरि बातन आप समझाइंदा। मन्दिर चढ़ के मारे झात, दर घर साचे सोभा पाइंदा। माही बण के वेखे पत्तण घाट, किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पांधी बण के मेटे वाट, दो जहानां पन्ध चुकाइंदा। प्रकाश हो मिटाए अन्धेरी रात, जोती चन्द इक चमकाइंदा। सतिगुर हो सुणावे गाथ, धुर दा ढोला राग अल्हाइंदा। कन्त हो के बणे कमलापात, नारी नर नरायण प्रनाइंदा। दाता हो के खोल्हे डूंघा खात, अतोट अतुट आप वरताइंदा। निरगुण हो के लेख चुकाए आपणी ज़ात, ज़ात अज़ात वंड ना कोए वंडाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां वेखे हालात, हालत सब दी आप बणाइंदा। पुरख अकाला दीन दयाला हरख सोग ना पाए वफ़ात, मढ़ी गोर ना आसण लाइंदा। प्याला मदि ना कोए आबे हयात, अमृत रस मुख ना कोए रखाइंदा। देवणहारा धुर दी दात, वड भण्डारी आप वरताइंदा। वेखणहारा कायनात, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। बख्शणहारा सर्ब नज़ात, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। सुणावणहारा भविक्खत वाक, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा। जानणहारा लेखा मात, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। वसणहारा इक इकांत, नर हरि नज़र किसे ना आइंदा। रचणहारा रचना आदि, अन्त आपणे विच छुपाइंदा। खेलणहारा खेल ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी कार कमाइंदा। उपजावणहारा सन्त साध, साधक आपणे रंग रंगाइंदा। मारनहारा धुर आवाज़, शब्दी ढोला राग सुणाइंदा। रचणहारा सच्चा काज, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कल धराइंदा। करनहारा धुर दा राज, दरगाह साची सोभा पाइंदा। बोलणहारा बोध अगाध, बिन रसना जिह्वा राग सुणाइंदा। बणनहारा कन्त सुहाग, जुग चौकड़ी नार आप प्रनाइंदा। करनहारा सर्ब त्याग, सच दवारे बहि बहि आसण लाइंदा। बणावणहारा सच समाज, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवणहारा आपणा दाज,

दौलत नाम ख़ज़ाना झोली इक भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणी खेल वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेल दो, दो जहान वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण दए मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण करे लो, सच प्रकाश इक रुशनाईआ। निरगुण सरगुण अमृत देवे चो, साची धार इक वहाईआ। निरगुण सरगुण धुर दी देवे सो, सति संदेसा नाम सुणाईआ। निरगुण सरगुण ढोआ देवे ढो, पंज तत मिले वड्याईआ। निरगुण सरगुण भेव ना जाणे को, प्रभ आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बेपरवाह, भय भउ ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी शहिनशाह, भूपत इक्को नज़री आईआ। लेखा जाणे दो जहान, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। धुर संदेसा देवे अलाह, शब्दी शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण देवणहार वड्याईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण देवे पहचान, बेपहचान आपणी बूझ बुझाइंदा। निरगुण सरगुण देवे माण, चरण कँवल ध्यान रखाइंदा। निरगुण सरगुण देवे ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण करे कल्याण, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा। निरगुण सरगुण होया एक, एकँकार वज्जे वधाईआ। सरगुण कहे प्रभ तेरी टेक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण कहे मैं तेरा भेत, घर तेरे बैठा मुख छुपाईआ। सरगुण कहे तेरा रूप ना दिसे कोई रेख, रंग नज़र कोए ना आईआ। निरगुण कहे मैं करां हेत, घर साचे फेरा पाईआ। रल के खेलां अगम्मी खेड, समझ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। निरगुण कहे सुण सरगुण मीत, सति सति जणाईआ। सो पुरख निरँजण चलाई आपणी रीत, हरि पुरख निरँजण खेल रचाईआ। एकँकार हो अनडीठ, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता गाए गीत, श्री भगवान साचा ढोला राग अल्ह़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सरगुण तेरी चलाई अगम्मी रीत, रीतीवान होए सहाईआ। जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण खेल खेली ठीक, अन्तिम ठीकर भन्न वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सारे करदे गए उडीक, बिन नेत्र ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे गए भीख, दर दरवेश झोली डाहीआ। लोकमात मार झात सुणाउँदे गए गीत, धुर दा राग अल्ह़ाईआ। लेखा दस्सदे गए शिवदुआले मन्दिर मस्जिद मट्ठ मसीत, गुरूदवारे गुर गुर बन्धन पाईआ। सरगुण करे सरगुण प्रीत, सरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पतिपरमेश्वर परवरदिगार सब रखदे गए

उडीक, नेत्र लोचण नैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सरगुण सुण सच्चा सोहला, सो साहिब आप जणाईआ। जुग चौकड़ी रख्या उहला, पड़दा पड़दे विच छुपाईआ। सतिनाम दा दित्ता सोहला, ढोला इक जणाईआ। कलमे अन्दर गाया मौला, मौला आपणा हुक्म मनाईआ। निरगुण हो के सरगुण नज़री आया उपर धौला, धरनी धरत वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर के गए कौला, कीता इकरार मंग मंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा खेल बिन काया चोला, चोली आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा सुणो अकाल, अकल कलधारी आप जणाइंदा। सरगुण हो के मिले दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण खेल कमाल, दूआ बन्धन इक्को पाइंदा। सरगुण नाता तुटे काया माटी खाल, हड्ड नाड़ी मास चम्म कम्म किसे ना आइंदा। लोकमात दिसे ना कोए निशान, निशाना हथ्थ ना कोए उठाइंदा। चारों कुण्ट वेख मार ध्यान, नेत्र नैण रूप नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण अन्तिम सिफ़रा होया अंक बणे ना कोए जहान, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा हाल समझाइंदा। सरगुण तेरा अन्त सिफ़रा, ज़ीरो रूप वटाईआ। इक्को रह जाए अक्खरां वाला फ़िकरा, तत नज़र कोए ना आईआ। नाता टुट्ट जाए सजणां मित्रां, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण सच दए दृढ़ाईआ। सरगुण कहे की प्रभ मेरा रूप सिफ़र, निशान नज़र कोए ना आईआ। सुण के मैनूं होया फ़िकर, ग़मगीन दए दुहाईआ। मेरे कोल जे कीता मेरा ज़िकर, सच भेव दे समझाईआ। तेरे नालों निरगुण सरगुण कदे ना जाए विछड़, विछोड़ा सह सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सुण सिफ़रे धुर दी बात, हरि करता आप जणाईआ। सरगुण देवे ना कोई साथ, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। सिफ़रे पुछे ना कोई वात, मतलब हल्ल ना कोए कराईआ। सिफ़रा हो के इक्को मंग सच्ची दात, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। इक इकल्ले पुछ मेरी वात, तुध बिन मेरी सार कोए ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जे मेहर कर वेखे झाक, बिन अक्खां नैण उठाईआ। तेरी पुछे आप वात, निरवैर होए सहाईआ। लेखा पूरा करे लिख्या कलम दवात, छाही आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सिफ़रा कहे मैं होया निहाल, मिली माण वड्याईआ। इक्को वस्त मंगां सच कमाल, खाली झोली अग्गे डाहीआ। निरगुण सरगुण हो के बणया तेरा लाल, लालन तेरा रूप वखाईआ। अन्तिम वसया तेरी धर्मसाल, दूजा घर

ना कोए बणाईआ। निरगुण सरगुण बणे दो दोहां वेख आपणा हाल, हाल आपणा दे जणाईआ। बिन एके होए कंगाल, सिफ़रा कूक कूक सुणाईआ। दूआ सिफ़रा बीस अंक मिल्या आण, जोड़ा धुर दा सच मिलाईआ। बिन एक कोई ना करे पहचान, टेक नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर श्री भगवान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, पुरख अकाल हुक्म जणाईआ। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, को समझ ना सके राईआ। कलयुग अन्त वेखां आण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, इक्को आपणा रूप दसाईआ। सिफ़रे सुण आपणी याद, हरि करता आप जणाइंदा। ठाकर स्वामी सुणे फ़रयाद, बेपरवाह फेरा पाइंदा। जिस निरगुण हो के सरगुण रचना रची आदि, सो मध जुगादि आपणा हुक्म वरताइंदा। जिस घट घट अन्तर सति सुणाया नाद, धुर अनादी नाद अलाइंदा। सो पुरख अकाल दीन दयाल आपणा एक बणाए समाज, समग्री तेरी झोली पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग दे वेखण रचया काज, जुग चौकड़ी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ज़ीरो तेरा अंक एका दए बदलाईआ। ज़ीरो एका बदले अंक, अंगीकार आप कराईआ। सरगुण सुहाए दूए तेरा बंक, बंक दवारी वड वड्याईआ। लेख चुका राउ रंक, राज राजान हुक्म वरताईआ। नाम अगम्म सुणा डंक, दो जहान करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी मेट शंक, संसा सब दा दए गंवाईआ। सति बणाए साची बणत, घड़नहार बेपरवाहीआ। एके नाल इक सुणाए मंत, मंतव इक्को इक जणाईआ। इक्को मिले हरि सुहागी कन्त, कन्तूल इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रे देवे माण वड्याईआ। ज़ीरो कहे आ इक, तेरी उडीक लगाईआ। गुर अवतार तेरा लेखा गए लिख, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। आदि जुगादि धुर दे पित, पिता परमेश्वर तेरी सरनाईआ। निरगुण सरगुण कर हित्त, हितकारी वेख वखाईआ। धुर दा लेखा दे लिख, लिखणहार तेरी सरनाईआ। जन भगतां पा भिख, भिच्छया भिख्या इक्को वार वरताईआ। लेखे ला आपणे रित, रती रत ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दे उठाईआ। पड़दा चुक्क सिफ़रा कहे, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सति दवारे एका बहे, आपणा बल धराईआ। तेरा नाउँ सदा सद रहे, जुगा जुगन्तर तेरी वड्याईआ। तेरा महल कदी ना ढहे, जिस घर वसें आसण लाईआ। जुग चौकड़ी तेरा भै, भउ विच सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम संदेसा गए कह, लख चुरासी जीव जंत सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि किसे दी कदे ना लए रै, जो करना कर वखाईआ। सिफ़रा नीवां हो के चरणीं ढह, बिन एके तेरी कुल नज़र किसे ना आईआ। दूर दुराडे

नेड़े आ के बहि, हरिजन तेरे तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। दूआ कहे आ मिल इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। मेरा लेखा फेर लिख, सरगुण मिले वड्याईआ। कर प्यार साचा हित्त, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तेरे दवारयों मंगीए भिख, भिच्छया झोली पाईआ। तूं साहिब आदि जुगादि जुग चौकड़ी सरगुण सारे लए जित्त, निरगुण आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, दूए देवे माण वड्याईआ। दूए देवे माण श्री भगवन्त, एकँकार इक जणाईआ। दूए तेरे अग्गे बण के बणे अंक, पुरख अकाल जोड़ जुड़ाईआ। वीह तों इक्की बणे बणत, इकीस आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ के गुरमुख सन्त, सज्जण सुहेले अंग रखाईआ। नाम जणाए धुर दा मंत, मन्त्र इक्को इक समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। इकीआं बणाए साची संगत, संग वसे बेपरवाहीआ। संगत चाढ़े साची रंगत, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। दूजे दर जाण ना देवे मंगत, जिन्हां आपणा दरस कराईआ। हरि का भेव किसे ना पाया पंडत, मुल्लां शेख़ कहिण कोए ना पाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए एके एके दूए दो इक करे कुड़माईआ। दूआ कहे मैं मंगी मंग, एका नज़री आया। इक कहे मैं सूरा सरबँग, दूए तेरा जोड़ जुड़ाया। दोहां मिल के आया सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाया। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण मिल के चढ़या चन्द, बिन चन्दां जोत चमकाया। जन भगतां खुशी कराए बंद बंद, बंदगी आपणे नाम समझाया। नाता तोड़ जगत दुहागण रंड, कन्त कन्तूहल मेल मिलाया। सति सुणा सुहागी छन्द, साचा ढोला राग अलाया। आत्म परमात्म दे अनन्द, मंगल इक्को इक सुणाया। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, धुर दा मेला मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाया। दूए एके तेरी इकी, वीह सौ चौदां बिक्रमी ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ बणाए साची सिक्खी, सिख्या इक्को नाम समझाईआ। जिस नूं गोबिन्द कहि के गया खंडयों तिक्खी वालों निक्की, आपणे विच छुपाईआ। पीर पैगम्बर जिस दे नाम दी लिख लिख देंदे गए चिट्ठी, बण चिट्ठी रसैण फेरा पाईआ। उस दी खेल सदा अनडिठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। बिन भगतां धार दिसे ना किसे चिटी, काली कमली सब दे सिर ते ओढण नज़री आईआ। जगत वासना रस माणे फिक्की, अमृत धार ना कोए जणाईआ। बिन पुरख अकाल निरगुण सरगुण हो कोई ना बणाए धुर दी इकी, दूआ एका जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साहिब सतिगुर दी साची इकी, लोकमात कदे ना जाए भिट्टी, ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद

देवणहार वड्याईआ। इक्की तेरा सुण के हाल, जगदीश ताज अक्ख खुल्हाईआ। मैं वेखां प्रभ दा सच समाज, जिस दी बणत आप बणाईआ। चार जुग दा पिछला मेट रिवाज़, मार्ग इक्को इक समझाईआ। जन भगतां दे के धुर दा राज, ख़ाली झोली नाम धराईआ। बिन पड़दिउँ रख के लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। ताज कहे प्रभ मैं सोहां तेरे सीस, वड तेरी शहिनशाहीआ। तेरा नाउँ आदि जुगादि जगदीश, जगदीश्र तेरी सरनाईआ। तेरी कोई ना करे रीस, सानी रूप ना कोए वटाईआ। तेरे दर ते मंगां भीख, बण सवाली झोली डाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरी रखी उडीक, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। सो साहिब वक्त आया नज़दीक, दूआ सिफ़रा वेख वखाईआ। सिफ़रे आपणे उते फेर लीक, तेरा एका ल्या बणाईआ। दूए एके मिल के इक्की बणी ठीक, जिस इक्की विच्चों ठाकर नज़री आईआ। एस इक्की दी गोबिन्द रख के गया उडीक, दूर दुराडा नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ बन्न्हे इक प्रीत, सच प्रीती लएं लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी लाज अन्त रखाईआ। ताज कहे प्रभ रखीं लाज, तेरे अग्गे अरजोईआ। इक सत्त दा रच के काज, वीह सौ सतारां बिक्रमी तेरा ध्यान लगाईआ। तिन्न साल तिन्नां लोकां मारदा रिहा अवाज़, चौथे साल चौथा पद वखाईआ। जिस दवारे गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आवण आपणी छड्ड के पिछली निमाज़, सजदा सीस इक झुकाईआ। तेरा किसे ना पाया कोई आगाज़, तेरा भेव कोए ना पाईआ। दूरों दूरों प्रभ तेरे नाम दी सुणदे रहे आवाज़, सच संदेसा इक्को इक जणाईआ। धन्न भाग परम पुरख खोल्हे आपणा राज़, पड़दा उहला इक चुकाईआ । ग़रीब निमाणे कोझे कमले भगत भगवान सद्दे आपणे पास, पासा सब दा दए उलटाईआ। दर तेरे रल मिल गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण पैंदी रास, कवण बिधे भगत भगवान गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। ताज कहे मैं सब दा ताज, बिन मेरे शहिनशाह नज़र कोए ना आइंदा । ताज कहे मेरी रईयत समाज, समग्री इक्को इक वखाइंदा। ताज कहे मेरी इक अवाज, दो जहानां साहिब सुणाइंदा। ताज कहे मेरा इक्को काज, हरि करता आप कराइंदा। ताज कहे मैं खोल्हां राज़, पड़दा उहला आप उठाइंदा। जन भगतो सारे मैनूं कहो शाबाश, जो तुहाडा संग निभाइंदा। पुरख अकाल अग्गे करां अरदास, अरज़ोई इक्को इक सुणाइंदा। जिन्हां दा लेखा मेरे उते लिख्या ख़ास, तेरी शहादत सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाल भुगताइंदा। माझा मालवा दुआबा जम्मू वेख वसे आस पास, साम्हणे सब नूं नज़री आइंदा। इक्को इक्की तेरी ख़ास, ख़ालस रूप समझाइंदा। पंज पंज

इन्हां विच्चों कर दास, दासी आपणा राह वखाइंदा। छब्बी पोह तेरा वेखां खेल तमाश, दर घर साचा सोभा पाइंदा। इकीवां रले इक्को साथ, दूर दुराडा वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची इक्की आप वडियाइंदा। साची इक्की प्रभ तेरी एक, रविदास चम्यार दित्ती वखाईआ। छब्बी पोह खोल्हणा भेत, अभेद आप जणाईआ। इकीआं कर के सच्चा हेत, हरिसंगत रंग रंगाईआ। सब दा दाता नेतन नेत, नेरन नेर नज़री आईआ। इक्को मेहर नज़र सब नूं लैणा वेख, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। परमात्म पुरख दस्स अगम्मी खेड, बण खिलाड़ी आप खिडाईआ। जे कोई लभ्भे हरि दी रेख, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सीस ताज देवे माण वड्याईआ। सीस ताज तेरा मन्नया कहिणा, सो साहिब आप जणाईआ। चौथे जुग दूर हो के बहिणा, नेड़े रहिण कोए ना पाईआ। तेरे अक्खरां मुल्ल पैणा, करता कीमत आप चुकाईआ। सोना स्वर्ण नहीं कोई गहिणा, जन भगतां बणत बणाईआ। इकीआं विचे हरि जू बहिणा, बहि बहि ख़ुशी मनाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू सच वखाए आपणे नैणां, नैण आपणे नाल मिलाईआ। चार वरन बणाए भाई भैणां, सच सैण इक समझाईआ। ऊँच नीच कोई ना रहिणा, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। इकीआं इकीआं भाणा कहिणा, भावी दर दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका इक्की करे परवान, इक्की सिक्खी बिन लेख लिखी लेखे आपणे विच रखाईआ। दो इक जुड़ी जोड़ी, हरि सतिगुर आप जुड़ाइंदा। आपणे हथ्थ पकड़ी डोरी, तन्द आपणे नाल बंधाइंदा। वेखणहारा अन्ध घोरी, दो जहानां खोज खुजाइंदा। जिन्हां गोबिन्द चाड़्या मौत घोड़ी, सो मौत गुरमुखां चरणां हेठ दबाइंदा। खेल करे आपणी दोहरी, धार धार विच्चों बदलाइंदा। गोबिन्द सुत करे मोहरी, मोहर आपणा नाम लगाइंदा। अमरजीत सुरजीत ज़ोरा ज़ोरी, ज़बरदस्त दया कमाइंदा। बंता सिँघ वस्त दिती कोरी, कृपानिध आप वखाइंदा। बचन सिँघ नाल ना करे चोरी, कीती घाल लेखे पाइंदा। मंगल सिँघ प्रभ गया बौहड़ी, बौहड़ जन्म फेर ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम आपणा रंग रंगाइंदा। पंचम माण मिले सांझा, हरिसंगत अग्गे अग्गे रखाईआ। माझे नाल जोड़ दुआबा, दुआबा माझा रूप वटाईआ। सर्ब जीआं दा बण के सांझा, सांझी वारता इक वखाईआ। निरवैर निरँकार जणाए आपणा स्वांगा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। अमरीक सिँघ पूरी करे तांघा, प्रीतम सिँघ गोदी गोद सुहाईआ। नसीब सिँघ पाए गांढा, लाल सिँघ चन्द चमकाईआ। प्यारा सिँघ खेल दोसांझा, लेखा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम देवे माण वड्याईआ। दुआबे

मिले माण वड्याई, हरिसंगत खेल खलाइंदा। मालवे नाल करे कुड़माई, भगत भगवान नाता जोड़ जुड़ाइंदा। राम सिँघ दया कमाई, केहर सिँघ अंग लगाइंदा। निरँजण सिँघ गाउणा चाईं चाईं, जागीर सिँघ जोग वखाइंदा। हरबंस सिँघ पकड़े बाहीं, कुल्ली कक्खां सोभा पाइंदा। पंच मिलावा भाई भाई, दूई द्वैत डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। मालवे मेल कीता करतार, जम्मू जोड़ जुड़ाईआ। बाल अवस्था देवे तार, गुरनाम खुशी वखाईआ। देवी सिँघ दे आधार, देवा सिँघ गोद बहाईआ। प्रेम सिँघ कर प्यार, पक्की तरां दए समझाईआ। राम चन्द सेवा लग्गी विच संसार, साबत मिल्या बेपरवाहीआ। पंजां दे इक आधार, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। हरिसंगत साची दए वखाल, व्याख्या आपणी नाल जणाईआ। इकीआं एको लए भाल, एकँकार खोज खुजाईआ । जसवन्त सिँघ लए उठाल, ठोकर नाम लगाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, दलाली इक्को इक वखाईआ। सम्मत पन्द्रां दे साचे लाल, वीह सौ बिक्रमी भेद खुलाईआ। पन्द्रां कत्तक जिन्हां निभाई नाल, तिन्हां नाता लए जुड़ाईआ। सीस दस्तार बन्न्ह लाल, पंचम रंग सोभा पाईआ। सूहा वेख वेख होए निहाल, चिट्टी धार वज्जे वधाईआ। पीला करे आप प्रितपाल, नीला नील कंठ माण गुआईआ। काला सूसा मेटे काल, कलकाती दए गुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की इक्की जोड़ जुड़ाईआ। इक्की अग्गे इक्की पिच्छे, पिच्छा अग्गा इकीआं विच रखाईआ। इकीआं अन्दर आपे भज्जे, फिरे वाहो दाहीआ। जिध्धर वेखो गुरमुख सजे, बेमुख नज़र कोए ना आईआ । मेहरवान हो के पड़दा कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरिसंगत दर्शन कर कर रज्जे, वेख हरिसंगत सतिगुर खुशी मनाईआ। शब्द सरूपी साहिब गज्जे, ग़ज़ल ढोला राग तर्ज़ नाम जणाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू बद्धे, बद्धी सके ना कोए छुडाईआ। बिन मकक्यों काअब्यो कराए हज्जे, बिन हुजरयों लए मिलाईआ। मन्दिर मसीतां विच्चों बाहर कढ्ढे, सच दवारा इक वखाईआ। शिवदुआले मट्ठ छड्डे, तीर्थ तट ना कोए वखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंग्घी कन्दर कोई ना लभ्भे, सतिगुर साख्यात आपणा दरस कराईआ। प्रेम प्रीती नाल बद्धे, मधुर रस इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साची इक्की इक्की विच सिक्खी सिक्खी विच निक्की आपणी धार समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुहाए सुहञ्जणी रुत्त आपणी थिती, जिस थित सरगुण निरगुण नज़री आईआ।

* २ पोह २०२० बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर *

दो जहान रहे तक्क, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण हक़, झोली निरगुण अग्गे डाहीआ। लख चुरासी कहे पुरख समरथ, जीव जंत रहे दिल लाईआ। भगत कहिण भगवान हिरदे आ के वस, दूर दुराडे सच्चे माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहे नस्स, बण बण पांधी राहीआ। सन्त साजण चरणी रहे ढह्न, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। मुरीद मुर्शद हाल रहे दस्स, भेद अभेदा आप समझाईआ। गुरमुख गुरसिख नेत्र खोल्ह वेखण अक्ख, लोचण आपणा आप खुल्हाईआ। धुर दी दे वस्त साडे हत्थ, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान तेरी रख के गए आस, आसावन्त तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे धुर दा वर, वस्त आपणी दात वरताईआ। दो जहान रहे झुक, सजदा सीस निवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे पुछ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जुग चौकड़ी कहिण क्यों बैठा लुक, निरगुण आपणा मुख छुपाईआ। लख चुरासी कहे किरपा निधान ठाकर स्वामी उठ, बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। भगत कहिण भगवान बणा साचे सुत, पूत सपूते गोद बहाईआ। सन्त साजण मंगण तेरी अगम्मी रुत्त, रुत्त बसन्ती इक महकाईआ। गुरमुख गुरसिख कहिण तेरी किरपा बिन साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हत्थ जगत वखाईआ। बिन तेरे नाम ख़ाली दिसे बुत्त, पंज तत ना कोए वड्याईआ। जगत वासना रही लुट्ट, लुट्टी सर्ब लोकाईआ। बेपरवाह क्यों बैठा रुस्स, घर घर विच मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, धुरदरगाही आपणी दया कमाईआ। दो जहान खोल्हण अक्ख, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पन्ध मुकावण नस्स नस्स, बण बण पांधी राहीआ। लख चुरासी जीव जंत इक्को मंगे तेरा रस, रस आत्म परमात्म दे वखाईआ। भगत भगवान गृह मन्दिर महल अटल निहचल जाणा वस, धाम भूमिका इक्को सोभा पाईआ। सच सरनाई ठाकर रख, सति सतिवादी तेरी ओट तकाईआ। सृष्ट सबाई दे इक्को मत्त, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक पुरी लोअ आकाश धरत धवल कोई ना उबले रत्त, रती रत्त ना कोए तपाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा गाए जस, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे अलख जगाईआ। दो जहान कहिण प्रभ ठाकर स्वामी, हत्थ तेरे वड्याईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ अन्तरजामी, घट घट वेखे बेपरवाहीआ। सन्त भगत कहिण बोध अगाध शब्द नाद तेरी धुर दी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। लख चुरासी कहे राह तक्के तेरा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बैठी ध्यान लगाईआ।

प्रेम प्रीती कहे तेरा अमृत रस मिले पाणी, सर सरोवर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह शहिनशाह हथ्थ तेरे वड्याईआ । हथ्थ तेरे वड्याई ठाकर, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कलयुग वेख डूंग्घा सागर, गहर गम्भीर आपणा फेरा पाईआ। सच करे ना कोई आदल, अदालत हक़ ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट अन्धेरा बादल, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सन्त सुहेले बिन तेरे होए पागल, साची सुद्ध ना कोए धराईआ। तेरा लेखा पढ़ पढ़ थक्के उते काग़ज़, तेरा रूप नजर किसे ना आईआ। श्री भगवान जिन्ना चिर ना होइउँ हाज़र, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब तेरा ध्यान लगाईआ। हाज़र हो हरि मेहरवान, वड वड्डे तेरी वड्याईआ। जन भगतां दे दरस दान, दीद ईद चन्द चमकाईआ। महिबूब मिल सच घर आण, मुहब्बत आपणी इक समझाईआ। महल अटल सोहे मकान, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। दीपक जोती जगे सच्चा भान, इक्को नूर होइ रुशनाईआ। सच सिँघासण बैठे आण, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। नज़री आए इक्को काहन, नूर ज़हूर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब सुल्तान दर तेरा सच्चा भाईआ। साहिब सुल्तान ठाकर मीत, बेअन्त बेपरवाहीआ। बोध अगाध शब्द अनाद धुर सुणा इक्को गीत, सोहला ढोला इक्को गाया। चरण कँवल उपर धवल आत्म मवल दे प्रीत, साची सिख्या इक दृढ़ाया। दिवस रैण घड़ी पल अट्ठे पहर वसें चीत, जगत ठगोरी रूप ना कोए धराया। मित्र प्यारे ठांडे दरबारे नज़री आ हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक आपणा डेरा लाया। दर दरवेश मंगण भीख, भिच्छया भिखत झोली दे भराया। त्रैगुण पंज तत मन मति बुध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दाते कर ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाया। सति दरबार हरि निरँकार किरपा धार जन भगतां कर आपणी रीझ, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आ वेख काया मन्दिर अन्दर लँघ दलीज, दस्म दुआरी आपणा कुण्डा लाहया। तेरी उडीक रखी ठीक, गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात गए समझाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सहिज स्वामी दयाल वसे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आया। करे खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाया। जुग चौकड़ी सदी सदीवी गई बीत, कलयुग वेला अन्तिम आया। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी रखदे रहे उडीक, सम्मत सम्मती लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जन भगत तेरी ओट तकाया। तेरी ओट तक्की प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। सो पुरख निरँजण आ के वेख, हरि पुरख निरँजण फेरा पाईआ। एकँकार तेरी टेक, आदि निरँजण तेरी रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरा लेख, श्री भगवान इक्को नज़री आईआ। पारब्रह्म

ब्रह्म आपणा दस्स भेत, काया मन्दिर अन्दर वड़ आपणा पड़दा लाहीआ। साची रुत्त बसन्ती मौले चेत, फुल्ल फुल्लवाड़ी इक्को इक महकाईआ। आत्म परमात्म मिल के घर कर हेत, चिरी विछुंने आपणा मेल मिलाईआ। सुरत सुआणी शब्द हाणी मिल के खेड, घर साचे वज्जे वधाईआ। धुर संदेसा आपणा इक्को भेज, जगत विकारा भज्जे वाहो दाहीआ। जोती बख्श नूरी तेज, अन्ध अन्धेर गुआईआ। बण सखी गुरमुख मानण तेरी सेज, घर साचे सोभा पाईआ। निरवैर निराकार निरँकार जोती आ के वेख, बेपहचान आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरिजन बैठे ध्यान लगाईआ। ध्यान लगायण तेरा प्रभ, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना सके लभ्भ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत लभ्भ लभ्भ थक्की लोकाईआ। तेरी नज़र किसे ना आई हद्द, हदूद सके ना कोए समझाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी तेरा नाम जगत अक्खरां विच गए दस्स, निअक्खर दर तेरे झोली पाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह के गए अक्ख, निज नेत्र पर्दा लाहीआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल चलाया हट्ट, बण वणजारे जगत कार कमाईआ। धुर संदेसा दे के गए सच्च, सति सतिवादी तेरा राह जणाईआ। बिन पुरख अकाल कोई ना माणे धुर दा रस, रसीआ नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त

जन भगतां पूरी कर आस, आसा तृष्ना तृखा दे बुझाईआ। चरण कँवल उपर धवल धरनी धरत सब रख पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। सच किनारा मिले तेरा घाट, पत्तण मिले सच्चा माहीआ। बीस बीसे चुक्के वाट, पांधी आपणे पन्ध मुकाईआ। शब्द अगम्मी चाढ़ राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। नाम जैकारा बोल अलख, अलख अलखणे इक अलख जगाईआ। दर तेरे तों लैणा हक़, हकीकत आपणी मंग मंगाईआ। बेपरवाह ना जाईं अक्क, खुशी ग़मी विच वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा नाउँ पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले बैठे झोली डाहीआ। झोली डाही कन्नी खोल्ह, गंढु नज़र कोए ना आईआ। किरपा करके तोल तोल, नाम तराजू कंडा हथ्थ उठाईआ। हब्ब वस्त तेरे कोल, अतोट अतुट वरताईआ। तेरे सदके रही अडोल, भरमी भरम ना कोए भुलाईआ। दूर दुराडे वस कोल, नेरन नेरा नज़री आईआ। नानक गोबिन्द कर के गया कौल, कलयुग अन्तिम पूरा दे कराईआ। कल कल्की आवे उपर धौल, धरनी हौला भार कराईआ। आत्म परमात्म निझर रस अमृत जन भगतां देवे साची पौल, खण्डा आपणा नाम विच फिराईआ। सच प्रीती मिट्ठा रस देवे विच घोल, शक़र गुड़ ना कोए वड्याईआ। काया अन्दर जाए मौल, मौला आपणी रुत्त सुहाईआ। उलटा कर के नाभ कौल, झिरना निझर इक झिराईआ। सच संदेसा

सुणाए बोल, अनहद नादी राग अलाईआ। बंद किवाड़ा देवे खोल, पड़दा उहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, बीस बीसे तेरी आस रखाईआ। भगत कहिण प्रभ आ जा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। साचे वस साढे तिन्न हथ्थ खेड़े, पंज तत मिले वड्याईआ। जगत विछोड़ा मिटण झेड़े, झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ। गुण गाईए तेरे मेरे, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर विच घर चाउ घनेरे, वज्जे तेरे नाम वधाईआ। प्रेम प्रीती चढ़ीए बेड़े, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। सच महल वसीए डेरे, जिथ्थे सूरज चन्द नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी कोई ना घेरे, त्रैगुण बन्धन ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। गुरमुख ध्यान लगायण तेरा, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ कर आपणी मेहरा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आवण जावण लख चुरासी चुक्के गेड़ा, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। सच दुआर वेखीए तेरा खेड़ा, जिस दवारे बैठा चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गृह मन्दिर दे जणाईआ। गृह मन्दिर दस्स भगवान, हरि भगत रहे जणाईआ। कवण झुल्ले सच निशान, निशाना कवण रूप वखाईआ। कवण मन्दिर सोहे मकान, कवण गृह वज्जे वधाईआ। कवण सिँघासण बहे आण, सोभावन्त कवण अख्वाईआ। कवण अबिनाशी पुरख नौजवान, ना मरे ना जाईआ। कवण शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह कवण अख्वाईआ। कवण हुक्म देवे हुक्मरान, हुक्मे अन्दर सर्ब भवाईआ। कवण निरगुण सरगुण करे परवान, जोती जाता वड वड्याईआ। कवण भगतां देवे दान, वस्त अमोलक मात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान किहा हस्स, जन भगत आप जणाईआ। जो कुछ है सो मेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी देवां वथ, नित नवित्त वरताईआ। सर्ब जीआं दा वेखां हक़, हक़ हकीकत खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, गुर अवतार करी पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर सिर रख हथ्थ, कलमा नबी रसूल जणाईआ। भगत भगवान खोल् अक्ख, आखर आपणा मेल मिलाईआ। सन्त सुहेले सज्जण रख, रच्छया करे थाउँ थाईंआ। गुरमुखां लेखे लाए रत, रती रत्त आपणे रंग रंगाईआ। गुरसिख देवे इक्को मति, गुरमत्त सच दृढ़ाईआ। लख चुरसी खेड़ा करे भट्ठ, जगत भठियारा रूप वटाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए मिलाईआ। जन भगत मिलावा करे आप, हथ्थ रखे प्रभू वड्याईआ। जुग जन्म दा मेट संताप, संसा रोग चुकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के जाप, सोहँ ढोला इक समझाईआ। पतित पुनीत

७५

१६

कर के पाक, पवित आप समझाईआ। निरगुण सरगुण सज्जण साक, सगला संग वखाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। घर मेट अन्धेरी रात, नूर चन्द जोत करे रुशनाईआ। इक्को सच वखाए प्रभात, संध्या नज़र कोए ना आईआ। इक्को गीत गोबिन्द गाथ, राग इक्को इक शनवाईआ। इक सुहेला वसे साथ, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम पुच्छे वात, बेपरवाह होए सहाईआ। जन भगतां मेल मिलाए ख़ास, ख़ाहिस सब दी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन आपणे नाल मिलाईआ। हरिजन मेला सच दरबार, दर घर साचा इक जणाइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यार, प्रेम प्रीती इक वखाइंदा। साची रीती सिरजणहार, जन भगतां आप दृढ़ाइंदा। मन्दिर मसीती नज़र ना आए हरि निरँकार, घट घट अन्दर डेरा लाइंदा। नेत्र खोल्ह वेखो किवाड़, घट घट नज़री आइंदा। गुरमुख लभ्भण ना जाए कोई विच उजाड़, जंगल जूह ना फेरा पाइंदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, काया बाती जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचे जाओ जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। धुरदरगाही सुण अवाज़, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। निहकर्मी करे आपणा काज, सच करनी दए समझाईआ। ग़रीब निमाणयां रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल धवाईआ। सुरत सवाणी शब्द मिलावा कन्त सुहाग, लांव चौथी इक्को वार पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां होए सहायक हरि हरि, हरिजन दया कमाइंदा। जन्म कर्म दा मेट डर डर, भय भउ सर्ब चुकाइंदा। महल अटल काया वड़ वड़, सच सिँघासण वेख वखाइंदा। आत्म सेजा आपणी चढ़ चढ़, सोभावन्त सोभा पाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़ पढ़, सोहँ राग इक समझाइंदा। जन भगतां भाणा सिर ते जर जर, साचा मार्ग इक वखाइंदा। सन्तां पिच्छे हरि जू मर मर, मर जीवत रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंगे रंग आप, रंग चलूल इक चढ़ाईआ। भगत सुहेला माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। सति सुणाए इक्को जाप, पूजा सिमरन इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन देवे माण, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम लभ्भे आण, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। शब्द अगम्मी मारे बाण, अणयाला तीर चलाइंदा। आत्म परमात्म देवे पीण खाण, जगत वासना तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नज़री आइंदा। हरिजन नज़री आए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। कर किरपा जन्म जन्म दा मुआफ़ करे कसूर,

७६

१६

कसवट्टी आपणा नाम लगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जिस बख्शे चरण धूढ़, दुरमति मैल दए धुआईआ। आत्म देवे इक सरूर, रस इक्को जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगतां जगत दलिद्र करे दूर, दु:ख नज़र कोए ना आईआ। दु:ख रोग ना कोई सोग, चिन्ता रंग ना कोए वखाईआ। इक्को देवे नाम जोग, साची जुगती आप समझाईआ। आत्म परमात्म चुगणी चोग, सोहँ हँसा माणक मोती आप समझाईआ। हो सुहेला लोक परलोक, दो जहानां संग निभाईआ। एथे ओथे बख्शे ओट, ओट अकाल इक्को आप जणाईआ। फड़ बहाए साचे कोट, सच दुआरा दए वखाईआ। जिस घर प्रकाश इक्को निर्मल जोत, दूजा दीप ना कोए वखाईआ। जन भगतां ना जणाए कोई मुक्ती मोख, निरगुण आपणी जोत आपणे विच समाईआ। जिस दुआरे कोई ना सके पहुंच, तिस मन्दिर गुरमुख बैठा डेरा लाईआ। जगत विद्या कोई ना सके सोच, चौदां विद्या होई हल्काईआ। पारब्रह्म प्रभ जन भगतां मिल के माणे मौज, मौजूदा आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा आप तराईआ। डुबदा बेड़ा देवे तार, हरि सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। पार किनारा सतिगुर विच संसार, चरण कँवल समझाईआ। साहिब सतिगुर निमस्कार, नमो नमो दृढ़ाईआ। भरम भुलेखा कूड़ निवार, जगत संसा दए मिटाईआ। सद हमेशा पास रहे सिरजणहार, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उपाईआ। हरिजन उपाया आप हरि, हरि मन्दिर दए वड्याईआ। आपणी किरपा भगत कर, भगती रंग चढ़ाईआ। नाम शक्ती अन्दर धर, काया बस्ती आप वखाईआ। धुर दा अक्खर आपे पढ़, ढोला राग सुणाईआ। लेखा जाण चोटी जड़, मध आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन उतरे पार किनार, नईआ सतिगुर आप चलाइंदा। सच दवारे दए बहाल, घर इक्को इक वखाइंदा। लग्गी प्रीती निभे नाल, अद्ध विचकार ना कोए तुड़ाइंदा। इक्को लेखा शाह कंगाल, ऊँच नीच ना वंड वंडाइंदा। कलयुग अन्तिम आपे भाल, हरिजन साचे नाल मिलाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन जनहरि आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसणा घर इक, इक्को इक जणाईआ। हरिजन मन्दिर वेखणा इक, अन्दरे अन्दर रुशनाईआ। हरिजन मन्नणा प्रभ इक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। हरिजन मंगणा दान इक, नाम निधाना झोली पाईआ। हरिजन मंगणा ज्ञान इक, प्रभ वज्जे नाम वधाईआ। हरिजन मंगणा इश्नान इक, चरण धूढ़ी मल मल नुहाईआ। हरिजन मंगणा ध्यान इक, लिव अन्तर आत्म लाईआ। हरिजन मंगणा बबाण इक, गुर शब्द

लए चढ़ाईआ। हरिजन मंगणा मकान इक, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। हरिजन मिलणा भगवान इक, जिस मिलयां विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे अंग लगाईआ। हरिजन मंगण इक्को ओट, दूजी आस ना कोए रखाईआ। हरिजन मंगण एका जोत, जिस जोत जोती नूर दित्ता उपाईआ। हरिजन मंगण इक्को सोच, सोच प्रभ ध्यान लगाईआ। हरिजन मंगण इक्को मौज, सतिगुर गोदी लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हरिजन मंगण एक भिख, वस्त इक दृढ़ाईआ। हरिजन मंगण इक सिख, सिख्या साहिब समझाईआ। हरिजन मंगण इक दिस, दहि दिशा ना कोए भवाईआ। हरिजन मंगण इक थित्त, थित्ते नज़र किसे ना आईआ। हरिजन मंगण प्रीत नित, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लग्गी तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन संग रखाईआ। हरिजन मंगण इक आस, आसा इक जणाइंदा। हरिंजन मंगण इक प्यास, दरस दरसी दरस जणाइंदा। हरिजन मंगण इक रास, बिन गोपी काहन नचाइंदा। हरिजन मंगण इक ज़ात, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। हरिजन मंगण इक प्रभात, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। हरिजन मंगण इक सौगात, सो पुरख निरँजण आपणी मेहर झोली पाइंदा। हरिजन मंगण चरण प्रीती सच्ची दात, दयावान आप समझाइंदा। जिस मिल्या एथे ओथे बज्झे नात, नाता जगत ना कोए तुड़ाइंदा। कोझी कमली कुलखणी लेखे लाए नार कमज़ात, सुहागण आपणे नाल कराइंदा। उत्तम कर के मात ज़ात, ज़ात आपणी विच मिलाइंदा। जिस दा लेखा लिख लिख दस्सदी रही कलम दवात, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। सो साहिब किरपा करे आप, आप आपणी गोद उठाइंदा। हरिजन बणाए सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। चार जुग दा भविक्ख्त वाक, प्रभ पूरा पूर कराइंदा। जन भगतां दे के साथ, संगी आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पूरी करे आस, आपणी आसा जन भगतां विच टिकाइंदा।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर *

बेपरवाह अर्शी फ़र्शी, बेपहचान दया कमाइंदा। लेखा जाणे धवल धरती, धरनी धर्म वखाइंदा। गुरमुख धार जुग जुग निरगुण सरगुण हो के परती, पुतला पंज तत वखाइंदा। साहिब सतिगुर बिन लेखे चुक्कण ना देवे किसे अर्थी, अथवा आपणा रंग रंगाइंदा। दो जहान कला रखे चढ़दी, कल आपणी नाल रलाइंदा। हरिजन आसा कदे ना मरदी, मर जीवत

रूप वटाइंदा। सच दवारे घर साहिब वड़दी, सति सतिगुर दरस कराइंदा। जिन्हां ठाकर बणे दर्दी, दर्दीआं दर्द झोली पाइंदा। ना कोई जाणे आरजू अरजी, आशा आपणी वेख वखाइंदा। पुरख अकाल खेल नहीं फ़र्ज़ी, फ़ज़ल रहमत आप कमाइंदा। पाटा चीथड़ सीवें दरजी, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। ना मकरूज ना दिसे कर्जी, गर्ज आपणी भगतां नाल रखाइंदा। जगत जहान चले ना किसे मर्ज़ी, राह आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाइंदा। गुरमुख आसा रही कूक, पूरब ध्यान लगाईआ। तुध बिन चुके ना कोए चूक, चौकड़ी जुग गए विहाईआ। कोटन वार तन काया माटी दिती फूक, गोर कबर टिकाईआ। कोट वार जन्म अजन्म खेल खेलया पंज भूत, पंज तत संग रखाईआ। तुध बिन कोए ना बणाए साचा पूत, सपूत नाउँ ना कोए धराईआ। आसा तृष्ना मिटे ना कोई भूख, धीरज तृप्त नज़र कोए ना आईआ। फिर फिर वेख्या चारे कूट, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। बिन सतिगुर नाता दिसे झूठ, सगला संग ना कोए निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कर गए कूच, कूचा गली होका ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा नाम सुणाईआ। बिन तेरी किरपा सूचम मिली ना कोई सूच, सुच्चे हथ्थ किसे ना आईआ। जगत हँकारी उच्चे लम्मे अध मूच, निवण सो अक्खर समझ कोए ना पाईआ। चरण कँवल धरनी धवल तेरे कोए ना जाए झुक, बिन मेहर नज़र नज़र ना कोए मिलाईआ। कर किरपा प्रभ ल्या पुछ, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। जुग द्वापर जिस ल्या चुक, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। तिस दा दाणा पाणी जगत रिहा मुक, स्वास स्वास थक्के सेव कमाईआ। तिस उपर किरपा कीती तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। फड़ बाहों उजल करे मुख, मुख मुख नाल छुहाईआ। प्रेम प्यार दी साची रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन्म जन्म जन्म दा बूटा पए फुट, पत्त डाली नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साहिब सतिगुर पोह तिन्न लोक तिन्न श्लोक तिन्न बिन तिन्नां तिन्न वड्याईआ।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी नरायण सिँघ दे गृह गुमानपुरा ज़िला अमृतसर *

पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, उपर धरत दे वड्याईआ। दर तेरे कूक करां पुकार, सच सच सुणाईआ। जुग चौकड़ी मनमुखां चुक्कदी रही भार, आपणे कंध उठाईआ। अर्थी कहे बख्शिश कर बख्शणहार, बख्शीश तेरे हथ्थ नज़री आईआ। मेरा लेखा दे निवार, बिन लेखिउँ लेखे पाईआ। मेरा उन्हां नाल प्यार, जिहड़े तैनूं गए भुलाईआ। चुक्क चुक्क सुट्टदी रही घरों बाहर, मढ़ी गोर टिकाईआ। वेंहदे रहिण सज्जण यार, भैण भाई सर्ब लोकाईआ। मैं खेल करां अपार, आपणी

७८ १६

छाती डाहीआ। जो मेरी छाती उते मेरा चढ़या यार, तिस लोकमात तत नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द कोल मैं करी पुकार, पहली वार सीस निवाईआ। जिस वेले उच्च पीर बण के चार बणाए कहार, कंध कंध नाल मिलाईआ। मैं किहा तूं सांझा यार, सब दा साहिब गुसाईंआ। मेरे उते सुतों पैर पसार, जीवत जीवण रूप वटाईआ। मेरे औगुण अवगुण बख्श किरपा धार, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेहर नज़र उठाईआ। गोबिन्द कर के गया कौल, इकरार मेरे नाल रखाईआ। देवां वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। बीस बीसे आवां कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सच दुआरा देवां खोल्ह, दरवाज़ा इक्को नजरी आईआ । लख चुरासी विच्चों भगत विरोल, आप आपणे अंग लगाईआ। तेरा पूरा करां बचन बोल, अनबोलत रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। अर्थी तेरा भार करे थोड़ा, थोड़ी थोड़ी वंड वंडाइंदा । नीहां हेठ रख के पुत्तर जोड़ा, जोड़ी आपणे रंग रंगाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़ के घोड़ा, धरत धवल वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सस्से उपर होड़ा, हाहा टिप्पी मेल मिलाइंदा। नाल काग़ज़ रखे कोरा, जगत रुपईआ अंग लगाइंदा। करे खेल अवर का होरा, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, तेरा लेखा लेखे पाइंदा। सुण अर्थी कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाईआ। किरपा करे श्री भगवान, हरि भगवन वेख वखाईआ। तेरे उते बाले सौण निधान, बाली बुध वज्जे वधाईआ। जिस गृह तेरी अर्थी पहली वेर रखे आण, सच निशान दए झुलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मकान, नौ दर वेखे चाईं चाईंआ। जन भगतां कर परवान, घर साचे लए बहाईआ । खेले खेल नौजवान, भेव अभेदा आप समझाईआ। बीस बीस करे परवान, जगत जगदीश ख़ुशी मनाईआ। जन भगतां दे के दान, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। तेरी करे फेर संभाल, सम्बल तेरा पन्ध कराईआ। जुग जुग जुग जो चुक्कया भार, जन भगतां नाल हौला कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, तेरा लेखा लेखे लाईआ। तेरा भार जाए घट, घाटा सतिगुर पूर कराइंदा। गुरमुख तेरे उते आपणा चरण दए रख, ख़ुशी ख़ुशी नाल टिकाइंदा। मात पित भाई भैण सज्जण सैण सारे ख़ुशी नाल कहिण हस्स, वाहवा गुरमुख आपणे घर जाइंदा। जिथ्थे मिले पुरख समरथ, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। पंज तत लत्त बांह ना कोई हथ्थ, नौ दर ना कोए रखाइंदा। बिन अक्खां मेल के आपणे अक्ख, आखर आपणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सब दा लहिणा पूर कराइंदा ।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह गुमानपुरा ज़िला अमृतसर *

धन्न भाग प्रभ दित्ता दिलासा, धुर दी आस पुजाईआ। खुशीआं नाल मेरा निकले हासा, जिस वेले गुरमुख आसण लाईआ । उते सौं बदले कोई ना पासा, अंगड़ाई लए ना कोए लोकाईआ। सृष्ट सबाई सदा मन रहे उदासा, जो मेरे संग आपणा कदम उठाईआ। सारे कहिण पै गया घाटा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। संबंधी कहिण टुट्टा साका, सज्जण मुख छुपाईआ । धीआं पुत कहिण विछड़या मापा, पिता पूत वेख रिहा कुरलाईआ। सुंञ मसाण धूंआँधार मेरा अहाता, अग्न लाट इक्को नज़री आईआ। मैं कहि कहि थक्की मेरा कोई ना सुणे साका, साखी समझे ना कोए जीव शुदाईआ। जिस उपजाई सो लै के चलया दाता, वड दातार वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारा पीर पैगम्बरां दा किसे ना मन्नया आखा, अमल सके ना कोए कमाईआ। गोबिन्द आपणे अंगीठे उते मारी झाका, झाकी पुरख अकाल नाल मिलाईआ। हड्डीआं बालण ना कोई साथा, काया माटी चम्म कम्म किसे ना आईआ। कोई हूंझ ना सुट्टे तीर्थ ताटा, बिन पुरख अकाल पार ना कोए कराईआ। जिस गुरमुख अमृत पीता मेरे बाटा, सो गुरसिख अंगीठा फोल ना कोए वखाईआ। सुण के बचन जगत अर्थी निकलया हासा, भज्जी फिरे चाईं चाईंआ। साहिब सतिगुर दस्स अगली बाता, किस वेले मिले वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ आए मेरा पिता माता, पारब्रह्म फेरा पाईआ। जन भगतां मनावे आपणा आखा, आखर सब दा डेरा ढाहीआ। हरिजन हरिभगत होए ना कोए उदासा, ग़मी खुशी विच प्रगटाईआ। तेरी वस्त प्रभ तेरे पासा, जगत पसारा कूड़ा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी आसा पूर कराईआ। अर्थी कहे दस्स साची रीत, रीतीवान दया कमाईआ। की मेरे नाल चल गौण तेरे गीत, तेरा नाम ध्याईआ। मैंनूं तसल्ली ना आवे ठीक, जुग चौकड़ी वेखी तेरी लोकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया बीत, वेला अन्त रिहा कुरलाईआ । श्री भगवान कहे अतीत, सति सतिगुर आप जणाईआ। जिन्हां भगतां बख्शां आपणी प्रीत, सो मेरे दुआरे आवण चाईं चाईंआ। नेत्र मूंहों रसना बोल कोई ना मारे चीक, बौहड़ी बौहड़ी ना कोए सुणाईआ। खुशीआं नाल कहिण हरि भगत प्रभ घर जाए जिस दी रखी उडीक, सो मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेखा सब दा लेखे लाईआ।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह गुमानपुरा ज़िला अमृतसर *

८१ १६

भगत भगवान थापण थाप, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आत्म परमात्म सच्चा जाप, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द समझाइंदा। बोध अगाधा धुर दा पाठ, सो साहिब आप समझाइंदा। अमृत सरोवर तीर्थ ताट, घर किनारा इक दरसाइंदा। अन्ध अन्धेर मिटाए रात, जोती नूर चन्द चमकाइंदा। मन्दिर चढ़ के देवे साथ, घर घर विच वेख वखाइंदा। सच प्रीती बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जुग चौकड़ी पुछे वात, नित नवित्त फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगतां इक्को राह दरसाइंदा। भगत भगवान साचा मीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। सच संदेस सुणाए गीत, धुर दा ढोला राग अलाईआ। धाम वखाए इक अणडीठ, निज नेत्र कर रुशनाईआ। ततव तत करे सीतल सीत, धार अमृत मेघ बरसाईआ। लेखा तोड़ मन्दिर मसीत, सच दुआर इक्को इक समझाईआ। जिस गृह स्वामी सतिगुर मिले सज्जण अतीत, त्रैगुण रंग ना कोए रंगाईआ। आदि जुगादि ना होए पलीत, पाक पाकी नज़री आईआ। कौड़ा करे मिठ्ठा रीठ, रस आपणा नाम भराईआ। सच दवारयों देवे भीख, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। जन्म जन्म जिस दी रखी उडीक, सो वेला वक्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगत सदा सुहाईआ। जन भगत प्रभ सदा सुहेला, आदि जुगादी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वेला, थित आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, चेला गुर खेल खलाइंदा। पुरख अकाल बण के सज्जण सुहेला, सतिगुर साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा। मेहर नज़र करे करतार, हरि करता वड्ड वड्याईआ। धरनी धरत धवल पैज दए संवार, जिस गृह आपणा चरण टिकाईआ। मानस मानुख मानुष लावे पार, मानुखता आपणा भेव समझाईआ। रोग सोग चिन्ता दुःख दए निवार, भूत प्रेत जिन्न खबीस डेरा ढाहीआ। लख चुरासी विच्चों लएं निकाल, फड़ बाहों गले लगाईआ। सतिगुर पूरा होए दयाल, दीनन देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे देवे पाईआ। भूत प्रेत ना कोई जिंन, हरि जननी वेख वखाइंदा। लेख चुकाए लोक तिन्न, परलोक घर वसाइंदा। किरपा करे ठाकर छिन्न, छिन्न भंगर हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन लहिणा झोली पाइंदा। लहिणा झोली पाए पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अन्तर आत्म नाम बीजे साचे वत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। नाड़ी नाड़ ना उबले रत, रती रत ना कोए जणाईआ। जानणहारा मित गत, गति मित आपणी दए समझाईआ। लेखे लाए जिन्नां मिली इक्को मत्त, सतिगुर

मति इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे सगला संग वखाईआ। हरिजन संग सतिगुर प्यारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। एथे ओथे दए सहारा, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। शब्द गुरू योधा सूरबीर बलकारा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। महल अटल वखाए सचखण्ड सच्चा घर बाहरा, दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत इक्को इक रुशनाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण बहे एकँकारा, अकल कलधारी आपणा डेरा लाईआ। नाम निधान श्री भगवान सति सति बोल जैकारा, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। भगत भगवन्त खेल न्यारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे कंठ लगाईआ। हरिजन कंठ लगाए ठाकर, हरि करता दया कमाइंदा। पार कराए जगत सागर, डूंघी भँवर ना कोए रुढ़ाइंदा। दरगाह साची देवे आदर, चरण दुआर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणे घर वसाइंदा। साचे घर वसे जन सज्जण, हरि सतिगुर दया कमाईआ। प्रभ मिले दर्द दुःख भंजन, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पाए अंजण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। साचे ताल सच दुआरे वज्जण, घर साचे वेखे इक शनवाईआ। दीन दयाल पड़दे कज्जण, करता पुरख बेपरवाहीआ। पिछला लेखा गुरमुख छड्डण, अग्गे सतिगुर चलण रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जन भगतां आए लभ्भण, रूप अनूप आप धराईआ। रूप अनूप धरे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सन्त सुहेले लभ्भे सन्त, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। सच प्यार नार कन्त, आत्म परमात्म आप बंधाइंदा। सेज सुहञ्जणी सोभावन्त, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। लेख चुकाए जगत पंडत, बोध अगाधा हुक्म सुणाइंदा। साची सखीआं जणाए साची संगत, संग सोहणा आप वखाइंदा। माणस जन्म ना होवे भंगत, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ बहिश्त जंनत, स्वर्ग चरणां हेठ दबाइंदा। भगत भगवान अन्तिम मेले आपणे नाल अन्त, जोती जोत विच रलाइंदा। सच धाम सच दुआरा सचखण्ड सोभावन्त, थिर घर आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, लख चुरासी कटे फाँसी, भूत प्रेत कुल विनासी, उदासी हरिजन आप मिटाइंदा।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी दर्शन सिँघ दे गृह दरगा पुर *

करे पुकार जीव आत्म, बिन नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर परम परमात्म, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। दर्शन दे जलवा

नूर बातन, बाहर मिले ना कोए वड्याईआ। काया मन्दिर अन्दर बण साथन, निरगुण सगला संग निभाईआ। बोध अगाध शब्द अगम्मी दस्स गाथन, कलमा इक्को इक समझाईआ। भूमका वखा सच सिँघासण, धाम साचा नज़री आईआ। साचे मण्डल पा रासन, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। लख चुरासी भरी तेरी रख के आसन, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फेरा पाईआ। तेरी हथ्थ ना आई मैनूं ज़ातन, ज़ात पात वेखी जगत लड़ाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द निरगुण सरगुण गाउँदे तेरा भाषण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान दए दुहाईआ। भगत सन्त गुरमुख सज्जण सारे आखण, परम पुरख प्रभ दाता इक्को बेपरवाहीआ। चरण कँवल बन्ने आपणा नातन, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखउणा आपणा घर, घर घर विच पड़दा लाहीआ। आत्म कहे परमात्म मीत, प्रभ तेरा राह तकाईआ। सच स्वामी साहिब अतीत, घर आउणा चाईं चाईंआ। सोहँ ढोला तेरा गावां गीत, मन्दिर मसीत नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवान धुर दी रीत, दूजा राह ना कोए चलाईआ। मन्दिर दस्स इक अणडीठ, जिस गृह बैठा डेरा लाईआ। करवट लै बदल लै पीठ, सनमुख नूर नुराना दे दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरहों विछुंनी दए दुहाईआ। आत्म कहे प्रभ मेरे ठाकर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। परमात्म तेरा डूंघा सागर, गहर गम्भीर भेव कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी बणी रही सौदागर, लख चुरासी वणज हट्ट चलाईआ। तेरा रूप नज़र ना आया इक इकागर, सति सरूप ना कोए दरसाईआ। भेव खोल्ले ना तेरा कोए पुरख अबिनाशन, अबिनाशी तेरी धार ना कोए जणाईआ। वेख थक्की पृथ्मी अकाशन, गगन मण्डल पुरी लोअ खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिस्मिल हो के सारे आखण, दाता करता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे भीख मंग मंगाईआ। मंगे भीख आत्म गुरमुख, गुर गुर दया कमाईआ। जन्म कर्म दी मेट भुक्ख, तृष्ना रोग चुकाईआ। दरस दिखा निरगुण सनमुख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जगत विकारा फड़ के कुट्ट, शब्द खण्डा हथ्थ वखाईआ। दर दुआरे आ के पुच्छ, दूर दुराडे सच्चे माहीआ। तेरे चरण कँवल जावां झुक, बन्दना डण्डौत सीस जगदीश इक निवाईआ। मेहरवान क्यों बैठा चुप्प, निरगुण आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, बिन मस्तक लेख लिखाईआ। गुरमुख आत्म रही रो, बिन नैणां नीर वहाईआ। तेरी कोई ना देवे सो, कलयुग भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अमृत अंमिउँ रस कोई ना देवे चोअ, सांतक सति नज़र कोए ना आईआ। सच प्रकाश करे कोई ना लोअ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जीव जंत साध सन्त आपणी करनी गए खोह, ख़ालस रूप ना कोए वखाईआ।

८४

१६

माया ममता कूड़ी क्रिया लग्गा मोह, काम क्रोध हँकार करे लड़ाईआ। तेरे नाल साहिब सतिगुर कोई ना सके छोह, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। कर किरपा मेहरवान आपणा दस्स साचा मोह, मुहब्बत इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। आत्म कहे परमात्म मेल, मिलनी जगदीश कराईआ। साहिब स्वामी सज्जण सुहेल, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेल, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। धाम वखा इक नवेल, जिस घर बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। निहकर्मी कर आपणा कर्म, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट भरम, मन का मणका आप भवाईआ। सफ़ल कर पंज तत जन्म, काया तत वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म मांगे तेरी सरन, सरनगति इक्को नज़री आईआ। लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। मैं तेरा नाउँ ढोला आई पढ़न, गीत सुहागी साचा छन्द जणाईआ। हक़ मंज़ल मंज़ल तेरे पौड़े आई चढ़न, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। नित उडीकां तेरा दर्शन करन, अन्तर इक्को ध्यान लगाईआ। मेरा लेखा चुक्के आवण जावण मरन डरन, भय भउ भरम गढ़ दे तुड़ाईआ। तेरी धार तेरी मांगे सरन, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। तूं साहिब दयाल करता पुरख करनी करन, बेऐब परवरदिगार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुरमुख आत्म दरस प्यासी, आसावंद इक अख्वाईआ। जन्म जन्म दी सेवक दासी, गुर सतिगुर सेव कमाईआ। घर मिलावा पुरख अबिनाशी, अबगत नाता दे तुड़ाईआ। गृह मन्दिर अन्दर पाए रासी, गोपी काहन नचाईआ। उत्तम करे मात ज़ाती, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। नाम निधान देवे दाती, दयावान ख़ाली झोली आप भराईआ। बंद किवाड़ा खोल्ह ताकी, बज़र कपाटी दए तुड़ाईआ। जाम प्याला मधुर साकी, सच सुराही दए वखाईआ। तीर निशाना मारे काती, नाम अणयाला आप चलाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा बाकी, पुरख अकाल देवणहारा थाउँ थाईंआ। नाता जाणे पंज तत ख़ाकी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। अमृत आत्म परमात्म देवे काया बाटी, साचा कासा इक फड़ाईआ। निर्मल जोत जोत प्रकाशी, प्रकाशवान इक्को नज़री आईआ। अट्ठे पहर रहे प्रभाती, संध्या रूप ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म भगत भगवन्त इक्को ज़ाती, गुरसिख गुर गुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस लेखा दए मुकाईआ। आत्म विछुंनी मेला राम, हरि रमया आप कराइंदा। शब्द संदेसा दे पैग़ाम, हज़रत पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। दर बरदा सजदा इक सलाम, साहिब सतिगुर नज़री आइंदा। कलमा कायनात कलाम, मेहरवान आप समझाइंदा। सच

८४

१६

महिराबे इक अमाम, महिबूब हरि जी सोभा पाइंदा। शहिनशाह नौजवान, नर निरँकार इक अख्वाइंदा। सति सतिवादी खेल दो जहान, निरगुण सरगुण कार कमाइंदा। भगत भगवन्त वेखे आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, सच प्रधानगी नाम कमाइंदा। गुरमुख सज्जण लभ्भे आण, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। चरण धूढ़ बख्श अशनान, दुरमति मैल धुआइंदा। सच दुआरे देवे माण, दरगाह साची इक वखाइंदा। जगत विछुंनी मिले आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जिस पंज तत दित्ता दान, त्रैगुण आपणे गंढु पुआइंदा । सो पुरख साहिब सुल्तान, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। गुरमुख आत्म मेल मिलावा श्री भगवान, भगवन आपणी जोत जोती विच मिलाइंदा। लेखा चुक्के दो जहान, आवण जावण पन्ध चुकाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रूप सति समाण, सति सति सति विच मिलाइंदा।

* ३ पोह २०२० बिक्रमी राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी *

किरपा कर पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे वस, बन्धन तेरा नज़री आईआ । सोलां मग्घर दिती वथ, वीह सौ दस बिक्रमी वज्जी वधाईआ। हरिसंगत मार्ग सच्चा दस्स, जगत जहान समझाईआ। छोटा बाला अग्गे लाया हस्स हस्स, खुशी खुशी नाल मिलाईआ। पन्ध मुकाया नट्ठ नट्ठ, दो जहान चरणां हेठ दबाईआ। तेरा दरस पाया बिन नेत्र अक्ख, नैणी रूप ना कोए वटाईआ। मेहरवान हो के सिर रख्या हथ्थ, दीन दयाल दया कमाईआ । सच प्रीती दिती मत्त, धुर दी धार समझाईआ। साची सेजा चढ़ना भज्ज, सिँघासण इक्को इक वखाईआ। चरण कँवल दुआर दर्शन कीता रज्ज रज्ज, तृष्ना तृखा बुझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख्या तेरा हट्ट, बेपरवाह तेरी वड्डी वड वड्याईआ । बिन रसना जिह्वा गा जस, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मार्ग दित्ता जणाईआ। धुर दा मार्ग दित्ता एक, एकँकार दया कमाईआ। गृह मन्दिर तेरा ल्या वेख, घर सुहञ्जणा सोभा पाईआ । अन्दर वड़ के आया भेत, बाहरों समझ कोए ना राईआ। मेहरवान प्रभ नेतन नेत, नेरन नेरा डेरा लाईआ। बाल अंजाणे कीता हेत, बाली बुध सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे दर बहि के आस रखाईआ । तेरा दर वेख्या आण, अणडिठड़ा धाम सोभा पाइंदा । जिस घर वसें साहिब भगवान, सो मन्दिर नज़री आइंदा। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती अवर ना कोए रखाइंदा। महल अटल सोहे मकान, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। मैं बाला नढ्ढा अंजाण, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर आ श्री भगवान, दर तेरा दर्शन पाइंदा। सिख्या दे सर्ब जहान, जीव

जंत जगत जणाइंदा। एका सिमरो साचा नाम, नाम निधाना इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कीती सोलां मग्घर, मिली माण वड्याईआ। बाल अवस्था पूरी होई सध्धर, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। पिछला लेखा दित्ता बदल, बदली आपणे हथ्थ रखाईआ। सच दुआरे बहि के करे अदल, अदालत इक्को इक लगाईआ। सोहला ढोला नाम सुणाए ग़ज़ल, राग ताल समझ सके कोई ना राईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरे नेड़ ना आई अज़ल, कयामत रूप ना कोए वटाईआ। तेरी रहमत होया फ़ज़ल, मेहरवान तेरी सरनाईआ। आवण जावण चुक्की मंज़ल, महिबूब मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, घर वज्जे सति वधाईआ। घर वधाई वज्जी सति, हरि सतिगुर दर्शन पाया। बाल अवस्था ब्रह्ममत्त, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाया। निरवैर हो के खोल्ही अक्ख, निरगुण निरगुण दरस दिखाया। नव नौ चार पिच्छों दित्ता हक़, ख़ाली झोली आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाया। साचा खेल श्री भगवान, सोलां मग्घर मिली वड्याईआ। बाल अञ्याणा मंगे दान, बाली बुध झोली डाहीआ। दस साल बीते विच जहान, रसना जिह्वा बोल ना कोए सुणाईआ। तेरे चरण बहि के वेंहदा रिहा मार ध्यान, ज़िमी असमान खोज खुजाईआ। कवण खेल करे भगवान, कवण करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। तेरे दर मंगां भिक्ख, बीस बीसा वज्जे वधाईआ। जन भगतां दे आपणा हिस्स, हिस्सा सब दी झोली पाईआ। सद वसे धाम अणडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुखां वल कर ना पिठ्ठ, करवट आपणी लै बदलाईआ। प्रेम प्यारा हो के कर हित्त, प्रीती आपणे चरण लगाईआ। अन्दर वड़ के दस्स भेत, पड़दा उहला आप चुकाईआ। कातब हो के लिख लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे माण वड्याईआ। एका माण वड्याई मंगे मनजीता, जगजीवण दाते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरा खेल सदा बेप्रतीता, वल छल तेरी धार नज़री आईआ। जुग चौकड़ी तेरी रीता, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ। लख चुरासी जीव जंत पंज तत काया तपे अंगीठा, त्रैगुण माया अग्नी लम्बू लाईआ। कोई ना करे ठांडा सीता, ततव तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साल दसवें घर तेरे मंग मंगाईआ। दसवें साल मंग अगम्म, अगोचर तेरे हथ्थ वखाईआ। गुरमुख लेखे लाउणा दमा दम, बिन दमड़ी कीमत जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जो तेरी धारों प्या जम्म, अन्तिम तेरे विच समाईआ। उन्हां बेड़ा दे बन्न्ह, जिहड़े बैठे पन्ध मुकाईआ। छब्बी पोह वीह सौ वीह बिक्रमी

जिन्नां मिलणा नाम धन, सो ख़ज़ाना झोली दे भराईआ। श्री भगवान सुण ला कर कन्न, छोटा बाला कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे झुकया सीस, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। किरपा कर हरि जगदीश, मेहरवान वड मेहरवाना। तेरा लेखा सदा अतीत, त्रैभवन धनी तेरा खेल महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कर परवाना। साचा वर दे भगवन्त, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरा खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। तेरा नाम साचा मंत, मन्त्र इक पढ़ाईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। तूं आदि जुगादि सब दा कन्त, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। दर दरवेश वेख मंगत, बैठे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरे अग्गे अरज़ोईआ। तेरे अग्गे अरज़ोई सच अरदास, दर तेरा आदल नज़री आइंदा। कर किरपा दे साथ, सज्जण साहिब इक अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम दे दात, दानी तेरा रूप नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर साचे आस रखाइंदा। साची आस गुरमुख जोड़, जोड़ी जुड़े जगत जहानयां। हरिजन सदा तेरी लोड़, गहर गम्भीर शाह सुल्तानयां। कच्चे तन्द ना टुट्टे डोर, गुड्डी चढ़ी विच असमानयां। गुरमुख गुरसिख पोह महीना कोई ना तोर, किरपा कर साहिब सुल्तानयां। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोर, चरण कँवल मंगां बण निमाणयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, भूपत भूप राज रजानयां। राजन राज शाहो भूप, भूपत तेरी वड वड्याईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा पूत, सपूत तेरी सरनाईआ। उठ वेख साची कूट, दिशा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह वेख आपणा कौल, कीता इकरार भुल्ल ना जाईआ। दित्ता माण उपर धौल, धरती देवण आई गवाहीआ। अछल छलधारी बण ना आप अनभोल, अनभुल्लड़ी कार कमाईआ। हब्ब वस्त प्रभ तेरे कोल, वड ख़ज़ाना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, लेखा लेखे विच्चों बदलाईआ। मनजीत कहे ठाकर प्रभ स्वामी, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। हर घट वेखें अन्तरजामी, आत्म लख चुरासी खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी तेरी निशानी, निरगुण सरगुण नज़री आईआ। छोटे बाले नहीं बुध अञ्याणी, तेरी किरपा सूझ समझ इक्को इक रखाईआ। जन भगतां वल कर ध्यानी, जो तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देणी माण वड्याईआ। मनजीत कहे मैं वेखी दलील, घर तेरे सोभा पाइंदा। जन

भगत करन मात अपील, घर तेरा नज़री आइंदा। शहिनशाह शाह पातशाह गुरमुख ना कर ज़लील, दोए जोड़ अर्ज़ सुणाइंदा। जो लेखा करना बस्ती खलील, सो बसता बन्नृ आपणे रंग रंगाइंदा। जो लेखा जाणे जगत भील, बेपरवाह कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाइंदा। साची खेल दस्से हरि आप, आपणा भेव जणाईआ। छोटे बाले खोलृ ताक, हरि पड़दा रिहा खुलृाईआ। उठ वेख लिख्या भविक्ख्त वाक, बिन कलम छाही काग़ज़ रिहा जणाईआ। निरगुण देवे सच्चा साथ, सरगुण होए सहाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जंगल जूह लेखा जाणे प्रभास, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तिम बद्धक गया आख, आखर आपणा हुक्म सुणाईआ। तेरा तीर निशाना रखां याद, यादव कुल मिले वड्याईआ। जिस रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सुण बद्धक करे विचार, मन मनसा विच समाईआ। किरपा कर गिरवर गिरधार, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण तेरी वड्याईआ। ठाकर स्वामी मीत मुरार, कँवल नैण तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, मेरा लेखा मात चुकाईआ। तेरा लेखा तीर निशाना, निशानी इक्को इक जणाइंदा। भेव चुकाए कृष्ना काहना, घनईआ आपणा राग अलृाइंदा। साची थित देवे माणा, वड वड्याई तेरी झोली पाइंदा। जीवदयां जग दए दानां, मरयां आपणी गोद सुहाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पहरे बाणा, कल कल्की वेस वटाइंदा। वेद व्यास लिख्या राग तराना, लेखा आपणी गंढु पुआइंदा। निरगुण सरगुण दूआ ज़ीरो सिफ़र ना कोई निशाना, जगत निशानी मेट मिटाइंदा। शब्द अगम्मी खेल महाना, जोती जाता आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। जुग द्वापर तिन्न पोह, बद्धक तीर अंदाज बणाईआ। चरण कँवल गया छोह, शहिनशाह खुशी वखाईआ। जन्म कर्म प्रभ लए टोह, भाण्डा भरम भंनाईआ। अन्दर बाहर ना जाए सो, सोवत जागत लए उठाईआ। निरगुण सरगुण करे मोह, निरमोह नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्यार अमृत रस चोअ, सांतक सति सति वखाईआ। बद्धक नेत्र नैणां रिहा रो, हन्झूआं हार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी भुल्ल प्रभू बख्शाईआ। मेरी भुल्ल बख्श प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। तुध बिन नज़र ना आए टेक, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरी बुध कर विवेक, तेरा रूप नज़री आईआ। तेरे चरण करां हेत, जिस विच दित्ता तीर लगाईआ। एह वी प्रभ तेरी खेड, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। सोहणा सत्थर तेरी चंगी लग्गे सेज, जिस धरनी उपर बैठा आसण लाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी

रहे हमेश, जन्म मरन आपणा खेल कराईआ। किरपा कर के दस्स आपणा भेत, पड़दा उहला आप उठाईआ। जे पहलों देंदों मैनूं आपणा हेत, भरम भुलेखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, अग्गे देणी ना कोए सजाईआ। अग्गे सजा ना देवीं बाद मौत, मरयां प्रभू हथ्थ किसे ना आइंदा। मैं तेरा नूर तेरी जोत, अन्त तेरे अग्गे टिकाइंदा। मैं तेरा ब्रह्म तेरी गोत, पारब्रह्म तूंही नज़री आइंदा। मैनूं तेरी गोदी बहिण दा शौक, भुल्ल बख्शाइंदा। मेरी अग्गे चले ना कोई सोच, बिन सोच समझ आपणा आप तेरी झोली पाइंदा। एथे उथ्थे जावीं पहुंच, दो जहान तेरी ओट तकाइंदा। त्रिलोकी नाथ कहे मेरा खेल करौच, पुष्कर सलमल सान लखण तेरी धार बंधाइंदा। अन्तिम जम्बु मानणी मौज, कुशा सलमल रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाइंदा। बद्धक सुण धुर दी धार, सो साहिब आप जणाईआ। बिन पुरख अकाल मेला मिले ना सच दरबार, दरगाह साची वज्जे ना कोए वधाईआ। तूं जीवदयां आपणा आप झोली दित्ता डाल, मैं अमानत दर घर साचे दयां पुचाईआ। तिन्न पोह रखणा याद, निरगुण तों होया सरगुण सरगुण तों सिफ़रा रूप वटाईआ। बीस अंक कहे संसार, श्री भगवान अंक ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, तेरा लेखा दए चुकाईआ। तेरा लेखा रख्या याद, मनजीता सोलां मग्घर याद कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी कवण वेला तेरा बुझया जगे चराग़, दीपक जोत होए रुशनाईआ। तेरा साचा बणे समाज, समग्री तेरी नज़री आईआ। तेरा भगत तेरा वेखे धुर दा काज, करता की की खेल रचाईआ। डुब्बदा बेड़ा तरे जहाज़, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। सन्त सुहेले राए धर्म ना मारे अवाज़, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना आवे पास, मुख घुंघट सके ना कोए उठाईआ। तत्तां पिच्छे खेले खेल तमाश, तत्तां विच तत्तां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरे हथ्थ डोरी नज़री आईआ। तेरे हथ्थ निर्मल डोरी, तन्द नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी वेखें चढ़ के अगम्मी घोड़ी, दो जहानां फेरा पाइंदा। कलयुग अन्तिम वीह सौ वीह बिक्रमी गुरमुखां नालों विछड़न वाली जोड़ी, तिन्न पंज पोह वेला वक्त तेरे बिनां ना कोए सुहाइंदा। जिन्हां दी वीह सौ वीह बिक्रमी प्रेम प्रीती नाल वंडणी लोहड़ी, घर सतिगुर जन्म दवाइंदा। दो जहानां नालों कर के चोरी, गुरमुख आपणे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। सोलां मग्घर धुर संदेसा, वीह सौ वीह बिक्रमी आप जणाईआ। तिन्न दिन सारी संगत प्रभ दे कोलों पूरा करो लेखा, रसना जिह्वा हरि हरि गाईआ। जन भगतां पिच्छे आपणा करे हेता, हितकारी होए सहाईआ। द्वापर जुग दा रखे

चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिन तीर निशाना मारया नेज़ा, तिक्खी धार प्रगटाईआ। तिस आपणी प्रेम प्यार दी देवे सेजा, लाड़ी मौत गोद ना कोए बहाईआ। सच संदेस हरिसंगत दुआरे भेजा, धुर संदेसा आप सुणाईआ। इक इक फुल्ल प्रेम प्रीती दी साची सुहञ्जणी सेजा, लोकमात आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सोलां मग्घर सोलां दिन, सोलां सोलां वंड वंडाईआ। सोलां कला वेंहदी रही कृष्न गिण गिण, किशना सुखला पक्ख जणाईआ। जिस दा रूप रंग रेख ना कोई चिन्न, तत समझ कोए ना पाईआ। सो करे खेल श्री भगवन, जन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सोलां दिन तक्कदे रहे राह, त्रै पंज ध्यान लगाईआ। अट्ठ तत करन गुनाह, नौ दर फिरे हल्काईआ। समझ सके कोई ना राह, भेव सके ना कोई खुल्ाईआ। अंतम लेखा सके ना कोई चुका, भार मात ना कोए वंडाईआ। द्वापर वेला कलयुग अन्तिम रिहा सुहा, सोभावन्त आपणे हथ्थ रखे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोलवें दिन सूली सार कर प्यार, आपणे चरण बहाईआ। सोलवां दिन होया सवेरा, पोह तिन्न रुतड़ी सुहाईआ। राए धर्म दूर दुराडा आए नेड़ा, नेरन नेर हो सीस झुकाईआ। चित्रगुप्त लेखा वखाए ना करे हेरा फेरा, पत्रा पत्रा अंक उलटाईआ। लाड़ी मौत मारे गेड़ा, भज्जी फिरे चाईं चाईंआ। जमदूत कहिण दिसे खुल्ल्ा वेहड़ा, दर दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। पांधी पन्ध मुका के आए नेड़न नेड़ा, घर साचा वेख वखाईआ। दूर दुराडा हो के तक्कया नज़री आया शहिनशाह शेरा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। अग्गे किसे ना पए ज़ेरा, कदम सके ना कोए उठाईआ। राए धर्म कहे चित्रगुप्त एह भगतां वेहड़ा, लाड़ी मौत कहे गुरमुख सतिगुर गोद बहाईआ। एथे लेखा नहीं तेरा मेरा, मेरा तेरा नज़री इक्को आईआ। द्वापर विछड़या कलयुग अन्तिम बैठा रिहा कर के ज़ेरा, ज़ेर ज़बर ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमात्म आपणे हथ्थ रखे निबेड़ा, खेल अचरज रिहा जणाईआ। अग्गे हो के फड़े केहड़ा, भय विच भज्जण वाहो दाहीआ। मुला कहे बिन मसीतों बिन शरअ रीतों छत्तों मैनूं पा लओ जेड़ा, आपणी डोर बंधाईआ। यारां सदीआं वेंहदा रिहा कदों मुर्शद आवे मेरा, मेहरवान फेरा पाईआ। जिस वेले आपणे भगत उते करे मेहरा, मेहर नाल मेरा पर्दा दए तुड़ाईआ। चौदां लोक तबक परलोक रहे ना गेड़ा, दरगाह साची लए मिलाईआ। गुरमुख वसा काया खेड़ा, गुलशन आपणे लए महकाईआ। अगला लेखा उस दे कोल बथेरा, पिछला लहिणा दए चुकाईआ। ज़बराईल मेकाईल इज़राईल असराफ़ील परवरदिगार दुआरे कोई ना करे झेड़ा, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा

वर, पिछला कौल इकरार रिहा निभाईआ। कौल इकरार निभे तोड़, हरि करता आप निभाईआ। जन्म जन्म दा लेखा पिच्छे ना देवे छोड़, लेखा अगले लेखे नाल मिलाईआ। अगला हाल अगम्मी होर, अवर होर समझाईआ। जे कोई कर के वेखे गौर, वेंहदयां नज़र किसे ना आईआ। जिस दयाल हो के जाए बौहड़, बौहड़ लए गल लाईआ। उठो वेखो राए धर्म दोए हथ्थ रिहा जोड़, वास्ता इक्को पाईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोर, जाबर तेरी इक सरनाईआ। गुरमुख बणे तेरे साचे कौर, शहिनशाह तेरा बंस नज़री आईआ। असीं दरवेश दर मजौर, सद बैठे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। सभना वेख अर्थी आई नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ चरणां गई ढट्ठ, दोए जोड़ मस्तक टिक्का लाईआ। प्रभ मेरे वल इक वार तक्क, आपणा ध्यान लगाईआ। मेरा दे मैनूं हक़, मेरी सेज सुंञी कम्म किसे ना आईआ। चार जुग मैं जगत जीवां ढोंहदी अजे ना गई थक्क, थकावट विच कदे ना आईआ। घरों कढु प्रभास देवां धक्क, जिस प्रभास विच बद्धक दित्ता तराईआ। ख़ाली हो होई बेवस, बण निमाणी रही कुरलाईआ। मैनूं दित्ता माण तूं दो फट, लकड़ी काठ जोड़ जुड़ाईआ। शाह सुल्ताना राज रजाना मैं आपणे उते दित्ता रख, मढ़ी गोर दित्ता दबाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों पहली वार जन भगतां कोलों दित्ता डक्क, दर आई बाहर कढ्ढाईआ। मेरे ख़ाली दिसण हथ्थ, मैंहदी रंग ना कोए रंगाईआ। मैनूं होर वी प्या शक़, एसे कारण नैणां नीर रही वहाईआ। वेंखी किते सारे भगत आपणी गोद ना लईं चक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। क्यों बिन भगतां मेरी कौण रखू पत, कौण मेरा संग निभाईआ। गोबिन्द इक्को वार गया दस्स, जीवदयां मेरे उते आसण लाईआ। मरयां ख़ाक जगत छार गया सिर घत्त, जो छार साधां सन्तां राज राजाना मनजीता वंड वंडाईआ। होई हैरान श्री भगवान तेरयां भगतां बुरज ना जावे ढट्ठ, साढे तिन्न हथ्थ नज़री आईआ। जे नाता छुट्टे तत अट्ठ, जोती जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां मेरी सेज ना सोभा पाईआ। अर्थी कहे मेरा वसेरा मसाण, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। मरयां पिच्छों मेरी करन पहचान, जीवदयां याद किसे ना आईआ। तेरे दर तों मंगां दान, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। कर किरपा श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। तेरे सन्त तेरे भगत जिस वेले मेरे उते आसण लाण, मैं खुशीआं नाल गीत गावां चाईं चाईंआ। साक सज्जण भाई भैण मात पित जो मेरे नाल जाण, खुशीआं विच तेरा नाउँ ध्याईआ। दे के मति गया बाल अञ्याण, वीह सौ दस बिक्रमी जगत समझाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो साचे सन्तो अग्गे वेखो श्री भगवान, फड़ भुजां गले रिहा लगाईआ। धन्न भाग जिस जीआं दान देवे आण, पुत्तर धीआं

रूप वटाईआ। सो गुरमुख जन्म विच्चों जन्म पाण, जन्म जन्म नाल बदलाईआ। पूरब लहिणा चुक्के जहान, अग्गे लहिणा सतिगुर हथ्थ वखाईआ। सौहरे पेईए कोई ना आवे मकाण, नेत्र नैण नीर ना कोए वहाईआ। सयापा करे ना कोई नैण, अलाउणी दे ना कोए समझाईआ। जिन्हां ठाकर आए लैण, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। सो गुरमुख जीउदे जीअ सदा जग रहिण, मर जीवत रूप वटाईआ। एह लेखा अर्थी देणा देण, सार्थी आपणा सारथ पूरा लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगत बिवहार प्यार नाल चलाईआ। तिन्न पोह कहे खुशी नाल रलाई ग़मी, अगम्मता इक्को इक जणाईआ। भगवन घर भगत आत्म जम्मी, मिली माण वड्याईआ। ना कोई पापा ना कोई मंमी, पिता पुरख इक सरनाईआ। ना कोई अम्मड़ा ना कोई अम्मी, पूत गोद ना कोए उठाईआ। ना कोई चोली ना कोई कन्नी, अंगी तन ना कोए पहनाईआ। ना कोई दात ना कोई दान ना कोई धनी, दौलत रिहा ना कोए लुटाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न ना दिसे छन्नी, महल मनार ना कोए बणाईआ। ना कोई नार खौंत सुघड़ सुआणी दिसे रंनी, सेज सुहञ्जणी ना कोए विछाईआ। ना कोई नेत्र ना कोई खेत्र ना कोई अन्ध अज्ञान अन्न्ही, जोती धार ना कोए वखाईआ। श्री भगवान जुग जन्म दी विछड़ी आपणे घर आप कीती मतबन्नी, आपणा हक़ गुरमुख झोली पाईआ। लाड़ी मौत फिरे भंनी, भजड़ा पिट्टी दए दुहाईआ। मैं धर्म राए दी आई घल्ली, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। ख़ाली हथ्थीं मुड़ के चली, आपणा मुख भवाईआ। जुग चौकड़ी गुरू अवतार पीर पैगम्बर मेरी मार किसे ना झल्ली, मेरा पासा सक्या ना कोए बदलाईआ। किथों आ गया धुरदरगाही वली छली, अछल छलधारी आपणी खेल कराईआ। जिस ने दर आई कर दिती झल्ली, मेरी सोच समझ भुलाईआ। गुरमुख बणा के आपणे प्रेम प्यार दी कली, घर साचे आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। लाड़ी मौत कहे की होया हाए, हौका भर सुणाईआ। वड पीर पीरा किथों गया आए, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। जिस भगत सुहेले आपणे लए छुडाए, बलहीण सानूं दित्ता बणाईआ। राए धर्म ना नेड़े आए, चित्रगुप्त बन्न्हु बसता बैठा मुख भवाईआ। एहनां कोई ना देवे फाहे, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। मरन तों पहलां जन्म दिवाए, कर्म आपणा नाल बणाईआ। कौल इकरार दा धर्म निभाए, अधर्मी रूप ना कोए वखाईआ। सरन पढ़े दी लाज रखाए, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म काज रचाए, मातम नज़र कोए ना आईआ। पुत्तर धी नार संसार ना कोई कुरलाए, हाहाकार ना कोए वखाईआ। साक सज्जण ना कोई मंगाए, मित्र प्यारे देण ना कोए दुहाईआ। कोई ना कहे राम सिंघ पल्ला गया छुडाए, नाता जगत मात चुकाईआ। कोई ना कहे खारे लओ चढ़ाए, अशनान अन्तिम वार कराईआ। कोई

ना कहे कफ्फण लओ बणाए, साढे तिन्न हथ्थ पड़दा पाईआ। कोई ना कहे अर्थी उते दयो टिकाए, मुख घृत घी पवाईआ। कोई ना कहे काहनी लओ बुलाए, जो आपणे कंध उठाईआ। कोई ना कहे चिखा लओ चणाए, बालण मढ़ीआं विच सुटाईआ। कोई ना कहे लागी लागणा लओ बुलाए, वेला अन्तिम देण सुहाईआ। कोई ना कहे सिर पैर अग्गे पिच्छे लओ बदलाए, भाण्डा पाणी गागर जगत रुढ़ाईआ। कोई ना कहे वेखो इकल्ला जांदा, संग नज़र कोए ना आईआ। कोई ना कहे गुरमुख घर आपणे जांदा, सारे देण दुहाईआ। जिन्हां सतिगुर आप बख्शादा, बख्शिश झोली पाईआ। तिन्हां पिच्छे फेरे पांदा, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। सोलां दिवस पहलों गांदा, सोलां इच्छया पूर वखाईआ। बिन भगत घर ना दिसे ठांडा, अग्नी रूप नज़री आईआ। जन भगतां जन भगत आंड गुआंडा, सज्जण सैण आप वखाईआ। भगत जन जन भगतां मिल कहिण औह गुरमुख जांदा, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ। तेरी दया वेख निराली, सारे रहे ध्यान लगाईआ। जिस ग़मी विच दिती ख़ुशहाली, ख़ुशी ग़मी नाल वटाईआ। बण विचोला कर दलाली, तिन्न वेर पहले गया समझाईआ। बिन समझों सारे रहे ख़ाली, बद्धक तेरी सार किसे ना आईआ। अन्त करन आया रखवाली, बण सेवक सेव कमाईआ। बिन मुढ तों कोई ना टहिके पत्त डाली, बच्चे बाले निक्के निक्के नाल तराईआ। राम सिँघ बिनां घर दिसे ख़ाली, हरिसंगत मिले ना माण वड्याईआ। जुग द्वापर घाल घाली, मंगी मंग बण सवाली, झोली खाली दए भराईआ। जिस दा कोई ना बणे वाली, तिस आपणी गोद बहाईआ। एहो खेल प्रभू दी निराली, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। ख़ुशी कहे मैं की करां तेरी ख़ुशामंद, मेहरवान तेरी वड्याईआ। धन्न भाग तेरी होई आमद, अहिमक करां की चतुराईआ। लेखा याद विच बनवास बानर, हनवन्त दित्ता समझाईआ। कलयुग अन्त इक्को राम करे चानण, जिस चानण राम सुरती सीता बनबास दए कटाईआ। उह खेड़ा गुरमुख विरले मात पहचानण, जिन्हां पेशतर दए समझाईआ। पुरख अकाल बण के जामन, ज़ाहर ज़हूर लए बचाईआ। किसे हथ्थ ना आवे क्षत्री ब्रह्मण, शूद्र वैश पल्लू ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहारा वर, सदका इक्को इक रखाईआ। ग़मी कहे मैनूं आवे हासा, हस्ती प्रभ दी नज़री आईआ। जिस दा वेख्या अजीब तमाशा, अचरज खेल रचाईआ। सच सच्च प्रभ नूं कैहन्दे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी कल धराईआ। भगत खेड़ा होण ना दित्ता विनासा, ढहिंदा ढहिंदा ल्या बचाईआ। एह प्रभू दी आपणी खाहशा, पिछला लेखा आपणे विच रखाईआ। स्वासां विच्चों स्वासां दित्ता साथा, स्वारथी इक्को नज़री आईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुकावणहारा पिछला वाटा, अगला पन्ध आपणे हथ्थ रखाईआ। ख़ुशी कहे सुण ग़मी भैण, की तैनूं हाल सुणावां। उठ वेख मेरा सज्जण सैण, जिस दीआं मेरे सिर ते छावां। उहनूं लाड़ी मौत की आवे लैण, जिन्हां दीआं भगवन पकड़ीआं बाहां। उथ्थे कोई ना पावे वैण, विछोड़ा होए ना पुत्रां मावां। जुग जुग लहिणा देवे देण, नित नवित्त जन भगतां तोल तोले सावां। आपणी चरणी देवे बहिण, नित गीत उहदे उठ उठ गावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, करे प्यार जिउँ प्रेम प्रीती अन्दर पुत्रां मावां। ग़मी कहे ख़ुशी सहेली मैं की दस्सां, दस्सण विच किच्छ ना आईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, दोवें रंग वखाईआ। मैं वेख के आई अक्खां, श्री भगवान जन भगतां दया कमाईआ। जिस दा विछण ना दित्ता सत्थर सथ्था, नाता तुटा ना तत जुदाईआ। अग्नी तप्पण ना दित्ता भट्ठा, हड्डीआं बालण रूप वटाईआ। भस्म रलण ना दिती विच घट्टा, मिट्टी ख़ाक ना खेह उडाईआ। इक्को प्यार आपणे विच रत्ता, रंग सच्चा सच चढ़ाईआ। फड़ बाहों किहा मैं तारया आपणा बच्चा, बच्चयां वाला बच्चा फेर बणाईआ। एहो खेल प्रभू दा सच्चा, ग़मी कहे मैं अक्खीं वेख आईआ। जोत अकालण तिन्न पोह आप माँ बण गई जच्चा, नंन्हा आपणी गोद बहाईआ। पिच्छे काया माटी भाण्डा दिस्सया कच्चा, अग्गे ठठयार आपणी घाड़त लई घड़ाईआ। जिस दा किसे ना

६४

वेख्या संचा, सो बाढी आपणी बणत बणाईआ। जिस दे भाणे नूं मरयां पिच्छों सारे कहिण अच्छा, उहदे अग्गे चले ना कोए

१६

वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी खा कदे ना रज्जा, सर्ब भुक्खा कहे लोकाईआ। तिस मेहरवान हो के जन भगतां रखी लज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भज्जण वाला भाण्डा ना भज्जा, साढे तिन्न हथ्थ हथ्थ दे बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूर दुराडा आया भज्जा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। ख़ुशी कहे ग़मी एह की दस्सया, प्रभ अचरज खेल रचाईआ। मैं वेख्या उह गुरमुखां अन्दर वसया, बाहरों नज़र किते ना आईआ। सच प्रीती अन्दर फस्सया, डोरी आपणा नाम बंधाईआ। जे कोई गुरमुख गुस्से हो के अग्गों मारे पिच्छे कदे ना हटया, वांग बच्चयां गले लगाईआ। जे कोई जन भगतां वल वेखे अग्गे हो के डटया, औह वेखो राए धर्म दे सके ना कोए सजाईआ। इक्को रंग प्रेम अगम्मी रंगया, ललारी आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां सेवा करदा कदे ना संगया, सेवक आपणी कार कमाईआ। सदा सदा प्रभ चंगे करे मंदयां, मंदे चंगे आप बणाईआ। जुग जन्म दे विछड़े कोझे, कमले गंदयां, लख चुरासी गंदगी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दोए नेत्र जगतहीण अंध्यां, आपणा दरस दए कराईआ। राए धर्म दी फाँसी तोड़ फंदयां, बद्धक फांदकी दए तराईआ। जिस दे नाल जुग जुग हंढया, सगला संग बणाईआ। कलयुग अन्तिम नाता गंढया, आत्म परमात्म

मेल मिलाईआ। जिस दे पिच्छे परिवार पाई डंडया, अग्नी अग्ग ना कोए लगाईआ। आप चुक्कया आपणे कंध्या, काहनी नेड़ कोए ना आईआ। कोई ना रखे उते अर्थी फट्टे डंडया, डंका आपणा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। खुशी ग़मी दोवें कर सलूक, सुलाकुल वल ध्यान लगाईआ। इस दा कोई ना मिले सबूत, साहिब वड्डा वड वड्याईआ। महल अटल उच्च अरूज, अर्श फर्श वेख वखाईआ। आदि जुगादि धुर महिबूब, मुहब्बत सच सच्च समझाईआ। जिस रहमत कीती काया कलबूत, रूह बुत्त ना होई जुदाईआ। कर किरपा रखे महफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिछले जुग दा असल नाल दित्ता सूद, कुल ज़र अंक दित्ता बणाईआ। हाज़र हो के आप मौजूद, पिछला लिख्या नावां दित्ता चुकाईआ। चल के आया भगत हदूद, हद्द आपणी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वरताईआ। खुशी ग़मी दोवें सहीआं, साहिब वल ध्यान लगाईआ। अक्खीं वेंहदीआं मैनूं रहीआं, नेत्र नैण उठाईआ। तूं भगतां मिल्या कर के लम्मीआं बहीआं, गलवकड़ी आपणी पाईआ। सच चढ़ाया धुर दी नईआ, नौका आपणा नाम वखाईआ। जगत दुहागणां रोंदीआं रहीआं, शाह मिल्या ना बेपरवाहीआ। हाए हाए करन जगत मईआ, मात पित संग ना कोए निभाईआ। राए धर्म कढ्ढ वखाए वहीआ, जिन्हां साहिब सतिगुर विछड़यां नूर इलाहीआ। गुरमुख सखीआं चरणीं बहीआं, माण अभिमाण जगत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी रिहा कमाईआ। खुशी ग़मी रल के आखण, इक आवाज लगाईआ। चल के वेखीए नाथ अनाथन, दीनन होए सहाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी अगम्म निराला भाषण, जगत भाषा भाख्या विच जणाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर बेपरवाह आखण, बेपरवाही विच समाईआ। सो साहिब जन भगतां आया पातण, तट किनारे बैठा डेरा लाईआ। सच दुआर कर के वासन, बिस्तर सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। घर दीपक जोत कर प्रकाशन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जलवा देवे ज़ाहर बातन, बैतल इक्को धाम वखाईआ। मुक्दस रूप आलमीन शाहो शबासन, मकसद सब दा हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खुशी ग़मी ग़मी खुशी इक्को दर करे कुड़माईआ। खुशी ग़मी प्रभ जोड़ नाता, घर इक्को रंग वखाइंदा। जिस मिल्या पुरख अबिनाशा, तिन्हां आपणी धार जणाइंदा। हरख सोग ना रहे पासा, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। जिन्हां साहिब सतिगुर मन्नया आखा, तिन्हां आखर आपणे घर वसाइंदा। खुशी ग़मी जन भगत दुआर इक्को जिहा साथा, सगला संग रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां पूरा करे घाटा, तिन्हां घाट ना कोए वखाइंदा। रैण कर अन्धेरी घुप्प, तिन्न दिन दा लेखा पूर कराईआ।

९५
१६

आपणे आपणे बिस्तर उते लेटया चुप्प, अन्दरे अन्दर हरि जस गाईआ। धन्न भाग प्रभ उजल कीता मुख, मिली माण वड्याईआ। आपणी गोदी बहाया आपणा सुत, अबिनाशी अचुत हो सहाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब ने कहिणा नाल मुख, मुखारबिंद बिंद गुरमुख रूप वटाईआ।

*** ४ पोह २०२० बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ***

पुरख अकाल खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। बाला कहे उठ देख कबीर, जुलाहे तेरा ध्यान वखाइंदा। कलयुग अन्तिम मात अख़ीर, अकल कलधारी वेस वटाइंदा। बदलणहार सदा तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। दो जहानां वड्डा पीर, परवरदिगार खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। बाला कहे उठ वेख भगत, हरि भगवन खेल कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार विच जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाणे बूँद रक्त, ततव तत वेख वखाईआ। जिन्हां देवे नाम शक्ति, शक्ती आपणा रूप वखाईआ। मेल मिलावा करे फेर परत, घर साचे होए सहाईआ। जन्म जन्म जो रहे भटक, अन्तिम लेखे दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। वेख कबीर सचखण्ड निवासी, लोकमात ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अबिनाशी, बेऐब धार चलाईआ। साचे मण्डल पावे रासी, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। जुग जन्म दी पूरी करे आसी, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। भगत सुहेला इक अकेला बणया सच्चा साथी, सगला संग निभाईआ। वेखणहारा डूंघी भँवर उच्ची घाटी, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत अठारां मिल के गाउँदे गए साखी, सो साख्यात आपणी कार कमाईआ। सन्तां मीत देवणहारा बाकी, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। भाग लगाए पंज तत काया माटी ख़ाकी, ख़ालक ख़लक होए सहाईआ। आपणी खेल दस्से सफ़ाती, जाति नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। उठ कबीर कर ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। नेत्र रोवे जगत शमशान, भूमी रो रो दए दुहाईआ। भगत विछोड़ा विच जहान, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। थोड़ा थोड़ा खेल भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया कराईआ। अन्तिम सके ना कोई पहचान, भेव सके ना कोई खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिख के गए गीता ज्ञान, अञ्जील कुरान बन्धन पाईआ। साचे मन्दिर चढ़ मेल करे ना कोए नौजवान, नौबत नाम ना कोए वजाईआ। बण भिखारी दर दरवेश मंगदे गए दान, घर साचे अलख

जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। कबीर कहे मैं वेखां की, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। लख चुरासी जंत जीअ, हरि का रूप नज़री आईआ। जगत नाता पुत्तर धीअ, मात पित कुटम्ब रूप वखाईआ। रविदास कहे साढे तिन्न हथ्थ सीं, लेखा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण करनी रिहा कमाईआ। बाला कहे उठ मार झात, साहिब सतिगुर दयां वखाईआ। जिस दा लेखा कायनात, चौदां लोक चौदां तबक रिहा समाईआ। जिस दा नूर आफ्ताब, शमा जोत करे रुशनाईआ। जिस दा नाम सति रबाब, अहिबाब रिहा वजाईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी छिन भंगर रूप ख्वाब, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर अमृत मंगदे गए हयात आब, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। जिस दी दो जहान ला सके ना कोई ताब, सो ताबेदार हो के सेव कमाईआ। जिस नूं दो जहान निरगुण सरगुण हो के करन आदाब, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। सो साहिब बण हक़ ज़नाब, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। कबीर कहे कवण थान थनंतर, ब्रह्मण्ड खण्ड नज़र कोए ना आईआ। कवण खेल करे प्रभ साचे मन्दिर, शिवदुआले मठ गुरदर ख़ाली वेखे सोभावन्त सोभा कोए ना पाईआ। दुआर बंक वज्जे जन्दर, कुंजी कुफ़ल ला ना कोए खुल्हाईआ। नेत्र रोवे सूर्या चन्द्र, चन्द नूर ना कोए रुशनाईआ। लख चुरासी मन वासना भाउँदी बन्दर, दहि दिशा फिरे हल्काईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया दिसे खण्डर, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। सच दुआरे कोई ना जावे मंगण, भिच्छया झोली ना कोए भराईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल लाए कोई ना अंगण, कूड़ी क्रिया सेज हंढ्ढाईआ। मस्तक टिक्का जोत ललाट लाए ना कोई चन्दन, जगत सिंधूर त्रिसूल रहे बणाईआ। दोए जोड़ निमस्कार नमो स्वामी कोई ना करे बन्दन, बंदगी सच ना कोए समझाईआ। पूरब लेखा कोई ना जाणे त्रिलोकी नंदन, नाथ अनाथां गया जणाईआ। जिस दा साहिब सुल्तान पुरख अकाल तोड़े बन्धन, बंदीख़ाना आप तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। कबीर कहे कवण महल्ला, कवण कूट नज़री आईआ। मैं वेखे उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ डल्ला, जल थल आपणा ध्यान लगाईआ। सच संदेस नर नरेश कवण दुआर घल्ला, बोध अगाध शब्द अनाद जणाईआ। कवण मन्दिर पारब्रह्म बैठ इकल्ला, एकँकार आपणी कार कमाईआ। किस बिध लोकमात फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणे गंढु पुआईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, निरगुण निरवैर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ।

बाला कहे वेख जुलाह, कबीर कबर नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। निरगुण निरवैर बण मलाह, शाह पातशाह आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेला रिहा जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। पूरब लहिणा रिहा चुका, लेखा आपणे हथ्थ वरताईआ। कागद कलम लेखा लिखे ना कोई शाह, गुर अवतार पीर पैगम्बर बेअन्त कहि कहि गए शुकर मनाईआ। सो पुरख अबिनाशी आपणी करनी रिहा कमा, कामल पुरख इक्को नज़री आईआ। महिबूब मुहब्बत इक्को रिहा जणा, सच सबूत इक्को इक समझाईआ। महल अटल उच्च अरूज मुनार कर रुशना, दीवा बाती कमलापाती जोती नूर इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। कबीर कहे मैं वेखे लोक, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। लख चुरासी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाए श्लोक, रसना जिह्वा बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल दी कोई ना रखे ओट, परवरदिगार संग ना कोई निभाईआ। नाता जुड़े ना निर्मल जोत, घर मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। सच दुआरे कोई ना सके पहुंच, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड बैठे डेरे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह समझ सके कोई ना राईआ। वेख जुलाहे खोल्ह अक्ख, इक्को वार जणाइंदा। जिस मार्ग मैनूं दित्ता दस्स, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। सो पुरख हो प्रतख, लोकमात कार कराइंदा। आदि जुगादि जिस नूं कैहन्दे समरथ, वड दाता वेस वटाइंदा। भगत भगवान रिहा रख, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाइंदा। जिस मारया तीर मृग वेख अक्ख, तिस निशाना आपणा नाम कराइंदा। अन्तिम गोदी लए चक्क, ज्ञानी बोधी भेव कोए ना पाइंदा। तपण ना देवे अंगीठा भट्ठ, अग्नी अग्ग ना कोए जलाइंदा। लेखे लावे रत्ती रत, रत आपणे रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप उठाइंदा। कबीर वेख होया हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। करे की खेल भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दा दित्ता दान, निहकर्मी झोली पाईआ। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, बेपहचान वेख वखाईआ। अन्तिम वेले लज्जया रखी आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ख़ाली दिसे भूमिका विच मसाण, गुरमुख सेजा आपणी गोद बणाईआ। इक्को देवे धुर दा दान, दाता दानी झोली पाईआ। कीता खेल विच जहान, कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। चार जुग पिच्छों ढोले सारे गाण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हरि वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेला इक अकेला अबिनाशी करता इक्को इक अख्वाईआ। कबीर कहे मैं होया खुशहाल, खुशी भगतां नाल रलाइंदा। साहिब सतिगुर वेख दयाल, दयालता आपणी झोली पाइंदा। जिन्हां मिल्या हरि गोपाल, सो गोपालन आपणे रंग रंगाइंदा।

तिन्हां नेड़ ना आवे काल, महाकाल भय ना कोए वखाइंदा। सच दुआर वेख धर्मसाल, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जिस गृह जिस दवारे पुरख अबिनाशी मिले आण, सो घर दो जहान वड वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। कबीर कहे वेख्या खेल अनडिठ, प्रभ अनडिठड़ी कार कमाईआ। बिन सद्दयां पुछयां घर जा के करे हित, हितकारी नज़र किसे ना आईआ। हर घट वसया अबिनाशी चित, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। आदि जुगादी धुर दा पित, पिता पुरख बेपरवाहीआ। जींवदयां जग लेखा देवे लिख, मरयां आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अचरज आपणी कार कराईआ। कबीर कहे खेल कीआ अचरज, असचरज वेख वखाईआ। श्री भगवान आपणी रख के ग़रज़, जन भगत दवारे फेरा पाईआ। दुःख रोग संताप मेट मर्ज़, कज़ा मौत आपणी झोली रिहा टिकाईआ। दीनां नाथ दीनन कर दर्द, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जन भगतां होण ना देवे हर्ज, हर्जाना आपणे हथ्थ रखाईआ। द्वापर दा रिहा पिछला कर्ज़, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। सच्चा दे के धुर दा ख़र्च, ख़ज़ाना इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत दए वड्याईआ। कबीर कहे मैंनूं चढ़या चा, घर वज्जी इक वधाईआ। कलयुग खेल वेख्या शहिनशाह, पातशाह आपणी धार बंधाईआ। रहिबर बण के गया आ, दर घर साचे फेरा पाईआ। परवरदिगार वेस वटा, ज़ाहर ज़हूर नूर करे रुशनाईआ। कातब लेखा सके ना कोए लिखा, मकतब करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। बाला कहे कबीर नहीं एह बात, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। मेरे नाल भगत मिलाए सच जमात, पट्टी आपणा नाम पढ़ाइंदा। औह वेख रविदास लिखे नाल कलम दवात, जिस दा लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। पूरब जन्म दा पिछला साक, कलयुग अन्तिम लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। कबीर कहे मोहे चाउ घनेरा, मेरे अन्तर वज्जे वधाईआ। मैं मुड़ के जावां आपणे डेरा, घर साचे फेरा पाईआ। जा के दस्सां इक्को वेरा, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। उठो वेखो पुरख अकाल शाह पातशाह शहिनशाह शेरा, साची खेल रिहा कराईआ। जिस लेख चुकाया मेरा तेरा, तेरा मेरा इक्को रंग वखाईआ। जींवदयां जग देवे गेड़ा, गेड़ा आपणा आप भवाईआ। जन्म मरन चुकाए झेड़ा, मढ़ी गोर डेरा ढाहीआ। दरस दिखाए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। कबीर कहे भगत अठारां नाल ल्यावांगा। अठ्ठ दस रुत्त सुहावांगा। हस्स हस्स फुल्ल बरखावांगा। रस रस इक चवावांगा। जस

जस राग सुणावांगा। कस कस तीर लगावांगा। ढट्ठ ढट्ठ आपणा माण मिटावांगा। खेल वेख पुरख समरथ, दोए जोड़ सीस झुकावांगा। अट्ठ दस जन भगत साथी आउणगे। घर मन्दिर सच सुहाउणगे। अन्दर वड़ के दर्शन पाउणगे। खुशी खुशी नाल मिलाउणगे। रुची इक्को ध्यान लगाउणगे। आत्म वेख सुच्ची, सच सुच्च साहिब गुण पाउणगे। जिस दी वात पुरख अकाल पुछी, तिस नूं आपणा सीस झुकाउणगे। कहिण बात नहीं एह गुज्झी, पर्दा सब उठाउणगे। इस नूं कोई समझ ना सके बुद्धि, बुद्धिवान सर्ब शरमाउणगे। हरि का लेखा किसे विच ना आए वदी सुदी, थित वार ना वंड वंडाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच्चा दर, दर तेरे सारे दर्शन पाउणगे। कबीर कहे जन भगतां नाल रलावांगा। साचे सन्तां फड़ उठावांगा। नारी कन्ता वेख वखावांगा। जिस भगत बणाए बणता, तिस भगवन दर्शन पावांगा। जिस दा भेव कोई ना जाणे पंडता, पुस्तक उहदी सिफ्त सलाह समझावांगा। जिस दे दर ते लेखा कोई बहिश्त ना जन्नता, स्वर्ग रंग ना कोए वखावांगा। जिस मिल्या प्रभ गुणवन्ता, तिस मिल के गुण गहर गम्भीर सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वेखण आवांगा। सन्त सुहेले सज्जण आउणगे। खुशीआं नाल गीत गाउणगे। वेख वेख खुशी मनाउणगे। प्रभ चरण ध्यान लगाउणगे। गुरमुख नाल गुरमुख हो के हथ्थ मिलाउणगे। जो तैथों मिल्या सुख, एह सुख सब तेरे कोलों मंग मंगाउणगे। जींवदयां प्रभ कटया दुःख, दुःख तेरे नाल वंडाउणगे। बेशक श्री भगवान बैठा चुप्प, चुप्प कीता बिन रसना जिह्वा सारे गीत सुणाउणगे। लोकमात ना दिसे अन्धेरा घुप्प, चन्द चांदनी इक रुशनाउणगे। दयाल सतिगुर अकाल पुरख परवरदिगार बेपरवाह गया तुट्ठ, टुट्टयां छुट्टयां जोड़ जुड़ाउणगे। असीं आ के बहीए दक्खण दिशा गुट्ठ, साढे तिन्न हथ्थ दूरों सीस निवाउणगे। अगला लेखा प्रभ आपे लए पुच्छ, हाल बेहाल ब्यान आपणा सर्ब सुणाउणगे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर सीस जाए झुक्क, झुकया सीस सीस फेर ना किसे झुकाउणगे।

* ४ पोह २०२० बिक्रमी राम सिंघ दे गृह फिरोजपुर छाउणी *

सच्च दुआर पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, भेव अभेदा आप जणाइंदा। एकँकार देवणहारा वथ, वस्त अगम्म आप वरताइंदा। आदि निरँजण जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेल तमाश, हरि ख़ालक आप वखाइंदा। श्री भगवान खोल्ह अक्ख, बिन नेत्र नैण उठाइंदा। पारब्रह्म

जानणहारा घट घट, गृह मन्दिर फोल फुलाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे वस, महल अटल इक सुहाइंदा। बोध अगाधा धुर दा जस, शब्द अनादी राग अलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ रिहा वस, दो जहानां सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे नट्ठ नट्ठ, निरगुण पांधी इक अख्वाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मार्ग दस्स, त्रै पंज मेला मेल मिलाइंदा। गुर अवतारां दे हक़, हकीकत आपणी हथ्थ फड़ाइंदा। पीर पैगम्बरां देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। लख चुरासी जीवन दात, जग जीवण दाता आप समझाइंदा। आत्म परमात्म जोड़ जमात, नाता बिधाता मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी गा गा गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, सो साहिब आप सुहाईआ। आदि जुगादि श्री भगवन्त, हरि करता कार कमाईआ। निरगुण सरगुण दे दे मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निःअक्खर अक्खर दए समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त रंग रंगाईआ। कर खेल पूरन भगवन्त, भगवन आपणी गोद बहाईआ। लोकमात बणाए बणत, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सचखण्ड दुआर, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण खोल किवाड़, एकँकारा पड़दा लाहइंदा। आदि निरँजण दीपक बाल, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सुहाए सच धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वडियाइंदा। अबिनाशी करता वसे नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो दयाल, दीन दयाल खेल कराइंदा। ब्रह्मवेता साचा लाल, लालन आपणे गोद उठाइंदा। जुग चौकड़ी घालण घाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, दाता दानी इक वरताइंदा। लिख लिख लेखा जगत ज्ञान, कलम शाही काग़ज़ बंद कराइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, साहिब सुल्तान हुक्म वरताइंदा। तेई अवतारां दे निशान, ईसा मूसा मुहम्मद जोड़ जुड़ाइंदा। गुर दस कर परवान, नानक गोबिन्द जोत जगाइंदा। भगत अठारां कर कल्याण, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। लेखा जाण ज़िमी असमान, लोक परलोक सोभा पाइंदा। चौदां तबक झुला निशान, चौदां लोक हुक्म वरताइंदा। दाता दानी हो मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे खेल रचाइंदा। सच दुआरे खेल अवल्ला, हरि करता आप रचाईआ। आदि जुगादी इक अकल्ला, पुरख अगम्म वड्डी वड्याईआ। निहचल धाम इक्को मल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण निरगुण नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार जिस ने घल्ला, पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। सति सरूप फड़ाए पल्ला, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। आदि जुगादी बणे अछल अछल्ला, वल छलधारी खेल खलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। लोकमात खोल्ह किवाड़, ठांडा दर इक वड्याईआ। लख चुरासी कर प्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। पंज तत खेल अपार, त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, दहि दिश आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, जोत निरँजण दए रुशनाईआ। घर विच घर खेल अपार, हरि करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी जुगा जुगन्तर, हरि करता आप कराइंदा। लख चुरासी बणाए बणतर, घड़न भंनणहार आप अख्वाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को मन्त्र, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। जीउ पिण्ड खोल्ह गगन गगनंतर, इंड ब्रह्मण्ड आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा खेल जुगो जुग, हरि करता आप कराईआ। भगत सुहेले साचे चुग, सन्त सज्जण लए मिलाईआ। भेव खुल्हाए अन्तर गुज्झ, रमज़ रमज़ नाल मिलाईआ। करनी करता लए बुज्झ, भेव अभेदा आपणा पर्दा दए उठाईआ। लेखा जाणे मन मति बुध, अनभव आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी खेल करतार, हरि करता आप कराइंदा। शब्द संदेसा वारो वार, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। गुर अवतार दे अधार, पीर पैगम्बर सीस हथ्थ टिकाइंदा। महल अटल इक मनार, हुजरा हक़ हक़ वखाइंदा। नूर खुदाई सांझा यार, बेऐब नज़री आइंदा। राम रहीम ठांडा दरबार, दरगाह साची इक प्रगटाइंदा। सूरज चन्द ना कोए सितार, ज़िमी असमान वंड ना कोए वंडाइंदा। शब्द नाद ना कोए धुनकार, रागी राग ना कोए सुणाइंदा। सरगुण करे ना कोए प्यार, ततव वंड ना कोए वंडाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए जैकार, बत्ती दन्द ना सिफ्त सलाहइंदा। कागद कलम ना कोए लिखार, कातब रूप ना कोए वटाइंदा। तट सरोवर ना कोए किनार, जलधार ना कोए वहाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला ना गुरुदुआर, इष्ट देव नज़र किसे ना आइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा ना कोए विचार, धरनी धरत धवल ना कोए सुहाइंदा । करे खेल आप निरँकार, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वसणहारा धाम न्यार, सच दवारा सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, निरगुण सरगुण लए अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे समरथ, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, जीव जंत जहान करे पढ़ाईआ। नाम निधान धुर दी वथ, नित नवित्त आप वरताईआ। निरगुण सरगुण लेखा लिख, अक्खर अक्खर दए जणाईआ। जुग चौकड़ी करे हित्त,

हितकारी वड वड्याईआ। बण के आए मात पित, पिता पूत गोद उठाईआ। सदा सुहेला वसे चित्त, मन चिंदया दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर जन भगतां होए सहाईआ। जन भगत सहाई हो प्रभ, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों लए लभ्भ, खोजत खोजत आपणा मेल मिलाईआ। जगत विकारा पार हद्द, घर विच घर मन्दिर दए वखाईआ। शब्द अनाद सुणाए छन्द, साचा सोहला ढोला राग अलाईआ। पंच विकार खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। सुरत सुआणी नार सुहागण ना होवे रंड, कन्त इक्को नज़री आईआ। कर प्रकाश आपणे चन्द, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, सुहञ्जणी रुत्त दए वखाईआ। पिछला मुकाए सतिगुर पन्ध, अग्गे आपणा राह चलाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, घर मेला सहिज सुभाईआ। अग्नी तत पाए ठंड, सांतक सति सति वरताईआ। भाण्डा भरम भुलेखा ढाए कंध, कूड़ा गढ़ तुड़ाईआ। अंगीकार लगा के अंग, अंगण आपणे लए बहाईआ। खुशी कराए बंद बंद, जन भगतां दए वड्याईआ। आत्म परमात्म इक अनन्द, निजानंद करे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। पाए दान गहर गम्भीर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दा पीर, साहिब सुल्तान नज़री आईआ। करे खेल बेनज़ीर, नेत्र नैण अक्ख समझ सके कोए ना राईआ। जगत तत कट जंज़ीर, शरअ आपणी दए समझाईआ। जानणहारा इक अकसीर, तकदीर आपणे हथ्थ रखाईआ। दाता दानी गुणी गहीर, वड वड्डा नज़री आईआ। जन्म कर्म दी कटे भीड़, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। मेटणहार लिखी तकदीर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, चम्म दृष्टी ना कोए वखाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता रोग ना कोए रखाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, बिन अक्खां अक्ख मिलाइंदा। दो जहान सच्चा कम्म, हरि करनी करता कार कमाइंदा। जन भगतां बेड़ा दए बन्न्ह, शौह दरया ना कोए डुबाइंदा। आप उठाए आपणे कंध, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। दाता दानी सूरा सरबँग, योधा सूरबीर अख्वाइंदा। सदा सुहेला घर वसे संग, विछड़ कदे ना जाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग दी जिस दी मंगण गए मंग, सो पुरख अकाल आपणी कार कमाइंदा। कलयुग अन्तिम मेट पन्ध, सदी बीसवीं वेख वखाइंदा। भगतन चोली चाढ़े रंग, रंग इक्को इक रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर गुरमुख गृह, घर वज्जे नाम वधाईआ। जिस दुआरे सतिगुर बहे, सो बंक सोभा पाईआ। नाम संदेसा इक्को

कहे, जै जैकार सुणाईआ। एथे ओथे सदा रहे, विछड़ कदे ना जाईआ। शंकर अन्त करे ना खैह, खहिड़ा छुटे जगत लोकाईआ। पूरब लेखा देणा देवे दे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता वड वड्याईआ। पूरब लहिणा सचखण्ड निवासी, दयावान दया कमाइंदा। सच दुआरे पूरी करे आसी, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर बंद खुलासी, बन्धन आपणा इक्को पाइंदा। पार किनारा औखी घाटी, फड़ बाहों आप चढ़ाइंदा। द्वापर लेखा कलयुग अन्तिम मुक्की वाटी, पन्ध नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण हो के करे राखी, सेवक आपणी कार कमाइंदा। बद्धक तेरी कूड़ी आखी, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। साची दया करे निरँकार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बाले निक्के सुण पुकार, घर खुशी खुशी विच प्रगटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ लेखा रविदास चुमार, कलयुग गंढु पुआईआ। धरनी धरत धवल दे अधार, मेहर नज़र नैण उठाईआ। महल अटल उच्च मिनार, महिफल आपणी इक दरसाईआ। साचा काअबा खोल्ह् किवाड़, कुदरत नूर नज़री आईआ। लेखा जाण जंगल जूह उजाड़ पहाड़, प्रभास आपणे लेखे लाईआ। मढ़ी गोर रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शमशान

१०४ भूमी कहे मेरे करतार, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। मैं तक्कदी रही कवण वेला जन भगत आवे मेरे दुआर, संगी साथी १०४

नाल रलाईआ । खुशीआं नाल होवे ससकार, सहिके अन्तिम जगत लोकाईआ। मैं गीत गावां उच्ची कूक पुकार, मेरी गोद

१६ मिले वड्याईआ। लै के आवां तेरे दरबार, पुरख अकाल चाईं चाईंआ। बिन भगतां मैं होई बेहाल, मेरी सार किसे ना १६

पाईआ। कलयुग जीअ दिसण कंगाल, नाम वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त बणे ना कोई दलाल, खहिड़ा सारे गए छुड़ाईआ। कोई खावे झटका कोई हलाल, छुरी कसाई हथ्थ उठाईआ। सदी बीसवीं सारे दे के गए जुआब, लाजुआब करे लोकाईआ। तेरे लैंदे गए खुआब, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। सजदा करदे गए अदाब, नमो नमो सुणाईआ । कलयुग अन्तिम प्रभ प्रगट होवे आप, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत करे प्रकाश, पंज तत ना कोए रखाईआ । जन भगतां देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। लेखा जाणे आपणा ख़ास, ख्वाहिश आपणे नाल मिलाईआ। अन्तिम वेले पुछे वात, दर दर घर घर होवे सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करता एक, एकँकारा आप कमाईआ। गुर अवतार रहे वेख, लोकमात ध्यान लगाईआ । सिँघ मनजीते दस्सया भेत, कबीर जुलाहे दित्ता समझाईआ। उठ आपणे नेत्र पेख, लोकमात वज्जी वधाईआ। जिस बाले नीहां हेठ कीते भेंट, सो आपणी खेल रिहा वखाईआ। जन भगतां रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

१०५ १६

जननी जन बण के रखे पेट, कुक्ख सुलखणी आपणी आप प्रगटाईआ। निरवैर हो के करे हेत, प्रेम प्रीती तोड़ निभाईआ। हुक्मे अन्दर संदेसा भेज, सच दुआर दित्ता सुणाईआ। नेत्र वेखो विछी सेज, सुहञ्जणी रुत्त वखाईआ। जोती जलवा नूरी तेज, लाशरीक बेऐब इक खुदाईआ। साचे वसया जा के देस, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। दो जहानां बण नरेश, नर निरँकार हुक्म वरताईआ। दर खलोते विष्न ब्रह्मा शिव महेष, निउँ निउँ लागण पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण दरवेश, दर बरदे सीस झुकाईआ। पुरख अकाल करे अगम्मी खेड, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी करनी आप कमाईआ। छोटे बाले तेरा सुण संदेसा, जन भगतां वज्जी वधाईआ। कबीर कहे मैं आ के वेखां, जन साचे नाल मिलाईआ। धन्न भाग तूं दित्ता भेंटा, पर्दा उहला चुकाईआ। श्री भगवान वसया साचे देसा, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। कबीर कहे जन उठो भगत, भगवन दया कमाईआ। वेखो खेल जा के जगत, जुगत अगली रिहा समझाईआ । बीस बीस पोह चार सुहञ्जणा वक्त, वेला इक दरसाईआ। निरवैर पुरख गया परत, पारब्रह्म वेस वटाईआ। जिस दी गोबिन्द ला के आया शर्त, जीव जंत जगत समझाईआ। सो दीन दयाल राह विच ना गया अटक, दो जहानां पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत कहिण चल कबीर, तेरे नाल साडी वड्याईआ। चल के वेखीए बेनज़ीर, नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। जिस दी टप्प ना सके कोई लकीर, हद्द हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे पीर फ़कीर, साध सन्त ध्यान लगाईआ। जिस दा पिच्छे होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर चोटी चढ़े अखीर, घर साचे मिली वड्याईआ। सो साहिब कलयुग अन्त जन भगतां कटे भीड़, औझड़ राह ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे हस्त कीड़, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद कहि के गए वड पीरन पीर, सो दस्तगीर खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। कबीर कहे उठो बणो पांधी, पन्ध आपणा आप मुकाईआ। गीत गाओ इक साहिब सुल्तानी, दूजा राग ना कोए अल्लाईआ। नाल रखो पिछली निशानी, जो दे के गया माहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को जिंदगानी, जीवण मरन नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल पढ़ो बाणी, दूजा नाद ना कोए सुणाईआ। जा के वेखो लोकमात खेल महानी, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। जन भगत आए नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। भगत दवारे कर इकट्ठ, कबीर जुलाहे रहे सुणाईआ। अन्दर वड़ के अग्गे हो के दस्स,

१०५ १६

सच्चा हाल सुणाईआ। तैनूं लभ्भदे लभ्भदे गए थक्क, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। साडा दे प्रभू हक़, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मथ्था टेक लकीर कढ्ढीए नक्क, तकदीर दे मिटाईआ। अग्गों हस्स के कैहन्दा धन्ना जट्ट, मैं सच दयां समझाईआ। पुरख अकाल बिन मेरे किसे ना आया वस, मैं फड़ बाहों ल्या मनाईआ। नामा कहे मैं दस्सां सच्च, सच सच्च जणाईआ। श्री भगवान मैं सेवक ल्या रख, बाढी बण के बणत बणाईआ। कबीर कहे उस दी खेल अकथ, कोई समझ सके ना राईआ। सारे खोलू के वेखो अक्ख, नेत्र नेत्र नाल मिलाईआ। श्री भगवान पुरख समरथ, कलयुग अन्त जन भगत दवारे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कबीर कहे प्रभ सुण अरदास, दोए जोड़ मेरी बेनन्तीआ। दूर दुराडा आया पास, तेरा सोहणा धाम सोभावन्तीआ। चरण कँवल करां प्रणाम, वेखां खेल आदि अन्तीआ। मेरे नाल तेरे गुलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दीन दयाल सदा बख़्शंदीआ। बख़्शिश कर आप करतार, हरि करता दया कमाईआ। आ कबीर वेख दरबार, पुरख अकाल रिहा लगाईआ। भगत जन रखे नाल, जन भगतां भगती आप कमाईआ। पूरब जन्म दी लेखे लाए घाल, घाल आपणी झोली पाईआ। रल मिल सारे वेखो मेरा लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। मुरदे कोलों पुछो जींवदयां हाल, जीवण विच्चों जीवण दित्ता बदलाईआ। जिस दा तन ना खाधा काल, अग्नी सेव ना कोए कमाईआ। ग़मी अन्दर ख़ुशी दिती वखाल, ख़ालस आपणा मेल मिलाईआ। जन भगत कहिण तेरी किरपा दीन दयाल, आदि जुगादि तोहे बण आईआ। साढे तिन्न हथ्थ मंग मंगी रविदास चुमार, इक्को चम्यारा तेरे नाल नज़री आईआ। बे दर खड़ा सीस कंगाल, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। कर किरपा जे चरणां विच लएं बहाल, घर वज्जे सच वधाईआ। उह तेरी सच्ची धर्मसाल, जिस दवारे बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ। कबीर अन्दर आ लँघ, शब्द इशारे नाल जणाईआ। नाल ल्याउणा आपणा संग, पिच्छे रहिण कोए ना पाईआ। सारे ख़ुशीआं नाल वजाउण मृदंग, सारंग सारंगा इक्को नाम हथ्थ रखाईआ। घर वेख्या प्रकाश नूरी चन्द, असमानी चन्द बैठा मुख छुपाईआ। गृह मन्दिर मंगल सुणन आया अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कबीर कहे जन भगतो वेखो राम सिँघ दवारे पई ठंड, ठंडक हरि जू आप वरताईआ। जिस दी टुट्टी दिती गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। भगत अठारां करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरी करनी तूं जाणे करतार, करता पुरख तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी गए हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान तेरी सार किसे ना आईआ। गुर अवतार मंगदे गए दान, पीर

पैगम्बर अग्गे झोली डाहीआ। अन्तिम कहि के गए नाल ज़बान, शब्द इशारे नाल जणाईआ । कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। इमामां सिर होए इमाम, अदल अदालत इक कराईआ। धुर संदेसा दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। नाम जणाए इक्को नाम, सति सति समझाईआ। नज़री आए धुर दा राम, रमया आपणी कार कमाईआ। वेस वटाए सच्चा काहन, बंसुरी इक्को गीत सुणाईआ। नानक गोबिन्द दे निशान, धर्म निशाना इक झुलाईआ। जन भगतां रच्छया करे आण, इच्छया सब दी पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। कबीर कहे जन भगतो होवो त्यार, त्यारी इक्को वार समझाइंदा। सच पटारी जो लयांदी नाल, धुर इशारे नाल समझाइंदा। शब्द अगम्मी फुल्ल लओ उठाल, पत डाली नज़र कोए ना आइंदा। सारे बोलो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार, जै जैकार सुणाइंदा। फेर वेखो गुरमुख लाल, राम सिँघ वडियाइंदा। इस दे उत्तों इक इक फुल्ल देवो वार, वारता प्रभ दी भेंट चढ़ाइंदा। जन्म फेर ना आवे विच संसार, संसारी संग तजाइंदा। एथे मिल्या आप करतार, अग्गे तुहाढ्ढे नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा। भगत अठारां फुल्ल बरसाउँदे ने। गीत पुरख अकाल गाउँदे ने। ध्यान इक्को चरण लगाउँदे ने। नेत्र नैण अक्ख खुलाउँदे ने। श्री भगवान दर्शन पाउँदे ने। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाउँदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर साचे मंग मंगाउँदे ने। मंगण मंग दर खलो, चरण ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी कर मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। धन्न भाग चार पोह, बीस बीसा खुशी वखाईआ। जन भगत अन्दर कीती लोअ, प्रकाश एका नाम प्रगटाईआ। राए धर्म कोलों खोह, आपणी गोदी ल्या उठाईआ । अग्गे कोई ना सके छोह, शहिनशाह तेरी ओट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ । भगत अठारां बोलण बोल, प्रभ तेरा नाउँ जणाईआ। वाहवा तोलया सच्चा तोल, तराजू आपणा नाम उठाईआ । दूर दुराडा हो के कोल, नेरन नेरा नज़री आईआ। दिती वड्याई उपर धौल, धरनी खुशी मनाईआ। पूरब भुल्लया ना प्रभ जू कौल, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत जन सच दमामा वजावण ढोल, ताल आपणा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कबीर कहे तेरी की वड्याई, वड वडे बेपरवाहया। जुग चौकड़ी तेरी समझ ना आई, सब बैठे ध्यान लगाया। आपणा भेव बैठों छुपाई, वड शहिनशाह बेपरवाहया। आपणा नुक्ता किसे ना दित्ता समझाई, आदि अन्त ना किसे वखाया। बौहड़ी करीए हाल दुहाई, उच्ची कूक कूक अलाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा ढोला गए गाई, गा गा अन्त

किसे ना पाया। कलयुग अन्तिम निरगुण आपणी खेल रचाई, रोज रोज खेल वेख वखाया। छोटा बाला भेंट चढ़ाई, चढ़ चढ़ मन्दिर वेखे बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा तेरा हथ्थ किसे ना आया। भेव अभेदा मेरा अनोखा, श्री भगवान आप जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द धार नाल लिखाया पोथा, बुध बोध कर प्रगटाईआ। बल दे बणाया योद्धा, सूरबीर अख्वाईआ। नाम सुणा जणाया होका, उच्ची कूक कूक अल़ाईआ। जुग जुग मार्ग दस्सया सौखा, रहिबर राह चलाईआ। आदि अन्त जे कोई लभ्भे सब नाल करे धोखा, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। चार जुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी सब नूं दस्सया इक्को मौका, कलयुग अन्तिम प्रभ आवे बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों परखे खरा खोटा, घर घर अन्दर वड़ के फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाईआ। भगत कहिण सुण अरदास, अर्ज़ आरज़ू इक जणाईआ। धन्न भाग पूरी कीती आस, जन भगतां हो सहाईआ। एथे विछड़े ओथे तेरे पास, बिन तेरे दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार जुग सारे कूक गए आख, जीव जगत जहान जणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा कर कर थक्के पाठ, सर सरोवर तीर्थ तट नहावण नहाईआ। तेरी किसे ना लभ्भी ज़ात, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान हो के दिती दात, दयावान दया कमाईआ। मैं उठ के सारयां देवां आख, सच सुणो जन भगत मेरे भाईआ। इक्को पुरख अकाल जो जुग जुग पुछे वात, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। इक्को परवरदिगार रसूल पाक, पाकीज़ा रूप नज़री आईआ। इक्को नाद इक्को धुन राग इक्को शब्द सुणाए बांग, कलमा कलाम सांतक सति इक दृढ़ाईआ। इक्को महिबूब सच अमाम, इक्को अरूज उच्च निशान, इक्को महफूज दो जहान, चारों कुण्ट नज़र किसे ना आईआ। मैं दर्शन कीता आण, पाया परम पुरख सुल्तान, हरस मिटी जीव जहान, जगत लेखा रिहा ना राईआ। उपर चढ़ वेख्या मकान, गढ़ बंक छुटा शैतान, डंका वज्जा इक महान, तूँ ही तूँ राग अल़ाईआ। सो पुरख सुल्तान जन भगतां मिल्या आण, जिस दी किसे ना आए पहचान, अन्तर आत्म समझ कोए ना पाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक सूफ़ी सारे करो सलाम, अलैकम इक्को इक वखाईआ। पीर पैगम्बरां दे पैग़ाम, कलमा आपणा आप पढ़ाईआ। चार जुग जिस दा नाम, तहरीरी बणया रिहा अष्टाम, नानक निरगुण मोहर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो गुरमुख रिहा तराईआ। भगत कहिण केहड़ा गुरमुख, जिस मिले माण वड्याईआ। कबीर कहे औह वेखो प्रभ गोदी रिहा चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। भगत कहिण असीं होए खुश, श्री भगवान अचरज खेल रचाईआ। जन्म जन्म दी मिटी भुक्ख, कर्म कर्म दा रोग मिटाईआ। असीं कैहन्दे रहे सिर्फ़ असीं प्रभ

दे पुत्त, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडीआं सुण के बैठा रिहा चुप्प, अग्गों बोल ना कोए सुणाईआ। चुप कीता सचखण्ड दवारयों आया उठ, लोकमात फेरा पाईआ। उह साथों चंगे जिन्हां ल्या पुछ, बिन भगतीउँ भगत बणाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घुप, साचा चन्द इक चमकाईआ। तिन्हां गुरमुखां अगला पिछला लेखा गया छुट्ट, छुट्टी वस्त पराईआ। श्री भगवान हो मेहरवान जन भगत फड़ के गुट, कहे तेरी मेरी होए कुड़माईआ। तेरे मेरे विच नहीं कोई फुट्ट, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जन्म मरन दा पैंडा गया मुक्क, लख चुरासी गेड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कबीर कहे तेरा दर्शन पेख, प्रभ वज्जी इक वधाईआ। घर साचे ल्या वेख, जन भगतां दए तराईआ । पिछली मेटणहारा रेख, अग्गे आपणी बणत बणाईआ। धन्न भाग तूं कोझयां कमल्यां दस्सया हेत, बण हितकारी होएं सहाईआ । श्री भगवान सानूं ओसे थाँ दे भेज, जिस दवारयों ल्या मंगाईआ। जा के माणीएं तेरी पिछली सेज, घर साचे खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेहर नज़र उठाईआ। कबीर जुलाहे लै प्रेम प्रशाद, जन भगतां नाल वरताईआ। परम पुरख कोल एहो दाद, जेहड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दा रसना जिह्वा कोई चक्ख ना सके स्वाद, रस समझ कोई ना पाईआ। एहो किरपा आदि जुगादि, जन भगतां उते कमाईआ। कलयुग अन्त सुण फ़रयाद, फ़ैसला इक्को वार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत कहिण सोही बस्ती, हरि बिस्मल रूप नज़री आईआ। जिस दी उच्च अगम्म अथाह हस्ती, सो हस्त कीटां विच डेरा लाईआ। कलयुग जीवां जगत वेखे अर्थी, दोए लोचण नीर वहाईआ। जन भगतां प्रभ पूरी कीती भगती, जिन्हां भगत दर बुलाईआ। खुशी होवे वड अर्श अर्शी, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। धुर दा खेल नाटक नहीं फ़र्ज़ी, कूड़ी क्रिया ना कोए वड्याईआ। तन कपड़ सींवें बण के दर्ज़ी, सूई तन्द डोर आप बंधाईआ। जन भगतां नाल रला के आपणी मर्ज़ी, मर्ज़ जीवण मरन दी दिती गंवाईआ। साहिब सतिगुर मकरूज बण कर्ज़ी, कर्ज़ा पिछला अदा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सद वड्याईआ। कबीर कहे प्रभ सानूं तोर, तुरत आपणा हुक्म जणाईआ । प्रेम प्रीती खिच डोर, बिन तन्दी तन्द हिलाईआ। दूर दुराडे आए दौड़, तेरा पन्ध मुकाईआ। अग्गे वेख्या आ के ब्रह्मण गौड़, जिस दी ज़ात पात समझ सके कोई ना राईआ। आपणयां भगतां रिहा बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। कर किरपा ला के दे उह पौड़, जिस दा डण्डा हथ्थ किसे ना आईआ। कबीर कहे मैं चार कुण्ट दहि दिशा नव नौ चार वेख्या कर के गौर, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। इक्को बाला नढ्ढा नज़री आया तेरा छोहर,

१०६ १६

गुरमुख सच्चा आसण लाईआ। सृष्ट सबाई दिसी ठग्ग चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। किरपा कर सानूं खुशीआं नाल मोड़, हुक्म आपणा सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। जन भगतां दया कमाउँदा ए। सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। मेहरवान हुक्म सुणाउँदा ए। इशारे नाल आप जणाउँदा ए। राम सिँघ इक वखाउँदा ए। जिस दा पूरन कीता काम, भगतां दर मंगाउँदा ए। सारे लै के जाओ पैग़ाम, श्री भगवान आप समझाउँदा ए। चरण धूढ़ी कर के जाओ अशनान, सरोवर इक्को इक नुहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप वडयाउँदा ए। जन भगत चरण सरोवर नहाउँदे ने। पुरख अकाल गीत गाउँदे ने। दीन दयाल इक ध्याउँदे ने। इक दूजे दे चलण नाल नाल, सोहणी बणत बणाउँदे ने। सच दवारा वेख धर्मसाल, धर्म निशान उठाउँदे ने। जिस साडी कीती प्रितपाल, सो प्रितपालक वेख वखाउँदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा मंग मंगाउँदे ने। जन भगत पन्ध मुकाया ए। सच दवारे डेरा लाया ए। नर निरँकारा वेख वखाया ए। सति सरूप विच समाया ए। रूप रंग रेख ना कोए रखाया ए। मुछ दाढ़ी केस ना कोए, सीस जगदीश ना कोए मुंडाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा मार्ग इक दरसाया ए। प्रभ साचे मार्ग जावांगे। दीन दयाल तैनूं ध्यावांगे। जन भगतां आख सुणावांगे। धुर दी सच्ची बात प्रगटावांगे। कलयुग वेख अन्धेरी रात, इक्को तेरी ओट तकावांगे। तुध बिन वसे ना कोई पास, नाता जगत जहान छुडावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, रल मिल तेरा हुक्म सुणावांगे। तेरा हुक्म सच जणौंणा ए। लाड़ी मौत आप समझौंणा ए। चित्रगुप्त आप उठौण ए। राए धर्म नैण खुलाउणा ए। तेरा लिख्या लेख वखाउणा ए। अगला पिछला भेत खुलाउणा ए। जिन्हां साहिब सतिगुर करे हेत, तिन्हां नेड़ तुसां कदे ना आउणा ए। पुरख अकाल दी सच्ची खेड, दो जहान भेव किसे ना पाउणा ए। जन भगत पहलों लए भेज, पिच्छे आपणा फेरा पाउणा ए। गुरमुखां अन्दर वड़ के माणे सेज, सच सिँघासण डेरा लाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताउणा ए। कबीर कहे मैं दो जहानां दस्स के जावांगा। ग़ाफ़ल कोई ना रहे, आलस सब दी मेट मिटावांगा। पागल कोई ना कहे, सुरती सुरत सर्ब खुलावांगा। आदल पुरख अकाल इक्को रहे, दूजी अदालत ना कोई वडयावांगा। जो प्रभ दी सरनी ढहे, तिन्हां आपणे नाल रलावांगा। जो प्रभ दी चरणी बहे, तिन्हां भगतां रूप वखावांगा। जो हरि दा भाणा सहे, तिन्हां सब कुछ भेंट चढ़ावांगा। जो हरिसंगत विच कहे, मैं हरिसंगत रूप पुरख अकाल वेख वखावांगा। तिस दा काया माटी बुरज कदे

ना ढहे, राए धर्म ना हथ्थ फड़ावांगा। सो गुरमुख प्रभ दी गोदी बहे, जगत जहान पार करावांगा। ना जन्मे ना होवे लै, आवण जावण गेड़ चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी इक कमावेगा। प्रभ आपणे रंग रंगावेगा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी वेख विखावेगा। कर्म कर्म दा कट के नंग, ओढण भूशण पर्दा इक्को पावेगा। नाता तोड़ भेख पखण्ड, साचा मार्ग इक लगावेगा। लेखा जाण दुहागण रंड, कन्त सुहाग मेल मिलावेगा। जिन्हां गुरमुखां सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नू भगवान गाया छन्द, तिन्हां अन्तिम आपणी जोत मिलावांगा। सचखण्ड दा सच अनन्द, अनन्द इक्को इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सच बहावांगा। कबीर जुलाहा सच जणाउँदा ए। उच्ची कूक आख अलाउँदा ए। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। वेखो मेरा ताणा पेटा साची तन्द, डोर गंढाउँदा ए। खुशी कर के बंद बंद, बंदगी आपणी इक समझाउँदा ए। सच प्रीती चाढ़ चन्द, काया माटी तन रुशनाउँदा ए। सृष्ट सबाई वेख हँ, ब्रह्म आपणा भेव खुलाउँदा ए। शाह पातशाह सूरा सरबँग, साहिब सतिगुर खेल रचाउँदा ए। कलयुग अन्त जन भगतां पूरी करे मंग, बिन मंगयां दात वरताउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डुब्बदे पाहन आप तराउँदा ए। डुब्बदे पाहन तारे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। करे प्रेम बण माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। जन भगतां पूजा करे आप पाठ, पाठशाला गुरमुख काया रिहा बणाईआ। अन्दर वड़ के जोड़े नात, बाहों नज़र किसे ना आईआ। दरस देवे साख्यात, जोती जाता वड वड्याईआ । रातीं सुत्यां जो जाए आख, दिने जागदयां पूर कराईआ। एहो प्रभू दी अगम्मी बात, जिहड़ी समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को मंगदे गए दात, अनभव तेरा नूर नज़री आईआ। मन वासना घर रहे ना नार कमज़ात, गुरमति बैठे डेरा लाईआ। जिध्धर वेखीए खोल्ह ताक, प्रभ तूही नज़री आईआ। बिन तेरे दूजा दिसे ना कोई साथ, साथ सगला अन्त जाण छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ । माण वड्याई जगत नाता, अग्गे कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां मिल्या पुरख बिधाता, तिन्हां सदा सदा सद वज्जदी रहे वधाईआ। पिच्छों सृष्ट सबाई उन्हां दी गाए गाथा, जिन्हां प्रभ दर्शन कीता चाईं चाईआ। मन्दिर मस्जिद ठाकर दुआरे मसीत शिवदुआले टेकण माथा, मस्तक इट्टां नाल रगढ़ाईआ । जे वेखण सब दे ख़ाली हाथा, हथ्थ विच नज़र ना कुछ रखाईआ। जिन्हां उपर पुरख अकाल सतिगुर हो के तुट्ठा, तिन्हां रुठयां लए मिलाईआ। उन्हां राए धर्म ना टंगे पुट्ठा, कुम्भी नरक ना कोए भवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां प्रेम प्रीती भुक्खा,

दूजी तृष्ना तृखा ना कोए रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत उत्तम श्रेष्ट विशेष बणाए सुच्चा, विष्न ब्रहमा शिव गणपति गणेश देवत सुर सीस झुकाईआ।

* ५ पोह २०२० बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फिरोज़पुर *

भगत प्यास भगवन सिक, गुरमुख ध्यान लगाइंदा। दोहां मीत सदा अनडिठ, जगत जुग भेव कोए ना पाइंदा। साहिब सतिगुर गुरमुखां काया मन्दिर वसे विच, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। निरगुण हो के करे हित्त, सरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। करवट लै बदलाए पिट्ठ, सनमुख आपणा दरस कराइंदा। जगत वासना कूड़ी जित, सच प्रीत इक दृढ़ाइंदा। खेले खेल नित नवित्त, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। मेहरवान हो पाए भिक्ख, भिच्छया झोली नाम भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल खिलाइंदा। भगत विचोला शब्द गुरदेव, हरि स्वामी वड वड्याईआ। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल बैठा आसण लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अभेव, भेव रिहा दरसाईआ। साचा रस अमृत मेव, सुख सागर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। भगत प्यार नाम सुगंधी, सति वासना विच टिकाइंदा। दूर दुराडा बण संबंधी, साहिब सतिगुर नाता जोड़ जोड़ाइंदा। कूड़ी वासना कढ्ढ गंदी, अमृत रस रस चखाइंदा। घर वखाए मन मति बुध अन्धी, आत्म परमात्म पर्दा लाहइंदा। राग सुणाए धुर दा छन्दी, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। नाता तोड़ ख़ानाबंदी, महल अटल इक बहाइंदा। लेखा रहे ना भेख पखण्डी, सच सुच्च मेल मिलाइंदा। देवणहारा इक अनन्दी, अनन्द आत्म विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। भगत सज्जण भगवन प्यार, प्रीती पारब्रह्म जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे चार, दो जहानां खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खोल्ह किवाड़, पुरी लोअ पर्दा दए उठाईआ। सन्त सुहेले लभ्भे यार, लख चरासी खोज खुजाईआ। जन्म कर्म दा रोग निवार, संजोग आपणे नाल कराईआ। चोग चुगाए अमृत धार, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। शब्द सुणाए इक धुनकार, अनरागी राग अल्हाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। महल अटल ठांडा दरबार, घर घर विच दए वखाईआ। सेज सुहञ्जणी मीत मुरार, अन्तर आत्म नज़री आईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां मेला इक दुआर, घर सच्चा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला वड वड्याईआ। भगत सुहेला साहिब सुल्ताना, सति सतिवादी हरि

अख्वाइंदा। सति सरूपी बन्ने गाना, मौली तन्द ना कोए वखाइंदा। आत्म अन्तर सच तराना, बिन तुरीआ राग सुणाइंदा। कर प्रकाश कोटन भाना, निर्मल नूरी जोत जगाइंदा। बोध अगाधी इक्को गाणा, बिन रसना जिह्वा सुणाइंदा। निरगुण सरगुण कर परवाना, आप आपणे रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला दया कमाइंदा। भगत सुहेला प्रभ ठाकर स्वामी, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। घट घट वेखे अन्तरजामी, बेपहचान खेल कराईआ। योधा सूरबीर वड सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी लिखे कहाणी, जिस सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोई विरोले पाणी, जिस अमृत जाम प्याईआ। सो गुरमुख गुरसिख इक्को बोले धुर दी बाणी, सच तेरा राग अलाईआ। लेखा चुके चारे खाणी, चौथे जुग मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक वर, श्री भगवान भेव खुलाईआ। भगत भगवान मेला नित्त, जुग जुग खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण धुर दा हित्त, लोकमात वेख वखाइंदा। लेखे ला काया रित, पंज तत आपणी गंढु पुआइंदा। दर दवारयों पाए भिक्ख, भिच्छया आपणी इक वरताइंदा। पूरब लेखा पहलों लिख, अग्गे मार्ग इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेला खेल वखाइंदा। भगत सुहेला साहिब गुणवन्त, गुणकार वड्डी वड्याईआ। लेखा जाण जीव जंत, चारे खाणी वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों बणाए बणत, मेहर नज़र आप उठाईआ। सो गुरमुख होए सन्त, जिस मिले बेपरवाहीआ। तिस दा लेखा लिख ना सके कोई अंक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण दुहाईआ। सो भगत भगवान दा इक्को गाए मंत, मंतव आपणा हल्ल कराईआ। तिस दा लेखा कोई ना जाणे पंडत, शेख़ मुसायक नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। भगत भगवान इक दरवाजा, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। आदि जुगादि ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर मारे वाजां, सोई सुरती शब्द जगाइंदा। भूपत भूप बण राजन राजा, शहिनशाह शाह आप अख्वाइंदा। घर विच घर रच के काजा, गृह गृह आपणा रंग वखाइंदा। सन्त सुहेला फिरे भाजा, पांधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम रखे लाजा, लाजावन्त दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन खेड़ा इक सुहाइंदा। भगत खेड़ा खोल्ह खिड़की, कुण्डा आपणी हथ्थी लाहइंदा। खेल करे साची पिरती, पीआ प्रीतम दया कमाइंदा। टुट्टी जोड़े प्रीत चिरकी, चिरीं विछुंने मेल मिलाइंदा। चरण कँवल इक्को बिरती, मन वासना डेरा ढाइंदा। देवे दरस साचा दरसी, आदर्श आपणा इक वखाइंदा। खेले खेल अर्शी फ़र्शी, लोक परलोक सोभा पाइंदा। जन भगतां देवे नाम निधान बिन अक्खरा पर्ची, साचा मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। श्री

११३ १६

भगवान शब्दी शब्द वड वड्डा चर्ची, चर्चा चार जुग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। पार लँघावणहारा प्रभ एक, अन्तष्करन वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी टेक, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण जिस दा भेख, काया चोला सोभा पाईआ। दो जहान जिस दी खेड, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाईआ। जन भगतां अन्दर जिस दा भेत, राज़ आपणा बैठा छुपाईआ। सो पुरख अकाल करे हेत, दीन दयाल होए सहाईआ। हरिजन मेला अचन अचेत, वार थित ना कोए रखाईआ। नेत्र लोचण भगत भगवान नैण लैण पेख, नैनण आपणा रंग रंगाईआ। दोहां मेला वार एक, दूजी वार ना होए जुदाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे सद रखे साया हेठ, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

* ५ पोह २०२० बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फिरोज़पुर *

नाम खुमारी दिती रंग, शब्द राग शनवाईआ। गुरमुख सेज आत्म पलँघ, महल अटल सुहाईआ। दूई द्वैत भरमां कंध, भाण्डा भरम भंनाईआ। गीत अगम्मी धुर दा छन्द, सच श्लोक समझाईआ। सच दुआरे अगम्मी अनन्द, रस अमृत

मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला सच्चा माहीआ। आत्म धुन नाद शब्द सुर ताल, तलवाड़ा इक्को इक वजाईआ। भाग लगाए पंज तत काया माटी खाल, नाड़ बहत्तर तन रबाब वखाईआ। जोती दीपक दीआ सच प्रकाशी बाल, प्रकाश इक्को इक धराईआ। पवण स्वासी लेखे ला स्वास, पवण पवणां राह जणाईआ। जुग जन्म दी पूरी कर कर आस, करनी करता झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। नाम खुमारी धुर दा रस, हरि सतिगुर आप प्रगटाइंदा। गहर गम्भीर साहिब सुल्तान हो के वस, बेपहचान खेल कराइंदा। वस्त अमोलक दे दे हथ्थ, घर साचा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता ठांडा सीता रस एका धार वहाइंदा। रस धार अंमिउँ अमृत, बूँद स्वांती आप चुआईआ। लेखा छोड़ सोग हरख, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। नाम कसवट्टी गुरमुख परख, सच कुठाली एका पाईआ। कीमत करता पाए लाए ना कोई धड़त, कंडे तराजू तोल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। नाम खुमारी देवे घर एक, गृह मन्दिर खुशी वखाइंदा। पुरख सुल्तान करनहारा बुध विवेक, दुरमति मैल आप धुआइंदा। जन्म जन्म दा लेखा वेख, कर्म कर्म दा भेव मुकाइंदा। सच दुआर वखाए आपणा देस, घर इक्को इक सुहाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। नाम खुमारी काया बंक, टेडी धार ना कोए जणाईआ। सो गुरमुख जाणे धुर दा सन्त, साहिब सतिगुर जिस आपणा भेव खुल्हाईआ। हरि नाम समझाए धुर दा मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। मेल मिलावा नर नरायण कन्त, नार सुहञ्जणी सेज सोभा पाईआ। रंग रंगीला चाढ़े रंग बसन्त, रंगण इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। नाम रंग रंग अमोला, सो सतिगुर आप रंगाईआ। रंगणहारा काया चोला, तन माटी वेख वखाईआ। भेव चुका पर्दा उहला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को नजरी आईआ। नाम संदेस धुर दा ढोला, साचा राग अल्हाईआ। शब्द अगम्मी इक्को सोहला, सो पुरख निरँजण गाईआ। परवरदिगार बण के मौला, आप आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम रंगण इक चढ़ाईआ। नाम रंगण सतिगुर खुमारी, प्रीतीवान इक्को वार जणाइंदा। आत्म परमात्म धुर दी यारी, सो साहिब आपणे नाल निभाइंदा। ख़ालक ख़लक खेल करे न्यारी, ख़ालस गुरमुख आप उठाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण दे सहारी, सहायक नायक सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दर दरवाज़ा खोल्ह बारी, खिड़की ताकी कुण्डा आपे लाहइंदा। दीआ बाती कमलापाती बिन तेल बाती कर उज्यारी, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। जगमग जोत जगे निरँकारी, पवण हुलारा ना कोए लगाइंदा। तूं वेखे विगसे वेखणहारी, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवान दोवें मिल के वसण सच दुआरी, दर घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे घर वसाइंदा। नाम खुमारी भगत सुहेला, भगवन भाउ भगती आपणे लेखे लाईआ। आदि जुगादि इक अकेला, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। आदि विछड़ी अन्तिम मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। शब्दी गुरू नाद धुन चेला, घर मंगलाचार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। नाम खुमारी गहर गम्भीर, सो सतिगुर आप कराइंदा। चोटी चाढ़ फड़ अख़ीर, बेनज़ीर दरस दिखाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट लकीर, अक्षर इक्को नाम समझाइंदा। जगत नाता तोड़ जंज़ीर, शरअ आपणी विच बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच तदबीर, मार्ग इक्को इक लगाइंदा। नाम खुमारी मार्ग एक, एकँकार आप जणाईआ। निरगुण सरगुण लए पेख, निज नेत्र नज़री आईआ। पिता पूत बणे हेत, गोद सुहञ्जणी सोभा पाईआ। रुत्त बसन्ती मौले चेत, पत डाली फुल्ल महकाईआ। भगत भगवान मिल के खेले खेड, वड खिलाड़ी फेरा पाईआ। शब्द संदेसा इक्को भेज, सोई सुरती आप उठाईआ। जोती जलवा नूरी तेज, नर नरायण करे रुशनाईआ। धन्न भाग पारब्रह्म पतिपरमेश्वर घर आत्म परमात्म फूलण सुहाए सुहञ्जणी

सेज, सोभावन्त आपणा आसण लाईआ। तिस साहिब ठाकर अग्गे कोई ना चले पेश, जो पेशतर आपणा हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आदक सर्ब करन आदेस, सारे बैठे सीस निवाईआ। सो स्वामी जन भगतां रिहा वेख, आप आपणा ध्यान लगाईआ। सदा सदा सद रखे साया हेठ, अग्नी तत ना लागे राईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अन्दर वड़ के देवे भेत, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ।

* ५ पोह २०२० बिक्रमी लक्ष्मण सिँघ दे खूह ते पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर *

वेखो खेल नर हरि दा, हिरदे हारदिक दए वधाईआ। निरगुण रूप जोती धरदा, अजूनी रहित वड्याईआ। अचरज खेल अगम्मी करदा, करता पुरख बेपरवाहीआ। आदि जुगादि लेखा जाण चोटी जड़ दा, मध आपणा पर्दा लाहीआ। जुगा जुगन्त श्री भगवन्त जन भगतां कोलों डरदा, भय आपणा आप रखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करदा, करनी आपणी आप प्रगटाईआ। गुरमेज पिच्छे ना लक्ष्मण खड़दा, लाश नज़र कोए ना आईआ। एहो वड्याई जो बेसमझों करदा, कोई समझ सोच सके ना राईआ। सम्मत उन्नी लिख्या लेख कोई ना पड़दा, जो लिख के गया समझाईआ। हरि का मन्त्र बिन हरि किरपा किसे ना फुरदा, फ़ुरने विच सर्ब लोकाईआ। मुर्शद मुरीद होण ना देवे मुर्दा, मुश्किल आप हल्ल कराईआ। जिस वेले जन भगतां बेड़ा वेखे रुढ़दा, फड़ बाहों लए तराईआ। एहो खेल पुरख अकाल सतिगुर दा, सुत्यां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा अट्ठ दस दए समझाईआ। पुरख अकाल तेरा दरबारा, सच सति इक्को नज़री आइंदा। दीन दयाल तेरा पसारा, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा। पुरख अकाल तेरा विहारा, दो जहानां वंड वंडाइंदा। साहिब सुल्तान तेरा सहारा, निरगुण सरगुण ओट तकाइंदा। परम पुरख तेरा प्यारा, प्रीतम भुल्ल कदे ना जाइंदा। नित नवित्त ठांडा दरबारा, इक इकल्ला आप सुहाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़े तैथों यारा, सगला संग तेरा नज़री आइंदा। कोटन कोटि जन्म जग जूए हारा, लेखा लेखे कोई ना पाइंदा। फिर फिर जूनी थक्का वारो वारा, अग्नी गर्भ तत जलाइंदा। सच ना मिल्या कोई दवारा, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। वेस वटाउँदा रिहा पुरख नारा, नारी पुरख कार कमाइंदा। बणदा रिहा जगत वणजारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हट्ट चलाइंदा। बणदा रिहा दरवेश भिखारा, जगत माया मंग मंगाइंदा। गाउँदा रिहा सृष्टी नाअरा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द अलाइंदा। वसाउँदा रिहा घर मिटी इट्टां गारा, सच महल ना कोए सुहाइंदा। वखाउँदा रिहा पुत्रां धीआं नाल इशारा, साचा नाता ना कोए जुड़ाइंदा। जणाउँदा

रिहा आपणा बल विच संसारा, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तजाउँदा रिहा राज भाग वड दरबारा, घर तेरा नज़र कोए ना आइंदा। सेव कमाउँदा रिहा बण चाकर ख़ाक गुआरा, साची मति ना कोए समझाइंदा। लभ्भदा रिहा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, साचे मन्दिर कुण्डा कोई ना लाहइंदा। नाता जोड़दा रिहा अपर अपारा, तेरा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। तेरे दुआरे जगाई अलख, अलख अलखणे तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां करे सदा पक्ख, नित नवित्त वेख वखाईआ। साचा मार्ग एको दस्स, आशक माशूक, इश्क इक्को इक कराईआ। सिफ्त सालाही लिख्त हरूफ़, ब्यान हलफीआ जगत लिखाईआ। आदि जुगादि रहे मसरूफ़, बण सेवक कार कमाईआ। वेख वखाए दिशा कूट, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाईआ। तेरे आस दर, दर्दी दर्द वंडाईआ । इक्को भउ आवे डर, भ्यानक धार वखाईआ। तेरी प्रेम प्रीती अन्दर रिहा मर, मरना तेरी झोली पाईआ। साची रीती जगत धर, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। साची किरपा आप कर, कृपानिध तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणी माण वड्याईआ। दे माण श्री भगवन्त, दर तेरे आस रखाईआ। बलिहारी साहिब साचे कन्त, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ भिखारी दर ठांडे मंगत, भिख्या भिच्छया इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। मेहर नज़र कर वेख खेल आशक माशूक, मश्वरा साडे नाल कराईआ। साडा हक़ रख महफूज़, मुफ़लस हो के रहे जणाईआ। तेरे प्रेम दी सच हदूद, लँघ के वेखीए चाईं चाईंआ। उच्च महल तेरा अरूज, बिन प्रेम प्रीती नज़र किसे ना आईआ। आशक माशूक दोहां दा इक्को मंज़ले मक्सूद, मुकाम इक्को इक समझाईआ। तेरी दुआ तेरा हजारा दरूद, तेरा इस्म आअज़म इक्को वेख वखाईआ। तेरा नाउँ ना होए नेसतो नाबूद, आदि जुगादि तेरी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। परवरदिगार सुण मित्र मीत, तेरी बणत जणाईआ। भगतां नाल करे प्रीत, आप आपणा नाम प्रगटाईआ । तेरा निशाना दस्सीए ठीक, माणस माणस आपणा संग निभाईआ। आशक माशूक दोहां इक तौफ़ीक, तोहफ़ा तेरा नाम आपणी झोली पाईआ। इक दूजे नूं मिल के प्रेम प्यार दी करन हदीस, तेरा कलमा ना कोए पढ़ाईआ। बिन कलम शाही खिचण लीक, लाकीर आपणे अन्तर आत्म लाईआ। एहो प्रीती धुर दी ठीक, जिस नूं कोई वेख सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच अतीत तेरी सरनाईआ। आशक माशूक दोवें कहिण, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। वेख

प्रभू साडा साक सज्जण सैण, संबंधी इक्को नज़री आईआ। नाता तुटा भाई भैण, मात पित ना कोए वड्याईआ। दोवें इक दूजे पिच्छे जगत ताअने कहिण, दुःख दर्द आपणे सिर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, तुध बिन दूजा होए ना कोए सहाईआ। ना कोए सहायक दिसे दूजा, तीजा नज़र कोए ना आईआ। चौथे घर तेरा प्रेम पतीजा, पंचम वज्जे सच वधाईआ। उठ वेख लँघ अन्दर दलीजा, बंद किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। तेरी प्रेम प्रीती अन्दर तन मन भीजा, सीतल धार इक वखाईआ। आशक माशूक दोहां दा इक्को गुलशन इक्को बगीचा, फुल्ल इक्को इक महकाईआ। तुध बिन कोई ना करे साची रीझा, जोड़ी जोड़ ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुण के नाउँ हरि जू, फुल्ल आपणी खुशी जणाईआ। आशक माशूक मेरी कुल्ल, भगत भगवान मिले वड्याईआ। साचे कंडे जाण तुल, तराजू इक्को दए वखाईआ। सच दुआरा जाए खुल्ह, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। लोकमात जगत माया विच ना जाए भुल्ल, जिस प्रेम रीती इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा माशूक आशक, आदि जुगादि आप जणाइंदा। जगत वेखो लग्गी आतश, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। सृष्ट सबाई होई तामस, सति सरूप ना कोए समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को फुल्ल भगत भगवान नज़री आइंदा। प्रेम प्रीती उपज्या फुल्ल, फुलवाड़ी आप महकाईआ। श्री भगवान जन भगतां किहा आदि अन्त इक्को पावां मुल्ल, कीमत दूजे हथ्थ ना कोए रखाईआ। वड्याई देवां साची कुल्ल, कुलवन्ता बण के होवां सहाईआ। आदि जुगादि कदे ना जावां भुल्ल, अभुल्ल आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। आशक माशूक सुण के बोल, तन माटी खुशी मनाईआ। साहिब सतिगुर वसे कोल, दीन दयाल सदा सहाईआ। असीं रहीए मात अडोल, डुल कदे ना जाईआ। प्रेम प्रीती लईए घोल, घोली घोल घुमाईआ। अन्तर अन्तर पड़दे लईए फोल, द्वैत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आशकां इश्क हकीकी मज़ाजी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। इश्क हकीकी दस्से आप, आपणी दया कमाइंदा। सूफ़ी बण के लभ्भो बाप, पड़दा दूई द्वैत चुकाइंदा। सच प्रीती कोई ना समझो पाप, पतित पुनीत आप समझाइंदा। रूह बुत्त दोवें पाक, पाकीजा इक्को घर वखाइंदा। अग्गे लेखा ना कोए हिसाब, लहिणा देणा मूल चुकाइंदा। पूरब कर आप बेबाक, बेहतर आपणी कार कमाइंदा। धुर दी मार अन्दर अवाज़, सच संदेसा इक सुणाइंदा। आशक माशूक मुश्किल उह राज़, बिन रहिबर हथ्थ किसे ना आइंदा। की

११८
१६

होया जे छड्डुया राज, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। अन्दर प्रेम प्रीती पीवो आब, हयाती हयाती विच्चों बदलाइंदा । पर्दा चुक्क इक नक़ाब, नक़ाबपोश निर्दोष आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, प्यार अन्दर रख प्यार, एथे ओथे खेल संसार, दो जहानां कार आप कमाइंदा। दो जहानां कर के वंड, हरि आपणी खेल रचाईआ। प्रेम प्रीती धुर दी गंढ, साचे तन्द बंधाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, मार्ग इक समझाईआ। तूंही तूंही गाउणा छन्द, दूजा राग ना कोए अलाईआ। दोहां विचोला इक बख़्शंद, बख़्शिश आपणी आप कराईआ। जगत धारा वेख कंध, कन्ढा इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया गागर दए वड्याईआ । काया गागर माटी कच्च, लोकमात तत जणाईआ। जिस अन्तर प्रेम प्रीती गई रच, रचना वेख वखाईआ। सो कर के वेखे सच, जिन्हां सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, कन्ढा इक्को इक वखाईआ। आशक बातन बात सुझी, समझ समझ विच्चों उपजाईआ। माशूक रमज़ रखे गुज्झी, जगत जहान ना कोए दरसाईआ। प्रभ दी धार किसे ना बुज्झी, समझ सके कोई ना राईआ। जगत विछोड़े संसार पवाई झुग्गी, पार किनारा इक दरसाईआ।
११६ बिरहों अन्दर सोहणी डुब्बी, नेत्र नीर वहाईआ। कच्चे नाल कच्ची होई बुद्धि, कच्चा तन गई मिटाईआ । महीवाल दूर ११६
१६ दुराडा प्रेम प्रीती अन्दर पावे लुड्डी, खुशीआं हाल सुणाईआ। कवण वेला भाग लग्गे मेरी सुधी, सुध आपणी इक उपाईआ। १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। दे वड्याई हरि करतार, नेत्र अक्ख खुलाइंदा। उठ यार वेख प्यार, दर दीदार वखाइंदा। गुलशन फुल्ल ना कोए बहार, कली कली ना कोए महकाइंदा। पंखड़ी रोवे जारो जार, पत डाली नज़र कोए ना आइंदा। जिस फुल्ल दी मंगे तूं बहार, सो फुल्ल ख़िज़ां रूप वटाइंदा। उच्ची कूक करे पुकार, तूंही तूंही राग अलाइंदा। नाल इशारे ल्या उठाल, बेमिसाल खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। महीवाल वेख खुशनूदी, खुशनुमा नज़र कुछ ना आईआ। सुक्की होई सिर तों डोडी, तन हरा ना कोए कराईआ। मेरी प्रेम प्रीती होई बोडी, सीस चोटी नज़र ना कोए वखाईआ। जिस प्रेम प्यार दी मैं पढ़दा रिहा पोथी, सो वरका वरका दित्ता उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर अन्तर इक आवाज जणाईआ। अन्तर आई इक आवाज, कूक कूक सुणाईआ । उठ वेख आपणा राज, शहिनशाह तेरी रयीअत दए दुहाईआ। जिस दे पिच्छे छड्डुया घर दा काज, सो काज तेरा कर के आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जगत विछोड़ा दे मुकाईआ । सुणी आवाज इक्को

धुन, पंज तत लए अंगड़ाईआ। एह सुरीली सोहणी सुर, दूजी तार ना किसे हिलाईआ। जलधारा वेखां छाण पुण, लहर लहर खोज खुजाईआ। होए सुहञ्जणा वेला मिले हुण, आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। महीवाल अन्दर सोच, रसना कहिण किछ ना पाईआ। इशारा होया एह प्रभ दी मौज, आशक माअशूक दोहां खेल कराईआ। जगत विछोड़े दोहां कोई ना सके पहुंच, प्यार प्यार नाता रिहा छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। वेख विछोड़ा आया वैराग, झुग्गी कन्ढे दए दुहाईआ। जिहदे पिच्छे कीता त्याग, सो मैनूं त्याग पल्ला गया छुडाईआ। जिस दे पिच्छे छड्डया राज, सो रयीअत नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखां बुझया चिराग़, दीपक नूर ना कोए रुशनाईआ। जिस दे हथ्थ फड़ाई आपणी वाग, सो वागां गया भवाईआ। किस नूं मिलां आज, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान खुशी हो के मारी इक आवाज़, धुर संदेस सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव भेद रिहा खुल्हाईआ। आई आवाज़ शब्द तराना, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। महीवाल वेख श्री भगवाना, जो आदि जुगादि संग निभाइंदा। आशक माअशूक दोहां बन्न्हे गाना, आपणा तन्द आपणे हथ्थ उठाइंदा। कदे ना जावे विच मढ़ी मसाणा, जलधार ना कोए रुढ़्हाइंदा। जे वेख्या ते उच्चा टिकाणा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। वेले अन्त देवे बबाणा, महीवाल सोहणी वांग ना मुख भवाइंदा। उठ वेख ना बण अञ्याणा, साहिब सतिगुर दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाइंदा। महीवाल हो चुप्प, आप आपणा रिहा छुपाईआ। जिध्धर वेखां अन्धेरा घुप्प, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरा नाता गया छुट, छुट्टी सर्ब लोकाईआ। सच सुहञ्जणी गई रुत्त, ख़िज़ां बैठी डेरा लाईआ। की मैनूं रिहा पुच्छ, दस्सण वाली गल्ल मेरी समझ विच ना आईआ। मेरा प्यार मेरे नालों गया रुस्स, लभ्भयां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। किरपा करे सति सरूप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर सोहणी रूप, इक्को वार वखाइंदा। एह वी तत माटी काया झूठ, सच नज़र कोए ना आइंदा। चोला वेख पंज भूत, महिबूब प्रेम ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या झुग्गी किनार, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण हो के दे दीदार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। डुब्बण तों पहलों लए तार, फड़ बाहों आप उठाईआ। तेरे पिच्छे आवे तेरा प्यार, भज्जे वाहो दाहीआ। कर चरण कँवल हरि निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सद देवणहारा धुर दा वर, वस्त इक्को झोली पाईआ। महीवाल कहे मेरे मेहरवान, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। मैनूं रूप आया सोहणा सोहणी निशान, निशाना इक्को इक जणाईआ। मरन तों पहलों दे ज्वाल, जीवत मरन ना रूप वटाईआ। फेर मन्नां दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। साहिब सतिगुर हो कृपाल, परम पुरख आप समझाईआ। अन्तिम लेखा चुकावां विच जहान, दीन दुनी दोवें खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। महीवाल उठ कर त्यारी, त्रैभवन धनी आप जणाइंदा। आपे फुल्ल आपणी अन्त क्यारी, तेरी तेरे नाल प्रनाइंदा। आशक माअशूक जगत यारी, भगत धारी भेव खुलाइंदा। दूजी वार निरगुण सरगुण कर के लाए यारी, याराना आपणे नाल रखाइंदा। डुब्बे ना वड़ डूंघी धारी, समुंद सागर चरणां हेठ दबाइंदा। मरन तों पहलों करे ख़बरदारी, बेख़बर ख़बर सुणाइंदा। झुग्गी कन्दे जोत निरँकारी, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा । आशक कहे दस्स कवण वेला, वार थित दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे महीवाल पंज पोह तेरा अज्ज वक्त दुहेला, फेर मेला लए कराईआ। खेल करे गुरु गुर चेला, गोबिन्द आपणी उँगली लाईआ। हरिसंगत सच फुल्लवाड़ी कर के मेला, मिलणी इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। साहिब सतिगुर दया कमाएगा। माणस माणस फेर बणाएगा। जूनी जून ना कोई भवाएगा। आशक आपणा इश्क वखाएगा। माअशूक हो के प्रेम वधाएगा। हक़ हकूक इक्को इक रखाएगा। सोहणा कोमल बण मलूक, जोबन इक्को इक हंढाएगा। काया छड्ड तत कलबूत, तन माटी वेख वखाएगा। घर बण सच महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल वखाएगा। प्रेम प्रीती साची झूझ, नछावर इक्को वार कराएगा। चन्द चढ़े दूज तीज, चौथे आपणा रंग वखाएगा। थित वार जाए सूझ, पंचम पोह मेल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती तोड़ निभाएगा। सच प्रीती तेरा फुल्ल प्रेम, साहिब सतिगुर झोली पाएगा। अन्त चुके तेरे नाल नेम, धोखा दगा ना कोए कमाएगा। जिस ने सेव कमाई उपर हेम, कुण्ट तेरी फोल फुलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाएगा। साचा वादा कर कौल, इकरारनामा दे लिखाईआ। सच तौफ़ीक तेरे कोल, वाहिद तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे रफ़ीक जाणा मौल, तबीब बण के फेरा पाईआ। देणी असीस उपर धौल, जगदीश तेरी सरनाईआ। मेरा धर्म रखणा अडोल, कर्म कांड देणा मिटाईआ । आशक हो के वारी घोल, घोली तेरे उत्तों घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ । देवे वड्याई हरि जू आप, बेपरवाह दया कमाइंदा।

तेरा मेरा जुड़या साक, नाता इक्को वार बंधाइंदा। सदा सुहेला बण के देवां साथ, सगला संग निभाइंदा। पत्तण वेखां तेरा घाट, माही आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी दस्स भगवान, दर तेरे सीस निवाया। तूं पहलों क्यों ना मिल्या आण, सोहणी नाल क्यों प्यार वधाया। जिहड़ी विछोड़ा दे गई विच जहान, सगला संग ना कोए रखाया। मेरे वेंहिदआं रुढ़ गई विच तूफ़ान, तोबा तोबा कर कुरलाया। मैं रोंदा उहदे पिच्छे महान, मेरी मुहब्बत ख़ाक रुलाया। जे जाणां प्रभ तेरा सच ईमान, तुध बिन अक्ख ना कोए तकाया। कर किरपा दे फ़रमाण, सच संदेसा इक सुणाया। जे हैं सच्चा भगवान, क्यों विछोड़ा मेरा पाया। जिस दे पिच्छे मैं रुलदा रिहा बियाबान, झनाब कन्ढे डेरा लाया। उस दा लभ्भे ना कोए निशान, निशानी हथ्थ ना कोए रखाया। श्री भगवान हो मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कर इक वार चरण ध्यान, चरण वेंहदयां सदका नूर इक्को गुल नज़री आया। एह गुल वड्डा बलवान, जिस दा रूप रेख कोई समझ ना सके राया। सुगंधी लै के सुट दए सर्ब जहान, अन्त ख़ाकी ख़ाक मिलाया। कोई ना जाणे इस दे अन्दर की कुछ रख्या आण, जिस दा रूप रेख नज़र किसे ना आया। उह खुशबू जो साहिब सुल्तान, घट घट अन्दर दिती टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। महीवाल दया कमावांगा। निरगुण हो के फेर आवांगा। सरगुण तेरा रूप बणावांगा। प्रेम प्रीती इक समझावांगा। साची रीती मात चलावांगा। माअशूक हकीकी इक वखावांगा। जिस दी सिफ्त होए ना विच हरूफ़ी, सब आरफ़ मूँह दे भार सुटावांगा। उह जोत निरँजण आदि पुरख दी रखे सद उडीकी, उडीकदयां उडीकदयां उडीकदयां कोटन कोटि जुग चौकड़ी बीत बितावांगा। प्रेम प्रीती दा मैनूं शौक, बण शौकीन गोद बहावांगा। तेरी विछड़ के तैनूं कर गई औंत, तूं औंतरा अन्तिम आपणे नाल प्रनावांगा। पिछला रहिण ना देवां खोट, साची चोट नाम लगावांगा। माशूक बणा निर्मल जोत, जोड़ी सोहणी जोड़ जोड़ावांगा। झुग्गी विच बहि के लावें झोक, मौला हो के दरस दिखावांगा। मास कटें ना कोई पोट, छुरी करद ना हथ्थ फड़ावांगा। प्रेम करें ना नाल होंट, अन्दरे अन्दर मेल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार जणावांगा। महीवाल भरे हौका, हाए हाए जणाईआ। वेखो सोहणी दे गई धोखा, हड्डीआं बालण गई जलाईआ। उडीकदयां उडीकदयां मिल्या उह ना मौका, मुकम्मल आपणा पता दए जणाईआ। जिस दे नाल प्रीत लगाई नाल शौंका, सो शौह दरयाए डुब्बी नैं दी धार नज़र ना आईआ। वेखो ख़ाली दिसे कोठा, झुग्गी मारे उच्ची धाईआ। जिस नूं कबाब धरया कढ्ढ के उते पोटा, सो आपणी जड़ रिहा पुटाईआ। रूप नज़र ना आया वड्डा

छोटा, अक्खीआं सार कोए ना पाईआ। जिस दे प्रेम प्यार अन्दर होया बेहोशा, सो होछी मति कर के गई वखाईआ। उसे वेले पुरख अकाल किहा उस दे नाल काहदा रोसा, जिसनूं साहिब सतिगुर धक्का लाईआ। पंज तत काया वेख भाण्डा थोथा, बिन पुरख अकाल साची वस्त ना कोए टिकाईआ। जिथ्थे सोहणी मारया गोता, उथ्थे तेरी धार पंज तत दए रुढ़ाईआ। अन्तिम वार इक्को रख ओटा, प्रभ मेला लैणा मिलाईआ। मिले घर उस जिस घर दादे दुआरे आए पोता, पिता गोबिन्द नज़री आईआ। मेरी झुग्गी विखाउणा मैनूं मौका, मुफ्त मेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त समें रिहा जणाईआ। महीवाल उठ कर किनारा, काया कपड़ दे तजाईआ। वहिंदी धार कर इशारा, सोहणी पिच्छे दित्ता रुढ़ाईआ। इक्को बोल सच जैकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा वेखां खेल दुआरा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मरन तों पहलों दित्ता जिस सहारा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। लोकमात खेल करे प्यारा, प्रेम आपणे नाल रखाईआ। जींवदयां जींवदयां मरन तों करे छुटकारा, आवण जावण फंद कटाईआ। पंज पोह दा उह दिहाढ़ा, दिहाढ़ा फेर दए प्रगटाईआ। महींवाल पहली वार डुब्बा लाड़ा, दूजी वार आपणी गोद बहाईआ। इक फुल्ल दा इक सहारा,
१२३ साहिब सतिगुर फुल्लां सेज हेठ विछाईआ। सेज कहे मैं भगतां उधारा, गुरमुखां मेरी बणत बणाईआ। जो दूर दुराडे लै १२३
के आए विच दुआरा, बण के पांधी राहीआ। छोटे बाले सोलां मग्घर कीता इशारा, हरिसंगत सच समझाईआ। जोती जोत
१६ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। फुल्ल कहिण साडे जागे भाग, कलयुग अन्त मिली वड्याईआ। १६
साडी करते रखी लाज, कीमत आपणे घर जणाईआ। जन भगतां दित्ता दाज, सोहणी गंढु बणाईआ। घर आपणे रखणा सांभ, धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। फुल्ल कहिण साडी आई बहार, पत डाली रही महकाईआ। श्री भगवान भगतां दर दित्ता विखाल, घर गए चाईं चाईंआ। दिवस रैण करदे रहे ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला पोह पंज पुरख अबिनाशी सद्दे विच जहान, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। पिछला लेखा पूरा करे आण, अग्गे भरम भुलेखा दए मिटाईआ। सोहणी सेजा बणे इक महान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत छोटे वड्डे बाले नढ्ढे बुढ्ढे खुशीआं नाल वरताईआ। सारे रल के चरणां उते करीए प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अर्थी उते ना चढ़े गुरमुख बलवान, फ़र्शी ख़ाक सोहणी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिसंगत इक इक इक फुल्ल देणा बरसाईआ। अर्थी कहे मैनूं मिल्या माण, पुरख अकाल दया कमाईआ। भगत सुहेले फुल्ल बरसाण, निंमी निंमी धार वहाईआ। सन्त सुहेले ख़ुशी मनाण, गीत गोबिन्द अलाईआ। धर्म राए होए

हैरान, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। चित्रगुप्त कहे मेरा लेखा मिटया निशान, हिसाब किताब ना कोए वड्याईआ। लाड़ी मौत कहे मैं नार रकान, जोबन मती भज्जां वाहो दाहीआ। जमदूत कहिण सानूं आई हाण, बौहड़ी बौहड़ी रहे सुणाईआ। झुगी किस दी वेखीए आण, कुल्ली कक्ख मिली वड्याईआ। साडी विच ना आया पछाण, पहचान सके ना कोए राईआ। किरपा कीती श्री भगवान, शाह पातशाह हो सहाईआ। जिस घर प्रगट उस घर दिसे विष्नूं भगवान, जन भगतां होए सहाईआ। भगत सुहेले गीत गोबिन्द दा गाण, हाहाकार ना कोए जणाईआ। सयापा करे ना कोई बिरध रकान, नेत्र नैण नीर ना कोए वहाईआ। ख़ाली दिसे भूमी शमशान, अग्नी भेंट ना कोए चढ़ाईआ। दरोही ख़ुदाए दी सारे वेख करन पछाण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नवी खेल कीती शहिनशाह सुल्तान, बलवान आपणा हुक्म वरताईआ। पिछली कीती याद कीती, भुल्ल गया ना बेपरवाहीआ। चलो चलीए एह उहदी नहीं चिट्ठी, जिस चिट्ठी उते लक्ष्मण वेख वखाईआ। चिट्ठी लै के गए मुड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। राए धर्म दस्सया धुर, नेत्र नीर वहाईआ। उथ्थे नहीं साडी लोड़, गुरमुख बैठे डेरा लाईआ। होर पासे दे तोर, चौदां कोस दक्खण दिशा वेख वखाईआ। फड़ के ल्याईए माणस उह ढोर, जो बैठा प्रभू भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। धर्म राए कहे मैं पहलों वेखां आपणी अक्ख,
१२४ प्रभ की की खेल रचाइंदा। जां तक्कया भगतां देवे पिछला हक़, लहिणा देणा झोली पाइंदा। मैं डरदा पिच्छे गया हट, १२४
१६ भय अग्गों नज़री आइंदा। किते गुरमुख मैनूं पा ना लए नथ्थ, क्यों जट्ट बण के चंगे वैहड़े नथ्थ वखाइंदा। जे मैं आवां १६
उहदे हथ्थ, फड़ के हलट अग्गे जुड़ाइंदा। उथ्थे संगत आवे नस्स नस्स, मैनूं पड़ाने विच भजाइंदा। जे मैं जावां थक्क, पिच्छों खिच प्राणी मेरे उते रखाइंदा। सारे कहि दयो एह नहीं उहदा खत, खता मैं आपणी भुल्ल बख़्शाइंदा। उह परम पुरख दा नत्त, जिस दा अन्त कोई ना पाइंदा। जिस दे अन्दर ब्रह्म मत्त, पुरख अकाल इक ध्याइंदा। उहनूं सारे दयो छड्ड, संसा सब दा आप मिटाइंदा। पंज पोह उहदे नहीं सड़ने हड्ड, हड्डीआं बालण ना कोए बणाइंदा। वेखो आशक हो के बैठा अड्ड, माशूक निरगुण जोत बणाइंदा। जोत अकालण सोहणी वांग कदे ना जाए भज्ज, भज्जयां जांदयां आपणे गले लगाइंदा। प्रेम प्रीती दा करा के हज्ज, हुजरा इक दसाइंदा। साची सेजा बहे सज, सज्जण मीत इक्को नज़री आइंदा। उथ्थे कोई ना पोहे अग्नी अग्ग, लग्गी अग्ग आप बुझाइंदा। जिस झुग्गी अन्दर आप बैठे सज, सो झुग्गा चौड़ ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवत जीवत जीवण रंग रंगाइंदा। धर्म कहे धर्म राए एह की होया, साचा भेव दे जणाईआ। उह लक्ष्मण क्यों अज्ज नहीं मोया, जिस दी लिख्त तेरे दूतां तैनूं वखाईआ। फर्श

ख़ाकी उते क्यों नहीं सोया, धरनी धरत डेरा लाईआ। की तेरा हक़ किस ने खोहया, कवण तेरी कीती उलटाईआ। राए धर्म नेत्र हन्झू भर भर रोया, हथ्थ मथ्थे दए दुहाईआ। उस दा प्यो दादा उहो होया, जिस गोबिन्द दिती वड्याईआ। मैं वेखण गया गुरमुखां नूं लै के आए ढोआ, पुरख अकाल खुशीआं नाल भेंट चढ़ाईआ। प्रभ दी किरपा उह नवां नरोआ, ना मरया जन्म विच ना आईआ। जो लक्ष्मण सिँघ अज्ज मरया, सो गुरमेज सिँघ घर पैदा कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एह खेल अचरज करया, आपणी बणत बणाईआ। सुण के बात बातन बात तरतीब, विष्न ब्रह्मा शिव दूरों सुणन कन्न लाईआ। शंकर कहे एह की होया अजीब, मेरी कीती क्यों उलटाईआ। तुसीं क्यों नहीं लँघे उहदी दहिलीज, घर गए वाहो दाहीआ। फड़ के ल्याउणा सी घसीट, तन माटी नाता तुड़ाईआ। भैण भाई साक सज्जण रो के लैंदे पीट, पिट्टणा घर घर पाईआ। क्यों बदलाई मेरी रीत, ख़ाली हथ्थ मुड़ के दयो दुहाईआ। सारे कहिण शंकर जो कहीए सो ठीक, उथ्थे तेरी चले ना कोई चतुराईआ। भोला नाथ कहे मैं ला के वेखां नीझ, लोकमात ध्यान लगाईआ। जां वेख्या प्रभ चरण लग्गी प्रीत, लग्गी प्रीत आशक माशूक इक्को रूप नज़री आईआ। विष्नूं खुशीआं नाल करे तरीफ़, ब्रह्मे रिहा सुणाईआ। उठ ब्रह्मे वेख खेल अनडीठ, श्री भगवान रंग रंगाईआ। साडे वल कर के आपणी पीठ, जन भगतां दए वड्याईआ। अन्दर वड़ गया कुण्डा खोल्ह दहिलीज, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सदा सदा नित नवित्त जुग जुग उहनूं भगतां मिलण दी रीझ, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। ग़रीब निमाणयां घर मंगदा फिरे भीख, शहिनशाह हो के आपणी शरम गंवाईआ। एसे कर के सब नूं लैंदा जीत, अतीत आपणे घर वसाईआ। शंकर कहे हुण मैं उस लक्ष्मण दी रखां उडीक, जो मेरे अग्गों लँघ के सचखण्ड जाए चाईं चाईंआ। विष्नूं कहे शंकर एह खेल बीस बीस, दूआ ज़ीरो ज़ीरो दूआ सिफरा सिफरा ज़ीरो रूप वटाईआ। प्रभ दा किसे ना समझया अलजबरा, सारे अन्त उडा के इक्को एक नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निक्कीआं निक्कीआं देंदे गए ख़बरां, अक्खरां नाल जुड़ाईआ। लेखा लिखदे गए उते पत्थरां, पत्थरां नाल लकीर खिचाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर विछाउँदे गए सथरां, सत्थर आपणा आप बणाईआ। जे पर्दा लाह के नेत्र खोल्ह के वेखण वक्खरा, वक्खरी कार कमाईआ। जे उस दा लभ्भण नखरा, नखरे करदा नज़र किसे ना आईआ। जिद खोरा अड़ीदार बड़ा अथ्थरा, आपणा हुक्म आप मनाईआ। जे कोई प्रेम प्रीती करे बड़ा चल्ले सिध्धा पध्धरा, वल छल छल वल ना कोए रखाईआ। जे कोई कहे मैं उहदा लवां बदला, बदली सब दी लए कराईआ। सब तों वड्डा आदल अदला, अदालत इक्को इक रखाईआ। पीर पैगम्बर कहिण उहदा फ़ाज़ल फ़ज़ला, फजूल वक्त ना कोए लँघाईआ। नानक कबीर चढ़ के वेख्या उपर मंज़ला, महिबूब

इक्को नज़री आईआ। वेख के कहिण बड़ा मनचला, चंचल बुद्धि सब दी रिहा वखाईआ। भगत कहिण नहीं हर दिला, हर दिल अज़ीज़ प्रेम प्रीती विच समाईआ। गुरमुख कहिण नहीं उह फल फुल्ला, जिहड़ा फुल्ल महीवाल प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। जिस पिच्छे लेखे लग्गी भगत कुल्ला, कुलवन्ता होए सहाईआ। सारे कहिण इन्सान पाणी बुलबला, उपजे तरंग तरंग विच समाईआ । श्री भगवान कहे मेरा भगत बड़ा अणमुला, जिस दी कीमत कोए ना पाईआ। जिन्हां दुआरे हरि जू तुला, कंडा गुरमुख धार रखाईआ। उन्हां नाल उहदी सुलाह, जो बैठे ध्यान लगाईआ । किसे हथ्थ ना आया काज़ी मुला, जो सिर ते कुल्ला रहे टिकाईआ। लख चुरासी रखे दुआरा खुल्हा, दरवाजा बंद ना कोए कराईआ। जे कोई दर आए भुल्ला, अभुल्ल लए बख्शाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आशक माअशूक माअशूक आशक हो कदी ना रुला, रुलदयां लए उठाईआ। आशक माअशूक नालों ना जाए विछड़, विछड़यां मेल मिलाईआ। आशक गल लावे भरीआं चिक्कड़, गुरमुख मैल धुआईआ। आशक कदे ना होवे भिट्टड़, सदा सदा सति सरूप समाईआ। आशक माअशूक दा मिटाए फिकर, फिकरा आपणा नाम सुणाईआ। माअशूक आशक दा चित्तर लए चित्र, जिसनूं इष्ट गुरदेव कहि के लोक सुणाईआ। दोवें आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक दूजे दा करन ज़िकर, दूजी कथा कहाणी ना कोए सुणाईआ। भगत भगवान सदा मित्र, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आशक माअशूक मशक मुशक़त मुहब्बत नाल कराईआ। साढे तिन्न मुट्ठी लैणी ख़ाक, खर ख़ालक आप समझाइंदा। दर दरवाजा बंद ताक, जगत अन्धेर जणाइंदा। लक्ष्मण रखे आपणे पास, साची वंड वंडाइंदा। पंज तिन्न कुटम्ब साथ, सगला संग जणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रातीं सुत्यां देवे दात, दिने लेखा फिर लिखाइंदा।

१२६ १६

* ६ पोह २०२० बिक्रमी लक्ष्मण सिँघ दे खूह ते ज़िला जलन्धर *

सच्च दुआर सच्ची धर्मसाल, घर इक्को मिले वड्याईआ। वेख खेल महीवाल, आशक माशूक सारे लैण अंगड़ाईआ। इक दूजे नूं पुच्छण हाल, बिन रसना जिह्वा बोल सुणाईआ। नेत्र खोल्ह वेखो विच जहान, लोकमात ध्यान लगाईआ। करता खेल करे भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण हो के देवे दान, सरगुण झोली आप भराईआ। सच दुआरे देवे माण, मेहर नजर इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रिहा वखाईआ। आशक माशूक करन सालाह, मता मते नाल पकाईआ। वेखो परवरदिगार इक मलाह, जो डुब्बदे बेड़े रिहा तराईआ। जिस नूं

मिलयां रुढ़े ना कोए झना, जलधार ना कोए वहाईआ। थलां विच ना लए कोए कुरला, हौका भरे ना कोए जुदाईआ । वंजली दए ना कोए सुणा, सुर ताल ना कोए मिटाईआ। तन सुक्क के करे ना कोई स्वाह, ख़ाली बुत्त ना कोए वखाईआ । सच हकीकत दए समझा, लाशरीक बेपरवाहीआ। मुहब्बत इक्को दए जुड़ा, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। रहमत आपणी दए कमा, बेनज़ीर दया कमाईआ। सही सलामत लए बचा, साहिब वड्डा वड्ड वड्याईआ। कूड़ी अलामत दए मिटा, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कर सुलाह करन इकट्ठ, अद्धविचकारे मता पकाईआ। अग्गे पिच्छे रहे नट्ठ, राह नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे नालों साढे तिन्न तिन्न हथ्थ बैठे वक्ख, अंगीकार अंग ना कोए लगाईआ। हकीकत विच्चों मिल्या ना हकीकी हक़, हासल हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। हक़ हकीकत रहे फोल, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ । सच वस्त ना किसे कोल, प्रीती प्रीतम नज़र किसे ना आईआ। काया पिच्छे काया आए विरोल, तन पिच्छे तन भस्म कराईआ। अन्तिम हो के आए डावां डोल, सिदक सबूरी मात छुडाईआ। सृष्ट सबाई कोल रह गया बोल, अग्गे साडी हालत वेखण कोए ना पाईआ। लोकमात प्रभ मिल्या ना उपर धौल, अग्गे संग ना कोए रखाईआ। आशक माशूक दोवें मिल के रोण, नेत्र नैण देण दुहाईआ। विच विछोड़े मिले ना सौण, सुहञ्जणी सेज ना कोए वड्याईआ। जगत दुखड़ा मेटे कौण, अगला पन्ध कवण चुकाईआ। ब्रह्मण्ड दे विचे विच भौण, आर पार किनारा सके ना कोए वखाईआ। रल मिल ढोले सारे गौण, पीर पैगम्बरां तेरी ओट तकाईआ। तैनूं सजदा करीए कर कर लम्मी धौण, नेत्र नैण राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। आशक माशूक दोवें तक्कण, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले सज्जण, परवरदिगार होए सहाईआ। दरस दिखाए मूर्त अकाल मदन, मोहणी आपणा रंग प्रगटाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन, सरोवर इक इश्नान जणाईआ। कर किरपा लाए आपणे अंगण, गोदी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी प्रीती पिच्छे रहे पछताईआ। हीर कहे उठ वेख रांझा, नीवें नैण रही समझाईआ । परम पुरख प्रभ एको सांझा, परवरदिगार सच गुसाईआ। लोकमात खेले खेल वरतया स्वांगा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ । जिस दे प्रेम नाम दी वड्डी कांगा, गहर गम्भीर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रांझा कहे सुण नड्डी हीर, मैं सच सच जणाईआ। इस ने लिखी मेरी तकदीर, हुक्म आपणे विच भवाईआ। तेरे प्रेम दी पा जंज़ीर, आपणे नालों तोड़ तुड़ाईआ। जाचक हो के होया दिलगीर, दर तेरे कूक सुणाईआ । दरवेश हो

बणया फकीर, अल्फ़ी तन हंढ्ढाईआ। तेरा जलवा तक्कदा रिहा बेनज़ीर, तेरी सूरत मोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। हीर कहे सुण रांझण मीत, मैं सच संदेसा दयां सुणाईआ । आशक माशूक बण के इक दूजे दा गाया गीत, परवरदिगार ना कोए ध्याईआ। जिस दा कलमा सदा अतीत, शरअ नज़र किसे ना आईआ। जे उस दे बरदे बणदे सानूं दरगाह मिले धाम अनडीठ, घर साचे लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। रांझण कहे सुण हीर सयाल, साहिब सति हथ्थ वड्याईआ। तेरे पिच्छे हो कंगाल, दर दर फेरा पाईआ। वेख मेरा तन मन बेहाल, हाडी चम्म खल्ल रुलाईआ। जन्म जन्म दी घाली घाल, तेरी झोली पाईआ। अग्गे पिच्छे दोज़क बहिश्त दरगाह दिसें तूं दलाल, लासानी सानी नज़र कोए ना आईआ। बिन छुरीउँ कर हलाल, तिक्खी धार करद चलाईआ। आशक इश्क माशूक बहिश्त, दोहां मिल के प्रेमी इष्ट, दृष्ट दृष्ट नाल मिलाईआ। नाता जुड़या विच सृष्ट, अग्गे कोई ना लभ्भी लिख्त, भविक्ख्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। हीर कहे मैं तैनूं सच रही सुणाउँदी, इक्को इक वड्याईआ। अन्दरे अन्दर आपणा पीर रही मनाउँदी, जो पंजां पीरां दए वड्याईआ। तेरा प्यार बणाउँदी रही ढाहुन्दी, ढाह बणा तेरे नाल चलाईआ। वेले अन्त आई पछताउँदी, तेरा रूप नज़र ना आईआ। साची सेज ना सोभा पाउँदी, वंजली राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। रांझा कहे सुण हीर नढ्ढी, सच सच्च दृढ़ाईआ । तेरे प्रेम दी धार बद्धी, बद्धी छुट्टी ना मुश्किल इक्को नज़री आईआ। मैं खाह खाह रोटी अद्धी, जंगल बेले तेरी सेव कमाईआ। तूं प्रेमण इक सच्ची, सोभावन्त नज़री आईआ। मेरी सुरती जिस ने बद्धी, बन्दना आपणी इक जणाईआ। जगत पिच्छों मेरी कम्म किसे ना आई हड्डी, नाड़ी चम्मड़ा गोर बैठी दबाईआ। रूह निमाणी बण वैरागण फिरे भज्जी, पन्ध मुके ना बिन गुसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हीर कहे छड्ड पिछला झेड़ा, आशक माशूकी मुश्किल राह वखाईआ। उठ वेख रांझण प्रभ दा खेड़ा, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। उथ्थे चल के जाए जिहड़ा, तिन्नां प्रीत इक सुहाईआ। जगत जहान ना देवे गेड़ा, अग्गे सके ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। रांझा कहे मैं पुनूं देवां दस्स, सच संदेसा इक जणाईआ। उठ सज्जण मेरे नाल नस्स, भज्ज वाहो दाहीआ। तूं वी आपणा जा के हाल दस्स, क्यों होई अन्त जुदाईआ। डाची वाले चरणी ढट्ठ, थलां पन्ध मुकाईआ। रल मिल करीए इक इकट्ठ, महीवाल दा लभ्भीए सच्चा माहीआ। जिस दी किसे अग्गे हो ना पाई दस्स, इशारयां नाल

सर्ब समझाईआ। सो सच्चे आशकां होया वस, बण माअशूक जोत अकालण रूप वटाईआ। सच प्रीती अन्दर गया फस, जिस दा जंज़ीर नज़र किसे ना आईआ। ग़मी विच आ कदी ना जावे नट्ठ, पिच्छा देवे ना विच लोकाईआ। जद वेखो ते पवे हस्स, खुशीआं रंग रंगाईआ। साचा मार्ग रिहा दस्स, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हीर कहे मैं दस्सां सस्सी भैण, ससीअर काले रही वखाईआ। उठ प्यारी वेख नैण, नेत्र नैण खुल्हाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर थलां विच पाए वैण, नंगी पैरीं पन्ध मुकाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर तन माटी खा गई लाड़ी मौत डैण, चम्म कम्म किसे ना आईआ। जिस दा खेल नज़र ना आया ऐन, ग़ैन ग़म ना कोए वखाईआ। उस दुआरे आशक माअशूक रल के सारे बहिण, दूजी वार ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र रिहा उठाईआ। पुनूं कहे सच दस्स गृह, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। आशक माशूक बण के बहे, मुहब्बत इक्को इक समझाईआ। प्रेम प्रीती ढोला कहे, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। फड़ के तारे डूंग्घी नैं, थल सके ना कोए रुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे कवण धाम वड्याईआ। सस्सी कहे सुण हीर सुहेली, सच सईआ दे समझाईआ। वेखीं आप ना जाईं अकेली, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभ मिलण नूं मैं वी हो गई वेहली, छड्डी प्रीत पराईआ। पुनूं नालों पुनूं मिले बेली, बेलयां विच ना फेर रुलाईआ। मैं उस दी बणां चेली, जिहड़ा चम्म माटी काया ख़ाक आपणी झोली पाईआ। सद वसां धाम नवेली, जिस घर वसे मेरा माहीआ। पुनूं नाल खेल खेली, पुन्नी आस पराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार माण वड्याईआ। हीर कहे रल मिल गावांगे। जा के पिछला हाल सुणावांगे। अगला मार्ग पुच्छ पुछावांगे। पिछली भुल्ल बख़्शावांगे। विछड़े साथी होर नाल मिलावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, चरण कँवल सीस झुकावांगे। पुंनूं कहे मैं दस्सां सब नूं, आशक सोया रहिण कोए ना पाईआ। फड़ उठावां सुत्ता मजनूं, मजलस इक कराईआ। उठ वेख उस इलाही रब्ब नूं, जिस वखत दित्ता पाईआ। आशक माशूक प्यारा सब नूं, दोहां दा सांझा पीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। सस्सी कहे मैं जा के कहिणा, साचा हाल जणाईआ। लैला वेख मेरी भैणां, भेव अभेद खुल्हाईआ। सर्ब स्वामी साचा सैणा, साक इक्को नज़री आईआ। चरण दुआरे उस दे बहिणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पिछला पावे झोली देणा, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। मजनूं कहे मैं की वेखां उह मलूक, जिहड़ा नज़र किसे ना आईआ। जिस मैनूं

मार साड़ दित्ता फूक, अग्नी तत जलाईआ। जे मेरी ओदों सुणदा कूक, हुन्दी ना अन्त जुदाईआ। फड़ बणाउँदा आपणा पूत, पिता रूप वखाईआ। उतर जांदी मेरी भूख, तृष्ना रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर देवे माण वड्याईआ। लैला कहे की वेखां लहर, नेत्र नैण उठाईआ। परवरदिगार खेल गम्भीर गहर, समझ कोए ना पाईआ। विछोड़े विच वरतया इक्को कहर, रो रो दयां दुहाईआ। जे किरपा कर के करदा मेहर, आशक माशूक आपणे नाल लैंदा मिलाईआ। क्यों खेड़ा उजड़दा शहर, शहिनशाह धक्का लाईआ। क्यों कोई अक्ख तक्कदा ऐर गैर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दी छेड़ां छेड़, आप बैठे मुख लुकाईआ। तत नाल तत करदा रहे भेड़, सार नाल सार ना किसे समझाईआ। हुक्मे अन्दर लोकमात सारे आपणे चालिउँ दए उखेड़, पैंतड़ा रहिण कोए ना पाईआ। एहो प्रभू दा हेर फेर, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। मैं सुण के होई सस्सी तैथों दलेर, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। आशक माअशूक सारे रल, वहीर इक बणाया ए। जिस ने किरपा कीती विच जल, सो थल वेख वखाया ए। जिस ने जंगल बेले घल्ले झल्ल, सो आपणी झलक जणाया ए। जिस ने हड्ड मास नाड़ी सुखाई खल्लृ, सो ख़ालक वेखण आया ए। चलो दुआरा लईए मल्ल, घर साचा वेख वखाया ए। साडी प्रीती दा की कुछ देवे फल, राह तक्कदयां तक्कदयां वेला वक्त लँघाया ए। जे कोई लग्गा बद्धा देवे पिच्छे ना आएयों टल, अग्गे हो हो सीस झुकाया ए। उस दा खेल बड़ा अछल्ल, वल छल आपणी कार कमाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया ए। सारे उठ के होए त्यार, आपणा राह तकाईआ। इश्क मज़ाजी वाज दिती मार, तकड़ा हो के अग्गों सुणाईआ। इथों लँघे ना कोए ललकार, अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। उह तुहाड्डा काहदा यार, जो जंगलां विच रुलाईआ। जगत प्रीती प्रेम प्यार, ख़ुशीआं नाल हंढाईआ। दूजे पासिउँ उठया इश्क हकीकी ख़बरदार, सच ख़बर रिहा सुणाईआ। उह सूफीआं नाल करे प्यार, दुखियां दर्द गंवाईआ। उस दी लँघो दरगाह जा सच दरबार, घर इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। इश्क कहे मज़ाज़ी वेखो मेरा मज़ा, मजलस मेरे नाल कराईआ। सच पुछो अग्गे कोई ना देवे सजा, एथे रंग रलीआं माणो चाईं चाईंआ। इश्क हकीकी कहे दो जहान उस दे हुक्मे अन्दर बद्धा, सके ना कोए छुडाईआ। सच दरबार इक्को सजा, जिस घर वसे नूर अलाहीआ। वेखो मैं वी उठ के तुहाड्डे नाल भज्जा, अग्गे हो के जावां चाईं चाईंआ। मूँह दे भार जा के डिग्गा, मस्तक टिक्का चरण धूढ़ लगाईआ। जो उस दुआरे होवे निक्का, निक्कयों वड्डा दए कराईआ। जे तुहाड्डा प्रेम

प्यार हो गया फिका, रस अमृत दए भराईआ। हीर रांझे सस्सी पुनूं लेला मजनूं जे वेखो तुहाढुयां सारयां दा इक्को पिता, पुरख अकाल नज़री आईआ। जिस बिन दरगाह साची अज्ज तक्क घर किसे ना डिठा, सारे रो रो मारो धाईआ। एसे कर के मरदयां मरदयां सब नूं शब्द सरूपी दे के गया चिट्ठा, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग तुहाढे नाम दा चले किस्सा, जगत कहाणी कहि सुणाईआ। कलयुग अन्तिम आप आ के तुहाढ्ढा कढ्ढे सिट्टा, चोटी गोदी वेख वखाईआ। उनां चिर लेखा रहे चिट्टा, चिट्टे उते काला लेख लिख के पिछला लेख ना कोए मुकाईआ। जिस ने आशक माअशूक प्यार दित्ता, सो प्यार विच्चों आपणा प्यार लभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा सब दा पूर कराईआ। पुरख अकाल लग्गा दरबार, सच दुआरा सोभा पाइंदा। भगत सुहेले सज्जण यार, गुरमुख गुर गुर कोल बहाइंदा। आशक माशूक रल मिल करन प्यार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। पिच्छों आ के फ़रहाद पुकार, नाअरा इक्को इक सुणाइंदा। सच संदेसा देवां सांझे यार, सच कहाणी आख सुणाइंदा। की होया जे रांझा हीर पिच्छे मज्झी आया चार, जंगल बेले आपणी कार कमाइंदा। की होया जे सोहणी डुब्बी जलधार, महीवाल आपणा अंग कटाइंदा। की होया पुनूं पिच्छे ससी होई ख्वार, डाची वाला बेमुहारा नज़र कोए ना आइंदा। श्री भगवान मेरे वल कर ख्याल, मैं आपणी बीती आप जणाइंदा।
१३१ नेत्र वेख मैं कट दित्ते पहाड़, नाल पत्थरां टक्कर लगाइंदा। जे ओस वेले मेरा अन्दरों पत्थर देंदों पाड़, नाता तेरे नाल १३१
१६ जुड़ाइंदा। तेरे पिच्छे शीरी लभ्भदा मेरा यार, कवण दुआरे सोभा पाइंदा। लोकमात ना हुन्दा ख्वार, ठोकर जगत ना कोए १६
लगाइंदा। एसे कर के मैं पिच्छों आया तेरे दुआर, इक इकल्ला फेरा पाइंदा। नाल शीरी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। आशकां माशूकां मैं सभनां दस्सां कूक पुकार, साचा सोहला इक सुणाइंदा। रल मिल सारे मंगो घर सच्चे दुआर, दर दरवाजा इक्को नज़री आइंदा। जिस प्रेम प्रीती अन्दर जगत रुले संसार, सो लेखा तेरी झोली पाइंदा। कर किरपा ठाकर आपणा दे दीदार, दरस तेरा इक्को सोभा पाइंदा। किरपा करे परवरदिगार, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। आशक माअशूक सारे बोलण, कूक कूक सुणाईआ। फ़रहाद सुण फ़रयाद प्रभ तोले आपणे तोलण, तराजू आपणा नाम उठाईआ। प्रेम प्यारे कदी ना डोलण, अडोल अडुल रखाईआ। असीं सिख्या प्यार पंज तत उत्तों पंज तत घोली घोल घोलण, निरगुण नूर नज़र किसे ना आईआ। जे माशूक बणे विच वचोलण, आशक लेखा दए मुकाईआ। ओन्हां दा नज़री आए इक्को ओढण, वस्त्र सेजा इक्को इक सुहाईआ। ओथे दिसे विछोड़ा बीमारी ना कोई रोगण, सोग चिन्ता ग़म ना कोए प्रगटाईआ। प्रेम प्रीती भोग

भोगण, दूजी धार ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि रहिण संजोगण, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस देवे माण वड्याईआ। फ़रहाद कहे सारे जोड़ो हथ्थ, नेत्र नैणां ध्यान लगाईआ। उच्ची कूक कहो पुरख समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जे रांझण हीर मिलाई अक्ख, पुंनूं ससी गंढु पवाईआ। जे सोहणी महीवाल कीता इकट्ठ, फ़रहाद शीरी दित्ते दर भवाईआ। बिन तेरे कोई ना निभया साथ, संग नज़र कोए ना आईआ। वेख साडे सब दे ख़ाली हथ्थ, मैंहदी रंग ना कोए रंगाईआ। काया माटी तन तत प्यार लोकमात गए छड्ड, अग्गे दुआरा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, तेरे घर मिले वड्याईआ। आशक माअशूक रल रल झुकदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बिन तेरे पैंडे किते ना मुकदे, फिर फिर थक्के पांधी राहीआ। कोटन कोटि मजनूं सुकदे, सुकयां तेरी सार कोए ना पाईआ। कोटन कोटि सोहणी महीवाल डुब्बदे, जलधारा वैंहदी धार वहाईआ। कोटन कोटि सस्सी पुनूं थलां विच राह पुछदे, भज्जण वाहो दाहीआ। कोटन कोटि शीरीं फ़रहाद पहाड़ां पुटदे, दिवस रैण कार कमाईआ। कोटन कोटि आशक माशूक जगत ख्वारी रुलदे, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी प्रीती करदे जन भगत सच दुआरा तेरा पुछदे, दूजे दर कोई ना जाईआ। ओनां पैंडे आपे मुकदे, मंज़ल तेरा दवारा नज़री आईआ । सोवत जागत बहिंदे उठदे, सद खुशीआं मंगल गीत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वड्याईआ। आशक कहिण प्रभ वेख हाल, हालत सारे रहे जणाईआ। भगतां पिच्छे हो दयाल, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। साडे उते तरस ना कीता आण, फड़ बाहों ना गले लगाईआ। बेशक सृष्टी साडा गाउँदी गान, रसना जिह्वा राग अलाईआ। जलधारा रुढ़ गए विच तूफ़ान, तेरा सदका तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जगत वासना साबत रख के गए ईमान, नार कन्त रूप ना कोए वटाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बणे रहे महमान, मुहब्बत मुहब्बत नाल जुड़ाईआ। काम शरअ ना कोए शैतान, शरीअत रूप ना कोए वखाईआ। इक दूजे दा इष्ट मन्नदे रहे भगवान, दृष्ट आपणी नाल मिलाईआ। दोज़ख़ बहिश्त वेंहदे रहे विच जहान, मेल विछोड़ा दोवें रूप वखाईआ। अन्तिम मंगदे गए दान, सगला संग इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दे माण वड्याईआ। आशक माअशूक मिल मिल कैहन्दे, कहि कहि रहे जणाईआ। रूह बुत्त इकट्ठे बहिंदे, घर इक्को डेरा लाईआ। इक दूजे दा भार सहिंदे, भेव सके कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। श्री भगवान कहे सुणो साचा इश्क, साहिब सतिगुर दए जणाईआ। जिनां मस्तक लाए आप तिलक, तिलकणबाजी

विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सो भगत स्वर्ग धक्का लावण बहिश्त, हूर बहिश्ती ठोकर नाल ठुकराईआ। परम पुरख दा इक्को इष्ट, श्री भगवान ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सुण के बात आया इश्क मिज़ाज़ी, होका दे के रिहा सुणाईआ। मैं वी वड्डा मुल्लां काज़ी, शरअ रीत बणाईआ। मैं वी बरदा दर निमाज़ी, बैठा सीस झुकाईआ। मैं वी पांधी सच्चा हाजी, हज़रत तेरा दर्शन पाईआ। क्यों प्रेम प्रीती जगत साजी, साजना आपणी नाल उपाईआ। इस दे विच क्यों राज़ रख्या बदमाशी, महिशे हशर तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। एह खेल दिसे सारा फ़ाशी, फ़रिश्ते कूकण कूक कूक रहे सुणाईआ। बिन तेरी किरपा थल्ले थल्ले तैंथों सारे हो जाण बागी, मुहब्बत पंज तत रखाईआ। कवण जाणे किथे वसदी तेरी अबादी, कवण दवारा सोभा पाईआ। कवण वखाणे किस दरगाह तेरी हुन्दी शादी, शादयाना वज्जे चाईं चाईंआ। सृष्टी फस गई विच इश्क मिज़ाज़ी, तन रबाबी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। बल धार इश्क हकीकी, होका दे सुणाईआ। प्रभ दा हाल सदा तारीखी, तहरीरी दए वड्याईआ। जिन्हां बणे आप नज़दीकी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। परवरदिगार बण रफ़ीकी, रफ़ाकत आपणे नाल रखाईआ। पिछली दस्सां की कहाणी बीती, आशक माअशूक दोवें दित्ते रुलाईआ। अगली खेल वेख अनडिठी, निरगुण निरवैर रिहा कराईआ। जन भगतां नाल लगा आपणी प्रीती, मुहब्बत इक्को इक समझाईआ। काया कर के ठांडी सीती, अग्नी तत रिहा गंवाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीती, मुश्किल साची हल्ल कराईआ। सोहणी ला इक बग़ीची, पत डाली रिहा महकाईआ। जन भगतां प्रेम प्यार दी मदि इक्को वार पीती, नशा उतर कदे ना जाईआ। ओथे ना इश्क मज़ाज़ी ना हकीकी, हक़ सब दा झोली पाईआ। एहो खेल वड पुरख तौफीकी, तौफीक इक्को नज़री आईआ। नौजवान ना ज़ईफ़ी, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आशक माशूक बोलण छन्द, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मज़ाज़ी हकीकी तुहाड्डी वेखी हद्द, हद्द हदूद फेरा पाईआ। नाता जोड़ पिच्छे जाओ छड्ड, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। जिन्ना चिर मिले ना पुरख समरथ, फड़ बाहों पार ना कोए कराईआ। नेत्र लोचण रोवण अथ्थ, अक्ख नैण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दाता वड वड्याईआ। आशक माअशूक कहिण प्रभ आए तेरे दवारे, दर इक्को नज़री आईआ। जगत जहान वेखे लारे, कूड़ी क्रिया पड़दा लाहीआ। असीं ना व्याए ना कुँवारे, तेरे हुक्म सहारे वक्त लँघाईआ। इक दूजे नूं प्रेम करदे रहे नाल इशारे, ऐशो इशर्त नेड़ कोए ना आईआ। तैथों डरदे डरदे सेजे चढ़े ना बण के लाड़े, लाड़ी रूप ना कोए वखाईआ।

तुध बिन फड़ के बाहों ना कोई उतारे उत्तों खारे, गानां सगन ना कोए बंधाईआ। सिर उत्तों माता पाणी कोई ना वारे, गीत सोहला राग ना कोए सुणाईआ। तक्कदयां तक्कदयां वेंहदयां वेंहदयां साडे आ गए उह दिहाढ़े, जिन्हां बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देणी माण वड्याईआ। आशक माशूक दोवें अग्गे करन हथ्थ, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। चरण कँवल गए ढट्ठ, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। प्यार अन्दर बैठे रहे कर के हठ, धीरज धीर तेरा नाम रखाईआ। सति सन्तोखी रख्या जत, कूड़ी करी ना कोए कमाईआ। वासना अन्दर ना उबली रत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, तुध बिन घर नज़र कोए ना आईआ। आशक माशूक कहिण प्रभ बिन तेरे झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। सब ने छड्डे आपणे खेड़े, अग्गे खेड़ा ना कोए वखाईआ। अद्ध विचकार देंदे रहे गेड़े, वासना रूपी पंख उडारी लाईआ। कवण वेला प्रभ करे आपणी मेहरे, मेहरवान होए सहाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल साडे पैंडे आ गए नेड़े, दर मुकया पांधी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सरनाईआ। आशक माअशूक मारन हा, हौका लै के देण जणाईआ। वेखे जल थल अस्गाह, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। साचा मिल्या ना कोए मलाह, बेड़ा पार ना कोए तराईआ। असीं समझ ना सके आपणा कोई गुनाह, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। तुध बिन मदद करे ना कोई खुदा, ख़ाली दिसे सर्ब लोकाईआ। तेरी फ़ितरत अन्दर होए फ़िदा, फ़ैसला तेरे हथ्थ फड़ाईआ। साडा नाता लै जुड़ा, प्रीती आपणे नाल कराईआ। बिन तेरे आशक माशूक दोहां दा कोई ना करे नकाह, पड़दा नक़ाब कोई सके ना मुख उठाईआ। मेहरवान कर किरपा साचा पल्लू दे फड़ा, फड़या पल्लू छुट्ट कदे ना जाईआ। तेरे दवारे होवे इक ब्याह, सदा वज्जदी रहे वधाईआ। हुण तक्क बेघरे फिरदे रहे बेगुनाह, दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। धन्न भाग तूं मिल्या आ, भगतां पिच्छे फेरा पाईआ। फड़ के बाहों लै तरा, तारनहार तेरी सरनाईआ। शाह पातशाह सच्चे शहिनशाह, शान तेरी आलीशान, शानां विच्चों नज़री आईआ। हुण समझे रल मिल तेरा इष्ट तेरा ईमान, बिन तेरे मुकाम दर बहिण कोए ना पाईआ। जीवण विच नहीं कीता हराम, सही सलामत ईमान तेरी झोली पाईआ। अग्गे बरदे तेरे गुलाम, ठाकर अबिनाशी तेरी सेव कमाईआ। किरपा कर श्री भगवान, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। आशक माशूक सुणो सच करो ध्यान, हरि करता आख सुणाईआ। मेरा भगतां उते ईमान, ईमान मेरा भगत नज़री आईआ। जिंन्हां पिच्छे बण माशूक फिरा विच बियाबान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोज खुजाईआ। जिन्हां

१३५ १३५

१६ १६

पिच्छे निरगुण रूप धरया आण, सरगुण नाता जगत तुड़ाईआ। ओनां नाल सारे मिलो आण, आप आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या देवे भगवान, हरि करता आख सुणाइंदा। भगतां संग मिल के गाओ गाण, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। आशक माशूक वेखो भगत भगवान, भगवान भगतां संग प्रीत निभाइंदा। सोहँ रूप बणो पावो माण, अभिमान नज़र कोए ना आइंदा। नाता छुटे दो जहान, पिछला जहान पिच्छे पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप समझाइंदा। जन भगतां रल के बैठणा आण, आलमगीर रिहा जणाईआ। सजदा सीस करो सलाम, निमस्कार इक्को इक जणाईआ। साचा मन्नो इक ईमान, अमल आमल दए कराईआ। कामल पुरख मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। दीदा दानिस्ता वेखो श्री भगवान, फ़रिस्ता रूप ना कोए वखाईआ। स्वर्ग बहिश्तां दोहां चुके आण, दरगाह साची देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग निभाईआ। आशक माअशूक कहिण इक आवाज़, साचा राग अलाईआ । साडा कलमा सच निमाज़, रहीम रहमान इक खुदाईआ। जन भगतां मिल के गाईए गाण, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। किरपा करे श्री भगवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरगाह साची देवे माण, चरण कँवल बख्शे इक सरनाईआ। रल मिल सुख साचा लईए आण, दुःख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। आशक माशूक आए चौंह जुगीं, जुग चौकड़ी रही जस गाईआ। एह रमज़ किसे ना सुझी, बिन परमेश्वर पार ना कोए लँघाईआ। इक दूजे दे प्रेम पिच्छे पाउँदे रहे लुडी, खुशीआं नाच नचाईआ। ख्वाहिशां नाल असमाने चढ़ाउँदे रहे गुड्डी, पतंग टुट्टी डोर हथ्थ किसे ना आईआ। एस रमज़ नूं समझ सकी कोई ना बुद्धि, मति मतिवाली राज़ समझ सकी ना राईआ। जिस दी प्रीती सब नालों उच्ची, आशक माशूकां इशारे रही दृढ़ाईआ। उह प्रीती सब नालों सुची, सतिगुर हथ्थ रखाईआ । जगत प्रीती दर दर दी कुत्ती, बण सुआन घर घर फिरे भज्जे वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर किरपा होवे लुच्ची, लुच्ची गुंडयां नाल रलाईआ। बिन भगत तोड़ प्रीत किसे ना पुजी, सिल पूजस मर मर थक्की मात लोकाईआ। कबीर किहा एह गल्ल नहीं गुज्झी, पर्दा दित्ता खुलाईआ। नानक किहा मेरी निरगुण नाल रुची, दर घर इक्को नज़री आईआ। जिस दवारे आशक माशूक अक्ख खोल सुरती विच कोई ना रुड्डी, रुड्ड आपणा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। आशक माअशूक कहिण खेल अपारा, वज्जदी वेखी वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ निरगुण धारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सब नूं देंदा रिहा लारा, आप आपणा मुख भवाईआ। आप वी

बणया रहे कुआरा, लाड़ी लड़ ना कोए बंधाईआ। प्रभू दा माँ प्यो बण के किसे ना पाया छुहारा, सगन हथ्थ ना कोए टिकाईआ। ब्रह्मण नाई मुख किसे ना लाया छुहारा, झोली मिट्ठे ना कोए रुझाईआ। सौहरे पेईए नगर खेड़ा दस्सया ना कोई घर उज्यारा, नौ पुकार ना कोए सुणाईआ। आशक माअशूक वेख खेल दोवें करन निमस्कारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। खेल विचार दस्से प्रभ मीत, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आशक माअशूक वेखो रीत, रीतीवान इक समझाइंदा। जिन्हां गाया तूं मेरा मैं तेरा गीत, सो आपणे अंग लगाइंदा। तिस प्रीत प्रीती अन्दर कोई ना दिसे झीत, राह खहिड़ा नजर कोए ना आइंदा। जे तुहानूं नकाह कराउण दी रीझ, रीझ नकल असल रूप वटाइंदा। सारे अग्गे आओ लँघो दहलीज, जन भगतां विच बहाइंदा। हुण मंगो कर के झोली भीख, चरण धूढ़ी तुहाड्डी झोली पाइंदा। जिस दी महीवाल रखी उडीक, सो माही सच्चा आइंदा। झुग्गी बहि करे बख्शीश, बख्शिश आपणी आप वरताइंदा। कलमा पढ़ो इक हदीस, हज़रत आप समझाइंदा। सच प्रीती अन्दर जाओ पतीज, पतिपरमेश्वर आप कमाइंदा। पिछली कीती दा उपज्या बीज, पत डाली फुल्ल आप महकाइंदा। फुल्ल विच्चों खुशबू वेखो कर के नीझ, जो हरिसंगत हथ्थ फड़ाइंदा। जिस दी आशक माशूक सारे करदे रहे उडीक, बिन दस्सयां भेव कोए ना पाइंदा। सो भाउँदी भाउँदी आ गई तारीख, जिस दी तवारीख ना कोए लिखाइंदा। साहिब सतिगुर मिल्या मीत, मतलब सब दे हल्ल कराइंदा। सच प्यार दी गंढु देवे पीच, पीची गंढु ना कोए खुलाइंदा। मज़ाज़ी हकीकी दोवें शरीक, शिरकत सब दी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कमाइंदा। आ गए नेड़े बैठे ढुक्क, नैण नैण शरमाईआ। इक दूजे नूं रहे पुच्छ, आशक माशूक मता पकाईआ। केहड़ा ढोला केहड़ी तुक, केहड़ा नाम सलाहीआ। केहड़ा दुआर दिसे सुच्च, मन्दिर कवण कवण वड्याईआ। कवण बैठा रिहा लुक्क, कवण पर्दा रिहा खुल्हाईआ। कवण प्रेम प्रीती साडी लुट्ट, जंगल जूहां विच भवाईआ। कवण वहिंदी धार देवे सुट्ट, कच्चे घड़े तर पार मिलण कोए ना आईआ। कवण रांझण जाए रुठ, हीर सयाल दए दुहाईआ। कवण पुंनूं पुच्छां रही पुछ, राह दस्सो जांदे राहीआ। कवण मजनूं गया सुक्क, पिंजर तन ख़ाक रलाईआ। कवण फ़रिहाद पहाड़ रिहा कुट्ट, शीरी सार कोए ना आईआ। कवण सब नूं रिहा पुच्छ, बेपरवाह फेरा पाईआ। कोलों भगत कहिण नेत्र खोल्ह के वेखो मुख, साख्यात नजरी आईआ। जिस मेटणा तुहाड्डा दुःख, पिछला विछोड़ा दए कटाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। आशक माअशूक खोल्ही अक्ख, नेत्र नैण नैण निहालया। नजरी आया पुरख समरथ, दाता

दर्दी दीन दयालया। चरण कँवल सारे गए ढट्ठ, नमो नमो करन निमस्कारया। साडे लेखे ला रत्त, रंग रंगीले परवरदिगारया। साडा पूरा कर दे हक़, हक़ हकीकत दे वणजारया। साडा खेड़ा होया भट्ठ, तुध बिन महल नज़र कोए ना आ रिहा। मेहरवान हो के वट्ट करवट, दोए जोड़ सर्ब पुकारया। दूई द्वैती मेट फट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक तेरी ओट रखा ल्या। आशक माअशूक नेत्र रोण, नैणां नीर वहाईआ। हन्झूआं हार इक परोण, लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। प्रभ स्वामी चरण धोण, दर साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर सच्चे कर कुड़माईआ। श्री भगवान साहिब सति ठाकर, हरि करता दया कमाइंदा। जुग जन्म दे विछड़यां देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जगत किनारा पार सागर, नईआ नौका नाम इक चढ़ाइंदा। वणज कराए बण सौदागर, साचा हट्ट वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर हथ्थ रख करतार, करनी आपणी दए जणाईआ। भगतां मिल करो प्यार, रीती इक्को इक दरसाईआ। तुहाड्डे विच्चों महीवाल ल्या उठाल, माही आपणे रंग रंगाईआ। उन्हां पिच्छे सारे देवे तार, तारी इक्को वार लगाईआ। जे माशूकां कायम रख्या कुआर, आशकां नाता दए जुड़ाईआ। विचोला बण के सिरजणहार, साचा सगन लए मनाईआ। सौहरे पेईए दोहां करे विहार, नैण नाई रूप वटाईआ। वटणा मले आप करतार, अमृत धारा सच इश्नान कराईआ। प्रेम प्रीती फुलकारी देवे उपर लाल, सालू इक्को इक वखाईआ। दयालू होए आप करतार, सीस पटका दए बंधाईआ। मींढी गुंदे अपर अपार, चूंडी सीस सोभा पाईआ। साचे लाड़े कर शृंगार, नाम सोटी हथ्थ टिकाईआ। साची सखी दे प्यार, वस्त्र भूशन इक्को रंग रंगाईआ। प्रेम प्रीती गहिणा कर त्यार, सच शृंगार दए सुहाईआ। नेत्र नैणां कज्जला धार, तिक्खी धार दए बंधाईआ। दन्द दन्दासा अपर अपार, रंग गुलाला लाल चढ़ाईआ। जोबन डलकां लए मार, सूरज चन्द नूर शरमाईआ। नक्क नथ्थ सुहाग पाए आण, साहिब सतिगुर हो सहाईआ। सीस सेहरा बन्ने दस्तार, लड़ी लड़ी नाल गुंदाईआ। साची घोड़ी देवे चाढ़, साहिब सज्जण बेपरवाहीआ। आदि शक्ति अग्गों वाग फड़े आण, भैण भईआ नाता जोड़ वखाईआ। लक्ष्मी सुरमा पाए आण, सोहणा वेला वक्त सुहाईआ। आशक माशूक दोवें जाण कुरबाण, कल करता काज रचाईआ। चौथे जुग ब्याह होया आण, बेनकाह रहिण कोए ना पाईआ। एह भगतां विच्चों मिल्या दान, मिल संगतां ख़ुशी मनाईआ। इक इक फुल्ल ख़ुशी नाल पंज पोह सारे बरसाण, जिस फुल्लां सेज आशक माशूक दित्ते बहाईआ। करया खेल श्री भगवान, पिछला लहिणा रिहा चुकाईआ। जन भगतो तुहाड्डे पिच्छे दरगाह दित्ता माण, सचखण्ड सरनाईआ। अज्ज तक्क रुलदे रहे विच जहान, हीर रांझा सस्सी पुन्नूं सोहणी महीवाल शीरी

फ़रिहाद लेला मजनूं बिन सतिगुर कम्म किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो कृपाल बणाए लाल, लालां विच रलाईआ। जिस दा किसे कोलों लभ्भयां लभ्भे ना हाल, पुछयां पुच्छ ना कोए समझाईआ। लेखा लिख लिख थक्के होए कंगाल, शहिनशाह शाह समझ कोए ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाल हो मेहरवान, आशक माशूक प्रेम मुहब्बत करदे लए संभाल, जिन्हां साबत सूरत आपणी आप वखाईआ। तिन्हां टुट्टण ना दित्ता माण, कलाम कलमा इक पढ़ाईआ। उन्हां दा जन भगतां भरया जमानत दा अष्टाम, बनाम लेखा समझ कोए ना पाईआ। जिस वेले मिल्या वड अमाम, अमल सब दे वेख वखाईआ। सोलां मग्घर सब नूं दित्ता पैग़ाम, फुल्ल भगतां हत्थ फड़ाईआ। आपणा विगड़न ना देवे नज़ाम, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़िंदगी विच्चों जीवन दित्ता दान, बंदगी विच्चों बंदा ल्या प्रगटाईआ। लक्ष्मण लाश होण ना दिती हराम, हरास्ता आपणे विच रखाईआ। बरख़ासत कीता शंकर दा लिख्या कलाम, राए धर्म दित्ता भजाईआ। किरपा कर उठा जवान, जोबन आपणे रंग रंगाईआ। पूरे सतिगुर दा एहो वड्डा काम, डुब्बदयां लए तराईआ। जींवदयां शब्द बणाए निशान, लेखा धुरदरगाह लिखाईआ। मरयां पिच्छों गाथा गाए जहान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। जिन्हां साहिब मिल्या भगवान, तिन्हां ऐब रहिण कोए ना पाईआ। भगत नाइब सदा अख्वाण, गायब बैठे डेरा लाईआ। लोकमात प्रभ होए आप मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उन्हां दा कारज़ कीता आण, जो आशक माशूक बैठे बेमकान रहे ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, आदि जुगादि दया कमाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, पुरी लोअ अकाश प्रकाश खोज खुजाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे आण, निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। गुरमुख गुरसिख सज्जण कर परवान, प्रेम प्रीती झोली पाइंदा। नाता तोड़ पंज तत शैतान, शरअ शरीअत इक समझाइंदा। नौ दवारे कूड़ दुकान, गृह मन्दिर इक समझाइंदा। वस्त अमोलक पीण खाण, अमृत रस निझर झिरना आप झिराइंदा। अनहद शब्द नाद सच्ची धुन्कान, धुन आत्मक राग अलाइंदा। आत्म सेजा कर प्रधान, सच सिँघासण इक सुहाइंदा। सुरती शब्दी मेला करे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर पूरा गुर शब्द दयाल, दीना नाथ होए सहाईआ। सन्त सुहेले बैठे लाल, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। सति सरूपी बण दलाल, साचा वणज इक कराईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे घाल, कर्म कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। भरम भरम दा तोड़ जंजाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन आपणे रंग नाम रंगाईआ। सतिगुर पूरा देवे नाम धन, धन ख़ज़ीना इक वरताइंदा।

साचा राग सुणाए बिन सरवण कन्न, अनाद अनादी नाद वजाइंदा । वसेरा कराए बिन छप्परी छन्न, महल अटल इक सुहाइंदा। तन वासना बन्ने मन, मन का मणका आप भवाइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरे अन्न, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। माणस जन्म बेड़ा बन्न, साहिब सतिगुर आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस आपणे घर वसाइंदा। मन वासना ना सके दौड़, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। अबिनाशी करता जिस दवारे जाए बौहड़, श्री भगवान होए सहाईआ। तन काया माटी रस मिट्ठा करे कौड़, विख रूप रहिण ना पाईआ। घर विच घर लगाए पौड़, साचा डण्डा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, तिस बंक दुआरी खोल्ह वखाईआ। मन वासना करे चूर, ममता मोह ना कोए जणाईआ। सर्ब कला प्रभ हो भरपूर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया करे दूर, नाता सच सुच्च जुड़ाईआ। आत्म अन्तर इक सरूर, सच प्रीती चरण कँवल बंधाईआ । नज़र आए जो वसे दूर, नेरन नेरा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा सर, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। मन वासना देवे बंध, बन्धन आपणा नाम रखाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। जोत निरँजण चाढ़ चन्द, घर दीपक इक टिकाइंदा। आत्म परमात्म साचा छन्द, वाहवा गुरू राग अलाइंदा। शब्दी सुरती जोड़ पाए गंढ, पवण स्वास स्वास स्वासां विच्चों मेल मिलाइंदा। निज आत्म निज घर निज गृह देवे इक अनन्द, जिस दर मन का मोह ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। मन मनुआ उठ ना सके नस्स, पांधी बण ना पन्ध मुकाईआ। साहिब सतिगुर करे वस, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इशारे नाल देवे दस्स, सैनत नाल समझाईआ। मेरयां गुरमुखां वल तक्क ना वेखणा अक्ख, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। साचे भगतां चरणी डिगणा ढठ्ठ, माण मोह अभिमान मिटाईआ। जिन्हां सन्त स्वामी देवे गुरमति, गुरमुख रूप दए बणाईआ। ओथे मन वासना ना होए प्रगट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहारा नाम वर, घर मन्दिर काया गढ़ बंक दुआर मन वासना देवे मार, शब्दी जोत करे प्यार, ओट इक्को इक सुहाईआ। मन वासना बन्ने मालक, जिस हथ्थ वड्डी वड्याईआ। परम पुरख प्रभ साचा ख़ालक, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ । निरगुण सरगुण बणे सालस, सच सालसी मात कमाईआ। अन्दर वड़ के काया महल्ले चढ़ के सच सिँघासण बैठ करे अदालत, अदली इक्को नज़री आईआ। उस दुआरे मन करे ना कोई बगावत, जिस घर सतिगुर सच्चा वसे माहीआ। मेहरवान गुरदेव करनहारा सखावत, बख़्शिश आपणी आप वरताईआ।

१४० १४०

गुरमुख आत्म परमात्म अमानत, आप आपणे हथ्थ वखाईआ। बिन पूरे सतिगुर एथे ओथे देवे ना कोई ज़मानत, बरीख़ाना ना कोए जणाईआ। सो गुरमुख गुरसिख सदा सही सलामत, जिन्हां सतिगुर मिल्या फड़ बाहों लए तराईआ। मेहरवान मेहर नज़र नज़र करे अक्ख, आखर आपणी दया कमाइंदा। सब दा देवणहारा हक़, हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। जिन्हां गुरसिखां पए शक़, तिन्हां शिकवा शकूक सर्ब चुकाइंदा। किरपा कर पुरख समरथ, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। शब्द अगम्मी मार सट्ट, सोई सुरती आप उठाइंदा। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला दिवस रैण अट्ठे पहर हरि का नाम लए रट, रट्टा मन का रहिण कोए ना पाइंदा। घर घर विच वेखे खुल्ल्या हट्ट, सतिगुर वणजारा इक्को वस्त नाम अमोलक आप वरताइंदा। जिन्हां मिले ब्रह्म मति, तिन्हां पारब्रह्म आपणा रंग वखाइंदा। बिन गुरमुखां किसे हथ्थ ना आई गुरमति, मनमति विच सर्ब जगत कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां खोल्हे तीजी अक्ख, तिन्हां ततव तत समझाइंदा। किरपा अन्दर सतिगुर ठाकर, नित नवित्त दया कमाईआ। वेखणहारा गहर गम्भीर डूंग्घा सागर, काया कवरी फोल फुलाईआ। दर आयां दर देवे आदर, आदर्श आपणा दए वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। जो आत्म परमात्म बणे सौदागर, तिस सौदा बिन कीमत दए कराईआ। साहिब सतिगुर योधा सूरबीर वड बहादर, तेग धनी नाम दाता सुखमनी इक उपजाईआ। लेखा जाणे साढे तिन्न हथ्थ काया माटी गागर, घर घर विच पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे धुर दा वर, तिस लेखा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर साचे चरण धूढ़, सरोवर वड वड्याईआ। जिस विच नहातयां चतुर सुघड़ बणन मूढ़, मूर्ख मूढ़े आपणे रंग रंगाईआ। जगत नाता तुटे कूड़ो कूड़, सच सुच्च मेला सहिज सुभाईआ। अन्तर आत्म वज्जे नाद धुन तूर, तुरीआ बैठी नैण शरमाईआ। सति सरोवर विच्चों सति दए सरूर, ख़ुमारी उतर कदे ना जाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे भरपूर, ख़ाली सके ना कोए कराईआ। गुरमुखो गुरसिखो सतिगुर सर नहाउणा जरूर, बिन नातयां दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। ओथे माण अभिमान ना रहे ग़रूर, गुरबत नज़र कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इस सरोवर नूं करदे गए मशहूर, भगत सन्त रसना ढोला राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सर इक्को इक वड्याईआ। साचा सर साहिब सुल्तान, पुरख अकाल इक उपाइंदा। जिस अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन इश्नान, सीतल धारा इक चुआइंदा। जिस दर लोकमात बिना पूरे सतिगुर दिसे ना कोए निशान, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। गुरमुख विरले सन्त सुहेले सच सरोवर वड़ के नहाण, नहा नहा धुर दा शुकर

मनाइंदा। मान सरोवर जिस दवारयों इक्को बूँद मिली पाण, जिस दी सोभा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान सर्ब दृढ़ाइंदा । सो सर उत्तम श्रेष्ट विशेष जहान, बिन गुरमुखां विष्न ब्रह्मा शिव नहावण कोए ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद रखे आपणे देस, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर आपणे आप टकाइंदा। मनुआ मन वस करे शब्दी डोर, तन्द आपणा नाम बंधाईआ। नाता तोड़े पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। कर प्रकाश अन्धघोर, घर घर विच करे रुशनाईआ। लिव छुट्टकी फेर देवे जोड़, मात गर्भ दा लेखा पूर कराईआ। सतिगुर आपणे नाल लए तोर, फड़ बाहों अग्गे अग्गे लगाईआ। अग्गे सके कोई ना होड़, रुकावट रहिण कोए ना पाईआ। ओथे मन दा चले कोई ना ज़ोर, जिथ्थे ज़ाबर सतिगुर नज़री आईआ। साहिब सतिगुर दा मन्त्र फोर, फुरने सारे बंद कराईआ। गुरमुख फड़ के चाढ़े घोड़, शब्दी घोड़ा इक दृढ़ाईआ। जिस वेले घोड़े दा वज्जे पौड़, मन उठ उठ भज्जे पिच्छे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां सदा जाए बौहड़, पौड़ी आपणा डण्डा लाईआ। मन मनुआ की करे विचारा, मनसा कम्म किसे ना आईआ। जिस सतिगुर मिल्या सिरजणहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम पदार्थ दए भण्डारा, अतोट अतुट वरताईआ। दाता दानी इक वरतारा, दयावान होए सहाईआ। जिस वेले गुरमुख सतिगुर मिल बोले जैकारा, वाहवा गुरू तेरी वड्याईआ। वाहिगुरू फ़तिह आदि जगादि जुग चौकड़ी विच संसारा, डंका इक्को नाम वजाईआ। जिस नूं साध सन्त बिन लभ्भयां करदे गए निमस्कारा, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सो करता पुरख खेल करे करतारा, करनहार सच्चा शहिनशाहीआ । तिस अग्गे मन दा चले ना कोई चारा, मन मति बुध आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन फड़ाए आपणा लड़, तिस पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मन दी होए उस वेले निशा, जिस वेले गुरसिख निछावर आपणा आप कराईआ। कथा कहाणी नहीं एह किसा, धुर दी बात सुणाईआ। सज्जण मित्र दा नहीं एह चिट्ठा, पूरे गुर वड्याईआ । सतिगुर गुरसिख आप डिठ्ठा, आप गुरमुख लए मिलाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर कर हित्ता, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा बणके माता पिता, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। जे कोई कहे सतिगुरू वड्डा कि निक्का, वेखण विच कदे ना आईआ। उस गुरसिख दिसा, जिस आप दए बुझाईआ। बाकी सब वल सुत्ता दे कर पिठ्ठा, करवट सके ना कोई बदलाईआ। मन मनुआ गुरसिख गुर किरपा जित्ता, जीवण जुगत सतिगुर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे राह चलाईआ। तन मन ना होवे दूर, आत्म परमात्म नेरन नेर नज़री आईआ। किरपा करे हाज़र हज़ूर, हरि करता बेपरवाहीआ। जन्म

जन्म दे कर मुआफ कसूर, पिछले लेखे उते कलम दए फिराईआ। अग्गे लेखा लेखे लाए ज़रूर, अन्त कन्त श्री भगवन्त हो सहाईआ। आवण जावण लख चुरासी नाता तोड़ कूड़, हरिसंगत संग रखाईआ। जिस दा पैंडा दस्सदे दूर, सो नेरन नेरा होए सहाईआ। आपणे घर लै के जाए ज़रूर, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। अन्त मिलाए आपणे नूर, जोती जोत विच समाईआ। सन्त सतिगुर भण्डारा सदा भरपूर, देंदयां तोट ना कोए रखाईआ। जिस दा नानक निरगुण बन्नृ के गया दस्तूर, कबीर किहा हो मजबूर, बिन सतिगुर पूरे एथे ओथे होए ना कोए सहाईआ।

१४२

१६

* ७ पोह २०२० बिक्रमी गरदावर सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर *

जीव कहे जग तेरी आस, जुगत तेरी वड्याईआ। ईश कहे मैं तेरा साथ, आदि जुगादि सदा सुखदाईआ। जीव कहे मैं तेरा नात, नाता सच्चा जोड़ जुड़ाईआ। ईश कहे मैं तेरा बाप, पिता पुरख अख्वाईआ। जीव कहे मैं तेरा पाठ, पूजा इक समझाईआ। ईश कहे मैं तेरा नाथ, अनाथां सदा सहाईआ। जीव कहे मेरी खोलृ आख, नेत्र नैण रुशनाईआ। ईश कहे मैं मेटां अन्धेरी रात, साचा नूर इक चमकाईआ। जीव कहे मैं पढ़ां गाथ, तेरा नाम ध्याईआ। ईश कहे मेरी इक जमात, दूजी पट्टी ना कोए बणाईआ। दोहां मिल के पूरी होवे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जीव कहे मैं हां की, की मेरी बणत बणाईआ। ईश कहे तूं मेरी नींह, तुध बिन मेरा महल ना कोए सुहाईआ। जीव कहे की मैं तेरा जीअ, सच सुच्च दृढ़ाईआ। ईश कहे तूं मेरा बी, तुध बिन बूटा फल फुल्ल ना कोए लहराईआ। जीव कहे मैं तेरा पुत्तर धीअ, पिता तूंही नज़री आईआ। ईश कहे मैं तेरा तूं मेरा दोहां दी साची सीं, सीआं जगत वंड ना कोए वंडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आपे की, करनी आपणी आप प्रगटाईआ। जीव कहे दस्स मेरा मूल, कवण बिध बणत बणाईआ। ईस कहे तूं ना भूल, अभुल्ल दए समझाईआ। सच प्रीती दा सरगुण फूल, निरगुण ल्या उपजाईआ। प्रेम प्यार अन्दर झूला रिहा झूल, झलक लोकमात दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव दए समझाईआ। ईश कहे सुण जीव जन, जन जननी तेरी जणाईआ। जिस उपाया त्रै पंज तन, नौ दर राह वखाईआ। जिस सुणाया राग कन्न, सुर ताल वजाईआ। जिस वसाया गृह मन, बुध मति वड्याईआ। सो साहिब बेड़ा रिहा बन्न, जीव तेरा जगदीश आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सुण जीव हरि सच बिवहार, बिवहारी दया कमाइंदा।

जीव जीव सर्ब संसार, जीवण हथ्थ किसे ना आइंदा। जीवण विच्चों मिले निरँकार, निराकार आपणा मेल मिलाइंदा। सो जीव उतरे पार, जिस ईश गले लगाइंदा। जीव कहे मेरे सिरजणहार, तेरे भेव कोए ना पाइंदा। ईस कहे मेरा खेल अपार, साची करनी आप समझाइंदा। जन भगतां देवां इक अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरण कँवल दे सहार, सहारा इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाइंदा। जीव सुण साहिब धुन राग, घर सच्चा रिहा जणाईआ। ईश खेल वेख ब्रह्माद, तेरा प्रेम वधाईआ। गृह मन्दिर देवे दाद, बंक दुआर सुहाईआ। दस्स के करे सच्चा काज, हस्स के मेल मिलाईआ। जीवां विच्चों जीव देवे साथ, जीव जीवां विच्चों उपाईआ। ईश रूप पुरख अबिनाश, अबिनाशी कार कमाईआ। ईश जीव जीव ईश सारे गौंदे गए गाथ, गा गा जगत सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जीव जन भगतां देवे साथ, ईश ईश्वर इष्ट आपणा इक समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बण विचोला आप, साचा मेल मिलाईआ। ईश जीव करे मिलाप, जीव ईश दए वड्याईआ। एह खेल प्रभ दे हाथ, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। कलयुग अन्त बण के साथ, सज्जण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जगत अञ्याणा, श्री भगवान धुर दा स्याणा, धुर दी कार कमाईआ।

* ७ पोह २०२० बिक्रमी संसार सिँघ दे गृह डुविडा रिहाणा ज़िला हुश्यिापुर *

सो पुरख निरँजण साहिब प्रभ एक, इक इकल्ला वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अभेद, भेव सके ना कोए जणाईआ। एकँकार वसे साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण रूप रंग ना कोई रेख, जोती जाता डगमगाईआ। श्री भगवान नर नरेश, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। अबिनाशी करता रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा जाणे आपे भेत, दूजे सार किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर हो के खेले खेल, अजूनी रहित बेपरवाहीआ। सुत दुलारा शब्दी भेज, थिर घर साचा आप सुहाईआ। सति सरूप सुहञ्जणी सेज, सति सतिवादी आप हंढ्राईआ। जोती जलवा धुर दा तेज, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी हरि करतार, आदि पुरख आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, नर निरँकार वेस वटाइंदा। महल अटल उच्चे मनार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, शाह पातशाह हुक्म वरताइंदा। सुत दुलारा कर

के ख़बरदार, थिर घर आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। साची खेल श्री भगवान, हरि करता आप रचाईआ। जिस दा करे ना कोए ब्यान, लेखा सके ना कोए समझाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जिस दा करे ना कोई ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए मिलाईआ। जिस दा खेल बेमहान, हरि ख़ालक आप वखाईआ। सुत योधा कर बलवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर घर देवे इक्को माण, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। सच प्रीत श्री भगवान, हरि करता आप समझाईआ। वस्त अमोलक दे के दान, सति सतिवादी झोली आप भराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, शाकर आपणे नाल कराईआ। बिन अक्खरां दे ज्ञान, निरअक्खर दए समझाईआ। बिन अन्दर मन्दिर मकान, बिन छप्पर छन्न छुहाईआ। बिन सूरज चन्द भान, बिन रवि ससि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई साहिब गुणवन्त, हरि करता आप जणाइंदा। खेल खिलाए आदि अन्त, जुगा जुगन्त धार बंधाइंदा। धुरदरगाही इक्को मंत, बोध अगाधा आप पढ़ाइंदा। सच मिलावा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। सति सतिवादी बण के पंडत, पारब्रह्म प्रभ आपणी विद्या इक उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप समझाइंदा। शब्द सुत सुण साचे बाल, हरि सतिगुर आप जणाईआ। थिर घर तेरा धर्मसाल, देवणहार प्रभू इक्को इक नज़री आईआ। सचखण्ड मेरा जलवा नूर जलाल, ज़हूर इक्को इक प्रगटाईआ। आदि अनादी इक्को सच्चा लाल, लालन तोहे दित्ता बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे नाल, बण सेवक सेव कमाईआ। सच कुठाली लए डाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। विष्न भरया रंग अतीत, हरि करता आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल अनडीठ, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। आदि जुगादी धुर दी रीत, सति सतिवादी आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण करन प्रीत, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव पुरख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। आदि करया खेल महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, रजो तमो सतो वंड वंडाईआ। पंज तत खेल महान, हरि करता कार कमाईआ। बण विचोला श्री भगवान, साचा नाता दए जुड़ाईआ। धुर दा लेखा धुर फ़रमान, धुर दी धार आप उपजाईआ। लख चुरासी दे के दान, ब्रह्मा झोली आप भराईआ। शंकर दे इक ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे इक्को हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म सच संदेसा, आदि पुरख आप उपाया। सेवा ला ब्रह्मा विष्न शिव नर नरेशा, धुर दा राग इक अल्लाया। नज़री

आए सच्चा नेता, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे हेता, हितकारी भुल्ल कदे ना जाया। सचखण्ड दवारे साचे बैठा, सच सिँघासण सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीत इक दरसाया। साची रीत दस्से प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी धुर दा जाप, निरगुण निरवैर आप समझाईआ। नाता जोड़ पिता बाप, पूत सपूत गोद उठाईआ। दोहां नज़री आए इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव थापण थाप, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपणा धुर दा जाप, सोहँ सति सरूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुण के जाप, घर घर विच खुशी मनाईआ। पारब्रह्म तेरा सिमरन पाठ, पूजा इक्को नज़री आईआ। दरगाह साची मिली दात, पुरी लोअ रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा गाईए गाथ, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। प्रेम प्रीती वेखीए हाट, तन तेरी भेंट चढ़ाईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरी ज़ात, तूं पिता पुरख सहिज सुखदाईआ। तूं साहिब सुल्तान पाकी पाक, परवरदिगार तेरी शरनाईआ। जो साहिब दयाल दित्ता आख, सच सच्च सच सुणाईआ। तेरा कहिणा गया भाख, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सच दस्स पुरख अबिनाश, दोए जोड़ पए सरनाईआ। कवण जुग तेरी रखीए आस, आपणा मेला लएं मिलाईआ। निरगुण निरगुण तेरी बात, सरगुण समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दस्से निरँकार, आदि आपणी धार समझाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। हुक्मे अन्दर आवण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। हुक्मे अन्दर शब्द नाद धुनकार, शास्त्र सिमरत वेद भेव खुल्हाईआ। हुक्मे अन्दर भगतां देवे भगती दान, भगवन आपणी कार कमाईआ। हुक्मे अन्दर सन्त कर परवान, सच संदेसा दए समझाईआ। हुक्मे अन्दर गुरमुखां देवे दान, आत्म परमात्म झोली आप भराईआ। हुक्मे अन्दर गुरसिखां प्रीती निभे नाल, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। हुक्मे अन्दर सब नूं खाए काल, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आप जणाईआ। आदि पुरख आप समझाउँदा ए। विष्नूं एका कार लगाउँदा ए। ब्रह्मे आपणा बंध वखाउँदा ए। शंकर हथ्थ त्रिसूल उठाउँदा ए। त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाउँदा ए। पंज तत गंढु पवाउँदा ए। लख चुरासी घाड़त घड़ वखाउँदा ए। चारे खाणी वंड वंडाउँदा ए। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सच समग्री नाल मिलाउँदा ए। चारे बाणी राग अलाउँदा ए। परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को नाद वजाउँदा ए। ब्रह्मावेता सुत पढ़ाउँदा ए। चारे मुख आप खुलाउँदा ए। धुर संदेस राग अलाउँदा ए। शास्त्र सिमरत वंड वंडाउँदा ए। गुर अवतार

राह चलाउँदा ए। पीर पैगम्बर हुक्म वरताउँदा ए। गीता ज्ञान आप प्रगटाउँदा ए। अञ्जील कुराना मसला हक़ सुणाउँदा ए। सच तौफ़ीक खुदाए इक्को हथ्थ रखाउँदा ए। लाशरीक वेख वखाउँदा ए। दूर दुराडा हो नज़दीक, निरगुण सरगुण धार चलाउँदा ए। नबी रसूलां दे प्रीत, प्रीतीवान प्रीत जुड़ाउँदा ए। गुर गुर खेल सदा अणडीठ, अणडिठड़ी कार कमाउँदा ए। करवट लै बदले पीठ, सनमुख आपणा मुख वखाउँदा ए। निरगुण सरगुण गावे गीत, सोहँ ढोला राग जणाउँदा ए। आत्म परमात्म सच्ची प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाउँदा ए। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंकां विच समाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव इक्को हुक्म समझाउँदा ए। साचा हुक्म आप जणाउँदा ए। अगला भेव आप खुल्हाउँदा ए। देवी देव नाल रलाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडण वंड झोली पाउँदा ए। तेई अवतारां दे दे गंढु, लोकमात हुक्म सुणाउँदा ए। अठारां भगत पा ठंड, अमृत धार सीतल इक वहाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद चाढ़ चन्द, नूरी जलवा नूर रुशनाउँदा ए। नानक गोबिन्द होवे संग, निरगुण सरगुण कार कमाउँदा ए। बोध अगाधा धुर दा छन्द, खाणी बाणी नाल रलाउँदा ए। दो जहान शब्द मृदंग, अनहद साचा ताल वजाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपे लँघ, गृह गृह आपणा आसण लाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव सब दी पूरी करे मंग, आसा तृष्ना मेट मिटाउँदा ए। जिस वेले नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जाए लँघ, तिस वेले निरगुण जोती जामा पाउँदा ए। सति सिँघासण सति पलँघ, धुर दी धर्म सेज हंढ्ढाउँदा ए। जन भगतां लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाउँदा ए। भाण्डा भरम ढाह कंध, दूई द्वैत मेट मिटाउँदा ए। सुरत सुआणी होए ना रंड, हरि शब्दी कन्त मिलाउँदा ए। सति प्रकाश चाढ़ चन्द, सूरज चन्द नैण शरमाउँदा ए। जुग चौकड़ी मेट के पन्ध, पांधी बण के आपे आउँदा ए। सन्त सुहेले पाए ठंड, अग्नी तत मिटाउँदा ए। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पार कराउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक रखाउँदा ए। सच प्रीती प्रभू जणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आख सुणाउँदा ए। देवत सुर नाल रलाउँदा ए। गुर अवतारां भेव खुल्हाउँदा ए। पीर पैगम्बरां वेख वखाउँदा ए। दो जहानां रच सुअम्बर, लख चुरासी नार कन्त रूप वटाउँदा ए। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड उच्चे टिल्ले मन्दिरां, डूंग्घी कन्दर फोल फुलाउँदा ए। लेखा जाणे सब दे अन्दरां, घट घट अन्दर आपणा आसण लाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप उठाउँदा ए। विष्न ब्रह्मे शिव आप जणाया ए। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाया ए। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वंड वंडाया ए। निरगुण सरगुण राह समझाया ए। धुर दा शब्द राग नाद सुणाया ए। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाया ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर धुर संदेसा

राग अलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक दरसाया ए। साचा राह इक दरसावांगा। दो जहानां मार्ग पावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म वरतावांगा। लख चुरासी खेल खिलावांगा। गुर अवतार बणा के दासी, सिर सिर आपणा हुक्म मनावांगा। रास पा मण्डल रासी, गोपी काहन नचावांगा। आपणा नाउँ रख पुरख अबिनाशी, अगम्मी कार कमावांगा। जुग चौकड़ी बीते जगत प्रभाती, संध्या इक्को वार वखावांगा। जन भगतां दे के अमृत बूँद सुआंती, सांतक सति सति करावांगा। लख चुरासी विच्चों सुत्तयां फड़ उठावां राती, जागत सोवत आपणा रंग रंगावांगा। प्रेम प्यार दी दे के पाती, शब्द संदेसा इक सुणावांगा। उत्तम कर के सब तों जाति, अन्तिम आपणे नाल मिलावांगा। दोज़ख़ बहिश्त स्वर्ग पार करा के घाटी, सचखण्ड दुआर बैठावांगा। जिथ्थे जोत जगे ललाटी, नूरो नूर नूर रुशनावांगा। मेल मिलावां कमलापाती, परम पुरख इक्को नज़री आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला वक्त सुहावांगा। साचा वेला वक्त सुहाएगा। प्रभ आपणी खेल रचाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंग मंगाएगा। दर बरदा सीस झुकाएगा। चरण कँवल ध्यान लगाएगा। धरत धवल खेल खिलाएगा। अवल्ल नूर इक्को नज़री आएगा। ज़ाहर ज़हूर वेस वटाएगा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च इक समझाएगा। चतुर सुघड़ बणा मूढ़, गुरमुख गुरसिख आपणे रंग रंगाएगा। जिन्हां देवे धुर दी धूढ़, दुरमति मैल धो वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक चलाएगा। साचा राह प्रभू चलावेगा। कल अन्तिम वेखण आवेगा। जुग चौकड़ी वास्ता पावेगा। गुर अवतार ओट तकावेगा। पीर पैगम्बर सीस निवावेगा। भगत सन्त नैण नीर वहा सर्ब कुरलावेगा। सुरत सुआणी विछड़ी रोवे कवण वेला मिले कन्त, दुहागण सुहागण रूप बणावेगा। जन भगतां काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, रंग इक्को इक वखावेगा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, कलयुग अन्तिम आपणा फेरा पावेगा। कलयुग अन्त प्रभू प्रभ आएगा। निहकलंक नाउँ रखाएगा। नाम डंक शब्द वजाएगा। राउ रंक सर्ब उठाएगा। दुआर बंक इक्को सोभा पाएगा। लख चुरासी जीव जंत पर्दा उहला आप मुकाएगा। अगली महिमा दस्से अगणत, पिछला लेखा पूर कराएगा। गुरमुख आप उठा सन्त, सतिगुर सज्जण इक्को नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार वरन अठारां बरन बख्शणहारा सच्ची सरन, सच प्रीती इक्को इक लगाएगा। सच प्रीती देवे भगत, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग वेला वेखे वक्त, बीस बीसा वड वड्याईआ। निरगुण हो के आवे परत, सरगुण रूप ना कोए रखाईआ। चार जुग दा पिछला लेखा कढ्ढे फ़र्क, वही ख़ाता फोल फुलाईआ। नानक

गोबिन्द जिस दी ला के गया शर्त, कल कल्की वेस वटाईआ। बांकी चाल निराली मटक, जोती जाता बेपरवाहीआ। दो जहानां अद्धविचकार ना जावे अटक, राह विच रोक सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह करे खेल मौला, बेनज़ीर दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पूरा करे कौला, कीता इकरार धुरदरगाहीआ। प्रगट होया उपर धौला, धरनी धरत धवल सुहाईआ। आदि जुगादि रहे अडोला, डुल कदे ना जाईआ। जन भगतां अन्तर जाए मौला, निरगुण निरगुण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई पुरख अकाल, हरि करता दया कमाइंदा । लख चरासी विच्चों गुरमुख भाल, गुरसिख आपणे नाल मिलाइंदा। पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। शब्द सरूपी बण दयाल, सतिगुर साचा संग निभाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण प्रीती इक वखाइंदा। पूरब जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। बाल अञ्याणे पकड़े लाल, हरिजन आपणी गोद टिकाइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, घर घर विच आप वखाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, अनहद नादी राग अल्लाइंदा। अमृत आत्म सरोवर दए नुहाल, दुरमति मैल धवाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। अन्त प्रीती निभे नाल, नाता बिधाता आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले आप मिलाइंदा। सन्त सुहेले मिले प्रभ, हरि ठाकर वड वड्याईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों लभ्भ, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। कर प्रकाश जोत झब्ब, शब्द करे शनवाईआ। पंच विकारा देवे दब्ब, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। नौ दवारे पार हद्द, सुखमन टेडी बंक पन्ध दए मुकाईआ। ईड़ा पिंगल ना कोए शंक, डूंघी भँवर ना कोए भवाईआ। नाम निधान सुणाए अगम्मी छंत, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। चिरी विछुंनी मेले एका कन्त, दुहागण सुहागण रूप वटाईआ। घर मेला श्री भगवन्त, सज्जण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे पारब्रह्म, ब्रह्म आपणे लेखे लाइंदा। निहकर्मी करे साचा कर्म, कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। धुरदरगाही जाणे सच्चा धर्म, अधर्म रूप ना कोए वटाइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। ऊँचां नीचां इक्को सरन, राउ रंकां संग रखाइंदा। लेखा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल जो सरनी पड़न, तिन्नां जम काल कोए ना खाइंदा। राए धर्म चित्रगुप्त दोवें दूर दुराडे डरन, अग्गे हो बाहों पकड़ हत्थ ना कोए उठाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर

चेले शब्द घोड़े साचे चढ़न, शाहसवारा इक्को नज़री आइंदा। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा ढोला राग अगम्मी पढ़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, कलयुग अन्तिम नैण उठाईआ । पारब्रह्म तेरा वेला पहुँचया आण, कोटन कोटि काल बिताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मिटया निशान, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। असीं सुण के आए तेरा फ़रमाण, धुर संदेसा बेपरवाहीआ। कवण बिध जन भगतां मिलें आण, सन्त सुहेले लएं उठाईआ। गुरमुखां अन्दर वड़ के देवे दान, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख लख चुरासी विच्चों लएं पहचान, बेपहचान आपणी दया कमाईआ। बिन अक्खरां देवें ज्ञान, शास्त्र सिमरत ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच्चा घर, जिस गृह बहि के आपणी कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। किस बिध जन भगतां वसें कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कवण अगम्मी वजाएं ढोल, डंका आपणा नाम सुणाईआ। कवण दवारा कुण्डा खिड़की देवें खोल्ह, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। कवण अमृत आत्म देवें पौहल, निझर झिरना सच झिराईआ। कवण गृह मन्दिर घर स्वामी प्रीती लएं घोली घोल, घोल घुमाई रूप वटाईआ। कवण कंडे कवण तराजू लएं तोल, तक्कड़ कवण हथ्थ उठाईआ । कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत साध सन्त माया अन्दर रहे डोल, पंज तत करे लड़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दिसण अनभोल, तेरी सार किसे ना पाईआ। चौदां लोक चौदां तबक तेरा सुणया ना किसे बोल, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच्चा मार्ग दे समझाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। निरगुण हो के सच समाउँदा ए। भगत भगवान आप वखाउँदा ए। जिन्हां बख्शे चरण ध्यान, प्रीती सच दुआर लगाउँदा ए। अन्दर वड़ के देवे ज्ञान, आत्म परमात्म आप समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाउँदा ए। भेव अभेदा खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिन्हां गुरमुखां देवे साथ, सगला संग बणाईआ। लख चुरासी विच्चों करे पाक, पवित आपणे नाल मिलाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए ख़ाक, जोती नूर करे रुशनाईआ। बज़र कपाटी खोल्ह ताक, पड़दा दूई दए उठाईआ। गुरसिख अन्दरे अन्दर लए झाक, प्रभ सतिगुर नज़री आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द मुख करे कोई ना बात, सुरती शब्द शब्द जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी हरिजन सच्चे लए उठाईआ। हरिजन सच्चा जाए उठ, लोकमात लए अंगड़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिस उपर जाए तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सच सुहञ्जणी मौले रुत्त, पत डाली आप महकाईआ। दूर दुराडा नेड़े हो के लए पुच्छ, जन्म जन्म

दा लेख चुकाईआ। फड़ बाहों गले लगाए जिउँ माँ पुत्त, पिता पूत गोद उठाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाईआ। जन्म कर्म दा मेट दुःख, सुख आत्म इक समझाईआ। लेखा चुक्के मात गर्भ दस दस मास उलटा रुख, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला काया गढ़, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अन्दर वड़, महल अटल करे रुशनाईआ। धुर दे पौड़े जाए चढ़, चौथे डण्डे हथ्थ लगाईआ। सति सतिवादी ढोला इक्को पढ़, साची करे नाम पढ़ाईआ। लेखा जाण चोटी जड़्, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख लए बणाईआ। गुरमुख वेखे संसार, वड संसारी दया कमाइंदा। जिस दा राह तक्कदे गए जुग चार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाइंदा। जिस दा संदेसा देंदे गए गुर अवतार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान सिफ्त सालाहइंदा। जिस नूं पीर पैगम्बर कैहन्दे गए परवरदिगार, लाशरीक आपणा वेस वटाइंदा। जिस नूं नानक गोबिन्द किहा महाबली उतरे अवतार, कल कल्की फेरा पाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत वंड ना कोए वंडाइंदा। भगत भगवान लए उठाल, लख चुरासी जीव जंत खोज खुजाइंदा। सन्त सुहेले वेखे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख गुरसिख लए भाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूंघी खाई फोल फुलाइंदा। कलयुग अन्त हो कृपाल, कृपानिध स्वामी ठाकर ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे आप जगाइंदा। हरिजन जागे नेत्र खोल्ह, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आईआ। दर दरवाज़ा डूंघी कन्दर वजाए ढोल, राग अनाद ब्रह्म ब्रह्माद आप जणाईआ। आत्म परमात्म निज घर वसे कोल, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे साहिब सतिगुर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिन्हां लेखा लिख्या धुर, तिन्हां मेले सहिज सुभाईआ। हरि का भेव पाए ना कोई देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव अन्त कहिण ना आईआ। जिन्हां ठाकर जाए बौहड़, बेपरवाह होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगत इक्को रंग रंगाईआ। हरि भगत रंग प्रभ सच प्रीत, चरण कँवल सरनाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, घर ठाकर वेखो चाईं चाईंआ। बिन रसना जिह्वा गाओ गोबिन्द दे गीत, आत्म परमात्म राग अल्हाईआ। मन तन मौले काया ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कलयुग अन्तिम सतिजुग रीत, सो साहिब आप चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गीत, सोहँ ढोला राग अल्हाईआ। सदी बीसवीं रही बीत, बीस बीसा खेल खलाईआ। लख चुरासी एह

१५० १६

हदीस, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। दो जहानां पावे सार, निरगुण सरगुण संग निभाइंदा। सच दुआरा खोल्ह किवाड़, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। दर भिक्खक गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सीस निवाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, उच्ची कूक अलख जगाइंदा। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। सच्चा कोई ना सज्जण साक, भैण भाई मात पित पिता पूत प्रेम ना कोए वखाइंदा। नारी कन्त करे घात, जगत विछोड़ा अग्ग लगाइंदा। सब नूं भुल्लया पूजा पाठ, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाइंदा। झगड़ा प्या ज़ात पात, सच्चा धर्म हथ्थ ना किसे आइंदा। मन वासना होई नार कमज़ात, गुरमति घर ना कोए वसाइंदा। किरपा कर पुरख अबिनाश, दो जहान तेरा ध्यान लगाइंदा। जन भगत होए उदास, साचा संग ना कोए निभाइंदा। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया कीते बदमुआश, माया ममता मोह सर्ब वधाइंदा। साचा नूर ना कोई प्रकाश, दीवा बाती घर घर सर्ब जगाइंदा। पुरख अकाल वसे किसे ना पास, सुंञी सेज जगत नज़री आइंदा। जन भगतां आ के दे साथ, तुध बिन संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। दर मांगे भीख दोए जोड़, गुरमुख ध्यान लगाईआ। श्री भगवान प्रभ तेरी लोड़, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जन्म कर्म दी विछड़ी जोड़, नाता आपणे नाल बंधाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घोर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ठग्ग चोर यार मचावण शोर, जन भगत बैठे मुख छुपाईआ। बिन तेरे होर किसे उते नहीं ज़ोर, कूक कूक रहे कुरलाईआ। निरगुण सरगुण आ के बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी चढ़ के वेख घोड़, शब्द अगम्मी आपणा फेरा पाईआ। तेरी सृष्टी दी दृष्टी हो गई होर, इष्टी नज़र कोए ना आईआ। लिख्ती लिख्त सारे रहे फोल, फोलयां हथ्थ किछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, गुरमुख आत्म रही कुरलाईआ। गुरमुख आत्म बण प्यासी, दर कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशी, अबिनाशी तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलयुग जीव मैनूं करदे हासी, तेरी समझ किसे ना आईआ। जिध्धर वेखां अन्धेरी राती, गुरमुख चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख दए जणाईआ। गुरमुख गुरसिख जाणा जाग, सो सतिगुर आप जणाईआ। घर तेरे लग्गा इक्को भाग, नाता तोड़ जगत जुदाईआ। हँस बण काले काग, दुरमत मैल धुआईआ। साहिब तोरी पकड़े वाग, सतिगुर आपणे हथ्थ उठाईआ। सुत्ते संसार विच्चों लैणा इक वैराग, वैरागी आप उपजाईआ। झूठा नाता देणा त्याग, कुटम्ब मोह ना

कोए वखाईआ। जिस मात गर्भ तेरी रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आईआ। संसार सागर झूठा साक, संसार सिँघ संग कोए ना जाईआ। जिस अन्दर वड़ के खोल्लया तेरा ताक, सो तेरा दाता बेपरवाहीआ। जिस दी लभ्भयां हथ्थ ना आवे ज़ात, मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। सो माही पत्तण बैठा उते घाट, नईआ नौका नाम चलाईआ। फड़ फड़ बाहों हरिसंगत बणाए साथ, साचा संग रखाईआ। लेखा लिखे कलम दवात, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सच प्याला देवे आबे हयात, अमृत जाम मुख चुआईआ। सच खुमारी काया खाट, सच सिँघासण आप सुहाईआ। जन्म जन्म दी अग्गे मुक्के वाट, लख चुरासी फेर ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म गुरमुख इक्को घर वसाईआ। इक्को घर सदा वसेरा, हरि बिछरत आप मिलाईआ। नाता जुड़या तेरा मेरा, सके ना कोए तुड़ाईआ। आवण जावण चुक्कया झेड़ा, झगड़ा रिहा ना विच लोकाईआ। मन्दिर दिसे नेरन नेरा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सन्त सुहेले लभ्भे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्हे इक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जिस माता कीता तेरा हित्त, तिस पुत्तर गोद सुहाईआ। माणस जन्म ना आवे नित, जुग चौकड़ी लख चरासी विच भवाईआ। धन भाग हरिसंगत कीता हित, हितकारी होए सहाईआ। बीस बीसे साची थित, घड़ी पल ना कोए समझाईआ। जिस उपजाई तेरी रित, अन्त रक्त बूँद लेखे लाईआ। एथे ओथे ना देवे पिठ्ठ, सनमुख इक्को नज़री आईआ। वस्त अमोलक पा के जाए भिक्ख, भिच्छया आपणा नाम वरताईआ। सो गुरमुख सो कहीए गुरसिख, जिस साहिब सतिगुर नज़री आईआ। लख चुरासी भरी दुःख, दुखियां दुःख ना कोए वंडाईआ। जगत तृष्ना किसे ना मिटे भुख, मन वासना होई हल्काईआ। जिन्हां दयाल ठाकर गुर सतिगुर हो के लए पुछ, पुश्त आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो गुरमुख उच्ची कहिण साडा उजल मुख, दुरमति मैल नज़र कोए ना आईआ। जननी विरली जणे उह सुत, जो सुत भगत रूप वटाईआ। जगत माया जगत जहान रही लुट्ट, मात पित भाई भैण साक सज्जण सके ना कोए बचाईआ। अन्तिम तत नाता जाणा छुट्ट, माटी मढ़ी गोर टकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस मरन जीवण दोवें दए कटाईआ। मरन जीवण दोवें जावण मुक, मुक्ती गुरमुखां चरणां हेठ टकाईआ। जिन्हां सतिगुर गोदी लए चुक, तिन्हां विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जन भगत कहिण भगतां वेख्या मुख, कबीर जुलाहा खुशी मनाईआ। सतिगुर नानक आ के अग्गे हो के लए पुछ, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। जो लोकमात विच्चों आपणा बूटा पुट, सचखण्ड विच रिहा लगाईआ। अन्त मिलावा

निर्मल जोत, जोत जोती विच समाईआ। जिस माणस जन्म विच ना आई होश, सो लख चुरासी गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। हरि का खेल कोई ना सके सोच, मन मति बुध तिन्नां चले ना कोए चतुराईआ। जिन्हां मेहर कर के घर आप जाए पहुंच, सो पूत पिता गोद उठाईआ। जन भगतां नाल काहदा रोस, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। बाहरों रहिण ख़ामोश, अन्दरों इक्को नाम ध्याईआ। जिन्हां दा खुल्ल्हया लोचण लोच, सो लोचा इक्को इक वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल एकँकार निराकार इक्को बहुत, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवन्त आपणा रंग वखाईआ।

* ८ पोह २०२० बिक्रमी नसीब कौर दे गृह डविडा रिहाणा ज़िला हुशियार पुर *

निरगुण सरगुण तेरी रचन, ब्रह्मण्ड पुरी लोअ अकाश नज़री आईआ। बोध अगाध शब्द नाद धुन अनाद तेरा बचन, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाउँ धराईआ। लख चुरासी पंज तत काया माटी कंचन, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। नाम निधान श्री भगवान तेरी रंगण, बेपरवाही घड़ घड़ भाण्डे पोच पुचाईआ। अगम्म अथाह तेरा मृदंगण, दो जहान करे शनवाईआ। सति सतिवादी सच सुच्च तेरा चन्दन, जोत ललाटी टिक्का इक्को इक वखाईआ। दर दरबार तेरा सूरे सरबँगण, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार दर ते मंगण, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म तेरा सच अनन्दन, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा नूर नज़री आईआ । निराकार साकार तेरा खेल विच वरभण्डण, नव सत्त वज्जे वधाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैत तेरी कंधन, हद्द हदूद समझ किसे ना आईआ। गृह मन्दिर घर तेरा इक्को अंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। शहिनशाह घर तेरा ठाकर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। गहर गम्भीर गवरा सागर, कोटन कोटि समुंद बैठे सीस झुकाईआ । बलधारी योधे सूरबीर बहादर, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। आदि जुगादी धुर दे आदल, अदालत इक्को इक सुहाईआ। लेखा जाणे मक्तूल कातिल, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। भेव चुकाए सब दा बातन, ज़ाहर ज़हूर आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अबिनाशी करता तैनूं सारे आखण, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त रसना जिह्वा ढोला गाईआ। कलम शाही अक्खरां नाल तेरा नाम बणाया भाषण, जगत भाषा वंड वंडाईआ। बिन तेरी किरपा सच्चा दिसे ना कोई साथन, सगला संग ना कोए निभाईआ। पड़दा कोई ना आवे ढाकन, ओढण सीस ना

कोए टिकाईआ। लख चुरासी कलयुग अन्तिम बिन तेरी किरपा होई पापन, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। आतर अन्तर
भुल्लया जापण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब कुरलाईआ। इक दूजे नूं सारे आखण, सिख्या दे दे समझाईआ। आपणा
खोल्ह ना कोई ताकन, कपाटी बज़र ना कोए तुड़ाईआ। मेल मिले ना पुरख अबिनाशन, घर वज्जे ना नाम वधाईआ। साचे
चढ़े ना कोई घाटन, पत्तण वेखण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकार दोए लोचण ताकण, निज नेत्र अक्ख ना
कोए खुल्हाईआ। मुला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी करन पाठन, पारब्रह्म तेरी पाठशाला पढ़न कोए ना जाईआ।
बिन भगतां साचा बणे ना कोई जमातन, अल्फ़ ये नेत्र रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
कर, सद देवणहार वड्याईआ। अल्फ़ ये करे तकरीर, नुक्ता नून ना कोए समझाईआ। कहि कहि गए पीर फ़कीर, पैगम्बर
आपणी धुन सुणाईआ। सिदक सबूरी दस्सदे गए यकीन, धीरज धीर इक वखाईआ। कलमा कैहन्दे गए यामबीन, लाशरीक
तौफ़ीक खुदाईआ। लेखा जाणे आलमीन, कायनात खोज खुजाईआ। कलमा नबी रसूल करे तलकीन, धुर संदेसा राग
सुणाईआ। मुरीद मुर्शद हो अधीन, तालब तुलबा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा
 सच्चा वर, अल्फ़ ये लेखा देणा समझाईआ। अल्फ़ ये गई थक्क, लोकमात कर पढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा मिले ना कोई १५४
हक़, हकीकत समझ कोए ना पाईआ। जगत शरीअत शरअ नकेल नक्क, जीवां जंतां रही भवाईआ। तेरा नूर ज़हूर किसे
 ना आया हथ्थ, मफ़रूर फड़न कोए ना जाईआ। दहि दिशा कूड़ी वासना बीवीआं बीवी रहे नठ्ठ, खावंद संग ना कोए निभाईआ। १६
नाड़ी नाड़ी उबले रत, आबे हयात जाम ना कोए प्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त परवरदिगार तेरे कलमे उते होया शक़,
शाकर नज़र कोए ना आईआ। भरमे भुल्ला तत अठ्ठ, तसबी माला तन्द ना कोए वखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ,
शहिनशाह तेरी वड्याईआ। मुर्शद हो मुरीद खोल्ह अक्ख, भगत भगवान दए समझाईआ। आत्म परमात्म मिल के गा जस्स,
जस वेद पुराण कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे माण वड्याईआ। अल्फ़
ये कहे महिबूब, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा लेखा वेख्या खूब, खूबसूरत तेरी जगत लोकाईआ। महल अटल तेरा
अरूज, अर्श कुर्श तेरी शनवाईआ। बेपरवाह तेरी हदूद, चौदां तबक समझ सके ना राईआ। तेरे अन्दर कोटन कोटि पैगम्बर
बैठे महफ़ूज़, मुफ़लस हो के झोली डाहीआ। जिन्हां हथ्थ फड़ाएं ख़तूत, धुर संदेसा इक जणाईआ। तिन्हां काया चोली
देवें पंज भूत, तत माटी जोड़ जुड़ाईआ। सो तेरा दस्सण आण सबूत, कलमा हक़ हक़ पढ़ाईआ। हाज़र हज़ूर तेरा जलवा
वेखे ना कोए मौजूद, नेरन नेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर

नज़र उठाईआ। अल्फ़ ये कहे मेरी अक्खर बनावट, कलम शाही नाल बणाईआ। सच खुदाए तेरी सखावत, मेहरवान इक्को नजरी आईआ। कलयुग अन्तिम पई बगावत, दर दर घर घर पई लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गी अलामत, मेट सके ना कोए खुदाईआ। आदि जुगादी तेरी अमानत, अन्तिम तेरे अग्गे टिकाईआ। निरगुण हो दे ज़मानत, सरगुण साचा संग रखाईआ। वेले अन्त कर ममानत, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। नज़री आ सही सलामत, साहिब सच तेरी वड्याईआ। बेरूप बेपछाणत, बिन रूप रंग रेख दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे वखाईआ। अल्फ़ ये नेत्र नीर, बिन अक्खां रही वखाईआ। तेरा खेल अन्त अख़ीर, हउँ ठाकर वेखण आईआ। किरपा कर अगम्मी पीर, बेनज़ीर तेरी शरनाईआ। लोकमात होई दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जगत शरीअत पाया जंजीर, शब्दी शब्द ना कोए तुड़ाईआ। अंग अंग करे पीड़, दुखी दर्द ना कोए वंडाईआ। दोज़क बहिश्त दोहां दिसे भीड़, मार्ग सच ना कोए वखाईआ। चोटी चढ़ वेख अख़ीर, मंज़ल हक़ नूर खुदाईआ। तेरा बशर कौण बशीर, बिस्मिल रूप कौण वटाईआ। राह तक्कदे गए पीर फ़कीर, ईसा मूसा मुहम्मद ध्यान लगाईआ। मुरीद मुर्शद पन्ध वेख चीर, मंज़ल आपणी आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, जिस गृह साडी चले ना

१५५ ... १६ ... १५५ ... १६

कोए चतुराईआ। अल्फ़ ये सुण कर ध्यान, परवरदिगार सच जणाइंदा। अबिनाशी करता देवे दान, श्री भगवान झोली आप भराइंदा। जिन्हां उपर होए मेहरवान, मेहर नजर नैण उठाइंदा। चरण कँवल करे परवान, धरत धवल सोभा पाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, सच प्रधानगी नाम कमाइंदा। जन भगतां जन्म कर्म दे विछड़यां मेले आण, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अल्फ़ ये तेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। इक्को ढोला गावण सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजा राग ना कोए अल्लाइंदा। उथ्थे तेरी कोई ना करे पहचान, बेपहचान इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे धुर दा वर, जन भगतां आप पढ़ाइंदा। जन भगत पढ़ाए साचा लफ़ज़, लुगात हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जिस दा समझे ना कोई तलफ्फ़ज़, तुलबा रूप ना कोए वटाईआ। कोई भेव ना पाए मीआं हाफ़ज़, हमज़ा नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं मुहम्मद किहा इस्म आअज़म, सो इस्म आअज़म जन भगतां अन्दर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। अल्फ़ कहे उह केहड़ी अल्फ़, बिन अक्खरां दए बणाईआ। श्री भगवान कहे जो मेरे नाम दा चुक्के हल्फ़, तिन्हां तेरी लोड़ रहे ना राईआ। बिन पीर पैगम्बर गुरू अवतार किसे ना कीती परख, लख चुरासी सार कोए ना आईआ। मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीद इक्को आदर्श, दर इक्को सोभा पाईआ।

उन्हां उते करीं कोई ना हरख, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जे तेरे उते करन तरस, अक्ख तेरे नाल मिलाईआ। उन्हां वेख तूं वी पईं तड़फ, लोकमात झल्ली ना जाए जुदाईआ। अक्खर अक्खर प्रभ मिलण नूं सारे रहे भटक, जगत भटकणा ना कोए मिटाईआ। जन भगतां इक्को दिती सिधी सड़क, सरक आपणे नाम लगाईआ। एथे ओथे दो जहान आउँदयां जांदयां कोई ना लग्गे ख़र्च, चरण प्रीती इक रखाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी साहिब सतिगुर दीनां नाथ वंडे दर्द, दुखियां दुःख मेट मिटाईआ। माणस जन्म अग्गे पिच्छे होण ना देवे हर्ज, हर्जाना आपणे कोलों भराईआ। धर्म राए दी फड़ के पाड़े फ़रद, फ़रद ज़ुरम ना कोए लगाईआ। जम जंदार हथ्थ फड़े ना कोई करद, कसाई रूप नज़र कोए ना आईआ। किरपा करे मर्दाना मर्द, मर्द मर्दाना पारब्रह्म बेपरवाहीआ। अग्गे ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, अलिफ़ ये चले ना कोई चतुराईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर मिल्या तिन्हां लेखा चुक्कया स्वर्ग नरक, दोज़ख़ बहिश्त डेरा देवे ढाहीआ। नानक गोबिन्द निरगुण सरगुण ला के गए शर्त, सच संदेसा लोकमात सुणाईआ। जिन्हां भगतां उते भगवान करे तरस, तिन्हां जन्म जन्म दा रोग रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ धार अगम्मी इक्को बरस, सांतक सति सति वरताईआ।

* ८ पोह २०२० बिक्रमी मण्डी अहिमद गढ़ *

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण नौजवान, योधा सूरबीर भेव चुकाइंदा। एकँकारा हुक्मरान, भूपत भूप हुक्म वरताइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा मार ध्यान, निरगुण साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ लेखा जाणे दो जहान, निरवैर निराकार नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड दुआरे सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि रचना आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख हरि पुरख अबिनाशा, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे जोत प्रकाशा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। परवरदिगार शाहो शाबाशा, मुकामे हक़ खेल रचाईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। आदि जुगादी अवल्लड़ी कार, अकल कलधारी वेस वटाईआ। महल अटल उच्च मिनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। लाशरीक परवरदिगार, बेऐब नूर खुदाईआ। राम रहीम सांझा यार, शिरकत वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी पावे सार, निरगुण

सरगुण खोज खुजाईआ। लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर ख़बरदार, सति संदेसा नाम सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेखणहार, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी श्री भगवान, हरि करता आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखे आण, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। नाम संदेसा दो जहान, बोध अगाधा आप पढ़ाइंदा। लेखा लिख्त लिख सके ना कोए ज़बान, अक्खर वंड ना कोए वंडाइंदा। कागद कलम होए हैरान, हरि का भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारा एकँकारा, दरगाह साची धाम न्यारा, महल अटल उच्च मनारा, बेनज़ीर इक्को इक सुहाइंदा। बेनज़ीर लाशरीक, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। सच खुदाए इक तौफ़ीक, श्री भगवान समझ कोए ना पाईआ। दूर दुराडा खेल करे नज़दीक, नेरन नेरा आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रखदे गए उडीक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। सो साहिब सतिगुर सच जणाए इक प्रीत, प्रीतीवान इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर निराकार निरँकार आपणी कल वरताईआ। आपणी कल वरते भगवन्त, भेव अभेदा आप जणाइंदा। कलयुग खेल करे अगणत, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। जिस नूं लभ्भदे साध सन्त, मुरीद मुर्शद आपणा रंग रंगाइंदा। लख चुरासी जाण जीव जंत, घट घट अन्दर पड़दा लाहइंदा। धुर संदेसा धुर दा मंत, मंतव आपणा आप समझाइंदा। आत्म परमात्म मेला नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसाइंदा। चार वरनां इक्को संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा श्री भगवान, सो पुरख निरँजण इक जणाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, भरम भुलेखा दूर कराईआ। तख्त निवासी नौजवान, बलधारी इक्को बल प्रगटाईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। शब्द सुत हुक्मरान, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश प्रकाश वेखे मार ध्यान, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पड़दा लाहे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सच दुआर सुहाए हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम किरपा कर, कल कल्की वेस वटाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार सद्दे दर, दर दरवाज़ा इक खुलाईआ। भगत भगवान जणाए डर, भय भउ इक रखाईआ। सन्त

सज्जण चरणी रहे पड़, मस्तक टिक्का सीस निवाईआ। गुरमुख गुरसिख दोए जोड़ रहे खड़, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। मुरीद मुर्शद कहिण प्रभ किरपा कर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, समझ सके कोए ना राईआ। कलयुग अन्तिम जाणे कम्म, नेहकर्मी कार कमाईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्नृ, सन्त साजण संग निभाईआ। गुरमुखां जोत निरँजण चाढ़ चन्न, घर घर विच करे रुशनाईआ। गुरसिखां देवे साचा धन, वस्त अमोलक झोली पाईआ। इक्को राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। भरम भुलेखा मेटे जन, भाण्डा भउ दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक वखाईआ। सच दरबार इक वखाउँदा ए। पुरख अबिनाशी खेल रचाउँदा ए। सच सिँघासण सोभा पाउँदा ए। जोती जलवा नूर चमकाउँदा ए। पंज तत ना कोए रखाउँदा ए। कलयुग अन्तिम वेख वखाउँदा ए। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउँदा ए। त्रैगुण माया पर्दा लाहुन्दा ए। पंज तत डंका इक वजाउँदा ए। तेई अवतार फड़ उठाउँदा ए। भगत अठारां खेल रचाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण सर्ब शरमाउँदा ए। नानक गोबिन्द कर पुकार, पुनह पुनह आपणे सीस निवाउँदा ए। लख चुरासी रोवे जारो जार, धीरज धीर ना कोए धराउँदा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाउँदा ए। अञ्जील कुरान धाहां रही मार, खाणी बाणी रंग ना कोए रंगाउँदा ए। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ धूंआँधार, निर्मल जोत ना कोए जगाउँदा ए। आत्म परमात्म करे ना कोए प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म नाता जोड़ ना कोए जुड़ाउँदा ए। चारे खाणी चारे बाणी बोले ना कोए जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री राग ना कोए अलाउँदा ए। भगत भगवन्त राह तक्कण चार दीवार, बंद किवाड़ी कुण्डा कोए ना लाहुन्दा ए। सन्त सज्जण मंगण अमृत धार, निझर झिरना बूँद ना कोए टपकाउँदा ए। गुरमुख चरण धूढ़ी मंगण छार, मस्तक ललाटी टिक्का जोत ना कोए लगाउँदा ए। गुरसिख नेत्र लोचण तड़पण इक दीदार, अक्ख अक्ख प्रतख ना कोए वखाउँदा ए। कागद कलम शाही गई हार, हक़ हकीकत पड़दा ना कोए उठाउँदा ए। दीन मज़्ब होए ख्वार, ज़ात पात भेद ना कोए चुकाउँदा ए। मुल्लां शेख़ मसायक वाअज़ करन कर गुफ़्तार, गुफ्त शनीद खेल ना कोए जणाउँदा ए। साचा कलमा नबी ना मारे कोई अवाज़, हुजरा हक़ ना कोई वखाउँदा ए। चारों कुण्ट दिसे अँध्यार, नूरी चन्द ना कोए चमकाउँदा ए। धरनी डिगी मूँह दे भार, बाहों फड़ ना कोए उठाउँदा ए। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाअरा रही मार, मेरी लजपत मात ना कोए रखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, श्री भगवान तुध बिन नज़र कोए ना आउँदा ए। दो जहान मारन धाह, उच्ची

कूक कूक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे कुरला, सूरज चन्द देण दुहाईआ। ज़िमी असमानां बेड़ा सके ना कोई तरा, चौदां लोक समझ कोए ना पाईआ। चौदां तबक भेव ना आए खुदा, खुदी तकब्बर सब में रिहा छाईआ। पड़दा सके कोई ना लाह, मुख नक़ाब घर घर बैठे पाईआ। घर सजदा सीस सके ना कोई झुका, नमो नमो ना कोए सुणाईआ। कलयुग अन्त इक्को भुल्लया बेपरवाह, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। हस्ती नालों हस्ती होई जुदा, जुज आपणा वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। ज़िमीं असमान रोवण सूरज चन्द, प्रभ अग्गे देण दुहाईआ। फिरी दरोही खुदाए नव खण्ड, सत दीप ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी आत्म सब दी होई रंड, जगत दुहागण सार कोए ना पाईआ। घर घर गृह गृह दर दर दिसे भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए वरताईआ। गीत गोबिन्द नर नरायण परवरदिगार तेरा कोई ना गाए छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द, मुख लगाया गंद, अमृत जाम हथ्थ किसे ना आईआ। आबे हयात देवे ना कोई वंड, सुराही सच हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कूक पुकारन दीन मज़्हब, नाअरा इक्को इक लगाईआ। तेरा प्रभू कोई ना करे अदब, सच आदाब ना कोए वखाईआ। घर घर दिसे मास
१५६ मदिर, तेरा नाम रसना पान ना कोए वखाईआ। मन वासना प्या ग़दर, अदल अदालत नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां १५६
१६ पूरी करे कोई ना सधर, सिदक सबूरी सारे बैठे रुढ़ाईआ। तेरे मिलण दा करे कोई ना फिकर, फिकरा अल्फ़ ये पढ़ाईआ। १६
कूड़ी क्रिया करदे ज़िकर, ज़ाहर ज़हूर नज़र किसे ना आईआ। जगत प्यार कूड़े चित्र, तेरा इष्ट ध्यान ना कोए रखाईआ। माया ममता बणया वचित्र, नाटक भरी जगत लोकाईआ। जिस नूं गोबिन्द बणाया मित्र, सो मित्र प्यारा समझ सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा ठांडा नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो इकट्ठे, प्रभ चरण बैठे सरनाईआ। बिन वजूदों सरनी ढट्ठे, तत नज़र कोए ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ साहिब रखे, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात तेरे दे के आए पते, सति संदेसा नाम सुणाईआ। बोध अगाध लेखे लिखे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर पढ़ाईआ। कलयुग माया अन्तिम सारे कीते फिके, रस हथ्थ किसे ना आईआ। असीं वेख खेल तेरा अनडिठे, बैठे मुख भवाईआ। कलयुग जीवां लोकमात जा कोई ना पुच्छे, गुर अवतार पीर पैगम्बर भउ ना कोए रखाईआ। मेहरवान मेहर कर अबिनाशी अचुते, चेतन आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी मात वड्याईआ। भगत कहिण प्रभ सच्चे ठाकर, इक तेरी ओट तकाईआ।

कलयुग वेख डूंघा सागर, गहर गम्भीर फेरा पाईआ। तेरे भगतां कोई ना मिले आदर, तेरे सन्तां सज्जण नज़र कोए ना आईआ। साचा बणे ना कोई सौदागर, कूड़ा हट्ट चलाईआ। निर्मल कर्म किसे ना होवे उजागर, पापां भरी लोकाईआ। दर दर घर घर सारे बैठे बण के चातर, चातृक रूप ना कोए वटाईआ । तेरे मिलण दी रखे ख़्वाहिश कोई ना ख़ातर, जगत वासना फिरे हल्काईआ। तेरा नाउँ लभ्भे ना लग मात्र, अक्खर वक्खर गंढु ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जन भगत तेरा ध्यान लगाईआ। सन्त कहिण प्रभ सज्जण मीत, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। कलयुग वेख आपणी रीत, मन्दिर मसीत रिहा कुरलाईआ। बाहरों वुज़ू अन्दरों पलीत, पुनीत रूप ना कोए वखाईआ। रसना गीत मन नीच, सच सुच्च ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट दर दरवेश मंगण भीख, कलयुग कूड़ भण्डारा रिहा वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरी करदे रहे उडीक, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ आ के निरगुण सरगुण दस्से इक प्रीत, दूजी वंड ना कोए वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत समझाए इक्को गीत, आत्म परमात्म राग अलाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, काया गुरुदुआर मट्ठ शिवदुआला इक्को नज़री आईआ। जिस घर वसें आप अतीत, त्रैगुण देवें डेरा ढाहीआ। एका रंग रंगाएं हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। लख चुरासी लएं जीत, हार सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब बैठे ध्यान लगाईआ। चार वरन अठारां बरन चारों कुण्ट राह तकाईआ। किरपा कर करनी करन, करता पुरख तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा धुर दा ढोला कोई ना पढ़न, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। त्रैगुण माया अग्नी सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। साचे पौड़े कोई ना चढ़न, जगत महल बैठे बणाईआ। साचे घर मूल ना वड़न, घर घर विच वज्जे ना कोए वधाईआ। दीपक जोती दीप ना जलन, नूरी नूर ना कोए रुशनाईआ। तेरा दरस ना पाइण मूर्त गोपाल मदन, मुकन्द नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर झुकौण सीस सब, चार जुग पए सरनाईआ । किरपा कर नर नरायण झब्ब, कलयुग झगड़ा दे चुकाईआ। कूड़ विकारा दे दब्ब, उपर आपणा भार रखाईआ। ज़ात पात कूड़ हद्द, हदूद आपणी इक समझाईआ। आत्म परमात्म दिसे यद, विश्व इक्को रंग रंगाईआ। धर्म निशाना साचा गड्ड, लख चुरासी सीस झुकाईआ। सन्त सुहेले सज्जण सद्द, सदा इक्को नाम सुणाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा जाए भज्ज, शब्द निशाना तीर चलाईआ। मक्का काअबा इक्को नज़री आए हज्ज, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ, गुरदवारा एका घर वखाईआ। प्रेम प्यार दा प्या मदि, दिवस रैण खुमार

चढ़ाईआ। तेरे दवारे बैठे सज, सगला संग निभाईआ। दर्शन करीए रज्ज रज्ज, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धर्म दवारा लै प्रगटाईआ। धर्म दवारा खोल्ह हट्ट, दर तेरे करन बेनन्तीआ। पुरख अबिनाशी हो प्रगट, निहकर्मी सोभावन्तीआ । हर घट दे नाम सति, सति सरूप महिमा अगणतीआ। धीरज आवे सन्तोख जत, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्तीआ। सृष्ट सबाई इक्को मति, मन का मणका आप भवन्तीआ। घर साचा लाहा लए खट्ट, नाता कूड़ो कूड़ तुड़ंतीआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, तिन्न सौ सट्ठ हाडी खोज खुजंतीआ। रल मिल आत्म परमात्म तेरा गाईए जस, साचा ढोला राग सुणंतीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव आदि जुगादि तेरे वस, शाहो भूप श्री भगवन्तीआ। कलयुग अन्तिम दे वर, हउँ बालक मंग मगंतीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणंतीआ। साहिब सतिगुर दया कमाउँदा ए। सो पुरख निरँजण हुक्म अलाउँदा ए। दो जहानां आप सुणाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड उठाउँदा ए। गुर अवतार अक्ख खुलाउँदा ए। पीर पैगम्बर सगला संग आप बणाउँदा ए। निरगुण सरगुण वजा मृदंग, राग रागनी भेव चुकाउँदा ए। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। आत्म सेजा वेख पलँघ, लख चुरासी आप हंढाउँदा ए। साचा देवे सति अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाउँदा ए। वीह सौ वीह बिक्रमी जाए लँघ, पार किनारा इक वखाउँदा ए। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सृष्ट सबाई पाए गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी दया कमाउँदा ए। जन भगतां पाए धुर दी ठंड, ठंडक इक्को इक वखाउँदा ए। सोहँ ढोला धुर दा छन्द, सति सतिवादी आप जणाउँदा ए। जन्म जन्म दा मेट के पन्ध, कर्म कर्म दा रोग गवाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। सच संदेसा सच जणावांगा। निरगुण निरवैर हो के आवांगा । गहर गम्भीर खेल खलावांगा। बिन शरीर फेरा पावांगा। बेनज़ीर जोत जगावांगा। चोटी चढ़ अख़ीर, पड़दा सब दा फोल फुलावांगा। नाता तोड़ शरअ जंजीर, दीन मज़्हब पन्ध मुकावांगा। लेखा जाण शाह हकीर, ऊँच नीच इक्को घर वसावांगा। कलयुग बदल दयां तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखावांगा। कूड़ी क्रिया कढ्ढां पीड़, माया ममता मोह चुकावांगा। चार वरन बणावां भाई सज्जण वीर, साक सज्जण इक्को घर दसावांगा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना शब्द खण्डे कट शमशीर, सियासत जगत अग्न जलावांगा। दो जहानां पैंडा चीर, लोकमात वेख वखावांगा। जिस नूं लभ्भदे पीर फ़कीर, तिन्हां फ़िकरा हक़ सुणावांगा। अल्फ़ ये मुके अन्त तकरीर, तहरीर आपणी झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखावांगा। सच मार्ग इक लगाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाएगा। नव खण्ड जोत

जगाएगा। चार कुण्ट फोल फुलाएगा। दहि दिशा वंड वंडाएगा । लख चुरासी खोज खुजाएगा। मण्डल रासी सोभा पाएगा। जगत उदासी दूर कराएगा। ना कोई रहे मदिरा मासी, मधुर आपणा नाम जाम प्याएगा। लेखा जाणे पंडत कांसी, मुल्लां शेख़ कुतब ग़ौंस आप उठाएगा। निरगुण सरगुण बण के पांधी, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाएगा। किसे कम्म ना आवे सोना रूपा चांदी, हरि का नाम इक्को हट्ट चलाएगा। भेव खुल्हाए बोध अगाधी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी प्रभू कमावेगा। कलयुग अन्तिम मेट मिटावेगा। पूरब लेखा लेखे लावेगा। सृष्ट सबाई इक्को हुक्म वरतावेगा। लख चुरासी बणाए तुख्म, तासीर आपणे नाल मिलावेगा। सन्त सुहेले कर के उत्तम, दृष्ट इष्ट आप जणावेगा। भगत भगवान बणाए पुत्तर, पिता पूत गोद सुहावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रल रल मनावण शुकर, शहिनशाह शाकर आपणे घर करावेगा। एथे कोई ना जाए मुक्कर, मुकद्दमा इक्को इक रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरनां इक्को रंग रंगावेगा। चार वरनां रंग रंगाउणा ए। ऊँच नीच भेव चुकाउणा ए। राउ रंक इक्को घर सुहाउणा ए। नाम डंक शब्द वजाउणा ए। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आप पढ़ौणा ए। आत्म परमात्म आदि जुगादी मंत, मन्त्र इक्को इक दरसाउणा ए। चिरी विछुंना मेला नार सवाणी सुरती कन्त, शब्दी शब्द इक वखाउणा ए। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाउणा ए। सतिजुग बणा साची बणत, कलयुग बिस्तरा कूड़ उठाउणा ए। करे खेल श्री भगवन्त, हरि का भेव किसे ना आउणा ए। कोई समझ ना सके पांधा पंडत, मुल्लां शेख़ मसला हल्ल ना किसे कराउणा ए। जिस दा लेखा जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी राह वखाउणा ए। सति सतिवादी वखाए राह, रहिबर इक्को नज़री आईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, निरगुण सरगुण लए तराईआ। आत्म परमात्म दए सलाह, सिख्या साची करे पढ़ाईआ। डुब्बदे पाहन लए तरा, पाथर आपणे नाल रखाईआ। आत्म परमात्म लए मिला, मिलणी जगदीश कराईआ। जगत विछोड़ा पन्ध मुका, घर साचे दए बहाईआ। इक्को नूर खुदाए नज़री जाए आ, बेनज़ीर करे रुशनाईआ। बी मेहरबां मिहबान बीदो होए सहा, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दे हथ्थ सर्ब शफ़ा, अहिबाब इक्को इक अख्वाईआ। तबीब बणे दो जहान, चौदां तबक करे सफ़ाईआ। लेखा जाणे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा पर्दा आप उठाईआ । जिस दे उते मुहम्मद रख के गया ईमान, सो आमल आपणा फेरा पाईआ। कामल पुरख नौजवान, ना मरे ना जाईआ। चौधवीं सदी वेखे सर्ब गुनाह, गुनाह भरी दिसे

लोकाईआ। मक्का काअबा कोई दिसे ना धुर दा थाँ, जगत मजौर रहे कुरलाईआ। मूसा ईसा कहे मेरे खुदा, रहमत तेरे हथ्थ वड्याईआ। पिता पुरख फेरा पा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। वेद व्यासा रिहा गा, अठ दस पुराणी पुराण अंक बणाईआ। नानक गोबिन्द सीस रहे झुका, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। कल कल्की फेरा पा, कलयुग तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी गए विहा, लेखा वेख थाउँ थाईंआ। जीव जंत तेरा नाउँ गए भुला, आत्म परमात्म इष्ट नज़र किसे ना आईआ। जग भुल्लयां फेर जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मार्ग दस्स बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। श्री भगवान दया कमा, अबिनाशी करता रिहा सुणाईआ। नेत्र नैण अक्ख सारे लओ खुल्ह्, आलस निंद्रा रिहा मिटाईआ। परवरदिगार बेपरवाह फेरा रिहा पा। अल्फ़ी चोला तन ना कोए हंढ्ढाईआ। जिस दी सिफ्त अल्फ़ ये गई लिखा, लफ़ज़ लफ़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। तिस दा हरफ़ कोई ना सके बुझा, हज़रत बैठे सीस निवाईआ। जो हस्ती नालों होवे आप जुदा, जुदा हो के हस्ती विच समाईआ। उह रहिबर बणे खुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। नौबत इक्को दए वजा, दो जहानां दए सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर फेरा रिहा पा, अन्तरजामी शब्द निहकामी, निहकर्मी आपणी कार कमाईआ। कलयुग कूड़े कोलों सब दी कटे आप गुलामी, बरीख़ाना दए खुल्ह्आईआ। चार जुग दा मसला हल्ल करे दीवानी, अपील अग्गे ना कोए रखाईआ। जिस दी समझ पाए ना कोए विद्वानी, चौदां विद्या होई हल्काईआ। जिस दा लेखा लिख्या गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल कानी, सो कलमा कायनात पढ़ाईआ। उस दा दिसे कोई ना सानी, आसानी सब नूं दए जणाईआ। जगत जहान कराए फ़ानी, फ़ातया इक्को वार पढ़ाईआ। मुरीद मुर्शद दोहां दी रहे अन्त निशानी, निशाना इक्को इक लगाईआ। जिस दा लेख लिख्या गुर अर्जन सुत भानी, शब्दी धार धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया शौह दरियाए दए रुढ़्हाईआ। कलयुग अन्तिम तुटे नाता, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चार वरन बणे इक जमाता, जुमला अक्खर पट्टी इक्को दए समझाईआ। वरन बरन दा धुर दा खाता, हरि ख़ालक दए खुल्ह्आईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राता, सतिजुग चन्द करे रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को पिता माता, पारब्रह्म प्रभ सच्चा नज़री आईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा दाता, धुर दी वस्त आप वरताईआ। जिस दा सिमरन पूजा संध्या पाठा, अग्नी हवन जगत खेल वखाईआ। जिस दा नहावण तीर्थ ताटा, अठसठ सरोवर फेरा पाईआ। जिस दा नूर जोत ललाटी माथा, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दा नूर मक्का काअबा, सो ज़हूर रिहा प्रगटाईआ। जिस दा मेल दो दो आबा, सो आबे हयात जाम रिहा पिलाईआ। जिस दा पीर पैगम्बर हुजरे अन्दर लैंदे रहे ख्वाबा, सो ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। जिस दा

नूर झल्ले ना आफ्ताबा, आफ्ताब कोटन बैठे मुख शरमाईआ। सो साहिब हक़ जनाबा, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्त सब नूं करे लाजवाबा, जवाब दे सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार राम रहीम आपणा फेरा पाईआ। आपणा फेरा प्रभू प्रभ पाउँदा ए। सन्त सुहेले लभ्भ, जन भगत आप उठाउँदा ए। अमृत झिरना झिरा कँवल नभ, उलटा मुख कराउँदा ए। नौ दवारे मुके हद्द, घर दसवें मेल मिलाउँदा ए। आत्म जोती दीपक जाए जग, अज्ञान अन्धेर चुकाउँदा ए। अनहद नाद सुणाए छन्द, संसा रोग मिटाउँदा ए। डूंघी भँवरी विच्चों कढ्ढ, सुखमन टेडी बंक पार कराउँदा ए। ईड़ा पिंगल थल्ले छड्ड, साचे मार्ग आपे लाउँदा ए। आत्म सेज चढ़ाए भज्ज, बण पांधी पन्ध मुकाउँदा ए। सुरती शब्दी प्रीती जाए बज्झ, टुट्टी गंढ्ढ फेर पवाउँदा ए। आत्म परमात्म करे हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे घर वसाउँदा ए। हरिजन साचे घर वसाउँदा ए। फड़ फड़ बाहों गले लगाउँदा ए। काया मन्दिर अन्दर राह वखाउँदा ए। बजर कपाटी तोड़ जन्दर, पड़दा दूई द्वैत चुकाउँदा ए। सोहणा दिसे अगम्मी मन्दिर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाउँदा ए। जोत जगे अन्दरे अन्दर, तेल बाती नाल ना कोए रखाउँदा ए। मन वासना दिसे ना कोई बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाउँदा ए। शरअ शरीअत तोड़ संगल, संगल दीन मज़्ब पन्ध मुकाउँदा ए। घर वड़ के पौड़े चढ़ के गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सुणे अगम्मी मंगल, जिस दा भेव छत्ती राग ना पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां कूड़ी क्रिया नाता आप तुड़ाउँदा ए। कूड़ी क्रिया नाता आप तुड़ाउँदा ए। प्रभ सतिगुर दया कमाउँदा ए। भगत भगवान आप जगाउँदा ए। सोई सुरती आप उठाउँदा ए। अकाल मूर्ती नाल मिलाउँदा ए। नाद तूरती इक सुणाउँदा ए। खूबसूरती आपणी जोत चमकाउँदा ए। आसा मनसा पूरती, पूरी इच्छया आप कराउँदा ए। कलयुग कूड़ी खेल दिसे कूड़ दी, सच नाता आत्म परमात्म आप निभाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल ओसे कोहतूर दी, जिथ्थे मूसा मूँह दे भार सुटाउँदा ए। कोहतूर दिसे नुराना, नूरी जलवा इक जणाईआ। जिस परवरदिगार होए मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। सो मुरीद होए परवाना, मुर्शद आपणे गले लगाईआ। साचा कलमा दए इलाही कलामा, बिन रसना जिह्वा पढ़ाईआ। नज़री आए इक अमामा, आमद समझ सके कोए ना राईआ। जिस दा दरगाह झुले निशाना, सच निशाना इक वखाईआ। सो अन्तिम पहरे बाणा, अमाम आपणा फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर जिस करे गुलामा, बरदे दर रिहा बहाईआ। तिस नूं सजदा झुक

१६५

१६

करन सलामा, अलैकम इक्को इक सुणाईआ। उस दा वज्जे सच दमामा, दो जहान रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुर्शद वेखे आप मुरीद, इस्म आअज़म देवे दीद, शुनीद आपणा भेव चुकाईआ। दीद शुनीद खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा। जुग चौकड़ी हो त्यार, नित नवित्त वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लए संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, राउ रंक ना कोए वडियाइंदा। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक प्रगटाइंदा। दीपक जोत नुरानी बाल, रोशन इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सृष्टी दए दृष्टी इष्ट देव गुर स्वामी इक्को इक जणाईआ। इक्को इक एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। इक्को इक परवरदिगार, बेपरवाह नज़री आइंदा। इक्को इक राम आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्को इक मीत मुरार, काहन घनईया बंसुरी नाम वजाइंदा। इक्को इक भगत भण्डार, हरि हरि नामा नाम वरताइंदा। इक्को इक मन्दिर दुआर, इक्को गृह सोभा पाइंदा। इक्को इक चरण हरि करतार, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। इक्को इक प्रेम प्यार, सच प्रीती आप बंधाइंदा। इक्को नाम शब्द धुन जैकार, इक्को राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्तिम लेखा पूर कराइंदा। कलयुग लेखा पूर कराउणा, हरि वडा वड जणाईआ। सति सतिवादी मार्ग लाउणा, सच सुच्च करे कुड़माईआ। सृष्ट सबाई इक्को राह वखाउणा, दूजा दर ना कोए दरसाईआ। सर्ब जीआं मिल के आत्म परमात्म ढोला गाउणा, धुर दा नाद वज्जे शनवाईआ। मिल के सखीआं साहिब स्वामी मंगल गाउणा, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। निज नेत्र निज गृह दर्शन पाउणा, बाहर ढूंडण कोए ना जाईआ। अन्तर आत्म सच सरोवर तीर्थ नहाउणा, अठसठ वंड ना कोए वंडाईआ। घर विच घर दीपक जोती जोत जगाउणा, काया मन्दिर होए रुशनाईआ। पतिपरमेश्वर इक्को इष्ट मनाउणा, इक्को नूर नूर ख़ुदाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म आत्म सेजा मिल के गृहस्त हंढाउणा, सति सतिवादी गृहस्ती रूप वटाईआ। स्वर्ग बहिस्ती डेरा ढाउणा, सचखण्ड इक्को आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे धुर दा वर, पूरब लेखा लेखे लए लगाईआ। पूरब लेखा जाणे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। मेहरवान प्रभ कोट जन्म दे मेट पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। आत्म परमात्म बणाए सच्चा साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। तन काया माटी नाता झूठा साक, थिर कोए रहिण ना पाईआ। परम पुरख प्रभ देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जिस दा इक्को सिमरन पूजा पाठ, इक्को नाम वड्याईआ। इक्को पत्तण इक्को घाट, इक्को बैठा सच्चा माहीआ। इक्को दीन इक्को ज़ात, मज़्हब इक्को इक वखाईआ। आदि जुगादि

ना पाए वफ़ात, मढ़ी गोर ना कोए समाईआ। उस साहिब कोलों मंगो दात, जिस देंदयां तोट कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा दस्सदे गए खात, खाता डूंघा इक वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ के वेखो मार झात, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। श्री भगवान सतिगुर पूरा निरगुण रूप नज़री आए साख्यात, पड़दा उहला ना कोए रखाईआ। ओस नाल मिल के करो बात, जिस दी बात बातन समझ कोए ना पाईआ। माणस जन्म दा एहो लाहा ख़ास, लख चुरासी लैणा गेड़ कटाईआ। मात गर्भ फेर ना होवे वास, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जन भगत कहिण प्रभ जो किछ है सब तेरे हाथ, साडी चले ना कोए वड्याईआ। हउँ बालक नढ्ढु नन्न्हे की जाणीए तेरा घाट, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। कर किरपा मेट अगली वाट, पिछला पन्ध दे मुकाईआ। तेरे नालों विछड़ी तेरी ज़ात, अन्तिम आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां दया कमाउँदा ए। नित नवित्त वेस वटाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा फेरा पाउँदा ए। लख चुरासी विच्चों चुग, आप आपणी गोद बिठाउँदा ए। जगत नेत्रां रहे गुंम, बिन निज नेत्र नज़र किसे ना आउँदा ए। गुरमुखां आसा जाए पुन्न, पूरी इच्छया पूर कराउँदा ए। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर पुकार लए सुण, अनडिठड़ी खेल वखाउँदा ए। जिन्हां अन्तर आत्म उपजाए आपणी धुन, तिन्हां काया धुनी रबाब इक वजाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख सन्त सुहेले घर मेले मेल मिलाउँदा ए। घर मेला मेल मिलाया ए। दीन दयाल दया कमाया ए। जगत विछोड़ा दूर कराया ए। सस्से उपर होड़ा इक लगाया ए। हाहा टिपी नाल सजाया ए। निरगुण सरगुण वंड वंडाया ए। सोहँ सोहणी धार चलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति नाता आप बंधाया ए। सति नाता बन्न्हे बन्धन, बंदगी आपणा नाम जणाईआ। आत्म परमात्म सच्चा भजन, हरि सीतगुर करे पढ़ाईआ। नाम निधान नेत्र अंजन, निरगुण निरवैर आप पाईआ। साहिब सुल्तान बण के सज्जण, जन भगतां संग निभाईआ। कलयुग अन्तिम आया पड़दे कज्जण, शब्द दोशाला हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणे रंग रंगाईआ। आपणा रंग रंगाए मजीठ, ललारी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ । आपणा नाम सुणाए गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। आपणा मन्दिर वखाए मसीत, मुल्लां काजी पंडत नज़र कोए ना आईआ । आपणा सोभावन्त सुहाए सीस, सीस जगदीश इक्को इक वखाईआ। आपणा कलमा दस्से हदीस, हज़रत करे सच पढ़ाईआ। जिस दा लेखा बीस इकीस, दूआ ज़ीरो सिफ़रा दो इक एकँकार जोड़ जुड़ाईआ। तिस दा खेल अगम्मी ठीक, बेदमी रिहा वखाईआ।

सृष्ट सबाई दस्से इक प्रीत, प्रीती परमात्म नाल समझाईआ। लख चुरासी हरिजन जाए जीत, जिते सर्ब लोकाईआ। मिठ्ठा होवे कौड़ा रीठ, जो हरि हरि नाम ध्याईआ। घर सज्जण सतिगुर मिले मीत, मित्र प्यारा फेरा पाईआ। आदि जगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त भगत भगवान दी सच्ची रीत, प्रीतम इक्को इक वखाईआ। रल मिल जीव जंत साध सन्त मुरीद मुर्शद सूफ़ी गाओ इक्को गीत, मसरूफ़ी कूड़ी दए चुकाईआ। हरूफ़ी जिस दी सुणदे ताअरीफ़, उस दा तुआरफ़ करो नेत्र नैण उठाईआ। सन्त सतिगुर इक दूजे दी सदा करन उडीक, दो जहान वेखण चाईं चाईंआ। गुरमुख गुरसिख गुर गुर मंगण प्रीत, प्रीती आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिन्हां कर किरपा कृपाल ठाकर प्रभ मिले आप ठीक, तिन्हां ठाकर घर घर नज़री आईआ। उह गुरमुख दीन मज़्ब शरअ दी पार करन लीक, शिरकत विच कदे ना आईआ। ओन्हां परवरदिगार दए तौफ़ीक, तोहफ़ा घर घर आप पुचाईआ। एहो धार कोई समझ ना सके बरीक, जगत नेत्र नज़र ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच्च सभनां झोली पाए भीख, जो दर घर साचा मंगण आईआ। जो सुत्ते दे कर पीठ, तिन्हां लख चुरासी विच भवाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर आपणा खेल करे अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को मन्दिर इक्को दवारा, इक्को घर इक्को दहिलीज, इक्को आसण इक्को सिँघासण इक्को तृष्ना इक्को आसन, इक्को नूर इक्को प्रकाशन, अन्त इक्को जोत समाईआ।

* २५ पोह २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

गुर अवतार पीर पैगम्बर झुकावण सीस, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा कलमा नाउँ पढ़ी सच हदीस, हज़रत हाज़र हज़ूर तेरी वड्याईआ। निरगुण सरगुण तेरा खेल तक्कदे रहे बीस इकीस, बेपरवाह तेरी समझ कोए ना पाईआ। दो जहान निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल छत्र झुल्ले तेरे सीस, जगदीश तेरा दवारा इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी करवट बदल बदल आपणी पीठ, सनमुख आपणा मुख दिखलाईआ। आत्म परमात्म ढोला सोहला राग गा गा थक्की तेरा गीत, गोबिन्द गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा नूर नज़र ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान दस्स सकी ना सच तेरी तस्वीर, तसबी माला मणका मणका मन का मणका ना कोए भवाईआ। नव नौ चार तेरा लेखा चुक्कया ना हस्त कीट, अनडीठ तेरा रूप सति सरूप समझ कोए ना पाईआ। सति स्वामी त्रैभवन

धनी त्रैगुण अतीते ठांडे सीत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बोध अगाधी तेरी ओट तकाईआ। पंज तत काया बणदे रहे पांधी, रसना जिह्वा ढोला रही गांदी, बत्ती दन्द सिफ्त कहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त दर तेरे आस इक लयांदी, बेपरवाह पर्दा उहला रहे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मी वर, जिस दी समझ किसे ना आईआ। इक्को वर दे निरँकार, दर तेरे सीस झुकाया। गुर अवतार करन पुकार, पीर पैगम्बरां हन्झूआं नीर वहाया। परवरदिगार सांझे यार, दर ठांडे डेरा लाया। धुर दे ख़ालक दे आधार, ख़ालस आपणा रूप वखाया। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, तेरा लेखा लेखे विच किसे ना गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, पूरब लेखा वेख वखाया। पूरब लेखा वेख भगवान, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, दर दरवेश अलख जगाईआ। तूं आदि जुगादी निगाहबान, मेहर नज़र नैण तकाईआ। हउँ बाली बुध अञ्याण, चरण कँवल कँवल चरण मंगण आए सरनाईआ। नित नवित्त तेरे दर तों तेरा लैंदे रहे ज्ञान, निरअक्खर तेरा इक्को अक्खर सच पढ़ाईआ। तूं दाता दानी साहिब सुल्तान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। उठ वेख प्रभ मार ध्यान, निरगुण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। चार जुग दा लेखा लिख्या वेख ब्यान, लिख के आए जगत लोकाईआ। कल अन्त प्रगट होवे श्री भगवान, कल्की आपणा रूप वटाईआ। बीस बीसा होए प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा समझ ना आया सानूं चार जुग निशान, निशाना आपणा लए झुलाईआ। जिस दा साध सन्त करन ध्यान, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जिस दा बोध अगाधा शब्द ज्ञान, बिन अक्खरां दए समझाईआ। जिस दा महल अटल उच्च मकान, छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए बणाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्तान, सति सतिवादी इक्को नज़री आईआ। दर तेरे डिगे आण, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याई, गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वज्जे तेरे नाम वधाई, साध सन्त जीव जंत ढोला जस तेरा गाइंदा। निरगुण सरगुण लेखा लिख के आए कलम छाही, काग़ज़ आपणी वंड वंडाइंदा। तेई अवतार गल पल्लू रहे पाई, पल्लड़ा हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद सजदा सीस रहे झुकाई, पर्दानशी पर्दापोश ख़ामोश सोच विच ना कोए सुणाइंदा। नानक गोबिन्द करन सलाही, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। भगत अठारां देण दुहाई, कबीर जुलाहा उच्ची कूक सुणाइंदा। जिस दा लेखा दो जहान हर घट थाईं, सो थान थनंतर वेख वखाइंदा। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाही, सो शहादत आपणा नाम भुगताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर भगवन्त, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी महिमा सदा बेअन्त, कथनी कथ्थ ना सके राईआ। राह तेरा तक्कण साचे सन्त, सति सतिवादी तुध बिन वेखण कोए ना पाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत, कल काती रूप कसाईआ। गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। तेरे प्रेम दी दिसे कोई ना संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन लड़ाईआ। बोध अगाधा बणे कोई ना पंडत, आत्म परमात्म समझ कोए ना आईआ। लेखा बणया दोज़ख़ बहिश्त जन्नत, तेरे चरण सीस ना कोए टिकाईआ। लख चुरासी भाउँदी जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रूप वटाईआ। दर भिखारी बणे कोई ना मंगत, भिच्छया सच ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, सच मिले तेरी सरनाईआ। सच सरनाई दे प्रभ ठाकर, गुर अवतार करन अरज़ोईआ। गहर गम्भीर डूंघे सागर, पीर पैगम्बर मंगण ढोईआ। जुग चौकड़ी देवें आदर, तेरे नाम खुदाए दरोहीआ। कादर करीम करते धुर दे कादर, कुदरत तेरी तेरे विच परोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तुध बिन अवर ना दीसे दो जहानां कोईआ। तुध बिन अवर ना दीसे होर, होका तेरे नाम सुणाया। तेरे हथ्थ धुर दी डोर, दूजा संग ना कोए निभाया। तेरा लेखा तोर मोर, मोर तोर तेरे विच समाया। कलयुग वेख अन्ध घोर, नव नौ चार अन्धेरा छाया। जिस रविदास ढोए ढोर, सो रविदास तेरा साथ रखाया। कर किरपा दुआर इक्को खोल्ह, चार वरन रहे सरनाया। धुर दा बोल अगम्मी बोल, सच सुनेहड़ा इक जणाया। नाम कंडे अगम्मी तोल, तोला बण के बेपरवाहया। डूंघी भँवरी बण के फोल, पड़दा दूई द्वैत लाहया। जन भगतां वस कोल, क्यों दूर दुराडे मुख छुपाया। सुरती शब्दी आ के मौल, मौला आपणी करनी दे प्रगटाया। कर प्रकाश उपर धौल, धरनी दर्द दुःख वंडाया। गोबिन्द कर के गया कौल, इकरार तेरे नाल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाया। सचखण्ड निवासी तेरी ओट इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। अबिनाशी करते लेखा लिख, तेरा लिख्या ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण भिख, खाली झोली रहे वखाईआ। तुध बिन दूजा कोई ना पए दिस, दहि दिशा नैण उठाईआ। चारों कुण्ट जगत रस फिक्क, अमृत धार ना कोए वहाईआ। मन वासना सके कोई ना जित, साध सन्त रहे कुरलाईआ। बिन गोबिन्द किसे दा बणयो आप ना पित, पूत गोद ना कोए उठाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार समझाईआ। सच सुहञ्जणी मौले रुत्त, रुतड़ी आपणे रंग महकाईआ। निरगुण आपणी धारों उठ, तैनूं जन्मे कोई ना माईआ। जन भगतां आ के पुच्छ, जो बैठे तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग बूटा रिहा सुक्क, हरा सिंच

ना कोए कराईआ। जन्म जन्म दे विछड़यां लग्गा दुःख, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। तेरे प्यार दी इक्को भुक्ख, दूजी तृष्ना ना कोए जणाईआ। आ के वेख उन्हां मुख, जो मुख मुखड़े विच्चों सालाहीआ। निर्धन सरधन गोदी चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर तेरे मंग मंगाईआ। घर मंगी मंग तेरे निरँकार, बीस बीसा खुशी मनाईआ। लिख्या लेख पूरा कर विच संसार, वड संसारी तेरी सरनाईआ। हउँ बाले नढ्ढे मूर्ख मुग्ध गंवार, तूं शहिनशाह पातशाह सोहबत तेरी इक्को नज़री आईआ। अल्फ़ ये तेरे दर ना कोई दरकार, नुक्ता नजर कोए ना आईआ। मुक्ता होए रिहा ख्वार, होड़ा टिप्पी तेरी चरण सरनाईआ। निरगुण सरगुण आदि जुगादी धुर दा जोड़ा, बिन जोड़ी जगत जोत ना कोए रुशनाईआ। पिता पूत बांका छोरा, गोबिन्द अकाल पुरख पुरखोतम रूप वटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति सति सति तेरी लोड़ा, सति सतिवादी तेरी धार तेरे विच्चों नज़री आईआ। भगत भगवान बणा जोड़ा, जोड़ी आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे जगाई अलख, अलख अगोचर तेरी सरनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। किरपा कर पुरख समरथ, समरथ तेरी शरनाईआ। दरस दिखा हो प्रतख, मेहरवान आपणी मेहर नज़र टिकाईआ। जन भगतां दे आपणी अक्ख, दोए लोचण पन्ध मुकाईआ। कलयुग खेड़ा कर भट्ठ, भठयारा इक्को अग्न तपाईआ। सच दवारा खोल्ह हट्ट, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। धुर दा मार्ग आपणा दस्स, गुर गोबिन्द ढहि पए सरनाईआ। चार वरन दे के आया मत्त, मता तेरे नाल पकाईआ। पुरख अकाल चला रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। पन्ध मुका नट्ठ नट्ठ, दो जहान चरणां हेठ टिकाईआ। कर प्रकाश घट घट, निरगुण नूर तेरा रुशनाईआ। जन भगतां पूरी कर आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। निरगुण हो के दे साथ, सरगुण सगला संग निभाईआ। सदा सुहेला वस पास, विछड़ कदे ना जाईआ। लहिणा चुका ज़ात पात, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। लेखा चुक्के मनमति नार कमज़ात, कुलखणी घर रहिण ना पाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। प्रीतम हो के कर बात, बातन आपणी गुफ्त सुणाईआ। शुनीद रहे ना कोई रात, दीद तेरा नूर रुशनाईआ। नज़री आ इक इकांत, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। सच बणा सति जमात, जुमला अक्खर इक पढ़ाईआ। लेखा लिख कलम दवात, लेखा चुक्के कूड़ी शाहीआ। तेरा मुरीद मुर्शद ना पाए वफ़ात, फ़ातया अन्त ना कोए पढ़ाईआ। धुर दा दे आबे हयात, हयाती हयाती विच्चों बदलाईआ। कलमा दस्स कायनात, कलाम इक्को इक समझाईआ। नूरी चमके आफ्ताब, सच सुच्च होए रुशनाईआ। जलवा दिसे इक महिराब, महिबूब इक्को इक वड्याईआ। जिस दा

ईसा मूसा मुहम्मद लैंदा रिहा ख्वाब, सो ख़ालस आपणा खेल दे समझाईआ। ग़रीब निमाणयां बण अहिबाब, रबाब साची तन वजाईआ। तैनूं झुक झुक सजदा करीए आदाब, अदल तेरा इक्को नज़री आईआ। धुरदरगाही हक़ ज़नाब, हकीकत तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर असीं झगड़े करदे रहे फ़साद, मज़्ब दीन वंड वंडाईआ। तेरी किरपा वेखीए लख चुरासी तेरा बगीचा बाग, बागवान इक्को नज़री आईआ। तेरे नेड़े हो के तेरा सुणया राग, तेरी धार इक्को इक शनवाईआ। धन्न भाग तूं खोल्ही साडी जाग, आलस निंद्रा दिती मिटाईआ। निरगुण हो के पकड़ी वाग, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गृह मन्दिर जगदा वेख्या इक्को चराग़, शमां दीपक सके ना कोए बुझाईआ। असीं सारे कहि के आए परवरदिगार वाहिद इक्को गॉड, राम रहीम इक्को नज़री आईआ। कर किरपा मेहरवान जन भगतां नाल कर आपणा लाड, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। तेरी रचना किसे ना वेखी आदि, अन्त तेरा कहिण कोए ना पाईआ। दर तेरे मंगी मांग, मांगत ढहि पए सरनाईआ। कलयुग वरते की आपणा स्वांग, स्वांगी आपणा रूप वटाईआ। नानक गोबिन्द रखी तेरी तांघ, आसा विच ध्यान लगाईआ । मुला मसायक देंदे तेरी बांग, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। नौ सौ नड़िनवें नदी चढ़ाउँदी तेरी कांग, समुंद सागर लहर लहर नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरी चरण धूढ़ी साची मंग मंगाईआ । चरण धूढ़ी दे ख़ाक, ख़ालक तेरी सरनाईआ। बेऐब खुदाई पाकी पाक, पतित लए तराईआ। तेरे हथ्थ सर्ब नज़ात, मेहरवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा लेखा लिखे ना कोई लुगात, ज़ेर ज़बर कहिण किछ ना पाईआ। तेरे हथ्थ साडा मुफ़ाद, मुफ़लस बैठे सीस झुकाईआ। कर किरपा कर अगाज़, गर्ज़ सब दी वेख वखाईआ। तेरे अन्दर साडा राज़, तुध बिन समझ कोए ना पाईआ। हउँ दर तेरे मुहताज, मांगत मंगण इक्को दर आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, जिस मिलयां तृष्ना रहिण ना पाईआ। श्री भगवान हो मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा भरो पिछला परवाना, बिन अक्खरां दए वखाईआ। जिस दा लोकमात ना मिले निशाना, सो सचखण्ड निवासी आपणी पट्टी आपणे उते लिखाईआ। जिस दा देवे ना कोई ब्याना, मिसल सके ना कोए समझाईआ। सो खेले खेल श्री भगवाना, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी दो इक, एकँकार आप जणाइंदा। दो जहाना लेखा लिख, दो इक आपणी गंढु पुआइंदा। दो इक दा साचा हित्त, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। इक दो दा बण के पित, पतिपरमेश्वर रूप वटाइंदा । दो इक दा लेखा लए नजिठ, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दर दुआर हरि करतार शब्द इशारे नाल समझाइंदा। शब्द इशारा देवे एक, एका हथ्थ वड्याईआ। बीस बीसा जिस दी रखदे आए टेक, सो टेक दए बणाईआ। जिस कारण निरगुण बदलया भेख, सो भेख दए समझाईआ। जिस मार्ग दा लिखदे आए लेख, सो मार्ग दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी आप कमावेगा। प्रभ आपणी खेल रचावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आसा पूर करावेगा। जुग चौकड़ी दो जहान लेखा वेख वखावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दित्ता ब्यान, आसा सब दी पूर पूरी आस आप करावेगा। लेखा जाण विच जहान, जागरत जोत डगमगावेगा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठावेगा। दूआ सिफ़रा कर परवान, एका आपणा रंग चढ़ावेगा। दो इक दा धर्म विधान, वाधा इक्को इक समझावेगा। जिस दा समझ ना सके कोई ब्यान, सो वेद कतेब आपणे लेखे लावेगा। सच दुआरे बण हुक्मरान, सचखण्ड निवासी साची कार कमावेगा। अमाम मैहन्दी नौजवान, अमला आपणा वेख वखावेगा। अमला पीर पैगम्बर सर्ब बण जाण, हकूमत सब दे सीस टिकावेगा। शहिनशाह हुक्मरान, हाकम इक्को इक नज़री आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी कार कमावेगा। पुरख अकाल वेख वखावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। निरगुण सरगुण रंग रंगावेगा। भगत भगवान जोड़ जुड़ावेगा। जगत निशान इक झुलावेगा। सच निज़ाम इक बणावेगा। नेहकर्मी आपणा कर्म कमावेगा। धुर दा धर्म इक समझावेगा। बरन अठारां डेरा ढावेगा। चार वरन पन्ध मुकावेगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी कार कमावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप वखावेगा। धुर दा रच के सच सुअम्बरा, नारी कन्त जोड़ जुड़ावेगा। कूड़ी क्रिया मेट अडम्बरा, साचा मार्ग इक वखावेगा। मन वासना मेटे बन्दरा, दहि दिशा ना उठ उठ धावेगा। बजर कपाटी तोड़ जन्दरा, घर मन्दिर इक सुहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आपणे हथ्थ रखावेगा। साची करनी आप दृढ़ावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सद्द कोल बहावेगा। नौ नौ हद्द आपणी वंड वंडावेगा। भगत सुहेले सज्जण सद्द, सदके वारी घोली घोल घुंमावेगा। आपणी करनी विच्चों दे के अद्ध, अधिकारी आपणे नाल मिलावेगा। जो रसना जिह्वा सोहँ ढोला गाउण छन्द, तिन्हां संसा रोग चुकावेगा। नाम अगम्मी चाढ़ रंग, काया चम्मी आप सुहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा पूर करावेगा। साचा लेखा पूर करावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप वखावेगा। श्री भगवान

हो मेहरवान, दीन दयाल दया कमावेगा। छब्बी पोह दिवस महान, वीह सौ वीह बिक्रमी कर परवान, परवाना सब दे हथ्थ फड़ावेगा। भगत भगवन्त मिल के ढोला गाण, सन्त साजन सीस झुकाण, झुकया सीस गोद टिकावेगा। गुरमुख गुरसिख दे के माण, नाता तोड़ जीव जहान, जागरत जोत इक जगावेगा। सच दुआरे कर महमान, नाम निधाना देवे दान, तोहफ़ा सब दी झोली पावेगा। चरण धूढ़ कराए इश्नान, काग हँस रूप बण जाण, सोहँ माणक मोती चोग चुगावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण कर ध्यान, निगह निगह इशारे नाल लगावेगा। जिस इक्की दा इक विच्चों मिले निशान, सो इक्की इक्को घर दसावेगा। जिस इक्की विच्चों सिक्खी होए प्रधान, सो सिक्खी सिखां झोली पावेगा। जो गोबिन्द पुरख अकाल माछीवाड़े सूलां सेज उते लिखी चिट्ठी, सो सारी फोल सुणावेगा। एहो खेल प्रभू दी अणडिठी, अणडिठड़ी कार कमावेगा। जिस दी कोई वार ना जाणे थिती, घड़ी पल ना वंड वंडावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची खेल आप रचावेगा। उह चिट्ठी जिस दा नहीं कोई अक्खर, अक्खरां नाल ना बणत बणाईआ। उह चिट्ठी जिस दा नहीं कोई पत्र, पात्र नज़र कोए ना आईआ। उह चिट्ठी जिस दी नहीं कोई सतर, हरफ़ हरूफ़ ना वंड

वंडाईआ। उह चिट्ठी जिस दी कोई ना जाणे सधर, सदमा सदका दोवें समझ ना पाईआ। उह चिट्ठी जिस दे गोबिन्द लग्गा मगर, भज्जे वाहो दाहीआ। उह चिट्ठी जिस विच पुरख अकाल लग्गी लग्न, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। उह

चिट्ठी जिस नाल छब्बी पोह गुरमुख दीवे जगण, दीपक दीपक नाल करे रुशनाईआ। उह चिट्ठी जिस नाल दो जहानां बुझे अग्न, तत्ती अग्ग ना लागे राईआ। उह चिट्ठी जिस नाल इकीआं अग्गे इकीआं पिच्छे पुरख अकाल पाउणा सगन, सगन समग्री दए लुटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जन भगतां वल वेख हस्सण, हस्स हस्स खुशी मनाईआ। जिन्हां श्री भगवान आया मार्ग दस्सण, दहि दिशा छड्ड लोकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर आया बज्झण, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां आया पड़दे कज्जण, सच दुशाला हथ्थ टिकाईआ। प्रेम प्रीती आया मंगण, बण भिखारी फेरा पाईआ। छोटयाँ वड्डुयां बाल्यां बुड्ढुयां नौजवानां चाढ़े रंगण, ललारी इक्को रूप वटाईआ। जिस नूं कैहन्दे मोहण मूर्त गोपाल मदन, मध सूदन सूरत विच रखाईआ। सुहाउण आया भगतां अंगण, आप आपणा फेरा पाईआ। लेखे लाए जिस रविदास चुराया कंगण, कंगण रविदास रविदास कंगण रविदास विच्चों आपणा रूप नज़री आईआ। छब्बी पोह वीह सौ वीह बिक्रमी इक्को वार करा के आपणा भजन, अग्गे भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुरमुखो गुरसिखो राए धर्म लाड़ी मौत जमदूत किसे कोई ना आवे सद्दण, पहरेदार इक्को सतिगुर नज़री आईआ। बाहों फड़ के सचखण्ड तुहानूं आपे जाए छड्डण, राह विच विष्न ब्रह्मा शिव सारे सीस निवाईआ।

सचखण्ड दवारे बहि के सन्त सुहेले सारे हस्सण, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मनमुखां कोलों आया नट्ठण, गरुमुखां पल्लू रिहा फड़ाईआ।

✻ २६ पोह २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✻

भगत भगवान ना जाए विछड़, प्रभ विछड़े लए मिलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रखदा आया फ़िकर, फिकरां विच कोटन कोटि काल बिताईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणदा आया मित्र, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां अन्दर करदा आया ज़िकर, खाणी बाणी ढोला राग सुणाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चढ़दा आया चोटी सिखर, सच दवारे सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धारों आया नितर, जोती जोत नूर रुशनाईआ। कोझे कमले ग़रीब निमाणे गले लगाए भरया चिक्कड़, दुरमति मैल आप धुआईआ। एथे ओथे दो जहान बण के साचा पिता पितर, पूत सपूते लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जगत विछोड़ा दए मिटाईआ। जगत विछोड़ा करे दूर, दूर दुराडा दया कमाइंदा। परम पुरख प्रभ हाज़र हज़ूर, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार खेल खलाइंदा। कोट जन्म दे कोटन कोटि कर मुआफ़ कसूर, दर मंज़ूर आपणे लेखे लाइंदा, जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, सो जन भगतां आसा मनसा पूर कराइंदा। सर्ब कला प्रभ हो भरपूर, भगत सुहेले आपणे रंग रंगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगां मंगदे गए ज़रूर, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे इक्को नूर, दूजा चन्द ना कोए चमकाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च प्रीती इक्को इक रखाइंदा। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, ग़रीब निमाणे आपणे संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल नेड़े दूर, दूर नेड़ा गुरमुख काया अन्दर आपणा घर वसाइंदा।

धुर दी चिट्ठी करे फरयाद, अणडिठड़ा हाल सुणाईआ। सूलां सेज सत्थर आया याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ। किरपा करी ग़रीब निवाज़, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी चुक्की मणयाद, लेखा सब दा पूर कराईआ। निरगुण हो के रखे लाज, जोती जाता वड वड्याईआ। दो जहानां रच के काज, हरि करता वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सच सुनेहड़ा मार दर आवाज, धुर दी धार आप जणाईआ। वरन बरन ज़ात पात गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाउँदा रिहा समाज, सिख्या लोकमात समझाईआ। कलमा नबी रसूल दस्सदा रिहा कायनात, परवरदिगार वड्डी वड्याईआ।

निर्मल निरवैर नीर दस्सदा रिहा आबेहयात, अमृत रस रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। धुर दी चिट्ठी खोल्हे खुलासा, बिन अक्खरां दए समझाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दिसदा खेल तमाशा, सो साहिब बेपरवाहीआ। नित नवित्त पूरी करनेहारा आसा, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे चरण करदे गए भरवासा, सो साहिब आपणी दया कमाईआ। निर्मल नूर ज़ाहर ज़हूर हाज़र हज़ूर जोती जोत करे प्रकाशा, पंज तत तन नजर ना आईआ। भूपत भूप शाह पातशाह राज राजान बणे धुर दा राजा, रयीअत आपणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धुर दी चिट्ठी कहे मेरा संदेस, कलयुग समझ कोए ना आईआ। इक्को जाणे नर हरि नरेश, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। कागज़ कलम उते गोबिन्द लिख्या कोई ना लेख, शाही रंग ना कोए चढ़ाईआ। नेत्र लोचण नैण कोई ना सके पेख, रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोए ना गाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के चरणी पढ़ के कोई बुज्झ ना सके भेत, पड़दा सके ना कोए खुल्हाईआ। पतिपरमेश्वर दीन दयाल हरि गोपाल तेरी समझ ना आवे खेड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। चिट्ठी कहे मेरा लेख अनोखा, दो जहानां समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाल गोबिन्द इक्को दित्ता मौका, माछूवाड़ा इक सुहाईआ। छप्पर छन्न ना मन्दिर कोठा, गुरुदुआर ना कोए वखाईआ। गोदी दिसे ना उहदे पोता, फड़ उँगली ना कोए लगाईआ। इक्को नूरी मेल निर्मल जोता, जोती जोत करे रुशनाईआ। पुरख अकाल चरणी लाया गोता, समुंद सागर डेरा वखाईआ। करी पुकार बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द होंटा, अन्तर अन्तर अवाज़ लगाईआ। तेरा भाणा आदि जुगादि किसे ना रोका, एथे ओथे सके ना कोए मिटाईआ। जींवदयां प्रभ मेरे प्रभ कीता मोछा, आपणी मुश्किल हल्ल कराईआ। दर दवारे मंगां मार्ग सौखा, औखी घड़ी ना कोए जणाईआ। तेरा दरस छिन भंगर प्रभ जू बहुता, मेहर नज़र तेरी इक्को मोहे भाईआ। तेरी किरपा चरणां हेठ दबाया चौदां लोका, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। तेरे नाल इक्को मेरा रोसा, सच सुनेहड़ा दयां घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वड्याईआ। साची चिट्ठी कहे मज़मून, दस दस्मेश लिख्त लखाईआ। जिस दा समझ सके ना कोए कानून, कलम कागज़ हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस दा नुक्ता ना कोई नून, अल्फ़ ये ना वंड वंडाईआ। उस दा इक्को इक ज़नून, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। उस दे दर होए ममनून, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। गोबिन्द कहे मेरा लेख अवल्ला, अक्ल विच किसे ना आईआ। दो जहान हथ्थ ना आवे पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए पवाईआ।

१७६ १६

सच संदेसा इक्को घल्ला, अन्दरे अन्दर अवाज़ सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जोती शब्दी धार रला, रल मिल आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मेरी चिट्ठी ओह, जिस नूं वाचन वाला नज़र कोए ना आईआ। जिस दा लेखा सके कोई ना पोह, काग़ज़ पाड़ ना परे सुटाईआ। जिस नाल हथ्थ सके ना कोई छोह, पंज तत ओट ना कोई तकाईआ। जिस नूं पढ़ के निरगुण इक्को तेरा आवे मोह, खुशीआं नाल नरसां सथ्थ विछाईआ। जिस नूं सुण के तेरे नाम दा मिले ढोआ ढोअ, इक्को नाद वज्जे वाहो दाहीआ। जिस नूं पेख पेख दो जहानां होवे लोअ, रोशनी इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर तेरे वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द कहे मेरी चिट्ठी लेख, बिन अक्खरां अक्खर बणाया। जिस विच मेरा अगम्मड़ा भेख, ततव तन ना कोए हंढाया। जिस दा रूप ना कोई रेख, शाकार नज़र कोए ना आया। जिस दा इक्को इक हेत, हितकारी जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराया। चिट्ठी कहे मेरा लिखणहार गोबिन्द, बिन लेखा लेख बणाईआ। जिस दे नाल मेरी मिटी चिन्द, चिन्ता कोई रहिण ना पाईआ। मैं कोल जावां गुणी गहिंद, गहर गम्भीर दर्शन पाईआ। पुरख अकाल उठ वेख आपणी बिंद, जो सूलां सेज रिहा हंढाईआ। जिस दी प्रेम प्रीती धार सिन्ध, सागर कोटन कोटि मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण इक खुल्हाईआ। चिट्ठी कहे मैं जावां दर, घर साचे फेरा पाईआ। लै के आवां धुर दा वर, ख़ाली झोली इक भराईआ। पुरख अकाल कोलों ना जावां डर, निउँ निउँ चरणी लागां पाईआ। दोवें संभाल लवां फड़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल किरपा कर, करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द कहे मैं सच लिखाउँदा हां। बिन काग़ज़ कलम लेख जणाउँदा हां। अन्तर अन्तर संदेस सुणाउँदा हां। साचा मन्दिर इक वसाउँदा हां। साढे तिन्न हथ्थ कन्दर डेरा लाउँदा हां। आदि जुगादि दा वज्जा जन्दर, प्रेम प्रीती नाल तुड़ाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे हाल जणाउँदा हां। दर तेरे हाल जणावांगा। बिन लेखा लेख पुचावांगा। चार जुग दा केस, बण दस्मेश तेरे अग्गे रखावांगा। तूं दाता इक नरेश, नर हरि तेरी ओट तकावांगा। सिँघ तक्क मेरे वल वेख, मैं तेरा ध्यान आपणे विच टिकावांगा। तेरे प्रेम विच खेल खेड, बाज़ी जित हार कदी ना जावांगा। जे सुत बणा के दित्ता भेज, पूत सपूता हो के सेव कमावांगा। जे तूं मैथों ओहले कीता भेद, उच्ची कूक रो रो रौला पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, जिस विच तेरा रंग रंगावांगा। गोबिन्द चिट्ठी लिखी

अपार, अक्खर नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक प्यार, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। तेरे पिच्छे वार दित्ता परिवार, परवरदिगार तेरी धार जणाईआ। तन लाह हार शृंगार, सत्थर सूलां सेज हंढाईआ। खुल्ह्ड़े केस वेख दातार, दस दस्मेश रिहा जणाईआ। तेरी औखी घाटी विच संसार, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर गए हार, मुरीद मुर्शद देण दुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रोवण ज़ारो ज़ार, गीता ज्ञान रही कुरलाईआ। अञ्जील कुराना कोई ना पावे सार, मसला हल्ल ना कोए वखाईआ। मैं नेत्र वेख्या आ के तेरा खेल सांझे यार, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ढ धूंआँधार, ख़ाली बुत्त सिल पूजस मनसा पूर ना कोए कराईआ। मैं इक्को तेरा मंगां दीदार, दीद तेरी नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साची चिट्ठी तेरे वल्ल बिन कासद आप पहुंचाईआ। ना कासद ना कोई हल्कार, चिट्ठी रसाइण नज़र कोए ना आईआ। ना सिपाही ना प्यादा ना अस्वार, ना कोई भज्जे वाहो दाहीआ। ना कोई पांधी पन्ध कर उतरे पार किनार, मंज़ल मंज़ल डेरा कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाईआ। चिट्ठी अन्दर लेख अगम्म, गुर गोबिन्द आप लिखाईआ। तेरा नूर तेरा चम्म, तन माटी तेरी वड वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा भन्न, घड़न भंनणहार तेरी सरनाईआ। मैंनूं फेर किसे ना कहिणा गुजरी चन्न, गुजरया हाल तैनूं दयां सुणाईआ। तेग बहादर इक्को वार पिता ल्या मन्न, मस्तक जगत विच टिकाईआ। अनन्द पुर खेड़ा वसाया छप्पर छन्न, दोंह दोंह हथ्थी सेव कमाईआ। दूतां दुष्टां दित्ता डंन, चिला तीर कमान टंक उठाईआ। अन्तिम तेरे चरणी मंगां मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। दूजी वार नीले फेर ना कसां तंग, वाग हथ्थ ना कोए टिकाईआ। इक्को तेरे लग्गां अंग, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं गावां तेरा छन्द, राग नाद इक्को इक सुणाईआ। तूं मेटीं मेरा पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गोबिन्द कहे मेरी इक्को आस, प्रभ तेरे अग्गे रखाईआ। मात पित पूत कोई ना दिसे पास, जो तेरा तेरी झोली दित्ता टिकाईआ। तेरे मिलण दी इक्को ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणी रिहा समझाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी पैंदी वेखां रास, गोपी काहन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवीं सच्चा वर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सच संदेसा इक सुणाउँदा हां। पुरख अकाल चरणी सीस निवाउँदा हां। जगत जगदीश तेरे दर तों मंग मंगाउँदा हां। तेरा खेल आदि जुगादि अतीत, दरगाह साची वेख सोभा पाउँदा हां। तेरे नाल लग्गे प्रीत, प्रीतम इक्को इक ध्याउँदा हां। तेरा लेखा ऊँच नीच, घर चार कुण्ट तेरा रंग रंगाउँदा हां। निरगुण बणा

सच्चा मीत, मित्र प्यारे ओट तकाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाउँदा हां। मेहर नज़र उठा प्रभ ठाकर, आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द तेरी वाची पात्र, बिन पत्रयों पत्रा आप उलटाईआ। प्रगट होवां तेरी खातर, ख़तरा सर्ब चुकाईआ। चल के आवां तेरे पातण, पत्तण डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी जो मेरे नाम दा देवण भाषण, तिन्हां भाषा दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। सच स्नेहड़ा दए अकाल, अकल कला वड्याईआ । सुण मेरे लाडले लाल, हरि लालन रंग रंगाईआ। निरगुण हो के बणां दलाल, सगला संग निभाईआ। मुर्शद हो के पुच्छां हाल, मुरीदां झोली पाईआ। शब्दी हो वजावां ताल, दो जहानां राग अल्हाईआ। निरवैर हो के वसां नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। प्रितपालक हो के करां भाल, दो जहानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक अल्हाईआ। सच संदेसा सत्थर सेज, गोबिन्द सरवण सुण खुशी मनाईआ। पुरख अकाल दित्ता भेज, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। निरगुण हो के खेडां खेड, सरगुण दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सिर मेरे प्रभ रखीं हथ्थ, एह तेरी वड्याईआ। इक्को वार देवां दस्स, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ। तेरा मेरा निभे साथ, सगला संग रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी गावां गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेरयां सिखां वल वेखीं झाक, मेहर नज़र उठाईआ। एन्हां वरोलीं ना विच ख़ाक, माटी ख़ाकी लेखे लाईआ। मेरी एन्हां विच रल गई ज़ात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नज़री आईआ। मनमति नाता तुटे कमज़ात, गुरमति इक्को इक समझाईआ। ढहि सरनाई देवां आख, आख़र आपणा हाल सुणाईआ। तूं साहिब कमलापात, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ । इक्को आसा तेरे दरबार, गुर गोबिन्द आप जणाइंदा। निरगुण आवें विच संसार, निरवैर आपणा खेल कराइंदा। मेरे गुरमुखां लैणा उठाल, सोया कोई रहिण ना पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक चमकाइंदा। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा । आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद तेरी ओट रखाइंदा। मैं बाला नढ्ढा तेरा बाल, बालक गुरमुख तेरा रूप इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे झोली डाहइंदा। तेरे दर ते झोली डाह, प्रभ इक्को मंग मंगाईआ। निरगुण आवीं बण मलाह, बेड़ा मेरा कंध उठाईआ। मेरे अन्दर वड़ के करीं सलाह, बाहरों समझ सके ना कोए राईआ। मिल के सेवा तेरी लवां कमा, दर दर घर घर फेरा

पाईआ। लख चुरासी विच्चों सरसा विछड़े लवां जगा, जागण वेला इक्को इक समझाईआ। आपणा सच सुनेहड़ा इक समझा, पड़दा उहला रहे ना राईआ। पुरख अकाल दित्ता गा, धुर दा ढोला इक जणाईआ। निरगुण सरगुण गोबिन्द तेरा दूआ दित्ता बणा, सिफ़रा आपणा रूप वटाईआ। सिफ़रा दूए अग्गे अंक दित्ता जुड़ा, दस गुणां मिली वड्याईआ। बीस तेरा नाम रखा, बीस आपणी धार चलाईआ। जिस सिफ़रे विच्चों प्रगट होए बेपरवाह, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। सो बीस बीसा लोकमात वार थित दए वडया, वड्डा आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। उच्ची कूक सब नूं दए सुणा, कलयुग अन्त श्री भगवन्त बेपरवाह आवे वाहो दाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी मेरा लहिणा देवे पूर करा, लेखा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द संदेसा दे जग्ग, पुरख अकाल जणाईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, कल कल्की वेस वटाईआ। किसे नज़र ना आवे जगत अक्ख, दोए लोचण देण दुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कोई ना सके लभ्भ, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द सुणाए धुर फ़रमान, सच दवारे खुशी मनाईआ। सूलां सेज होए परवान, दर मिली माण वड्याईआ। जिस दवारे पुरख अकाल मिल्या आण, आप आपणा हुक्म मनाईआ। अग्गे दस्स के धुर फ़रमान, सच सुनेहड़ा इक समझाईआ। निरगुण हो के आवां विच जहान, जोती जामा वेस वटाईआ। तेरी काया करां परवान, साढे तिन्न हथ्थ रंग चढ़ाईआ। अन्दर वड़ां हो जवान, बल तेरे नाल गंढाईआ। ढोला गावां बेज़बान, राग तेरा नाद वजाईआ। लेखा जाणा दो जहान, पुरी लोअ खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी पर्दा लाहवां आण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। साचा मार्ग दस्सां इक्को हो मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जो गोबिन्द तेरी प्रीती पिच्छे होए कुरबान, तिन्नां आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तेरी वड्याई मोहे मंज़ूर, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि रहें हज़ूर, ज़ाहर इक्को नज़री आईआ। मेरा भण्डारा रखीं भरपूर, अतोट अतुट नखुट कदे ना जाईआ। आपणा बख्शीं साचा नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवीं माण वड्याईआ। देवीं वड्याई ठाकर स्वामी, साहिब तेरी ओट तकाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरी कहाणी, गुर अवतार पीर पैगम्बरां गाईआ। सरगुण हो के बोली बाणी, निरगुण तेरा नाम ध्याईआ। जगत सरोवर बणया पाणी, तेरी धूढ़ वज्जे वधाईआ। कर किरपा मेरी अर्ज़ करीं परवानी, बेनन्ती तेरे दर शनवाईआ। तेरा महल अटल उच्च आलीशानी, अज़ीम रुतबा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१८०
१६

किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ। तेरा लेखा चिट्ठी ख़ाता, हरि ख़ालक आप जणाइंदा । गोबिन्द वेख सचखण्ड अहाता, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। ना कोई दिवस ना कोई राता, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ज्ञान ध्यान ना कोई दृढ़ाइंदा। ना कोई पुत्तर ना कोई नाता, निरगुण रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई सज्जण ना कोई साका, सैण प्यार ना कोए वखाइंदा। ना कोई किवाड़ ना कोई ताका, कुण्डा फड़ ना कोई लाइंदा। ना कोई पिता ना कोई माता, ना कोई बालक गोद सुहाइंदा। ना कोई मज़्ब ना कोई ज़ाता, दीन नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग अन्तिम तेरी पूरी करां आसा, आसा तेरे नाल मिलाइंदा। इक्को ढय्या रख भरवासा, तेरी नईया तेरे विच्चों पार कराइंदा। चार जुग दी वेख शाख़ा, पत टाहणी फोल फुलाइंदा। तेरा अमृत प्रेम प्रीती धुर दा बाटा, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाइंदा । तेरा सवा सेर इक्को वट्टे तुल्या आटा, दूजा तराजू नज़र कोए ना आइंदा। तेरा वेख चीथड़ पाटा, बाज़ हथ्थ ना सोभा पाइंदा । नीला छड्ड के बैठा रासां, शाहसवारा ख़ाली हथ्थ धराइंदा। तूं मन्नया मेरा आखा, छोटे बच्चयां नीहां हेठ दबाइंदा। मैं बणया तेरा बापा, पिता पुरख अकाल नाउँ धराइंदा। तूं मेरा जपया जापा, मैं तेरा रूप नज़री आइंदा। कलयुग अन्तिम हो के आवां आका, अकल कल आपणी खेल खलाइंदा। तेरे सिखां लहिणा चुकावां बाका, बाकी आपणी झोली पाइंदा। पांधी बण के मुकावां वाटां, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। अन्दर वड़ के मारां ठाठां, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। सच दवारा खोल्हां हाटा, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। ओथे कोई ना दिसे आदि शक्ति जोत ललाटा, नूरी जलवा नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण हो के बणां राखा, चोरी चोरी सेव कमाइंदा। दो हज़ार बिक्रमी बदल के आपणा पासा, पासा तेरा फेर उलटाइंदा। तूं वेखीं खुशीआं नाल तमाशा, बीस बीस तेरा रंग रंगाइंदा। दो हज़ार इक बिक्रमी खोल्ह के तेरा खुलासा, सचखण्ड दुआर आप जणाइंदा। दो हज़ार दो बिक्रमी तेरा खोल्ह दए भरवासा, दो हज़ार तिन्न गंढ पवाइंदा। दो हज़ार चार बण समराथा, जोबन नूरा आप दरसाइंदा। दो हज़ार पंज जाणे तमाशा, दो हज़ार छे तेरी छाल इक लगाइंदा। दो हज़ार सत्त दे साता, सति सतिवादी हुक्म मनाइंदा। तेरा लेखे लग्गे आखा, आख़र आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। दो हज़ार सत्त करे प्यार, गोबिन्द शब्दी दए वड्याईआ। तेरा सच्चा घर त्यार, तेरी उंगली दए लगाईआ। जिस दी खेल समझ सके ना कोई संसार, संसारी सार किसे ना आईआ । सवरन सवरन विच्चों उठाल, सरन आपणी लए लगाईआ। लेखा चुक्के ध्रू बाल, बालक आपणी गंढ पवाईआ। दो हज़ार अट्ठ बण दलाल, सिँघ मनी खुशी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ ।

दो हज़ार नौ नौ दुआर, हरि करता दया कमाईआ। अन्दर वड़ के कर प्यार, दुरमति मैल धवाईआ। साफ़ करे आप करतार, कूड़ा हूंझे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरी साची बणत दए बणाईआ। गोबिन्द बणत बणाए तेरी, तरह तरह समझाइंदा। वीह सौ दस बिक्रमी पाए फेरी, फेरा आपणे नाम लगाइंदा। प्रेम प्यार दी कर के चेरी, चेला गुरू रूप वखाइंदा। मिटी ख़ाक वेखे ढेरी, ख़ालक आपणे रंग रंगाइंदा। कीती कहाणी पिछली वेरी, वेरवा अग्गे आप समझाइंदा। सोलां मग्घर कर देरी, शाह सुल्तान हुक्म सुणाइंदा। तेरे भगतां लई त्यार कर के बेड़ी, तेरा बेड़ा जगत सागर विच रखाइंदा। एहो प्रभ दी हेरी फेरी, भरम भुलेखे सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। वीह सौ दस बिक्रमी सोलां मग्घर, सो साहिब खुशी मनाईआ। तेरी पिछली पूरी करे सधर, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। गुरमुखां लई मार्ग रखे पध्धर, राह विच ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले दए वड्याईआ। छोटा बाला इक मनजीत, सुत तेरे वड्याईआ। पुरख अकाल चलाए रीत, रीतीवान वड्डी वड्याईआ। मिल सखीआं गाए धुर दा गीत, सोहँ राग सुणाईआ। काया कर ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। वसणहारा निरगुण चीत, चेतन सर्ब वखाईआ। सच दवारे पीसण पीस, चक्की नाम चलाईआ। रविदास चुमारे मिल्या मीत, बटवारे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेखे लाईआ। तेरा लेखा लेखे जाए लग्ग, हरि करता आप लगाईआ। साचा दीपक गया जग, दो जहान करे रुशनाईआ। जगत दवारे गया भज्ज, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। सृष्ट सबाई नालों कीता अड्ड, वक्खरी धार चलाईआ। गुरमुख सच्चे सद्द, सिख्या इक समझाईआ। गुरमुख तोरो हस्स हस्स, नेत्र नैण ना नीर वहाईआ। परम पुरख दे चढ़या रथ, रथवाही बणया बेपरवाहीआ। तन तत खेड़ा ना होया भट्ठ, अग्नी भा ना कोए जलाईआ। मिल्या मेल पुरख समरथ, घर साचे वज्जे वधाईआ। श्री भगवान खोली आ अक्ख, इन्द्र दुआर दित्ता वखाईआ। हरिसंगत शब्दी कर इकट्ठ, इक सतारां ख़ुशी मनाईआ। वीह सौ यारां नींह रख, कलयुग जड़्ह रिहा उखड़ाईआ। उन्नी कत्तक हस्स हस्स, हस्ती आपणे विच समाईआ। जगत जगदीशा कर प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पंज पोह हो के वस, पड़दा सब दा रिहा उठाईआ। नौ दवारे कर प्रगट, घर साचे आपणा आसण लाईआ। छब्बी पोह खेल कीती अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्ची देवे वड्याईआ। वीह सौ बारां खुशी ना, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। गोबिन्द तेरा मार्ग ला, पहली चेत्र खेल रचाइंदा। शब्द सुनेहड़ा इक सुणा, लिख लिख पात्र आप घलाइंदा।

वीह सौ बारां रंग रंगा, हाढ़ सतारां जोड़ जुड़ाइंदा। हरिसंगत साचा मेल मिला, विचोला आपणा आप बणाइंदा। धुर दा ढोला इक्को गा, सोहँ राग अल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत आप बणाइंदा। साची संगत वीह सौ बारां, गोबिन्द तेरे नाल बणाईआ। पुरी अनन्द दी वेख बहारा, यार यारां विच रखाईआ। लेखा चुक्कया जंगल उजाड़ां, जूहां विच ना डेरा लाईआ। हथ्थ फड़े ना कोए तलवारा, ख़ंज़र खिच ना कोए चमकाईआ। भथ्था कमंद ना कोए धारा, चिला कमान ना कोए सिखाईआ। नीले करे ना कोए अस्वार, बाज़ हथ्थ ना कोए उडाईआ। गोबिन्द रूप अपार, निरगुण निरवैर दए समझाईआ। कागज़ कलम ना लिखणहार, लेखा लेख ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल करना प्यार, प्रीती आपणे नाल जुड़ाईआ। इक्को बोल सच जैकार, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। तेरा कर सच विहार, शाह पातशाह देवे माण वड्याईआ। वीह सौ तेरां खेल न्यार, राज राजानां रिहा हिलाईआ। साधां सन्तां करे ख्वार, जीवां जंतां आप उठाईआ। राष्ट्रपति दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। कर के खेल आप न्यार, फेर तेरी बणत बणाईआ। वीह सौ चौदां बिक्रमी आई विच संसार, गोबिन्द तेरे तैनूं तैनूं तेरे चरणां सीस निवाईआ। नव खण्ड मंगे बण भिखार, धरनी धरत धवल आपणी आस पूर कराईआ। दो इक दा बणे प्यार, इक्की रूप वटाईआ। इकीआं इकीआं दा बणे सच्चा परिवार, परवरदिगार होए सहाईआ। इक्की इकीआं दए सहार, घर इकीआं आया फेरा पाईआ। जिस दा समझ ना आया किसे किनारा, सो भज्जया वाहो दाहीआ। सम्मत पन्द्रां दए हुलारा, तीर्थ तट्टां अठसठां फोल फुलाईआ। साध सन्त रोंदे वेखे जिउँ रोण कुचज्जीआं नारां, चज्ज अचार नज़र किसे ना आईआ। सुरत शब्द शब्द सुरत किसे ना कोई प्यारा, पीआ प्रीतम ना किसे मनाईआ। गल्लां बातां नाल करन जगत प्रचारा, आत्म पर्चा सके ना कोए पाईआ। चर्चा कर कर थक्के जीव गंवारा, ख़र्चा पल्ले गंढ ना कोए बंधाईआ। काया चरखा किसे कम्म ना आए विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल कराईआ। सम्मत पन्द्रां वेख अठसठ, हरि आपणा खेल रचाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, प्रभ साची कार कमाईआ। इकीआं सिखां दे के वथ, आपणी उँगली रिहा लगाईआ। शब्दी डोरी पाई नथ्थ, शब्दी तन्द नाल जुड़ाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह़ी अक्ख, बाहरों पड़दा रिहा पाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तिन्नां जाए तट्ट, तट किनारा वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पन्द्रां कहे मेरा खेल अपार, दस सत वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल हो दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। गंगा जमना सुरस्ती तिन्ने होईआं खुशहाल, खुशीआं गीत अल्ह़ाईआ। किरपा करी पुरख अकाल, तट आया डेरा लाईआ।

इकीआं सिक्खां दित्ता सिखाल, धुर दी कर पढ़ाईआ । ढोले गावण बेमिसाल, तूंही तूंही राग अलाईआ। माहीगीर बण के पाया जाल, मछली बची कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गंगा कहे जमना भैण, मैं सच सच्च सुणाईआ । औह वेख सानूं आया लैण, जिन साडी बणत बणाईआ। सुरस्ती कहे मेरे शरमाउँदे नैण, अक्ख सकां ना उपर उठाईआ। दो जहानां एहो दिसदा सैण, साक नज़र कोए ना आईआ। तिन्ने कहिण नी वेखो एहदी चरणी गुरमुख बहिण, सानूं मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गंगा जमना सुरस्ती पईआं रो, नेत्र नैण वहाया । वेखो साडा हो के गुरमुखां जोगा गया हो, साडी सार कोए ना पाया। साडे नालों तोड़ के मोह, मुहब्बत ग़रीबां नाल रखाया। एन्हां नूं देवे ढोआ ढो, साडे ख़ाली हथ्थ कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा वेख वखाईआ। तिन्ने रोंदीआं वेख मुटयारां, प्रभ आपणी दया कमाईआ। इकीआं नाल लग्गी बहारा, खुशीआं नाल वज्जी वधाईआ। जिस नीला चोला खद्दर दा दित्ता पहली वारा, तिस कोलों तिन्नां दा माण चुकाईआ। भर के ल्याईआं प्रेम वाली धारा, जल चरणां उते रुढ़ाईआ। खुशीआं नाल दित्ता इशारा, उँगलां नाल समझाईआ। औह वेखो धुर दा लाड़ा, निरगुण दाता नूर नज़री आईआ। जिस दे गिर्द गुरमुख सखीआं लाया अखाड़ा, नच्चण टप्पण वाहो दाहीआ। एन्हां नाल करे प्यारा, अन्दर सुहञ्जणी सेज हंढ्ढाईआ। सानूं देवे ना कोई सहारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। श्री भगवान आदि जुगादि रिहा कुआरा, साचा सगन ना कोए मनाईआ। ओसे वेले अबिनाशी करते दित्ता लारा, हुक्मी हुक्म इक जणाईआ। लै के जाए तुहानूं तुहाढ्ढा लाड़ा, लाड़ी रूप बणाईआ। ख़बरदार रहिणा सर्ब त्यारा, त्यारी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान कर विहारा, सम्मत सोलां खेल समझाईआ। सम्मत सोलां खेल निरँकार, कर किरपा आप कराईआ। हुक्म दित्ता धुर दरबार, दर्शन सिँघ सच समझाईआ। पंज पंज दा खेल न्यार, निरगुण झोली इक भराईआ। सच समग्री करो त्यार, त्रैगुण अतीता दए वरताईआ। पन्द्रां कत्तक खेल अपार, हरि अपरम्पर दए वखाईआ। मस्तूआना मस्त मस्तान, मसला पिछला हल्ल कराईआ। मनी सिँघ मंगया दान, मनसा मनसा नाल रखाईआ। पूरा करे आप भगवान, भगवन देवणहार वड्याईआ । ओन्हां वखाए सच पकवान, भोजन अगणत जणाईआ। नौ सौ नड़िनवे राज राजान, दुआर आवे धुर संदेसा इक सुणाईआ। साची करनी कर परवान, परवाने आपणे विच लिखाईआ। गुरमुख सज्जण सुहेले घर महमान, भोजन इक्को वार वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भण्डारा कर त्यार, अग्गे करे सच विहार, सम्मत

सतारां पहली चेत नेड़े आईआ। पहली चेत आई नेड़े, सम्मत सतारां खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां पए झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रोवण खेड़े, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आए बथेरे, कोटन कोटि रूप वटाईआ। मौसम वांग उड गए बटेरे, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहान वेखे थाउँ थाईंआ। दो जहान होया ख़तरा, ख़ातर-ख़ाह नज़र कोई ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पुकारन पत्रा पत्रा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां जोती नूर मिल्या कतरा, कतरा कतरे विच्चों वरताईआ। आप आपणे विच्चों बैठा रहे वक्खरा, जिस दी सार किसे ना आईआ। किसे नूं पूजण लाया पत्थरां, किसे नूं काग़ज़ां उते सीस टिकाईआ। किसे नूं विच बहाया मन्दिरां, किसे नूं जंगलां विच फिराईआ। आपणा किसे ना वखाया शजरा, हदूद समझ कोए ना पाईआ। गोबिन्द इक्को गाया फ़िकरा, फ़कत तेरी मंग मंगाईआ। मैं लेखा छड्डुया बाज़ां तित्तरां, दर तेरे झोली डाहीआ। तेरा नूर निरँजण तेरे किसे ना चित्रा, चित्रकार नज़र कोए ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। शाह शहिनशाह होए ना किसे मुहताज, लोड़वंद ना कोए अख्वाईआ। आपे जाणे धुर दा राज, दरगाह साची डेरा लाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्त वेख वखाईआ। सचखण्ड दा सच्चा ताज, श्री भगवान बणत बणाईआ। जिस ने सब दी रखणी लाज, पड़दा सब दे सिर ते पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सतारां सीस जगदीश आपणे आप टिकाईआ। सम्मत सतारां गया लँघ, हरि आपणी कल धराईआ। सम्मत अठारां धुर दी मंग, दो हज़ार बिक्रमी रही कुरलाईआ। विभिषण किहा राम चन्द, चन्द राम तेरी सरनाईआ। लंकापती मेरी टुट्टी गंढु, सैनापती तेरी वड्याईआ । जगत औंध गई लँघ, तेरी सेवा ना कोए कमाईआ। मेरा दे संग, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। इक्को मंगां साची मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मेरी तुटी देवीं गंढु, गंढुणहार गोपाल गोसाईंआ। दसरथ सुत किहा तेरी डोर बद्धी तन्द, तार तार नाल गंढुाईआ। चौथे जुग तेरा चाढ़े तैनूं रंग, रंग तेरी समझ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करतार, हरि करता आप कराइंदा । वीह सौ अठारां बिक्रमी खेल अपार, धुर दी धार आप जणाइंदा। जिस खंजर कटार कीता जगत सुधार, सो कटार आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतारा, हरि करता आप कराईआ। वीह सौ उन्नी खेल अपारा, इक नौ जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए सहारा, सिर

१८५
१६

आपणा हथ्थ टिकाईआ। मुस्लिम सुन्नी पार किनारा, मज़्ब दीन ना कोए लड़ाईआ। सचखण्ड दा सच विहारा, सति सतिवादी आप समझाईआ। सचखण्ड दा खोल्ह दवारा, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे लए कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर इकट्ठे, धुर संदेस आप जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी चरणी ढट्ठे, पहली चेत्र खुशी मनाईआ। सारे कहिण साडे मुक्के रट्टे, पिछला लेखा कोए रहिण ना पाईआ। तेरे प्रेम प्यार दे अन्दर रत्ते, रता रंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी शरनाईआ। पहली चेत्र बीस बीस, आए तेरी शरनाईआ। तेरा कलमा तेरी हदीस, तेरे नाम वड्याईआ। तेरा ढोला तेरा गीत, तेरा राग अलाईआ। तेरा मन्दिर तेरी मसीत, तेरा मट्ठ नज़री आईआ। तेरा खेल प्रभ अनडीठ, वेख वेख दरसाईआ। तेरे चरण इक प्रीत, पुरख अकाल सच्ची भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर बैठे मंग मंगाईआ। पहली चेत्र मंग अपार, गुर गोबिन्द इक मंगाईआ। सूलां सत्थर तेरा याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। पूरा कर कौल इकरार, अभुल्ल तेरी वड्याईआ। गुरमुख सज्जण मेरे तार, गुरसिख लै उठाईआ। निरगुण हो के दे दीदार, सरगुण पर्दा लाहीआ। अन्दर वड़ के कर प्यार, प्रेम प्रीती सच हंढाईआ। सक्खीआं गा मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, हरिजन साचे लै प्रनाईआ। मैं वी वेखां आ के विच दरबार, गुर अवतार नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे माण वड्याईआ। सद वड्याई दे माण, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। शाह पातशाह श्री भगवान, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक दिवस महान, सारे बैठे ध्यान लगाईआ। किस बिध हुक्म देवे हुक्मरान, हाकम आपणा हुक्म सुणाईआ। शहिनशाह बणे विच जहान, पातशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह आपणी बेपरवाही विच समाईआ। पन्द्रां कत्तक वेख नज़ारा, गुर अवतार खुशी मनाईआ। गोबिन्द कहे मेरे गुरमुखां कीता प्यारा, प्रीती मेरे नाल निभाईआ। इकीआं सीस बन्ह् दस्तारा, दिवस रैण रूप वखाईआ। सति सति दा सति किनारा, तिन्ने कूटां वंड वंडाईआ। राह दिसे ना कोई विच संसारा, ताकी बंद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी खेल वेख खुशी मनाईआ। इकीआं वेख होए खुश, मिले माण वड्याईआ। उस वेले रहे चुप्प, कहिण कुछ ना पाईआ। श्री भगवान जन भगत तेरे सुत, पिता पुरख इक्को नज़री आईआ। इन्हां कोलों क्यों बैठा लुक, जिहड़े तेरा नाम ध्याईआ। निरगुण धारों आप उठ, निरवैर नूर कर रुशनाईआ। ठाकर हो के स्वामी

तुड्ठ, मेहर नज़र टिकाईआ। बाहों फड़ के गोदी चुक्क, आपणे गले लगाईआ। पिछला पैंडा जाए मुक्क, मुक्के जगत लोकाईआ। अग्गे आवे ना कोई दुःख, राए धर्म ना देवे सजाईआ। उजल होवे मात मुख, गुरमुख मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाईआ। साची करनी हाल मुरीदां, मुर्शद इक्को इक जणाईआ। पन्द्रां कत्तक पीर पैगम्बरां कीतीआं ईदां, बकरीद समझ कोए ना पाईआ। पिच्छे वड्याई मिलदी रही जगत शहीदां, शहादत धर्म हेत लड़ाईआ। हुण प्रेम प्यार दी कटे आपणी हथ्थीं रसीदां, खण्डा सीस ना कोए टिकाईआ। गुरसिख मरे ना कोई मार के चीकां, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। जिस दी गोबिन्द रखीआं उडीकां, सो आया बेपरवाहीआ। वीह सौ वीह तों अग्गे पैण ना देवे तरीकां, डुब्बदे लए तराईआ। माण तोड़ना गुरसिखो तुहाड्डे शरीकां, शिरकत कोए रहिण ना पाईआ। कबाब भुंने सब दा उते सीखां, जो बैठे प्रभ भुलाईआ। दर आयां देवे माण नीचां, नीचों ऊँच बणाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर पीचा, गंढु ना कोए खुल्हाईआ। गुरसिख प्रभ दा बणया जीजा, फड़ बाहों घोड़ी चढ़ाईआ। खुशीआं नाल करे रीझा, गल सोहणे हार पहनाईआ। पिछला वेला सब दा बीता, अग्गे खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीहवीं सदी दए वड्याईआ। वीहवीं कहे मैनूं मिल्या पोह छब्बी, छिबीआं देवे ना कोए लोकाईआ। प्रभ दवारे आई भज्जी, हरिसंगत मिले वड्याईआ। चार जुग जो रही दब्बी, दीन मज़्हबां विच धक्के खाईआ। जिस दा लेखा सुट्टया विच रब्बी, अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। सो साहिब सतिगुर प्रेम नाल दर आपणे सद्दी, सद्दा दे मंगवाईआ। गुरमुखो तुहाढ्ढे पिच्छे नीहां हेठ बच्चयां दब्बी हड्डी, महल अटल दित्ता बणाईआ। फेर बणाई तुहाढ्ढी साची जद्दी, पुश्त आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाढ्ढे प्रेम अन्दर सूलां सेज अजे ना छड्डी, इक्की विसाख अल्लड़ पिण्डी आया हंढ्ढाईआ। की होया जे तारे विच्चों नईआ नबी, नौका आपणे कंध उठाईआ। शब्दी नौबत सच दवारे वज्जी, दो जहान रही जगाईआ। जोत अकालण बण के मालण जन भगतां दवारे आई भज्जी, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख आत्म कोई ना रहे रंडी, कन्त सुहागी लए मिलाईआ। खुल्ल्ही मींढी सीस ना रहे छड्डी, नक्क नथ्थ सुहाग आप पवाईआ। दूर दुराडा पार लँघा धरत मात उते मारदीआं आईआं अड्डी, पन्ध मुकया वाहो दाहीआ। जिन्हां प्रीती धुरदरगाही लग्गी, लोकमात सके ना कोए तुड़ाईआ। वेखो प्रभ तुहानूं मिलदा अज्जी पज्जी, रातीं सुत्यां दरस दिखाईआ। गुर गोबिन्द धार इक्को बद्धी, ना सके कोए तुड़ाईआ। चल के आई वीहवीं सदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह तेरा खेल सोहणा, प्रभ सोहणी बणत बणाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के सौणा, आपणी सेज हंढ्ढाईआ। आत्म परमात्म ढोला

गाउणा, सोहँ राग अलाईआ। प्रेम प्रीती जाम प्याउणा, सच खुमार चढ़ाईआ। विछड़यां नूं आण मिलाउणा, आपणे अंग लगाईआ। ग़रीब निमाणयां गोद बहाउणा, शाह सुल्तानां ख़ाक रलाईआ। सत्थर सेज दा मुल पुआउणा, कीमत आपे रिहा चुकाईआ। गोबिन्द तेरा वक्त सुहाउणा, सुहञ्जणी घड़ी खुशी मनाईआ। इकीआं सिर छत्र झुलाउणा, इक्की आपणी गंढु पुआईआ। बीस इकीस भेव खुलाउणा, वेखे सुणे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना तेरी वेख सच्च, सच वज्जी वधाईआ। खुशीआं नाल रहे नच्च, गुर अवतार खुशी मनाईआ। इक दूजे नूं रहे दस्स, वेखो चाईं चाईंआ। पुरख अकाल कीता इकट्ठ, हरिसंगत संग निभाईआ। नाता तोड़ अठसठ, चरण धूढ़ी इश्नान रिहा कराईआ। लेखा चुका मन्दिर मसीत मट्ठ, काया बंक इक सुहाईआ। इक्को मार्ग रिहा दस्स, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रिहा समझाईआ। इक्को धीरज देवे जत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। इक्को आपणे मिलण दी देवे अक्ख, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। तिस दी चरणी जाईए ढट्ठ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची बणत बणाईआ। प्रभ साची बणत बणाउँदा ए। कल अचरज खेल रचाउँदा ए। निरगुण निरवैर हो के आउँदा ए। धुर दा ढोला राग सुणाउँदा ए। साचा सोहला आप अलाउँदा ए। मौला आपणा रूप वखाउँदा ए। कीता कौल तोड़ निभाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वडयाउँदा ए। जन भगत वड्याई साची इक्की, हरि करता आप जणाइंदा। गोबिन्द मंगी एहो सिक्खी, जिस सिख्या विच पुरख अकाल समाइंदा। खंडयों धारों एहो निक्की, जिस दा रूप नज़र ना आइंदा। जगत वालों एहो निक्की, जो अन्दरे अन्दर बणाइंदा। माछूवाड़े दी सच्ची चिट्ठी, पुरख अकाल पढ़ सुणाइंदा। जिस दे उते वीह सौ वीह बिक्रमी लिखी मिती, मित्र प्यारा आपणे विच छुपाइंदा। कोई ना जाणे मुनी ऋषी, साध सन्त भेव ना पाइंदा। सब दी कीती कीती फिकी, रस आपणा आप भराइंदा। दो जहान जाए ना भिट्टी, पूरा रूप ना कोए रखाइंदा। जे कोई वेखे नीहां हेठ उह रखाई चिट्ठी, जिस दे उपर अक्खर कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्कीआं नाल इक्की जुड़ाइंदा। गोबिन्द तेरी इक्की जोड़ां, जोड़ी पुत्रां नाल मिलाईआ। जिस दी पुरख अकाल नूं पई लोड़ा, तेरी लोड़ रहे ना राईआ। एहो जवाब उदों दित्ता कोरा, तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। गोबिन्द कहे तेरी आ गई मिती, मित्र प्यारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी अरदास इक्को निक्की, निक्की निक्की गुफ्तार सुणाईआ। तेरी झोली पाए तेरी सिक्खी, फ़तिह डंका वाहिगुरू तेरा नाम

वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह मेरा लेखा मूल चुकाईआ। मेरा लेखा मूल चुका आप, बेपरवाह मेरे गुसाईंआ। तूं साहिब सज्जण बण साक, दो जहान ना होण जुदाईआ। इक्को वारी गया आख, अभुल्ल भुल्ल जाईं ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह शहिनशाह सच गोसाईंआ। सच गोसाईं मेरे साहिब, हथ्थ तेरे वड्याईआ। तेरी महिमा अचरज अजाइब, लीला गणत गणी ना जाईआ। तेरा लेखा सब तों होया गायब, गोबिन्द चिट्ठी हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा दूजा बणया ना कोई नाइब, जो पड़दा दए चुकाईआ। जो आया सो तेरे मताइत, गुर अवतार पीर पैगम्बर दूर दुराडे बैठे ध्यान लगाईआ। सारे कहिण प्रभ तेरी मन्नीए रहित, पिछली छड्डी सर्ब लोकाईआ। तेरे नाम दा चारों कुण्ट प्या कहत, दर दर घर घर जा ना कोए वरताईआ। इक दूजे नाल सारे रहे बहिस, पंडत पांधे मुल्लां शेख़ ग्रन्थी पन्थी करन लड़ाईआ। तेरे नाम तों आवे तहिश, निवण सो अक्खर झोली कोई ना पाईआ। साडी कोई ना चले पेश, सारे बैठे मुख भवाईआ। तूं आप आपे वेख, तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्कीआं दे आपणा भेत, इक्की अग्गे इक्की पिच्छे इक्कीआं विच तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहरवान उठा मेहर नज़र, दर इक्को इक मंग मंगाईआ। परवरदिगार कर फ़ज़ल, रहमत आप कमाईआ। निरवैर पुरख तेरा अदल, अदालत इक्को सोभा पाईआ। सब दे सिर ते कूकदी अज़ल, लोकमात सके ना कोए बचाईआ। पीर पैगम्बर तेरे नाम दी गौण ग़ज़ल, ग़रज़ आपणी इक प्रगटाईआ। साडी धारा सब दी बदल, बदला चुक्के जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द कहे वेख प्रभ मेरे मित्र, नेत्र नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे आए तेरा ज़िकर, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोंदे बितर बितर, नीर वहावण मारन धाईंआ। जिन्हां दे साहिब वसया नेड़े अन्दर, दवारे आया माहीआ। जुग चौकड़ी जिन्हां दा राह तक्कदा रिहा कर के वड्डे जेरे सबर, सबूरी आपणे नाल हंढाईआ। मेहरवान हो के करे मेहर नज़र, नज़र इक टिकाईआ। डुब्बदे फड़ फड़ तारे बेड़े, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कूड़ी क्रिया पए झेड़े, इक्को आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ कर ध्यान, आपणा नैण उठाईआ। बाहर खड़े तेरे महमान, दर आए आस रखाईआ। साडी करे सच पहचान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। चरण कँवल करे परवान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सच वखाए इक निशान, जिस दा रंग समझ कोए ना पाईआ। धुर दा देवे इक ज्ञान, साची करे सति

१८६
१६

पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ खोल्ह अक्ख, नेत्र नैण इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे ढट्ठ, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। अग्गे पिच्छे आए नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तेरा नाउँ रहे रट, धुन इक्को राग अलाईआ। इक्को तेरी लैण मत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। विष्नूं अग्गों जोड़े हत्थ, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। ब्रह्मा कहे पत रख, दर तेरे वास्ता पाइंदा। शंकर कहे मैं भोला नाथ, सुद्ध बुध ना कोए जणाइंदा। तेई अवतार कहिण असीं होए दास, दासी रूप सर्ब वटाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण आए छाण धूढ़ी ख़ाक, पहचान नज़र कोए ना आइंदा। नानक निरगुण कहे खोल्ह ताक, दवारा तेरा इक्को सोभा पाइंदा। भगत अठारां कहिण असीं जन भगत वेखीए साक, सज्जण संग ना कोए रखाइंदा। रल मिल करीए इक्को बात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ अग्गे, अगली कहाणी दए जणाईआ। दर आए सारे लग्गे चंगे, फुल्लां सेज हेठ विछाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बज्झे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार तक्कदे जाओ, सज्जे खब्बे ध्यान लगाईआ। रसना जिह्वा हस्सदे आओ, खुशीआं गीत अलाईआ। भगत दवारे वड़दे आओ, आपणा सीस झुकाईआ। सोहँ ढोला पढ़दे आओ, इक्को राग अलाईआ। साचे पौड़े चढ़दे आओ, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ सरनाई पड़दे आओ, माण अभिमाण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं पल्लू दए फड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो साढे तिन्न हत्थ, हरि अगली वंड वंडाईआ। जिस दे उते बहि के जन भगतां लए रख, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। एथे टेको सारे मत्थ, मस्तक धूढ़ी नाल रगढ़ाईआ। हुक्म देवे पुरख समरथ, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार सारे तक्कदे, सज्जे खब्बे ध्यान लगाईआ। गुरमुख सोहणे चंगे फबदे, चीरे रंगदार बन्हाईआ। दरस दीदार इक्को मंगदे, बिन पुरख अकाल दूजी ओट ना कोए तकाईआ। प्रेम प्रीती दान वंडदे, वस्त इक्को इक वरताईआ। चरण प्रीती नाल हंढुदे, नाता छुट्टा जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे सुणो गुर अवतार, सो सच सच्च जणाईआ। दर्शन करो नाल प्यार, गुरमुख सारे नज़री आईआ। जिन्हां अन्दर वड़या निरँकार, घर बैठा डेरा लाईआ। एहनां नाल करो प्यार, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, आसा सब दी पूर कराईआ। तेई अवतार आए वेखण, आपणा ध्यान लगाईआ। एहनां पिच्छे गोबिन्द आपणे बच्चे कीते भेंटण, भेंटा इक्को वार चढ़ाईआ। एह गुरसिख गोबिन्द दी गोदी खेडण, खुशीआं नाल खुशी मनाईआ। गुरसिख आपणा आप आए वेचण, पुरख अकाल कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण, गोबिन्द एह कौण जिन्हां बद्धे चीरे, सीस आपणे रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे एह मेरे निक्के निक्के हीरे, जिन्हां नाल मेरी वड्याईआ। जिन्हां दी मैंनूं वी लग्गे पीड़े, मेरी पीड़ पुरख अकाल वंडाईआ। जिन्हां विच ना कोई शरअ ना जंजीरे, ना कोई गंढु पुआईआ। एह गुरसिख चोटी चढ़े अख़ीरे, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम ईसा मूसा मुहम्मद तुहाडे मुरीद होए बेपीरे, जो तुहाडी सिख्या गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। भगत अठारां आए अग्गे, भज्जण वाहो दाहीआ। कबीर कहे क्यों सोहणे लग्गे, क्यों देवें माण वड्याईआ। पुरख अकाल कहे एह मेरी प्रीती बज्झे, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गोबिन्द कहे मैं एहनां दे सज्जे खब्बे, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े लभ्भे, जिन्हां आपणा मेल मिलाईआ। भगत दवारे फिरन भज्जे, सोहणी रचन रचाईआ। श्री भगवान पड़दे कज्जे, सिर आपणा ओढण इक टिकाईआ। डूंग्घी डिगे ना कोई खड्डे, फड़ बाहों लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। नानक कहे मोहे चढ़या चाउ, घर वज्जी सच वधाईआ। पुरख अकाल करे न्याउँ, मेहरवान होए सहाईआ। गुरमुख गुरसिख पकड़े बाहों, फड़ बाहों लए मिलाईआ। निथाव्याँ देवे थाउँ, चरण कँवल इक सरनाईआ। नगर खेड़ा वसाए गाउँ, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। तिस साहिब बलि बलि जाउँ, जो डुब्बदे रिहा तराईआ। निरगुण सरगुण लाए पाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब सुखदाईआ। गोबिन्द कहे मैं होया दयाल, दयालता तेरी नाल रलाईआ। लेखा चुक्कया शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को वेख वखाईआ। मेरा बूटा ल्या पाल, बण माली सेव कमाईआ। आ के पुच्छया मुरीदां हाल, मुर्शद वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लए भाल, गुर चेले रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो भगत, हरि भगती इक दृढ़ाइंदा। पुरख अकाल दी साची शक्ति, शहिनशाह आपणी कार कमाइंदा। देवे वड्याई विच जगत, जागरत जोत डगमगाइंदा। लेखे लाए बूँद रक्त, मात गर्भ दस दस मास बन्धन चुकाइंदा। दर आयां रहिण ना देवे कोई फरक, निक्कयां वड्डयां इक्को घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल कराइंदा। विष्नूं कहे एह की रंग लाल,

लालन रूप वटाईआ। लच्छम कहे मैं होई बेहाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ भगतां उते होया दयाल, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जीव जगत दिसण कंगाल, लाल आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मा कहे नज़री आए रंग कंचन सोहणा, सोहणी बणत बणाईआ। आत्म अन्तर जिस ने मोहणा, मोहणी रूप वटाईआ। साची सेजा जिस ने सौणा, सुहञ्जणी सेज इक आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा बोल सब ने गाउणा, गावे गीत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो रंग रिहा वखाईआ। शंकर कहे रंग सूहा, सोहणी धार चलाइंदा। मैं फिर फिर वेख्या जंगल जूहां, चारे कुण्टां फेरा पाइंदा। जल धारा वेखे नदी नूहा, समुंद सागर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अचरज आपणी कार कमाइंदा। तेई अवतार कहिण रंग चिट्टा, चिट्टी धार वज्जी वधाईआ। गुरमुख प्रभ मेल मिल्या वड्डा निक्का, निक्के वड्डे रिहा तराईआ। फड़ के बाहों बाहर कढ्ढे अन्धेरी खड्डा, घर साचे कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान दया कमाईआ। गुर गुर कहिण रंग खट्टा, खट्टी गुरमुखां झोली पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर रत्ता, रती रत्त रिहा सुकाईआ । देवणहारा ब्रह्म मत्ता, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण पका इक्को मता, दूजा संग ना कोए रखाईआ। मार्ग दे के जाए सच्चा, सच सच्च समझाईआ। जन भगत कोई ना रहे कच्चा, जिस आपणा मेल मिलाईआ। पहलों गोबिन्द बणाया बच्चा, बच्चा गोबिन्द गुरमुख बच्चयां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को रंग रिहा चढ़ाईआ । ईसा मूसा कहे रंग नीला, नीली धार समझ ना आईआ। परवरदिगार छैल छबीला, धुरदरगाही सच्चा माहीआ। वेखण आया भगत कबीला, इक्को आपणा फेरा पाईआ। दो जहानां बण वसीला, वसल आपणा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। मुहम्मद कहे रंग काला, कलमा इक जणाईआ। गल विच्चों लाही तसबी माला, मन का मणका आप भवाईआ। निरगुण निरवैर बणे दलाला, सच दलाली इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्ते रंग चढ़या रूप, रेख नज़र किसे ना आईआ। देवे वड्याई शाहो भूप, शहिनशाह बेपरवाहीआ। आवण जावण चुक्की चूक, लेखा कोए रहे ना राईआ। दहि दिशा ना भवे कूट, चार कुण्ट ना कोए भवाईआ। हरिसंगत प्रभ दी गोदी सौणा घूक, सुत्यां फेर ना कोए उठाईआ। गुरमुख सोहणे बणे पूत, पिता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ । सत्ते रंग करन हासा, खुशीआं नाल रहे जस गाईआ। वेखो प्रभ मिल्या पुरख अबिनाशा, जिस दी समझ

किसे ना पाईआ। सेवक बणया दासी दासा, चाकर रूप वटाईआ। आदि जुगादि ना कदे विनासा, ना मरे ना जाईआ। साचा देवे इक भरवासा, एका इक्की इक्की नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। सत्ते रंग कहिण साडा मिल्या मेल, वज्जी सच वधाईआ। पुरख अबिनाशी चाड़या तेल, जन भगतां सगन मनाईआ। रल मिल खेलीए इक्को खेल, ख़ालक ख़लक रिहा खलाईआ। फेर कोई ना पवे राए धर्म दी जेल, बंदीख़ाना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। सत्त रंग कहिण साडी इक्को वार, एकँकार दिती वड्याईआ। वेखो भगत खिली गुलज़ार, गुलशन हरि जू रिहा महकाईआ। मौली रुत्त इक बहार, रुत्त बसन्त रूप वटाईआ। पत्त टाहणी टहिके पुरख नार, बिरध बाल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल एह तेरा, तेरी कुदरत विच्चों नज़री आईआ। आ के वेख्या तेरा डेरा, घर साचे वज्जे वधाईआ। एथे नज़र ना आए तेरा मेरा, मेरा तेरा इक्को रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह कहे मैं चिट्ठी फोलां, जो गोबिन्द सूलां सेज लिखाईआ। बिन अक्खरां बिन जिह्वा बोलां, अनबोलत राग अलाईआ। बिन कंडे तराजू तोल तोलां, साचे तक्कड़ नाम चढ़ाईआ। बिन मन्दिर मस्जिद मट्ठ दुआर खोल्हां, साचे घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची चिट्ठी आप समझाईआ। गोबिन्द चिट्ठी लिखी अपार, अपरम्पर आप जणाइंदा। साची सिक्खी होए त्यार, सिख्या सब नूं इक समझाइंदा। चार वरनां दए प्यार, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। सब दा इष्ट पुरख अकाल, दूजा सीस ना कोए निवाइंदा। तिस दी सारे करो भाल, जो लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दा आदि जुगादि वज्जे ताल, शब्द नाद सेव कमाइंदा। जिस दी घालणा रहे घाल, सेवा सब दी वेख वखाइंदा। जिस दी सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जिस दा जोती नूर जलाल, जलवा इक्को इक प्रगटाइंदा। जिस दा नाम सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, कादर आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करो निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द खड़ा ख़बरदार, आपणी भुजां रिहा उठाईआ। जिस दा पहरेदार निरँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे ग़रीब निमाणे यार, दुखियां दर्द वंडाईआ। वेखो सब दे सीस बद्धी दस्तार, चूंडी कोई रहिण ना पाईआ। हरि कन्त होए सुहागण नार, रंडेपा अन्त ना कोए हंढाईआ। सखीआँ मिल के गावे मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। इक्की नाल इक्की होई

त्यार, एह इक्की आपणे विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द दे सच्चे लाल, लालन रूप वखाईआ। खुशीआं नाल गल विच पा हार, अमरजीत वज्जे वधाईआ। छोटा नढ्ढा निक्का बाल, सुरजीत सिँघ रंग चढ़ाईआ। गुरसिख हरिसंगत अग्गे होए ना कोई कंगाल, सब दी कंगाली आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्द्रां कत्तक सम्मत पन्द्रां दा लेखा दए वखाल, जो सवा रत्ती केसर दित्ता वखाईआ। सवा रत्ती कढ्ढ केसर, हरि केशव आप जणाइंदा। जिहड़ा लेख लिखाया उदों थनेसर, सो थनेसर संगत घर बणाइंदा। जिस दी सेवा करे परमेश्र, पेशवा आपणा रूप धराइंदा। हरिसंगत सारे वेखो सारे खुल्हे नेत्र, निज नेत्र दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हथ्थ टिकाइंदा। सिर हथ्थ रखे निरँकार, मेहरवान दया कमाईआ। सभना नाल करे प्यार, प्रीती आपणे चरण बंधाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े यार, गुरसिख सज्जण लए मिलाईआ। खुशीआं नाल करे आधार, अद्धविचकार ना कोए टिकाईआ। विष्नूं हो जा ख़बरदार, शब्द संदेस नाल समझाईआ। ब्रह्मे करी निमस्कार, जो तेरा ब्रह्म मेरे विच मिलाईआ। शंकर एहनां चरणां हेठ त्रिसूल रखणी झाड़, चार दुआर ना कोए जणाईआ। तेई अवतारां एहनां नूं लैणा संभाल, हुक्म इक्को वार समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करयो सच प्यार, प्रेम प्रीती इक दृढ़ाईआ। नानक निरगुण कहे मैं एहनां दा सेवादार, जो तेरा नाम ध्याईआ। उह गोबिन्द मेरा जोत नूर उज्यार, जिस दी जोती बुझ कदे ना जाईआ। एह उहदे गुरमुख गुरसिख सरदार, जिन्हां दी सरदारी सचखण्ड विच आपणे लेखे लाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी नूं लभ्भदे गए गुरू पीर अवतार, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आईआ। उह सच्चा राज उह सच्चा जोग, जिस नूं लभ्भया बेपरवाहीआ। गुरमुख सदा मंगण प्यार, सिर आपणे ताज टिकाईआ। जिन्हां अन्दर वड़या निरँकार, तिन्हां ओट कोट कोट जुग दी शहिनशाही चरणा हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सवा रत्ती केसर, केसर गुरमुख लैणा दाईआ। केसर कहे मेरे विच पाओ पाणी, आब आब मिले वड्याईआ। जन भगतां मिल्या हाणी, हाणी हाणीआं नाल मिलाईआ। जिस दी चार जुग पढ़ पढ़ सुणाउँदे बुझाउँदे रहे बाणी, सार शब्द पढ़ाईआ। जिस दी किसे ना आई पछाणी, सो आपणी पछाण गुरमुखां रिहा बुझाईआ। जिस दी गाउँदे रहे अकथ कहाणी, सो महिमा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो दाअवे नाल देवे जन भगतां पद निरबाणी। दाअवे नाल देवे निरबाण पद, पदवी इक्को इक रखाईआ। गुरमुख लँघ के जाए पार हद्द, जिस हद्द विच वसे बेपरवाहीआ। गुरसिख तेरा पल्लू कदी ना जावे छड्ड, पल्लू छड्डे ना सच्चा शहिनशाहीआ। भगतां नालों कदी ना होया अड्ड, अड्डरा घर ना कदे बणाईआ। तुसीं मेरी धुर दी यद्द, याददाशत

आपणी नाल रखाईआ। धन्न भाग मैं तुहाढे विच गया सज, बिन भगतां मेरी सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। केसर कहे पाणी मिले ठंडा, मेरी तृखा बुझाईआ। मैं भगतां नाल पावां गंढ्ढां, आपणी सेव कमाईआ। जिस बंदगी कर बणे बंदा, सो बंदगी दयां समझाईआ। जिस साहिब सतिगुर मेरा तिलक लगावे मस्तक चन्दा, सो चन्द चांदनी नूर चमकाईआ। हरीदुआर आ के कोई ना रहे गंदा, गंदगी सब दी बाहर कढ्ढाईआ। तरखाण हो के फेरया रंदा, दुरमति मैल धुआईआ। जट्ट बण के फड़या डण्डा, हुक्म नाल डराईआ। निरगुण हो के अन्दर लँघा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख माणे सेज पलँघा, सोहणी रुत्त सुहाईआ। एह उह दुआरा जिस नूं कैहन्दे पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों पुरी आपणा नाम प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। इक्की कहे मेरा लेख एका, एकँकार तेरी वड्याईआ। तेरी रखी जुग जुग टेका, दूजी आस ना कोए टिकाईआ। तैनूं मिलयां होए बुध विवेका, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेका, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जन्म जन्म दी बदले रेखा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सदा रखे साया हेठां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। साहिब सरनाई गए आ, आपणा पन्ध मुकाया। पुरख अकाल होए सहा, साहिब सतिगुर मेहर नज़र उठाया। डुब्बदे पार लए करा, पाथर आपणी झोली पाया। ग़रीब निमाणे गले लगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे रंग रंगाया। हरिजन रंग चढ़े अनोखा, उतर कदे ना जाईआ। हरिसंगत तेरे नाल करे ना धोखा, पूरे सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। किसे नूं लोड़ नहीं पढ़न दी पोथा, बिन पढ़यां पार लँघाईआ। साध सन्त सारा कीता थोथा, थोथी मति जणाईआ। कलयुग अन्त बिन पुरख अकाल कोई ना देवे होका, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरिसंगत वीह सौ वीह बिक्रमी छब्बी पोह निरगुण मिलण दा मिल्या मौका, मुकम्मल आपणे नाल रलाईआ। गोबिन्द सुत उठया ला के ढौका, आपणी लए अंगड़ाईआ। हथ्थ नाल मिलाया पौंचा, उँगली उँगलां नाल छुहाईआ। डुब्बदे तारे फड़ फड़ पोटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। फिरे दरोही चौदां लोका, दस्तगीर होए ना कोए सुहाईआ। गुरमुख अग्गे कोई ना रहे औखा, औखी घाटी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लए तराईआ। हरिसंगत प्रभ तारन आया, दीनां नाथ दीन दयाला। त्रैगुण माया डेरा ढाया, होए आप रखवाला। समरथ स्वामी सिर देवे छाया, शहिनशाह लेखा जाणे शाह कंगाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। पोह सताई

लेख लिखे, लिख्त लेख वड्याईआ। इक्की अग्गे इक्की पिच्छे, पिच्छे अग्गे आपणी गंढु पवाईआ। इक्की इक्की धार रखे निक्के वड्डे, बुढ्ढे बाल इक्को घर वसाईआ। सब दे मार्ग करे सिध्धे, औझड़ राह ना कोए पाईआ। प्रभ मिलण दी साची बिधे, समरथ आप समझाईआ। रल मिल सखीआं पावण गिध्धे, खुशीआं राग अलाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जो जन बज्झे, तिन्हां भिन्नड़ा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा दए समझाईआ। लेखा समझण दी सच्ची लोड़, बिन लेखे लेख बणे ना राईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरा नाता जोड़, जोड़ी इक बणाईआ। चार जुग मैनूं रही थोड़, मेरा घाटा पूर ना कोए वखाईआ। तेरे हथ्थ मेरी डोर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरा सुख लैंदे रहे ठग्ग चोर, यारी कूड़ी जगत लगाईआ। मेरी समझ ना पाई किसे अन्ध घोर, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। तेरे दर ते पावां शोर, होका दे सुणाईआ। पुरख अकाल वेखणा कर के गौर, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी विछुंनी चिरीं आस पुचाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं रोवां नीर, नेत्र नैण वहाईआ। मेरे सुख विच सुत्ते रहे पीर फ़कीर, रातीं जाग लए ना कोए अंगड़ाईआ। तेरे विछोड़े अन्दर मैनूं लग्गी पीड़, बिरहों रोग ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे चुकाईआ। भिन्नड़ी रैण सुण बात सच्ची, सो सतिगुर आप जणाईआ। चार जुग तूं रही कच्ची, यारी कच्चयां नाल लगाईआ। छब्बी पोह तैनूं करां पक्की, पक्की तरां समझाईआ। श्री भगवान दी बणीं बच्ची, वांग बच्चयां लाड लडाईआ। कोझी कमली होवीं ना रंडी, रंडापन ना कोए रखाईआ। जन भगतां दरस करीं आपणी अक्खीं, घर आ के फेरा पाईआ। अमृत वेले उठ के दस्सीं, आपणा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दुखड़ा दए गंवाईआ। प्रभू मैं रातीं उठ के वेखण आवांगी। जिहड़े गाउँदे तेरी साखी, तिन्हां नेत्र दर्शन पावांगी। जो पिच्छे रह गए बाकी, लहिणा देणा अन्त चुकावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच सुहञ्जणी रैण अखवावांगी। तूं चल आई दुआर, सो साहिब सच जणाईआ। जन भगतां करीं दीदार, जो मेरा दर्शन रहे पाईआ। तेरा दुखड़ा देण निवार, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। तेरा मिटे अन्धेरा अँध्यार, चन्द चांदना देण चमकाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना होईं ख्वार, ठग्ग चोर संग ना कोए निभाईआ। साचे गुरसिख करीं त्यार, प्रीती इक्को इक लगाईआ। तेरा दस्से अद्ध विचकार हाल, हालत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दुखड़ा दए गंवाईआ। मैं रातीं अक्ख खुल्हावांगी। समरथ तैनूं सीस निवावांगी। तेरे दर तों मंगां हक़, हकीकत आपणी झोली पावांगी। जे तेरे भगत गए थक्क, एहनां आपणी गोद सवावांगी। जिहड़े

तेरे कोलों पिच्छे गए हट, तिन्हां माया पर्दा इक रखावांगी। मैं बोलां सच्चो सच्च, सच सुआणी बण के सेव कमावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा रंग इक रंगावांगी । तेरा रंग इक्को लाल, लालन लाल लाल चढ़ाईआ। केसर बणे सच दलाल, भगत दलाली विच टिकाईआ। मस्तक जलवा नूर जलाल, ललाट इक्को इक रुशनाईआ। खेल वेख दीन दयाल, दर तेरे सोभा पाईआ। मैं कर कर थक्की भाल, चारों कुण्ट उठ उठ धाईआ। मेरा हल्ल ना होया सवाल, आसा पूर ना कोए कराईआ। मैं शाहों होई कंगाल, दौलत धन ना कोए वरताईआ। बलहीण होई निढाल, अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। फिर फिर आई मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ धर्मसाल, धर्मी रूप ना कोए वटाईआ। सच दवारे करन हराम, विभचार सारे रहे कमाईआ। बिन भगतां आत्म अन्तर दिसे ना किसे अराम, सांतक सति ना कोए वरताईआ। दीन मज़्ब दे सारे होए गुलाम, अक्खरां नाल प्रीत लगाईआ। तेरा जलवा तक्के ना कोई अमाम, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। मैं झुक झुक बरदी दर करां सलाम, सज्जदा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। देणी वड्याई माण केसर लाल रंग, सवा रत्ती रत्त रत्त नाल रंगाईआ। भगत सुहेले ला अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जिन्हां शब्दी पाई विच मंग, तिन्हां जगत दे वड्याईआ। एहनां सीस झुकाए पन्ध, हरिसंगत भार कटाईआ। गोबिन्द सुत कदी ना देवण कंड, मुख सके ना कोए बदलाईआ। सारे ढोला गावण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा साचा संग इक रखाईआ। गोबिन्द दवारा पुरी अनन्द, अनन्द पुरी रूप वखाईआ। इक्को वार छन्नयां गुजरी चन्द, दूजी धार शब्द प्रगटाईआ। जन भगतां पाए ठंड, अमृत आत्म मेघ बरसाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। पुरख अकाल रखाया संग, साचा जोड़ जुड़ाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए तराईआ। अग्गे पिच्छे इक्की इक्की, अकल कला अख्वाईआ। अग्गे पिच्छे साची सिक्खी, सतिगुर विच समाईआ । अग्गे पिच्छे धार तिक्खी, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे पिच्छे रूपों निक्की, निरगुण आप प्रगटाईआ। दोहां मिल के बणे लुकण मिची, अन्दर बाहर पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे अट्ठ दए वड्याईआ । साढे अट्ठ पोह सताई, रुत्त रुतड़ी आप सुहाइंदा। दो सत्त ना होए जुदाई, जन्म वंड ना कोए वंडाइंदा। दर आयां घर करे कुड़माई, पिच्छे रहिंदयां मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे थाउँ थाईं, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। गोबिन्द बूटा पुटया इक्को काई, तिस बूटे बेड़ खुल्हाइंदा। सचखण्ड लेखा दए लिखाई, जिस दा अंक ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, घर साचा वेख वखाइंदा। बूटा पुटया काही इक, इक इक नाल मिलाईआ। उहो लेखा जाए लिख, जिस एह खेल रचाईआ। दूसर किसे ना पए दिस्स, वेखे ना कोए लोकाईआ। करवट दे ना बदले पिठ्ठ, सनमुख ना लए अंगड़ाईआ। कलयुग जीव सारे रहे पिट्ट, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल समझाए सच्च, सच सच्च जणाइंदा। जो प्रभ सरनी गए ढठ्ठ, तिन्हां ढठ्ठयां आप उठाइंदा। आपणे बन्न्ह साची गठ्ठ, एथे ओथे ना कोई खुल्हाइंदा। प्रभ दी छाती चढ़न नठ्ठ नठ्ठ, जिन्हां आपणा घर वखाइंदा। पंज तत काया चोला सब ने जाणा छड्ड, थिर कोई नज़र ना आइंदा। मढ़ी गोर रखणे हड्ड, तन माटी ख़ाक समाइंदा। जन भगतां प्रभ पत्त लए रख, परमेश्वर आपणे विच मिलाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी एहो इक्को सच्चा हट्ट, जो बिन सतिगुर हाकम झोली कोई ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब नूं कर के गए पक्क, पक्की तरां सर्ब समझाइंदा। परवरदिगार पुरख अकाल राम रहीम इक्को समरथ, जिस दी समरथय विच गुर अवतार सेव कमाइंदा। पीर पैगम्बर उहदे हथ्थ, जिन्हां दी नाड़ बहत्तर वंड वंडाइंदा। जिन्हां चिर ना देवे आपणी अक्ख, अक्खर पढ़ ना कोए सुणाइंदा । एसे कर के सारे मार्ग गए दस्स, शब्द सुनेहड़ा इक घलाइंदा। सो साहिब खोल्हे हट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन

१६७ भगतां दया कमाइंदा। खोल्हे हट्ट भगत दुआर, भगवन दए वड्याईआ। घर मिल्या मित्र प्यार, मीत प्यारा इक अख्वाईआ। १६७

१६ तक्को इस दा नज़ार, बिन अक्खां रिहा वखाईआ। जिस दा लभ्भया ना किसे किनार, सरसे लभ्भे जगत लोकाईआ। जिस १६

ने आपणा लेख रोड़या जल विच जलधार, लेखा फेर रिहा समझाईआ। बिन चिट्ठीउँ चिट्ठी रसैण बणया हल्कार, डाक देवे वाहो दाहीआ। पुरख अकाल नाल करे प्यार, दूजी रीत ना कोए जणाईआ। गुरमुख तेरा मन्दिर दुआर, काया बंक नज़री आईआ। जिस दे अन्दर वड़ के अमरदास गुरू पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अमरदास कहे एह वी विच्चों जलधार, सतिगुर पूरा जाम प्याईआ। अंगद कहे नानक लिखार, नानक कहे मेरा निरँकार, निरँकार कहे अर्जन मेरा वणजार, जो मेरा वणज कराईआ। गोबिन्द कहे हरि चरण तिक्खी धार, हरि गोबिन्द तिक्खी धार विच समाईआ। सत्त अठ्ठ नौ दे के गए लार, दसवें आपणी गंढ्ढ पवाईआ। दसवां नहीं एह सुत दुलार, पुरख अकाल पिता माईआ। पुरख अकाल नहीं एह सेवादार, जो गुरमुखां सेव कमाईआ। गुरमुख नहीं एह भगत अधार, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। भगवन नहीं एह सब दा प्यारा, प्यार विच्चों प्यार प्रगटाईआ। प्यार नहीं प्रभ दा खेल न्यारा, बिन हरि किरपा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा लाया इक अखाड़ा, जिस विच गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत

योधे सूर बैठे आसण लाईआ। गुरमुख कहिण असां करना दंगल, कलयुग आपणा बल प्रगटाईआ। कलयुग कहे मेरा टुट्टा संगल, घुंडी घुंडी दए दुहाईआ। जां वेख्या तां सुणयां इक्को मंगल, जो प्रभ नूं रहे ध्याईआ। ना कोई उजाड़ ना कोई जूह ना कोई जंगल, भगत दुआर बहि के खुशी मनाईआ। इक्को वार जिन चरण कँवल कीती बन्धन, तिस पूजा पाठ दी लोड़ रही ना राईआ। क्यों सवा रत्ती नाल गुरसिख प्रेम प्यार नाल मस्तक लाए चन्दन, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। जुग जुग आपणी टुट्टी आया गंढुण, गोबिन्द विच विचोला बणाईआ। गुरसिख पिछली भिच्छया आया मंगण, अगली आपे दए वरताईआ। जो प्रभ दे दर तों संगण, धर्म राए फड़ लै के जाए वाहो दाहीआ। फड़ के एहनां पुट्ठा टंगण, देवण बहुत सजाईआ। जे रविदास किरपा ना करदा ब्रह्मण क्यों तरदा जिस चुराया कंगण, कंगणां वाला आपणी कांग विच रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत तेरे प्यार दा टिक्का, हरि सतिगुर आप लगाईआ। हरिजन तारे वड्डा निक्का, निक्के वड्डे इक्को रंग रंगाईआ। सर्ब जीआं दा बण के पिता, पुरख अकाल फेरा पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किसे कोलों कोई अक्खर ना सिक्खा, सिखावणहारा आप हो जाईआ। गुर गोबिन्द दा लिख्या चिट्ठा, बिन अक्खरां दए पढ़ाईआ। जिस ने हाल आ के डिठा, तिस लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर इक्को इक समझाईआ। इक्को वर दए समझा, समझ समझ विच मिलाईआ। जो प्रीती विच होए फ़िदा, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तिन्हां सिर हथ्थ दए टिका, मेहर नज़र उठाईआ। हरिसंगत नाल लए रला, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। सारी संगत रल मिल सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लैणा गा, गा गा खुशी मनाईआ। वेखो विष्नूं गया आ, नेत्र नैण उठाईआ। हरिसंगत अग्गे करे दुआ, आपणा हाल सुणाईआ। नूरी नूर इक खुदा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। लेखा जाणे दो जहां, दो जहानां वाली इक अख्वाईआ। रल मिल सारे इक्को थाँ लओ खा, खा खा खुशी मनाईआ। इक्की संगत इक्की पंगत इक्कीआं लेखा दित्ता लिखा, इक्की प्रगट कर के इक्की इक्कीआं नाल जोड़ जुड़ाईआ। हरिसंगत एहनां दे अग्गे धर के, आप आपणी उँगली लाईआ। वेंहदयां वेंहदयां सब दे अन्दर वड़ के, आपणा मेल मिलाईआ। नौ दवारे पार कर के, दस्म दवारी सोभा पाईआ। दरस दिखावे अग्गे खड़ के, जोती नूर रुशनाईआ। गुरसिख कोई ना उठे सवेरे तड़के, पंज वेर इक्को नाम ध्याईआ। पुरख अकाल शब्द बबाणे आए चढ़ के, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुरसिख सुत्ते सुरती फड़ के, आपणे नाल सवाईआ। सनमुख बातां कर के, खुशीआं हाल सुणाईआ। सीस ताज रख के, आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कोई खेल ना करे डर के, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। हरि का हुक्म करना पए मंज़ूर, सिर सके ना कोई उठाईआ। जो आया सो कर के गया कसूर, ख़ता मुआफ़ होए ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जाप जपदे रहे हो के मज़बूर, मज़बूरी आपणी झोली पाईआ। सूफ़ी तपदे रहे वांग तन्दूर, अग्नी तत भस्म कराईआ। सूली चढ़दे रहे बण मनसूर, मुश्किल आपणे सिर टिकाईआ। भगत डुब्बदे गए वहिंदे पूर, कबीर जुलाहा जलधार डेरा लाईआ। सारे कैहन्दे गए तूं हाज़र हज़ूर, क्यों बैठा मुख भवाईआ। कलयुग आपणा बन्नू सच दस्तूर, साचा मार्ग इक लगाईआ। तेरे भगतां बिन तेरे कोई ना करे भरपूर, ख़ाली भाण्डे ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। गुर अवतार कहिण धन्न निरँकार, निरगुण तेरी वड वड्याईआ। भगत दवारा दे विखाल, आपणी उँगली नाल लगाईआ। जिस घर वसें हो के काल दयाल, दयालता आपणी झोली पाईआ। तेरा महकदा वेखीए फुल्ल डाल, पत्त टाहणी ख़ुशी मनाईआ । नेत्र वेखीए तेरे लाल, गुरमुख सज्जण चाईं चाईंआ। जिन्नां पिच्छे बदली आपणी चाल, चाल निराली इक बणाईआ। नव नौ चार पिच्छों पूरी कीती घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। सचखण्ड दा सच दुआर सच्ची धर्मसाल, भगत दुआर दित्ता बणाईआ । दीपक आपणा जोती बाल, इक्को नूर कीता रुशनाईआ। सब दे सिर ते चीरे बन्नू के लाल, कंचन रूप दित्ता वटाईआ। कंचन विच्चों सूहा करे सवाल, सूहा चिट्टे सीस निवाईआ। चिट्टा खट्टे रिहा भाल, जिस गोबिन्द रंग चढ़ाईआ। खट्टा कहे ईसा मूसा मिले दलाल, नीला आपणा लेख जणाईआ। नीला कहे मुहम्मद होया हलाल, काली धार छुरी चलाईआ। महिबूब माही आप निरँकार, निरगुण इक्को बेपरवाहीआ। जिस दा मन्दिर इक दरबार, दरगाह साची नज़री आईआ। दर दरवेश खड़े करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा गुलशन खिले गुलज़ार, कली कली महकाईआ। बुलबुल वेखे आपणी वार, सोहणा गीत राग सुणाईआ। चन्द चमके आपणी धार, नूरी नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लओ तक्क, हरि ताकत नाल जणाइंदा। एन्नां विच किसे उते नहीं कोई शक़, जिन्नां आपणा रंग चढ़ाइंदा। आपणी हथ्थीं दित्ता हक़, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। पिछला मेट के दूई फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाइंदा। सब दा नावां आवण जावण विच्चों दित्ता कट, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। सच दवारा खोलू हट्ट, वणज इक्को इक कराइंदा। चार वरनां दे के मत्त, गुरमति इक समझाइंदा। जिस दे थल्ले दब्बी आपणी रत्त, सो आपणे रंग रंगाइंदा। नेत्र खोलू के वेखो अक्ख, हरि भगतां आखर आपणे कोल बहाइंदा। सच सच कहे प्रभ एहनां दा करना पक्ख, पक्की आपणे नाम बंधाइंदा। धीरज सन्तोख दे के

जत, जागरत जोत इक जगाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट करो ख्याल, हरि ख़ालक आप जणाईआ। गुरमुख होए सच्चे लाल, पुरख अबिनाशी बणत बणाईआ। बिन छुरीउँ कीते हलाल, करद नज़र ना कोए वखाईआ। करया खेल इक कमाल, बेपरवाह आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड दित्ता वखाल, वक्खरा आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार वेखण झुक, निउँ निउँ ध्यान लगाईआ। जिध्धर वेखण गुरमुख रहे बुक्क, सोहँ ढोला अलाईआ। सारे कहिण साडा पैंडा गया मुक्क, अग्गे सके ना कोए भवाईआ। गोबिन्द सानूं बणा के गया पुत्त, पुरख अकाल दी झोली पाईआ। पुरख अकाल गया तुठ, मेहरवान होए सहाईआ। लख चुरासी विच्चों रखी मुट्ठी इक्को मुट्ठ, जो आपणी झोली रिहा भराईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं इशारे नाल रिहा समझाईआ। इशारे नाल देवे इशारा, ईश अन्त ना कोए पाइंदा। एह गुरुआं पीरां दा अन्त किनारा, आपणे चरणां विच रखाइंदा। ग़रीब निमाणयां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जिन्नां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलया जैकारा, तिन्नां एथे ओथे दुःख ना कोए वखाइंदा। गुरसिखां उठाल रंग चाड़्या गाड़ा, रत आपणी नाल रंगाइंदा। लेखे लगा ग़रीब माढ़ा, शाह सुल्तानां चरणां हेठ दबाइंदा। गुरमुखो गुरसिखो तुहाढ्डी प्रीती पिच्छे कढ्ढे हाढ़ा, हौका तुहाढ्डा आपणी झोली पाइंदा। गोबिन्द लाल बरखुरदारा, बरखुरदारी आप कमाइंदा। सति धर्म दा बण वणजारा, साचा हट्ट आप चलाइंदा। भगत दुआर इक दवारा, ठांडा घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल करे करतार, करते हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत देवे इक प्यार, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। उह बच्चे गोबिन्द रखे नाल, जो जंग शहादत गए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी वीहवीं वीहवां हिस्सा आपणा आपणे हिस्से पाईआ। वीहवें हिस्से तों होई इकी, एकँकार देवे वड्याईआ। गुरू नालों संगत उच्ची, संगत विच बैठा हरि जू डेरा लाईआ। जिन्नां दी पुरख अकाल नाल लग्गी रुची, तिन्नां दी रचना वेखे जगत लोकाईआ। एहो धार नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों चलाई पुट्ठी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। एथे गोबिन्द सिक्खी अज्ज नहीं लुकी, बच्चयां अगला राह वखाईआ। जिन्नां धरत धवल दी मिट्टी आपणी पिठ चुक्की, थल्ले बैठे डेरा लाईआ। जिन्नां दी राख फड़ के इक इक मुट्ठी, राज राजानां शाह सुल्तानां साधां सन्तां घर घर दिती पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। देवे माण वड्याई विच संगत, सिँघ संगत लए उठाईआ। नाल रलाए ब्रह्मण पंडत, नौ जन्म दा पन्ध चुकाईआ।

* २७ पोह २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच *

अचरज खेल जोत निरँकारी, बेअन्त आप कराइंदा। शब्द गुर सच सिक्दारी, थिर घर साचे हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार करो निमस्कारी, पीर पैगम्बर आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव चरण छुहाओ दाढ़ी, दर दवारा इक वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखो वारी, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्ह्राइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत करो विचारी, बोध अगाधा आप समझाइंदा। गीता ज्ञान अञ्जील कुरान करो निमस्कारी, हुक्म हाकम इक उपाइंदा। दर घर साचा वेखो इक्को वारी, इक इकल्ला आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। साची खेल रच निरँकार, निरगुण वड्डी वड्याईआ। शब्दी सुत कर त्यार, योद्धा गुरू इक बणाईआ। सतिगुर बणे पहरेदार, सेवा सच सच कमाईआ। सचखण्ड दी साची धार, थिर घर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सुन अगम्म चरणां हेठ लताड़, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। लेखा जाण सर्ब संसार, गुर अवतार भेव मिटाईआ। लेखा देवे देवणहार, दाता दानी होए सहाईआ। जुग चौकड़ी कर पनिहार, सेवक चाकर रूप वखाईआ। काग़ज़ कलम बण लिखार, लेखा दो जहान जणाईआ। अन्तर सब दी वजांदा रिहा सतार, सति सतिवादी आप हिलाईआ। बोध अगाधा देंदा रिहा आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई जोत अकाल, अकल कला अख्वाइंदा। शब्द गुरू सतिगुरू दयाल, दयालता आपणी आप वखाइंदा। जुग जुग दी घालण घाल, हरि लेखा लेखे विच रखाइंदा। पीर पैगम्बरां मन्न सवाल, हरि रहमत आप कमाइंदा। परवरदिगार बण दलाल, भगत विचोला फेरा पाइंदा। हकीकत जणाए इक हलाल, हज़रत आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी इक तौफ़ीक, ताकतवर वड वड्याईआ। सच संदेसा इक हदीस, कलमा आपणा नाम पढ़ाईआ। पिछला लेखा गया बीत, अग्गे मार्ग रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स इक्को सच्ची रीत, दूजा राह ना कोए वखाईआ। मिल के सब ने गाउणा गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, दवारा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वसे हर घट चीत, गृह गृह बैठा डेरा लाईआ। लख चुरासी परख नीत, जीव जंत पड़दा रिहा फुलाईआ। आत्म परमात्म बणे मीत, मित्र प्यारा इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सुणाए एको, एकँकार वड्डी वड्याईआ। नेत्र खोल्ह सारे वेखो, पड़दा रिहा उठाईआ। जन भगतां करे बुध विवेको, विवेकी आपणी सेव लगाईआ। निरगुण हो के धारे भेखो, भेख पखण्ड रिहा गंवाईआ। चरण कँवल देवे टेको, टिक्का मस्तक चरण लगाईआ। पहलों आपणा आप

कीता भेंटो, ततव तत नज़र कोए ना आईआ। उस दी गोदी बहि के खेडो, जो साहिब सच गोसाईंआ। दु:ख सुख सुनेहड़ा इक्को वार भेजो, प्रभ सुणे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सचखण्ड निवासी इक इकल्ला, अकल कला वड्याईआ। वसावणहारा सच महल्ला, रहमत आप कमाईआ। हुक्म अन्दर फिराए राणी अल्ला, मुहम्मद ख्वाहिश दए दुहाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल बैठा डेरा लाईआ। दीपक जोत इक्को बला, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। सच संदेसा धुर दा घल्ला, जुग जुग कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। धुरदरगाही सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। हुक्मे अन्दर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर दर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक प्रगटाइंदा। सच दवारा कर प्रगट, प्रगट धार चलाईआ। नव नौ चार पिच्छों खोल्लया हट्ट, बण हटवाणा सेव कमाईआ। जन भगतां मार्ग दित्ता दस्स, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हिरदे अन्दर हरिजू वस, सोहँ हँसा रूप वटाईआ। तीर निराला मारया कस्स, चिला कमान आपणा नाम बणाईआ। उपर पड़दा आप रख, भिच्छया दूजी ना कोए वखाईआ। निरगुण हो के करदा पक्ख, सरगुण आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा पिछला चुका संसार, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। अग्गे देवे ना कोई सहार, पीर पैगम्बर संग ना कोए रखाइंदा। सारे तोबा तोबा कर के रहे पुकार, आपणा सबक ना कोए सुणाइंदा। सो सच्चा इक्को परवरदिगार, साहिब साचा नज़री आइंदा। तोहफ़ा देवे देवणहार, रहमत आपणा नाम वरताइंदा। लोक परलोका करे ख़बरदार, सच श्लोका इक जणाइंदा। मौका मिल्या पहली वार, गुर अवतार पीर पैगम्बर निउँ निउँ ख़ुशीआं नाल सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचा सच्चे भाइंदा। घर साचा सच्चा दरबार, वज्जी सच वधाईआ। अग्गे वेख्या एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। तख्त निवासी बैठा शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा डेरा लाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, एका हुक्म सुणाईआ। परम पुरख दी मन्नो आण, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी सिफ्त गाण, सो सिफ्ती भरया बेपरवाहीआ। उस दे उते रखो ईमान, जो कामल पुरख अख्वाईआ। उस दा करो ध्यान, जो हर घट रिहा समाईआ। उस दा कलमा पढ़ो कलाम, जिस कायनात बणाईआ। उस नूं करो सलाम, जो पीर पैगम्बरां रिहा समझाईआ। उस नूं मन्नो अमाम, जिस नूं मुहम्मद बैठा सीस झुकाईआ। उस दा सुणो पैग़ाम, जो पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। उस दे बणो महमान,

जो मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। उस दी करो पहचान, जो जुग चौकड़ी पहचान विच किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकट्ठा होया दस्ता, दस्तगीर आप बणाइंदा। सारे कहिण पिछला बन्नीए बसता, अग्गे फोल ना कोए वखाइंदा। तेरा नाम कलयुग कूड़ी क्रिया कीता सस्ता, काग़ज़ कलम छाही वंड वंडाइंदा। सच खुमारी चढ़े कोई ना मस्ता, मस्ती विच कोए ना आइंदा। वेख साडा हाल ख़सता, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा नज़री आइंदा। पीर पैगम्बर पकड़न अञ्जील कुरान, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरा सिदक तेरा ईमान, तेरी मुहब्बत नज़री आईआ। तेरा मन्दिर तेरा मकान, काअबा तेरा रूप वटाईआ। तेरा हुक्म बेपहचान, समझ सके कोए ना राईआ। असीं होका दे के आए विच जहान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । बीस बीसा प्रगट होए श्री भगवान, परवरदिगार नूर अल्लाईआ। जिस दा इक्को इक इस्लाम, इस्म इक्को इक वखाईआ । जिस दा जलवा नूर नूर नुरान, महताब बैठा नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। ईसा कहे मेरी पूरी आसा, तृष्ना रहिण ना पाईआ। मूसा कहे मेरा भरवासा, कोहतूर धार ना कोए बणाईआ। मुहम्मद कहे मोहे तेरा भरवासा, कदमबोसी इक्को मोहे भाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं वेखां आप तमाशा, जुग चौकड़ी खेल रचाईआ। नानक कहे मैं मंगां साथा, सगला संग निभाईआ। गोबिन्द कहे मेरा मन्नया आखा, जो पिछला लेखा समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं पुरख समराथा, नित नवित्त आपणी धार बणाईआ। सतिजुग कहे मैं कोई नहीं करना पूजा पाठा, इक्को तेरा इष्ट मनाईआ। कलयुग कहे मेरी अन्धेरी राता, तेरी समझ किसे ना आईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां पिता माता, पूत सपूते गोद उठाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां कर किरपा देवां आपणीआं दातां, नाम निधान झोली पाईआ। लेख मुकावां ज़ातां पातां, ऊँचां नीचां मेट मिटाईआ। सेवा करां बण के राखा, होका देवां वाहो दाहीआ। रंग रंगां इक्को साचा, सति सतिवादी कन्त हो जाईआ। फर्श बणाए धरत माता, जिस घर गुरमुख बैठे आईआ। जिन्हां दी इक्को सोहणी सच्ची भाषा, सोहँ ढोला रहे गाईआ। एथे रहे ना कोई बदमाशा, बदी नेकी आपणे रंग रंगाईआ। धर्म दवारा खोल्ह के हाटा, जन भगतां इक्को नाम झोली पाईआ। आत्म सेज सुहाए खाटा, सुहंझणी रुत्त नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मूसा कहे मैं मंगया दान, इबनुलवक्त तेरी सरनाईआ। होका दे के गया पैग़ाम, पैगम्बर कर पढ़ाईआ। मूसा कहे मैं कीती इक कल्याण, तेरे कलमे विच्चों आपणा कलमा बणाईआ। ओस कलमे विच तेरा ईमान, जिस दी समझ किसे ना आईआ।

उह कलमा तेरे चरणां हेठां दब्बया सदा निशान, बिन तेरी किरपा वेख सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वर दाते बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मैं दित्ता सबूत, साबत तेरा नाम जणाईआ। तत हंढ्ढाया पंज तत कलबूत, कलमा इक्को इक गाईआ। सच दृढ़ाए सच महिबूब, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। अर्श फर्श तों उच्चा अरूज, शहिनशाह तेरा इक समझाईआ। आदि जुगादि रहे महिफूज़, भन्न तोड़ सके कोई ना राईआ। कवण जाणे क्यों बणया मज़बूत, घाड़त कवण घड़ाईआ। मैं निक्का नढ्ढा बाला तेरा पूत, समझ सका ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पीर पैगम्बर करन सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। ठाकर स्वामी तेरा बरदा, बंदगी इक्को दए समझाईआ। तेरे दवारे कोई ना आवे डरदा, भय विच बैठे मुख लुकाईआ। तेरा नाउँ ब्रह्म पढ़दा, रसना जिह्वा गाईआ। भाणा भाणे विच्चों जरदा, सिर आपणे इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच वड्याईआ। तिन्नां दिती इक दलील, प्रभ अग्गे अर्ज़ सुणाईआ। दरगाह साची सच अपील, मन्न बेपरवाहीआ । तुध बिन दिसे ना कोए वकील, वकालत करे ना कोए लोकाईआ। वेला अन्त दस्स अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। कवण वेले बदलें तकदीर, तदबीर आपणी दे जणाईआ। असीं बैठे शाह हकीर, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी सानूं होण ना देवीं दिलगीर, दर तेरा राह तकाईआ। शरअ तेरी कड़ी ज़ंजीर, शरअ नाल बंधाईआ। तूं उच्च अगम्मा पीर, बेनज़ीर तेरी वड्याईआ। तेरे हथ्थ वड्डी शमशीर, दो जहानां डेरा ढाहीआ। तेरा लेखा लिखीए काग़ज़ां उते मार लकीर, कलम छाही जोड़ जुड़ाईआ। तेरा ढोला गाए पीर फ़कीर, फ़िकरा तेरा नाम सुणाईआ । कवण वेला बन्नें धीर, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी प्रभ कमाउँदा ए। धुर दा लहिणा आप समझाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद भेव चुकाउँदा ए। इक मार अगम्मी रमज़, रहमत आपणी आप कमाउँदा ए। कलयुग अन्तिम चुक्के मज़ल, बण पांधी पन्ध मुकाउँदा ए। श्री भगवान बणे हरदिल, हरिजन आपणे आप उठाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाउँदा ए। साची करनी आप कमावांगा। लोकमात खेल खलावांगा। नानक निरगुण इक प्रगटावांगा। सरगुण तन्द सतार वजावांगा। ब्रह्म मति इक दृढ़ावांगा। कलमा इक्को इक पढ़ावांगा। मक्का मदीना वेख वखावांगा। पाक पुनीत सर्ब करावांगा। मज़्हबां दीनां डेरा ढाहवांगा। रमज़ान महीना वेख वखावांगा। शमशान भूमी बहि के घात लगावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख इक दृढ़ावांगा। साचा लेख इक दृढ़ावेगा। प्रभ आपणी खेल

रचावेगा। एका जोती नूर चमकावेगा। गोबिन्द आपणा सुत बणावेगा। साची रुत्त आप सुहावेगा। बंस सरबंस भेंट चढ़ावेगा। सूलां सत्थर हेठ विछावेगा। सोहणी सेजा नाल हंढावेगा। पाती चिट्ठी आप लिखावेगा। हरफ़ हरूफ़ ना कोए पढ़ावेगा। सच सबूत आप जणावेगा। महिबूब इक्को नज़री आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हत्थ रखावेगा। लेखा आपणे हत्थ रखावांगा। निरगुण हो के खेल करावांगा। सरगुण आपणा मार्ग लावांगा। गोबिन्द इक्को गोद बहावांगा। अरदासा सोध हुक्म सुणावांगा। बण के योद्धन योद्ध, सूरबीर आप प्रगटावांगा। पीर पैगम्बरां सब दा पै जाए भोग, भगवन हो के खेल करावांगा। सदी चौधवीं करां संजोग, जुगत आपणे हत्थ रखावांगा। वेख वखावां चौदां लोक, चौदां तबक फोल फुलावांगा। अन्तिम सब नूं दे के मोख, आपणे चरण बहावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मन्नण असीं निर्दोष, दोषी जगत वखावांगा। नव नौ चार रहां खामोश, अन्तिम रसना ढोला गावांगा। गुरमुख उठावां आलणयो डिगे बोट, फड़ बाहों गले लगावांगा। दो जहान जगावां जोत, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लावांगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवावांगा। मेरी कोई ना करे सोच, मेरा सोच समझ आपणी कार कमावांगा। जो दर्शन रहे लोच, तिन्हां अन्दर वड़ के कुण्डा लाहवांगा। बंक दुआर बणावां कोट, सच महल इक सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल इक वखावांगा। साची खेल इक वखाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। निरगुण नूर निरवैर प्रगटाएगा। कलयुग वेखे कूड़ा कहर, अमृत मेघ इक बरसाएगा। करे खेल गुणी गहीर, गहर गम्भीर आप हो जाएगा। दो जहानां करे सैर, सैरगाह इक्को इक वखाएगा। परम पुरख दी इक्को वगे लहर, नाम धारा आप चलाएगा। दीन मज़्हब ज़ात पात बूटा कोई ना रहे ज़हिर, ज़ाहर आपणा हुक्म वरताएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईसा मूसा सुण मुहम्मद, हमद इक्को इक जणाएगा। हमद इक सुणाए हाफ़ज़, नाबीना आपणी कार कमाईआ। वेले अन्त ना होवण देवे ग़ाफ़ल, ग़फ्लत सब दी दए मिटाईआ। सृष्ट सबाई समझे पागल, जन भगत कहिण बेपरवाहीआ। दो जहानां करे आदल, अदालत इक्को इक लगाईआ। वेखां खेल मक्तूल कातिल, कत्लगाह इक्को इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गए झुक, कदम कदम तेरी सरनाईआ। कवण वेला गोदी लएं चुक्क, प्रभ आपणे अंग लगाईआ। नित दर्शन करीए उठ, लोचण नैण खुशी मनाईआ। पिछला पैंडा जाए मुक्क, अग्गे वज्जे नाम वधाईआ। तूं दोहां तों होवें इक, इक तों अनेक रूप वटाईआ। आपणा लेखा देदे लिख्त, लिख्त साडे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दे माण वड्याईआ। परवरदिगार इक

हरूफ़, तिन्नां अन्तर दए लिखाईआ। इस दे नाल रहिणा मसरूफ़, साचा हुक्म सुणाईआ। मेरे नाम दा इक सबूत, सच साचा नज़री आईआ। नाता तुट्टे जगत कलबूत, कलमा नबी भुल्ल ना जाईआ। सति सतिवादी मिले आप महिबूब, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तेरी वड्याई इक दो, निरगुण सरगुण नज़री आईआ। सरगुण करे निरगुण लो, नूरी नूर नूर प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण जाए हो, होका नाम सुणाईआ। तेरा भेव ना जाणे को, बेपरवाह बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो इक तेरी वड्याईआ। दो इक दा की प्रभ मेल, निरगुण धार चलाईआ। सच दस्स आपणा खेल, ख़ालक ख़लक कवण रंग रंगाईआ। किरपा कर सज्जण सुहेल, सच मति दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तिन्नां लेखा दए लिख, हरि लिखणहार निरँकारा। दो इक दा भेव अनडिठ, जाणे परवरदिगारा। सब नूं सुत्ता दे कर पिठ्ठ, नजर ना आए विच संसारा। कलयुग अन्तिम करे हित्त, ज़ाहर ज़हूर हो उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच सिक्दारा। साची खेल करे प्रभ एक, इक्को वार जणाईआ। कलयुग अन्तिम धरे भेख, भेखी आपणा रूप वटाईआ। पहलों गोबिन्द पूरा करे लेख, दो इक जोड़ जुड़ाईआ। पहली इक्की नूर दस्मेश, दस दस्मेसी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद तेरी मंग, एकँकार पूर कराईआ। साची सिक्खी चाढ़ रंग, कलमा इक पढ़ाईआ। अन्दर वड़ के दे अनन्द, रस साचा मुख छुहाईआ। निरगुण चमके चौधवीं चन्द, चन्द चौधवीं नैण शरमाईआ। सति सतिवादी देवे गंढु, आपणे नाल बंधाईआ। साची वस्त देवे वंड, अमोलक आप वरताईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भंनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाए सभना सुणाए सच्चा छन्द, सोहँ राग अलाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंद, बख़्शिश दए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाढ्ढी करनी तुहाढ्ढी झोली पाईआ। तुहाढ्ढी करनी परवरदिगार, हरि करता झोली पाइंदा। हरिसंगत विच्चों कर प्यार, एका इक्की आप प्रगटाइंदा। जिस इक्की दा मेला विच संसार, निरँकारी आप कराइंदा। गोबिन्द पुत्रां नाल करे प्यार, पिता पूत खेल खलाइंदा। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दस्से इक्को धार, चारों कुण्ट खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। मुहम्मद सिक्खी देवां दस्स, तेरा हाल जणाईआ। तेरी उम्मत तेरे रही ना वस, वास्ता तेरे नालों तुड़ाईआ। हकीकत किसे ना जाणी हक़, हक़ समझे कोई ना राईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। उठ वेख तैनूं वखावां अक्ख, गढ़ी चमकौर वज्जे वधाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। मुहम्मद उठ खोल्ह पलक, परवरदिगार आप जणाईआ। आप वखाए जिस उपाई ख़लक, हरि करता नूर अलाहीआ। उस दा अक्खां नाल कर दरस, तेरी दीद रिहा जणाईआ। एसे कर के प्या फ़र्क, फ़रद ज़ुरम रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। मुहम्मद वेख गढ़ी चमकौर, चमके नूर इलाहीआ। नेत्र नाल तक्क लै गौर, गहर गम्भीर रिहा समझाईआ। सब दी मेरे हथ्थ डोर, तन्द इक्को इक बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गढ़ी चमकौर तक्क नज़ारा, मुहम्मद नैणां नीर वहाईआ। तोबा तोबा परवरदिगारा, अन्तगुफ़ार तेरी सरनाईआ। हाहाकार कर के मारे नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं तक्कया तेरा गोबिन्द इक सुत दुलारा, जिस नूं आपणी उँगली लाईआ। मेरी उम्मत आया पासा हारा, जो झगड़ा करे बण लोकाईआ। तेरा सूरबीर इक दुलारा, तेरे भाणे विच समाईआ। जिस साचे पुत्रां कीता प्यारा, तेरे दर रिहा घलाईआ। घोड़ी चाढ़ अजीत जुझारा, मेरी दिती जड़ उखड़ाईआ। अग्गे दिसे ना कोई किनारा, नईया शौह दरया रुढ़ाईआ। उह इकीआं दा सरदारा, उह इकीआं दा लाड़ा, उह इकीआं दा प्यारा, आपणी करनी रिहा कमाईआ। हुक्मे अन्दर मैनूं दित्ता इशारा, बिन शरअ दित्ता समझाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी करां खेल न्यारा, छब्बी पोह जोती जोत नाल मिलाईआ। जन भगतां ला इक अखाड़ा, साची मजलस रिहा बणाईआ। पूत सपूतां करां प्यारा, पिता पूत गोद उठाईआ। माण देवां दूजी वारा, दोज़ख़ बहिश्त दोहां डेरा ढाहीआ। इकीआं अग्गे कर सिक्दारा, साचे पौड़े दयां चढ़ाईआ। अजीत जुझार दा इक मनारा, बिन झूजिआं आपणे लेखे लाईआ। दीन मज़्ब दा पार किनारा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तेरी उम्मत मेरा नाअरा, कलमा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछली आशा पूर कराईआ। गढ़ी चमकौर लई तक्क, तकवा तेरे उते रखाईआ। सदी बीसवीं देदे हक़, मुहम्मद निउँ निउँ रिहा सुणाईआ। मैं वेखां आपणी अक्ख, ईसा मूसा नाल मिलाईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, मेहरवान होए सहाईआ। भगत दुलारे आपणे रख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। इकीआं कोलों लेखा चुकाया अट्ठ सट्ठ, इकीआं कोलों पिछला घाटा पूर कराईआ। दोनां विच बणाया आपणा हट्ट, सच वणजारा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण प्रभ तेरी धार अचरज, इक्को नज़री आईआ। धन्न भाग तूं मिल्या विछड़त, विछड़े लए मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे ऐशो इशर्त, आशक माशूक तेरा रूप नज़री आईआ। तेरे दर ते तेरी दिसे फ़ितरत, इबरत तेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। तेरी वड्याई धुर दी इकी, अकल कल अख्वाईआ। जगत जहान दिसे निक्की, श्री भगवान रिहा सालाहीआ। हथ्थ रखाया तिन्नां पिट्ठी, पुश्त पनाह इक जणाईआ। लख चुरासी जिन्नां जिती, दर तेरे सोभा पाईआ। धन्न भाग वीह सौ वीह मिती, बिक्रमी आपणा राग अल्लाईआ। गोबिन्द तेरी लेखे लग्गे चिट्ठी, जो माछूवाड़े गया लिखाईआ। लोकमात होर किसे ना डिठी, ज्ञानी ध्यानी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चिट्ठी विच प्रभ रह गई इक बात, जिहड़ी साहिब ना अजे समझाईआ। लेखा लिखदे नाल कलम दवात, ना को मेटे मेट मिटाईआ। तैनूं दस्सया इक वार हालात, हालत आपणी आप जणाईआ। मेरी कदे ना होवे वफ़ात, जन्म मरन गेड़ ना कोए रखाईआ। तेरे नाल जुड़या रहे नात, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तूंही पिता तूंही मात, माता गुजरी तेरी सेव कमाईआ। तूही सिफ्त तूही ज़ात, ज़ाहर ज़हूर तूही नज़री आईआ। तूंही राग तूंही तूंही गाई तेरी गाथ, दस्म ग्रन्थ ग्रन्थ पन्थ समझ सके ना राईआ। जिस दे विच्चों तेरा निकले पाठ, तिस पाठ विच्चों तेरी सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। मेरी इक्को पूरी कर ख्वाहिश, ख़ालस तैनूं रिहा जणाईआ। तेरा भगत तेरा नाउँ गाए स्वास स्वास, इक्को तेरा इष्ट मनाईआ। मैं अन्तिम गया आख, पुरख अकाल दाता बेपरवाहीआ। अन्तिम देवे सर्ब नजात, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे माण वड्याईआ। दे दे वड्याई गोबिन्द ठाकर, हरि गोबिन्द मंग मंगाइंदा। गहर गम्भीर डूंग्घे सागर, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। ग़रीब निमाणयां देवीं आदर, समझ तेरी झोली पाइंदा। तूं करता मेरा करीम कादर, कुदरत तेरा रूप वखाइंदा। धुरदरगाही तेरा आदल, अदल इक्को मोहे भाइंदा। कलयुग लेखा देणा बदल, बदली तेरी रहमत विच जणाइंदा। मेरी पूरी ना होवे मज़ल, मक्सूद तेरे नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मेरी मंग तेरी टेक, टिक्का तेरे नाम लगाईआ। निरगुण आवें धर के भेख, भेखाधारी रूप वटाईआ। भगत भगवान लएं पेख, बिन अक्खां नैण खुल्लाईआ। निरगुण हो के करीं हेत, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रखीं साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ रख भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा रूप नज़री आईआ। निहकर्मी करना आपणा कम्म, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। कलयुग बेड़ा देणा बन्न्ह, बन्धन आपणा नाम रखाईआ। गुरसिख चमकाउणा साचा चन्न, चन्द चांदनी जोत रुशनाईआ। साचा देणा नाम धन, अनमंगी वस्त आप वरताईआ। इक्को राग सुणौंणा कन्न, ढोला इक्को इक जणाईआ। मैं तेरा बरदा जावां बण, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

इक्को देणा सच्चा वर, दर वेखां चाईं चाईंआ। तेरा दर वेखण दा चाउ घनेरा, मेरे अन्तर वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म तेरा वेखां खेड़ा, जिस दवारे तूही नज़री आईआ। ज़ात पात ना रहे झेड़ा, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। ओथे तेरे भगतां लग्गे डेरा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। सारे कहिण तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को रूप नज़री आईआ। ओस वेले गोबिन्द कहे गुरसिख मेरा चेरा, चेला गुरसिख हरि गोबिन्द नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, रुत्त सुहञ्जणी इक सुहाईआ। रुत्त सुहौणी सति सुहञ्जणी, सोभावन्त तेरी वड्याईआ। तेरा रूप जोत आदि निरँजणी, निरगुण निरवैर कार कमाईआ। तेरा खेल दर्द दुःख भय भंजनी, भव सागर पार कराईआ। तेरी चरण धूढ़ साचा मजनी, दुरमति मैल धवाईआ। तेरी संगत हरिसंगत रूप सजणी, सज्जण साचे लएं मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, तुध बिन समझ ना कोए समझाईआ। तुध बिन समझ ना आवे कोए, लेखा सके ना कोए जणाईआ। तुध बिन भेव ना जाणे कोए, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। तुध बिन उठाए ना कोई सोए, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तुध बिन कोई ना देवे ढोए, धुर दी दात वरताईआ। तुध बिन अमृत कोए ना चोए, पंच प्यार ना कोए बणाईआ। तुध बिन गुरसिखां प्यार विच कोए ना रोए, बच्चे भेंट ना कोए चढ़ाईआ। तुध बिन मेरा कोई ना होए, कोटन आ आ गए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी आप कमाईआ। तेरे जोगा होया दास, हरि गोबिन्द आख जणाईआ। इक्को वार करी अरदास, दूजी वार ना मंग मंगाईआ। नित नवित्त वसां तेरे पास, सगला संग रखाईआ। मेरी पूरी करनी ख्वाहिश, वीह सो वीह बिक्रमी गई आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे खड़े उदास, वेखण नेत्र नैण उठाईआ। श्री भगवान की कोई स्नेहड़ा देवे आख, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। मेरी मनसा पूर आस, प्रभ पूरन तेरी वड्याईआ। हउँ बालक नढ्ढा सेवक दास, चाकर रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी रखी आस, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। इक वार दे शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। शाबाश कहे के आख प्रभ, गोबिन्द दयां वड्याईआ। सन्त सुहेले तेरे सब, गुरसिख गोद बहाईआ। अग्गे जन्म मरन दी चुक्की हद्द, हालत सब दी दिती बदलाईआ। जो पिच्छे पिच्छे दित्ते छड्ड, सो अग्गे अग्गे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मैं ना मन्नां, प्रभ दस्सां सच जणाईआ । औह वेख रौला पाउँदा धन्ना, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गंवार

जट्ट कहे पुरख अकाल बैठा हो के अन्ना, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। नामा कहे मेरे हथ्थ जिस फड़ाया छन्ना, सो छप्परी छन्न रिहा छुहाईआ। कबीर जुलाहा आया भंना, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। रविदास चुमार कहे मेरा मिटया अजे ना सल्ला, ब्रह्मण लेखा रिहा ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण इकट्ठा कर लओ हल्ला, इक्को वार बल धराईआ। दूर दुराडी वेंहदी आवे राणी अल्ला, सजदा कर कर सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान सब नूं कहे मेरे गुरसिखां फड़ लओ पल्ला, जिन्हां तुहाढ्ढी याद मैनूं कराईआ। सुणया प्रभ बण के आया झल्ला, निरगुण सरगुण समझ किसे ना पाईआ । करया प्रकाश माटी खल्ला, पंज तत वज्जी वधाईआ। मैं लेखा याद करावां जो कीता नाल डल्ला, मालवे बिन कलमों दित्ता लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सद देवे माण वड्याईआ। डल्ले कर उह ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। जिस वेले अद्धी म्यान विच्चों खिच्ची किरपान, फड़ हथ्थां वंड कराइंदा। एह कल्गी वाले दा उह निशान, बिन कल्गी वाले समझ कोए ना पाइंदा। तेरे दिसण चौथे जुग जवान, मेरा जवान नज़र किसे ना आइंदा। डल्ले मंगया इक्को दान, निउँ के चरणी ससि झुकाइंदा। किरपा कर मेहरवान, मेहर तेरी आपणी झोली पाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे तूं शैतान, गोबिन्द तेरे नाल नाता जुड़ाइंदा। जिन्हां विच वसे भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। तेरा जन्म देवां विच जहान, इक्की सिक्खी आपणी धार बंधाइंदा। उह सिक्खी दा झुल्ले सच निशान, जिस दा राह वीह सौ वीह मात तकाइंदा। एह किसे ना लिख्या ब्यान, शब्द इशारे नाल पढ़ाइंदा। उह सिक्खी होई प्रधान, जिन्हां छब्बी पोह आपणा रंग रंगाइंदा। जिन्हां अग्गे गोबिन्द सुत बणे बलवान, साची सेवा आप समझाइंदा। इक्की सिख उठ उठ के हरिसंगत पिच्छे चले जाण, पहरेदार आप बणाइंदा। सारे मिल के सारे फेर गाण, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिस दा राखा इक्को नजरी आइंदा।

गुरमुखां गुरमुख पहरेदार, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। नेत्र वेख के राए धर्म रोवे ज़ारो ज़ार, दूर दुराडे दए दुहाईआ । चित्रगुप्त सब दे लेखे लए पाड़, कहे मेरी चले ना कोए चतुराईआ। लाड़ी मौत खुल्ही गुत्त रही वखाल, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। जमदूत होए बेहाल, भज्जण वाहो दाहीआ। चीकां मारे कूके काल, आप आपणा रिहा मिटाईआ। सारे कहिण चलो चल के करीए इक सवाल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ । पिछली मिसल देईए वखाल, जो साडे हथ्थ फड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग असां सेवा कीती कमाल, तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। अन्त वेख साडा हाल, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लए उठाईआ। रोंदे कुरलौंए आउँदे दर, चीक चिहाढ़ा रहे पाईआ। दरवाजिउँ बाहर गए खड़, अग्गे लँघ कोए ना आईआ। मूँह दे भार डिगे दड़, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। अग्नी नाल रहे सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सारे ढोला रहे पढ़, साचा राग अलाईआ। प्रभ असीं जीउदे गए मर, साडी करनी कम्म किसे ना आईआ। असीं कीहनूं लईए फड़, फड़ देईए किस सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। साहिब सतिगुर सदा दयाल, मेहरवान दया कमाईआ। सारे आओ मेरे लाल, अग्गे इशारे नाल मंगाईआ। आपणा नेड़े आ के दस्सो हाल, दूर कूक क्यों कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवाजिउँ अग्गे लए बुलाईआ। दर दरवाजिउँ अग्गे आओ लँघ, सो साहिब आप जणाईआ। अग्गे लँघ के वेखो मंगदे मंग, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा सोहणा दिसे पलँघ, जिस उते डेरा लाईआ। एथे कोई ना रहे घमण्ड, माण अभिमान ना रूप जणाईआ। असीं खुश होए वेख के तेरे गुरमुख सच्चे चन्द, चारों कुण्ट करन रुशनाईआ। सानूं वेख के पई ठंड, अग्नी तत रिहा ना राईआ। साडा लेखा लग्गा पन्ध, पिछली वाट कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां चारों कुण्ट तेरे नाम दा गाया छन्द, सोहँ ढोला रहे गाईआ। साडी ओन्हां अग्गे मंग, फ़रयाद रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। देवां वड्याई वार इक, इक्को वार समझाईआ। तुहाडे साहमणे लेखा दित्ता लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। एह गोबिन्द दे सच्चे सिक्ख, जिन्हां साची सेव कमाईआ। एह भगत भगवान नाल करन हित्त, हितकारी रूप वटाईआ। एन्हां अन्दर वसया चित्त, जगत ठगौरी कोए ना पाईआ। एन्हां दा लहिणा देणा नजिठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे लग्गण नहीं देणी पिठ, मेरी किरपा नाल तुहानूं सारयां नूं गए जित्त, धर्म राए चित्रगुप्त तुहाडा लेखा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। धर्म राए कहे मैं सीस नवाउँदा हां। चित्रगुप्त कहे मैं धूढ़ी टिक्का लाउँदा हां। दर आ के भुल्ल बख्शाउँदा हां। धन्न भाग मैं वेखी उच्ची कुल, जिस कुल विच तेरा भगत रूप वखाइंदा। दर आयां पाउणा मुल, कीमत तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। एन्हां चरण प्रीती जाणा घुल, हउँ घोली घोल घुमाइंदा। खुशीआं नाल हिलावां बुल्ह, दन्दां नाल सिफ्त सालाइंदा। एह गोबिन्द फुलवाड़ी मौले फुल्ल, पत डाली महकाइंदा। एह दीपक कदी ना होया गुल, जिन्हां जोती नूर नाल चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी आप कमाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। चित्रगुप्त दए वधाईआ। राए धर्म खुशी वखाईआ। लाड़ी मौत सेव कमाईआ। रसना कहे तेरी खेल बेपरवाहीआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस अचरज रीत चलाईआ। तेरी अचरज रीत अवल्ली ए। तेरे बाग़ दी महकी कली ए। बण के इक्को वल छली ए। तेरी जोत इक्को बली ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कीती खेल इक अवल्ली ए। तेरी खेल अवल्लड़ी दिसदी ए। तेरी जोत ना किसे उते विसदी ए। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां लेख लिखदी ए। बिन भगतां जाए औंतरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपे आप नजिठदी ए। राए धर्म उठ कर दीदार, तैनूं खुशीआं नाल कराइंदा। चित्रगुप्त उठ पेख नेत्र हाल, नज़ारा इक जणाइंदा। लाड़ी मौत दर दए बहाल, तेरी सेवा सच समझाइंदा। एह सोहणे सज्जण मेरे यार, जिन्नां आपणे रंग रंगाइंदा। इन्नां विच्चों प्रगट होवे गोबिन्द धार, गुर शब्द रूप वटाइंदा। शब्द जोत करे प्यार, जोती जाता आप अख्वाइंदा। चारों कुण्ट पहरेदार, दहि दिशा रूप वखाइंदा। गुरमुख सज्जण कर प्यार, तरह तरह नाल समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। चार कुण्ट खिड़ी गुलज़ार, पुरख अकाल आप महकाईआ। इकीआं इकीआं नाल प्यार, एकँकार रिहा बंधाईआ। जे अग्गे वेखो नज़री आए सिरजणहार, पिच्छे तक्को गोबिन्द सेव कमाईआ। संगत दोहां दे विच बैठी अद्धविचकार, ख़तरा ख़ौफ़ रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे हरि दाता, आपणी दया कमाइंदा। भगत वछल हरि पुरख बिधाता, बिध साची सच जणाइंदा। निरगुण सरगुण जुड़या नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। पुरख अकाल मन्नया आखा, गोबिद बेनन्ती पूर कराइंदा। पिछला पूरा कीता घाटा, वाधा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। पिछला घाटा होया पूरा, हरि सतिगुर आप कराईआ। संगत दवारे हाज़र हज़ूरा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। पन्ध मुकाया नेड़ दूरा, दूर दुराडा चल के आईआ। कूड़ी क्रिया हूंझया कूड़ा, दुरमति मैल धवाईआ। आपणा कौल करे पूरा, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सतिगुर राखा, राखी दिवस रैण कराईआ। मेरी प्रीती जोड़ नाता, रंग आपणा दए रंगाईआ। इक्को सब ने मन्नणा आखा, हरिसंगत मन्नणा भैण भाईआ। गुरसिख हो के रूप धरे ना कोई नार कमज़ाता, मन मति ना कोए प्रनाईआ। घर बैठयां सब दीआं पूरीआं करे आसां, जो बैठण ध्यान लगाईआ। रातीं सुत्यां पन्ध मुकाए वाटां, आवे जावे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। जन भगतो सुणो ला कन्न, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। बिन वञ्झ मुहाणयो बेड़ा

दित्ता बन्न, चपू आपणा नाम लगाईआ। बण के धुरदरगाही जननी जन, हरिजन साचे गोद उठाईआ। लेखे लगा ख़ाकी तन, जो गुरमुख गुरसिख दर आए दर्शन पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा चमकदा नूरी चन्न, हरिजन हरि हरि आप चमकाईआ। रसना जिह्वा मिल इकीआं नाल हरिसंगत कहो धन्न धन्न, धन्न प्रभ धन्न तेरी वड्याईआ। तुहाडे पिच्छे श्री भगवान तुहाडा आखा ल्या मन्न, क्यों बैठे तुसीं भुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुशीआं नाल देवे दान, सब दी झोली आप भराईआ।

✻ २७ पोह २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✻

नाम जोती पीओ भंग, भंगढ़ा वेखे लोकाईआ। जिस दा चढ़े अनोखा रंग, रंग नज़र किसे ना आईआ। नच्चीए टप्पीए बण मलंग, खुशीआं ताल वजाईआ। जगत दवारयों अग्गे लँघ, घर आपणा वेख वखाईआ। जिस गृह खेल सूरा सरबँग, निरगुण करता रिहा कराईआ। दिवस रैण इक अनन्द, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाईआ। कर प्रकाश नुरानी चन्द, जोती दीप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भंग इक्को इक समझाईआ। साची भंग नाम खुमारी, बिन रगड़यों रगढ़ा दए लगाईआ। आत्म परमात्म टुट्टी गंढु यारी, यारां इक्को घर वखाईआ। महल अटल सोहे तन मनारी, बंक वज्जे इक शनवाईआ। नज़री आए निरगुण निरँकारी, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस इक्को भंग प्याईआ। पीओ भंग लाओ रगढ़ा, डण्डा कूंडा नज़र कोए ना आईआ। जिस पीत्तयां आवण जावण मुके झगड़ा, नाता छुटे जगत लोकाईआ। राए धर्म ना लए बदला, अग्गे देवे ना कोए सज़ाईआ। गुरमुख चढ़े आपणी मंज़ला, सन्त घर वेखण चाईं चाईंआ। जिस घर होवे इक्को अदला, इन्साफ़ आपणा आप समझाईआ। पी भंग ना होवे पगला, पागलपन परे हटाईआ। घर सुणे चार मंगला, गीत सुहागी ढोला गाईआ। फेर जे लेखा पुछो अगला, अग्गे चंगी तरह समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भंग इक्को इक समझाईआ। पीओ भंग चढ़े मस्ती, मस्त दीवाना रूप वटाईआ। जिस पीत्तयां नज़री आए इक्को हस्ती, हस्त कीट रूप ना कोए वखाईआ। काया मन्दिर सोहे बस्ती, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भंग इक प्याईआ। पीओ भंग फड़ प्याला, साचा कासा इक समझाईआ। जिस विच वसया दीन दयाला, निरगुण आपणा आसण लाईआ। जिस पीत्तयां नाता तुटे काल महाकाला, जगत जंजाला तोड़ तुड़ाईआ। ओस भंग दा देवां हवाला, जेहड़ी भंग

पोसत डोडयां विच कदे ना आईआ। जिस दे पीवण दा राह सुखाला, सतिगुर पूरा दए समझाईआ। पिछला कोई कहिण दा नहीं हवाला, हालत वेंहदयां दए बदलाईआ। की करे विचारी बिहंगम चाला, जिन्हां आपणी गोद बहाईआ। सो गुरमुख गुरसिख भगत भगवान सचखण्ड बैठण सच्ची धर्मसाला, अग्गे पन्ध नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मस्ती मस्त अलमस्त आपणे नाम चढ़ाईआ। भंग कहे मैं बड़ी चलाक, आपणे विच रखां वड्याईआ। साधां सन्तां विच रलाया ख़ाक, मूँह दे भार सुटाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना खोल्हे तेरा ताक, ताड़ी तेरे नाल ना कोए लगाईआ। सब नूं लग्गी झूठी चाट, रसना जिह्वा स्वाद बणाईआ। जो आए प्रभू तेरे घाट, तिन्हां लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा रस, रस इक्को इक समझाईआ। भंग कहे मेरा वेखो घोटा, रगढ़ा रगढ़े नाल बंधाईआ। जेहड़ा मैनूं पी के होया मोटा, रातीं सुत्यां सुरत भुलाईआ। सचखण्ड दवारयों कीता खोटा, कीमत अग्गे ना कोए रखाईआ। की होया जे काया भरया लोटा, अन्तर मूँह दे भार रुढ़ाईआ। जिन्हां चिर अन्दर जगे ना निर्मल जोता, सच सरूप ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भंग खुमारी इक्को इक वखाईआ। इक भंग बिन कूंडे डण्डे, आपणा रस वखाईआ। इक भंग जन भगतां नाल हंढे, साचा संग निभाईआ। इक भंग प्रभ नालों टुट्टी गंढे, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। इक भंग जगत साध कीते मारन खण्डे, टक्करां साहनां वांग लगाईआ। इक भंग प्रेम प्रीती घर घर वंडे, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। इक भंग मूर्खां चुक्की फिरदी कंधे, जिउँ भावे तिउँ रही भवाईआ। ओस भंग ते प्रभू कदी ना मन्ने, जो भंग टकयां नाल मंगाईआ। गुरमुख सज्जण उह चंगे, जो पी नाम भंग अट्ठे पहर ताड़ी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, रस आपणा नाम वखाईआ।

आसा पुन्नी होई शांत, गुर अवतार रहे जस गाईआ। किरपा करी प्रभ ठाकर आप, मेहरवान होया सहाईआ। पूरब लेखा कर बेबाक, लहिणा देणा दित्ता मुकाईआ। सच दवारे कर इतफ़ाक, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक, गोबिन्द इक दए वड्याईआ। आप मिला आपणी ज़ात, ज़ात ज़ात विच रखाईआ। निरगुण हो के खोल्लया ताक, ताकतवर पर्दा लाहीआ। सच सुणाई इक्को बात, महिमा अकथ कथ प्रगटाईआ। पूरब जन्म दी मुकी वाट, अग्गे पन्ध ना कोए पाईआ। मेट रैण अन्धेरी रात, सच नूर करे रुशनाईआ। पीर पैगम्बर जो गए आख, सो पूरी दिती कराईआ।

लहिणा चुक्कया मस्तक माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पिछला लहिणा देणा मुका, मुकी वस्त पराईआ। किरपा करी आप खुदा, मेहर नज़र इक टिकाईआ। दूजा नाता दित्ता छुडा, इक्को घर रिहा वखाईआ। साचा मन्दिर दित्ता सुहा, महिफ़ल आपणा नाम सुणाईआ। काग़ज़ छाही लहिणा दित्ता चुका, कलम करे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हिसाब बेबाक कीता आप, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मन्नया बाप, सो बेनज़ीर होए सहाईआ। जिस दा नानक गोबिन्द दस्सया जाप, सो जगजीवण दाता वेस वटाईआ। जिस जुग चौकड़ी दित्ते थाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ रखाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादी पाक, पतित पापी लए तराईआ। कर खेल पुरख समराथ, समरथ आपणी धार वखाईआ। निरवैर हो के खोल्ह आख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। साडे सब दे ख़ाली कर के हाथ, चारों कुंट रिहा वखाईआ। ना कोई रिहा त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां लए उठाईआ। ना कोई रिहा पूजा पाठ, रसना जिह्वा ढोला कोए ना गाईआ। ना कोई रिहा तीर्थ ताट, तट किनारा वेख वखाईआ। किरपा कर के खोलया हाट, दर दवारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। लेखा मिल्या अन्तिम आण, अन्तष्करन नज़र कोए ना आईआ। करया खेल श्री भगवान, दूजा संग ना कोए रखाईआ। साडे उते करे ना कोई ईमान, ईमान प्रभ दी झोली पाईआ। नेत्र रोंदी वेखी अञ्जील कुरान, बाईबल रो रो दए दुहाईआ। साडा पैंडा मुकया आण, मुकी हद्द पराईआ। जिस ने साचा दित्ता निशान, सच निशाना इक्को इक झुलाईआ। जिस दा गीत गा गा थक्की बिनां ज़बान, ज़ेर ज़बर नाल मिलाईआ। अल्फ़ ये होई हैरान, हालत आपणी रही जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण लै चवीआं अवतारा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। मथ्थे टिकावण दी गई बहारा, बिहबल हो के सर्ब सुणाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वड़न दा गया नज़ारा, निरगुण नज़ाम आप बदलाइंदा। तीर्थ तट नहावण दा गया सहारा, किनारा इक्को इक जणाइंदा। गोपी काहन नच्चण दा गया अखाड़ा, साची सखी गुरमुख रूप वटाइंदा। नाता तुट्टया कूड़े यारां, यारी आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। सब दा लेखा दित्ता निवार, नवाज़श रहमत आप कमाईआ। गुज़ारश करन गुरू अवतार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सफ़ारश करीए ना किसे दी विच संसार, अग्गे संग ना कोए निभाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी छब्बी पोह तेरा तुआरफ़ कराया कल्की धर अपर अपार, शब्द

इशारे नाल जणाईआ। इबारत लिखे ना दूजी वार, कलम छाही ना कोए वड्याईआ। डूंग्घी गारत कर उज्यार, नूरी चन्द दित्ता चमकाईआ। आलस निंद्रा दिती उतार, ग़ाफ़ल रूप ना कोए वटाईआ। महिफ़ल इक लगा सच्ची सरकार, मुहब्बत साची दिती समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन पुकार, पुनह पुनह तेरी सरनाईआ। दोज़ख़ बहिश्तों वसे बाहर, स्वर्ग नरक चले ना कोए चतुराईआ। अर्श फर्श तेरी कार, कुर्श तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे माण वड्याईआ। लेखा चुक्कया पिछला मूल, असल तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी किरपा समझया तेरा असूल, असलीअत तेरे विच्चों नज़री आईआ। तेरा सुण के हुक्म माअकूल, मुहब्बत तेरे नाल लगाईआ। तेरे नाम दा लए ना कोए मसूल, मुला शेख़ पंडत पांधा ग्रंथी तेरा नाउँ ना हट्ट विकाईआ। तेरे चरण दी सच्ची धूल, भबूती इक्को नज़री आईआ। किसे कम्म ना आए त्रिशूल, शंकर बैठा ध्यान लगाईआ। ब्रह्मा रो रो कहे मैं गया भूल, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। विष्नूं कहे मैं ना जाणा तेरा असूल, शाह पातशाह तेरी वड्डी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पए हस्स, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। अज्ज तों साडी होई बस, बसते सर्ब बंधाईआ। ख़ाली वखावण आपणे हथ्थ, दो जहान जणाईआ। जिस ने दिती सानूं मति, सो मतिवाला फेरा पाईआ। जिस दा मार्ग गए दस्स, सो आया बेपरवाहीआ। दो जहान पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, बण पांधी फेरा पाईआ। बीस साल दस्सदा रिहा साची गाथ, अक्खर गा गा मात जणाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, लोकमात रहिण ना पाईआ। जन भगतां देवे दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। अन्दर वड़ के करे बात, बाहरों कहिण कुछ ना पाईआ। आपणा कारज करे ख़ास, ख़ालस गुरमुख रिहा प्रगटाईआ। गोबिन्द पूरी करे आस, माछूवाड़े रुत्त सुहाईआ। पिछला लेखा करे बेबाक, अगला ताक आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी ख़ुशी ख़ुशी नाल मिलाईआ। ख़ुशी ग़मी कराए मेल, मेला आपणे नाल कराईआ। सच दवारे चाढ़े तेल, सगन इक्को झोली पाईआ। परम पुरख सज्जण सुहेल, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। सति धर्म दी वधाए आपे वेल, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी कर के फ़ेल, गुरसिख थोड़े लए तराईआ। सचखण्ड दवारयों कर के वेहल, कुम्भी नरक लए सुहाईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेल, गुर चेले लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई पारब्रह्म, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। पूरन होया धुर दा कर्म, कम्म आपणा आप समझाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बणया रिहा नरम, अन्तिम आपणा हुक्म वडियाइंदा। अग्गे कोई ना रहे भरम, गुर अवतार सर्ब समझाइंदा। इस दे चरणी

लग्गयां मिटे जन्म मरन, आवण जावण गेड़ चुकाइंदा। सतिगुर मिलयां नहीं कोई शरम, हया हयाती विच्चों बाहर कढ्ढाइंदा। आत्म परमात्म इक्को धर्म, धर्म आपणा इक समझाइंदा। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म, गुरमुख विरला लेखे लाइंदा। सन्त सुहेले पौड़े चढ़न, सतिगुर डण्डा नाम फड़ाइंदा। भगत भगवान ढोले पढ़न, सोहँ साचा राग अलाइंदा। गुरसिख घर सच दवारे वड़न, श्री भगवान कुण्डा लाहइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, ज़ात पात पन्ध मुकाइंदा। दरस करा इक्को चरण, चरणोदक मुख चवाइंदा। जागरत सोवत खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी पुरख समरथ, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। पिछला लेखा होया भट्ठ, अगली करनी लए कमाईआ। चार जुग दा बंद दवारा होया बंक, अग्गे मन्दिर इक वसाईआ। बण स्वांगी खेल कर नटूए नट, आप आपणी रास रचाईआ। तेरा रूप अगम्मी सच्च, जुग चौकड़ी नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां काया माटी भाण्डा भन्नया कच्च, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरे नूर गए रच, जोती जोत विच समाईआ। अन्तिम दित्ता पूरा हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। खुशीआं नाल वेख्या अक्ख, आख़र तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां देवे माण, श्री भगवानया। तेरे चरण करन ध्यान, नाता तुटे दो जहानयां। तेरा सुणन सच्चा फ़रमान, धुरदरगाही बोल महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक परवानयां। सच परवाना दे दे गीत, गायत्री मन्त्र ना कोए पढ़ाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, पंडत मुल्लां नेड़ कोए ना आईआ। भगतां दस्स दे आपणी रीत, जेहड़ी कबीर गया समझाईआ। तूं नीचों कर ऊँच, ऊँच नीच तेरी सरनाईआ। तेरा मन्दिर दवारा वेखीए दहिलीज, घर वड़ के दर्शन पाईआ। तेरा नूर नज़री आए ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। मिटे रैण अन्धेरी तारीक, चन्द इक्को इक रुशनाईआ। तेरी धार सदा बारीक, बारीकी विच्चों लए प्रगटाईआ। तेरे नाल लग्गे प्रीत, प्रीतीवान सच्चे माहीआ। सदी सदीवी रही बीत, बीस बीसा दए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी पढ़न हदीस, कलमा इक्को इक सुणाईआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, जगदीश तेरी वड्याईआ। तेरा रंग चढ़े मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मेरे साहिब सज्जण मीत, मित्र प्यारे तेरी वड सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। माण वड्याई दे इक, एकँकार मंग मंगाईआ। जन भगतां लेखा दे लिख, तेरा लेख ना कोए मिटाईआ। सच दुआर कर हित्त, हित्त आपणे नाल बंधाईआ। अग्गे फेर ना देवीं पिट्ठ, पिछली करवट लै बदलाईआ। तेरे दर तों मंगी भिख, दूजे दर मंगण ना जाईआ। उह गुरमुख सच्चे सिख, जिन्हां सिख्या तेरी भाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दे माण वड्याईआ। सिख्या तेरी सिक्खी सच्च, सो साहिब सच्चे सुल्ताना। तेरा लेखा ना आया हथ्थ, शाह पातशाह नौजवाना। मन्दिर दवारा वेख्या झट्ट, आए विच मैदाना। जन्म मरन दा गेड़ा कट, तेरे चरण विटुह कुरबाना। नाम चढ़ा साचे रथ, बण रथवाही विच जहाना। आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, दोए लोचण पन्ध मुकाना। हकीकत विच्चों दे हक़, लाशरीक मेरे मेहरवाना। पीर पैगम्बर गए थक्क, गुर अवतार देण ब्याना। इक्को देवणहार पुरख समरथ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण जीव जहाना। श्री भगवान कहे नाल दाअवा, जन भगत आप जणाईआ। नाता जुड़या पुत्तरां मावां, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ । जुग चौकड़ी दा कटया तुहाड्डा फेर लगाया नावां, लेखे आपणे विच रखाईआ । फड़ के भुजां उठाया बाहवां, बल आपणा आप प्रगटाईआ। फड़ के हँस बणावां कावां, कागों हँस रूप वटाईआ। सिर दे के ठंडीआं छावां, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे दात हो दलेर, दलेरी इक्को इक जणाइंदा। नव नौ चार पिच्छों कीती मेहर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा । जुग जन्म दे विछड़े लए घेर, घेरा आपणा नाम रखाइंदा। पहरेदार हो के शेर, कूड़ी क्रिया परे हटाइंदा। दूर दुराडे आया नेड़, नेड़े हो के दरस दिखाइंदा। अगला पिछला लहिणा दए नबेड़, बाकी आपणी झोली पाइंदा। निरगुण कोई ना करे हेर फेर, अछल छल रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। भगतां तार खोल्हे ताक, पर्दा उहला रिहा उठाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बण मुशताक, मुश्किल सब दी हल कराईआ। सदी चौधवीं मिलण दा इक इतफ़ाक, इतफ़ाकीआ आपणा मेल मिलाईआ। परवरदिगार बणे पाक, पाकीज़ा आपणा रूप वटाईआ। साहिब हो के देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। लेखा लिखे कलम दवात, कागज़ नाल पाए गवाहीआ। तिन्हां मुरीदां मिली नजात, जिन्हां मुर्शद इक्को नज़री आईआ। वफ़ात विच्चों बणाए जमात, जमात विच्चों आपणा आगाज़ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग रखाईआ। संग रखाए एकँकार, अकल कला इक अख्वाइंदा। दूजे दर ना होए ख्वार, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। नाल रला गुर अवतार, पीर पैगम्बर जोड़ जुड़ाइंदा। साचा मन्दिर कर त्यार, अन्दरे अन्दर खेल वखाइंदा। छत्ती जुग दा लाह उधार, कर्जा मकरूज झोली पाइंदा। नामा कहे मेरी पूरी आस, छप्पर छन्न सोभा पाइंदा। धन्ना कहे मेरे वड्डे भाग, वडभागी वेख वखाइंदा। कबीर कहे दर जगया चिराग़, दीवा बाती नज़र कोए ना आइंदा। गोबिन्द कहे प्रभ मिल्या धुर सुहाग, कन्त इक्को नज़री आइंदा । श्री भगवान कहे मेरा भगत

समाज, सच्चा मार्ग इक्को लाइंदा। निरगुण निरगुण रचया काज, घर साचे खेल कराइंदा । इक्को मारे अगम्मी आवाज़, सोई सुरती आप उठाइंदा। दूर दुराडे आए भाज, पांधी पिछला पन्ध मुकाइंदा। लेखा चुके जगत निमाज़, वुज़ू सजदा रहिण कोए ना पाइंदा। गुरमुख फोले ना कोए किताब, कुतबख़ाना आपणा नाम बणाइंदा। तन्दी फड़ वजाए ना कोई रबाब, बहत्तर नाड़ी सतार आप हिलाइंदा। काग़ज़ कलम करे ना कोई आदाब, निरगुण जोती नूर इक रखाइंदा। जिस दा लेखा वन्डया ना जाए किसे विच बाब, आपणी बाबत गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। कलयुग अन्तिम सारे कर लाजवाब, जवाब तलबी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस दा देंदा रिहा ख्वाब, सो ख़बर आप सुणाइंदा । इक्को इक साहिब गुरू महाराज, महाबली हरि अख्वाइंदा। जिस ने पहली वार सीस ते रख्या ताज, पंचम कल्गी इक्को रूप वटाइंदा। उस दे चरणां थल्ले कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर बहि बहि पढ़न निमाज़, बिन आपणी किरपा सजदा किसे ना कबूल कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। ना कोई रोज़ा ना कोई बांग, शरअ मसला नज़र कोए ना आईआ। ना कोई तन ख़ाकी वटाए स्वांग, स्वांगी रूप ना कोए जणाईआ। इक मुहम्मद पूरी करे तांघ, दूजा ईसा नाल मिलाईआ। तीजा मूसा कहे मैथों झल्ली ना जाए तेरी कांग, जलवा कोहेतूर तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च रहे समझाईआ। ना जलवा पाथर कोहतूर, चशमा चशम रशम ना कोए जणाइंदा। ना आदल ना फ़ाज़ल खेल करे मज़बूर, मज़बूरी रूप ना कोए वटाइंदा। जुग चौकड़ी जो दस्सदा रिहा दस्तूर, सो दस्तावेज़ काग़ज़ हथ्थ फड़ाइंदा। नव नौ चार जो रिहा मफ़रूर, सो हाज़र हो के खेल कराइंदा। जिस दा किसे ना लिख्या मज़मून, मजमूआ हरफ़ ना कोए बणाइंदा। जिस दा हथ्थ ना आया कानून, सो ला लुगात ना किसे समझाइंदा। जो पीरां पैगम्बरां करदा रिहा फ़ून, फ़ुन इशारे नाल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। करनी करे इक अलग, वक्खरी धार चलाईआ। पीरो पैगम्बरो तुहाडु करे पूरा हज्ज, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। पिछले सबक दी होई बस्स, अग्गे मकतब इक खुल्हाईआ। अल्फ़ ये देवे ना कोई मति, ऐन इशारा अक्ख ना कोए मिलाईआ। मुरीद मुर्शद हो के वस, मसला सच्चा हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ होया मौजूद, मजलस इक्को इक लगाईआ। किसे नज़र ना आए वजूद, वज़ूह वजाहत नाल सके ना कोए समझाईआ। ना कोई तत काया कलबूत, हड्ड मास नाड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। कलमे अन्दर दस्सदा रिहा सबूत, पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। आदि जुगादि ना होया नेसतो नाबूद, चोटी जड़ नज़र किसे ना आईआ। दरोही

खुदाए खुदा किथे रिहा महफूज, पर्दा उहला आपणा इक रखाईआ । सिफ्त लिख लिख अन्तर रो रो पिट्टे हरूफ़, हाफ़ज़ बैठे मुख भवाईआ। इक्को वार जिस सारे कीते मौकूफ़, नामा नज़र किसे ना आईआ। सारे कहिण परवरदिगार चरण होईए मसरूख, मुश्किल सब दी हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा देण आया दर, वज्जी जगत वधाईआ। इक वखाया वक्खरा घर, जिस घर विच नज़री आईआ। भगत दुआर बैठा वड़, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। पिछली उखेड़ आपणी हथ्थीं जड़्ह, अगला बूटा रिहा लगाईआ। भगतां पिच्छे आप मर, मरना भगतां दए समझाईआ। जन्म जन्म दा चुक्के डर, भय भउ नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लयांदे फड़, शब्दी हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी खेल रचाईआ। अचरज खेल रचाई लीला, दो जहान वज्जे वधाईआ। भगत भगवान छैल शबीला, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। हरिसंगत बणाया धुर कबीला, किबल आपणे नाम रंगाईआ। निरगुण हो के बण वसीला, साचा वसल कराईआ। सीस दस्तार बंधाया लाल कंचन सूहा पीला, चिट्टा पीली धार इक वखाईआ । खुशीआं नाल मिलाया नीला, नीले वाला बेपरवाहीआ। काली कफ़नी काला रंग वेख वेख्या इक वसीला, वाहवा वज्जी सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाही लेखा देवण आया, दाता दानी इक अख्वाइंदा। सति सतिवादी वेस वटाया, जोती जामा नूर रुशनाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाया, पुरी लोअ अकाश प्रकाश आपणे चरण लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, करोड़ तेतीसा अक्ख खुल्ह्राइंदा। गुर अवतार नाल मिलाया, पीर पैगम्बर उँगली लाइंदा। सब दा रस्ता इक बणाया, मार्ग दूजा ना कोए जणाइंदा। भगत दुआरे लै के आया, भगतां मेल मिलाइंदा। हौली हौली रिहा समझाया, समझ समझ नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वडयाया। सारे इकट्ठे होए घर, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल किरपा कर, मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। अचरज खेल वेख्या नारी नर, नर नरायण दित्ता वखाईआ। सारे रल मिल इक्को ढोला रहे पढ़, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी ना होए जुदाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, उच्ची मंज़ल पन्ध मुकाईआ । जगत जहान चुक्के डर, अग्गे भय ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल पल्लू फड़, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जींवदयां जग गए मर, मरयां जन्म विच ना आईआ। साची तरनी गए तर, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। जो भगत दवारे आ दर्शन जाए कर, तिस कर्म कांड रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे हो के लए फड़, दूर दुराडा आवे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिसंगत

२२०
१६

लहिणा दए मुकाईआ। लहिणा मुक्के हरिसंगत तेरा, सो सतिगुर आप मुकाईआ। जिन्हां पिच्छे पाया फेरा, निरगुण वेस वटाईआ। हरि का भेव जाणे केहड़ा, मन मति बुध बैठी डेरा ढाहीआ। जुग चौकड़ी पिच्छों आया वेला, वेला वक्त गोबिन्द गया लिखाईआ। परम पुरख प्रभ होए आप चेला, हरि सज्जण सच्चा माहीआ। रंग रंगाए गुरु गुर चेला, चेला गुर रूप वटाईआ। लख चुरासी नालों हो के वेहला, जन भगतां गले लगाईआ। आवण जावण लख चुरासी कट के जेहला, ज़ालम ज़ुल्म दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिसंगत सच्चा संग बंधाईआ। संगत संग बंधाया चंगा, चंगी तरह जणाईआ। किरपा करे सूरा सरबँगा, साहिब सतिगुर हरि रघुराईआ। लेखे लग्गा भुक्खा नंगा, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। देवे नूर नैण अन्धा, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। सतिगुरू दवारे कोई ना रहे मंदा, मंदयां आपणे गले लटकाईआ। अन्दर फेरे तिक्खी धार खण्डा, खड़ग आपणा नाम चमकाईआ। गुरसिख कोई ना रहे रंडा, पुरख अकाल लए प्रनाईआ। पिछली टुट्टी पाई गंढा, गंढु अग्गे ना कोई खुल्हाईआ। भव सागर दा पार किनारा वेख्या कन्ढा, पत्तण बैठा बण के माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लए तराईआ। हरिसंगत तारन आया प्रभ, वक्खरी धार चलाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल मिलाईआ। ज़ात पात दी चुक्की हद्द, हदूद इक समझाईआ। आत्म परमात्म धुर दी यद, याददाशत पिछली रिहा कराईआ। मात गर्भ जिस दी लिव आए छड्ड, लिव छुटकी आप जुड़ाईआ। जिस दे नालों होए अड्ड, अन्तिम उसे नाल मिलाईआ। नाता छुट्टणा काया माटी हड्ड, नाड़ी चम्म संग ना कोए निभाईआ। आत्म परमात्म चाढ़े रंग, रंग इक्को इक वखाईआ। गुरमुख देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। आत्म सेजा बैठ पलँघ, हरिजन नारी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याईआ। हरिसंगत वड्याई देवे माण, ममता मोह चुकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन आपणा घर वखाईआ। लेखे लाए बुढ्ढे नढ्ढे बिरध जवान, जो दर आए चाईं चाईंआ। धर्म वखाए इक निशान, खुशीआं नाल रिहा झुलाईआ। पुरख अकाल उते रखो ईमान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गोबिन्द दे के गया फ़ुरमान, पुरख अकाल होए सहाईआ। तिस दा दर्शन करो आण, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। कोटन कोटि शरमावण भान, चमक दमक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत पार कराईआ। हरिसंगत वेखो पार करदा, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वड़दा, डूंघी भँवरी कवरी फोल फुलाइंदा। निरगुण हो के ढोला पढ़दा, सोहँ राग अल्हाइंदा। जन भगतां पिच्छे पहलां आप मरदा, मर के भगतां फिर जिवाइंदा। सच्चा खेल नर हरि दा, नर नरायण आप वखाइंदा। मन्दिर

अन्दर पौड़ी चढ़दा, महल अटल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी भेव चुकाइंदा। दस्म दुआरी खोल्हे खुलासा, खुशीआं नाल जणाईआ। जन भगतां देवे इक भरवासा, भरम भउ चुकाईआ। जिन्हा बख्शी इक्को आसा, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक रखाईआ। साचे घर करो ध्यान, हरि करता आप जणाईआ। जिन्हां नूं रातीं सुत्यां मिले आण, जोत प्रकाशी रूप वखाईआ। पूरन नाल पूरन भगवान, भगवन फेरा पाईआ। सो गुरमुख समझो साडी मंज़ल मुक्की विच जहान, अन्धघोर नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दे अन्दर वड़े आप भगवान, घाटा कोई रहिण ना पाईआ। सुत्यां जागदयां दस्से के जाए निशान, मैं उहो सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दस्म दुआरी आपणा डेरा कोई ना लाईआ। दस्म दुआरी डेरा ला के, गुरमुख सुरती लए जगाईआ। उठ सुआणी दर्शन कर आ के, घर आया बेपरवाहीआ। तेरी तृष्ना तृखा जाए बुझा के, अमृत आपणा जाम प्याईआ। फड़ बाहों गले आप लगा के, दुखियां दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। दस्म दुआरी कहे सुणो सिखो मेरे मीत, मैं सच सच्च जणाईआ। एह प्रभ ने वक्खरी चलाई रीत, घर मेरे चल के आईआ। तुहाढ्डी लग्गी इक प्रीत, जिन्हां पिच्छे मेरा घर वसाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदी रही उडीक, सुनेहुड़े काग़ज़ां उते लिखाईआ। जगत वखाउँदी रही मन्दिर मसीत, शिवदुआले मढ्ढ नाल बणाईआ। मैं बैठी रही एसे विच उडीक, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। किसे वेले आवे लाशरीक, शहिनशाह मेरा सच्चा शहिनशाहीआ। मेरे मन्दिर वड़ के मैनूं करे ठंडी सीत, गुरमुख आपणे नाल रलाईआ। गुरसिखो तुसां जन्म ल्या जीत, ज़ामन बणया नूर खुदाईआ। इस दी मैं निमाणी की करां तारीफ, मार दोहथ्थड़ा दस्म दुआरी रोवे रो पई कुरलाईआ। मेरी खुशीआं नाल निकले चीक, चाकर बणया बेपरवाहीआ। जे मैं दस्सां सब नूं ठीक, भरमे भुल्ले लोकाईआ। वेखो तुहाढ्डे पिच्छे बणया नीच, नीचां उपर रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। दस्म दुआरी कहे मैं की कहिणा, सखीओ की की हाल सुणावां। हार शृंगार की पावां गहिणा, किस बिध आपणा प्रीतम रुझावां। मैं एहो तक्कां गुरमुखां दरस करां नैणां, बिन नैणां अक्ख मिलावां। जिन्हां पिच्छे पुरख अकाल मेरे अन्दर वड़ के बहिणा, मैनूं मिलावे आपणयां नाल भरावां। भरा मेरे उह केहड़े, जिन्हां गुर अवतार वेखे जगत लखाया नावां। नावां उह केहड़ा, जिन्हां परम पुरख दे मिलण दा दित्ता दाहवा। दाहवा उह केहड़ा, जिन्हां पिच्छे जन भगतां उते करे ठंडीआं छावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिखां गुरमुखां अन्दर वड़ के सेज सुहञ्जणी इक्को रावां।

सेज सुहञ्जणी रह्वे कन्त, कन्तूल खुशी मनाईआ। चोली रंग रंगाए बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। नाम समझाए मणीआं मंत, मन्त्र इक दृढ़ाईआ। गुरमुख कहीए सो सन्त, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, लख चुरासी विच्चों लए तराईआ। फड़ के मेल मिलाया साची संगत, संगत पंगत रूप वटाईआ। भुक्खा कोई ना रहे मंगत, देवणहार दया कमाईआ। गुरमुखो तुहाड्डा नाता छुट्टया जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज फेरा कोई ना पाईआ। किसे कोई ना मनाउणा पांधा पंडत, जगदीश सीस किसे ना भेंट चढ़ाईआ। दातार बण के आया मंगत, करतार आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समझाए बोध अगाधा पंडत, अगाध बोध गुरमुख नाम वड्याईआ।

* पहली माघ २०२० बिक्रमी जेठूवाल हरि भगत दुआर *

पुरख अकाल तेरा भविक्ख्त, भविश तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे हुक्म दी धुर दी लिख्त, शाह पातशाह तेरा नाम लिखवाईआ। तेरे प्रेम दा अगम्मा इश्क, असल विच्चों सच समझाईआ। तेरी धार दी धुर दी लिख्त, लेखा लेख रही बणाईआ। तेरी वड्याई जन भगतां लहिणा चुकाया स्वर्ग बहिश्त, घर सच दिती सरनाईआ। होए हैरान वेख तेरा इष्ट, मेहर नज़र नैण उठाईआ। कर किरपा खोल्ही दृष्ट, जिन्हां आपणा दरस दिखाईआ। लख चुरासी वेख सृष्ट, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी पूर कराईआ। सच करनी भविक्ख्त वाक, वाकिफ़ तेरे नाल कराईआ। गृह मन्दिर खोल्ह आपणा ताक, पड़दा घर दुआर उठाईआ। निर्मल नूर कर प्रकाश, घर दीपक जोत इक रुशनाईआ। अन्तर अन्तर दस्स आपणा जाप, मन्त्र सच करी पढ़ाईआ। दो जहानां इक्को पाठ, साहिब सतिगुर दित्ता समझाईआ। जगत किनारा दूर ताट, घाट इक्को रिहा वखाईआ। सच प्रीतम बण के कमलापात, नर नरायण होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, चन्द नूर इक चमकाईआ। लेखा चुका ज़ात पात, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो गए आख, आखर लेखा पूर कराईआ। सच धर्म दी इक प्रभात, प्रभ आपणा नाम प्रगटाईआ। पूरब चुक्की पिछली वाट, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। चरण प्रीती बन्न के मात, जन भगतां दए वड्याईआ। लेखा लिख कलम दवात, रविदास चुमार रिहा समझाईआ। धुर दी इच्छया जो ल्या भाख, सो आपणी भाख्या नाल मिलाईआ। लहिणा चुक्कया मस्तक माथ, लेख कोए नज़र ना आईआ। चार वरनां इक्को गाथ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करी पढ़ाईआ। ऊँच नीच राउ रंक बणाई जमात, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। भगत सुहेला बण के पिता मात, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण तकाईआ। भविक्ख्त वाक तेरा संदेसा, शाह पातशाह इक जणाया। सेवा ला विष्न ब्रह्म महेषा, शंकर तेरा गुण अलाया। राज राजान बण नरेशा, दो जहानां हुक्म वरताया। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण भेजा, सरगुण सगला संग निभाया। आत्म परमात्म माणी सेजा, घर महल अटल इक रुशनाया। जोती नूर दित्ता तेजा, चमक आपणे नाल मिलाया। नेत्र लोचण नैण आपे देखा, दूजा संग ना कोए रखाया। नज़र ना आई किसे रेखा, रूप रंग ना कोए जणाया। लख चुरासी रख्या लेखा, भरमे भरम ना कोए भुलाया। जुग चौकड़ी पूरब चेता, चेतन धार रिहा प्रगटाया। जन भगतां कर के हेता, हितकारी आपणा नाउँ धराया। धुर मस्तक लाई मेखा, जोत ललाटी तिलक लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप चुकाया। भविक्ख्त वाक तेरा निरँकार, निरगुण इक्को नज़री आईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी वड वड्याईआ। हउँ सेवक सेवादार, बालक रूप इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा करदे रहे विहार, विवहारी तेरी धार चलाईआ। तेरे नाम दा बोल जैकार, लख चुरासी जीव जंत रसना जिह्वा ढोला राग सुणाईआ । अन्दर वड़ के दस्सदे रहे प्यार, परमात्म आत्म वेख वखाईआ। कागद कलम बणदे रहे लिखार, बण कातब तेरी सिफ्त सालाहीआ। सन्त सुहेले करदे रहे ख़बरदार, गुर चेले मेल मिलाईआ। सुनेहड़ा देंदे रहे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाईआ। धन्न भाग तूं लहिणा देणा मुकाया उधार, पिछला लेखा रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां करया सच शृंगार, पट्टी सीस जगदीश गुंदाईआ। नाम निधाना कज्जल धार, नैण निराला इक मटकाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। महल अटल उच्च मिनार, महिफ़ल इक्को घर वखाईआ। निरगुण बाती कमलापाती कर उज्यार, दीपक जोत जोत रुशनाईआ। पवण उनन्जा चवर झुलार, सांतक सति सति वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। तेरा भविक्ख्त तेरा ढोला, तेरी धार जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण विचोला, जन भगतां मेल मिलाईआ। निरवैर पुरख दा इक्को सोहला, हरिजन साचे सच समझाईआ। दूई द्वैती पड़दा उहला, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। दे दरस इक अनमोला, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सच दुआरा धुर दा खोल्हा, दर दरवाजा इक समझाईआ। जन भगतां बण प्रभू विचोला, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देणी माण वड्याईआ। तेरा भविक्ख्त तेरी झोली, दूजा नज़र कोए ना आईआ। हउँ सेवक ठाकर तेरी गोली, गुर अवतार पीर पैगम्बर त्रिया रूप रहे जणाईआ। चार कुण्ट दी शब्दी बोली, चार जुग रहे जस गाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी धार किसे ना तोली, कंडा तराजू नज़र कोए

ना आईआ। तेरी खेल वेखी हौली हौली, सति स्वामी तेरे भाणे विच समाईआ। तेरी जोत नुरानी हर घट मौली, मौला घर घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। तेरा भविक्ख्त तेरे साथ, हथ्थ तेरे वड्याईआ। तेरी महिमा तेरी गाथ, तेरा नाम जणाईआ। तेरी मंज़ल तेरा राथ, तेरा पन्ध मुकाईआ। तेरा दवारा तेरा हाट, घर तेरा इक वड्याईआ। तेरा प्रेम तेरा नात, चरण तेरी सरनाईआ। तेरा नूर तेरी ज़ात, कुदरत तेरे विच्चों प्रगटाईआ। तेरा हुक्म संदेसा गए आख, आख़र इक्को इक जणाईआ। प्रगट होए पुरख समराथ, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस दा किसे ना आवे किनारा हाथ, पत्तण समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा भविक्ख्त धुर दा सच्चा, सच तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। तेरा हुक्म होवे ना कच्चा, काया काची गागर नज़र कोए ना आईआ। धन्न भाग तूं सब दा लेखा कीता अच्छा, प्रभ अच्छी तरां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। तेरा भविक्ख्त तेरा जस, खुशीआं नाल ढोला गाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेरा सुनेहड़ा दित्ता दस्स, धुर दी अवाज़ लगाईआ। जुग चौकड़ी पैंडा मुक्का नस्स नस्स, वेला अन्तिम गया आईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेरा लेखा ल्या तक्क, पड़दा आप चुकाईआ। दूर दुराडे नेड़े ल्या सद्द, होका आपणा नाम जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्ह़ब विच जो बैठे अड्ड, आपणा राह वखाईआ। तिन्हां मेटणहारा हद्द, हदूद आपणी इक जणाईआ। सब नूं दस्सया ढोला छन्द, सद इक्को इक सुणाईआ। उच्ची कूको सारे गज्ज, नाअरा इक्को इक लगाईआ। चरण दुआरे धुर दा हज्ज, मक्का काअबा इक वखाईआ। लहिणा चुक्के शिवदुआला मठ्ठ, गुरुदुआर इक सरनाईआ। निर्मल जोत वेखो इक प्रगट, इष्ट अगम्मी नज़री आईआ। जिस दी नज़र ना आवे रत्त, रत्ती रत्त सब दी लेखे पाईआ। जिस दे गृह ब्रह्ममत, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। तिस सरनाई जाओ ढठ्ठ, चरण कँवल मिले वड्याईआ। इक्को सोहला लओ रट, रट्टा मुक्के जगत लोकाईआ। सच दवारा वेखो हट्ट, श्री भगवान रिहा खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, जिस मिलयां तोट रहे ना राईआ। तेरा भविक्ख्त सोहणा चंगा, चंगी तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी जिस दा वज्जदा रिहा मृदंगा, ढोला नाद इलाहीआ। जिस दी हिरस अन्दर आउँदा रिहा अनन्दा, अनन्द हवस विच समाईआ। तिस दा वेख्या आ के कन्ढा, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। धुर संदेस सुणावे इक्को छन्दा, साचा ढोला राग अल्ह़ाईआ। बिन बंदगीउँ कराए बंदा, बन्दना आपणे चरण कराईआ। जगत जहान दा फड़ के

अन्धा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। पौड़े चाढ़े आपणा डण्डा, मंज़ल इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। भविक्खत कहे मैं धुर दा मालक, प्रभ देवे माण वड्याईआ। आदि जुगादि बण के सालस, साचा हुक्म सुणाईआ। मेरा रूप निरगुण ख़ालस, तत नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी प्रभ दा बालक, मात पिता ना कोए अख्वाईआ। मैं खेलां खेल नाल ख़ालक, ख़लक विच समाईआ। नित नवित्त ना कोए आलस, निंद्रा ग़फ्लत ना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सच्चा संग निभाईआ। भविक्खत कहे मैं निक्का लाल, निक्की निक्की बात सुणाईआ। जुग चौकड़ी देंदा रिहा अहिवाल, धुर संदेसा राग अलाईआ। जुग चौकड़ी बीते काल, थिर रहिण कोए ना पाईआ। अन्तिम प्रगट होवे दीन दयाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं गोबिन्द कहे पुरख अकाल, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। चल के आवे सच दुआर सच्ची धर्मसाल, दर इक्को इक खुलाईआ। दीप अगम्मी जोती बाल, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। शब्द अनाद वज्जे धुन्कान, अनरागी राग सुणाईआ। सम्बल देवे इक्को माण, बिन चरणां चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। भविक्खत कहे मेरी सच दलील, दयावान मोहे समझाईआ। मेरा खेल जाणे ना कोए वकील, वुकला समझ कोए ना पाईआ। मेरा खेल अन्त अख़ीर, आखर इक्को वार जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बदले सर्ब तकदीर, ताकत आपणी इक प्रगटाईआ। शरअ शरीअत तोड़ जंजीर, लाशरीक खेल वखाईआ। लहिणा चुका पैगम्बर पीर, पहरा आपणा दए लगाईआ। अट्ठ सट्ठ विरोल नीर, अमृत इक्को इक बरसाईआ। चार जुग दी मेट लकीर, हरफ़ हरूफ़ आपणा दए पढ़ाईआ। करे खेल बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। चोटी चढ़ आप अख़ीर, महल अटल सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां कटे भीड़, कोझे कमल्यां गले लगाईआ। जन भगत साचे सन्त मिलाए भाईआं नाल वीर, एका दूजा भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत आपणी आप कमाईआ। भविक्खत कहे मैं दित्ता संदेसा, सदके वारी घोली घोल घुंमाईआ। पारब्रह्म प्रभ आए नरेशा, नर नरायण इक अख्वाईआ। लहिणा देण चुकाए विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, शंकर आपणा हुक्म वरताईआ। खेले खेल देस परदेसा, दो जहानां वेख वखाईआ। लख चुरासी धारे भेसा, निरगुण नूर रूप इलाहीआ। पंज तत काया आपणी आपणे करे भेंटा, साची सेवा आप लगाईआ। शौह दरया डूंघी भँवरी वड़ के वेखे खेवट खेटा, सागर किनारा फोल फुलाईआ। लहिणा देणा जाणे गोबिन्द गुर पुरख अकाल बेटा, पिता पूत आपणी धार जणाईआ। पूरब लेखा रखे चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस कारण जुग चौकड़ी भविक्खत कहे मोहे भेजा, मेरी आसा पूर कराईआ। जन भगत सवाए मेरी सेजा,

सोहणी रुत्त मिलाईआ। मैं नेत्र नैण खुशीआं नाल वेखा, कँवल अक्ख खुल्लाईआ। जुग जुग दा मिटे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। भविक्खत कहे मेरी पूरी आसा, आसा पुन्नी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी देंदा रिहा भरवासा, मार्ग अगला इक समझाइंदा। श्री भगवान वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण हो के देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। वरन बरन दा इक्को पूजा पाठा, आत्म परमात्म राग अलाइंदा। भगत भगवान जुड़ाए नाता, दूजा मेल ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। भविक्खत कहे मैं होया दयाल, गृह मेरे वज्जे वधाईआ। किरपा करी पुरख अकाल, मेहरवान होया सहाईआ। भगत भगवान मेले लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण कँवल दिती सरनाईआ। सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, धुर मन्दिर दित्ता वखाईआ। निरगुण हो के चलया नाल, सरगुण आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मुरीदां आ के पुछिआ हाल, हरिमन्दिर आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी पूरी कीती घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। भगत सुहेला भगत करे प्रितपाल, भगवन इक्को नज़री आईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत रिहा समझाईआ। एथे ओथे देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा चुके आवण जाण, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। अन्तर देवे पीण खाण, अमृत रस इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। भविक्खत कहे मेरा लहिणा देणा मुक्के, मुक्की वस्त पराईआ। भगत भगवान गोदी चुक्के, घर खुशीआं राग सुणाईआ। अन्तर धारों निरगुण उठे, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पतिपरमेश्वर हो के पुच्छे, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निरवैर हो कदे ना लुके, निराकार करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लुके रहिण ना देवे गुट्ठे, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जुग जन्म जो पिछले रुट्ठे, फड़ बाहों लए मिलाईआ। लग्गी प्रीत किसे ना टुट्टे, टुट्टी आपणे नाल गंढ पवाईआ। जगत विकारा फड़ के कुट्ठे, गुरसिख पतित पुनीत रूप वटाईआ। सच सरनाई आपे झुके, निउँ निउँ आपणा सीस निवाईआ। उजल करे गुरमुखां मुक्खे, मुख मुखड़े नाल सालाहीआ। लेखा चुक्के मात गर्भ तन कुक्खे, आवण जावण गेड़ कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। भविक्खत कहे मोहे चाउ घनेरा, वज्जे इक वधाईआ। घर आया प्रभ ठाकर मेरा, जिस ठोकर नाम लगाईआ। जन्म जन्म दा चुक्कया गेड़ा, झेड़ा कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवान वसाया खेड़ा, खिड़की मन्दिर आप खुल्लाईआ। जद वेख्या नज़री आया तेरा मेरा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रूप वखाईआ। घर सोहे गुरु गुर चेरा, चेला गुरू नज़री आईआ। धन्न भाग घर सतिगुर लाया डेरा, मैंडे दर ताल वज्जे वज्जे सच वधाईआ।

२२७
१६

एस धार नूं जाणे केहड़ा, बिन पुरख अकाल ना कोए समझाईआ। डुबदे पाहिन तारे बेड़ा, सागर आपणा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। भविक्खत कहे मैं गावां छन्द, चार कुण्ट जणाईआ। श्री भगवान जिन्हां भगतां दित्ता अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिख चाढ़ सच्चे चन्द, बिन चन्दों दित्ते चमकाईआ। साचे मिनार महल अटल दित्ते टंग, तन्दी डोर आपणी आप बंधाईआ। जिस दवारे कोई ना सके लँघ, उस गृह बैठण सोभा पाईआ। इक्को मंगण धुर दी मंग, साची झोली अग्गे डाहीआ। श्री भगवान झोली पा आपणा छन्द, शाकर चरणां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साची बणत बणाईआ। भविक्खत कहे मैं की की दस्सां, कहिण किछ ना पाईआ। प्रभ दा खेल वेख वेख हस्सां, घर आपणे खुशी मनाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। प्रभ लहिणा देण चुकाया ढाडी भट्टां, गुरमुखां इक्को राग सुणाईआ। मूल चुक्कया सुथरयां नटां, सुथरी गल्ल इक सुणाईआ। जिउँ भावे तिउँ मैं भगतां रखां, बिन मेरे देवे ना कोए वड्याईआ। सारे मंगदे ख़ाली कर के दोवें हथ्थां, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी झोली डाहीआ। दर्शन लोड़न निज नेत्र अक्खां, आखर आपणी आस लगाईआ। कर किरपा जिस मेहर मुहब्बत प्रेम प्रीती झोली घत्तां, अतुट अतोट भण्डार वरताईआ। नित नवित्त आपणे संग रखां, सगला संग जणाईआ। मेरा खेल कक्खों करां लखां, लखों कक्ख रूप वटाईआ। मेहरवान हो के जिस नूं मार्ग दस्सां, बिन पढ़यां देवां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। भविक्खत कहे तेरी सुण के सोभा, सोभत दए वड्याईआ। करता पुरख मेरा पूरा कीता होका, मैनूं हौका रिहा ना राईआ। मैं चारों कुंट फिरां विच चौदां लोकां, चौदां तबक रिहा जणाईआ। उठो सारे वेखो प्रभ दा मौका, मुख़बर हो के दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी ना कीता कोई धोखा, धुर दा हाल सुणाईआ। जिस दी सारे रखदे गए ओटा, ओड़क आपणा फेरा पाईआ। वेख प्रेम प्यार दीआं लगाए चोटां, नगारा हथ्थ ना कोए रखाईआ। चरण दुआर रहिण ना देवे कोई खोटा, खरे आपणी झोली पाईआ। सोचयां किसे विच ना आए सोचां, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों इक्को वार मिल्या मौका, मुखत आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगत उधारे किरपा धारे नाल शौका, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। भविक्खत कहे उठो नट्ठो, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। परम पुरख दा दर्शन तक्को, तकवा इक रखाईआ। खुशीआं नाल दर ठांडे नच्चो, मंगल गीत इक सुणाईआ। आवण जावण लख चुरासी दे गेड़ों बचो, बच्चयां वांग लए बचाईआ।

दर्शन पा के खुशीआं नाल हस्सो, संसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर हिरदा रिहा जगाईआ। भविक्खत कहे जागो उठो खोलो अक्ख, नेत्र नैण रिहा खुल्हाईआ। सच पैगम्बर ज़ाहर ज़हूर होया प्रतख, पर्बत चोटी टिल्ले जंगल जूह उजाड़ वेख वखाईआ। हकीकत विच्चों विरोल के हक़, हक़ हरिजन झोली पाईआ। सच दुआर धुर दा मार्ग गृह स्वामी जाए दस्स, दहि दिशा भेव खुल्हाईआ। प्रेम प्यार दी प्रीती अन्दर फस, फैसला इक्को वार सुणाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत चरण कँवल सच सरनाई गया ढह, तिस आवण जावण रिहा ना राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाल जोत समरथ, सब दी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ।

* ३ माघ २०२० बिक्रमी गिरधारी लाल दे गृह पिण्ड भोले के ज़िला गुरदास पुर *

२२६ हरि शब्द कहे भविक्खत संदेसा, श्री भगवान पूर कराईआ। सचखण्ड निवासी धुर नरेशा, शहिनशाह इक्को इक वड्याईआ। जुग चौकड़ी धारनहारा वेसा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूर कराए लेखा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस ने भेजा, भगत भगवान खेल वखाईआ। लख चुरासी घट घट अन्दर निरगुण सरगुण माणे सेजा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी कार कमाईआ। शब्द कहे प्रभ वाक भविक्खत, धुर दी धार धार जणाईआ। गुर अवतारां जो लेखा लिख्या विच लिखत, सो साहिब वेख वखाईआ। पीर पैगम्बर जिस नूं मन्नदे गए इष्ट, नूरी जलवा नूर इलाहीआ। जिस दी ओट रखे राम वशिष्ट, सो विश्व आपणी कार कमाईआ। लेखा जाण सर्ब सृष्ट, दो जहानां खोज खुजाईआ। लहिणा देणा चुका स्वर्ग बहिश्त, सच दुआरे देवे माण वड्याईआ। जन भगतां खोल्ह अगम्मी दृष्ट, अन्तर आपणी बूझ बुझाईआ। मन मति बुध ना होए भृष्ट, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ भविक्खती बोल, अनबोलत राग अल्हाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना तोलया तोल, कंडा तराजू हथ्थ ना कोए वखाईआ। चरण प्रीती साची रीती नित नवित्त गए घोल, घोली आपणा आप घुंमाईआ। सच संदेसा देंदे रहे अडोल, गुर अवतार पीर पैगम्बर राग अल्हाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर आवे कोल, निराकार आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां पढ़दा देवे खोल्ह, गृह मन्दिर अन्दर दूई द्वैती दए चुकाईआ। आत्म परमात्म मिल के करे चोल, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अनाद वजावे अगम्मी ढोल, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। लख चुरासी विच्चों

सन्त सुहले आप विरोल, गुर चेले मेल मिलाईआ। देवे नाम दात अनमोल, वस्त अनमुलड़ी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। शब्द कहे भविक्खत मेरे मित्त, मित्र प्यारे तेरे हत्थ वड्याईआ । तेरी धार लभ्भदे गए मुन रिख, जगत मुनीशर ध्यान लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लेखा लिख, खाणी बाणी मात सुणाईआ। भेव अभेद बोध अगाध तेरी सार कोई ना पाए नित नवित्त, नर नरायण आपणे हत्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्त लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, चतुर्भुज पर्दा इक चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। शब्द कहे भविक्खत सच संग, संगी इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी तेरे नाम दा वज्जदा रिहा मृदंग, ढोला राग नाद सर्ब सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त मंगदा रिहा मंग, सूफ़ी बैठण ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखदा रिहों भेख पखण्ड, चारों कुण्ट नज़र नैण उठाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया नव नौ चार पाए डण्ड, सच सुच ना कोए समझाईआ। आत्म सुहागण बिन परमात्म होई रंड, कन्त कन्तूल नज़र किसे ना आईआ। गुर चेला टुट्टी गंढु, भगत भगवान जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भरया घमण्ड, चारे खाणी रही कुरलाईआ। आवण जावण किसे ना मुकया पन्ध, लख चुरासी नाता तोड़ ना कोए तुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। शब्द कहे भविक्खत सच सूर, सूरबीर तेरी वड्याईआ। तेरा खेल अगम्मी नूर, नूरो नूर तेरी रुशनाईआ। तेरा लेखा लिखदे गए सर्ब ज़रूर, ज़रूरत पूर ना कोए कराईआ। जुग चौकड़ी वेंहदे गए पूर, कोटन कोटि चौकड़ी काल विहाईआ। तेरा खेल इक भरपूर, पारब्रह्म प्रभ निरगुण निरवैर आप कराईआ। दर ठांडे हाजर हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप कमाईआ। शब्द कहे भविक्खत तेरा जोर, जेर ज़बर समझ किसे ना आईआ । जुग चौकड़ी हत्थ तेरे डोर, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए फड़ाईआ। दूजा कोई ना जाणे होर, तीजा नैण ना कोए खुल्हाईआ । जगत वासना सृष्टी पावे शोर, शाहो शहिनशाह संग ना कोए रखाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल कोई ना वेखे नाल गौर, गहर गम्भीर गवर नज़र ना कोए उठाईआ। शाह सुल्तान श्री भगवान नौजवान चढ़ के आपणे घोड़, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां दिसे श्री भगवान मिलण दी औड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जगत वासना होई कौड़, अमृत फल सच ना कोए खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। भविक्खत कहे शब्द सुण सच, सच सच दृढ़ाईआ। काया माटी भाण्डा सब दा वेख्या कच, कंचन रूप नज़र कोए ना आईआ । मन

वासना नौ दवारे रहे नच्च, माया ममता नाल रखाईआ। प्रभ मिलण दी बिन भगत खोली किसे ना अक्ख, दोए लोचण बैठे ढेरीआं ढाहीआ। कल अन्त श्री भगवन्त किरपा करे पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ जणाईआ। भगत मिलावा हस्स हस्स, सोहँ हँसा इक्को राग सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, तेरा मेरा भेव रहे ना राईआ। अन्तर आत्म सेज सुहञ्जणी निरगुण हो के चढ़े नट्ठ नट्ठ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा जिस अमृत देवे रस, रस फ़ीका सर्ब दए वखाईआ। सो गुरमुख नेत्र नीर विरोले अथ्थ, हन्झू इक्को धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत सदा प्रभ ठाकर स्वामी, हरि ठाकर इक रघुराईआ। आदि जुगादि अन्तरजामी, घट घट वेख वखाईआ। शब्द अनाद बोध अगाध बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। अमृत सरोवर ठंडा पाणी, घर निझर झिरना इक वहाईआ। सति धर्म दी सच निशानी, आत्म परमात्म दए समझाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर पंडत करे ब्रह्म ज्ञानी, निष्अक्खर निराधार विच्चों समझाईआ। लेखा चुक्के चारे खाणी, चारे बाणी लोड़ रहे ना राईआ। पाए इक्को पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक जणाईआ। जिस घर वसे शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा डेरा लाईआ। दीपक जोत जगे नुरानी, दीवा बाती संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगत उधारे हरिजन मात, मता आपणे नाल पकाईआ। अन्तर आत्म पूरी आस, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, नाथी नाथ वड वड्याईआ। इक सुणाए पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक दृढ़ाईआ। इक वखाए उत्तम ज़ात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नूर नज़री आईआ। इक्को पत्तण वखाए घाट, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। इक्को मन्दिर शिवदुआला इक्को जणाए माठ, मस्जिद इक्को नज़री आईआ। आवण जावण पतित पावण जन्म जन्म दी मेटे वाट, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। आत्म सेज सुहञ्जणी खाट, सोभावन्त आप सुहाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी चन्द चमकाईआ। भगत सुहेला बण के पिता मात, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। साची देवे धुर दी दात, बिन कीमत आप वरताईआ। गुरमुख बुज्झे आपा आप, आपाचीन मिले वड्याईआ। भगत भगवान जुग चौकड़ी सगला साथ, कलयुग अन्तिम लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन उतारे आपणे घाट, पूरब जन्म कर्म कर्म जन्म घाटा पूर कराईआ।

२३२

*** ३ माघ २०२० बिक्रमी जसबीर सिँघ दे गृह पिण्ड भोले के ज़िला गुरदास पुर ***

भविक्ख्त कहे मैं धुर दा होका, जुग चौकड़ी जगत जणाईआ। नाद वजाया लोक परलोकां, दो जहान शनवाईआ। नाम सुणाया धुर श्लोका, सच्चा राग अलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कल अन्तिम वेखण आए मौका, दो जहानां वेख वखाईआ। किसे नाल ना करे धोखा, साख्यात आपणी कार कमाईआ। निरगुण प्रकाश करे अगम्मी जोता, जोती नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल सुहाए सम्बल इक्को कोठा, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रचाईआ। भविक्ख्त कहे संभल संसार, हरि सम्बल दए वड्याईआ। हरि सम्बल अगम्म अपार, सतिगुर दए समझाईआ। जिस सम्बल दी किसे ना पाई सार, सो सम्बल दए प्रगटाईआ। जिस सम्बल गोबिन्द दए उधार, तिस सम्बल देवे माण वड्याईआ। सो सम्बल होए उज्यार, जिस सम्बल बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेख दए समझाईआ। भविक्ख्त कहे सम्बल उह, जिस मिली वड्याईआ। जिस गृह प्रकाश कीता छब्बी पोह, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल मुहब्बत कर आपणा मोह, मेहरवान आपणा मेल मिलाईआ। गोबिन्द नाल हरि गोबिन्द गया छोह, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। लख चुरासी नालों हो निरमोह, मेल मिलाया एका थाईंआ। जुग चौकड़ी क्रिया खोह, अन्तिम आपणी झोली पाईआ। सति सतिवादी ढोआ ढोह, एका नाम दए समझाईआ। कर प्रकाश अगम्मी लोअ, दीआ बाती कमलापाती इक्को इक जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भविक्ख्त दए वड्याईआ। भविक्ख्त कहे मेरी भाख्या अपार, अपरम्पर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी लेखा लिखदे रहे गुरू पीर अवतार, पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। उच्ची कूक कूक सुणाउँदे रहे संसार, होका इक्को नाम जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उतरे पार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी कल आए धार, कल कल्की वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड जोत करे उज्यार, शब्दी डंक इक वजाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी करे ख़बरदार, बेख़बर आपणी ख़बर आप सुणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चारों कुण्ट दए हुलार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सोया कोए रहिण ना पाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई करे बेदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख प्रतख आप खुलाईआ। काग़द कलम शाही वेखे वेखणहार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पर्दा आप चुकाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा बोध अगाध खोले आप करतार, कुदरत करता करनी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच भविक्खत लेखा लेखे लाईआ। लेखा लिख्त भविक्खत, हरि करता पूर कराईआ। जिस उपाई सृष्ट, सो वेखे चाईं चाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान जिस नूं मन्नदे गए इष्ट, इष्ट देव स्वामी नेहकर्मी नेहकामी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणी धार चलाईआ। हरि जू धार चलाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी धर धर भेख, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार आपे भेज, पीर पैगम्बर नूर इलाहीआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के काया महल अटल माणे सेज, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोती जलवा देवे तेज, शब्द अनाद धुन आत्मक राग सुणाईआ। बिन अक्खां बिन नेत्रां लए पेख, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच दुआरे खेडे आपणी खेड, धर्म दुआरा इक्को इक सुहाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले सज्जण सुहेले लए मेल, मेल विछोड़ा पिछला पन्ध मुकाईआ। धर्म दुआर हरि करतार इक्को नज़री आए सज्जण सुहेल, सगला संग आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। भविक्खत कहे भगवान टेक, टेक एक जणाईआ। भगवान कहे भविक्खत मेरा लेख, लेख समझ कोए ना पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस ठाकर होए आदेस, सो ठाकर ठोकर आपणा नाम लगाईआ। दो जहानां निरवैर पुरख इक नरेश, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। नित नवित्त जन भगतां करे हेत, बण हितकारी वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अन्दर वड़ के घर विच घर खुल्हाए, आपणा भेत, बाहरों समझ किसे ना आईआ। रुत्त सुहञ्जणी सदा मौले चेत, पत डाली फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। हरिजन हरिभगत हरिसन्त दरस कराए नेतन नेत, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। भविक्खत कहे भगत भगवान रंग, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगां गए मंग, बीस बीसे मिले वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि जुग चौकड़ी वसे संग, सगला संग निभाईआ। अन्तर आत्म परमात्म शब्द नाद धुन वजाए मृदंग, किली सतार तन्दी तन्द ना कोए रखाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शहिनशाह शाहो भूप वड वड्याईआ। भगत भगवन्त देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कर प्रकाश कोटन कोटि चन्द, चन्द भान सूरज बैठण मुख शरमाईआ। दनि दयाल हो बख्शंद, बख्शिश आपणी रहमत गुरमुखां झोली पाईआ। जिस जन जणाए आपणा छन्द, तिस बंदीख़ाना रहिण ना पाईआ। भगत दुआर भगवन लँघ, गृह मन्दिर खोजे बेपरवाहीआ। नाता तुटे जगत दुहागण रंड, घर सुहागी कन्त सुहागण लए बणाईआ। एथे ओथे

आवण जावण लख चुरासी मुक्के पन्ध, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज चारे खाणी डेरा देवे ढाहीआ।

* ३ माघ २०२० बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड भोले के ज़िला गुरदास पुर *

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, सचखण्ड दवारे साचा ढोला गाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर बणया साक सज्जण सैण, बेपरवाह सहिज सुखदाईआ। लोकमात वेख्या बिन अक्खां नैण, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरब देवे लहिणा देण, जुग चौकड़ी लेख चुकाईआ। भगत भगवान बणाए साक सज्जण सैण, सगला संग आप निभाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश धाम इकट्ठे बहिण, भगत दवारा सोभा पाईआ। नाम संदेसा धुर दा राग शब्द अगम्मी इक्को कहिण, तूं मेरा मैं तेरा साचा राग नाद सुणाईआ। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान नाता जुड़या भाई भैण, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता गुरमुख कदे ना वहिण, डूंग्घी भँवरी भवजल ना कोए भवाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द आत्म परमात्म नाम निधाना इक्को कहिण, कहि कहि आपणे अन्तर अग्न बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता धुर दा वर, दर घर साचा इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हस्सण, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। चार जुग दी बीती कहाणी दस्सण, पूरब लेखा फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जोती धार उठ उठ नट्ठण, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। फेरा पावण उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, पुष्कर करौच लखण वेख वखाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान लख चुरासी विच्चों जन भगत विरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी इक्को नाम आया दस्सण, आत्म परमात्म भेव अभेद खुल्हाईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला हरि हिरदे आया वसण, घट घट आपणा डेरा लाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरी रैण मेटे मस्सण, सति सति साचा चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गौण गीत, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। करे खेल प्रभू अणडीठ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जन भगत जणाए धुर दी रीत, साची सिख्या इक समझाईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण लेख रिहा मुकाईआ। लहिणा देणा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच भेव ना कोए रखाईआ। नज़री आए शिवदुआला मट्ठ इक्को मन्दिर मसीत, गुरूदवारा इक्को इक समझाईआ। शब्द अगम्मी पढ़ाए सच हदीस, हज़रत आपणा नाम समझाईआ। छत्र झुल्ले

प्रभ साचे सीस, दो जहानां शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीस बीसा आपणा पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वाक भविक्ख्त कहि कहि गए ठीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल जैकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकारा, अकल कलधारी खेल रचाईआ। सो पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़ा, दर ठांडे दए वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण जोती नूर कर उज्यारा, दीआ बाती इक्को डगमगाईआ। एकँकारा कर पसारा, अकल कलधारी आपे वेख वखाईआ। आदि निरँजण करे कराए करनेहारा, करता पुरख बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता सांझा यारा, परवरदिगार नूर इलाहीआ। श्री भगवान प्रगटावणहारा आपणी धारा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करता पुरख अगम्म अगोचर अकल कल खेल करे न्यारा, ख़ालक आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ख़ुशीआं नाल रहे हस्स, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। वेख खेल पुरख समरथ, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी महिमा गाई अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब सुल्तान हो मेहरवान, निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही फेरा पाईआ। भगत सुहेला इक अकेला साचा मार्ग रिहा दस्स, दहि दिशा आप समझाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले रिहा रख, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आपणे मिलण दी देवे इक्को अक्ख, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। झोली पाए हकीकत हक़, लाशरीक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। दो जहान श्री भगवान आदि जुगादि मददगार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे करतार, कुदरत कादर आपणा कर्म कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेख्या खेल विच संसार, महासार्थी आपणी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन पुकार, इक्को एक नाम जणाईआ। पुरख अकाल किरपा धार, परम पुरख तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम गया आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए हार, हरि की समझ किसे ना पाईआ। काग़ज़ कलम रोवे ज़ारो ज़ार, छाही आपणा हाल सुणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ करन पुकार, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। तुध बिन दिसे ना कोई सहार, सगला संग ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, निरगुण नूर चन्द ना कोए चमकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, घर साचे मेल मिलाईआ। दर घर साचे मेल मिलाउणा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेर मिटाउणा, निरगुण नूर चन्द रुशनाईआ। सृष्ट सबाई एका मार्ग लाउणा, चार वरन पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका घर वसाउणा, ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म सब दा रंग रंगाउणा, काया चोली रंगण इक रंगाईआ। शब्द संदेसा इक सुणाउणा, धुर दा नाम जणाईआ। जुग विछड़यां जग मेल मिलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा इक समझाईआ। आपणा घर समझा ठाकर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। कलयुग वेख डूंघा सागर, डूंघी भँवर पई लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना देवे आदर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। एथे ओथे कोई ना करे आदल, अदालत हक़ ना कोए वखाईआ। जगत खेल मक्तूल कातिल, कूड़ी क्रिया छुरी हथ्थ उठाईआ। जलवा बुज्झे ना नूर बातन, बैतल धाम ना कोए प्रगटाईआ। पीर पैगम्बर सारे आखण, सजदा सीस निवाईआ। तेरा नूर तेरी ज़ातन, अजाति रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। तेरा नाम कलमा कलाम, कायनात आप जणाईआ। तेरा इस्म सच इस्लाम, इक्को इक नूर खुदाईआ। तेरा हुक्म धुर नज़ाम, नौबत तेरे नाम वजाईआ। पीर पैगम्बर तेरा दे के गए पैग़ाम, धुर संदेसा नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर मिले माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर नौबत नाम, तेरे नाम वजाईआ। गुर अवतार दे के गए ध्यान, ध्यान ध्यान विच टिकाईआ। बोध अगाध शब्द ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर रूप समझाईआ। घर मन्दिर गृह खोल्ह दुकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे मिले सरनाईआ। दर तेरे मिले सरनाई, सरनगति इक्को इक जणाइंदा। वरन बरन रहे ना राई, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा सहिज सुभाईआ। दूई द्वैती पढ़दा लाहइंदा। घर विच घर होए रुशनाई, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे आस रखाइंदा। दर तेरे आस रखाउँदा ए। गुर अवतार ध्यान लगाउँदा ए। पीर पैगम्बर सीस झुकाउँदा ए। सतिजुग त्रेता मंग मंगाउँदा ए। द्वापर कलयुग झोली डौंहदा ए। विष्नूं आपणा हाल सुणाउँदा ए। ब्रह्मा नेत्र नैणां नीर वहाउँदा ए। शंकर हथ्थ त्रसूल सुटाउँदा ए। त्रैगुण माया पल्लू ना कोए फड़ाउँदा ए। पंज तत बिहबल हो कुरलाउँदा ए। प्रकृती रंग ना कोए रंगाउँदा ए। सुरती शब्द ना कोए मिलाउँदा ए। नाद तूरती ना कोए सुणाउँदा ए। अकाल मूर्ती ना कोए वखाउँदा ए। तेई अवतार आख जणाउँदा ए। भगत अठारां

ख़ाक रलाउँदा ए। मूसा मूँह दे भार सुटाउँदा ए। ईसा इक्को पिता पुरख अख्वाउँदा ए। मुहम्मद बत्ती दन्द सिफ्त सलौंहदा ए। नानक गोबिन्द धार जणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अगम्मी वर, जिस दा भेव कोए ना पाउँदा ए। अगम्मी वर इक दवाउँदा हां। गुर अवतार पीर पैगम्बर पूरब लेखा अन्त मुकाउँदा हां। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जुग चौकड़ी पार कराउँदा हां। सन्त सुहेले लख चरासी विच्चों चुग, निरगुण सरगुण मेल मिलाउँदा हां। काया मन्दिर अन्दर सुहञ्जणी होए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाउँदा हां। जन भगतां पंच विकारा कढ्ढां कुट्ट, शब्द खण्डा इक चमकाउँदा हां। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता आप अख्वाउँदा हां। सच दुआर सुहाया कोट, बंक इक्को इक वखाउँदा हां। लहिणा चुका लोक परलोक, चौदां लोकां डेरा ढौंहदा हां। चरणां हेठ दबा मुक्ती मोख, मुफ्त आपणा आप वखाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे कोल वसाउँदा हां। हरिजन साचे कोल वसावेगा। प्रभ आपणा ढोल मृदंग जणावेगा। शब्द अगम्मी बोल, धुर दा राग इक सुणावेगा। आपणे कंडे तोल, तराज़ू आपणे हथ्थ उठावेगा। आदि जुगादि रख अडोल, सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा वाक भविक्ख्त जो गए बोल, तिस आपणा पूर करावेगा। सच दुआर धुर दा खोल्ह, हरि मार्ग इक लगावेगा। दे नाम वस्त अनमोल, अनमुलड़ी दात वरतावेगा। सुरती शब्दी आपे मौल, मौला आपणी कार कमावेगा। नानक गोबिन्द कीता कौल, कीता कौल तोड़ निभावेगा। एथे ओथे दो जहान तेरा वज्जे ढोल, मृदंगा इक्को इक सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, जिस विच आपणा राग अलावेगा। हरि आपणा राग अलावेगा। धुर दा नाद इक वजावेगा। बिन तन्द सतार हिलावेगा। बत्ती दन्द ना कोए रखावेगा। रसना जिह्वा ना कोए अलावेगा। शब्द अगम्मी इक सुणावेगा। काया माटी चम्मी वेख वखावेगा। सुरत सवाणी अन्न्ही, नेत्र नैण खुल्हावेगा। घर साचे बणा के वंनी, शब्दी कन्त मेल मिलावेगा। गहर गम्भीर दाता धनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणे हथ्थ रखावेगा। करनी आपणे हथ्थ रखाएगा। प्रभ आपणा खेल रचाएगा। जीव जंत समझ कोए ना पाएगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण नैण शरमाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा खेल वखाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण खेल, कलयुग अन्त वज्जी वधाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होया मेल, घर मिल्या बेपरवाहीआ। एका रंग चढ़ाया गुरु गुर चेल, चेला गुर इक्को नज़री आईआ। साहिब सतिगुर सज्जण सुहेल, ठाकर स्वामी आपणा दर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाए ठाकर स्वामी, बेपरवाह दया कमाइंदा। बोध अगाध अन्तरजामी, शब्दी नाद अलाइंदा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, निझर झिरना इक झिराइंदा। नाम सुणाए अकथ कहाणी, रसना जिह्वा भेव मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसाए घर सच्च, सच मिले वड्याईआ। साहिब सतिगुर मार्ग दस्स, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म देवे रस, निज रस इक चुआईआ। निरगुण निरवैर खोल्ह अक्ख, आख़र आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन कर जोत प्रकाश, प्रकाशी आपणे नाल मिलाईआ। जोत प्रकाश मिले प्रभ ठाकर, दयावान दया कमाईआ। कलयुग डूंघा पार कराए सागर, भँवरी भँवर ना कोए रुढ़ाईआ। दर दवारे देवे आदर, आदर्श आपणा इक जणाईआ। किरपा करे करीम कादर, करता पुरख वड वड्याईआ। एथे ओथे बण के सालस, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। सन्त सुहेले उत्तम श्रेष्ठ कढ्ढे ख़ालस, ख़ालस आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे निंद्रा आलस, दु:ख दलिद्र डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। गुरमुख रंग वेख चढ़दा, गुर अवतार खुशी मनाईआ। भगत भगवान ढोला पढ़दा, पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। सन्त सज्जण घर सच्चे वड़दा, जिस घर मिले माण वड्याईआ। गुरसिख इक्को तरनी तरदा, पार किनारा नज़री आईआ। साहिब सतिगुर किरपा करदा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। कलयुग कूड़ा वेखो डरदा, नेत्र नैण रिहा शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन उठाए सतिगुर मीता, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रभ मिलण दी दस्से रीता, रीतीवान आप जणाईआ। देवे माण इक्को अक्खर अठारां ध्याए गीता, गीत गोबिन्द इक समझाईआ। चरण कँवल बंधाए प्रीता, प्रीती इक्को इक लगाईआ। माण रखाए ऊँचां नीचां, नीचां ऊँचां एका रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन हासा, घर साचे खुशी मनाईआ। पुरख अकाल कलयुग वेखे आप तमाशा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मण्डल मण्डप काहन बण के पावे रासा, बण नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा चार जुग दा खोल्हे आप खुलासा, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जन भगतां देवे इक भरवासा, चरण कँवल सच्ची सरनाईआ। साचे सन्तां पूरी करे आसा, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। गुरमुखां काया चोली भरे कासा, नाम भण्डारा इक वरताईआ। गुरसिखां लेखे लाए स्वास स्वासा, पवण उनन्जा डेरा ढाहीआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्को देवे जापा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। मेट मिटाए तीनों तापा, त्रैगुण

२३८
१६

लेखा दए चुकाईआ। नज़री आए इक्को मापा, सोहरा पेईआ इक्को घर वखाईआ। निरगुण जोड़े निरगुण नाता, जोती जोत करे कुड़माईआ। लेखा जाणे पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगतां लेखा लेखे लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे तक्क, बिन नैणां नैण उठाईआ। वेख खेल पुरख समरथ, इक दूजे रहे सुणाईआ। वेखो पिछला मिलदा हक़, लेखा बाकी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जागे सतिगुर मेहर, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। मेहरवान ना लाए देर, छिन भंगर खेल वखाईआ। दूई द्वैती पर्दा दए उधेड़, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अन्ध अज्ञान मिटाए अन्धेर, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। इक्को घर वखाए सञ्झ सवेर, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। हरिजन मेला आत्म ताक, हरि पर्दा आप चुकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द दए रुशनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण शब्द सुनेहड़ा जो गए आख, तिस आखर पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रसना जिह्वा बोलया भविक्ख्त वाक, सो वाक्य दए वखाईआ। भगत भगवान बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लेखा चुका ज़ात पात, वरन बरन पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म दस्से सच्चा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले रंग रंगाईआ। सन्त सुहेले रंग अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाईआ। आदि जुगादी इक इकल्ला, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। सम्बल सुहाए सच महल्ला, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती दीपक इक्को बला, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। सच संदेस शब्दी घल्ला, नाम निधाना राग सुणाईआ। प्रेम प्रीती फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणे गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेले आपणे घर, घर मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। घर मन्दिर सुहाए सोभावन्त, काया बंक दए वड्याईआ। जिस गृह मिले नरायण नर कन्त, हरि कन्तूल बेपरवाहीआ। शब्द सुणाए धुर दा मंत, मंतव आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए आपणा घर, जिस वज्जे सच वधाईआ। वज्जे वधाई घर सच्चे मन्दिर, हरि सतिगुर आप वजाइंदा। होए प्रकाश अन्दरे अन्दर, दीवा बाती नज़र कोए ना आइंदा। लेखा चुक्के डूंघे खण्डर, भँवरी भय ना कोए दृढ़ाइंदा। साहिब स्वामी तोड़े जन्दर, बंद किवाड़ी कुण्डा लाहइंदा। सेज सुहञ्जणी सुहाए बण के साँवल सुन्दर, मोहणी आपणा रूप वटाइंदा। मन वासना बन्ने के बन्दर, गुरमुख आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, हरिजन आपणा घर वखाइंदा। हरिजन घर वखाए इक, घर घर विच मेल मिलाईआ। जिस गृह सतिगुर पूरा आए दिस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। करवट लै बदलाए पिठ्ठ, सनमुख आपणा मुख दिखलाईआ। प्रेम प्रीती करे हित, हितकारी नूर अलाहीआ। खेले खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाईआ। बण के ठाकर स्वामी धुर दा पित, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठांडे घर लए मिलाईआ। ठांडे घर सीतल धार, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। आत्म परमात्म करे प्यार, परम पुरख दया कमाईआ। सुरती शब्द दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल करे पुरख नार, नार कन्त रूप वटाईआ। साची सेजा लए बिठाल, आत्म अन्तर इक पलँघ सुहाईआ। पावा चूल नज़र ना आवे विच संसार, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। जिस सिँघासण बहि करे प्यार, सो आसण इक्को इक वखाईआ। जिस दी सिफ्त करे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक घर, जिस घर होए जोत रुशनाईआ। जोत रुशनाई दीप उजाला, घर इक्को नज़री आइंदा। जिस गृह वसे हरि गोपाला, गोबिन्द आपणा खेल खिलाइंदा। जन भगतां प्रेम प्रीती पाए माला, रसना जिह्वा बत्ती दन्द जाप ना कोए जपाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग दे सच सुखाला, नाता बिधाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। लेखा चुक्के काल महाकाला, महिबूब इक्को नज़री आइंदा। जन भगतां होए हल्ल सवाला, फ़िकरा अग्गे ना कोए पढ़ाइंदा। इक्को मन्दिर इक्को शिवदुआला, गुरूदवारा मठ्ठ इक्को इक वखाइंदा। इक्को मन्दिर मसीत इक्को चाढ़े रंग गुलाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक्को घर बहाइंदा। हरिजन बहाए घर इक, जिस गृह वड्डी वड्याईआ। जिस दा लेखा शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे लिख, लिख लिख लोकमात समझाईआ। बिन सन्त सतिगुर किसे ना आए डिठ, बिन भगत बहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस लेखा कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख घर साचे बहिण, बहि बहि खुशी मनाईआ। परम पुरख दा दर्शन नैण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूंही तूंही ढोला गायण, मैं ममता मूल मिटाईआ। सच दवारे सदा सदा सद बहिण, बहि बहि खुशी वखाईआ। लेखा चुक्के अल्फ़ ये नज़री आए कोई ना ऐन, हमज़ा रमज़ ना कोए लगाईआ। नाता तुटे भाई भैण, साक सज्जण संबंध संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए आपणा दर, दर दरवाज़ा इक्को इक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्ह यार, मिहबान बीदो मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। साहिब सतिगुर कर प्यार, सोभा सोहबत देवे माण वड्याईआ। ग़फ़लत निंद्रा आलस कर के पार, खुशीआं रंग इक चढ़ाईआ।

२४०
१६

रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल गया जहान, बिन रसना जिह्वा ढोला इक सुणाईआ। सति सतिवादी सति वखाए सच निशान, शहिनशाह इक्को इक झुलाईआ। जिस दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सीस झुकाण, विष्न ब्रह्मा शिव धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। सो दवारा महल अटल उच्च मकान, सचखण्ड इक्को नज़री आईआ। जिस गृह वसे श्री भगवान, निरगुण निरवैर जोती जाता आसण लाईआ। जुग जुग जन भगतां मेले आण, नित नित आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक घर, जिस घर वड़यां दूजी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख वड़े घर एक, एकँकार दए वड्याईआ। पुरख अकाल दी ओथे टेक, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस घर दा पाया किसे ना भेत, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। तिस मन्दिर जन भगत करन हेत, भगवान आपणे रंग रंगाईआ। कबीर जुलाहे किहा वेख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म दी अगम्मी खेड, निरगुण निरगुण रिहा खिलाईआ। जिस धारों गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते भेज, सो धार नूर इलाईआ। चढ़ के वेखो धुर दी सेज, जो श्री भगवान आप विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतो भगती वेखो रंग, हरि भगवन आप रंगाइंदा। काया मन्दिर अन्दर दवारा वेखो लँघ, घर घर विच सोभा पाइंदा। शब्द नाद सुणो मृदंग, ढोलक छैणा कम्म किसे ना आइंदा। आत्म परमात्म माणो अनन्द, रसना जिह्वा फिका रस दूर कराइंदा। निरगुण जोत चाढ़ो चन्द, सूरज चन्द मुख शरमाइंदा। मिलो मेल सूरे सरबँग, सूरबीर इक्को नज़री आइंदा। लेखा चुके जगत धारा गंग, अमृत सरोवर इक नुहाइंदा। लहिणा देणा चुक्के भुक्ख नंग, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग जन्म दी आत्म परमात्म विछड़ी टुट्टी लओ गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी गंढ पवाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाओ सोहँ छन्द, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म ब्रह्म आपणे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताइंदा। जन भगतो उठो खोल्हो अक्ख, हरि अक्खर नाम दृढ़ाईआ। मिलो मेल पुरख समरथ, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। शास्त्र सिमरत जिस दी गाउँदे महिमा अकथ, अञ्जील कुरान तीस बतीस रही सुणाईआ। सो देवणहारा धुर दा हक़, हकीकत वेखो थाउँ थाईंआ। अन्दर वड़ पौड़े चढ़ सच नज़ारा लओ तक्क, तकवा इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा मिलाईआ। जन भगतो उठो पकड़ो राह, रहिबर इक्को नज़री आइंदा। जिस नूं पीर पैगम्बर मन्नदे रहे नूरी ख़ुदा, सो लाशरीक आपणा फेरा पाइंदा। हस्ती वजूद ना होए जुदा, जुसतजू आपणे रंग रंगाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग दस्से सिध्धा, औझड़ राह ना कोए वखाइंदा। घर ठाकर मिलण दी इक्को

बिधा, बिध आपणी आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगतां आपणे घर वसाइंदा। भगत वसेरा ठांडे दरबार, दरगाह साची खुशी मनाईआ। किरपा करे किरपन किरपा धार, हरिजन साचे लए जगाईआ। जिस दा लेखा तिस झोली देवे डार, जगत उधार ना कोए रखाईआ। जन भगतां श्री भगवान सदा बणे सेवादार, चाकर आपणा नाउँ धराईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, फड़ बाहों गले लगाईआ। घर मन्दिर गृह पिछला दए वखाल, जिस विच्चों विछड़ लख चुरासी विच भवाईआ। कलयुग अन्तिम हो दयाल, गुरमुख वेख आपणे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। सच दवारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जिथ्थे दीपक जोत जगे बेमिसाल, मिसल नज़र किसे ना आईआ। हरि भगत भगवान ओस धाम लए बहाल, जिस घर वेखण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरवैर निराकार सरगुण आपणे लेखे पाईआ।

* ४ माघ २०२० बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह भोले के ज़िला गुरदास पुर *

शब्द इशारा दे भगवान, दो जहान रिहा वखाईआ। नेत्र खोलो नौजवान, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी धार समझाईआ। सृष्ट सबाई वेखो जगत ज्ञान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सालाहीआ। कागज़ कलम छाही पढ़ो ब्यान, पूरब लेखा रिहा दृढ़ाईआ। सच सुच धर्म वेखो ईमान, सिदक सबूरी नज़र कोए ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वेखो मकान, सति सन्तोख घर रंग ना कोए रंगाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ तट सरोवर वेखो मार ध्यान, चारों कुण्ट अक्ख खुलाईआ। जीव जंत साध सन्त सर्ब कुरलाण, हाहाकार करे लोकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। करोड़ तेतीसा नेत्र नैणां नीर वहाण, छहबर इक्को इक वखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे नाता तुट्टा अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज ना कोए खुजाईआ। सच मुहब्बत दिसे ना किसे इस्लाम, इस्म आज़म नूर ना कोए रुशनाईआ। लेखा जाणो आपणा जो दे के आए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। कलयुग अन्त नव नौ चार दिसे हराम, सति रूप ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। वेखो अक्ख खोल संसार, जग जीवण दाता आप जणाईआ। सच सुच ना कोए आधार, कूड़ी क्रिया जगत कुड़माईआ। मात पित पिता पूत ना कोए प्यार, भईआ भैण नाता नज़र कोए ना आईआ। दर दर घर घर दिसे विभचार, नार कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। साधां सन्तां अन्दर धूंआँधार, निर्मल जोत ना कोए रुशनाईआ। जीवां जंतां काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गढ़ झूठा रिहा बणाईआ।

एको भुल्लया नर हरि नरायण करतार, करता नज़र किसे ना आईआ। चार जुग दी सिख्या गई हार, साखी सच ना कोए समझाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मुसायक उच्ची कूकण धाहां रहे मार, धरनापत मेल ना कोए मिलाईआ। जगत अन्धेरा डूंघी गार, समुंद सागर पार ना कोए कराईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ गए हार, पारब्रह्म प्रभ नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा रिहा समझाईआ। साचा लेखा वेखो हाल, हालत सब दी आप जणाइंदा। लख चुरासी सिर ते कूके काल, कलयुग नगारा इक वजाइंदा। सृष्ट सबाई होई बेहाल, सुरती सुरत ना कोए भवाइंदा। आत्म परमात्म किसे ना दिसे नाल, सगला संग ना कोए निभाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आप जणाइंदा। अगला लेखा वेखो नेत्र, निरगुण निरँकार आप जणाईआ । जगत ख्वारी कूड़ा खेत्र, साचा खाता समझ कोए ना पाईआ। रुत्त बसन्ती कोई ना मौले चेत्र, पत डाली ना कोए महकाईआ । सब दे ख़ाली कोरे होए पेपर, पिछला लेखा नज़र कोए ना आईआ। अग्गे हो के सारे वेखण, उठ उठ आपणा ध्यान लगाईआ । पारब्रह्म की खेले खेल खेलण, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। निरगुण हो के सरगुण आया मेलण, सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार वेखण ख़ाली, लेखा नज़र कोए ना आईआ। सारे कहिण बुध बाली, प्रभ तेरी सार कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करदे रहे दलाली, जगत वणजारा हट्ट चलाईआ। कलयुग अन्त करे खेल शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। आदि जुगादी देवणहारा धुर दी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। जन भगत उठाए सच निशानी, निशाना आपणा नाम लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार कहिण जन भगत, हरि भगवन दए वड्याईआ। लेखे लग्गे बूँद रक्त, हड्ड मास नाड़ी ख़ुशी मनाईआ। उत्तम करे श्रेष्ट जगत, जुगत आपणी इक समझाईआ । लख चुरासी विच्चों मेले फ़कत, फ़िकरा आपणा नाम सुणाईआ। निरगुण हो के आया परत, सरगुण आपणा पर्दा लाहीआ । ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। सन्त सुहेले लए परख, नाम कसवटी इक्को लाईआ। मेल मिलाए हो नधड़क, भय भउ ना कोए जणाईआ। गुरसिख मंज़ल विच ना जाए अटक, घर साचे लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा झोली पाईआ। वेख खेल पुरख समरथ, सब बैठण ध्यान लगाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी दिती अक्ख, सृष्ट सबाई पर्दा पाईआ। लख चुरासी ख़ाली हथ्थ, चारों कुण्ट रिहा वखाईआ। गुरमुखां दे अगम्मी वथ, हरिजन झोली आप भराईआ। शब्द चढ़ा साचे रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। वणज करा

धुर दे हट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। वेख रंग प्रभू हरि ठाकर, गुर अवतार रहे जस गाईआ। किरपा करे गम्भीर गहर गुण सागर, हरि दाता दया कमाईआ। जन भगत उधारे निर्मल कर्म कर उजागर, उजरत अन्त कोए ना लाईआ। लेखा जाणे तेग़ बहादर, सुत गुज़री बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। साची खेल सुत दुलारा, जन जननी आप जणाइंदा। परम पुरख प्रभ हो उज्यारा, उजल मुख आप कराइंदा। शब्द अनादी बोल जैकारा, धुर दा राग सुणाइंदा। अन्तर आत्म इक प्यारा, परम पुरख मेल मिलाइंदा। लख चुरासी पार किनारा, घाट पत्तण माही इक जणाइंदा। जिस गृह वसे आप करतारा, सो कादर इक्को घर सोभा पाइंदा। महल अटल उच्च मनारा, दीवा बाती कमलापाती आप जगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद कतेब कहि कहि अन्त ना कोए सुणाइंदा। करे कराए करनेहारा, हरि करता आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे इक प्यारा, चरण कँवल कँवल चरण उपर धवल जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग वखाइंदा। हरिजन रंग चाढ़ अगम्म, अन्तर आत्म आप रंगाईआ। लेखा चुक्के माटी चम्म, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। भउ जणाए हँ, ब्रह्म भेव आप खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक्को दर वखाईआ। हरिजन वेख दर निराला, घर साचे खुशी मनाइंदा। जिस घर वसे पुरख अकाला, निरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। सो मन्दिर सोहे सच्ची धर्मसाला, गुरुदुआर इक्को नज़री आइंदा। जिस गृह पोह ना सके काल महाकाला, महाबली सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एथे ओथे दो जहान होए रखवाला, रक्षक आपणी कार कमाइंदा। सति सतिवादी इक्को पाए साची माला, मन का मणका आप भवाइंदा। जन भगतां मार्ग दे सुखाला, सुख सागर रूप वटाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जीवण जुगत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन इक्को घर वसाइंदा। हरिजन वसे घर इक, हरि इक्को नज़री आईआ। अगला लेखा देवे लिख, पिछला मूल मुकाईआ। साहिब सतिगुर नज़री पए दिस, दहि दिशा करे रुशनाईआ। माणस जन्म लए जित, अजन्म रूप ना कोए वटाईआ। ठाकर मिले धुर दा पित, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। आत्म परमात्म करे हित, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। इक्को इष्ट वसे चित, दृष्ट आपणे नाल मिलाईआ। कर खेल साहिब अनडिठ, अनडिठड़ा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दए वड्याईआ। हरि भगत वड्याई भगत दुआर, भगवन बंक इक सुहाइंदा। महल अटल उच्च मनार, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाइंदा। नौ दुआर कर कर पार, डूंघी भँवरी पन्ध मुकाइंदा। कुण्डा खिड़की खोल्ह

करतार, काया काअबा इक प्रगटाइंदा। शब्द नाद सच्ची धुनकार, अनहद नादी राग सुणाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठार, सर सरोवर झिरना इक झिराइंदा। दीप अगम्मी दीपक बाल, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म सेजा इक वखाल, हरिजन साचे आप बहाइंदा। सुरत शब्द प्रीती निभे नाल, प्रेम इक्को घर कराइंदा । साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द आप अल्लाइंदा। धुर दा वज्जे अगम्मी ताल, जगत नगारा ना कोए रखाइंदा। घर स्वामी वेखे आण, ठाकर इक्को फेरा पाइंदा। जन भगतां देवे माण, अभिमान रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। घर मन्दिर सुहाए सोभावन्त, सो साहिब वडी वड्याईआ। नाम जणाए महिमां अगणत, शब्दी राग अल्लाईआ। भेव चुकाए साचे मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ । बोध अगाध पढ़ाए पंडत, अक्खर निष्अक्खर विच्चों प्रगटाईआ। दूजे दर ना होवे मंगत, देवणहार सर्ब अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला नार कन्त, रुत्त बसन्त इक प्रगटाईआ। नार कन्त रुत बसन्ती, बसन बनवारी आप कराइंदा। सच सुच सुणाए धुर दी पंगती, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। कोई भेव ना पाए शास्त्र सिमरत वेद पुराणा पंडती, पांधा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन हरि हरि लाए आपणे अंगती, अंगीकार एकँकार इक्को एक, एक अनेक नज़री आईआ।

* ४ माघ २०२० बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड वहीला ज़िला गुरदास पुर *

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, आदि जुगादि इक रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। एकँकारा खोल्ल किवाड़ा, महल अटल इक सुहाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा । अबिनाशी करता कर पसारा, शाह पातशाह वेख वखाइंदा। श्री भगवान सच हुलारा, सति सतिवादी आप लगाइंदा। पारब्रह्म बोल जैकारा, धुर दा नाअरा इक सुणाइंदा। सचखण्ड दवारे करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाइंदा । शाहो भूप बण सिक्दारा, राजन राज राजाना आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। दूजा संग ना कोए साथ, इक इकल्ला वड वड्याईआ। करे खेल पुरख समराथ, शहिनशाह इक्को इक नज़री आईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण पावे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। सचखण्ड

दवारा सोभावन्त, सो साहिब आप सुहाया। आदि जुगादी धुर दा कन्त, नर नरायण डेरा लाईआ। शब्द अगम्मी महिमा अगणत, बोध अगाध जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना रच सचखण्ड दवारा, घर साचे खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे अधारा, त्रै पंज मेला मेल मिलाइंदा। खाणी बाणी बोल जैकारा, शब्द अनादी राग अलाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, अकल कलधारी आपणी कल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक लगाइंदा। सच दरबार सति पुरख, सति सतिवादी आप लगाईआ। जुग चौकड़ी ना कोई सोग हरख, चिन्ता ग़म ना कोई रखाईआ। निरवैर निराकार अजूनी रहित इक्को नूर कराए दरस, आदरस आदरस आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, बेअन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेस वटा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाईआ। तेई अवतार सेवा ला, साची सिख्या इक समझाईआ। बोध अगाध नाम दृढ़ा, मन्त्र इक्को इक समझाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। साचा मन्दिर इक सुहा, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह खेल करे हरि जगत, जगजीवन दाता दया कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों उभारे भगत, भगवन आपणा भेव चुकाइंदा। लेखे लाए बूँद रक्त, काया माटी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी मनाइंदा। साचे घर खुशी करे निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। पीर पैगम्बर कर त्यार, मसला हक़ हक़ समझाईआ। लाशरीक परवरदिगार, सच तौफ़ीक नूर इलाहीआ। महिबान बीदो सांझा यार, नौबत आपणे नाम लगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। साचा कलमा धुर दी धार, कायनात करे पढ़ाईआ। अल्फ़ ये कर प्यार, उल्फ़त इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह मुकामे हक़, निरगुण निरवैर सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, पीर पैगम्बर आप समझाइंदा। लख चुरासी हिरदे वस, हर घट आपणा डेरा लाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती नूर डगमगाइंदा। अन्दर बाहर देवे साथ, गुप्त ज़ाहर संग निभाइंदा। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, प्रतख आपणा रूप जणाइंदा। निरगुण हो चलाए रथ, सरगुण साची सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी गुरु गुर धार, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोती जोत कर त्यार, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। काया माटी खोल्ह किवाड़, साची हाटी इक

जणाईआ। बूँद स्वांती ठांडी ठार, अमृत धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सचखण्ड निवासी, इक इकल्ला आप कराइंदा। निरगुण नूर जोत प्रकाशी, गुर गुर आपणी धार समझाइंदा। मन्दिर मण्डल मण्डप पावे रासी, घर साचा खेल वखाइंदा। उत्तम रखे आपणी ज़ाती, अज़ात रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा रूप वटाइंदा। सतिगुर रूप रूप अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। शब्द गुरू गुरू बलकार, बलधारी वेस वटाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, शाही नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। नानक निरगुण कर प्यार, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी वंड भगवान, हरि करता आप कराइंदा। नानक निरगुण शब्द जवान, अगम्मी राग सुणाइंदा। लेखा जाण दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। नाता तोड़ ज़िमी असमान, लोक परलोक डेरा ढाइंदा। सति वखा इक निशान, सति सतिवादी आपणा घर सुहाइंदा। चार वरनां इक ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म खेल महान, महान आत्मा आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी हुक्म संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। भूपत भूप बण नर नरेशा, नर निरँकार खेल खिलाईआ। वेखे विगसे देस देसा, बसन्तर आपणा भेव चुकाईआ। बिन नेत्र लोचण नैण पेखा, अक्ख प्रतख नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों पुरख अकाल इक्को गोबिन्द बणाया बेटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तर आत्म साची सेजा लेटा, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। एथे ओथे दो जहान बण के खेवट खेटा, साची नईआ पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। साची करनी हरि करतार, आदि जुगादि आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल वेख संसार, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल कलाम, कायनात सर्ब समझाइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा इक अमाम, नेत्र नैण जगत नज़र किसे ना आइंदा। सच संदेसा दे पैगांम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म वरते भगवन्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सीस निवाउँदे गए साध सन्त, भगत भगवान ध्यान लगाईआ। गुर अवतार दस्सदे गए मणीआं मंत, मन्त्र इक्को नाम समझाईआ। उच्ची कूक जणाउँदे गए प्रभू बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल रचे निरँकार, लख चुरासी वंड वंडाईआ।

सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर मेल मिलाईआ। नाता जोड़ जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जोड़ जुड़ाईआ। संदेसा देंदे गए वारो वार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान वखाईआ। खाणी बाणी बोल जैकार, धुर दी धार इक प्रगटाईआ। आत्म परमात्म करो प्यार, जीव जंत इक जणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल रच करतार, हरि करता वेख वखाइंदा। मार्ग दस्स दस्स गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर रहिबर इक्को इक नज़री आइंदा। कलयुग अन्त चारों कुण्ट होया धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। किसे मिले ना मीत मुरार, घर सज्जण संग ना कोए रखाइंदा। सृष्ट सुबाई नेत्र रोवे जारो जार, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप जणाइंदा। साचा वेस दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां जुग चौकड़ी जो दस्सया जाप, कलयुग जीव गए भुलाईआ। घर घर गृह गृह दर दर त्रैगुण माया चढ़या ताप, त्रैगुण अग्नी रही जलाईआ। जूठा झूठा नाता जुड़या सज्जण साक, सतिगुर सज्जण मेल ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म होई किसे ना पाक, पतित पुनीत रूप ना कोए वटाईआ। काया मन्दिर खोल्हे कोई ना ताक, बज़र कपाटी तोड़ ना कोए तुड़ाईआ। अमृत पीवे ना कोई बूंद स्वांत, अठसठ भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। निरगुण वेखे हरि दातार, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। अन्तर आत्म ना किसे प्यार, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। रसना गावे सर्ब संसार, बत्ती दन्द ढोला लाइंदा। मन्दिर वड़ करे ना कोई दीदार, दरस दीद ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे चार खाणी, चारों कुंट ध्यान लगाईआ। चौथे जुग आई हानी, साचा संग ना कोए निभाईआ। अमृत मिले ना किसे पाणी, निजर झिरना ना कोए झिराईआ। पाए कोए ना पद निरबाणी, निरबाण पद आसण ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा वेखे थान थनंतर, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। कलयुग माया लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। फिरी दरोही गगन गगनंतर, लोक परलोक सर्ब कुरलाइंदा। गुर का भुल्लया सब ने मन्त्र, मंतव हल्ल ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। लख चुरासी वेखे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। पुरख अकाल दी सब नूं भुल्ली टेक, गोबिन्द लेखा गए भुलाईआ। चारों कुण्ट वध्या भेख, कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। निरगुण सरगुण कोई ना लए चेत, चेतन सुरती ना कोए बणाईआ। अन्दर वड़ के काया पौड़े

चढ़ के निज नेत्र दर्शन कोई ना लए पेख, दोए लोचण जगत वेख वेख बिगसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे बैठा खेल रचाईआ। सचखण्ड दुआरे सच्चा शहिनशाह, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लए उठा, शब्द सुनेहड़ा इक जणाइंदा। लोकमात वेखो तक्को राह, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। कलमा नबी रसूल जो आए पढ़ा, काग़द कलम नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। मन्त्र सति सति जो आए दृढ़ा, नाम रंग रंग ना कोए रंगाइंदा। जीव जंत होए बेवफ़ा, सफा सब दी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्ह अक्ख, लोकमात ध्यान लगाईआ। सब दे भाण्डे दिसण सक्ख, काया माटी कूड़ी पोच पोचाईआ। किसे गृह मिले ना पुरख समरथ, सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। जगत मनारे रहे ढट्ठ, साढे तिन्न हथ्थ माटी ख़ाक मिलाईआ। कोई ना विके साचे हट्ट, बिन सतिगुर कीमत हट्ट ना कोए वकाईआ। दूई द्वैती लग्गा फट्ट, ज़ात पात करे लड़ाईआ। ऊँच नीच इक दूजे नूं रहे दस्स, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाईआ। हर घट अन्दर हरि जू रिहा वस, निरगुण आपणा डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जिह्वा कहिण दे प्रभ हक़, हकीकत तेरी झोली पाईआ। सदी चौधवीं सारे गए थक्क, चौदां तबक बण बण पांधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, जिसे मिले नाम वड्याईआ । पीर पैगम्बर रहे बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तुध बिन तोले ना कोए तोल, तराजू हथ्थ ना कोए रखाईआ। तेरे नाम दा वजा के आए ढोल, कलमा कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, सद भाणे लए चलाईआ। पीर पैगम्बर मारन धाह, नाअरा इक्को इक जणाईआ। परवरदिगार सच खुदा, रहमत तेरी नज़री आईआ। चौदां लोक चौदां तबक तक्कण तेरा राह, बेनज़ीर नज़र उठाईआ। गुर अवतार सारे आए लिखा, कलयुग अन्तिम आवे बेपरवाहीआ। कल कल्की वेस वटा, जोती जोत नूर रुशनाईआ। शब्दी डंक दए वजा, सम्बल इक्को डेरा लाईआ । जुग चौकड़ी पूरब लहिणा दए मुका, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। सृष्ट सबाई दस्से इक्को राह, रहिबर बणे नूर इलाहीआ । मक्का काअबा डेरा ढाह, मकतब इक्को इक खुल्हाईआ। साची सिख्या दए समझा, सबक आपणे नाम पढ़ाईआ। आखर मेला लए मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर दस्सण हाल, हालत आपणी रहे जणाईआ। परवरदिगार मन्न सवाल, साहिब तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं पूरी होई घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। चारों कुण्ट दिसे ज्वाल, ज़ेर ज़बर ना कोए सुहाईआ। तेरे हथ्थ काल महाकाल, बेमिसाल तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, इक्को दे अगम्मा वर, जिस विच तोट रहे ना राईआ। परवरदिगार साचा मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर पढ़ो एह हदीस, हज़रत कलमा इक समझाइंदा। लख चुरासी बदली नीत, नीतीवान वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआर गुर अवतार सारे गौण इक्को गीत, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, ठाकर दुआर इक्को इक समझाइंदा। प्रभ दा खेल सदा अणडीठ, बिन सतिगुर किरपा नज़र किसे ना आइंदा। सदी बीसवीं रही बीत, बीस बीसा मंग मंगाइंदा। लेखा चुके ऊँच नीच, नीच ऊँच तेरा रूप नज़री आइंदा। मिले माण हस्त कीट, कीट हस्त तेरे दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा इक समझाइंदा। धुर दा लेखा हरि समझाउँदा ए। पतिपरमेश्वर दया कमाउँदा ए। परवरदिगार खेल रचाउँदा ए। सच तौफ़ीक इक दरसाउँदा ए। बण रफ़ीक वेख वखाउँदा ए। हक़ हकीक हकीकत विच्चों प्रगटाउँदा ए। दूर दुराडा आ नज़दीक, नेरन नेरा खेल खलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पीर पैगम्बर लेखा मूल चुकाउँदा ए। पीर पैगम्बर लेखा मूल चुकावांगा। परवरदिगार हो के खेल खिलावांगा। मुरीद मुर्शद वेख वखावांगा। दीद ईद चन्द चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा मार्ग इक समझावांगा। सच्चा मार्ग इक लगाएगा। प्रभ आपणा खेल वखाएगा। लख चुरासी रंग रंगाएगा। भगत सुहेले मेल मिलाएगा। गुर चेले जोड़ जुड़ाएगा। मुरीद मुर्शद अंग रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी कार कमावेगा। सदी चौधवीं पन्ध मुकावेगा। बीस बीसा लेखे लावेगा। जगत जगदीशा वेस वटावेगा। राज राजाना शाह सुल्ताना ख़ाली करे ख़ीसा, सीस ताज ना कोए टिकावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड देवे इक हदीसा, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ावेगा। पिछला लेखा सब दा बीता, अग्गे मार्ग इक रखावेगा। जन भगतां करे रीझां, मुख मुखड़ा आप धुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावेगा। साची करनी आप कराएगा। पुरख अबिनाशी खेल रचाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाएगा। जूठ झूठ शौह दरया रुढ़ाएगा। सच सुच इक समझाएगा। जीव जंत आप उठाएगा। साध सन्त मेल मिलाएगा। सुरत शब्द नार कन्त रूप वखाएगा। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप बदलाएगा। साची धार प्रभू बदलावेगा। बण के अदली अदल कमावेगा। कलयुग मंज़ल पन्ध मुकावेगा। हर दिल इक्को नज़री आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रहिबर इक अख्वावेगा। साचा रहिबर इक अख्वाएगा। पुरख अकाल नाउँ धराएगा। अमाम अमामां सिर नाउँ रखाएगा।

सच कलाम इक पढ़ाएगा। मन्त्र इक्को इक जणाएगा। चार वरन जोड़ जुड़ाएगा। बरन अठारां डेरा ढाएगा। चारे खाणी वेख वखाएगा। चारे बाणी भेव खुल्हाएगा। चारे जुग पन्ध मुकाएगा। चार वरनां गले लगाएगा। साची सरना इक समझाएगा। तरनी तरना फेरा पाएगा। हरना फरना नैण खुलाएगा। मरना डरना डेरा ढाएगा। घर साचे वड़ना, इक्को राह वखाएगा। भगत भगवान ढोला पढ़ना, साचा राग इक सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा लेखे लाएगा। साचा लेखा लेखे लावेगा। सो पुरख निरँजण दया कमावेगा। हरि पुरख निरँजण वेख वखावेगा। एकँकार खुशी मनावेगा। आदि निरँजण नूर रुशनावेगा। अबिनाशी करता राग अलावेगा। श्री भगवान सोभा पावेगा। पारब्रह्म पर्दा आप उठावेगा। ब्रह्म वेता हो के खेल खिलावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चार जुग दा याद कराए चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जावेगा। पुरख अकाल सब दा बणे नेता, नर नरायण इक्को इक अख्वावेगा। कलयुग कूड़ी मेटे खेडा, सतिजुग साचा राह जणावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात जिस ने भेजा, सो भजन बंदगी इक्को इक सुणावेगा। लख चुरासी आत्म अन्तर माणे सेजा, पलँघ रंगीला इक सुहावेगा। जोती नूर चमके तेजा, तेज इक्को इक वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे इक्को हुक्म वरतावेगा। इक्को हुक्म वरतावेगा। धुर फ़रमान सुणावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकावेगा। करोड़ तेतीसा अक्ख शरमावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लख लख शुकर मनावेगा। आदि जिस ने रचया अडम्बर, सो अन्तिम वेख वखावेगा। निरगुण सरगुण रच सुअम्बर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावेगा। देवे वड्याई साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर, गुरुदुआर इक्को इक वखावेगा। जिस घर वड्याई ना कोई सूरज चन्द्र, चन्द सूरज नैण शरमावेगा। जन भगतां तोड़ चुरासी बन्धन, बंदगी आपणी इक लगावेगा। प्रेम प्रीती डोरी बन्हृ के तन्दन, शब्दी गंढु इक रखावेगा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, दुरमति कूड़ी मैल धवावेगा। निज आत्म दए अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावेगा। दीन दयाल बण बख्शंदन, बख्शिश आपणी आप वरतावेगा। जो जन दवारे आवण मंगण, तिन्हां भिच्छया अमोलक झोली आप भरावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणे विच समावेगा। जुग चौकड़ी आपणे विच समाउँदा ए। कोटन कोटि काल बिताउँदा ए। दीन दयाल फेरा पाउँदा ए। सचखण्ड सच्ची धर्मसाल इक सुहाउँदा ए। दीपक जोती इक्को बाल, तेल बाती ना कोए रखाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर भेज के लाल, लालन आप हुक्म सुणाउँदा ए। नित नवित्त अवल्लड़ी चाल, भेव अभेद ना कोए जणाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे कमाल, कमला रमला दिस किसे ना आउँदा ए। नानक गोबिन्द घालन घाल,

कीती घाल वेख वखाउँदा ए। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जंजाल, जागरत जोत इक जगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाउँदा ए। अगला लेखा रखे हथ्थ, भविक्खत समझ किसे ना आईआ। थोड़ा थोड़ा सारे गए दस्स, जो साहिब सतिगुर दिती माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम टेकण चरण मथ, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरे वस, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। नाम तेरे दी दे के आए मत्त, गुरमति इक्को इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, सृष्ट सबाई करी पढ़ाईआ। मानस मानुख मानुष मन वासना लैणी कट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। घर विच घर खिलाउणा हट्ट, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जिस घर वसे पुरख समरथ, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। दिवस रैण गाए जस, सिफ्त सलाही राग अल्ल़ाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर होणा वस, दूजी डोर तन्द ना कोए बंधाईआ। सच सरनाई जाणा ढठ्ठ, माण अभिमाण नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान गुरमुख गुरसिख सज्जण लए रख, जो बैठे इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, वर इक्को इक हरि हरि नाम जणाईआ। भाई गुरदास निरगुण जोत, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। इक्को शब्द वज्जे चोट, नगारा नाम सति दृढ़ाइंदा। निरगुण हो के मिल्या निरगुण जोत, निरगुण धार निरगुण नज़री आइंदा। गुरदास गुर दास दास गुर कोई ना सके सोच, मन मति बुध भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदास इक्को रूप इक्को घर वखाइंदा। गुरदास इक्को एक आया, एकँकार दिती वड्याईआ। त्रैगुण माया डेरा ढाहया, नाता तुट्टया जगत लोकाईआ। पुरख अबिनाशी सच्चा गाया, गा गा ख़ुशी मनाईआ। आप आपा भेंट चढ़ाया, बाकी रहिण कुछ ना पाईआ। सो साहिब सतिगुर होए सहाया, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। काया माटी तन खेह मिलाया, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जोती जोत जोत मिलाया, निरगुण आपणा घर वखाईआ। सतिगुर घर विच्चों गुरदास प्रगट हो के आया, अन्तिम सतिगुर दवारे डेरा लाईआ। गुरदास कहे मैं पाया खेल गुर दा, घर वज्जी सच वधाईआ। मेरा लेख लेखा धुर दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिन प्रभ दी किरपा उहदे नाल कोई ना जुड़दा, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। बेशक जीव जहान जगत फिरदा, भज्जे नट्ठे वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर पूरे होया मुर्दा, मुरीद मुर्शद बैठा मुख भवाईआ। एहो खेल आत्म परमात्म राग अनादी सुर दा, सुरती शब्द विच जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दित्ता इक्को वर, सो गुरदास गुर गुर रूप समाईआ।

गुरदास दिसे ना किसे अक्ख, जगत नेत्र देण दुहाईआ। गुरदास गुर गुर अन्दर गया वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। दोहां मिल के खुशी आई बिन खुशीउँ पैण हस्स, ख्वाहिश ख्वाहिश नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदास वखाया उह घर, जिस घर विच्चों मरन जन्म जन्म मरन रहे ना राईआ। गुरदास कहे मेरी निर्मल रूह, बुत्त नाता गई तुड़ाईआ । जिध्धर वेखां तूंही तूं, एकँकार इक्को नज़री आईआ। जिस दा हुलीआ हूबहू, मेरे अन्दर नूर करे रुशनाईआ। मैं उस दे नाल गया छू, मिल के आपणी ज़ात गंवाईआ। जा वेख्या दवारे बैठा धरू, राह विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदास कीता उजल मूँह, मुख आपणा सिफ्त सालाहीआ। अग्गे करे पुरख समरथ, माण सच ना कोए वड्याईआ। जिस नानक निरगुण दित्ता हक़, धुर दा हुक्म आप समझाईआ । सो खेल करे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस दा जुग चौकड़ी चले रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गेड़ भवाईआ। सो दीन दयाल लख चुरासी अन्दर रिहा वस, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। प्रभ दा खेल कदी ना होवे बस, बसता बन्नू चुप्प वट्ट ना वक्त लँघाईआ । सदा सदा जन भगतां आपणा मार्ग देवे दस्स, सोझी आपणे नाम समझाईआ। तीर निराला अणयाला मारे कस, इक्की निक्की धार वहाईआ। नाता तोड़ तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मति बुध लेख चुकाईआ। नौ दवारे दुरमति मैल कट, दसवें घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। समरथ पुरख ना होवे बंद, बंदगी जुग जुग आप जणाइंदा। नित नवित्त देवणहारा इक अनन्द, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाइंदा। जिस दा ढोला सोहला अगम्मी छन्द, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। जिस दा प्रकाश रवि ससि सूर्या चन्द, किरन किरन किरन रुशनाइंदा। जो वसे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा रूप वखाइंदा। सो साहिब सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत जुग जुग झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे नाल रलाइंदा। गुण गाओ सदा गहर गम्भीर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस पंज तत काया दित्ता शरीर, तन माटी दए वड्याईआ। जो अमृत आत्म बख्शे नीर, सीर इक्को जाम प्याईआ। जिस हथ्थ तेरी तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, मंज़ल हक़ नूर ख़ुदाईआ। परवरदिगार सांझा पीर, लाशरीक इक अख्वाईआ । दाता दानी दस्तगीर, दस्त बदस्त लहिणा रिहा मुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल जन भगतां देवे धीर, धीरज आपणा नाम रखाईआ। जिस गुरू ग्रन्थ लोकमात बंधाई बीड़, सो बेड़ा सब दा रिहा चलाईआ। ठीक अन्दर होवे ठीक, घर ठोकर ठाकर नाम लगाईआ। अन्दरों अन्धेरा चुक्के तारीक, चन्द चांदना

इक रुशनाईआ। सतिगुर मार्ग सदा बारीक, बिन गुर किरपा चढ़न कोए ना पाईआ। जिस दवारे सोहण ऊँच नीच, नीच ऊँच इक्को मिले वड्याईआ। तिस मन्दिर गुरमुख वेखे लँघ दहिलीज़, दहि दिशा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल नज़री आए इक्को ठीक, जिस वेख्या ठीक ठीक ठीक कहे लोकाईआ। ठीक कहे ते होए ठाकर, ठग्ग चोर नज़र कोए ना आईआ। भाग लगाए काया गागर, घर घर विच वेख वखाईआ। गुरमुख गुरसिख तेरे कर्म करे उजागर, निर्मल आपणा नीर जाम प्याईआ। एथे ओथे दो जहान देवे आदर, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ठीक ठीक तरह यकतरफा हो के भगतां दए समझाईआ।

✱ ४ माघ २०२० बिक्रमी बीबी गुरो दे गृह पिण्ड चम्यारी ज़िला गुरदास पुर ✱

आदि जुगादि नित नवित्त, श्री भगवान फेरा पाइंदा। जन भगतां कर के साचा हित्त, घर काया वेख वखाइंदा। पूरब लहिणा दे के हिस्स, हिस्सा सब दा वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, चौंह सतरां विच चार जुग दा पिछला लेखा पूर कराइंदा। सतिगुर लेख चार सतर, देवे माण वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां पूरी सध्धर, साहिब सतिगुर लेखे पाईआ। अग्गे मार्ग करे पध्धर, राह विच ना कोए अटकाईआ। नाता तोड़ काया कन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए वसाईआ। साचे मन्दिर होए वसेरा, घर वज्जे नाम वधाईआ। आवण जावण चुक्कया गेड़ा, जन्म मरन रोग गंवाईआ। भागां भरया वसया खेड़ा, हरि भगवन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के बद्धा बेड़ा, फड़ बाहों पार लँघाईआ। बेड़ा बन्नृ देवे तोर, नईया आपणा नाम चलाईआ। शब्द सरूपी फड़ के डोर, तन्द आपणे नाल बंधाईआ। पार उतार कलयुग घोर, जगत अमावस दूर कराईआ। लहिणा चुक्के मोर तोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल आपणे नाल कराईआ। मिल्या मेल हरि गोबिन्द, घर वज्जे नाम वधाईआ। जन्म जन्म दी मिटी चिन्द, तृष्ना दुःख गंवाईआ। अमृत धार दे सागर सिन्ध, सांतक सति सति वरताईआ। लेखा चुक्के जीउ पिण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच मिलाईआ। मिल्या मेल होया मिलाप, मिलणी जगदीश कराइंदा। जन्म जन्म दा मिटया ताप, त्रैगुण अग्न ना कोए तपाइंदा। लेखे लग्गा पूजा पाठ, सिमरन आपणी झोली पाइंदा। निरगुण हो के देवे साथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे संग निभाइंदा। संग निभाए बणाए

संगी, साहिब सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख कंड ना होवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरिजन आदि जुगादि परम पुरख दे सच भुयंगी, बिहंगम आपणी चाल वखाईआ। जुग जन्म दी मंग मंगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के पूर कराईआ।

* ४ माघ २०२० बिक्रमी प्रीतम कौर दे गृह पिण्ड जटां ज़िला गुरदास पुर *

चार जुग दर खलो, घर साचे सीस निवाईआ। नेत्र नैणां रहे रो, उच्ची कूक कूक दुहाईआ। जुग चौकड़ी टुट्टा मोह, मुहब्बत रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रकाश दिसे ना लो, जगत अन्धेरा नज़री आईआ। तेरा नाम सुणावे ना कोई सो, हँ ब्रह्म ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत आपणा आप बैठे खो, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। खाणी बाणी देवे ना कोई ढोआ ढो, सगला संग ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट दिसे धरोह, दरोही तेरे नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चारे जुग होए इकट्ठे प्रभ अग्गे देण दुहाईआ। इक्को वार चरणी ढट्ठे, बलहीण रहे कुरलाईआ। जुग चौकड़ी फिरदे रहे नट्ठे, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साडे अन्दर वसे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान लिख लिख दस्से, अञ्जील कुरानां नाल रलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ टिकाए मथ्थे, अठसठ तीर्थ धार वहाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही गाउँदे गए जस्से, जस तेरा नाम सालाहीआ। तेरे नाल मिल के श्री भगवान गुरमुख विरला हस्से, भगत भगवान खुशी मनाईआ। लख चुरासी जीव जंत माणस देही मिल गई घट्टे, कल कीमत नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम रंग रंग कोई ना रत्ते, कूड़ी क्रिया घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। चारे जुग चरणी लग्ग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान सूरे सरबग्ग, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्त नव खण्ड लग्गी अग्ग, सत दीप ना कोए बुझाईआ। सृष्ट सबाई रही दग, सांतक सति ना कोए कराईआ। मक्के काअबे दिसे कोई ना हज्ज, हज़रत रूप ना कोए वटाईआ। ख़ाली होए शिवदुआले मट्ठ, मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे तीर्थ अठ सठ, साची धार नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सगला साथ गए छड्ड, अन्तिम संग ना कोए निभाईआ। बिन हरि नामे कलयुग जीवां ख़ाली होए हड्ड, रती रत्त रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे सरन मिले सरनाईआ। चारे जुग मारन

नाअरा, कूक इक्को वार सुणाईआ। कलयुग अन्त वेख अन्ध अँध्यारा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गा मात अखाड़ा, माया ममता नाच नचाईआ। साचा मिले ना कोई मीत मुरारा, मित्र नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त करन हाहाकारा, हउका लै लै रोवे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब दा लेखा दे मुकाईआ। चारे जुग करन निमस्कार, निउँ निउँ मस्तक टिक्का सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अपरम्पर समझ कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, दीन दयाल तेरा संग ना कोए रखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कूड़ नगारा रिहा वजाईआ। जुग चौकड़ी तेरी करदे रहे भाल, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे बणदे रहे दलाल, लोकमात वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दे समझाईआ। चारे जुग कहिण निरँकार, प्रभू तेरे अग्गे अरज़ोईआ। साडे विच आए तेई अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद साचा नाअरा बोल जैकार, कलमा कायनात गए पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द इक्को धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। भगत अठारां खेल अपार, कबीर जुलाहा रिहा सुणाईआ। चारों कुण्ट तेरा डंका वज्जे अगम्म अपार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे वखाईआ। चार जुग तेरा वज्जया डंका, हरि जू तेरे नाम वड्याईआ। राग सुणाया राउ रंकां, ऊँचां नीचां भेव मिटाईआ। इक सुहाया साचा बंका, बंक दुआर इक्को नज़री आईआ। गढ़ तोड़या हउमे हंगता, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडता, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। दर दरवेश तेरे दवारे मंगता, जुग युगती नाल झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, घर साचे होणा सहाईआ। चार जुग करन दलील, घर आपणे मता पकाईआ। कलयुग वेला अन्त अख़ीर, साचा संग ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे बेनज़ीर, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। जिस दे हथ्थ साडी तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। चिट्टे उते काली खिच्चे लकीर, कलम छाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। साहिब सुल्तान वड वड्डा पीर, पीरन पीरां आप अख्वाईआ। नित नवित्त बणदा रिहा दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीड़, कीट कीटां विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। चारे जुग रहे बोल, नाअरा इक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी आए तेरे कोल, पूरब पन्ध मुकाईआ। साचे कंडे तोलणा तोल, तराज़ू इक्को नाम उठाईआ। दर दरवाजा देणा खोल्ह, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। चार जुग रसना कहिण, इक्को इक इक जणाईआ। प्रभ तेरा दर्शन

पेख्या नैण, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाता छुटया जुग चौकड़ी साक सज्जण सैण, संगी रहिण कोए ना पाईआ। दर तेरे वस्त इक्को आए लैण, लहिणा देणा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। चारे जुग आओ नेड़े, हरि करता आप जणाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीन मज़्हब जो पाए झेड़े, झगड़ा सर्ब चुकाइंदा। आत्म परमात्म वसे इक्को खेड़े, गृह मन्दिर इक्को इक सुहाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा आप नबेड़े, पूरब पिछला भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अलाइंदा। चारे जुग आओ अग्गे, हरि अगला हाल सुणाईआ। सतिजुग साची धारा लग्गे, सति पुरख निरँजण दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ा पिच्छे भज्जे, मुख आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह इक्को इक वखाईआ। चारे जुग करन सलाह, मता इक्को वार पकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गाउँदे गए नाँ, नांउँ निरँकारा इक सुणाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल गया आ, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी साडा लहिणा दए मुका, हिसाब बेबाक रिहा वखाईआ। फड़ के बाहों राहे देवे पा, रहिबर इक्को नूर खुदाईआ। साचा कलमा दए पढ़ा, हरफ़ हरूफ़ इक समझाईआ। बिस्मिल रूप जाए समा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लहिणा दए चुकाईआ। चार जुग चुकाए लहिणा, कलयुग अन्तिम दया कमाईआ। नेत्र लोचण आप वखाए नैणां, पर्दा उहला रिहा उठाईआ। सब दी झोली पाए देणा, देवणहार इक्को इक आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब नूं मन्नणा पए कहिणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। श्री भगवान पुरख अकाल परवरदिगार इक्को रहिणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म देवे जुग चार, चौकड़ी आपणी धार चलाईआ। सतिजुग नेत्र नैण खोल्ह उग्घाड़, अक्ख प्रतख रिहा वखाईआ। त्रेते आपणी सुरती रख नाल, सोई सवाणी आप जगाईआ। द्वापर उठ के वेख हाल, हालत सब दी रिहा बदलाईआ। कलयुग चारों कुण्ट कर ख्याल, ख़ालक खलक रिहा समझाईआ। अंतम दिसे ना कोए दलाल, विचोला रूप ना कोए प्रगटाईआ। काया माटी दिसे खाल, पंज तत रिहा कुरलाईआ। दीपक जोत जगे ना कोई बेमिसाल, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। कलयुग कहे मैं कलकाती, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। लख चुरासी बण के साकी, कूड़ा जाम दित्ता प्याईआ। ख़ाकी तन रलाया विच ख़ाक ख़ाकी, ख़ालस रहिण कोए ना पाईआ। साध सन्त रहिण दित्ता ना कोई आकी, अक्ल सब दी दिती गंवाईआ। बंद किवाड़ा खोल्ह सके कोई

ना ताकी, बज़र कपाटी कुण्डा कोई ना लाहीआ। किसे गृह मन्दिर घर विच घर नज़र ना आवे दीवा बाती, कमलापाती दरस कोए ना पाईआ। मंज़ल साची चढ़े कोई ना घाटी, लख चुरासी बैठी ढेरीआं ढाहीआ। चारों कुण्ट वेख मेरी अन्धेरी राती, कलयुग खुशीआं नाल सुणाईआ। श्री भगवान मैं तेरी मन्नी इक्को आखी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देणी माण वड्याईआ। कलयुग कहे सुण द्वापर यार, साची सच दयां जणाईआ। तूं वेख मेरी अगम्मी कार, करनी करते सेवा लाईआ। सृष्ट सबाई कीती नार विभचार, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। घर घर दिसे धूंआँधार, स्वच्छ सरूप ना कोए वटाईआ। नेत्र रोवण सूर्या चन्न ज़ारो ज़ार, रवि ससि ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। कलयुग कहे त्रेते मीत, मित्र प्यारे दयां जणाईआ। नेत्र खोल्ह वेख मेरी अचरज रीत, लोकमात आप रचाईआ । कलयुग जीव कीते पलीत, पाक रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा छिड़या ऊँच नीच, ज़ात पात करे लड़ाईआ। शाह सुल्तानां मंगावां भीख, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। हरि का नाम किसे वसण ना देवां चीत, घर घर ठगौरी इक कराईआ। कूड़ी क्रिया सब दी रसन चढ़ाया गीत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सतिगुर भुल्ली मात प्रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, मेरी सेवा इक लगाईआ। कलयुग कहे सुण सतिजुग संगी, सच कहाणी दयां जणाईआ। सृष्ट सबाई वेख कीती नंगी, सच ओढण नज़र कोए ना आईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन पावण भंडी, वरभण्ड धीर ना कोए धराईआ। आत्म सब दी होई रंडी, हरि जू कन्त ना कोए हंढुाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात औझड़ पाई डण्डी, पांधी पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। सृष्ट सबाई अन्तर वासना कीती गंदी, अमृत जाम सच प्याला मुख ना कोए लगाईआ। दोए लोचण जगत सवाणी होई अन्धी, घर नूर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। सतिजुग कहे सुण कलयुग सज्जण, मैं सच सच्च दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले श्री भगवान लभ्भण, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। काया मन्दिर अन्दर उठ उठ भज्जण, दहि दिशा वेख वखाईआ। मैं ओन्हां आया सद्दण, जिन्हां सद्दा इक समझाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर रहिण मग्न, माया ममता मोह तजाईआ। आत्म परमात्म सोहँ ढोला गावण भजन, बंदगी इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्हां गुरमुखां कराए साचा मजन, सर सरोवर इक नुहाईआ। त्रेता कहे सुण कलयुग प्रेमी, प्रीती इक्को इक जणाईआ। मैं वेखण आया गुरमुख नेमी, जो पुरख अकाल नेम रहे रखाईआ। एथे ओथे बणे साक सज्जण सैणी, सगला संग निभाईआ। तिन्हां ऊँचां नीचां मिल के बणी इक्को रहिणी,

दीन मज़्ब ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्हां देवे माण वड्याईआ। द्वापर कहे सुण कलयुग यार, यारी यारां नाल निभाईआ। मैं वेखां सच विहार, जन भगत मिले वड्याईआ। भगवन करे खेल अपार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ । जुग जन्म दे विछड़े मेले आण, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा नाम जणाईआ। दर दवारे कर परवान, घर साचे लए बहाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महाकाल नेड़ ना आईआ। मैं ओस दा दयां अहिवाल, जो आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण साचा खेल वखाईआ। कलयुग कहे मैं सुणया सच्च, सतिजुग त्रेता द्वापर जो रहे दृढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी देवण आया हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। जन भगतां वल रिहा तक्क, निज नेत्र लोचण नैण उठाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, अन्तर आपणा भेव चुकाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। मैं उस दी चरणीं जावां ढ्हु, कलयुग कूक कूक जणाईआ। मेरी बदल देवे प्रभ मत्त, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रहे आख, कलयुग सच सच्च दृढ़ाईआ। असीं ओस साहिब दी शाख़, जो शनाख़त विच कदे ना आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों सुणदे रहे ओस दी बात, जो बातन हाल रहे जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाउँदे रहे ओस दी गाथ, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त करदे रहे पाठ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। सो साहिब पुरख अकाल दीन दयाल देवणहारा दात, दाता दानी इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। कलयुग कहे मेरी आसा पूरे, मैं इक ध्यान लगाईआ। प्रगट होवे हाज़र हज़ूरे, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। नाता तोड़े माण ग़रूरे, ग़ुरबत रहिण कोए ना पाईआ। मस्तक लाए चरण धूढ़े, टिक्का इक्को नाम लगाईआ। रंग चाढ़े धुर दे गूढ़े, दूजी वार उतर ना जाईआ। मूर्ख मुग्ध समझाए मूढ़े, साची करे नाम पढ़ाईआ। नाद वजावे इक्को तूरे, तुरिया बैठे मुख शरमाईआ। अमृत देवे सति सरूरे, जाम प्याला मदि प्याईआ । कर प्रकाश जोती नूरे, अज्ञान अन्धेर दए चुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरा लेखा चुकाए ज़रूरे, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्को देवे सच्चा वर, साचा लेखा दए मुकाईआ। कलयुग कहे मेरा लेखा मुक्के, मुक्के वस्त पराईआ। जन भगतां प्रभ जू गोदी चुक्के, जो बैठे ध्यान लगाईआ। मनमुख मूर्ख टंगे पुट्ठे, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। एथे ओथे ओन्हां कोई ना पुछे, जो बैठे प्रभू भुलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन

हरिभगत सच प्रीती अन्दर रुझे, रुची आपणी आपणे नाल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढे गुज्झे, गोझ भेव आप खुल्हाईआ। भगत दीपक कदे ना बुझे, शमा रहे ना जगत लोकाईआ। लेखा चुक्के एका दूजे, दूआ एक एक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पांधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग कहे मेरा मुके पन्ध, अन्तिम लेखा पूर कराईआ। मैं उस दा ढोला गावां छन्द, जो शहिनशाह मेरा लेखा लेखे पाईआ। दोए जोड़ कर बन्दना मंगां मंग, अर्ज अरज़ोई इक्को इक सुणाईआ। पुरख अकाल सतिजुग साचा चाढ़ चन्द, दीन दयाल कर रुशनाईआ। जन भगतां प्रीती आपणे नाल गंढ, साची रीती इक अख्वाईआ। दोहां मिल के बणे सोहँ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग मेटे भेख पखण्ड, कूडी क्रिया डेरा ढाहीआ।

* ५ माघ २०२० बिक्रमी समाधां पर सन्तां नाल बचन होए रमदास ज़िला गुरदास पुर *

२६० बिन सतिगुर किरपा ना होए विचार, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसार, आदि जुगादि जुग चौकड़ी ढोला राग अलाईआ। कागद कलम शाही उच्ची कूक कूक करे पुकार, जीवां जंतां जगत समझाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कोई ना पावे सार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जिन्हां मिले साहिब स्वामी सिरजणहार, सति सतिवादी दया कमाईआ। तिन्हां समझावे आप आपणी किरपा धार, बिन अक्खरों निरअक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विचार आपणे हथ्थ रखाईआ। सच विचार ना आवे जग्ग, चारे खाणी रही कुरलाईआ। जगत दवारे लग्गी अग्ग, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। दरस ना पावे कोई उपर शाह रग, घर घर विच पर्दा ना मात उठाईआ। किरपा करे जिन्हां उपर पुरख समरथ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बोध अगाध अन्तर आत्म इक्को देवे मत्त, शब्द अनाद धुन शनवाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसन्त भगत भगवान मिल के पैण हस्स, घर खुशीआं मंगल गाईआ। जगत विचार सतिगुर दुआर दवारे हो जाए बस्स, बिन हरि किरपा कम्म किसे ना आईआ। सो विचार जगत सन्त देणी दस्स, जिस विच्चों मिले बेपरवाहीआ। तीर निराला वज्जे कस, दूई द्वैती बजर कपाटी चीर चिराईआ। लेखा चुक्के तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध डेरा देवे ढाहीआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। जिस विच्चों उपजे ब्रह्म मत्त, ब्रह्म विद्या इक दरसाईआ।

सो विचार झोली देणी घत्त, आपणे अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सच विचार शब्द धार सन्त सतिगुर हथ्थ रखाईआ। सच विचार दस्सो एक, एकँकार नज़री आईआ। बुद्धि होए जगत विवेक, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। साहिब स्वामी लए पेख, घर ठाकर बेपरवाहीआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र दर्शन पाईआ। आत्म सेजा मिल के लईए खेड, प्रेम प्रीती इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच विचार इक्को मंग मंगाईआ। सच विचार दस्सो हाल, हालत आपणी नाल रलाईआ। जिस विचार विच्चों लेखा चुक्के काल महाकाल, राए धर्म ना दए सजाईआ। सच प्रीती लग्गे सतिगुर नाल, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। गुरमुख गुरसिख बणे साचा लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को पुच्छे सच विचार, जिस अन्दर मिले निर्मल धार, रूप रंग रेख ते वसे बाहर, ज़ाहर आपणा नूर कराईआ। विचार दस्सो काया मन्दिर, घर घर विच मिले वड्याईआ। मन वासना बज्झे बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। होए प्रकाश अन्धेरे कन्दर, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सोभावन्त सुहाए मन्दिर, मण्डप इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विचार विच्चों विचार रिहा खोज, खोजत आपणा राह चलाईआ। सच विचार दस्सो उह, जो सन्त सतिगुर सच्ची भाईआ। नाता तुटे जगत मोह, ममता कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जाए छोह, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल के इक्को जाए हो, एका दूजा नज़र कोए ना आईआ। कर प्रकाश निरगुण जोत करे लो, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धुन नाद शब्द राग सुणीए इक्को सो, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक घर, जिस घर विचार बैठी डेरा लाईआ। विचार वसे किस घर, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। कवण करनी रही कर, कवण कार कमाईआ। कवण अक्खर रही पढ़, कवण राग सुणाईआ। कवण पौड़ी रही चढ़, कवण मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जिस विचार विच्चों चुके सर्ब डर, भय भउ रहिण कोए ना पाईआ। सो विचार झोली देणी भर, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जिस विचार विच्चों मिले हरि, हरि हरि का रूप नज़री आईआ। सो विचार आदि जुगादि जुगा जुगन्त खड़ी सदा सन्तां दर, बिन सन्तां नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उह विचार लए फड़, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। शब्द दस्सो उह केहड़ा, अच्छी तरां जणाईआ। जिस ने दो जहान वसाया खेड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे नबेड़ा, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा हुक्म मनाईआ। मन्दिर

मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर लाए डेरा, अठसठ तीर्थ घट घट रिहा समाईआ । दूर दुराडा नेरन नेरा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दहि दिशा खेल वखाईआ। बिन सन्त सतिगुर नित नवित्त सदा हनेरा, दीपक जोत करे ना कोए रुशनाईआ। हरि का शब्द हरिजन कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक दर, जिस घर शब्द शब्दी बैठा डेरा लाईआ। किरपा अन्दर पुरख अकाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी दीन दयाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म वरताईआ। भगत भगवान वखाए सच सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर इक वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर वजाए अगम्मी ताल, ताल तलवाड़ा नज़र किसे ना आईआ। अमृत आत्म निझर झिरना इक उछाल, सर सरोवर दए वखाईआ। दीप अगम्मी जोती बाल, जोती जोत करे रुशनाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल नाल, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिन्हां उपर होए आप कृपाल, कृपानिध आपणा रंग रंगाईआ। सो वेखण बिन नेत्र पुरख अकाल, अकल कलधारी इक्को नज़री आईआ। सन्तां अग्गे हरि सति सवाल, सति सतिवादी इक रखाईआ। जिस अकाल दा गोबिन्द लाल, शब्दी सुत नाउँ रखाईआ। सो दस्सो सच्ची धर्मसाल, जिस घर बैठा डेरा लाईआ । जिस दा जलवा नूर बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। परवरदिगार सांझा यार, धुरदरगाही इक अख्वाईआ। तिस दी किरपा खेल जगत संसार, वड संसारी आपणी रचन रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, दर बैठे सीस झुकाईआ । सो सन्त भगवन्त किस वसे मकान, महिबूब आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा अन्दर लख चुरासी सुहाए मन्दिर, गृह गृह घर घर दर दर आपणा डेरा लाईआ। बेअन्त प्रभ दा गफ्फा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जिस गुरमुख अन्दरे अन्दर मार्ग दस्सा, सो गुरसिख मिल मिल खुशी मनाइंदा। जगत विकार जीव जंत फसा, बाहों फड़ बाहर ना कोए कढाइंदा। रसना जिह्वा नौ दुआर वेखण रसा, आत्म रस निझर धार ना कोए वहाइंदा । सुण सुणा के कहिण अच्छा, अच्छी तरह भेव कोए ना पाइंदा। गल्ल विच फाँसी दिसे रस्सा, राए धर्म सर्ब लटकाइंदा। बिन सतिगुर किरपा कोई ना बचा, बचपन सब दा मूल चुकाइंदा। जगत वासना जीव जहान नच्चा, नौ दर कूड़ी क्रिया खोज खुजाइंदा। जिन्हां मिल्या पुरख समरथा, सो गुरमुख हरिजन मिल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वेख वखाइंदा। बाबे बुढे दुआरे आए बुढ्ढा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। उस दा भेव कवण खुल्हाए गुज्झा, अनभव आपणी धार चलाईआ। जगत माया जिज्ञासू रुज्झा, रुची जगत नाल प्रनाईआ। अन्तर आत्म कोई ना सुच्चा, सुच्च संजम बैठी डेरा ढाहीआ। मन

विकारी नटुआ लुच्चा, भज्जे वाहो दाहीआ। काया अन्दर जगत विकारां भरया गुच्छा, गद्दड़ी फोल ना कोए वखाईआ। कूड़ी वासना होया भुक्खा, तृष्ना मिटे ना जगत लोकाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर पुरख अकाल इक्को तुट्ठा, सद देवे माण वड्याईआ। बुड्ढे नालों बुड्ढा रुट्ठा, रुठड़यां पुरख अकाल आप मनाईआ। सच निशान्यौं सतिगुर कदे ना उका, तीर अणयाला बाण चलाईआ। उन्हां दा पैंडा पिच्छे अग्गे मुका, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बुड्ढा आपणे लेखे पाईआ। बुड्ढे दा जाणे कवण बुढेपा, बिरध बाल जवान समझ किसे ना आईआ। वेखणहारा इक्को नेता, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जो निरगुण धार गुरमुख चेता, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। मंगी मंग खा के ठेडा, मस्तक ख़ाक नाल मिलाईआ। पुरख अकाल मेरा रखणा चेता, चेतन हो के रिहा सुणाईआ। तेरी सिक्दारी दा मेरे हथ्थ ठेका, मस्तक टिक्का गुर गुर धार लगाईआ। तेरा रूप नेत्र ना पेखा, तेरे नाम सुणी शनवाईआ। साहिब ठाकर रखणा चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। मैं राह तक्कां तेरा विच खेतां, जंगल जूह डेरा लाईआ। तूं मेरी माणी आण के सेजा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। तेरा नज़री आवे नूर तेजा, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा पाउणा आपणे घर, तेरे घर मेरी वड्याईआ। तेरे घर मैं होवां वड्डा, वड्डे हथ्थ तेरे वड्याईआ। जगत जहान कहे बुड्ढा नड्ढा, होछी मति बणाईआ। लख चुरासी विच्चों जिस ने कढ्ढा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। उस दवारे जावां भज्जा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जिस पंज तत काया चोली रखी लज्जा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सो साहिब सूरा सरबग्गा, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। बीस बीसा देणा सद्दा, सदके वारी घोली घोल घुंमाईआ। पंचम पंच परपंच जिस आपणे हुक्मे बद्धा, दो जहान हुक्म वरताईआ। मैं उस दी चरणी ढठ्ठा, जो डिगयां लए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस पहलों कीता कट्ठा, चार जुग दे विछड़े दर मिलाईआ। फेर मेरा बुड़ेपा वेखे आ के अक्खां, बिन अक्खां नैण खुल्हाईआ। की उस नूं हाल दस्सां, जिस मेरी बणत बणाईआ। ना रोवां ना हस्सां, खुशीआं मंगल इक्को गाईआ। नानक गोबिन्द नाल प्रभू तेरे चरण दवारे वसां, तेरा विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा धुर दा घर, जिस घर सूरज चन्द नज़र कोए ना आईआ। बुड्ढा कहे बुड्ढे दा बापू, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। नानक गोबिन्द धार ना कोए पछातू, वेख सके ना कोए लोकाईआ। उत्तम श्रेष्ट जिन आत्म परमात्म बणाई जातू, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। सो साहिब सतिगुर इक्को एक एकँकार बणे साथू, सगला संग निभाईआ। उस पुरख परमात्म मिल के मैं एहो आखूं, आखर आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के दो जहानां फिरे डाकू, नाम डाका दिन दिहाढ़े घर घर रिहा लाईआ। किरपा अन्दर आप बुलाउँदा ए। जिस उपर मेहर नज़र टिकाउँदा ए। मेर तेर सर्ब चुकाउँदा ए। सोई सुरती शब्दी छेड़ आप उठाउँदा ए। पन्ध मुका के दूर दुराडा नेरन नेर, घर घर विच नज़री आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणे रंग रंगाउँदा ए। जिस आपणे रंग रंगाउँदा ए। तिस साचा संग निभाउँदा ए। अन्दर वड़ के कुण्डा लाहुन्दा ए। दस्म दवारी चढ़ के सोभा पाउँदा ए। शब्द अगम्मी पढ़ के राग अलाउँदा ए। जोती दीपक बल के अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। सच संदेसा इक्को घल्ल के, हरिजू आपणा हाल जणाउँदा ए। जन भगतां अन्दर रल के, साचा खेल आप वखाउँदा ए। सच सिँघासण इक्को मल के, सतिगुर पूरा सोभा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणा घर वखाउँदा ए। जिस आपणा घर वखाउँदा ए। तिस बंद दुआर खुलाउँदा ए। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए भवाउँदा ए। कर प्रकाश नाड़ी नाड़, घर नूरी जोत रुशनाउँदा ए। आत्म परमात्म दे अधार, अन्तर आपणा मेल मिलाउँदा ए। अट्ठे पहर शब्द धुनकार, अनहद नादी राग सुणाउँदा ए। साची सखी कर प्यार, गोपी काहन रूप वटाउँदा ए। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन उधरे पार, जिस आपणा मेल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, सो मन्दिर बहि बहि खुशी गीत सुहागी गाउँदा ए। जिस आपणा घर वखाउँदा ए। लख चुरासी नाता तोड़ तुड़ाउँदा ए। जम की फाँसी डेरा ढाहुन्दा ए। मण्डल रासी चरणां हेठ दबाउँदा ए। जोत प्रकाशी इक्को नूर वखाउँदा ए। पूरब जन्म दी पूरी करके आसी, भगत भगवान मेल मिलाउँदा ए। एथे ओथे दो जहान दी दूर करे उदासी, इक्को अमृत सच्चा नाम जाम पिलाउँदा ए। सो गुरमुख उतरे पार घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाउँदा ए। चरण कँवल उपर धवल बंधाए आपणा नाती, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाउँदा ए। पुरख अकाल जिन्हां दा बणया सच्चा साथी, सचखण्ड दवारे फड़ वसाउँदा ए। बाबे बुढ्ढे उस दी मन्नी आखी, जो आखरकार अन्त सब नूं आपणी जोत मिलाउँदा ए। पिच्छों जीव जंत जहान गावे साखी, अक्खर अक्षरां नाल मेल मिलाउँदा ए। जो अन्तिम समें रह गई बाकी, सो बाकी नवीस लेखा लेखे लाउँदा ए। पुरख अकाल दी अगम्मी झाकी, जगत नेत्र वेक्खयां नज़र किसे ना आउँदा ए। जे कोई कहे बंदा ख़ाकी, ख़ाक विच सर्ब मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाउँदा ए।

*** ५ माघ २०२० बिक्रमी बीबी जीतो दे गृह पिण्ड सरजा चक्क ज़िला गुरदास पुर ***

२६५

१६

किरपा करे श्री भगवन्त, जन भगत दए माण वड्याईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। बोध अगाधा नाम मणीआ मंत, अन्तर आत्म इक समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। लहिणा देणा चुका बहिश्त जन्नत, स्वर्ग चरणां हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। किरपा करे श्री भगवान, जन भगतां दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। भाग लगा काया मन्दिर सच मकान, गुरुदुआर इक्को इक वखाइंदा। शब्दी राग सुणाए सच्ची धुन्कान, आत्मक रागी राग अल्हाइंदा। दीआ बाती कमलापाती इक्को बाल, जोत निरँजण डगमगाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी नज़री आए नौजवान, नर हरि आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। श्री भगवान भगतन मीता, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि चलाए आपणी रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। लहिणा देणा चुकाए मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआल मसीता, गृह इक्को इक वखाईआ। धुर दरबार सुहाए ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। मेल मिलाए ऊँचां नीचां, राउ रंकां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए उठाईआ। श्री भगवान कृपानिध ठाकर स्वामी, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। भगत वछल सदा सद अन्तरजामी, घट घट अन्तर फोल फुलाइंदा। निष्अक्खर निरवैर हो सुणाए बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए पढ़ाइंदा। सच दुआर वखाए इक्को धुर निशानी, निर्मल जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए साचा घर, जिस गृह आपणा डेरा लाइंदा। भगत सुहेला सतिगुर संग, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। जगत दवारे आपे लँघ, घर मेला सहिज सुभाईआ। शब्दी नाद वजाए मृदंग, अनहद रागी नाद सुणाईआ। सेज सुहञ्जणी आप सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, सूरज चन्द पन्ध मुकाईआ। दरस दे सूरा सरबँग, साहिब सुल्तान आपणा मेल मिलाईआ। अनन्द विच्चों प्रगटाए अनन्द, अनन्द आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगत सहायक एकँकार, अकल कलधारी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, जुग चौकड़ी आपणा खेल रचाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए उभार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। साची बाणी बोल जैकार, चारे बाणी भेव मिटाइंदा। लिखण पढ़न तों वसे बाहर, कागद कलम छाही

२६५

१६

अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा । हरिजन रंग रंगाए अगम्म, हरि अगम्मड़ी कार कमाईआ। वेखणहारा काया माटी चम्म, तन ठांडा फोल फुलाईआ। लहिणा देणा चुकाए पवण स्वासी दम, स्वास स्वासां लेखे पाईआ। निरगुण निरवैर निराकार जाणे आपणा कम्म, नेहकर्मी आपणी करनी आप कमाईआ। जन भगत मिटाए हरख सोग चिन्ता ग़म, सांतक सति इक्को इक वरताईआ। माणस जन्म लोकमात बेड़ा बन्न्, सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को राह चलाईआ। जन भगत चलाए इक्को राह, दूजी ओट ना कोए वखाइंदा। शब्द सरूपी बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा । सच संदेसा दए सुणा, धुर दा रागी राग अल्लाइंदा। अन्तर आत्म मेला सहिज सुभा, परम पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत कर रुशना, दीआ बाती इक्को इक चमकाइंदा। महल अटल सोभा पा, घर घर विच डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जन भगतां वेख वखाइंदा । जुग चौकड़ी जन भगतां वेखे आप, प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। बिन अक्खरां देवे जाप, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द करे पढ़ाईआ। मेट मिटाए त्रैगुण माया तीनो ताप, पंच विकार ना कोए हल्काईआ। जन्म जन्म दा पूरब मेटे पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। आत्म परमात्म बणाए सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, मन्दिर इक्को इक वखाईआ । नज़री आए रसूल पाक, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को घर वसाईआ। जन भगत वसाए एको घर, गृह मन्दिर आप जणाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह दर, दर दरवाजा दए खुल्हाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक नज़र कोए ना आईआ। दरस वखाए अग्गे खड़्, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेल मिले हरि प्रभ, वज्जे नाम वधाईआ। झूठा झगड़ा मुक्के सब, लेखा मुक्के मात लोकाईआ। पंच विकारा देवे दब्ब, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नौ दुआर मुक्के हद्द, घर दसवें खुशी मनाईआ। दर्शन करे रज्ज रज्ज, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। नज़री आए इक्को काअबा सच दवारे जिस दा हज्ज, हज़रत नूरी नूर इलाहीआ। मिले मेल पुरख समरथ, महिमा अकथ इक सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया ठाकर, घर वज्जी नाम वधाईआ। जगत संसार तरया सागर, डूंघी भँवर ना कोए रुढ़ाईआ। भाग लग्गा साढे तिन्न हथ्थ काया गागर, निर्मल नीर सीर इक्को नज़री आईआ। निर्मल कर्म होया उजागर, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, मेरा लहिणा दित्ता मुकाईआ। भगत कहे प्रभ पाया एक, एकँकार नज़री आईआ। जिस मिलयां चुक्की दूजी टेक, इष्ट दृष्ट इक्को इक खुल्हाईआ। मेहर नज़र कर कीती बुध बबेक, बबेकी आपणे नाल मिलाईआ। अन्दर वड़ के खोल्लया भेत, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। मौली रुत्त बसन्ती चेत, पत डाली आप महकाईआ। आत्म परमात्म कीता हेत, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। सच सिँघासण बहि के ल्या खेड, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जलवा दित्ता नूरी तेज, तालब तुलबा कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान होए सहाईआ। भगत कहे मेरा ठाकर इक, जिस विच वड्डी वड्याईआ। दो जहान चार कुण्ट दहि दिशा रिहा दिस, हर घट बैठा डेरा लाईआ। कर किरपा करवट बदल बदली आपणी पिट्ठ, सनमुख आपणा दरस दिखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर कीता हित्त, हितकारी हो के ल्या मिलाईआ। मन वासना ठगौरी पाए ना कोए चित, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। बिन तन्द सतार पाई खिच, डोरी नज़र किसे ना आईआ। मैं दर्शन करां नित्त, निज नेत्र पेख पेख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मिल्या सच्चा माहीआ। भगत कहे मेरा सतिगुर स्वामी, साहिब इक्को इक नज़री आइंदा। आदि जुगादि सदा नेहकामी, नेहकर्मी कर्म कमाइंदा। जिस दी रचना चारे खाणी, चारे बाणी बोल अल्हाइंदा। जिस दा हुक्म गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण दो जहानी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कार कमाइंदा। एथे ओथे दो जहान शाह पातशाह सच्चा सुल्तानी, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जिस दी अगम्मी बाणी, गुर गुर आपणा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां वेख वखाइंदा। भगत कहे प्रभ पाया सच्च, घर वज्जी सच वधाईआ। भाग लग्गा काया माटी कच्च, कंचन रूप ल्या वटाईआ। मन मनुआ ना दौड़े नच्च, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सतिगुर किरपा होया वस, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। निमाणा हो के गया ढट्ठ, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। नीवां हो के रिहा दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां श्री भगवान होया वस, ओथे मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं सेज विछा के सुत्ता सत्थर सथ्थ, ख़ाकी ख़ाक उते डेरा लाईआ। मेरा लहिणा चुक्कया तत अट्ठ, ततव तत ना कोए समझाईआ। साहिब स्वामी दिती इक्को मति, ब्रह्म मति अन्दरे अन्दर दृढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबली रत्त, हड्डीआं बालण ना कोए जलाईआ। जिध्धर वेखां प्रभ नजर आए प्रतख, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी दिती इक्को अक्ख, निज नेत्र दित्ता खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक्को बेपरवाहीआ। भगत कहे मेरा भगवन्त, भगवन इक्को नज़री आईआ। मैं नार सुहागण उह मेरा

कन्त, सेज सुहञ्जणी रिहा सुहाईआ। बोध अगाधा बण के अगम्मी पंडत, धुर दा राग इक जणाईआ। दोए जोड़ बण दरवेश दर ठांडे करां मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बिन तेरी किरपा मेरी कोई ना दिसे हिम्मत, हौसला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। भगत कहे किरपा करे प्रभू प्रभ मेरा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। दूर दुराडा आवे नेरन नेरा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गृह मन्दिर चाउ घनेरा, घर अणडिठड़े वज्जे वधाईआ। घर विच घर वसाए खेड़ा, खिड़की कुण्डी आप खुल्हाईआ। भँवरी गुफ़ा चुक्के अन्धेरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्को रंग वखाए सञ्झ सवेरा, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सहाईआ। भगत कहे मेरा ठाकर उह, जिस हथ्थ सर्ब वड्याईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड जिस दी लोअ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दे चरण बिन कबीर कोई ना सके छोह, धूढ़ी टिक्का मस्तक कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को बूझ बुझाईआ। जन भगत कहे मेरा साहिब सति, सति दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मार्ग दस्स, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह चलाईआ। भगत कहे प्रभ दित्ता प्रेम, रीती आपणी सच जणाईआ। आदि जुगादि जिस दा नेम, नियम आपणे नाल निभाईआ। जिस दा मेला गोबिन्द उते हेम, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। सो जुग जुग जन भगतां देवे लहिण देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। रसना जिह्वा कोई ना सके कहिण, कहि कहि अन्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, हरि भगत लए उपजाईआ। हरि भगत उपजावे आप प्रभ, दीन दयाल दया कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, रस इक्को इक चखाइंदा। कूड़ी क्रिया पार हद्द, सच दुआरा इक सुहाइंदा। अन्दर वड़ सुणाए नद, बिन तन्दी तन्द सितार वजाइंदा। जीवां जंतां नालों कर के अड्ड, गृह आपणे मेल मिलाइंदा। कर प्रकाश काया माटी चम्म हड्ड, नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नित जन भगतां वेख वखाइंदा। नित नित जन भगतां वेखण आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण मेटे कूड़ी माया, ममता मोह चुकाईआ। भाण्डा भरम दए भंनाया, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। सिर रखे आपणी ठंडी छाया, मेहर नज़र नैण उठाईआ। साचा अक्खर इक समझाया, पट्टी आपणा नाम पढ़ाईआ। बिन अक्खां नेत्रां नज़री आया, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। साचा मन्दिर सति सुहाया, साहिब खुशी

मनाईआ। भगत भगवान इक्को रूप इक्को जोत समाया, दूजा संग ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत साची भगती विच्चों भगवन आपणे घर वसाया।

*** ५ माघ २०२० बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह पिण्ड छोहण ज़िला गुरदास पुर ***

कलयुग अन्तिम वेख घड़ी, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। पंज तत नाता दिसे कोई ना गढ़ी, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्ट सबाई जिस दबाई गोर मढ़ी, लख चुरासी ख़ाक मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण जिस दी लड़ी, नित नवित्त डोरी तन्द बंधाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल कृपानिध किरपा आपणी करी, करनी किरत रिहा कमाईआ। भगत सुहेला इक अकेला गुरमुख दवारे लाए झड़ी, छहबर आपणा नाम वखाईआ। साचे सन्त श्री भगवन्त इक्को धारा अवल्लड़ी पढ़ी, अल्फ़ ये ना कोए समझाईआ। आवण जावण पतित पावण लख चुरासी विच्चों करे बरी, बरीख़ाना इक्को फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म परवरदिगार आपे फड़ी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। कलयुग घड़ी वेख वक्त, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। करे खेल प्रभ साचा जगत, जगजीवण दाता वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी जो रिहा फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। पिछला लेखा करे तरक, तुरत अगला हुक्म मन्नाईआ। आत्म परमात्म भगत भगवान घड़े साची घड़त, घड़न भंनणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी मंगे कोए ना धड़त, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। ठाकर स्वामी निरगुण जोत इक इकल्ला आया परत, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। कलयुग घड़ी वेख वेला, भगत अठारां रहे जस गाईआ। मिल्या मेल गुरु गुर चेला, चेला गुर इक्को नज़री आईआ। परम पुरख प्रभ सज्जण सुहेला, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। लख चुरासी नालों हो के वेहला, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देवणहार वड्याईआ। कलयुग वेला वेख विचार, चारे जुग उठ उठ धाईआ। सतिजुग नेत्र रो करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। त्रेता धाहां रिहा मार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। द्वापर डिग्गा मूँह दे भार, बलहीण रिहा कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रिहा ललकार, चारों कुण्ट रिहा जणाईआ। वेखो खेल मेरा संसार, सृष्ट सबाई भरम भुलाईआ। गुर का शब्द ना कोए प्यार, सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। वरना बरना धूंआँधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र

वैश ना कोए रुशनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ करे ना कोई प्यार, प्रीती हक़ ना कोए निभाईआ। मुकामे हक़ नज़र ना आए सांझा यार, लाशरीक जलवा नूर ना कोए खुदाईआ। राम रहीम सारे गए विसार, इष्ट देव गुरू स्वामी घर सच ना कोए मनाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया करन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेला वेख अख़ीर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण दुहाईआ। चार कुण्ट वहावण नीर, दहि दिशा हाहाकार सुणाईआ। सृष्ट सबाई लग्गी हउमे पीड़, दूई द्वैत पड़दा ना कोए उठाईआ। झगड़ा प्या शाह हकीर, ऊँच नीच करन लड़ाईआ। कोई ना बदले तेरे बिनां तकदीर, तदबीर सके ना कोए समझाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, शहिनशाह नजर किसे ना आईआ। साबत नज़र ना आवे कोई तस्वीर, तसबी माला बैठी मुख भवाईआ। कलयुग साधां सन्तां लग्गी भीड़, भीड़ा राह पार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग वेला वेख त्रैगुण माया, ख़ाली झोली रही वखाईआ। परम पुरख तेरी सीस ना दिसे छाया, ओढण नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया खेल रचाया, झूठे धंदे सर्ब लोकाईआ। पिता पूत रिहा भुलाया, मात पित ना करे वड्याईआ। नार कन्त ना कोए हंढाया, घर घर विभचार नज़री आईआ। आत्म परमात्म छन्द किसे ना गाया, ढोला राग ना कोए सुणाईआ। निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाया, घर घर दीवे बत्ती रहे डगमगाईआ। परम पुरख तेरा दरस किसे ना पाया, तीर्थ तट जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फिरन वाहो दाहीआ। साचा मन्दिर काया बंक ना किसे सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग अन्तिम वेख रोवण पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रिहा कुरलाईआ। श्री भगवान वेख साडे ख़ाली हथ्थ, वस्त नज़र कोए ना आईआ। वरन बरन कर कर थक्के पूजा पाठ, सिमरन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। तेरे मिलण दी किसे ना खुल्ही अक्ख, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। तेरी आत्म परमात्म तेरे नालों होई वक्ख, फड़ बाहों गले ना कोए लगाईआ। जगत वासना नौ दवारे दिवस रैण रही नट्ठ, घड़ी पल्ल आपणा पन्ध मुकाईआ। नाता तुट्टया धीरज जत, सति सन्तोख रहिण कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा खेड़ा हुन्दा दिसे भट्ठ, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग वेला वेख रोवे सूरज चन्द, चन्द चांदनी रही कुरलाईआ। मेरा दुखी होया बंद बंद, बंदगी करदा नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सुबाई होई आत्म रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। नुहा नुहा थक्के जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अन्तर आत्म नुहाउण कोए ना

२७०
१६

जाईआ। पंच विकारां करे ना कोई खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम ना कोए चमकाईआ। बिन तेरे ज्ञान होए अन्ध, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। मैं कूक सुणावां छन्द, होका दे दे रही जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन कोई ना मेटे पन्ध, सगला संग ना कोए रखाईआ। कलयुग वेला वेख रोवण सतार, मण्डल मण्डप देण दुहाईआ। सृष्ट सबाई करे विभचार, सति सरूप ना कोए वखाईआ। कुआर कन्या करे श्रृंगार, नेत्र नैणां धार बंधाईआ। पिता पूत नाता तुटया विच संसार, मात पुत्त सेज हंढुाईआ। कागद कलम होए ख्वार, शाही आपणा हाल सुणाईआ। जो लेखा लिख के गए गुरू अवतार, सो गुर का शब्द सके ना कोए कमाईआ। नौ खण्ड पृथमी धूंआँधार, सत्त दीप ना कोए रुशनाईआ। किरपा कर आप निरँकार, तेरे अग्गे इक अरजोईआ। डुब्बदे पाथर लै उभार, पाहन आपणा चरण छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणी माण वड्याईआ। कलयुग अन्तिम वेख रोवण ज़िमी असमान, धरनी आपणा हाल सुणाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढुाईआ। कलमा कोई ना पढ़े ज़बान, गीत गोबिन्द ना कोए अल्लाईआ। साध सन्त करन हराम, धीरज जत ना कोए जणाईआ। घर घर वसया क्रोध काम, काम कामनी रूप वटाईआ। तेरा पल्लू पकड़े कोई ना दाम, डोरी शब्द ना कोए बंधाईआ। श्री भगवान तेरा लोकमात विगड़या नज़ाम, नौबत सच ना कोए वजाईआ। पुरख अकाल वेख आण, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम वेख, जन भगत देण दुहाईआ। सृष्ट सुबाई झूठा भेख, प्रभ वध्या थाउँ थाईंआ। माया ममता खेडां रहे खेड, मोह मुहब्बत सच ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गुरू अवतार दित्ते भेज, हुक्म संदेसा गए सुणाईआ। अन्तिम कहि के गए पुरख अकाल सब दी माणे सेज, हर घट आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देणी माण वड्याईआ। कलयुग वेला वेख रोवे हकीकत, हक़ नज़र कोए ना आईआ। चार वरनां लग्गी शरीकत, शिरकत सके ना कोए मिटाईआ। सदी चौधवीं लेखा होया बीतत, बीती कहाणी ना कोए समझाईआ। तेरा खेल प्रभू अनडीठत, जग अक्खां नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दे समझाईआ। कलयुग वेला वेख, खाणी बाणी दए दुहाईआ। लग्गी अग्न महीना जेठ, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। साध सन्त रखे कोई ना साया हेठ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। चारों कुण्ट वध्या भेख, भेखी बैठे ढेरीआं ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच तेरी ओट तकाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सचखण्ड निवासी हुक्म फ़रमाउँदा ए।

सो पुरख निरँजण आप जणाउँदा ए। हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हाउँदा ए। एकँकार पर्दा लाहुन्दा ए। आदि निरँजण नूर रुशनाउँदा ए। श्री भगवान राह समझाउँदा ए। अबिनाशी करता वेखण आउँदा ए। पारब्रह्म फेरा पाउँदा ए। ब्रह्म आपणा रंग रंगाउँदा ए। विष्नूं आसा पूर कराउँदा ए। ब्रह्मे भरवासा इक रखाउँदा ए। शंकर धरवासा आप जणाउँदा ए। गुर अवतारां पासा आप बदलाउँदा ए। पीर पैगम्बरां दे के साथा, साचा संग निभाउँदा ए। जन भगतां खोल्ह खुलासा, अनभव आपणी कार कमाउँदा ए। रवि ससि कर प्रकाशा, नूरी जलवा इक जणाउँदा ए। लेखा जाण पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल सोभा पाउँदा ए। त्रैगुण माया तेरी वेखे रासा, गोपी काहन रूप वटाउँदा ए। पंज तत तेरा लेखा जाणे पंज तत एहाता, काया बंक खोज खुजाउँदा ए। दर घर साचे बंधाए इक्को नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा मूल मुकाउँदा ए। सब दा लहिणा मूल मुकाउँदा ए। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। पुरख अकाल खेल रचाउँदा ए। निरगुण निरवैर इक्को नूर डगमगाउँदा ए। ज़ाहर ज़हूर फेरा पाउँदा ए। नाद तूर शब्द वजाउँदा ए। आसा मनसा पूर, आपणा रंग रंगाउँदा ए। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, कलयुग अन्ध अन्धेर गंवाउँदा ए। साची बख्श चरण धूढ़, मस्तक इक्को टिक्का नाम लगाउँदा ए। चतुर सुघड़ बणाए मूरख मूढ़, गुरमुख आपणे घर वसाउँदा ए। दाता योधा बण के सूर, सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेला वक्त सुहाउँदा ए। कलयुग वेला वक्त सुहावांगा। जोती जामा वेस वटावांगा। कल कल्की फेरा पावांगा। सम्बल आपणा चरण टिकावांगा। सचखण्ड दुआर इक वसावांगा। थिर घर आपणा नाद वजावांगा। जोती जोत जोत रुशनावांगा। वरन गोत ना कोए रखावांगा। साची चोट नगारे लावांगा। लख चुरासी आलणयों डिगा बोट, फड़ बाहों फेर उठावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धोत, सच सुच्च इक वरतावांगा। जो प्रभ दर्शन रहे लोच, तिन्हां इक्को दरस दिखावांगा। जो अन्दर वड़ के रहे खोज, तिन्हां पर्दा तुरत चुकावांगा। जो सिर ते बसते बन्न्ह के फिरदे चुक्की बोझ, तिन्हां चार कुण्ट भवावांगा। जिहड़े वेंहदे चौदां लोक, तिन्हां लोक परलोक आपणे चरणां हेठ वखावांगा। जो गौंदे इक श्लोक, तिन्हां साबत सरूप नज़री आवांगा। जो मंगदे मुक्ती मोख, तिन्हां मुफ्त नाम वरतावांगा। जो चरणी आ के कहे मैं निर्दोष, सो दोषी पार करावांगा। जो कहे तेरे मिलण दी मैनूं नहीं होश, तिस अन्तर आत्म जोड़ जुड़ावांगा। जो चरण ध्यान लगा रहे ख़ामोश, तिस ख्वाहिश आपणी ख्वाहिश विच समावांगा। जो मस्त प्याला पी होए मदहोश, तिन्हां मधुर धुन राग सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। कलयुग अन्तिम मेट

मिटाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। निरगुण निरवैर खेल कराएगा। गुर चेला रंग रंगाएगा। सज्जण सुहेला रंग चढ़ाएगा। वेला वक्त आप सुहाएगा। जगत दुहेला रूप वटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा मणसा पूर कराएगा। सुण संदेस श्री भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाईआ। भगत अठारां गायण गाण, कबीर जुलाहा राग अलाईआ। तेई अवतार करन ध्यान, चरण कँवल मंगण सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बिन रसना जिह्वा बोलण ज़बान, तूंही तूं राग सुणाईआ। नानक गोबिन्द कर परवान, परवाना इक्को हथ्थ रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद कतेब कहिण असीं तेरा ईमान, अञ्जील कुरान गीता ज्ञान नाल मिलाईआ। शुकर करे ज़िमी असमान, सूरज चन्द भज्जे वाहो दाहीआ। मण्डल मण्डप होए हैरान, प्रभू की की खेल वरताईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे नौजवान, योधा सूरबीर आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले वेखे आण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म देवे इक ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ। लेखा चुके लोकमात, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग निभाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, भेव रहे ना राईआ। नाम देवे धुर सौगात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। रैण अन्धेरी मेट रात, सति सति करे रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वाक भविक्ख्त जो गए आख, आखर सब दे पूर कराईआ। जुग चौकड़ी वेखणहार हालात, हालत सब दी फोल फुलाईआ। जानणहारा कायनात, कातब कलमा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग लहिणा चुक्के जग, लोकमात रहिण ना पाईआ। सृष्ट सुबाई हँस रूप बणाए कग्ग, कागों हँस आप उडाईआ। जिन्हां दर्शन देवे उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। नौ दवारे पार हद्द, दसवें आपणा घर सुहाईआ। सेज सुहञ्जणी चढ़े भज्ज, गुरमुख मिले माण वड्याईआ। बिन काअब्यो मकक्यों कराए हज्ज, हुजरा हक़ इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन हुजरा तक्के अगम्म, अलख अगोचर आप जणाईआ। जिथ्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्न, चौदस रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई गीत ना कोई छन्द, ढोला राग ना कोए सुणाईआ। ना कोई जिह्वा ना कोई दन्द, ततव तत ना कोए चतुराईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर इक्को देवे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग अन्दर जन भगतां मेट अगला पिछला पन्ध, घर साचे लए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूरन मनसा, मानव आपणे लेखे लए लगाईआ। कलयुग वेला अन्त,

अन्त रिहा समझाईआ। नेत्र खोल्ह जगत जंत, जीव ईश दृढ़ाईआ। परम पुरख दा इक्को मंत, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए समझाईआ। नाता जोड़ नार कन्त, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। बोध अगाधा बण पंडत, घर वज्जे नाम वधाईआ। दूजे दर ना हो मंगत, देवणहार इक अख्वाईआ। चार वरन जिस दी संगत, बरन अठारां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहड़ा रिहा जणाईआ। कलयुग वेला उठ जीव जाग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। तेरे अन्तर जगे चिराग़, बिन सतिगुर अक्ख नज़र किसे ना आइंदा। दुरमति मैल धो दाग, पापां गठड़ी फोल फुलाइंदा। हरि सरनाई साची लाग, श्री भगवान इक्को नज़री आइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाइंदा। शब्द सुणाए अगम्मी नाद, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। आत्म परमात्म बणे साक, सज्जण इक्को इक अख्वाइंदा। बजर कपाटी खोल्ह ताक, तेरा पर्दा आप उठाइंदा। निझर झिरना देवे बूँद स्वांत, अमृत रस इक वखाइंदा। नज़री आए इक इकांत, घर साचे सोभा पाइंदा। तूं गुरमुख उस दी ज़ात, मनमुख हो क्यों मुख भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आप जणाइंदा। उठ जीव खोल्ह अक्ख, क्यों बैठा मुख भवाईआ। जो तेरा साढे तिन्न हथ्थ चलाए रथ, काया अन्दर सेव कमाईआ। साहिब नाल मिल के हस्स, घर खुशीआं मंगल गाईआ। उह तेरा करे जस, जिस वेद पुराण दिती वड्याईआ। माया कारण होइउँ अड्ड, पर्दा दूई द्वैत टिकाईआ। कूड़ी क्रिया जगत छड्ड, घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जंत रिहा जणाईआ। कलयुग जीव कर ध्यान, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। सब दे अन्दर नाम ज्ञान, श्री भगवान रिहा टिकाईआ। दीपक जोत जगे महान, गृह गृह करे रुशनाईआ। रसना जिह्वा दिती ज़बान, बत्ती दन्द मेल मिलाईआ। नौ दवारे खोल्ह दुकान, जगत वासना नाल भराईआ। सुखमन टेडी बंक खेल महान, ईड़ा पिंगला पहरेदार अख्वाईआ। करे खेल श्री भगवान, घर घर विच रचन रचाईआ। अमृत भरया ताल महान, सरोवर आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द नाद वज्जे धुन्कान, अट्ठे पहर राग सुणाईआ। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। घर सेजा वेख सच निशान, आसण सिंघासण इक विछाईआ। क्यों भुल्लया बण नादान, निज घर वेखण कोए ना आईआ। जिस घर वसे श्री भगवान, सो तेरा मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जंत रिहा जगाईआ। कलयुग जीव जाग जगत दुहेला, जगत अन्धेरा छाईआ। प्रभ मिलण दा इक्को वेला, माणस जन्म मिले वड्याईआ। घर ठाकर स्वामी चाढ़े तेला, खुशीआं सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग जीव कहे मैं अन्धा, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ।

बिन बंदगीउँ फिरां बंदा, बन्दना सच ना कोए समझाईआ। कूड़ी क्रिया जगत धन्दा, वासना लोभ मोह हल्काईआ । लख चुरासी पार ना आया कन्ढा, साचे बेड़े ना कोए चढ़ाईआ। जुग जुग जगत दुहागण रिहा रंडा, सच सुहाग ना कोए हंढाईआ। मात गर्भ वड़दा रिहा डूंघी कंदा, कन्दर पार ना कोए कराईआ। मिल्या साहिब ना हरि बख्शंदा, बख्शिश करी ना बेपरवाहीआ। माँ प्यो मैनूं लाड नाल कैहन्दे रहे लाडले चन्दा, खुशीआं नाल नाम सालाहीआ। बिन सतिगुर पूरे अन्त कोई ना लाए अंगा, गोदी गोद ना कोए बहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दर तेरे मंग मंगा, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। आपणी किरपा पार कर चाहे चंगा चाहे मंदा, मंदा चंगा तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर देवीं माण वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं तारां ठग्ग चोर, जो चल आण सरनाईआ। सृष्ट सबाई हथ्थ मेरे डोर, जुग चौकड़ी रिहा भवाईआ। जन भगतां दी सदा लोड़, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ । जुग जन्म दे विछड़े लवां जोड़, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। पार करावां डुब्बदे अन्धघोर, शब्द इशारे नाल तराईआ। पुरख अकाल आदि जुगादि इक्को ना कोई होर, इक इकल्ला आप अख्वाईआ। जिस दे अग्गे चले ना किसे कोई ज़ोर, ज़ोरू ज़र कम्म किसे ना आईआ। जिस दा मन्त्र इक्को फोर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दए समझाईआ। अन्त काल कल जाए आपे बौहड़, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, कलयुग जीव लए तराईआ। कलयुग जीव कहे प्रभ औखी घाटी, किनारा नज़र कोए ना आईआ। जूठे झूठे मेरे साथी, तेरा राह ना कोए वखाईआ। की मैं मन्नां तेरी आखी, मेरी बुध रहे गंवाईआ। किरपा कर के बण साकी, साहिब आपणा जाम मुख लगाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह ताकी, बंद दरवाजा दे खुल्हाईआ। मन मनुआ रहे कोई ना आकी, मनसा मनसा विच खपाईआ। तेरे नाम दा बणां सच्चा पाठी, पूजा इक्को दे दृढ़ाईआ। तैनूं मिल के होवां तेरी जाति, आपणी ज़ात ना कोए वखाईआ। जिध्धर वेखां नज़री आए प्रभाती, संध्या रूप ना कोए वटाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अबिनाशी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। निरगुण नूर जोत सच प्रकाशी, प्रकाश इक्को नज़री आईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां घर आ के दे बाकी, पूरब लहिणा झोली पाईआ। तेरे भगतां मिल के रलीए सच जमाती, जिस घर अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाईआ । चरण कँवल सच प्रीती बन्न नाती, नाता आपणे नाल रखाईआ। लेखा चुके मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण फ़ुफ्फी मासी, मसेर नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया जगत मिटे उदासी, संसा रोग नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाल मिल के आत्म परमात्म करे हासी, हस्स हस्स तेरी खुशी मनाईआ। तेरे मण्डल वेखां रासी, जिस घर गोपी काहन तूंही नज़री आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, जिस विच तेरा रूप नज़री आईआ। परम पुरख प्रभ हो दयाल, दीन दयाल दया कमाइंदा। गुरमुख उठ साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। मुरीद मुर्शद पुच्छे हाल, पर्दा दूई द्वैत चुकाइंदा। तेरा साहिब तेरे नाल निरगुण, विछड़ कदे ना जाइंदा। नाता तोड़े काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन्म जन्म जो घालण घाल, कीती घाल लेखे लाइंदा। हाज़र हो के मन्ने सवाल, ज़ाहर हो के पूर कराइंदा। सतिगुर हो के बणे दलाल, दो जहानां पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आसा पूर वखाइंदा। हरिजन आसा पूरी मनसा, तृखा तृप्त रहिण ना पाईआ। हरि भगत सुहाए आपणा बंसा, सरबंस आपणे रंग रंगाईआ। सोहँ जाप जपाए हँसा, माणक मोती चोग वखाईआ। घर नारी नरायण मिले कन्ता, गुरमुख गुर गुर अंग लगाईआ। माणस जन्म बणाए बणता, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। चोली चाढ़ रंग बसन्ता, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। गढ़ टुट्टे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। भगत बिन भगवान ना होए मंगता, दूजे दर ना मंगण जाईआ। मेल मिले जन साची संगता, जिस संगत विच हरि जू रिहा समाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक ना कोई जाणे पांधा पंडता, ग्रन्थी पन्थी समझ कोए ना आईआ। जिस उपाई लख चुरासी जनता, सो जीवत जीअ आपणे घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां नाल करे सच मुहब्बता, महिबूब आपणा मेल मिलाईआ।

* ६ माघ २०२० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड सोन ज़िला गुरदास पुर *

किरपा करे हरि जगदीश, जन हरि देवे माण वड्याईआ। एका कलमा नाम हदीस, हज़रत करे सच पढ़ाईआ। दरस दिखाए बैठ अतीत, त्रैगुण डेरा रिहा ढाहीआ। माण रखाए हस्त कीट, ऊँच नीच लए मिलाईआ। सति सतिवादी दस्से आपणी रीत, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। आत्म परमात्म ढोला गीत, सोहँ सच सच्च जणाईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी माणस जन्म लए जीत, जूनी जून ना कोए भवाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ा आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे हरि निरँकार, पुरख निरँजण वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा रिहा सहार, सोहला ढोला राग नाम जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर उज्यार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कुराना लेख लिखाईआ। पंज तत

काया खोल्ह किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे साहिब सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। किरपा करे श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी वेखे मार ध्यान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले लभ्भे आण, सरगुण देवे माण वड्याईआ। गुरमुख गुर गुर बख्शे चरण ध्यान, सरन देवे इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी खेल रचाईआ। अचरज खेल पुरख समरथ, हरि करता आप रचाइंदा। निरगुण नूर कर प्रगट, लोकमात वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, निरवैर आपणी कल धराइंदा। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, दो जहानां चरणां हेठ रखाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले श्री भगवान कर के वक्ख, भगतन आपणा घर जणाइंदा। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, पर्दा दूई द्वैत मिटाइंदा। देवणहार हकीकत हक़, लाशरीक दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणा रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग रंगे अनोखा, कलयुग जीव नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी नाल कर के धोखा, गुरमुख सज्जण लए उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोता, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया कोठा, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों माणस जन्म इक्को दित्ता मौका, मुकम्मल आपणा घर वखाईआ। ऊँची कूक सुणाए शब्दी होका, नाअरा इक्को नाम लगाईआ। वेखे खेल लोक परलोका, दो जहानां फेरा पाईआ। जन भगतां देवे पुरख अकाल आपणी ओटा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। शब्द नगारे लग्गे चोटा, तन वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे दर वखाईआ। हरिजन वेखे आपणे घर, घर वज्जे इक वधाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, कृपानिध होए सहाईआ। जुग जन्म दे विछड़े फड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। आत्म सेजा साची चढ़, घर मन्दिर डेरा लाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर रिहा उठाईआ। गुरमुख उठाए शब्दी धार, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। प्रेम प्रीती दे प्यार, प्रीतम आपणे अंग लगाईआ। साची नीती विच संसार, पतित पुनीती दए समझाईआ। हस्त कीटी वेखे एकँकार, अकल कलधारी आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर बहाईआ। गुरमुख कहे प्रभ तेरा दर, घर इक्को नज़री आईआ। श्री भगवान आखे उपर चढ़, मैं बैठा सेज विछाईआ। दोहां विचोला निरगुण नर, नरायण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। गुरमुख कहे मैं तेरा मीत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर कहे मैं छत्र झुलावां तेरे सीस,

सिर आपणा सोभा पाईआ। दोहां विचोला इक जगदीश, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अचरज आपणा राह चलाईआ। गुरमुख कहे मोहे तेरी आस, सतिगुर देणी माण वड्याईआ। सतिगुर कहे मैं वसां तेरे पास, दिवस रैण विछड़ कदे ना जाईआ। निरगुण कहे मैं पुरख समराथ, दोहां वेखां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा रिहा जणाईआ। गुरमुख कहे प्रभ सुण पुकार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं तेरा यार, घर सत्थर सेज हंढाईआ। दोहां विचोला एकँकार, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुरमुख कहे प्रभ मिल्या मेल, घर सज्जण इक्को आईआ। सतिगुर कहे चढ़या तेल, दो जहान वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा खेल, ख़ालक ख़लक विच खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक समझाईआ। गुरमुख कहे प्रभ दित्ता राह, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। पुरख अकाल कहे मैं बण मलाह, हरिजन बेड़ा रिहा चलाईआ । दोहां मिल के बणे इक सलाह, दूई रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस दर देवे माण वड्याईआ। गुरमुख प्रीत वेख प्रभ ठाकर, हरिजू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग डूंघा जगत सागर, फड़ बाहों पार कराइंदा । वणज व्यपार कराए इक सौदागर, सौदा आपणे हट्ट नाम विकाइंदा। भाग लगाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाइंदा। एथे ओथे दो जहानां करे आदल, अदालत इक्को इक वखाइंदा। लेखा जाणे मक्तूल कातिल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख रंग चढ़े अपार, हरि अपरम्पर आप चढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जो परम पुरख दी करदे रहे भाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर राह तकाईआ। सो साहिब सतिगुर इक इकल्ला वसणहारा साचा महल्ला प्रगट होया दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख सच धर्मसाल इक वखाईआ। गुरमुख वखाए धर्मसाल, घर मन्दिर इक जणाइंदा। दीवा बाती अगम्मा बाल, घर नूरो नूर डगमगाइंदा। मुरीदां पुछे मुर्शद हाल, दर दरवाजे चल के आइंदा। पूरब जन्म दी घाली घाल, आपणे लेखे लाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, जोती जाता मेल मिलाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। अन्तिम सीस ना कूके काल, कलयुग जंजाल ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आप प्रभ, देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, रुठड़े लए मनाईआ। कर प्रकाश

२७८
१६

जोत झभ्भ, झगड़ा दए चुकाईआ। जगत दवारा पार हद्द, घर मन्दिर दए वखाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नद, अनहद राग अल्लाईआ। अमृत जाम प्याए मधु, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुरमुख कहे प्रभ सुण स्वामी, मेरी इक अरजोईआ। सृष्ट सबाई दिसे फ़ानी, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। बिन तेरी किरपा मिले ना सच निशानी, सच्चा मार्ग नज़र कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गाए तेरी कहाणी, सिफ्ती सिफ्त ढोला गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी बण के गए नार सवाणी, कन्त कन्तूल इक्को इक हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, साची वस्त आप वरताईआ। गुरमुख कहे प्रभ सुण अर्ज़, अरदास इक्को इक जणाईआ। गा गा थक्कया ताल तर्ज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले राग सुणाईआ। जन्म मरन दी मुक्की ना मर्ज़, गर्भ रोग ना कोए चुकाईआ। लख चुरासी हुन्दा रिहा हरज़, हर्जाना सके ना कोए भराईआ। भगतां तारना तेरा फ़र्ज़, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कर खेल इक असचरज, अचरज तेरे हथ्थ वड्याईआ। तैनूं साडे मिलण दी सदा ग़रज़, साडी ग़रज़ तेरे विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणे लै बुलाईआ। भगत कहे प्रभ सुण संगीत, तेरा नाउँ निरँकार जणाईआ। उठ वेख प्यारे मित्र मीत, हउँ बैठा राह तकाईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, अन्तिम पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए ठीक, चारे जुग भेव खुल्लाईआ। कलयुग अन्तिम बीस बीसा आए नज़दीक, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा कलमा पढ़दे गए हदीस, सो हज़रत आपणा नूर करे रुशनाईआ। निरगुण हो के सरगुण करे प्रीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दे उठाईआ। आपणा पर्दा आ के चुक्क, प्रभू साहिब सच्चे सुल्ताना। कलयुग पैंडा रिहा मुक्क, नेत्र खोल्ल वेख वाली दो जहाना। तेरा बूटा रिहा सुक्क, भगवन भगतां दे भगती दाना। साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे कर परवाना। भगत कहे प्रभ किरपा धार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। चारों कुण्ट दिसे अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जगत उठा सर्ब संसार, नाता तुटा मात लोकाईआ। मात पित भाई भैण रहे विसार, नार कन्त संग ना कोए रखाईआ। तुध बिन करे ना कोए प्यार, प्रीती सच ना कोए लगाईआ। कलयुग बाहों पकड़ उठाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे लाल, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। नव नौ चार थक्के भाल, तेरा रूप सके ना कोए वखाईआ। बिन तेरी किरपा होए कंगाल, राज जोग कम्म किसे ना आईआ। निरगुण आ

के सुरत संभाल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। तेरे अग्गे इक सवाल, बण सवाली रहे जणाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के काल महाकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साची गोदी लैणा सवाल, चरण कँवल मिले सरनाईआ। लख चुरासी विच्चों कर बहाल, आवण जावण गेड़ मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सगला संग आप हो जाईआ। भगत कहे प्रभ मन्न अरदास, होका तेरा नाम जणाईआ। बंदीख़ाना तोड़ कर बंद ख़लास, ख़ालस आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया छुट्टे भोग बिलास, सेजा इक्को इक हंढाईआ। कलयुग अन्त ना करीं निराश, निराशता तेरी झोली पाईआ। आदि जुगादि तेरी शाख़, जुग चौकड़ी तेरा नाम वड्याईआ। तेरे विच्चों प्रगटी तेरी ज़ात, दूजा नूर ना कोए रुशनाईआ। साडी पूरी करनी ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणे नाल मिलाईआ। कोटन कोटि तेरी करन तलाश, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मिलाउणा चाईं चाईंआ। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। जन भगतां आख सुणाउँदा ए। निरवैर हो दया कमाउँदा ए। निराकार वेस वटाउँदा ए। जगत आकार ना कोए वखाउँदा ए। सच धार इक चलाउँदा ए। शब्द सतार तन्द वजाउँदा ए। कर गुफ्तार आप उठाउँदा ए। उच्च मनार डेरा लाउँदा ए। महिफ़ल इक्को इक वखाउँदा ए। ग़फ्लत पिछली मेट मिटाउँदा ए। उल्फ़त आपणी आप समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां घर वसाउँदा ए। जन भगतां घर वसावांगा। दीपक जोत इक रुशनावांगा। आत्म सेजा सेज विछावांगा। अनहद नादी नाद अलावांगा। अमृत धार इक चवावांगा। अन्ध अँध्यार मेट मिटावांगा। सोई सुरती आप उठावांगा। अकाल मूर्ती नज़री आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर बुलावांगा। हरिजन आपणे घर बुलावांगा। बज़र कपाटी कुण्डा लाहवांगा। साची हाटी इक वखावांगा। बण के साथी संग निभावांगा। पूरब जन्म दी पूरी कर के आखी, आख़र आपणा मेल मिलावांगा। उत्तम कर के जाति, ज़ात आपणी विच समावांगा। गृह मन्दिर देवां झाकी, जलवा इक्को नूर रुशनावांगा। लेखे ला के तन ख़ाकी, ख़ालस आपणा आप वखावांगा। जुग जुग दी देवां बाकी, पूरब लहिणा सर्ब चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन बंदगीउँ बंदा आपणे लेखे लावांगा। साचे लेखे आप लगाएगा। पुरख अकाल दया कमाएगा। दीन दयाल वेख वखाएगा। सन्त सुहेले नाल रलाएगा। गुरमुख गुर गुर गोद बहाएगा। हिरदा सोध जोत जगाएगा। लोक परलोक डेरा ढाहेगा। सच श्लोक इक सुणाएगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर आप मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाएगा। हरिजन साचे घर वसावांगा। सचखण्ड दवारा इक वखावांगा। थिर

घर शब्दी नाद वजावांगा। सुंन अगम्म डेरा ढाहवांगा। दस्म दवारी बेड़ा बन्न्, साचे कंध आप उठावांगा। एका राग सुणा कन्न, धुर दा नाद इक वजावांगा। लहिणा चुक्के छप्पर छन्न, बंक दवारा इक वखावांगा। कूड़ी क्रिया मेट वासना मन, मन का मणका आप भुआवांगा। कर किरपा गुरमुख बणा आपणे जन, जन जननी लेखे लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावांगा। सच करनी कार कमाएगा। पुरख अकाल वेख वखाएगा। हरिजन साचे लाल उठाएगा। बण दलाल वणज कराएगा। सचखण्ड सच्ची धर्मसाल आप बहाएगा। जिथ्थे पोह ना सके काल, राए धर्म ना मुख प्रगटाएगा। सुण के आप मुरीदां हाल, मुर्शद आपणे संग लै जाएगा। चौथे जुग अवल्लड़ी चाल, निरगुण आपणी आप चलाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर होण हैरान, निउँ निउँ सीस सर्ब निवाएगा। करया की श्री भगवान, काग़द कलम शाही नैण शरमाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगत भावी भाणयो बाहर कढ्ढाएगा।

* ६ माघ २०२० बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीउ जुलाई ज़िला गुरदास पुर *

२८१ १६

जुग जन्म प्रभ कट विछोड़ा, सद विछड़े मेल मिलाइंदा। सुरत शब्द आदि जुगादी जोड़ा, जुग चौकड़ी रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण जाणे आपणी लोड़ा, लोड़वंद हरि अख्वाइंदा। वेखणहारा सदा अन्धघोरा, जगत अन्धेरा फोल फुलाइंदा। मिटावणहारा ठग्ग चोरा, ज़ोर आपणा इक दृढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम आपे बौहड़ा, पुरख अकाल फेरा पाइंदा। रंग दिसे ना काला गोरा, रूप नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड निवासी बांका छोहरा, शहिनशाह आपणी कार कमाइंदा। इक्को सस्से उपर ला के होड़ा, सोहणी आपणी बणत समझाइंदा। हँ ब्रह्म कर मोरा, मेहर नज़र इक उठाइंदा। दोहां मिल के बणे दोहरा, दोहरा ताल आप वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे प्रभ सद, नित नवित्त वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी पार कराए हद्द, हदूद आपणी ना किसे समझाईआ। शब्द नगारा हो के जाए वज्ज, दो जहान करे शनवाईआ। लोकमात बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जुग विछड़े जग करे मिलाप, मिलणी आपणा नाम कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग थापण थाप, लोकमात वंड वंडाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दे दे जाप, जीव जंत दए समझाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, घर पर्दा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म बणा के ज़ात, नूर नूर विच्चों

प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव चुकाईआ। भगत विछोड़ा देवे कट, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच प्रीती बन्ह के नत, घर सज्जण मेल मिलाईआ। झोली पा हकीकत हक़, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जन्म जन्म जो आवण जावण विच गए थक्क, बण बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तिन्हां किरपा करे पुरख समरथ, साहिब सतिगुर दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कर के भड्ड, अमृत साचा जाम प्याईआ। जगत विकारयों कर के वक्ख, वक्खरा आपणा घर दरसाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, घर दीपक जोत जगाईआ। लहिणा वेख मस्तक मथ, पूरब दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विछोड़ा रहे ना राईआ। कट विछोड़ा तोड़े बंध, बंदीख़ाना नज़र कोए ना आईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी गंढु पवाईआ। अन्दर बाहर निरगुण हो के देवे संग, सरगुण साचा मेल मिलाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर दस्से आपणा छन्द, सोहँ सोहला इक समझाईआ। आत्म परमात्म मिले अनन्द, अनन्द इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे भेव खुल्हाईआ। जगत विछोड़ा गया मुक, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवान गोदी लए चुक, फड़ बाहो गले लगाईआ। निरगुण धारों निरगुण उठ, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। सरगुण बैठा रहे चुप, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ । अन्ध अन्धेरे आपे लुक, पर्दा उहला आपे पाईआ। डूंग्घी भँवरी लए पुछ, सुख सुनेहड़ा सच्चा माहीआ। गुरमुख कहे मैं तेरा पुत, पुरख अकाल पिता माईआ। श्री भगवान कहे सुहावां तेरी रुत, रुत रुतड़ी इक महकाईआ। दोहां मिल के अगला पिछला विछोड़ा जाए छुट, छुटकी लिव फेर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत मेले आपणे दर, पिछला दर्द दुःख रहे ना राईआ। पूरब दर्द रहे ना दुःख, जन्म अजन्म नज़र कोए ना आइंदा। घर परमात्म देवे सुख, आत्म खुशीआं गीत अल्हाइंदा। धन्न वड्याई उजल मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहइंदा। गेड़ चुरासी पैंडा जाए मुक्क, मुक्ती मुफ्त चरणां हेठ दबाइंदा। अन्त काल कल गोदी चुक्क, फड़ खुशीआं गले लगाइंदा। ठाकर हो के स्वामी तुठ, अतुट भण्डार नाम वरताइंदा। सच दवारे सचखण्ड साची सुखणा आपे सुक्ख, सुख सुक्खां विच्चों गुरमुखां झोली पाइंदा। गुरमुख कहे मेरा नाता जुड़या प्यो पुत्त, बिनां पुरख अकाल पिता नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग अन्त मिली अनमुल्ली लुट्ट, बिन गुरमुखां लुट्टण कोए ना आइंदा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया पाई फुट्ट, फुट्टे दुध जाग ना कोए लगाइंदा । धन्न भाग जिन्हां गुरमुखां मौली रुत्त, पतिपरमेश्वर पत डाली फुल्ल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगत विछोड़ा बिन भगती पार कराइंदा। भगती कहे एह की होया, प्रभ कलयुग खेल रचाईआ। किथों

उठया धुर दा सोया, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। ना जम्मे ना कदे मोया, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। कर प्रकाश धुर दी लोआ, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां पिच्छे पागल होया, पगली करे लोकाईआ। धुर दा लै के आया ढोआ, साचा नाम रिहा वरताईआ। जिस दा बीज किसे ना बोआ, सो बण किरसाणा आपणी कार कमाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के जिस अमृत चोया, अट्ठ सट्ठ बैठे मारन धाहींआ। माण ताण जिस मेरा खोया, ख़ाली हथ्थ कराईआ। जन भगत दवारे सदा सदा सद नवां नरोया, निरवैर आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेला आपे होया, होर नाल ना कोए रलाईआ। होर नाल रले कौण, सगला संग कवण रखाईआ। सेवा अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर पवणी पौण, धरत धवल आकाश बैठे सीस निवाईआ। जिस परम पुरख दी गोदी बहि के सारे सौण, तिस नाल बिन किरपा जागरत रूप ना कोए वटाईआ। सारे कदमां उते रख के धौण, चरणां थल्ले हथ्थ रखाईआ। बिन रसना जिह्वा गहर गम्भीर गुण सारे गौण, इक्को साचा नाम ध्याईआ। जिस लोकमात घल्ले रावण रौण, राम आपणी धार बंधाईआ। उस दा खेल वेख सारे पछतौण, पश्चाताप नज़री आईआ। जन भगतां बेड़ा पार आया लौण, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्टां वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों बाहर आया कढौण, फड़ बाहों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे नाल आया मिलौण, पिछला विछोड़ा रिहा मुकाईआ।

* ६ माघ २०२० बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह दोस्त पुरा ज़िला गुरदास पुर *

छोटे बाले करी पुकार, पुनह पुनह सुणाईआ। किरपा कर सिरजणहार, मेरे साहिब सच गोसाईंआ। कलयुग वेख कूड़ा अँध्यार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, कूड़ी क्रिया रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म भुल्लया तेरा प्यार, सच प्रीत ना कोए रखाईआ। मन वासना दहि दिशा फिरे वारो वार, चार कुण्ट कुण्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। बाला कहे मेरे भगवान, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। साडी हालत वेख आण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। संगी दिसे ना कोई जहान, मित्र नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मिले तेरी सरनाईआ। बाला कहे मेरे भगवन्त, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। भरमे भुल्ले जीव जंत, साध सन्त ना कोए चतुराईआ। नज़र ना आवे धुर दा कन्त, कूड़ी रहे सेज हंढाईआ। मनुआ कोई ना जाणे मंत, मन का मणका ना कोए भवाईआ। गढ़ बणया हउमे हंगत,

हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। सतिगुर मिली ना किसे संगत, साची सिख्या नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। बाला कहे प्रभ खोल् अक्ख, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। हकीकत झोली पा हक़, लेखा पूरब दे मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत नेत्र लोचण रहे तक्क, घर घर ध्यान लगाईआ। सब नूं साडे उते प्या शक़, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मूर्ख मुग्ध अंजाणां आपणे मिलण दी दे अक्ख, दूई द्वैती पर्दा मात चुकाईआ। फिक्का बोलणों जावण हट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बाला कहे मोहे वज्जा धक्का, निक्की निक्की गुफ्तार सुणाईआ। जगत जहान दिसे कुपत्ता, कूडी क्रिया करे लड़ाईआ। किसे ना मिले पुरख समरथा, सतिगुर पूरा नज़र किसे ना आईआ। जगत वासना फिरे नट्ठा, मन मनुआ उठ उठ दहि दिश धाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर रट्टा, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरे साहिब सच गुसाईंआ। बाला कहे प्रभ कर मंज़ूर, दर तेरे अरदास जणाईआ। ओन्हां बख्श जगत कसूर, जो बैठे तैनूं भुलाईआ। तन तपदा वांग तन्दूर, अग्नी तत रही जलाईआ। अमृत मेघ बरस आपणी भूर, निमी निमी धार वहाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च दे दृढ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, मूढ़े आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। बाला कहे भुल्ला जग, जगत मिले ना कोए वड्याईआ। घर घर वेखी लग्गी अग्ग, लोकमात सके ना कोए बुझाईआ। धीरज जत तुट्टा तग, सति सरूप ना कोए वखाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हथ्थ, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी कर आस, तृष्ना आपणे नाल मिलाईआ। बाला कहे प्रभ मेरे मीत, मेहरवान तेरी सरनाईआ। कलयुग बदल कूड़ी रीत, रीती आपणी दे जणाईआ। पतित कर जगत पुनीत, पापियां पर्दा दे उठाईआ। साचा खेल दस्स अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। मिट्ठा कर कौड़ा रीठ, अमृत आपणा रस भराईआ। सदी बीसवीं रही बीत, बीस बीसा ख़ुशी वखाईआ। रल मिल सारे गाईए तेरा गीत, घर घर तूही नज़री आईआ। तेरा लेखा ऊँच नीच, राउ रंकां रिहा समाईआ। दर ठांडे देणी भीख, भिच्छया इक्को मंग मंगाईआ। काया होए ठांडी सीत, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। तेरे चरण लग्गे प्रीत, जो तैनूं रहे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचे हथ्थ रखाईआ। बाले नढ्ढे सुण बाली बुध, श्री भगवान दया कमाईआ। सब दे कारज करे सुध, हरि करता बेपरवाहीआ। शब्द घोड़े साचे अस्व

चढ़े कुद्द, दो जहानां वेख वखाईआ। मूर्ख मुग्धां निर्मल करे बुध, साची सिख्या इक समझाईआ। सच प्रीती सारे जावण लुझ, जो बैठे हरि भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत आपणी आप कमाईआ। छोटे बाले कोई ना मारे धक्का, धुर दी धार आप बंधाइंदा। जगत जहान रह जाए हक़ा बक्का, हरिजू की की खेल रचाइंदा। जिस भेव खुल्लाया मदीना मक्का, सो काया काअबा इक प्रगटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे नाम रता, सो रती रत आपणा नाम रंगाइंदा। धुर संदेसा देवे सच्चा, शब्द कहाणी इक पढ़ाइंदा। गुरमुख लख चुरासी विच्चों इक्को बच्चा, श्री भगवान आपणी गोद उठाइंदा। नौ दुआर कदे ना नच्चा, दहि दिशा ना उठ उठ धाइंदा। हुक्मे अन्दर कहे सदा अच्छा, निउँ निउँ सजदा सीस निवाइंदा। श्री भगवान उस दा पर्दा रखा, ओढण आपणा नाम टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। छोटे बाले धार बल, बलधारी दए वड्याईआ। करे खेल अछल अछल्ल, वल छल धारी समझ कोए ना पाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, अटल पदवी रिहा दिवाईआ। सच सिँघासण लैणा मल, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। धक्का देवे ना कोई मात, सो साहिब सतिगुर दया कमाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चमकाइंदा। हरिसंगत मिल के गौणी गाथ, सोहँ ढोला राग अल्लाइंदा। पतिपरमेश्वर रखे पात, पत्तत पापी पार कराइंदा। चरण प्रीती इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत साक, सज्जण नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। बीस बीस कहे प्रभ दस्स राह, रहमत आप कमाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहां, नित नित आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण गवाह, शहादत आपणी गए भुगताईआ। तेरा मार्ग दस्स के इक्को राह, लेखा लिख्त गए समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान करन हां, हामी सारे नज़री आईआ। तुध बिन दिसे ना कोए निशां, निशाना सच ना कोए झुलाईआ। सचखण्ड निवासी साचा फेरा आपणा पा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा दस्सदे रहे नाँ, नाउँ निरँकार इक जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त विष्न ब्रह्मा शिव जीव जंत आण समझा, समझ आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ। मेहरवान आ प्रभ नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्हब चुका झेड़े, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ला आपणे डेरे, दीप सत्त चरण छुहाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ भगत केहड़े केहड़े, जो तेरा ध्यान लगाईआ। लख चुरासी आवण जावण चुकण गेड़े, अण्डज जेरज उत्भुज

सेतज ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दर आ पारब्रह्म, ब्रह्म तेरी सरनाईआ। निहकर्मी कर आपणा कर्म, कर्म कांड कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी मेट भरम, भाण्डा भउ भंनाईआ। गुर अवतार पैंदे ढहि तेरी सरन, पीर पैगम्बर सजदा रहे कराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा किसे ना वेख्या जन्म, धन्न जणेंदी बणे ना कोए माईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा लभ्भे ना कोए धर्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। आ के वेख प्रभ स्वामी, सच तेरी आस लगाईआ। नेत्र रोवे खाणी बाणी, धीर ना कोए धराईआ। वरन बरन दिसे वैरानी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पिच्छे रही कहाणी, अगला गीत ना कोए अलाईआ। अठसठ नेत्र नीर विरोले पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए पछाणी, निरगुण मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण आ के वेख तक्क, ताकत आपणी इक अज़माईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात गए थक्क, जुग जुग संदेस सुणाईआ। अन्तिम जांदी वार कहि गए सच्च, सच संदेसा इक अल्ाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होए पुरख समरथ, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। सब दे ख़ाली करे हथ्थ, वस्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी दया कमाईआ। निरगुण आ के खोल्ह दरवाजा, दर तेरे मंग मंगाईआ। भगत वछल तूं साहिब ग़रीब निवाज़ा, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। आदि आदि जिस साजण साजा, अन्तिम आपे वेख वखाईआ। लख चुरासी रच के काजा, घर घर खेल खलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तैनूं मारन वाजा, उच्ची कूक कूक अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। घर साचा वेख ठाकर प्रभ, दूर दुराडे फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम मुक्की हद्द, हाज़र हो के दे समझाईआ। विश्व वखा आपणी यद, बंस इक्को इक बणाईआ। पिछली करनी पिच्छे छड्ड, अग्गे मंगी तेरी सरनाईआ। कोटन कोटी भार गए लद, बिन तुध पार ना कोए कराईआ। पीर पैगम्बर ख़ाली कर गए मक्का मदीना कोई ना दिसे हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। नेत्र रोवण मन्दिर मसीत शिवदुआले मठ्ठ, मथुरा काहन बंसुरी नाम ना कोए वजाईआ। साधां सन्तां जीवां जंतां बिन तेरे नाम ख़ाली दिसण हड्ड, काया माटी चम्म कम्म किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द खा खा मछली डड्ड, डंका कूड़ा जगत वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के आपणा भेव खुल्ाईआ। आ के आपणा भेव खोल्ह, ख़ालक ख़लक तेरी शरनाईआ। तेई अवतार वजा के गए ढोल, तेरा नाम सच समझाईआ। भगत अठारां कहिण तोले प्रभ तोल,

सच तराजू कंडा नाम हथ्थ उठाईआ। ईसा मूसा कहे मौला जाए मौल, मुहम्मद कहे आपणी रमज़ लगाईआ। नानक गोबिन्द कहे सद वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। कलयुग अन्त लख चुरासी सुती अनभोल, तुध बिन सके ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। आ के वेख प्रभ अन्तरजामी, अनबोलत राग सुणाईआ। भरमे भुल्ली चारे खाणी, चारों कुण्ट दिसे हल्काईआ। माण ना कोई दिसे चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी सार किसे ना आईआ। मन वासना घर घर बैठी राणी, दर दर आपणा नाच नचाईआ। कूड़ी क्रिया शरअ शैतानी, शरीअत हक़ गई भुलाईआ। तेरी नज़र ना आए धुर निशानी, साचा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा भेव जणाईआ। साचा भेव खोल्ह निरँकार, दर ठांडे मंग मंगाईआ । दर ठांडे गुरू अवतार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण असीं बरखुरदार, बण फ़रमाबरदार सेव कमाईआ । भगत कहिण हउँ बाल अंञाण, बाली बुध ना कोए वड्याईआ। नानक गोबिन्द कहे तूं पुरख सुल्तान, शहिनशाह सच तेरी शहिनशाहीआ। तेरा खेल ज़िमी असमान, सूरज चन्द तेरी रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम आ के वेख आपणा जहान, जहालत भरी सर्ब लोकाईआ। नज़री आए ना किसे काहन, गोपी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जिस गृह लख चुरासी दिती बहाईआ। घर आपणा वेखण आवांगा। निरगुण निरवैर रूप धरावांगा। दो जहानां कर के सैर, लोकमात डेरा लावांगा। कलयुग मेट अख़ीरी कहर, मेहर मेघ इक बरसावांगा। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के ज़हिर, अमृत रस इक भरावांगा। कोई रहिण ना देवां ऐर ग़ैर, गुरमुख गुरमुखां नाल मिलावांगा। अन्तिम पूरा कर के गेड़, लख चुरासी गेड़ भवावांगा। सब दा लहिणा देणा नबेड़, गुरमुख चोली इक सुहावांगा। पुरख अकाल ना लावे डेर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमावेगा। प्रभ सच कार कमाएगा। निरगुण नूर जोत प्रगटाएगा। गुर अवतार धीर धराएगा। पीर पैगम्बर वेख वखाएगा। शरअ शरीअत मेट मिटाएगा। सच हदीस इक पढ़ाएगा। बीस बीस रंग रंगाएगा। राग छत्तीस नैण शरमाएगा। साचा गीत इक अल्हाएगा। मन्दिर मसीत पन्ध मुकाएगा। हस्त कीट वेख वखाएगा। ऊँच नीच डेरा ढाहेगा। जन भगतां कर के पूरी रीझ, सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाएगा। सच करनी कार कमावांगा। जग भगत वछल अख्वावांगा। अछल अछल्ल वेस वटावांगा। नर नरेश नाउँ धरावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। करोड़ तेतीस फड़ हिलावांगा। साची रीत इक समझावांगा। लख चुरासी जीत, आपणा हुक्म इक वरतावांगा। माण दे के इक इकीस, एका इक्की आपणी पावांगा। हरिजन कर के पतित

पुनीत, पत्तण साचे आप तरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सतिजुग साचा राह वखावांगा। सतिजुग साचा मार्ग लग्गेगा। कलयुग कूड़ा मुख ढकेगा। साहिब सूरा सतिगुर इक्को उठेगा। भगत भगवान इक दूजे उते तुठेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, छोटयाँ बाल्यां आपे पुच्छेगा। छोटे बाले दए दिलासा, धीरज धीर धीर धराईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ा हासा, कूड़ी सृष्टी कूड़े धंदे लाईआ। जिन्हां प्रभ मिलण दी रखी आसा, तिन्हां साहिब सतिगुर मिले चाईं चाईंआ। एहो प्रभ दा अजब तमाशा, जीव जंत समझ कोए ना पाईआ। धर्म राए दा डूंघा खाता, मनमुखां नाल भराईआ। सचखण्ड दा वड्डा हाता, थोड़े सिख बहाईआ। जिन्हां जोड़े चरण नाता, तिन्हां रंग रंगाईआ। पढ़न लिखण दी नहीं गाथा, जो करनी कर वखाईआ। छोटयाँ वड्डुयां एथे ओथे रहे कोई ना घाटा, प्रभ ख़ाली भाण्डे रिहा भराईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल बणया पिता माता, तिन्हां धक्का दे ना कोए डराईआ। सदा सदा सद नज़री आवे साख्याता, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। सब दीआं पूरीआं करे आसा, असल विच्चों असल आपणा आप वखाईआ। श्री भगवान बण के पिता माता, भगत भगवन्त गोद उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन करनीउँ बिन भगतीउँ बिन शक्तीउँ बणया धुर दा साथा, दरगाह साची संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दूर दुराडीआं कट के वाटां, वाट पिच्छे वटांदरा आपणा प्रेम कराईआ।

* ७ माघ २०२० बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह पिण्ड गडीआं ज़िला गुरदास पुर *

जुग चौकड़ी मुक्के झेड़ा, झगड़ा मात रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा गेड़ा, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप आदि जुगादि सञ्झ सवेरा, जोती नूर तेरा रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। तेरा खेल नित नवित्त गुरु गुर चेरा, चेला गुर आप हो आईआ। भगत भगवान बन्ने बेड़ा, सद आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी मुक्के पन्ध, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा छन्द, निरगुण सरगुण राग अलाईआ। वस्त अमोलक धुर दी वंड, लख चुरासी झोली भराईआ। अन्तर आत्म दे अनन्द, अनन्द इक्को इक समझाईआ। निर्मल जोत चाढ़ चन्द, घर घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी जाए मुक, लोकमात रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण सुहाए आपणी रुत, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ।

भगत भगवान गोदी चुक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उजल कर मात मुख, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सो वेला अन्तिम आया ढुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी करे याद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर करन फ़रयाद, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। गुर अवतार मंगण दाद, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। भगत कहिण भगवान रच काज, जग साची खेल वखाईआ। कूड़ी क्रिया मेट समाज, माया ममता डेरा ढाहीआ। सन्त सुहेले साजण साज, साची दे इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। जग कहे प्रभ मार्ग ला, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रला, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे मंगदे गए दुआ, निउँ निउँ सजदा सीस निवाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवां, मेहरबान तेरे हथ्थ वड्याईआ। जगत अन्धेरा दूर करा, कलयुग कूड़ रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई आप समझा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पर्दा लाहीआ। धुर दा मन्दिर इक वखा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। सच कलमा इक पढ़ा, नबी रसूल रहे जस गाईआ। साचा मन्त्र इक दरसा, आत्म ब्रह्म करे जणाईआ । साचा मन्दिर इक प्रगटा, जिस घर ऊँच नीच राउ रंक बहि के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाईआ। जुग चौकड़ी मंगे दान, कलयुग देवे अन्त दुहाईआ। किरपा कर श्री भगवान, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। प्रगट हो वाली दो जहान, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। नज़री आए इक्को काहन, लख चुरासी गोपी मात प्रनाईआ। ग़रीब निमाणयां देवीं माण, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी करे अरदास, प्रभ तेरे अग्गे अरजोईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, पंज तत जाणे भेव ना कोई आ। जन भगतां सदा वस पास, आप आपणे जिहा होईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर घर साचे देणी ढोईआ। चार जुग रहे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख सिरजणहार, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। काग़द कलम गई हार, शाही आपणा हाल सुणाईआ। साचा दिसे ना कोई मीत मुरार, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। समुंद सागर डूंघी गार, कलयुग भँवरी पार ना कोए कराईआ। नज़र ना आए तेरा दुआर, दरवाज़ा सच ना कोए खुल्हाईआ। घर घर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता डेरा कोए ना ढाहीआ। भरमे भुल्ला नर नार, नर नरायण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। ठांडा दर तेरा भगवन्त, भगवन इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी तेरा जीव जंत, चारे खाणी सोभा पाईआ। चारे बाणी तेरा मंत,

मन्त्र इक्को नाम दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म साचे कन्त, कन्तूल तेरी इक सरनाईआ। लोकमात बणा साची बणत, साची सिख्या इक समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निरअक्खर दे दृढ़ाईआ। गढ़ टुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्को नज़री आईआ। दर स्वामी तेरे मंगत, भिखक रूप झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जुग चौकड़ी दर तेरे मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी मंगे मंग, ख़ाली झोली इक वखाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। लख चुरासी दिसे नंग, हरि का नाम ओढण सिर ना कोए टिकाईआ। काया मन्दिर अन्दर धुन आत्मक वज्जे ना कोए मृदंग, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। आत्म सरोवर धारा चले ना कोई गंग, सुरस्ती रूप ना कोए वटाईआ। घर प्रकाश ना चढ़े चन्द, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। नौ दवारे कोई ना वेखे लँघ, बज़र कपाटी कुण्डा ना कोए खुलाईआ। दसवें सोहे ना कोए पलँघ, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाईआ। सुरती शब्दी कोए ना करे कारज अनन्द, अनन्द कारज वेखे जगत लोकाईआ। आत्म परमात्म ढोला गीत कोए ना गाए छन्द, शहिनशाह तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर अलख सच जगदीश, जगदीशर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। सब दे ख़ाली होए खीस, धन दौलत नाम ख़ज़ाना हथ्थ ना कोए वखाईआ। प्रभ सरनाई लग्गे ना किसे प्रीत, सतिगुर शब्द ना कोए कमाईआ। कूड़ी क्रिया सब दे वसी चीत, मन ठगौरी इक वखाईआ। जगत वासना कीता कौड़ा रीठ, अमृत रस ना कोए भराईआ। झगड़ा प्या ऊँच नीच, ज़ात पात करे लड़ाईआ। तेरा भेव समझे ना कोए ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न ना कोए वखाईआ। तैनूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, काया काअबा घर विच घर वेखण कोए ना आईआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी तेरी कार समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जुग चौकड़ी तेरी आस रखाईआ। जुग चौकड़ी रखी आस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहे जणाईआ। सदी चौधवीं वसे पास, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। बीस बीसा खेल करे खास, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, जोती जोत करे रुशनाईआ। दो जहान मण्डल मण्डप गगन गगनंतर पावे रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। भगत भगवन्त बण के दासी दास, निउँ निउँ सेव कमाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरनां देवे इक्को दात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नाम दृढ़ाईआ। पतन उतारे धुर दे घाट, माही बण के नूर खुदाईआ। लख चुरासी विच्चों लए राख, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी झुके सीस, प्रभ चरण मिले वड्याईआ। सदी सदीवी रही बीत, वेला वक्त दे समझाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को गाए तेरा गीत, दूजा नाद ना कोई वजाईआ। इक्को कलमा इक्को हदीस, कायनात इक पढ़ाईआ। इक्को कर्म तेरा बख्शीश, रहमत इक्को नज़री आईआ। इक्को चरण इक प्रीत, इक इष्ट देव दे समझाईआ। इक्को मन्दिर इक मसीत, गुरदवारा इक्को नज़री आईआ। इक्को हस्त इक्को कीट, इक्को ऊँच नीच समाईआ। इक्को चाढ़े रंग मजीठ, पारब्रह्म ब्रह्म उतर कदे ना जाईआ। इक्को वसया हर घट चीत, लख चुरासी पड़दा लाहीआ। नौ सौ चुरानवे जुग तेरी करदे रहे उडीक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। परवरदिगार वेख आपणी तारीख, तरीके आपणे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण हो सहाईआ। जुग चौकड़ी कहे प्रभ खोल्ह ताक, मेहरवान तेरी शरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख के गए भविक्खत वाक, वाक्य तेरा मात जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। दो जहानां करे वस, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनाईआ। लख चुरासी शब्दी डोर पाए नथ्थ, आत्म परमात्म गंढु वखाईआ। नाम जणाए बोध अगाध महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्दी शब्द चलावे रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग देवे मथ, नाम मधाणा इक रखाईआ। सतिजुग साचे खोल्ह अक्ख, नेत्र लोचण दए प्रगटाईआ। जन भगतां अमृत आत्म दे के रस, निझर झिरना इक झिराईआ। चार वरनां कर इकट्ठ, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। चौदां लोकां वेख हट्ट, चौदां तबकां पड़दा लाहीआ। सृष्ट सबाई दे मति, ब्रह्म मति इक समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। तन नगारे मारे सट्ट, शब्दी राग इक सुणाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, घर घर दीप करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, तृष्ना मेटे थाउँ थाईंआ। खेले खेल शाहो शाबास, शहिनशाह आपणी धार चलाईआ। पूरा करे भविक्खत वाक, वाकिफ़कार आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई बणाए इक जमात, पट्टी इक्को इक समझाईआ। जुग चौकड़ी कहे प्रभ साचे ठाकर, हरि तेरी सच सरनाईआ। कलयुग भँवरी डूंघा सागर, तुध बिन तरन कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणदे रहे सौदागर, जुग चौकड़ी वणज कराईआ। इक्को कूक दस्सदे रहे करीम कादर, करता करनहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी करे आदल, अदालत आपणी इक लगाईआ। जुग चौकड़ी कहे प्रभ कर अदल, इन्साफ़ तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी धारा बदल, सच सुच्च इक समझाईआ। तेरे नाम दी गाईए गज़ल,

गर्ज़ तेरे नाल रखाईआ। जन्म मरन दी मुक्के मज़ल, मंज़ल तेरी चढ़ चढ़ दर्शन पाईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़ी कूड़ी अज़ल, ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील संग ना कोए रखाईआ। तेरी रहमत तेरा फ़ज़ल, फ़ाज़ल तेरी इक सरनाईआ। खेल वेख मक्तूल कातिल, कत्लगाह दिसे सर्ब लोकाईआ। तेरा जलवा नूर बातन, बैतल मुक्दस इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जुग चौकड़ी तेरा ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी कहे प्रभ कर मुआफ़, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। उम्मत उम्मती होई गुस्ताख़, गुस्सा गिला कर कुरलाईआ। पीर पैगम्बर जो गए आख, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई ना सके भाख, भाषा आपणी बैठे बदलाईआ। तेरे मिलण दी रखे कोई ना ख़ाहिश, ख़ालक ख़लक तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी कहे प्रभ किरपा कर, मेहरवान ठाकर तेरी सरनाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह दर, दर दरवाजा इक जणाईआ। सतिजुग बणा आपणा घर, जिस घर बहि बहि ख़ुशी मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जाए झड़, झगड़ा रहे ना जगत लोकाईआ। आसा तृष्ना माया ममता जाए सड़, मन का मणका दे भवाईआ। हउमे हंगता टुट्टे गढ़, साची संगत आप मिलाईआ। लेखा जाण चोटी जड़, आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवान साचे फड़, जुग चौकड़ी विछड़े लए मिलाईआ। लेखा चुक्के सीस धड़, पंज तत ना कोए जुड़ाईआ। इक्को अक्खर लैणा पढ़, तेरा नाम ढोला गाईआ। किरपा निधान दे वर, शाह सुल्तान दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साडा लेखा लेखे लाईआ। जुग चौकड़ी बणे मज़दूर, बण चाकर सेव कमाईआ। पिछला पैंडा रिहा दूर, अग्गा नेरन नेर दे वखाईआ। प्रगट हो के हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा मेल मिलाईआ। तेरा विछोड़ा करे मज़बूर, मज़बूरी भगतां दे कटाईआ। इक्को बख़्श आपणा नूर, जहूर इक्को कर रुशनाईआ। साचा बेड़ा भर के पूर, प्रभ आपणे कंध टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर दुआर तेरा नज़री आईआ।

* ७ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

दरबार वेख लग्गा सचखण्ड, चाउ घनेरा नज़री आईआ। गुर अवतार कहिण धन्न भाग जे मुक्कया पन्ध, मंज़ल पहुंचे सच्ची आईआ। अन्दर लँघदयां वेखी कच्ची इक्को कंध, मिटी ख़ाक नाल बणाईआ। नेत्र खोल्ह वेख्या उस दे ओहले

चन्द, बेताब नूर रुशनाईआ। नेत्र नैण गए संग, हैरानी इक्को वार छाईआ। की कीता खेल सूरे सरबँग, बेपरवाह दया कमाईआ। जिस दे गृह कैहन्दे भुख नंग, उस दर बैठा आसण लाईआ। सच प्रीती रिहा मंग, बण मांगत बेपरवाहीआ। जिध्धर वेखीए लाए अंग, अंगीकार इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। पन्ध मुक्कया आए डेरे, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। सोहणे लग्गे साफ़ खेड़े, जिस गृह बैठा डेरा लाईआ। चाउ वेखीए हुण घनेरे, घर वज्जदी नाम वधाईआ। चढ़दे वेखे सारे बेड़े, खुशीआं राग अलाईआ। चरण कँवल आए नेड़े, निउँ के सीस निवाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर आ गए घेरे, बाहर निकल कोए ना जाईआ। बंधे गए बिन रस्सीउँ जेड़े, तन्दी तन्द नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी रिहा कमाईआ। बिन तन्दी डोरी ल्या बन्न, बन्नणहारा नज़र किसे ना आइंदा। बाहरों वेखीए नेत्र अन्न, अन्दर नूरो नूर डगमगाइंदा। दो जहानां तक्कीए सब दा जननी जन, जन इक्को इक आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाइंदा। साचा खेल वेखण आए, आवण जावण समझ किछ ना पाईआ। पहला लेखा गए मुकाए, अग्गे खुशीआं गीत इक अलाईआ। दर ठांडे लागे पाएं, घर इक्को सोभा पाईआ। साहिब दयाल होए सहाए, ठाकर मेहर नज़र उठाईआ।

२६३

१६

निरगुण नूर नज़री आए, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सच सिँघासण रिहा विछाए, सोभावन्त आप सुहाईआ। शब्द इशारे नाल जणाए, अन्जाणत बूझ बुझाईआ। नेत्र खोल्ह वेख रघुराए, नज़री आईआ। आदि जुगादि जोत जगाए, घड़न भंनणहार वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह दर्शन पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणी दए जणाईआ। दर्शन पा बोलया नानक, निरगुण इक्को नाम जणाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी बणे रहे अमानत, सो साहिब वेस वटाईआ। सच दवारे करे अदालत, हुक्म हाकम इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अलामत, सच सुच्च इक दृढ़ाईआ। मूर्ख कोई ना रहे अहिमक, ब्रह्म मति इक अख्वाईआ। लेखा जाणे धोती टिक्का बोदी तहिमत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। पीर पैगम्बरां समझाए नाल सैनत, शब्दी शब्द निशाना इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आपणी वखाईआ। रचना वेख नानक निरगुण धार, इकावन बावन रिहा जणाईआ। नेत्र खोल्ह करो दीदार, दरस दीदारी इक्को नज़री आईआ। जिस दी सिफ्त करदे रहे जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान लेख लिखाईआ। जिस दा नाउँ बोलदे रहे जैकार, निरगुण सरगुण ढोला गाईआ। जिस दे मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले करदे रहे त्यार, सो मुजरा हुजरा इक्को हक़ वखाईआ। जिस नूं लाअशरीक कैहन्दे रहे

परवरदिगार, बेनज़ीर नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी मन्नदे रहे सांझा यार, सच तौफ़ीक इक खुदाईआ। जिस नूं गुर अवतार करदे रहे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दे दर विष्न ब्रह्मा शिव रहिण भिखार, नित नवित्त ख़ाली झोली आपणी डाहीआ। जिस दा हुक्म रहे सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेट ना कोए मिटाईआ। जिस दा खाणी बाणी सदा आधार, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज बैठा डेरा लाईआ। जिस दा सूरज चन्द नूर उज्यार, रवि ससि जोती जोत रुशनाईआ। जिस दा दो जहाना सच अखाड़, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। सो साहिब खेल करे निरगुण धार, जोती जाता वेस वटाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शहिनशाह इक्को हुक्म वरताईआ। हुक्मे अन्दर पसर पसार, निरवैर पुरख आप कराईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करो ख्याल, नानक निरगुण इक जणाईआ। जो सब दा बणया रिहा दलाल, सदा सदा साचा वणज कराईआ। जिस दी हकीकत हक़ हलाल, हालत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नानक निरगुण कहे करो ध्यान, गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव रहिण ना पाईआ। जिस किरपा कर लेखा दित्ता तरखाण, लालो लालण आपणे रंग रंगाईआ। अज्ज उस नूं वेख्या आण, जिस वेक्खयां वेखणहारा नज़री आईआ। बिन रसना जिह्वा बोलो ज़बान, दरे दरबार प्रभ तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल करे महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, कोझे कमल्यां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार लओ तक्क, नानक निरगुण आप जणाईआ। वेखो प्रेम प्रीत दा मिले हक़, श्री भगवान झोली पाईआ। जिस लकड़ी उत्तों लाहे सक्क, तिस सगला मेल मिलाईआ। जिस दो दो चीर फाड़ दित्ते घत्त, तिस दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जिस सच प्रीती अन्तर आपणी निचोड़ी रत्त, तिस रत्ती रत्त लेखे लाईआ। जिन सीस चरणां उते दित्ता रख, तिस सीस जगदीश आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी मनाईआ। घर साचे खुशी मनाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण हो के देवे साथ, सरगुण संग निभाईआ। दर दर आ के पुच्छे वात, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार कहिण लालो दस्स कुहाढ़ा, जिस दा हथ्था हथ्थ उठाईआ। लालो कहे मेरा उह प्यारा, जिस मेरी बणत बणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा धुर दा यारा, लग्गी यारी तोड़ निभाईआ। गुर अवतार कहे दस्स किथे आरा, जो चीर दुफाड़ कराईआ। लालो कहे मेरा करनेहारा, मेरे हथ्थ ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाल कहे मेरी धुर दी कारा, जन भगतां होवां सहाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण दस्स केहड़ा तेसा, तिक्खन तिक्खी धार रखाइंदा। लालो कहे मेरा प्रभ मिलण दा पेशा, दूजी कार ना कोए कमाईआ। श्री भगवान कहे मैं उजड़या वसावां देसा, जिस घर आपणा चरण टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण लालो दस्स उह सत्थरा, जिस नाल सुराख लगाईआ। लालो कहे प्रेम प्रीती अन्दर होया पध्धरा, मैनूं सार कोए ना आईआ। श्री भगवान कहे मैं तिन्हां पूरीआं करां सधरां, आसा मनसा मेट मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण लालो दस्स उह वरमा, जो गेड़ा गेड़े नाल भवाईआ। लालो कहे मैं सतिगुर झोली पाए आपणे कर्मां, कर्म कांड रहिण कोए ना पाईआ। श्री भगवान कहे मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवां सरना, सरनगति इक्को इक रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण लालो दस्स उह कांडी, जिहड़ी आपणे हथ्थ टिकाईआ। लालो कहे मैं सतिगुर भेंट चढ़ाई आपणी काया हाण्डी, जिस दर रिध्धा पक्का मुक्क कदे ना जाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तारां भगतां आंढी गुआंढी, जिन्हां आपणा दरस दिखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण दस्स जाच, लालो इक्को वार समझाईआ। लालो कहे मेरे प्रभ कोलों पुच्छो बात, जो सब दा पिता माईआ। पुरख अकाल कहे मैं हर घट वेखां मार झात, दर दर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप जणाईआ। धन्न भाग आए गुरू अवतार, हरि अवतारी मेल मिलाईआ। पहला छड्ड सर्ब विहार, विवहारी आपणा खेल वखाईआ। आओ वेखो मिलदे यार, यार विंछड़े मेल मिलाईआ। बिन भगतीउँ करे प्यार, बिन शक्तीउँ रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ। आओ वेखो तक्को नैण, नैणां वालयां नैणां नाल वखाईआ। जिस नूं बेपरवाह सारे कहिण, सो बेपरवाही विच समाईआ। जन भगतां देवे पूरब लहिण, देणा आपणे कोलों वरताईआ। नाता जोड़ साक सज्जण सैण, हरि सगला संग निभाईआ। सच दवारे सो गुरमुख सच्चे रहिण, जिन्हां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। आओ वेखो तक्को तदबीर, हरि करता आप जणाईआ। वेंहदयां वेंहदयां सारयां बदल देवे तकदीर, ताकत आपणे नाल मिलाईआ। मंज़ल चाढ़ चोटी अख़ीर, आखर आपणे घर बहाईआ। नूर नुरानी लासानी वखाए आपणी तस्वीर, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। आओ तक्को घर सच नज़ारा, साहिब सतिगुर आप वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा लभ्भया ना कोई किनारा, कागज़ कलम शाही अन्त कोए ना पाईआ। नित नवित्त जुग चौकड़ी जो भेजदा रिहा गुर अवतारां, पीर पैगम्बर हुक्म वरताईआ। मुकामे हक़ सचखण्ड निरगुण नूर जोत जो दिसे परवरदिगारा, आप

आपणा वेस वटाईआ। बिन नेत्र लोचण नैण देवे दीदारा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल जैकारा, दो जहानां राग सुणाईआ। महल अटल सुहाए इक मनारा, दीवा बाती जगे अगम्म अपारा, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड निवासी एक एकँकारा, करे खेल विच संसारा, समुंद सागर फोल फुलाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाईआ। उठो तक्को वेखो प्रताप, परम पुरख दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। नित नवित्त आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा जपया जाप, सो जगजीवण दाता आपणा खेल रचाईआ। कोटन कोटि जन्म दे मेट पाप, पतित पुनीत ठांडे सीत रिहा कराईआ। अचरज चलाए आपणी रीत, ना गिरजा ना मन्दिर मसीत, काया बंक इक्को गुरूदवारा सोभा पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दस्से रीत, रीतीवान आपणी कार कमाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक एका दर रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, पड़दा इक्को वार चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए हैरान, इक दूजे वल नेत्र नैण उठाईआ। वेखो भाग लग्गा तरखाण, तरखाण हो के हरि जू फेरा पाईआ। जिस दा रूप नजर ना आए बिरध बाल जवान, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। सूरत मूर्त सके ना कोए पहचान, बाहों फड़ दए ना कोए वखाईआ।
२६६ जोती नूर जगाए महान, निरगुण जोती जामा पहने आण, शब्दी डंक धार सुणाईआ। सन्त सुहेले मेले आण, गुरु गुर चेले २६६
१६ करे पहचान, बेपहचान आपणे रंग रंगाईआ। दर दवारे देवे माण, एहो खेल श्री भगवान, जिस दी सार किसे ना पाईआ। १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लालो कहे मेरे साहिब गुर, पीर पैगम्बरो दयो वड्याईआ। जिस नाल प्रीती मेरी गई जुड़, सो जोड़ी तुहाढ्ढे नाल रलाईआ। जे चार जुग रखाई थुड़, हुण पूरी लओ कराईआ। सच दवारयों ख़ाली कोई ना जाए मुड़, मुड़ के आया भर भर झोली आपणा घर भराईआ। साहिब सुल्तान पुरख अकाल निभावणहारा तोड़, तुटी आपणी गंढु पवाईआ। उस अग्गे नहीं कोई ज़ोर, रहमत विच सर्ब लोकाईआ। जिस दा मन्त्र फ़ुरना फुरे फोर, फौरन आपणा हुक्म समझाईआ। नेत्र तक्को कर के गौर, गहर गम्भीर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लालो नाल करन सलाह, सच सच्च मता पकाईआ। सानूं दस्स तैनूं किवें मिल्या आ, क्यों तेरी करे वड्याईआ। लालो कहे मैं सुकयां टुक्कड़यां नाल नानक ल्या मना, जिस दे पिच्छे मेरी बणत बणाईआ। मैं एहो देवां सलाह, साहिब अग्गे करो ना कोई चतुराईआ। सदा मन्नो उहदी इक रज़ा, रहमत सदा सदा सदा वरताईआ। कोटन कोटि बख्शणहारा गुनाह, बख्शिश

इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सुण के बचन सुक्की रोटी, सारे रहे खुशी मनाईआ। वेखी प्रभ दी धार निर्मल जोती, रचना की रचाईआ। जगत विछुंनी सुआणी उठाई सोती, सुत्यां जाग खुल्हाईआ। जिस नूं कहिण तरखाण लोकी, तिस दी तृखा आप बुझाईआ। कलयुग अन्तिम बण के उस दा गोती, फिर आपणा मेल मिलाईआ। दो जहानां विच वासना रहे ना खोटी, खोट्टयां खरे रिहा बणाईआ। शब्द इशारे मारे सोटी, खण्डा इक्को नाम चमकाईआ। सेली भूरी ना कोई टोपी, शब्दी धार चलाईआ। वीह सौ उन्नी बिक्रमी ढाई गज़ दुप्पटा दो जहान लंगोटी, लोक परलोक पड़दा रिहा पाईआ। एह धार किसे ना सोची, हरिजू की की खेल वरताईआ। लालो नाल रलया रविदास चम्यारा मोची, तोपे गंढ्ढे वाहो दाहीआ। ब्राह्मण गंगा चों भरन गया लोटी, आपणा आप आया लुटाईआ। कंगण पिच्छे मति होई होछी, होछी कार कमाईआ। पुरख अकाल दुरमति मैल बण ठाकर हो के धोती, आपणी हथ्थीं साफ़ कराईआ। सारयां दी सोभा बण के बण जाए इक पोथी, जिस पोथी दी जगत करे पढ़ाईआ। बोलण विच्चों प्रभ मिलण दी घाटी औखी, औझड़ राह पार ना कोए लँघाईआ। जिन्हां किरपा कर के आपणी जात दस्सी सौखी, घर सुत्यां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी करनी पिच्छे जन भगतां कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण, की होया अचरज हरि जू खेल रचाईआ। किथों रविदास आया मोया बनाररसी थेटा, गंगा लहर आपणी लहर वहाईआ। किथों लालो निरगुण लभ्भा बेटा, नानक विचोला इक समझाईआ। पुरख अकाल मेल मिला के आपणी जोता, जुगती इक्को वार समझाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर मारो गोता, दो जहान विच्चों नज़री आईआ। प्रभ दा रूप नज़र आवे ना वड्डा ना छोटा, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वखाईआ। खेल वेख होए प्रसिंन, प्रसंनता सब नूं नज़री आईआ। प्रभ ने कढ्ढे कीते तिन्न, त्रैगुण बैठी मुख शरमाईआ। जिन्हां दा सति सरूप पुरख अकाल चिन्न, चिन्ता अवर ना कोई रखाईआ। जन्म जन्म लँघाए गिण गिण, गिणती आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां मन्त्र इक त्रिलोकी, जिस दी सोच किसे ना सोची, खेल करे ब्रह्मण मोची, तरखाण घड़ के दिती सोटी, जट्ट बन्न के ढाई गज़ लंगोटी, चोटी सब दी वेख वखाईआ। पुरख अकाल दी इक्को जोती, घट घट इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, होछी मति ना कोई जणाईआ।

* ८ माघ २०२० बिक्रमी अछर सिँघ दे गृह अलड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

भगत नूरानी जलवा तक्क, दर दरबार जस रहे सब गाईआ। जिन्नां मिलदा धुर दा हक़, हकीकत निउँ निउँ सीस झुकाईआ। परम पुरख प्रभ देवे साथ, सगला संग निभाईआ। लख चुरासी विच्चों रख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। निज नेत्र खोल्ह अगम्मी अक्ख, बिन अक्खां मेल मिलाईआ। सच्चा मार्ग आप दस्स, पांधी आपणे पन्ध चलाईआ। अमृत आत्म इक्को रस, रस रसीआ मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान सहाई होया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर नवां नरोया, रूप रेख नज़र कोई ना आईआ। आलस निंद्रा विच कदे ना सोया, सुती वेखे सर्ब लोकाईआ। धुर दा बीज इक्को बोया, जन भगत आप प्रगटाईआ। तन मन सीज सीतल होया, सीतल धारा आप वहाईआ। दर दहिलीज़ अन्दर सच दवारे आप खलोया, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। धुर फ़रमाणा लै के आया ढोआ, हरि हरि नाम इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। मेहरवान दया कमा, नेहकर्मी कर्म कमाइंदा। सन्त सुहेले जगत जगा, जीवण जुगत इक दृढ़ाइंदा। फड़ फड़ बाहों राहे पा, रहिबर इक अख्वाइंदा। भगत वछल हरि इक खुदा, ख़ालक आपणा नाउँ जणाइंदा। इक्को ढोला गाए सदा, छन्द इक्को नाम जणाइंदा। बिन बंदगीउँ करे आपणा बंदा, बन्धन पिछले तोड़ तुड़ाइंदा। सच दवारे चाढ़ चन्दा, निरगुण नूर जोत चमकाइंदा। कलयुग जगत अँध्यारा नव नौ चार अन्धा, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। फिरी दरोही विच नव खण्डां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग चढ़ाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले सज्जण वेख, हरि आपणी सेव कमाईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेतन नेत, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ । आत्म परमात्म घर मन्दिर करे साचा हेत, गृह आपणे खुशी मनाईआ। अचरज करी कलयुग खेड, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रिहा भेज, नित नवित्त सेवा लाईआ। आत्म माणे आपणी सेज, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल कराए ख़ालक, हर ख़तरा सर्ब मिटाइंदा। एथे ओथे बण के पालक, प्रितपालक रूप वटाइंदा। सरगुण होवे निरगुण सालस, दो जहानां सालसी आप कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढाए ख़ालस, ख्वाहिश भगतां पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी वेख निरँकार, दो जहान ध्यान लगाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। इक पिच्छे तारे परिवार, परम पुरख आपणी रीती नवीं बणाईआ। जिस दा मिले

लेख ना कोई लिखार, काग़ज़ नज़र कोए ना आईआ। रहोगे भिखार, साबत आपणा रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। परिवार उधारे परवर आप, परवरदिगार वड्डी वड्याईआ। लेखे लाए इक्को आप, आप आपणी गोद उठाईआ। जन भगतां पिच्छे कर के जाप, पूजा आपणा नाम बणाईआ। सीस जगदीश रखाए ताज, तख्त ताज इक्को देवे सुहाईआ। सरगुण निरगुण रखे लाज, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। नाम निधान मार अवाज़, शरअ शैतान मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा वखाईआ। हरिजन उठ दर वेख जग, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले रिहा सद्द, हुक्म संदेसा इक मनाईआ। जीव जहानों बाहर कढ्ढ, साचे मन्दिर रिहा बहाईआ। शब्द नाद सुणाए नद, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। साचे हुजरे कराए हज्ज, काया काअबा इक वखाईआ। एथे ओथे रखे लज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त होए सहाईआ। सहाई होया वेख भगवान, करोड़ तेतीसा फूल बरसाईआ। सुरप्त इन्द गाए गाण, अप्सरां चले ना कोई वड्याईआ। नेत्र लोचण नैण सर्ब तकान, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। धुर दा ढोला मिल के गाण, गहर गम्भीर मिल के राग अलाईआ। कोई समझ ना सके सुर ताल, ताल तलवाड़ा हथ्थ ना कोई उठाईआ। जिन्हां साहिब वसया नाल, सो नलायक साहिब आपणे नाल मिलाईआ। पूरब जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल वेख वखाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, अवल्लड़ी चाल आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे धंदे आपे लाईआ। साचे धंदे लग्गा वेख भगत, त्रैगुण मारे धाहींआ। मेरी मात ना रही शक्ति, शक्त खिच्ची बेपरवाहीआ। मैं चार जुग पाउँदी रही फ़र्क, गुरमुख मनमुख रूप वटाईआ। सो मेरा बेड़ा श्री भगवान कीता गरक, शौह दरया रिहा रुढ़ाईआ। भगतन करया आप बेधड़क, धड़कन कोए रहिण ना पाईआ। उच्ची कूक सारे कहिण कड़क, महाराज शेर सिंघ तेरी शरनाईआ। अद्धविचकार किसे ना जाणा अटक, राए धर्म ना दए सजाईआ। मुड़ के मात गर्भ फेर किसे ना आउणा परत, जूनी जून ना कोई भवाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर ला गए शर्त, सो शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। ओस दे उते ना कोई सोग ना कोई हरख, अग्गे हो करे ना कोई लड़ाईआ। आपणे हुक्मे अन्दर करे लिख्त पढ़त, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। सब दा वेखणहारा पिछला कर्ज़, बाकी सब दी फोल फुलाईआ। एह खेल प्रभू असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी रखी इक्को मर्ज़, दूजी मर्ज़ी रहिण कोए ना पाईआ। नेहकर्मी कम्म कीता फ़र्ज़ी फ़र्ज़, फ़र्ज़ आपणा पूर कराईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्डी वड्याईआ। वेख पंज तत रहे हस्स, तन माटी खुशी मनाईआ। धन्न भाग प्रभ साडा करे जस, जिस घर गुरमुख आत्म रिहा समाईआ। सरगुण हो के निरगुण वस, निरगुण सरगुण ढोला गाईआ। नेत्र वेख्या पुरख समरथ, लोचण आपणे दर्शन पाईआ। सेवा कीती नाल हथ्थ, पैरां पन्ध मुकाईआ। रसना जिह्वा गा के जस, बत्ती दन्द मिले वड्याईआ। सत्थर सेज वछाई सथ्थ, प्रेम विछाउणा नाल मिलाईआ। किरपा कर गूढ़ी नींद घर ठाकर लाई अक्ख, खुशीआं रैण इक विहाईआ। तरखाण दा लेखे लग्गा ओह सक्क, जिस सक्क नाल नानक भोजन ल्या बणाईआ। अग्ग डाहुण वाला नाल ल्या रख, अछर सिँघ नाम धराईआ। एह खेल नहीं धुर दा पक्ख, पूरब जन्म कर्म लेख चुकाईआ। जे देवणहारा ना देवे हक़, दूजा देवण वाला नज़र कोए ना आईआ। इक्को इक पुरख समरथ, सब दी पूरी आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जन्म विछड़यां कर इकट्ठ, इकट्ठयां इक्को घर वसाईआ।

* ८ माघ २०२० बिक्रमी बीबी लाजी दे घर, पिण्ड अलड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

सचखण्ड निवासी सुहाए अर्श, अर्शी प्रीतम नाउँ धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण रहे तरस, दोए जोड़ वास्ता सर्ब पाईआ। शब्दी गुरदेव मंगे सदा तरस, दर साचे अलख जगाइंदा। त्रैगुण माया मंगे तरस, तुध बिन मात ना कोई रखाइंदा। पंज तत मंगे दरस, तुध बिन राह ना कोए चलाइंदा। चारे खाणी मंगे तरस, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ध्यान लगाइंदा। चारे बाणी मंगे दरस, साचा राग ना कोई सुणाइंदा। चारे वेद मंगण तरस, तुध बिन सिफ्त ना कोई सलाहइंदा। चारे कुण्ट मंगण तरस, साचा रंग ना कोए रंगाइंदा। रवि ससि सूरज चन्द मण्डल मण्डप मंगण तरस, तुध बिन तारनहारा नज़र कोई ना आइंदा। ज़िमी असमान मंगण तरस, बिन साहिब सिर हथ्थ ना कोई टिकाइंदा। लोक परलोक मंगण तरस, तुध बिन बणत ना कोई बणाइंदा। राग धुन शब्द श्लोक मंगण तरस, तुध बिन तार सतार ना कोई वजाइंदा। शास्त्र सिमरत मंगण तरस, तुध बिन लेख ना कोई लिखाइंदा। अञ्जील कुरान गीता ज्ञान मंगण तरस, तुध बिन हरफ़ हरूफ़ ना कोई पढ़ाइंदा। गुरू अवतार मंगण तरस, तुध बिन सरगुण रूप ना कोई वटाइंदा। पीर पैगम्बर मंगण तरस, दोए जोड़ सर्ब वास्ता पाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मंगण तरस, चरण कँवल ध्यान सर्ब रखाइंदा। जुग चौकड़ी मंगे तरस, तुध बिन रहमत ना कोई कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे गए धुर दा तरस, बिन तेरे तरस साडी तक्सीम

ना कोई मिटाइंदा। दीन मज़्ह़ब ज़ात पात मंगण तरस, तुध बिन दूई द्वैत डेरा कोई ना ढाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मंगण तरस, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी ओट तकाइंदा। माया ममता हउमे हंगता मंगे तरस, तुध बिन निवण सु अक्खर ना कोई पढ़ाइंदा। नित नवित्त लख चुरासी जीव जंत ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल तेरा मंगण तरस, बिन तरस नज़र कोई ना आइंदा। इक्को भगत तेरे वैराग अन्दर रिहा तड़प, दूजी ओट ना कोई रखाइंदा। बिरहों विछोड़े रिहा भटक, भटकणा मात ना कोई मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। बिन ठाकर ना आवे तरस, दयावान दए समझाईआ। बिन तरस ना आवे परत, लोकमात वेस वटाईआ। बिन प्यार ना होवे भगत, भगवन खेल ना कोई कराईआ। बिन भगत राम ना करे तरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। भगत कहे ना भटकणा मेरी, मैं तेरा मेरा नज़र कुछ ना आईआ। जो वस्त प्रभ सब तेरी, तुध बिन अवर ना कोई वड्याईआ। पंज तत काया माटी ढेरी, ख़ाक तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रीती दे समझाईआ। भगत कहे भटकणा चले ना चारा, माण ताण ना कोई रखाईआ। हउँ बाली बुध जीव अञ्याणा, तेरी समझ कोए ना पाईआ। आदि जुगादि ना समझा तेरा भाणा, की तेरी वड्याईआ। इक्को तेरे उते माणा, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। शाह पातशाह तूं हरि सुल्ताना, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर देणी माण वड्याईआ। मेरी भटकणा कोई ना ज़ोर, बल नज़र कोई ना आईआ। तेरे हथ्थ प्रभू सच डोर, तन्दी तन्द तूही सतार हिलाईआ। कर किरपा आपे बौहड़, बौहड़ी कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। श्री भगवान कहे मैं देवां भटकण, काया भाण्डे आप टिकाईआ। दूजी रहे कोई ना अड़चन, रोड़ा सके ना कोई अटकाईआ। मात गर्भ जो उलटे लटकण, तिन्हां अग्नी तत बचाईआ। सदा मात कर के मरदन, मर्दानगी आपणी इक समझाईआ। बिरहों विछोड़े अन्दर जो तरसन, तिन्हां रहमत आप कमाईआ। नाता तोड़ सोग हरखण, चिन्ता ग़म चुकाईआ। इक्को दे के साख्यात दर्शन, पहला लेख साफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तरस आप कमाईआ। दया अन्दर कमाए तरस, श्री भगवान होए सहाईआ। लेखा जाण अर्श फ़र्श, दो जहानां खोज खुजाईआ। जन्म जन्म दी मेट हरस, हैसीअत आपणे नाल मिलाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, जग भटकणा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा कूड़ा फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। फ़ैसले अन्दर होवे हुक्म, हरि हाकम आप जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख सच्चा तुख्म, तासीर आपणे नाल रखाइंदा।

लख चुरासी विच्चों आया पुच्छण, फड़ फड़ आपणा भेव खुलाइंदा। हरिजन कोई ना देवे लुकण, लुकयां आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर प्रेम कदे ना आवे तुट्टण, सदा टुट्टयां गंढु वखाइंदा। निरगुण धारों आवे उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दिशा नज़र किसे ना आइंदा। जिन्हां बणाए आपणे पुत्तर, पिता हो गोद सुहाइंदा। हरिभगत घर घर मनाए शुकर, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। बेशक गुरमुख जावे मुक्कर, श्री भगवान भुल्ल कदे ना जाइंदा। लालो दा याद अजे टुक्कर, टुकड़े झोली आपणा आप भराइंदा। एह लालो दा ओस वेले दा फुफड़, जिस भाई भाई संग जोड़ जुड़ाइंदा। एह कच्छे मारी फिरे कुकड़, कुकड़ बांग दे सुणाइंदा। नानक पुछिआ की ए गोदी तेरा पुत्तर, जो हरि का नाम ध्याइंदा। ओस वेले गया मुक्कर, मुख पिच्छा दे भवाइंदा। नानक किहा ना बण रुढ़ड़, रुस्सया कम्म किते ना आइंदा। लालो किहा नहीं मालक एह मेरा फुफ्फड़, फरक विच कोई नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, अगला भेव आप खुल्हाइंदा। नानक कहे सुण जबील, की तेरी वड्याईआ। ओह कहे मेरी इक दलील, दिल दा हाल सुणाईआ। जे तूं बणया मात वकील, कूड़ा झगड़ा रिहा मुकाईआ। वेख मेरे कुकड़ उते लाल रंग दी ज़री शनील, कल्गी कल्गी रिहा हिलाईआ। मेरी तेरे अग्गे इक अपील, मैं तेरी भेंट चढ़ाईआ। एह है बड़ा असील, जे नानक खावें तैनूं ठंडा दए कराईआ। नानक किहा इस दी एहौ इक अख़ीर, जो मेरी सरनी आईआ। लालो नाल बदला एहदी तकदीर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची दस्स इक तदबीर, साचा राग सुणाईआ। एहनूं ज़बा करे ना कोई शमशीर, शरअ हलाल ना कोई वखाईआ। करद फड़े ना कोई कलमा पढ़ के पंज पीर, पंजा एहदे उते ना कोई रखाईआ। मैं इस दी कटनी भीड़, भीड़ी गली पन्ध मुकाईआ। लालो नाल एहदी खिच्ची चिटे उते लकीर, लेखा लेख धुर दा पाईआ। लेखे लावां अन्त अख़ीर, अख़ीर आपणा सास ग्रास वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। कुकड़ कहे नानक मेरी कल्गी, बगल विच रिहा हिलाईआ। तैनूं वेख मैनूं भुल्ली गर्मी सर्दी, सर्दी रुत्त तेरे प्रेम विच मंग मंगाईआ। नानक किहा तेरा बणे उह दर्दी, जिहड़ा मेरी सर्दी रिहा गंवाईआ। मैं वी ओसे दर दी बरदी, नार सुहागण रूप वटाईआ। मैं पंज तत काया चोला पहनया फ़र्ज़ी, मेरा शहिनशाह इक्को रंग रंगाईआ। जिस ने बख़्शिश कीती तेरी आत्म मरदी मरदी, मर्द आपणे नाल रखाईआ। तेरी ज़बान वेखी इक्को राग पढ़दी, तूही तूं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दर वड्डी वड्याईआ। कुकड़ कहे मैनूं कैहन्दे मुरगा, मुगलीआ ख़ानदान वाले जणाईआ। बेशक मैं दो टंगां नाल तुरदा, भज्जां वाहो दाहीआ। आपणी कल्गी वेख झुरदा, कल्गी वाला नज़र ना आईआ। जन्म

३०२

१६

जन्म विच मेरा बेड़ा रुढ़दा, फड़ बाहों पार ना कोई कराईआ। कर के ज़बाह मेरी गर्दन डूंघे खाते विच जगत जहान सुट्टदा, हड्डीआं स्वाद लगाईआ। मैं सुणया तूं भोग लगाया लालो रोट दा, कोधरा खुशीआं नाल खाईआ। एसे कर के दरस तेरा लोचदा, लोचा पूर देणी कराईआ। सतिगुर नानक कहे मैं तेरी सोच सोचदा, तैनूं सच दयां समझाईआ। जो मालक लोक परलोक दा, सो होवे तेरा सहाईआ। जिस कोल ख़ज़ाना थोक दा, गुर अवतार पैगम्बरां रिहा वरताईआ। एह खेल ओस दी खोज़ दा, जो मुफलसां नाल मेरी यारी लाईआ। तेरा हाल वेख निर्दोष दा, तरस मेरे अन्दर आईआ। रस आवे तेरी बांग झोक दा, सदा तेरी मोहे भाईआ। तेरा लेखा चुक्के अन्तिम जन्म जन्म दे रोग दा, रोगी हो के रोगीआं दए रोग गंवाईआ। तेरा लहिणा निरगुण जोत दा, पंज तत होए सहाईआ। लेखा मुक्के लालो रोट दा, गृह झूठा दए मुकाईआ। यार बणावे जगत लंगोट दा, नाता भईआ भाई जुड़ाईआ। एह खेल प्रभू ख़ामोश दा, जो ख़ाह मख़ाह किसे ना बात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन भगतां तरस सदा लोचदा, लोचां भगतां नाल रखाईआ।

३०३

१६

* ६ माघ २०२० बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड अलड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

सक्क कहे मैं कढ्ढां हाढ़ा, होका दे सुणाईआ। मेरे आसे पासे लावे तिक्खा कुहाढ़ा, तिक्खी धार मुख वखाईआ। मेरीआं हड्डीआं बालण कर के प्यारा, सच पकवान दित्ता पकाईआ। तूं निरगुण सरगुण आएयों चल दवारा, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। दर तेरे करां निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरा लहिणा देणा चुक्के विच संसारा, घर साची सेव कमाईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज तेरा पसारा, हर घट इक्को नज़री आईआ। घर साचे वेख लग्गा अखाड़ा, मैं आपणा आप भेंट दित्ता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, घर इक्को दए वड्याईआ। सक्क कहे मेरी सच सकीरी, नाता लालो नाल जुड़ाईआ। मेरी समझ ना आए किसे तकदीरी, भेव समझ कोए ना पाईआ। मेरा एहो वक्त अख़ीरी, जो आपणा आप भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दे माण वड्याईआ। सक्क कहे मोहे लग्गी अग्ग, लाट आपणा रंग रखाईआ। मैं खुशीआं नाल नच्चया बण मलंग, भट्ठी अन्दर भज्जा वाहो दाहीआ। नीवां हो हो मंगां मंग, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। धन्न भाग मेरा लेखे लग्गा अंग, अंगीकार आपणे लेखे पाईआ। मैनूं आया सच अनन्द, खुशीआं घर बैठा गावां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, मोहे दे साची वड्याईआ। अग्ग नाल मैं होया कोला, आपणा रूप वटाईआ। वड्डयों होया निक्का थोड़ा, छोटी मति रखाईआ। टोटे टोटे होया जोड़ा, अंग अंग आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। कोला कहे मेरी बणे स्वाह, ख़ाक रूप वटाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब नूं करां सफ़ा, कूड़ी क्रिया मैल धवाईआ। इक्को नानक मंगणा विच गवाह, शहादत साचे घर भुगताईआ। चवी मग्घर लेख चुका, इकीआं रंग रंगाईआ। तेई मग्घर वक्त सुहा, भट्ठी चुर दिती वड्याईआ। जिस उते रिध्धा ल्या पका, श्री भगवान ल्या वरता, टुकड़े आपणे हथ्थ उठाईआ। हरिसंगत बणा गवाह, नाथेवाल मिली वड्याईआ। अज्ज ओस दा लहिणा मंगण गया आ, वेला वक्त इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे वड्याईआ। स्वाह कहे मैं होई सवालण, दर तेरे इक अरजोईआ। तेरा नूर जोत अकालण, अकल कल तेरी सरनाईआ। मैं सच दवारे आई भालण, छड्डी जगत लोकाईआ। चार जुग दी मैं निकम्मी मालण, फूलण हार तन छुहाईआ। तेरा भेत आई जानण, अन्दर वड़ के चोरी चोरी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि एका दे वखाईआ। स्वाह कहे मैं ख़ाक दी चुटकी, जुग चौकड़ी कीमत किसे ना पाईआ। श्री भगवान वेख मेरी फुरती, नाता तेरे नाल जुड़ाईआ। सचखण्ड निवासी छड्ड के आएयों आपणी कुरसी, धरनी धरत धवल डेरा लाईआ। मेरी आण खुलाई सुरती, सुरत आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी आप कमाईआ। स्वाह कहे मैं मिटी ख़ाक, वीह सौ दस बिक्रमी मिली वड्याईआ। जिस गोबिन्द नूर कीता पाक, छोटे बाले वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल बणाया मैनूं साक, आप आपणी गंढु पवाईआ। नौ दवारे खोल्ह् ताक, सच सिँघासण दित्ता विछाईआ। ओस उते मैनूं रख, अमानत आपणी ल्या बणाईआ। दस साल मैं राह रही तक्क, नेत्र नैणां नैण उठाईआ। सो वेला आया हक़, हकीकत वेखे बेपरवाहीआ। पूरब विछड़े कर इकट्ठ, लालो बंस रिहा मिलाईआ। विच्चों परम पुरख प्रभ नट्ठ, मोहे देवे माण वड्याईआ। नौ माघ इक चुटकी आपणे चरणां हेठां रख, भगत दवारयों लिआया चाईं चाईंआ। ओह आपणे लाए मस्तक मथ्थ, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। भगतां खोल्ह् अगम्मी अक्ख, आपणे नाल मिलाईआ। खुशीआं नाल नाले रोवे नाले पए हस्स, हस्ती आपणी इक्को दए जणाईआ। एह खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। लालो नूं हौली हौली पहलों रिहा दस्स, विचला भेत ना कोई खुल्हाईआ। कर किरपा मरे जीउदे जागत सोवत सारे कर इकट्ठ, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अग्गे आपणे चरणां हेठां लवें रख, जिस घर वसें बेपरवाहीआ। भाईआं नाल भाई मिलाएं साथ, साथी इक्को सगला साईंआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवणहारा साचा वर, साची राख दए वड्याईआ। राख सुण तूं होई कोला, आपणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म तेरा चुक्कया डोला, बण कहार सेव कमाईआ। तेरा पर्दा किसे ना फोला, तेरे अन्दर की की रंग भराईआ। सच प्रीती अन्दर सुणया तेरा ढोला, बोला आपणी झोली पाईआ। निरगुण बणया मात विचोला, पर्दा उहला रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। कोले तेरा रूप बणाया सक्क, साकत नज़र कोए ना आइंदा। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ चुकाया जगत, उधार ना कोई रखाइंदा। मेहरवान हो पुरख समरथ, साहिब सतिगुर दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे माण दवाइंदा। सक वेख आपणा तन, तना बनास्पत देवणहार वड्याईआ। तेरी आरज़ू लई मन्न, गुज़ारश आपणी झोली पाईआ। रसना कहे धन्न धन्न, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सक्कों तने दए वड्याईआ। तने वेख आपणा मुड्ड, हरि मुडली कथा सुणाइंदा। जिस दी किसे ना आई सुद्ध, सो भेव अभेव खुल्हाइंदा। जिथ्थे जैदिओ दिती सुद्ध, सिध्धा आपणा राह वखाइंदा। ओस पिपल बड़ थल्ले निक्का तेरा बरूटी मुढ, जिस दे उते भगत आसण लाइंदा। आसण ला हरि चरण प्रीती गया लुज, रुची साहिब नाल रखाइंदा। ओस वेले निमाणे हो के तूं ल्या पुछ, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। की तेरी भगती विच्चों मैनूं मिले कुछ, मैं तेरा भार उठाइंदा। जैदिओ किहा मैं ओहदा पुत, जो तेरा रूप लोकमात प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप दरसाइंदा। जैदेव कहे सुण झाड़ जड़्ह, जड़्ह चेतन खेल कराईआ। जिस दी किरपा नाल कोटन कोटि नाम अक्खर पत्तयां उते लए पढ़, पत्तन बैठा इक्को नज़री आईआ। तूं ओस दी चरणी डिगीं दड़्ह, ढहि के आपणा हाल सुणाईआ। बिरहों विछोड़े विच जाईं सड़, आपणा आप मिटाईआ। प्रभ फेर किरपा देवे कर, तेरा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी इक जणाईआ। झाड़ कहे दस्स तरीका, मोहे इक जणाईआ। कौण वेला आए नज़दीका, नेरन नेरा फेरा पाईआ। कौण हाल सुणे ग़रीबां, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जैदिओ कहे मैं दस्सां सच प्रीतां, प्रीती इक्को वार दृढ़ाईआ। नानक निरगुण घर आवे कीटां, पंज तत काया चोला जगत हंढाईआ। करे खेल इक अनडीठा, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। ओस दे प्यार विच आपणा आप धरीं विच अंगीठा, अग्नी भेंट चढ़ाईआ। जिस वेले जगमग करे तेरी चिखा चीता, उते पकवान पक्के खुशीआं राग अल्हाईआ। अगला भेव जाणे सतिगुर जीव जीआं का, लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुण के बचन होया खुशहाल, घर वज्जी इक वधाईआ। मेरा

सतिगुर बणे दलाल, साचा राह समझाईआ। मैं आपणा आप अग्नी भेंटा दित्ता डाल, बलहीण इक अख्वाईआ। जे मेरा मन्ने सवाल, बण सवाली दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। वेंहदयां वेंहदयां समां गया लँघ, घड़ी सुहञ्जणी सोभा पाईआ। नानक बैठा घर लालो पलँघ, ओढन नज़र कोए ना आईआ। खुशीआं विच मिल के माणे अनन्द, अनन्द इक्को इक जणाईआ। चुप्प चुपीते नानक ढोला गाया छन्द, तूं मेरा मैं तेरा मेरे साहिब सच गुसाईंआ। ओस वेले मैं भेंटा कीता बंद बंद, अग्नी रंग रंगाईआ। नानक निरगुण हो बख्शंद, मोहे दित्ता समझाईआ। जन्म दे विछड़े मंगदे मंग, देवणहार होए सहाईआ। मैं हो निमाणे किहा बख्शिंद, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस घर मेरा लालो नाल बणया संग, तिस संग नाता देणा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। नानक निरगुण बोल सति करतार, सति सति विच जणाईआ। तेरा रहे सच प्यार, प्रीती इक्को घर समझाईआ। मानस जन्म मिले विच संसार, वड संसारी होए सहाईआ। पहलों भेंटा तेरी चाढ़, अग्नी लम्बू देवे लगाईआ। फिर किरपा करे आप आ निरँकार, निरगुण होए सदा सहाईआ। जुग जन्म जगत विछड़े करे पार, पारब्रह्म आपणे विच मिलाईआ। धूढ़ी रती ख़ाक छार, शहिनशाह आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणे विच लहिण दए मुकाईआ।

*** ६ मग्घर २०२० बिक्रमी साईं दास दे घर पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ***

राख कहे मेरी पूरी मंग, पुरख अकाल पूर कराईआ। दस साल बैठी रही उपर पलँघ, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ देवे वंड, मेहर नज़र इक उठाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना देवे डण्ड, हरिजन साचे लए तराईआ। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी पंज पोह काग़ज़ां अन्दर कर के बंद, चुटकी चुटकी मोहरां ला के बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम सब नूं करके रंड, आपणा मुख आई भवाईआ। जन भगतां मेल के संग, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। एथे ओथे जिन्हां देवे अनन्द, प्रभ आपणे घर रखाईआ। ढोला गावां चावां नाल छन्द, सोहँ सच्चा राग अलाईआ। लोकमात दिसे सच चन्द, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। ख़ाक कहे मैं घाली घाल, घाली घाल प्रभ लेखे लाईआ। मेरी बेनन्ती मन्न सवाल, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेल मिलाया बण दलाल, भगतन जोड़ जुड़ाईआ। मैं दस्सां पिछला हाल, जुग चौकड़ी नाल मिलाईआ। मैं हुन्दी रही बेहाल, मेरा संग ना कोई निभाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। ख़ाक कहे मोहे चाउ घनेरा, वज्जे इक वधाईआ । कूड़ी क्रिया छुटया झेड़ा, झगड़ा मुक्कया नाल लोकाईआ। परम पुरख प्रभ करी मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां संग रलाया मेरा इक बेड़ा, पतन बहि के वेखे चाईं चाईंआ। आपणी करनी दित्ता उलटा गेड़ा, गेड़नहार इक अख्वाईआ। जिन्हां ठाकर मिल्या मेरा तेरा, तिन्हां सागर भँवर ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। ख़ाक कहे मैं होई पाक, पत्तत पावण दया कमाईआ। मेरे वल ल्या झाक, घर नेत्र नैण खुल्हाईआ। भगतां नाल बणाया मेरा साक, सज्जण साचे सच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। पूरी आसा दीन दयाल, प्रभ मेरी अन्त कराईआ। जन भगतां पिच्छे करां इक सवाल, श्री भगवान अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, महिबूब तेरी सरनाईआ। जो तेरी चरणी डिगे आण, तिस जम पोह ना सके राईआ। तिस दी ख़ाक ना उडे विच जहान, मढ़ी मसाण ना कोई भवाईआ। गोर विच दब्बे कोई ना पढ़ कलाम, कलमा तेरा इक्को नज़री आईआ। खुशीआं नाल वीहवीं सदी सद्द के देवां पैग़ाम, पीर पैगम्बरां आख सुणाईआ। वेखो पुरख अकाल बदलया इंतजाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। भगत सुहेले कर परवान, सच्चा आपणा राह वखाईआ । आवण जावण लख चुरासी मुका के काण, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। वासा देवे सच मकान, जिस घर बहि बहि खुशी नाल सोभा पाईआ। पिछले मरे अगले जम्मे जींवदे करे परवान, जिन्हां विच्चों गुरमुख गुरसिख नज़री आईआ । एहो किरपा करे महान, जिस दी निशानी मात ना कोए वखाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जींवीआं जींवदयां मरयां मरदयां मदद करे आण, मुर्दा ख़िलत करन कोई ना पाईआ।

*** ६ माघ २०२० बिक्रमी सरूप सिँघ दे घर पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ***

ख़ाक कहे सर्ब ख़लक ख़ाक, अन्त ख़ाकी ख़ाक समाईआ। बिन साहिब सतिगुर कोई ना सके राख, रक्षया करे ना कोई थाउँ थाईंआ। दो जहानां नैण खोल्ह के वेख्या ताक, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। अन्त निभावे ना कोई साथ, संगी साथी पल्लू जाण छुडाईआ। लख चुरासी वेखे ख़ाली हाथ, नेत्र रोवण वाहो दाहीआ। जिन्हां साहिब सतिगुर कर किरपा दिती नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सो गुरमुख आउँदे जांदे जम्मदे मरदे रहे हस्स, ग़मी रूप ना कोए वटाईआ। तिन्हां आपणे दवारे लए सद्द, जिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। जन्म मरन दी पार हद्द, गेड़ा गेड़ ना कोई वखाईआ।

दो जहानां विच्चों कर के अड्ड, घर साचा इक वखाईआ। लेखे ला के माटी हड्ड, चमड़ी आपणी झोली पाईआ। ख़ाक कहे मैं आई ओस दे हथ्थ, जिस हथ्थां नाल धरनी दिती वड्याईआ। रविदास चम्यारा सईओ सच गया दस्स, हुण अकाल नाल रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ख़ाक दी रखे पत्त, जिन्हां परमेश्वर मिल्या बेपरवाहीआ। ख़ाक कहे ख़ाकी जग्ग, ख़ालस नज़र कोए ना आइंदा। घर घर कूड़ी लग्गी अग्ग, तृखा तृष्ना ना कोई बुझाइंदा। माया ममता पी पी मदि, जीव जगत जहान कूड़ा डौरु डंक वजाईआ। घर मुर्शद कोई ना लए सद्द, परौहणाचारी सृष्ट सबाई जगत हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां होवे आप वस, तिन्हां आपणे वस कराइंदा। ख़ाक कहे मैं वस्त अनमुल्ली, मेरी कीमत किसे ना पाईआ। मैं पहलों बणाई साडे तिन्न हथ्थ कुल्ली, नौ दवारे दरबार फेर सुहाईआ । मैनूं प्रभ कोलों छुट्टी मिल गई खुल्ली, जन भगतां मिलां चाईं चाईंआ। मैं उडां ना कदे हवा बुल्लीं, बुल्लयां विच ना कोई रलाईआ। मैं ओस दे तोल तुली, जिस दा तराजू वेखण कोए ना पाईआ। लख चुरासी मैनूं भुल्ली, भुल्ली भट्की नूं हरिसंगत नज़री आईआ। जिथों प्रेम प्यार दी मिली इक्को चुली, चरणामित दित्ता बेपरवाहीआ। मैं भागां भरी फली फुल्ली, महक भगतां नाल रलाईआ। जिस ख़ाक सड़के मंज़ल चढ़के नानक दी पकाई गुल्ली ओह अनमुल्ली, कुल्ली विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र मेरे उते रखाईआ ।

* ६ माघ २०२० बिक्रमी सांझी राम दे घर पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

ख़ाक कहे प्रभ हो दयाल, अकाल मेरी बणत बणाईआ। प्रेम प्रीती ला नाल सिँघ पाल, सच्चा नाता दित्ता जुड़ाईआ । सिँघ सवरन वसया आण, घर साचे फेरा पाईआ। बाल मनजीत कर परवान, मोहे दिती माण वड्याईआ। जगदीश झुला इक निशान, चवी जुग लेख मुकाईआ। गुरदयाल वेख राज राजान, हुक्म रईअत रूप समझाईआ। पंजां कर आप परवान, साची घाड़त लई घड़ाईआ। जन भगतां देकर दान, मेरी कीमत प्रभ ने पाईआ। नीआं हेठ रखाया माण, मुट्ठी ढाई सोभा पाईआ। खून कर बलीदान, निरगुण सरगुण भेंट चढ़ाईआ। सच दवारा खोल्ह दुकान, सौदा इक्को नाम विकाईआ। लेखा चुका दो जहान, साचा मार्ग इक रखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरे कर ब्यान, भविक्ख्त सब दी झोली पाईआ। बीस बीसा हो प्रधान, सच प्रधानगी आप समझाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के पहचान, गुरमुख गुरसिख दए वड्याईआ। अन्त लहिणा चुकाए आण, बेअन्त आपणा फेरा पाईआ। सब दी चिखा दा बालण पाड़े तरखाण, बिन तरखाण कुहाढ़ा हथ्थ

ना कोई उठाईआ। की होया जे लालो एहनां नालो बाल, लाला भुल्ल कदे ना जाईआ। एह ओसे दा हाण परवान, जो संगी साथी इकट्ठे कीते दर आ के दर्शन पाईआ। जिन्हां दा नानक बणया महमान, तिन्हां दा महिबूब लेखा रिहा मुकाईआ। ग़रीबां विच ग़रीब पहचान, नीचां विच्चों नीच कर परवान, दहिलीजां विच्चों लँघ आप भगवान, रीझां गुरमुखां पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किसे नज़र ना आवे लाइआं नीझां, काग़ज़ां पत्रां अक्खरां विच्चों हत्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान हो के आप पतीजा, चाचे भतीजे सारे रिहा तराईआ।

* ६ माघ २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ खड़क सिँघ दे गृह पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

खेल वेख पुरख समरथ, दो जहान लैण अंगड़ाईआ। गुर अवतार रहे हस्स, पीर पैगम्बर खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गावण जस, साचा ढोला राग अल्हाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा नट्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। त्रैगुण माया रोवे नेत्र अक्ख, हन्झूआं हार बणाईआ। वेखो मेरा बल बणदा भट्ठ, इकीआं छड्ड दिती वड्याईआ। दर दर घर घर सभना रही दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल ओहनां होया वस, जिन्हां सृष्टी कहे मात शुदाईआ। अन्तर आत्म दित्ता रस, अमृत बूँद स्वांत प्याईआ। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, राती सुत्यां दरस दिखाईआ। नाम भण्डारा खोल्ह हट्ट, साचा वणज रिहा कराईआ। कर प्रकाश जोती लट लट, नूरो नूर डगमगाईआ। सेज सुहञ्जणी काया खाट, गृह बैठा डेरा लाईआ। जन्म जन्म दी मेट वाट, पांधी आपणे नाल मिलाईआ। दुरमति मैल पिछली काट, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। मैं निमाणी कर के घात, छुरी सीस जगदीश टिकाईआ। मैनूं देवे ना कोई निजात, लेखा पार ना कोई कराईआ। मैं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सारयां रही आख, उच्ची होके दे दे राग अल्हाईआ। मेरे नक्क सुहाग ना कोई बलाक, मैंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। ना कोई सज्जण रिहा साक, सगला संग ना कोई निभाईआ। जुग चौकड़ी जो भाख्या रही भाख, सो हुण पूर कराईआ। मेरी करनी हुन्दी दिसे नास, नाशता संगत रही बणाईआ। ग़रीब निमाणे ऊँच नीच अकट्ठे कीते आपणी रात, रैण इक्को इक सुहाईआ। निरगुण सरगुण वेख खेल तमाश, ख़ालक आपणा वेस वटाईआ। सच प्याला दे आबेहयात, हज़रत मस्ती इक चढ़ाईआ। मैं वेख कायनात, दहि दिशा नैण शरमाईआ। मेरी पुच्छे ना कोई वात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल इक रचाईआ। त्रैगुण माया रही कूक, दो जहान रही जणाईआ।

मैं निमाणी दित्ता फूक, नाम फुकारा इक्को लाईआ। मेरे दरोही चारे कूट, दहि दिशा धीर ना कोई धराईआ। मेरी कलयुग चुक्की चूक, चुकन्नी हो के रही सुणाईआ। जुग चौकड़ी जो सुत्ता रिहा घूक, कलयुग आपणा फेरा पाईआ। नीच ऊँच बणा के आपणे पूत, पिता आपणा नाउँ रखाईआ। लेखा चुकाए काया पंज तत भूत, भविख दस्से थाउँ थाईंआ। मेरी झोली पाई मेरी करतूत, करतब आपणा दए जणाईआ। जुग चौकड़ी मैं मारदी रही झूठ, जूठ झूठ जुगां जुगन्तर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया मारे धाह, धरत धवल हिलाईआ। मैं वेख थक्की जल अस्गाह, थल आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरी पकड़े ना कोई बांह, पीर पैगम्बर बैठे मुख भवाईआ। सिर देवे ना कोई ठंडी छाँ, गुर अवतार उँगली कोए ना लाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए हैरान, हैरानी सब दे सिर ते छाईआ। नेत्र नीर विरोले अञ्जील कुरान, कायनात भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बौहड़ी दरोही ख़ुदाए मेरा तुट्टा ईमान, तोबा तोबा कर के रही सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मैं बणी रही जवान, जोबन आपणा इक वखाईआ। सृष्ट सबाई शरअ विच कीती शैतान, लाशरीक कोलों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान एका हुक्म वरताईआ। त्रैगुण माया दस्से हालत, हलत पलत राखा नज़र कोए ना आईआ। बाली बुध बाल अन्जाणत, अंजण नेत्र नैण ना कोए मटकाईआ। साची दिसे ना कोए अमानत, वस्तू हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी खेल करे करतार, त्रैगुण माया दए दुहाईआ। मेरा खेड़ा भट्ठ होया भठियाल, भाण्डा नज़र कोए ना आईआ। प्रगट हो श्री भगवान, आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी जो गुर अवतारां देंदा रिहा दान, सो दाता दानी आपे वेख वखाईआ। जिस चार जुग दे विछड़े जन्म कर्म दे रुट्ठड़े जीव इकट्ठे कीते आण, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे परवान, परम पुरख प्रभ आपणा मेल मिलाईआ। सुरती शब्द मिलावे काहन, घर घनईआ नज़री आईआ। सीता मेल कराए राम, शब्दी गुर बेपरवाहीआ। साचा कलमा दए कलाम, काया बुत्त सोभा पाईआ। सो साहिब वेखे आण, जिस मेरी बणत बणाईआ। प्रगट होया बण तरखाण, तिक्खा कुहाढ़ा हथ्थ रखाईआ। मोछे पाए सब दे आण, मुश्किल होई विच लोकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दे ढोले गाण, गहर गम्भीर नाउँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। त्रैगुण माया कहे मैं भुल्ली प्रभ दे चोज, चोजी आपणा खेल रचाईआ। जुग चौकड़ी जिस सिध कीते छत्ती भोज, भोजन आपणे रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे खोज, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार जिस दी सोचदे

रहे सोच, सोच समझ ना कोए वड्याईआ। सो साहिब सतिगुर निरगुण हो के गया पहुंच, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। खेल वखाए त्रैगुण अतीता, तरह तरह समझाईआ । जिस तपाया सब दा अंगीठा, सो अगला लेखा रिहा समझाईआ। जिस दा भेव ऊँचा नीचा, घट घट डेरा लाईआ। जिस दा मार्ग सदा सीधा, घर साचा इक दरसाईआ । जिस दा आदि जुगादि खाधा पीता, नित नवित्त रिहा वरताईआ। सो साहिब खेल करे अनडीठा, अणडिठड़ी कार कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कराईआ। त्रैगुण कहे करनी करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ । जन भगतां देवे इक आहार, साचा भोजन नाम वड्याईआ। सेवा कर सच निरँकार, साची भट्ठी दए तपाईआ । वेखे विगसे वेखणहार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। विष्नूं वेख होए हैरान, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। कोटन वस्त प्रभ विच देवे डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। विष्नूं कहे भण्डारा केहड़ा, की की जणाईआ। ब्रह्मा कहे वेहड़ा केहड़ा, जिस गृह मिली वड्याईआ। शंकर कहे उह सेवक केहड़ा, जिस सच्ची सेव लगाईआ। त्रैगुण माया कहे जिस मेरा ढाहया डेरा, मिटी ख़ाक मिलाईआ। उह साहिब सतिगुर शेरा, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाईआ। ग़रीब निमाणयां उते कर के मेहरां, तिन्हां मेला सहिज सुभाईआ। सो सोहणा लग्गे खेड़ा, जिस खेड़े आपणी सेव कमाईआ। सो भागां भरया वेहड़ा, जिस घर मंगलाचार राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। विष्नूं वेख्या मार ध्यान, चार कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। खुशी होया वेख पक्का पकवान, ब्रह्मे रिहा जणाईआ। उठ ब्रह्मे कर पहचान, निरगुण आपणी धार चलाईआ। ब्रह्मा कहे मैं वेखी रिध्धी दाल, जिस विच दलिद्री आपणा दलिद्र रहे सुटाईआ। शंकर सुण लै नाल कान, ब्रह्मा रिहा समझाईआ। शंकर कहे मैं उन्हां बणना अज्ज महमान, जो सच भण्डारा रहे वखाईआ। ब्रह्मा कहे मैं वी चलां नाल, हौली हौली पन्ध मुकाईआ । विष्नूं कहे मैनूं लओ उठाल, बाशक सेजा मोहे ना कोए भाईआ। जिस घर वसे श्री भगवान, उस घर जाईए चाईं चाईंआ । धुर दी सुणी आई आवाज़, धुन इक्को इक समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने वेखो तिन्हां निमाणयां बणया इक काज, करनी करता आप कमाईआ। परम पुरख दा सोहणा वेखो समाज, जिस दी समग्री आपणे विच प्रगटाईआ। जिस दे बेड़े उते तुसीं चढ़ो जहाज़, सो खेवट खेटा इक्को इक अख्वाईआ। अगला पिछला वेखो खुल्हदा राज़, राजक रहीम आप खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणा होवे ना किसे मोहताज, सहिमत आपणे नाल रखाईआ । सतिजुग चले सति रिवाज, सति सतिवादी आप रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण

वड्याईआ। विष्नूं कहे मैं वेखी दाल रिध्धी, रिद्ध सिद्ध कोल बैठी सेव कमाईआ। ब्रह्मा कहे प्रभ दी अचरज विधी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ किसे ना आईआ। शंकर कहे उहदी खेल बड़ी सिधी, सिधी तड़ां रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शंकर कहे वेखो खेल तमाशा, मैं सच सच्च जणाईआ। जिस घर खुशीआं नाल गुज्झा आटा, पाणी प्रेम प्यार मिलाईआ। सोहणी कनाली सोहवे बाटा, पुरख अबिनाशी दए वड्याईआ। विष्नूं हस्स के कहे मैं पूरा करां घाटा, अग्गे वासते नेड़े हो के सेव कमाईआ। पिछला पूरा करां खाता, लेखा हथ्थो हथ्थ मुकाईआ। ब्रह्मा कहे मैनूं सोहणा लग्गे अहाता, जिस घर हत्यारा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीआं सुणदा रिहा बातां, जो कलम छाही नाल काग़ज़ां उते लिखाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान वेख्या साख्याता, सच्चमुच्च उही नज़री आईआ। जिस दी ज़ात ना कोई पाता, दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। जन भगतां देवे खुल्ह्हीआं दातां, नाम भण्डारा इक वरताईआ। लोकी वेखण अन्धेरीआं रातां, गुरमुख खुशीआं चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह चलाईआ। दाल कहे मेरा वेखो दाणा, दानशमंदी इक समझाईआ। जिस रचया खेल दो जहानां, सो दोहरा कड़छा रिहा फिराईआ। जिस पाणी नाल मिला के मैनूं दित्ता माणा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। हलदी लूण मिर्च कर परवाना, फ़रमाणा आपणा इक सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां विच्चों उत्तम निकलया इक्को खाणा, जिस नूं खा खा विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाईआ। छत्ती भोजन मिले ना कोई टिकाणा, जिस भगवान भोग ना लगाईआ। सो रिध्धा पक्का पक्का रिध्धा सिध्धा होया परवाना, दूसर अग्गे ना किसे टिकाईआ। ना कोई मसला पढ़े अञ्जील कुराना, ना कोई ओट रखे वेद पुराणा, ना कोई गुरू ग्रन्थ दए परवाना, बिन परवानगीउँ आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री इक्को इक वरताईआ। गुर अवतार इकट्ठे हो के आउँदे ने। पीर पैगम्बर नाल मिलाउँदे ने। दोए जोड़ अर्ज़ सुणाउँदे ने। पल्लू पा वास्ता पाउँदे ने। चारों कुण्ट नैण उठाउँदे ने। सच ध्यान इक लगाउँदे ने। वेख पकवान खुशी मनाउँदे ने। जिस दी सेवा करे भगवान, तिस दी सिफ्त सर्ब सलाहुन्दे ने। अन्तिम अक्खीं वेख्या आण, पिछला लिख्या लेख वरका उलटाउँदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे फ़रमाना, दर तेरे मंग मंगाउँदे ने। दे वर करतार, तेरे अग्गे इक अरजोईआ। वेख के आए तेरा भण्डार, जिस विच तूंही नज़री आईआ। श्री भगवान बोल किहा ललकार, इक्को वार सुणाईआ। एह मेरे भगतां दा विहार, मैं सेवक नज़री आईआ। मैनूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी जोत अकालण सब ने किहा नार, खुल्ह्हड़े केस रही

वखाईआ। मैं हथ्थां नाल सेवा करां बण सेवादार, भाण्डे बरतन मांज वखाईआ। मेरे खाण विरले गुरमुख सच्चे सरदार, जिन्नां देवां माण वड्याईआ। जे मैनूं झीवर नाई कहो मैं खुशीआं नाल बणा के गल्ल विच पावां हार, देवां दो जहान वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार सीस निवाउँदे ने। ढहि ढहि के भुल्ल बख्शाउँदे ने। दोए जोड़ वास्ता पाउँदे ने। धन्न भाग प्रभ जो तेरी किरपा नाल दर तेरे आउँदे ने। जुग चौकड़ी जो दित्ते वसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी तेरे कोलों मंग मंगाउँदे ने। श्री भगवान इक अलाउँदा ए। भेव अभेदा आप खुल्हाउँदा ए। उजल आपणा राह चलाउँदा ए। लेहज़ फ़ेहज़ वक्त मुकाउँदा ए। भक्ख भोज डेरा ढाहुन्दा ए। धुर दा अरदासा इक्को सोध, शुध सब नूं आप कराउँदा ए। विष्नूं वेख आपणा रिज़क रोज, रोजी तेरे हथ्थ फड़ाउँदा ए। जो मेरे दर्शन नूं रहे लोच, तिन्नां दवारे तुहानूं ख़ाक रलाउँदा ए। एह उह दवारा सच्चा कोट, जो सचखण्ड नज़र किसे ना आउँदा ए। शब्द अगम्मी वज्जे चोट, पुरख अकाल आप लगाउँदा ए। एथे भण्डारा पक्का बहुत, आदि जुगादि ना कोए मुकाउँदा ए। एह सतिजुग चले रौंस, रुस्सयां फेर नाल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा ए। साची सिख्या इक दृढ़ाई ए। प्रभ एका धार समझाई ए। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाई ए। गुर अवतार खुशी मनाई ए। पीर पैगम्बर रहे जस गाई ए। प्रभ दस्स उह वेला केहड़ा, जिस वेले बहि के तेरा भोजन खाई ए। श्री भगवान कहे जिथ्थे मेरे भगतां डेरा, तिस थान मिले वड्याई ए। ओथे जा के बहि के मंगो प्रभ देवणहार बथेरा, देंदयां तोट रहे ना राई ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक समझाई ए। सुण के संगत बण गई पंगत, बहि बहि रहे खाईआ। नाले वेखण हरि दी संगत, खुशीआं राग अल्हाईआ। सुण ज्ञान बोध अगाधे कोलों पंडत, जो धुर दी करे पढ़ाईआ। जिस खेल रचाया जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज दए वड्याईआ। अज्ज उस दवारयों आए मंगत, घर बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साची वस्त दे वरताईआ। साहिब सतिगुर वेख खुशी मनाउणगे। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो, मेरे भगत आप वरताउणगे। गरधारा बख्शीश हथ्थ कड़छे आप उठाउणगे। पाल मस्सा नाल रलाउणगे। काशी हट्टा इक चलाउणगे। इन्द्र फुनिन्दर जिस दर तों खाणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच भण्डारा इक वरताउणगे। गुर अवतार कहिण असीं खावांगे। खुशीआं नाल गीत अलावांगे। साची रीत आपणी झोली पावांगे। जिस घर वसण ऊँच नीच, उस दर बहि के सीस निवावांगे। साडा पिछला लेखा मुकया पूरा कीता

ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखावांगे। जुग चौकड़ी पिच्छों आई उह तारीख़, जिस तारीख दा सुणया हाल सुणावांगे। दर सवाली बण के मंगीए भीख, भिच्छया आपणी झोली पावांगे। एथे ओथे रहें अतीत, प्रभू तेरा जस गावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, घर तेरा मंगण आवांगे। तेरे भगत सब कुछ वरताउणगे। फड़ बाहों मैनूं नाल रलाउणगे। हुक्मे अन्दर चारों कुण्ट भवाउणगे। जे कोई लभ्भे जा के किसे मन्दिर, मन्दिर वड़ के फेर पछताउणगे। जे कोई वेखे आ के अन्दर, निरगुण नूर ज़हूर रुशनाउणगे। मेरा इक्को घर मंगल, जिस घर भगत नज़री आउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त सब दी झोली पाउणगे। मैनूं गुरमुखां नाल रलाउणा ए। साची सेवा विच लगाउणा ए। कमला रमला जगत बणाउणा ए। जिस दे अन्दर सोहणा बंगला, महल अटल इक सुहाउणा ए। जिस दे चारों कुंट पंज तत जंगला, दूरों नज़र किसे ना आउणा ए। की होया जे सुदामे चब्बे तन्दला, बिन तन्दल चब्बयां पार कराउणा ए। चढ़ा के धुर दी आपणी मंज़ला, जिस मंज़ल आपणा डेरा लाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पकवान गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जन भगतां नाल मिल के, आप खवाउणा ए। विष्नूं कहे एथे की कुछ खावांगे। ब्रह्मा कहे खा खा थक्कीए, थक्क थक्क के अन्त पछतावांगे। शंकर कहे बेअन्त बेअन्त कहि के शुकर मनावांगे। गुर अवतार कहिण दो जहान तज के, घर साचे खुशी मनावांगे। पीर पैगम्बर कहिण दर्शन करीए रज्ज के, जिस दर्शन डिठयां आपणा आप मिटावांगे। नानक निरगुण कहे नहीं हरिसंगत विच सज के, भोजन गुरमुखां रल के खावांगे। गोबिन्द कहे जैकारा बोलीए गज्ज के, पुरख अकाल शुकर मनावांगे। जिस नूं पिच्छे आए छड्ड के, ओस दा दर्शन लोकमात पावांगे। अज्ज एथों जाईए रज्ज के, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग फिर खाण कदी ना आवांगे। जन भगतां नाल जाईए हस्स के, हस्स हस्स आपणी खुशी मनावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आपणी झोली पावांगे। विष्नूं कहे की वरतार वरताएगा। ब्रह्मा कहे भुक्खे नंगयां भण्डार भराएगा। शंकर कहे दातार आपणी दया कमाएगा। गुर अवतार कहे साडा लेखा मूल चुकाएगा। पीर पैगम्बर कहे साडी नयाज ना कोई चढ़ाएगा। भगत भगवान मिल के रिध्धा पक्का, बहि के इकट्ठा खाएगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दा बचन कर के सच्चा, साची आपणी धार रखाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों जो धागा रह गया कच्चा, अन्तिम आपणी गंढु दवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन विचार, मता मते नाल पकाईआ। असीं कैहन्दे रहे नर निरँकार, निरगुण नूर खुदाईआ। जोती दीपक जलवा तक्कया ना पुरख

ना नार, रूप अनूप समझाईआ। कर वेस भेव खोल्लया करतार, करता आपणा पर्दा लाहीआ। नज़री आया निरगुण धार, सरगुण सोभा पाईआ। सरगुण रूप तत अकार, ततव आप प्रगटाईआ। प्रीती अन्दर दस्स प्यार, प्रेमी प्रेमका रूप वटाईआ। जन भगतां मेले हो ख्वार, ख्वारी आपणी झोली पाईआ। जोत अकालण बण के नार, खुलड़े केस फिरे वाहो दाहीआ। जे कोई जोबन वेखे मुटयार, बुढ्ढी बाली नज़र किसे ना आईआ। जे सिफ्त करो ते परवरदिगार, सलाहां विच पारब्रह्म अख्वाईआ। मलाह विच बेड़ा करे पार, फड़ के आपणे कंध उठाईआ। किरपा करे ते भुक्खयां दए वखाल, खुल्ही वस्त वरताईआ। अग्गे किसे दी कोई ना चले चाल, मजलस विच बहि के गुर अवतार, पीर पैगम्बर आपणा हुक्म ना कोई वरताईआ। सारे गुरमुख होण खुशहाल, खुशीआं झोली आप भराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बण प्रितपाल, पालणा करे थाउँ थाईंआं। भोजन खादयां अग्गे होवे ना किसे ज़वाल, देवे अन्त ना कोई सजाईआ। सब दा पूरा होया हल्ल सवाल, हलत पलत विच्चों दो जहान पार कराईआ। धन्न वड्याई रिध्धे पक्के पकवान दाल रोटी छत्ती भोजन पदार्थ, अग्गे स्वार्थ आपणे लेखे लाईआ। गुरमुखां जन्म ना जाए अकारथ, जो जो खा खा शुकर मनाईआ। हरिसंगत तेरा इक्को सच्चा परमारथ, जो आपणे नाल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम कसवटी नाल ला के बणाए पारस, कीमत करता आप चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेहर करे मेहरवान बिन सफ़ारश, सब दी कीती पिछली बीती अगली रीती झोली पाईआ।

३१५
१६

जिस वेले लंगर वरताउणगे। इक्की इक्की इक्की खुशी मनाउणगे। सिक्खी सिक्खी विच रल के सिक्खी रूप समाउणगे। पूरब लेख दी लिखी तकदीर मटाउणगे। गुरमुख वेख मुनी ऋषी, ऋषी ऋषी सिधे सीस निवाउणगे। जन्म मरन विच कोई ना होवे दुखी, दुखी दुःख दलिद्र डेरा ढाउणगे। प्रभ चरण सचखण्ड सारे वसण सुखी, सुखी सुखी जो सतिगुर दर्शन पाउणगे। उजल होवे मात मुखी, मुखी मुखी जो सोहँ ढोला गाउणगे। जन भगतां कही रमज़ गुज्झी, गुज्झी गुज्झी आपणी रमज़ लगाउणगे। जिन्हां बात अगम्म दी सुझी, सो अपणी सोच समझ गवाउणगे। त्रिलोकी अन्दर दाल रिझी इक प्रभू दी कुजी, जिस दा भेव दो जहान ना पाउणगे। कोई समझ ना सके मन मति बुद्धि, ज्ञान ध्यान सर्ब सरमाउणगे। हरिसंगत तेरी वड्याई उच्ची, उच्चे मज़ार बहि बहि हरि गुण गाउणगे। तेरी आत्म परमात्म कीती सुची, सच सुच्च संजम विच समाउणगे। पुरख अकाल भाग लगाए गोबिन्द नाल पुती, पिता पूत इक घर बहि के दर साचा सच सुहाउणगे। एह

केहड़ा मैं कौण लुकी, ओहला पर्दा सर्ब मटाउणगे। जिन्हां दी श्री भगवान कटण आया बुत्ती, सो जजमान गुरमुख अग्गों खैर खराइत प्रभ दी झोली पाउणगे। सब नूं अन्दर वड़ के वेख्या गुट्टीं, लुक के मुख ना कोई छुपाउणगे। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण अज्ज खा जाईए पूरी लुची, जिस दे कोलों कड़ाह प्रशाद सारे सीस निवाउणगे। इस दी कलम मनी सिँघ चलाई बड्डुखीं, सो बूहे लँघ के वेख खुशी मनाउणगे। जिस कला जगाई सुत्ती, तिस दे सुत बण के आपणी झोली डाउणगे। अग्गे भुक्खा किसे दा रहिण ना देवे काग़ज़ कलम छाही बुत्ती, बुत्तख़ाने सारे नेत्र नैण नीर वहाउणगे। जन भगतां दवारे बहि के प्रेम प्यार चूरी सब ने कुट्टी, प्रेम रस आपणा विच रलाउणगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लेखे ला मंधूकड़ी रुक्खी, संदूकड़ी साची सर्ब भराउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोत अकालण बण के आई फफने कुट्टी, भेख पखण्ड आपणे विच छुपाईआ। जगत पलालण किसे कोलों ना गई लुट्टी, लुट्ट लुट्ट वेखे जगत लोकाईआ। जन भगतां नाल मिला के आपणी रुची, रचना साची रही वखाईआ। भगत दवारे आ के गल्ल इक्को पुच्छी, जो साहिब स्वामी रिहा समझाईआ। गुरमुखो तुहाढ्ढी वाट पिछली सारी मुक्की, अग्गे सतिगुर दए सफाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सारे गाओ उच्ची, जो नीचों ऊँच रिहा बणाईआ।

३१६

१६

* १० माघ २०२० बिक्रमी सन्त सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

दो जहान खुशी चढ़ी गज्ज, गर्ज सब दी पूर कराइंदा। जुग चौकड़ी मेट हद्द, हद्द इक्को इक समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा नाम सुणा सद, सद्दा आपणा नाम सुणाइंदा। साचे हुजरे करा हज्ज, हज़रत इक्को नूर दरसाइंदा। गीत गोबिन्द गावण छन्द, सोहला सच सच दृढ़ाइंदा। गृह मन्दिर अन्दर आवे सुख अनन्द, सुख सागर रूप वटाइंदा। सब दा लेखे लग्गे पन्ध, हरि करता कीमत पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाइंदा। दो जहान रहे गज्ज, गज़ल इक्को नाम सुणाईआ। रवि ससि रहे भज्ज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक दूजे नूं रहे सद्द, सुनेहड़ा सच घलाईआ। चलो चल के वेखीए अज्ज, इज़ाज़त देवे बेपरवाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी किसे ना लभ्भी हद्द, किनारा नज़र कोई ना आईआ। सो साहिब स्वामी हरिसंगत अन्दर बैठा सज, सज्जण बण के डेरा लाईआ। सब दे पड़दे रिहा कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हाल मुरीद हो के आईए दस्स, मुर्शद मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। निरगुण सरगुण नाअरा

गज्ज, सचखण्ड निवासी आप सुणाइंदा। लम्मा उच्चा दिसे ना कोई कद्द, गहर गम्भीर सोभा पाइंदा। सच दवारा आपे लँघ, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। कोटन कोटि जुग मुका आपणा पन्ध, मंज़ल आपणी आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुर अवतार जैकार सुणावण गज्ज, गदागर रूप वटाईआ। तेरे नाम दा अगम्मा नद, नित नवित्त रहे वजाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दिती मधु, रस तेरा नाम भराईआ। निरगुण निरवैर क्यों बैठा हो अड्ड, इक इकल्ला रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी सब दा साथ जावण छड्ड, सगला संग ना कोई निभाईआ। काया माटी ख़ाक रोवे हड्ड, नाड़ी नूर ना कोई रुशनाईआ। उठ वेख आपणी यद, विष्नूं बैठा ध्यान लगाईआ। नूर नुराने चमकन चन्द, जहान आया मुख भवाईआ। तेरे प्रेम माणण अनन्द, अनन्द इक्को नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दे माण वड्याईआ। गज जैकारा पीर पैगम्बर, सच सच्च रहे जणाईआ। परवरदिगार रचया इक सुअम्बर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। चलो वेखीए चल अडम्बर, की की रचन रचाईआ। सर्ब कलां हरि बण भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। ना कोई मस्जिद गुरदवारा मन्दिर, शिवदुआला मट्ठ ना कोई वखाईआ। जन भगतां मेल मिला के अन्दरे अन्दर, घर बाती जोत करे रुशनाईआ। मन वासना बन्न के बन्दर, चरण कँवल रिहा चित लाईआ। जिस रविदासे ढोए ढोर डंगर, तिस लेखा कलम छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा वखाईआ। गुर अवतार गज्ज गज्ज बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। तेरा अगम्मा धुर दा ढोल, जुग चौकड़ी नित नवित्त वजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दवारा खोल्ह, ख़ालक ख़लक दिती समझाईआ। लख चुरासी तोल आपणे तोल, नाम कंडा इक वखाईआ। गुरमुख विरले रखे कोल, भगत भगवान दया कमाईआ। माया ममता पा के पर्दा ओहल, भरम भुलेखा जगत लोकाईआ। एह तेरा अगम्मी चोहल, चाल निराली समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी कार कमाईआ। भगत कहे भगवान गज्ज की कहिणा, मैं कहिण कुछ ना पाईआ। इक्को मंगां दर्शन नैणा, दूजी आस ना कोई तकाईआ। सदा सद तेरे चरण बहिणा, मिले माण वड्याईआ। नाता तुटे मात पित भाई भैणा, साक सैणा इक्को नज़री आईआ। तन भूशन वस्त्र पहना तेरे नाम गहिणा, नाम अवल्ला रंग रंगाईआ। महल अटल उच्च मुनार रहिणा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। सतिगुर चरण धुर दा बुरज कदे ना ढहिणा, चार दीवार ना कोई गिराईआ। सूरज चन्द रवि ससि दोए शरमाउणा, अक्ख सके ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन देवणहारा नज़र कोए ना आईआ। सन्त कहे जन गज्ज की आखां,

आखण विच कुछ ना आईआ। इक्को बणा तेरा साथा, सगला संग बणाईआ। तूं साहिब सुल्तान पुरख समराथा, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बाल अञ्याणा नाथ अनाथां, दीनन रूप वटाईआ। कर किरपा साडा पूर करा घाटा, घाटी आपणी दे चढ़ाईआ। पिच्छे रह जाए पिछली वाटा, अग्गे तेरे चरण मिले सरनाईआ। तेरे नूर विच्चों उपजी तेरी ज़ाता, अन्त तेरे विच समाईआ। काया माटी तेरा कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख कहे गज्ज की बोलां, सोच समझ कुछ ना आईआ। मैं इक्को जाणा तेरा ढोला, तूं मेरा सच्चा माहीआ। निरगुण हो के बण विचोला, सरगुण आपणा मेल मिलाईआ। दे वड्याई उपर धौला, धरनी धरत खुशी मनाईआ। क्यों रख के बैठा ओहला, पर्दा आपणा दे चुकाईआ। तेरी प्रीती घोल घोला, दूजी सेव ना कोई रखाईआ। लख चुरासी नाल मार रौला, जन भगतां आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। गुरमुख कहे की गज पुकारा, रसना जिह्वा कहिण कुछ ना पाईआ। इक्को बेनन्ती दोए जोड़ करां निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस निवाईआ। तूं साहिब सतिगुर सिरजणहारा, सच स्वामी नज़री आईआ। सचखण्ड निवासी एकँकारा, अकल कल तेरी वड्याईआ। काग़द कलम ना लिखणहारा, शाही बल ना कोई जणाईआ। आदि जुगादि तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। इक्को मंगां सच दवारा, घर साचे अलख जगाईआ। सच प्रीती दे अधारा, दूजी ओट ना कोई रखाईआ। तीजे नैण खोलू किवाड़ा, चौथे पद मेल मिलाईआ। पंचम दस्से सच नज़ारा, नज़रीआ आपणा लए बदलाईआ। छेवें घर हो उज्यारा, सतवें सति सतिवादी सति सरूप वखाईआ। अट्ठवें अट्ठां तत कर किनारा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। नौवें नौ दर कूड़ी क्रिया ना कोई पसारा, पुश्त मेरे हथ्थ रखाईआ। दसवें दर तेरा नूर होए उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अमृत जाम दे ठंडा ठारा, अग्न तत तत्त बुझाईआ। सेज सुहञ्जणी सोभा पा गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर आपणा डेरा लाईआ। तेरे नाल मिल के फिर गावां तेरा जैकारा, बिन तेरे नाअरे कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर दे दसाईआ। गज्ज जैकारा बोलां अन्तर आत्म, सति धुन अवाज़ उठाईआ। तेरा रूप नज़री आए सच परमात्म, परम पुरख तेरी सिफ्त सलाहीआ। तेरा जलवा तक्कां नूरी बातन, निरगुण निरवैर तेरी वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत रसना जिह्वा तेरा नाम आखण, अन्तर मेल ना कोए मिलाईआ। धन्न वड्याई तूं बणयो संगी साथन, नारी कन्त खेल खिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत इकट्ठे हो के तैनूं आए आखण, इक्को आपणी अवाज़ सुणाईआ। कलयुग मिटी अन्धेरी रातन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। सर्ब जीआं दे सच्चे पित मातन, पिता

पुरख तेरी सरनाईआ। धुर दी दे अगम्मी दातन, वस्त अमोलक झोली पाईआ। मैले चीथड़ सब दे पाटण, प्रेम पटोला दे साहिब गुसाईंआ। तेरे प्यार दी मिले खाटन, बिस्तर सच लेफ तलाईआ। मर मर जन्म जन्म फेर ना ओढीए काफन, कफ़नी नज़र कोए ना आईआ। तुध मिलयां कोई ना रहे पापन, पतित पुनीत दे वखाईआ। तेरा जपीए इक्को जापण, जपत जपत सुख पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। तेरा नाम जैकारा लाया गज, जलधार ध्यान लगाईआ। नेहकर्मी हो के आएयों भज्ज, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। तन्दवे तन्द दित्ता कट, तिक्खी धार वखाईआ। अन्तिम लज्जया लई रख, मेहर नज़र उठाईआ। साडा दे दे पिछला हक़, जन भगत मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरे वल रहे तक्क, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। भगत कहिण प्रभ अन्तरजामी, अन्तर जामत तेरी सरनाईआ। चार कुण्ट जगत होए तेरी बदनामी, बदला चुक्के ना कोई जगत लोकाईआ। तेरे उपाए जीव जंत होए हरामी, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। धर्म राए दी चुक्के ना कोए ग़ुलामी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। गुर अवतार दस्स दस्स गए तेरी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। पीर पैगम्बर पैग़ाम देंदे रहे शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरा नाम वड्याईआ। कलयुग अन्तिम किसे नज़र ना आए तेरी निशानी, निशाने सारे गए भुलाईआ। बिन भगतां तेरी करे ना कोए महमानी, घर सद्द ना कोए लिआईआ। उठ सुण उन्हां कहाणी, जो बीती रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हत्थ टिकाईआ। बीती कहाणी सुण प्रभ ठाकर मेरे, हरिजन कूक कूक जणाईआ। चारों कुण्ट जगत अन्धेरे, भज्जे फिरन वाहो दाहीआ। सृष्ट सबाई वेखी उलटे गेड़े, कोहलू चक्की चक्क भँवर भुलाईआ। लख चुरासी ढट्ठे खेड़े, काया मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। तेरे नाम दे पए झगड़े झेड़े, झंझट सके ना कोए मिटाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब ला ला डेरे, डंका आपणा रहे वजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे हुक्मे अन्दर छेड़ां गए छेड़े, छेकड़ बैठे पल्लू छुडाईआ। तुध बिन लेखा कौण नबेड़े, साचा अदल ना कोए कमाईआ। कर किरपा साहिब सतिगुर मेरे, हरिजन सच सच्च दृढ़ाईआ। दूर दुराडा आएयों नेड़े, निरगुण निरगुण पन्ध मुकाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरे नाअरे लाउँदे रहे बथेरे, पढ़ भाषण मात सुणाईआ। तूं सुणदा रिहों कर के वड्डे ज़ेरे, करवट आपणी ना कोए बदलाईआ। अन्तिम आएयों जन भगतां वेहड़े, घर साचे फेरा पाईआ। गुरमुख उच्ची कूक गज्ज के कहिण असीं तेरे, दूजा साईं ना कोए रखाईआ। अग्गे करीं ना हेरे फेरे, पिछली आदत लए बदलाईआ। जो चढ़ गए तेरे बेड़े, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। आस रख के सिँघ शेरे, शेर रूप गए वटाईआ। सब दे अन्तर चाउ

घनेरे, मन्दिर वेख खुशी वखाईआ । उठ वेख केहड़े केहड़े, जो तेरा ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो हुक्मे अन्दर निखेड़े, तिन्नां प्रेम प्रीती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे माण वड्याईआ। गज्ज जैकारा लाया नाउँ, निरँकार तेरा जस गाईआ। निमाणयां देणा सच्चा थाउँ, चरण मिले सरनाईआ। निउँ निउँ सारे लागण पाउँ, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। लख चुरासी रुढ़दे पकड़े बाहों, डुब्बदे डुब्बदे लए तराईआ। पुरख अकाल बण के सिर रख ठंडी छाउँ, मेहर नज़र इक टिकाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा पिता माउँ, बालक नेत्र नैण रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद साडा सगला संग निभाईआ। रल मिल जैकारा गज्ज के लाया, खुशीआं गीत अलाईआ। उठ के भज्जी त्रैगुण माया, आपणा मुख भवाईआ। पंज तत वास्ता पाया, दोए जोड़ प्या सरनाईआ । बौहड़ी मैं भुल्ला उह ठाकर आया, जिस सब दी बणत बणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस खेल रचाया, निरगुण सरगुण धार बणाईआ। गुर अवतार जिस प्रगटाया, पीर पैगम्बर दए वड्याईआ। लख चुरासी जिस ने रचन रचाया, घट घट रिहा समाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ जिस वसाया, सो वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस दा सोहला हरिसंगत मिल के गाया, खुशीआं नाम सलाहीआ। गज्ज गज्ज के गरज लगाया, गहर गम्भीर देवे वड्याईआ। जन्म जन्म दी मर्ज मिटाया, मंज़ल मुक्के पन्ध पराईआ। आपणा फ़र्ज तोड़ दए निभाया, फ़ज़ल करे बेपरवाहीआ। अचरज खेल इक रचाया, अचरज आपणा रूप वटाईआ। सच नाम सच जैकार सच सोहला सच गुरमुख जिस मुख गज्ज के लाया, सो मुख मुफ्त सतिगुर आपणी झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मार्ग पन्थ इक सजाया, जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। गवाही देवे नाल शहादत, सफ़ाई धुर दी इक भुगताईआ। साहिब सच्चे दी इक्को अबादत, अदाब अदब इक जणाईआ। परवरदिगार दी इक्को इबारत, जो आदि जुगादि लिखाईआ। पुरख अकाल दी इक्को सफ़ारश, जिस दी करे तिस आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा सद लाए सच अदालत, अदली राजा बण के बहि के कहि के सच्चा अदल कमाईआ।

* १० माघ २०२० बिक्रमी भाग सिँघ दे घर पिण्ड बाऊ पुर ज़िला गुरदास पुर *

मढ़ी गोर पुकारे कबर, देवे सच दुहाईआ। मैं लख चुरासी खाधा टब्बर, चारे खाणी भुक्ख बणाईआ। मैनूं अजे ना आया सबर, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरे नाल रली मौत राणी अज़ल, दर दर घर घर वेख वखाईआ। जुग

३२० १६

चौकड़ी मुक्की ना मेरी मज़ल, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। श्री भगवान कर अदल, तेरे अग्गे इक अरजोईआ। मेरी करनी मात बदल, बदला दे चुकाईआ। मेहरवान कर फ़ज़ल, रहमत आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। मढ़ी गोर कहे मैं खाधा जग्ग, लख चुरासी झोली पाईआ। किसे नूं फूकया ला के अग्ग, कोई माटी हेठ दबाईआ। अजे ना मुक्की मेरी हद्द, लेखा सके ना कोए चुकाईआ। जुग चौकड़ी मैं रही लभ्भ, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चरणां रही ढह्, ख़ाली झोली डाहीआ। कौण मेरी करे बस, बसता बन्नृ वखाईआ। सब ने अग्गों किहा हस्स, ख़ुशीआं नाल समझाईआ। कलयुग अन्त आए पुरख समरथ, तेरा लहिणा दए मुकाईआ। सृष्ट सबाई इक्को मार्ग दस्स, साचा राह दए समझाईआ। मढ़ी गोर दोहां तों बाहर लए रख, रक्षया करे हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देवे माण वड्याईआ। मढ़ी गोर करे पुकार, नैणां नीर वहाईआ। मैं खा खा थक्की गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आपणे विच दबाईआ। शाह सुल्तान मेटया नाम निशान, राज राजान नज़र कोए ना आईआ। नित नवित्त करदी रही ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला प्रभ मिले श्री भगवान, कवण होए सहाईआ। मेरा लेख मुकाए आण, रेखा पिछली दए बदलाईआ। सांझा देवे इक ज्ञान, सभना करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मढ़ी गोर कढ्ढे तरला, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर आपणे घर वर ला, वरयाम इक्को नज़री आईआ। लोकमात विच्चों कढ्ढ ला, मेहर नज़र इक टिकाईआ। तेरा मन्दिर वेखीए अड्डरा, जिस घर बैठे डेरा लाईआ। उह धाम सुहञ्जणा पधरा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दे मुकाईआ। मढ़ी गोर मारे चीक, नाअरा हू हू लगाईआ। तेरे दर तों मंगीए भीख, खाली झोली अग्गे डाहीआ। जुग चौकड़ी बीते विच उडीक, वेला अन्तिम गया आईआ। सानूं वक्त सुहेला दस्स ठीक, ठाकर आपणा हुक्म वरताईआ। दूर दुराडा आएयों नज़दीक, दर घर साचे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। मढ़ी कहे जो मेरे अन्दर सड़दा, अग्नी तत जलाईआ। उह लख चुरासी वड़दा, जूनी जून भवाईआ। बिन भगत कोई ना वेख्या तरदा, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। तूं साहिब लख चुरासी घड़दा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गोर कहे जो कीता दफ़न, दफ़ा तेरा नाम लगाईआ। उते पाए ओढण कफ़न, कफ़नी तन ना कोए लगाईआ। बिन सूफ़ी साचा दर कोई ना मंगण, दरवेश अलख ना कोए जगाईआ। जन्म जन्म फिरना नंगण, सेल्ही टोपी

सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सानूं दे माण वड्याईआ। मढ़ी कहे जो मेरे उते सड़दा, अग्नी बालण भेंट चढ़ाईआ। फेर पाणी उते तरदा, वहिन्दा जाए वाहो दाहीआ। लभ्भे भेव ना आपणे घर दा, घर देवे ना कोए वड्याईआ। लेखा वेख्या जुग चार दा, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। मानस जन्म मनुक्ख हार दा, हरि की सार किसे ना पाईआ। किनारा नज़र ना आए पार दा, मँझधार हड्डीआं रहे सुटाईआ। तीर्थ तट ना लेखा जाणे सच्चे यार दा, महिबूब मेल ना कोए मिलाईआ। जीव प्रानी कूक कूक पुकारदा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। लहिणा देणा चुक्के ना पुरख नार दा, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। मिले मेल ना तेरे प्यार दा, प्रेमी प्रेम ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गोर कहे जो मेरे अन्दर दब्बया, माटी उपर ढेर लगाईआ। अक्खीं फेर किसे ना लभ्भया, नज़र नैण ना कोए जणाईआ। गेड़े अन्दर भज्जया, मर जम्मे वाहो दाहीआ। पर्दा किसे मात ना कज्जया, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अन्त रखे ना कोई लज्जया, पार किनारा ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, जिस नाल साडी रुत्त सुहाईआ। साडी रुत्त सुहावणी, प्रभ सच्चे दीन दयाला। चौथे जुग पूरी करनी भावनी, पारब्रह्म पुरख अकाला। दर पकड़े सच्चा दामनी, दामनगीर हो रखवाला। इक्को मन्नी तेरी जामनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सच सदा कृपाला। सुण पुकार बोले भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। मढ़ी गोर कर ध्यान, हरि ध्यानी ध्यान लगाईआ। लेखा जाण जीव जंत जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा मार्ग लाए आण, देवणहार आप वड्याईआ। छोटे बाले कर परवान, साची करनी आप कमाईआ। अग्नी भेंट बलीदान, बल आपणा दए समझाईआ। हड्डीआं चुक्के कोई ना आण, ख़ाक जल ना कोए वहाईआ। लेखा मुका के वड मेहरवान, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई श्री भगवन्त, हरि साचा सच दृढ़ाइंदा। सच बणाए धुर दी बणत, घाड़त आपणी हथ्थ रखाइंदा। दे वड्याई जीव जंत, भगत भगवान रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा मूल चुकाइंदा। तेरा लहिणा मूल चुकाए मात, मढ़ी गोर दए वड्याईआ। जन भगतां जाए आप साथ, सगला संग निभाईआ। शब्द जैकारा बोल गाथ, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। चरण प्रीती बन्न नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देवे माण वड्याईआ। साची माण वड्याई आप दवाउँदा ए। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। जिस वेले गुरमुख वेहड़े तेरे चरण टिकाउँदा ए। सिड़ी बालण

नज़री आउँदा ए। परिवार बंस वेख वेख घबराउँदा ए। शहिनशाह इक्को हुक्म जणाउँदा ए। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच जैकार इक लगाउँदा ए। निरगुण हाज़र होवे आण, तेरा दुखड़ा दर्द मिटाउँदा ए। दर्शन दे श्री भगवान, तेरी भूमका भूम सुहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाउँदा ए। मढ़ी गोर पई हस्स, दर दर आपणी ख़ुशी मनाईआ। तेरा दरस पुरख समरथ, जुग चार ना कोई कराईआ। तेरे भगतां पिच्छे तैनूं वेखीए नाल अक्ख, अक्ख तेरे नाल मिलाईआ। साडा लेखा देणा हक़, हक़ो हक़ झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सच वड्याई माण दवाउँदा ए। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। अगला लेख भेव चुकाउँदा ए। जिस वेले गुरमुख आउँदा ए। बंस सरबंस नाल लिआउँदा ए। सज्जण मित्र जगत रलाउँदा ए। पिछले छड्ड सारे फिकर, घर तेरे सोभा पउदा ए। लख चुरासी विच्चों निक्कल, आपणा नाम प्रगटाउँदा ए। ओस वेले हरिसंगत मेरा करे ज़िकर, साची सिख्या इक समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाउँदा ए। जिस वेले गुरमुख आवेगा। तेरी भूमका चरण टिकावेगा। अर्थी उते सोभा पावेगा। फर्श ख़ाक नाल रलावेगा। अर्श इक्को वेखण आवेगा। दरसी साचा दरस दिखावेगा। मढ़ी गोर तेरी जुग जुग दी लग्गी हरस, सच हरसी आप मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। जद मढ़ी उते टिकाउणगे। मुख नंगा कर वखाउणगे। सोहँ गीत सुहागी गाउणगे। बण वैरागी शुकर मनाउणगे। जगत त्यागी घर साचे सोभा पाउणगे। सो गुरमुख वड्डे वडभागी, भागां भरीए तैनूं नाल रलाउणगे। तेरी किस्मत ओन्हां नाल जागी, जो मेरा नाम ध्याउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखाउणगे। साची करनी कर वखावांगा। मढ़ी गोर रुत्त सुहावांगा। नेत्र रो कोई ना पावे शोर, साचा रंग इक रंगावांगा। अग्गे पिच्छे सारे तोर, तुरत आपणा हुक्म मनावांगा। जन भगतां पकड़ हथ्थ आपणी डोर, तन्द इक्को इक जणावांगा। लोकमात आप बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी डेरा ढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, दाता दानी इक्को इक अख्वाईआ।

* १० माघ २०२० बिक्रमी मेला सिँघ मुनशा सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

भिन्नड़ी रैण उठ उठ कैहन्दी, हरिजनां हाल सुणाईआ। चढ़दा पहाड़ दक्खण दिशा वेखो लहिंदी, नेत्र नैण हरि खुलाईआ।

जिस नूं पैगम्बर कैहन्दे अमाम मैहन्दी, सो महिबूब आपणा फेरा पाईआ। जिस दी जोत आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहिंदी, नित नवित्त आपणी कार कमाईआ। जिस दे चरण सरन दो जहान सृष्टी पैंदी, गुर अवतार सीस झुकाईआ। मैं वी ओस दा भाणा सहिंदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे उठ गुरसिख, सिख्या इक दृढ़ाईआ। जिस दा नानक गोबिन्द लेखा गए लिख, सो आया साहिब सच्चा माहीआ। बिन धुर दे नेत्र पए ना दिस, दोए लोचण ना कोए वड्याईआ। सब नूं सुत्ता दे कर पिठ्ठ, बिन भगत ना कोए दर्शन पाईआ। साहिब सतिगुर नाल करो हित्त, प्रेम प्रीती इक रखाईआ। दो जहानां बणे पित, गोद सुहञ्जणी लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चल आया नूर अल्लाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे गुरमुख गुरदेव, हरि करता नज़री आईआ । आदि जुगादी अलख अभेव, अपरम्पर बेपरवाहीआ। साहिब सुल्तान वड देवी देव, देव आत्मा होए सहाईआ। वसणहारा सदा नेहचल धाम नेहकेव, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। देवणहारा धुर दा मेव, शब्द वस्त नाम वरताईआ। साची करो इक्को सेव, सेवक सच्ची सेव दृढ़ाईआ। एहदे नाल मिल के खोलो आपणा भेव, पर्दा विच्चों लओ चुकाईआ। कोई लोड़ ना रहे गौण दी जेहव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा सांझा इक अख्वाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं की कुछ दस्सां, दस्सण विच किछ ना आईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, हस्सदयां रोदयां समझ कुछ ना आईआ। हो निमाणी निउँ निउँ साहिब दी चरणी ढव्वां, ढहि ढहि शुकर मनाईआ। मैं वेखण वाली चौदां लोक चौदां तबकां हट्टां, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। वाहो दाही कमली हो के नट्ठां, बण के पांधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर होवे सहाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे गुरमुख सईओ, पुरख अकाल नज़री आईआ। आपणा आप आपे मेलो, विच विचोला रहिण कोए ना पाईआ। साचे मन्दिर ओस दे खेलो, जिस मन्दिर ख़ालक बहि के ख़लक बणाईआ। जो कुछ लैणा सो इस तों लै लओ, देवणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं दस्सां बोल, आपणा बल धराईआ। हब कुछ वस्त इस दे कोल, दाता दानी नज़री आईआ। जे भण्डारा देवे खोल, देंदयां तोट रहे ना राईआ। मेहरवान हो के जे अन्तर जाए मौल, मौला आपणा रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा सांझा पीर गुसाईंआ। गुरसिख कहिण सुण भिन्नड़ी रैण, धन्न तेरी वड्याईआ । जो सानूं आई कहिण, कहि कहि रही समझाईआ। असीं इस तों लईए लैण, झोली सारे अग्गे डाहीआ। वेहला कदी ना दईए बहिण, अट्ठे पहर मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साडी सेवा रिहा कमाईआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा साक संबंध, नाता भगतां नज़री आईआ। तूं साहिब सतिगुर वेख चढ़या अगम्मी चन्द, सब नूं दित्ता आण सुणाईआ। असीं वेख के होए अनन्द, घर वज्जी नाम वधाईआ। प्रभ मिल्या इक बख़्शंद, बख्शिश साची झोली पाईआ। पूरब जन्म दी टुट्टी लए गंढु, अग्गे आपणा संग निभाईआ। लख चुरासी विच्चों समझ आई असीं ओहो रूप हँ, जो ब्रह्म रिहा अख्वाईआ। इक्को डोरी इक्को तन्द, इक्को जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा लेखे लाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं दस्सां हाल अनोखा, सच सच्च जणाईआ। आदि जुगादि अछल अछल्ल सब नाल करदा आया धोखा, आपणा पल्लू ना किसे फड़ाईआ। लोकमात आपणे मिलण दा किसे ना देवे मौका, चोरी चोरी वेख वखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द अगम्मी देंदा रिहा होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मैं वेख्या इक्को मिल्या मौका, जो कल कल्की वेस वटाईआ। जिस दे कोल अगम्मी नौका, नईआ नज़र किसे ना आईआ। ढईआ होया पार ला के ढौंका, गोबिन्द गुर गया लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेस वटाईआ। भिन्नड़ी रैणनड़ीए तेरी सुण के बात, बातन आपणा भेव खुलाईआ। तेरी वड्याई तेरी रात, राती रुत्ती सोभा पाईआ। तूं सच स्नेहड़ा दित्ता आख, अक्खर अक्खर ढोला गाईआ। असीं पुरख अबिनाशी वेखीए साख्यात, साहिब सज्जण नज़री आईआ। इकट्ठे हो के करीए अरदास, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं साडे वसणा पास, जग विछड़ कदे ना जाईआ। कोटन कोटि जन्म पिच्छों पूरी होई आस, आसा तृष्ना दे बुझाईआ। उफ़ हाए ना कोई काश, हौका लै ना कोए जणाईआ। जन भगतां मिलण दा तेरा कम्म खास, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ। चरण प्रीती दे नात, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। श्री भगवान कहे शाबाश, शहिनशाह खुशीआं हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरे गुरमुख भाई, भगवन वेख साहिब सुल्ताना। जिस दे घर वज्जे वधाई, सच्चा नाद धुन नाम तराना। उस दा दर्शन करो चाईं चाईं, नेत्र नैण होए मस्ताना। निउँ निउँ लागो प्रभ दे पाईं, दो जहान मिले माणा। ढोला गाओ चाईं चाईं, तूं हैं साहिब विष्नूं भगवाना। जिस आदि जुगादि रचाई, ब्रह्मा शंकर दित्ता दाना। लख चुरासी वंड वंडाई, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर प्रधाना। जिमी असमानां रचन रचाई, सूरज चन्द प्रकाश भाना। चारे बाणी राग अलाई, चारों कुंट झुलाए निशाना। दिवस रैण रंग रंगाई, घड़ी पल वेखे मार ध्याना। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों भिन्नड़ी रैण इक्को नज़री आई, जिस मिल्या शाह सुल्ताना। जन भगतां दस्से चाईं चाईं, घर खुशीआं मंगल गाए गाणा। पुरख अकाल इक गुसाईं, जिस निरगुण जोती पहरया बाणा।

चल के आया धुर दा माही, जिस दा सचखण्ड टिकाणा। जन भगत पकड़े बाहीं, गोद उठाए जिउँ पिता बाल अञ्याणा। मेल मिलाए सहिज सुभाई, औझड़ राह ना कोई विखाणा। मैं वेख्या उस दे ताईं, जोती नूर जगे महाना। मस्तक दिसे ना कोई शाही, ललाटी इक्को रंग वखाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवाना। भिन्नड़ी रैनड़ीए तेरा गाईए जस, जन भगत रहे सुणाईआ। जिस मिलाया पुरख समरथ, साहिब सतिगुर सच्चा माहीआ। सृष्ट सबाई सुत्ती साडी खोल्ही अक्ख, आखर वेला दित्ता जणाईआ। उस दी चरणी जाईए ढह, जिहड़ा ढहयां लए उठाईआ। आपणा दुखड़ा देईए दस्स, जो दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवे मात सहाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे दस्सो आपणा दुःख, खुशीआं हाल सुणाईआ। प्रभ सब दी मेटे भुक्ख, भुक्ख्यां भुक्ख गंवाईआ। उस दे कोलों काहदा लुक, जो घर घर बैठा डेरा लाईआ। बण जाओ साचे एहदे पुत्त, पिता पूत आपे होए सहाईआ। आदि जुगादी एहो मुढ, डाली पत्त रिहा महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर देवे हथ्थ टिकाईआ। भगत कहिण भिन्नड़ी रैण प्यारी, तेरी मुहब्बत नज़री आईआ। जिस लेखा दस्सया जोत निरँकारी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। असीं रल के सारे करीए त्यारी, तुरत आपणा बल प्रगटाईआ। जा के चरण करीए निमस्कारी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। साडी तेरे हथ्थ सिक्दारी, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। आवण जावण लग्गा दुःख भारी, लख चुरासी रही सताईआ। जन्म कर्म दी पहलों कट बीमारी, अगला हाल फेर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दे वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण कहे तुसीं दस्सो हाल, आपणा आप जणाईआ। उह साहिब बड़ा दयाल, दीन दयाल नाउँ धराईआ। तुहाडा झगड़ा मुकावे काल, मौत नगारा ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। उस नूं मिल के होर करनी ना पए भाल, लभ्भण कोई किते ना जाईआ। जिस दे घर सोहण शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा लाईआ। जिस दी सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड इक्को इक वखाईआ। सो स्वामी निरगुण हो के बदले पिछली चाल, मार्ग आपणा इक लगाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, जन भगतां रिहा तराईआ। मैं वी तुहाडे नाल मिल के करां सवाल, बेनन्ती इक्को इक जणाईआ। प्रभू मैनूं भगतां रखी सदा नाल, मेरा भिन्नड़ा रूप मेरे अन्धेरे विच्चों नज़री आईआ। मैं वेखां गुरमुख तेरे लाल, लालां विच्चों लाल जो बैठे रंग चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी हो कृपाल, मेहरवान हो के कहे दयाल, दोहां दा पूरा करां सवाल, घाल आपणी तुहाडी झोली पाईआ।

* ११ माघ २०२० बिक्रमी मुनशा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

चन्द सितार कहे मेरे खालक ख़लक, मख़लूक तेरी नज़री आईआ। तेरा नूर नज़र ना आया उते फ़लक, ज़हूर मिली ना कोए रुशनाईआ। तेरी किरपा तेरे सहारे रहे लटक, तन्दी डोर ना कोए बंधाईआ। जुग चौकड़ी दरस तेरे नूं रहे भटक, भटकणा सके ना कोए मिटाईआ। तेरे प्रेम दा मिल्या ना सच्चा इश्क, हकीकी रूप ना कोए वखाईआ। साचा नज़र ना आया इष्ट, मिल्या मेल ना बेपरवाहीआ। नेड़े हुंदयां खोल्ही ना किसे दृष्ट, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। तेरा खेल वेखदे रहे विच सृष्ट, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। सुणदे रहे तेरी सिफ्त, सिफ्ती सिफ्त वड सिफ्त सलाहीआ। तेरे हुक्मे अन्दर हो के गिर्फ़त, बन्धन धुर दा रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे वखाईआ। चन्द सितार कहे सुण साहिब निरगुण, निरवैर तेरी सरनाईआ। साडा रूप अगम्मी धार सरगुण, सति सरूप विच्चों प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई ना जाणयां तेरा गुण, पर्दा भेव ना कोए उठाईआ। चुप्प चुपाते बैठे हो के मुन, राग नाद ना कोए अलाईआ। सुन्न समाधी अन्दर होए सुन्न, साची सेव ना कोए कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग साडे वेंहदयां भगत भगवान लईं चुण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दे चुकाईआ। चन्द सितार कहिण असीं होए पुट्ठे, मुख तेरे वलों भवाईआ। विछोड़े अन्दर गए कुट्ठे, दुःख सके ना कोए मिटाईआ। साडी वारता आण कोई ना पुच्छे, दुखड़ा सुणन कोए ना जाईआ। तेरे दवारे ओहले लुके, सनमुख रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणे दे वड्याईआ। चन्द सितार कहे साडी निकम्मी चमक, जीव जंत नज़री आईआ। भेव ना पाया जिस बणाई बणत, प्रभ मिल्या ना बेपरवाहीआ। होया विछोड़ा धुर दे कन्त, अंगीकार ना कोए कराईआ। साची बणी ना अजे बणत, घाड़त घड़न ना कोए घड़ाईआ। समझ ना आए आपणे अन्त, प्रभ होए कब सहाईआ। दर दरवेश होईए मंगत, बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग रंगाईआ। चन्द कहे सुण नन्न्हे सितार, तैनूं सच सच्च जणाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, नज़र साडे वल उठाईआ। निरगुण निरवैर लै अवतार, जोती जोत करी रुशनाईआ। इक नौ दा कर्ज उतार, पूरब लेखा लेखे पाईआ। लहिणा मेट गुरू अवतार, पैगम्बरां आपणे राह चलाईआ। साची करनी कर निरँकार, निरवैर खेल खलाईआ। परवरदिगार हो मेहरवान, मुहब्बत साडे नाल कराईआ। लोकमात पैज स्वार, साची बणत रिहा बणाईआ । आपणे तन कर शृंगार, शहिनशाह आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। सितार कहे सुण सज्जण

चन्द, मैं वेख वेख बिगसाईआ। श्री भगवान हो बख्शंद, बख्शिश साडे उते कमाईआ । निरगुण सरगुण हो के लाया अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। छाती नाल लगाए खुशी कीता बंद बंद, साची बणत रिहा बणाईआ। सब दी पूरी करनहारा मंग, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद साची पैज रखाईआ। चन्द कहे सुण सितारे मीत, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। मुहम्मद दस्स के गया प्रभ दी रीत, परवरदिगार भेव चुकाईआ। जिस दा काअबा सच मसीत, हुजरा इक्को इक वड्याईआ। जिस दा निशाना सच्चा ठीक, तीर निराला बाण वखाईआ। जो जगत अन्धेरा मेटे तारीक, साचा नूर चन्द चमकाईआ। जिस दी सदा धार बरीक, सत सतार दए प्रगटाईआ। जिस दे वसे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस दी कोई ना समझे रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ । ना होए कदे पलीत, पाक रसूल इक अख्वाईआ । सो साडे नाल करे प्रीत, नीला फ़लक रूप वखाईआ। ख़ालक निशाना वेखे ठीक, तन चोली इक हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सितार कहे सुण चन्द चंगेरे, मैं चंगी तरां समझाईआ। लोक परलोक जिस दे घेरे, तबक सबक जो रिहा पढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जिस दे खेड़े, दो जहान खेल खलाईआ। आदि जुगादि जो बन्ने बेड़े, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। गुर अवतार जिस दे चेरे, पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। उह करे हक़ नबेड़े, सब वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम लाए डेरे, घर साचे सोभा पाईआ। लख चुरासी देवे गेड़े, मुरीद मुर्शद लए तराईआ। दूर दुराडा आए नेड़े, नेड़न नेरा नज़री आईआ । दो जहान बण दर दलेरे, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। चन्द कहे सितार तेरी समझ निक्की, वड्डे भेव कोए ना पाईआ। परवरदिगार धार रखे निक्की, दो जहान आर पार वखाईआ। करे खेल इक अनडिठी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। इक्को गोबिन्द दी मैं पढ़ां चिट्ठी, जिस उते हरफ़ जगत नज़र ना आईआ। बिन कागद बिन हल्कारे दिती, मोहर उते ना कोए लगाईआ। जिस दी धार अगम्मी लिखी, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सितार कहे चन्द दस्स उह लेख, जो नेत्र नैण निहालया। तूं इन्नां अक्खां ल्या वेख, दूर दुराडे सच मतिवाल्या। गोबिन्द खेडे केहड़ी खेड, मिले मेल पुरख अकालया। की सुनेहड़ा दित्ता भेज, सच संदेसा इक सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखा ल्या। चन्द कहे सुण सितार मेरे, मैं सच दयां जणाईआ। गोबिन्द सूलां सत्थर कर चंगेरे, आसण सोहणा इक विछाईआ। खंजर कढ्ढ आपणे हथ्थ विच फेरे, सीस उपर आप लगाईआ। नोक नाल मस्तक छेड़े, धार प्रेम प्रीत वहाईआ। छोटी

उँगली नाल लिख्या कर के वड्डे जेरे, कागद कलम ना कोए वखाईआ। इक्को अक्खर पाया निरँकार मैं चढ़या तेरे बेड़े, तूं बेड़ा मेरा आप चलाईआ। मैं वसया तेरे वेहड़े, तूं मेरा घर वसाईआ । इक्को कीते कौल बथेरे, गिणती होर ना कोए वधाईआ। श्री भगवान किहा मैं सद वसां तेरे खेड़े, काया बुत्त मिले वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सितार कहे की गोबिन्द लिखी धार, खून आपणा रंग रंगाईआ। चन्द कहे मैं गुजरी चन्द प्यार, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। दोहां मिल के बणी इक कतार, सतर रूप ना कोए वखाईआ। सजदा करन चन्द सितार, दोवें सीस झुकाईआ। गोबिन्द कहे तूं मेरा पुरख अकाल, पिता इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल कहे तूं मेरा लाल, नूर नुराना नूर इलाहीआ। गोबिन्द कहे मेरा इक सवाल, सच तेरी झोली पाईआ। मेरे नालों प्यारे रखीं मेरे गुरमुख लाल, जिन्हां विच्चों मेरा रूप नज़री आईआ। उन्हां आपणी गोदी रखीं संभाल, मैं तेरी भेंट चढ़ाईआ। उह चन्द चमकण विच जहान, सितारे तेरी डोरी नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। चन्द सितारे दोवें कहिण, कहि कहि खुशी मनाईआ। असां आख्या शायद प्रभ सानूं आए लैण, साडा लहिणा दए मुकाईआ। जां वेख्या भगतां बणया सज्जण सैण, साक इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चन्द कहे सितारे उठ, उठ आपणा हाल सुणाईआ। जन भगतां उते भगवन रिहा तुठ, मेहर नज़र टिकाईआ। उस दे कोल फोलीए आपणा दुःख, दुखियां दर्द वंडाईआ। कोटन कोटि जुग अग्गे बैठे रहे चुप्प, साडी सार किसे ना पाईआ। सितारा कहे असीं गुरमुखां वांग बणीए उहदे पुत्त, प्रेम प्रीती चरणां नाल निभाईआ। कर किरपा जे सानूं लए चुक्क, पिछला दुःख देवे गंवाईआ। चन्द कहे चल वेखीए उस दा मुख, जो नूर नूराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। तारा कहे चन्द की होया, हालत मैनूं समझ ना आईआ। पुरख अबिनाशी कदे ना सोया, जुग चौकड़ी वेखे थाउँ थाईंआ। साडी पुकार विच्चों सानूं दित्ता ढोआ, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। निरगुण सरगुण बण के नवां नरोआ, नौजवान खेल कराईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जिस ने मोहया, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी आसा पूर कराईआ। चन्द कहे सितार साडी पूरी आसा, प्रभ मंगया दान झोली पाईआ । क्यों असां भगतां वेख्या हुन्दा तमाशा, जो भगवन नाल रहे कराईआ। सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सुत्ती रातां, असां जाग जाग आपणी अक्ख खुल्हाईआ। निक्कीआं निक्कीआं वड्डीआं वड्डीआं दोहां दीआं सुणीआं बातां, जो आपस विच रल मिल खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवे सर्ब माण वड्याईआ। चन्द कहे सितारे हुण नहीं उहला, पर्दा नज़र कोए ना आईआ। उठ वेख जिस नीली धार तन विच पाया चोला, सितार चन्द दोवें छाती उते लगाईआ। एहो प्रभू साहिब सतिगुर सच्चा ढोला, परवरदिगार नूर खुदाईआ। एहो नूर अगम्मी मौला, जो हर घट रिहा समाईआ। जिस ने साडा तोलण तोला, तराजू आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां सुणाया इक्को धुर दा ढोला, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जै कार अलाईआ। सब दा बणया इक विचोला, दो जहानां वेख वखाईआ। भगत दुआर भगवन खोल्ला, प्रेम प्रीती वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब दा सबब नूरी रब्ब, झब्ब आपणा राह वखाईआ।

* ११ माघ २०२० बिक्रमी गंडा सिँघ ते बलवन्त कौर दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

चन्द कहे सितार वेख्या की, की कुछ नज़री आईआ। सितार कहे प्रभ सतिजुग रखी नींह, बूटा आपणी हथ्थीं लाईआ। बण विचोला जीवां जीअ, जीवण जुगत दिती वड्याईआ। माण दवा के साढे तिन्न हथ्थ सीं, तन माटी ख़ाकी लेखे लाईआ। सन्त सुहेले बणा पुत्तर धी, गुरमुख चेले गोद बहाईआ। अमृत बरस इक्को मींह, ठंडी धार मुख चुआईआ। कूड़ी क्रिया मेट लीह, चिट्टे उते काली लकीर आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। सितारा कहे चन्द वेख उह चिट्ठी पढ़दा, जिस बिन अक्खरां आप लिखाईआ। लेखा जाणे धुर घर दा, भेव अभेद रिहा खुल्लाईआ। खेल करे नर हरि दा, नर नरायण बेपरवाहीआ। वेंहदयां वेंहदयां लख चुरासी विच्चों गुरमुख थोड़े फड़दा, भगत भगवान लए जगाईआ। मेहरवान हो के किरपा करदा, किरपन देवे माण वड्याईआ। कीते कौल उत्तों नहीं फिरदा, जो गोबिन्द नाल रखाईआ। एह खेल साचे पिर दा, लग्गी प्रीती तोड़ निभाईआ। मैं जुग चौकड़ी वेंहदा चिर दा, कोटन कोटि काल बिताईआ। श्री भगवान नज़र ना आवे फिरदा, दर दर भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम वेख्या गेड़ा गिढ़दा, लड्ड आपणी आप भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लारा देंदा रिहा देर दा, सो अन्तिम आ के पूर कराईआ। करे खेल शहिनशाह शेर दा, भबक आपणा नाम सुणाईआ। लेखा चुक्के हेर फेर दा, मार्ग इक्को इक समझाईआ। दर्शन कर इक निरवैर दा, मैं आपणी खुशी मनाईआ। एहो खेल अगम्मी लहर दा, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। रस प्याला मिट्ठा होया कौड़े ज़हिर दा, अमृत रूप आप वटाईआ। भव सागर गुरमुख वेख तैरदा, मेरे नेत्र खुशी मनाईआ। सोहणा बाग बगीचा वेख्या बाबू पुर शहर दा, हट्ट बज़ार इक्को जैसे नज़री आईआ। सोहणा थाँ लग्गा बहिण दा, कूड़ी छड्डी जगत

लोकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मैनूं वक्त मिल्या कहिण दा, जो कहिणा कहि सुणाईआ। चन्द वेख नाता जुड़या भाई भैण दा, सतिगुर सच्चा रंग रंगाईआ। लेखा चुक्कया पहला लैण देण दा, अग्गे देवे ना कोए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चन्द कहे सुण मीत सतारे, सता मैं भी वेख वखाईआ। भूमका वेखां नौ किनारे, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जागत सोवत खेल दोवें पनिहारे, पनघट बैठे डेरा लाईआ। कोई ना जाणे आर पार किनारे, नईआ नौका नज़र किसे ना आईआ। सारे फिरदे वेखे विच घुंमण घारे, भँवरी भँवर रही भवाईआ। जुग चौकड़ी बणदे वेखे वणजारे , गुर अवतार पीर पैगम्बर फेरीआं पाईआ। सारे दे के गए लारे, लेखा कलम छाहीआ। नाम लिखाता कलयुग अन्तिम इक्को आवे निहकलंक अवतारे, अकल कल धारी फेरा पाईआ। सब दे कर्जे आण उतारे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। ओस दे वेखण वाले नज़ारे, नज़ाम पिछला दए बदलाईआ। सब दे लिखे चार जुग दे पटे पाड़े, बेदखल सब नूं दए कराईआ। अक्खीं वेखीए गुर अवतार पीर पैगम्बर कढ्ढुणे हाढ़े, हौका लै लै हाल सुणाईआ। करे खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर धार चलाईआ। हौली हौली बन्नदा जाए धारे, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। इक गोबिन्द नाल करे प्यारे, प्रेम प्यारा आप हो जाईआ। धरनी धरत सुहाए जंगल जूह उजाड़े, मेहरवान फेरा पाईआ। सम्मतां विच्चों सम्मत इक बीस बीसा विचारे, इक्की विसाख खुशी मनाईआ। सत्थर करे सर्ब तों न्यारे, बिस्तर इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सतारा कहे मैं चन्द वेख्या हाल, बिन चन्द ध्यान लगाईआ। सुत दुलारा सुत्ता आण, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। काही कक्ख कर परवान, कलमा कलाम गया मिटाईआ। मिल के साहिब इक अमाम, अमानत आपणी मंग मंगाईआ। लेखा दे मेरे भगवान, जो तेरी झोली पाईआ। श्री भगवान कर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पहलों इक्कीआं करां बलवान, फिर निक्कीआं निक्कीआं गल्लां वेखां चाईं चाईंआ। धुर दीआं लिखीआं पड़दे फोलां आण, वरका वरका आप उलटाईआ। लहिणा चुका ज़िमी असमान, ज़ामनी आपणी विच रखाईआ। सन्त सुहेले कर परवान, गुर चेले गोद टिकाईआ। चन्द सितार दोवें वेख होण हैरान, हरि जू आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चन्द ओह वेखे चमके चन्द, जिस दी रोशनी नज़र किसे ना आईआ। अन्दर वड़या दूई द्वैती ढाह के कंध, पर्दा उहला इक उठाईआ। कर प्रकाश बंद बंद, बंदगी इक्को दिती समझाईआ। मैं तेरा तूं मेरा ब्रह्म, पारब्रह्म भेव चुकाईआ। बण सेवक सेवादार करां कम्म, नेहकर्मी कर्म कमाईआ। अनडिठड़ी धार बेड़ा बन्नृ, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। दयाल कृपाल

हो के श्री भगवान, बेमिसाल खेल वखाईआ। कर वसेरा छप्पर छन्न, महल अटल दए वड्याईआ। लिखण वाली कलम छाही दिती भन्न, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। ओस रुत्त दा रंग रता अगम्मी चढ़या चन्न, जिस चन्न दा पुरख अकाल पिता माईआ। ना हरख़ ना कोई ग़म, चिन्ता सोग ना कोई रखाईआ। बिन सद्दयां पुछयां मनायां आपे गया मन्न, मनसा सब दी आपणे नाल मिलाईआ। जन भगतां वेख नेत्र पेख बणा लेख मेट रेख कहे धन्न, धन्न धन्न जन तेरी वड्याईआ। सूरज चन्न दोवें वेखण खेड, तारा कहे अगम्मी भेद, जिस दी सार ना पाइन चार वेद, बिन वेदां बिन भेदां अछल अछेदा अच्छी तरां आपणी खेल खलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेखा जाण दो जहान, जहान विच्चों जवान जाण, जवानी जोबन गुरमुखां वेख खुशी मनाईआ।

* ११ माघ २०२० बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

अन्दर ज्ञान वसाए केहड़ा, बिन सतिगुर किरपा ना कोई वड्याईआ। जिस अन्दर पंजां छेड़या झेड़ा, झगड़ा सके ना कोई मुकाईआ। जिस गृह कूड़ कुड़यारां दा वेहड़ा, जूठी झूठी वज्जे वधाईआ। जिस घर अट्ठे पहर अन्धेरा, साचा नूर ना कोई रुशनाईआ। जिस घर मन मनुआ करे हेरा फेरा, मनसा आसा नाल मिलाईआ। जिस घर होवे हंगता लग्गा डेरा, माया ममता रही कुरलाईआ। जिस दर कोए ना करे निबेड़ा, हकीकत हक़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त बैठा छुपाईआ। अन्दर ज्ञान वसे किस, किस्मत सके ना कोई बदलाईआ। हरि का नाम नेत्र पए ना दिस, वेखण विच कदे ना आईआ। कूड़ अँध्यारे अन्दर सुत्ता दे कर पिट्ठ, करवट सके ना कोई बदलाईआ। किसे हथ्थ ना आवे विच्चों किसे सवा गिट्ठ, अंगुशत नाप ना कोए नपाईआ। बालिशत विच लए कोई ना मिच, मुश्किल हल्ल ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला आप इक रखाईआ। ज्ञान नज़र ना आए काया भँवर, डूंग्घी गार समझ ना आईआ। जगत अन्धेरी दिसे कबर, डूंग्घी डल भेव ना राईआ। जिस अन्दर ओहले छिप के बैठा करे सबर, बेसबरी करे लोकाईआ। गरज ना मारे शेर बब्बर, भबक आपणी ना कोई लगाईआ। खोजत खोजत ढूंडे विकारा टब्बर, लभ्भयां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। वेखो वेखी इक दूजे दे लग्गे मगर, पिछली कहाणी नाल रलाईआ। किसे ना पूरी होवे सध्धर, साधना सके ना कोई समझाईआ। जिस घर कूड़ कुड़यारा बदल, सच नूर ना कोई चमकाईआ। अट्ठे पहर रहे गदर, झगड़ा सके ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, भेव आपणे विच रखाईआ। अन्दर ज्ञान वसाए कौण, कवण देवे वड्याईआ। नौ दवारे सारे भौण, भज्जण वाहो दाहीआ। जगत खाट सिँघासण सौण, तकीआ लेफ तलाई हंढ्ढाईआ। गढ़ हँकारी उच्ची कर के धौण, चार कुण्ट देण दुहाईआ। मन मति बुध चतुराई सर्ब वखौण, आपणी आप कर वड्याईआ। तूं तूं मैं मैं कर बलौण, साची बोली ना कोई सुणाईआ। पढ़ पढ़ ज्ञान हथ्थ ना आवे रावण रौण, चार वेद छे शास्त्र समझ कोई ना पाईआ। अवण गवण सारे भौण, भाउदयां भय ना कोई मिटाईआ। कोटन कोटि जन्म सीस कटौण, कट कट आपणा भेंट चढ़ाईआ। कोटन कोटि जन्म निउँ निउँ सीस झुकौण, सजदे कर कर ध्यान लगाईआ। बिन सतिगुर किरपा अन्दर वड़ के दरस कोई ना पौण, मिले मेल ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा छुपाईआ। हरि का ज्ञान ना सके लभ्भ, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। निक्की जिही कोठड़ी विच दित्ता रख, दरवाज़ा कुण्डा आपे बंद कराईआ। फिर फिर थक्कण तीर्थ तट, अठसठ फेरा पाईआ। लभ्भदे फिरन गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले खोज खुजाईआ। सिर विच पा पा बैठे भस, तन ख़ाकी भस्म कराईआ। दोए जोड़ जोड़ बन्दना करन हथ्थ, डण्डावत रूप वटाईआ। रसना जिह्वा गा गा रहे रट, रट्टा कर कर वक्त लँघाईआ। जंगल जूह उजाड़ां विच रहे नट्ठ, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पूजा कर कर पाठ, संध्या सरघी ध्यान लगाईआ। हवन दीप जोत जगा लट लट, घृत उपर भेंट चढ़ाईआ। छड्ड सिँघासण राज राजान दर दर रहे नट्ठ, भिच्छया मंगण थाउँ थाईंआ। बिन सतिगुर किरपा किसे कुछ ना आया हथ्थ, ख़ाली हथ्थ सर्ब दिसाईआ। अन्दर ज्ञान किसे ना वेख्या वड़दा, जग नेत्र नज़र ना आईआ। रसना जिह्वा हर कोई ढोला पढ़दा, अक्खर अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। दर दरवेश हो को फिरे बरदा, बंदगी विच बण शुदाईआ। आपणा आप तन माटी ख़ाक हरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बिन सतिगुर किरपा कोई भेव ना पाए आपणे घर दा, घर विच घर ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला इक रखाईआ। अन्दर ज्ञान वसावे ओह, जिस देवे माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर दा जाए हो, अवरी धार ना कोई रखाईआ। जीव जंत जी आपणा देवे कोह, जाणे वस्त सर्ब पराईआ। सच प्रीती करे मोह, मुहब्बत इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। ज्ञान कहे मैं वड्डा चलाक, प्रभ दिती मोहे वड्याईआ। मात गर्भ मैं बंद करां ताक, बाहर फिर रूप वटाईआ। लिव छुट के साख्यात, साजण आपणा बैठे मुख छुपाईआ। किसे नाल ना करां बात, मंगल राग ना कोए अलाईआ। कोई मैनूं वेखे ना मार झात, झाकी सब दी बंद कराईआ। रसना जिह्वा सिफ्त नाल मैनूं

सारे जाण आख, आखर मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। ज्ञान कहे मैं वड्डा निक्का, दोहां धारां विच रखाईआ। पुरख अकाल मेरा पिता, साहिब सतिगुर देवे सरनाईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा किसे ना दिसा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस ने गाया मेरे प्रीतम दा किसा, तिस मेरी ओट तकाईआ। मेरी हथ्थ रखे प्रभू पिठ्ठा, पुश्त पनाह इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पर्दा रिहा पाईआ। परदे अन्दर रख भगवान, मोहे दिती माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी मेरी करदे रहे भाल, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। गुर अवतार देंदे गए ब्यान, पीर पैगम्बर सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। बिन भगतां मेरा मिल्या ना किसे निशान, निशाना तीर ना कोई चलाईआ। सोच समझ नूं जो कैहन्दे ज्ञान, भरमे भुल्ले जीव शुदाईआ । परम पुरख नाल जो मिले आण, तिन्हां ज्ञान ध्यान दोवें सीस निवाईआ। की ओन्हां दी करां पहचान, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। प्रभ मिल्या मैनूं कोई ना देवे माण, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। सो ज्ञान होवे प्रधान, जिस ज्ञान अन्दर हरि का ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी मेरी रीत, इशारयां नाल चलाईआ । जुग चौकड़ी मेरा तक्कदे रहे सहारा, साध सन्त ध्यान लगाईआ। लभ्भयां हथ्थ ना आया किनारा, कन्ढे बहि डेरा ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा बोलदे रहे जैकारा, जै जै कार सुणाईआ। किसे ने अक्खरां विच कीता प्यारा, कोई कागज़ां उते ध्यान लगाईआ। कोई इट्टां करे निमस्कारा, कोई पाहिन सीस निवाईआ। कोई कहे खेल गुरू अवतारा, कोई कहे पीर पैगम्बर दए वड्याईआ। मैं कहां बिन श्री भगवान मेरा कोई ना मीत मुरारा, संगी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत आप बणाईआ। ज्ञान कहे मैं दस्सां बात, धुर दी धार जणाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं सारे गए आख, आखर भेव ना कोए खुल्हाईआ। मेरी लभ्भी किसे ना ज़ात, मेरा पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा भेव आप छुपाईआ। मेरा भेव छुपाया जुग चार, मुख नज़र किसे ना आईआ। दस्सदे दस्सदे गए सर्ब संसार, सहिंसा सके ना कोए चुकाईआ। बुद्धि करे ना कोए विचार, मति मतिवाली सार ना पाईआ। मनूए मिल्या ना कोए अधार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। थोड़ा थोड़ा सब नूं मिलदा रिहा इशार, सैनत नाल सिरजणहार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मोहे देवे माण वड्याईआ। ज्ञान कहे मैं वसां उहला, पर्दा आप रखाईआ। जुग चौकड़ी पैंदा रिहा रौला, मेरा रूप ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान मिल्या तोला, मेहरवान फेरा पाईआ। कर प्रकाश उपर धौला, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। सच

दवारा जिस ने खोल्हा, भगत दुआर इक सुहाईआ। जिथ्थे इक्को गाईए ढोला, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। पुरख अकाल बण विचोला, जन भगतां मेला लए मिलाईआ। जिस मेरा पर्दा खोल्हा, मुख नकाब नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ज्ञान कहे प्रभ दित्ता ज्ञान, जन भगतां भेव चुकाईआ। अन्दरे अन्दर सिध्धा मिल्या आण, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। नाता छोड़ शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वसया बेपरवाहीआ। जिस घर वसया आप निरँकार, ज्ञान दवारे बहि बहि सेव कमाईआ। उथ्थे करन दी नहीं कोई विचार, विचारयां हथ्थ किछ ना आईआ। मैं उन्हां जावां बलिहार, बलिहारी हो सीस निवाईआ। जिन्हां मिल्या आप करतार, करता वेखे चाईं चाईंआ। फड़ के बाहों मैनूं अन्दर दित्ता वाड़, गुरमुख दवारे सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। मेला मिलाया हरि डरैकट, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। अन्दर बाहर पए ना कोई अफैकट, फ़र्क कोए नज़र ना आईआ। लख चुरासी विच्चों कर सलैकट, हरिजन मेरे नाल मिलाईआ। दस्म दवारी निक्की जिही बरैकट, जो मेरे नाल सोभा पाईआ। उथ्थे जगे अगम्मी अलैकट, जोती नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई वेला ना कोई वक्त, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। ना कोई अर्श ना कोई फ़र्श, ज़िमी असमान ना कोए चतुराईआ। साढे तिन्न हथ्थ घर विच करे तरस, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पर्दा रिहा चुकाईआ। ज्ञान कहे मेरा पर्दा लाह, मुख मेरा रिहा जणाईआ। अन्दरे अन्दर बण मलाह, मुहब्बत साची रिहा बंधाईआ। बिन पढ़यां लिख्यां बोलयां तोलयां देवे आप सलाह, साचा लेखा इक समझाईआ। रहिबर बण नूरी खुदा, नूरी जलवा रिहा दरसाईआ। आपणा मार्ग कर के सिध्धा, बिध आपणी रिहा वखाईआ। अन्दर वड़ के जन भगतां वेख्या जिन्हां सदा दवारा निग्घा, ठंडक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई ज्ञान गुरदेव, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जिस साहिब दी करां सेव, नित नित चाकर रूप वटाईआ। फड़ के बाहों सिध्धा जन भगतां अन्दर दित्ता भेज, भजन बंदगी कम्म ना कोए रखाईआ। बाहों फड़ के बिठाया उस सेज, जिस सेज चढ़न कोए ना आईआ। किरपा कर वखाया जोती तेज, जिस विच कोटन कोटि चन्द सूरज समाईआ। प्रेम प्यार अन्दर कीता हेत, हितकारी हो दए वड्याईआ। मैं ओस दवारे रिहा खेड, जिस घर लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिती माण वड्याईआ। ज्ञान कहे मैं वड़या अन्दर, घर भगतां डेरा लाईआ। सोहणा लग्गा सुच्चा मन्दिर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ।

रोंदी वेखी डूंघी कन्दर, कूड़ी तृष्ना दए दुहाईआ। माया ममता हौका भरे विच खण्डर, घर स्वामी बैठा मुख छुपाईआ। अग्गे तक्कया कोई नज़र ना आया सूरज चन्द्र, चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। भगत भगवान कोलों इक्को वस्त मंगण, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। उस ज्ञान दी चाढ़ रंगण, जिहड़ा ज्ञान तेरे विच्चों प्रगट हो के नज़री आईआ। दूजे कोल कदी ना जाईए मंगण, जो अक्खरां नाल उते सौं सौं वक्त लँघाईआ। श्री भगवान साडे मस्तक ला चन्दन, टिक्का तेरा इक्को नज़री आईआ। शाह पातशाह तूं हैं सूरा सरबँगण, सदा सूरबीर अख्वाईआ। जिस रविदास चमरेटा पानही लाया गंढुण, तिक्खी आर धार हथ्थ फड़ाईआ। पहलों उस तों जगत भेख नाल आपणे मस्तक लवाए तिलक तिल बन्धन, बंदगी फेर आप बणाईआ। पिच्छे भगत जन सारे उसे अन्दर लँघण, कुण्डा खिड़की गुरमुख कोलों खुलाईआ। एहो दात आया वंडण, जो बैठा आप लोकाईआ। ज्ञान कहे मैं वेख्या उह अनन्दन, जिस अनन्द विच अनन्द रिहा वखाईआ। नाता जोड़ जगत वरभण्डण, ब्रह्मण्ड दयां तजाईआ। जे भगतां नाल ब्रह्मण जाए संगण, बिनां सचखण्ड चरण डिगा निउँ निउँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देवे इक वर, जिस वर विच्चों वारता गाए जगत लोकाईआ। भगत कहिण ज्ञान गुज्झ, उठ तैनूं दयां समझाईआ। वेख प्रभू पारब्रह्म साडे प्रेम अन्दर गया रुझ, प्रीती सच्ची सच रखाईआ। तैनूं कुछ ना गया सुझ, सोच समझ ना चली कोई वड्याईआ। हुण आ के साथों पुछ, तैनूं सिध्धा दईए मिलाईआ। अन्दर वड़ दर्शन कर तेरी लथ्थे भुक्ख, तृष्ना तृप्त रूप वटाईआ। ज्ञान कहे मैं वेख के पहलां गया झुक, आपणा सीस निवाईआ। शहिनशाह किस बिध आपणा बदलया रुख़, रुची गुरमुखां नाल जुड़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छों उठ, परदे ओहले सारे दए मिटाईआ। सब दी खड़ी रखां मुच्छ, मुश्किल अग्गे नज़र कोए ना आईआ। जो पारब्रह्म परमेश्वर दे बणे पुत्त, तिन्हां ज्ञान सके की समझाईआ। जिध्धर वेखण ओधर मौली रुत्त, दो जहान मिलख जगीर सोभा पाईआ। जे गुस्से विच जाण रुट्ठ, फिर वी रुट्ठयां लए मनाईआ। कर उजल उजाला उज्यारा मुख, अजब आपणा रंग वखाईआ। उह वेला रिहा ढुक्क, भेव रिहा मुक्क, अगला देवे सुख, चुक्क चुक्क आपणी गोद बहाईआ। जे कोई हथ्थीं फड़े हथ्थ ना आवे कुछ, कुशता मार हकीम देवे ना कोए दवाईआ। जे कोई चरण फड़ाए घुट्ट, जड़ लोकमात विच्चों पुट्ट, बूटा सचखण्ड देवे लाईआ। उंगली नाल रखाए गोबिन्द सुत, वेख मौली तेरी रुत्त, करे खेल अबिनाशी अचुत, चारों कुण्ट खुशी वखाईआ। उधरों भज्जी आई भुक्ख, मैनूं लग्गा तेरा दुःख, चार जुग धूआं रिहा धुख, तेरी जोत जगत जग ना कोए जगाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरी सुहावां रुत्त, तेरे साथी कढ्ढां कुट्ट, जिन्हां तैनूं ल्या लुट्ट, रोटी टुक्कड़ा तेरी झोली

पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सुहाए रुत्त, रुत्त आपणे नाल सुहाईआ। अकथ कथा दे बिन कथनी कथा, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। जो आपणे मन्दिर गृह स्वामी ठाकर वसा, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस मार्ग दस्सा, गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब पढ़ाईआ। जिस नूं निमस्कार निमस्कार निमस्कार टेकदे रहे मथ्था, सजदा सीस झुकाईआ। जे कोई पहलों हुक्म करे दोए जोड़ के कहिण सब अच्छा, तेरी वड वड्याईआ। तेरे समुन्दर विच कोटन फिरदे मच्छ कच्छा, गुर अवतार पीर पैगम्बर तारीआं लाईआ। किसे दी चोटी मुन्नी किसे दी बोदी रखी किसे तेड़ पवाया कच्छा, किसे कीमत विच बदलाईआ। किसे गल पवाया रस्सा, किसे नीहां हेठ दब्बा, किसे किहा मैं तेरा अब्बा, बापू बण के किसे दी बणत बणाईआ। किसे नूं किहा नूर इलाही रब्बा, किसे नूं किहा हर घट अन्दर वसा, किसे नूं किहा चारों कुण्ट नस्सा, दर दुआर नज़र किसे ना आईआ। किसे नूं किहा भगत प्रीती अन्दर बद्धा, किसे नूं किहा मौजां अन्दर देवां सद्दा, किसे नूं किहा मैं वसां वक्खरा सब तों अड्डा, दूर दुराडा डेरा लाईआ। किसे नूं दस्सया नढ्ढा, किसे नूं नज़री आया विच्चों हड्डां, किसे नूं अक्खरां नाल समझाईआ। किसे नूं किहा विश्व जद्दा, किसे नूं किहा सूरा सरबग्गा, किसे नूं किहा पार कराए हद्दा, दो जहानां चरणां हेठ रखाईआ। चूंकि चुनाचे कर किरपा जिन्हां नूं आप लभ्भा, लुबे लुआब अबिनाशी दए जणाईआ। भण्डारा देवे सब कुछ अब्बा, अतोट अतुट वरताईआ। जे विगढ़ जाए ते बड़ा कब्बा, मक्के काअबे सारे देवे ढाहीआ। मेहरवान होवे बण जाए निक्का नढ्ढा, गुरमुखां अन्दर वड़ खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुशीआं नाल होए गद गदा, हरिजन आपणे नाल रखाईआ।

बेगमपुरे विच मिले हथ्थ, जगत अक्खां नज़र किसे ना आईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि गाउँदे रहे अकथ, रसना जिह्वा ढोले बत्ती दन्द सुणाईआ। जिस गृह मन्दिर दीपक जोत जगे लट लट, अज्ञान अन्धेरा नज़र कोई ना आईआ। निरगुण निरवैर दीन दयाल बैठा समरथ, साहिब सतिगुर सोभा पाईआ। मन मति बुध जगत विद्या चले ना कोई वस, लिख्या लेख संग ना कोई रखाईआ। बिन रसना जिह्वा देवे अगम्मी रस, अमृत झिरना इक झिराईआ। बिन छप्पर छन्न चार दिवारी ओह खेड़ा रिहा दस्स, सूरज चन्द ना कोई चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान ना कोई दिसे तीर्थ तट, हट्ट वणजारा रूप ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेगम पुरा बण बेगम आप सुहाइंदा। बेगम बणे जोत निराली, थान आपणी सेज सुहाईआ। आदि जुगादि रहे दीवाली, दीपक इक्को इक

रुशनाईआ। सौहरे पेईए नानक दादक भैण भाई भैनोईआ ना कोई साली, सज्जण संग ना कोए वखाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जगत बनास्पत ना कोई पत डाली, समुंद सागर उजाड़ पहाड़ रूप ना कोई वखाईआ। ना घनईया ना कोई काहन ना कोई गऊआं बणे पाली, बंसुरी नाद धुन शब्द राग ना कोई अलाईआ। एका रंग गहर गम्भीर बिन शरीर करे खेल निराली, लाशरीक सच तौफ़ीक इक्को नूर खुदाईआ। बेग़म पुरे ओह बेग़म वसे ठीक, जिस दी आदि जुगादि साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर करन उडीक, नित नवित्त नैण लोचण सुहञ्जणे अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर बैठे ध्यान लगाईआ। जे ओह बेग़म करे सच प्रीत, प्रेम प्रीती अन्दर गुरमुख आपणे घर मंगाईआ। उस नूं मिल के हरिजन कहे बेग़म पुरा है एह बेग़म पुरा ठीक, जिस अन्दर रोग सोग चिन्ता दुःख नज़र कोए ना आईआ। इक्को जाप श्री भगवान मेहरवान नौजवान नज़री आए अतीत, सति सतिवादी आपणा आसण लाईआ। फड़ फड़ बाहों उथ्थे इक दूजे नूं कोई ना सके घसीट, संगी साथी सारे दित्ते तजाईआ। इक इकल्ला आवे जावे आप चलावे आपणी रीत, रीतीवान इक्को इक अख्वाईआ। मस्जिद मन्दिर शिवदुआला मट्ठ ना कोए मसीत, अञ्जील कुरान तीस बतीस हदीस ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देखणहारा उह घर, जिस घर ग़मी खुशी रूप ना कोए वटाईआ। ग़मी खुशी ना कोई ग़म, ग़फ्लत नज़र कोए ना आईआ। हरख़ सोग चिन्ता दुःख पवण स्वास ना कोई ग़म, दमा दम रंग ना कोए वखाईआ। तन माटी पंज तत कोई ना चम्म, चम्म दृष्टी ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर श्री भगवन, शाह पातशाह सच करे रुशनाईआ। कोई वेख ना सके नेत्र अन्न्ह, बिन सतिगुर पूरे समझ किसे ना पाईआ। कोटन कोटि नैण शरमावण सूरज चन्न, चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। जिस वेले श्री भगवान भगत आपणे सद्दे जन, तिन्हां धन्न जणेंदी माईआ। नज़री आए सच दवारा जिस दा रूप अगम्म, अगम्मड़ी खेल आप कराईआ। उस वेले गुरमुख कहे धन्न धन्न धन्न पुराबेग़म बेग़म वसे बेग़म, इक्को बैठी नज़री आईआ। बेग़म कहे मैं बड़ी सोहणी, मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मैं आदि जुगादि भगतां मोहणी, मोह मुहब्बत विच सदा फसाईआ। जिस दे नेड़ ना आवे होणी, राए धर्म ना डर वखाईआ। मैं उन्हां दी करां बौहणी, पहलां आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख के आया उह घर, जिस घर बेग़म इक्को नज़री आईआ। आओ सन्त जी चलीए बेगम पुरे, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। केहड़ी मंज़ल पहुंचो तुरे, आपणा भेव छुपाईआ। केहड़ा मन्त्र फुरना फुरे, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। केहड़ी धार गुरमुख चढ़े, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। केहड़े थाँ तों बैठे सारे पिछांह मुड़े, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे कहिण असीं

गुरे, निगुरा मात ना कोए अख्वाईआ। उन्हां नालों होर कौण हैण बुरे, जो झूठ गा गा जगत भुलाईआ। सन्त सहेली नूं सन्त साजण पुछे दस्स कुड़े, उह कर्मां वाला केहड़ा थाँ जिस घर बहि बहि सोभा पाईआ। सन्त सहेली कहे नी मैं वेख्या उथ्थे कोटी कोट जांदे रुढ़े, अग्गे मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेगमपुरा पूरब घर, अगला लेखा लेखे नाल मिलाईआ। आउ सन्त जी चुक्कीए कदम, सज्जा खब्बा पैर उठाईआ। वेखो बेगमपुरे दा हुजरा, हरि हरि आप जणाईआ। उथ्थे सन्तां लग्गया मुजरा, सोहणा रहे नाच वखाईआ। हुण वेला नहीं जो पिच्छे गुजरा, बण साख्यात इक दूजे नूं देईए समझाईआ। कोई भेत नहीं गुज्झला, गुज्झी कन्दर दे वखाईआ। परम पुरख परमात्म सदा सदा सद उजला, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। अग्गे खेल नहीं कोई धुंदला, अन्ध अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह साफ़ करन नूं हथ्थ विच फड़ के मूंगला, दो जहानां दए डराईआ। एह वड्डा सन्तां दा सन्त अखाड़े विच दंगला, पहलवान कर लंगोटे चारों कुण्ट फिरन वाहो दाहीआ। कूड़ी निन्दया निन्दक ना कोई चुगला, चुगली मारन कोए ना आईआ। आओ साहमणे हो के करीए शुगला, शुगल विच लोकाईआ। इक पासे शाह सुल्तान मुगला, बेपरवाह बेपरवाहीआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान कोई भेव ना जाणे मुढला, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। धुर दा भेव दस्से कोई ना बाकी, कलयुग सार किसे ना आईआ। सुणावे कोई ना धुर दी साखी, साख्यात घर ना कोए जणाईआ। बेगमपुरा जगत जहान जीव खेल समझया बाजीगर नाटी, डोरू डंक सारे रहे वजाईआ। बिन सतिगुर पूरे किसे पार ना कीती घाटी, सैण ना मिल्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेगमपुरे दी खोल्ह ताकी, हरिजन आपणे अन्दर लए लँघाईआ। दो जहानां दे विच इक तस्वीर, तसबी माला दोहां नज़र ना आईआ। दो जहानां अन्दर इक पीर, डाहढा डेरा लाईआ। दो जहानां अन्दर इक तकदीर, जो तकदीर दए वड्याईआ। दो जहानां अन्दर इक जंजीर, जो डोरी तन्द बंध बंधाईआ। दो जहानां अन्दर इक तासीर, जो गल्लां बातां नाल खुशी कराईआ। दो जहानां दे अन्दर इक पीड़, इक दूजे नूं वेखण चाई चाईंआ। दो जहान चोटी मंज़ल चढ़ आ वेखी अख़ीर, बिन अक्खरां अक्खर नज़र कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर हथ्थ फड़ी शमशीर, शब्द खण्डा चण्ड परचंड चमकाईआ। दोवें वेखो तक्क के ला नज़ीर, निक्की निक्की धार हरि बंधाईआ। मस्तकों अग्गे छोटी जिही दिसे लकीर, रंग बदरंग रही बदलाईआ। उस दे मगर जो लँघे धीर, पैंडा मुक्के वाहो दाहीआ। अद्धविचकार सतिगुर मिले ना कोई वस्त्र ना कोई चीर, ततव तत ना कोए वड्याईआ। फड़ के बाहों चोटी लै जाए अख़ीर, जिस दा नाउँ बेगमपुरा धराईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह वस्त सिरफ़ जन भगतां दिती बेनज़ीर, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। एह नूर प्रभू दा नुक्ता, बिन कलम छाही बणाईआ। एह बड़ा पुखता, हिलाइआं हिल सके ना राईआ। एह नूर धुर दा नुसखा, चमक्कया हथ्थ ना किसे फिराईआ। एह नूर ना फिरदा ना तुरदा, गली कूचे ना रंग रंगाईआ। एह विहार करे आपणी लोड़ दा, लोहड़ा आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। किधरे लाउँदा किधरे तोड़दा, तोड़ विछोड़ा आपणा खेल रचाईआ। पहला खेल पंज तत चोर दा, चोरी चोरी आपणी कार कमाईआ। एह खेल अगम्मे बांके छोहर दा, शहिनशाह निरगुण रूप वटाईआ । सन्त सज्जण आपणे लोड़दा, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जिस नुकते विच्चों नुकते बणा के गुर अवतार पीर पैगम्बर तोरदा, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। ओस नुकते विच्चों मन्त्र कढ्ढे फोरदा, जो फुरना सब दा सार शब्द अख्वाईआ। एह खेल नहीं कूड़ी ताकत ज़ोर दा, बलीआं बल ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नुक्ता बिन नुकतिउँ आपणे नुकते विच रखाईआ।

* १२ माघ २०२० बिक्रमी वरखा सिँघ विरसा सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

भगवान प्रीती धुर दी नच्चे, दो जहान खुशी मनाईआ। किरपा कीती सतिगुर सच्चे, शहिनशाह दिती वड्याईआ। सन्त सुहेले ढाले आपणे सच्चे, निरगुण सरगुण सोहणी बणत बणाईआ। लख चुरासी विच्चों फड़ फड़ रखे, डूंग्घी भँवर ना कोई रुढ़ाईआ। मेहरवान हो बणाए आपणे बच्चे, पिता पूत गोद उठाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्से, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ । सच प्रेम अन्दर रत्ते, अनरत नाम रंगाईआ। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थे, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अगला लेख लिखे मथ्थे, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। दीन दयाल पुरख समरथे, साची करनी आप कमाईआ। मैं वेखणा आपणी अक्खे, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। गुरमुख सज्जण लग्गे अच्छे, घर बैठे सोभा पाईआ। कलयुग जीव जंत चार कुण्ट फिरन भज्जे, नढ्ढुण वाहो दाहीआ। जगत तृष्ना नाल मूल ना रज्जे, ममता मोह ना कोई मिटाईआ। कूड़ी क्रिया किसे ना भाण्डे भज्जे, गढ़ हँकार ना कोए तुड़ाईआ। जम की फास कटे ना रस्से, बंदीख़ाना बंद ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। सच्ची प्रीत कहे मैं आई वेखण, लोचण लोचा आपणी पूर कराईआ। श्री भगवान जिन्हां दी करे सोचन, सोच सोच विच वक्त लँघाईआ। दीन दयाल हो के सिर ते देवे ओढन, दोशाला इक्को नाम टिकाईआ । जन्म कर्म दा मेटे रोगन, चिन्ता सोग रिहा चुकाईआ। आत्म सेजा आया भोगन,

घर महल अटारे डेरा लाईआ। नाम निधाना चुगावन आया चोगन, साची चोग इक्को मुख वखाईआ। सुहावण आया धुर दा कोटन, बंक दुआर खुशी मनाईआ । नाम नगारा लाया चोटन, डंका इक्को इक शनवाईआ। कूड़ी क्रिया तों आया रोकन, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। देवण आया सच्ची मोखण, मुफ्त आपणी दात वरताईआ। पार करावण आया लोक परलोकन, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा ढाहीआ । सुणावण आया इक श्लोकन, सोहँ ढोला रिहा समझाईआ। करे खेल अगम्मी चोजन, प्रीतम चोजी खेल रचाईआ। एहो जिही फेर ना लभ्भनी मौजन, मौजूदा वेला रिहा सुहाईआ। मैं उच्ची कूक सुनावण आया होकन, होका दे दे रिहा जणाईआ। जिस माण दवाया धन्ने तरलोचन, सौदा हट्ट इक्को इक वकाईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण पोथी पोथन, पुस्तक रहे राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच करनी रिहा कमाईआ। सच प्रीती आई दौड़, लोकमात फेरा पाईआ। जन भगतो वेखो करो गौर, नेत्र करे रुशनाईआ। तुहाढी पकड़े हथ्थ विच डोर, प्रेम प्रीती तन्द बंधाईआ। कूड़ी क्रिया कढु के चोर, चोरी चोरी आपणा मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम तुहाढी पै गई लोड़, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सच प्रीती कहे मैं आई नट्ठ, धुर दा पन्ध मुकाईआ। एह सच्ची देवां दस्स, आपणा भेव खुल्हाईआ। मेरा रिहा ना कोई वस, खिचण वाले आपणी खिच लगाईआ। मैं इक्को सुणया श्री भगवान भगतां कीता अकट्ठ, घर साचा सोभा पाईआ। इक्को नाम ढोला रिहा रट, रट्टा मुक्के जगत लोकाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, बण हटवाणा रिहा वरताईआ। मैं वी वेखां आपणी अक्ख, की करता खेल रचाईआ। जां आई ते होया सच्च, साची करनी रिहा कमाईआ। मेहर कर पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ । गुरमुखां देवे ओह वथ, जिस दी कीमत ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ। प्रीती कहे वेखो की पाया लोहड़ा, लोक परलोकां आख सुणाईआ। भगत भगवान बण के जोड़ा, जोड़ी जोड़ दए वड्याईआ। निरवैर बण के बांका छोहरा, निरँकार करे कुड़माईआ। सस्से उपर ला के होड़ा, हाहे टिप्पी लए प्रनाईआ । आत्म ब्रह्म आपे बौहड़ा, पारब्रह्म हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रहमत आप कमाईआ । सच प्रीती कहे मैं वेख्या एक, एकँकार नज़री आईआ। जन भगतां बख्शे अगम्मड़ी टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़ भेख, पर्दा उहला दए चुकाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। प्रेम प्यार अन्दर करे हेत, साची रीती इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह खेल खिलाईआ। सच प्रीती कहे भगवन तेरी धार, मैं वेख वेख बिगसाईआ। तेरे

विच्चों प्रगटे ओह प्यार, जिस प्यार दी रमज़ समझ सके कोई ना राईआ। गल्लां बातां दा नहीं कोई विहार, हथ्थां नाल हथ्थ ना कोई मिलाईआ। रसना जिह्वा नहीं कोई गुफ़तार, बत्ती दन्द ना सिफ्त सलाहीआ। कर किरपा आपणी खिच्चे अन्दरों तार, तन्दी तन्द हिलाईआ। जिस दी सुरीली अगम्मी अवाज़, बिन कन्नां रिहा जणाईआ। जन भगतां हो मुहताज, महिबूब आपणा मेल मिलाईआ। निगहबान हो के खोल्लया राज़, राज़क रहीम दए वड्याईआ। मैं खुशीआं विच दर तेरे करां नाच, मुख घूँगट ना कोई रखाईआ। आ लै आपणी पिछली लिखी वाच, जो चिट्ठी मेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। चिट्ठी लै पढ़े भगवान, पहला लेखा रिहा जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां झोली पाया तैनूं दान, दिती माण वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरा संग निभाण, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द नाल तैनूं समझाण, सृष्ट सबाई आख सुणाईआ। सच प्रीती तेरा नज़र ना आया किसे निशान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। तैनूं सदा सदा सद मिलदा रिहा माण, जुग चौकड़ी रही वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल दस्से निरँकार, धुर दा भेव आप चुकाईआ। तूं विचोली बणी रही जुग चार, लोकमात खुशी मनाईआ। जगत प्रीती दस्सदी रही विहार, नाता आशक माशूक जुड़ाईआ। काग़ज़ां कलमां नाल देंदी रही अधार, सोहणे ढोले राग सुणाईआ। जन भगत तेरे कोलों मेरा मंगदे रहे प्यार, प्रीत तेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे बचन, साहिब सतिगुर आप समझाईआ। पिछला वेला गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे तजन, तैनूं ओहनां नाल रलाईआ। रल मिल चरण धूढ़ी करन इक्को मजन, सर सरोवर आप वखाईआ। अगला खेल करे सूरा सरबँगन, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जन भगतां आप प्रगटाए साचा चन्दन, नूर जहूर इक वखाईआ। जगत प्रीती तोड़ बन्धन, प्रेम प्रीती इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाईआ। साचा राह दस्सां अपार, श्री भगवान आप जणाईआ। पहलों भगतां उते किरपा धार, पर्दा दयां चुकाईआ। अन्दर वड़ के दरस दीदार, गुर गुर रुशनाईआ। नाता जोड़ अगम्म अपार, आपणी गंढु पवाईआ। किरपा कर के प्रेम प्रीती तेरा दस्सां प्यार, प्यार आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिन्ना चिर ना मिले सिरजणहार, उन्हां चिर प्रीती सच ना कोई कमाईआ। सच प्रीती तूं वी करीं निमस्कार, प्रभ तैनूं दए वड्याईआ। जा के मिल भगतां नाल, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। उन्हां उते होया दयाल, दीन दयाल होया सहाईआ। खुशीआं नाल ओस गृह जा के पा धमाल, मुख घुंघट इक उठाईआ। गीत गा के कहे मैं वसां तुहाढ्ढे नाल, सच्चा संग निभाईआ। घर

आई नूं लैणा संभाल, आप आपणे विच टिकाईआ। बिन कर्मां मैं होई कंगाल, कंगाली सके ना कोई चुकाईआ। सोहणा मन्दिर देख सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे हरि हरि खुशी मनाईआ। मैं गीत गावां खुशीआं नाल वज्जे ताल, अड्डी पब्ब दोवें रही उठाईआ। प्रेम प्रीती निभे ओहनां नाल, जिन्हां प्रीती साहिब सतिगुर नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हो कृपाल, किरतारथ कीता करनी किरत इक जणाईआ।

*** १२ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ***

जगत शस्त्र करन पुकार, शाह पातशाह अग्गे अरज़ोईआ। साडी पैज प्रभ संवार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सानूं गोबिन्द गया उतार, अग्गे मिले ना कोए वड्याईआ। तन नाल करदे रहे शृंगार, पंज तत मिल मिल सोभा पाईआ। आपणी तिक्खी दस्सदे रहे धार, तेरी धार ना कोए समझाईआ। सीस धड़ उते करदे रहे वार, वारता बणी जगत लोकाईआ। अन्तिम सारे गए हार, आपणा बल ना कोए जणाईआ। तेरा खेल हरि निरँकार, निरगुण निरवैर अजीब नज़री आईआ। जोती जामा लै अवतार, काया माटी तन ना कोए प्रगटाईआ। शस्त्र वस्त्र ना कोए आधार, अस्व अस्वार सोभा कोए ना पाईआ। तेरी खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ। सारे वेख होए हैरान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। ना कोई खड़ग खण्डा किरपान, खंजर हथ्थ ना कोए चमकाईआ। ना कोई चिला तीर कमान, भथ्था कंध ना कोए बंधाईआ। ना कोई अस्व गज होए अस्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे इक वड्याईआ। शस्त्र कहिण साडा पूरा ना होया शौक, शहिनशाह अंग ना कोए लगाईआ। जिस दी कोई कहाणी ना गाए ज़ौक, लतीफ़ा काफ़ी सके ना कोए बणाईआ। साडी कोई ना पहुंचे पहुंच, नेड़े हो ना हाल सुणाईआ। अन्तिम कलयुग ख़ाली जांदे दिसदे औंत, साडी जड़ ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की निरगुण खेल रचाईआ। शस्त्र कहिण साडी सुण पुकार, सच सच्च रहे दृढ़ाईआ। तूं साहिब दाता सिरजणहार, निरवैर तेरी सरनाईआ। मेहरवान हो कर प्यार, परम पुरख आपणे अंग लगाईआ। श्री भगवान करे ख़बरदार, सच संदेसा इक समझाईआ। सारे शस्त्र करो निमस्कार, बिस्तरा आपणा बन्न्ह धराईआ। इक उठाओ आपणा सज्जण मीत मुरार, जिस नाल तुहानूं मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच रिहा जणाईआ। सच संदेसा दे श्री भगवान, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। परम पुरख

कोल किसे कम्म ना आए किरपान, खण्डे खड़ग चले ना कोए चतुराईआ। तीर भथ्था दिसे ना कोए निशान, निशाना इक्को इक चलाईआ। जा के आपणा दस्सो हाल, अहिवाल हरि जू रिहा बणाईआ। मित्र प्यारे करो भाल, जो बैठा मुख छुपाईआ। चक्र सुदर्शन आपणे ल्याओ नाल, जिस मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। सारे कहिण उठ चलीए राह, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। ओस नाल करीए सलाह, जिस नूं मिले माण वड्याईआ। गुर अवतार जिस नूं रहे उठा, आप आपणा संग रखाईआ। जो भगतां होए सहा, दुरबाशे माण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। उठे चल पांधी राही, आपणा पन्ध मुकाईआ। पैंडा मुकया थल अस्गाही, समुंद सागर चरणां हेठ दबाईआ। नज़री आए बेपरवाही, बेपरवाह खेल वखाइंदा। चक्र सुदर्शन चरणां हेठां जिस रख्या दबाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सारे कहिण चक्र सुदर्शन उठ, उठ आपणी लै अंगड़ाईआ। श्री भगवान तेरे उते रिहा तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। साडी कोई ना करे पुच्छ, बलहीण रहे कुरलाईआ। तूं क्यों दूर दुराडा रिहा लुक, लुकवीं खेल कराईआ। साडा बल गया मुक्क, ज़ोर नज़र ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा वखाईआ। चक्र सुदर्शन कहे मैं की जाणां, राह खहिड़ा नज़र ना आईआ। मेरा अग्गे काग़ज़ां उते नावां, अक्खरां नाल मेरी वड्याईआ। ना कोई लग्गीआं लत्तां बाहवां, पांधी हो के पन्ध ना कोए मुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पुरख अकाल दीआं माणां ठंडीआं छावां, घर साचे सोभा पाईआ। क्यों विछोड़ा देवां पुत्तरां मावां, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। चक्र सुदर्शन कहे मैं उंगलां उते नहीं भौंणा, चक्र दे ना कोए हिलाईआ। मैं नहीं मारना कोई जगत रौणा, रावण नाल ना करां लड़ाईआ। मैं नहीं कृष्न काहन हथ्थ आउणा, जो गोपीआं रास रचाईआ। मैं नहीं लख चुरासी डेरा ढाउणा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। कलयुग अन्त मैं इक्को मंग मंगाउणा, श्री भगवान अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा कर जे मेरी सेव लगाउणा, साची सेवा दे दृढ़ाईआ। जिथ्थे शस्त्र खण्डा जगत कटार कम्म नहीं आउणा, ओस धाम होवां सहाईआ। बाहरों मेरा रूप नज़र ना आउणा, रेख रंग ना कोए रखाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर कर के जन भगतां अन्दर मैनूं टिकाउणा, जिस घर मिले माण वड्याईआ। दिवस रैण तेरा दर्शन पाउणा, जोती जोत मिले रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारा फड़ के बाहर कढ्ढाउणा, बल आपणा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। चक्र सुदर्शन कहे मेरे भगवान, मैं साची सच जणाईआ। जन भगतां दे मेरा

दान, अन्दरे अन्दर मिले वड्याईआ। काया बंक इक म्यान, जिस विच वड़ के सोभा पाईआ। अन्दरों कढ्डां कूड़ तुफान, जूठा झूठा डेरा ढाहीआ। माया ममता मोह मिटे निशान, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। काम क्रोध ना होए बलवान, भय भउ इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे माण वड्याईआ। चक्र सुदर्शन कहे किरपा कर, प्रभ तेरे अग्गे अरजोईआ। जन भगतां अन्दर मैनूं धर, जिस दर वेखे अवर ना कोईआ। मैं अट्ठे पहर रिहा लड़, दिवस रैण करां लड़ाईआ। जे कोई विकार अग्गे जाए खड़, मूँह दे भार दयां सुटाईआ। कूड़ी क्रिया साफ़ कर, सच सुच्च महल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। चक्र कहे मैं तेरा दरस, हरि दरसी मंग मंगाइंदा। मेरे उते कर तरस, रहमत झोली तेरी पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मेरा पूरा ना होया फ़र्ज़, साची सेव ना कोए लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरे कोलों पूरी करदे रहे आपणी ग़रज़, मेरी आसा पूर ना कोए वखाइंदा। सच पुच्छें मेरा हुन्दा रिहा हरज, हर्जाना कोई ना झोली पाइंदा। वेखीं पुरख अकाल हुण ना देवीं वर्ज, वजह आपणी सच बताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तेरी आस रखाइंदा। चक्र सुदर्शन कहे मेरा वेख चक्र, चक्रवरती इक्को नज़री आईआ। तेरयां भगतां मेटां सारा फ़िकर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जिस ज़िकरीए चीर पवाया तेरा कर के ज़िकर, सो ज़ाकर आपणे रंग रंगाईआ। तेरी धारों निरगुण हो के आया नित्तर, निरवैर हो के सेव कमाईआ। मैनूं कोई लोहा धात ना बणाए पित्तल, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। सिकलीगर कोई ना करे सिकल, चमक नाल चमक ना कोए प्रगटाईआ। मैं आदि जुगादी धुर दा तेरा मित्र, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। चक्र सुदर्शन कहे मैं वेखां ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई करां रंड, लख चुरासी सीस कटाईआ। प्रभू बिन तेरयां भगतां मैनूं मिले ना कोई अनन्द, भज्ज दौड़ मेरी कम्म किसे ना आईआ। पिछली रीती प्रभ तेरे नाल दिती छड्ड, मार्ग अग्गे इक्को दे वखाईआ। हुण मैं नहीं कटणे किसे दे हड्ड, नाड़ी रत्त ना कोए वहाईआ। मैं बण के तेरी यद, सेवा करां चाईं चाईंआ। जन भगतां अन्दर मैनूं रख, घर घर विच दे बहाईआ। मैं खोल्ह के वेखां तेरी अक्ख, सैनत तेरे नाल मिलाईआ। तिक्खा वार करां झट पट, कूड़ी क्रिया कट वखाईआ। सिर मेरे हथ्थ देणा रख, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सगला संग निभाईआ। श्री भगवान कहे मैं दया कमावांगा। चक्र सुदर्शन तेरा चक्र, काया चक्री विच चलावांगा। सच दवारयों तैनूं पकड़, साची सेव लगावांगा। तेरा लेखा चुक्के जगत अक्खर, निष्अक्खर धार मिलावांगा। तेरा वेख

ज़रा बकतर, पुख़ता रंग इक चढ़ावांगा। तेरा लहिणा देणा इक्को अकसर, असलीअत विच्चों समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तेरा माण रखावांगा। सच तेरा माण रखाएगा। श्री भगवान दया कमाएगा। गोबिन्द लेखा पूर कराएगा। सच कटार तेरा रूप वखाएगा। तिक्खी धार आप बणाएगा। तन गात्रे विच टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक लगाएगा। साची सेव प्रभू लगावेगा। जन भगतां मेल मिलावेगा। फड़ बाहों अन्दर बहावेगा। अट्ठे पहर तेरा चक्र चलावेगा। ख़ौफ़ ख़तरा सर्ब हटावेगा। जेहड़ी किरपा नानक कीती अंगद, अंगद कीती अमरदास साल बहत्तरां बहत्तरां सालां विच्चों बहत्तर सिख बहत्तर बहत्तर बहत्तर नाड़ी विच्चों रोग मिटावांगा। साची मुट्ठी हथ्थ विच पकड़, चारों कुण्ट भवावांगा। जिस नूं लग्गी नहीं कोई लक्कड़, काठ वंड ना कोए वंडावांगा। प्रेम प्रीती अन्दर जकड़, जुगती आपणी नाल चलावांगा। तैनूं सीस निवावण खण्डा खड़ग जगत कटार तेरी पैरीं पावांगा। तेरी वेखां चाल मटक मटक, छैल छबीले तेरा रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद तेरा माण वधावांगा। श्री भगवान मैं भगतां अन्दर वड़ांगा। निर्भय हो के चढ़ांगा। सच दवारे खड़ांगा। पिच्छे मूँह कर के हेठां, पंजां चोरां नाल लड़ांगा। कर के मिट्ठा कौड़ा रीठा, तेरे अग्गे धरांगा। तूं नज़रीं आएं नेता, निरवैर तेरी सेव करांगा। मैनूं गोबिन्द दा उह आया चेता, चेते विच्चों तेरा नाम वरांगा। जो माछूवाड़े सुत्ता जंगलां विच खेता, खिती कंडयां हेठ धरांगा। जिस वेले मैं पैंदी अर्जण वेखी रेता, ओस भाणे नूं आपे बहि बहि जरांगा। जे तूं किरपा निधान हो के भगतां नाल कीता हेता, मैं वी हितकारी हो के लड़ांगा। एसे कर के जुग चौकड़ी किसे ना दस्सया भेता, भेती हो के अन्दर वड़ांगा। गोबिन्द नाल मेरा पिछला लेखा, मुड़ के उंगलां उते ना चढ़ांगा। तेरयां सिखां नूं निक्का हो के वेखां, वेख वेख आपणी रीझ पूरी करांगा। बालां वांगां ओनह्नां नाल खेडां, निक्की खिड़की थाणीं घर जा के साहमणे खड़ांगा। जे तेरे नालों छुटदी दिसे बिरती, फड़ बाहों नाल जड़ांगा। जिहनूं कैहन्दे सुरती निरती, निरत सुरत दोवें बहि के वरांगा। मैं बड़ा वड्डा प्रकृती, किरत कार आपणी करांगा। मैं प्रेम प्यार दा बड़ा हिरसी, हवस आपणी झोली भरांगा। जिस वेले इक्कीआं दी वीह सौ इक्की बिक्रमी मनाई जाए पहली बरसी, बरसात वांगूं मेघ हो के वरांगा। जे तेरे दुआर हो गए भरती, तिनह्नां दे नाल मिल के अन्दर बाहर खूब लड़ांगा। एह बात नहीं कोई घड़ती, सच कहाणी आपणी कहवांगा। मेरी धुर दी लग्गी शर्ती, शहिनशाह तेरे हुक्म अन्दर रहांगा। जे मेरा माण रखदा ओस वेले कोई ना रुढ़दा विच सरसी, सर जल थल अस्गाह सारे पार करांगा। मेरा खेल विच अर्शी, फ़र्शी हो के जन भगत सुहेले वरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा

वर, सदा सदा सद तेरी सेव करांगा। तेरी सेव करां आख़र, अख़ीर इक्को वार जणाईआ। मेरा भेव ना पाए शस्त्र शास्त्र, शरअ समझ किसे ना आईआ। शस्त्रां वाले कोटन कोटि घोड़यां उते गए जीनां पा के पाखर, लोकमात वेस वटाईआ। तीर कमाना किसे दी रहिण ना दिती आकड़, सिर सके ना कोए उठाईआ। श्री भगवान मैनूं इक्को वरते भगतां दी ख़ातर, साचा हुक्म इक जणाईआ। एसे कर के मैं वड्डा चातर, छोटयाँ मोट्टयां नाल ना अक्ख रलाईआ। मेरा खेल सदा बातन, ज़ाहर रूप ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान बणाए मेरा साथन, सगले साथी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच्चे दए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा कदे ना करे निरासन, निराशा आसा विच बदलाईआ।

* १३ माघ २०२० बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर *

परवरदिगार दर आए बरदे, बंदगी बन्दना सीस निवाईआ। निरभउ तेरे कोलों सारे डरदे, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। अन्दरे अन्दर तेरा कलमा पढ़दे, हू हू अवाज़ लगाईआ। ना जीउदे ना दिसण मरदे, सोच समझ ना कोए रखाईआ। मक्के काअबे आए फिरदे, भज्ज भज्ज वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दे समझाईआ। दर तेरे आए महिबूब, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सच महल वेख अरूज, कदम बोसी सीस कराईआ। साडे कोल ना कोए सबूत, सच सच्च देईए जणाईआ। ख़ाली होया अन्त कलबूत, काया कूड़ रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, घर सच मिले वड्याईआ। तेरे दर करन अपील, भज्जे आए वाहो दाहीआ। बन्दना कर ज़बराईल, निउँ निउँ लागे पाईंआ। माण टुट्टा असराफ़ील, इस्म आअज़म ना कोए रखाईआ। नेत्र रोवे मेकाईल, मुकम्मल आपणा हाल जणाईआ। करे दरोही इज़राईल, ज़बरदस्त तेरे अग्गे ना कोए वड्याईआ। तेरा वेख के वस्त्र नील, परवरदिगार ओट तकाईआ। तेरा जोबन छैल छबील, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। तेरी समझे ना कोए दलील, सोच जगत ना कोए रखाईआ। ख़ाली वेख मक्का मदीन, धीरज धीर रही ना राईआ। नज़र आया साबत ना दीन, दीन दुनी विच्चों तेरा रूप ना कोए जणाईआ। हो के जाबर बण मस्कीन, दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दे सरनाईआ। दे सरनाई परवरदिगार, इक्को तेरी ओट रखाईआ। पीर पैगम्बर तैनूं दस्स के गए सांझा यार, साहिब सभना इक गुसाईआ। लोक परलोक तेरा खेल न्यार, तबक सबक इक पढ़ाईआ। काग़ज़ कलम तेरा

आधार, लेखा लेख काली छाहीआ। लख चुरासी तेरा नूर उज्यार, जलवा घट घट नज़री आईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरे सेवादार, सदा सद सेव कमाईआ। दर दवारे दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नेत्र रोंदे वेख के आए मज़ार, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। मक्का काअबा दिसे ख्वार, ख़ालक रूप ना कोए वखाईआ। प्रेम प्रीती पए ना कोई आबशार, चशमा करिशमा नज़र कोए ना आईआ। तफ़ैल दिसे ना कोई वफ़ादार, तालब रूप ना कोए वटाईआ। ऐब भरया सर्ब हँकार, गुनहगार दिसे लोकाईआ। बीवी ख़ावंद ना कोए प्यार, तीवीं मर्द ना कोए वड्याईआ। नीवीं अक्खां शरमसार, लोचण नैण ना कोए उठाईआ। हुजरे हक़ ना कोए आधार, लाअनत घर घर डेरा लाईआ। माअरफ़त विच मिले ना महिबूब यार, मुहब्बत सच ना कोए कमाईआ। आरफ़ सारे करन पुकार, तुआरफ़ सके ना कोए कराईआ। सफ़ारश साडी करे ना मुहम्मद यार, अन्तिम बैठा मुख भवाईआ। ख़ाली वेख महल मुनार, मुड़ के आए वाहो दाहीआ। तेरे दर सच्ची पुकार, पुनह पुनह सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी ओट रखाईआ। चार कहिण वेखी चार यारी, चारों कुण्ट नज़र कोए ना आइंदा। जगत काअबा कूड़ हँकारी, सच महिराबा नूर ना कोए चमकाइंदा। शाह नवाब ना दिसे कोए सिक्दारी, हुक्म हाकम ना कोए समझाइंदा। साचे फ़ील करे ना कोए अस्वारी, नेज़ा नाम हथ्थ ना कोए उठाइंदा। वेख के आए चारों कुण्ट सब तेरे तेरी रखण ताबेदारी, अग्गे ताब ना कोए वखाइंदा। महल अटल तेरी वेख उच्च अटारी, सजदा सीस सर्ब निवाइंदा। पंज तत तेरी खेल न्यारी, काया कपड़ कोट वडियाइंदा। शरअ शरीअत ला बीमारी, भेव आपणे विच छुपाइंदा। जगत वंड कर संसारी, ब्रह्मण्ड राह चलाइंदा। आप बैठ धुर दरबारी, धुर संदेसा हुक्म जणाइंदा। निरगुण तेरा खेल वेख निरँकारी, निर्धन हो के सीस निवाइंदा। आदि जुगादि जिस सब दी पैज स्वारी, मेहर नज़र इक उठाइंदा। उस दे दर मिले इक्को वफ़ादारी, वाकिफ़ आपणे नाल कराइंदा। अन्तिम अन्त एहो ख्वाहिश हमारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कहि समझाइंदा। आए चार चार चौतरफ़, चार कुण्ट वखाईआ। उठ वेखो आपणा पिछला हरफ़, जो हल्फ़ मुहम्मद नाल उठाईआ। सदी चौधवीं सब ने मन्यां होणा बरतरफ़, तरफ़ वंड ना कोए रखाईआ। हरि जू पैण ना दित्ता फ़र्क, फ़ैसला इक्को हुक्म सुणाईआ। पिछली कीती सब दी कीती तरक, ताकत सके ना कोए अज़माईआ। अग्गे कोई ना सके अटक, हुक्मे अन्दर हुक्म मनाईआ। करे खेल साहिब नधड़क, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्द, मर्दानगी इक्को इक वखाईआ। छुरी हलाल सब दी वेखे करद, करबला आपणा फेरा पाईआ। हसन हुसैन होए असचरज, फ़ातमा नैणां नीर वहाईआ। किस नूं आया पिछला दर्द, क्यों दुखियां

दर्द वंडाईआ। गोबिन्द कहे नहीं खेल असचरज, हरि आपणी दया रिहा कमाईआ। मेरे नाल ना कीता फ़र्क, बच्चे नीहां हेठ रखाईआ। एह ओहो आया परत, जिस दिती माण वड्याईआ। जगत प्यास्सयां इक्को वार दे के नूर लगाई शर्त, शहिनशाह आपणा हुक्म समझाईआ। तुहाढ्ढी मेटां अन्तिम चिन्ता सोग हरख़, ग़मी आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। चारे कहिण आए कासद, लेखा हथ्थ नज़र कोए ना आईआ। सिदक सबूरी दे दे सादक, साहिब तेरी वड्याईआ। असीं वेख्या तूं पिछली बदली आदत, अगला मार्ग रिहा प्रगटाईआ। साडी लेखे ला इबादत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी झोली पाई तेरी इबारत, लहिणा देणा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। हसन कहे उठ वेख हुसैन, हुशियारी नाल जणाइंदा। उह वेखे आपणे नैण, जो नैणां रंग चढ़ाइंदा। उह पर्दा लाहे मुख ऐन, ग़ैन ग़म ना कोए वखाइंदा। अल्फ़ ये जिस दी सिफ्त कहिण, नुक्ता नून सर्ब मिटाइंदा। पीर पैगम्बर जिस दी सरन पैण, मुहम्मद झोली अग्गे डाहइंदा। मेहरवान आया मबैन, मुहब्बत इक्को इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणे रंग रंगाइंदा। हुसैन कहे सुण हसन, हस्ती इक्को नज़री आईआ। जिस दे चरणां गुर अवतार पीर पैगम्बर वसण, बस्ती वक्खरी जिन बणाईआ। साडी लज्जया आया रखण, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दे वड्याई देवे माण, देवणहारा दया कमाइंदा। अज्ज करबला उह होया परवान, जिस करबले विच्चों काअबा नज़र ना आइंदा। जिस काअबे विच्चों मिले निशान, सो काअबा हरि जू आपणा नाम सुहाइंदा। जिस नाम विच्चों हो प्रधान, गुर अवतार पीर पैगम्बर राग सुणाइंदा। जिस राग विच्चों निकले गान, गा गा जीव जहान शुकर मनाइंदा। जिस गान विच्चों निकले तान, तर्ज़ तलवाड़ा रूप वटाइंदा। जिस ताल विच्चों मिले जमाल, जोबन आपणा रंग वखाइंदा। जिस जोबन विच्चों मिले मेहरवान, मुहब्बत इक्को इक जणाइंदा। जिस मुहब्बत विच्चों महिबूब मिले आण, सो महिबूब सब उते दया कमाइंदा। जिस दा लेखा मजीद कुरान, मजलस बहि बहि जगत समझाइंदा। जिस दी ताईद करे इस्लाम, ताअरीफ़ कर कर सर्ब सुणाइंदा। सो अर्शीरबाद देवे पैग़ाम, दर आयां लेखा लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पूरी करनी करता सब दी वेख वखाइंदा। चार यार सद्दे तेरे, पिछले तरह तरह तरह समझाईआ। जिहड़े वड्डे कर के बैठे रहे जेरे, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। राह तक्कदे रहे कवण वेला प्रभ आए भगतां डेरे, डेरा आपणा आप लगाईआ। असीं वसीए ओसे वेहड़े, जिस खेड़े सोभा पाईआ। जिस

दे कोल गुर अवतार पीर पैगम्बर बथेरे, बहु गिणती विच गिणन कोए ना पाईआ। जिस दे गुर अवतार बणे चेरे, चेले बण बण सेव कमाईआ। चार यार जिस दे घेरे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जुग चौकड़ी मुर्शद मुरीद चढ़दे जिस दे बेड़े, बेड़ा इक्को इक चलाईआ। हक़ो हक़ हकीकत कर नबेड़े, लेखा लेखे विच्चों चुकाईआ। गुरमुखां देवे माण वडेरे, वड्डे वड्डे कर के सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले, जन्म जन्म दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। साची करनी करे ऐन, कामलपुरुष आपणी दया कमाईआ। हसन हुसैन सद्दा आए देण, दूर दुराडे चल के पांधी राहीआ। जबराईल मेकाईल असराफ़ील इज़राईल चारे कहिण, कहि कहि खुशी मनाईआ। औखा होया साडा रहिण, मजलस सच ना सोभा पाईआ। यार विच जे यार ना बहिण, यारी कम्म किसे ना आईआ। साडा दे दे सब दा देण, देवणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। चारे कहिण सच खुदा ख़ातरख़ाह, ख्वाहिश सब दी पूरी दे कराईआ। असीं सारे होए गुमराह, तेरे नालों बेवफ़ा, भुल्ले मार्ग पांधी राहीआ। रहमत रहीम इक कमा, ताअलीम आपणी सच पढ़ा, अज़ीम उलशान तेरी वड्याईआ। सदके वारी घोली घोल घुमा, काया चोली तत भेंट चढ़ा, दर इक्को मंग मंग मंगाईआ। तेरे हथ्थ प्रभू शफ़ा, शफ़कत कर मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च दे झोली पाईआ। चार कहिण दे दात पूरा कर मतलब, मता इक्को बणाईआ। तेरी करीए उल्फ़त, खुशीआं राग सुणाईआ। राग विच ना आवे ग़फ्लत, गाईए गीत इलाहीआ। उस दे नाल साडी मुहब्बत, जिस महिबूब मिल्या चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। ओस नाल मुहब्बत प्यार, महवख़ाना जो रिहा खुल्लाईआ। जिस दा प्याला पीवे हमदर्दी यार, नशा नोशी इक्को इक जणाईआ। जिस दी सुराही मारे उछाल, उबले वाहो दाहीआ। जिस दा प्याला मख़मूर होया मुसकरार, हस्से चाईं चाईंआ। जिस दी मंज़ल अग्गे ना रही दुष्वार, दुश्मन नज़र कोए ना आईआ। जिस दा पीर सांझा यार, अमाम नूर इलाहीआ। जिस दी तसबी मणका दोवें होए ख्वार, बैठे मुख भवाईआ। जिस दी अल्फ़ी तन श्रृंगार, दो हरफ़ी करे पढ़ाईआ। मग़रबी मशरकी मुशताक, मेहरवान महिदूद नूर खुदाईआ। उस दे नाल साडा प्यार, पिछला हाल जणाईआ। बासठ दिन उस दे नाल इकरार, इकरारनामा रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला पूरा कर उधार, अग्गे सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। इकरारनामा वेख ख़फ़ीफ़, खुफ़िया रहे वखाईआ। जिस दे विच उहदी ताअरीफ़, जो तेरा नाम ध्याईआ। बेशक हुण उस नूं कैहन्दे अजीत, पिछला साडा संगी रूप

वटाईआ। उस दा लेखा रिहा बीत, बीती कहाणी रहे जणाईआ। एह धुर दी तेरी रीत, यार यारां नाल मिलाईआ। उस नूं तेरा काअबा नज़र आई धुर दी मसीत, मसला इक्को पढ़े सच सच्च नूर खुदाईआ। तूं उस दे होइउँ करीब, नाता रिस्ता जोड़ जुड़ाईआ। असीं पिछले वक्त दी सांभ के रखी रसीद, साहमणे रहे वखाईआ। ऐस साल साडी तद खुशीआं नाल होवे ईद, ईदउलफ़ितर इस दे नाल मनाईआ। तूं वी कर एहनूं ताईद, अग्गे जावे चाईं चाईंआ। हसन हुसैन पहलों करन दीद, फिर मुहम्मद खुशी मनाईआ। तेरे घर दी सुणाए ताअरीफ़, ढोला राग अल्लाईआ। मुकामे हक़ फिर पुज्जे ठीक, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान साचा मेला दे मिलाईआ।

* १३ माघ २०२० बिक्रमी बंता सिंघ दे गृह छन्नां ज़िला गुरदास पुर *

शब्द लेख शब्द भविक्ख्त, शब्द शब्द जणाईआ। शब्द लेख शब्द लिख्त, शब्द शब्द खेल वखाईआ। शब्द गुरदेव शब्द इष्ट, शब्द शब्द स्वामी दए समझाईआ। शब्द निराकार शब्द साकार सृष्ट, निरगुण शब्द शब्द सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रचना वेख वखाईआ। शब्द गुरू शब्द सिख, हरि शब्दी खेल खिलाइंदा। शब्द नाम शब्द भिख, मेहरवान झोली पाइंदा। शब्द ओझल शब्द आए दिस, शब्द अनभव कार कमाइंदा। शब्द अनरूप सदा अनडिठ, शब्द रूप भूप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी काज रचाइंदा। शब्द सेवक शब्द ठाकर, शब्द शब्दी धार वहाईआ। शब्द समुंद शब्द सागर, गहर गम्भीर शब्द अख्वाईआ। शब्द गुरू शब्द तेग़ शब्द बहादर, शब्द गोबिन्द शब्द तिक्खी धार वखाईआ। शब्द आदल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी धारा आप प्रगटाईआ। शब्द गुरू शब्द चेला, शब्द गोबिन्द धार वखाईआ। शब्द सज्जण शब्द सुहेला, शब्द साहिब सुल्तान वड्याईआ। शब्द अन्दर शब्द नवेला, शब्द शब्दी रचना वेख वखाईआ। शब्द अन्दर शब्दी खेल खेला, शब्दी शब्द दए समझाईआ। शब्द आदि जुगादि जाणे आपणा वेला, वक्त वार थित शब्द दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्दी कार कमाईआ। शब्द गुरू धर कल्गी, धरनी धरत धवल वड्याईआ। शब्द गुरू पंज तत काया चोला पहने वरदी, जुग जुग वेस लए वटाईआ। शब्द गुर गोबिन्द दर्दी, दुखियां दर्द गंवाईआ। शब्द गुर सतिगुर गुरमुखां आसा पूरन करे मर्ज़ी, मंज़ल साची दए पुचाईआ। शब्द गुरू कदे ना बणे फ़र्ज़ी, निरगुण निरवैर निरँकार

आपणा रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च दए जणाईआ। शब्द गुरू धनी तेग़, भथ्था तीर कमान नाम जणाईआ। शब्द जिस सद्दे रंगरेज़, शब्द ओहो बाहर कढ्ढाईआ। शब्द गोबिन्द तन माटी अन्दर दित्ता भेज, साची हाटी जगत वखाईआ। शब्द गोबिन्द जोती नूर हो के चमकया तेज, तिक्खी धार इक प्रगटाईआ। शब्द गुरमुख हरिजन गुरसिख सज्जण लए वेख, पर्दा उहला आप चुकाईआ। गुरू गुरू सतिगुरू विच नहीं कोई भेत, भेत सतिगुरू गुरू विच्चों समझाईआ। सतिगुरू गुरू दी माणे आप सेज, गुरू सेज गुरमुखां रिहा हंढ्ढाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ग़रीब निमाणयां सदा करे दरेग़, दुखियां दुःख झोली पाईआ। जिस दा भेव ना पाया किसे वेद, चारे खाणी रही कुरलाईआ। जिस दा लेखा लभ्भे ना किसे कतेब, शास्त्र सिमरत कूक कूक सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर जन भगतां संग सदा रिहा खेड, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर करे हेत, हितकारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द गुरू गोबिन्द, रंग राता इक अख्वाइंदा। सेज सुहञ्जणी वेख पलँघ, शाह सुल्ताना सोभा पाइंदा। बिन रणजीत नगारे वजाए मृदंग, नाम डंका इक सुणाइंदा। अनन्द पुरी पुरी अनन्द विच्चों अग्गे लँघ, मन्दिर अन्दर सोहणा डेरा लाइंदा। धार रूप सूरा सरबँग, साहिब सुल्तान नज़री आइंदा। पूरब पूरी करे मंग, झोली अपणी आप भराइंदा। पुरख अकाल लै के संग, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। धुर दा बोल अगम्मी छन्द, सोहँ राग अल्लाइंदा। बण विचोला सूरा सरबँग, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। हरिजन नंगी ना होवे कंड, सिर गुरमुखां हथ्थ टिकाइंदा। इक्को गोबिन्द इक्को दाता इक्को दातार सच वस्त देवे वंड, वंडणहारा इक अख्वाइंदा। इक्को तोड़े इक्को विछोड़े इक्को जोड़ पाए गंढ्ढ, गंढ्ढणहार इक हो जाइंदा। इक्को जोत इक्को नूर इक्को चन्द, इक्को धाम सुहाया पुरी अनन्द, जिस पुरी अनन्द विच्चों इक्को गोबिन्द नज़री आइंदा। साढे तिन्न हथ्थ उच्ची लम्मी ओस दी गंढ्ढ, छप्पर छन्न सोहणी भाग लगाइंदा। दीन दयाल हो बख्शंद, घर साचा सच वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, गुरसिख गुरु गुर सतिगुर साची गोद बहाइंदा।

*** १३ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ***

तीजे दिन दा लेखा पूरा, प्रभ पूरी तरह कराइंदा। गलीआं हूंझ चिकड़ कूड़ा, कूट कुण्ट वेख वखाइंदा। मस्तक दे के आपणी धूढ़ा, धड़कन सर्ब मिटाइंदा। चाढ़ रंग बहु रंगी गूढ़ा, लालन लाल वेख वखाइंदा। दया कर होए मशकूरा,

शुकर गुज़ार आप अख्वाइंदा। चाकर ख़ाक बण मज़दूरा, सेवक सेवा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा आप जणाइंदा। पिछला लेखा दिन तीजा, तेज तप जणाईआ। जिस दवारयों कदी ना होई रीझा, सो मार्ग सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर प्रीतम भीजा, खुशीआं रंग वखाईआ। जन भगत बणा धुर दा जीजा, देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सदा सहाईआ। तीजा दिन दिन सी उह, जिस विच रब्बी नूर खेल खलाईआ। जिस भाग लगाया छब्बी पोह, सच दए वड्याईआ। साहिब सुल्तान ओथों आया हो, हौली हौली फेरा पाईआ। गुरमुखां दुरमति मैल देवे धो, काया माटी पोच पुचाईआ। जिस विछोड़े वैराग विच पिच्छों ल्या रो, तिस अन्त रोण रहे ना राईआ। ओन्हां दा ठाकर प्रभ आप गया हो, हरिजू आपणा संग निभाईआ। ओस दा घाटा पूरा करन ख़ातर कीता मोह, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। इक्को वार कर निमस्कार नेड़े दूर संगत सारी जाए चरण छोह, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा ढोआ दित्ता ढो, ढाह ढेरी ख़ाक ना कोए बणाईआ।

३५३
१६

* १३ माघ २०२० दीदार सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर *

सतिगुर सच्चा साहिब स्वामी, हरि करता वड वड्याईआ। आदि जुगादि धुर दा बानी, जुग चौकड़ी खेल रचाईआ। सचखण्ड निवासी शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। देवणहारा धुर दा दानी, वस्त अमोलक इक वरताईआ। भगत भगवान कर परवानी, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, वड्डा वड वड्याईआ। लेखा जाण सर्ब संसार, लख चुरासी खोज खुजाईआ। भगत वछल बण गिरधार, मेहर नज़र इक उठाईआ। सन्त सुहेले सज्जण तार, तारनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, हरि करता वड वड्याईआ। देवणहारा आदि जुगादि धुर दी धीर, सच सुच्च इक समझाईआ। जन्म कर्म दी कट भीड़, लेखा पूरब दए वखाईआ। अमृत बख़्श सच्चा सीर, सति सतिवादी जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सतिगुर पूरा हरि सुल्ताना, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। देवणहारा नाम निधाना, धुर दी वस्त आप वरताइंदा। खेलणहारा दो जहानां, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। पहनणहारा अगम्मी बाणा, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप धराइंदा। सतिगुर पूरा वेस अवल्ला, एकँकार आप कराईआ। वसणहारा निहचल

धाम अटला, सच दवारे सोभा पाईआ। लेखा जाणे जलां थलां, घट घट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा श्री भगवान, इक इकल्ला आप अख्वाइंदा। कलयुग अन्त हो मेहरवान, सच मर्दानगी नाम वखाइंदा। दो जहानां बण के काहन, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। निर्धन सरधन देवे माण, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को इक अख्वाइंदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, महिमा आपणी आप समझाईआ। जुग चौकड़ी सेवा ला साध सन्त, गुर अवतार हुक्म मनाईआ। शब्द ज्ञान दे बोध अगाध बण पंडत, करे इक पढ़ाईआ। लेखा जाण माड़ी मण्डप, महल अटल खोज खुजाईआ। साक सज्जण बण बंधप, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साहिब सतिगुर इक दातार, हरि जू दयावान अख्वाइंदा। आदि जुगादी जिस दा अवतार, पंज तत काया चोला जगत हंढाइंदा। पीर पैगम्बर जिस दी धार, गुर अवतार रंग रंगाइंदा । नाम निधान जिस दा जैकार, अनबोलत साचा राग सुणाइंदा। लख चुरासी जिस दा पसार, घट घट अन्दर डेरा लाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, सतिगुर इक्को इक अख्वाइंदा। सतिगुर इक इक इकल्ला, एकँकार वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। पावे सार जलां थलां, डूंघे सागर फोल फुलाईआ। शब्दी धार जोती रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, साची गंढु नाम पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी रिहा कमाईआ। साची करनी करे करतार, हरि करता इक अख्वाइंदा। लेखा जाण धुर दी धार, धुर मस्तक वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले ला के पार, मंज़ल पिछली पन्ध मुकाइंदा। दे दरस अगम्म अपार, जन्म तृष्ना रोग मिटाइंदा। चरण कँवल इक आधार, सच सरनाई आप समझाइंदा। प्रेम प्रीती बख्श प्यार, साची रीती मार्ग लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर पूरा पुरख अकाल, अगम्म अगम्मड़ा नज़री आईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। जन भगत सुहेले लए उठाल, हरि सज्जण आप जगाईआ । लेखे ला शाह कंगाल, ऊँच नीच दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। सतिगुर पूरा हरि रघुनाथ, रघुपत इक्को नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी जिस दी गाथ, खाणी बाणी सिफ्त सालाहइंदा। नित नवित्त जिस दा चले राथ, रथवाही गुर अवतार रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। सतिगुर

पूरा इक करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां दे दरस दीदार, दीदार दीदार विच्चों रुशनाईआ। रोशन कर उच्च मनार, बिन दीआ बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच रघुराईआ। सतिगुर सच्चा एको इक, इक इकल्ला नज़री आइंदा। जिस दा लेखा कोई ना सके लिख, लिख लेख ना कोए समझाइंदा। जगत नेत्र किसे ना आए दिस, लोचण दरस कोए ना पाइंदा। जन भगतां देवे धुर दा हिस्स, साचा हिस्सा वंड वंडाइंदा। लख चुरासी दे के पिठ्ठ, मुख आपणा आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करने योग, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। भगत मिलावा धुर संजोग, जुग विछड़े लए मिलाईआ। नाम निधाना रस साची चोग, मुख इक्को इक वखाईआ। धुर दा ढोला बोल शलोक, सोहँ मन्त्र करे पढ़ाईआ। दे वडयई लोक परलोक, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा सच स्वामी, अकल कलधारी आप अख्वाइंदा। गुरमुख वेखे बुध अञ्याणी, बाली बुध आप समझाइंदा। शब्द सुणा धुर दी बाणी, बाण निराला तीर लगाइंदा। अमृत बख्श ठंडा पाणी, चरणोदक इक्को मुख चवाइंदा। साचा दे पद निरबाणी, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। लेखा चुका चारे खाणी, दरगाह साची आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर खेल रचाइंदा। साहिब सतिगुर सूरबीर, बीरता आपणा नाम जणाईआ। शब्द निराला मारे तीर, तिक्खी मुखी धार वखाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे पीड़, हउमे हंगता रोग गंवाईआ। अमृत ठांडा देवे सीर, निझर झिरना इक झिराईआ। हथ्थ फड़ अगम्मी शमशीर, पंच विकारा खण्ड खण्ड कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर सच देवे माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर धुर दा ठाकर, हरि करता इक अख्वाइंदा। पार लँघाए कलयुग सागर, डूंघी भँवर ना कोए भवाइंदा। मेहरवान करीम करता कादर, कुदरत आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। सतिगुर पूरा भगत सुहेला, मिलणी जगदीश कराईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, चेला गुरू दए वड्याईआ। वसणहारा धाम नवेला, स्वच्छ सरूपी वेस धराईआ। निरवैर हो के फिरे इकेला, अकल कलधारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कर करता पुरख, सद देवे माण वड्याईआ। चिन्ता सोग मिटाए हरख़, ग़म रोग ना कोए सताईआ। दयाल हो के करे तरस, जम काल भय चुकाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तड़प, सति सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सज्जण दए

वखाईआ। सतिगुर पूरा वखाए घर सज्जण, साजण इक्को दए जणाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भज्जण, भउ भरम सब मिटाईआ। सच इश्नान करावे मजन, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतिगुर पूरा चाढ़े रंगत, रंग इक्को नाम रंगाईआ। किरपा करे धुर दी संगत, सगला संग रखाईआ। अंगीकार हो के अंग लाए जिउँ नानक अंगद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधान देवे बोध अगाधा बण के पंडत, करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर पूरा दूलो दूल, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। जन भगत फुलवाड़ी वेखे फूल, पत टाहणी आप महकाईआ। सब दा लेखा जाणे मूल, पूरब फोल फुलाईआ। जो साहिब सतिगुर गए भूल, तिन्नां भुल्लयां लए मिलाईआ। जुग चौकड़ी ना बदले आप असूल, असलीअत आपणे नाल लिआईआ। धुर दा बण कन्त कन्तूल, हरिजन सच्चे लए प्रनाईआ। लहिणा वेख पिछला मूल, लेखे देवे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साहिब सतिगुर धुर दा दूल्हा, नर निरँकार इक्को नज़री आईआ। नित नवित्त कदे ना भूला, भुल्लयां मार्ग दए वखाईआ। गुर चेले कराए सुल्ला, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। भाग लगाए काया कुला, नगर खेड़ा इक वड्याईआ। सदा दवारा रखे खुल्ला, खिड़की बंद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सतिगुर पूरा शब्दी धार, पुरख अकाल देवे वड्याईआ। जुग जुग करे सच प्यार, हरि सन्तां मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यार, निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। गुरमुख गुरसिख कर प्यार, प्रेम प्रीती इक बंधाईआ। दिवस रैण दे दीदार, पर्दा उहला रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर पूरा करनी करदा आया, करनहार इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी बण के दाई दाया, साची सेव कमाइंदा। रूप धर के पिता माया, पूत सपूते गोद सुहाइंदा। साचा मार्ग दए वखाया, राह इक्को इक लगाइंदा। निरगुण सरगुण राह चलाया, साची खेल आप रचाइंदा। लख चुरासी विच्चों भगत तराया, तारनहारा दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम मेल मिलाया, जगत विछोड़ा दूर कराइंदा। सोहँ मन्त्र इक दृढ़ाया, नाता आपणे नाल रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा होए सहाया, सहायक आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत संग सदा समाया, विछड़ कदे ना जाइंदा।

* १४ माघ २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर *

सेवा कहे मेरे प्रबीन, बेनज़ीर तेरी सरनाईआ। मैं निर्धन हो मस्कीन, दर ठांडे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी रही अधीन, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। तेरा वेख खेल यामबीन, मेहरवान भेव कोए ना आईआ। मैं वेख थक्की लोक तीन, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। बिरहों विछोड़े अन्दर तड़फां जिउँ जल मीन, बिलप चातृक वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सेवा कहे मैं जगत निमाणी, हस्ती नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी भरदी रही पाणी, पीसण पीस सेव कमाईआ। बणी रही बाल अञ्याणी, बल बुध ना कोए रखाईआ। फिर फिर वेखदी रही चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल मेरे मेहरवान मैनूं किसे ना बणाया धुर दी राणी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैं कोझी कमली मात पछताणी, पश्चाताप विच वक्त लँघाईआ। सच दवारे देवे ना कोए माणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। सेवा कहे मैं होछी मति, मात चले ना कोए चतुराईआ। साचा करे ना कोई साथ, संगी संग ना कोए निभाईआ। नेत्र उठा वेखे ना कोई अक्ख, नैनण नैण नैण शरमाईआ। मेरा किसे ना दित्ता हक़, हकीकत झोली कोए ना पाईआ। दरोही खुदाए गई थक्क, थकावट मेरी ना कोए मिटाईआ। फिर फिर वेख्या जगत हट्ट, घर घर आपणी अलख जगाईआ। मेरी कोई ना रखे पत, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान तेरी वड्याईआ। सेवा कहे मैं बाली नढ्ढी, बचपन विच दयां दुहाईआ। शाह सुल्तानां घरों कढ्ढी, जगत जहान ना कोए ढोईआ। मेरा दुखी अंग अंग करे हड्डी, तत तत्त रिहा कुरलाईआ। मेरी धार किसे ना बद्धी, रीत मात ना कोए जणाईआ। बीते काल कोट सदी, सिर सदका ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। सेवा कहे मैं निक्की बाली, सोच समझ ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी घाल घाली, नित नवित्त कार कमाईआ। जिस वेले वेखां हथ्थ दोवें ख़ाली, वस्तू नज़र कोए ना आईआ। नानक निरगुण दस्स के गया दलाली, साची सिख्या इक समझाईआ। अंगद किहा बेमिसाली, मिसल सब दी दए बणाईआ। अमरदास किहा धुर दा माली, मालक इक्को बेपरवाहीआ। रामदास बोल किहा साहिब सतिगुर दीन दयाली, दयावान वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। सेवा कहे मैं जगत निमाणी, निर्धन आपणा नाउँ रखाईआ। चार जुग मेरी करे ना कोई पहचानी, मन्दिर घर ना कोए वसाईआ। प्रेमी मिले ना कोई हाणी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। सच्ची देवे ना कोई निशानी, निशाना हथ्थ ना कोए फड़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। सेवा कहे मैं घोल घोली, सीस जगदीश निवाईआ। जुग चौकड़ी कदे ना बोली, चुप्प चुपीती कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम अन्तर हिरदे मैं वी डोली, धीरज नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट वेख्या पैंदी रौली, होका देवे जगत लोकाईआ। जन भगत कहिण श्री भगवान हथ्थ लै के मैंहदी मौली, तन्द सगन नाम बंधाईआ। सच दरगाह जिस ने खोल्ही, देवे सर्ब माण वड्याईआ। मैं वी चल के आई हौली हौली, पिछला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, वर दाते दर तेरे मंग मंगाईआ। सेवा कहे मैं आई चल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पर्बत चोटी टिल्ले रहे हल्ल, जंगल जूह ध्यान लगाईआ। शाही लशकर वेखण दल, फ़ौजदार नैण उठाईआ। मैं सभना कर के वल छल, ओझल हो के मुख छुपाईआ। किरपा कर मेरे भगवन, साहिब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी दए जणाईआ। सेवा कहे मैनूं आया दुःख, दुक्खा इक्को नज़री आईआ। मेरे प्रेमीआं सदा रहे भुक्ख, कंगला रूप वटाईआ। मैं ओन्हां मंगां सुख, दर तेरे कर अरज़ोईआ। तेरी दो जहान लुट्ट, मैं मुहताज झोली डाहीआ। किरपा कर प्रभ तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया दे वरताईआ। सेवा कहे मैं कोझी कमली, मूर्ख मति रही कुरलाईआ। बिरहों विछोड़े कीती बवली, सुरती सुरत भवाईआ। मिले माण ना उपर धवली, धरनी धरत ना कोए सहाईआ। ख़ाली वेख मेरी बग़ली, भिच्छया नज़र कोए ना आईआ। की हालत दस्सां साहिब अगली, बल रहिण कोए ना पाईआ। मैं वेख के खुश इक्को होई तूं भगतां सीस बद्धी पगड़ी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओन्हां पिच्छे मैं हो के आई तकड़ी, बल आपणा नाल मिलाईआ। बिन तेरी किरपा टंगों होई लंगड़ी, भज्ज सकां ना वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया मैनूं रही जकड़ी, कदम सकां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मैं वेख के आई ब्रह्मण क्षत्री, शूद्र वैश दर दर फेरा पाईआ। सेवा कहे मैं होई नालायक, मोहे मिले ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादि मैं सब दे रही मातहित, हुक्मे अन्दर फेरा पाईआ। मैनूं करे ना कोई रयाइत, झोली दर ना कोए भराईआ। सारे करदे रहिण हदाइत, आपणा ज़ोर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक वर, साहिब सतिगुर दीन दयाल दया कमाईआ। सेवा कहे मेरा कोई ना मुल्ल, कीमत करते ना कोई पाइंदा। कोझी कमली जे गई भुल्ल, भुल्लयां राह नज़र ना आइंदा। तेरे चरणां अन्दर जावां रुल, दूजा गृह ना कोई भाइंदा। तेरी रहमत सदा अनमुल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, साहिब सब तेरी आस रखाइंदा। सेवा

कहे मैं होई मजबूर, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट भरया ग़रूर, गुरबत विच फिरे लोकाईआ। त्रैगुण माया तपे तन्दूर, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। साहिब सतिगुर मेरा कर मुआफ़ कसूर, दोए दोए जोड़ लागां पाईआ। मेरी आसा मनसा पूर, संसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे वखाईआ। सेवा कहे वेख मेरा हाल, पर्दा उहला आप चुकाईआ। अट्ठे पहर होई बेहाल, सुरती सुरत ना कोए वड्याईआ। मेरी चोली होई कंगाल, झोली सके ना कोए भराईआ। साचा मिले ना कोए दलाल, विचोला संग ना कोए निभाईआ। मैं जुग चौकड़ी थक्की भाल, दहि दिशा फेरा पाईआ। मेरा हल्ल ना होया सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब आपणे नाल मिलाईआ। सेवा कहे मैं होई छोटी, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। मैनूं लभ्भदे गए कोटन कोटी, कोटन कोटां विच्चों ध्यान लगाईआ। मैं डूंघे अन्दर वड़ के रही सोती, सुत्यां सके ना कोए जगाईआ। जुग चौकड़ी रही रोती, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। प्रेम प्यार दे हन्झूआं वहाउँदी रही मोती, छहबर धार इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दे साचे घर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सेवा कहे प्रभ हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। किरपा सिन्ध दे दान, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। गुणी गहिंद कर परवान, दर बेनन्ती इक जणाईआ। सद बख्शंद वेख आण, निरवैर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा लैणा झोली पाईआ। सेव कहे मेरा देदे लहिणा, दर तेरे मंगण आईआ। इक्को वार तैनूं कहिणा, सीस सजदा इक्को वार झुकाईआ। चार जुग फेर चुप्प करके रहिणा, रसना बोल ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देदे धुर दा वर, धुर मस्तक रेख मिटाईआ। सेवा कहे मेरा देदे लेखा, लेखा लिख्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। क्यों साहिब सतिगुर मेरा भुल्लया चेता, ग़फ्लत विच वक्त लँघाईआ। तूं साहिब स्वामी सब दा नेता, नर नरायण नज़री आईआ। निरवैर निरँकार बणे खेवट खेटा, बेड़े आपणे लए चढ़ाईआ। जिवें भगत दवारे बणाए आपणा बेटा, पिता पुरख अकाल नाउँ धराईआ। मैं वी उह रंग वेखां, जो अनडिठड़ा दएं रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। दे वड्याई साहिब सतिगुर, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मैं दूर दुराडी आई तुर, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। तूं साहिब स्वामी लेखा जाणे धुर, जुग चौकड़ी तेरी सरनाईआ। दर दवारे दोए हथ्थ रही जोड़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बौहड़ी बौहड़ी रही कुरला तूं बौहड़, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। मैं निमाणी वल वेख कर के ग़ौर, गहर गम्भीर अक्ख खुल्हाईआ। सच सच्च दर तेरे पावां शोर, शोरश अवर ना कोए मचाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, मेरा लेखा दे लिखाईआ। तेरा लेखा लिखणा की, साहिब सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी तेरी रखी नींह, साची सेवा इक समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीज्या बी, अन्तिम आपे वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां विच्चों साढे तिन्न हथ्थ तेरी लेखे लग्गी सीं, सीमा आपणी आप समझाइंदा। जिस दवारे जन भगत रहे जी, हरि जीवत मुक्त कराइंदा। ओसे गृह खुशीआं नाल थी, सच कहाणी आप दृढ़ाइंदा। श्री भगवान बरसे अमृत मींह, मेघला इक्को धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाइंदा। साची सेवा कर समझ, हरि इक्को वार समझाईआ। श्री भगवान मार रमज़, इशारे नाल ल्या उठाईआ। मेहरवान हो के मर्दाना मर्द, सच मर्दानगी इक कमाईआ। तेरे नाल वंडी दर्द, दीना अनाथा होए सहाईआ। खोल्ह वखाए पिछली फ़रद, लहिणा देणा भेव मिटाईआ। तेरी गोबिन्द पूरी करे अर्ज़, आरज़ू ख्वाहिश नाल मिलाईआ। तूं आपणा पूरा कर लै फ़र्ज़, सेव सच सच्च कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण सेवा बाली नढ्ढी बच्ची, श्री भगवान आप समझाइंदा। जुग चौकड़ी तेरी रुत्त रही कच्ची, साचा फल ना कोए लगाइंदा। चारों कुण्ट वगदी रही वा तत्ती, सांतक सति ना कोए कराइंदा। तेरा खेल किसे ना वेख्या आ के अक्खीं, नेत्र नैण ना कोए खुलाइंदा। सारे रसना जिह्वा तैनूं कैहन्दे रहे अच्छी, अच्छी तर्हां तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तूं तड़फदी रहीउँ जल विछोड़े वांग मच्छी, तेरी मुश्किल हल्ल ना कोए कराइंदा। साहिब सतिगुर पत तेरी रखी, मेहरवान सिर साचा हथ्थ टिकाइंदा। सच कहाणी अगली दस्सीं, श्री भगवान पुछ पुछाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सच कहाणी पुच्छे करतार, हरि करता आप जणाईआ। साची सेवा दस्स ख़िदमतगार, की की कार कमाईआ। केहड़ा वणज कवण व्यपार, कवण हट्ट चलाईआ। कवण शहर कवण बज़ार, कवण वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच कहाणी पुच्छ इक्को हुक्म जणाईआ। सेवा कहे सच दस्सां भगवान, झूठ नज़र कोए ना आईआ। बण के बाली नढ्ढी नाधान, सद साची सेव कमाईआ। मैनूं सब तों चंगी लग्गी तेरी शान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सब तों चंगा लग्गा तेरा पुत्त बलवान, गोबिन्द सूरा बेपरवाहीआ। मैं ओस नाल कीता प्यार, सच सच दयां दृढ़ाईआ। खुशी विच आ के बच्चे नींहां हेठ दब्बे निशान, निशाना तेरे नाल मिलाईआ। सच संदेसा दे विच जहान, उच्ची कूक दित्ता सुणाईआ। साची सेवा बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे परवान, लेखे लेख ना कोए लगाईआ। सुण अवाज़ गोबिन्द किहा सुण नादान, क्यों बैठी माण वधाईआ। मेरा लेखा अजे ना मुकया विच जहान, भुलेखा सब दा

दूर कराईआ। निरगुण हो के आवे पुरख अकाल, जोती जाता वेस वटाईआ। मैं आवां उस दे नाल, शब्दी कार कमाईआ। करां खेल इक महान, साची धुर दी बणत बणाईआ। ओस वेले आवीं चल अंजाण, बाली आपणा रूप वटाईआ। फेर देवां इक फ़रमान, सच संदेस सुणाईआ। जिन्हां नीहां हेठ निशान, तिन्हां देवां माण वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर बणे महान, माणस मानुख लेखे सारे लाईआ। नौ दर खोल्ह सच निशान, दर दरवाजा आप दृढ़ाईआ। भगत दवारा कर प्रधान, भगवन तेरी सेवा इक वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे वेखण आण, नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। गीत खुशीआं सारे गाण, ढोला इक्को राग अल्हाईआ। सदी बीसवीं तेरा लेखा होए परवान, बीस बीसा दए जणाईआ। जन भगतां दे के धुर दा दान, सीस जगदीश पगड़ी नाम बंधाईआ। फिर तैनूं नाल लै के जाए भगत दुआर भगवान, आपणा संग रखाईआ। दर दर घर घर घर घर दर दर गुरमुखां तैनूं दए वखाल, शब्द इशारे नाल जणाईआ। तूं खुशीआं नाल वेखीं आण, नेत्र अक्खां दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा हौली हौली तेरी झोली देवे पाईआ।

३६१

१६

* १४ माघ २०२० बिक्रमी खेड़ा सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर *

कुल्ली कहे मैं गुरमुख खेड़ा, जिस गृह हरि जू नज़री आइंदा। जिस दा वड्डा सोहणा वेहड़ा, गुलशन रूप वटाइंदा। प्रेम प्रीती पाया घेरा, खुशीआं नाच नचाइंदा। मैं वेखां गुरमुख केहड़ा केहड़ा, जो मेरे अन्दर बहि बहि रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मेरा वेख वखाइंदा। कुल्ली कहे मैं गुरमुख नगर, नगरी हरि जू आप वसाईआ। पूरी कीती मेरी सधर, घर सज्जण फेरा पाईआ। मैं किते ना जावां लभ्भण, जंगल जूह ना खोज खुजाईआ। मेरी पत आया रखण, बेपरवाह जगत गोसाईंआ। सच्चा मार्ग अगम्मी आया दस्सण, रहिबर बण के नूर अलाहीआ। मेरे अन्दर आया वसण, घर साचा इक सुहाईआ। मेरे दुखड़े आया कटण, सुख सागर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। कुल्ली कहे मेरा भाग चंगा, भागां भरी खुशी मनाईआ। जिस दवारे साहिब लँघा, कदम कदम पन्ध मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख नाल सजा, सोहणी बणत बणाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर मधा, मधुर धुन राग सुणाईआ। जिस ने आ के पर्दा कज्जा, सदा सदा होए सहाईआ। मैं मन्नां उहदी सद रज़ा, भाणे विच समाईआ। सच पुछो प्रभ नूं मिल के आया उह मज़ा, जिस दा रस सके ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मोहे ग़रीबणी दए वड्याईआ। कुल्ली कहे मेरा सोहया बंक, घर वज्जी नाम वधाईआ। प्रभ ठाकर मिल्या धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी रिहा सुहाईआ। मैं मिल सखीआं गीत गावां मंत, धुर दा राग अलाईआ। जिस मेरी बणाई बणत, तिस दे निउँ निउँ लागां पाईआ। धन्न वड्याई दर आई संगत, जे मेरे अन्दर वड़ के हरि सतिगुर दर्शन पाईआ। ओनां चढ़े उह रंगत, जिहड़ी बहार मेरे उते सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं सुख दाता दीनां बंधप, बन्धन सारे रिहा कटाईआ।

* १४ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर *

श्री भगवान कहे सुण सेवा बच्ची, धुर दा लेख समझाईआ। तेरी कहाणी लग्गी सच्ची, साहिब सतिगुर भाईआ। तेरी प्रीत धुर दी लग्गी, ना सके कोई मिटाईआ। श्री भगवान रीती साची दस्सी, बेपरवाह दया कमाईआ। करया खेल पुरख समर्थी, शहिनशाह होए सहाईआ। मैं वखावां तैनूं अक्खीं, जो दर आया सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पर्दा रिहा उठाईआ। साची सेवा सर्ब कमाउँदा ए। सो पुरख निरँजण भेव चुकाउँदा ए। हरि पुरख निरँजण पर्दा लाहुँदा ए। एकँकार आप वखाउँदा ए। आदि निरँजण भेव मिटाउँदा ए। अबिनाशी करता रंग रंगाउँदा ए। श्री भगवान संग निभाउँदा ए। पारब्रह्म सेवा अन्दर आपणी कार आप लगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक दृढ़ाउँदा ए। सेवा अन्दर सेव कमाउँदे ने। विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाउँदे ने। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ मंग मंगाउँदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप समझाउँदा ए। साची करनी इक दृढ़ावांगा। धुर दी रीती आप समझावांगा। सचखण्ड दुआर इक वखावांगा। घर दीपक जोत रुशनावांगा। धुर दी अगम्मी बणत बणावांगा। नार कन्त रूप वटावांगा। गृह मन्दिर सोभा पावांगा। थिर घर दुआर इक उपजावांगा। बण जननी जन सुत प्रगटावांगा। सच दुआर सुहा रुत, फल फुलवाड़ी आप महकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे हथ्थ रखावांगा। साची सेवा आपणे हथ्थ रखावांगा। शब्दी सुत इक प्रगटावांगा। धुर दा हुक्म इक अलावांगा। साची रचना रचना विच्चों प्रगटावांगा। विष्नूं विश्व धार चलावांगा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप धरावांगा। शंकर धूंआँधार प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सेवा इक लगावांगा। साची सेवा सर्ब कमाउणगे। श्री भगवान दवारे सीस निवाउणगे। बण दरवेश मंग मंगाउणगे।

ख़ाली झोली अग्गे डौहणगे। दोए जोड़ वास्ता पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची कारे लग्ग लग्ग ख़ुशी मनाउणगे। साची कारे आप लगावांगा। विष्नूं हथ्थ भण्डार फड़ावांगा। साची सेवा इक समझावांगा। घर घर रोज़ी रिज़क पुचावांगा। साचा इश्क आपणे नाल रखावांगा। स्वामी इष्ट रूप हो नज़री आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी खेल करावांगा। ब्रह्मे सेवा सच समझावांगा। ब्रह्म इक्को नूर प्रगटावांगा। ज़ाहर ज़हूर खेल खलावांगा। शब्दी नाद तूर वजावांगा। आसा मनसा पूर, तृष्ना तृखा मिटावांगा। हो के हाज़र हज़ूर, हरि मन्दिर इक वखावांगा। जिस गृह नज़री आए जोती नूर, सच उजाला इक करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक वखावांगा। साची सेवा सच जणावांगा। शंकर धूंआँधार विच्चों उठावांगा। कर प्यार धूढ़ी टिक्का मस्तक लावांगा। एह आधार सर्ब समझावांगा। हथ्थ त्रसूल इक फड़ावांगा। लहिणा देणा मूल झोली पावांगा। बण धुर दा कन्त कन्तूल, सच संदेसा इक सुणावांगा। तिन्नां दस्स के सच असूल, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठावांगा। मेहर नज़र प्रभू उठाएगा। त्रैगुण माया आप प्रगटाएगा। रजो तमो सतो नाम धराएगा। पंज तत आपणी गंढु पवाएगा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल कराएगा। शब्द संदेसा भेज, धुर दा हुक्म आप जणाएगा। सच समझा के आपणी खेल, सेवा इक्को इक वखाएगा। पंज तत कर के धुर दा मेल, बन्धन आपणा नाम रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक्को इक जणाएगा। साची सेवा हरि जणाउँदा ए। त्रैगुण माया मेल मिलाउँदा ए। पंज तत साचा जोड़ जुड़ाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाउँदा ए। चारे खाणी वंड वंडाउँदा ए। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज साची धार बधाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा इक्को इक रखाउँदा ए। सेवा अन्दर खाणी चार रचाउँदा ए। सेवा अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, साचे मार्ग आपे लाउँदा ए। सेवा अन्दर बोल जैकार, चारे बाणी राग अलाउँदा ए। सेवा अन्दर कर पसार, लख चुरासी वंड वंडाउँदा ए। सेवा अन्दर महल अटल उसार, लोक परलोक आप सुहाउँदा ए। सेवा अन्दर गगन मण्डल खेल निराल, आकाश प्रकाश नूर चमकाउँदा ए। सेवा अन्दर रवि ससि आधार, सेवा अन्दर मण्डल मण्डप डेरा लाउँदा ए। सेवा अन्दर ज़िमीं असमान, धरत धवल आप वखाउँदा ए। सेवा अन्दर खेल करे जुग चार, जुग चौकड़ी बन्धन पाउँदा ए। सेवा अन्दर बोल जैकार, चारे वेदां राग अलाउँदा ए। सेवा अन्दर खेल न्यार, निरगुण सरगुण घाल कमाउँदा ए। सेवा अन्दर हो त्यार, निरवैर पुरख वेस वटाउँदा ए। सेवा अन्दर कर श्रृंगार,

पंज तत काया चोला आप हंढ्ढाउँदा ए। सेवा अन्दर बण गुरू अवतार, लोकमात वेख वखाउँदा ए। सेवा अन्दर शब्दी धार, धुर दा राग अलाउँदा ए। सेवा अन्दर बण लिखार, कातब आपणी कलम चलाउँदा ए। सेवा अन्दर कर प्यार, अमृत मेघ बरसाउँदा ए। सेवा अन्दर खेल संसार, सज्जण सुहेले मेल मिलाउँदा ए। सेवा अन्दर हो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाउँदा ए। सेवा अन्दर जलवा नूर कर उज्यार, ज़ाहर ज़हूर पड़दा लाहुँदा ए। सेवा अन्दर पीर पैगम्बर बण के मीत मुरार, सगला संग निभाउँदा ए। सेवा अन्दर कलमा कायनात बोल जैकार, हदाइत इक्को इक सुणाउँदा ए। सेवा अन्दर भगत भगवन्त कर त्यार, भगती इक्को इक वखाउँदा ए। सेवा अन्दर सन्त सज्जण लए उठाल, अन्दर वड़ वड़ मेल मिलाउँदा ए। सेवा अन्दर गरुमुखां करे प्रितपाल, जुग जुग सिर सिर हथ्थ रखाउँदा ए। सेवा अन्दर गुरसिखां चले नाल, जगत विछोड़ा दूर कराउँदा ए। सेवा अन्दर खाणी बाणी कर त्यार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणत बणाउँदा ए। सेवा अन्दर गीता ज्ञान दे आधार, अञ्जील कुरान ढोला गाउँदा ए। सेवा अन्दर करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाउँदा ए। सेवा अन्दर तेई अवतार, साहिब सतिगुर हुक्म चलाउँदा ए। सेवा अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद लए उठाल, मुसल्ला इक्को हेठ वछाउँदा ए। सेवा अन्दर नानक गोबिन्द बन्नू धार, साची सेवा इक लगाउँदा ए। सेवा अन्दर भगत अठारां कर प्यार, प्रेम प्रीती जोड़ जुड़ाउँदा ए। सेवा अन्दर गोबिन्द बणाया आपणा बाल, पिता पुरख अकाल अख्वाउँदा ए। सेवा अन्दर बाले नीहां हेठां दए सवाल, सेवा अन्दर महल अटल रुशनाउँदा ए। सेवा अन्दर खण्डा खड़ग खिच कटार, तीर तरकश भथ्था आपणे कंध वखाउँदा ए। सेवा अन्दर सब कुछ वार, आप आपा मेट मिटाउँदा ए। सेवा अन्दर सत्थर हंढ्ढाया सांझे यार, माछूवाड़ा रुत सुहाउँदा ए। सेवा अन्दर बोल जैकार, पुरख अकाल इक ध्याउँदा ए। सेवा अन्दर बण भिखार, साची भिख्या मंग मंगाउँदा ए। सेवा अन्दर देवणहार, धुर दी वस्त आप वरताउँदा ए। सेवा अन्दर अगम्मी गुफ़तार, बिन रसना जिह्वा राग अलाउँदा ए। सेवा अन्दर करे खेल आप निरँकार, निरगुण आपणी कल वरताउँदा ए। सेवा अन्दर कीता कौल इकरार, धुर दा लेख आपणे हथ्थ रखाउँदा ए। सेवा अन्दर कल कल्की लै अवतार, सम्बल आपणी रुत्त सुहाउँदा ए। सेवा अन्दर गोबिन्द कर प्यार, शब्दी जोती जोड़ जुड़ाउँदा ए। सेवा अन्दर लेखा जाण जुग चौकड़ी चार, नव नौ पन्ध मुकाउँदा ए। सेवा अन्दर हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाउँदा ए। सेवा अन्दर करे खेल आप करतार, कुदरत आपणा खेल रचाउँदा ए। सेवा अन्दर वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र लोचण नैण खुलाउँदा ए। सेवा अन्दर हो के गरिफ्तार, आपणा बल ना कोए जणाउँदा ए। सेवा अन्दर आपा आप वार, पंज तत काया माटी तत जलाउँदा ए। सेवा अन्दर जोती जोत कर चमत्कार,

दीआ दीपक इक्को डगमगाउँदा ए। सेवा अन्दर करे खेल सिरजणहार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार साची करनी कार कमाउँदा हे। सेवा अन्दर भगत भगवन्त लए उठाल, फड़ बाहों गोद बहाउँदा ए। सेवा अन्दर वेखे लाल, लालन आपणा रंग रगाउँदा ए। सेवा अन्दर हो दयाल, दयालता इक्को इक वरताउँदा ए। सेवा अन्दर नाता तोड़ काल महाकाल, महिबूब आपणा घर वखाउँदा ए। सेवा अन्दर सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, हरि भगतां लई बणाउँदा ए। सेवा अन्दर सन्त सुहेले लए भाल, पुरख अबिनाशी दर दर घर घर सेव कमाउँदा ए। सुण सेवा आ के वेख सब दा हाल, बिन सेवक नज़र कोए ना आउँदा ए। सब दे मस्तक नूरी जलवा इक जलाल, जौहर इक्को रंग वखाउँदा ए। श्री भगवान साची सेवा विच्चों लए भाल, जो भालयां हथ्थ किसे ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा विच सर्ब रखाउँदा ए। सेवा कहे मोहे होई हैरानी, नेत्र नैणां नैण शरमाईआ। श्री भगवान तेरी खेल महानी, मैं समझ सकां ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दर उते भरन पाणी, माण अभिमान ना कोए जणाईआ। तेरी सेवा विच फिरदे चारे खाणी, चारों कुण्ट नज़री आईआ। तेरी सेवा विच दो जहान चलावण निशानी, निशाना इक्को इक तकाईआ। तेरी सेवा विच सब ने बोली बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे मोहे वर, दर तेरे मंग मंगाईआ । सुण सेवा प्रभ कहे करतार, हरि करता दए जणाईआ। सेवा विच सर्ब संसार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुखां सेवा अपर अपार, जन भगतां सेवा सोभा पाईआ। मनमुखां सेवा जगत प्यार, कूड़ा नाता जोड़ जुड़ाईआ। साची सेवा हथ्थ ना आए बिन सतिगुर चरण प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सेवा कहे मैं तैथों डरदी, उच्ची कूक सकां ना राईआ। मनमुख दवारे जावां मरदी मरदी, मेरी चले ना कोई वड्याईआ। तेरे प्रेम दा मिले कोई ना दर्दी, धुर दा संग ना कोई बणाईआ। मन वासना सब दी लग्गी मर्ज़ी, मुजरम दिसे जगत लोकाईआ। जिस वेले जन भगत दवारे वड़दी, गीत गावां खुशीआं चाईं चाईंआ। निउँ निउँ पैर ओहनां दे फड़दी, जो तेरे चरणी लग्न सरनाईआ। गोली बणां दर दी, घर घर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे इक वर, हरि एका दे वखाईआ। सुण सेवा कहे निरँकार, हरि करता आप जणाइंदा। सेवा विच खेल अपार,,अपरम्पर आप समझाइंदा। साची सेवा अपर अपार, धुर दा फल खवाइंदा। जगत सेवा कूड़ पसार, करता कीमत कोए ना पाइंदा। कूड़ी सेवा अन्दर नेत्र रोवे पुरख नार, पुत्तर धी सर्ब कुरलाइंदा। जगत कटुम्ब ना कोए अधार, सज्जण सैण नज़र कोई ना आइंदा। साची सेवा गुरमुख गुरमुख करन प्यार, प्रेम प्रीती विच्चों प्रगटाइंदा। जिस

सेवा दी खिले सच गुलज़ार, सो बगीचा हरि महकाइंदा। सेवा करदे करदे सेवा मंगदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर झोली सर्ब डाहइंदा। सब दी सेवा करे आप निरँकार, सेवा करदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। सुण सेवा धुर दी गाथ, हरि करता आप जणाईआ। तेरी सेवा जगत दात, पारब्रह्म वड्याईआ। तेरा मेला भगतां साथ, सन्त साजण जोड़ जुड़ाईआ। तेरी सेवा प्रभ चरण प्रीती नात, घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सेवा कहे मोहे कोई ना नाता, जगत मिले ना कोई वड्याईआ। इक्को मंगां धुर दी दाता, दातार तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मैं जन भगत दवारे ख़ाली बरतन मांझां नाल परातां, ख़ाक धूढ़ी नाल सेव कमाईआ। निउँ निउँ गुरमुखां दे चरणा वल झाकां, नैण उपर ना सकां उठाईआ। हौली हौली सुणां उहनां दीआं बातां, जो ख़ुशीआं तेरा ढोला गाईआ। जिन्हां बिरहों विछोड़े विच लँघाईआं रातां, तिन्हां पैरां हेठ आपणा सीस टिकाईआ। चुक्क के भार धन्न धन्न आखां, कहि कहि शुकर मनाईआ। ख़ुशीआं विच कहां मेरीआं मुक्कीआं वाटां, अग्गे पन्ध नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देणी माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे सेवा तूं सेव की कमौणी आं। नेत्र लोचण लए पेख, हरि जू की की खेल वरतौणी आं। जन भगतां पिच्छे धरया भेख, तिस आपणी जोत अकालण निरगुण सेवा विच रखौणी आं। भगत दवारे वेख सच कोट, फूलण बरखा इक बरसौणी आं। दे नाम भण्डार अतोट, अतुट दात वरतौणी आं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा साची सच कमौणी आं। सेवा कहे तूं भगवान, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। एह दात मैनूं दे दे दान, दर दरवेश बैठी झोली डाहीआ। मैं जा के सेवा करां महान, सेवक बण के सेव कमाईआ। जिस मार्ग गुरमुख आण, तिन्हां केस चवर झुलाईआ। जिस वेले मेरे उपर चरण टिकान, मैं ख़ुशीआं नाल लवां उठाईआ। नाले कूक पुकार करां बिना ज़बान, अन्दरे अन्दर राग सुणाईआ। चलो ओस नूं मिलीए आण, जो धुर दा मालक बेपरवाहीआ। जिस मेरी सेवा लाई विच जहान, जन भगतां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण के बात सेवा दी हरि, धुर संदेसा इक जणाईआ। उठ बाल आ दर, दर्दी दर्द वंडाईआ। आपणी कहाणी दस्स घड़, की की बणत बणाईआ। तेरी किस लगाई जड़, पत डाहली कवण महकाईआ। की करनी जुग जुग रिहा कर, नेहकर्मी इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सेवा कहे मेरे रूप पंज, पंजां विच्चों नज़री आईआ। पंज कहिण तेरी धार सूरा सरबँग, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। शहिनशाह कहे मेरा खेल इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सेवा कहे मेरा मेल पंज, पंज मिले वड्याईआ। मेरा रूप दा ना कोई तत काया कंच, गढ़ नज़र कोई ना आईआ। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश ना कोई नूर अग्नी अंच, धूंआँधार ना कोई रखाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल बणाई मेरी बणत, घाड़त आपणी हथ्थीं घड़ाईआ। जिस दा भेव नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग किसे ना पाया जीव जंत, गुर अवतार ना कोए लेख लिखाईआ। मेरी महिमा सदा अगणत, रसना जिह्वा ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेरा भेव दए चुकाईआ। सेवा कहे मेरे पंज रूप, रूपावन्ती नज़री आईआ। साहिब स्वामी मेरा भूप, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मेरी सेवा चार कूट, चारे रूप दए समझाईआ। पंजवीं सेवा चरण विच रख सब तों करे मज़बूत, हार जित आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई तत ना वजूद, बुत्त रूप ना कोई वखाईआ। साहिब सतिगुर इक महिबूब, मेहरवान दए वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा मौजूद, विछोड़ा नज़र कोई ना आईआ। साहिब सतिगुर मैनूं कर के रख्या महफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान होए सहाईआ। सेवा कहे मेरा रूप प्रगट, श्री भगवान आप प्रगटाईआ। मेरा खेल हर घट, हरि करता आप जणाईआ। मेरा खेल मरघट, मढ़ी गोर वेख वखाईआ। मेरा खेल तीर्थ तट, तट किनारा फोल फुलाईआ । मेरा खेल मन्दिर मट्ठ, शिवदुआले वेखां चाईं चाईंआ। मेरा खेल हथ्थ पुरख समरथ, श्री भगवान साची सेवा लाईआ। मेरा खेल सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच सेवा दए वड्याईआ। सेवा कहे मेरा प्रीतम ओह, देवे माण वड्याईआ। जिस सेवा अन्दर आपणी सेवा लाई छब्बी पोह, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। सेवा ख़ातर निरगुण हो, सरगुण रंग ना कोए रंगाईआ। मीत मुरारा सज्जण ल्या टोह, गोबिन्द आपणे अंग लगाईआ। दो जहानां सब तों सेवा खोह, साची सेवा इक्को रूप वखाईआ। कूड़ कुटम्ब नालों तोड़ मोह, जन भगतां होए सहाईआ। सेवा कर कर दुरमति मैल धो, निर्मल निर्मल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सेवा आप दरसाईआ। सेवा कहे मैं पंच प्यारी, सच रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी मैंनूं सारे वेंहदे रहे कुँवारी, जोबन मती नूर अलाहीआ। डोली फड़ किसे ना चाढ़ी, जगत कहार कंध ना कोई उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रेम प्रीती करदे गए वारो वारी, वारता लेखे जाणे लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल गए उच्ची कूक पुकारी, धुर दा नाद वजाईआ। सब दा दाता शहिनशाह आवे इक्को वारी, एकँकारा नाउँ उपाईआ। जिस दी सेवा सर्ब तों न्यारी, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। जिस दी सेवा सेवक रूप बण के देवे

बहारी, कूड़ा किरकट हूंझ वखाईआ। तिस सेवा संग साहिब लगाए यारी, मेहरवान जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सेवा कहे मेरे मेहरवान, मोहे सच दे दृढ़ाईआ। मेरा लेखा कब करें परवान, आपणे लेखे लाईआ। शाह पातशाह हो मेहरवान, निरगुण निरवैर आप जणाईआ। बीस बीसे जन भगतां दे माण, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा ए। श्री भगवान हुक्म सणाउँदा ए। बीस बीसा खुशी मनाउँदा ए। जन भगतां आप वडयाउँदा ए। साची सेवा तेरी रीती इक वखाउँदा ए। पिछली बीती आप झोली पाउँदा ए। अग्गे कर के ठंडी सीती, जन भगतां जोड़ वखाउँदा ए। तूं वेखीं प्रभ दी लुकण मीटी, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आउँदा ए। करे खेल अगम्मी अनडीठी, अनडिठड़ी कार कमाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तैनूं सच दुआर बहाउँदा ए। सेवा तैनूं सच दुआर बहावांगा। जन भगतां अन्दर आप रखावांगा। काया मन्दिर सच सुहावांगा। भाग लगा के डूंघी कन्दर, निर्मल नूर जोत चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, किस वेले खेल कर के मेरा सच्चा घर वखावेगा। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सच सुनेहड़ा इक सुणाउँदा ए। तेरा राह आप चलाउँदा ए। बीस बीसा ढूंड ढुंडाउँदा ए। जगत जगदीशा रंग रंगाउँदा ए। सब दा खाली कर के खीसा, खालस तेरा रूप जणाउँदा ए। धुर दी दे इक हदीसा, हज़रत कलमा इक पड़्हौंदा ए। दूर दुराडों आ नज़दीका, नेरन नेर पन्ध मुकाउँदा ए। मेरे भगतां नाल ना करीं शरीका, शरीकत तेरी सर्ब गवाउँदा ए। एहनां अन्दर मेरी तौफ़ीका, तोहफा तेरी झोली पाउँदा ए। तूं सेवा सेवा कराईं नाल रीझां, रहीम रहमान वेख वखाउँदा ए। अग्गे वेख लँघ दहिलीजां, पर्दा उहला आप उठाउँदा ए। नेत्र तक्क ला के नीझां, नैण अक्ख खुलाउँदा ए। सेवा वेख कहे प्रभ नज़री आया मीता, मित्र प्यारा जो अख्वाउँदा ए। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जिस अकट्ठा कीता, घर इक्को रंग चढ़्हौंदा ए। भेव चुकाया ऊँचां नीचां, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश संग निभाउँदा ए। जिन्हां नैण खोल्ह तीजा, राती सुत्तयां दरश दिखौंदा ए। एहनां दी सेवा अन्तर रीझा, प्रेम प्रीती इक वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणाउँदा ए। सेवा कहे मैं सेवा करनी, सेवक रूप वटाईआ। भगवान कहे लग्ग एहनां दी चरणी, जो चरणी बैठ सीस झुकाईआ। सेवा कहे मैं पाणी भरनी, दर दर घर घर फेरा पाईआ। भगवान कहे औखी मंज़ल चढ़नी, बिना हरि किरपा चढ़न कोई ना पाईआ। सेवा कहे मैं तैथों डरनी, सीस ना उपर उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं उह खेल करनी, जो आदि जुगादि ना किसे कराईआ।

सेवा कहे मैं मरदी मरनी, मर मर आपा आप मचाईआ। श्री भगवान कहे तूं इक्को सिख्या पढ़नी, जो गुरमुख देण समझाईआ। सेवा कहे मैं कन्नी फड़नी, चोली गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सेवा सच सेवा दए समझाईआ। सेवा वेख सेवक सेवा करन, अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। रसना जिह्वा परम पुरख दा ढोला पढ़न, सच्चा राग अलाईआ। बिरहों विछोड़े अन्दर मरन, जीवत जीवण रूप वटाईआ। तूंही तूंही करन, मैं ममता रहे गंवाईआ। जागत सोवत खुशीआं करन, कर कर रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह देवे सच माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे सुण धुर सुचज्जी, अच्छी तरह समझाईआ। सेवा अन्दर रात संगत गई भज्जी, सुरती सतिगुर विच रलाईआ। जिस वेले रात होई अद्धी, अन्ध अन्धेर रहे गंवाईआ। गुरमुख गुरसिख हथ्थ खलोते बद्धी, बन्दना इक कराईआ। किशन सिँघ हौली जिही बात सुणाई अद्धी, अग्गों बैठा ज़बान बंद कराईआ। साहिब सतिगुर तेरी वड्याई वड्डी, किछ कहिणा कहिण ना पाईआ। ओसे वेले पंजां सपुत्रीआं किहा बापू गल्ल अच्छी, अच्छी तरां जणाईआ। मैंढी सीस कर के नंगी, खुलड़े केस दिती दुहाईआ। लालो उठ के मंग मंगी, मेहरवान हो सहाईआ। श्री भगवान किहा सत्त महीने एहनां दी औध रहिंदी, लेखा मुकया थाउँ थाईंआ। ओसे वेले संगत सारी रो के कैहन्दी, बख्श साहिब सच्चे गुसाईआ। इक्को तेरे प्रेम दी लग्गे मैहन्दी, दूजा रंग ना कोई रंगाईआ। तेरी काया तेरे हुंदयां ढहिंदी, लज्जया तेरी झोली पाईआ। संगत तेरी तेरा भाणा सहिंदी, सिर सिर खुशी मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां हथ्थां फड़ के किहा हरि दया करे कला ना चढ़दी ना ढहिंदी, ढहि ढेर ना कोई बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे दान हो मेहरवान जगत जहान निशानी रहिंदी, लेखा सके ना कोई मुकाईआ। सुण बचन लाल नेत्र रो, लालो आख सुणाईआ। तेरे बिनां ना साडा को, संग ना कोई वखाईआ। तेरे जोगे गए हो, दिवस रैण निक्कीआं निक्कीआं बच्चीयां रहीआं गाईआ। क्यों प्रभू तोड़दा मोह, नाता पंज तत छुडाईआ। श्री भगवान दयावान आपे हो, सिँघ किशन दिती वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रख विचोला मैनूं एहनां जोगा गया हो, सिर ओढण पर्दा दोशाला आपणा आप टिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जींवदयां जींवदयां जीउदे जीव लए तराईआ।

* १५ माघ २०२० बिक्रमी आसा सिँघ बलाका सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

सो पुरख निरँजण कहे मेरा साचा पुत्त, शब्दी नूर इक अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे मेरी धारों पए उठ, ना

३६८
१६

कोई जन्मे पिता माईआ। एकँकार कहे ना कोई काया ना कोई बुत्त, पंज तत ना कोई रखाईआ। आदि निरँजण कहे सुहाए रुत्त, जोती जोत डगमगाईआ। अबिनाशी करता कहे ना दाढ़ी ना मुच्छ, सीस लए ना कोई मुंडाईआ। श्री भगवान कहे ना बोले ना होवे चुप्प, सुन्न समाध ना कोए लगाईआ। पारब्रह्म कहे आदि जुगादि जुग चौकड़ी जाणे सब कुछ, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। शब्द कहे मैं धुर दा लाल, पिता पुरख अकाल इक्को नजरी आईआ। महल अटल उच्च जिस दी धर्मसाल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। दीपक जोती जगे बेमिसाल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सच सिँघासण बहे श्री भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल वखाईआ। श्री भगवान कहे मेरे शब्दी राजा, पूत सपूते दए वड्याईआ। खोल्हणहारा सच दरवाजा, थिर घर देवे माण वड्याईआ। सति सतिवादी मारे अवाजां, आपणा नाद सुणाईआ । गृह मन्दिर बहि के रचे काजा, सच करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द कहे मेरा बाप एक, सो पुरख निरँजण नज़री आईआ। जिस ने दिती धुर दी टेक, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई लेख, सिफ्ती सिफ्त ना कोई सालाहीआ। सति सरूप कीता विवेक, दर एका रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। सो पुरख निरँजण कहे मेरा सुत अपारा, अपरम्पर खेल कराईआ। थिर घर वसे धाम न्यारा, सचखण्ड अन्दर डेरा लाईआ। हुक्मी हुक्म बण वणजारा, धुर दी साची सेव कमाईआ। घड़न भंनणहार बण ठठयारा, साची घाड़त लए घड़ाईआ। निरगुण विच्चों निरगुण कर विचारा, सरगुण आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कराईआ । सुत कहे मेरा पिता अगम्म, जिस हथ्थ मेरी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, जीवण मरन ना कोई रखाईआ। ना पवण स्वासी लए दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। ना माटी ना कोई चम्म, दृष्ट इष्ट ना कोई वखाईआ। आदि जुगादि बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्नणहार इक हो जाईआ। करे वसेरा बिन छप्पर छन्न, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निरवैर हो के करे कम्म, हरि करनी करता कार कमाईआ। दयाल हो के गया मन्न, कृपाल देवे वड्याईआ। वस्त अमोलक दे के धन, मेरी झोली दिती भराईआ। मैं सदके जावां बल, बलधारी आपणा आप घोल घुंमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे मेरा सेवादार, शब्दी सुत इक वड्याईआ । जिस दा घर भरया भण्डार, दिती वड वड्याईआ। सच संदेसा दे एका वार, एकँकार रिहा जणाईआ। साची घाड़त कर त्यार, बेपरवाह दए समझाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुत शब्द कहे मेरे महिबूब, सीस जगदीश इक झुकाईआ। तेरा हुजरा वेख अरूज, महिफल तेरी नज़री आईआ। नित नवित्त सदा मौजूद, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर मशरूफ, घड़ी पल वंड ना कोई वंडाईआ। मैनूं आपणा दे हकूक, हक़ तेरी झोली पाईआ। रहमत कर दे तौफ़ीक, सच नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान हो सहाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। मेहर नज़र इक उठाउँदा ए। शब्दी सुत आप समझाउँदा ए। थिर घर तेरा दवारा इक वडयाउँदा ए। नर निरँकारा खुशी वखाउँदा ए। सच वरतारा आप वरताउँदा ए। बण वरतारा दर्द वंडाउँदा ए। दे सहारा हुक्म सुणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा अखाड़ा, धुर दा अगम्मी नाच नचाउँदा ए। त्रैगुण माया कर प्यारा, सच तेरी वंड वंडाउँदा ए। लख चुरासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा भेव आप जणाउँदा ए। शब्द सुत कहे मेरे गोपाल, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। ठाकर हो के होइउँ दयाल, आपणी दिती माण वड्याईआ। तेरी वस्त रखां संभाल, आपणे सच खज़ाने पाईआ। सेवा करां इक महान, बण सेवक रूप वटाईआ।
३७१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। सुत शब्द मेरे दुलारे, श्री भगवान आप जणाइंदा। ३७१
विष्न ब्रह्मा शिव तेरे पनिहारे, धुर दा हुक्म आप समझाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत तेरे अंग प्यारे, अंगीकार आप रखाइंदा।
१६ ज़िमी असमान गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे महल उसारे, चार दुआर ना कोए सुहाइंदा। रवि ससि चमकन तारे, जोती १६
नूर डगमगाइंदा। करे खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर धार वखाइंदा। धुर दी वस्त दे वरतारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सुत कहे मेरे पिता परमात्म, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। चरण प्रीती जोड़ना नातम, इक्को नाता देणा वखाईआ। तेरे खेल दा जाणा महातम, महिमा अकथ दे दृढ़ाईआ। तेरा खेल वेखां बातन, ज़ाहर ज़हूर तेरी सरनाईआ। तूं बणया सच्चा साथण, सगला संग निभाईआ। हउँ सेवक दासी दासन, बालक इक्को रूप वटाईआ। फिरां विच पृथ्मी अकाशन, गगन मण्डल फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण रचावां रासन, गोपी काहन नाच नचाईआ। नाद सुणावां पूजा पाठण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। धुर दा लेख आप जणाउँदा ए। शब्दी सुत वंड वंडाउँदा ए। विष्नूं तेरा रंग विखाउँदा ए। सच भण्डार झोली पाउँदा ए। ब्रह्मा पारब्रह्म ब्रह्म प्रगटाउँदा ए। शंकर हथ्थ त्रिशूल रखाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत जोड़ जुड़ाउँदा ए। लख चुरासी घाड़न घड़, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाउँदा ए। चारों

कुण्ट वेख नर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खेल खलाउँदा ए। धुर दा नाम निधान अगम्मा पढ़, साचा ढोला राग अलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाउँदा ए। प्रभ सिर मेरे हथ्थ टिकावेगा। मेहर नज़र उठावेगा। मार्ग आपणा सच दिसावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलावेगा। लख चुरासी खेल खलावेगा। जुग चौकड़ी राह पावेगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नेहकर्मी कर्म कमावेगा। निरगुण सरगुण आपणी धारों उठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, चरण कँवल प्रीती तोड़ निभावेगा। श्री भगवान सच सुणाउँदा ए। आदि पुरख आप अपणाउँदा ए। मध तेरी घाल रखाउँदा ए। अवल्लड़ी चाल आप चलाउँदा ए। जुग चौकड़ी खेल करे कमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाउँदा ए। साचा राह तेरा चलावांगा। निरगुण निरवैर सेव कमावांगा। हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक उठावांगा। निरगुण सरगुण दे के दान, पंज तत चोला आप हंढ्वावांगा। तेरा रूप जगत निशान, गुर अवतार नाउँ रखावांगा। धुर दा बोल इक जैकार, सृष्ट सबाई राग अलावांगा। कलम शाही बण लिखार, कातब हो के कलम चलावांगा। धुर संदेसा दे के वारो वार, लख चुरासी जीव जंत उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी प्रभ की कमावेगा। सच मेरी सेवा लावेगा। जुग चौकड़ी हुक्म सुणावेगा। लख चुरासी वेख वखावेगा। मण्डल रास सोभा पावेगा। पृथ्मी आकाश काज करावेगा। बण के धुर दा साथी, सगला संग निभावेगा। मैं मन्नां तेरी आखी, तूं रहमत इक कमावेगा। मंज़ल वेख दो जहानां घाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरा दर्शन पावांगा। श्री भगवान सच जणाउँदा ए। शब्द सुत तेरी सेवा इक लगाउँदा ए। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग, तेरी झोली पाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी धार पए उठ, नूर नुराना नूर चमकाउँदा ए। लोकमात सुहाए रुत्त, रुत रुतड़ी नाल महकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाउँदा ए। सुत शब्द कहे मैं साची सेव कमावांगा। निरगुण सरगुण रूप वटावांगा। अवतार तेई तेज चमकावांगा। भगत अठारां सेज हंढ्वावांगा। ईसा मूसा जलवा नूर दरसावांगा। मुहम्मद ज़ाहर ज़हूर नज़री आवांगा। नानक निरगुण चन्द चम्मकावांगा। गोबिन्द आपणे अंग लगावांगा। बण सूरा सरबँग, दहि दिशा वेख वखावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धारों लँघ, नित नवित्त पन्ध मुकावांगा। अन्तिम मंगां इक्को मंग, तेरे चरण ध्यान लगावांगा। साहिब स्वामी वसणा संग, दूजा संग ना कोई जणावांगा। निरवैर देणा अनन्द, अनन्द इक्को झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, दर

तेरे अलख जगावांगा। श्री भगवान सच दृढ़ाउँदा ए। पुरख अकाल आख सुणाउँदा ए। दीन दयाल भेव खलाउँदा ए। शब्द सुत तोहे वडयाउँदा ए। अबिनाशी अचुत संग वखाउँदा ए। उजल कर के तेरा मुख, लख चुरासी गीत राग अलाउँदा ए। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरे खेल वेखे चुप्प, आपणा हुक्म ना कोई वरताउँदा ए। सद वस अन्धेरे घुप्प, तेरा नूरी जोत रुशनाउँदा ए। कलयुग अन्तिम निरवैर निराकार निरँकार अछल अछल्ल जाए उठ, सोच समझ ना कोए रखाउँदा ए। धुर दा स्वामी जाए तुठ, मेहर नज़र इक टिकाउँदा ए। मेल मिला के साचे सुत, शब्दी तेरा घर वसाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाउँदा ए। सुत शब्द कहे प्रभ कलयुग अन्त दया कमावेगा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान विच समावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी डंक वजावेगा। दीन मज़्ब झुला निशान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हुक्म वरतावेगा। ज़ात पात कर प्रधान, ऊँच नीच वंड वंडावेगा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल नाल ज़बान, शरअ शरीअत खेल खिलावेगा। सिदक सबूरी दस्स ईमान, धर्म धर्मातम आप लगावेगा। अठसठ तीर्थ खोलू दुकान, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती फेरा पावेगा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ हो प्रधान, गुरूदवारे गुर गुर डंक वजावेगा। चारे कुण्ट खेल महान, चारे जुग रंग रंगावेगा। अन्तिम बण आप बलवान, लोकमात फेरी पावेगा। लै के धुर दा सच निशान, दो जहान आप झुलावेगा। जिस दे अग्गे सीस सर्ब निवान, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख ना कोई उठावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर प्रणाम, सजदा सब नूं इक करावेगा। दो जहानां बण के हुक्मरान, सच फ़रमाणा इक प्रगटावेगा। लेखा पिछला चुक्के सर्ब जहान, जीवण जुगत इक दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करनी खेल साचे हरि, धुर दी कार कमावेगा। सुत शब्द जिस वेले खेल रचावांगा। अबिनाशी अचुत हो के वेस वटावांगा। सचखण्ड दवारयों उठ, लोकमात वेख वखावांगा। उजल कर के तेरा मुख, सीस छत्र इक झुलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद तेरा संग रखावांगा। प्रभ मेरा संग निभाएगा। निरवैर हो के अंग लगाएगा। दो जहान मृदंग वजाएगा। ज़िमी असमान लँघ वेख वखाएगा। चौदां लोक चौदां तबक दे कर कंड, सनमुख मेरे इक्को नज़री आएगा। चौदां विद्या कर के भंग, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाएगा। जोत अगम्मी चाढ़ के चन्द, सूरज चन्द दोवें शरमावेगा। बण के आप सूरा सरबँग, सर्ब कल आपणा खेल वखावेगा। सच सज्जण माणे अनन्द, पुरी अनन्द सोभा पावेगा। लेखे ला के मेरी मंग, सहिंसा पिछला रोग चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, कवण वेला वक्त सुहावेगा। कलयुग

अन्तिम निरगुण हो के आवांगा। जोती जामा वेस वटावांगा। निहकलंक नाउँ रखावांगा। मात पिता ना कोई बणावांगा। वड्डा निक्का वेस वटावांगा। नेत्र नैण किसे ना दिसा, रूप रंग ना कोई वखावांगा। जुग चौकड़ी जो सांभ रख्या हिस्सा, अन्तिम आपणे नाल लै के आवांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा गाया किस्सा, सो आ के तेरी किस्मत आप बदलावांगा। पुरख अकाल कदी ना देवे पिच्छा, करवट लै सनमुख नज़री आवांगा। लख चुरासी विच्चों तेरे सज्जणां करां रिच्छा, जन भगती रूप वटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठावांगा। की साहिब सतिगुर परम पुरख जद आओगे। लेखा लेख वेख धुर, धुर दी कार कमाओगे। शब्द अनाद मेरी सुर, ताल अनादी की जणाओगे। जुग चौकड़ी जिहड़ी रह गई थुड़, किस बिध हरि जू पूर कराओगे। मैं सच प्रीती जावां जुड़, जोड़ी आपणे नाल रखाओगे। मेरी लग्गी निभे तोड़, अद्धविचकार ना फेर तुड़ाओगे। मैनूं सदा तेरी लोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, मेरी आसा पूर वखाओगे। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। निरगुण निरवैर आख सुणाउँदा ए। शब्दी सुत तेरी आसा पूर कराउँदा ए। भरवासा इक्को इक रखाउँदा ए। पृथ्मी अकाशा खोज खुजाउँदा ए। पवण स्वासा लेखे पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार हो के आउँदा ए। निराकार हो के आवांगा। साकार वेख वखावांगा। दातार नाम धरावांगा। सच प्यार इक कमावांगा। भगत भगवान पन्ध मुकावांगा। आत्म दे के ब्रह्म ज्ञान, साची विद्या इक पढ़ावांगा। धर्म झुला के सच निशान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को रंग रंगावांगा। ऊँचां नीचां राउ रंकां दे के माण, सिर सब दे हथ्थ टिकावांगा। कूड़ी क्रिया मेट शैतान, शरअ इक्को इक वडयावांगा। सृष्ट सबाई इक ईमान, धर्म इक्को इक दृढ़ावांगा। लख चुरासी सीस इक झुकान, पुरख अकाल इक्को नज़री आवांगा। तेरा रख के धुर दा माण, सीस ताज तेरे टिकावांगा। मेरी करे ना कोई पहचान, तेरा रूप इक दरसावांगा। शब्दी सुत कहे तूं साहिब मेरा मेहरवान, मैं तेरे चरण ध्यान लगावांगा। अबिनाशी करता कहे तुध बिन मेरा चले ना कोई काम, सच तेरा माण वधावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखावांगा। शब्द सुत खुशी मनाउँदा ए। श्री भगवान आख सुणाउँदा ए। तुध बिन नज़र कोई ना आउँदा ए। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउँदा ए। सच दवारा इक सुहाउँदा है। जिस गृह दुआर गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाउँदा है। सद भरे रहिण भण्डार, नाम निधान अतोट अतुट वरताउँदा ए। मैं वेख्या धुर दा काहन, अबिनाशी करता इक सोभा पाउँदा ए। कोटन कोटि गोपीआं करन प्रणाम, गोपी रूप गुर अवतार पीर पैगम्बर भगती धार इक वखाउँदा ए। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, बेनज़ीर नर

नरायण हो के आउँदा ए। गुरमुख साचे कर पहचान, सन्त सुहेले जोड़ जुड़ाउँदा ए। भगतां दे के धुर फ़रमाण, धुर दी धार रमज़ लगाउँदा ए। काया बंक खोल्ह दुकान, सौदा एका नाम जणौदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाउँदा ए। शब्द सुत कहे मेरे पुरख अकाल, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। श्री भगवान कहे मेरे लाल, तुध बिन मेरी ना कोई चतुराईआ। दोहां मिल के खेल बणे जहान, लख चुरासी रचन रचाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा झुल्ले इक निशान, निशाना धुर दा नज़री आईआ। तेरी भिच्छया आत्म दान, परमात्म सच सच्च वरताईआ। तेरी सिख्या होवे प्रधान, साचा ढोला राग अल्हाईआ। दोहां मिल के बणे विधान, साची बणत आप बणाईआ। पिता पूत दोवें मिल के वसण इक मकान, घर घर विच डेरा लाईआ। अबिनाशी करता कहे सुण सुत निधान, वेख मेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मिल्या आण, विछोड़ा दित्ता चुकाईआ। सुत दुलारा कर प्रणाम, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभू तेरा वेख निशान, मोहे वज्जी इक वधाईआ। श्री भगवान कहे मेरा नाम, नाउँ निरँकारा आख सुणाईआ। शब्द कहे एह तेरा निशान, निशाना भगत नज़री आईआ। भगत कहे मेरा भगवान, मेरे अन्दर डेरा लाईआ। भगवान कहे शब्द धुन्कान, घट घट राग सुणाईआ। राग कहे मैं बाल निधान, समझ कोए ना आईआ। शाह पातशाह पुरख अकाल कहे मैं धुर दा हुक्मरान, जो आपणा हुक्म बण के हाकम हक़ हक़ हक़ पूर कराईआ।

* १५ माघ २०२० बिक्रमी हज़ारा सिँघ प्यारा सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर *

शब्द सुत तेरा सच्चा नाता, नर हरि नरायण आप बंधाइंदा। जन भगत बणा धुर दा साथा, सगला जोड़ जुड़ाइंदा। नाम जपया अगम्मा जापा, साची सिख्या इक समझाइंदा। सरोवर वखा इक्को ताटा, तीर्थ इक्को इक वडियाइंदा। निरगुण सरगुण खेल खेल तमाशा, हरि करता कार कमाइंदा। तेरी पूरी करे आत्म आसा, तृष्ना पिछली वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी जो देंदा रिहा भरवासा, धीरज सति सति रखाइंदा। सेवा करदा रिहा बण बण राखा, दो जहानां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। सुत कहे प्रभू बलवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं सुण तेरा फ़रमाण, घर घर खुशी मनाईआ। जन भगतां वेखां आण, तेरा इक्को नैण खुल्हाईआ। लख चुरासी विच्चों पहचान, आप आपणे नाल मिलाईआ। दे के तेरा धुर दा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सुण सुत सच नगीने, नग़मा आपणा नाम जणाईआ। तेरा लेखा चुक्के मक्के मदीने, हुजरा जगत ना कोई वड्याईआ। लहिणा मुक्के मुहम्मदी दीने, ईस-

उल-सलाम, ना कोई जणाईआ। वस्त अमोलक आपणी छीने, धुर दा हुक्म इक फ़रमाईआ। पाणी खण्डे ना किसे पीणे, अमृत धार ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत दए समझाईआ। शब्दी सुत कहे निरँकार, सब तेरी वड वड्याईआ। अन्त पंज तत तेरी धार, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। मैं बण के सेवादार, चाकर रूप वटाईआ। सृष्ट सबाई कर के ख़बरदार, तेरा राह जणाईआ। चारे खाणी दे हुलार, चारे बाणी राग अलाईआ। चारों कुण्ट दस्स प्यार, मुहब्बत इक्को इक समझाईआ। सोहबत देवे साचा यार, हरि दातार नूर अलाहीआ। रहमत करे अपर अपार, रहमान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। शब्द कहे सुण मेरे बाप, पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा दस्सदा रिहा जाप, सिफ्ती ढोला राग अलाईआ। आप बैठा रिहा बण के पाक, पतित सके ना कोई कराईआ। नव नौ चार खोल् के ताक, भेव अभेद इक दरसाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बर अन्दर वड़ दस्सदा रिहा भविक्ख्त वाक, बोध अगाध जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा अन्दर दित्ता आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे पुरख समरथ, बेपरवाह फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी जिस दे हथ्थ, लख चुरासी खेल रचाईआ। सब दी झोली पाए हक़, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। कूड़ी क्रिया देवे मथ्थ, माया ममता मोह मिटाईआ। इक्को प्रगटावे धुर दा सच्च, सच नाम रूप समझाईआ। भाग लगावे काया कच्च, काची माटी सोभा पाईआ। अमृत देवे आपणा रस, रस रसीआ इक अख्वाईआ। दो जहानां मार्ग दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। पर्दा लाह तत अट्ठ, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। सन्त सुहेले कर प्रगट, भगत भगवान लए उपजाईआ। सच दवारा खोल् हट्ट, वस्त इक्को नाम वरताईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी चन्न चमकाईआ। जिस नूं ईसा मूसा कहि के गया बाप, सो बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस नूं नानक गोबिन्द पुरख अकाल गए आख, सो आखर आपणी कार कमाईआ। सुत दुलारा कहे प्रभ दर्शन देवे साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। सनमुख हो के करे बात, जन भगतां ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सुत शब्द तेरी सेवा परवान, जुग चौकड़ी मात कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर सवाधान, पुरी लोअ रिहा हिलाईआ। गुर अवतारां दे दे दान, पीर पैगम्बरां झोली आप भराईआ। रसना जिह्वा बोल ज़बान, बत्ती दन्द जगत सलाहीआ। कलमा नबी रसूल कलाम, कायनात इक जणाईआ। लेखा जाण ज़िमी असमान, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, रागां नादां विच अलाईआ। काग़ज़ कलम शाही कर परवान, कातब हो के लेख लिखाईआ। वेद पुराणा खेल महान, शास्त्र सिमरत जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द दए वड्याईआ। शब्द कहे मैं तेरे जोगा, सद तेरी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा रिहा होका, चारों कुण्ट अवाज़ सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी लिखदा गया पोथा, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ लभ्भ जन भगतां मार्ग दस्सदा गया सौखा, धुर दा लेखा इक जणाईआ। मानस जन्म प्रभ मिलण दा सच्चा मौका, मुकम्मल धुर दा हाल सुणाईआ। किसे नाल ना कीता धोखा, धुर दी करी जगत पढ़ाईआ। इक्को पुरख अकाल तेरी दस्स के गया ओटा, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। सच प्रकाश कर के नूरी जोता, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जे लभ्भो ते सब तों छोटा, वेखो नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। पुरख अकाल कहे मेरे सुत दुलारे, तोहे देवां इक वड्याईआ। तेरे नाम वजन सच नगारे, नाद धुन रहे जस गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे सहारे, सारे बैठे ध्यान लगाईआ। उच्ची कूक कूक सर्ब पुकारे, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। करे खेल प्रभ न्यारे, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सुत शब्द कहे सब तेरी कार, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं चौकड़ी जुग सेवादार, सेवक आपणा रूप वटाईआ। कलयुग अन्त इक्को मंगां मंग अपार, दोए जोड़ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी झोली दे भराईआ। सुत कहे मैं मंगां मंग निक्की, वड्डी आस ना कोई रखाईआ। गोबिन्द शब्दी धार बणा के गया सिक्खी, सिक्खी सिख्या समझ सकी ना राईआ। जिस दी धार धुर तों तिक्खी, खण्डे खड़ग सार किसे ना पाईआ। जणा रूप इक्को इकी, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। मेरे कोल पिछली चिट्ठी, धुर दा लेखा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। चिट्ठी कहे वेख लिख्त, शब्द सुत प्रभ साचे रिहा जणाईआ। जिस दे उते वाक भविक्ख्त, जिस दा भेव किसे ना आईआ। किसे हथ्थ ना आए जीव सृष्ट, लख चुरासी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा वेख वखाईआ। श्री भगवान चिट्ठी खोल्ह, बिन अक्खरां पढ़ सुणाईआ। इस दे उते गोबिन्द बोल, बिन रसना जिह्वा गाईआ। मंगे मंग इक अनमोल, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। सदा वसणा गुरमुखां कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। मेरे नाल ना मारीं रोल, रौला करें जगत लोकाईआ। दे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। मेरा तेरे नाल कौल, कीता इकरार भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दे चुकाईआ। श्री भगवान पढ़दा पाती, पत्रका आपणे हथ्थ उठाईआ। जिस ने सुनेहड़ा

दित्ता माछूवाड़े अन्धेरी राती, इक अकल्ला राग सुणाईआ। साहिब मेरा कमलापाती, बेपरवाह नज़री आईआ। उठ वेख मार झाती, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जे कोई पिच्छे रह गई बाकी, मैनूं सच दे समझाईआ। मैं छड्ड के अस्व राकी, शस्त्र वस्त्र तन लुहाईआ। सूलां सत्थर सेज इक पहचानी, सिँघासण आसण रूप वटाईआ। मंज़ल वेख तेरी घाटी, घाटा तेरे कोलों पूर कराईआ। श्री भगवान निरगुण वेख कहे शाबाशी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द तेरा बणया ना कोई जमाइती, पट्टी नज़र किसे ना आईआ। तूं मन्नी मेरी आखी, आखर आपणे रंग रंगाईआ। श्री भगवान बणे सच्चा साकी, सच प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे मैं सुत दुलारा, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। मेरा रूप तेरा अधारा, उदर इक्को डेरा लाईआ। महल अटल ना कोई मुनारा, छप्पर छन्न ना कोई जणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारा, चार दवारी बंद ना कोई कराईआ। निरगुण रूप निरवैर तेरी धारा, निरँकार तेरे विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा प्यारा, सच प्रीती इक लगाईआ। तूं मैनूं दित्ता सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तेरे नाम सच भण्डारा, लोकमात वरताईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख गुरसिख आप उठाला, फड़ बाहों गले लगाईआ। साचा मन्त्र इक सिखाला, धुर दी कीती इक पढ़ाईआ। अन्तर आत्म परमात्म पा माला, मन का मणका आप भवाईआ। परम पुरख साहिब सतिगुर दीन दयाला, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। गुरमुखो गुरसिखो मैनूं तुहाडुा भेज्या रखवाला, राखी करां हर घट थाईंआ। सब दा मालक इक्को पुरख अकाला, अकल कलधारी हरि अख्वाईआ। जिस दी सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धुर दरबारे डेरा लाईआ। मुकामे हक़ हो उजाला, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर अलख स्वामी, अगोचर तेरी इक सरनाईआ। निरवैर पुरख सदा नेहकामी, नेहकर्मी कर्म कमाईआ। बोध अगाध अन्तरजामी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। शब्दी राग तेरी धुर दी बाणी, सच संदेसा आप सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गा गा गए कहाणी, कहावत वेखे जगत लोकाईआ। बिन तेरी किरपा तेरी मिले ना सच निशानी, दर सोभा कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम मैनूं वेख होई हैरानी, प्रभ की की खेल दरसाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हुंदयां अन्दर सब दे भरी बेईमानी, मंद वासना नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया जगत शैतानी, शरअ छुरी करद उठाईआ। मुश्किल किसे हल्ल ना होवे आसानी, पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। दुनियां वेख तेरी फानी, तेरे अग्गे इक्को अर्ज़ सुणाईआ। कर किरपा आप मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। एहनां बख्श आलमे जावदानी, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे

माण वड्याईआ। शब्द सुत कहे प्रभ ठाकर तुठ, दीन दयाल दया कमाईआ। सन्त सुहेले वेख आपणे सुत, जो बैठे ध्यान लगाईआ। बिन तेरी प्रीती कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां आ के पुछ, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दे माण वड्याईआ। शब्द सुत तेरी सुणी पुकार, हरि करता आप जणाईआ। मैं हो के आया त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। लख चुरासी वेख जगत संसार, जीव जंत फोल फुलाईआ। जगत जन्म दा वेख प्यार, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। दर दर घर घर झाती रिहा मार, दिवस रैण वेख वखाईआ। जिन्हां तेरे नाल प्यार, तिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। स्वच्छ सरूप दे दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। चरण कँवल आप बहाल, लेखा पिछला पूर कराईआ। जिस दा दे ना सके कोई अहिवाल, हालत सके ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे लाल लए उठाईआ। शब्द सुत कहे प्रभ लाल ओह चंगे, चंगी तरां जणाईआ। चरण प्रीती जो तेरी रंगे, रंग इक्को इक वखाईआ। जगत जहान दिसण भुक्खे नंगे, दौलत तेरा नाम ख़ज़ाना घर बैठे अतुट टिकाईआ। उत्तम श्रेष्ट सब तों बंदे, बंदगी विच जणाईआ। नेरन नेरे सीस चरणां उते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लहिणा सब दा वेख वखाईआ। सुत शब्द मैं वेखे लाल, हरिजन हरि हरि नज़री आईआ। जुग चौकड़ी जो घालण आए घाल, तिन्हां कीती घाल लेखे लाईआ। तेरा पूरा होए सवाल, साहिब सतिगुर पूर कराईआ। आपणी गोदी लए उठाल, जन भगत रूप वटाईआ। फल लगावे आपणे डाल, पत डाली मात महकाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणी ख़ुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा पूर कराईआ। शब्द सुत कहे प्रभ मेरा उजल मुख, तेरे नाल मिली वड्याईआ। भगत भगवान गोदी चुक, घर ख़ुशीआं राग वखाईआ। पिता दी गोदी बहे पुत, दुःख दर्द रहे ना राईआ। तूं उहनां कोलों पुच्छ, जो तेरे दर ते सीस निवाईआ। नीवां हो के वेख झुक, सचखण्ड निवासी दूर दुराडे नेड़े आईआ। मैं लख चुरासी विच्चों भगत लभ्भे इक्को मुठ, जो तेरी झोली पाईआ। लख चुरासी गई औंत, जगत निशान ना कोई रखाईआ। मैं तेरे तेरी झोली दित्ते सौंप, आपणे ख़ाली हथ्थ रखाईआ। एहो प्रभ मेरी साची पहुंच, तेरे तेरे नाल मिलाईआ। श्री भगवान कहे सुत शब्द तेरी सेवा बहुत, साहिब सतिगुर भाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी सारे करदे रहे खोज, सो ख़ालक मिल्या बेपरवाहीआ। भगत भगवान दोवें रल के मानण मौज, मुफ़लस रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा देवे थाउँ थाईंआ। सुत कहे मोहे चढ़या चाओ, चाउ घनेरा नज़री आईआ। भगत भगवान मिले आ, आह

भर ना कोए सुणाईआ। बण विचोला प्रभू मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जुग चौकड़ी जो मैं देंदा रिहा सलाह, श्री भगवान मिल्या इक रघुराईआ। सो कलयुग अन्तिम प्रभ पूरी आसा कीती आ, निरासा रूप ना कोए वखाईआ। सन्त सुहेले इकट्ठे कीते धुर दे थाँ, चरण कँवल दिती सरनाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, ऊँचां नीचां लए उठाईआ। सच दृढ़ा के एका नाँ, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। एथे ओथे बण के पिता माँ, साची गोदी रिहा सुहाईआ। मेहरवान हो के देवे ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोई तपाईआ। भगत भगवान मिल के इक दूजे नूं करन हां, वायदा सच सच्च पकाईआ। विछोड़ा होवे ना दो जहां नाता छुट्टे ना बेपरवाहीआ। चल के वसीए ओस गराँ, जिस घर दी बणत ना कोई बणाईआ। श्री भगवान होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सेज सुहञ्जणी उते ल्या बहा, पलँघ रंगीला बिन पावा चूल नज़री आईआ। सच दवारे देवे माण, श्री भगवान दया कमाईआ । जिस वेले सचखण्ड दवारे झुलदा वेखीए धुर निशान, जिस उपर लेखा लिख्या सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जै कार अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, किरपा करे आप आण, बेपहचान आपणा रूप वटाईआ।

* १६ माघ २०२० बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे घर पिण्ड नौशैहरा ज़िला गुरदास पुर *

सो पुरख शाह सुल्तान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, योद्धा सूरबीर नाउँ प्रगटाईआ । एकँकारा खेल करे महान, महिमा अकथ ना कोए सुणाईआ। आदि निरँजण जोती नूर चमके महान, दूजा नूर ना कोई वखाईआ। अबिनाशी करता वड मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान देवे दान, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। पारब्रह्म हो प्रधान, सच संदेसा हुक्म सुणाईआ। सचखण्ड दवारे सुहाए मकान, छप्पर छन्न ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी कार कमाईआ। आदि पुरख सचखण्ड निवासी, बेअन्त बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर जोत प्रकाशी, अनभव आपणी खेल रचाईआ। सच दवारे पावे रासी, मण्डल आपणे दए वड्याईआ। निरगुण निराकार बण के साथी, सच्चा संग निभाईआ। नाउँ रख पुरख समराथी, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। परवरदिगार बेऐब नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक सोभा पाईआ। तौफ़ीक खुदाए इक जैकार, नाअरा हक़ हक़ सुणाईआ। खेले खेल वड महान, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। प्रगट हो वड महिबान, बीदो आपणी धार चलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कर के आदि, शब्दी धार सुत प्रगटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे के दाद, साचा मार्ग इक समझाइंदा। बोध अगाध वजा के नाद, शब्द राग धुन उपजाइंदा। निरगुण निरवैर बणा के सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। सच दवारे खोल्ह के ताक, पर्दा उहला आप उठाइंदा। सच संदेसा आपे आख, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी हरि करतार, करता पुरख आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर के आप ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। साची सेवा अगम्म अपार, अलख अगोचर इक लगाईआ। त्रैगुण माया वस्त भण्डार, रजो तमो सतो आप वरताईआ। पंज तत कर उज्यार, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश बणत बणाईआ। मण्डल मण्डप महल अटल उसार, लोआं पुरीआं आपणा रंग वखाईआ। रवि ससि कर उज्यार, सूरज चन्न दए रुशनाईआ। हुक्मे अन्दर खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। पुरख समरथ निराकार, निरँकार इक अख्वाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रगट, धुर दा हुक्म इक सुणाइंदा। सच दुआरा खोल्ह हट्ट, त्रै पंज वस्त आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण खेल अलख, अलख अगोचर आप कराइंदा। लख चुरासी चलाउणा रथ, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी श्री भगवान, हरि करता आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दरवेश मंगण दान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं साहिब सुल्तान वड हुक्मरान, हउ बालक रूप वटाईआ। लख चुरासी दे दान, झोली इक्को वार भराईआ। चारे खाणी कर परवान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। चारे बाणी दे ज्ञान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। चारे जुग विच जहान, जुग चौकड़ी रंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान दया कमाईआ। मेहरवान हो ठाकर स्वामी, पतिपरमेश्वर दया कमाइंदा। आदि पुरख अपरम्पर सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, अणजाणत आपणा राग अल्लाइंदा। शब्द अगम्म बोध अगाध निरबाण पद सुणाए बाणी, अक्खर वक्खर आपणी धार प्रगटाइंदा। दो जहान अकथ कहाणी, ब्रह्मण्ड खण्ड राग अल्लाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाणी, सच संदेसा इक सुणाइंदा। शब्द गुरू गुरु गुर शब्द सर्ब जीआं प्राणी, आत्म परमात्म भेव अभेदा आप खुल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह पारब्रह्म ब्रह्म, लख चुरासी दए समझाईआ। नेहकर्मी जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड जगत झोली पाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल वरन बरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाईआ। सृष्ट सबाई बेपरवाही सब नूं दस्से धुर दी सरन, पुरख

३८१ १६

अकाल इक्को नज़री आइंदा। जिस दवारे लेखा चुक्के मरन डरन, जन्म कर्म कोए रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भरम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आदि आदि सुणाईआ। आदि पुरख सुणाया सच संदेसा, लख चुरासी जीव जंत पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा करे हमेशा, बण सेवक सेव कमाईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान जुग चौकड़ी नर नरेशा, शाह पातशाह इक नज़री आईआ। नित नवित्त रहे हमेशा, ना मरे ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात घल्ले दे संदेसा, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेले खेडा, ख़ालक ख़लक रूप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आदि आदि आपणा राह चलाईआ। आदि पुरख दस्से राह, रहिबर इक्को इक अख्वाइंदा। दो जहानां बण मलाह, निरगुण सरगुण बेड़ा आप तराइंदा। शब्द सरूपी सच सलाह, सिख्या इक्को इक समझाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता जुड़ा, दर साचा इक सुहाइंदा। सच सेज सुहञ्जणी सोभा पा, आत्म अन्तर डेरा लाइंदा। नाद धुन मृदंग इक वजा, अनहद रागी नाद सुणाइंदा। अमृत जाम मधु प्याला इक प्या, निझर झिरना रस झिराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या धुर दा गीत, सो पुरख निरँजण आपणा आप जणाईआ। सदा सदा सद रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। हर घट वसे ऊँच नीच, राउ रंक सोभा पाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, शाह सुल्ताना पर्दा उहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। पुरख अकाल बेपरवाह, बेऐब नाम खुदाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार सेवा ला, पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ। शब्दी ढोला धुर दा गा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान करे पढ़ाईआ। अञ्जील कुराना मसला हक़ सुणा, तीस बतीस देवणहार वड्याईआ। खाणी बाणी रंग रंगा, धुर दा पाणी अमृत जाम प्याईआ। शब्द हाणी सतिगुर सच्चा इक समझा, भरम भुलेखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणी खेल वखाईआ। साची खेल करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी धुर दा मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाइंदा। आत्म परमात्म नाता जोड़ नाल कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, जीव जंत आप पढ़ाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा । मेल मिलावा साचे सन्त, भगत भगवान वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक वखाइंदा। साची सिख्या भगत भगवान, जुग चौकड़ी आप जणाईआ। चार वरन एह ज्ञान, धुर दी करे सति पढ़ाईआ । बरन अठारां इक्को दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश

३८२
१६

इक मकान, काया मन्दिर दए वखाईआ । हर घट अन्दर वसे श्री भगवान, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म जिस ने दित्ता दान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बूझ बुझाईआ। जन भगत बुझाए साची टेक, धुर मस्तक लेख लिखाईआ। काया बुद्धि कर बबेक, धुर दी धार समझाईआ। सच प्रीती धुर दी टेक, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण जुग जुग धारे भेख, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। जन भगतां करे हेत, मित्र प्यारा फेरा पाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, निज नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां लए उठाईआ। जन भगत उठाए आप प्रभ, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए झब्ब, पर्दा उहला आप चुकाइंदा। नौ दवारे पार हद्द, दसवें आपणा रंग रंगाइंदा। शब्द अगम्म वजाए नद, अनहद रागी राग सुणाइंदा। बिन मक्के काअब्यो कराए हज्ज, काया हुजरा इक सुहाइंदा। जोत दीपक जगे लट लट, दीवा बाती नज़र कोए ना आइंदा। करे खेल पुरख समरथ, घर घर अन्दर वेख वखाइंदा। आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, निज नेत्र अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे रंग रंगाइंदा । जन भगतां मित्र होए प्रभ ठाकर, साहिब सतिगुर वड वड्याईआ। भेत खुल्हाए काया गागर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ । लेखा जाणे संसार सागर, पर्दा उहला आप चुकाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। जन भगतां माण देवे प्रभ मात, धरत धवल मिले वड्याईआ। जुग चौकड़ी पत लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण प्रीती बन्न्हे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा देणा चुके कूड़े सज्जण साक, जूठा झूठा संग तुड़ाईआ। बंद किवाड़ी खोल्हे ताक, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जन भगतां खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र दया कमाइंदा। लेखा चुके वरन बरन, ज़ात पात ना कोए वडियाइंदा। किरपा करे करनी करन, हरि करता खेल वखाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान इक्को ढोला पढ़न, दूजा राग ना कोए अल्हाइंदा। नित नवित्त निरगुण सरगुण दर्शन करन, दीद ईद चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगतां वेखे वेखणहारा, जीव जंत नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यारा, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। भगतां अन्दर भगती भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताइंदा। इष्ट दृष्ट दए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा मूल चुकाइंदा। साचा लहिणा चुक्के जगत, श्री भगवान दए वड्याईआ। सो सन्त सुहेला सच्चा भगत, जिस मिले बेपरवाहीआ ।

लेखे लग्गे बूँद रक्त, पंज तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को अक्खर रिहा पढ़ाईआ। जन भगत पढ़ना इक्को अक्खर, सो सतिगर आप पढ़ाईआ। जिस दा लेखा सब तों वक्खर, लिख सके ना कलम छाहीआ। जिस नूं उकरे ना कोई पत्थर, घाड़त घड़त ना कोए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को बूझ बुझाईआ। जन भगत पढ़न अक्खर, निराकार नज़र कोए ना आईआ। जिस विच्चों नज़री आए गिरधार गिर, मुकन्द मनोहर बेपरवाहीआ। जिस दी धार आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना जाए फिर, गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे इक पढ़ाईआ। जन भगत पढ़न अक्खर इकउँकार, अकल कल धारी आप जणाईआ। जिस विच सर्ब पसार, पसर पसारी दए वखाईआ। जिस दा लेखा कोई ना सके विचार, सोच समझ ना कोए जणाईआ। जिस दा आदि अन्त ना पारावार, बेअन्त बेपरवाहीआ। सो साहिब सतिगुर भगतां देवे धुर दी दात, अमोलक इक्को वार झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द दए चमकाईआ। चरण प्रीती बन्न्ह के नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। प्रभ मिल के जन भगत गौण धुर दी गाथ, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। भगत कहे मेरा भगवन्त, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। भगवान कहे मेरा सच्चा सन्त, जो मेरी महिमा रिहा गाईआ। भगत कहे प्रभ मेरा कन्त, जिस सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। भगवान कहे मेरी महिमा अगणत, समझ सके ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग भगतां दए वड्याईआ। भगत कहे मैं सेवक तेरा, प्रभू तेरा नाम ध्याईआ । भगवान कहे तूं मेरा चेरा, बिन चेले गुरू मिले ना किसे वड्याईआ। भगत कहे प्रभ ठाकर तूं मेरा, बद्धा बेड़ा नईआ आपणे नाम चढ़ाईआ। भगवान कहे मेरा भगतां अन्दर डेरा, बिन भगतां घर नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवान दोवें इक दूजे दा झल ना सकण विछोड़ा, विछड़ जाए सर्ब लोकाईआ। नाता जुड़या गुरुदुआरा, मोह मुहब्बत इक जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैज रखाईआ। भगत कहे मेरा भगवान उच्चा, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत सुचा, जो लख चुरासी विच्चों मेरा नाम ध्याइंदा। भगत कहे मोहे भगवान ओटा, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। भगवान कहे मैं भगतां जोगा, बिन भगतां मेरी कीमत कोए ना पाइंदा। भगत कहे मेरा भगवान मोहे शब्दी लाए चोटां, तन नगारा रबाब वजाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत सन्त दुलारा छोटा, जो मेरी गोद सुहाइंदा । दोहां मिल के प्रकाश होवे इक्को निर्मल जोता, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि भगत आप वडियाइंदा। जन भगत कहे मेरा सच श्लोक, सोहँ ढोला प्रभ जणाईआ। भगवान कहे मेरा भगत उत्तम उत्तम विच्चों चौदां लोक, चौदां तबक नैण शरमाईआ। भगत कहे मेरा भगवान मैनूं देवे सोच, मेरी बुद्धि कम्म किसे ना आईआ। भगवान कहे मेरा भगत चौदां विद्या समझे फोक, बिन हरि नामे प्रेम ना किसे लगाईआ। भगत कहे भगवान मेरा काया बंक सुहाया कोट, साढे तिन्न हथ्थ दिती माण वड्याईआ। भगवान कहे बिन भगतां मेरी किसे घर ना जगे जोत, दीपक नज़र कोए ना आईआ। दोवें मिल के प्रेम प्रीती अन्दर होवण ख़ामोश, ऊँची कूक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचा पूर आप अख्वाइंदा।

३८५ १६

* १६ माघ २०२० बिक्रमी *

बल कहे मेरे भगवान, अछल अछल्ल तेरी वड्याईआ। बलख दवारयों एस भूमका पहुँचया आण, घड़ी पल साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। इकावन राजदूत कर परवान, सच्चा रंग रंगाईआ। छप्पर छन्न ना कोई मकान, जगत सराए ना कोए वड्याईआ। धरनी किहा दानी मोहे दे दान, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरा मेला संग श्री भगवान, रहमत सर्ब कमाईआ। बल किहा मैं वेख्या मार ध्यान, प्रभ चरण कँवल चित लाईआ। जिस दित्ता मोहे ज्ञान, आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। बल दोए जोड़ कर अरदास, हरि ठाकर स्वामी सच जणाइंदा। मेहरवान पुरख अबिनाश, तेरी ओट तकाइंदा। निरवैर पुरख दे साथ, साचा संग निभाइंदा। वेख धरनी धरत की कुछ रही आख, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। एहदी पूरी कर आस, आसावंद तूही इक्को नज़री आइंदा। श्री भगवान कहे शाबाश, शहिनशाह सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। तूं अन्तर वेख मार झात, झाकी धुर दी आप जणाइंदा। जिन्ना चिर एह बल धरती तेरे पास, मैं दान देण कुछ ना आईआ। एसे कारण करूँ खेल तमाश, अछल अछल्ल रूप वटाईआ। तेरे कोलों पहलों धरनी मंगां ख़ाक, ढईआ आपणी झोली पाइंदा। फिर अगली दस्सां बात, सच सुनेहड़ा इक दृढ़ाइंदा। तेरा बणावां साथ, सगला संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलावां राथ, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। तेरा नूर कर प्रगट, लोकमात जोत जगाइंदा। चरण कँवल जोड़ नात, नाता बिधाता खेल वखाइंदा। किरपा कर सचखण्ड करा निवास, सच दवारा इक वखाइंदा। पिछली फेर कराए याद, याददासत आप रखाइंदा। तेरा कोई नज़र ना आवे राज पाट, हिस्सा

वंड ना कोए वंडाइंदा। उस वेले चरण कँवल लग्ग आखीं कमलापात, पारब्रह्म तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। बल हो बलहीण, प्रभ चरण सीस निवाईआ। तेरा खेल साहिब प्रबीन, हउँ समझ सका ना राईआ। मैं ठाकर तेरे अधीन, निउँ निउँ लागां पाईआ। दर दरवेश बणां मस्कीन, ख़ाक तेरी झोली रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेरी आसा धरनी नाल मिलाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दीन दयाल दया कमाइंदा। प्रभ दा खेल खेल महान, अन्त कोई ना पाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। लख चुरासी विच्चों तैनूं देवे दान, आत्म परमात्म पर्दा लाहइंदा। तेरा नाउँ रख सिंघ गुरदयाल, ताल आपणा नाउँ वजाइंदा। पंज तत काया चोली तेरी संभाल, धुर ख़ज़ाने आप टिकाइंदा। फेर पुच्छे दस्स मेरे लाल, लेखा बाकी कवण चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। बल कहे मेरे स्वामी, साहिब तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, घट घट रिहा समाईआ। बोध अगाध तेरी कहाणी, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। सच दस्स आपणी इक निशानी, जिस दर तेरा नूर नज़री आईआ। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सच दए वड्याईआ। सुण बल वड बलकार, वलीआ छलीआ आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग वेला अन्त सुहाइंदा। कल कल्की लै अवतार, लोकमात वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी निरगुण धार, निरवैर पुरख आप चलाइंदा। तेरा लेखे ला पंज तत अकार, धरनी धरत धवल आपणी झोली पाइंदा। ढाई मुट्ठी तेरी राख़ रख संभाल, आपणी गोदी आप टिकाइंदा। फिर साहिब हो प्रधान, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। पहलों दे के भगतां दान, फिर आपणा पन्ध मुकाइंदा। एस भूमका उस धरती नविरती करे आण, प्रकृती बंध ना कोए वखाइंदा। फिरदी फिरदी करे निहाल, दुःख दर्द आप वंडाइंदा। तिन्न जुग रखणा ध्यान, शब्द इशारे नाल समझाइंदा। सदी बीसवीं देवां दान, बीस बीसा नाउँ रखाइंदा। वक्त वेला सुहेला पहुँचया आण, चारों कुण्ट खुशी मनाइंदा। जिस वेले धरनी वेख्या आउँदा श्री भगवान, बल राजे इशारे नाल समझाइंदा। दोए जोड़ नैण तक्कण आण, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। पुरख अकाल मेरा वक्त पहुँचया आण, दर तेरे मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र कर करतार, करनी शब्दी झोली पाईआ। तेरा पिछला दयां अधार, लहिणा अग्गे इक वखाईआ। नाल बल राजा सरदार, गुरदयाल बैठा सीस निवाईआ। धरनी वेख होई खुशहाल, खुशीआं गीत अलाईआ। प्रभ मिल्या हो प्रितपाल, प्रितपालक

वड वड्याईआ। उठ उठ निउँ निउँ हस्स हस्स दस्से आपणा हाल, पिछली कहाणी सर्ब सुणाईआ। मैं राह तक्कदी रही जुग चार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल मेरे नाल कर इकरार, क्यों बैठा रिहा मुख भवाईआ। हौकयां विच वेखदी रही संसार, रोंदयां रोंदयां आपणा आप मिटाईआ। आसा पूरी होई अज्ज मेरे दातार, दयावान दया कमाईआ। मैं किस बिध होवां शुकर गुज़ार, की कुछ तेरी भेंट चढ़ाईआ। बल कहे नींवी हो के चरणां उते कर निमस्कार, एहो वस्त प्रभ तों सच्ची भाईआ। जिस नाल तेरा होवे उधार, तेरी मिटी ख़ाक लेखे पाईआ। अभुल भुल्ल ना गया निरँकार, वेला वक्त वेख आया सहिज सुभाईआ। संगी साथी पिछले लयांदे नाल, जो बल सतिजुग संग आपणा बल वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दे सिर ते दे कर प्यार, थाउँ थाईं लए बिठाल, एथे ओथे करे प्रितपाल, राखा इक्को नज़री आईआ।

* १६ माघ २०२० बिक्रमी हरदीप सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर *

३८७ प्यार नहीं एह सतिगुर फ़र्ज, मेहरवान पूर कराइंदा। आपणी प्रभ पूरी करे गरज़, गुरमुख साचे सच वडियाइंदा। ३८७
१६ नाम निधान धुर दा राग दे तर्ज़, साचा सोहला इक समझाइंदा। अन्तर अन्तर नित नवित्त सुण के अर्ज़, आरज़ू सब दी १६
पूर कराइंदा। कूड़ी क्रिया कढु के मर्ज़, पट्टी इक्को नाम बंधाइंदा। दर्दी हो के वड्डे दर्द, दुखियां दुःख आपणी झोली पाइंदा। सेवक बण के योद्धा मर्द, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक वखाइंदा। प्यार नहीं एह प्रभ दा खेल, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख मेल, आप आपणा रंग रंगाईआ। वसणहारा धाम नवेल, सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाईआ। कर प्रकाश बिन बाती तेल, जोती नूर करे रुशनाईआ। दो जहानां बण के सज्जण सहेल, गुरमुख साचे संग निभाईआ। आवण जावण लख चुरासी कट के जेल, साचे मन्दिर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। प्यार नहीं एह प्रभ दा रंग, रंग रता आप रंगाईआ। प्रगट हो सूरा सरबँग, सूरबीर खेल वखाइंदा। लख चुरासी कोलों रिहा मंग, घर घर अन्दर झोली डाहइंदा। बिन गुरसिखां कोई ना दिसे संग, साचा संग ना कोई निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। प्यार नहीं एह सतिगुर धार, हरि करता बणत बणाईआ। बिन भगतां मैनूं करे कोई ना याद, हरि का नाम ना कोई ध्याईआ। लख चुरासी काया खेड़ा दिसे बरबाद, साचा गुल ना कोई महकाईआ।

गुरमुख हरिजन हरिभगत गुरसिख कर आबाद, प्रभ वेखे थाउँ थाईंआ। सच प्रीती अन्दर देवे दाद, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। आत्म परमात्म रच के काज, घर खुशी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। प्यार नहीं एह प्रभ दा वेस, नर नरायण आप कराईआ। बिन भगतां लोकमात सोहे ना देश, जगत वज्जे ना कोई वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सन्त सुहेले पहलों भेज, पिच्छों वेखे थाउँ थाईंआ। उहनां अन्दर वड़ के माणे आपणी सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जीव जंत कोई ना सके वेख, जगत नेत्र ना कोई वड्याईआ। सच प्रीती अन्दर अन्दर वड़ के दस्से भेत, धुर दी कार सच कमाईआ। नरायण सिँघ नर नेत्र पेख, हरि दीदयां दए वखाईआ। जिन्हां लाए दीन दयाल मेख, अग्गे सके ना कोई उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। प्यार नहीं एह अमरापद, दरगाह साची सच जणाइंदा। जगत दवारा लँघ के हद्द, गुरमुख गुर गुर आप उठाइंदा। सच उपजा आपणी यद, विश्व आपणी धार समझाइंदा। अन्तिम राग सुणा नद, धुर संदेसा आप अलाइंदा। अमृत आत्म जाम प्या के मधु, सच खुमारी इक चढ़ाइंदा। जोत नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। सच सिँघासण शाहो शाबाश, शहिनशाह इक्को इक वखाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर हो के दास, घर ठाकर सेव कमाइंदा। पूरब जन्म दी पूरी कर के आस, कूड़ी तृष्ना मेट मिटाइंदा। मित्र हो के वसे पास, कन्त हो के अंग लगाइंदा। दाता हो के देवे दात, दानी हो के आप वरताइंदा। गहर गम्भीर हो के खोल्हे ख़ात, अतोट अतुट आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक दृढ़ाइंदा। प्यार नहीं एह प्रभ दी साखी, साख्यात रिहा वखाईआ। जुग चौकड़ी जिन्हां रह गई बाकी, तिन्हां लहिणा झोली पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तिन्हां बणे साथी, जिन्हां हरि जू दए वड्याईआ। लेखा चुक्के तीर्थ ताटी, सरोवर नहावण कोई ना जाईआ। घर परमेश्वर मिले कमलापाती, कँवल नैण वड्डी वड्याईआ। नेत्र खोल्ह झरोखे खोल्ह खेल वखाए बंद ताकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। प्यार नहीं एह प्रभ दी सेवा, जुग चौकड़ी सदा कमाईआ। निरवैर पुरख वड देवी देवा, देवत सुर हुक्म मनाईआ। आदि जुगादी अलख अभेवा, अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। हरिजन देवे धुर दा मेवा, अमृत रस इक वखाईआ। मस्तक लाए आपणा थेवा, जोत ललाट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। सेवा नहीं एह प्रभ दी करनी, करता पुरख आप कराइंदा। लेखा देवे उहनां जो सीस निवावण चरणी, धूढ़ी टिक्का इक लगाइंदा। लहिणा चुकाए वरनी बरनी, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। लहिणा मुके लख चुरासी फिरनी, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रीती अन्दर प्रेम कमाइंदा। प्यार नहीं प्रभ दी दात, अणमंगी झोली पाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, गुरमुख सज्जण लए प्रगटाईआ । प्रभ नूं कोई लभ्भ ना सके कर के पूजा पाठ, गुरदर मन्दिर मस्जिद देण दुहाईआ। नेत्र नीर विरोले तीर्थ ताट, घाट किनारे रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे रहे वाच, गीता ज्ञान जगत सुणाईआ। अञ्जील कुरान धुर दा कलमा रहे आख, कायनात जगत समझाईआ। साची पढ़े ना कोई आयत, पर्दा सके ना कोई चुकाईआ। साहिब सतिगुर श्री भगवान, अबिनाशी करता जुग जुग देंदा रिहा हदाइत, हुक्म सादर इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए लगाईआ। प्यार नहीं एह खेल महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। महल अटल वेख अरूज, घर घर विच दए सुहाईआ। जन भगतां देवे आपणा आप सबूत, विचोला नज़र कोए ना आईआ । लेखा जाण पंज तत कलबूत, काया काअबा खोज खुजाईआ। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा पर्दा लाहीआ। नाता तोड़ जूठ झूठ, सच सुच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। प्यार कहे मैं की जाणा, प्रभ दा भेव कोई ना पाईआ। बाली बुध मैं अञ्याणा, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैगम्बरां कोलों सुणदा रिहा गाणा, सच प्रेम अन्दर जो गाईआ। नित नवित्त मन्नदा रिहा भाणा, सिर सजदा सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम वेख्या खेल महाना, वेख वेख बिगसाईआ। प्रगट हो विष्नूं भगवाना, जन भगतां दए वड्याईआ। नाम बन्नू के धुर दा गाना, घर साचे सगन मनाईआ। शस्त्र दे तीर निशाना, चिला भथ्था इक वखाईआ । बोल बोल अनबोलत आप ज़बाना, ढोला इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी कार कमाईआ। प्यार कहे मैं छोटा निक्का, अक्ल नज़र कोए ना आईआ। प्रभ दा खेल वेख अनडिठा, घर मेरे वज्जी वधाईआ । जुग चौकड़ी जिस आपणा काग़ज़ रख्या चिट्टा, अक्खर वक्खर जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं पुरख अकाल मन्नदे गए पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सो निरगुण निरवैर हो के जन भगतां फिरे पिच्छा, पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। आपणी पूरी करनी ख़ातर इछा, हरिजन साचे लए जगाईआ। बिन कीमतों करता ओहनां हट्ट विका, जिन्नां प्रीती इक समझाईआ। नाम अनमुल्ला दित्ता मिट्ठा, रस फिके जगत विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा रिहा वखाईआ। प्यार कहे मैं की जाणा, मैनूं सच कोए ना आईआ। कलयुग अन्त करे खेल की भगवाना, भगवन आपणी धार चलाईआ। धुर संदेसा लै के आया गाणा, सोहँ ढोला इक समझाईआ। जिस अन्तर आत्म परमात्म मेल मिलाणा, मिलनी जगदीश कराईआ। तिस प्यार दा रूप ना

किसे पछाणा, रेख रंग ना कोई वखाईआ। सो प्यार जुग जुग जन भगतां देवे दानां, दयावान आप वरताईआ। जिस प्रेम प्रीत प्यार अन्दर खेल खेले गोपी काहना, शब्दी मधुर धुन राग सुणाईआ। जिस प्रेम प्यार अन्दर वेख वखाए सीता रामा, हनवन्त दयावन्त दए वड्याईआ। जिस प्यार अन्दर जुग जुग निरगुण सरगुण पहरे बाणा, रूप अनूप मात वखाईआ। जिस प्यार अन्दर शब्द अनादी गाए गाना, धुर दा राग सुणाईआ। जिस प्यार अन्दर साचे भगत करे परवाना, फड़ बाहों गले लगाईआ। ओस प्यार पिच्छे सेवा करे वाली दो जहानां, हरिजन साचे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक दुआर रखाईआ। सच प्यार करो भगवन्त, हरि करता आप जणाइंदा। सच प्यार करो गुरमंत, जो सतिगुर नाम समझाइंदा। सच प्यार करो घर आपणे कन्त, जो आत्म सच्चा सोभा पाइंदा। सच प्यार करो सतिवन्त, प्रभ अगणत लेखा लेख ना कोई लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार विच्चों प्यार दिसाइंदा। सतिगुर प्यार गुरमुख प्रेम, प्रीती इक्को इक जणाईआ। गुरमुखां पिच्छे जिस खेल खेलया कुण्ट हेम, टिल्ले पर्बत डेरा लाईआ। सिखां पिच्छे जिस पुरख अकाल कोल चुक्कया नेम, सुगंध इक्को वार खाईआ। गुरमुखां पिच्छे जिस लहिणा लैण देणा देण, लहिणा आपणी झोली पाईआ। गुरसिखां पिच्छे जो धुर दी बाणी आवे कहिण, कहि कहि मात सुणाईआ। गुरमुखां पिच्छे जो मेटणहारा अन्धेरी रैण, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। गुरमुखां पिच्छे जो दर दर घर घर बणे साक सैण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीत इक लगाईआ। प्रेम कहे मेरा प्यार, बिन परमेश्वर नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढ्डाइंदा। मेरा प्रेम कर कर गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। प्यार कहे मैं आदि जुगादि जुग जुग सोचां, सोच समझ किसे ना आईआ। पुरख परमेश्वर इक्को दरस लोचां, मेरी लोचा पूरी दए कराईआ। मैं उच्ची कूक सुणावां होका, दो जहानां दयां सुणाईआ। फेरां दरोही चौदां लोकां, चौदां तबकां हाल जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त प्रभ नाल काहदा रोसा, जो रुस्सयां लए मनाईआ। प्यार करन दा इक्को मौका, श्री भगवान निरगुण रूप वटाईआ। जन भगतां नाल कदे ना करे धोखा, धूआं धुखदी वेखे सर्ब लोकाईआ। जिस दी सिफ्त करन अञ्जील कुरान पंडत पांधे पढ़ पढ़ पोथा, बेपरवाह नूर खुदाईआ। ओस दा प्यार सब नालों सौखा, करता कीमत ना कोई लगाईआ। चरण प्रीती इक्को देवे धुर दी ओटा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ओसे वेले खरा करे खोटा, मेहर नज़र जिस उठाईआ। लेखा पिछला चुके जो गनका पढ़ाउँदा रिहा तोता, तरह तरह

समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्द इशारे नाल लेख चुकाए लोक परलोका, दो जहान पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आप कमाईआ। सच प्यार प्रभू कमाउँदा ए। भगत भगवान वेख वखाउँदा ए। निगहबान नैण उठाउँदा ए। कर ध्यान पर्दा लहुंदा ए। हो मेहरवान तरस कमाउँदा ए। कर परवान चरण लगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां प्रेम वधाउँदा ए। नित उहनां दे ढोले गाउँदा ए। सतिजुग साचा लेख बणाउँदा ए। कूड़ी क्रिया भेख मिटाउँदा ए। साचा मन्दिर देस सुहाउँदा ए। मन्न कलन्दर बन्नू वखाउँदा ए। अन्दरे अन्दर दया कमाउँदा ए। साची वस्त आप वरताउँदा ए। दस्त बदस्त आप फड़ाउँदा ए। हस्त कीट रंग चढ़ाउँदा ए। ऊँच नीच जोत जगाउँदा ए। राउ रंक भेव खलाउँदा ए। दुआर बंक इक वडयाउँदा ए। घर सुहञ्जणे सोभा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां प्यारा अख्वाउँदा ए। जन भगत प्यारा रखदा ए। उस दे अन्दर वड़ के वसदा ए। आपणा भेव अगम्मा दसदा ए। खुशीआं नाल गीत गा गा हस्सदा ए। दो जहानां पत्त रखदा ए। दे माण करे लख लख दा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रीती अन्दर नच्चदा ए। प्रेम अन्दर करे प्यार, मुहब्बत सच सच्च कमाईआ। निरगुण हो करे गुफ़तार, बातन ज़ाहर दए वड्याईआ। गुफ्त शनीद खेल न्यार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। मुरीद मुर्शद दे अधार, मेहर नज़र इक उठाईआ। कर मुहब्बत परवरदिगार, महवख़ाना इक दरसाईआ। जाम प्याला कर त्यार, सच मतिवाला दए प्याईआ। हउँ खुशहाला दए दीदार, मस्ती प्रेम प्यार चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम अन्दर प्रेमका रूप वटाईआ। प्रेम अन्दर प्रभ बैठा नारी, नर नरायण वेस वटाईआ। आदि जुगादि बण के रही कुँवारी, सच कन्त ना कोई बणाईआ। जुग चौकड़ी वेंहदी रही वारो वारी, सच दवारे ध्यान लगाईआ। तक्कदी रही बण वड संसारी, लख चुरासी वेख वखाईआ। शब्द संदेसे अन्दर कर कर खेल न्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए छुपाईआ। प्रेमिका बण के प्रेमी रही खोज, दो जहानां वेख वखाईआ। नित उठ वेखे रोज़, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। कवण रंग रत्ता मेरी खोज, मुहब्बत मेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खलाईआ। प्रेमन तक्कदी रही जुग चार, जोत अकालण ध्यान लगाईआ। खेल वेखदी रही गुर अवतार, पीर पैगम्बर नाच नचाईआ। सृष्ट सबाई शास्त्र सिमरत वेद पुराण करदी रही अधार, अञ्जील कुराना गंढु पवाईआ। कलयुग अन्त वेख्या नैण खोलू किवाड़, दो जहानां झाकी पाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरले जो प्रभ दी करन भाल, बिरहों विछोड़ा तीर लगाईआ। कोटन कोटां

विच्चों जन भगत रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कवण वेला प्रभ दए दीदार, दर्शन आपणा आप कराईआ। ओहनां पिच्छे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर लै अवतार, लोकमात फेरा पाईआ। दर दर घर घर करदा फिरे प्यार, हरि बैठा आपणा रूप वटाईआ। मिल मिल सखीआं मंगलाचार, खुशीआं गीत सुहागी गाईआ। सच प्रेम लभ्भे ना किसे दुकान, जगत हट्ट ना कोई विकाईआ। सतिगुर प्रेम गुरमुख महान, हरि जू खोज भगवन्त वेख वखाईआ। नींवीं अक्ख करे पड़ताल, प्रतख दिसे दीन दयाल, वथ देवे सच सच्ची धर्मसाल, प्यार रख होए कृपाल, ठाकर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, प्रेम अन्दर बण अञान, गुरमुख वड्डे सुघड़ सुचज्जे आपणे नाल रलाईआ। प्यार कहे गुरमुख दु:ख क्यों, की मिले वड्याईआ। भगवान कहे ओह प्रभ दी चरणी जाए निउँ, माण ताण ना कोई रखाईआ। एसे कारण दोहां दर लग्गे निहों, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। मिल प्रीतम प्रेम अमृत बरसे मेहों, मेघला आपणी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, प्रेम अन्दर रख प्यार, प्यार अन्दर आपणा आप छुपाईआ।

* १७ माघ २०२० बिक्रमी अतर सिंघ, चतुर सिंघ दे घर, पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर *

निरगुण रूप पुरख अकाल, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्द गुर अगम्मी लाल, सति सतिवादी इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। लख चुरासी कर पहचान, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। जन भगत कर परवान, सच प्रीती इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र श्री भगवान, आदि पुरख आप कराईआ। सतिगुर मैनूं दे दे दान, धुर दी दात आप वरताईआ। भगत भगवान सच निशान, लोकमात उपजाईआ। साचे सन्तां दे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। गुरमुख लेखा चुकाए दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। गुरसिख बख्शे चरण ध्यान, सच प्रीती इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। गुरमुख रखे इक्को आस, तृष्ना आपणा आप प्रगटाईआ। गुरमुख मंगे मंग ख़ास, हरि चरण मिले सरनाईआ। सन्त दोए जोड़ करे अरदास, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। भगत कहे सदा वसां पास, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरु गुर कहे मैं सदा दासी दास, सच सेवक सेव कमाईआ। पुरख अकाल कहे मैं जोत प्रकाश, नूरो नूर हर घट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच रचना आप रचाईआ। पुरख अकाल सर्ब गुणवन्त, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शब्द गुरु गुरदेव स्वामी महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव ना आईआ। जुग चौकड़ी मेला भगत भगवन्त, विच लोकमात वड्याईआ। धन्न वड्याई साचे सन्त, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। गुरमुख मेला नार कन्त, घर सज्जण सहिज सुभाईआ । गुरमुखां ढोला गाए मंत, हरि हिरदे नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खुशी मनाईआ। गुरमुख कहे मोहे साची टेक, सीस जगदीश दए वड्याईआ। गुरसिख कहे मैं नेत्र पेख, घर सज्जण खुशी मनाईआ । सन्त कहे मैं वसां ओसे देस, जिस गृह बैठे डेरा लाईआ। भगत कहे मेरा इक्को हेत, प्रेम प्रीती अन्दर समाईआ। गुरु गुर कहे मेरा सच उपदेस, सच संदेसा इक समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं नर नरेश, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप प्रगटाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दाता दातार, देवणहार इक अखवाइंदा। शब्द गुरू कहे मैं वरतार, अतोट अतुट वखाइंदा। भगत कहे मैं मंगणहार, वस्त अमोलक झोली पाइंदा । सन्त कहे मैं धूढ़ी मंगां छार, मस्तक टिक्का इक रमाइंदा। गुरमुख कहे मैं चरण भिखार, बलिहारी आपणा आप घोल घमाइंदा । गुरसिख कहे मोहे दे अधार, सिदक सबूरी मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाइंदा। गुरसिख कहे मेरा झुके सीस, मन हँकार रहिण ना पाईआ। गुरमुख कहे मैं मिलां ठीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन सन्त कहे प्रभ वसे नज़दीक, घर घर विच डेरा लाईआ। भगत कहे नित नवित्त करे सच प्रीत, आप आपणा फेरा पाईआ। गुरु गुर गुर कहे मैं नीचों करां ऊँच, घर साचे दए वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दे भीतर वसां भीत, घर घर आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब देवे माण वड्याईआ। पुरख अकाल कहे सतिगुर बलिहार, जिस साची बणत बणाईआ। सतिगुर कहे भगत जैकार, जिस मिले माण वड्याईआ । जन भगत कहे सन्त उज्यार, जिस घर दीवा बाती इक्को नज़री आईआ। सन्त कहे गुरमुख ठांडा दरबार, अग्नी तत नज़र ना आईआ। गुरमुख कहे गुरसिख वणजार, वस्त अमोलक इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। गुरसिख कहे गुरमुख मीत, मित्र प्यारा नज़री आइंदा। गुरमुख कहे सन्त सुहेला ठांडा सीत, सति सतिवादी विच समाइंदा। सन्त कहे जन भगत अतीत, मन्दिर मसीत डेरा कोई ना लाइंदा। भगत कहे गुर शब्द अतीत, सच दवारे सोभा पाइंदा। शब्द कहे पुरख अकाल मेरा साहिब अनडीठ, जो आदि जुगादि अनडिठड़ी कार कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाइंदा। पुरख अकाल कहे शब्द

गुरू एक, इक्को एक अख्वाईआ। शब्द कहे जन भगतां टेक, जुग चौकड़ी माण दवाईआ। जन भगत कहे सन्त दवारे नर हरि वेख, आसा तृष्ना तृप्त कराईआ। सन्त कहे गुरमुख अवल्लड़ा वेस, जिस दर मेहरवान आपणा खेल खिलाईआ। गुरमुख कहे गुरसिख सोहणा सुहञ्जणा देस, जिस घर नर निरँकारा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। गुरमुख कहे गुरसिख वड्याई धन्न, जो अन्तर आत्म इक लिव लाईआ। गुरमुख कहे सन्त वड्याई धन्न, जो जगत बसन्तर अग्ग बुझाईआ। सन्त कहे जन भगत वड्याई धन्न, जो आत्म परमात्म इक्को गाईआ। जन भगत कहे गुरू शब्द धन्न, जो गगन गगनंतर रिहा समाईआ। शब्द गुरू कहे श्री भगवान धन्न, जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्दी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार आप अख्वाईआ। वड्याई कहे वड्डा निरँकार, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। वड्याई कहे वड्डा शब्दी सुत दुलार, जो ब्रह्मण्ड खण्ड बैठा रचन रचाईआ। वड्याई कहे वड्डा भगत दुआर, जिस गृह पीआ प्रीतम सोभा पाईआ। वड्याई कहे वड्डा सन्त प्यार, जिस विच निरगुण धार नज़री आईआ। वड्याई कहे वड्डा गुरमुख अकबाल, जिस दी महिमा जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाईआ। वड्याई कहे वड्डा गुरसिख जिस दी लग्गी बहार, छहबर इक्को नाम नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। वड्याई कहे मैं की दस्सां वडया, होछी मति सार ना आईआ। हो निमाणी गुरमुखां दर बैठी आ, नेत्र नैण ना सकां उठाईआ। माण ताण आपणा सर्ब गंवा, ख़ाली हथ्थ दयां दुहाईआ। मैनूं सच दयो समझा, भेव अभेद खुल्हाईआ। वड्याई कर कर जग्ग कोई लभ्भया ना राह, रहिबर दरस ना कोई वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान मेरा गवाह, शहादत देवण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह आपणी धार चलाईआ। वड्याई कहे मैं कहि कहि थक्की, हरि का अन्त कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ी रही भज्जी, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। नित नवित्त बीतदी वेखी सदी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन काल गए विहाईआ। मेरी बुढड़ी होई हड्डी, तन जोबन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बे सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। वड्याई कहे मैं की कुछ गावां, कहिण विच कहि ना पाईआ। नेत्र नैणां नीर वहावां, धीरज धीर ना कोई धिराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे नाउँ दा लिख लिख गए नावां, कलम छाही जोड़ जुड़ाईआ। मैं वड्डा आख आख की सुणावां, बलहीण रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा भेव छुपाईआ। वड्याई सुण के हाल पुकार, गुरसिख अक्ख

३६४ १६

खुल्लाईआ। फड़ के बाहों दए हुलार, इशारे नाल समझाईआ। उठ सवाणी हो ख़बरदार, ग़फ्लत दे गंवाईआ। जा के वेख गुरमुख दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। सन्त सज्जण बैठे प्रेम नाल, सच प्रीती इक्को नज़री आईआ। भगत भगवान दयावान ताल, ढोला इक्को राग अल्लाईआ। गुरु गुर गुर शब्द विच दलाल, सच दलाली रिहा कमाईआ। सच सिँघासण बैठ पुरख अकाल, मेहरवान वेख वखाईआ। जगत वड्याई जा कर ज़माल, नूरी जलवा नूर रुशनाईआ। ओस दे अग्गे कर सवाल, निउँ निउँ चरण कँवल सीस झुकाईआ। मेहरवान जे तेरे उपर होए कृपाल, कृपानिध दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी लज्जया लए रखाईआ। वड्याई कहे मैं कमली कोझी, सिफ्तां विच वक्त लँघाईआ। मैनूं प्रभ मिलण दी दिती किसे ना सोझी, घर सच ना कोई जणाईआ। मेरी मुंनी गई चोटी, चोटी मीहडी सीस ना कोई गुंदाईआ। हँकार अन्दर मैं होई खोटी, आपणी समझ कोई ना आईआ। मिन्नता कर कर साधां सन्तां जीवां जंतां खवाउँदी रही रोटी, कूड़ दलालण आपणा नाल संग रलाईआ। मेरी मति होई होछी, साची सोच ना किसे समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। गुरमुख कहे उठ बलधार, सच सच्च दयां वड्याईआ। मैं चलां तेरे नाल, तेरा दुःख वंडाईआ। जुग चौकड़ी तूं सिफ्तां कर कर गई हार, कूक कूक सर्ब सुणाईआ। चल के वेख साडा यार, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। जिस नूं आपणी सिफ्त दा नहीं उधार, वड्याई विच कदे ना आईआ। सो गुरमुखां नाल करे प्यार, प्रेम प्रीती इक बणाईआ। साचे सन्तां दए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगतां वड्याई करे आप निरँकार, जिस वड्याई दी समझ किसे ना आईआ। हरि की वड्याई अक्खरां बाहर, पत्थरां विच्चों लभ्भे ना कोई लोकाईआ। समुंद सागर उछाले ना कोई धार, टिल्ले पर्बत चोटी बैठी नज़र किसे ना आईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर ना सकण पहचान, रूप रंग ना कोई वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों जिस वड्याई आपणी आपणे विच्चों कढ्ढी बाहर, बाहर कढ्ढ जन भगतां सेवा लाईआ। जगत वड्याई उस दे चरणां धूढ़ी मस्तक ला छार, चरणी सीस निवाईआ। तेरा दुखड़ा देवे निवार, दुखियां दर्द वंडाईआ। नेत्र पेख सन्त भगत गुरमुख गुरसिख जिस बिठाए आपणे सच दुआर, दर दरबारा इक्को इक सुहाईआ। सो शहिनशाह शाह पातशाह इक अकल्ला एकँकार, निरँकार नज़री आईआ। भगत सुहेला बण के ख़िदमतगार, सेवा आपणा आप लगाईआ। जगत वड्याई ना ओस दी पावे सार, ओस दी वड्याई जन भगतां दए तराईआ। गुरसिख गुरमुख हरिसन्त भगत गुरु गुर गुर सारे बैठे दर सीस झुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सब दा सीस करे परवान, जगदीश आपणी झोली पाईआ।

* १७ माघ २०२० बिक्रमी त्रलोक सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर *

गुरमुख कदम सदा निधड़क, भय भउ ना कोई रखाइंदा। अग्गे कदे ना जावे अटक, पिच्छे रुख़ ना कोई बदलाइंदा। पूरे सतिगुर दी एहो सिधी सड़क, जिस मार्ग उते गुरमुख आप चलाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पैण ना देवे फरक, मुतबरक काम आप कराइंदा। अग्गे जांदयां होण ना देवे हरज़, अन्दर वड़ के हौसला आप रखाइंदा। सतिगुर महिमा सदा सदा सद बोलो ऊँची खड़क, खण्डा खड़ग ना कोई डराइंदा। जिस कदम नूं पदमा पदमलोक रहे तरस, अरबां ख़रबां अन्त कोई ना आइंदा। जिस दा लेखा गुणां विच कोई ना कढ्ढे दे के ज़रब, हासल अंक ना कोए बणाइंदा। सो पुरख अकाल व्यापी सरब, हरि करता खेल कराइंदा। जन भगतां जुग जुग वंडे दर्द, दुःख द्वैती झोली पाइंदा। शब्द धार तिक्खी मुखी आप प्रगटाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों जो होया आप नपड़द, ओस दे उते पर्दा क्यों रखाइंदा। फल वेखो गुर अवतार पीर पैगम्बर फोल फरद, फैसला जिस दे उते सुणाइंदा। एह प्रभ दा खेल असचरज, जिस दा अन्त कोए ना पाइंदा। सृष्ट सबाई गुरमुखां सदा रही वर्ज, गुरमुख आपणा कदम ना पिच्छे हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हुक्म वरताइंदा। गुरमुख कदम चले जुग चार, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, भज्जे वाहो दाहीआ। वारस बण करे विचार, घड़ी पल ध्यान लगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंग्घे सागर हो हो बाहर, नेत्र नैण चार कुण्ट उठाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ वाज लए मार, दरोही कूक कूक सुणाईआ। इक्को दरस तेरा दीदार साहिब सतिगुर सच महान, कर किरपा मेहरवान हथ्थ तेरे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। गुरसिख कदम रिहा दौड़, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जिस नाल पहुंच ना सके कोई अस्वार घोड़, अस्व संग ना कोई रखाईआ। गुर का कदम गुरसिख तेरे संग जाए बौहड़, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। दोहां मिल के इक्को बणे पौड़, दो जहान चरणां हेठ रखाईआ। श्री भगवान वेखे कर के गौर, गहर गम्भीर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जिस कदम पिच्छे राजे बल मिणाए मौर, धरनी धरत धवल ना कोई वड्याईआ। एह खेल वड्डा होर, जिस दी सिफ्त ना कोई सालाहीआ। गुरसिख बुढ्ढा नढ्ढा क्यों जावे डोल, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जगत नाल सदा भगतां घोल, अखाड़ा आप लगाईआ। लख चुरासी नाल मारे रोल, भरम भुलेखा सर्ब रखाईआ। जिन्हां अन्दर वड़ के वसे कोल, सो गावण चाईं चाईंआ। जिन्हां प्रभ मिले सो उच्ची कूक डंका वजावण उते ढोल, चारों कुंट देण दुहाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जावण मौल, रुत रुतड़ी इक महकाईआ।

३६६
१६

चरण प्रीती आपा वारन घोल, ममता मोह ना कोई वड्याईआ। जन भगतां जीव जंत समझ ना सके बोल, क्यों जन भगतां बोली प्रभ आप समझाईआ। सद बैठे रहिण अडोल, थिर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख कदम दए वड्याईआ। गुरमुख कदम अग्गे लए चुक्क, बल अन्तर इक धराईआ। पिछला पैंडा सारा जाए मुक, लख चुरासी गेड़ कटाईआ। मार्ग चलदा कदे ना जाए रुक, रोकण वाला नज़र कोए ना आईआ। देवत सुर मुन जन सीस निवावण झुक, सजदा इक कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होवण खुश, खुशीआं राग अलाईआ। गुरमुख कदम कदम भज्जा जाए चुप्प, नेत्र नैण ना कोई खुलाईआ। गुरमुख आउँदा वेख सतिगुर पूरा अग्गों पए उठ, आवे वाहो दाहीआ। सब दे वेंहदयां गोदी लए चुक्क, शरम हया ना कोई रखाईआ। ना एह नार ना एह पुरख, जोती जाता बेपरवाहीआ। आपणा खेल करे तुरत, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। कर प्रकाश अकाल मूर्त, मूर्ती गुरमुखां करे रुशनाईआ। जिन्हां वखाए आपणी सूरत, सरगुण निरगुण शब्द नाल जुड़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़ मूढ़त, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आसा मनसा सब दी पूरत, पूरब इच्छया झोली पाईआ। जलवा नूर नुराना दे नूरत, निरगुण निराकार आपणा पर्दा दए उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आदि आदि मध मध पन्द्रां कत्तक सब तों उत्तम श्री भगवान तों मंगी महूरत, जिस महूरत विच प्रभ जू आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। गुरमुख कदम अग्गे उठालदा, पग आपणा आप उठाईआ। खेल वेखे पुरख अकाल दा, अकल कलधारी की की रचन रचाईआ। लहिणा जाणे दीन दयाल दा, दयावान दए वड्याईआ। पर्दा चुक्के मुरीद मुर्शद हाल दा, घर साचे सोभा पाईआ। लहिणा चुक्के काल महाकाल दा, अग्गे देवे ना कोई सजाईआ। दरवाजा खुल्हे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल दा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। लेखा मुके शाह कंगाल दा, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। गुरमुख कदम साहिब सतिगुर आपणे हथ्थां उते संभालदा, दुःख दर्द ना लागे राईआ। फड़ बाहों आपणी छाती उते बिठालदा, गलवकड़ी इक्को वार पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान दा, जन भगत कदम दए वड्याईआ। गुरमुख कदम अग्गे तुरदा, भज्जे वाहो दाहीआ। वेखो खेल साचे गुर दा, नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। लेखा पूरा करे धुर दा, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। प्रेम प्रीती अन्दर नाता जुड़दा, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। वर सोहे जेहा लोड़दा, सति सुहागी रूप समझाईआ। फड़ बाहों अग्गे अग्गे तोरदा, पिच्छे मुड़न कोई ना पाईआ। सच दवारे भेव चुक्के मोर तोर दा, निरगुण निरगुण जोती जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन कदम

वेख वखाईआ। गुरमुख कदम कदम जाए नट्ठ, आपणा बल धराईआ। अग्गों वेख पुरख समरथ, दूर दुराडा आवे चाईं चाईंआ। दोहां मिल के इक बणे सथ्थ, जिस सथ उते यारड़ा सत्थर गया हंढाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर इशारा देवे अक्ख, सैनत नाल समझाईआ। निरगुण रूप वेख प्रतख, सति सरूप इक्को नज़री आईआ। जो सब नालों वसे वक्ख, जन भगतां अन्दर समाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दे हथ्थ, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। कदम कहे मैं अग्गे आया, पहला कदम उठाईआ । मैनूं वेख भज्जी त्रैगुण माया, पंज तत रही कुरलाईआ। चित्रगुप्त दए दुहाया, लाड़ी मौत खुल्ही गुत्त रही वखाईआ । करोड़ तेतीसा सीस निवाया, विष्न ब्रह्मा शिव जै जै कार सुणाईआ। गुर अवतार साचा ढोला गाया, पीर पैगम्बर कलमा नगमा आप सुणाईआ । शब्द स्वामी अग्गों आया, नेहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। बण दरबाण धुर दा कुण्डा लाहया, खिड़की आप खुल्हाईआ । गुरमुख कदम ओस दवारे टिकाया, जिस नूं सचखण्ड कहि के सारे रहे सुणाईआ। पतिपरमेश्वर अग्गों नज़री आया, जोती जाता नूर रुशनाईआ। कदम वेख श्री भगवान आपणा कदम फेर वखाया, कदम उत्तों चरण कँवल लए बदलाईआ। कँवल रूप आप महकाया, सुगंधी आपणा नाम भराईआ। दोहां मेला सहिज सुभाया, ढोला इक सुणाईआ। बण विचोला जोड़ जुड़ाया, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । कदम कहे मेरा लेखा लग्गा, पन्ध रिहा ना राईआ। मिल्या पुरख सूरा सरबग्गा, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। जिस संवारया मेरा पिच्छा अग्गा, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जगत जहान लँघ के हद्दां, दूर दुराडा नेड़े आईआ। दर्शन कर पुरख समरथा, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर पीर पैगम्बर गुर अवतार देंदे रहे सद्दा, भविक्खत लिख्त नाता जोड़ कलम छाहीआ। वेख ओस दा सोहणा दरबार सजा, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ। लोकमात जन भगत दवारे फिरे भज्जा, आउँदा जांदा मुख छुपाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बज्झा, आपणा खेल वखाईआ। पन्द्रां कत्तक सब नूं लग्गा चंगा, जो जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे आस लगाईआ। इस दी कोई होर समझ ना सके वजा, वज़ाहत कर ना कोई जणाईआ। नाँ लैंदयां गुरमुख क्यों आवे लज्जा, लोक लज्जया विच दिसे ना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पन्द्रां कत्तक दिवस कर प्रधान, जुग चौकड़ी अग्गे दित्ता दान, जिस विच बणे सर्ब विधान, राज राजान निउँ निउँ सीस निवाण, साध सन्त भगत भगवन्त ढोला गाण, गुरमुख गुरसिख उठा झुलावण निशान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मन्ने आण महिमा महान अग्गे हरि जू हरि हरि आप चलाईआ।

* १७ माघ २०२० बिक्रमी सवरन दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर *

गुरमुख कदम मुकाए पन्ध, मंज़ल रहिण कोई ना पाईआ। धुर दा ढोला गा के छन्द, घर साचा वेख वखाईआ। आत्म परमात्म मिले अनन्द, रस इक्को इक वखाईआ। कर वसेरा सच्चे सचखण्ड, दर साचा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे आप लगाईआ। मुके पन्ध दो जहान, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। गुरमुख सूरा वड बलवान, बलधारी नज़री आईआ। नेत्र पेख श्री भगवान, निज नैण लए मिलाईआ। जगत दवारा सच मकान, श्री भगवान आप वखाईआ। जिस गृह वस के नाता मुके सर्ब जहान, साथी नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। पन्ध मुकाए गुरमुख पूरा, परम पुरख विच समाईआ। जोबन मिले जोती नूरा, नूरो नूर डगमगाईआ। जन्म जन्म दा लेखा कर के पूरा, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जीव जहान छड्ड के कूड़ा, दरगाह साची आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को दए वखाईआ। मंज़ल मुका के जाए दुआर, घर इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल एकँकार, सचखण्ड सोभा पाईआ। बिन नेत्र नैणां दरस दिखाल, बिन दीद करे रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द शब्द धुनकार, धुर दा राग आप सुणाईआ। बिन इट्टां पत्थर गारे महल अटल दए वखाल, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। बिन तेल बाती दीपक इक्को बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर गुरसिख कहे आ मेरे लाडले लाल, लालन आपणी गोद उठाईआ। नव नौ चार करदा रिहा भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान सच दवारे लवां संभाल, साची सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर इक्को हत्थ टिकाईआ। मंज़ल मुक्की वेख्या खेड़ा, दरगाह साची खुशी मनाईआ। ओथे वसे केहड़ा केहड़ा, जो बैठा ध्यान लगाईआ। श्री भगवान कहे एथे नहीं कोई झगड़ा झेड़ा, झंझट नजर कोई ना आईआ। जिस किहा तूं मेरा मैं तेरा, सो गुरमुख बहि बहि खुशी मनाईआ। इक्को रंग गुरु गुर चेरा, चेला गुरू इक्को धार समाईआ। परम पुरख दा खुल्ह्ला वेहड़ा, आर पार किनारा दस्से ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरजिन साचे रिहा वखाईआ। पन्ध मुका के गुरमुख चढ़या, घर सच्चा नज़री आईआ। पुरख अकाल बाहों फड़या, फड़ आपणा रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट वखा के दरया, दर दरवाजा इक खुल्ह्लाईआ। जिस सिँघासण हरि जू खढ़या, सोभावन्त सोभा पाईआ। गुरमुख सरनाई साची पढ़या, ढहि ढहि सीस निवाईआ। अबिनाशी करता देवे वरया, वर दाता वड्डा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। मंज़ल मुक गई जग, जग जीवण दाते दिती मुकाईआ। सच दवारा वेख्या हज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। परवरदिगार बैठा सज, बेनज़ीर कर रुशनाईआ। इक्को ढोला गाए सद, सच्चा राग अल्लाईआ। नूर इलाही प्रगट हो के दस्से भेव वाहिद, लाशरीक दए समझाईआ। लख चुरासी विच्चों एह मौका किसे मिले साइद, शाह पातशाह कोटन कोटि जन्म रुलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल जो कीता ऐहिद, सो पूरा रिहा कराईआ। मेहरवान आपणा कदे ना भुल्ले कानून कवाइद, काइदा आपणा इक रखाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां देवे मुफ़ाइद, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी जो करदा गया हदाइत, हज़रत हरिजू खेल रचाईआ। सच प्रीती कर अनाइत, बख्शिश बख्शे बेपरवाहीआ। आपणा पूरा करे फ़राइज़, फ़ारग हो के पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुरीद मुर्शद लए मिलाईआ। मुकया पन्ध मिल्या मुर्शद, महिबूब इक्को नज़री आईआ। करे प्यार विच्चों आपणी फुरसत, वेहला हो के होवे सहाईआ। उस दी रसना जिह्वा ज़बान क्या करे उस्तत, वड्याई विच वड्डा ना कोई समझाईआ। जिस दा भेव ना पाया किसे पुस्तक, जुग चौकड़ी लिख लिख लेख ना कोई वखाईआ। जन भगतां करे सदा उल्फ़त, मुरीदां मुर्शद दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो के मुफ़लस, घर ग़रीबां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी मंज़ल रिहा मुकाईआ। पैंडा मुक्कया पाया पारब्रह्म, ब्रह्म वज्जी इक वधाईआ। पूरन होया गुरमुख कर्म, काज करता आप रचाईआ। सहिंसा रोग चुक्कया भरम, भाण्डा भउ भंनाईआ। सच प्रीती दस्सया धर्म, पुरख अकाल इक सरनाईआ। सच्चा मालक चार वरन, शहिनशाह इक अख्वाईआ। ठंड पई दवारे धुर दे चरण, चरणोदक मिली वड्याईआ। मंज़ल मुक्की मुकया जन्म मरन, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। भगत भगवान जिस दवारे बहि के ढोला पढ़न, सोहँ सच्चा राग अल्लाईआ। ओस गृह मन्दिर सन्त सुहेले विरले चढ़न, दूजा लँघ कोई ना जाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिन्हां विछड़यां आया फड़न, रुठयां लए मनाईआ। सो खुशीआं भवसागर जग तरन, शौह दरया ना कोई रुढ़ाईआ। तूंही तूंही सारे करन, इक्को इक नाम ध्याईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान आया वरन, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आत्म परमात्म परमात्म आत्म नार कन्त श्री भगवन्त, नाता बिधाता दिवस राता घड़ी पल आपणे नाल जुड़ाईआ।

* १७ माघ २०२० बिक्रमी मुनशा सिँघ ज्ञान सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर *

श्री भगवान धुर दी सिख्या, निरगुण निरवैर आप जणाइंदा। आदि जुगादी अगम्मी भिच्छया, बेपरवाह आप वरताइंदा।

पूरी कर कर सब दी इच्छया, आसा मनसा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची भिच्छया दे निरँकार, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। भिच्छया अन्दर शब्दी धार, सुत दुलारा इक प्रगटाईआ। भिच्छया अन्दर खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। भिच्छया अन्दर थिर घर दरबार, नर निरँकारा आप उपाईआ। भिच्छया अन्दर दे भण्डार, धुर दी झोली इक भराईआ। भिच्छया अन्दर विष्नूं पसार, विश्व आपणा भेव खुल्हाईआ। भिच्छया अन्दर ब्रह्म पसार, वड पसारी वेख वखाईआ। भिच्छया अन्दर शंकर धार, धूंआँधार दए वड्याईआ। भिच्छया अन्दर सुन अगम्म अखाड़, हरि करता आप लगाईआ। भिच्छया अन्दर ज़िमी असमान, धरत धवल आप रखाईआ। भिच्छया अन्दर रवि ससि उज्यार, भिच्छया अन्दर मण्डल मण्डप बणत बणाईआ। भिच्छया अन्दर निरगुण सरगुण कर पसार, हरि करता वेख वखाईआ। भिच्छया अन्दर लख चुरासी बन्न धार, त्रै पंज दए समझाईआ। भिच्छया अन्दर प्रगट कर गुरू अवतार, जुग चौकड़ी रंग वटाईआ। भिच्छया अन्दर पीर पैगम्बर दे अधार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। भिच्छया अन्दर भगत भण्डार, हरि आपणा नाम वरताईआ। भिच्छया अन्दर सन्त दुलार, सुख सागर विच रखाईआ। भिच्छया विच गुरमुख गुर गुर मीत मुरार, अंक सुहेला नज़री आईआ। भिच्छया अन्दर गुरमुख लए उठाल, सिर आपणा हथ्थ उठाईआ।

४०१

१६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया आप वरताईआ। साची भिच्छया आपणा नाम, हरि करता आप जणाईआ। साची भिच्छया धुर दा जाम, अमृत प्याला इक वखाईआ। साची भिच्छया ब्रह्मण्ड खण्ड बणाए धाम, अस्थान भूमका आपणा भेव जणाईआ। साची भिच्छया नाउँ निरँकार प्रगटाए राम, लोकमात दए वड्याईआ। साची भिच्छया कलमा नबी रसूल दए पैग़ाम, आयत इक्को इक जणाईआ। साची भिच्छया देवणहारा सतिनाम, सति सतिवादी खेल रचाईआ। साची भिच्छया पुरख अकाल, दीन दयाल इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह आपणी धार वखाईआ। साची भिच्छया आदि जुगादि, हरि करता आप वरताइंदा। साची भिच्छया सच ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा रंग रंगाइंदा। साची भिच्छया शब्द नाद, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। साची भिच्छया सन्त साध, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त आपणी भिच्छया इक वरताइंदा। साची भिच्छया श्री भगवान, कलयुग आपणी आप वरताईआ। लहिणा देणा जाण दो जहान, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। कोटन कोटि प्रगटाए आपणे नाम, नित नवित्त सदा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक अख्वाईआ। साची भिच्छया करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस

निवाईआ। जुग चौकड़ी वेखे चार, नित नवित्त तेरी सेव कमाईआ। वंड वंड झोली पाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। भिच्छया कहे मैं मंगां मंग, मांगत दर ते आईआ। जुग चौकड़ी वरतीं प्रभू स्वांग, बाज़ीगर आपणी खेल वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी सारे रखदे गए तांघ, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख लिखाईआ। भिच्छया कहे मेरी वंडां वंड, वंडणहारे तैनूं तरस क्यों ना आईआ। खेल कर विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड रचन रचाईआ। लेखा जाण जेरज अंड, उत्भुज सेतज आप वरताईआ। गुर अवतारां दे अनन्द, शब्दी कलमा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, दूजी ओट रहे ना राईआ। भिच्छया कहे मैं होई भिखारन, दर दर घर घर फेरा पाईआ। तेरे नाम कोटन कोटि लै लै पुकारन, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अक्खरां नाल बणदी रही वगारन, पत्थरां वेखी भेंट चढ़ाईआ। अन्तिम आएयों पैज संवारन, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे चुकाईआ। भिच्छया कहे मेरा लेखा जाए चुक, लहिणा रहिण कोए ना पाईआ। वंड वंडदी मेरा हिस्सा जाए मुक, घर सच्चा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कर किरपा दे दे थोक, परचून हट्ट ना कोई चलाईआ। साहिब सतिगुर निर्मल जोत, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैं सद वसी तेरे इक्को सचखण्ड सच्चे कोट, दूजा घर ना कोए बणाईआ। दीनां मज़्हबां विच झगड़ा कीता रोज़, ज़ात पात विच करी लड़ाईआ। तूं वंडां पा के बैठा रिहों ख़ामोश, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैं बैठी बण दोष, निर्दोषी दोष लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सोचदी रही सोच, अन्तर डर डर वेख वखाईआ। कवण वेला प्रभ पूरी करे मेरी लोच, तृष्ना दुःख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए मुकाईआ। भिच्छया कहे मेरे निरँकार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। इक्को दे सच प्यार, प्रीती आपणे नाल लगाईआ। भण्डारा दे सर्ब संसार, लख चुरासी जीव तृप्त कराईआ। अग्गे होवां ना फेर ख्वार, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड फेरा पाईआ। दर वेखां तेरा इक दरबार, दरगाह साची चाईं चाईंआ। जिस गृह वसे आप निरँकार, निरगुण आपणा आसण लाईआ। तूं दाता दानी देवणहार, आदि जुगादि तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए पुकार, होका दे दे रहे जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, करे खेल अपार, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं मन्नदे गए सांझा यार, लाशरीक नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगार, बेऐब करे रुशनाईआ। निरगुण निरवैर होए उज्यार, नेहकलंका नाउँ धराईआ।

वेद व्यासा कर पुकार, धुर दा लेखा गया जणाईआ। नानक गोबिन्द लेखा लिख्या अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पुरख अगम्मा आवे आपणी धार, ना कोई जन्मे पिता माईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, महल अटल कर रुशनाईआ। साची भिच्छया कहे मैनूं लै के जाए नाल, आप आपणे संग रखाईआ। सृष्ट सबाई वेख हाल, दहि दिशा खोज खुजाईआ। सदी बीसवीं हो दयाल, दयावान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए चुकाईआ । भिच्छया कहे मेरी आसा पूरे, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग नाता तोड़े कूड़े, सच सुच्च इक वरताईआ। दर दर वज्जण अनहद तूरे, धुर दा राग सुणाईआ। प्रगट होवे हाज़र हज़ूरे, हरि हज़रत नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। भिच्छया कहे मंगां भिख्या, भिखक रूप वटाईआ। पारब्रह्म ओह लेखा कढु लिख्या, जिस दा रूप नज़र कोए ना आईआ। अक्खरां विच किसे ना दिस्सया, कलम छाही ना बंद कराईआ । हथ्थां नाल ना जाए भिटया, कूड़ा रंग ना कोए चढ़ाईआ। जिस दा नूर इक्को चिटया, सति सफेदी धार वहाईआ। सच दवारे जिस नूं रख्या, सचखण्ड ल्या टिकाईआ। जिस गृह मन्दिर स्वामी आपे वसया, सच सिँघासण डेरा लाईआ। मेरा लेखा वखाल हथ्थो हथ्या, दर ठांडे मंग मंगाईआ। मैं नेत्र वेखां अक्खीआं, लोचण मेरा इक खुल्हाईआ। मैं जा के दस्सां सखीआं, जो गुरमुख रूप नज़री आईआ। मैनूं लभ्भण ना जाए कोई विच्चों हट्टीआं, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, भिच्छया हक़ ना कोई वरताईआ। मैं वस होई इक्को कमलापतीआ, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। निर्धन हो के ओस दी चरणी ढठ्ठीआ, माण अभिमाण नज़र कोई ना आईआ। मेरी कीमत कोई ना पावे तोले माशे विच रतीआं, तक्कड़ कंडे ना कोई चढ़ाईआ। लेखा लेख लिखे ना उते फट्टीआं, दूजी गणत ना कोई गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, मेरा लेखा पूर कराईआ। पहला लेखा फोल भगवान, बिन अक्खां वेख वखाइंदा। भिच्छया शब्द मेला मिल्या आण, हरि करता भेव चुकाइंदा। जुग जुग जींआं विच वंडदा रिहा दान, निक्का निक्का रूप वखाइंदा । अन्तिम सारे इकट्ठे कीते आण, बचया रहिण कोई ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बैठे विच मकान, मन्दिर इक्को इक वखाइंदा। कलमा नबी रसूल मन्न के गए ईमान, हकीकत विच सीस सर्ब निवाइंदा। तेरा लेखा तेरे हथ्थ मेहरवान, अग्गे हुक्म ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल कराइंदा। भिच्छया वेख खेल लिख्या, हरि लेखक दए जणाईआ। जुग चौकड़ी दिसे मिथ्या, थिर कोई रहिण ना पाईआ। हरि का खेल सदा अनडिठया, अनडिठड़ी कार कमाईआ। कलयुग वेला अन्तिम बीतया, चौकड़ी भज्जी वाहो दाहीआ। प्रभ सब दे ख़ाली कीते खीस्सया,

वस्त अमोलक आपणी आपे झोली पाईआ। किसे दवारयों किसे कोई ना मिले भिच्छया, भिच्छया देण वाला दाता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी आप कमाईआ। भिच्छया किहा मैं करां करां अर्ज़, प्रभ सच्चे सीस निवाईआ। धन्न भाग जे पूरा करे फ़र्ज, प्रभ वेला वक्त सुहाईआ। मेरी लेखे लौणी गरज़, तृष्ना कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल आप मनाउँदा ए। धुर भरवासा इक रखाउँदा ए। भिच्छया तेरा नेत्र नैण खुलाउँदा ए। अक्खीं वेख्या सब कुछ समझाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर, हरि सरनाई सीस निवाउँदा ए। पिछला छड्डुया जगत अडम्बर, नाता मात ना कोई रखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को इक वडयाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाउँदा ए। सच संदेसा इक्को इक अलाउँदा ए। जुग चौकड़ी जो करया वेसा, तेरा हुक्म सीस झुकाउँदा ए। प्रभ ठाकर इक नरेशा, शहिनशाह इक्को इक मनाउँदा ए। पुरख अकाल जो तेरी भिच्छया, साडी झोली उह पाउँदा ए। मैनूं कीती भेंटा, आपणे ख़ाली हथ्थ रखाउँदा ए। गोबिन्द पुरख अकाल तेरा इक्को धुर दा बेटा, जिस दे हथ्थ सर्ब फड़ाउँदा ए। पूरब लिख्या रखे चेता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। गुर अवतारां आख सुणाउँदा ए। पीर पैगम्बरां मेट मिटाउँदा ए। चार जुग दी भिच्छया कर के इकट्ठी, इक्को घर बहाउँदा ए। धुर दी दे के साची मती, मति इक्को इक जणाउँदा ए। सच दरबार खोल्ही हट्टी, हटवाणा हरि जू हट्ट चलाउँदा ए। सृष्ट सबाई करना पक्खी, पक्ख इक्को इक वखाउँदा ए। वस्त अमोलक देवां हथ्थीं, दूजा संग ना कोई रलाउँदा ए। मातलोक जावे नट्ठी, अद्ध विचकार ना कोई अटकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा ए। पुरख अकाल आप सेवा लाउँदा है। भिच्छया धुर दी आप अलाउँदा ए। लोकमात राह वखाउँदा ए। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग तेरा संग रखाउँदा ए। जा के दस्स अगम्मी बात, जो पुरख अकाल पढ़ाउँदा ए। लख चुरासी इक्को नात, दूजी वंड ना कोई वंडाउँदा ए। हर घट अन्दर प्रभ दी खाट, घर घर आपणा डेरा लाउँदा ए। दर दर अमृत देवे बूँद स्वांत, निझर झिरना रस झिराउँदा ए। मन्दिर वसे बहि इकांत, सोभावन्त सोभा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया आप समझाउँदा ए। जन भगतां उपर जाणा तुठ, हथ्थ तेरे वड्याईआ। निरवैर हो के करना रुख़, भज्जणा वाहो दाहीआ। ओहनां जा के घर घर पुच्छ, जो मेरा नाम ध्याईआ। डूंघी भँवरी जाणा लुक, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर सोभा पाईआ। निउँ के सजदा करना

झुक, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक जणाईआ। साची भिच्छया हो त्यार, त्रैगुण अतीता आप कराइंदा। तेरी वंडां वंड इक अपार, दूजा हिस्सा ना कोई रखाइंदा। लख चुरासी करना इक प्यार, चारे खाणी तेरा मेल मिलाइंदा। चारे बाणी दे अधार, चारे जुग संग वखाइंदा। चारे वरनां खोल् किवाड़, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा संग वखाइंदा। सृष्ट सबाई दस्स बोल इक जैकार, नाअरा हक़ हक़ सुणाइंदा। आत्म परमात्म दे अधार, तेरा मार्ग इक्को लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सेवा इक वखाइंदा। भिच्छया कहे मैं उठ के जावांगी। श्री भगवान तेरे चरणां सीस निवावांगी। लोकमात लै फ़रमाण, जीव जंत सर्ब सुणावांगी। पुरख अबिनाशी होया मेहरवान, ढोला इक्को इक गावांगी। आत्म परमात्म देवे माण, ब्रह्म पारब्रह्म अलावांगी। जीव जंत सुणो करो ध्यान, होके दे दे आख सुणावांगी। इक्को भिच्छया दिती सृष्ट सबाई धुर दा दान, वस्त अमोलक इक वखावांगी। रल मिल सारे गाओ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं बण विचोलण सचखण्ड दुआर मिलावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तेरे सहारे सेव कमावांगी। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सिर आपणा हथ्थ रखाउँदा ए। धुर संदेसा इक सुणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाउँदा ए। सारे रल मिल करन अदेस, सीस इक्को दर वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक सुणाउँदा ए। साची सिख्या इक समझाउँदा ए। पुरख अबिनाशी खेल रचाउँदा ए। धुर दी भिच्छया इक्को वार वरताउँदा ए। ना कोई मेटे हरि दा लिख्या, लेखा इक्को इक जणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया आप वरताउँदा ए। साची भिच्छया सोहँ सो, सर्ब कला समरथ स्वामी आप वरताईआ। लख चुरासी नालों कर निरमोह, मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। आत्म परमात्म जाए छोह, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। घर प्रकाश करे लो, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। बीज अगम्मी देवे बो, पत डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया आपे झोली पाईआ। आपणी भिच्छया दे भगवान, जन भगतां दए वड्याईआ। छब्बी पोह मेट निशान, निशाना गुरमुख लए रखाईआ। आपा कर के बलीदान, बल भगतां रिहा प्रगटाईआ। दाता बण श्री भगवान, दयावान दया रूप वखाईआ। भिच्छया अन्दर भिख्या दान, भिख्या विच्चों भिच्छया आप हो जाईआ। जिस दी करे ना कोई पहचान, रूप रंग ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां भिच्छया पा झोली, तन माटी ख़ाक रंगाईआ। तन रंगीला सोहणी डोली, हरि ठाकर बणत बणाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर रुत्त बसन्ती साची मौली, पत टहिणी

फुल मुसकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिख्या पा के दस्सी बोली, सोहँ नाम जणाईआ। सो कहे मेरी भिख्या अटल, आदि जुगादि ना कोई मिटाइंदा। हँ कहे मेरा वध्या बल, बलधारी दया कमाइंदा। दोहां मसला होया हल्ल, आत्म परमात्म इक्को घर नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी पिच्छों पुरख अकाल दित्ता फल, अमृत रस झोली पाइंदा। साहिब सतिगुर पुरख स्वामी भिच्छया जाए बलि बलि, बलिहारी घर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ख़ाली भण्डारे देवे भर, भरपूर आपणी मेहर नज़र कराइंदा।

* १७ माघ २०२० बिक्रमी उजागर सिंघ दे नवित्त पिण्ड चेबे ज़िला गुरदास पुर *

भिच्छया कहे मेरी पूरी मंग, पुरख अकाल अन्त कराईआ। मैं कोझी कमली चाढ़ रंग, सोहणी बणत बणाईआ। मेहरवान हो के दित्ता अनन्द, रस आपणे विच्चों चुआईआ। जन भगत बणाया संग, सगला साथ वखाईआ। आ के वेख्या मिल्या परमानंद, निज आत्म वज्जी वधाईआ। दो जहानां हो के सुणया छन्द, सोहँ ढोला रहे गाईआ। आदि जुगादि एह मंगी मंग, प्रभ इक्को आपणा नाम दए समझाईआ। मेरे टुक्कड़े ना करीं वंड, खण्ड खण्ड ना रूप वटाईआ। तेरी रहमत जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज तेरा नूर नज़री आईआ। दीन दयाल सहिब बख़्शंद, बख़्शिश तेरी वड वड्याईआ। लेखे लग्गे ब्रह्म हँ, पारब्रह्म विच समाईआ। तेरी डोरी तेरा तन्द, ताणा पेटा तूही नज़री आईआ। तेरा नाद तेरा मृदंग, ढोल नगारा तेरा रूप वखाईआ। तूंही सूरबीर सरबँग, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, मेरी आसा पूर कराईआ। भिच्छया कहे मोहे चढ़या चा, घर वज्जी सच वधाईआ। परम पुरख प्रभ बण मलाह, मेरा बेड़ा दित्ता तराईआ। जन भगतां नाल मेरी सलाह, दूजे घर ना मंगण जाईआ। जो इक्को नाम रहे ध्या, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। खहिड़ा छुटया जल थल अस्गाह, टिल्ले पर्बत खोजण खोज ना कोई वखाईआ। मैं ओहनां पकड़ां बांह, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। सदा हरिसंगत विच रहां, रह रहि खुशी मनाईआ। साचा ढोला मिल के कहां, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेरी बणत बणाईआ। भिच्छया कहे मेरी आसा पुन्नी, मेहरवान दया कमाईआ। मेरे सिर ते ओढण सालू दित्ता साची चुन्नी, पर्दा आपणा नाम रखाईआ। मेल मिलाया गहर गम्भीर वड गुण गुणी, गुणवन्त दिती सरनाईआ। लख चुरासी विच्चों उत्तम श्रेष्ट गुरमुख गुरसिख मिले वड मुनी, मुनी मुनीशर सार कोई ना पाईआ। जिन्हां अन्दर धुन आत्मक नाद वज्जे अगम्मी धुनी, छत्ती राग वेख वेख

बिगसाईआ। सहिब सतिगुर प्यारे मेरी सुणी, दूर दुराडा चल के नेड़े आया मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। भिच्छया कहे मेरा चुक्कया लेखा, बाकी नज़र कोए ना आईआ। पिछलयां भुल्लया सारा चेता, अग्गे खुशी इक्को इक वखाईआ। साध सन्त मेरा चुक्के ना कोई ठेका, बोली दे ना बोल चढ़ाईआ। मैं जन भगतां अन्दर करां वसेबा, घर बहि बहि खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिती माण वड्याईआ। भिच्छया कहे मैं होई भरपूर, प्रभ पूरन दया कमाईआ। जिस भिच्छया पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, मनसा आपणी इक वखाईआ। जिस भिच्छया विच्चों किनका मिल्या इक कोहतूर, सो मूँह दे भार सुटाईआ। जिस भिच्छया पिच्छे पीर पैगम्बर होए मज़दूर, दर घर साचे सेव कमाईआ। जिस भिच्छया विच्चों साहिब सतिगुर दा चले दस्तूर, पुरख अकाल आपणा राह वखाईआ। सो भिच्छया जन भगतां भाण्डे करे भरपूर, ख़ाली नज़र कोई ना आईआ। ग़रीब निमाणे तोड़ गरूर, निवण सो अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे निमाणी दर कीता मशकूर, मुश्किल मेरी हल्ल कराईआ। भिच्छया कहे प्रभ वड्डा ठाकर, जिस ठेकेदारी ख़त्म कराईआ। दर आई दे आदर, जन भगतां संग मिलाईआ। सिर टिका चिटी चादर, दुरमति मैल दाग़ धवाईआ। मेरी मंग मंगी गुर तेग बहादर, भेंटा आपणा आप चढ़ाईआ। मेरी मंग मंगी गोबिन्द विच सरसा सागर, सच आरज़ू इक सुणाईआ। मैं अंग लग्गी ओस करीम कादर, जिस हथ्थ सर्ब वड्याईआ। मेरा निर्मल कर्म कीता उजागर, लोकमात करी रुशनाईआ। जन भगतां संग कर के आदल, अदल विच मोहे दित्ता वरताईआ। मैं आपणी धार लई बदल, पहला रूप ना कोई वखाईआ। जन भगतां नाल मिल के मेरी पूरी होई मज़ल, अग्गे पन्ध नज़र कोए ना आईआ। जो साहिब महिबूब दी गावन इक्को ग़ज़ल, वाहिद नाम ध्याईआ। मैं ओहनां आई बगल, बगलगीर हो के झट्ट लँघाईआ। पहली वार जन भगत दवारे मुख लगावां सगन, साची खुशी रखाईआ। जिस नूं जगत जहान कैहन्दा पागल, मूर्ख मुग्ध शौदाईआ। सो चेबयां विच्चों सद्द के लयांदा आपणे चरण, सरन दिती वड्याईआ। निमस्कार सारे करन, उजरत लेखा दित्ता मुकाईआ। सारी संगत नाल कीता प्रण, श्री भगवान आपणी इच्छया प्रगटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसंगत सन्त सुहेले जो सोहँ ढोला पढ़न, सो सर्ब सरबत आपणे लेखे लाईआ। उजागर सिंघ चलया चन्द, मुखड़ा सोहणा नूर चमकाईआ। बख्शिश कहे मैनूं कर के गढ़वी विच बंद, घुट्ट के डोरी लए बंधाईआ। रावी कन्ढा कन्ढी गहिण विच्चों आया लँघ, चलया वाहो दाहीआ। गुर अर्जन मंगी मंग, खुशीआं नाल सुणाईआ। मेरा प्रेम प्यारा लै जा संग, जो बैठा राह तकाईआ। पुरख अकाल सोभे सेज सुहञ्जणी पलँघ,

घर गुरमुखां डेरा लाईआ। ओस दे अग्गे देवीं रख, अक्ख नाल समझाईआ। जे प्रभू मेरा प्रतख, तैनूं कोझे कमले दए वड्याईआ। ओह वेला याद रख, जिस वेले तत्ती लोह बैठा अग्नी डाहीआ। तूं डरदे डरदे मंगी इक मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मैनूं लै चल आपणे नाल निसंग, मैथों दुःख झल्लया ना जाईआ। कर किरपा साहिब सतिगुर शांत सरूप हथ्थ रख्या उते कंड, पंजे नाल समझाईआ। मेरा साहिब सतिगुर सदा बख्शंद, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। तेरी टुट्टी फेर मेरे नाल देवे गंढ, रावी कन्ढे जोड़ जुड़ाईआ। मैं वी ओसे कोलों रिहा मंग, जो सब दा पिता माईआ। ओसे कारण श्री भगवान गुर प्रसादि प्रसादि हरिसंगत विच दए वंड, जिस विच वंड नज़र कोए ना आईआ। भिच्छया लैण वासते कोटन कोटि खड़े ब्रह्मण्ड, देवत सुर ध्यान लगाईआ। धन्न भाग जे प्रभ इक कणका दे के पावे ठंड, अग्न दो जहान ना कोए तपाईआ। साहिब श्री भगवान बख्शंद, शब्दी शब्द सब नूं दात रिहा वरताईआ। प्रेम रस मुख लगा दन्द, सारे खुशीआं नाल सोहँ ढोला गाईआ। आ घुट्ट के पाईए जफ्फी, खुशीआं रंग वखाईआ। तेरी प्रीती लग्गी अच्छी, सोहणा रूप वटाईआ। नाता जुड़या जिउँ जल मीन मच्छी, तड़फ तड़फ ना होए कदे जुदाईआ। प्रेम धार होई कट्टी, वंड सके ना कोई वंडाईआ। तेरी तपदी कीती ठंडी भट्ठी, अमृत मेघ बरसाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साहिब सतिगुर बण के कमलापती, कमला रमला झल्ला आपणे लेखे लाईआ।

४०८ १६

* १८ माघ २०२० बिक्रमी सिम्मल सकोर नूं जांदयां रावी दे कन्ढे ज़िला गुरदास पुर *

हरिगोबिन्द हरि की आसा, मनसा अनभव भेव चुकाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहार पुरख समराथा, साहिब सतिगुर दया कमाइंदा। आर पार बण के राखा, दो जहानां सेव कमाइंदा। पार कन्ढी अर्जन पुछे वातां, बिधाता वेख वखाइंदा। भठियाला चल के आया साथा, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। पाणी सरवर मारे ठाठां, लहर लहर विच्चों प्रगटाइंदा। सोहणा वेख पूरब घाटा, तट किनारे डेरा लाइंदा। भुल ना जाए पहली दादा, अभुल आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच किनारे सोभा पाइंदा। तट किनारा आर पार, जल धार वेख वखाईआ। हरिगोबिन्द हरि प्यार, अर्जन लेख चुकाईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, साहिब सच गुसाईंआ। तत्ती तवी दे अधार, सीतल धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। हरिगोबिन्द धार हरि हरि मेला, मेल मिलाप इक जणाईआ। सोहणा सुहञ्जणा होए वेला, थित वार मिले वड्याईआ। पुरख अकाल निरगुण हो के मैनूं मिले अकेला, निरवैर

आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां बण सज्जण सुहेला, सच्चा संग वखाईआ। लँघ के आए टिल्ले जगत काही काना बेला, बेली आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए चुकाईआ। साचा लेखा वीह सौ उन्नी बिक्रमी, आर कन्ढी दया कमाइंदा। धुर दी वंड फेर वंडी, अर्जन लेख वखाइंदा। दोहां लाई इक पाबंदी, श्री भगवान हुक्म आपणे सिर टिकाइंदा। हरिसंगत संग रखाए चंगी, जिन्हां चंगी तरां आपणा आप समझाइंदा। सृष्ट सबाई कर के अन्धी, कूड़ी क्रिया सर्ब रुलाइंदा। किरपा कर जलधार नैं लँघी, पार किनारा आप वखाइंदा। करे खेल साहिब बहुरंगी, अनडिठड़ा रंग चढ़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आर पार विच मँझधार दो जहान ना होवे तंगी, खादयां पींदयां लेखा पार कराइंदा। लख चुरासी विच्चों लेख चुकाए ख़ानाबंदी, बंदी छोड़ होए सहाईआ। पिता पूत खेल भुयंगी, तव प्रसादि दए वड्याईआ। सच वस्त अमोलक धन पदार्थ नाम वंडी, गुरमुखां मण्डा मण्डा रसना नाल खवाईआ। हरिगोबिन्द गुरु गुर देव अर्जन एह मंग कन्ढी दवारे मंगी, साहिब सतिगुर पूरी दए कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वेखी भूमका सोहणी चंगी, जिस उपर हरिगोबिन्द गया चरण टिकाईआ।

* १८ माघ २०२० बिक्रमी बचन सिँघ दे घर पिण्ड सिंमल सकोर ज़िला गुरदास पुर *

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, सति सतिवादी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण राज राजान, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाइंदा। एकँकारा नौजवान, बलधारी बल प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता वेखे मार ध्यान, मेहरवान आपणी अक्ख खुल्हाइंदा। श्री भगवान हुक्मरान, दो जहानां हुक्म चलाइंदा। पारब्रह्म हो मेहरवान, सच प्रधानगी इक कमाइंदा। तख्त निवासी खेल महान, शाह पातशाह शहिनशाह आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। निरगुण धार हरि निरँकार, निरवैर वड्डी वड्याईआ। सच दवारा खोल्ह किवाड़, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। सचखण्ड दवारे श्री भगवान, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। तख्त निवासी नौ जवान, डंका आपणा नाम वजाइंदा। सच संदेसा देवे फ़रमाण, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे करे सच वखाए चरण ध्यान, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी साची कार कमाइंदा। धुर संदेसा श्री भगवन्त,

हरि करता आप जणाईआ। नेत्र खोल्ह भगत सन्त, पुरख अकाल रिहा दृढ़ाईआ। गुरमुख वेखो महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। गुरसिख बणदी साची बणत, पारब्रह्म होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म विश्व धार, हरि विष्नूं आप जणाइंदा। ब्रह्मा करे ख़बरदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। शंकर देवे इक हुलार, भोला नाथ सेव लगाइंदा। करोड़ तेतीसा दे अधार, सुरप्त इन्द आप जणाइंदा। लेखा जाणे गुरू अवतार, तेई अवतारां मेल मिलाइंदा। भगत अठारां कर त्यार, सोभावन्त आप सुहाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण अक्ख उग्घाड़, धुर दा कलमा राग अल्हाइंदा। नानक गोबिन्द दे अधार, सच दवारा इक वखाइंदा। चारे बाणी पावे सार, शास्त्र सिमरत फोल फुलाइंदा। पुराण अठारां कर प्यार, अट्ठ दस गीता ज्ञान जोड़ जुड़ाइंदा। अञ्जील कुरान कर विचार, साचा मेला जगत मिलाइंदा। खाणी बाणी बोल जैकार, धुर दा राग समझाइंदा। सारे इकट्ठे होवो इक दरबार, श्री भगवान साचा घर वखाइंदा। जिस गृह उपजी साची धार, रूप रंग रेख नज़र कोई ना आइंदा। जुग चौकड़ी करदे रहे सेवा सेवादार, सेवक आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते कई वार, कोटन कोटि काल विहाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, लख चुरासी जीव जंत सेव कमाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात करदे रहे विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ नेड़े, हरि करता आप जणाईआ। पुरख अकाल दे वसो खेड़े, परवरदिगार इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी पिछले छड्डो झेड़े, अगला मार्ग इक समझाईआ। दीन मज़्हब लोकमात अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लाए डेरे, दर दर बैठा अलख जगाईआ। भरमे भुले गुरु गुर चेरे, चेला गुर समझ कोए ना आईआ। परम पुरख दे कोई ना वड़े वेहड़े, साचा मन्दिर ना कोई सहाईआ। सब दे काया उजड़े खेड़े, सच किवाड़ी खिड़की बज़र कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया करदे झेड़े, काम क्रोध लोभ मोह जगत हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्म इक्को इक समझाईआ। साचा हुक्म धुर संदेसा, सोहँ सो आप जणाईआ। पुरख अकाल वड नरेशा, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी धरे वेसा, गुर अवतार नाउँ प्रगटाईआ। सब दा रखे आपणे हथ्थ लेखा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा खेल खेडां, दो जहानां आपणा राह चलाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के आपणा दस्से भेता, बाहरों करे ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर मारो मात ध्यान, दो जहानां वाली आप सुणाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप शरअ होई शैतान, सच ईमान नज़र कोए ना आइंदा। आत्म

परमात्म करे ना कोए पहचान, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना कोई खुल्हाइंदा। दीन मज़्हब ना जाणे कोई इस्लाम, इस्म आज़म वेख ना कोई वखाइंदा। कलमा हक़ ना जाणे कलाम, हिरदे राम ना कोई वसाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो दे के आए पैग़ाम, धुर संदेसा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म गुरू अवतार, पीर पैगम्बर प्रभू जणाईआ। कलयुग अन्तिम करो विचार, सारे नैण उठाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, दीपक जोत ना कोई रुशनाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, दहि दिशा रही कुरलाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ साचा करे ना कोई प्यार, आत्म अन्तर हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुल्लां शेख़ मुसायक करन ख्वार, ख़ालक ख़लक सके ना कोई मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा उत्तों सब दा गया एतबार, सच भरोसा नज़र कोए ना आईआ। दर दर घर घर नेत्र वेखो हुन्दा हराम, धीरज जगत ना कोए जणाईआ। धुर दा हुक्म भुल्ले कलाम, शब्द राग धुन ना कोई शनवाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैणां सर्ब वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्को जग, लोकमात ध्यान लगाईआ। नव नौ चार वेखी लग्गी अग्ग, त्रैगुण माया रही तपाईआ। सृष्ट सबाई हँस होई कग, सोहँ हँसा जाप ना कोई जपाईआ। प्रभ दा दर्शन कोई ना करे उपर शाह रग, नौ दवारे भरम भुलाईआ। साचे हुजरे मिले किसे ना हज्ज, काया कअबा खोज ना कोई खुजाईआ। अठसठ तीर्थ रहे भज्ज, आत्म सरोवर नहावण कोए ना आईआ। रसना जिह्वा पी पी थक्के मदि, अमृत जाम प्याला निझर झिरना ना कोई झिराईआ। साची क्रिया जीव जंत साध सन्त सारे गए छड्ड, लिव छुटकी फिर ना कोए लगाईआ। वरनां बरनां ज़ातां पातां अन्दर वड़ के हो गए अड्ड, साचा संग ना कोई निभाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली हड्ड, तिन्न सौ सट्ठ नाड़ी रही कुरलाईआ। मन वासना रही नच्च, मन कामना ना कोई भवाईआ। बुद्धि बोले ना कोई सच्च, सति सतिवादी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैणां सर्ब वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्कण लोकमात, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सच वस्त ना किसे पास, गुरमुख रूप ना कोई वटाईआ। सब नूं भुल्लया लेखा लिख्या जो कलम दवात, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। कूड़ी क्रिया कायनात, जूठा झूठा रंग रंगाईआ। कोई ना देवे प्याला आबेहयात, अमृत रस ना कोई चखाईआ। आत्म परमात्म बणाए ना कोई साथ, सज्जण यार जगत रहे हंढाईआ। अनहद ढोला धुर दा राग कोई ना गाए गाथ, आत्मक नाद ना कोई वजाईआ। रूह बुत्त करे ना कोई पाक, पतित पुनीत रूप ना कोई वखाईआ। चारों कुण्ट उडे ख़ाक, ख़ालस रूप ना कोई वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। गुर अवतार होए हैरान, धरत धवल वेख वखाईआ। सुंञा दिसे ज़िमी असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड कुरलाईआ। चारों कुण्ट कूड़ फिरे प्रधान, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। हरि का नाम मिले ना कोई निशान, साचा मन्दिर ना कोई सुहाईआ। सिदक सबूरी नज़र ना आए ईमान, धीरज धर्म ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोलो अक्ख, हरि इक्को हुक्म जणाइंदा। लोकमात वेखो प्रतख, कवण श्री भगवान आपणा मीत बणाइंदा। जो वेख्या सो देणा दस्स सच्च, श्री भगवान इक्को मंग मंगाइंदा। पुरख अकाल जाए तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच्चा पुत्त, पूत सपूता नाउँ प्रगटाइंदा। जिस गृह मौले प्रभ दी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। चारों कुण्ट वेखो गुट्ठ, दहि दिशा आप समझाइंदा । कवण निशान्यौं रिहा उक, कवण अणयाला तीर चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन्त, हरि करता आप जणाईआ। उठ के वेखो साजण सन्त, कवण बैठा ध्यान लगाईआ । कवण ढोला राग गाए मणीआ मंत, अक्खर इक्को इक राह तकाईआ। कवण नारी सेज हंढ्ढाए कन्त, सुहागण हो हो ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार ध्यान लगाउँदा ए। पीर पैगम्बर अक्ख खुलाउँदा ए। लोकमात वेख वखाउँदा ए। भेव अभेद सर्ब जणाउँदा ए। लख चुरासी लग्गी कूड़ी खेड़, ख़ालक ख़लक मिलण कोई ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, बिन तेरी किरपा तेरा संग ना कोई निभाउँदा ए। गुर अवतार सर्ब सुणाया ए। पीर पैगम्बर भेव चुकाया ए। चौदां तबक फोल फुलाया ए। चौदां लोक पर्दा लाहया ए। चौदां विद्या वेख वखाया ए। चौदस चन्न ना कोई चमकाया ए। सृष्ट सबाई नेत्र अन्ध, हरि का दरस किसे ना पाया ए। कोटन कोटि इष्ट देव तक्के तन, हथ्थ किसे ना उते टिकाया ए। धन दौलत इकट्ठा कर के जन, साध सन्त आपणा नाम वडयाया ए। कोई ना सुणे आपणा राग बिन कन्न, बिन नेत्रां तेरा दरस किसे ना पाया ए। जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, आपणा दे सच्चा वर, गुर अवतारां आख सुणाया ए। पीर पैगम्बरां जणाउँदा ए। उम्मत नबी रसूलां वेख वखाउँदा ए। सच असूल ना कोई कमाउँदा ए। महिबूब नज़र किसे ना आउँदा ए। उच्च अरूज ना कोई सहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तुध बिन नज़र कोई ना आउँदा ए। गुर अवतार सच सुणाउँदा ए। पुरख अबिनाशी अग्गे सीस निवाउँदा ए। जगदीश तेरा शुकर मनाउँदा ए। जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाउँदा ए। सतिजुग

४१२
१६

त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाउँदा ए। तेरा नाद धुन राग मेरा नाउँ अलाउँदा ए। तैनूं दस्स के कन्त सुहाग, सुरत सवाणी तेरे नाल मिलाउँदा ए। पीर पैगम्बर दे दे बांग, नेत्र रो रो हाल जणाउँदा ए। सब तेरे मिलण दी रख गए तांघ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण जगत गवाह नाल रलाउँदा ए। मसला वेख अञ्जील कुरान, तीस बतीसा आख सुणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम सारे होए हैरान, इक्को वार बोल सुणाउँदा ए। साहिब सतिगुर होई हैरानी, नव नौ चार ध्यान लगाईआ। सति धर्म ना दिसी निशानी, सच सच्च ना कोई समाईआ। शाह सुल्तान मेरे नाल करन बेईमानी, राउ रंक ना कोई वड्याईआ। भरमे भुल्ले वड विद्वानी, मेरी सार किसे ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जगत ज्ञानी, जागरत जोत ना कोई रुशनाईआ। अट्ठ सट्ठ विरोल के पाणी, अमृत धार ना कोए चुआईआ। तेरा अनहद नाद ना सुणी बाणी, धुन आत्मक करे ना कोई शनवाईआ । निर्मल जोत जगे ना कोई महानी, घर घर दीवे बत्ती रहे जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा भेव कोई ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो बीस बीस, हरि बीसा आप समझाइंदा। कल्गीधर इक जगदीश, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। मकंद मनोहर लखमी नरायण ठीक, चतुर्भुज आपणा राह वखाइंदा । आदि शक्ति नूर नुराना पुरख अकाल अतीत, त्रैभवन धनी आपणा दवारा वखाइंदा। परवरदिगार बेपरवाह नूर इलाही लाशरीक, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेखो ठीक, पर्दा उहला सर्ब उठाइंदा। कवण करे धुर प्रीत, श्री भगवान कवण मनाइंदा। कवण जाणे साची रीत, रीतीवान कवण अख्वाइंदा। नाता जोड़ मन्दिर मसीत, काया काअबा खोज खुजाइंदा। कवण घर ठाकर सज्जण लभ्भे मीत, नौ दवारे पन्ध मुकाइंदा। कवण आत्म परमात्म गावे गीत, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। कवण जगत वासना रिहा जीत, हार जीत प्रभ दी झोली पाइंदा। कवण पतित हो पुनीत, पाक रसूल इक मनाइंदा। कवण होए नीचो नीच, बण निमाणा ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आप समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्क के राह, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम अन्धेरा गया छा, सूरज चन्द चांदनी कम्म किसे ना आईआ। दीवा बाती घर मन्दिर सके ना कोई जगा, अन्ध अन्धेर ना कोई गंवाईआ। महल अटल उच्च मिनार सके ना कोई सुहा, इट्टां गारा रहे वड्याईआ। आत्म सेजा कोई ना सके हंढा, घर कन्त ना कोई मिलाईआ। रुत्त बसन्ती सके ना कोई वखा, पतझड़ घर घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, असीं सारे बणीए अन्त गवाह, शहादत सके ना कोई भुगताईआ। शहादत भुगते ना कोई मात, गुर अवतार पीर पैगम्बर मता पकाईआ। कलयुग

कूड़ी क्रिया दिसी जमाइत, साची पट्टी नाम ना कोई पढ़ाईआ। लेखा लिख के दे आए कलम दवात, काग़ज़ छाही धुर दी धार नाम सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरगिार सांझा यार कलयुग अन्तिम वेखे खेल आप तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। सारे ओस दी रखो आस, जो निरगुण निरवैर नज़री आईआ। हउँ सेवक सारे ओस दे दास, बालक रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी देवे साथ, सच्चा संग निभाईआ। आदि जुगादी साहिब सुल्तान पुरख समराथ, हरि दाता इक अख्वाईआ। चरण प्रीती बन्ने नात, बिधाता आपणा मेल मिलाईआ। वाक भविक्ख्त आए आख, आखर धुर दा हुक्म सुणाईआ। लेखा चुके ज़ात पात, दीन मज़्ब ना कोई वड्याईआ। सदी चौधवीं लहिणा देणा चुक्के ख़ात, बीस बीसा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण असीं थक्के, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। नाते तोड़े मदीने मक्के, कबरां विच्चों अवाज़ ना कोई सुणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड सारे छड्डे, गुरूदवारा ना कोई वखाईआ। बण के बालक प्रभू नढ्ढे, दर तेरे सीस निवाईआ। सच दवारा लँघ के पिछली पार कीती हद्दे, हदूद रहिण कोई ना पाईआ। हुक्म अन्दर तेरे बद्धे, दर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी सरनी लग्गे, निउँ निउँ लागण पाईंआ। करोड़ तेतीसा जिस दे हुक्मे अन्दर फिरन भज्जे, नद्धुण वाहो दाहीआ। रवि ससि सूरज चन्न जिस हुक्म अन्दर रखे, मण्डल मण्डप नाल मिलाईआ। ज़िमी असमान जो पर्दा ढके, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सर्ब जीआं प्रभ ठाकर पत रखे, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख असीं होए हक़े बक्के, हक़ हकीकत ना कोई जणाईआ। श्री भगवान तेरे चरणां वल कोई ना तक्के, अक्खरां बैठे सीस निवाईआ। किसे कम्म ना आउँदे दिसदे तत अट्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मति बुध ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार कहिण हथ्थ तेरे डोर, आदि जुगादि तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण सद तेरी लोड़, तुध बिन नज़र कोई ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहे तूं स्वामी सदा जाईं बौहड़, मेहरवान फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ीं घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरे अग्गे किसे चले ना कोई ज़ोर, ज़ाबर रूप ना कोई वखाईआ। मेरा नेत्र फुरना इक्को फोर, फुरने विच सर्ब लोकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अग्गे पिच्छे गुरू अवतार सारे दित्ते तोर, अन्तिम आपणे कोल मंगाईआ। तेरी सारे रखदे गए लोड़, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक समझाईआ। सच संदेसा देवे पुरख अगम्म, हरि करता आप जणाईआ। जा के वेखो महल मुनारे जगत चुबारे छप्पर छन्न, नव नौ चार

खोज खुजाईआ। त्रैगुण माया दौलत ख़ज़ाना वेखो धन, कवण गृह नज़री आईआ। बुध मति वेखो मन, प्रकृती अन्दरों नाल मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना वेखो जन, कूड़ी क्रिया कवण वड्याईआ। आत्म परमात्म चढ़या वेखो चन्न, कवण करे सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार वेखण आउंदे ने। पीर पैगम्बर पन्ध मुकाउँदे ने। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले फोल फुलाउँदे ने। तीर्थ तट किनार वेख वखाउँदे ने। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती डेरा लाउँदे ने। साध सन्त जीव जंत वेखण करन विचार, अन्दर बाहर आपणा ध्यान लगाउँदे ने। साचा करे ना कोई प्यार, प्रीतम प्रीत ना कोई विखाउँदे ने। माया कारन करन बिवहार, नारी रूप ना कोई जणाउँदे ने। चारों कुण्ट होण ख्वार, ख़ालस रूप ना कोई प्रगटाउँदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, बिन तेरी किरपा तेरे नज़र किसे ना आउँदे ने। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। मेहरवान मेहर नज़र इक उठाउँदा ए। धुर संदेस नाल सुणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव महेष नाल मिलाउँदा ए। जा के वेखो इक्को देस, जिस घर हरिजू डेरा लाउँदा ए। निरगुण नूर जोत प्रवेश, पंज तत ना कोई रखाउँदा ए। सम्बल वटाया आपणा भेख, भेखी हो के भेख वटाउँदा ए। नजर आए ना रूप रंग रेख, रंग राग ना कोई जणाउँदा ए। जन भगतां करे हेत, साची करनी कार कमाउँदा ए। शब्द स्नेहड़ा धुर दा भेज, भाण्डा भरम भउ भंनाउँदा ए। आत्म सुहञ्जणी माणे सेज, सच सिँघासण आसण लाउँदा ए। जोती जलवा निरगुण तेज, नूर नूर डगमगाउँदा ए। आदि जुगादि रहे हमेश, जीवण मरन ना कोई रखाउँदा ए। दाता बण के वड नरेश, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाउँदा ए। जन भगतां देवे भेत, पर्दा ओहला आप उठाउँदा ए। निरवैर हो के करे हेत, सच प्रीती मेल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप प्रगटाउँदा ए। हरिजन प्रभू प्रगटाउँदा ए। जुग चौकड़ी वेख वखाउँदा ए। कलयुग अन्तिम मेल मिलाउँदा ए। बिन बाती तेल जोत जगाउँदा ए। बण सज्जण सुहेल संग निभाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी कीता बचन आपणा तोड़ निभाउँदा ए। बचन कीता कौल इकरार, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा जणाईआ। कलयुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण निरवैर खेल कराईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भे लाल, अनमुलड़े हीरे आपणी झोली पाईआ। बण वणजारा शब्द दलाल, सौदा हट्ट इक विकाईआ। वणज करे शाह कंगाल, लहिणा देणा दए वरताईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण सारे भाल, मेल मिलावे थाउँ थाईंआ। आपे पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नाता

तोड़ काल महाकाल, महिमा आपणी दए जणाईआ। कृपानिध दीन दयाल, समुंद सागर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेख वखाईआ। हरिजन सज्जण वेखे निराकार, निरँकार वड्डी वड्याईआ। शब्द सरूपी खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। जोत सरूपी नूर उज्यार, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे बेपरवाहीआ। हरिजन वेखे आप करतार, हरि करता दया कमाइंदा। छप्पर छन्न कर प्यार, बेड़ा बन्न पार कराइंदा। दे दात धन अपार, अपरम्पर आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखण इक्को आइंदा। हरिजन वेखे हरि रघुराया, रघुपत आपणी दया कमाईआ। पांधी हो के पन्ध मुकाया, भज्जे वाहो दाहीआ। नदीआं नाले पार कराया, थल अस्गाह ना कोई अटकाईआ। रोड़े पत्थर चरण टिकाया, माटी ख़ाकी दए वड्याईआ। बिन नेत्र नैण खोल खुशी मनाया, काने काही सोभा पाईआ। भगत मिल मिल ढोला गाया, तूही तूं राग अलाईआ। हरि गोबिन्द गुरु गुर लहिणा देणा झोली पाया, गुर अर्जन लेखा पूर कराईआ। भठियाला त्रैगुण अग्नी विच्चों बाहर कढाया, जन्म मरन रोग मिटाईआ। नेहकर्मी हरि कर्म कमाया, मेहर नज़र नैण उठाईआ। धरनी धरत धवल सुहाया, जिस उपर चरण टिकाईआ। गुरमुख सम्बल वेखण आया, गुर नेत्र चाईं चाईंआ। लख चुरासी विच्चों रखण आया, भव जल बेड़ा पार कराईआ। राए धर्म ना दए सजाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना लए प्रनाया, जमदूत भय ना कोई रखाईआ। चरण प्रीती नाता जोड़ जुड़ाया, ओथे एथे कोई ना सके तुड़ाईआ। सिम्मल सकोर साहिब सतिगुर फेरा पाया, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। चोर हो के चोरी रिहा कमाया, ठग्गी आपणी आपे रिहा जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सचखण्ड दवारे शोर मचाया, उच्ची कूक कूक रहे सुणाईआ। अचरज खेल प्रभ अवर का होर रचाया, भेद अभेव किसे ना आईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाया, घर वज्जे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत वड्याई देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी श्री भगवान, भगत वछल दया कमाईआ। साचा मन्दिर वेख मकान, साडे तिन्न हथ्थ अन्दर सोभा पाईआ। छप्पर छन्न होई हैरान, हरिजू की की खेल वरताईआ। मेरयां कक्खां कीता परवान, लखां ख़ाक विच रलाइंदा। अक्खां नाल दर्शन कीता आण, नेत्र लोचण नैण बिगसाईआ। सुण के इक धुर फ़रमाण, माण ताण कोई रहिण ना पाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले जो मिल के ढोला गान, दो जहान खुशी मनाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण कर ध्यान, नेत्र लोचण नैण सर्ब खुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेख खेल महान, सीस जगदीश सीस आप सर्ब निवाइंदा। नौ सौ चुरानवे

४१७ ४१७

१६ १६

चौकड़ी जुग पिच्छों इक्को ढोला सुणया विच जहान, जिस दा भेव कोई ना आईआ। भगत भगवान दोवें मिल के गाण, नैण नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन तुरदा वेख, जंगल बेला दए दुहाईआ। साडी उडदी वेख बालू रेत, प्रभू तरस कोई ना आईआ। जुग जुग लभ्भदे रहे तेरा भेत, प्रीती सच ना कोई लगाईआ। धरत धवल दी छाती उते लेट, आपणा जीवण रहे बताईआ। की होया तूं सानूं दित्ता भेज, लोकमात रूप वटाईआ। असीं वी मंगदे उहो सेज, जो भगतां रिहा हंढ्ढाईआ। वसे तेरे सच्चे देस, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर लईए वेख, छप्पर छन्न ना कोई वड्याईआ। जिस दवारे बदले रेख, रेखा पिछली देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। काना काही वेख रोंदे पत्थर, पाहन रहे कुरलाईआ। नेत्र नीर वरोलण अथ्थर, हन्झूआं हार बणाईआ । प्रभू कर किरपा साडा लिख दे इक्को अक्खर, जिस अक्खर विच्चों तेरा रूप नज़री आईआ। तेरी चरणी डिगे ढाह के सत्थर, सत्थर यारड़े लए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ । पत्थरां वेख रोवण रोड़े, निक्के निक्के शोर मचाईआ। क्यों साहिब सानूं जल दी धारे रोड़ें, अग्गे पिच्छे धक्का लाईआ। कर किरपा जे आपणे चरण जोड़ें, नाल भगतां दएं वड्याईआ। धन्ने वांग एथे बौहड़े, ओथे तैनूं लभ्भण कोई ना जाईआ। तेरे अग्गे ना कोई ज़ोरे, नीवें हो के सीस निवाईआ। साडे वेख पिछले काग़ज़ कोरे, अगला लेखा दे मुकाईआ। तेरे उते साडी डोरे, दूजा नज़र कोई ना आईआ। समुंद सागर इक्को तूही बौहड़े, दूजा होवे ना कोई सहाईआ। तेरे मिलण दी लग्गी औड़े, नदीआं जल अस्गाह साडी तृखा ना कोई बुझाईआ। निरवैर चढ़ के आ घोड़े, कदम कदम पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दे माण वड्याईआ। रोड़े वेख रोवे झाड़ी, टाहणी रही कुरलाईआ। मेरी किस्मत क्यों लिखी माढ़ी, विच कंडयां डेरा लाईआ। मैं सुणयां तूं भगतां नाल निभावें यारी, लग्गी प्रीती तोड़ निभाईआ। एसे कर के आई तेरे अगाड़ी, निउँ के सीस निवाईआ। खुशीआं नाल फेरां बहारी, आपणी सेव कमाईआ। मैं अद्ध वाटन खड़ी कचज्जी नारी, सोभावन्त रूप ना कोए वटाईआ। मैं सुणयां तूं ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दए अधारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आवण जावण मरन जन्म दी मेरी कट बीमारी, उत्भुज देवे कूक दुहाईआ। दोए जोड़ तेरे प्रभ चरण निमस्कारी, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस लगाईआ। वेख झाड़ी कूके रेत, बौहड़ी रही सुणाईआ। मैं गुर अर्जन नाल कीता हेत, अग्नी सड़ के आपणी सेव कमाईआ। मैं ओस दे सीस ते चढ़ के माणी सेज, तन खुशीआं

नाल हंढ्ढाईआ। नेत्र लोचण नैण वेख, खुशीआं हाल सुणाईआ। ओस वेले किहा मैनूं लै चल ओस देस, जिस देस वसे सच्चा माहीआ। गुर अर्जन दित्ता इक उपदेस, सच सुनेहड़ा आप सुणाईआ। जो मैनूं रिहा भेज, सो साहिब बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम खेले खेड, ख़ालक आपणा रूप वटाईआ। बण के आवे धुर दा नरेश, नेता इक्को इक नज़री आईआ। तेरा मेरा भुल्ले ना चेत, अभुल्ल आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सारा खोल्हे आ के भेत, पर्दा उहला आप दए चुकाईआ। जिस अग्नी तपाई रेत, सो भठियाला तेरे नाल मिलाईआ। जो सीने छनणी छनणी पाए सेक, तेरा सहिंसा दए गंवाईआ। तेरे चरणां हेठ सेज बणाए रेत, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। हरिसंगत सज्या लैणा वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जन भगतां दर तेरा पूरा करे लेख, लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहार धुर दा वर, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। रेत बालू तपत शांत, अग्न मेघ रूप वटाईआ। पुरख अकाल देवे दात, दयावान होए सहाईआ। नाल रलाए भगत जमाइत, सगला संग वखाईआ। लेखा लिख के कलम दवात, पूरब लहिण दए चुकाईआ। सच प्रीती जोड़ नात, नाता बिधाता इक्को इक रखाईआ। जो साहिब सतिगुर गुरु गुर गुर अर्जन देव गया आख, आखर लेखा पूर कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सति सरूप जोत प्रकाश कर साख्यात, शब्द राग धुन शनवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब दा पर्दा लए ढाक, ओढण इक्को नाम रखाईआ। ना हिंदू ना मुसलमान, कलमा नाम इक वड्याईआ। ना शरअ ना कोई शैतान, ना धर्म रूप वटाईआ। दो जहानां विच्चों श्री भगवान, आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा चुक्के सच सिदक ईमान, भरवासा इक्को इक रखाईआ। जिस वेले बेनन्ती कीती चरण कर प्रणाम, नेत्र नैण नीर वहाईआ। ओस वेले नज़री आया इक अमाम, पैगम्बर पीरां बेपरवाहीआ। सजदा सीस झुक कीता सलाम, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। कर निमस्कार मंगया दान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मैनूं हुक्म करदा हुक्मरान, हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। अन्दरों वेख्या मैनूं नज़री आया भगवान, भगवान तेरे विच समाईआ। भगवन्त कोल ना मज़्हब ना असलाम, धर्म कर्म वरन बरन नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर पूरे इक्को दित्ता सच्चा पैग़ाम, धुर संदेस सुणाईआ। तेरा सहाई परवरदिगार राम, पुरख अकाल दए वड्याईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां नज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त भगत गाउँदे कलमा कलाम, कायनात कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हिंदू मुस्लिम हिस्सा दए चुकाईआ।

* १६ माघ २०२० बिक्रमी चरण सिंघ दे घर सिम्मल सकोर ज़िला गुरदास पुर *

जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पंखी पंछी तड़फन तरवर, बेदीद दीद ध्यान लगाईआ। मेहरवान श्री भगवान नौजवान किरपा कर, दर ठांडे ओट तकाईआ। आवण जावण पतित पावण जन्म मरन भय भउ कट दर, दर दरवेश सीस निवाईआ। निर्धन निमाणे बेआस चरणी सीस रहे धर, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बिरहों विछोड़े विच गए सड़, अग्नी तत ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दे माण वड्याईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज, चार कुण्ट वखाईआ। जुग चौकड़ी साहिब सुल्तान तैनूं थक्के लभ्भ लभ्भ, तेरा रूप ना नजरी आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखी हद्द, ज़िमी असमाना ध्यान लगाईआ। उच्चा लम्मा वड्डा छोटा तेरा नज़र ना आया कद्द, तत रूप ना कोए वखाईआ। बिन लत्तां बाहां चारों कुण्ट रहे भज्ज, बण बण पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। बौहड़ी दरोही खुदाए क्यों सानूं कीता अड्ड, नाता आपणा बैठों तुड़ाईआ। चीक पुकारन कुरलावण साडे हड्ड, नाड़ी नाड़ी शोर मचाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण बण के जाईं चन्द, वेला वक्त दए सुहाईआ। सरन सरनाई तेरी जाईए लग्ग, चरण चरणोदक मिले वड्याईआ। सच खुमारी दे मधु, नाम प्याला इक प्याईआ। दर्शन कर के जाईए रज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे दए वड्याईआ। चारे खाणी करे पुकार, बौहड़ी बौहड़ी रही कुरलाईआ। नूर नुराने सांझे यार, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी एकँकार, अकल कलधारी तेरी ओट रखाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। कागज़ कलम छाही तेरे नाम दा दे दे गए अधार, धीरज लोकमात जणाईआ। इशारे दे दे गए गुरू अवतार, तेरा धुर दा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर मेला बेपरवाहीआ। चारे खाणी चारे जुग, चाकर बण के सेव कमाईआ। इक दूजे नूं सारे रहे पुछ, किस बिध मिले बेपरवाहीआ। जेरज कहे मैं दस्सां सच मुच्च, माणस देवणहार वड्याईआ। अण्डज कहे हर घट बैठा लुक, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। उत्भुज कहे आपणी धारों पए उठ, ना कोई जन्मे पिता माईआ। सेत्ज कहे लख चुरासी उहदे सुत, जननी जन इक अख्वाईआ। आदि जुगादि कदे ना बहे लुक, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चारे खाणी कहे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। उठ वेख साडा हाल, बेदर्द दर्द हो के वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी तेरी अवल्लड़ी चाल, समझ सके कोई ना राईआ। तेरे प्रेम पिच्छे पुट्ठी लथ्थे खाल, अग्नी तत भेंट चढ़ाईआ। तेरी खातर नीहां हेठां दबाए बाल, तेरी मंज़ल मुक्क कदे ना जाईआ। तेरे पिच्छे गोबिन्द रुल

के लाल, सूलां सत्थर सेज हंढाईआ। उठ के वेख साडा हाल, जंगल बेले रहे कुरलाईआ। तेरे अग्गे करया सवाल, बल बावन तेरी ओट तकाईआ। त्रेते राम कर पुकार, पंचबटी तेरा ध्यान लगाईआ। द्वापर कृष्न हो खुशहाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कक्खां उते सुत्ता पैर संभाल, सुख आसण इक लगाईआ। बद्धक मार तीर निशान, लेखा ल्या चाईं चाईंआ। कलयुग मूसा डिग्ग के मूँह दे भार, पर्बत चोटी माण गंवाईआ। ईसा करे इक सलाम, सजदा तेरे घर रखाईआ। मुहम्मद पढ़ के कलमा कलाम, काअबा तेरा घर वेख वखाईआ। नानक कर के तेरा ध्यान, रोड़ां सत्थर गया बणाईआ। गोबिन्द कर तैनूं प्रणाम, काही आपणे अंग लगाईआ। असीं वेख होए हैरान, पारब्रह्म जुग चौकड़ी तैनूं रहम कोए ना आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों सुणदे रहे पैग़ाम, कलयुग आवे शहिनशाहीआ। दो जहानां बदल देवे नज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। जुग चौकड़ी तड़फदयां तरसदयां दर्शन देवे आण, दूर दुराडा फेरा पाईआ। मंज़ल मंज़ल कट पुज्जे मकाम, हक़ मुकाम इक समझाईआ। ज़ाहर ज़हूर बण अमाम, असलीअत इक्को दए समझाईआ । देवे धुर दा इक तुआम, आम ख़ास समझ सके ना राईआ। सब दी मुश्किल करे असान, महिफल आपणे नाल रखाईआ । असीं तेरी बण अवाम, नित बैठे ध्यान लगाईआ। साडा पूरन करदे काम, प्रभ पूरन बेपरवाहीआ। साडे कोल नहीं गिरी छुहारे बदाम, सोहणी वस्त भेंट ना कोए कराईआ। कक्खां विच वेखीए तेरी शान, जिस शान विच आपणा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक वर, घर मिले तेरी वड्याईआ। चार खाणी विच्चों निकम्मे कक्ख, आपणा हाल सुणाईआ। पुरख अबिनाशी सानूं दस्स, क्यों बैठा मुख भवाईआ। साडी कीमत ना कोई करोड़ी लख, वणजारा नज़र कोए ना आईआ। साडे लई कुझ दस्स, एह तेरी सब वड्याईआ। सानूं दे के जा मति, धुर दी धार समझाईआ। साडी लेखे लग्गे रत, जो तेरी भेंट चढ़ाईआ। आपणे मिलण दी दे अक्ख, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। साडे अन्दर जावीं वस, बाहरों रूप ना कोए वखाईआ। असीं खुशी करीए हस्स हस्स, सच्चा ढोला गाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस्स, सच नूर ना होवे रुशनाईआ । जुग चौकड़ी तेरी रखदे गए आस, प्यास तेरे दरस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दे मुकाईआ। चारे खाणी विच्चों होए निकम्मे, मिले माण ना कोए वड्याईआ । पैरां हेठां लै लै सानूं जीव जंत भंने, उते चलण वाहो दाहीआ। जे कदी लोड़ पई तूं आप सेवा कीती नामे छन्ने, छप्पर छन्न छुहाईआ। सच सच्च तूं भगतां मन्ने, देवें माण वड्याईआ। हुण वेख्या दूर दुराडा चल के आएयों साडे बन्ने, बण के पांधी राहीआ। की होया जे धन्ने दे चूपे गन्ने, हुण डल्लां भोग लगाईआ। तैनूं वेखण वाले बिन तेरी किरपा अन्ने, निज नेत्र दरस कोए

ना पाईआ। साहिब सतिगुर जे साडी इक मन्ने, तैनूं सच सच्च दईए समझाईआ। तेरा दरस वेख सानूं अग्गे कोई ना डंने, सजा कोई रहिण ना पाईआ। श्री भगवान मेहरवान हो के कहे आओ मेरे चन्ने, चन्द चांदना नाउँ लए प्रगटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों करया खेल श्री भगवंने, भगवन आपणी कार कमाईआ। तुहाड्डा लेखा लावे तने, पत्त टाहणी नाल मिलाईआ। अग्गे गुरमुख रूप तुहानूं जने, जिन्हां उपर आपणा चरण आया छुहाईआ। इसे कर के आया संन्हे संन्हे, निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कक्ख कंडा कहे कुटम्ब, प्रभ दे माण वड्याईआ। जन्म लै लै गए हंभ, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। साडे पाप रहे कम्ब, धीरज धीर ना कोए बंधाईआ। तेरा कितिउँ ना मिल्या अनन्द, सुख सागर रूप ना कोए वटाईआ। चारों कुण्ट वेख्या कूड़ी क्रिया गंद, सच सुगंध रूप ना कोए जणाईआ। धन्न वड्याई तेरी जिस ग़रीबां पिच्छे कीता पन्ध, बणया पांधी राहीआ। सानूं वेख पई ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। जे आया टुट्टी जाईं गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी सच गुसाईंआ। वेख द्वापर आपणा उह रंग, जो रंग कृष्न दित्ता चढ़ाईआ। तीर निशाना मार जो बद्धक मंगी मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। कवण वेला प्रभ मेरा अन्तिम लेखा मुके नसंग, लोकमात रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। कक्ख प्रतख हो के दस्सण, आपणा हाल सुणाईआ। तूं साहिब सब दी हारा पत्त रखण, हथ्थ तेरे वड्याईआ। सब ने वेख्या उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, चारे कुण्ट ध्यान लगाईआ। करे खेल पुरख समरथन, समरथ तेरी वड्याईआ। बद्धक पैज आएयों रखण, लज्जयावन्त फेरा पाईआ। धुर दा लेखा आएयों कढ्ढण, पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, सच तेरी सरनाईआ। श्री भगवान करे बख्शीश, मेहर नज़र उठाइंदा। इक तिनके पिच्छे होणी बख्शीश, जिहड़ा तिणका कृष्न आपणे मुख टिकाइंदा। बद्धक बाहों फड़ के किहा ठीक, तूं सब दा मालक नज़री आइंदा। जिस चरणां नाल लोक करदे रहे प्रीत, मैं भुल्ल बाण निशाना तीर चलाइंदा। कृष्न उस तिनके नाल इक लीक कढ्ढी ठीक, त्रिलोकी नंदन चौथा घर बणाइंदा। बधक तेरा लेखा दए लाशरीक, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दूआ सिफ़रा दूआ सिफ़रा रख उडीक, वेला वक्त जणाइंदा। द्वापर बणया जो तेरा शरीक, मासेर पुत्त अख्वाइंदा। कलयुग अन्त उह वी आए नज़दीक, माणस रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। बद्धक सुण होया निढाल, तन बल रहिण ना पाईआ। सच दस्सीं दीन दयाल, समझ सोच कोए ना आईआ। कृष्न कहे एह लीला बाल, अचरज

रूप जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण आए विच जहान, जोती जामा वेस वटाईआ। दोहां वेखे आण, भेव अभेद चुकाईआ। जिस तिनके नाल लाया निशान, सो तिनका बणे बेला कानां काहीआ। उस अन्दर वड़ के वेखे आण, बेपहचान आपणा फेरा पाईआ। दोहां इकट्ठा कर के इक मकान, मासेर लेखा दए समझाईआ। मासेर भाई बचन सिँघ लैणा जाण, जुग द्वापर याद कराईआ। कलयुग अन्तिम घेरा बणया हरि गोबिन्द सेवा करे महान, साची खेल प्रभू कराईआ। तिन्नां लहिणा दित्ता इक्को वार, आपणा लेखा सब दा झोली पाईआ। इसे खुशी अन्दर कक्ख कंडे रोड़े पत्थर सारे खुशी मनाण, जिन्नां दी वीह सौ उन्नी बिक्रमी लिख्त गया कराईआ। दाता दानी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा थाउँ थाँ सब दा रिहा चुकाईआ।

* १६ माघ २०२० बिक्रमी बीबी बचनी दे घर सिम्मल सकोर ज़िला गुरदास पुर *

शाह पातशाह श्री भगवान, सचखण्ड निवासी तेरी वड वड्याईआ। शब्दी सतिगुर योधा सूरबीर बलवान, बेऐब तेरा नूर खुदाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल मण्डप ज़िमी असमान तेरी चतुराईआ। गुर अवतार तेरा दे संदेसा नाम, जुग चौकड़ी लोकमात समझाईआ। पीर पैगम्बर कलमा नबी रसूल पैग़ाम, हज़रत आयत शरायत इक पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद कुरान करन फ़रमाण, भेव अभेद भेव खुल्लाईआ। भगत सुहेले उच्ची कूक सुनावण बत्ती दन्द ज़बान, लख चुरासी जीव जंत जणाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सब दर वेखण मार ध्यान, सब दा रखणहारा माण बेपरवाह इक अख्वाईआ। चारे बाणी बोलणहारा धुर कलाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को गाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले वेखणहारा नौजवान, नर निरँकार वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शब्द भण्डारा खोल्लणहारा दुकान, गुरमुख झोली आप भराईआ। गुरसिख सज्जण मेले आण, जन्म कर्म दा पूरब रोग चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ। शाह पातशाह श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लख चुरासी धुर दा कन्त, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण बणाई बणत, घाड़त आपणा ल्या घड़ाईआ। कर प्रकाश जीव जंत, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, धुर दा शब्द नाद शनवाईआ। वेखणहार जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि करता आप कराइंदा। सचखण्ड महल अटल इक्को मल्ला, दर घर साचा सोभा पाइंदा। इक्को जोती

नूर बला, बाती तेल ना कोए रखाइंदा। शब्द संदेसा इक्को घल्ला, प्रीतम इक्को हुक्म मनाइंदा। पावे सार जला थला, समुंद सागर डूंघे गहर गम्भीर वेख वखाइंदा। नित नवित्त भगत भगवान फड़ाए पल्ला, साची डोरी तन्द बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी हरि करतार, हरि करता आप कमाइंदा। वेखणहारा जुग चौकड़ी चार, जुग जुग आपणी खेल कराइंदा। देवणहारा पीर पैगम्बरां गुर अवतारां नाम अधार, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सुणनहार सर्ब पुकार, लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म खोज खुजाइंदा। भरनहारा वड भण्डार, बेनज़ीर अतोट अतुट वरताइंदा। लेखा जाणे पंज तत शरीर, त्रैगुण माया खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, हरि करता आप रचाईआ। जुग चौकड़ी देवे दान, दाता वड्डा बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, निरगुण निरवैर खेल वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ब्रह्मण्ड खण्ड सृष्ट सबाई देवे इक ज्ञान, सच संदेसा नाम सुणाईआ। लोक परलोक चौदां तबक होणा हैरान, मेरा भेव किसे ना आईआ। चौदां विद्या लेखा चुके जहान, अल्फ़ ये ना कोई समझाईआ। साचा देवे धुर निशान, निशाना आपणा नाम लगाईआ। अनपढ़यां दे दे इक ज्ञान, गुरमन्त्र दए समझाईआ। घर विच घर खेल करे महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। दीपक जोत जगा महान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना दए झिराईआ। अनहद नाद शब्द धुन कान, धुन आत्मक राग अलाईआ। बजर कपाटी तोड़े आण, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। ईड़ा पिंगला नैण शरमाण, सुखमन चले ना कोई चतुराईआ। टेडी बंक कर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नौ दवारे ना कोई शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हल्काईआ। आसा तृष्ना मेटे आण, माया ममता मोह चुकाईआ। इक्को देवे नाम निधान, धुर दा सोहला राग सुणाईआ। चरण प्रीती बख्श ज्ञान, भेव अभेदा आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। खेल अगम्मा, हरि करता आप कराईआ। जुग चौकड़ी जाणे कम्मा, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। साहिब सतिगुर सूरा सरबँगा, दो जहानां वेख वखाइंदा। निर्धन हो के फिरे नंगा, तन कफ्न ना कोई हंढाइंदा। नाम वजाए धुर दा मृदंगा, खण्डा कटार ना कोई हिलाइंदा। ख़बरदार करे ब्रह्मण्डा, जेरज अंडा आप जगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखो कन्ढा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। जीव जंत साध सन्त होया रंडा, आत्म सेज हरि जू कन्त ना कोई हंढाइंदा। निरगुण जोत किसे घर ना चढ़े चन्दा, सच प्रकाश ना कोए वखाइंदा। दोए लोचण जगत होया अन्धा, तीजा नेत्र नैण ना कोई वखाइंदा। मन वासना होया गंदा, बुध बबेक ना कोई बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल सच्चा हरि, लख चुरासी वेख वखाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाण गुर अवतारां, पीर पैगम्बरां रिहा जणाईआ। दर दरवेश मंगदे रहे भिखारा, भिखक झोली इक्को नाम भराइंदा। नेत्र नैणां वेखो इक नज़ारा, बेनज़ीर रिहा दरसाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत दीप हाहाकारा, हौके विच सर्ब लोकाईआ। मंज़ल दिसे ना कोई पार किनारा, आपणा पन्ध ना कोई मुकाईआ। फिरे दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारा सांतक सति धीरज धीर ना कोई रखाईआ। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां हन्झूआं धार वहाईआ। कागज़ कलम करन पुकारा, छाही आपणा हाल सुणाईआ। सृष्ट सबाई गुर का शब्द ना किसे विचारा, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। घर घर अन्दर जूठ झूठ कीता पसारा, सच सुच्च ना कोई वड्याईआ। पिता पूत ना कोई प्यारा, नार कन्त ना कोई हंढ्ढाईआ। जगत जहान होया दुख्यारा, दर्दीआं दर्द ना कोई वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करे ना कोई प्यारा, इष्ट देव स्वामी निहकर्मी निहकामी करनी कार ना कोई कमाईआ। परम पुरख परमात्म सर्ब घट घट अन्तरजामी, साहिब सतिगुर नेत्र लोचण नैण इक्को अक्ख खुल्हाईआ। सच संदेसा नर नरेशा देवे धुर फुरमाणी, हुक्म हाकम इक अलाहीआ। मंज़ूर करे चारे खाणी, चारे बाणी नाल मिलाईआ। जगत सरोवर वेखे पाणी, तट तीर्थ किनारे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। वेखणहारा थाण थनंतर, दो जहानां खोज खुजाइंदा। ना कोई पढ़े गुर का मन्त्र, काया मन्दिर ना कोई सुहाइंदा। आपणी बिध ना जाणे अन्तर, भाण्डा भरम ना कोई भंनाइंदा। भेव चुके ना गगन गगनंतर, गृह मण्डल खोज ना कोई खुजाइंदा। मानस जन्म ना बणे बणतर, मन मोह ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अन्दर फोल फुलाइंदा। घट घट वेखो कूड़ पसारा, प्रभ आपणा खेल रचाईआ। सच्चा दिसे नाम अधारा, हरिजन हरि जू लए उठाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह किवाड़ा, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। निरगुण नूर दे नज़ारा, जोती जोत कर रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर गुरूदवारा, घर घर विच दए वखाईआ। अट्ठे पहर रहे धुनकारा, साचा शब्द राग अल्हाईआ। आत्म परमात्म करे प्यारा, घर मेला सहिज सुभाईआ। नज़री आए एकँकारा, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। जिस दा सोहे सचखण्ड दवारा, दरगह साची डेरा लाईआ। जन भगतां दए सहारा, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। लेखा चुके जगत मँझधारा, शौह दरया ना कोई रुढ़ाईआ। साची सिख्या विच संसारा, गुरमुख सज्जण नाल रलाईआ। धुर दा करे इक विहारा, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। परवरदिगार बण के सांझा यारा, सच समग्री रिहा वरताईआ। चार

४२४ १६

वरन इक प्यारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ। हर घट अन्दर राम पसारा, रमया राम दए समझाईआ। लेखा जाणे पुरख नारा, बुढे बाले खोज खुजाईआ । जिस दा खाणी बाणी दए इशारा, सैनत नाल समझाईआ। सो पुरख अकाल वड सिक्दारा, दो जहाना हुक्म मनाईआ। कलयुग अन्त लै अवतारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, गोबिन्द देवे माण वड्याईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा गया समझाईआ। ईसा कूक कूक पुकारा, मेरा पिता खुदावंद नूर इलाहीआ। मुहम्मद कहे परवरदिगारा, अमाम अमामा फेरा पाईआ। नानक कहे अगम्म अपारा, जिस जन्मे कोई ना पिता माईआ। गोबिन्द किहा कल कल्की अवतारा, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। सृष्ट सबाई दए सहारा, चारे खाणी लए उठाईआ। धुर दा बोल शब्द जैकारा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जिस दा आदि सर्ब पसारा, सो अन्तिम वेखण आईआ। जन भगतां करे सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक रखाईआ। जागदयां सुत्तयां इक्को जिहा अधारा, ओहले छुप ना मुख भवाईआ। शब्दी शब्द जोती जोत बणया रहे अखाड़ा, अट्ठे पहर दिवस रैण गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक काया गोलक नाम निधान निरगुण सरूप शाहो भूप गुरमुख कोट काया अन्दर टिकाईआ।

* १६ माघ २०२० बिक्रमी रावी विच्चों लँघण समें गड्डे उते संढिआं दे प्रथाए ज़िला गुरदास पुर *

वेख राजन क्यों होया चुप्प, गुंग मुख वखाईआ। उठ माँ दे इकलोते सुत, वारी तेरी आईआ। मगध देश नहीं उलटा रुख, समझ सोच जरा ना आईआ। ओहो बेनन्ती रिहा पुच्छ, जो चम्यारे अग्गे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। मगध देश का कहे राजा, मोहे समझ कोए ना आईआ। कल्ला बच्चा कहे मैं की दस्सां बातां, भेद अभेद ना कोई खुल्हाईआ। दोहां उजाड़ विच आई राता, संगी संग ना कोई रखाईआ। ओथे मिल्या चम्यार रविदासा, हथ्थ डोरी तन्द रखाईआ। असीं वेख के कीता हासा, ताली खुशीआं नाल वजाईआ। इस दा खप्परी नाल ख़ाली कासा, वस्त हथ्थ ना कोई टिकाईआ। सानूं वेख के चम्यार किहा एह प्रभ दा तमाशा, तुहाढी मेरी ना कोई वड्याईआ। ऐस डोर नाल तुहाढे दम दीआं बन्न्हा रासा, चम्म दृष्टी दूर कराईआ। मेरा कर्म इक खासा, जो ख़ालस प्रभ ने दित्ता समझाईआ। जिन्हां दे विच ना रहिण स्वासा, पोश उहनां वाला लाह लाह आपणा पेट गुज़ारा कर कर खाईआ। बेशक तूं नज़रीं आवें राजा, तेरा दरबान इक्को जंम्यां कुल माईआ। मैं तेरा नहीं होणा मुहताजा, प्रभ देवणहार

मेरा इक अख्वाईआ। जिस ने सब दा साजण साजा, साची बणत बणाईआ। जुग चौकड़ी होवे राखा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ओहदे कोल की घाटा, जो बेअन्त बेपरवाहीआ। धार दिसे तुसीं ओह जादव विच आण बाटा, जन्म अजन्म रूप वटाईआ। मानस जन्म भुल्लया रघुनाथा, मोहे ग़रीब वेख हँसी रही उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे सब दा थाउँ थाईंआ। सुण के बचन लग्गी चोट, नेत्र नैण उग्घाड़या। मेरे विच केहड़ा खोट, तूं केहड़ा बचन सुणा रिहा। मैं शहिनशाह पातशाह तूं केहड़ी सोची सोच, तेरा कमला रूप मैनूं कोल ना बहा रिहा। जे कुछ मंगणा खाणा पीणा मंग ला रोजी रोज़, घर रिज़क दयां पुचाईआ। ओस वेले रविदास चुप्प होया ख़मोश, हां हूं ना कोई रखाईआ । वेखो प्रभ दा खेल लोक परलोक, की की रचन रचाईआ। मेरे अन्दर ओही जोत, जो राजे विच टिकाईआ। मैनूं ओस दी प्रीती बहुत, इस धन्न दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दिती वखाईआ। रविदास किहा सुण राजे जग, सच दयां जणाईआ। पिच्छे कई जन्म गए लँघ, अग्गे सार हथ्थ ना आईआ। कई वार घोड़यां उते कसे तंग, पाखर जीन नाल कसाईआ। कई जन्म भुक्खे रह रहि लँघाए डंग, कई जन्म सीस ताज टिकाईआ। लख चुरासी प्रभ दे खेल पखण्ड, भेखाधारी भेख वखाईआ। वसदा रहिउँ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ । मेरे साहिब दा मिल्या ना रज्ज अनन्द, चन्द रूप ना कोई वटाईआ। सीने सांत ना पई ठंड, अग्नी तत ना कोई बुझाईआ । माया ममता विच आत्म होई रंड, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। उत्तों वेख आपणी नंगी कंड, मेहरवान ना कोई सहाईआ । जिस सब नूं देणा दंड, डण्डा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सुण के बचन इकलौता बच्चा, दरवेश रिहा जणाईआ। राजन एह कोझा कमला दिसे सच्चा, जिस विच्चों सच रूप नज़री आईआ। इस दा बचन ना होवे कच्चा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साडी एह धारन नाल होवे हता, हत्या सके ना कोई मिटाईआ। मैं निउँ के वेख्या नाल अक्खां, एहदे कोल नूरो नूर नज़री आईआ। मैं रह गया हक़ा बक्का, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। जो इस ने बचन किहा यदारथ यथा, जस वेद पुराण एसे दा गुण गाईआ । तैनूं दए ख़ाली हथ्थां, बेअन्त बेपरवाहीआ। राजे किहा एह सुणन वाला कटा वच्छा, ढोरां खल्ल लुहाईआ। एहदी गुथली विच इक्को धागा अट्टा, ओह वी कच्चा रूप वटाईआ। इक आर इक रम्बी उते लग्गा हथ्था, जिस उते हथेली मार आपणा रिज़क कमाईआ। एहो जिहे रुलदे विच कक्खां, चारों कुण्ट देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रविदास किहा राजा साबाश तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। रम्बी आर मेरी खास, जो

चम्मड़े गंढु वखाईआ। एहो मेरी पूंजी रास, खेसी डोरी झोले विच्चों कढु वखाईआ। मेहरवान मेरा प्रभू अबिनाश, धुर दा सच गोसाईंआ। मैं उहनूं तेरे पिच्छे एह ज़रूर देवां आख, प्रभ इस दी आसां पूर कराईआ। इक्की जन्म आ के ढोर विच मास, जगत तन हंढुाईआ। मेरी आर लँघे इस दी नास, नक्क नथ्थ वखाईआ। सौण नूं लभ्भे ना कोई खाट, वस्त्र ओढण हथ्थ ना कोई फड़ाईआ। अमीर वज़ीर ना कोई राज पाट, नौकर सेव ना कोई कमाईआ। कटा वच्छा बण के हल्ल वाह सुहागे नाल लगावे फाट, भज्जे वाहो दाहीआ। जे खलोवें पिच्छों जिमींदार देण डाट, डण्डा आपणे हथ्थ उठाईआ। खाण नूं देवे ना कोई कुछ चाट, जंगल बेले फिर फिर दए दुहाईआ। नाले रोवे नाले कहें जे चुमयार मेरी पुछे वात, मेरा होए सहाईआ। मैं ओस नूं इक वार देवां आख, दोए जोड़ भुल्ल बख्शाईआ। तेरा किथे पुरख अबिनाश, जिस मैनूं सजा लगाईआ। मेरी जन्म जन्म दी मुकी वाट, लेखा लेखे लए लगाईआ। ओस वेले रविदास किहा अच्छा एह निक्की जिही बात, इक्की जन्म लँघदयां चिर ना कोई लँघाईआ। कलयुग अन्तिम मेरा आए कमलापात, बेनज़ीर सहिज सुखदाईआ। दूर दुराडा मुकावे वाट, पांधी आपणा नाउँ धराईआ। लख चुरासी विच्चों परख तेरी ज़ात, इशारे नाल उठाईआ। इकलौता बेटा कहे रविदास की ओह मैनूं मिले आप, जिस मेरे बाप नूं जन्म दित्ता दवाईआ। साडी दोहां पुछे वात, होए आप सहाईआ। रविदास किहा ओह सब दा सज्जण साक, सांझा पीर अख्वाईआ। आ के वेखे तुहाढ्ढ़ा हालात, पूरब पर्दा दए उठाईआ। तुसां रो रो के अगलवांडी जा के देणा आख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। असीं रविदास कोलों सिक्खी जाच, श्री भगवान निमाणयां निताणयां आपणे गले लगाईआ। कर किरपा पीर तुहानूं दए निज़ात, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चल के आए तुहाढ्ढे घाट, रविदास चम्यारा नाल मिलाईआ। लेखा लिख के छाही कलम दवात, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। दोहां दे सिर विच मारे इक इक साट, दुःख दर्द दए गंवाईआ। एसे जन्म विच पूरी कर जाए वाट, अग्गे जन्म ना कोए भवाईआ। आर पार हो के तुहाढ्ढी पुछे वात, हरि गोबिन्द गुर अर्जन देण गवाहीआ। भगत सुहेले जिहड़े साथ, वेख वेख सारे खुशी मनाईआ। श्री भगवान कहे सुण रविदास, आपणा ध्यान लगाईआ। दोए इकठ्ठे होए आ गए दोहां पास, विच्चों दो दो नज़री आईआ। पहलों संगत चरण धूढ़ रावी विच गई छोह, श्री भगवान दया कमाईआ। ओस धूढ़ नाल एहनां दी दुरमति मैल दिती धो, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे लेखा रहे ना को, अन्त आपणे विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिन्हां चरणां ल्या छोह, तिन्हां मिले माण वड्याईआ।

४२७ १६

* १६ माघ २०२० बिक्रमी चरण सिँघ दे घर पिण्ड अनतोर ज़िला गुरदास पुर *

चारे खाणी वहाए नीर, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। जुग चौकड़ी कोई ना देवे धीर, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा वक्त लँघाईआ। तेरा सरगुण रूप वेखदे रहे गुरू अवतार पैगम्बर पीर, नित नवित्त फेरा पाईआ। दर्दी हो के किसे ना वंडी पीड़, बिरहों रोग ना कोई मिटाईआ। शरअ शरीअत पा ज़ंजीर, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। ज़ात पात खिच लकीर, ऊँच नीच दीन समझाईआ। सच दसे ना कोई तस्वीर, तसबी माला गल सर्ब लटकाईआ। लख चुरासी वेख लग्गी भीड़, चार कुण्ट दहि दिशा तेरा रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पढ़ पढ़ होई अख़ीर, अक्खर तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। चारे खाणी नेत्र रो, कूक कूक सुणाईआ। जुग चौकड़ी हो निरमोह, क्यों बैठा मुख भवाईआ। साडे नाल करया धरोह, लोकमात सेव लगाईआ। आपे ओहले बैठों हो, घर घर विच मुख छुपाईआ। सच प्रकाश कर लो, दीआ बाती इक्को डगमगाईआ। क्यों वस्त लई खोह, ख़ाली हथ्थ रहे जणाईआ। श्री भगवान इक वार आ के छोह, अंगीकार कर नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी दे माण वड्याईआ। चारे खाणी नेत्र रोवे, सांतक सति ना कोई वरताईआ। आदि अन्त मैल ना कोई धोवे, स्वच्छ सरूप ना कोई जणाईआ। सच प्रकाश ना कोई बलोवे, अन्ध अन्धेर ना कोई गंवाईआ। साची सेजा कोई ना सोवे, सुंञी पई दए दुहाईआ। तेरे जिहा कोई ना होवे, कोटन कोटि गुरू अवतार पीर पैगम्बर गए फेरीआं पाईआ। साचा देवे ना कोई ढोए, कोटन कोटि तेरे नाम वड्याईआ। साचा अमृत मुख कोई ना चोवे, नित नवित्त प्यास बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चारे खाणी रही कूक, होका इक्को इक सुणाईआ। बिरहों विछोड़े दित्ता फूक, लेखा सके ना कोई मिटाईआ। तेरे मिलण दी इक्को भूक्ख, तृष्ना रोग ना कोई वधाईआ। त्रै पंज लग्गे तेरी खोज, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रजो तमो सतो तेरे चरण ध्यान लगाईआ। कवण वेला निरवैर हो के गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत, हथ्थ तेरे वड्याईआ। क्यों खामोश बैठा चुप्प, सचखण्ड आपणा मुख छुपाईआ। धुर दी धार आपे उठ, अगम्मड़े अगम्मड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दरगाह साची तेरी ओट तकाईआ। चारे खाणी करे हाहाकार, हौका लै जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कोटन कोटि रूप वटाईआ। सेवा कर कर गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर फेरा पाईआ। तेरे नाम दा बोल जैकार, नाउँ

निरँकार इक दृढ़ाईआ। कलमा नबी रसूल बोल कलाम, कायनात करी पढ़ाईआ। दस्सदे गए वड अमाम, पतिपरमेश्वर मेरा बेपरवाहीआ । जिस दे हथ्थ सर्ब नज़ाम, दो जहानां हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे दर गुलाम, बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर मुला शेख़ मुसायक करन सलाम, सजदा इक्को इक जणाईआ। वेखणहारा शाह सुल्तान, राउ रंक खोज खुजाईआ। चारे खाणी करे ध्यान, लख चुरासी फोल फुलाईआ। चारे जुग देवे ज्ञान, चारों कुण्ट करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। चारे खाणी कहे पुरख समरथ, बेअन्त तेरी सरनाईआ। सच दवारे इक्को बोल अलख, अलख अगोचर तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, तेरे भाणे सद समाईआ। सानूं दे दे पिछला हक़, हकीकत झोली पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए लँघ, नित नवित्त आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम वजा मृदंग, लोकमात हुक्म सर्ब गए सुणाईआ। पंज तत काया चोला छड्ड तेरा दवारा गए लँघ, निरगुण निरवैर निराकार तेरा रूप समाईआ। साचा ढोला गा के छन्द, सोहला इक दृढ़ाईआ। हुक्म संदेसा दे के गए जग, लेखा लिख के कलम छाहीआ। श्री भगवान सूरा सरबग्ग, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि करे राज, सीस ताज इक टिकाईआ। सुत शब्द साजण साज, थिर घर देवे माण वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणा समाज, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया दे के दाज, पंज तत झोली आप भराईआ। अण्डज जेरज रचाए काज, उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। लख चुरासी साजण साज, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर मुहताज, साची भिख्या इक वरताईआ। आत्म परमात्म दे के दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। नाम संदेसा सुणा गाथ, साची करे पढ़ाईआ । निरगुण सरगुण चलाए गाथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। दो जहानां वेखे घाट, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाईआ। चारों कुण्ट वेखे मार झाक, नेत्र लोचण नैण इक खुल्हाईआ। धुर संदेसा दे भविक्ख्त वाक, जुग चौकड़ी दए समझाईआ। नाम ख़ज़ाना खोल्ह मात, जीवां जंतां जग्ग वरताईआ। सेवा ला दिवस रात, घड़ी पल वंड वंडाईआ। खेल खेल सुबह प्रभात, संध्या आपणा भेव चुकाईआ। लेखा जाण कायनात, कलमा नबी रसूल दृढ़ाईआ। अल्फ ये लेखा लिख के कलम दवात, इबारत पट्टी नाम पढ़ाईआ। कर खेल खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। मण्डल मण्डप पाए रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। जुग चौकड़ी जणा के आपणी ज़ात, पर्दा उहला इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मी वर, जिस दा अन्त कोई ना राईआ। चारे खाणी करे पुकार, निउँ निउँ सरनाईआ। दर तेरे बण भिखार, बैठे अलख जगाईआ। तूं दाता सिरजणहार, सिर सिर रिजक सबाईआ। आसा

पूरी कर आप निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। हउँ मांगत खड़े दरबार, स्वांगी आपणा स्वांग रखाईआ। जुग चौकड़ी सारे कैहन्दे रहे बिन मानुख जन्म कोई ना उतरे पार, सच मिले ना कोई वड्याईआ। साडी बेनन्ती इक दातार, तेरे दर अरजोईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड तेरा पसार, तिनके तिनके अन्दर तेरा रूप समाईआ। सारे मंगदे तेरी सच बहार, गुलशन महके नूर खुदाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग असीं बणदे रहे वफादार, बण सेवक सेव कमाईआ। साची सेवा अपर अपार, जगत जहान रहे जणाईआ। जिस नामे महल दित्ता उसार, मिली माण वड्याईआ। जिस राम कृष्ना कीता प्यार, जंगल जूह सोभा पाईआ। जिस नानक निरगुण दिती धार, रोड़ां सेज बणाईआ। जिस गोबिन्द सत्थर वखाया यार, सोहणी बणत बणत बणाईआ। तेरे खेल जंगल जूह बेले पहाड़, टिल्ले पर्बत तेरा रूप नज़री आईआ। डूंघे सागर वेख विचार, जल थल तेरी धार समाईआ। चारे खाणी दे अधार, क्यों काणी वंड रखाईआ। सारे कहि के गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे सांझा यार, जो सब दा लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, चरण कँवल तेरे सरनाईआ। चारे खाणी रही झुक, प्रभ चरण सीस निवाईआ। कलयुग औध रही मुक्क, वेला वक्त रिहा सुहाईआ। सदी चौधवीं भाग रहे निखुट, ईसा मूसा मुहम्मद दए गवाहीआ। तूं क्यों पुरख अकाल बैठा छुप, बेपरवाह आपणा मुख लुकाईआ। साडा वेख आ के दुःख, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। की होया जे मानस नहीं मनुक्ख, बरूटी झाड़ी रुक्ख तेरा नाम ध्याईआ। जे पत्थरां विच्चों पहले ग्यों तुठ, धन्ने दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे दे धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। चारे खाणी झुकया सीस, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। किरपा कर जगत जगदीश, जगदीश्र तेरी इक सरनाईआ। तेरे हथ्थ वड्ड बख्शीश, रहमत तेरी नज़री आईआ। पिछली बदल आपणी रीत, रीतीवान दया कमाईआ। साडी सुण पुकार चीख, नेत्र रो रो रहे जणाईआ। तेरा नाउँ लाशरीक, वाहिद इक्को नूर खुदाईआ। पारब्रह्म साहिब अतीत, कूड़ा लेखा दे मुकाईआ। ठांडे घर पा भीख, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। चौवां कर सच प्रीत, नाता चरण कँवल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, तुध बिन दूजा नज़र कोई ना आईआ। चारे खाणी झोली अड्ड, पल्लू गल विच पाईआ। कौल इकरार दी पूरी होई हद्द, नव नौ चार नाल बिताईआ। सच दवारे हरि जू सद्द, सद्दा नाम सुणाईआ। तेरा दर्शन करीए रज्ज, हज्ज इक्को दे वखाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए लद, सिर आपणा भार उठाईआ। बिन तेरी किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, ख़ाली झोली आप

भराईआ। चारे खाणी रखी उडीक, सदी बीसवीं ध्यान लगाईआ। तेरी साहिब आए तारीख, तरीका आपणा दे समझाईआ। नाता जोड़ सच प्रीत, प्रेम प्यार इक रखाईआ। चारे मिल के होईए अतीत, ठंड तेरा नाम वरताईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। सच फुलवाड़ी वेख बागीच, पत टहिणी मात महकाईआ। सानूं इक्को सच्ची रीझ, नित तेरा दर्शन पाईआ। कवण वेला प्रभ लँघे दहिलीज, घर सज्जण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, सच सच्च दृढ़ाईआ। चारे खाणी कहे मेरे महिबूब, हथ्थ तेरे वड्याईआ। बिन जेरज तेरा बणे ना कोई कलबूत, बंक दवारा नज़र कोई ना आईआ। बिन अण्डज तेरा देवे ना कोई सबूत, हँसा राग ना कोई अलाईआ। बण बण पुत्त तेरा बणाए ना कोई अरूज, पलँघ रंगीला हेठ ना कोई विछाईआ। बिन सेतज तेरा बणे कोई ना पूत, माता पिता नाता जगत लोकाईआ। साडा चवां दा इक्को जिहा हकूक, हक़ दे थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी देणा सच सबूत, शहादत इक्को वार भुगताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त होए मौजूद, मौजूदा हाल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कर ठाकर स्वामी, तेरे चरण कँवल अरजोई। सचखण्ड निवासी अन्तरजामी, तुध बिन मिले कोई ना ढोई। पछोतावा करे चारे खाणी, साची सेज कोई ना सोई। शहादत देवे चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दर तेरे आण खलोई। तेरा दिसे कोई ना सानी, असानी सानूं दे बताई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, दर घर तेरे मिले वड्याई। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। धुर संदेसा इक अलाउँदा ए। निरगुण निरवैर निराकार वेख वखाउँदा ए। जुग चौकड़ी कर के पार, कलयुग वेला अन्त सुहाउँदा ए। चारे खाणी दे अधार, चारों कुण्ट रंग रंगाउँदा ए। जोती जामा लै अवतार, नूरो नूर डगमगाउँदा ए। शब्द तराना बोल जैकार, धुर दा राग सुणाउँदा ए। अण्डज जेरज उत्भुज सेतज अन्दर वड़ के पावे सार, मेहरवान नज़र कोई ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हक़ हकीकत खोज खुजाउँदा ए। हक़ हकीकत खोज खुजाउँदा ए। दो जहानां वेख वखाउँदा ए। ज़िमी असमानां फोल फुलाउँदा ए। चारों खाणी मोख दवाउँदा ए। हरख़ सोग सर्ब मिटाउँदा ए। साचा जोग इक जणाउँदा ए। धुर संजोग मेल मिलाउँदा ए। लेखा चुके चाउँदा लोक, चाउँदा विद्या डेरा ढाउँदा ए। सच सुणा के इक श्लोक, चारे खाणी विच समाउँदा ए। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाउँदा ए। चरण प्रीती दे के ओट, अन्तिम आपणा रंग रंगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मन्दिर इक वखाउँदा ए। चारे खाणी दया कमाएगा।

प्रभ ठाकर वेख वखाएगा। समुंद सागर फोल फुलाएगा। टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ डेरा लाएगा। डूंग्घी कन्दर डेरा ढाएगा। शरअ शरायती वज्जा जन्दर तोड़ तुड़ाएगा। वेखणहारा मसीतां मन्दिर, शिव दवाले मट्ठ फोल फुलाएगा। लहिणा चुकाए सूर्या चन्द्र, मण्डल मण्डप सेव लगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी बीसवीं आपणा रंग रंगाएगा। सदी बीसवीं दया कमाउँदा ए। पुरख अकाल खेल रचाउँदा ए। दीन दयाल वेस वटाउँदा ए। जगत अवल्लड़ी चाल, मार्ग इक रखाउँदा ए। चारे खाणी वेख के हाल, उत्भुज सेत्ज आप तराउँदा ए। चरण प्रीती रख के नाल, जंगल बेले खोज खुजाउँदा ए। लेखा चुका पत डाल, फल फुलवाड़ी आप महकाउँदा ए। जन भगतां दए वखाल, साचे सन्तां सति समझाउँदा ए। लेखा चुके शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई वडयाउँदा ए। लख चुरासी विच्चों भाल, भगवन भेव खुलाउँदा ए। आत्म परमात्म दे के दान, दाता इक्को मेल मिलाउँदा ए। घर नज़री आए सच्चा काहन, गोपी सुरती पकड़ उठाउँदा ए। होए विछोड़ा ना धुर दे राम, सीता सवाणी नाल मिलाउँदा ए। जिहड़े बेर करे परवान, उत्भुज आपणे संग वखाउँदा ए। जिस सत्थर सुत्ता आण, सो कक्खां वाड़ भाग लगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पशू पंखी पंछी सारे पार कराउँदा ए। पशू पंखी तारे ढोर, आपणी दया कमाईआ। इट्टां पत्थर जो नेत्र रो रो पावण शोर, सिर उहनां हत्थ टिकाईआ। जो जलधारा पए रोड़, तिन्नां धीरज धीर बंधाईआ। जो डूंग्घी खड्ड डिगे घोर, तिन्नां जोत करे रुशनाईआ। सच प्रीती चरण जोड़, धरत धवल दए वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपे बौहड़, बौहड़ी बौहुड़ी करदे साचे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब देवे माण वड्याईआ। चारे खाणी देवे माण, हरि करता दया कमाइंदा। मेहरवान श्री भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। हर घट अन्दर करे पहचान, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे के गए ब्यान, लेखा सब दा वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सतिगुर सब दा इक सुल्तान, दो जहानां वाली सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। महल अटल उच्च मिनार झुल्ले निशान, सच निशाना इक रखाइंदा। अग्गे बख्शे इक्को जिहा माण, जो चरण ध्यान प्रीत लगाइंदा। दाता दानी देवे दान, गहर गम्भीर वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज सति दवारे चारे होए परवान, चौथे जुग आपणे खाते विच रखाइंदा। जीव जंत साध सन्त लोकमात कोई समझ ना सके बाल अञ्याण, भेव अभेदा बोध अगाधा शब्द अनादा अनभव रूप ना कोए समझाइंदा। परम पुरख दीन दयाल लाशरीक सच्चा यार नूर खुदा वड मेहरवान, श्री भगवान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नेहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म नाता बिधाता जोड़ जुड़ा महान, जगत विछोड़ा मेट

मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चारे खाणी चारे कुण्ट चार जुग चारे दिशा चौथे पद घर सद मुकाए हद्द, सब तों अलग बैठ सरबग्ग, हज्ज इक्को घर कराईआ। वेख खेल पुरख समरथ, दो जहान अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण धार खेल अकथ, निरवैर रूप वटाईआ। लेखा जाण घट घट, लख चुरासी खोज खुजाईआ। गुर अवतार जो मार्ग आए दस्स, पीर पैगम्बर राह जणाईआ। तिस दा लहिणा देणा देवे हथ्थ, जगत अधार ना कोई कराईआ। सुण के खेल चारे बाणी आई नस्स, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ सरनाई रही ढट्ठ, बलहीण सीस निवाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, कलयुग अन्तिम संग ना कोई रखाईआ। सृष्ट सबाई जीवां जंतां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दस्स दस्स गई थक्क, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर बैठी रही कर के हठ, सति धर्म इक रखाईआ। मेहरवान तेरे नालों हो के वक्ख, काग़ज़ कलम छाही नाल दिती सफाईआ। जगत विरोल वेख मस, बनासत तेरी सेवा लाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गए रट, रट्टा मुके ना जगत लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खोल्हे हट्ट, अञ्जील कुरानां राह चलाईआ। सब नूं दस्सदी रही प्रभ मिलण दी इक्को अक्ख, दोए लोचण बंद कराईआ। खेल करया बणया स्वांगी बाज़ीगर नट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चे दे माण वड्याईआ। चारे बाणी आई नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल नौ खण्ड पृथमी ख़ाली वेहड़े, सत्त दीप ना कोए सहाईआ। नाम कलमा पए झेड़े, हक़ हकीकत ना कोई वखाईआ। शरअ शरीअत दित्ते गेड़े, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। कोई ना चढ़े तेरे बेड़े, मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे रहे कुरलाईआ। कलयुग करे हेरे फेरे, जीवां जंतां रिहा भुलाईआ। डूंघे वहिण डिगे गुरु गुर चेरे, चेला गुरू नज़र कोए ना आईआ। तीर्थ तट्टां उते बैठे बथेरे, तन धूणी ख़ाक रमाईआ। जंगलां विच कोटन लाए डेरे, बण अवधूत रूप वटाईआ। साचे मन्दिर कोई ना वड़े खेड़े, गृह पर्दा ना कोई उठाईआ। अट्ठे पहर माया झेड़े, ममता मोह करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए वखाईआ। चारे बाणी आई नट्ठ, दर ठांडा नज़री आईआ। हरि सरनाई गई ढट्ठ, नेत्र नीर वहाईआ। मेरी बंद होई अक्ख, तेरा दरस ना कोई वखाईआ। कूड़ी क्रिया खेड़ा कीता भट्ठ, घर मन्दिर ना कोई सहाईआ। जोती दीप ना लट लट, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। मेरा पुराना चीथड़ गया फट, ओढण सीस ना कोई टिकाईआ। सब दी मारी गई मत्त, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। मन वासना जीव रहे नच्च, कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। काया माटी वेख कच्च, अमृत जल ना कोई टिकाईआ। साहिब सुल्तान मैं ओहनां कोलों आई बच, जिहड़े कूड़े ठेकेदार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। चारे बाणी दस्से बोल, प्रभ आपणा हाल सुणाईआ। चल के आई तेरे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिहड़े कुटदे मेरे पिच्छे ढोल, ढोलक छैणे ताल खड़काईआ। तेरे नाल मारन रोल, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। साची गठड़ी कोई ना सके खोल्ह, तन अन्दर लाल अनमुलड़ा हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा नाउँ बणे ना किसे विचोल, नाता सके ना कोई जुड़ाईआ। किसे हथ्थ ना आवे पंडत रौल, पांधे समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। चारे बाणी कहे मेरे भगवान, साहिब तेरी सरनाईआ। मैं बाली बुध अंजाण, नढ्ढी रूप वटाईआ। मैं थक्की विच जहान, लोकमात मेरी दुहाईआ। मेरी करे ना कोई पहचान, साथी संग ना कोई रखाईआ। मेरे पिच्छे साधां सन्तां बणयां पीण खाण, मेरा अंग अंग रहे विकाईआ। मैं वेख होई हैरान, पुरख अकाल एह की खेल रचाईआ। तेरे नालों सारे हो गए बेईमान, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। मैं समझया मैं तेरी सपुत्री तेरा ख़ानदान, उच्चे घर दी जाईआ। शब्द पुत्त तेरा इक बलवान, शहिनशाह दो जहान अख्वाईआ। उस दे विच्चों उपजी मैं सन्तान, जिस दी अवर कोई ना पिता माईआ। तेरे हुक्मे अन्दर आई विच जहान, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करी कुड़माईआ। रसना जिह्वा बोल के गए ज़बान, बत्ती दन्द नाल सलाहीआ। लिख लिख लेखा लेख कलाम, नाम नामा रूप वटाईआ। निउँ निउँ सजदा झुक झुक करदे गए सलाम, चरण कँवल सीस टिकाईआ। मुश्किल करदे गए असान, रहिबर बण के फेरा पाईआ। दे दे गए धुर पैग़ाम, मेरी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। चारे बाणी कहे वेख अबिनाशी अचुत, परवरदिगार मेहर नज़र उठाईआ। बिरहों वैरागण फिरां खुलड़ी गुत्त, मैंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। सचखण्ड निवासी क्यों बैठा चुप्प, थिर घर आपणा मुख भवाईआ। तेरा नाता तेरे नालों सब दा गया तुट, प्रीती सच ना कोई कमाईआ। बिन हरिनामे ख़ाली दिसण बुत्त, काया पंज तत कूड़ी नज़री आईआ। मैं तेरा दर दुआर दुराडी आई पुच्छ, चल के वाहो दाहीआ। चरण कँवल सरनाई गई झुक, बन्दन डण्डौत इक्को रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक वर, हथ्थ तेरे वड्डी वड्याईआ। साहिब सतिगुर दए दिलासा, श्री भगवान आप जणाइंदा। इक्को रख धरवासा, धीरज धीर इक जणाइंदा। तेरी करां पूरी आसा, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरा करां आखा, कीता कौल तोड़ निभाइंदा। सृष्ट सबाई सच्चा भुल्ली पूजा पाठा, अन्तर आत्म ध्यान ना कोई लगाइंदा। साध सन्त जगत प्रोसण झूठा बाटा, हक़ हकीकत विच ना कोई आइंदा। वेखणहारा पुरख समराथा, दो जहानां खोज खुजाइंदा। निरवैर हो के निराकार बणे तेरा राखा,

मेहर नज़र इक उठाइंदा। जन भगतां अन्दर तेरा कर के वासा, घर सोहणा इक सुहाइंदा। चार कुण्ट वेखे खेल तमाशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। चारे बाणी चढ़े चा, घर साचे खुशी मनाईआ। पतिपरमेश्वर बणे मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। साचा बेड़ा लए उठा, आपणे कंध उठाईआ। लेखा जाणे थाउँ थाँ, लोकमात वेस वटाईआ। निमाणयां निताणयां साचे चरणां देवे थाँ, महल अटल इक वखाईआ। बलिहारी बलिहारी जां, सदके घोली घोल घुंमाईआ। जिस मैनूं ल्या उपजा, घाड़त घड़त बणाईआ। ओसे पकड़ी बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। मैनूं देवे सच्चा थाँ, भूमका इक्को इक सुहाईआ। जन भगतां अन्दर दए वसा, सोहणा खेड़ा बंक वड्याईआ। जिथ्थे अट्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल मेरे साहिब दा चले नाँ, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लेखे दए चुकाईआ। श्री भगवान कर प्यार, सच सच्च जणाईआ। चार जुग दी वेख धार, पर्दा रिहा उठाईआ। सेवा करी जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। होका देंदी रही विच संसार, कूक कूक सुणाईआ। उठ जीव जाग हो ख़बरदार, सुनेहड़ा इक समझाईआ। मिले मेल परवरदिगार, जोती नूर अलाहीआ। सच स्वामी पुरख अकाल, नेहकामी रूप वटाईआ। जलवा नूर दरस करो जलाल, चरण कँवल सरनाईआ। मन्दिर अन्दर वेख सच सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मट्ठ शिवदुआला मसीत इक्को नज़री आईआ। अट्ठे पहर वज्जे ताल, हरि शब्द नाद शनवाईआ। घर अमृत भरया ताल, अठसठ खोजण कोए ना जाईआ। कूड़ी क्रिया तुटे जंजाल, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। भाग लग्गे काया माटी खाल, पंज तत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। श्री भगवन्त दस्से ठीक, एकँकार इक्को राग जणाईआ। पूरब तेरा ल्या वेख, मध पर्दा रिहा उठाईआ। अग्गे शब्द अवल्लड़ा भेख, भविक्खत दए जणाईआ। जन भगतां करे हेत, सिख्या सच समझाईआ। वसणा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी आत्म परमात्म रची खेड, ब्रह्म पारब्रह्म रूप वखाईआ। ओस दे नाल तैनूं दित्ता भेज, गा गा आपणा राग अलाईआ। दोहां मिल के माणणी इक्को सेज, जिस सेजे सुत्ता बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। सांगों पांग हंढ्ढाई बाशक सेज, सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जलवा नूरी तेज, महिबूब नूर रुशनाईआ। मुरीद मुर्शद लए वेख, वक्खरी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दोशाले लए लपेट, कूड़ी हवा ना लागे राईआ। सच दोशाला गुरमुख चोली, श्री भगवान ताणा पेटा आपे पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ रख के डोली, बण कहार सेव कमाईआ। लोकमात ल्याए हौली हौली, मात गर्भ बाहर कढ्ढाईआ। आपणी धार रख विचोली, नाता

सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। मन्दिर वड़ के गावे बोली, ढोला राग अलाईआ। प्रेम प्रीती तन्द मौली, सोहणा सगन वखाईआ। अनहद बणे नाल ढोली, डग्गा इक लगाईआ। वस्त दे इक अनमोली, अनडिठड़ी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे माण वड्याईआ। सच दुशाले लपेट आप, आपणी दया कमाइंदा। परा पसन्ती तेरा जाप, जन भगतां अन्दरे अन्दर टिकाइंदा। मद्धम निकले इक अवाज़, सो रूप समझाइंदा। बैखरी कहे हँ ब्रह्म होए आप, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। दोहां मिल के बणे इक्को जाप, सोहँ रूप वखाइंदा। लेखा जाणे पुरख अकाल बाप, पूत समझ कोई ना पाइंदा। जुग चौकड़ी पिच्छों तेरा इक्को सोहणा सच्चा पाठ, पुरख अकाल आप समझाइंदा। जन भगतां जोड़ नात, घर साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, आसा मनसा मनसा आसा सब दी वेख वखाइंदा।

* २० माघ २०२० बिक्रमी सड़क दे उते महात्मा नाल *

सदा सदा सद गुरू महाराज दी जै, दो जहान रहे जस गाईआ। पूरा सतिगुर जन भगतां अन्दर बहे, आत्म सेजा सोभा पाईआ। नाम निधाना इक्को कहे, सच्चा राग अलाईआ। लहिणा देणा जुग जुग दए, देवणहार वड्डी वड्याईआ। नेत्र पेख चरणी ढह, चुक्के जगत जुदाईआ। अमृत धार निझर रहे, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। भगत भगवान सदा सदा जै, जै जै जैकार अन्तर आत्मक इक ध्यान लगाईआ। सतिगुर पारब्रह्म जै देव, अलख निरँजण वड वड्याईआ। आदि जुगादि भगत जनां दी साची सेव, धुर दी धार प्रगटाईआ। करे खेल नेहचल धाम नेहकेव, अगम्म अथाह अख्वाईआ। दाता दातार योद्धा सूरबीर वड देवी देव, देव आत्मा सर्ब समाईआ। नित नवित्त जुगां जुगन्तर देवणहारा अमृत रस सच्चा मेव, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। अन्दरों बाहरों सब नूं रिहा वेख, घर सुहञ्जणे डेरा लाईआ। पिछले जन्म दी पुछो खेड, अवधूती लेख चुकाईआ। शंकर मेला धुर दा भेत, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मिली वड्याई महीना जेठ, नावीं थित सोभा पाईआ। नानक मिल्या विच खेत, गहर गम्भीर अख्वाईआ। धूढ़ी मंगी चरणां टेक, नैण नैण बिगसाईआ। गुरूदेव दरस आपणा भेव, भेद दे खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सद साची धार चलाईआ। नानक किहा अलख निरँजण एक, आदि पुरख अबिनाशी करता पुरख आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि जिस दी टेक, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। सब दे अन्दर वड़ के दरसणहारा भेत, पंज तत काया माटी बाहरों सोहणी पोच पुचाइंदा। कलयुग अन्तिम कर

के हेत, निरवैर निराकार आपणा रंग रंगाइंदा। सत्त जन्म लए खेड, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। बीस बीसा माणे तेरी सेज, सोहणी रुत्त सुहाइंदा। नेत्रां तक्क लवीं वेख, निरगुण निरँकार इक्को नज़री आइंदा। चरण कँवल फेर देवे टेक, टिक्का मस्तक इक लगाइंदा। जटा जूट धार तेरा ओह भेख, भविक्ख्त आपणा भेव जणाइंदा। अग्गे आपणा करके हेत, अन्त जोती जोत जोत मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दा लहिणा सर्ब चुकाइंदा। मस्तक टिक्का वेख त्रिशूल, त्रैभवन धनी वड वड्याईआ। आदि शक्ति जिस दा मूल, चतुर्भुज जिस दा रंग वखाईआ। सर्ब स्वामी सच कन्तहूल, नर नरायण इक अख्वाईआ। पूरब जन्म ना जाए भूल, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। अज्ज मिलण दा इक्को मूल, रातीं सुत्यां दरस दिखाईआ। हुक्म धुर फ़रमाणा माकूल, परवरदिगार देवे नूर अल्लाईआ। जुगां जुगन्तर निरगुण कदे ना बदले असूल, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सड़कां उते ना चुंगीख़ाना ना लए मसूल, बिन पैसे टक्यों धुर दा टिकट देवे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र नेत्रां नाल रखाईआ। नेत्रां नाल नेत्रां मेला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। इक्को घर वसे गुरु गुर चेला, चेला गुरू इक्को मन्दिर सोभा पाइंदा। थित वार सुहञ्जणा वेला, घड़ी पल रंग रंगाइंदा। सारयां नालों हो के वेहला, तेरा पिछला लेख चुकाइंदा। की होया जे छड्ड के आया जंगल बेला, काने काही खेल खिलाइंदा। चलदयां चलदयां कन्त सुहाग चाढ़ के जाए तेला, साचा सगन मुख लगाइंदा। एह धुर दा यार अलबेला, मेहरवान दया कमाइंदा। सुरती करे शब्द मेला, घर सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेखे लाइंदा। पूरब जन्म शंकर पुजारी, मस्तक त्रिशूल रखाईआ । ओम ओम रसन उच्चारी, अलख अलख ढोला गाईआ। नानक मेला निरगुण निरँकारी, सरगुण मिले वड्याईआ। दोहां गोष्ट होई अपारी, तीर कटाक्ष बचन चलाईआ। थोड़ा मन आया हँकारी, सिधी दए वखाईआ। नानक किहा जो मिल्या इक दातारी, सो इक्को ओट रखाईआ। शब्द सुण लथ्थी खुमारी, चिन्ता इक्को इक प्रगटाईआ। दस्स किस बिध लथ्थे एह बीमारी, हउमे रोग गंवाईआ। नानक किहा मेरा साहिब सदा सदा सिरजणहारी, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सति पुरख दी भगती करनी सत्त जन्म लै के बण के लोकमात नारी, नारी कन्त आत्म परमात्म संग लगाईआ। आपे वेखे आ के आपणी वारी, लभ्भण कोई किते ना जाईआ। लँघदयां लँघदयां आ गई ओह बहारी, जिहड़ी रुत्तड़ी राह तकाईआ। साहिब सुल्तान शाह सवारी, आया बेपरवाहीआ। निगह नाल निगह मिला के पिछली टुट्टी गंढी यारी, लहिणा देणा झोली पाईआ। अग्गे फेर ना होवे ख्वारी, आवण जावण मरन जन्म लख चुरासी गेड़ रहिण ना पाईआ। चरण कँवल

मिले उच्च अटारी, जिथ्थे जगे जोत इक निरँकारी, दीवा बत्ती कोई नज़र ना आईआ। तारदा जाए जांदा जांदा वेखणहारा सर्ब दी वारी, वारता पिछली भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण इक उठाईआ।

* २० माघ २०२० बिक्रमी बीबी प्रकाश कौर दे घर पिण्ड साहले वाल ज़िला गुरदास पुर *

ब्रह्मण्ड खण्ड सारे तक्कण, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक दूजे नूं दस्सण, नैण वेखया हाल सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशीआं नाल नस्सण, दरगह साची भज्जण वाहो दाहीआ। वेखो खेल पुरख समरथण, निरगुण निरवैर निराकार आप कराईआ। जोती नूर कर प्रकाशन, दो जहानां डगमगाईआ। भगत सुहेला बणाए साथन, सगला संग रखाईआ। निर्धन होए बणया पांधन, पांधी आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेले विरले जानण, जिन्हां अन्तर आत्म प्रभ बुझाईआ। गुरमुख गुर गुर इक पहचानण, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। गुरसिख खुशीआं रंग मानण, काया चोली वज्जे वधाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया हड्डीआं बालण, त्रैगुण अग्नी रही तपाईआ। आपणा आप ना मूल संभालण, मन वासना रही कुरलाईआ। साहिब सुल्तान जन भगतां बणे जगत दलालण, सच दलाली इक कमाईआ। जलवा नूरी दए जलालण, अन्ध अन्धेर रिहा मिटाईआ। चारों कुण्ट आया भालण, दहि दिशा वेख वखाईआ। खुशीआं रंग वखाए धुर दी मालण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप सुहाईआ। साचा खेल वेख निरँकार, रवि ससि बैठे ध्यान लगाईआ। मण्डल मण्डप होए हैरान, पुरी लोअ अक्ख खुल्हाईआ। देवत सुर करन विचार, मुन जन बैठे सीस झुकाईआ। चारों कुण्ट जै जैकार, कोटन गीत रिहा गाईआ। अन्तर आत्म कर पुकार, तूही तूही राग अल्हाईआ। हँ ब्रह्म दे अधार, ओट इक्को इक तकाईआ। काया माटी चम्म रंग प्रभ चरण धूढ़ी छार, धुर दा नहावण रहे नुहाईआ। गुलशन खिले सोहणी गुलज़ार, कली कली महक महकाईआ। अमृत रस इक भण्डार, घर घर अन्दर नज़री आईआ। सन्त सुहेले रखण संभाल, गुरमुख परदयां विच छुपाईआ। जिस दी किरपा शाह होवे कंगाल, कंगाल शाह रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचन आप रचाईआ। वेख खेल पुरख अगम्म, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। दहि दिशा कहे धन्न धन्न, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खुशी वखाईआ। गुर अवतार कहिण असीं सुणया शब्द सुहागण, धुर दा रागी राग अल्हाईआ। दयाल हो के बेड़ा रिहा बन्न्ह, मेहरवान फेरा पाईआ। भगत वछल जणे जन, होए धन्न जणेंदी माईआ।

कर वसेरा छप्पर छन्न, सोभावन्त रुत्त सुहाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्न, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सारे वेख होए हैरान, हरि जू की की खेल रचाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, नित नवित्त हुक्म वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। कलयुग खेल करे महान, जोती जामा वेस वटाइंदा। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी इक अख्वाइंदा। नाम संदेसा देवे आण, सोहला सच्चा राग अलाइंदा। जन भगतां कर पहचान, लख चुरासी विच्चों आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण चले नाल, सृष्ट सबाई नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। निरगुण निरवैर लै अवतार, जोती जामा वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले मेल मिलाइंदा। समुंद सागर कर के पार, भवजल डेरा लाहीआ। चरण प्रीती इक प्यार, धुर दी रीती आप समझाईआ। मन्दिर मस्जिद वसे बाहर, गुरूदवारे शिवदुआले मट्ठ सर्ब समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, गीता ज्ञान रिहा दृढ़ाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकार, तीस बतीसा रहे सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां करे प्यार, जो बैठे ध्यान लगाईआ। लख चुरासी जीव जंत करे ख्वार, जून अजूनी आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन वड्याई लोकमात, हरि करता आप जणाइंदा। वस्त अमोलक धुर दी दात, घर घर विच आप टिकाइंदा। आत्म परमात्म दे के साथ, ब्रह्म पारब्रह्म आप मिलाइंदा। दीवा बाती जोत ललाट, नूर ज़हूर इक वखाइंदा। पर्दा खोल्ह बज़र कपाट, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, जोती नूर चन्द चमकाइंदा। अमृत बूँद दे स्वांत, जगत तृष्ना तृप्त कराइंदा। अन्दर वड़ के पुच्छे वात, दुखियां दर्द दुःख वंडाइंदा। ज़ाहर बातन करे बात, अनभव आपणा भेव खुल्हाइंदा। लहिणा चुका के ज़ात पात, ज़ात पात ना कदे वडियाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जाए आख, सच संदेसा इक जणाइंदा। सर्ब जीआं दा पिता मात, पुरख अकाल इक अख्वाइंदा। जो कलयुग अन्तिम जन भगतां देवे साथ, धुर दा संग निभाइंदा। इक्को मन्त्र पूजा पाठ, इक्को सिमरन जोग अभ्यास इक समझाइंदा। चार बणा के सच जमाइत, धुर दी पट्टी नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरिभगत हरि रंग आप रंगाइंदा।

* २० माघ २०२० बिक्रमी बीबी बंती दे घर पिण्ड सालोवाल ज़िला गुरदास पुर *

हरिजन पूरी कराए आस, नर नरायण दया कमाइंदा। दीआ दीपक जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा । आत्म परमात्म दए साथ, काया मन्दिर पर्दा लाहइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणा रंग रंगाइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथ, धुर दा ढोला आप जणाइंदा। लहिणा देणा पूरब मस्तक माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि हरि लेखे लाइंदा। धुर दा लेखा पुरख समरथ, जीव जंत सर्ब जणाईआ । गुरमुख विरले देवे वथ, नाम सच वरताईआ। आपणे मिलण दी देवे अक्ख, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई नालों कर के वक्ख, भगती मार्ग इक दृढ़ाईआ। सद गाउणा श्री भगवान जस, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। अन्तर आत्म जाए वस, हरि दाता बेपरवाहीआ। दरस कराए हस्स हस्स, सोहँ हँसा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेल मिलाए आप, परम पुरख परखोतम दया कमाइंदा। बिन रसना जिह्वा दस्से जाप, बत्ती दन्द ना कोई हिलाइंदा। रातीं सुत्यां सब कुछ जाए आख, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। चरण प्रीती जोड़ नात, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। दरस दिखाए कमलापात, मकंद मनोहर लखमी नर हरि रूप अनूप वटाइंदा। जुग चौकड़ी जन भगतां दिसे सदा साथ, समरथ पुरख विछड़ कदे ना जाइंदा। गोदी चुक्के बण के माई बाप, पिता पुरख आप टिकाइंदा। हिरदे वड़ के देवे दाद, अन्दरे अन्दर वैराग उपजाइंदा । जो जन सरनाई जाए लाग, तिस राए धर्म नेड़ ना आइंदा। वेले अन्तिम पकड़ी वाग, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम मेले पुरख अकाल कन्त सुहाग, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन करे वड वडभाग, पूरब लेखा लहिणा भाग झोली पाइंदा ।

पटवारी जी नहीं ख़ाना पटवार, जमांबंदी नज़र कोई ना आईआ। जे वेखो ते इक्को हरिदुआर, हरि हिरदे विच समाईआ। पिछले काग़ज बिन मंज़ूरीउँ देवे फाड़, फ़क रहिण इक्को वार कराईआ। अगले दफ़तर देवे चाढ़, इंतकाल दी लोड़ रहे ना राईआ। ना कोई गवाह लभ्भणा पए नम्बरदार, शहादत अवर ना कोई भुगताईआ। कानूगो ना करे विचार, पड़ताल विच रोज़नामचा ना कोई बणाईआ। ना कोई चल के आवे तहसीलदार, दसख्त कर के मोहर लगाईआ। इक्को वार सारे करे बहाल, लेखा साहिब सतिगुर आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी वस्त देवे नाम संभाल, ओस दी झोली आप टिकाईआ।

* सालोवाल तों बाहर सड़क उते *

आपणा लेखा कोई ना जाणे पत्र, वरका सके ना कोई उलटाईआ। जिस ने लेखा लिख्या नाल अक्खर, सो बिन अक्खरां दए गवाहीआ। जिस दा खेल पाणी टिल्ले पर्बत पत्थर, वण तिण रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के दया कमाईआ। चक्र विच रिहा भौं, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। सुख दी नींद ना सके सौं, शांती नज़र कोए ना आईआ। हल्ल होया ना कोई गौं, आसा मनसा विच टिकाईआ। जगत वसेरा जिउँ सुंञें घर काउँ, मुख चोंच रिहा कुरलाईआ। जिन्ना चिर सतिगुर पूरा ना पकड़े बाहों, फड़ बाहों ना गले लगाईआ। ओनां चिर ना ख़तरा जाए ना भउ, भ्यानक बैठे ना मुख छुपाईआ। पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै कहु, कैहन्दयां मन वासना देवे डेरा ढाहीआ।

* २० माघ २०२० बिक्रमी लाल चन्द दे गृह गुजरात ज़िला गुरदास पुर *

गुर अवतार पीर पैगम्बर जुड़दा, सचखण्ड दुआर इकट्ठ बणाईआ। रूप दिसे ना कोई मुर्दा, जोती धार नूर रुशनाईआ। सब नूं फुरना इक्को फ़ुरदा, मन्त्र इक आवाज़ अलाईआ। वेखो खेल साहिब धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। आपणी करनी करनों कदे ना मुड़दा, नित नवित्त वेस वटाईआ। भेव ना आवे एस दे ज़ोर दा, बेअन्त बेपरवाह अख्वाईआ। लेखा जाणे ठग्ग चोर दा, भगत भगवान खोज खुजाईआ। घर सुहाए सोहणा मन्दिर देवी दुर्गा, दरगाह रूप बणाईआ। सति सतिवादी पहर शेर दा, बुरका बुक्कल सब दी रिहा खुल्हाईआ। कलयुग बेड़ा वेख रुढ़दा, हरिजन साचे रिहा तराईआ। करे खेल अगम्मे पिर दा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे धाम थिर दा, घर साचे खुशी वखाईआ। उलटा वेख गेड़ गिढ़दा, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाईआ। वेखो सति सतिवादी अखाड़ा घेरा बन्न्हया आपणे पिड़ दा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। नारद चल के आया रिड़्दा, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। मैं तक्कदा खेल एह देर दा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। किस वेले प्रभ अमृत मेघ बरसे मेहर दा, मेहरवान दया कमाईआ। जो जन भगतां लेखा आप नबेड़दा, दूजे हथ्थ ना दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। वेख अखाड़ा अगम्मा लग्गा, दो जहान वज्जी वधाईआ। किन्नर यच्छप आए भज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। ताल तलवाड़ा इक्को रखा, सुर ताल समझ कोए ना पाईआ। नेत्र वेखण आपणीआं अक्खां, नैण रहे खुल्हाईआ। करे खेल पुरख समरथा, वड दाता

४४१ १६

बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवत सुर आउँदे गावण गीत, वाहवा राग अल्ाईआ। चलो वेखीए अचरज रीत, जो परम पुरख चलाईआ। साची दस्से सच प्रीत, नाता इक रखाईआ। लेखा जाण हस्त कीट, ऊँच नीच दए वड्याईआ। ओढण पीतम्बर देवे इक्को सीस, सोहणा रंग रंगाईआ। दयावान कर बख्शीश, बख्शिश झोली पाईआ। लख चुरासी विच्चों कर सरजीत, जीवण जीवण दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सारे इकट्ठे हो के आए, कूक कूक सुणाईआ। साहिब सतिगुर ल्या बुलाए, आपणा हुक्म वरताईआ। धुर संदेसा इक सुणाए, शब्दी नाद वजाईआ। साचे मंगल धुर सुणाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी खेल जणाईआ। इकट्ठे हो के सारे दस्सण, इक दूजे हाल सुणाईआ। उठो वेखो प्रभ समरथन, साहिब वड्डी वड्याईआ। जन भगतां हिरदे आया वसण, घर मन्दिर डेरा लाईआ। ताल अगम्मे आया वज्जण, धुर दा नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सुण वड्याई नारद बोले, इक्को आवाज लगाईआ। तुसीं सारे दिसो भोले, भोला भाउ रखाईआ। उठो वेखो हो के ओहले, आपणी अक्ख खुल्ाईआ। पुरख अबिनाशी गावे ढोले, साचा राग अल्ाईआ। सन्त सुहेले आप विरोले, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर आत्म निरगुण मौले, सोहणा रंग चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो कर के गए कौले, कीता इकरार तोड़ निभाईआ। करे खेल उपर धौले, धरनी धरत दए वड्याईआ। रंग वटाए साँवल सवले, सुन्दर आपणी कार कमाईआ। ताल वजाए बिन ढोलक तबले, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। किन्नर कहे मैं दस्सां सच्च, सच सच जणाईआ। अन्दरे अन्दर वेखो सारे रहे नच्च, मुख घूँगट ना कोए उठाईआ। दूर दुराड फिरन बच बच, अग्गे सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करे आप कमाईआ। गुर अवतार कहिण एह खेल अनोखा, समझ किसे ना आईआ। श्री भगवान जन भगतां नाल करे ना धोखा, धुर दी वस्त आप वरताईआ। मार्ग दस्से इक्को सौखा, साची करे पढ़ाईआ। आपणे मिलण दा दे के आप मौका, आपणे संग रखाईआ। पीर पैगम्बर कहिण हरिसंगत नाल लै के देवे होका, जंगल बेले कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्न कहे मैं ल्या जाण, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। करे खेल मात महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे उते छाईआ। मैं देवणहारा दान, घर घर रिज़क पुचाईआ। प्रभ करे खेल महान, वक्खरा राह वखाईआ। जन भगतां इक निशान, सति सतिवादी

आप फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मा कहे मैं वेख्या ब्रह्म, हर घट नज़र टिकाईआ। श्री भगवान करे आपणा कर्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जिन्हां देवे आपणी सरन, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े भरम, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सो ढोला इक्को पढ़न, सोहँ सच्चा राग अल्हाईआ। आत्म परमात्म खुशीआं करन, चिन्ता ग़म ना कोए वखाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सारे बिन रसना रहे सुणाईआ। निरगुण करदा फिरे सच विहारा, दो धारा चाल चलाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, सोहणी आपणी बणत बणाईआ। गोबिन्द दे इक आधारा, ब्रह्मण गौड़ा खेल वखाईआ। सच अमाम धुर दा यारा, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुणाया इक, इक्को बोल जणाईआ। जिस दा लेखा गए लिख, सो दाता बेपरवाहीआ। जन भगतां पाउँदा फिरे भिक्ख, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई आत्म जित, परमात्म खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी धार चलाईआ। सुण के बचन ब्रह्मा सुत बोलया कुमार, आपणी धार जणाईआ। तेई अवतार करो विचार, पर्दा उहला आप उठाईआ। करे खेल की सिरजणहार, कवण करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तेई अवतार वेख होए खुश, खुशीआं हाल सुणाईआ। श्री भगवान उन्हां रिहा पुछ, जिन्हां साडे नाल प्रीत लगाईआ। अन्तिम साडा पैंडा गया मुक्क, पुरख अकाल वेख वखाईआ। दीनां दुखियां वंडे दुःख, दर्दीआं दर्द रखाईआ। भगत भगवान गोदी चुक्क, सोहणी सेज सुहाईआ। निरगुण निरवैर बदलया आपणा रुख, चाल अवल्लड़ी इक चलाईआ। जोती धारों आपे उठ, शब्दी डंक वजाईआ। हरि भगतां रिहा पुच्छ, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण वड्याई आया घनईआ, सच कहाणी इक जणाईआ। चलदी वेखी इस दी नईआ, नौका समुंद सागर पार कराईआ। नाल रखी अगम्मी वहीआ, रविदास चम्यारा करे लिखाईआ। नाता जोड़ भैणा भईआ, हरि संगत संग बणाईआ। कोटन बुल्ले नाल ताल वजावण करन थईआ थईआ, आपणा नाच वखाईआ। गोपीआं काहन कहिण मिल्या सईआ, साहिब बेपरवाहीआ। खुशीआं वेख खुशी होए दुर्गा मईआ, मेहरवान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। वेख खेल रमईआ दस्से, धुर दा हाल जणाईआ। आदि जुगादि साहिब जो वसे, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। भगत सुहेला खुशीआं नाल हस्से, सोहणा गीत अल्हाईआ। हरिसंगत

संग मिल मिल भज्जे, भज्जयां पन्ध मुकाईआ। जुग जन्म दे करे इकट्ठ, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। नेत्र वेख पत्त रखे, मेहर नज़र नैण उठाईआ। खुशीआं विच कोई ना थक्के, हरख सोग ना कोए वंडाईआ। जिस वेले गुरमुख चरणां वल तक्के, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। पीर पैगम्बर भज्जे जाण नाल छड्ड मदीने मक्के, सोहणा आपणा बंस बणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुर अवतार आए नट्ठे, सोहणा आपणा पन्ध बणाईआ। रंग माणण विच धूढ़ घट्टे, सोहणा लाल रंग वखाईआ। गीत गौण साहिब पत्त रखे, परमेश्वर दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण वड्याई आया मूसा, सारा हाल सुणाईआ। मैं काला धोणा आपणा सूसा, हरिसंगत धूढ़ी उते पाईआ। मेरा ख़ाली चलदयां चलदयां भरया ठूठा, अतोट अतुट वरताईआ। साहिब सतिगुर इक्को तुट्ठा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जिथ्थे मरूंडा दित्ता नाल मुट्ठां, ओस धाम मिले वड्याईआ। समें अनुसार बराट ओथे लुका, आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ईसा कहे मैं वेख्या हाल, हाज़र हो के सेव कमाईआ। परवरदिगार होया दयाल, रहमत इक जणाईआ। गुरमुख वेख आपणा लाल, लालन इक्को रंग रंगाईआ। चलदयां चलदयां खेल करे कमाल, बेअन्त बेपरवाहीआ। जन भगतां करदा जाए वसाल, दे जुमाल नूर इलाहीआ। मुख पूंझदा जाए नाल रुमाल, सोहणी सेव कमाईआ। जे थक्कण लग्गण अन्दर वड़ के लए उठाल, उठो नट्ठो वाहो दाहीआ। सोहणा मौका ल्या संभाल, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। उच्चे नीवें थाँ छालां मार, हरिजन भज्जण वाहो दाहीआ। जा के वेखीए आपणा यार, विछोड़ा झल्ल सके कोई ना राईआ। लाल चन्द नहीं एह गुर का लाल, लाल गुरू रूप समाईआ। जिस सेवा कीती महान, मिली माण वड्याईआ। लालो दे पिच्छे एहदा मकान, ठठयारा रूप वटाईआ। घाड़त घड़न विच कमाल, सोहणे भाण्डे दए बणाईआ। इक कौल ते इक थाल, नानक भेंट चढ़ाईआ। लालो इस विच खाणा देणा खवाल, एहो मेरे मन भाईआ। जे मेरा साहिब होवे दयाल, तेरे नाल दए मिलाईआ। मेरा काया भाण्डा अन्दरों देवे मांज, सोहणी करे सफ़ाईआ। जन भगतां नाल बणाए सांझ, साची गंढु पवाईआ। एहो मैनूं लग्गी तांघ, जिहड़ी सके ना कोए बुझाईआ। बेशक मैं मुस्लिमीन हो के देवां बांग, निमाज़ पंज वार सुणाईआ। दीन दयाल मेरी खोल्हो जाग, अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। अन्तर उपजे इक वैराग, बिरहों तीर चलाईआ। सच सरनाई जावां लाग, आपणा आप मिटाईआ। इक्को डर मैनूं शरअ वाले ना देवण दाग़, जगत दुःख भवाईआ। ओसे वेले साहिब सतिगुर निरगुण सरूप सुणी अवाज़, शब्द संदेस अल्हाईआ। पुरख अकाल दा नहीं कोई समाज, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। जे चाहवें ते देवां राज, सीस ताज छत्र झुलाईआ। जे दरस मंगें गुरू महाराज,

नेत्र नैणां दयां वखाईआ। सुण अवाज़ कर पुकार, किहा मेरी रख लाज, तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा कलमा तेरी निमाज़, तेरा सजदा तेरा सीस झुकाईआ। नानक किहा विच थोड़ा रह गया राज़, तैनूं सच दयां जणाईआ। जे नधड़क हो के हो जानों मुहताज, लेखा हुणे देंदा मुकाईआ। तेरे अन्तर भय दी आई आवाज़, काज़ीआं कोलों डर रखाईआ। मैं परवरदिगार अग्गे करां फ़रयाद, देवां सच सुणाईआ। तूं इस दा लेखा रखणा याद, जो गवांढी लालो नज़री आईआ। इस दा नाउँ मुमताज, वालद ख़ैर दीन अख्वाईआ। तेरे बेड़े उते चढ़े रख के तेरी ख्वाहिश, निरासा नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान किहा मैं पूरी करां आस, नाल लालो एहदा संग बणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो के निरगुण जोत करां प्रकाश, जोती जामा वेस वटाईआ। चल के आवां इस दे पास, बण के पांधी जगत राहीआ। लालो दा सारा लै के साथ, इकट्ठ इक्को घर कराईआ। दोहां दे मिला के हथ्थ नाल हाथ, विचोला हो के जोड़ जुड़ाईआ। आपणे वेखण दी दे के अक्ख, अन्दरों ताकी लाहीआ। जो वस्त रखी ढक्क, इक्को वार वखाईआ। हरिसंगत कहे नबेड़ा कीता हक़, खुशीआं नाल सुणाईआ। श्री भगवान कहे जे बच्चयो गए थक्क, रातीं सुत्तयां सारयां दरस दिखाईआ । सारे टेक के कहिण मथ्थ, प्रभू तेरी धूढ़ खुशीआं नाल मस्तक लाईआ। तेरे उते सब ने हथ्थ दित्ते रख, हक़ आपणा ल्या जमाईआ। अबिनाशी करता निरगुण निरवैर मेहरवान जन भगतां अन्दर आवे नझक्क, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर फेरा पाईआ। अग्गे कोई ना सके डक्क, नौ दवारे निउँ निउँ सीस निवाईआ। करे खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सब दा लहिणा रिहा चुकाईआ। लहिणा चुकदा वेख नानक ओम ओंकार निरँकार रिहा जस गाईआ। मैं सहिज सुभाउ आया दस्स, आपणी रमज़ लगाईआ। श्री भगवान चेता ल्या रख, भुल्लया अभुल्ल ना बेपरवाहीआ। निक्का वड्डा हो के आया नट्ठ, वड्डा निक्का आपणा रूप वटाईआ। राह विच इशारयां नाल सब कुछ रिहा दस्स, तारदा जाए पांधी राहीआ। गुरमुख खुशीआं नाल रहे हस्स, आपणी खुशी मनाईआ । श्री भगवान कहे एह मेरा नहीं किछ वस, तुहाड्डा देणा झोली पाईआ। तुहाड्डे नाल गुरू अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे नच्च, अड्डी पब्ब दोवें रहे उठाईआ। पीर पैगम्बर नाअरे लौण हक़, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। खुशीआं नाल गावण जस, तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सच्चा इक्को माहीआ। जन भगत खेड़ा जाए वस, घर नौबत नाम वजाईआ। हरिजन रहिण ना देवे अड्ड, दूर दुराडे जोड़ जुड़ाईआ। जिन्हां नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर लारे दे के गए छड्ड, तिन्हां दा लेखा दए मुकाईआ । सति धर्म निशाना गड्ड, दो जहानां दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। करनी

वेख पुरख समरथ, चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। सारे मिल के गावण जस, सोहणा राग अल्हाईआ। वाह प्रभू बेपरवाह, तूं किन्हां दे होइउँ वस, जिन्हां नूं लोकीं कहिण शौदाईआ। श्री भगवान किहा मैं नहीं एह मेरी अक्ख, जिन्हां विच्चों मेरा नूर नज़री आईआ। एहनां पिच्छे मैं मात होया प्रतख, जोती जामा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर एसे कर के अग्गे पिच्छे रहे नट्ठ, डर भय मेरा नज़री आईआ। बिन हुक्म कौण सचखण्ड दुआर आवे छड्ड, घट्टे मिटी विच भज्जे वाहो दाहीआ। बुत्त नूं वेख सारे कहिण एह जट्ट, जटा जूट धारी समझ किसे ना आईआ। गुरमुख कहिण श्री भगवान साडे वासते खोल्लया हट्ट, अनमुलड़ी दौलत रिहा वरताईआ। जो जुग जन्म पूरब कर्म प्रभ तों विछड़ मूँह दे भार गए ढट्ठ, तिन्हां रिहा उठाईआ। लेखे ला के हड्ड मास नाड़ी रत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। साची दे के इक्को मति, चारे वरन समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब दा पूरा करे हक़, ख़ाली कोई रहिण ना पाईआ। बण रथवाही चलाए रथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा मुकाईआ। मुकदा लेखा वेख भगवन्त, दो जहान नैण उठाईआ। वेखो मिलदा सखीआं कन्त, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। रुत सुहाई इक बसन्त, पत डाली आप महकाईआ। दे वड्याई विच्चों जीव जंत, सन्त सुहेले लए उठाईआ। ग़रीब निमाणयां बणा बणत, शाह सुल्तानां नालों उच्चे धाम बहाईआ। जिस घर महिमा सदा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। वेख वड्याई हुन्दा जस, वड्याई नैणां नीर वहाईआ। हो निमाणी चरण गई ढट्ठ, मैं कोझी कमली की सिफ्त सकां लिखाईआ। जिन्हां प्रभू तूं होइउँ वस, ओथे मेरी की चतुराईआ। मैं चुक्क ना सकां अक्ख, मेरे नेत्र नैण शरमाईआ। उह वड्डे जो तेरी चरणी गए ढट्ठ, मेरी वड्डी वड्याई कम्म किसे ना आईआ। जे वेखें ते मेरे ख़ाली हत्थ, कोझी कमली दयां दुहाईआ। जे हरिसंगत चरणां विच लए रख, एन्हां नाल मिल के तेरा नाम ध्याईआ। इक बोलणा सिख जावां सच्च, सच विच तेरी सिफ्त नज़री आईआ। प्रेम प्रीती विच जावां फस, फस के नाता इन्हां नाल रखाईआ। जे खुशीआं नाल मेरे नाल जाण हस्स, मैं उच्ची अड्डी फिरां चाईं चाईंआ। एह वस्त दे प्रभू समरथ, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। उठ वड्याई जगत वड्डी, हरि वडेरा आप समझाइंदा। माण ताण कूड़ा छड्डीं, शहिनशाह हुक्म वरताइंदा। हरिसंगत नाल उठ के भज्जीं, इक्को राह वखाइंदा। मोटर टांगा वेखीं लभ्भीं ना कोई गड्डी, भाड़े वाला टट्टू कम्म किसे ना आइंदा। सेवा करीं आपणी पैरीं हथ्थीं, सोहणी बणत बणाइंदा। वेख हरिसंगत आपणी अक्खीं, केहड़ी चाल चलाइंदा। विछोड़े विच ना तड़फण दिती मच्छी, मछली जल आपे रूप वटाइंदा। एहनां नाल

४४६
१६

हिस्सा पा के रख ला पत्ती, पतिपरमेश्वर आपे दया कमाइंदा। जिनूं दूरों चल के गुजरात वेखी सखी, सखीआं विच्चों सखी लाल नज़री आइंदा। जिस दी माँ बड़ी पक्की, धीरज धीर नाल जुड़ाइंदा। उह सब नूं गल्ल दस्से सच्ची, श्री भगवान इक्को नज़री आइंदा। हरिसंगत जिस दी बच्ची, वांग बच्चयां गोद उठाइंदा। इस दी प्रीत नहीं कच्ची, जो कच्चयां भांडयां पक्कयां विच रखाइंदा। इस दी धार बड़ी अच्छी, अच्छी तरूां समझाइंदा। गलों लाह देवे जम दी रस्सी, राए धर्म ना लेख मंगाइंदा। एहदे कोल अगम्मी बत्ती, जो घर घर अन्दर दीवा आप जगाइंदा। मेहरवान हो के गुरमुखां अन्दर देवे धीरज जती, सति सन्तोख नाल भराइंदा। जिस दे दवारयों मंगदे गए नाम दी इक रत्ती, उह तोलयां मास्सयां नालों बेअन्त बेपरवाह आप वरताइंदा। ग़रीब निमाणयां फड़ फड़ बाहों चुक्के आपणी हथ्थीं, मिटी घट्टा झाड़ सोहणा रूप वटाइंदा। बिन करनीउँ कमाईउँ झोली पाउँदा जाए खट्टी, अतोट अतुट भण्डारा आप खुल्हाइंदा। उसे वैराग विच मैं फटी, फट्टड़ कर के पट्टी नाम उते बंधाइंदा। हरिसंगत कर के इकट्ठी, गुरमुख सोहणे नाल ल्याइंदा। जिनूं विच बहि के मैं वी सजी, सज्जण संग रखाइंदा। बेपरवाह पर आउँदा अज्जीं पज्जीं, पर्दा ओहला विच रखाइंदा। राह विच वेख के हस्सण ख़ज़ूरां ख़ज्जी, ख़ज्जल हुन्दा आपणा ना मुख भवाइंदा। जिस दे नाल निक्की वड्डी संगत फिरे भज्जी, भजन इक्को इक जपाइंदा।
४४७ जिस दी ताली दो जहान वज्जी, नाम नग़ारा हथ्थ उठाइंदा। लख चुरासी सृष्टी जिस ने बद्धी, जीव जंत हुक्म वरताइंदा। ४४७
१६ ओस दी प्रीती ग़रीबां नाल लग्गी, निमाणयां रंग चढ़ाइंदा। मैं खुशीआं नाल कहवां उह मालक जग्ग दा जग्गी, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। की हो गया जे धन्ने दी सांभ के गया ढग्गी वच्छी, रविदास कोलों ढोर ढवाइंदा। नामे छप्परी लग्गी अच्छी, इक इकल्ला सोहणी बणत बणाइंदा। दुर्गा देवी कहे मैं उनूां नालों चंगी, हरिसंगत नाल लै के आइंदा। लालो कहे धन्न भाग मेरी गवांढीआं नाल पट्टी, गंढ्डी, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अकाल कहे मैनूं संगत लग्गी चंगी, जिस दा लेखा झोली पाइंदा। लालो नाल मेरा भुझंगी, पूरब लेख झोली वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाइंदा। बणत बणाई साहिब ठाकर, दयावान दया कमाईआ। जगत दवारा पार कर के सागर, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। दोहां देवे आदर, इक्को जिही वड्याईआ। हरिसंगत नाल वड्डी बहादर, जो बैठे बल वधाईआ। एनूं उते प्रेम प्यार दी देवे चिटी चादर, पर्दा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र नर निरँकार इक रखाईआ। लालो लाल दोहां रखणा याद, श्री भगवान सच सच्च सच जणाईआ। अल्हड़ पिण्डी विछोड़े वाली रात, ख़ाक चरण धूढ़ लग्ग अज्ज खुशी मनाईआ। तेई माघ फेर ओथे करना वास, जिथ्थे

मिले माण वड्याईआ। हरिसंगत बणाए भात, फुलका रोटी ना कोए पकाईआ। इक्को दाल नाल सोगात, श्री भगवान वंड वंडाईआ। अगली फेर दस्से बात, भेव अभेद खुल्हाईआ। चवी माघ खोल्हे जाग, नेत्र अक्ख पुटाईआ। बाबू पुर कन्त सुहाग, विछड़े लए मिलाईआ। बेड़े चाढ़ इक जहाज़, सोहणी धार वखाईआ। हरिसंगत कर के इक अवाज़, इक्को रूप बणाईआ। मुट्ठी मुट्ठी सब दे कोलों मंगे खाज, खान पकवान इक्को दए वड्याईआ। नंगा धड़ सीस ताज, गुरू महाराज राज़ खुल्हाईआ। सारे इके वेहड़े कर इकट्ठे कहे शाबाश, हरि सतिगुर हरिसंगत विच समाईआ। उह खुशीआं वाली छेवीं रात, घर दीदार दरस दिखाईआ। इक लाल चन्द पिच्छे रख्या इतना राज़, हेरा फेरी कर के आपणी खेल वखाईआ। वल छल करनों अजे ना आवे बाज, बाज़ी आपणी ना कदे उलटाईआ। जे कोई प्रभू दा समझे राज़, प्रभू कहि सीस ना कोए निवाईआ। लहिणे विच देणा दे के सिखां कोलों कदी ना अखवाए धोखेबाज़, सानूं छड्ड के धोखा गया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा लिख्या लेख ना कदे मिटाईआ।

रु२१ माघ २०२० बिक्रमी दुर्गा देवी दे गृह गुज़रात ज़िला गुरदास पुर *

अर्श नालों सोहणा फ़र्श, महिबूब रबाब वजाइंदा। मेहर नालों चंगा तरस, तरस विच आपणा दरस दिखाइंदा। दरस विच दे तड़प, बिरहों वैराग लगाइंदा। वैराग अन्दर धुर दा कटक, नाम निधान वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो रहे लटक, तिन्हां आपणी गोद बहाइंदा। धुर दा हुक्म दे के सख्त, साची कार कमाइंदा। निरवैर हो के आया परत, परम पुरख अख्वाइंदा। योद्धा बण के सूरबीर मर्द, मर्दानगी इक्को इक प्रगटाइंदा। बिन करनी क्रिया जन्म मरन दी मेटे दर्द, रोग सोग सर्ब चुकाइंदा। सेवा कर कहे एह मेरा फ़र्ज़, फ़ज़ूल वक्त ना कोए लँघाइंदा। घड़ी पल होण ना देवे कोई हर्ज, पिछला हर्जाना सब दी झोली पाइंदा। करे खेल आप असचरज, अचरज लीला आप वरताइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों वेख वेख पिछली फ़रद, हरिजन सारे पकड़ उठाइंदा। लेखा चुकाए हो नधड़क, धड़कन कूड़ी सर्ब मिटाइंदा। बेशक राह नहीं कोई सिधी सड़क, आप सिध्धा ते सिध्धा हो के आइंदा। मेल मिलाप विच रहिण ना देवे फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाइंदा। जे कोई प्रभ शब्द दा लभ्भे अरथ, अरथ अर्थात विच्चों नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नजर उठाइंदा। प्रेम अन्दर दस्से प्यार, प्रीती सच लगाइंदा। प्रीती अन्दर खेल न्यार, निरवैर आप कराइंदा। निरवैर अन्दर शब्दी धार, धुर दा राग अल्हाइंदा । राग अन्दर इक्को राज़, पर्दा

४४६
१६

उहला आप चुकाइंदा। परदे ओहले अन्दर लुक्या साहिब मुहताज, जन भगतां आस रखाइंदा । भगतां अन्दर मारे आवाज, सोहणा गीत अलाइंदा। गीत अन्दर दे के दात, झोली तन भराइंदा। झोली अन्दर सच सोगात, सोहणी आप टिकाइंदा। सोहणी अन्दर रखी इक्को आख, जिस अक्ख नाल आपणा मेल मिलाइंदा। मिल्या मेल होए प्रतख, पारखू आपणा वेस वटाइंदा। दूर दुराडा पांधी नट्ठ, मांगत हो के आइंदा। हरिसंगत गुरमुख गोबिन्द धार विच्चों कर इकट्ठ, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। जोड़ अन्दर आप वस, वसल इक्को इक कराइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर हस्स, हस्ती सफ़ा चुकाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। खेल विच नाम खलाउणा, गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ । चलदयां फिरदयां एनूं हिलाउणा, अन्दर सितार हिलाईआ। भज्जदयां नाल एहनूं भजाउणा, बिन लत्तां बाहवां नठाईआ। बहिंदयां नाल एहनूं बहाउणा, इक्को हुक्म सुणाईआ। सौंदयां वेले नाल सवाउणा, सोहणी सेज बणाईआ। एस वेले नूं सर्ब पछताउणा, किस बिध फिर के गया बेपरवाहीआ। चार जुग पिच्छों सब ने गाउणा, ऊँची कूक कूक अलाईआ। धन्न वडभाग जिन्नां प्रभ दर्शन पाउणा, घर मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कमाईआ। प्रभ का खेल सहिज सुभा, सुभावक आपणी धार चलाइंदा। कोटन कोटी प्रभ दे नाम दा पुछदे फिरदे भा, हट्टो हट्ट फेरा पाईआ । जिन्नां उते किरपा करे ओन्नां दा चिकड़ गारयां विच लग्ग जाए दाअ, सोहणी बणत बणाईआ। आपणी हथ्थीं लुट्ट के नूर खुदा, मुरीद कहिण मुर्शद ल्या मनाईआ। भगत कहिण एहनूं होया शुदा, जो पागल हो के साडे पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। जे इक वारी आवाज़ लईए लगा, दूर दुराडा नेड़े चल के आईआ। बण के वड्डा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। चाकर बण के सच्चा वफ़ा, वफ़ादारी तोड़ निभाईआ। रातीं सुत्यां लए जगा, बांह सरहाणे हेठ रखाईआ। फड़ के गोदी लए टिका, मस्तक उते लकीर मिटाईआ। छाती उते हथ्थ दए टिका, जन्म विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ। दोहां नेत्रां दए दबा, दो जहानां पन्ध चुकाईआ। जे किरपा कर के मुख उते उंगल दए छुहा, बिन नाम जपयां लेखा दए मुकाईआ। चोरी चोरी भुल्लयां जाए समझा, आपणा हुक्म मनाईआ। पिछली कसर जाए कढ्ढा, असर आपणा नाल रखाईआ। की होया जे रविदास नूं कहि गया आपणी बणत ठीक बणा, नीती वाला ओहो सच्चा माहीआ। जिस देणी जाच सिखा, सिख्या कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहणा रंग वखाईआ। सोहणा वेखो हरि का रंग, रंग राता आप कराइंदा। सब दी पूरी करे मंग, मंगतयां विच्चों इक्को मंगता नज़री आइंदा। जिस मंगते दी ख़ाली गठड़ी दिसे गंढ, जगत वस्त विच ना कोए टिकाइंदा। जिस वेले गुरमुखां दे अन्दर देवे टंग, साढे तिन्न हथ्थ

अन्दर ख़ाली थाँ नज़र कोए ना आइंदा। आपणे वस्त्र भूशन लाह के होए मलंग, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। आत्म सेजा वेख पलँघ, बदो बदी उते आसण लाइंदा। जे गुरसिख अन्दरो अन्दर ग़ुसे नाल कहे मैनूं कौण करदा तंग, जो सुत्यां रात जगाइंदा। ओसे वेले हौली हौली मुट्ठी चापी कर के प्रेम प्रीती लए मंग, मैं उह जिहड़ा नज़र किसे ना आइंदा। क्यों तुहाढ्डे घर जो खाधा रोटी दा डंग, एसे कर के सेव कमाइंदा। मेरी लग्गी तुहाढ्डे नाल जाए लँघ, पिच्छे हो हो वेख वखाइंदा। जे कुछ सुणना चाहो सुणावां फेर वी छन्द, जिउँ जजमानां घर डूंम मंगण आइंदा। जे मंगो मिले अनन्द, रस आपणा तुहाढ्ढी झोली पाइंदा। जे वेखो ते नज़री आए गुज़री चन्द, जिस नूं पुरख अकाल सुत बणाइंदा। दयाल हो के पावे ठंड, अमृत मेघ बरसाइंदा। आओ रल मिल अगली पिछली सारे लईए गंढ, बद्धी गंढ ना कोए खुलाइंदा। जन भगत कहिण सद वसणा साडे संग, संग तेरा सच्चा भाइंदा। बेशक जगत विहार साडे कोल भुक्ख नंग, भुख्यां नंगयां विछोड़ा तेरा झल्लया ना जाइंदा। श्री भगवान कहे एह मेरी बख़्शश विच्चों बख़्शंद, रहमत विच्चों रहम वरताइंदा। लाल अमोलक रतन हीरे असमानी चन्द नालों चंगे चन्द, जिन्नां उते अन्धेरा रंग ना कोए वखाइंदा। मिल के प्रीतम हो गए परम पुरख दा अंग, माणस जन्म भंग ना कोए कराइंदा। हरिसंगत सारी मिल के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाओ छन्द, छन्दा बंदी विच पाबंदी दो जहान मुकाइंदा।

✱ २१ माघ २०२० बिक्रमी महिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदास पुर ✱

धुर दा वेख अगम्मी रंग, लोक परलोक रहे जस गाईआ। गुर अवतार वजावण नाम मृदंग, पीर पैगम्बर कलमा नग़मा गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नच्चण बण मलंग, उच्च अगम्म अथाह आपणी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। हरि का वेख खेल अथाह, दो जहान ध्यान लगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड नैण रहे उठा, पुरी लोअ अक्ख खुल्हाईआ। ज़िमी असमान राह रहे तका, समुंद सागर नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप वरताईआ। हरि का रंग वेख अपार, सरगुण सारे रहे जस गाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, लख चुरासी रिहा समाईआ। शब्द नाद सच्ची धुनकार, गीत गीत अन्दर राग अल्हाईआ। जुग चौकड़ी बन्न्हे धार, सति सतिवादी दया कमाईआ। गुर अवतारां कर प्यार, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पीर पैगम्बरां दे अधार, मेहर नज़र इक टिकाईआ। किरपा कर सांझा यार, मुकामे हक़ नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार,

अकल कल आपणी खेल रचाईआ। धुर संदेसा दे वारो वार, नित नवित्त करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान आप दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान कर परवान, अल्फ़ ये रिहा समझाईआ। धुर दी बाणी ला के बाण, तीर निराला इक चलाईआ। सति धर्म सच निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। साचे भगतां दे ज्ञान, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। सन्तन देवे इक्को माण, आत्म परमात्म पर्दा लाहीआ। गुरमुखां बख्श इक ध्यान, चरण कँवल दए सरनाईआ। गुरसिख साचे कर प्रधान, नाम डंका हथ्थ वखाईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, महिबूब आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप जणाईआ। वेख रंग हरि करतार, कुदरत कादर वेख वेख बिगसाईआ। नूर इलाही परवरदिगार, बेऐब इक खुदाईआ। सच तौफ़ीक साचे दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोत उजाला नूर उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। एकँकार कर प्यार, सच प्रीती इक लगाईआ। आदि निरँजण निर्मल जोत कर उज्यार, जोती जाता करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बन्ने धार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। श्री भगवान राज राजान, शहिनशाह इक्को इक आपणा नाउँ प्रगटाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी इक रखाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। थिर घर देवे माण, मेहरवान हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाईआ। थिर घर वेख हरि का रंग, सर्ब रहे जस गाईआ। सच सिँघासण सूरा सरबँग, शाह पातशाह इक सुहाईआ। साचा नाद वज्जे मृदंग, अनरागी राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा वेख रंग निरँकार, निरगुण सरगुण दोवें खुशी मनाईआ। उठो वेखो धुर दरबार, सचखण्ड वज्जी इक वधाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सूरज चन्द ना कोए उज्यार, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। ज़िमीं असमान ना कोए सहार, खाणी बाणी रूप ना कोए वटाईआ। कागद कलम ना कोए लिखार, समुंद सागर मस रूप ना कोए वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। इकट्ठे कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सन्त सुहेले नाल उठाल, भगतां भेव चुकाईआ। नेत्र खोल्ह करो वसाल, ज़ाहर ज़हूर इक्को नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे इक्को रंग प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारे रंग अवल्ला, हरि करता आप प्रगटाईआ। सोहणा सुहा सच महल्ला, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां फड़ा पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। वेखणहारा जल थला,

डूंग्घे सागर खोज खुजाईआ। टिल्ले पर्बत पहाड़ उच्ची चोटी सिँघासण मल्ला, वण तृण आपणी कार कमाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रला, शब्दी जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा रंग इक जणाईआ। साचा रंग पुरख अकाल, हरि करता आप जणाईआ। ठाकर स्वामी हो दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार करो ध्यान, पीर पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई सुरत सके ना कोए संभाल, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। चार जुग जो दे के आए ज्ञान, लेखा लिख के कलम छाहीआ। नाउँ रखा शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान दे वड्याईआ। अञ्जील कुरान बोल ज़बान, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। जगत जहान जीव दस्स के आए ईमान, सिदक सबूरी नाल मिलाईआ। धर्म झुला के आए निशान, सोहणी वंड वंडाईआ। ज़ाहर हो के दे के आए ब्यान, शहादत इक्को नाम जणाईआ। जीव जंत आत्म परमात्म सिमरो इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया तुटे माण, ममता मोह रहिण ना पाईआ। घर मन्दिर वेखो आण, जिस घर ठाकर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे रंग जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लओ तक्क, हरि करता आप जणाइंदा। लोकमात लख चुरासी वक्ख वक्ख, जीव जंत नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। भेव ना जाणे कोए हकीकत हक़, पर्दा मुख नक़ाब ना कोए उठाइंदा। ना कोई सहारा तीर्थ तट्ट, अठसठ बेड़ा ना पार कराइंदा। लभ्भ लभ्भ थक्के मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, पुरख अकाल नज़र किसे ना आइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां विच रहे नट्ठ, डूंग्घी कन्दर बहि बहि आसण लाइंदा। धूढ़ी ख़ाक छार सिर रहे घत्त, अग्नी तत हड्ड जलाइंदा। वेखो किसे ना आवे ब्रह्म मत्त, विद्या ब्रह्म ना कोए पढ़ाइंदा। नानक गोबिन्द सब नूं कहि के आए पुरख समरथ, हरि करता इक्को नज़री आइंदा। जिस जन देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। कूड़ हँकारा बुरज जाए ढट्ठ, माया ममता मोह चुकाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। लेखे ला पवण स्वास, शब्द नाद धुन वजाइंदा। लहिणा मुका पृथ्मी अकाश, गृह मण्डल घर घर विच आप जणाइंदा। आत्म परमात्म वसे साथ, सगला संग निभाइंदा। आत्म सेजा सोहणी खाट, सिँघासण इक्को इक वडियाइंदा। दूई द्वैती मेट ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। जन भगतां पूरी करे ख़ाहिश, ख़ाहिश आपणी आसा नाल मिलाइंदा। दर ते कोई ना होए निरास, जो श्री भगवान इक्को ओट तकाइंदा। एथे ओथे देवे नज़ात, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक वखाइंदा। वेख रंग साहिब सुल्तान, गुर अवतार खुशी मनाईआ। तेरी वड्याई श्री भगवान, साहिब सतिगुर तोहे भाईआ। कलयुग अन्त सृष्ट सबाई भुल्ली तेरा नाउँ निधान,

मन वासना होई हल्काईआ। इष्ट देव सर्ब मनाण, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्का जीव जहान, जीवण जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। अन्दर वड़ के कोई ना वेखे काया साढे तिन्न हथ्थ मकान, जिस गृह वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साचा रंग पुरख समरथ, हरि करता आप जणाइंदा। चार जुग दे विछड़े वेखो अक्ख, नेत्र लोचण नैण इक खुलाइंदा। कलयुग जीव बैठे हो के वक्ख, सतिगुर संग ना कोए रखाइंदा। कूड़ी क्रिया मारी मत्त, जूठ झूठ भरम भुलाइंदा। जगत नेत्र काम वासना रहे तक्क, नाम ध्यान ना कोए लगाइंदा। मिले हकीकत घर ना कोई हक़, लाशरीक नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभू तेरा तमाशा, धुर दी सार किसे ना आईआ। असीं खोल्ह के आए तेरा मात खुलासा, लेखा लिख के कलम छाहीआ। पुरख अकाल सब दा पिता माता, दीनां अनाथां होए सहाईआ। आदि जुगादी धुर दा दाता, अतोट अतुट भण्डार भराईआ। जुग चौकड़ी मेटणहार अन्धेरी राता, गुर शब्दी चन्द चमकाईआ। बोध अगाध दस्स के गाथा, धुर दी करे पढ़ाईआ। एथे ओथे होए राखा, हलत पलत लए बचाईआ। चरण प्रीत बंधाए नाता, सगला संग बण जाईआ। जो गुरमुख मन्ने ओस दा आखा, श्री भगवान अग्गे पिच्छे फिरे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मिहबान बीदो सांझे यार, नूर ज़हूर तेरी रुशनाईआ। कलमा नबी रसूल बोल जैकार, नाअरा तेरा नाम सुणाईआ। चौदां तबकां दे हुलार, सबक इक्को इक पढ़ाईआ। तोबा तैथों नफ़रत कर गए कोई ना आए तेरे दर दरबार, मक्का काअबा रोवे दए दुहाईआ। सच महिराबा करे ना कोए प्यार, महिबूब मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तेरे हथ्थ सच वड्याईआ। तेरे हथ्थ वड्याई बेनज़ीर, तूं नज़र किसे ना आइंदा। तेरे हथ्थ सर्ब तकदीर, तदबीर तेरी समझ किसे ना पाइंदा। तूं चोटी चढ़ के वेखें आप अख़ीर, मंज़ल मंज़ल आपणा पन्ध मुकाइंदा। तूं कटणहारा शरअ जंजीर, सच तौफ़ीक इक रखाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर पीर फ़कीर, कलमा कायनात जणाइंदा। अन्तिम सारे हो दिलगीर, तेरे चरण ध्यान बिन नेत्र नैण लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। सब दा रंग वेख निरँजण, आदि पुरख रिहा जणाईआ। नेत्र नाम निधाना पावो अंजन, नूरी नूर नूर चमकाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जन भगतां चाढ़े आपणी रंगण, काया माटी सोहणी पोच पोचाईआ। मस्तक

टिक्का लाए इक्को चन्दन, चन्दन आपणा नाम समझाईआ। आत्म परमात्म देवे परमानंदन, निज रस इक वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत वस्त अमोलक इक्को मंगण, प्रभ मेल मिलावा होवे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा श्री भगवन्त, हरि करता आप जणाइंदा। खेले खेल जुगो जुगन्त, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। नाम निधाना मणीआ मंत, गुर गुर शब्दी धार चलाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, कातब बण के लेख लिखाइंदा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। मेल मिलावा साची संगत, सति सरूपी सच सन्त उपजाइंदा। नाम खुमारी चाढ़ रंगत, घर इक्को रंग दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जन भगतां दे के धुर दा जाप, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। लेख मुका तीनों ताप, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। दरस कराए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। ज़ाहर बातन करे बात, गुफ़त शुनीद आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ । साचा रंग भगतन चोला, पुरख अकाल आप रंगाईआ। सेवा करे बण के गोला, चाकर हो के फेरा पाईआ। नाउँ रखाए निरगुण मौला, घट अन्तर आपणा डेरा लाईआ। पूरा करे धुर दा कौला, कीता इकरार ना कदे भुलाईआ। भार करे धवला हौला, धरनी धरत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां रंग चढ़ाईआ। जन भगतां रंग जाए चढ़, जग नेत्र नज़र ना आईआ। अबिनाशी करता अन्दर जाए वड़, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। लेखे लाए सीस धड़, पंज तत सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया उखड़े जड़्ह, सच सुच्च दए प्रगटाईआ । भेव चुका नारी नर, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। साचा सोहला इक्को पढ़, धुर दा राग अल्हाईआ। आत्म सेजा अगम्मी चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, सुरती शब्द जुड़ाईआ। वसेरा करे साचे घर, नेरन नेरा नज़री आईआ। डेरा वखाए थिर घर, जिस घर गुर शब्दी सोभा पाईआ। पुरख अकाल किरपा कर, सच दवारा दए खुल्हाईआ । जन भगत अन्दर जाए वड़, मिले सचखण्ड वड्याईआ। जोती जोत जाए रल, विच जोती जोत समाईआ। सच सिँघासण बहे मल, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत अनन्द प्रेम प्रीती चाढ़ रंग, दया कर सूरा सरबँग, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त कर कर हित्त, आपणे नाम रंगाईआ ।

* २१ माघ २०२० बिक्रमी हेमराज पुरा ज़िला गुरदास पुर *

शहिनशाह सूरे सरबँगी, दर वेख खुशी मनाईआ। दरबार तेरे आई भगती भुक्खी नंगी, दोए जोड़ रही सुणाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं जगत लभ्भदे रहे बण के संगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। मैं ओहले बैठी रही सीस वाह के पट्टी कंघी, आपणा रूप बणाईआ। मेरी अक्ख किसे ना कीती नंगी, नैण वेखण कोए ना पाईआ। मेरी नज़र ना आई किसे अंगी, लहिंगे पल्लू ना कोए छुहाईआ। मैनूं लभ्भदे फिरदे बेले विच झंगी, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। मैं कोटन कोटि साधू कीते पखण्डी, भेखाधारी जगत रुलाईआ। मेरी हथ्थ ना आई किसे कन्नों डण्डी, मुरकी वाला वेख कोए ना पाईआ । तक्क सके ना कोई मेरी बिंदी, मस्तक सोहणी लई लगाईआ। मेरी वेख धार डिंगी, नैण सके ना कोए मटकाईआ। मैनूं लभ्भदे इलमां विच्चों फ़ारसी हिंदी, फ़ैसला सके ना कोए बताईआ। मेरी भूमका किसे ना वेखी निधी, संग बैठ ना खुशी मनाईआ । जुग चौकड़ी कूकदयां कूकदयां सब दी बहि गई घिगी, घर वसल ना कोए कराईआ। साहिब सुल्तान मैं निक्कीउँ हुन्दी गई वड्डी, जोबन आपणे नाल रखाईआ। मेरी ना पसली ना हड्डी, तन माटी ना कोए बणाईआ। ना भैंस ना सूरी गधी, रंग रंतड़ा रूप ना कोए जणाईआ। मैं नभागण वैरागण लध्धी, फिरां वाहो दाहीआ। वेखी बीतदी पिछली सदी, सदमा प्या धीर ना कोए धराईआ। जां तक्कां मेरा लेखा चुक्कया उते नदी, कन्ढे रावी ना कोए वड्याईआ। अग्गे बैठी रही अर्जन हरि गोबिन्द प्रीती बधी, इक ध्यान लगाईआ। सब नूं करदी रही पक्की, पक्की तरां समझाईआ। मैं सब नालों सोहणी चंगी अच्छी, वक्खरा खेल कराईआ। साधां सन्तां दी पत्त रखी, गुरमुखां नाल मिलाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर मटकावां अक्खी, नेत्र कजला इक रखाईआ। प्रेम प्यार दी खोल्ह के हट्टी, सोहणा वणज कराईआ। मेरे कोलों कोई विरला खट्टे खट्टी, बाकी बैठण मुख भवाईआ। मैं प्रेम प्रीती शहु रती, साहिब इक्को मेरा माहीआ। जिस नूं तोरे आपणी हथ्थीं, ओसे नाल संग निभाईआ। मैं वेखां जा के तपदी भट्ठी, साढे तिन्न हथ्थ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, दर तेरी सरनाईआ। भगती कहे वेख साधां मंडू, यारड़ा नज़र कोए ना आईआ। मैं तैनूं दस्सया अच्छी तरह चंगू, चंगी तरह समझाईआ। जिस दा लेखा लिख के गया नंद लाल नंदू, गोबिन्द इशारे नाल समझाईआ । मैं सुरत ना औण दिती ब्रह्मण गंगू, उहदे घर ना फेरा पाईआ। मैं भरम भुलाया जगत हँकारी चन्दू, चन्द्रा रूप वटाईआ । तेरे अग्गे अरदास दीना बंधू, बन्दना रही सुणाईआ। मैं केहड़ा दवारा लँघूं, कवण घर फेरा पाईआ। वस्त केहड़े कोलों मँग्गूं, तट नज़र कोए ना आईआ। टुट्टी कीहदे नाल गंढू, जोड़ी जगत जणाईआ। मेरा लेखा लिखदे हो

के भंगू, मस्ती विच लहर लहर प्रगटाईआ। रावी कन्ढे कोए ना मिले ठंडू, ठंड तेरे चरणां हेठां नज़री आईआ। हुण किस दे नाल हंढू साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। भगती कहे मेरे खाली हथ्थ, बौहड़ी दयां दुहाईआ। नक्क सुहाग ना दिसे नथ्थ, बलाक नज़र कोए ना आईआ। टिक्के मस्तक कीता ख़ाली नेत्र कज्जल ना कोई अक्ख, बिंदी नज़र कोए ना आईआ। भाउँदी भाउँदी गई थक्क, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। कदम कदम रही नट्ठ, भज्ज भज्ज वाहो दाहीआ। नेत्र नैणां नीर वहा के तेरे अग्गे वास्ता रही घत्त, दोए जोड़ सीस निवाईआ। सुण साहिब मेरे कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक वार मेहर नज़र कर के तक्क, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तूं चुप्प चुपीता आपणा मुख लएं वट, हँस मुख ना रूप वखाईआ। मैं डरदी पिच्छे जावां हट्ट, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। हौली हौली गावां तेरा जस, अन्दरे अन्दर ध्याईआ। जे मेरा होवे वस, प्रभ हुणे लवां मनाईआ। विचार अन्दर वज्जी सट्ट, सोहणी चोट लगाईआ। पिच्छों हरिसंगत आई नस्स, बण के पांधी राहीआ। इक्को वार सोहँ ढोला गाया पुरख समरथ, तेरा नाउँ ध्याईआ। तूं नज़री आएयों झट्ट, रूप अनूप वखाईआ। मैं चरणां गई ढट्ठ, मस्तक टिक्का लाईआ। तूं फेर वी ना अग्गों पिउँ हस्स, बचन राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर मिले सच्ची सरनाईआ। भगती कहे मेरा वेख चीथड़, अल्फ़ी लीरो लीर नज़री आईआ। पैरीं चप्पल ना रिहा विच कीचढ़, नंगी पैरीं दयां दुहाईआ। मैं हो के बड़ी ढीठड़, पिच्छे भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा स्वर्ण होया पीतल, कंचन रंग ना कोए वटाईआ। तूं हस्स के साहिब किहा जन भगत मैनूं उडीकण, सिध्धा मेरे वल ध्यान लगाईआ। मैं सुणां पुकार उन्हां चीकण, जो अन्दरे अन्दर कुरलाईआ। मैं वेखां तैनूं कीकण, मेरी तार टुट्ट ना जाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर गंढु पीचण, दो जहान सके ना कोए खुल्हाईआ। तूं मेरे भगत दवारे मैनूं दिसें नीचण, नीकन नीका रूप जणाईआ। तूं मेरे दर तों लै के भिच्छया भीखण, फेर जगत दएं वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। भगती कहे मेरी खुल्हड़ी गुत्त, सीस सालू नज़र कोई ना आइंदा। चारों कुण्ट रही पुच्छ, हाए भाणा की कौण वरताइंदा। किधर गया अबिनाशी अचुत, जग नेत्र नज़र नैण ना किसे दसाइंदा। मैं उस तों लवां पुछ, की साहिब तैनूं भाइंदा। जे तेरा भण्डारा गया मुक्क, देवणहार कवण अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। भगती कहे मेरा वेख दुपट्टा, मैं अच्छी तरह वखाईआ। चौथे जुग अन्तिम फटा, लीरो लीर नज़री आईआ। मैल कुचैल विच रलया घट्टा, सोहणा

४५७
१६

रूप ना कोए कढ्ढाईआ। मैं पुच्छ के आई चौदां हट्टां, चौदां लोक फेरा पाईआ। चौदां तबकां अन्दर मैनूं धोण वाला लभ्भा
कोई ना फट्टा, किस उपर दयां टिकाईआ। जिध्धर जावां मैनूं करदे ठट्ठा, ठोकरां मार सुणाईआ। वेखो फिरदी वांग नटां,
घर घर नाच नचाईआ। तेरी इक अवाज़ सुणी सुणदयां समझ आई प्रभ वसया घर जट्टां, जोबन आपणा बल रखाईआ।
चरण कँवल उहदे ढट्ठां, जो देवणहार वड्याईआ। जां वेख्या उह भगतां संग मिलाए अक्खां, नेत्र नैण नैण छुहाईआ। मैं
उस नूं की दस्सां, जो गुरमुखां अन्दर बैठा डेरा लाईआ। मैं बाहर रोवां अन्दर हस्सां, वेला वक्त रिहा विहाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अचरज आपणी रीत चलाईआ। भगती कहे मेरी वेख
जाकट, जुगती नाल बणाईआ। जिस दी लभ्भे किसे ना पाकट, सीण रूप ना कोए वखाईआ। जगत नेत्र करे ना कोए
शनाख़त, समझ सके कोए ना राईआ। लेखा लिखे ना कोए कातब, कलम छाही नाल वड्याईआ। बिन प्रभू तेरे मेरे सामणे
होया ना कोई मुख़ातब, हू-बहू आपणा नूर ना कोए रुशनाईआ। मैं तेरे दर दी बण के तालब, दर बेनन्ती इक सुणाईआ ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च देणी मोहे वड्याईआ। भगती कहे मैं सब तों उच्ची, प्रभ
तूं ही दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी रही सुच्ची, आपणा आप बचाईआ। कलयुग अन्त नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों
मैनूं साधां कीता लुच्ची, जो तेरा नाता गए तुड़ाईआ। कूड़ी रीत चलाई पुट्ठी, रसना करन पढ़ाईआ। श्री भगवान जड़्
उन्नां पुट्टी, नाता तेरे नालों तुड़ाईआ। मैं वीहवीं सदी पन्द्रां कत्तक उन्नां नालों रुस्सी, रुस्स के खहिड़ा आई छुडाईआ।
मैं नाता तोड़ पाई कक्खां कानयां झुग्गी, भगत दवारा वेख खुशी मनाईआ। मेरी अड्डी होई उच्ची, मेरे नैण रहे बिगसाईआ।
मेरा उजल होवे मुखी, मुखड़ा रूप वटाईआ। मैं हुण नहीं होणा दुखी, दुःख सुणावां सच्चे माहीआ। मैं दर दर दी नहीं
बणना कुत्ती, घर घर ना फेरा पाईआ। तेरे दर तों खा के रोटी रुक्खी, आपणा झट्ट लँघाईआ। बिन तेरे चरण ना रहां
सुच्ची, अंग अंग ना किसे छुहाईआ। वेख मेरी फिरदयां टुट्टी जुत्ती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फिरदी रही वाहो दाहीआ।
अन्त मेरी औध पुग्गी, वेला वक्त सुहाईआ। तेरे दरस दी इक्को भुक्खी, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। आपणयां चरणां
विच फड़ के घुटीं, प्रेम प्रीती विच्चों नचोड़ आपणी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा
देणा इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। भगती कहे मेरी वेख सलवार धोती, साड़ी लहिंगा आपणा रूप वटाईआ। जिन्नां
नाल झिलमिल करदे मोती, हीरे जड़त साचा रूप वटाईआ। साधां नाल मिल के हो गई खोटी, होछी मति बणाईआ। झूठ
मारदे पिच्छे रोटी, तेरा नाँ लै लै के ठग्गीआं रहे कराईआ। मैनूं कूड़ी क्रिया नाल लाया वांग खोती, अट्ठे पहर भार उपर

टिकाईआ। मैं वीह साल रही रोती, रोंदयां घड़ी पल लँघाईआ। कवण वेला प्रभ मिले आण इक इकलोती, इकल्ला फेरा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी निर्मल जोती, निरँकार इक अख्वाईआ। मैं ओस नूं कहवां मैं नाता छड्ड्या पुस्तक पोथी, अक्खरां नाल गंढु ना कोए बणाईआ। मैं वसां तेरी ओस कोठी, जिस विच बैठों डेरा लाईआ। बेशक मेरी मति होछी, तेरी मेहर मेरी वड्याईआ। तूं मेरे लई सब कुछ सोचीं, मैं तेरी ओट तकाईआ। तूं वेख तेरे नाल रविदास चम्यारा मोची, जिहड़ा टुट्टी गंढु वखाईआ। मैं मरदी मरदी मर गई निर्दोषी, निरदोषयां लै बचाईआ। बौहड़ी मैथों हुण नहीं हुन्दी ख़ामोशी, दुक्खां भरी रही कुरलाईआ। मैनूं ताअने देंदे लोकीं, तेरा भगवान नज़र किते ना आईआ। मैनूं लोकीं लभ्भदे उते होटीं, दन्दां नाल जगत राग अलाईआ। नाता जुड़ाउँदे बन्नू के तेड़ लंगोटी, सीस ख़ाक पवाईआ। मैं पुरख अकाल दी इक पोती, मेरा पिता शब्द नज़री आईआ। मैं नहीं एडी होछी, कोझयां कमल्यां नाल यराने लाईआ। जिस वल मेरा साहिब करे सोटी, मैं निउँ निउँ लागां पाईंआ। मेरी कट जाए बोटी बोटी, तन भेंट दयां कराईआ। मैं वेखण विच छोटी, निक्कयों वड्डे दयां बणाईआ। जन भगतां वेखां जगदी जोती, नेत्र नैण नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी सच सच्च सरनाईआ। साहिब सतिगुर मेरे बख़्शंद, दर तेरे हाल सुणाईआ। मेरा गानां टुट्टा मौली तन्द, डोर नज़र कोए ना आईआ। मिल के सखी कोई ना गावे छन्द, सुहागी गीत अलाईआ। सब दे घर वड़या घमण्ड, सति सरूप ना कोए समाईआ। तीर्थ तट गुरदर मन्दिर मस्जिद मड्ढ वेख के आई साध सन्त होए रंड, नार दुहागण रूप वटाईआ। झूठी उच्ची कूक पावण डण्ड, तेरा डण्डा नज़र किसे ना आईआ। मैं वेख्या खोज सर्ब ब्रह्मण्ड, तेरा ध्यान लगाईआ। कवण दुआर हरि करता करे वंड, हिस्सा देवे चाईं चाईंआ। जां वेख्या जन भगतां नाल मिल के माणे आप अनन्द, मेरी लोड़ रही ना राईआ। मैं नेड़े जा के गई संग, नेत्र अक्ख शरमाईआ। जिन्नां दे साहिब सतिगुर पुरख अकाल वसया संग, मेरी परवाह ना कोए रखाईआ। रातीं सुत्यां देवे अनन्द, दिने जागदयां ख़ुशी मनाईआ। प्रेम प्यार नाल पाए ठंड, सांतक सति कराईआ। शब्दी डोर दे के गंढु, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। कदी ना सौंवे दे कर कंड, आपणी करवट लए बदलाईआ। बिन मंगयां देवे मंग, धुर दी वस्त वरताईआ। भेव खुल्ल्हा के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म दरसाईआ। जिस धारों आए जम्म, ओसे लए मिलाईआ। ओथे मेरा की कम्म, जिन्नां मिल्या सच्चा माहीआ। रसना जिह्वा हिले ना कोई चम्म, दृष्टी दृष्ट ना कोए जणाईआ। मेहर नज़र कर के बेड़ा देवे बन्नू, बिन पत्तण मलाह पार कराईआ। ओथे इक्को कहे धन्न धन्न, धुर दा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान

४५८ १६

मेहरवान आपणी खेल रचाईआ। भगती कहे प्रभ किरपा कर, किरपन हो के मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं मिल्या ना कोई वर, साचा सगन ना कोए मनाईआ। साध सन्त मैथों रहे डर, मैं तैथों डरदी ओनां नेड़ ना आईआ। ऐर ग़ैर मैनूं कोई बाहों लए ना फड़, उंगल सके ना कोए छुहाईआ। इक्को आस रखी नरायण नर, साची ओट तकाईआ। जे श्री भगवान मिले ते सेजे जावां चढ़, दूजा कन्त ना कोए मनाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर चरण लवां फड़, कर मिन्नतां हाल सुणाईआ। जुग चौकड़ी तेरे विछोड़े विच जंगलां विच गई मर, क्यों गुंडयां हथ्थ फड़ाईआ। हुण ते किरपा कर, कलयुग वेला दए दुहाईआ। मेरी कोई ना रखे लज, हया मुक्कया सर्ब लोकाईआ। सोहणी सुचज्जी वेख मेरे वल सारे रहे तक्क, तेरा भय ना कोए रखाईआ। मैं कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों डरदी आपणे नंगे ना करां हथ्थ, मेरे छाप छल्ले वेखण कोए ना पाईआ। पैरां वालीआं पंजेबां लईआं ढक, छणकार सुणन कोए ना आईआ। हौली हौली पैर आपणा रख, कदम कदम उठाईआ। चारों कुण्ट वेख वेख गई थक्क, आपणा ध्यान लगाईआ। साहिब गहर गम्भीर पुरख अकाल सब कुछ तेरे वस, मेरी की चतुराईआ। चार जुग ना वेख्या कर के अक्ख, सच्चा मेल ना ल्या मिलाईआ। साधां सन्तां नाल पा के मेरा वस, निक्की वड्डी कराउँदा रिहों लड़ाईआ। थक्क के अक्क के हार के सारे आई छड्ड, आपणा मुख भवाईआ। तेरे अग्गे झोली लई अड्ड, चरण कँवल सीस निवाईआ। मैं हुण नहीं जाणा किसे विच खड्ड, भोरे पै के संग ना किसे निभाईआ। जे आप आएयों पुरख समरथ, मेरी रीती दे बदलाईआ। जन भगतां दे दे हक़, वसीअत इक्को वार कराईआ। जिहड़ा तेरे मिलण दा राह रिहा तक्क, मैं उस दे नाल हो के सेव कमाईआ। जे गुरमुख तेरे चरण निवें मैं पहलों जावां ढह्ह, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। जे तूं पिच्छे जावें हट, रो रो आपणा हाल गंवाईआ। जे मुखों पएं हस्स, खुशीआं गीत तेरा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, राखा तूही नज़री आईआ। भगती कहे प्रभ वेख मेरी सिर नहीं बोदी, चोटी मुन्नी गई वखाईआ। मैं हो के कमली कोझी, फिरां वांग शौदाईआ। कल जांदयां जांदयां वीह माघ भगतां कोलों आई सोझी, जिनां सच धार समझाईआ। जिस वेले चिकड़ विच अड्डी खोभी, मेरी सुरत भुलाईआ। अग्गों पुरख अकाल आउँदा मिल्या धोभी, जिहड़ा मेरा धुर दा सच्चा माहीआ। मैं सोच ओस वेले इक्को सोची, सोहणा ध्यान लगाईआ। जिस दे पिच्छे फिरे मोची, चम्यारा रूप वटाईआ। एह बड़ा वड्डा खोजी, पैड़ जोड़यां रिहा बुझाईआ। फेर वेख्या ठग्ग तम्बा चुक्कया उत्तों गोढी, उलटा ल्या कराईआ। उठ के वेख्या श्री भगवान हरिसंगत चुक्कया मोढी, सोहणा पन्ध मुकाईआ। मैं रह गई हक्कया बक्कया पुरख अकाल दी खिड़ी इक्को डोडी, जिस विच्चों गुरमुख नज़री आईआ। चार

४५६
१६

जुग गुरू अवतार पीर पैगम्बर जिस फुलवाड़ी नूं दे के गए गोडी, आपणी सेव कमाईआ। मैं बहि गई उंगल रख के ठोडी, प्रभ एह की चाल चलाईआ। भगत आत्मा कहे कोझीए एह उह विजोगी, जो धुर संजोगी मेल मिलाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेल रोगी, दुखियां दुःख गंवाईआ। सुण के भगती कहे मैं वी एहदे जोगी हो गई, जो होका दे के रिहा जगाईआ। बेशक मैनूं ताअने मारन लोकीं, मैं झल्लां ना कदे जुदाईआ। भावें घड़ी आवे औखी, उह वी खुशीआं विच लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। भगती कहे मेरा वेख अथ्थर, नैण नैणां विच्चों वहाईआ। प्रभू मेरे पिच्छे क्यों होइउँ पत्थर, भगतां पिच्छे फिरें वाहो दाहीआ। श्री भगवान किहा एहनां पिच्छे गोबिन्द वछाया मेरा सत्थर, सूलां सेज हंढ्ढाईआ। इक लेखा लिख के गया अक्खर, आखर तुहाड्ढा प्रभू सहाईआ। सब नालों कर के वक्खर, वक्खरी धार जणाईआ। शब्द संदेसा दे के पत्र, सोए लए उठाईआ। दे वड्याई सत्तर बहत्तर, चुहत्तरां रंग चढ़ाईआ। पंजां पंजां पंजां तोल के तक्कड़, नाम कंडा इक हिलाईआ। चार चार दी ला के टक्कर, सोहणा खेल वखाईआ। हरिसंगत तीर निशाने नाल कर के फट्टड़, इक्को वार मूँह दे भार सुटाईआ। प्रेम प्यार दी अन्दर कर के पकड़, धुर दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। फिर के जंगल जूह बेले विच रक्कड़, रंगढ़ पिछला नाल रखाईआ। बेशक लांगरी बण के दाल दा वेखे वत्तर, दाना कदी कदी मुख विच पाईआ। उहदे पूरब जन्म दी मेटी सतर, बिधना रोवे दए दुहाईआ। बौहड़ी एह लुक्या छिपया आया किधरों किधर, सचखण्ड निवासी लोकमात फेरा पाईआ। जिस साध सन्त सारे कर दित्ते तित्तर बित्तर, नाम पटाका इक्को पाईआ। किरपा कर के जंगल जूहां विच्चों आया निक्कल, निरगुण आपणा खेल कराईआ। जां वेख्या भगतां दा बणया मित्र, मित्र प्यारा रूप वटाईआ। जिन्नां दे पाटे लीड़े टुट्टे छित्तर, चम्यार कोलों नाल नाल गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी खेल रिहा रचाईआ। भगती कहे मेरे वेख वाल, चिट्टे काले नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट होई बेहाल, बिहबल हो के दयां दुहाईआ। मेरी कोई ना पुच्छे वात, आपणी कहाणी सारे रहे सुणाईआ। नज़री आई अन्धेरी रात, चारों कुण्ट डराईआ। कूड़ी क्रिया डूंघा खात, साचा मन्दिर ना कोए बणाईआ। मैं किथे लभ्भां आपणा सज्जण साक, नाता कीहदे नाल जुड़ाईआ। कोई नज़र ना आई खाट, वस्त्र सोहणा किथे वछाईआ। किस वल नेत्र कर के लवां झाक, प्रेम प्यार ना कोए वधाईआ। जिध्धर जावां कलयुग जीव कहिण किथों आई नार कमज़ात, सानूं रही समझाईआ। असीं की जाणीए कौण कमलापात, श्री भगवान कवण अख्वाईआ। साडी माया राणी नाल बात, जो सानूं सुख सागर विच रखाईआ। जिस दे नाल काम क्रोध लोभ मोह हँकार दी मिले दात, नारी पुरुष दोवें रंग रंगाईआ। जे प्रभ दा मंगीए साथ,

भुक्खे नंगते दए कराईआ। सानूं कोई लोड़ नहीं आबे हयात, मदि प्याला पी खुशी मनाईआ। ऐथे मोहणी होवे साथ, अग्गा वेखण कोए ना जाईआ। तूं भगती किथों आ गई देवण वाली दात, आपणा रूप वटाईआ। असीं सारे उठ के अक्खरां वाला करीए पाठ, गुटके हथ्थां विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगती वेख वेख आपणा मुख छुपाईआ। भगती कहे चंगा भाई, एहो साहिब मेरे सच भाईआ। आपणी करनी करो जाओ चाईं चाईं, मन आशा नाल मिलाईआ। श्री भगवान देवणहार सज़ाई, वेखे थाउँ थाईंआ। पुत्तर धी नार कन्त सज्जण मित्र यार दोस्त कोई ना दए गवाही, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। जिस वेले करोगे हाहाकार मारोगे धाहीं, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। छुडा मेरी माई, ममता तेरी रही सताईआ। मैं ओस वेले दस्सां दस्सो मैं किहा तुसीं शौदाई, शायद उह वेला सब दे उते आईआ। कलयुग जीव कहिण एह की दित्ता जणाई, किथों अवाज़ लगाईआ। भगती कहे उह आया बेपरवाही, जिस ने लख चुरासी रचन रचाईआ। पुछण किथे वसे धुर दा माही, बैठा डेरा लाईआ। भगती कहे जन भगतां संग फिरे चाईं चाईं, ओनां पिच्छे मैनूं वी गया भुलाईआ। दर दर हो के पांधी राही, धूढ़ ख़ाक रिहा उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह दस्स मेरे हज़ूर, दर भगती रही सुणाईआ। की अर्ज़ मेरी मंज़ूर, मनसा मेरी पूर कराईआ। सच बख्श चरण धूढ़, मैं लवां ख़ाक रमाईआ। श्री भगवान किहा एह कूड़, धुर दी धार दयां जणाईआ। पहलों मेरे भगत कर मंज़ूर, आपणा संग रखाईआ। एनां नाल झगड़ा करीं ना कोए फ़तूर, आपणा आप ना कोए जणाईआ। उह नहीं करनी जिस वेले सूली चाड़्या मनसूर, शमस पुट्ठी खल्ल लुहाईआ। खेल करां जिउँ नामे छप्पर छाया बण मज़दूर, धन्ने कटोरे भाग लगाईआ। एहनां वड्याई देवां ज़रूर, जिनां आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च सच रिहा सुणाईआ। प्रभ ठाकर मैं निमाणी, चरण कँवल निमस्कारया। धन्न भाग तेरा भगत मिले हाणी, सोहणा जोड़ जुड़ा रिहा। मैं छड्डी चारे खाणी नाता सर्ब तुड़ा ल्या। मैं नीवीं हो के भरां पाणी, पीसण पीस सेव कमा ल्या। सुण के बचन कहे शाह सुल्तानी, पुरख अकाल हुक्म जणा ल्या। मैं तैनूं आपणे भगत दे घर दी बणावां राणी, सोहणा तेरा सीस गुंदा ल्या। तेरी अक्ख कर मस्तानी, नशा इक्को नाम चढ़ा ल्या। तेरा जोबन नूर नुरानी, डलक इक्को इक वखा रिहा। वस्त्र देवां सच्ची मेहरवानी, दरज़ी चोली ना कोई बणा रिहा। अंग लगावां सच निशानी, साची वंडण आप वंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिका रिहा। सिर तेरे हथ्थ टिकावांगा। जन भगत नाल प्रनावांगा। सोहणी डोली पावांगा। बण कहार उठावांगा। पाणी वार वखावांगा।

माँ प्यो बण जावांगा। वस्त्र सोहणे तन छुहावांगा। सीस ओढण इक टिकावांगा। गहिणा घाड़त अगम्म घड़ावांगा। नक्क सुहाग नथ्थ पवावांगा। टिक्का बिंदी उह लगावांगा। जिंस नाल जाएं छोह, उह मेरा रूप रूप रूप विच्चों वखावांगा। दोहां दा इक्को बज्झे मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखावांगा। जगत विचोला आपे हो, ढोला राग सुणावांगा। काया मन्दिर अन्दर साची ताकी बूहा कुण्डा आपे ढो, अन्दर वड़ के आपणा भेव खुलावांगा। साची सेजे जाणा सौं, सोहणे थाँ बहावांगा। भगती जे तैनूं भगतां दा गौं, गहर गम्भीर हो के एहनां नूं तेरे नाल मिलावांगा। जे रल के दोवें इक वार कहो, दोहां दी बेनन्ती आपणी झोली पावांगा। बेशक दो जहान लओ भौं, बिन आपणी किरपा नज़र किसे ना आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा रंग रंगावांगा। भगती कहे मैं भगतां जोगी, प्रभ जुगत दिती समझाईआ। भगत कहिण साडे नाल ना होवीं खोटी, फड़ के डण्डा रहे वखाईआ। भगती कहे मैं मंगां दाल रोटी, होर लोड़ रखां ना राईआ। जन भगत कहिण असां साधां वांगूं होण नहीं देणा मोटी, पहलों सच दईए जणाईआ। भगती कहे मैनूं मंज़ूर तुहाडी लंगोटी, वस्त्र होर नज़र ना आईआ। जन भगत कहिण सानूं नहीं चाहीदी एह वगन वाली झोटी, जो खा पी के बैठे मुख भवाईआ। असीं उसे तों मंगदे जिस तों मंगदे कोटन कोटी, पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। ओसे वेले भगती कहे मैं ग़रीबणी होछी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरी पिछली बुध रही ना खोटी, मैनूं प्रभू दित्ता समझाईआ। बेशक जन भगतो तुसीं धुर दे माणक मोती, मैनूं कच्चे तन्द नूं नाल लओ परोईआ। जन भगत कहिण असीं कोई नहीं पढ़नी पोथी, अन्दर वड़ ध्यान ना कोई लगाईआ। ध्यान कर जगौणी नहीं कोई जोती, नक्क रगढ़ ना किसे मनाईआ। रोट देणा नहीं ना कोई रोटी, सेवीआं थाल ना किसे चढ़ाईआ। बक्करे वढु के नहीं देणी बोटी, ज़यारत करन कोई ना जाईआ। असीं इक्को गल्ल सोची, जो साहिब सच्चे समझाईआ। जिस नूं लिख के दस्सया रविदास चुमआरे मोची, मुश्किल प्रभू हल्ल कराईआ। असीं ओस दवारे रखी ओटी, इक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। भगती कहे करो तरस, निमाणी हो के रही जणाईआ। भगत कहिण साडा भगवान नाल नहीं हुण फ़र्क, तेरी लोड़ नज़र ना आईआ। भगती करदे कोटन कोटि गए गरक, आपणा आप ना सके बचाईआ। असीं तैनूं कीता तरक, नाता ना कोई रखाईआ। तूं नहीं कमलीए वेख्या प्रभ साडे नाल तुरे उते सड़क, साचा गीत सुणाईआ। गोबिन्द नाल ला के शर्त, अन्तिम पूर कराईआ। औह वेख आया परत, जिहड़ा धुर दा सच्चा माहीआ। साडे उते ना करीं हरख़, यारी एहदे नाल लगाईआ। तेरी चाल चंगी ना लग्गे भावें तुरें मटक मटक, गरुमुख तेरे उते अक्ख ना कोई टिकाईआ।

जिन्हां प्रभ दा दरस पाया निधड़क, धड़कन कोई रहिण ना पाईआ। भगती कहे हाए मैं किथे जावां लटक, फाँसी वाला राह नज़र कोई ना आईआ। जन भगत कहिण असीं कक्ख कान कीता अकट्ठा, हथ्थ फड़ौंणा तेरे नाल रस्सा दईए वटाईआ। उधरों राजा संढा आया नस्सा, आ के रिहा सुणाईआ। माँ दा भज्जा आया इक्को बच्चा, रो के दए दुहाईआ। ओ भगतो साडे नक्क विच्चों कढो नथ्था, एहदे गल्ल विच दयो पाईआ। असीं वेखीए एहनां अक्खां, जिहड़ीआं सानूं भरम भुलाईआ। एह फिरदी रही साधां पिच्छे तीर्थ तट्टां, आपणी पत्त गंवाईआ। एह विकदी रही काग़ज़ां उते हट्टां, पैसा धेला मुल पवाईआ। एह काम क्रोध दीआं बन्न्हदी रही गट्ठां, आपणा भार वखाईआ। हुण वस पै गई जट्टां, जिन्हां संडे नथ्थ के सिधी रहिल लगाईआ। गड्डे जोड़ के वाले फट्टां, जूले हेठां कन्न दबाईआ। उतो मारन वाहो दा सट्टां, डिचकर मार हिलाईआ। रविदास वेखी जाए अक्खां, प्रभ की बणत बणाईआ। संगत खुशीआं नाल हस्स के कहे अच्छा, वेखो दिती सज़ाईआ। भगती कहे मैं एहनां कोलों किदां बचां, आपणा पल्लू लवां छुडाईआ। बचन सिँघ कहे मैं तैनूं सच दस्सां, सोहणी गल्ल समझाईआ। तूं चरण तक्क नाल अक्खां, नीवीं हो के सीस झुकाईआ। जे मेहर कर जाए मेहरवान इक रता, भोरे विच्चों भोरा वरताईआ। तैनूं फिर प्रभ दीआं रखां, श्री भगवान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार रिहा कमाईआ। भगती कहे मैं चरण तक्कया, जो बालू रेत उते टिकाईआ। ओथे मेरी लग्ग गई अक्खीआं, अक्ख अक्ख नाल बदलाईआ। जिध्धर वेखां अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे गुरमुख नज़री आईआं सखीआं, सोहणी बणत बणाईआ। खुशीआं नाल हस्स हस्स उहनां टुट्टण वक्खीआं, वक्खरी धार चलाईआ। भगती कहे तुहाढे पिच्छे पिच्छे आवां नट्ठी आं, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले हुण हो के कट्ठीआं, मैं पैर झाड़ां चाईं चाईंआ। मैं दिलों हौली हौली पुछां की एह कच्चीयां, आपणी होछी मति बणाईआ। पता नहीं ओह किस तर्हां कीतीआं पक्कीआं, पक्की थाँ केहड़ी बहि के पकाईआ। इक्को कहिण साडीआं प्रभ नाल लग्ग गईआं अक्खीआं, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चोलीआं दिसण बाहरों फट्टीआं, अन्दर चमके नूर अलाहीआ। होई हैरान श्री भगवान एह किथों सांभ के रखीआं, क्यों नाल लै के आया सच्चा माहीआ। रविदास किहा उठ वेख भगती एह सारीआं सच्चीयां, जिन्हां सच मिली वड्याईआ। तड़फन जिउँ पाणी बिन मच्छीआं, प्रभ विछोड़ा सह सक्कण ना राईआ। प्रेम प्रीती अन्दर अन्दर रत्तीआं, एहनां विच्चों इक रंग रतड़ी माईआ। जिस साहिब सरनाई ढट्ठीआं, चरण कँवल मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। भगती कहे एह की होया, हैरानी हिरदे विच छुपाईआ। किथों उठया नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा सोया, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं याद आए ओह वेला जिस

४६३ १६

वेले कहिण शेर सिँघ मोया, सारे पई दुहाईआ। जां वेख्या आ के अग्गे नालों नवां नरोया, सोहणा रूप वटाईआ। कर प्रकाश पुरीआं लोआं, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वटाईआ। किथों आया वेस वटा के, सचखण्ड दुआर तजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रला के, आपणा हुक्म सुणाईआ। धुर दी धार इका बन्ना के, सच्चा राह चलाईआ। अग्गे ना पिच्छे ना हुण सिध्धा भगतां मिल्या आ के, बिन मेरी भगतीउँ लए उठाईआ। मैं की एहनूं पुछां जा के, जिस मेरी बणत बणाईआ। जन भगतां नूं वड्या के, अनमंगी देंदा जाए वड्याईआ। मैनूं बैठी बैठी नूं दुखड़ा पा के, हौके रिहा कढ्ढाईआ। मैं क्यों आखां जा के, किस अग्गे हाल सुणाईआ। मेरी कीती चलया ढाह के, पिछली सफ़ा मिटाईआ। जन भगत इक्को नाम सुणा के, आपणे नाल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गा के, सौण बांह सरहाणे दे चाईं चाईंआ। मैं बैठी नैण शरमा के, अक्ख ना कोई खुल्लाईआ। जिन्नां प्रभू मिल्या आ के, गुरमुख पिछला लेख मुकाईआ। उहनां चरणां कोल बहवां आपणा झट्ट ला के, मेरी लोड़ रही ना राईआ। अच्छा एहनां पिच्छे मेरे उते तरस जाए कमा के, जिन्नां आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े सिख सिख्या वाले उठा के, सुरती शब्द मिलाईआ। सिर आपणा हथ्थ टिका के, गूढ़ी नींद सुआईआ। अन्तिम गोदी जावां उठा के, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत मिलावां आ के, आपणे विच समाईआ। गुरसिख क्यों पछताए पुरख अकाल प्यो बणा के, पिता इक्को नज़री आईआ। वेखो हाल अग्गे जा के, जिहड़े बैठे डेरा लाईआ। मनजीत जगदीश सवरन गुरदयाल गए समझा के, सिँघ पाल पर्दा उठाईआ। जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान औंण ध्या के, तिन्नां सचखण्ड मिले वड्याईआ। सोहणे वस्त्र रखे विछा के, साची सेज बणाईआ। फड़ बांहों उते बहा के, खुशीआं नाल लटाईआ। फिर आपणे नाल सवा के, छाती उते टिकाईआ। हौली जेही उत्तों लाह के, चरणां विच बहाईआ। गुर अवतारां की वखा के, इक्को वार समझाईआ। लख चुरासी विच्चों एह लयांदे बचा के, जिन्नां आपणे चरण टिकाईआ। एह बेटे सच्चे बाप दे, जिस बाप नूं ईसा मूसा मुहम्मद गए गाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द पुरख अकाल आखदे, शहिनशाह शाह पातशाह वाली दो जहान अख्वाईआ। उसदे घर मन्दिर भगत सन्त सोहणे प्रोहणे सुत्ते आ के, जिन्नां सुत्यां ना कोई उठाईआ। पिछला घर आए तजा के, अगले घर मिले वड्याईआ। भगती बैठी मुख छुपा के, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चार जुग सारे गए पछता के, हौका लै लै सर्ब लोकाईआ। कोटन कोटि गए तीरथीं नहा के, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती चुब्बीआं लाईआ। गलों फाह आए कटा के, चुरासी गेड़ ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब गए सिखा के, परवरदिगार इक्को

सब दा सच्चा माहीआ। जिस नूं आप दर्शन देवे आ के, अकल कलधारी आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों चोरी गुरमुख लै जाए उठा के, औदा जांदा नज़र ना आईआ। किरपा कर रोदयां जाए हसा के, हस्सदयां खुशी वखाईआ। उजड़यां जाए वसा के, सोहणे घर बहाईआ। प्रेम प्रीती विच फसा के, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां पिच्छे गया ना कोई हटा के, पल्लू सक्या ना कोई छुडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो वेखण सारे आ के, साची सुलखणी घड़ी मिली वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण इक विछा के, वासना सब दी पूर कराईआ।

* २२ माघ २०२० बिक्रमी खेड़ा सिँघ दे घर पिण्ड हेमराज पुर ज़िला गुरदासपुर *

जन भगतां वेख वड्डा प्रताप, भगती दए दुहाईआ। जिन्हां समझया आपणा आप, घर मिल्या बेपरवाहीआ। गृह जपदे इक्को जाप, धुर दा सच्चा नाम ध्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी उपजे शाख़, शहिनशाह इक्को नूर खुदाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पाक, पतित रूप ना कोई वटाईआ। सन्त सुहेला सच्चा साक, सज्जण आपणा नाउँ धराईआ। सेवक हो के याचक दास, माण अभिमाण मिटाईआ। सच भण्डारा खोल्ह हाट, वस्त अतोट वरताईआ। गुरमुखां दे के दात, तृष्ना जगत बुझाईआ। सिर रख आपणा हाथ, मेहर नज़र टिकाईआ। लहिणा चुक्कया तीर्थ ताट, अठसठ ना कोई वड्याईआ। सच सरनाई गए लाग, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जन्म जन्म दी बुझी आग, त्रैगुण मूल चुकाईआ। घर मेला कन्त सुहाग, सुहञ्जणी वज्जे वधाईआ। सुरत सुहञ्जणी गई जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। कहे धन्न वड्याई मेरे भाग, प्रभ साची बणत बणाईआ। घर दीपक जोत जगा चराग़, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, घुप अन्धेरा ना कोई रखाईआ। हरिजन पूरी करके ख़ाहिश, ख़ालस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता दया कमाईआ। भगतां वेख मेला भगवन्त, नैनण नैण शरमाईआ। मैं केहड़ा बणावां कन्त, हरि कन्त हरिजन गए प्रनाईआ। घर मौली सच बसन्त, रुत्त रुत्तड़ी इक महकाईआ। जिस दा भेव ना पाए कोई पंडत, शास्त्र सिमरत देण दुहाईआ। जिस दा वसेरा बाहर बहिश्त जंनत, स्वर्ग चरणां हेठ दबाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करदे सन्त, महिमा राग नाद धुन गाईआ। जिस दी रचना लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो भगतां रिहा वड्याईआ। जन भगतां वेख प्रभ दा मीत, मता आपणे नाल पकाईआ।

उहनां कवण करे रीस, जिन्हां मिल्या हरि रघुराईआ। अन्दर बाहर फिरे जगदीश, जगदीश्र सेव कमाईआ। मैं नेत्र वेख्या ठीक, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। प्रभ दी धार इक बारीक, जीव जहान समझ ना आईआ। सारे बणदे जाण शरीक, लाशरीक इक्को नज़री आईआ। जिस दे विच अगम्म तौफ़ीक, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जिस दा कलमा इक हदीस, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस नूं पीर पैगम्बर सूफ़ी रहे उडीक, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। सो साहिब पहला लेखा करन आया तस्दीक, आप आपणा वेस वटाईआ। जिस दी समझ ना आए किसे तारीख, तवारीख देवे ना कोई गवाहीआ। जिस दवारयों मंगदे सारे भीख, खाली झोली अग्गे डाहीआ। सो साहिब आया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाम करे बख्शीश, रहमत आपणी आप कमाईआ। भगतां वेख होया मिलाप, भगती नैण नैण शरमाईआ। एह इक्को करदे जाप, धुर दी सच पढ़ाईआ। की एहनां सकां आख, मेरी समझ ना कोई चतुराईआ। जिन्हां साहिब मिले रात, दिवस खुशी मनाईआ। अट्ठे पहर दे के साथ, सगला संग बणाईआ। लेखा मुका पूजा पाठ, इक्को धुर दा राग समझाईआ। अन्दर वड़के सुणे बात, घर घर विच फेरा पाईआ। शब्द स्नेहड़ा जाए आख, धुर आवाज़ लगाईआ। हरि चरण प्रीती सच्चा नात, जगत कुटम्ब ना कोई वड्याईआ। लख चुरासी खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगतां वेख मिलदा ढोआ ढो, भगती नैणां नीर वहाईआ। आत्म परमात्म नाल गया छोह, शहिनशाह आपणा अंग लगाईआ। नाम जपाए सोहँ सो, सोभा आपणी दए समझाईआ। दो जहानां करके लो, पूरीआं लोआं पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी वस्तू सारी खोह, अन्त ख़ज़ाने आपणे पाईआ। जन भगतां रख के मोह, मुहब्बत इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। जन भगतां वेख मिल्या प्रभ, घर वज्जदी दिसे वधाईआ। भगती कहे मेरा ओथे की हज्ज, देवे कोए ना माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल मार आवाज़ लैण सद्द, सोहणा नाद वजाईआ। बेपरवाह एहना दस्सया चज्ज, चार जुग ना किसे समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लाउँदा रिहा पज, वल छल धारी खेल खलाईआ। अन्तिम कलयुग हो प्रगट, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। धुर दी महिमा शब्द अकथ, पुरख अकाल दए समझाईआ। जन भगतां मार्ग दस्स, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सच स्नेहड़ा दे के हस्स, खुशीआं जाग खुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, सोहँ रूप समाईआ। एथे आ के सब दी होवे बस, जोती जोत जोत समाईआ। निरगुण धार निरगुण प्रकाश, निरगुण नूर नूर डगमगाईआ। निरगुण खेल पुरख अबिनाश, सर्ब गुणतास निरगुण अख्वाईआ। निरगुण पृथमी निरगुण आकाश, गगन

मण्डल निरगुण रूप वटाईआ। निरगुण सूरज चन्द निरगुण मण्डल मण्डप रास, निरगुण गोपी काहन नचाईआ। निरगुण पीर पैगम्बर गुर अवतार बणाए दास, निरगुण कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। निरगुण जन भगतां देवे दात, साची वस्त नाम वरताईआ। निरगुण खेले खेल तमास, हरि करता वड वड्याईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगतां संग कर मिलाप, मेल मिलावा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। भगतां संग करनी करदा, हरि करता पुरख अकाल। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना मरदा, मात गर्भ ना जन्मे दीन दयाल। लख चुरासी अन्दर आपणा नूर धरदा, सचखण्ड निवासी वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जन भगत सुनेहड़ा इक्को घल्लदा, शब्द सरूपी वज्जे ताल। लेखा देवे पूरब जन्म फल दा, वस्त अमोलक झोली डाल। नज़ारा दिखाए निहचल धाम अटल दा, जिस मन्दिर वसे भगवान। दीपक जोती इक्को बलदा, ना कोई दूजा शमादान। तेल बत्ती नाल कोई ना रलदा, ना कोई माचस लावे आण। एहो खेल सूरे सरबँग दा, आदि जुगादि रहे दो जहान। गुरमुख विरला ओथे लँघदा, जिस किरपा करे श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा माण। भगतां वेख मन्दिर मिलदा, भगती पिच्छे पिच्छे दए दुहाईआ। जिन्हां प्रभ दिलबर मिल्या दिल दा, दिलगीर नज़र कोए ना आईआ। लेखा चुक्के बजर कपाटी सिल दा, सुखमन टेडी ना कोए अटकाईआ। हरि जू अट्ठे पहर अन्दर फिरदा, सोहणा रूप धराईआ। प्रेम प्यार दा निझर झिरना झिरदा, अमृत बूँद इक टपकाईआ। कूड़ी क्रिया गेड़ा गिढ़दा, सच सच्च दए प्रगटाईआ। पंच विकार छेड़ा छिड़दा, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। एह हुक्म प्रभू दा चिर दा, जुग चौकड़ी पहले सारे गए सुणाईआ। लेखा चुकाए तीजे तिल दा, तिलक ललाटी मस्तक लगाईआ। आप रखाए आपणा बिरदा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। वेखणहारा हरिजन हिरदा, हर हिरदे विच समाईआ। कलयुग अन्तिम जामा पहन के सूरबीर शेर दा, भबक इक्को इक सुणाईआ। वेखो कम्म अगम्मड़े दलेर दा, सच दलेरी इक जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव हुक्मे अन्दर घेरदा, इक्को हुक्म मनाईआ। पिछला लहिणा सर्ब नबेड़दा, लेखा रिहा चुकाईआ। जन भगतां फड़ फड़ घर साचे मेलदा, मिलणी आप कराईआ। लेखा चुक्कया पास फेल दा, रयाइत करके गुरमुख सारे पास कराईआ। प्रभ नूं मौकया नहीं वेहले बहिण दा, वेहला बैठा सब कुझ रिहा कराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणे लैण देण दा, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। सिफ्ती अक्खर नहीं कोई सिफ्त कहिण दा, सिफ्त सिफ्त विच सके ना कोए सालाहीआ। इक्को अन्त मार्ग प्रभ चरणी ढहिण दा, चरण ढठ्ठयां मिले वड्याईआ। मिले दवारा सचखण्ड रहिण दा, जिस घर इक्को पिता पुरख अकाल नज़री आईआ।

सुख मिले जन भगतां विच बहिण दा, मनमुख संग ना कोए रखाईआ। नाता तुट्टे साक सैण दा, सज्जण इक्को बेपरवाहीआ। ओथों मज़ा आवे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कहिण दा, जिस घर मेरा तेरा तेरा मेरा इक्को नूर ज़हूर विच समाईआ।

* २२ माघ २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे घर पिण्ड हयात नगर ज़िला गुरदासपुर *

सचखण्ड दवारे सच इकट्ठ, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। पीर पैगम्बर सरनी रहे ढट्ठ, सजदा सीस सर्ब निवाइंदा। दोए जोड़ वास्ता रहे घत्त, पल्लू गल विच सर्ब लटकाइंदा। किरपा कर पुरख समरथ, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। सृष्ट सबाई इक ओंकार तक्क, नेत्र नैण तुध बिन अवर ना कोए खुल्हाइंदा। जगत जहान मार्ग दे दस्स, सच संदेसा तेरा नाम वडियाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन पुकार, सचखण्ड खेल रचाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हरि पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। इक ओंकार दे आधार, आदि निरँजण हो सहाईआ। अबिनाशी करते तेरी धार, श्री भगवान तेरा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म हो उज्यार, ब्रह्म वेख थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दात, दरगह साची मंग मंगाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द नज़र ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जो लिख के गए गाथ, बण कातब कलम शाहीआ। सृष्ट सबाई भुल्ली नात, साचा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। आत्म परमात्म देवे कोए ना साथ, पारब्रह्म ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। मन वासना घर घर फिरे नार कमज़ात, गुरमति चले ना कोए चतुराईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। सज्जण दिसे ना कोए साक, सैण मेल ना कोए मिलाईआ। साध सन्त झूठी मलके ख़ाक, तन बिभूती रहे रमाईआ। हिरदे अन्दर तैनूं कोई ना करे याद, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सारे कूक कूक सुणाईआ। धुन आत्मक कोए ना सुणे नाद, अनहद राग ना कोए अल्हाईआ। अन्तर आत्म अमृत मिले ना किसे स्वाद, अठ सठ तीर्थ भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे आख, सिरजणहार तेरी सरनाईआ। असीं लिखके आए भविक्ख्त वाक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। सृष्ट सबाई खोल्ह के आए

ताक, पर्दा जगत उठाईआ। सर्ब जीआं दा दाता पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड गोपी काहन पावे रास, निरगुण निरवैर आपणी कार कमाईआ। आत्म ब्रह्म जिस दी ज़ात, लख चुरासी विच समाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पुछे वात, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी दे धुर दी दात, जिस दी आवाज़ राग नाद रहे जस गाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह इक वजाए आपणा साज, तन्दी तन्द तार नज़र किसे ना आईआ। काया मन्दिर साचे अन्दर वड़ के खोल्हे राज़, रहमत आपणी इक कमाईआ। साचा कलमा दे निमाज़, हुजरा इक्को हक़ सुहाईआ। वेखणहारा उच्च महिराब, महिबूब खुदा बेपरवाहीआ। परवरदिगार खेल तमाश, लाशरीक इक वखाईआ । सदी चौधवीं उम्मत नबी रसूल होइ गुस्ताख़, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी साची सरन तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे बोल, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। अबिनाशी करते तोल तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात वजा के आए ढोल, हरि जू तेरा नाम उठाईआ। आत्म परमात्म वसें कोल, भुल्ले जीव ना कोए लोकाईआ। घर घर वेखो खोल्ह, गृह दिसे बेपरवाहीआ। सति स्वामी रिहा मौल, मौला आपणा रूप वटाईआ। मात गर्भ दा पूरा करे कौल, लिव छुटकी फेर लगाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। सुत्ता रहे ना कोए अनभोल, नानक निरगुण गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त होया नंग, तेरा नाम दुशाला ओढण नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया भार चुक्कया आपणी कंड, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। सृष्ट सबाई आत्म बिन परमात्म होई रंड, हरि जू कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। चारों कुण्ट दिसे भेख पखण्ड, कूड़ कुड़यारा भज्जे वाहो दाईआ। माया कारण तेरे नाम दा गाउँदे छन्द, तेरी कीमत हट्टो हट्ट पवाईआ। साचा नाता सके कोए ना गंढ, अन्तर आत्म लिव ना कोए लगाईआ। किसे हथ्थ ना आवे परमानंद, अनन्द मंगल बिन सखीआँ कोए ना गाईआ। भाण्डा भरम दूई ढाए कोए ना कंध, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। घर शब्द नाद धुन सुणे ना कोए मृदंग, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ । आत्म सेजा दिसे ना कोए पलँघ, लख चुरासी कूड़ी सेज हंढ्ढाईआ। निर्मल जोत ना चढ़े चन्द, घर घर दीवे बत्ती रहे जगाईआ। तेरे मिलण दा किसे हथ्थ ना आवे ढंग, गुर का शब्द गए भुलाईआ। दर दर घर घर नच्चदे वेखे मलंग, डौरु डंका इक वजाईआ। दोवें नेत्र होए अन्ध, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा

वर, साहिब तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण ओट, ओट पुरख अकाल रखाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा सुहाए किला कोट, बंक दुआर वज्जे वधाईआ। साडी कोई ना चले सोच, सोच समझ सार कोए ना पाईआ। तेरा खेल वेख्या लोक परलोक, दो जहान तेरी सरनाईआ। तेरा ढोला गाउँदे चौदां लोक, चौदां तबक कलमा रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, पूरब लेखा लेखे लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखण आस, आसावन्त तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी लग्गी बुझा प्यास, तृष्ना तृप्त कराईआ। कलयुग अन्तिम वेख खास, ख़ालस आपणा रूप वटाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। फिरी दरोही कायनात, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। साचा सोहे ना कोई महिराब, महिबूब नज़र किसे ना आईआ। प्याला मिले ना हयाते आब, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। तन वजाए ना कोए रबाब, सच सतार ना कोए हलाईआ। हक़ दिसे ना कोए अहिबाब, मिले मेल ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मा वर, जिस दा लेखा समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण भीख, भिख्या इक्को दे वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी रखदे आए उडीक, लेखा लिख्त विच समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे लाशरीक, अमाम अमामा बेपरवाहीआ। चार वरनां करे इक प्रीत, सांझा यार नूर अलाहीआ। आत्म परमात्म कलमा ढोला गावे नाम संगीत, मन्दिर मस्जिद सारे दए तजाईआ। नज़री आए त्रैगुण दाता इक अतीत, रूप रंग ना कोए जणाईआ। जन भगतां काया करे ठंडी सीत, मार्ग आपणा दए सुहाईआ। लेख चुकाए ऊँच नीच, राउ रंक रंग रंगाईआ। वेख वखाणे हस्त कीट, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। आत्म अन्तर वसे चीत, परमात्म भेव खुल्हाईआ। सब दी बदले निरगुण रीत, मन वासना दए गंवाईआ। बुध मति करे ठीक, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, सो घर काया बैठा बेपरवाहीआ। नित ढोला गाओ उहदा गीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, सच सच्च तेरी सरनाईआ। गुर अवतार सारे कहिण, कहि कहि रहे सुणाईआ। अबिनाशी करते वेख आपणे नैण, दो जहान खोज खुजाईआ। सच्चा कोई ना दिसे साक सज्जण सैण, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग वहे वहिण, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। होया संग भाई भैण, मात पित सेज सुहाईआ। माया ममता घर घर फिरे डैण, साधा सन्तां रही खाईआ। किसे नज़र ना आवे इक नरायण, नार कन्त होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, आपणा लेखा पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण ज़ोर, मिन्नत नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी सानूं दित्ता

तोर, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। इक्को मन्त्र दे के फुरना फोर, लख चुरासी करी कुड़माईआ। आपणे हथ्थ विच रख के डोर, गुड्डी दो जहान चढ़ाईआ। असीं पा के आए शोर, होका दे दे सर्ब लोकाईआ। जीव जंत कर के वेखो गौर, हर घट वसे बेपरवाहीआ। उस प्रभ दी सब नूं लोड़, जिस लख चुरासी बणत बणाईआ। चरण कँवल चित लओ जोड़, मन उठ ना दहि दिश धाईआ। काया अन्दर अन्धेरा घोर, साचा मन्दिर लओ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, साहिब सतिगुर सब तेरा ध्यान लगाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, हरि करता आप जणाईआ। गुर अवतार करो ध्यान, पीर पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। आपणा भविक्ख्त लिख्या वेखो आण, हरफ़ बहरफ़ पढ़ाईआ । सदी बीसवीं होए मेहरवान, बीस बीसा दए समझाईआ। चौदां सदीआं खेल महान, ख़ालक ख़लक दित्ता कराईआ। मुहम्मद तेरा सिदक ईमान, सदी चौधवीं तेरे नाल हंढ्ढाईआ। ईसा मूसा दे के गए पैग़ाम, नाअरा हक़ हक़ जणाईआ। सच तौफ़ीक इक अमाम, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर दा धरवासा रिहा धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लैणा तक्क, हरि तकवा इक जणाइंदा । करे नबेड़ा हक़ो हक़, हकीकत सब दी वेख वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील चारे खाणी बाणी गई थक्क, कलयुग जीव भेव कोए ना पाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ गए अक्क, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाइंदा । करे खेल पुरख समरथ, श्री भगवान वेस वटाइंदा। वसणहारा घट घट, अन्तर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेख हरि जणाउँदा ए। सृष्ट सबाई इक सुणाउँदा ए। पिछला लेखा याद करउदा ए। लोकमात ध्यान लगाउँदा ए। पैगम्बरां पीरां आप वखाउँदा ए। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दहि दिशा फोल फुलाउँदा ए। दीन मज़्ब ज़ात पात दिसे वंड, साचा रंग ना कोए रंगाउँदा ए। कूड़ी क्रिया सिर ते पंड, जगत जहान नज़री आउँदा ए। बेशक बत्ती गौंदे दन्द, हिरदे हरि ना कोए वसाउँदा ए। रसना लौंदे कूड़ा गंद, अमृत जाम ना कोए पिलाउँदा ए। टुट्टी सके ना कोए गंढ्ढ, छुटकी लिव ना कोए जणाउँदा ए। भेव जाणे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म ना वेख वखाउंदा ए। काया माटी पोच चम्म, अन्तर दुरमति मैल ना कोए धुआउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा दर दर, घट घट अन्दर फोल फुलाउँदा ए। घट घट अन्दर वेखणहारा, हरि शब्दी गुर समझाईआ । कलयुग अन्तिम कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। गुर का शब्द करे ना कोए विचारा, नानक निरगुण सिख्या गए भुलाईआ। हक़ हकीकत बोले ना कोए जैकारा, गोबिन्द डंका फतहि ना कोए वजाईआ। अमृत पीवे ना कोई ठंडा ठारा,

धीरज जत सति सन्तोख नज़र किसे ना आईआ। दोए जोड़ सीस झुका करदे चरण निमस्कारा, अन्तर निउणा समझ किसे ना पाईआ। अन्दर वड़ काया महल चढ़ सतिगुर मिल्या ना किसे किनारा, नाम चोट मन ना किसे लगाईआ। पाया हरि दरस ना हरि करतारा, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। काग़ज़ कलम शाही लिख लिख हारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच्च रिहा दृढ़ाईआ। सच दृढ़ाए श्री भगवन्त, इक्को वार समझाईआ । कोई ना दिसे साचा पंडत, बोध करे पढ़ाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक नंगत, कलमा नबी ना कोए जणाईआ। ज्ञानी विद्वानी हो के मंगत, माया अग्गे झोली डाहीआ। रोटीआं कारण करन मिन्नत, कूड़ा ताल वजाईआ। प्रभ मिलण दी कोई ना करे हिम्मत, महल अटल दर्शन करन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए थाउँ थाईंआ। वेख वखाए कलयुग रीत, चारों कुण्ट दुहाईआ। मुल्लां बांग दए मसीत, कन्नां विच उंगला पाईआ। उच्ची उच्ची मारे चीक, चीक चिहाढ़ा इक सुणाईआ। परवरदगार ना मिल्या अनडीठ, जलवा नूर करे रुशनाईआ। सच प्रेम ना लग्गी प्रीत, प्रीतम मिल्या ना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। पंडत पढ़ सुणाए वेदां गीत, शास्त्रां राग अलाईआ। भेव ना चुक्कया ऊँच नीच, क्षत्री ब्रह्म शूद्र वैश इक्को रूप नज़री ना आईआ। तन मन ना होया ठांडा सीत, अन्तर अग्न ना किसे बुझाईआ । ठाकर स्वामी ना वसया चीत, चतुर्भुज रूप ना कोई वटाईआ। आदि शक्ति हवन अहूतीआं कीता घृत, अग्नी विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग क्रिया वेखे चाईं चाईंआ। कलयुग क्रिया रही कूक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं जिध्धर वेखां दिसे झूठ, सच नज़र दित्ते ना आईआ। ग्रन्थी पन्थी मैथों बैठे रूठ, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। गुर गोबिन्द करके गया इक्को मुठ, अन्त वक्खरे वक्खरे राह चलाईआ। दयाल हो के एहनां उते तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। चार वरन तेरे सुत, काया बुत्त तेरी जोत नज़री आईआ। जे कोई सतिगुर नानक कोलों लए पुच्छ, उह दस्से सब दा पिता पुरख अकाल नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम लोकमात बदल कर आपणा रुख़, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया तेरी किरपा नाल अग्नी जावे बुझ, त्रैगुण भट्ठ ना कोई तपाईआ। तैनूं मिलयां निर्मल होवे बुध, तेरा रूप हर घट वेखण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, धुर दाते दरगाह तेरी सीस इक्को नज़री आईआ।

*** २२ माघ २०२० बिक्रमी बीबी हरबंस कौर दे घर गज़रीपुर ज़िला गुरदासपुर ***

साहिब सतिगुर मौज सच्च, सच सच्च दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, घर घर विच भेव चुकाइंदा। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। मौज अन्दर सद मेहरवान, मेहर नज़र रखाइंदा। मौज अन्दर खेल अपार, हरि सतिगुर आप कराइंदा। वेख वखाए सुखमन टेडी गार, टेडी बंक पार कराइंदा। ईड़ा पिंगल करे निमस्कार, निउँ निउँ सजदा इक वखाइंदा। नौ दवारे कढु के बाहर, साचा राग इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक वखाइंदा। मौज अन्दर सतिगुर मीता, गहर गम्भीर दया कमाईआ। दस्सणहारा साची रीता, करे सच पढ़ाईआ। धाम वखाए इक अनडीठा, गृह मन्दिर पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मौज अन्दर साहिब सतिगुर ठाकर, ठोकर नाम लगाइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धुआइंदा। शब्द वणजारा बणा सौदागर, साचा हट्ट खुलाइंदा। दर आयां घर देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर अन्दर सतिगुर, आपणी दया कमाईआ। लेखा जाण पूरब धुर, वेखे थाउँ थाईंआ। सच प्रीती लए जोड़, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत रस भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वखाईआ। मौज अन्दर खेल अथाह, हरि सतिगुर आप वखाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा आप तराइंदा। पार किनारे लए ला, तट इक्को सोभा पाइंदा। कूड़ा पन्ध दए मुका, सच दवारा इक वखाइंदा। ठाकर स्वामी हो सहा, घर सज्जण नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। मौज अन्दर हरि भगवन्त, प्रभ आपणा खेल वखाईआ। काया चोली चाढ़ रंगत, सोहणी बणत बणाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण-सु-अक्खर इक जणाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सुरती शब्द मिलावा करे नार कन्त, घर सज्जण सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे माण वड्याईआ। मौज अन्दर गहर गम्भीर, अगम्म अगम्मड़ा खेल कराइंदा। पंज तत काया वेख शरीर, त्रैगुण लेखा मूल चुकाइंदा। अमृत बख्श ठांडा सीर, अग्नी तत बुझाइंदा। बजर कपाटी पड़दा चीर, सच दवारा इक वखाइंदा। करे खेल बेनज़ीर, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाइंदा। मेहरवान हो बदल तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाइंदा। साख्यात स्वच्छ सरूप वखाए आपणा ज़हूर, नूर नुराना नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा खेल

खलाइंदा। मौज अन्दर श्री भगवान, हरि करता खेल वखाईआ। जन भगतां दे के भगती दान, मार्ग साचे लाईआ। सन्तां राग सुणाए सच्ची धुन्कान, अनरागी राग अलाईआ। गुरमुखां बख्श चरण ध्यान, साचा इष्ट देव समझाईआ। गुरसिख कर दर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द वचोला बण के विच जहान, साचा मन्दिर दए वखाईआ। दीवा बाती जगे महान, कमलापाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाईआ। मौज अन्दर खोले भेद, भेव आप जणाईआ। मौज अन्दर आदि जुगादि खेड, सो पुरख निरंजन दया कमाईआ। निरगुण निरगुण माणे सेज, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। मौज अन्दर पुरख अकाल दीन दयाल शब्दी सुत दुलारा देवे भेज, थिर आपणे कंध उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लिखे लेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। मौज अन्दर त्रैगुण माया, हरि आपणी बणत बणाईआ। मौज अन्दर पंज तत प्रगटाया, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रंग रंगाईआ। मौज अन्दर शब्द सुत सेवा लाया, साचा हुक्म सुणाईआ। मौज अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया, पुरीआं लोआं घाड़त ल्या घड़ाईआ। मौज अन्दर आपणा हुक्म सुणाया। मौजूदा हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। मौज अन्दर विष्न धार, विष्नूं दए वड्याईआ। मौज अन्दर ब्रह्म पसार, पारब्रह्म खेल रचाईआ। मौज अन्दर शंकर उज्यार, धूंआँधार सोभा पाईआ। मौज अन्दर बण ठठयार, त्रै पंज मेला सहिज सभाईआ। मौज अन्दर बण दातार, दातारी नाउँ धराईआ । मौज अन्दर भर भण्डार, विष्नूं इक्को वस्त वखाईआ। मौज अन्दर हुक्मरान, धुर दा हुक्म सुणाईआ। मौज अन्दर शहिनशाह सुल्तान, शाह पातशाह अख्वाईआ। मौज अन्दर हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। मौज अन्दर नाम निशान, सचखण्ड दवारे आप झुलाईआ। मौज अन्दर खोल दुकान, गुर शब्द दए समझाईआ। लख चुरासी कर परवान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए वड्याईआ। चारे बाणी दे ज्ञान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाईआ। करे खेल जिमी असमान, धरत धवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मौज अन्दर वसे बेपरवाहीआ। मौज अन्दर शहिनशाह, हरि करता खेल कराइंदा। मौज अन्दर बेपरवाह, पर्दा आप उठाइंदा। मौज अन्दर रचन रचा, रच रचना वेख वखाइंदा । मौज अन्दर निरगुण सरगुण वेस वटा, लख चुरासी रूप वखाइंदा। मौज अन्दर नौ दवारे खोल खुला, घर घर विच सोभा पाइंदा । मौज अन्दर गुरू अवतार लए प्रगटा, शब्द संदेसा नाम सुणाइंदा। मौज अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा ला, साचा राग अलाइंदा। मौज अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण लए पढ़ा, धुर दी सिख्या इक दृढ़ाइंदा। मौज अन्दर गीता ज्ञान ल्या उपा, अञ्जील कुराना मसला

हल्ल कराइंदा। मौज अन्दर बोध अगाध शब्द सुणा, गुरु गुरदेव स्वामी खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सेवा आप जणाइंदा। मौज अन्दर जुग जुग चार, चार कुण्ट वड्याईआ। मौज अन्दर खाणी चार, साहिब सतिगुर राह वखाईआ। मौज अन्दर बोल जैकार, बाणी चारे राग अलाईआ। मौज अन्दर वेद चार, चौहां वरनां दए समझाईआ। मौज अन्दर हो त्यार, निरगुण जोत शब्द रूप वटाईआ। मौज अन्दर पंज तत कर पसार, ब्रह्म मति इक समझाईआ। मौज अन्दर मन मति बुध खोल्ह किवाड़, घर वस्तू दए टिकाईआ। मौज अन्दर काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। मौज अन्दर माया ममता हउमे हंगता कर त्यार, कूड़ी क्रिया बन्धन पाईआ। मौज अन्दर कर प्यार, ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। मौज अन्दर धुर दा मेला, हरि सतिगुर आप कराइंदा। मौज अन्दर गुरु गुर चेला, चेला गुरू रूप समाइंदा। मौज अन्दर सतिगुर मिले सहेला, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। मौज अन्दर लख चुरासी घल्लणहारा जेला, अन्त जम की फाँसी आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। मौज अन्दर बण मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। मौज अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रूप वटा, अनूप आपणी सोभा दए समझाईआ। मौज अन्दर निरगुण सरगुण दए पढ़ा, शब्द नाद धुन शनवाईआ। मौज अन्दर चौदां लोक वेखे थाँ थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। मौज अन्दर चौदां तबकां कुण्डा ला, बेनज़ीर आपणी नज़र टिकाईआ। मौज अन्दर नूरी नूर हो खुदा, लाशरीक आपणी कार कमाईआ। मौज अन्दर महिबूब मुर्शद मुरीद दए पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मौज अन्दर सृष्ट सबाई करे फनाह, मौज अन्दर उतपत लए कराईआ। मौज अन्दर बख्श गुनाह, मौज अन्दर गेड़ा लख चुरासी भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खोज आपणे हथ्थ रखाईआ। मौज अन्दर सन्त कमार, लोकमात दिती वड्याईआ। मौज अन्दर बराह अवतार, यगै पुरुष हाव गरीव नाल मिलाईआ। मौज अन्दर नर नरायण कर त्यार, कपल मुन सोभा पाईआ। मौज अन्दर दत्ता त्रै दे अधार, रिखभ देव करे कुड़माईआ। मौज अन्दर पृथू पावे सार, मौज अन्दर मच्छ कच्छ मिले वड्याईआ। मौज अन्दर धनंतर वेखे नैण उग्घाड़, मौज विच हँसा सोहँ राग गाईआ। मौज विच नर सिँघ रूप अपार, मौज अन्दर नर नरैण हरी रूप वटाईआ। मौज अन्दर बावन आए बलधार, भेखाधारी भेख वटाईआ। मौज अन्दर परसराम कर पार, मौज अन्दर राम रमईआ घनईआ नाउँ रखाईआ। मौज अन्दर वेद व्यासा बण लिखार, धुर दा लेखा गया समझाईआ। मौज अन्दर काहना कृष्ना मुकन्द मनोहर लखमी नरायण हो उज्यार, बंसुरी नाम गया वजाईआ।

मौज अन्दर मूसा दे इक नज़ार, कोहतूर सोभा पाईआ। मौज अन्दर ईसा दे पैग़ाम, सच संदेसा गया सुणाईआ। मौज अन्दर मुहम्मद दए कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। हुक्मे अन्दर निरगुण नानक कर परवान, सरगुण नानक सोभा पाईआ। मौज अन्दर शब्द नाद धुन्कान, धुर दा राग सुणाईआ। मौज अन्दर अंगद अंगीकार कीता आण, अमरदास सेवा सेवा विच वखाईआ। मौज अन्दर रामदास कर प्रधान, धुर दा लेखा दित्ता समझाईआ। मौज अन्दर गुरू अर्जन हो मेहरवान, शब्दी दात झोली पाईआ। मौज अन्दर हरि गोबिन्द कर बलवान, मीरी पीरी रूप वटाईआ। मौज अन्दर हरिराए जगत निशान, हरि कृष्न सोभा पाईआ। मौज अन्दर तेग़बहादर लै के बलीदान, सीस जगदीश भेंट चढ़ाईआ। मौज अन्दर गोबिन्द सुत कर परवान, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। मौज अन्दर खण्डा खड़ग दे कृपान, भुयंग रूप जणाईआ। मौज अन्दर अमृत कर पान, आत्म अन्तर खेल खिलाईआ। मौज अन्दर खेल कर भगवान, साची सेवा सर्ब लगाईआ। मौज अन्दर नीहां हेठां रखे बाल अञ्याण, मौज अन्दर शमशीर भेंट चढ़ाईआ। मौज अन्दर माछूवाड़े मंगे दान, मौज अन्दर वेखणहारा वेख वखाईआ। मौज अन्दर पुरख अकाल, अकल कलधारी आप कराईआ। मौज अन्दर गुरू अवतार पीर पैगम्बर देवण धुर फ़रमाण, सच संदेसा मात सुणाईआ। मौज अन्दर भगतां देवे सच निशान, धुर निशाना इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। मौज अन्दर सृष्ट सबाई जग, जग-जीवण-दाता रचन रचाइंदा। मौज अन्दर खेल सूरा सरबँग, हरि करता वेख वखाइंदा। मौज अन्दर गोबिन्द सोहला ढोला राग गाए छन्द, अनादी नाद आप वजाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। मौज अन्दर जुग जन्म विछड़े निरगुण सरगुण लए गंढ, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। मौज अन्दर नौ खण्ड पृथ्मी करे खण्ड खण्ड, चारे खाणी बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाइंदा। मौज अन्दर चाढ़ रंग, रंग रंगीला इक अख्वाइंदा। मौज अन्दर आत्म सेज पलँघ, सोहणे वस्त्र सोभा पाइंदा। मौज अन्दर नाद ढोल मृदंग, घर तुरीआ राग सुणाइंदा। मौज अन्दर चाढ़ चन्द, जोती नूर डगमगाइंदा। मौज अन्दर आत्म सरोवर सच्ची गंग, धुर दी धार आप वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मौज आप समझाइंदा। साची मौज सतिगुर चरण, आदि जुगादि मिले वड्याईआ। नेत्र खुल्ले हरन फ़रन, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खोज दए जणाईआ। साची खोज सतिगुर मीत, मित्र प्यारे आप जणाइंदा। साची खोज काया मन्दिर मसीत, गुरदुआर इक्को इक वखाइंदा। साची खोज अन्दर मिले ऊँच

नीच, राउ रंकां इक्को घर वखाइंदा। खोज अन्दर तन मन जाए भीज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। साची खोज सतिगुर मंत, मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। खोज अन्दर महिमा अगणत, श्री भगवान सिफ्त सालाहीआ। मौज अन्दर मौज माणण गुरमुख विरले सन्त, जिन्हां प्रभ आपणी दया कमाईआ। साची मौज अन्दर जो विछड़ी सवाणी मिली नार कन्त, सरन साची जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को मौज दए वखाईआ। साची खोज प्रभ दे नाल, नालश कोई रहिण ना पाईआ। जिथ्थे वसण शाह कंगाल, ऊँच नीच नज़र ना आईआ। सेवा करे बण दलाल, शब्दी रूप वटाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाल, सच तौफीक खुदाईआ। हक़ वखाए उच्च महिराब, महिबूब पर्दा लाहीआ। सजदा निउँ करे अदाब, बन्दना इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोज विच हुजरा रिहा वखाईआ। खोज विच मुजरा राग नाद संगीत, सोहणा ताल वजाईआ। मौज अन्दर कर बख्शीश, रहमत आपणा नाम वरताईआ। नाम सति कलमा हदीस, हज़रत करे पढ़ाईआ। मेला मेले ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। जन भगतां रखे सदा उडीक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां इक्को मौज वखाईआ। गुरमुख मौज माणण प्रभ दरस, अवर ना कोई चतुराईआ। जन्म जन्म दी मेटण भटक, तृष्ना तृखा बुझाईआ। ज़िमीं असमान कोई ना जाए अटक, मंज़ल पन्ध अन्त मुकाईआ। जम दी फाँसी कदे ना जावण लटक, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। प्रभ मिलण दी कोई ना समझो हतक, सब मिलो चाईं चाईंआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म जगत, उत्तम श्रेष्ट नज़री आईआ। जे इस वेले रह गया फरक, फिर वक्त गया हथ्थ ना आईआ। सतिगुर नानक ला गया शर्त, बिन हरि नामे पार ना कोई कराईआ। कबीर जुलाहा कहे कोटन कोटि हुन्दे वेखे ग़रक़, जो जूठ झूठ संग निभाईआ। कलयुग जीवो कूड़ी क्रिया करो तरक, तुरत आपणा पुरख अकाल मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब नूं दस्स के गए इष्ट, आत्म परमात्म लओ समझाईआ। किसे कम्म नहीं औणे स्वर्ग बहिश्त, बिन सतिगुर चरण सांतक ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मौज बहार इक लगाईआ। मौज अन्दर खिले फुल्ल, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। बिन पूरे सतिगुर कोई ना पावे मुल्ल, कीमत सके ना कोई चुकाईआ। मानस जन्म ना जावे रुल्ल, कूड़े हट्ट ना कोई विकाईआ। जे नानक गोबिन्द संदेसा गए भुल्ल, फिर सुरती लओ जगाईआ। तुसीं ओस साहिब दी कुल्ल, जो आपा वार बच्चे नीहां हेठ गया दबाईआ। ओस दी मौज विच रह के कदे ना जाओ हुल, सिम्मल रूप ना कोई वटाईआ। अमृत आत्म जाए ना डुल्ल्, सांत रखो सज्जण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मौज दे वखाईआ। गुरमुख

वेखो हरि जू मौजूदा, घर काया अन्दर डेरा लाइंदा। जगत वक्त लँघाउ ना कोई बेहूदा, वेहला गुरमुख नज़र किसे ना आइंदा। आपणे असल नाल रलाओ सूदा, कुल ज़र साची इक बणाइंदा । किसे कम्म नहीं आउणा पंज तत सूसा, काया माटी हड्डा तन ख़ाकी ख़ाक समाइंदा। जिस दे पिच्छे रुलदे गए ईसा मूसा, मुहम्मद जिस दी ओट रखाइंदा। जिस दे पिच्छे मनसूर सूली गया चढ़के कूका, नाअरा हक़ हक़ लगाइंदा। सूफी आशक बणदे रहे माशूका, मुश्किल हल्ल सर्ब कराइंदा। ओस दे कोलों सारे आपणा आपणा लओ हकूका, हक़ सब दी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मौज मुफ़लसा आप वखाइंदा। मौज वेखो परवरदिगार, ग़रीब निमाणे रिहा तराईआ। मौज अन्दर सांझा यार, धुर दा नाता लए जुड़ाईआ। मौज अन्दर नित नवित्त आवे संसार, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। मौज अन्दर भगत अठारां तार, सूफीआं दिती माण वड्याईआ। मौज अन्दर सन्तां सुण पुकार, सति सतिवादी होए सहाईआ। मौज अन्दर गुरमुख गुरसिख लए उठाल, फड़ बाहों गोद बहाईआ। मौज अन्दर खेल करे दयाल, दीनां अनाथां दए वड्याईआ। मौज अन्दर रच के खेल काल, लख चुरासी रिहा खाईआ। मौज अन्दर राए धर्म बहाल, सच्चा हुक्म दित्ता समझाईआ। मौज अन्दर चित्रगुप्त लिखार, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। मौज अन्दर जबराईल मेकाईल असराफ़ील अजराईल कर त्यार, तरह तरह समझाईआ। मौज अन्दर जमदूतां दए सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मौज अन्दर लाड़ी मौत करके ख़बरदार, सीस मैंहडी आप गुंदाईआ। मौज अन्दर नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा वेखे वेखणहार, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। मौज अन्दर धुर दा हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मौज अन्दर जुग चौकड़ी लेखा लिख के गए तेई अवतार, भगत अठारां नाद वजाईआ। मौज अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद करके गए पुकार, परवरदिगार दाता नूर अलाहीआ। मौज अन्दर नानक गोबिन्द इक जोती जलवा जलाल, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ । मौज अन्दर सारे मंग के गए इक्को वार, एकँकार सरनाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीतन संसार, कोटन कोटि काल विहाईआ । अन्त भगवन्त सर्ब कन्त आपणी किरपा लैणी धार, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। निहकलंक निरगुण जोत लए अवतार, शब्दी गुरु गुर देव डंक वजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करना ख़बरदार, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द सोया कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी पर्दा फोलणा विच जहान, कूड़ी क्रिया सब दे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म सब नूं देणा इक प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। सर्ब जीआं दा बण के सांझा यार, नाता इक जुड़ाईआ। नानक निरगुण करके गया पुकार, पुरख अकाल वड्डा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म रहे जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साध सन्त उसे दा मंगण दीदार,

निज नेत्र नैण उठाईआ। भगत भगवन करन प्यार, सच प्रीती जोड़ जुड़ाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदगार जे तेरी आए मौज बहार, लख चुरासी पत डाल्ही फूल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच बहार गुरमुखां अन्दर आपणी फुलवाड़ी दए वखाईआ। नाम खोज जिस ल्या मज़ा, मुख़ालफ़त कोए रहिण ना पाईआ। चोरां अन्दरे अन्दर मिले सज़ा, सिर सके ना कोई उठाईआ। मन वासना अन्दर उठ ना भज्जा, दहि दिशा ना वेख वखाईआ। सिर ते काल नग़ारा दिसे ना कोई कज़ा, कयामत बैठे मुख छुपाईआ। जिन्हां मन्नी साहिब सतिगुर दी रज़ा, तिन्हां रहीम रहमान रहमत दए कमाईआ। जुग चौकड़ी भगत प्यार पिच्छे आए भज्जा, लोकमात फेरा पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बज्झा, चारों कुण्ट हथ्थ किते ना आईआ। गुरमुखो आपणे सतिगुर नूं दे के वेखो सद्दा, घर विच्चों मिले चाईं चाईंआ। बिन मक्के काबिउँ करा दए हजा, हज़रत इक्को नूर अलाहीआ। किसे नाल नहीं करदा दग़ा, जो दोए जोड़ चरण ध्यान लगाईआ। पिच्छे धन्ने दा चारदा रिहा ढग्गा वच्छा, की तुहानूं मिलण कदे ना आईआ। हुण लख चुरासी जीव जंत ओसे दा बच्चा, वांग बच्चया गोद उठाईआ। जो गुरसिख गुर दा शब्द कमावे होवे सच्चा, सच समझो ओसे नूं नज़री आईआ। जे ना आवे नानक लिख्या लेख हो जाए कच्चा, पैगम्बर देवे ना कोई गवाहीआ। क्यों एहना दोहां उच्ची मंज़ल चढ़के लयांदा पता, जिस घर वेखण कोई ना जाईआ। उस दा लेख तुहाडे अग्गे रखा, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। जिस भाग लगाया तत अट्ठा, अप तेज वाए पृथमी अकाश मन मति बुध जोड़ जुड़ाईआ। अन्तिम इस दे अन्दर ढका, परमात्म वंड वंडाईआ। इस वेखण लई तुहाडे अन्दर इक होर लाई अक्खा, निज नेत्र करके जगत रिहा सुणाईआ। उस दे उते प्रभ आपणा पर्दा ढका, बिन सतिगुर पूरे सके ना कोई उठाईआ। कोई ना जाणे निक्का के वड्डा, जिस जाणया तिस आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द सद प्रेम प्यार दा भुक्खा, नित नवित्त राह रिहा वखाईआ। गुरमुखो गुरसिखो आपणे अन्दर आपणे नाल कर लओ मता, बाहरों संगी संग ना कोई रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, खोज अन्दर जन भगतां चुकाए भय डर, भ्यानक नज़र ना आईआ। भउ डर भय जाए भज्ज, भज्जड़ा पिटी मौत लाड़ी नेड़ रहिण ना पाईआ। जो गुरसिख गुरूदवारे गए सज, सोहणा आसण लाईआ। उहनां अन्दर नाद गया वज्ज, सोहणा राग अलाईआ। घर पतिपरमेश्वर लैण सद्द, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तेरी वड्याई तेरे हथ्थ, तेरा सतिगुर तेरा भगवन्त तेरा कन्त सद तेरे संग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां मौज अन्दर सर्ब संगत दए वधाईआ।

* २३ माघ २०२० बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर पिण्ड ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर *

सो पुरख निरंजन शाह सुल्तान, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। हरि पुरख नौ जवान, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। एकँकार सूरबीर बलवान, बलधारी आप अख्वाईआ। आदि निरंजन जोत महान नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता मेहरवान, महिबान बीदो बी खैर नूर अलाहीआ। अबिनाशी करता देवणहारा दान, दाता दानी धुरदरगाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हो प्रधान, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। इच्छया अन्दर राज राजान, हुक्म इक्को इक दरसाईआ। हुक्मे अन्दर खेल महान, आपणी इच्छा लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी हरि करतार, हरि करता आप कराइंदा। महल अटल उच्च मनार, निरगुण सोहणी बणत बणाइंदा। दीआ बाती इक्को बाल, कमलापाती आप जगाइंदा। छप्पर छन्न ना कोई दुआर, बाढी घाड़त ना कोई घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी कार कमाइंदा। आपणी कार करे निरँकार, हरि करता वड वड्याईआ। सच दवारा खोल्ह किवाड़, सचखण्ड नाउँ धराईआ। वेखे विगसे वेखणहार, पर्दा आपणा आप उठाईआ। ना कोई दूजा मीत मुरार, संगी संग ना कोई रखाईआ। मात पित ना कोई उधार, बाली बाला गोद ना कोई उठाईआ। साक सज्जण ना कोई यार, मित्र प्यारा ना कोई अख्वाईआ। पीर पैगम्बर ना गुरू अवतार, शब्द नाद धुन ना कोई शनवाईआ। रवि ससि ना कोई उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोई रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोई अखाड़, सुरप्त इन्द ना वंड वंडाईआ। धरत धवल ना कोई अकाश, ज़िमी असमान ना सोभा पाईआ। आपणा खेल आप करे कर वेखे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता भेव चुकाईआ। हरि करता भेव चुकाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड दवारे सच प्रताप, वड प्रतापी आप प्रगटाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, पूत रूप ना कोई वटाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, सिमरन देवे ना कोई वड्याईआ। ना कोई पतन ना कोई घाट, तट किनारा नज़र कोई ना आईआ। ना कोई वणजारा ना कोई हाट, ना कोई वस्त रिहा विकाईआ। इक्को निर्मल जोत कर प्रकाश, सचखण्ड दवारे साचे सोभा पाईआ। आपणी इच्छया आपणी आस, आस आपणे विच्चों प्रगटाईआ। आपे देवणहारा दात, दाता दानी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव खोल्हे पुरख अबिनाश, अबिनाशी हथ्थ वड्डी वड्याईआ। गहर गम्भीर सरबगुण तास, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। निरगुण निरगुण होवे दास, घर सच्चे सेव कमाईआ। आपणे अन्तर आपे वेखे मार झात, झाकी आपणी इक्को पाईआ। खोलणहारा बंद ताक, पर्दा उहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल रचाईआ। सचखण्ड दुआर सोहणा महल्ला, सो पुरख निरंजन आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरंजन इक अकेला, एकँकार डेरा लाइंदा। आदि निरंजन दीपक बला, अबिनाशी करता सोभा पाइंदा। श्री भगवान सच सिँघासण मल्ला, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कल धराइंदा। जोती नूर आपे रला, दूजा संग ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया श्री भगवन्त, हरि करता आप प्रगटाईआ। रूप रंग ना कोई रंगत, रेख भेख ना कोई जणाईआ। दर ठांडे बणके आपे मंगत, धुर दी दात आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा इक रखाईआ। सच भण्डारा हरि करता पुरख, धुरदरगाही आप वरताइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। साची खेल परवरदगार, मुकामे हक़ आप रचाईआ। जलवा नूर कर उज्यार, लाशरीक सच तौफीक इक खुदाईआ। महिबान बीदो सांझा यार, मुबैन इक्को धार चलाईआ । नूर अलाही दरगह साची हो त्यार, साचा मन्दिर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारा वेख वड्डा, सो साहिब आप बणाइंदा। जिस अन्दर वसे बुड्ढा नढ्ढा, बुड्ढा बाल जवान आपणे घर बंद कराइंदा। आर पार आपे जाणे हद्दा, हदूद आपणे विच रखाइंदा। आपणी धार अन्दर बद्धा, सहारा नज़र कोई ना आइंदा। अन्दर बैठ सूरा सरबग्गा, शहिनशाह आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सोभा पाइंदा। सच दवारे पुरख अबिनाशन, सचखण्ड दए वड्याईआ। सोहणा बणाए इक सिँघासण, चार दीवारी नज़र किसे ना आईआ। उपर बैठ शहिनशाह शाहो शबासन, हरि करता डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल सोभा पाईआ। सच महल सोभावन्त, हरि करता आप सुहाईआ। आप बणाए आपणी बणत, आपे वेख वखाईआ। आपे दाता आपे मंगत, आपे झोली रिहा भराईआ। आपे नाता जोड़ बणाए आपणी बणत, सगला संग आप तजाईआ। आपे नार आपे कन्त, सेज सुहञ्जणी आपे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड इक्को दए वड्याईआ। सचखण्ड इक हुलारा, निरगुण निरवैर आप रखाइंदा। पुरख अकाल खेल न्यारा, अकल कलधारी वेस वटाइंदा। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सेज निरगुण रहे कन्त भतारा, निरगुण मेला मेल मिलाइंदा। निरगुण सुत निरगुण दुलारा, निरगुण पूत सपूत अख्वाइंदा। निरगुण गोदी करे प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे आपणा खेल रचाइंदा। सचखण्ड दवारे जनम्यां बाल, सुत शब्द नाउँ रखाईआ। जिस दा पिता पुरख अकाल, अकल कलधारी बणे माईआ। जोती जलवा दे जलाल, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। मेहरवान प्रभ हो दयाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, समझ अन्तर लगाईआ। पुरख अबिनाशी चरण ध्यान, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। शब्द अञ्याणा निका बाला, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। तूं साहिब सतिगुर मेरा रखवाला, दूजा नज़र कोई ना आईआ। सचखण्ड वेखी तेरी सच्ची धर्मसाला, जिस गृह बैठा आसण लाईआ। मोहे दे इक टिकाणा, चरण कँवल मिले सरनाईआ। श्री भगवान हो प्रधाना, मेहर नज़र नैण उठाईआ। थिर घर बणावां तेरा इक मकाना, घर घर विच दयां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दए समझाईआ। सुत दुलारा शब्दी निक्का, हौली हौली आख जणाईआ। तूं पुरख अकाल मेरा पिता, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। नित नवित्त करना हिता, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तेरा खेल सदा अनडिठा, समझ किसे ना आईआ। सच मकान तेरे वसां, जिस घर बहि बहि सोभा पाईआ। सचखण्ड विच्चों छोटा हिस्सा, थिर घर तेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच्च रिहा जणाईआ। सुण शब्द सुत मेरे लाल, प्रभ लालन दया कमाइंदा। सचखण्ड अगम्मी धर्मसाल, थिर घर तेरा डेरा लाइंदा। देणा वस्त इक कमाल, अगम्म अथाह वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। शब्द कहे पुरख समरथ, तेरी ओट तकाईआ। निमस्कार दोए जोड़ हथ्थ, बिन हथ्थां सीस झुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, सद आपणा हुक्म मनाईआ। तेरे विच्चों उपज्या तेरा नूर तेरा तत्त, तेरा रंग नज़री आईआ। तेरे चरण बज्झे नत्त, दूजा सज्जण ना कोई अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जिस नाल मिले तेरी सरनाईआ। श्री भगवान आख सणाउँदा ए। आदि आपणी धार जणाउँदा ए। शब्दी सुत फड़ उठाउँदा ए। गोदी चुक्क खुशी मनाउँदा ए। वस्त अमोलक तेरी झोली पाउँदा ए। साचा हुक्म इक फ़रमाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा बंस सेव कमाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा घर वडयाउँदा ए। पुरी लोअ अकाश नाल रलाउँदा ए। ज़िमी असमान धरत धवल वंड वंडाउँदा ए। पंज तत आप धराउँदा ए। त्रैगुण सोहणा खेल वखाउँदा ए। लख चुरासी रंग रंगौदा ए। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज तेरा नाम समझाउँदा ए। सच जैकारा इक्को इक, धुरदरगाही आप लगाउँदा ए। तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोई ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत माण रखाउँदा ए। सुत शब्द तैनूं वडयावांगा।

दो जहान तेरी रचन रचावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी खेल करावांगा। खाणी बाणी तेरी धार प्रगटावांगा। गुर अवतार तेरा बंस सुहावांगा। पीर पैगम्बर कन्त कन्तूहल इक जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा रूप समझावांगा। सुत शब्द चरण कँवल, सीस जगदीश निवाईआ। तूं साहिब सुल्तान अलाही नूर अवल्ल, आलमीन तेरी सरनाईआ। निरगुण सरगुण तेरा खेल उपर धवल, धरनी सोभा पाईआ। देवे माण ब्रह्मा कँवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। मेहरवान सूरा सरबँग, हरि करता सच जणाइंदा। नित नवित्त तेरा नाम वजावां मृदंग, ढोला राग सर्ब सुणाइंदा। लख चुरासी अन्दर सेज पलँघ, सोहणी बणत बणाइंदा। आत्म परमात्म दे अनन्द, रस इक्को इक वखाइंदा। जुग चौकड़ी जाइण लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा राह वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा संग, साचा जोड़ जुड़ाइंदा। कर खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड तेरा नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शब्द दुलारा झोली डाहइंदा। शब्द दुलारा डाह झोली, पुरख अगम्मड़े अग्गे सीस निवाईआ । बण ठाकर बरदा तेरी गोली, मस्कीन तेरी सरनाईआ। सच दस्स पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी इक्को बोली, जिस विच मेरा तेरा रूप नज़री आईआ। श्री भगवान इशारे नाल किहा हौली हौली, बिना अक्खरां दित्ता समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तूं कदे ना डोलीं, तेरी मेरी धार इक्को इक नज़री आईआ। सोहँ सरूप सदा मौलीं, सति सतिवादी दए समझाईआ। एसे विच्चों मेरा नूर वरोली, मेरे नूर विच्चों तेरा रूप नज़री आईआ। तेरे नाल कीता इकरार कौली, जुग चौकड़ी भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरी दुकान श्री भगवान आप खोली, भण्डारा वरताउणा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या सुण के सुत, थिर घर साचे खुशी मनाइंदा। किरपा करे अबिनाशी अचुत, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरी मौले रुत्त, श्री भगवान आप महकाइंदा। मैं दो जहान एथे ओथे रहां खुश, खुशीआं विच आपणा घर सुहाइंदा। श्री भगवान सचखण्ड दवारे बैठा लुक, बिन तेरे नज़र किसे ना आइंदा। अबिनाशी करते किहा शब्द मैं गोदी लवां चुक्क, तेरी सेवा इक समझाइंदा। निरगुण धारों जाणा उठ, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। जन भगतां उपर जाणा तुठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप जणाइंदा। साची सिख्या सुण के बाल नढ्ढा, घर आपणे खुशी मनाईआ । मेरा पिता पुरख अकाल किड्डा वड्डा, जिस दी वड्डी वड्याईआ। घर आयां दर देवे सद्दा, सोहणा हुक्म मनाईआ। मैं दो जहान निरगुण सरगुण हो के फिरां भज्जां, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। आत्म

परमात्म शब्द नाद धुन राग अमृत रस गुरमुखां देवे मज़ा, सोहणा रस वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बद्धा, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आदि जुगादि तेरी सेवा करदा थक्क कदे ना जाईआ। साहिब सुल्तान सच महिबूब, मेहरवान दए जणाईआ। शब्द सुत तेरा ऊँच अरूज, महिफ़ल इक्को नूर खुदाईआ। उठ वेख मेरा सबूत, साबत सूरत दयां वखाईआ। जिस दे अन्दर रखां महिफूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा इक्को दवारा इक्को मंजल इक्को मक़सूद, मक़सद सब दा हल्ल कराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी करके हउमे नेसतो नाबूद, नाम निशाना तेरा इक झुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दस्स श्लोक, दूई द्वैती तेरे विच कदी ना आईआ। तैनूं देवां वड्याई काया पंज तत भूत, अनभव तेरी खेल कराईआ। इक्को ताणा पेटा सूत, इक्को वस्त्र दए बणाईआ। तेरा नाम नगारा इक्को वज्जे कूक, दो जहानां करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को शब्द सुत दए वड्याईआ। सुत शब्द कहे प्रभ मेरे ठाकर, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। तूं गहर गम्भीर वड्डा सागर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अख्वाईआ। आदि जुगादी करीम करता कादर, कुदरत तेरे विच रखाईआ। धन्न भाग मोहे देवें आदर, आदर्श आपणा इक जणाईआ। तेरी किरपा मैं बणां बहादर, सूरबीर नाउँ धराईआ। नित नवित्त तेरा नाम करां उजागर, तेरा ढोला सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणा सौदागर, सौदा हट्ट इक चलाईआ। माण दे के साढे तिन्न हथ्थ काया गागर, घर घर विच पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणा धुर दा वर, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सदा सद सच तेरी सेव कमाईआ।

* २३ माघ २०२० बिक्रमी धिरता सिँघ दे घर कलानौर ज़िला गुरदासपुर *

सतिगुर शब्द वड बलवान, निरवैर निराकार अख्वाइंदा। पुरख अकाल कर ध्यान, अबिनाशी करता भेव चुकाइंदा। लेखा वेख दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा दान, आदि जुगादी पड़दा लाहइंदा। गुर अवातरां पीर पैगम्बरां दस्सणहार निशान, सच निशाना इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाइंदा। सतिगुर शब्द गहर गम्भीर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। चोटी चढ़ बैठा अख़ीर, नज़र किसे ना आईआ। धार रखे बेनज़ीर, रूप रंग ना कोई जणाईआ। सच लभ्भे ना किसे तस्वीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द साहिब समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि

जुगादि महिमा अकथ, शास्त्र वेद पुराण रहे जस गाईआ। अञ्जील कुरान मसला हकीकत रहे दस्स, लाशरीक नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ रिहा वस, परवरदगार सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द सदा दयाल, दयानिध अख्वाइंदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, सच दवारे सोभा पाइंदा। नित नवित्त खेल करे कमाल, करनी करता हथ्थ रखाइंदा। भगत सन्त सज्जण लए उठाल, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाइंदा। गुरमुख वेखे आपणे लाल, लालण आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि, हरि करता आप प्रगटाइंदा। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्मादि, भाण्डा भरम भउ आप भंनाइंदा। लख चुरासी घट घट अन्दर वजाए नाद, आत्मक राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी शब्द गुरदेव स्वामी, हरि आप कराईआ। घट घट बैठ अन्तरजामी, हरि जानत रूप समाईआ। जुग चौकड़ी बोल अगम्मी बाणी, धुर दी धार समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत निशानी, लोकमात दए वखाईआ। आत्म परमात्म खेल महानी, बेअन्त बेपरवाहीआ। कलयुग करां लेखा लेख जीव जहानी, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना सच रचाईआ। साची रचना वेख जग, हरि करता खेल रचाइंदा। हर घट बैठ सूरा सरबँग, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। साचे हुजरे इक्को हज्ज, मक्का काअबा इक दृढ़ाइंदा। नाद धुन अगम्मी रिहा वज्ज, तन्द सतार नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल गुरू अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर आप कराईआ। लेखा जाण पीर पैगम्बर यार, वेखणहारा नाउँ धराईआ। धुर दा कलमा दे कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। धुर संदेसा सच पैग़ाम, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला दए चुकाईआ। पर्दा उहला चुकावणहारा, हरि करता भेव जणाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर लख चुरासी जीव जंत दे सहारा, साचा मार्ग जगत जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, निरगुण सरगुण आपणी खेल वखाईआ। आत्म परमात्म खोल्ह किवाड़ा, थिर मन्दिर सोभा पाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जोती जोत डगमगाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव कोई ना पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, बण कातब ना कोई जणाइंदा। घर ठांडे बैठ सच्चे दवारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। शब्दी शब्द बणाए साचा सेवादारा, साची सेवा इक समझाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते विच संसारा, कोटन कोटि काल आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग आदि निरंजन, निरगुण

निरवैर आप रंगाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर वेख वखाईआ। आदि जुगादी धुर दा सज्जण, साहिब सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा दस्से आप, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। जुग चौकड़ी धुर दा जाप, सच संदेसा नाम सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे गए आख, निरअक्खर अक्खर रूप वटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सच रसूल इक्को पाक, पतित रूप ना कदे वटाईआ। आत्म परमात्म बोध अगाध शब्द नाद इक्को दस्से पूजा पाठ, धुर संदेसा नाम सुणाईआ । आत्म सरोवर तट किनारा इक्को दस्से ताट, अठसठ आपणी धार जणाईआ। गुरदर मन्दिर शिवदुआले वेखणहार मट्ठ, मसीत काअबा काया अन्दर इक सुहाईआ। आत्म राम धुर दी ज़ात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हर घट रिहा समाईआ। परम पुरख पुरखोतम सर्ब जीआं दा कमलापात, लख चुरासी सेज हंढ्डाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सुणाए गाथ, सोहला सिफ्ती राग अलाईआ। खाणी बाणी कहे पुरख अबिनाश, बेअन्त बेपरवाह इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे आप, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। सच दवारा खोल्ह के जावे हाट, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। पंज तत दिसे इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी वेखण आया, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस पार कराया, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भविक्ख्त ढोला धुर दा गाया, निज नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी ओट रखाया, दर बैठे सीस निवाईआ। परवरदिगार बेपरवाह बेनज़ीर नूर जलवा लए उपजाया, ज़ाहर ज़हूर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। साचा खेल हरि करतार, हरि करता आप जणाईआ। मंगदे गए गुरू अवतार, भिख्या सब दी झोली पाईआ। पीर पैगम्बर सजदा कर कर धूढ़ चरण लौदे रहे छार, मस्तक टिक्का इक वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त योद्धा सूरबीर लै अवतार, परवरदिगार आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखणहार, घट घट पर्दा दए उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार बोल जैकारा, जै जै जैकार गए सुणाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी बाण राग अल्हाईआ। सच संदेसा एका वारा, एकँकार दित्ता सुणाईआ। कलयुग अन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण रूप लए अवतारा, जोती जामा वेस वटाईआ। शब्द रूप सिरजणहारा, सति सतिवादी नज़री आईआ। मात पित जननी जन ना कोई दुलारा, गोदी गोद ना कोई उठाईआ। करे खेल अपरम्पर अपर अपारा,

आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दा बोले इक जैकारा, साचा राग अलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन करे प्यारा, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। दीन मज़ब ज़ात पात वसे बाहरा, सो सतिगुर शब्द आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अवल्ला लए धराईआ। शब्द गुरू सूरा सरबँग, इक अकल्ला आदि जुगादि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी सच्चे मार्ग संग, घर घर अन्दर आपणा डौरु डंक वजाइंदा। लख चुरासी विच्चों जन भगतां देवे सच अनन्द, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाइंदा। सच सुनेहड़ा दे के छन्द, सोहणा राग सुणाइंदा। आत्म परमात्म परमानंद, निज आत्म रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करे करतार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर पर्दा रिहा उठाईआ। लेखा भविक्ख्त जो गए उच्चार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। लहिणा देणा हरिजन दए उतार, बाकी नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे जग, शब्द गुरू वड्डी वड्याईआ। कलयुग मेटे लग्गी अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हँस रूप बणाए कग्ग, माणक मोती चोग चुगाईआ। साचे हुजरे करे हज्ज, काया काअबा इक खुलाईआ। सच दुआर वजाए नद, अनहद धुन उपजाईआ। घर अमृत देवे मदि, निझर झिरना सच झिराईआ। बजर कपाटी पत्थर जावे भज्ज, पर्दा रहिण कोई ना पाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, नूरो नूर करे रुशनाईआ। साचे गृह पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द गुरू कहे मैं दाता एक, आदि जुगादि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी जिस दी टेक, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। पीर पैगम्बर जिस दा भेख, चोला लोकमात हंढाइंदा। तिस दा रूप रंग ना रेख, निराकार साकार आपणी धार चलाइंदा। नित नवित्त करके हित जन भगतां दए संदेस, सोहणा ढोला राग सुणाइंदा। साहिब स्वामी लओ वेख, पुरख अकाल इक्को नजरी आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। सतिगुर शब्द सरबगुण भरपूर, वड्डा वड वड्याईआ। वसणहारा नेड़े दूर, हर घट रिहा समाईआ। कलयुग अन्त नाता तोड़े कूड़ो कूड़, जूठ झूठ दए मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिन्नां आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द सेव लगाईआ। शब्द सुत हो त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। लहिणा चुक्के गुरू अवतार, पीर पैगम्बर मूल झोली पाईआ। दीन मज़ब ज़ात पात मिटावणहार, वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म करे उज्जार, ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा उहला लाहीआ। एका नूर दिसे संसार, ज़हूर हर घट वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख

अकाल बेपरवाहीआ। दर उस करो निमस्कार, जिस दर दरवेश विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। मन्दिर वड़दा ओस मिनार, जिस दी छप्पर छन्न पुरख अकाल आप छुहाईआ। दरस करो उस दीदार, जिस दा नूर छुप कदे ना जाईआ। मंज़ल चढ़ वेखो घर बार, जिस गृह वसे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द गुरू कहे सुणो सब जग्ग, सृष्ट सबाई जणाइंदा। मेरा वासा उपर शाह रग, थल्ले नज़र किसे ना आइंदा। बिन सतिगुर पूरे किसे ना मिल्या चज्ज, फड़ राहे मार्ग ना कोई चलाइंदा। जगत दवारे सृष्ट सबाई रही भज्ज, पढ़यां सुणयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जो साहिब सरनाई गए लग्ग, चरण प्रीती तिन्नां निभाइंदा। हिरदे हरि का रूप हो के जावां वस, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। चार वरनां इक्को प्यार दस्स, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाइंदा। दीन मज़्ब विच कदे ना जावां फस, ज़ात पात बन्धन ना कोई रखाइंदा। इक्को नाता पुरख समरथ, दरगह साची जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत साची सेवा इक लगाइंदा। शब्द गुरू गुरु गुर बोले बोल, बोल धुर दा इक सुणाईआ। सृष्ट सबाई उठ अनभोल, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। शब्द स्वामी वसे तेरे कोल, घर घर विच डेरा लाईआ। काया गठड़ी आपणी फोल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ हथ्थ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव दस्सण खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। मिले वड्याई लोकमात, गुर शब्दी दया कमाईआ। भगत सुहेले रखे साथ, सगला संग निभाईआ। सन्त सरनाई चरण कँवल गए लाग, नाता बिधाता इक्को जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुखां सच स्नेहड़ा जाए आख, धुर दी धार आप जणाईआ। गुरमुखां लख चुरासी नालो करे वक्ख, वक्खरी आपणी कार जणाईआ। मेहरवान हो के आपणे मिलण दी देवे अक्ख, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया करके भट्ठ, सच सुच रूप दृढ़ाईआ। लेखा जाण पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश आपणे रंग रंगाईआ। सच जैकारा बोल अलख, अलख अगोचर आपणा नाम वड्याईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा खेल खलाईआ। कलयुग अन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दवारे पारब्रह्म अग्गे सारे रहे दस्स, पूरब लेखा सर्ब जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सण हाल, साहिब सतिगुर अग्गे जणाईआ। कलयुग जीव होए बेहाल, धीरज धीर ना कोई धराईआ। फिरे दरोही मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले धर्मसाल, साचा रूप नजर किसे ना आईआ। गुर का शब्द कोई ना रिहा पाल, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिम्मल रुक्ख रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख लोकमात हालत, हवाला सारे रहे

जणाईआ। श्री भगवान बिन तेरी अदालत, लेखा सके ना कोई चुकाईआ। दीनां मज़्हबां ज़ातां पातां पाई बग़ावत, शरअ करे लड़ाईआ। साचा नाम करे ना कोई सख़ावत, मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे कलयुग अन्त बैठे मुख भवाईआ। मन मनसा घर घर अदावत, अट्ठे पहर करे लड़ाईआ। बाहरों दिसे सर्ब सोहणी कूड़ी क्रिया बनावट, काया माटी पंज तत पोच पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण की गया हो, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई होई निरमोह, हकीकत हक़ ना कोई कमाईआ। गूढ़ी नींद गफ्लत विच गए सौ, साहिब सतिगुर चरण ध्यान ना कोई लगाईआ। माया कारण रहे रो, साध सन्त बैठे ढेरीआं ढाहीआ। घर प्रकाश करे ना कोई लोअ, दीप जोत ना कोई जगाईआ। आत्म परमात्म कोई सके ना छोह, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मक्के मदीने आवण हो हो, होका हक़ ना कोई जणाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे रो, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साचा मिले ना किसे ढोआ ढो, ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह इक्को तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे दस्स, पुरख अकाल अग्गे जणाईआ। साडा चले ना कोई वस, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर रहे वस, वास्ता तेरे नालों तुड़ाईआ। काम वासना सारे रहे नट्ठ, अट्ठे पहर मन होया हल्काईआ। वेख के आए तीर्थ तट, नारी पुरुष नंगे तारीआं रहे लाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले नाल वेखे मट्ठ, तेरे चरण कँवल सीस ना कोई निवाईआ। ज्ञानीआं ध्यानीआं अन्दर खुल्ही ना वेखी अक्ख, रसना जिह्वा पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर मार्ग दस्स, दस्स के आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्त निबेड़ा करे हक़, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जा के खेल वेख बाज़ीगर नट, कलयुग स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। धीरज रिहा ना किसे सति, सन्तोख बैठा मुख छुपाईआ। नाड़ बहत्तर उबली रत्त, अग्नी तत रही जलाईआ। चौदां विद्या पढ़दयां मारी गई मत्त, चौदां लोक चौदां तबक धीरज ना कोई धराईआ। मन हँकारी चुक्की अत्त, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। साचा बुरज गया ढट्ठ, कूड़ मिनार नज़री आईआ। काम वासना लेखा हट्ट, माया ममता मोह वस्त टिकाईआ। साध सन्त फड़के मणका मणका रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। सच्चा लाहा कोई ना लए खट्ट, वणज करे कूड़ लोकाईआ। लेखे लग्गे ना किसे रत्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म कीमत कोई ना पाईआ। परम पुरख परमात्म सर्ब जीआं दे हिरदे जा के वस, सुरत सवाणी दे जगाईआ। शब्द अगम्मी चोट ला सट्ट, नाम निधान हथ्थ उठाईआ। आपणे मिलण दी दे अक्ख, जो बैठे तैनूं भुलाईआ। सदी बीसवीं आत्म परमात्म दे मत्त, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। चौदां लोक गावण तेरा जस,

चौदां तबक कलमा इक्को इक सुणाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात तूं ही कीते वक्ख, अन्तिम आपे लए मिलाईआ। असीं वाक भविक्खत सृष्ट सबाई आए दस्स, कलयुग अन्त श्री भगवन्त निहकलंक वेस वटाईआ। शब्द गुरू आप समरथ, सच तेरी वड्याईआ। भरमे भुल्लयां पा नथ्थ, डोरी तन्द आपणा नाम जणाईआ। सृष्ट सबाई सुणा इक्को गाथ, साचा ढोला नाद जणाईआ। निरवैर हो के देवे साथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर मंग मंगाईआ। प्रगट हो के साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्को इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन अरदास, सीस चरण कँवल टिकाईआ। ठाकर स्वामी सर्ब गुणतास, अन्तरजामी तेरी सरनाईआ। तेरे विच्चों उपजी तेरी लख चुरासी जात, घट घट अन्तर तेरा नूर समाईआ। तेरा नाम तेरी गाथ, तेरा ढोला तेरा सोहला तेरा कलमा तेरा नग़मा, तेरी तारीफ़ करे लोकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पुरख अकाल तेरे कोल आया मुकद्दमा, अदालत हक़ नज़री आईआ। कलयुग सानूं होया सदमा, दुःख लग्गा डाहडा घाउ सह सके कोई ना राईआ। जीव जंत गुर अवतार पीर पैगम्बरां पिच्छे चले ना कदमां, मार्ग सारे गए भुलाईआ। भगत लभ्भे ना कोई विच्चों पदमां, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जीव जंत जहान होया पगला, होछी मति बणाईआ। कोई ना लेखा जाणे अगला, दरगाह साची मिले सजाईआ। किरपा करके सन्त सुहेले विच्चों कढ्ढ ला, जन भगतां हो सहाईआ। मनमुख जीव सारे छड्ड ला, कुम्भी नरक निवास टिकाईआ। सति धर्म निशाना गड्ड ला, धुर दी धार इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो तेरे हुक्म अन्दर दीन मज़्हब करके आए अड्डरा, अन्तिम लेखा दे चुकाईआ। साडीआं पूरीआं करदे सधरां, तेरे अग्गे अरज़ोईआ। जिन्हां नूं देवें आपणे नाम दी मदिरा, भर प्याला जाम प्याईआ। आप कटे उच्चीयां लम्मीआं मंजलां, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरे प्रेम दी गाए गज़ला, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। चार जुग दा पिछला कढ्ढ के छजरा, जो सीमां वंड वंडाईआ। साथों चुकाया ना जावे बदला, बदली तेरे हथ्थ रखाईआ। तूं आदि जुगादी करें अदला, आदल इक्को इक अख्वाईआ। कूड़ कूड़ी क्रिया वरला बाहरों चिट्टा रह ना जाए बगला, दुरमति मैल अन्दरों दए दुहाईआ। तेरे घर इक्को जेहा शाह कंगला, ऊँच नीच नज़र कोई ना आईआ। दो जहानां तेरा लग्गा जंगला, शब्दी डोर तन्द बंधाईआ। हुण कूड़ी क्रिया जगत अखाड़ा वेख ना दंगला, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। सब दे कटदे शरअ ज़ंजीर संगला, नाम कटार तिक्खी धार चलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे इक्को मंग मंगदा, खाली झोली अग्गे डाहीआ। बिन तेरे समां सुहञ्जणा लोकमात ना जग्ग दा, सोभावन्त ना देवे कोई वड्याईआ। हुण वेला नहीं अज पज दा, वाक भविक्खत पूरा दए कराईआ। भगत भगवान

तैनूं फिरे लभ्भदा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। हुण तेरी किरपा पैंडा मुक्के तेरी हद्द दा, तेरे मन्दिर चढ़ दरस कोए ना पाईआ। तूं कृपानिधान जुग चौकड़ी ग़रीब निमाणयां भगतां वल भज्जदा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। वेख हाल कलू कल दा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। प्यो पुत्तर इक दूजे नूं छलदा, मात पुत इक कूड़ी सेज रिहा हंढुाईआ। सृष्ट सबाई दु:ख भोगे कर्मां फल दा, धर्मां विच्चों तेरा धर्म समझ किसे ना आईआ। बेशक तेरा वासा नेहचल धाम अटल दा, हर घट तेरा नूर नज़री आईआ। जुग चौकड़ी तूं वल छल करदा, अछल अछल तेरी वड्याईआ। वेख संसार कूड़ी अग्नी बलदा, तुध बिन सके ना कोई बुझाईआ। लेखा मुके जल थल दा, समुंद सागर डूंघे वहिण ध्यान लगाईआ। तेरा रूप शाहो भूप सूरे सरबँग दा, सच सुल्तान तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सृष्ट सबाई वेख घर, शब्द सतिगुर अन्दर वड़, महल अटल उच्च मुनारे खड़, घर खिड़की कुण्डा बंद किवाड़ी सब दी दे खुलाईआ। तेरी सरनाई तेरे डिगन दड़, लेखा चुके चोटी जड़, तेरा नाउँ इका जाण पढ़, तेरे प्रेम प्यार अन्दर जावण मर, मरयां विच्चों मरन जन्म विच्चों जन्म लैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा सुहञ्जणा वर, सृष्ट सबाई जीव जंत साध सन्त वरन बरन सब तेरा इष्ट इक मनाईआ।

* २३ माघ २०२० बिक्रमी सरदारा सिँघ दे घर कला नौर शहर ज़िला गुरदासपुर *

सतिगुर शब्द पूरी मंग, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों अन्त कराइंदा। साहिब सतिगुर दे अनन्द, सच समग्री झोली पाइंदा। धुर संदेसा सूरा सरबँग, नर निरँकारा आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी जो वंडी वंड, दीन मज़्हब आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख सब दी नंगी कंड, सिर हथ्थ ना कोई रखाइंदा। कूड़ी क्रिया पावण डण्ड, सच धर्म ना कोई जणाइंदा। मन वासना कीती खण्ड खण्ड, बुद्धी मेल ना कोई मिलाइंदा। आत्म सब दी होई रंड, कन्त सुहागी संग ना कोई रखाइंदा। घर प्रकाश ना चढ़या चन्द, तन अन्धेर ना कोई मिटाइंदा। काया चोली ना सके रंग, दुरमति मैल ना कोई धवाइंदा। आत्म परमात्म ढोला गाए कोई ना छन्द, सहिंसा रोग ना कोई चुकाइंदा। आसा तृष्ना माया ममता कूड़ी क्रिया खावण गंद, अमृत रस जाम ना कोई प्याइंदा। फिरी दुहाई विच वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल कलयुग धार, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। नेत्र रोवे खाणी चार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। चारे बाणी धाहां रही मार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा हाल सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर

नाता तोड़ गए संसार, साचा संग नज़र कोई ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन हाहाकार, अञ्जील कुरान होका दे दे रहे सुणाईआ। चारों कुण्ट दिसे धूंआँधार, साचा नूर ना कोई रुशनाईआ। पुरख अकाल अबिनाशी घट घट वासी नज़र ना आए निरगुण यार, सरगुण सज्जण सच ना कोई मिलाईआ। सच संदेसा देवे कोई ना आण, मन्दिर अन्दर काया राग ना कोए अलाईआ। धुर दा लेखा सके ना कोई विचार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी सुत रिहा वखाईआ। कलयुग वेख जगत अन्धेरा, जागरत जोत ना कोए रुशनाइंदा। किसे ना सुझे सञ्झ सवेरा, निर्मल नूर ना कोई चमकाइंदा। साध सन्त बन्ने कोई ना बेड़ा, शौह दरया पार ना कोई कराइंदा। लख चुरासी जीव जंत जुड़या दस्से केहड़ा, गृह मन्दिर अन्दर सोभा सच ना कोई पाइंदा। पुरख अकाल किसे नज़र ना आए नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध ना कोई मुकाइंदा। पंज विकारा घर घर छिड़या झेड़ा, झगड़ा अग्गे हो ना कोई मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए बथेरा, कागज़ कलम शाही रो रो सर्ब सुणाइंदा । कोई ना कहे प्रभू मैं तेरा, जगत नाता सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप जणाइंदा। शब्द सुत उठ वेख कर ध्यान, कर किरपा रिहा जणाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ला सर्ब ज्ञान, गुर का शब्द खोज कोए ना पाईआ। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नहावण नहान, सच सरोवर तारी कोए ना लाईआ। रसना जिह्वा बणया पीण खाण, अमृत रस निझर झिरना ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत रीती रिहा वखाईआ। शब्द गुर वेख जगत रीती, रीतीवान दया कमाइंदा। खाली दिसे मन्दिर मसीती, शिवदुआला मठ्ठ सोभा कोए ना पाइंदा। गुरुदुआर मिले ना पवण ठांडी सीती, अग्नी तत ना कोई बुझाइंदा। एका रूप नज़र ना आए हस्त कीटी, ऊँच नीच झगड़ा सर्ब जणाइंदा। सारे गाउँदे पढ़दे कहाणी पिछली बीती, अगला राह घर दा भेव ना कोई सुणाइंदा। सिमरत वेद पुराण कहिण पतित पनीती, पतित पावन बेपरवाह इक्को इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी जिस दी निक्की जही बगीची, गुर अवतार पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम भेव चुकाइंदा। शब्द गुर वेखे नैण, नेत्र अक्ख नज़र ना आईआ। अल्फ़ ये की कुछ कहिण, कवण मिले जगत वड्याईआ। पीर पैगम्बर की कुछ आए देण, वस्त अमोलक की वरताईआ। गुर अवतार किस मन्दिर आए रहिण, कवण दवारा सोभा पाईआ। शास्त्र सिमरत किस दवारे ठांडे हो के बहिण, सांतक सति रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, दर दरवाज़ा

इक खुल्हाईआ। कलयुग खुल्लूया वेख दरवाज़ा, धुरदरगाही भेव चुकाइंदा। भूपत भूप राजन राजा, शहिनशाह हुक्म सुणाइंदा। अस्व घोड़ा धुर दा ताजा, शाहसवारा वेस वटाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस ने साजन साजा, घाड़त घड़ रूप वटाइंदा। दो जहानां फिरे भाजा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी रचनहारा काजा, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। शब्द अगम्मी मारे वाजा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां होवे दासी दासा, बण सेवक सेव आप कमाइंदा। अन्तिम वेखे खेल तमाशा, निरवैर निरगुण निराकार जोत रुशनाइंदा। जोत सरूपी जोत प्रकाशा, शब्दी डंक वजाइंदा। गुरमुखां करे पूरी आसा, कलयुग कूड़ी क्रिया दूर कराइंदा। लख चुरासी करे बंद खुलासा, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। नाम जपाए स्वास स्वासा, पवण पवणां विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप बदलाइंदा। साची धार करे बदली, बदला दो जहान चुकाईआ। पुरख अकाल इक्को अदली, सच अदालत नाम इक लगाईआ। गुरमुख पुचाए आपणी मज़ली, पन्ध दूर दुराडा दए चुकाईआ। फ़ज़ल करे वड दाता फ़ज़ली, मेहरवान रहमत इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सदा वड्याईआ। कलयुग वेख अन्त अनोखा, पुरख अकाल दया कमाईआ। सृष्ट सबाई करदी वेखी धोखा, साचा सज्जण रूप ना कोई वखाईआ। जन भगतां किरपा करके दस्से मार्ग सौखा, धुर संदेसा राग सुणाईआ। लख चुरासी मानस जन्म विच्चों इक्को मौका, पुरख अकाल झोली पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ भगत सुहाए जगत सुहाए कोठा, घर विच घर डेरा लाईआ। कर प्रकाश निरगुण जोता, दीपक दीआ इक टिकाईआ। राग नाद गाए बिन ताल तलवाड़ श्लोका, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। जिन्हां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिल्या तिन्हां लोड़ रहे ना पढ़ना पोथा, कागज़ वेख ना खुशी मनाईआ। प्रभ दर्शन दा रखण शौंका, नेत्र नैण नैण उठाईआ। बिहबल हो के उच्ची कूक सुणावण होका, सृष्ट सबाई देण समझाईआ। आओ वेखो प्रभ दी नौका, नईआ नाम रिहा चलाईआ। गुरमुख विरला ओथे पहुंचा, जिस देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी जीव जहान बिन हरि नामे खाली गयां औंता, पई कूड़ी जगत दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, जन साचे लए जगाईआ। कलयुग अन्तिम खोल्हे जाग, जन भगतां बूझ बुझाइंदा। अन्तर आत्म दे वैराग, धुर दी धार वखाइंदा। सच सुणाए शब्द नाद, तन नगारे चोट लगाइंदा। भेव चुकाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी कल प्रगटाइंदा। लेखा जाणे काया माटी चाम, ततव तत खोज खुजाइंदा। वाहिद लाशरीक इक्को गॉड, परम पुरख अख्वाइंदा। जन भगतां करे धुर दा लाड, सूफ़ी गोदी आप बहाइंदा। एथे ओथे रखे लाज, दो जहानां सोभा पाइंदा। अन्दर वड

४६३ १६

के काया पौड़े चढ़ के शब्द अग्गे खोल्हे राज़, राज़क रहीम दया कमाइंदा। लेखा चुक्के वुज़ू सजदा निमाज़, नवाज़िश आपणी इक कराइंदा। जन भगतां बण मुहताज, मुहब्बत आपणे नाल बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे अक्ख खुल्हाइंदा। हरिजन खोल्ह आपणी अक्ख, बिन अक्खरां अक्खर दए जणाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, पारखू आपणा पड़दा लाहीआ। हिरदे अन्दर अन्तिम वस, परमात्म हो सहाईआ। तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुखी धार बणाईआ। गढ़ हँकारी बुरज जाए ढट्ठ, माया ममता डेरा ढाहीआ। कूड़ी क्रिया होवे भट्ठ, लम्बू जोती इक्को लाईआ। अन्तर आत्म देवे रस, रस रसीआ बेपरवाहीआ। जन भगतां अन्तर आपे हस्स, खुशीआं राग सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोई ना आईआ। भगत भगवान मेला इक इकट्ठ, घर साचे वज्जे वधाईआ। सोहँ रूप इक दूजे दा गावन जस, द्वैती रूप ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पत लए रख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्त भगत भगवन्त, भावी भय भउ सर्ब चुकाईआ। नाम जणा मणीआ मंत, मन वासना डेरा ढाहीआ। चोली चाढ़ रंग बसन्त, काया दए वड्याईआ। बोध अगाध बणके पंडत, साची विद्या दए समझाईआ। लेख चुका जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। मानस जन्म बणा बणत, साचा घाड़त लए घड़ाईआ। कर मिलावा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। गुरमुख मेल साचे सन्त, जन भगतां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शब्द गुरदेव अलख अभेव अन्तर आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म नेहकर्म आपणी करनी करता दए समझाईआ।

* २३ माघ २०२० बिक्रमी बीबी जीतो दे घर राम पुरा ज़िला गुरदासपुर *

भगत गृह सदा अटल, आदि जुगादि सोभा पाइंदा। दो जहानां उपर महल्ल, श्री भगवान आप सुहाइंदा। निर्मल दीपक रिहा बल, जोती नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जन भगतां वेख वखाइंदा। जगत मुनारा सब ते उच्चा, ऊँचो ऊँच दए वड्याईआ। जिस अन्दर गुरमुख गुरसिख सोहणा सुता, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। गृह मन्दिर अन्दर इक्को नाम भुजा, कूड़ी क्रिया नेड़ ना आईआ। पुरख अबिनाशी सद भगतां उपर तुट्ठा, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त होए सहाईआ। भगत दवारा सोहणा रंग, हरि घाड़त आप घड़ाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, हरि सोहणी बणत बणाइंदा। अनहद शब्द नाद धुन मृदंग,

धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। सच सरोवर धारा गंग, निझर झिरना इक झिराइंदा। कूड़ी क्रिया ढाह कंध, सच महिराब इक सुहाइंदा। सच गृह बहि के परम पुरख परमात्म माणे अनन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। भगत दुआर कुल्ली कक्ख, प्रभ वेख खुशी मनाईआ। निरगुण रूप कर प्रतख, साख्यात दरस वखाईआ । लख चुरासी विच्चों करके वक्ख, सोहणी आपणी बणत बणाईआ। धुर दा मार्ग देवे दस्स, अन्तर आत्म करे पढ़ाईआ। नाम वणजारा खोल्ह हट्ट, साची वस्त इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जन भगतां खुशी वखाईआ। भगत दवारा सोहणा मन्दिर, नूरी जोत नूर रुशनाईआ। भाग लगाए साचे अन्दर, घर प्रीतम नज़री आईआ । होया प्रकाश डूंघी कन्दर, चारों कुण्ट खुशी वखाईआ। मन वासना दहि दिशा नट्ठे बन्दर, भज्जे वाहो दाहीआ। बजर कपाटी खुल्हे जिन्दर, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। शरअ शरायती रहे ना कोई संगल, आसा तृष्ना बन्दन कोई ना पाईआ। अट्ठे पहर गीत गोबिन्द मंगल, इक्को राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ । भगत दवारा नीकन नीका, निवण-सु-अक्खर इक समझाइंदा। जिस दा रस उत्तम मीठा, बिन गुरमुखां हथ्थ किसे ना आइंदा । लख चुरासी साध सन्त जीव जंत कौड़ा रीठा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब कुरलाइंदा। साहिब सतिगुर किसे ना मिल्या मीता, घर सज्जण दरस ना कोई पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल वखाइंदा। जन भगत गृह वेखण दरवाज़ा, दीन दयाल दया कमाईआ। आदि जुगादि ग़रीब निवाजा, निर्धन सरधन रिहा तराईआ । शहिनशाह शाहो वड राजन राजा, नीकन नीका आपणा फेरा पाईआ। गुरमुखां देवे नाम निधान धुर दी दाता, अनमुलड़ी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन वड्याई लोकमात, हरि करता आप रखाइंदा। सच प्रीती देवे नात, चरण कँवल चित लाइंदा। आत्म परमात्म धुर दी गाथ, साचा ढोला आप सुणाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, जोती नूर चन्द चमकाइंदा। लहिणा मुक्के ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदाउ। सर्ब जीआं घट वसे साथ, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसे घर अथाह, सो सतिगुर आप वसाईआ। हरिमन्दिर सुहञ्जणा दए सुहा, अगम्मी जड़त जुड़ाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा दस्स के गए राह, भगत कूक कूक सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं कैहन्दे गए नूरी खुदा, जलवा ज़ाहर ज़हूर रुशनाईआ। नाम मन्त्र जिस दा गए जपा, अक्खरां नाल कर पढ़ाईआ। सो साहिब श्री भगवान जन भगतां सिध्धा मिले आ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाईआ। निरगुण

निरवैर हो बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। पार कराए जल थल अस्गाह, डूंघी भँवरी ना कोई भवाईआ। साचा मन्दिर दए वखा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन मन्दिर सदा अनमुल्ला, दो जहान कीमत कोई ना पाइंदा। जुग चौकड़ी सदा खुल्ला, अन्दर बंद ना कोई वखाइंदा। अबिनाशी करता नर नरायण दर दरवेश आवे भुल्ला, रूप अनूप वटाइंदा। भाग लगाए गुरमुख कुल्ला, जिस कुल्ली अन्दर हरिजन सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र करे भगवान, भगतन देवणहार वड्याईआ । बिन अक्खरां दे ज्ञान, शब्दी धार इक समझाईआ। आत्म परमात्म मिले आण, लख चुरासी झेड़ा दए चुकाईआ। मन्दिर सुहाए सच मकान, छप्पर छन्न सोभा पाईआ। चार दीवारा करे परवान, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारन को प्रभ एक स्वामी, हरि करता करतार अख्वाईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट वेख वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जिस दी खाणी बाणी, धुर दा ढोला राग अलाईआ। अठसठ तीर्थ सर सरोवर जिस दा ठंडा पाणी, सो अमृत इक मेघ बरसाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी चारे खाणी, उत्भुज सेत्ज अण्डज जेरज राह चलाईआ।

सो पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां देवे इक्को पद निरबाणी, निरबाण पद आप समझाईआ। लख चुरासी जीव रसना जिह्वा पढ़ सरवन सुणन कहाणी, नेत्र नैण दरस कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए ओह घर, जिस घर जन्म मरन दा चुक्के डर, राए धर्म ना लए फड़, लाड़ी मौत करे ना अन्त कुड़माईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा शब्दी तूरा जोती नूरा, निरगुण निरगुण निराकार निरँकार सुरती शब्दी जोड़ कर, अन्तिम लै के जाए आपणे घर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ।

*** २३ माघ २०२० बिक्रमी तेजा सिँघ शरीर छडौण दे समें लिख्त पिण्ड अलड़भिंडी ***

दूर वसदा आया नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। कट्ठे होए साचे वेहड़े, पूरब जोड़ जुड़ाईआ। ठठयार मारके आया फेरे, भज्जा वाहो दाहीआ। पिछला लेखा रिहा नबेड़े, हरि करता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। वेख ठठयार तेरा पिछला कुक्कड़, जिस दी करे सच वड्याईआ। जिहड़ा फड़या लालो फुफ्फड़, आपणी गोद उठाईआ। बणाउणा चाहुंदे नानक टुक्कर, भोजन रूप वटाईआ। रो पुकार उस मंगया उतर,

किस बिध मेरी भेंट चढ़ाईआ। मैं बे ज़बान ना जावां मुकर, पल्लू सकां ना कोई छुडाईआ। धन भाग मैं करां शुकर, जे मौत तों पहलां मैनूं नानक दर्शन दित्ता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल जणाईआ। कुकड़ कहे मेरा कुरलाउणा, साहिब सतिगुर भाइंदा। उस दे बिना ना किसे बचाउणा, बेड़ा पार ना कोई लँघाइंदा। मैं इक्को वार मंग मंगाउणा, साची आस रखाइंदा। जे लालो सतिगुर नानक प्रसाद छकाउणा, मेरा पर्चा कोई नहीं पाइंदा। एसे खातर सी मैं दर्शन पाउणा, सो दर्शन पा खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल तेरे हथ्थ वखाइंदा। नानक अन्तर मार ध्यान, बण अगम्मा वेख वखाईआ। वेखो किडा एहनूं ज्ञान, अन्दरे अन्दर रिहा ध्याईआ। मेरी सार ना पावे कोई इनशान, बिन लालो समझ किसे ना आईआ। बेशक एह लक्कड़हारा तरखाण, तेसा कुहाढ़ा आपणे अंग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर दृष्टी नानक एक इक्को दृढ़ाईआ। अन्तिम दृष्टी नानक पा के, शब्दी धार जणाइंदा। वेख मुरगे ध्यान लगा के, मेहरवान मुरदे फेर जवाइंदा। तेरा लेखा लग्गे आ के, तेरी फरियाद आपणी झोली पाइंदा। नाता लालो नाल जाए बणा के, सोहणा बंस सुहाइंदा। अग्गों कुकड़ किहा जिस मैनूं पालया प्रीती ला के, सो ठठयारा इस दे पिच्छे डेरा लाइंदा। जिस कौली थाल लयांदा घड़ा के, सोहणी बणत बणाइंदा। मैं इक सवाल मंगां झोली डाह के। कलगे वाले आपणी कल्गी तेरे चरण निवा के, साडा संग ना जाई छुडा के, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची बणत आप बणा के। नानक किहा कर प्यार, तेरी बांग मोहे भाईआ। तेरी अवाज़ विच इक राज़, जिहड़ी समझ सके कोई ना राईआ। उस दी सारे करन तलाश, खोजे जगत लोकाईआ। उस दा खेल तमाश, समझ किसे ना आईआ। साचे बच्चे तैनूं दए शाबाश, जिहड़ा आपणा संग रिहा निभाईआ। तेरी पूरी करां आस, वेला वक्त इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सुण के कुकड़ प्या हस्स, आपणी चुंज हिलाईआ। अगला मार्ग मैनूं दस्स, सब कुछ दे समझाईआ। नानक किहा मेरे पुरख अकाल दे सब कुछ वस्स, मैं उसे दी सेव कमाईआ। तुहाड्डा बणे सोहणा साथ, साचा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वड्याईआ। सुण सतिगुर मेहरवान गोसाईं तेरा लेखा लेख धुर, तेरे हथ्थ वड वड्याईआ। कौण वेला जाए बौहड़, आपणा दरस दिखाईआ। नानक किहा पुरख अकाल तुहाढ्ढी रखे लोड़, मैं ओसे दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला वक्त दए सुहाईआ। सुण के कुकड़ होया चुप, चुप चुपीता ध्यान लगाईआ। मैं की दस्सां गुंग मुख, शब्दी राग धुन ना

कोई उपजाईआ। जे कोई मैनूं लवे पुछ, मैं सकां की समझाईआ। लालो दिसे मनुख, पंज तत चोला रिहा हंढुाईआ। मैनूं एह वड्डा दुःख, मानस देही मोहे हथ्थ ना आईआ। नानक किहा हुण पड़दा नहीं लुक, तैनूं सच दयां समझाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को प्यो दे घर जम्मो पुत, नाता जुड़े भाई भाईआ। लालो प्रभू उजल करे मुख, देवे माण वड्याईआ। लालो सब दीआं सुखणा लए सुख, आपणी झोली डाहीआ। श्री भगवान लए पुछ, अबिनाशी करता फेरा पाईआ। तुहाढ्ढे प्रेम खातर सच्ची राख सच दवारे रखे कुछ, आपणे दर टिकाईआ। वक्त वेले सिर चोरी चोरी ल्याए चुक, समझ किसे ना आईआ। ना कोई धड़ी सेर ना लाए मुठ, चुटकी चरणा हेठ दबाईआ। आ के फेर होवे खुश, सारा हाल दए समझाईआ। तैनूं अन्दर वड़के देवे चुक, इसारे नाल समझाईआ। तूं फेर मुखों बोल के कहिणा मुख, मैं तेरी ओट तकाईआ। मैनूं आपणी गोदी चुक, जिस गोदी विच देवें माण वड्याईआ। मैं घरदयां कोलों जाणा रुठ, सद तेरे चरणा विच समाईआ। श्री भगवान किहा मैं करां सब कुछ, हौली हौली बणत बणाईआ। जो तुहाढ्ढे संगी गुजरात बैठे लुक, ओहनां फड़के पिच्छों नाल लै के आईआ। जिवें मरन तों पहलों नानक दा वेख्या मुख, ओसे तरां पुरख अकाल तेरे मरन तो पहला तेरा मुख वेखण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ। की तूं मेरा मुख वेखेंगा। संगी साथी सारे भेजेंगा। कोल मेरे आ के खड़ेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मैनूं आपणी गोद लपेटेंगा। हां, मैं दया कमवांगा। जरूर तैनूं संग रखवांगा। जंगल बेला काना काही वेख दूर, दुराडा पन्ध मुकवांगा। प्रेम प्रीती अन्दर हो मजबूर, विच गुजरात फेरा पावांगा। ओथे जा के फेर दस्सां ज़रूर, विछड़े मेल मिलवांगा। हाज़र हो के हरि हज़ूर, सोहणी बणत बणावांगा। पिछले करके माफ कसूर, सिर आपणा हथ्थ टिकवांगा। जिहड़ी खाक लयांदी धूढ़, तेरे मस्तक टिक्का लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमावांगा। साची करनी करे करतार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लहिणा देणा रिहा उतार, कर्ज़ा मकरूज ना कोई रखाईआ। वेखे विगसे पावे सार, देवणहार सच्ची वड्याईआ। बहिश्त जंनत दोहां तों करके बाहर, चरण कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा तेरी मंग, साहिब सतिगुर आप जणाइंदा। जिस वेले बग़ल विच होइउँ तंग, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। मेरे भज्जदे दिसण अंग, दुःख दर्द ना कोई वंडाइंदा। मैनूं भुक्ख सताए मैं पावां डण्ड, हाल बेहाल कूक जणाइंदा। ओस वेले लालो लंगर विच्चों पक्के चोलां दी मुठ्ठी मेरी आई वंड, मेरे अग्गे फुफड़ चोगा पाइंदा। उस नूं खा के मैनूं आया इक

अनन्द, जिस दा स्वाद लोकमात ना कोई समझाइंदा। मैं खुशीआं विच गाया छन्द, सतिगुर तेरे बिना आसा मनसा पूर ना कोई कराइंदा। चौल खांदा खांदा मैं थोड़ा अग्गे गया लँघ, ओथे लालो कड़छा लै के भज्जा जाइंदा। दाणा दाल दाल दाणा कड़छी नाल विच्चों बाहर डिगया किसे ढंग, मैं वेख खुशी मनाइंदा। मैं झट्ट पट उहनूं खा के ल्या खंघ, तू ही तूं राग अलाइंदा। साहिब सतिगुर होवे बख्शंद, भुख्यां भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। चावल दाल अन्दर वड़, मैनूं रही हिलाईआ। मूर्ख ओस दा नाम पढ़, जिस तेरी बणत बणाईआ। मैं एह सुण के गया डर, कौण विच्चों रिहा समझाईआ। झट्ट पट मेरी संघी लई फड़, हौली जही हिलाईआ। नानक सतिगुर प्यार कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा यार, एहो नाम अलाईआ। मैं सुण के चरण कीती निमस्कार, मस्तक धूढ़ी टिक्का खाक रमाईआ। मैं पापी गुनाहगार, लालो भण्डारे दी सार कोई ना पाईआ। जे दूजी वार मिले विच संसार, फिर खुशीआं नाल मंगाईआ। नानक किहा हुण एह नहीं होणा विहार, प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। दूजी वार आवें विच संसार, मानस रूप वटाईआ। तेरा लेखा देवे निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। तेरे पिच्छे हरिसंगत दयां खवाल, रिध्धा पक्का आपणे लेखे पाईआ। जे कोई पुच्छे प्रभू एह की हाल, पहलों देवे ना किसे समझाईआ। लालो नूं कहे तुसीं बचन मन्नो खुशीआं नाल, ओथे आ के सब कुछ दए बताईआ। तुहाडे कोलों कुछ नहीं छुपाउणा, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। पिछला सज्जण साक सर्ब इकट्ठा कराउणा, वेखो लाल चन्द होरी बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सुण के बात बोले चौल, चावल रहे सुणाईआ। की प्रभ सानूं माण देवें उपर धौल, धरनी सोभा पाईआ। नानक किहा प्रभ मेरे दा कोल, इकरार आपणे नाल रखाईआ। मिणती करे ना किसे नाल कौल, अगणत आपणी धार चलाईआ। हरिसंगत तोले इस दा तोल, कीमत करता दए चुकाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों परम पुरख ने जन भगतां नूं वन्डया वड्डा बोहल, जो एथे ओथे मुक्क कदे ना जाईआ। जिस नूं कैहन्दे मूर्ख अनभोल, वेखो उहनूं मिले वड्याईआ। वेखो उस ने किहा मैं वसणा तेरे कोल, एथे रहिणा चंगा ना लग्गे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। दाल कहे मेरी कौण सुणे दिल दी, दिलबर नज़र कोई ना आइंदा। मैं तत्ते पाणी विच हिलदी, मैनूं चक्खण कोई ना पाइंदा। मेरी छिल मैनूं छिलदी, अन्तर मेरा मेरे विच कुरलाइंदा। एह साहिब मेरे दिल दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ । दाल दाणा आया नानक हेठ दन्द, कोड़कू रूप वटाईआ। उन फड़ के उंगली वेख्या नाल अनन्द, नेत्र दृष्टी

पाईआ। जे तूं कच्चा हुन्दा अन्दर जादों लँघ, विश्टा रूप समाईआ। ओसे वेले दाणे मंगी मंग, अग्गे झोली डाहीआ। तूं दातार सद बख्शंद, बख्शणहार अख्वाईआ। मेरे साथीआं दी मेरे नाल गंड, जो आपणा आप अग्नी भेंट गए चढ़ाईआ। नानक किहा तुहाढ्ढी आ के जणावे वंड, सच सच्च दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। सब दा लहिणा चुकाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण रूप आए जहान, जोती जामा वेस वटाइंदा। लहिणा देणा जाणे लालो तरखाण, जिस दे घर दी आपणी बणत बणाइंदा। सूरबीर दा इक्की पकवान, साची इक्की आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे लाइंदा। तेरा लेखा लेखे जाए लग्ग, देवे माण वड्याईआ। बेशक तूं सड़ें अग्नी अग्ग, उबलदी देग डेरा लाईआ। तैनूं खा पी सारे रज्ज, तेरा शुकर ना कोई मन्नाईआ। जे वधें कूड़े किरकट देण सुट्ट, तेरी कीमत कोई ना पाईआ। इक दाणा नानक विकया हट्ट, जिस दा लेखा दए बणाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्त हो प्रगट, वेख वखाए शहिनशाहीआ। चौलां नाल मैनूं रख, सोहणी बणत बणाईआ। शब्दी रूप बणे भात, लेखा लेख दए वड्याईआ। हरिसंगत देवे बांट, खुशीआं नाल खवाईआ। जिन्हां उंगला नाल तैनूं ल्या चाट, सो उंगलां प्रभ चरण छूह छूह खुशी मन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। चावल दाल कहे संगत पकवान, मिले माण वड्याईआ। जिस वेले सानूं खाण, खा खा खुशीआं रंग चढ़ाईआ। उधर कुकड़ तजे प्राण, उधर शुकर करे खुदाईआ। उधर आ जाए श्री भगवान, लेखा लेखे विच रखाईआ। सारा कुटम्ब कट्ठा करे आण, इक्को अगम्मी रीत चलाईआ। वेखो कैहन्दा लहिणा इस लालो तरखाण, जो बंस सरबंस पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई लेखा पत्र, सब कुछ आप वखाइंदा। बीज बीज्या पूरब वत्तर, पत डाहली फुल महकाइंदा। धुर संजोगी बणा के पुत्तर, सच्चा संग निभाइंदा। जो इधर उधर गए निखड़, तिन्हां फड़के जोड़ जुड़ाइंदा। अज्ज सारे अकट्ठे हो के उहनूं आए मिलण, जो पिछले जन्म ध्यान लगाइंदा। बेशक तेजा सिँघ बणया रिहा ढिलड़, आपणी समझ ना कोई रखाइंदा। कूड़ी क्रिया फस्सया रिहा जिलन, चिकड़ गारा धो साफ ना कोई कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाइंदा। करनी करन करे कारण, करते हथ्थ वड्याईआ। लोकां कहिणा घर गुरू आया मारन, मारन पिच्छे मुड़के फेरा पाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आया पैज संवारन, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्तर आत्म सुण पुकारन, जो रो रो दिती सुणाईआ। तेरे दर रहिवां बण गंवारन, आपणी रखां ना माण वड्याईआ। तकड़ा हो के जावां

५०१

१६

हल वाहवन, सोहणी सेव कमाईआ। हुक्का डाहवां तेरे सामृण, नड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्दरों अन्दर तेरा विछोड़ा लग्गा दुःख सतावण, सुत्ती कला जगाईआ। अन्त फड़या तेरा दामन, पल्लू गंढ वखाईआ। धुर दा बण के जा जामन, ज़ामनी इक निभाईआ। तेरा नाउँ पतित पावन, पापियां लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। सतिगुर हो दयाल, खुशीआं नाल जणाईआ। तूं तकड़ा हो सुरत संभाल, मैं मुड़ के लैवण आईआ। तेरे नाल करां इकरार, पूरा कोल निभाईआ। पहलो जेठूवाल देणा वखाल, भगत दवारा सोभा पाईआ। फिर हरिसंगत बाहर दयां बिठाल, इशारे नाल समझाईआ। किशन सिँघ बणा दलाल, इक आवाज़ सुणाईआ। तेजा सिँघ आ वेख दस्स आपणा हाल, अहिवाल दे जणाईआ। श्री भगवान किरपा कर मार ध्यान, नेत्र नैण मिलाईआ। नाता तुट गया काल महाकाल, खहिड़ा छुट्टा जगत लोकाईआ। निक्की बच्ची चरणी किहा बापू मेरे बापू नूं लै जा नाल, सर्दल विच खलो के नेत्र नैणां नीर वहाईआ। खुशीआं नाल सिर दे के प्यार, हस्स के किहा तेरी आसा पूर कराईआ। एसे कारण गुजरात विच्चों साथी लयांदे भाल, पिछले लए उठाईआ। कोई विछड़या रहे ना सज्जण यार, सारे वेखीं चाईं चाईंआ। जिस दा पिछला लहिणा रिहा उतार, देवणहार गोसाईंआ। जन्म मरन तों करके बाहर, आपणे घर वसाईआ। एस प्रभू दा की कोई देवे उधार, भेंटा की चढ़ाईआ। जिहड़ा चोलां दे इक दाणे पिच्छे परिवार देवे तार, धुर दी धार दए समझाईआ। जिथ्थे वेखण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। करे खुशीआं नाल विहार, ग़मी नेड़ कोई ना आईआ। पहली वार बचन दित्ता रात सवां तेरे नाल, क्यों सारे उस तों बैठे मन विच शरमाईआ। एह गंदा ए कमला ए बुरयार, समझ ना कोई वड्याईआ। साहिब सतिगुर सदा ओहनां नाल करे प्यार, जिन्हां जगत नेत्र वेखण ना पाईआ। फड़ के चिकड़ गारे भरयां नाल गोदी लए उठाल, विश्टा वेख मुख ना कदे भवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत वछल दयाल, भगवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा देवे चाईं चाईंआ। कुक्कड़ फुफ्फड़ बचन सुण के, हासी संगत उडाईआ। धुर दरबारों जो आया मुड़ के, वस्त अमोलक ख़ाक नाल लिआईआ। पिछला लेखा नाल आया तुर के, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर आपणी नज़र उठाईआ। मेहर अन्दर करे बख्शीश, रहमत आप कराइंदा। साहिब सतिगुर हरि जगदीश, जगदीश्र धार चलाइंदा। लेखे लग्गा धड़ सीस, पंज तत आपणी झोली पाइंदा। करनहारा नीचों ऊँच, निमाणयां निताणयां आपणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी दस्से निरँकार,

धुर दा बचन जणाईआ। चवी माघ घर घर लंगर होवे त्यार, गुरमुखां वंड वंड के दए छकाईआ। पिछला चेता करो याद, जो खुशीआं नाल समझाईआ। प्रभ दा बचन वड्डा डूंघां राज़, जिस दा अन्त किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल ठीक ठीक रिहा वरताईआ। चवी माघ ना मनाउणा सोग, चिन्ता ग़मी ना कोई रखाईआ। घर घर पकवान पक्के गुरमुख चुगण चोग, पुरख अकाल दर दर भोग लगाईआ। एह वेला फिर नहीं आउणा रोज़, जुग चौकड़ी बैठे ध्यान लगाईआ। मुरदयां पिच्छों किसे ना वखौणी खोज, मौजूदा हो के दया कमाईआ। जे कोई समझ विच ल्याए सोच, सोच समझ सके कोई ना राईआ। जिस खेल नूं विष्न ब्रह्मा शिव रहे लोच, बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। घर घर पक्के गुरू का लंगर, सतिगुर दए वड्याईआ। बिधी नाल भण्डारे भरे अन्दर, अतोट अतुट रखाईआ। दूर करे भुक्ख नंगत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। इस विच्चों रस आवे परमानंदन, परम पुरख होवे सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सोहणी बणत रिहा बणाईआ। सोहणी बणत चावल दाल, हरि जू वंड वंडाईआ। खा खा वेखण शाह कंगाल, खुशीआं रंग वखाईआ। जिन्हां विच्चों भेंटा होया प्रभ नूं थाल, जिस विच दो जहानां नालों वड्डी वस्तू नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फोले प्रभ वेखे एह किथों आंदे भाल, किस बिध पकवान ल्या बणाईआ। जां गौर नाल तक्क के वेख्या नज़री आया गुरमुखां प्यार, जिस दी बहार नज़र किसे ना आईआ। दाणा दाणा करे पुकार, किरपा कर सिरजणहार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। धन्न भाग सानूं विछड़यां नूं इकट्ठे करके हरिसंगत दित्ता खवाल, साडा लहिणा मूल चुकाईआ। साडे पिच्छे ग़रीब निमाणा कोझा कमला गुरमुख गुरसिख फड़ बांहों आपणी गोदी ल्या सवाल, सोया फिर ना कोए जगाईआ। बेशक उहदे निके निके बाल, उहनां आपणी छाती लाईआ। पुत्रां दी पुत्रां वाग करे संभाल, धीआं नूं मापा हो के नज़री आईआ। नारी दे सिर ते दए प्यार, सच सपुत्री लए बणाईआ। एह सब कुछ लालो दे अख्त्यार, जो हुक्म नाल रिहा मनाईआ। उधरों आया चन्द लाल, नाल लै के आपणी माईआ। आपणे भाई नूं पहले दयां वखाल, हरि जू सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। श्री भगवान किहा वेखो जो मेरी सेवा लाई मैं करां ज़रूर कमाल, अभुल हो के भुल्ल कदे ना जाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह सच्ची धर्मसाल, गुरमुख लै के जावां चाईं चाईंआ। एहनां अक्खां नाल करावां वसाल, नेत्र नैणां नाल मिलाईआ। इक्को हुक्का सच्चे नाम दा दयां प्याल, जिस दा गट्टां नेजा आपणे हथ्थ टिकाईआ। पाणी मुक्के ना विच्चों अग्नी कोला सके ना कोई बुझाईआ। विच रोड़ा रखां संभाल, ईंदन रूप नज़री आईआ। जिस वेले सूटा खिच्चे मेरा लाल, नाम खुमारी

दयां चढ़ाईआ । एहो मंग मंगी मैं पीवां तेरे विच दरबार, सत्त अठ्ठ नौ माघ ख़ुशीआं ध्यान लगाईआ। पन्द्रां माघ फिर कराए याद, जिस वेले मस्तक उते उंगली गया लाईआ। तेरी ज़रूर सुणे फरयाद, नाल लै के जावे सच्चा माहीआ । तेरा हुक्का तैनूं देवे दाद, तेरे हथ्थ देवे फड़ाईआ। उह संगत सारी नूं कहे मार अवाज़, मैं इस दे कोलों मंग मंगाईआ । इक्को एह मेरे नाल करदा लाड, तुसीं क्यों मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ । चावल दाल करन सलाह, अकठ्ठे हो के मता पकाईआ। की कीता बेपरवाह, आपणी कार कमाईआ। रिंन पक्का संगत खवा, साडा निशान मिटाईआ। साडा दिसे ना कोई गवाह, जिहड़ा सुहादत दए गवाहीआ। अबिनाशी करता इक दाणा सिर विच ल्या लुका, लुकाउँदा नज़र ना आईआ। हरिसंगत साम्हणे आपणे मुख विच लए पा, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ । रविदास चुमारा कलम शाही सही देवे पा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रभ दा वही ख़ाता ना सके कोई लुका, अग्नी भेंट ना कोई चढ़ाईआ। जो प्रभ चरण होया फिदा, तिस फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। चावल दाल तुहानूं होवण ना देवां जुदा, सदा संगत संग रखाईआ। बेशक आपणा खेल ना पहलों देवे समझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत आप बणाईआ। वेख बणत आ गई ख़ाक, कहि कहि रही सुणाईआ। पुरख अकाल तूं बड़ा चलाक, की तेरी वड्याईआ । भगत दवारे दस्स रख्या ढाक, मनजीता दए गवाहीआ। जगदीशा सच सुणाए बात, कहाणी रिहा बणाईआ। उह वेख ढाई मुठ्ठी राख, गुरदयाल वंड वंडाईआ। तैनूं किथों आई जाच, लुक्क के खेल खिलाईआ। वेंहदे रहे खोल्ह के ताक, नज़र नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मेटे साडी वाट, अगला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। सुण ख़ाक मेरी बच्ची, बच्चयां वांग समझाईआ। वेखीं कलयुग अन्त ना होवीं कच्ची, कच्चा रूप वटाईआ । तैनूं पहलों करके तत्ती, फिर भण्डारा दित्ता कराईआ। तूं वेख्या आपणी अक्खीं, बाले नीहां हेठ दबाईआ। उते रखी इट्ट पक्की, वेख बिशन सिंघ जिस ठोक लगाईआ। पुरख अकाल फिर ना चक्की, उत्तों पैरां नाल दबाईआ। एह भगती बणनी हट्टी, सोहणा हट्ट खुल्हाईआ। एथे मिली धुर दी खट्टी, हरि करता झोली पाईआ। जिस नाम दी लभ्भदे गए इक रती, सो खुल्हे गफ्फे दए वरताईआ। चल के आवे सर्ब पती, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जन भगतां लज पति जिस रखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कमाईआ। राख कहे मेरा तुटा माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। झुलदा वेख्या सच निशान, जिथ्थे मेरी भठ्ठी दिती तपाईआ। ढोले गीत उहदे सारे गाण, सतरंग निशान झुलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सोहे मकान, सोहणी बणत बणाईआ।

छोटा नढ्ढा बच्चा दे के गया ज्ञान, सत्त महीने तिन्न दिन मैं लोकमात सेव कमाईआ। गुरमुखो गुरसिखो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्त होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ख़ाक कहे प्रभ करके फुरती, आपणा खेल वखाईआ। इक्को वार भरके चुटकी, चरणां हेठ दबाईआ। मैं बथेरी नच्ची टप्पी भुड़की, मेरी चली ना कोई चतुराईआ। क्यों इस विच खेल कोई धुर दी, धुर दी धार समाईआ। मैं समझया मैं सड़ के हो गई मुरदी, मुरदयां विच डेरा लाईआ। अबिनाशी करते किहा नहीं तेरी जन भगतां नाल मिलावां सुरती, बिन सुरतीउँ सुरत लगाईआ। मैं घर घर देवां गुड़ती, तेरी धूल मस्तक टिक्के दयां छुहाईआ। ख़ाक कहे प्रभ करके फुरती, आपणा खेल वखाईआ। मैं गुरमुखां घर गई कदे ना मुड़दी, जे जावां गुरमुख आपणे नाल लै के तेरा दर्शन पाईआ। एह खेल तेरी धुर दी, आपे बणत बणाईआ। एह वड्याई नहीं किसे देवत सुर दी, गुर अवतार पीर पैगम्बर भार ना कोई उठाईआ। एसे करके मैं तेरे चरणां नाल जुड़दी, घुट्ट घुट्ट के सीने नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सुण खाक तैनूं देवां खिलत, सोहणी पोशाक बणाईआ। वेखीं मेरे भगतां नाल करी ना इलत, छेड़खानी कदे मोहे ना भाईआ। तेरी ख्वारी होवे ज़िलत, लज पति ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च समझाईआ। ख़ाक कहे मैं होई ख़ाक, ख़ाक तेरे रूप समाईआ। तेरे दर तों सिक्खी जाए जाच, सिख्या तेरा नाम पढ़ाईआ। जन भगतां नाल रखां नात, नाता इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ । देवे वड्याई प्रभ जू मीता, मित्र प्यारा आख सुणाईआ। सतिजुग बन्ना तेरी रीता, सुहञ्जणी वंड वंडाईआ। तेरा फोले ना कोई अंगीठा, तेरा पर्दा ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। प्रभू सच तूं देवे माण, मेहरवान अख्वाइंदा। मैं सब दा लैंदी बलीदान, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। मेरा वासा विच शमशान, शमशान भूमी कहि के सब मेरा नाम प्रगटाइंदा। मेरी जे कोई हालत वेखे आण, नेत्र अक्ख भेव चुकाइंदा। बौहड़ी मैं होई हैरान, मेरा संग ना कोई निभाइंदा। मेरी ख़ाक सर्ब उडान, छेड़नी नाल छेड़ छेड़ मेरा छेकड़ अन्त हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा एका वर, दर सच्चा तेरा भाइंदा। उठ ख़ाक प्रभ दए दिलासा, जगत माण वड्याईआ। चरण कँवल सच भरवासा, धीरज धीर वखाईआ । जन भगत बणावण तेरा साथा, सतिजुग वंड वंडाईआ। तूं एहनां मन्नणा आखा, नीवें हो के सेव कमाईआ। दो जहानां विच्चों पुरख अबिनाशा, साचा जोड़ जुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रखे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

* किशन सिँघ ने फेर कहिणा चौधरी तेजा सिँघ दा नाम लै अवाज़ मारी *

मैं चरणां विच बैठा तूं किथों लभ्भे, कितल ध्यान लगाईआ। वेख मेरे दोवें हथ्थ बद्धे, बन्दना सीस निवाईआ। पुरख अकाल सज्जे खब्बे, फिरे चाईं चाईंआ। शब्द नगारे चारे कुण्ट वज्जे, खुशीआं राग अलाईआ। देवत सुर आवण भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखो गुरमुख सोहणे सजे, साची बणत बणाईआ। गीत गाउँदे वड्डे नड्डे, सोहणा राग अलाईआ। प्रेम प्रीती लैण मज़े, मंजल पन्ध मुकाईआ। सच घड़याल कोटन वज्जे, घड़ीआं नैण शरमाईआ। गुरमुख सोहणा लाड़ा सजे, सोहणा रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर हस्से, मुसकान मुसक लए मुसकराईआ। धन्न भाग प्रभ दवारे वसे, बस्ती पिछली छड्डी पराईआ। खुशी रहे पहर अट्ठे, घड़ी ग़म ना कोई वखाईआ। हुक्का मिल्या नाल नेज़े गट्टे, सोहणा नज़री आईआ। तमाकू रस तली मल उंगलां नाल चट्टे, नक्क सुंघ दए समझाईआ। जिस वेले पीता गट गट गटे, नशा इक्को वार जाए आईआ। क्यों हरिसंगत विच बहिके मैं उहदे नाल कीते मते, सिधीआं गल्लां नाल समझाईआ। जे तूं ना मैनूं रखें, होर केहड़ा मेरा भाईआ। मेरे वेख चीथड़ फटे, अल्फी रो रो रही सुणाईआ। मेरे तेरे नाल कौल इकरार पक्के, हुण मैनूं नाल लै के जाईआ। जे लभ्भदे नहीं मोटर टांगे यक्के, विच कार लैणा बिठाईआ। प्रभ हस्स के किहा कार विच की बहिणा तैनूं हथ्थ उते चक्के, लै के जाए धुरदरगाहीआ। तेरा तन शरीर ना कोई थक्के, दुःख पीड़ नाल ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। वेख सच्ची सच कहना ऊँ, सच्ची सच जणाईआ। फिर कदों आवेंगा तूं, मुड़के फेरा पाईआ। मेरे नाल हस्स के कू, मैनूं तैनूं वेख वड्डी खुशी आईआ। मैं उठके तुरके आया तेरी बरूं, डण्डा सुट्ट के डेरा लाईआ। ना कोई हूंगर ना कोई हूं, होका दे ना कोई सुणाईआ। तूं किडा अच्छा लग्गदां ए केडा सोहणा मूँह, खुशीआं नाल सुणाईआ। मैं हुण नहीं डिगना खाते खूह, तेरे घर डेरा लाईआ। मैं वेखणी ओह जूह, जिस विच बैठा सोभा पाईआ। अन्तर आवाज़ दिती रूह, बुत समझे ना कोई समझाईआ। मैले कुचैले कोझे कमले नाल प्रभ गया छूह, सिर गोडयां उते टिकाईआ। ओस वेले ओह रंग वखाया हूबहू, जिस दा नक़शा लोकमात सके ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणे रिहा पाईआ।

चरण फड़के मैं नहीं छड्डने, छड्डयां तुर किते ना जाईआ। आपां गल्लां करीए धाम किते अड्डरे, साडी गल्ल सुणे ना कोई लोकाईआ। ओथे चलीए वक्खरे, जिथ्थे मैं बैठा डेरा लाईआ। साहिब सतिगुर किहा तैनूं काहदे खतरे, दूर दुराडा

सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। तेरे पिच्छे मुड़के आवे फेर बदले, हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। हस्स के किहा बल्ले शाबा फिर आवेगा। तेरा भला हो जाए, मैनूं नाल लै जावेगा। हल्ला करे ते, मुड़ दरस दिखावेगा। नहीं ते मैं कल्ला मेरे उते तरस ना डर वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहारा साचा वर, मेहरवान हो के मेहर नज़र टिकावेगा। श्री भगवान किहा बोल, इक्को वार जणाईआ। मैं वेख आया तेरे कोल, छेती छेती पन्ध मुकाईआ। तूं रहिणा आप अडोल, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सच दस्स मैं प्रसादि खा लां भोरा, जिहड़ा तूं दित्ता वरताईआ। सच पुछें मैनूं तेरी इक लोड़ा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जे मैनूं करदें वांग घोड़ा, तेरा अट्ठे पहर हल्ल चलाईआ। मेरे विच ज़ोर बथेरा, वेख मेरे वड्डे वड्डे हड्ड नज़री आईआ। मैं भज्जां वांग घोड़ा, दिवस रैण वाहो दाहीआ। मैनूं इक हुक्का लै दईं कोरा, सोहणा मेरे हथ्थ फड़ाईआ। मैं पीउँ थोड़ा थोड़ा, तेरी ख़ुशी मनाईआ। ऊँह सब अकट्ठे मेरे विच अटकौदे रोड़ा, चौधरी की रिहा सुणाईआ। एथे घर की घाटा की थोड़ा, देंदयां की घट जाईआ। नाले मारके कहे हनोरा, तेरे कोलो पींदे रहिणा चाईं चाईंआ। जे ना देवें लुटूगां नाल ज़ोरा, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। मैं तमाकू लैणा

५०६ कौड़ा, जेहड़ा सोहणा नशा चढ़ाईआ। सतिगुर किहा मैं तैनूं हुक्का दिऊँ नवां नकोरा, विच दरबार तेरे हथ्थ फड़ाईआ। ५०६

१६ जिस दी वस्त ठठयार घड़े ना भोरा, नड़ी लोहार तरखाण ना कोई बणाईआ। ओस विच्चों सूटा निकले नेत्र फोरा, फुरना १६

पिछला बंद कराईआ। नज़री आए तोरा मोरा, तेरा इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा ओथे ला लै डेरा, जिथ्थे आपणा घर बणाईआ। तेरा घर बड़ा चंगू, मैं चंगी तरां वेख के आईआ। ऊँह अन्दर डाहया वडू पलंगू, सोहणा लेफ वछाईआ। मैं वी ओहो जेहा मंगू, सोहणी आवाज़ सुणाईआ। हुक्का पी के कोल खंघू, तेरे कोलों सोहणा लैणा बणाईआ। पिछली टुट्टी हल वाह के गंडू, बिन वाहिआं तों वाह के दयां वखाईआ। ओए एह कैहन्दे सी सारे दीना बंधू, मैं किहा किस तरां लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। तेरा घर दित्ता चंगा, की कुछ नज़री आईआ। औदे नूं सोहणा मिल्या मंजा, बिस्तर सेज सुहाईआ। मैं बिन कन्नां सुणया धुर दा छन्दा, धुर दा राग अलाईआ। मैं उठ के तक्कया चारे बन्ना, नेत्र खोल वेख वखाईआ। कोई कहे आ मेरया चन्ना, बाल्यां वांग गोद बहाईआ। बांहो फड़ मेरे मुख विच दित्ता मुम्मां, अमृत सीर जाम प्याईआ। मेरा ख़ुशीआं नाल मुख चुम्मा, प्रेम प्रीती इक वधाईआ। मैं किहां मैं पापी अपराधी भरया औगुणा, प्रभ मेरी की वड्याईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च रिहा समझाईआ। कोझे कमले सुण यार, तेरी यारी मोहे भाईआ। जिस वेले कैहन्दा सें उठ चलीए यार, बाहर तैनूं वट्टां बन्ने दयां वखाईआ। कल्ले हो के कर लईए गुफ्तार, हाल अहिवाल रूप वटाईआ। जां मैनूं ओथे लै चल नाल, जिथ्थे साडी गल्ल घर दा सुणन वाला कोई ना आईआ। मेरा ज़रूर मन्न के जाईं सवाल, मैं तेरे नाल जाणा चाईं चाईंआ। मैनूं इक वार दवारा उह वखाल, जिस घर विच्चों मुड़ के फेरा पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो कृपाल, गुरमुखां आसा पूर वखाईआ।

* २४ माघ २०२० बिक्रमी तेजा सिँघ दी सिड़ी उते अलड़पिण्डी *

सिड़ी कहे मैनूं आई याद, पोह तिन्न मिली वड्याईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों सुण फ़रयाद, पुरख अकाल दया कमाईआ। जन भगतां पिच्छे दे के दाद, सोहणी मेरी बणत बणाईआ। लोकमात रच के काज, करनी करता आप समझाईआ। तेरा पिछला बदल समाज, साची धारा इक वखाईआ। कूड़ी मेट के लोक लाज, सच संदेसा दयां सुणाईआ। तेरा बेड़ा जगत जहाज, लख चुरासी चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सिड़ी कहे मैं कीती अरदास, एक प्रभ अग्गे अरज़ोईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल पुरख अबिनाश, वेख वेख आपणा आप मिटाईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार पीर पैगम्बर मेरी सेजा गए लेट, आसण आपणा उपर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे मोहे वड्याईआ। सिड़ी कहे मेरी मनसा पूर, आसा इक रखाईआ। पूरब जन्म बख्श कसूर, मेहर नज़र उठाईआ। मैं ढो ढो थक्की लख चुरासी पूर, भज्ज भज्ज वाहो दाहीआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, साची सेव कमाईआ। मेरे उते चढ़दे मूर्ख मूढ़, पापी अपराधी आसण लाईआ। मैनूं कर के सारे मजबूर, मेरी सोहणी सेज हंढ्ढाईआ। पारब्रह्म मेरी अर्ज़ कर मंज़ूर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दे चुकाईआ। सिड़ी कहे मैं दस्सया हाल, हकीकत सच जणाईआ। सदा सदा सद घालण रही घाल, कीती घाल लेखे कोए ना पाईआ। गोबिन्द अग्गे कीता इक सवाल, जिस वेले सूलां सेज हंढ्ढाईआ। बिरहों विछोड़ा दीन दयाल, तेरा रूप जुदाईआ। लोकमात बण दलाल, मेरे वल ध्यान लगाईआ। मैं नित नवित्त सेवा कर कर होई कंगाल, मेरी कीमत किसे ना पाईआ। शाह पातशाह राज राजान पीर फ़कीर साध सन्त मैं सारे शमशान भूमी दित्ते सवाल, मिट्टी ख़ाक हेठ दबाईआ। मेरी लेखे लाई ना किसे घाल, लहिणा सक्या ना कोए चुकाईआ। कृपानिध हो कृपाल, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। ओस

वेले आई इक आवाज़, शब्द नाद शनवाईआ। इस दे अन्दर डूंग्घा राज़, जिस नूं समझ सके कोए ना राईआ। कलयुग अन्त तेरी रखे लाज, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सिड़ी कहे उह वेला केहड़ा, साची रुत्तड़ी दे जणाईआ। पुरख अकाल बन्हे बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। मेरा चुक्के झूठा झेड़ा, झगड़ा रहे ना राईआ। मैं वेखां उह सच्चा खेड़ा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए मुकाईआ। साचा लेखा लैणा जाण, जानणहार जणाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, निरगुण दाता वेस वटाईआ। भगत भगवन्त उठाए आण, धुर दा बाण लगाईआ। पहलों बख्शे सच्चा माण, चरण कँवल सरनाईआ। लेखा लिख के कलम निशान, कागज़ सोहणी वंड वंडाईआ। सोहणा सालू सोहणा सुभर तेरे उते देवे आण, हरि लालन लाल रंग रंगाईआ। पोह तिन्न वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा लेखा कर परवान, हरि कन्त दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण के सिड़ी चढ़या चा, चाउ घनेरा इक रखाईआ। पुरख अबिनाशी पकड़े बांह, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। निरगुण हो के बणे मलाह, निरवैर हो के वेख वखाईआ। सन्त सुहेले लए जगा, भगत भगवान पकड़ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी रिहा कमाईआ। साची करनी सुण के हरि, सिड़ी खुशी मनाईआ। मेरा पिछला चुक्कया भय डर, भउ रूप ना कोए वखाईआ। मैं चरणीं उहदी जावां पड़, आदि जुगादि जिस साची रचन रचाईआ। इक्को नाम उहदा लवां पढ़, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। साचे भगतां संग जावां रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। पूरब जन्म दा मिले फल, फली भूत दए कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। नव नौ चार पन्ध मुकाउँदा ए। पूरब लेख वेख वखाउँदा ए। कीता कौल तोड़ निभाउँदा ए। धरत धवल धौल डेरा लाउँदा ए। जन भगतां अन्दर मौल, आपणा रंग चढ़ाउँदा ए। दूर दुराडा वसे कोल, नेरन नेरा हो के नज़री आउँदा ए। कोई भेव ना जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ मुसायक समझ ना कोए रखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। सिर तेरे हथ्थ टिकावांगा। लकड़ी काठ बणाई सिड़ी, तेरा माण वधावांगा। गुरमुखां संग मिल कदे ना डरीं, डर भय सर्ब चुकावांगा। खुशीआं नाल आपणे उते धरीं, ओनां नाल निरगुण हो के वेखण आवांगा । इक्को ढोला तेरा मेरा पढ़ीं, सोहँ सच्चा राग सुणावांगा। लेखा चुकावां गोर मढ़ी, जिनां मस्तक टिक्का इक लगावांगा। धन्न भाग होवे सुलखणी उह घड़ी, जिस वेले गुरमुख घर आपणे लै के जावांगा।

प्रेम प्यार दी लग्गे झड़ी, छहबर आपणा मेघ बरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी कर वखावांगा। सिड़ी कहे प्रभू जब तेरे भगत चरण टिकाउणगे। मेरा अग्नी तत सुहाउणगे। ब्रह्म मति इक समझाउणगे। चरण कँवल नत जोड़ जुड़ाउणगे। दोवें वखा के ख़ाली हथ्थ, घरदयां कोलों पिच्छा आपणा आप छुडाउणगे। अग्गे लै के तेरे नाम दी वथ, सोहँ ढोले गाउणगे। तूं धुर दा लै के आवें रथ, देवत सुर मुन जन विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर साचा राग अलाउणगे। मैं तेरी भेंटा करां हस्स हस्स, गुरमुख तेरे खुशीआं नाल तेरे घर जावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सन्त सुहेले मिल के तेरा नाम ध्याउणगे। सुण सिड़ी बाली बच्ची, सच सच दयां दृढ़ाईआ। एसे कर के तूं सब तों अच्छी, जेहड़े प्रभ नालों विछड़े फिर उस नाल दएं मिलाईआ। एह काया माटी बबरी कच्ची, लोकमात तन माटी खेह विच रलाईआ। सच पुछें मैनूं एह तेरी धार लग्गी अच्छी, जो बैठी सेव कमाईआ। सिड़ी कहे पारब्रह्म तूं सर्ब जीआं दा कमलापती, बेअन्त तेरी शरनाईआ। जिन्हां दर्शन पाया तेरा अक्खीं, नेत्र नैणां नाल मिलाईआ। गुरमुख चुक्क के ल्यावण नाल हथ्थीं, सोहणी सेव कमाईआ। मैं वी ओन्हां नाल होवां सती, आपणा सति तेरी झोली पाईआ। एसे कारण तेरे चरणां ढट्ठी, दोए जोड़ अरदास सुणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत उडाए लोकमात ना कोए मिटी, ख़ाक धूढ़ ना कोए वखाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी जिन्हां पढ़ी पट्टी, पार किनारा इक्को नज़री आईआ। दोए जोड़ बैठी हथ्थ बद्धी, आपणा सीस निवाईआ। बेशक मैं घरों बाहरों कढ्ढी, शमशान भूमी मेरे वंडे आईआ। मैं कोझी कमली सब तों रद्दी, मैनूं देवे ना कोए माण वड्याईआ। मैं तेरे हुक्म अन्दर बद्धी, लोकमात सेव कमाईआ। मेरी बुढ्ढी होई हड्डी, दुःख दर्द रिहा सताईआ। बीतदी जाए चौधवीं सदी, ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण उठाईआ। नानक गोबिन्द कहे उह केहड़ी घड़ी चंगी, सोहणा वक्त सुहाईआ। जिस वेले प्रभ दवारयों मिले वस्त मंगी, अनमुलड़ी वस्त झोली पाईआ। सोहणा समां जिस वेले मेरे उपर चढ़न गुरमुख भुयंगी, सच सिँघासण डेरा लाईआ। मैं लै के आवां चुक्क के कंधी, कंधा कंधे नाल मिलाईआ। बेपरवाह सदा बख़्शंदी, बख़्शिश रहमत दए कमाईआ। बिन बंदगीउँ ख़ाना तोड़े बंदी, बन्दना आपणी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं देवे इक वर, जन भगतां संग मेरा लेखा दए मुकाईआ।

* २४ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर *

गुरसिख परवाना सतिगुर शमा, जोत अग्न रूप वखाईआ। जगत प्रेम छड्ड के तमा, तन मन आपणा भेंट कराईआ। हरख़ सोग मिटा के ग़मा, चिन्ता चिखा दूर कराईआ। आपणा नांवां लवा के नवां, सोहणी बणत बणाईआ। जन भगतां विच रल के बहिवां, गृह सच मिले वड्याईआ। सच स्नेहड़ा जा के कहवां, पिछला हाल सुणाईआ। मैनूं कोई ना कहे नथावां, साची सरन मिली सरनाईआ। सोहणा ढोला गावां, शाह पातशाह नाम ध्याईआ। सेज सुहञ्जणी बहि के रावां, रंग रत्तड़ा मिल्या माहीआ। जिस अग्गों फड़ीआं बावां, भुजां नाल उठाईआ। मैं प्या ना औझड़ राहवां, चुरासी गेड़ ना कोए जणाईआ। मेरीआं कोई ना मारे धाहां, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। मेरे वरगे पुत विरलीआं जम्मण मांवां, जिन्हां प्रभू दए वड्याईआ। मैं सच सरोवर बहि के नहावां, तारी इक तालाब लगाईआ। जिस दे पिच्छे साहिब सतिगुर फिर के आया पार दरयावां, सज्जण विछड़े नाल रलाईआ। उहदे गीत सदा नित गावां, सोहणा राग अलाईआ। हँसां विच मिल्या छड्ड के कावां, दरगाह मिली माण वड्याईआ। सोहणा पलँघ इक डाहवां, बाढी सोहणी बणत बणाईआ। प्रेम वछाउणा इक वछावां, सूसी सति सरूप जणाईआ। खुशी नाल सवां दे सरहाणे बांहवां, दुःख दर्द रिहा ना राईआ। मैं छड्ड के आया पिछलयां गरावां, अग्गे मन्दिर रिहा सुहाईआ। मैं भज्जा फिर नाल चावां, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। पुरख अकाल इक वडयावां, वाह वा वड्डी तेरी वड्याईआ। झोली अड्ड के इक्को मंग मंगावां, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मैं तेरे कोल हो के बहिवां सावां, सनमुख नज़री आईआ। सच दस्स मैं हुक्का किथे डाहवां, किस थान दयां रखाईआ। धूआं छिक हवा विच उडावां, पिच्छों वेखां ध्यान लगाईआ। श्री भगवान किहा मैं तैनूं समझावां, इशारे नाल जणाईआ। हुक्का तैनूं फड़ावां, जिस दी सोहणी बणत बणाईआ। पहलों वेख आपणे भरावां, जेहड़े तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। उठ वेख प्रभ दा हुक्का, हकीकत विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा पाणी कदे ना मुका, अग्नी बुझ ना रूप वटाईआ। जिस दा सूटा सदा सुक्का, सोहणा रूप वखाईआ। कदी कदी पुरख अकाल कहे आ मेरया पुत्ता, तेरा नशा तैनूं दयां पिलाईआ। जे तूं मेरे पिच्छे घर दयां नाल रुठ्ठा, रुस के मुख भवाईआ। औह वेख निक्की जिही गुठा, सोहणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वेख के गुठ चढ़ी लाली, लाल लालन वेख वखाईआ। प्रभ ठाकर एह किथों भाली, सोहणी बणत बणाईआ। जिध्धर वेखां अगम्म जगे दीवाली, जोती दीप नूर रुशनाईआ। मैं छड्ड के आया पिच्छे घटा काली, एथे बिन सूरज चन्नों चन्द चांदनी

रिहा चमकाईआ। मैं कैहन्दा सां तेरा बणां हाली, सोहणा जोतरा लाईआ। श्री भगवान किहा उठ वेख मेरी पंजाली, जिस पंजाली विच पंजां देवे वड्याईआ। सोहणी करां सदा किरसाणी, किरत कार इक कमाईआ। बीज बीजां चार खाणी, चार जुग फल फुल फुलवाड़ महकाईआ। अमृत सिंच देवां ठंडा पाणी, सोहणा हलट गिढ़ाईआ। गुरमुख हल वाहवे जहान बण के हाणी, साची कार कमाईआ। मैं भत्ता लै के जावां बण सवाणी, सिर आपणे भार उठाईआ। मैनूं वेख खुशीआं नाल गाए धुर दी बाणी, निराला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। उठ हालीआ ला जोतरा, प्रभ सोहणा वत्तर रिहा बणाईआ। भाग लगा के तेरे पिच्छे तेरे घर देवे पोतरा, घाटा पूर कराईआ। तूं सोहणा लग्गा छोकरा, बांका नज़री आईआ। इका वेरां मार के दस्स होकरा, हू हू कर सुणाईआ। मैं तेरा लेखा देवां कढ्ढ के रोकड़ा, वही खाता फोल फुलाईआ। तेरा लहिणा मुक्के चोदां सौ इक्कोतरा, चोदां तबकां पार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। वेख मैं सोहणा हल्ल वाहना आं। नाले तेरा गाण गाना आं। सूटा खिच के खुशी मनाना आं। सारयां नूं आख सुणाना आं। तुहानूं जे चंगा नहीं लग्गदा, मेरा मालक विष्नूं भगवाना आं। जेहड़ा रातीं सुत्तयां मेरे कोल भज्जदा, कर गल्लां दिल बहिलाना आं। जे लभ्भां फेर नहीं लभ्भदा, चारों कुण्ट वेख वखाना आं। जे सवां नेड़े नेड़े हो के भज्जदा, सोहणा दर्शन पाना आं। मैनूं यकीन आ एह मेरा संग नहीं छड्डदा, मैं एसे दा अख्वाना आं। एहदे हुंदयां कौण मैनूं हुक्के तों डक्कदा, मैं मंगी मंग एह देवणहार देवे दाना आं। वेखो मेरे कन्नी हस्सदा, सब तों चंगा नज़री आना आं। जिस वेले मेरे सिर उते हथ्थ रखदा, मेरा दुःख दलिद्दर घट जाना आं। मैं अग्गे नालों चंगा लग्गदा, मेरे अन्दर मिल्या मेरा सुल्ताना आं। मैं हुण ओथे जा के वसदा, जिथ्थे सच्चा मेरा निशाना आं। एह इक गल्ल मैं एसे कल्ले नूं दस्सदा, जो कमल्यां रमलयां गले लगाना आं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब दयाल होए मेहरवाना आं। हल वाह जोतरा लाया, आपणी सेव कमाईआ। परैण नाल जुत्ती रिहा खड़काया, विच्चों मिटी बाहर कढ्ढाईआ। सिर उते साफ़ा ठीक कराया, विंगे टेडे पेच लगाईआ। इक गल्ल तैनूं दस्सा चंगू, मैं हल वाहुन्दे गल कमीज़ कदे ना पाईआ। एह मंग तैथों मंगूं, दोए जोड़ अर्ज सुणाईआ। मैं सुणया तूं वड्डा दयालू दीना बंधू, बंदश दएं कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। ला जोतरा आया वेहड़े, आपणी खुशी जणाइंदा। अग्गे हाली हो गए बथेरे, मेरे वरगा नज़र कोए ना आइंदा। मैं वेख पैली वौहण गिझा घेरे, घेरे हिस्सा वंड ना कोए वंडाइंदा। जिस वेले लावां उलटे फेरे, उच्चा नीवां थाँ इक्को जिहा

कराइंदा। हुण आया तेरे डेरे, की तैनूं चंगा भाइंदा। अग्गे वेख के हो नेड़े, निगह निगह नाल मिलाइंदा। मेरे वरगे तैनूं किथों लभ्भणे चेरे, जो खुशीआं नाल तेरे घर हल वाहवण आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मैं सुणया तेरे सिर उते ताज, कल्गी नाल सुहाईआ। तैनूं सारे कहिण गुरू महाराज, चरणां सीस निवाईआ। मैं कहां एह ग़रीब निवाज़, मुफ़लसां गोद बहाईआ। नथाव्याँ मारे आवाज़, आपणे घर बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। प्रभ तैनूं कहिण गुणी गहिंदा, गहर गम्भीर अख्वाईआ। सारे समझण सागर सिन्धा, बेअन्त धार वहाईआ। सिफ्तां कर कर आखण चंगा, रसना जिह्वा सर्ब वड्याईआ। मैं तद आखूं जे मेरे वांग नंगा कर के रखें पिण्डा, सिर आपणे ताज टिकाईआ। मैं ओस वेले फड़ के आउँ डण्डा, आपणे हथ्थ उठाईआ। वेख वीहवें साल वाल्या गभरूआ कदी मैं वी हुन्दा सां मुंडा, जोबन रंग वखाईआ। मैं खंघूर के बहिंदा सां उपर मुढ्ढां, टेडी धार रखाईआ। ऊँह ऐंवें जांदयां नूं मारदा सां ठुडा, धक्कयां नाल हिलाईआ। बुढ्ढे बुढ्ढे कहिण एह चौधरी बड़ा गुंडा, धक्का करे वाहो दाहीआ। ओस वेले मैं इक वेरां किहा जे मैं गोबिन्द नाल हुन्दा, सब दे सिर कचरयां वांग भंनाईआ। वांग शेर मार के वड्डी सारी चुंगा, किले कोट पार कराईआ। मैनूं खुशी नाल थापी देंदा, प्रेम नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। जे गलों रात नूं लाहवें झग्गा, चंगी तरह जणाईआ। मैं फेर आखूं मेरे आखे लग्गा, मेरा संग निभाईआ। मैनूं वेख के आउ मज़ा, वड्डी खुशी रखाईआ। नाले पुच्छूं किसे गुरमुख नाल ना करीं दग़ा, धोखेबाज़ ना रूप वटाईआ। मैं केहड़ा सी तेरी चरणी लग्गा, किस बिध मैनूं ल्या तराईआ। मैं ते उत्तों उत्तों लाउँदा सां अज पजा, जगत बोल सुणाईआ। मैनूं चेता आया जिस वेले तेरे कोल बैठा मंजा, तूं हौली जिही मेरी छाती उते उंगली लाईआ। मैनूं ऐं लग्गा, जिवें मेरा दु:ख रिहा गंवाईआ। मैं किसे नूं ना दस्सां, अन्दरे अन्दर खुशी मनाईआ। ताहीं कैहन्दा सां फेर लैण आवेंगा अच्छा, मैं त्यार हो के तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नंगा पिण्डा लवीं कढ्ढ, वस्त्र तन ना कोए रखाईआ। मैं वेखूं तेरे हड्ड, नेत्र अक्ख खुलाईआ। एह धड़ मैं पिच्छे आया छड्ड, तेरी भेंट चढ़ाईआ। एस नालों कर के मैनूं अड्ड, वखरे घर बहाईआ। मैं इक्को वार लोकमात हरिसंगत विच तेरे रूप दा दर्शन कर के रज्ज, मुड़ के फेर मात ना आईआ। चुप्प कर के सचखण्ड दवारे जावां सज, सोहणी सेज विछाईआ। पुत्रां नालों हो के अलग, तेरा हल चलाईआ। पिच्छे रह गया तेरा जग्ग, उह वी तेरी झोली पाईआ। तेरे बच्चे तू ही पत लैणी रख, सौपणा तैनूं दित्ते कराईआ। आ वेख मैं सब तों हो के वक्ख,

वक्खरा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। तेरी आसा पूरी ज़रूर करावांगा। हो के हाज़र हज़ूर, आपणा खेल वखावांगा। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दर दरवाज़ा इक सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमावांगा। सच दस्स नंगा पिण्डा, किथे वखावेंगा। तत्ता ठंडा रंग ना कोए जणावेंगा। बण सूरा सरबँगा, साची सेव कमावेंगा। मैं मंगां एहो मंगा, मेरी आसा पूर वखावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की मेरे उते तरस कमावेंगा। हां, ज़रूर तरस कमावांगा। पिछला लेख समझावांगा। धुर दा भेत खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सोहणी बणत बणावांगा। पिछली खेल दस्से सईया, भेव अभेद खुल्हाईआ। करे खेल वड्ड रमईया, रहमत आप कमाईआ। जिस वेले कुकड़ तेरा सौदा कर के ठठयार नूं साई दा फड़ाया रुपय्या, सो साई देण वाला सिँघ दीदार नज़री आईआ। पिछला खाता फोल के वहीआ, सब कुछ रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। तेरे वचोले घर जावांगा। सौदा होण दा लेखा मुकावांगा। ओसे दे कोलों सौदा लै के तेरे रिधे पक्के विच पावांगा। एहो प्रभ दे भेव गुझे, हरिसंगत सर्ब समझावांगा। जन भगतां लेखे कदे ना मुक्के, सद आपणा संग रखावांगा। दयाल हो के सतिगुर तुठे, दीनन गले लगावांगा। मेहरवान हो के गोदी चुक्के, आपणी गोद सुहावांगा। नंगे पिण्डे बहि के ओथे बुक्के, सोहणी खेल वखावांगा। जे कोई मूर्ख अग्गे हो के पुच्छे ओनूं दस्से, मैं एन्हां दी सेव कमावांगा। खुशीआं नाल प्रभू हस्से, हस्ती आपणी विच रलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। सच दस्स साई देण वाला कौण, किस बिध बणत बणाईआ। सौदा मुकौण वाला कौण, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। कीमत पौण वाला कौण, बाकी कवण हिसाब रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च सच दे समझाईआ। साई देण वाला मुस्लिम साईं, मोटे मणकयां माला पाईआ। सहिज सुभाओ ओथे गया आई, आपणा फेरा पाईआ। पुरख अकाल बणत बणाई, नानक निरगुण धार चलाईआ। बण वचोला उस किहा भाई, सौदा लओ मुकाईआ। इस ने भेंट चढ़ना चंगी थाईं, ज़ब्हा करे ना कोए कसाईआ। क्यों लालो रोटी नानक बणाई, खुशीआं नाल खवाईआ। अल्ला मीआं इस दा ज़ामन होए सहाई, लेखा लेखे पाईआ। ओस वेले कुकड़ अन्दरों किहा वाह मेरे भाई, मेरे नाल मर्ज़ी लई रलाईआ। तेरी मेरी ना होवे जुदाई, अल्ला मीआं आपे मेल मिलाईआ। उस दे लहिणे पिच्छे सारी खेल वखाई, आपणा भेव चुकाईआ। तेरी रात तेरे हिस्से रखाई, आपणा हिस्सा ना कोए वंडाईआ। अज्ज दोहां दा लहिणा देवे चुकाई, देणा झोली पाईआ। नंगे

पिण्डे बहि के दए वधाई, वाह वा खुशी मनाईआ। वीह माघ एसे कारण पहलों लिख्त कराई, गुजरात दित्ता समझाईआ। लाल चन्द आउणा चाईं चाईं, पिछला मेला रिहा मिलाईआ। करया खेल बेपरवाही, बेपरवाह बेअन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा पिछला दान, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

* २४ माघ २०२० बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर तारा सिँघ दे कपड़े उतरवा के लिख्त कराई *

पंडत परोहत मंग दान, देवणहारा जजमान नज़री आईआ। सदा सदा सद करदा रहे पुन्न महान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। भुख्यां नंगयां पर्दा कज्जे आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कोझयां कमल्यां दे ज्ञान, करे सच पढ़ाईआ। भुले भटके वेख बाल अञ्याण, सुरती शब्द जगाईआ। कूड़ कुड़यारा छुडाए पीण खाण, अमृत रस मुख चुआईआ। तीर निराला मारे बाण, अणयाला हथ्थ उठाईआ। लेखा वेख लालो तरखाण, तरह तरह समझाईआ। नानक पिच्छों दवारा मंगया आण, आपणी अलख जगाईआ। मैं साईं दा सज्जण मुसलमान, अरबी बात सुणाईआ। मैं खाणा इक पकवान, सच्ची आस तकाईआ। अग्गों बोल किहा तरखाण, सुण मेरे सच्चे भाईआ। औह वेख साईं बैठा विच मैदान, सोहणी सफ़ा विछाईआ। तूं वी मिल उस दे नाल, दोहां खाणा दयां वरताईआ। पहलों इक मसला दस्सो मजीद कुरान, पैग़ाम धुरदरगाहीआ। सच महिबूब किथे मिले आण, कवण महिराब सुहाईआ। ओस वेले किहा मैं मंगता मंगण वाला दरबान, दरवेश रूप वटाईआ। नंगा पिण्डा तन काया माटी वखाए खाल, हड्डी चमड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जे दयाल होइआं धुर दे लाल, लाल दुशाला मेरे उपर पाईआ। कुकड़ ओसे वेले दिती बांग, उच्ची कूक सुणाईआ। पहलों मेरी पत्त लैणी राख, सिर मेरे ओढण इक टिकाईआ। नानक किहा लालो एन्नां दोहां दे दे दात, ढाई गज़ दुपट्टा हथ्थ फड़ाईआ। ओस वेले किहा वाह जजमान, नंगा हो के भज्जा वाहो दाहीआ। लालो किहा दस्स अहिवाल, कवण दवारे डेरा बैठा जमाईआ। नानक किहा छड्ड एह बाल अञ्याण, समझ कोए ना राईआ। एहदा लेखा अग्गे रखावां तेरे नाल, साचा मेल मिलाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, पुरख अकाल होए सहाईआ। कुकड़ उते पा के लाल दुशाल, पहलों एहदा लेखा देणा मुकाईआ। फेर ढाई गज एहदे लई करना त्यार, सोहणी बणत बणाईआ। अग्गों साईं उठ कीती पुकार, रहमत कर गोसाईंआ। एह मेरा मुस्लिम भाई यार, सच्चा

मेली नज़री आईआ। अग्गों मिल्या इक जवाब, धुर दी धार समझाईआ। कलयुग अन्तिम दोहां पूरा करे ख्वाब, सुफने रैण विहाईआ। एह मांगत तूं भिखक दोहां देवे दात, झोली सच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे नंगे धड़, आया घर साईं चल, सच सिँघासण बैठा मल्ल, अछल छल आपणा खेल समझाईआ।

ढाई गज़ दुपट्टा दस्से सच्च, सर्ब रिहा समझाईआ। पहलों प्रभ ने बद्धा लक्क, आपणे अंग लगाईआ। फेर बदन ल्या ढक, ओढण रूप वटाईआ। मैनूं दे वड्याई पंज हथ्थ, लम्मा दित्ता वधाईआ। साढे सत्तां फ़ुट्टां अन्दर रख, सोहणी खुशी जणाईआ। नाएं सिफ़रे कर इकट्ठ, नब्बे इंचां वंड वंडाईआ। कर खेल पुरख समरथ, मेरी सोहणी सेव लगाईआ। पड़दे अन्दर ढक, आपणे घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। ढाई गज़ कहे मैं पिच्छे रिहा डरदा, भय विच समाईआ। कलयुग अन्तिम खेल वेख नर हरि दा, सोहणी खुशी मनाईआ। जो मेरे प्रेम प्यार पिच्छे तन उत्तों लाहवें पड़दा, धुर दी दया कमाईआ। बण दरवेश साडा बरदा, आपणा फेरा पाईआ। हौली हौली खेल करदा, करनी नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ढाई गज़ दुपट्टा कहे बोल, धुर दा राग सुणाईआ। पुरख अबिनाशी गंढु मेरी दिती खोल्ह, आपणा हथ्थ लगाईआ। मैं वेखां डावां डोल, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। हुण वसां कीहदे कोल, सज्जण कवण बणाईआ। भेव ना आवे उपर धौल, धरनी राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दुपट्टे किहा मेरा ठाकर मेहरवान, मेरे उपर दया कमाईआ। आपणे दर कर परवान, फेर भगतां भेंट चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी लेखा चुक्के आण, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दुपट्टा कहे मैं रंग रंगीला, लालन रूप वटाईआ। आदि जुगादी छैल छबीला, सोहणा रूप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी इकट्ठा करां कबीला, जन भगतां वेख वखाईआ। बिन पुरख अकाल मेरा बणे ना कोए वसीला, सच्चा संग ना कोए निभाईआ। दरगाह दिसे ना कोए वकीला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए वखाईआ। दुपट्टा कहे मैं करदा रिहा फ़रयाद, हौली हौली आवाज़ लगाईआ। कवण वेले रखे लाज, मेहरवान दया कमाईआ। सच कहे पुरख अबिनाश, इक्को वार दित्ता समझाईआ। तेरा कम्म सच्चा ख़ास, सोहणी सेवा लाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी आस, सो

पूरी दए कराईआ। जन भगतां तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। दया करे पुरख समराथ, मेहरवान सहाईआ। कलयुग अन्त तैनूं रख के भगतां उते लाश, लच्छम देवे माण गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी वंड वंडाईआ। दुपट्टा कहे मैं रखी उडीक, नेत्र ध्यान लगाईआ। कवण वेला आए तारीख़, प्रभ तरीका दए समझाईआ। मेरी भगतां नाल लग्गे प्रीत, धुर दा जोड़ बणाईआ। मैं रल के गावां गीत, सोहँ ढोला चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत दए बणाईआ। बणत बणावणहारा, हरि सच्चा इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी गुर अवतारा, नर नरायण वेस वटाइंदा। लेखा जाण धुर दरबारा, लोकमात खोज खुजाइंदा। शब्द अगम्म बोल जैकारा, सच्चा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। दुपट्टा कहे मैं दित्ता साथ, धुर दा संग रखाईआ। जन भगतां नाल सड़ के होया ख़ाक, आपणा आप मिटाईआ, किरपा करी पुरख अबिनाश, अबिनाशी साची धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। मिले वड्याई लालो घर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। मेरा चुक्कया पिछला डर, अग्गे खुशी इक्को नज़री आईआ। जन भगतां पल्लू ल्या फड़, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। छाती उते बैठा चढ़, आपणा ज़ोर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी करता कार कमाईआ। दुपट्टा कहे मैं वसया नाल, साचा संग रखाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख भाल, नाता जोड़ जुड़ाईआ। उह वेख प्रभ दे लाल, मैं आपणा लाल रंग नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों प्रभ ने बदली चाल, निराली चाल आप रखाईआ। जन भगतां पुच्छे हाल, दर दर घर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दुपट्टा कहे मैं ढाई गज़, हरि मिणती नाम कराईआ, जन भगतां उते रिहा सज, सोहणी मिली वड्याई, अग्गे पिच्छे पड़दा कज्ज, आपणी सेव कमाईआ। सिड़ी उते नाल सज, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिती इक वड्याईआ। सच वड्याई दस्से निरँकार, हरि सच्चा सच जणाइंदा। सतिजुग साची चले धार, सति पुरख निरँजण आप समझाइंदा। जन भगतां दिसे इक निशान, निशाना इक्को इक प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। दुपट्टा कहे मैं गया सड़, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। अगला पिछला चुक्कया डर, खुशीआं रंग रंगाईआ। मैं दूर नेड़े वेख्या खड़, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। भगत भगवान ढोला रहे पढ़, सोहँ राग अलाईआ। मैं अग्गे हो के वेख्या दर, दर दरवाज़े अन्दर ध्यान लगाईआ। ओथे वसे नरायण नर, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। दीपक जोत रिहा बल, नूरो नूर रुशनाईआ।

सोहणा सुचज्जा दिसे महल्ल, अटल मनार वड्याईआ। ताब बेआब ना सक्या झल्ल, प्रभ झलक इक वखाईआ। मेरा थर थर अन्दर गया हल्ल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरा साह ना पवे खल, हौके दे दे रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत कहे ओ दुपट्टे यार, उठ वेख ध्यान लगाईआ। आ वखावां तैनूं घर बार, जिस गृह बहि के खुशी मनाईआ। तेरे वरगे कोटन कोटि लाल रंग रहे नखार, आपणा जोबन रूप वखाईआ। वेख एन्हां नाल करे ना प्रभू प्यार, अक्ख नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ। तेरे उते हो दयाल, साडे नाल तेरा संग निभाईआ। दुपट्टा कहे एह वड्याई पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भगत कहे असीं एसे दे लाल, जो लाल रंग तेरा नाल मिलाईआ। दुपट्टा कहे मैं एसे दी करदा रिहा भाल, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जन भगत कहे एह खेल करे कमाल, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। दुपट्टा कहे मैं लालो बणाया दलाल, वचोला विचे विच इक रखाईआ। जिस दा प्रभू कदी ना मोड़े सवाल, नांह कर ना कदे सुणाईआ। ओन मैनूं सिख्या दिती सिखाल, पट्टी सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। मैं पट्टी पढ़ी लालो धार, सोहणी बणत नज़री आईआ। ओस किहा प्रभ नाल कर प्यार, प्रेम प्रीती इक लगाईआ। फिर कोई कम्म नहीं दुष्वार, औखी घाटी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। दुपट्टा कहे मैं सेवा करी, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। पिछला वेखो वेला वक्त घड़ी, घरीं गया समझाईआ। लाल ओढण गोबिन्द शब्दी रूप मंगया चमकौर गढ़ी, इक ध्यान लगाईआ। मेरे बच्चयां दी किसे नज़र ना आवे मढ़ी, बालण हड्डीआं ना कोए बणाईआ। दस्सी गल्ल धुर दी खरी, ख़ालश रिहा जणाईआ। जिन्हां दा राखा आप हरी, हरि दवारे सोभा पाईआ। उह बन्ने आपणी लड़ी, तन्द तन्द नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द किहा सोहणा रंग लाल, जो धरती खून नाल रही चमकाईआ। सोहणा लग्गे जमाल, नूरी जोत रुशनाईआ। दो नीहां हेठां आए बाल, उते रुमाल ना कोए टिकाईआ। दो घालण आपणी घाल, भेंटा तलवार कराईआ। एन्हां उते उह देवां लाल रुमाल, जिस रुमाल नाल जुझार अजीत मुख पूंझ आपणी जेब टिकाईआ। ओस वेले अजीत सिंघ किहा नाल प्यार, साहिब सतिगुर दे समझाईआ। एह की कीती कार, साडे नाल प्यार वधाईआ। गोबिन्द किहा नहीं एह लेखा दस्सूं जुझार, फड़ बांहों आप उठाईआ। तेरे पिच्छे कर त्यार, दोहां मेल मिलाईआ। अगला सच सच्च विहार, बिवहारी रूप वटाईआ। एह बच्चू बच्चयो बचया इक रुमाल, जो पुरी अनन्द विच्चों आपणे नाल लै के आईआ। बाकी सब कुछ सरसे सुट्टया धन माल, ख़ाली

५१७
१६

हथ्थ वखाईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल होवे दयाल, मेरा संग निभाईआ। ओस वेले मैं होवां कृपाल, गुरमुखां नाल रलाईआ। ढाई सौ साल पिच्छों वध के वध के वध के ढाई गज़ लम्बा हो जाए जाल, आपणा रूप वखाईआ। ओस वेले फेर तुहाढ्ढे नाल रलावां आपणे लाल, बच्चे बच्चयां नाल मिलाईआ। जा के पुछां मुरीदां हाल, मुर्शद रूप वटाईआ। जन्म कर्म दा जंजाल, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। साची दात रखां संभाल, आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। अजीत किहा सुण मेरे सतिगुर, प्यार साडे नाल रखाईआ। किन्ने सिख तेरे वेंहदयां वेंहदयां गए तुर, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। गोबिन्द किहा बच्चयो वेख्यो तुसीं ना आयो मुड़, हथ्थ सिर सिर हथ्थ उते टिकाईआ। मैनूं बच्चयां दी नहीं थुड़, कोटन पुत्तर लवां प्रगटाईआ। तुसां जाणा चढ़ के घोड़, आपणी वाग भवाईआ। तुहाढ्ढी पुरख अकाल हथ्थ डोर, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जुझार किहा पिता जी एह रुमाल जेहड़ा तेरे कोल, एह मैनूं दे जिस वेले आवे पसीना आपणा मुख साफ़ कराईआ। गोबिन्द किहा एह वस्त अनमोल, इकलोते हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। एह मैं रखणा कोल, ढय्या आपणे विच छुपाईआ। प्रगट हो के इस नूं लवां कोल, लम्बा कर वखाईआ। पुरख अकाल जिस वेले आवे उपर धौल, उस दे कमर दयां बंधाईआ। उह आपणी हथ्थीं गंढ्ढ लवे खोल्ह, मेरे उते टिकाईआ। मैं अग्गों कहवां बोल, मैं तेरी अमानत तेरी भेंट चढ़ाईआ। समरथ पुरख कहे अडोल, वाह वा गोबिन्द तेरी वड वड्याईआ। मैं भगतां नाल बड़ा करां चोल्ह, सोहणा प्रेम वखाईआ। प्रीती अन्दर आपणा आप घोली घोल, पंज तत काया भेंट चढ़ाईआ। फेर तेरे विच वसया अडोल, सहिजे सहिजे कदम टिकाईआ। बण वणजारा हट्ट दित्ता खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे एस रुमाल दा मुल, दो जहान सके ना कोए चुकाईआ। इस ने वड्याई देणी भगतां कुल्ल, गुरमुखां करे रुशनाईआ। इस दे उते हरिसंगत बरखणे फुल्ल, सोहणी छहबर लाईआ। इस विच गुरमुख दे हस्सणे बुल्ह, जिन्हां नाल तेरा मेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रुमाल कहे मेरा बणे रुमाला, रावी कन्ढ्ढे मिले वड्याईआ। गुर अर्जन लिख के गया कमाला, सोहणा लेख समझाईआ। नहावण लग्गयां ढाई गज़ मंगया इक दुशाला, ओढण उपर टिकाईआ। कर ध्यान श्री भगवाना, इक आवाज़ लगाईआ। तेरा खेल दो जहानां, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा ओढण आपणे लेखे लाईआ। पुरख अकाल किहा गज़ ढाई, लाल रंग नज़री आईआ। अर्जन नाल होई कुड़माई, सोहणी बणत बणाईआ। पुरख अकाल दए वधाई, दर ढांडे मंग मंगाईआ। इस दा लेखा दए चुकाई, कलयुग आवे बेपरवाहीआ।

५१६ जन भगतां उते दए टिकाई, सोहणी सेव कमाईआ। जो जोतों विछड़े अन्त जोती लए मिलाई, गुर अर्जन तेरी धार नाल रखाईआ। पहलों रावी कन्ढे तैनूं लए मंगाई, नाल भठियाला जोड़ जुड़ाईआ। फेर हरि गोबिन्द आसा पूर कराई, आर पार हरिसंगत डेरा लाईआ। फेर चल के आए वाहो दाही, नानक विछड़े लए मिलाईआ। फिर वी चले आपणी रज़ाईं, राज़ आपणे विच छुपाईआ। जो पिछले साल लेखा दस्स के गया माही, मेहरवान दए वड्याईआ। सो पूरब पूरा रिहा कराई, परम पुरख भेव चुकाईआ। ढाई गज़ दए दुहाई, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ओ रुमाल वाले पकड़ी बाहीं, गढ़ी चमकौर याद कराईआ। सिर दे के ठंडी छाईं, सोहणी रुत्त सुहाईआ। गुरमुख सेज उते मैनूं दित्ता विछाई, हरिसंगत नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। रुमाल कहे जिस उपर आए लाल पड़दा, गोबिन्द पालकी दए बणाईआ। बेशक जीवां दिसे तन माटी ख़ाक सड़दा, गुरमुख घर साचे जावे चाईं चाईंआ। महल अटल मनारे वड़दा, सोहणा बंक सुहाईआ। वेखे खेल पिर हरि दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। लाल रंग कहे मैं मंगी मंग इक, इक अग्गे कर अरज़ोईआ। गोबिन्द लेखा दे लिख, लिख्या ना कोए मिटाईआ। जेहड़ा तेरा सच्चा सुचा पूरा होवे गुरसिख, उस उते मैनूं पाईआ। मैं उत्तों वेखां उहदा मुख, आपणा ध्यान लगाईआ। जिस वेले गुरसिख काहनी लैण चुक्क, मैं खुशीआं राग अलाईआ। उठ भरावा तेरा पैंडा पिछला गया मुक्क, अग्गे चल्लीए चाईं चाईंआ। औह वेख जिस नूं कैहन्दे गुजरी सुत, शब्दी धार समाईआ। जिस दे अन्दरों पुरख अकाल पए उठ, आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां रिहा पुच्छ, हौली हौली कोल बहाईआ। दस्सो तुहानूं कोई है दुःख, दुखियां दर्द वंडाईआ। एन्हां पिच्छे वार सब कुछ, आपा भेंट चढ़ाईआ। एसे कर के बदलया रुख़, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। मेरा दाणा पाणी गया मुक, गुरसिखो तुहाढ्ढे भण्डारे मिले वड्याईआ। घर घर पकदे रहिण रोट, लालो वांग सारे दए तराईआ। किसे विच रहिण ना देवे खोट, खोट्टयां खरे बणाईआ। वंड पाए ना कोई वरन गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। वड्डा छोटा ना कोई सोच, नीच ऊँच ना कोए वखाईआ। हर घट रख के आपणी जोत, जोती जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। रुमाल कहे मैं गया वध, वाधा गुरमुखां घर नज़री आईआ। जिन्हां पुरख अकाल ल्या सद्द, गोबिन्द ओट तकाईआ। मैं वी ओन्हां नाल आया भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं सेवा करां पड़दा देवां कज्ज, अंग लाग खुशी मनाईआ। हुण मेरा नहीं वस, प्रभ धुर फ़रमाण दित्ता समझाईआ। तेरा भगतां नाल साथ, अगला राह वखाईआ। नंगा धड़ंगा चंगा लग्गे पुरख अबिनाश, क्यों एह भुक्ख्यां नंगयां रिहा सताईआ। ५१६

१६ १६

जे एनूं दुःख लगे ख़ास, फिर आपे दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। लाल दुपट्टा कहे भगतो तक्को नाल अक्ख, मैं सब नूं दयां समझाईआ। तुहाढे नालों कर के वक्ख, तुहाड्ढा भाई दरगाह दित्ता बहाईआ। प्रभ ने दित्ता पिछला हक़, वस्त आप वरताईआ। उह बैठा ओथे डट, आपणा आसण लाईआ। नाले कहे मैं वड्डा जट्ट, ज़ोर बल वधाईआ। मैं वेख्या पुरख समरथ, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। मैं बोल के किहा हस्स, इक आवाज़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। दुपट्टा कहे मेरी सेवा अपार, साहिब सतिगुर आप लगाईआ। जिस दे उते मैनूं गुरमुख देण डाल, सोहणी वंड वंडाईआ। मैं ज़रूर सच दवारे लै के जावां नाल, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। क्यों गोबिन्द ख़ाली हथ्थ ना रखे बिन कदे रुमाल, रुमाल नाल गुरमुखां मुख साफ़ कराईआ। उह ना जाणे शाह कंगाल, वड्डे छोटे ना कोए वड्याईआ। मैं हौली हौली उहदी गोदी देणे सवाल, लै के जावां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। गुरमुख कहे बेशक दुपट्टे मैनूं लै के आया, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वेंहदा सां जदों लालो भेंट चढ़ाया, मग्घर महीना याद कराईआ। ओस वेले मेरे अन्दर फुरना फुरया एह की स्वांग रचाया, समझ कोए ना आईआ। मैनूं किसे हौली जिही आख सुणाया, एह तेरे लई बणत बणाईआ। पहलों तैनूं एहदे नाल रलाया, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। क्यों पुरख अबिनाशी फेरा पाया, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। मैं किहा नंगा बैठा जट्ट नज़री आया, जट्टां वरगा मेरा भाईआ। असां पुराणा कपड़ा तन हंढाया, एह ज़ेवर ज़री सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुरसिख कहे तेरी वेखी कार, करते वड वड्याईआ। दर आ तेरे दरबार, वज्जी इक वधाईआ। मैं तेरे नाल कीता इकरार, इक्को बचन सुणाईआ। मैनूं नंगा पिण्डा दे वखाल, मेरे वरगा हो के नज़री आईआ। फेर मन्नां तूं कंगालां विच कंगाल, शहिनशाहां विच्चों शहिनशाह नज़री आईआ। नाले वेखां तेरा रुमाल, जिस नाल बच्चयां मुख साफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। तूं वेखीं लाह के कुड़ता, वांग ग़रीबां ठंड तैनूं सताईआ। तूं पाले नाल होवें मुर्दा, तैनूं समझ जावे आईआ। फेर तूं वी कहें मैनूं ढेला दे गुड़ दा, खा के ख़ुशी मनाईआ। मैं वी वेखां फिरदा तुरदा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जे मंगें गुड़ दा ढेला, मैं बैठां मुख भवाईआ। जे बांह फड़ के पुच्छें मैं कहां अज्जे नहीं वेहला, मेरी चिलम सूत ना आईआ। जे खहिड़े पएं ते आखां साडे अन्दरों जा के लै ला, जिन्नां मर्ज़ी खाणा खाईआ। मैं कोई नहीं लैणा पैसा धेला, मुफ्त रिहा वंडाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। वेख मेरा कुड़ता लथ्था, तन चीर नज़र कोए ना आईआ। आपणी तक्क सच्ची अक्खा, अक्ख नैण खुल्हाईआ। भाग लग्गा कुल्ली कक्खां, तेरे वचोले देवां वड्याईआ। मरदे मरदे मरदे नूं एनूं रखां, लेखा आपणे नाल जुड़ाईआ। साईं गल्ल साची दस्सां, साहिब हो समझाईआ। मंगण वाला नाल फटा, तीर निशाना लाईआ। जिस दे सिर उते ओदों चप्पा चप्पा पटयां वरगीआं जटां, मुस्लिम रूप वटाईआ। डूमां घर जामा दस्सां, आवे वाहो दाहीआ। जजमानां कोलों जा के मंगां, खाणा पीणा देण खवाईआ। ओन्हां घरों मिले चंगा, क्यों, नानक बैठा आईआ। हथ्थ विच फड़ के लम्मां डण्डा, औदा जांदा कूकर रिहा हटाईआ। ओन्हां कूकरां अग्गों ओहनूं मिल्या संढा, जेहड़ा खौरू रिहा वखाईआ। जिस वेले डूम चुक्कया डण्डा, उह अग्गों होर नेड़े आईआ। मरासी वड़ गया थल्ले मंजा, जिस उते नानक आसण लाईआ। किहा, मैं अपराधी गंदा, सार कोए ना पाईआ। नानक किहा तूं किसे वेले चन्द चमकें तारा चन्दा, तेरी तार करतार नाल मिलाईआ। फेर सुण के साईं किहा मैं वी ओसे दा बंदा, बंदगी विच ध्यान लगाईआ। नानक किहा आओ दोहां दीआं पावां गंढ्ढां, मेरा पुरख अकाल लए खुल्हाईआ। जिस वेले तुहाढ्ढीआं नंगीआं होवण लग्गण कंडां, ओस वेले इक वार तुहाढ्ढे उते पड़दा पाईआ। चरण प्रीती दे के ठंडा, सोहणी रुत्त सुहाईआ। इस तों होर सतिगुर केहड़ा लभ्भणा चंगा, जो जुग जन्म विछड़े रिहा मिलाईआ। उधरों लालो वंडदा आया वंडा, आपणे हथ्थ पकवान उठाईआ। लओ डूमो बन्नृ लओ आपणीआं गंढ्ढां, घर लै के जाओ चाईं चाईंआ। एथे कोई ना रहे भुक्खा नंगा, भुख्यां भुक्ख मिटाईआ। ओस वेले डूम दे सिर चों निक्का जिहा डिगा कंघा, जिस दे नाल पट्टे वाह साफ़ कराईआ। लालो किहा एह वी होया चंगा, आपणे सिर दी मैल गया धवाईआ। क्यों, सतिगुर नानक चरण रखे उपर मंजा, मंजे हेठां एहदा सिर नज़री आईआ। एह पार हो जाए बिन बंदगीउँ बंदा, प्रभ बदला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा वखाईआ। वेखो लेखा सर्ब परिवार, हरि करता आप बणाईआ। जुग जन्म दे विछड़े यार, कट्ठे रिहा कराईआ। लहिणा देणा दे उधार, कर्ज़ा रिहा मुकाईआ। साची सिख्या सर्ब सिखाल, इक्को करे पढ़ाईआ। मन्नो पुरख पुरख अकाल, दीन दयाल अख्वाईआ। जिस दे गोबिन्द वसे नाल, साचा संग निभाईआ। जन भगतां लए उठाल, आपणी उंगली लाईआ। उते दे के लाल रुमाल, सोहणा दुशाला दए सुहाईआ। सचखण्ड बहाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत इक्को जेहे होए शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को माण दवाईआ। वढ्ढयां छोटयाँ ग़रीबां अमीरां सांझा लंगर दित्ता खवाल, घर घर खुशी मनाईआ। एहो जिहा फेर नहीं आउणा स्वाद, कोटन कोटि जन्म भरमे जगत

लोकाईआ। सतिगुर मिले ना कदे दयाल, दयालता अनमुल्ली ना कदे वरताईआ। गुरमुख लभ्भ के आपणे लाल, कक्खां कुल्ली सोभा पाईआ। जे तेरां माघ घर छड्ड के ना जांदा दीदार, दीदार दा लेखा लोकमात रहिण ना पाईआ। सारे कहिण पिच्छे माता होई बीमार, उस नूं वेखण जाईआ। नहीं, भगतां दा प्यार, गुरमुखां रिहा बचाईआ। कर के उलटी कार, आपणा वक्त लँघाईआ। दुःख आपणी झोली डार, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। एहो खेल सच्चे करतार, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुरमुख सिँघ नाल लै के गया नट्ठ, भज्जया वाहो दाहीआ। जे गुरमुख एथे रहिंदा फिर वी वड्डी लग्गणी सी सट्ट, दुःख नालों दुःख दित्ता वंडाईआ। एहो खेल कर के झट्ट पट्ट, हेरा फेरी विच रखाईआ। बहाने नाल गुरमुख रख, निशाने नाल तराईआ। हुण ब्रह्मण मले हथ्थ, मेरा वेला आईआ। नाले रोवे नाले पए हस्स, हस्सदयां विच्चों रोण नज़री आईआ। मंगदयां मंगदयां कदी ते पावे वथ, मेहरवान मेरा गोसाईंआ। लालो तेरे पिच्छे सारे लए रख, रक्षया कर के थाईं थाईंआ। हरिसंगत दूजी वार करा इकट्ठ, दूजा जन्म जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख समरथ, साची कार कमाईआ। आपणे कर के ख़ाली हथ्थ, नंगा हो के भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेख्यां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

* २५ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुर ज़िला गुरदासपुर *

इट्ट कहे तेरी वड्याई, तोहे सदा बण आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ बड़ी सेव कमाई, आपणा आप नीहां हेठ दबाईआ। तीर्थ तटां अंग लगाई, सर्दी गर्मी रुत्त लँघाईआ। जुग चौकड़ी वेंहदी रही ध्यान लगाई, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। कोटां विच्चों इक इकल्ली कम्म भगत आई, नाता रविदास नाल जुड़ाईआ। उस ने फड़ के हथ्थीं आपणे गोडे हेठां ल्या टिकाई, जिथ्थे मार के चौंकड़ा पाहणा गंढु वखाईआ। इक दिन सिल बदले मेरे उते रम्बी फड़ घसाई, रगढ़ा दित्ता लाईआ। मैं हस्स के किहा कसाई, एह किथों गया आईआ। नाले रोवां दयां दुहाई, कूक कूक सुणाईआ। मेरी छाती छिल्ल वखाई, उज़र चले कोई ना राईआ। रविदास नाल ठंडा पाणी दित्ता पाई, तुबका तुबका चुआईआ। मेरी फेर निकली हाई, हौका दे सुणाईआ। एह की कीता मेरी दुहाई, दोहरा दुःख सुणाईआ। चम्यार किहा मैं तेरी बणत रिहा बणाई, श्री भगवान सेवा लाईआ। मैनूं अन्दरे अन्दर रिहा समझाई, लेखा लिखे ना कोए कलम शाहीआ। इस दा लहिणा देणा थाईं थाईं, दर दर घर घर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम पकड़े बाहीं, बेपरवाह दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साची करनी मोहे समझाईआ। इट्ट कहे मैं नकम्मी, कम्म किसे ना आईआ। रविदास किहा तैनूं वड्डे मनारयां हेठां दे के थम्मी, आसरा तेरा तकाईआ। इट्ट कहे मैनूं मिस्तरीआं तेसीआं नाल भंनी, घड़ घड़ हथ्थां विच भवाईआ। रविदास किहा नहीं तूं प्रभ दी साची चन्नी, चन्द वांग रुशनाईआ। इट्ट कहे मैं कोझी कमली अन्ही, सार ज़रा ना पाईआ। रविदास किहा मैं सुणावां तैनूं तेरी कन्नी, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। इट्ट कहे की मेरा गुण, समझ सोच विच ना आईआ। मैं तैथों ल्या सुण, प्रभ देवे माण वड्याईआ। किथे जावां हुण, थाउँ नज़र कोए ना आईआ। मैनूं कच्ची नूं अग्नी विच देण भुंन, सोहणा भट्ठा तपाईआ। फेर पावण मुल्ल, टक्कया नाल विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किस बिध देवे वड्याईआ। इट्ट ना बण नकम्मी कमली कोझी, रविदास रिहा समझाईआ। वेख मेरे पाटे कपड़े प्रभ ने मैनूं दिती सोझी, रम्बी आर हथ्थ फड़ाईआ। तागे डोर नाल पाहणा गंढु सेवा करी लोकीं, आपणा इट्ट लँघाईआ। किसे कोलों पढ़ी ना कोई पोथी, पांध्यां संग ना कोए रखाईआ। पिछली गल्ल ना कदे सोची, अगला ध्यान ना कोए वखाईआ। मैनूं सारे कैहन्दे कमला मोची, चम्यार कहि के रहे बुलाईआ। मेरे कोल पाटी धोती, निक्की बोदी सीस सोहणी रही सुहाईआ। मेरे कोल तुटी लंगोटी, कपड़ तन ना कोए छुहाईआ। इक्को वस्त प्रभ ने दिती बहुती, प्रेम प्रीती मेरी झोली पाईआ। मैं रम्बी हथ्था तेरे उते रिहा ठोकी, ज़ोर नाल दबाईआ। तूं नीहां वाली अन्त चढ़ के वेखीं चोटी, मंज़ल तेरी बेपरवाहीआ। तेरी कीमत होणी बहुती, सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इट्ट कहे उह केहड़ा वेला, प्रभ देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ आए इक इकेला, निरगुण फेरा पाईआ। नाल रखे गोबिन्द चेला, गुर शब्दी वंड वंडाईआ। मेरे नाल कर के मेला, सोहणा संग वखाईआ। दो जहानां बण सुहेला, सज्जण नज़री आईआ। लख चुरासी नालों हो के वेहला, भगतां दए वड्याईआ। बेशक तूं पहलों मिटी दा कच्चा ढेला, तेरी घाड़्त घड़ के सोहणी बणत बणाईआ। तूं घरां विच जाए उते चढ़ के ठेला, आपणी सवारी रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रविदास कहे सुण प्यारी इट्ट, अच्छी तरह जणाईआ। मैं तैनूं देवां इक चिट्ट, चिट्ठी रूप वटाईआ। उस दे उते इक्को देवां लिख, तूं मेरा मैं तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। इट्ट कहे लिख छेती, क्यों इतनी देर लगाईआ। जे तूं बणयो प्रभ दा भेती, मैनूं उहदे नाल मिलाईआ। मैं सृष्टी नाल खेड बड़ी खेडी, घर घर मन्दिर दित्ते बणाईआ। सच सिँघासण अजे ना लेटी, जीव जंत सारे महल्लां विच सवाईआ। मैनूं

किसे नहीं किहा आ मेरी बेटी, देवां माण वड्याईआ। मैं सब नाल करदी रही नेकी, बुरी कार ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। रविदास कहे सुण इट्ट भैण, पिता पुरख दयां समझाईआ। नैण रो ना पा वैण, उच्ची कूक ना दे दुहाईआ। कलयुग अन्तिम तैनूं आवे लैण, सोहणा वेस वटाईआ। जन भगत बणाए सैण, सज्जण आप अख्वाईआ। तेरे नालों पहले छोटे बाले नीहां हेठां बहिण, उते तेरी सेव लगाईआ। आपणा भाणा आपे आए कहिण, साचा फेरा पाईआ। तेरी सिफ्त गीता करे ना कोए रामाइण, शास्त्र सिमरत देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। इट्ट कहे की पुरख अकाल आवेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। गहर गम्भीर वेस वटावेगा। चोटी चढ़ अख़ीर वेख वखावेगा। मेरी बदल तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ावेगा। मैं वेखां किवें नीहां हेठां दब्बे सूरबीर, गोबिन्द बच्चयां भेंट चढ़ावेगा। मैं सब नूं आखां एह सच्चे मेरे वीर, बिन वीरां भैण किहदी अख्वावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावांगा। रविदास किहा ना रो बीबी, बाबल सब दा इक्को माहीआ। उह सदा वसे क़रीबी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। उस दी खेल अजब अजीबी, अच्छी तरह समझाईआ। पिछली कहाणी पिच्छे बीती, अग्गे दए वड्याईआ। ओस सतिजुग चलौणी रीती, सोहणी वंड वंडाईआ। तेरा नाता तोड़ के मन्दिर मसीती, भगत दवारे नाल जुड़ाईआ। खून कढ्ढ ना किसे उंगली चीची, मस्तक विच्चों आपणी धार वहाईआ। बटवारे कहे याद कर पिछली नेकी, जो राम रामा हाल लिखाईआ। भगवन वेख करदा प्रीती, भगतां जोड़ जुड़ाईआ। धुर दी चिट्ठी रखी चिटी, अक्खर उपर ना कोए लिखाईआ। इक रुपय्या जिस नाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां नाल साई कीती, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इट्ट कहे एह किहा सच्च, प्रभ मेरे उते दया कमाईआ। रविदास किहा हुण बस, अगली गाथा फेर समझाईआ। चरणी गई ढट्ठ, दोए जोड़ सरनाईआ। रविदास खोल्ह् अक्ख, नेत्र नाल तकाईआ। नज़री आया पुरख समरथ, दोहां वेख वखाईआ। चम्यार कहे मेरे ख़ाली हथ्थ, प्रभू तेरी वड्याईआ। श्री भगवान किहा आ लै धुर दी वथ, तेरे हथ्थ कलम फड़ाईआ। तैनूं चरणां विच लवां रख, दो जहान तेरी नोक नाल घसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच सच देवणहार वड्याईआ। इट्ट कहे मैं गावां गीत, ख़ुशीआं राग अल्ह्ाईआ। सच प्रभू प्रभ करे प्रीत, प्रीतम बेपरवाहीआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, धुर दा संग बणाईआ। मेरी सुण पुकार चीक, चिन्ता ग़मी मिटाईआ। मेरा लेखा लाए ठीक, सोहणा रंग चढ़ाईआ। मैं रखां सदा उडीक, आपणा ध्यान लगाईआ। कौण वेला कल आए तरीक,

जन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। रविदास कहे उह वेला नेड़े, पन्ध नज़र कोई नहीं आइंदा। पुरख अबिनाशी मारे फेरे, निरगुण रूप वटाइंदा। लेख चुकाए पिछले झेड़े, झगड़ा सर्ब मुकाइंदा। जिस जग्ा बाल्मीक ला के गया डेरे, लिख्त भविक्ख्त लिखाइंदा। भाग लग्गे ओसे खेड़े, खिड़की कुण्डा आप खुल्ाइंदा। अगले पिछले दोवें छड्ड के वेहड़े, सोहणा धाम सुहाइंदा। जन भगतां बन्ने बेड़े, भगवन कंध उठाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। सच दस्स उह केहड़ा थाँ, दर तेरे मंग मंगाईआ । मैं वेखां चाईं चां, चाउ घनेरा इक जणाईआ। रविदास किहा जिथ्थे नाता तुटे पुत्तरां माँ, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ । अगला लहिणा सहिज सुभा, साहिब सतिगुर दए जणाईआ। बाल्यां कोलों ज्ञान दवा, वड्डुयां करे पढ़ाईआ। निक्कयां नीहां हेठ दबा, वड्डुयां छत्र झुलाईआ। साची सेवा तेरी दए लगा, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इट्ट कहे मैं निमाणी, बलहीण रही कुरलाईआ। मेरी सार किस पाउणी, महिबूब मिले ना सच्चा माहीआ। मैं ठरदी रही तीर्थ तटां पाणी, मैं सड़दी रही अग्नी तत तपाईआ। मैं वसौदी रही चारे खाणी चारे बाणी, अन्दर मन्दिरां विच छुपाईआ। मेरी किसे ना दस्सी निशानी, निशाना तीर ना कोए चलाईआ। रविदास कहे अग्गे बदलण वाली कहाणी, ग़रीब निमाणयां सारयां लए उठाईआ। पुरख अकाल मेरा जाण जाणी, जानणहार आप हो जाईआ। तैनूं नकम्मी कोझी कमली नूं बणावे राणी, रौणक तेरे नाल लगाईआ। जे नीहां हेठ तेरी कुरबानी, उपर चारों कुण्ट मनार दरसाईआ। कर खेल प्रभू महानी, महिमां तेरी लिखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल होए सहाईआ। इट्ट कहे मैं बाली नकम्मी, नकर्मण रूप वटाईआ। मात पित ना कोई अम्मी, भैण भाई ना कोए सहाईआ। मैं दुक्खां विच्चों जम्मी, सुख नज़र कोए ना आईआ। बिन अक्खां तों अन्नी, नेत्र नैण ना कोए दसाईआ। मैनूं तेसीआं नाल सारे रहे भंनी, ठोकर ला ला रहे दबाईआ। रविदास तूं किवें कहें चंगी, चंगयाई नज़र कोए ना आईआ। चम्यार कहे मैं तेरे उते रम्बी चण्डी, तिक्खी धार बणाईआ। पा के पाणा कीती ठंडी, सोहणा सुख वखाईआ । तूं हुण नहीं होणा रंडी, तेरा कन्त मिलावां माहीआ। तेरा चढ़े चन्द नौचन्दी, दो जहानां करे रुशनाईआ। कर खेल सूरा सरबँगी, शाह पातशाह होए सहाईआ। तेरी वंड अजेही वंडी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। इट्ट कहे मैनूं दे ना लारा, गल्लां नाल वड्याईआ। मेरे नाल कौण करे प्यारा, मुहब्बत कौण रखाईआ। मेरा तन लबेड़ नाल गारा, सच श्रृंगार ना कोए जणाईआ। भावें किन्ना

५२५
१६

कढ्ढां हाढ़ा, मेरी मिन्नत सुणन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किस बिध देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे नहीं एह गल्ल, हरि करते हत्थ वड्याईआ। जिस नूं चाहे देवे भल, निक्यों वड्डा दए बणाईआ। जिस बणाए जल थल, तीर्थ तट वड्याईआ। जिस मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ बणाए महल्ल, गुरुदुआर सुहाईआ। जिस वेले उह आप आवे चल, आपणा फेरा पाईआ। सिध्धा हो जाए भगतां वल, आपणा ध्यान लगाईआ। दु:ख दर्द सारे देवे ठल्ल, अग्गे कोई नेड़ ना आईआ। तेरा पिछला विछोड़ा मेट सल, बिरहों रोग चुकाईआ। सुनेहड़े संगत वल घल्ल, गुरमुख लए मंगाईआ। आपणी हथ्थीं तोड़ के आपणे फल, तेरे थल्ले दए टिकाईआ। तूं उते सिँघासण लईं मल्ल, सोहणी सेज बणाईआ। तेरा दुखड़ा आपणे उते लए झल्ल, दीनन होए सहाईआ। ओथे खेल करे प्रबल, सतिजुग साची धार वखाईआ । साढे तिन्न हथ्थ बेड़ा बन्न्, नौ दुआर करे रुशनाईआ। सच निशाना जाए झुल्ल, चवी हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थल्ले उपर तेरा माण रखाईआ। रविदास मैनूं भासे तूं कहें सच्ची, मेरे सीने ठंड पवाईआ। मेरे नाल कर पक्की, वेखीं करीं ना फेर जुदाईआ। मैं तैनूं वेखां अक्खीं, तूं मेरा लेख लिखाईआ। तूं पुरख अकाल दी बणना सखी, मैं तेरे पैरां हेठां आपणी छाती डाहीआ। मैं एहो खट्टी खट्टी, अंग तेरे नाल छुहाईआ। मैं भागां भरी रत्ती, आपणा रंग वखाईआ। रविदास कहे मेरी होई पक्की, पक्की गंढ पवाईआ। जिस वेले लेखा चुक्के जुग छत्ती, चवी हथ्थ छत्तीआं फ़ुट्टां विच लिआईआ। मेरा साहिब किरपा करे कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस तेरी नींह रखी, चोटीआं दए बणाईआ। उह सत्तरां इक्को गल्ल देवे दस्सीं, अच्छी तरह समझाईआ। इक इक इट्ट चुक्को हथ्थीं, मंज़ल उत्तों अगली मंज़ल पुचाईआ। जिस मंज़ल विच बहे पुरख समर्थी, साहिब सतिगुर सोभा पाईआ। चार कुण्ट चार जुग वेखण अक्खी, नेत्र ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तैनूं उच्च मनारे दए चढ़ाईआ। इट्ट कहे उच्ची चढ़ ना आवे हँकार, गल पल्लू वास्ता पाईआ। की किहा रविदास चम्यार, क्यों दिती वड्याईआ। आप ग़रीब हो के रिहों वक्त गुज़ार, निउँ निउँ सब नूं सीस झुकाईआ। मैनूं केहड़ी चोटी दित्ता चाढ़, मेरा प्रभ भुलाईआ। मैनूं अग्ग लग्गी नाड़ नाड़, रो के दयां दुहाईआ। मैनूं सत्थर चंगा यार, सोहणी सेज सुहाईआ। मेरी सुण पुकार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मैं सेवा करां दर दुआर, भुक्खी नंगी रह के झट्ट लँघाईआ। तेरे वरगा मैनूं तेरे कोलों मिले प्यार, प्रीतम तेरा नज़री आईआ। दूजा हंढाउणा नहीं कोई यार, सेज कन्त ना कोए चढ़ाईआ। मैं अंग नहीं छुहाउणा किसे नाल, पल्लू सके ना कोए गंढाईआ। मैं करदी रहिवां भाल, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, मैंनूं देवे माण वड्याईआ। रविदास किहा तूं किहा सति, सति सति समझाइंदा। तेरे मेरे कुछ नहीं वस, तेरा मेरा रूप सिफ़रा नज़री आइंदा। जे अग्गे वेखें खोल्ह के अक्ख, साता सिफ़रा सत्तर अंक बणाइंदा। सत्तरां अग्गे गोबिन्द प्रतख, रूप अनूप धराइंदा। धार किनारा सोहे तट, जल धारा वहिण वहाइंदा। ओस वेले देवे हक़, साता सिफ़र नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत बणाइंदा। इट्ट कहे की सत्त सिफ़रा होए सत्तर, अंक अंक नाल मिलाईआ। रविदास कहे नहीं एह धुर दा पत्र, श्री भगवान संदेसा रिहा सुणाईआ। मैं पढ़या नहीं कोई अक्खर, हथ्थ किताब ना कोए उठाईआ। मैं चम्यार भुक्खा नंगढ़, आर रम्बी डोरी नाल झट्ट लँघाईआ। बात दा कदे ना बणावां बतंगढ़, बातन रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। इट्ट कहे मैं सत्त नाल सिफ़र, किस बिध जोड़ जुड़ाईआ। मैनूं लग्गा फिकर, कवण वंड वंडाईआ। कदे चोटी चढ़ां सिखर, कदे नीहां हेठ रखाईआ। मेरे उते कदी पैर ना धरया तेरे मित्र, चरण कँवल ना कोए छुहाईआ। मैं खुशीआं नाल चुम्मां भावें उहदे टुट्टे होवण छित्तर, रसना मुख भोग लगाईआ। कोटन जुग बीते मैं वेंहदी रही बिटर बिटर, किसे तट किनारयों नज़र मैनूं ना आईआ। काग़ज़ां कलमां छाहीआं नाल करदे सारे ज़िकर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ढोले गाईआ। जिन्ना चिर मेरे सामणे ना आवे निखर, आपणा रूप वटाईआ। ओनां चिर मैं समझां मेरे उते लाया सोना चांदी किसे कम्म ना आवे पित्तल, मीनाकारी कीमत कोए ना पाईआ। बेशक सिकलीगर करन सिकल, ठठयार सुन्यार सोहणी घड़त घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे सुण बात अगली, अच्छी तरह जणाईआ। थोड़ी मति बणीं ना पगली, बवल रूप वटाईआ। श्री भगवान सब दी वेखणहारा बगली, वस्त अमोलक सद वरताईआ। चल के आवे मज़लो मज़ली, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा देणा करे बदली, बदला मात चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। इट्ट कहे मेरी अरदास, अटल अग्गे सरनाईआ। मैं बण के दासी दास, सेवका सेवक रूप वटाईआ। प्रभ पूरी करे आस, तृष्ना तृखा जगत बुझाईआ। मेरा कारज आवे रास, मेरी करनी लेखे लाईआ। मेरा अन्तर ना होए उदास, बसन्तर दए बुझाईआ। सद रखे चरणां पास, धूढ़ी टिक्का लाईआ। दर दुआर देवे निवास, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ सति सतिवादी मीत, सत्तर दए वड्याईआ। भगतां नाल तेरी प्रीत, साता सिफ़रा जोड़ जुड़ाईआ। सर्ब संगत प्रभ कोलों मंगे भीख, साडी सेवा दे समझाईआ। श्री भगवान हो अतीत, त्रैभवन धनी दित्ता दृढ़ाईआ। मैं तेरा कारज

करां ठीक, सोहणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सति सतिवादी सत्तरां वंड, सत्तर सत्तर तेरी धार बणाईआ। जन भगतां पल्लउँ खोल्ह के गंढ, तेरी कीमत दिती मुकाईआ। नाता भगत दवारे गंढ, सोहणी सेज सुहाईआ। चलदयां फिरदयां प्रभ पाउँदा जाए ठंड, सतिगुर दुःख मिटाईआ। गुरमुख तेरे उते ढोले गावण छन्द, सोहणा राग अलाईआ। तेरी सेवा लाई साहिब बख्शंद, बख्शश झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इट्ट कहे मैं मनारा वेख्या अर्श, जिस उते दित्ता लगाईआ। धन्न भाग अर्श चाढ़ के फेर लयांदा फ़र्श, मेरा माण अभिमान मिटाईआ। जन भगतां रल के कीता तरस, सारयां कट्ठयां हो के तेरा पिछला लहिणा दित्ता मुकाईआ। रविदास रहिण ना दित्ता फ़र्क, सोहणा अक्खरां लेख लिखाईआ । भुल्लयां नहीं ला के शर्त, लग्गी तोड़ निभाईआ। मैं हुण नहीं होणा ग़रक, आपणा रूप वटाईआ। सिधी बणाई सचखण्ड दी सड़क, गुरमुख मेरे उते आवण जावण चाईं चाईंआ। मैं सेवा करां नधड़क, छाती आपणी हेठ विछाईआ। सच दस्स रविदास जे कोई रह गई रड़क, मैं उह वी झोली पाईआ। रविदास किहा अज्जे थोड़ा फरक, जो तैनूं दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। इट्ट कहे फ़र्क केहड़ा, अच्छी तरह दे जणाईआ । मैं सोहणा कीता वेहड़ा, आपणी सेव कमाईआ। चंगा लग्गे भगतां खेड़ा, रूप अनूप जणाईआ। ओथे साहिब लाया डेरा, अग्गे पिच्छे सोभा पाईआ। चारों कुण्ट घत के घेरा, मैं पर्दा ल्या बणाईआ। जिस विच राजे बल दा बद्धा वछेरा, गोबिन्द अस्व रिहा सुहाईआ। हासा मख़ौल नहीं बखेड़ा, मैं बीती कहाणी रही सुणाईआ। जूठयां झूठयां साधां दा नहीं डेरा, डेरे वाला इक्को नज़री आईआ। उस दे नाल काहदा करां झेड़ा, जो बिन झगड़यों झगड़े रिहा चुकाईआ। जेहड़ा ओथे जावे ओनूं कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा रूप इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी कटे गेड़ा, आपणी गोद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। इट्ट कहे की रिहा फ़र्क, मैनूं समझ कोए ना आईआ । रविदास किहा मैनूं वेख के आवे हरख़, तैनूं दयां जणाईआ। श्री भगवान लेखा लिख्या लेख नधड़क, हरिसंगत दिती वड्याईआ । जो गुरमुख दरवाज़ा लँघ के पवे सड़क, सीस निवा के सिध्धा अन्दर जाईआ। इस विच थोड़ी रड़क, तेरे उते चलण वाला भुल्ल भुल्ल भुल्ल क्यों मुख भवाईआ। इट्ट कहे मैं ज़रूर देवूं वरज, जिस वेले गुरमुख मेरे उते चरण टिकाईआ। अन्दरों बोलूं कूक गरज़, करूँ हाल दुहाईआ। ओ भगतो गुरमखो गुरसिखो कूड़ी क्रिया करो ग़रक, सच्चा मार्ग इक वखाईआ। जिस दवारे जा के लोकमात कोई ना आवे परत, उस नूं सिधे मिलो चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

५२८
१६

सच देवणहार वड्याईआ। इट्ट कहे रविदास एह कौण, जो मैनूं फड़ के तेरे कोल लिआईआ। जिस मेरी मरोड़ी धौण, पंजा उंगलां विच फसाईआ। मेरे नेत्र चारे कुण्ट भौण, नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च देणा समझाईआ। रविदास किहा एह मेरा संगी, जगत यार अख्वाइंदा। कदी कदी गल्ल करे चंगी, कुछ मैथों पुच्छ पुछाइंदा। तूं किवें इट्ट लँघौना ए नाल आर रम्बी, डोरी तन्द रखाईआ। तेरी हालत सदा रहे मंदी, वस्त्र तन ना कोए छुहाईआ। मैं हस्स के कहि छड्डदा यार एहो गल्ल चंगी, जो साहिब मेरे भाईआ। ओस किहा वेख रविदास मैं तेरा सज्जण तूं इट्ट मैथों मंगी, मैं ओसे वेले चुक्क लिआईआ। जे परमात्मा तेरा संगी, क्यों भुक्ख नंग तेरी झोली पाईआ। रविदास किहा मेरी बंदगी विच्चों थोड़ी बंदगी बंदी, बन्दना कर के आपणा साहिब रिहा रीझाईआ। कदी देवेगा वस्त्र सेजा सौण नूं मंजी, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। मित्र कहे रविदास तेरी चंगी नार, घर गयां ना करे लड़ाईआ। अट्ठीं अट्ठीं पहरीं भोजन रिहा खवाल, दो दो दिन फ़ाके विच लँघाईआ। एहदूं वड्डा दस्स केहड़ा कंगाल, दुखिया दे समझाईआ। रविदास किहा हस्स के यार, तूं सच्ची सच सुणाईआ। तैनूं मेरे घर दा आया प्यार, प्रेम प्रेम नाल वधाईआ। जे मेरी नार बदले वेहनौं मेरा यार, जिस यारी तेरे नाल लगाईआ। जिस दा मैं अनमुलड़ा लाल, काया चीथड़ विच छुपाईआ। अग्गों सज्जण किहा पुकार, इक आवाज़ सुणाईआ। मैं नहीं भुक्ख्यां नंगयां दा करदा प्यार, तेरा प्रभ भुक्खा मैनूं किवें दए रजाईआ। रविदास किहा उठ वेख कर ध्यान, तैनूं दयां समझाईआ। इट्ट फड़ के हथ्थ दिती उछाल, चारों कुण्ट स्वर्ण रूप वटाईआ। फेर कहे इक वार मैनूं वखाल, मैं लै के भज्जां वाहो दाहीआ। तूं की करनी एह कंगाल, तेरे कम्म किसे ना आईआ। रविदास मित्र कर के हौली जिही चपेड़ दिती मार, सुरती सुरत भवाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, अर्ज़ इक सुणाईआ। मैनूं बख्श बख्शणहार, भुल्ल मेरी झोली पाईआ। रविदास किहा मेरा तेरे नाल उधार, बख्शणहारा मेरा इक्को माहीआ। तूं मेरी नार वल कर ध्यान दिती विचार, अन्तष्करन आपणा आप बदलाईआ। इस कारण तैनूं जामा लैणा पए विच संसार, लोकमात फेरा पाईआ। जिस वेले मेरा आवे सिरजणहार, तेरा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। मित्र कहे सच समझा, आपणी समझ जणाईआ। की तूं वी फेर जावेगा आ, मेरा संग रखाईआ। रविदास किहा सुण भरा, तैनूं दयां समझाईआ। तेरा जामा नारी रूप लए बदला, स्त्री जाती विच समाईआ। घर ग़रीबां जन्म दवा, ग़रीबां विच्चों ग़रीबी देवां कढ्ढाईआ। उधरों इट्ट रही सुणा, सुण साहिब सच्चे माहीआ। मैं तेरे गुटणे दा सरहाणा रही बणा, सिर आपणे भार उठाईआ।

मेरा नाता ना दईं तुड़ा, भुल्ल ना जावीं अभुल्ल तेरी वड्याईआ। रविदास किहा पुरख अकाल विचोला लवां बणा, सच सच्च सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। इट्ट कहे दस्स वचोला, किस बिध तेरे यार नाल मिलाईआ। इस विच नहीं कोई ओहला, पर्दा दे समझाईआ। ओने चिर नूं चार कहार चुक्की आउण डोला, आपणे कंध उठाईआ। ओथे आ के किहा भार करीए हौला, पिछली वाट मुकाईआ। इक किहा रविदास कोलों गंढ्ढ लईए पौला, पाहणी अग्गे टिकाईआ। दूजा कहे साडी सार पाए मौला, मेहर नज़र उठाईआ । तीजा कहे रविदास दा बठल वेखो कौला, चम्म वाला पाणी नज़री आईआ। चौथा कहे जे कोई साडा वी हुन्दा वचोला, साचा मेला दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। पाणा गंढ्ढ रविदास पुछे, सोहणी आवाज लगाईआ। हुण तुसां जाणा किथे, केहड़ा राह तकाईआ। भार चुकदे सारे होए छिथे, थक्के होए सुणाईआ। एह बीबी राणी डोली विच बैठी पा के लीड़े चिट्टे, भार साडे उते रखाईआ। जे असीं वी कुड़ीआं बण दे हुन्दे किते, पन्ध कटदे ना बण के राहीआ। साडे वी मथ्थीं सोहदे टिक्के, नक्क नथ्थ सुहाग सुहाईआ। साडे लेख प्रभू ने केहो जिहे लिखे, भार चुक्क के भज्जीए वाहो दाहीआ। जे किते सानूं हुण दिसे, पुच्छीए काहनूं जन्म दित्ता दवाईआ। साडे की कुछ आया हिस्से, केहड़ी वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल वखाईआ। रविदास हौली हौली सुणदा रिहा कन्न, अन्दरों ध्यान लगाईआ। ओ वीरो भरावो खबरे मेरा साहिब जावे मन्न, तुहाढ्ढी आसा पूर कराईआ। हुण नहीं फेर बदल दए तन, पंज तत सोभा पाईआ। तुहाढ्ढा पिछला निकले जन, अग्गे भेव समझाईआ । तुसीं हुण वी कहो धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। सब दा बेड़ा रिहा बन्न्, जुग जुग होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान अख्वाईआ। चारे कहिण छड्ड यार, चम्यार गल्लां नाल समझाईआ। एहनूं मतलब सानूं पैसे दे देण होर चार, आपणी गंढ्ढ रिहा वधाईआ। दूजा आखे एहदे आखे असीं किस तर्हां बणीए नार, झूठीआं गल्लां रिहा समझाईआ। तीजा कहे कमला जिहा चम्यार, जुत्तीआं गंढ्ढ के झट्ट लँघाईआ। चौथा कहे सुणों नाल ध्यान, मैं सच दयां समझाईआ। मैनूं एहदे थल्लउँ नज़री आए लाल, अनमुलड़े रूप वखाईआ। पहला कहे एह चम्म लाही खाल, रम्बीआं नाल टोटे रिहा कराईआ। दूजा कहे किसे ढोर दे चमकण वाल, बूरे रंग दा संढा फड़ लिआईआ। तीजा कहे एहदी कोई ठग्गां वाली चाल, आउँदयां जांदयां राहीआं रिहा भरमाईआ। चौथा कहे नहीं ओए कुछ करो ख्याल, इस दे मस्तक नूर नज़री आईआ। ओने चिर नूं आया जवान बनारस थेटा, सोहणा संग बणाईआ। नेड़े आ के धोती लाह के

५३०
१६

लेटा, आपणी लै अंगड़ाईआ। फेर आया चेता, मेरी जुत्ती गंढुण वाली गंढु लवां पवाईआ। उठ के जा के रविदास वेखा, चम्यार आपणी सेव कमाईआ। ब्राह्मण किहा की तेरा एथे ठेका, की मज़दूरी रिहा कमाईआ। रविदास किहा कर के कट्ठा पैसा पैसा, आपणा झट्ट लँघाईआ। ब्राह्मण किहा वेखो एह कैसा, केहो जिहीआं गल्लां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेल रिहा वखाईआ। ब्राह्मण हस्स के किहा मेरी जुत्ती गंढी, सोहणा गंढु पवाईआ। एथे टुट्टयां छित्तरां दी लाई मण्डी, कीमत की रखाईआ। रविदास कहे जो पैरीं आवे नंगी, एह मैं ओनूं दी भेंट चढ़ाईआ। टुट्टी होई मैनूं लग्गे चंगी, जो टुट्टयां गंढु वखाईआ। ओनू चिर नूं ब्राह्मण बोले पखण्डी, इक मैनूं दे दे मेरे भाईआ। रविदास किहा एह बड़ी मैली कुचैली गंदी, तेरे कम्म किसे ना आईआ। आह लै कसीरा कढु के विच्चों दित्ता तार डण्डी, खुशीआं नाल हथ्थ फड़ाईआ। मेरी माँ नूं सारे कैहन्दे गंगी, ब्राह्मण गंगा मइया कहि सुणाईआ। मैनूं सुग़ात लग्गी चंगी, तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले तेरे कोलों लवे मंगी, ओसे वेले भेंट देणी कराईआ। जेहड़ी वस्त खुशी नाल करे बख़्शंदी, सो बख़िशश मैनूं देणी चाईं चाईंआ। ओनू चिर नूं गल्लां सुण के डोले वाली सवाणी बाहर निकली पैरीं नंगी, मुख घूँगट रही उठाईआ। आपणी वाह के पट्टी कंघी, सोहणा श्रृंगार बणाईआ। शीशा वेख कहे मैं चंगी, जोबन दूण सवाईआ। रविदास वल तक्क के अक्खां तों हो गई अन्धी, नज़र कुछ ना आईआ। अन्दरे अन्दर फुरना फुरया मैं जन्म कर्म दी गंदी, शरम विच शरमाईआ। मेरे कम्म ना आई कन्न पाई डण्डी, ज़ेवर ज़र दए दुहाईआ। मेरे नालों उह टुट्टी जुत्ती चंगी, जेहड़ी जांदयां राहीआं सेव कमाईआ। चारे कहार उठ के कहिण तूं बीबी राणी चंगी, क्यों डोलिउँ बाहर पैर टिकाईआ। ओस ने किहा मैं एस चम्यार नूं वेख के सुहागण हो गई रंडी, मेरा जगत कन्त नज़र कोए ना आईआ। जे लग्गां ते एसे दी अंगी, दूजा संग ना कोए वखाईआ। मैं दर्शन कर के हो गई ठंडी, ब्रह्म ब्रह्म विच्चों नज़री आईआ। चाहे मंदी चाहे चंगी, चंगी मंदी एसे दी अख्वाईआ। गुसे नाल पाड़ के आपणी अंगी, ओढण दित्ता परे सुटाईआ। मैं खुश होवां रह के भुक्खी नंगी, जगत पदार्थ मिले ना कोए वड्याईआ। चार कहार मुड़ जाओ मेरे संगी, मेरे मापिआं दयो वधाईआ। बंदीखानिउँ निकली तुहाडी जम्मी, धन्न जणेंदी माईआ। दस मास कीता वास विच चम्मी, मात गर्भ शिकम डेरा लाईआ। हुण व्याह के लै चले सोहणी वंनी, सोहणी डोली पाईआ। मेरे गल्ल ज़री पंनी, लड़ीआं हार वखाईआ। कलीरे करन छन्न छन्नी, मैहिंदी रंगली हथ्थ चढ़ाईआ। दोहाई मैं बिन कन्त वेक्खयां डोली विच बहि गई अन्नी, भाईआ फड़ के दित्ता टिकाईआ। एह प्रभ ने गल्ल कीती चंगी, दया रहमत इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वखाईआ। चार

कहार कहिण उठो चुक्को भार, होणी सानूं नज़री आईआ। जिस दे पिच्छे पन्ध रहे मार, भज्जीए वाहो दाहीआ। एह वड्डी सारी मुटयार, बहुता भार रखाईआ। असीं निमाणे कहार, चाकर रूप वटाईआ। जिस वेले कदी साडे आवे दुआर, असीं वीं डोले विच बहीए चाईं चाईंआ। सानूं ठड्ढे करे चम्यार, मखौलां नाल सुणाईआ। तुसां नूं बणना पऊ नार, लोकमात रूप धराईआ। ओने चिर नूं सोहणी लाड़ सुण लई अवाज़, जो कहार रहे सुणाईआ। आखे नेड़े आओ आ चुक्क लओ आपणा दाज, मेरे कम्म किसे ना आईआ। मैं छड्डुया जगत समाज, समग्री दिती लुटाईआ। जिन्हां चिर एह चम्यार मैनूं दस्से ना मेरा राज़, राज़ी हो के अग्गे कदे ना जाईआ। रविदास सुण के जाणया एह सोहणा वेला हुन्दा काज, व्याह शादी दोहा धिरां खुशी मनाईआ। जगत जीवां बणाया रवाज, धीआं भैणां डोलीआं विच घलाईआ। जे एहनां नूं पहलो प्रभ कन्त मिलण दी आ जाए जाच, आपणे घर विच्चों घर बैठे सगन मनाईआ। नेत्र तक्क मस्तक लेखा ल्या वाच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। रविदास किहा नेड़े आ बच्ची, प्यार तेरे वंडे आईआ। तूं सर्ब नालों लग्गी सच्ची, सच कहाणी अन्दरे अन्दर दिती सुणाईआ। प्रीत वेख जगत कच्ची, कच्चा तन्द तुड़ाईआ। मेरी वेख जुत्ती टुट्टी, तेरे अन्दर होई रुशनाईआ। जिहड़े कहार तेरी करन आए बुत्ती, आपणा जामा गए बदलाईआ। एस ब्राह्मण दी सुरती अजे सुत्ती, कसीरा जिस दे हथ्थ फड़ाईआ। पुत्तर आ लै मेरे कोल रोटी इक रुक्खी, तैनूं खुशीआं नाल खवाईआ। तेरी आत्मा रहे सुच्ची, परमात्मा नाल कुड़माईआ। कन्नो होवे कदे ना बुच्ची, सिर सुहाग ना कोई लुटाईआ। पाणी पाणे वाला भरके चुली वरताया नाल मुट्ठी, घुट इक्को वार प्याईआ। दुआरे आई जाए ना लुट्टी, तेरा जोबन ना कोई हंढाईआ। तेरी औध एथे मुक्की, अगला पन्ध मुकाईआ। इक वारी मेरे साहिब दी कर रुची, जो मेरीआं अक्खां विच डेरा लाईआ। फेर उसे कोलो पुच्छी, तैनूं दए समझाईआ। बीबी राणी उठ के आई अड्डी उच्ची, नेत्र नैण खुल्हाईआ। ओस नूं धार नज़र आई विच्चों लुकी, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जेहड़ी प्रेम प्यार दी भुक्खी, प्रेमीआं गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। वेख के रविदास नैण, नैण नैण नैण बिगसाईआ। अग्गो कुछ लग्गी रसना कहिण, कहि सकी ना राईआ। ओसे वेले साहिब सतिगुर आया लैण, पुरख अकाल दया कमाईआ। वहिण ना देवे कूड़े वहिण, झगड़ा चुक्के लोकाईआ। ढाई घड़ीआं सौहरयां घर मिले बहिण, सस्स सौहरे मिले वधाईआ। फेर ओसे वेले वैण पैण, नेत्र नैण नीर वहाईआ। कहिण किथों आ गई डैण, साडा कोड़मा गई खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रविदास गवाह लै बणाईआ। अगले दिन कहार वेखे मुड़दे, खाली डोली कंध

उठाईआ। हौली हौली पैरीं तुरदे, नैणां नीर वहाईआ। वेखो एहो जहे जोड़ काहनूं जुड़दे, जो जुड़दयां होए जुदाईआ। निकर्मणां दे बेड़े रुढ़दे, भागां वालयां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला खेल वखाईआ। हौली हौली आ गए अग्गे, आपणा पन्ध मुकाईआ। रविदासा ओसे तरह सजे, बैठा आसण लाईआ। चारे बहि गए सज्जे खब्बे, हौली हौली पुच्छण चाईं चाईंआ। दस्स कल जो नारी आई तेरे कोल पैर दब्बे, की तूं उहनूं दित्ता समझाईआ। उहनूं धुरदरगाहों आ गए सद्दे, सौहरया पेकयां नाता गई तुड़ाईआ। अक्खीं रोण लग्गे बंदे, लागीआं नाईआं डूमां मरासीआं लाग ना कोई वरताईआ। ब्राह्मणां दे खाली रह गए खीरां वाले डब्बे, थाल परोस ना अग्गे टिकाईआ। दक्षिणा घरों ना कोई लभ्भे, अग्गे पिच्छे ध्यान लगाईआ। ब्राह्मणीआं दे दे थक्कीआं सद्दे, घर घर सवाणीआं सद्द लिआईआ। कुछ सवाणीआं दे पैसे अजे ना लभ्भे, मुख वखाली भेंट ना कोई चढ़ाईआ। हथ्थीं गाने रह गए बद्धे, परातां खाली देण दुहाईआ। सालू सिर ते रह गए रंगे, जोबन सके ना कोई वखाईआ। प्रभ ने कीते खेल बेढंगे, बुरा कहे लोकाईआ। लोहां ते पक्के रह गए मण्डे, दालां तड़का ना कोई लगाईआ। भंगीआं दे हथ्थां विच रह गए डण्डे, ऐवें कुतयां परे हटाईआ। मूँहो दान मिले ना मंगे, झोली खाली ना कोई भराईआ। सारे कहिण साडे हाल मंदे, व्याई लाड़ी लाड़े नाल ना संग निभाईआ। उधर ओहनूं चार कहार चुक्कण वाले कंधे, एधर चारे असीं डोली लै के भज्जे वाहो दाहीआ। तेरे कोल आ के थोड़े होए ठंडे, साह लै के खुशी मनाईआ। रविदास डोरी नाल कस कस के छित्तर गंढ्ढे, धागा मुख दे विच रखाईआ। किथों पेश पै गए एह मुशटंडे, मेरे कम्म विच हर्ज कराईआ। कहार कहिण असीं चल के आए पैरीं नंगे, एथे ओथे दोहां घरां विच साडी सेव ना कोई कमाईआ। रविदास किहा मेरे सुक्के थोड़े जिहे टुकड़े ठंडे , भोरा भोरा लवो खाईआ। चवां किहा एह चम्म वाले गंदे, चम्यार तेरे हथ्थां नाल लग्ग के आपणा आप बैठे भिटाईआ। ओने चिर नूं ब्राह्मण किहा एहदे कोलों कोई ना मंगे, एह चण्डाल नज़री आईआ। रविदास किहा तिन्नां दिनां दे पक्के हो गए ठंडे, मेरी घर वाली खुशीआं नाल पकाईआ। झोले विच्चों कढ्ढे नाल वखाए अचार गंढ्ढे, एह वस्त नाल वखाईआ। रुक्खी मुख रोटी जिस दे नाल हंढ्ढे, एह वी प्रभू दए वंडाईआ। कहार कहिण चलो चुकीए आपणे डण्डे, भज्जीए वाहो दाहीआ। असीं की करने सुक्के मण्डे, अग्गे पिण्ड गराँ बथेरे जिथ्थे मर्ज़ी लईए खाईआ। रविदास किहां तुसीं बड़े चंगे, बाहरों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्राह्मण कहे छड्डो विचार, उठो बणो पाधीं राहीआ। एस की देणा चम्यार, खाली हथ्थ बैठा डेरा लाईआ। नहीं ते मेरे नाल चलो मैं तुहानूं वखावां आपणे जजमान, जो खीरां थाले परोस मेरे अग्गे

रखाईआ। ओथे मिलण सोहणे पकवान, भाजीआं सब्जीआं अन्त कोई ना आईआ। फिर खा के असीं ओहनां सिर चढ़ाईए एहसान, दन्द घसाई मंगीए थाउँ थाईंआ। वेखो साडा ईमान, जो सिदक सबूरी रहे हंढ्ढाईआ। तुसीं किडे वड्डे जवान, नेड़े कई खेड़े नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। कहार कहिण पंडत जो रिहा आख, सोहणी गल्ल सुणाईआ। एहदे कोलों सिक्खीए जाच, मंगण किवें घर जजमानां जाईआ। ब्राह्मण किहा एह डूंग्घा राज़, छेती समझ विच ना आईआ। पहलों कुछ मैनूं दयो दान, आपणी कमाई विच्चों भेंट कराईआ। फेर मेरे नाल चल्ल के गंगा करो अशनान, द्वैत दूशना दूर कराईआ। फेर मेरे चरण घुटो आण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जे मैं हो जावां मेहरवान, फिर देवां कुछ समझाईआ। जे तुहाढ्ढे नालों पहलों मैनूं गुसे विच मिले मेरा जजमान, फेर मेरी अग्ग लग्गी ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इक कहे चलो चलीए उठ, ऐवें वक्त लँघाईआ। दूजा कहे चम्यार कोल नहीं कुछ, खाण पीण नज़र कुछ नहीं आईआ। तीजा कहे एहदे तों लईए पुच्छ, हुण जाईए चाईं चाईंआ। चौथा थोड़ा गया झुक, नेत्र नैण शरमाईआ। जिस वेले वेख्या रविदास दा मुख, विच्चों राम रूप नज़री आईआ। अग्गे होर नेड़े गया ढुक, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। साडा पहला पैंडा गया मुक्क, खाली डोली रही डराईआ। जिस घर लाड़ा गया सी ढुक, अज्ज घर ओस वज्जण धाहीआ। असीं तैनूं रहे पुच्छ, सानूं दे सच सलाहीआ। असीं किथे जाईए लुक, आपणा मुख छुपाईआ। रविदास अग्गो हो गया चुप, बचन सके ना कोई अल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। चुप्प विच्चों प्या बोल, इक्को अवाज़ लगाईआ। तुसीं क्यों बैठे मेरे कोल, आपणा वक्त गंवाईआ। उठ के जाओ अडोल, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ। चारे कहिण असीं कहार, डोली कंध उठाईआ। तेरे नाल बदो बदी लगदा जाए प्यार, अन्दरे अन्दर प्रेम वधाईआ। सानूं खड़कदी जाए सतार, जिवें कोई सुत्यां रिहा उठाईआ। साडे उते आउँदी जाए बहार, खिजां बसन्त रूप वटाईआ। सानूं नज़री आए गुलज़ार, पत डाहली फुल्ल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, भेव अभेदा दे खुल्ह़ाईआ। रविदास कहे मैं गंढ्ढु चम्म, नीच ज़ात अख्वाइंदा। ढोर ढोणा मेरा कम्म, खलड़ी तन लुहाइंदा। वसेरा करना छप्परी छन्न, महल अटल ना कोई सोभा पाइंदा। मेरे नालो कमली मेरी रंन, जिहनूं औरत लाड़ी करके जगत सुणाइंदा। ना कोई पैरी हथ्थी कन्न, ज़ेवर ज़र ना कोई वखाइंदा। उह मेरा मैं उहदा करां धन्न धन्न, दोहां दा धनाड पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। जे मेरी जाओ मन्न, मैं सच सच्च

सच समझाइंदा। हुण तुहानूं नारी शरीर मिलना ज़रूरी तन, लोकमात जन्म वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा झोली पाइंदा। चारे कहिण चम्यार की रिहा दस्स, हौली हौली सुणाईआ। चौथा कैहन्दा सब कुछ इस दे वस, बैठा पर्दा पाईआ। वेखो किडा हठ, भुक्खा हो के झट्ट लँघाईआ। जिस दे कोल पुरख समरथ, मंगण वासते झोली अजे ना डाहीआ। जलवा तक्क के नूरी अक्ख, अक्ख नेत्र नैण मिलाईआ। उस दे हुक्मे अन्दर वस, सोहणी खुशी हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। चारे कहिण कुछ लईए मंग, एहदे विच नूर नज़री आईआ। पहला कहे उह वेखो जिस वेले पौदा गंढु, गंढुं देण वाला इस दा संग रखाईआ। दूजा कहे जिस पाणी नाल पावे ठंड, सुक्का छित्तर गिला करके लम्मां लए वधाईआ। तीजा कहे पहलों आपणी नाल हथौड़ी उत्तों साफ करके गंद, फिर दोहां हथ्थां नाल जुड़ाईआ। चौथां कहे आर किस तरह आर पार रही लँघ, ज़ोर नाल दबाईआ। उस वेले मैनूं आवे इक अनन्द, जिस वेले टुट्टी गंढु वखाईआ। उने चिर नूं ब्राह्मण उठ के आया कोलों कंध, धोती झाड़ मोडे उते टिकाईआ। चम्यार एह की कीता पखण्ड, जांदे राहीआं भरम भुलाईआ। जेहड़ा कसीरा दित्ता उह कन्न नाल ल्या टंग, जंञू नाल बंधाइंदा। चलों मुकाईए आपणा पन्ध, साथीआं ताईं समझाइंदा। उने चिर नूं रविदास नूं आई खंघ,
खंघ नाल अन्दरों लाल बाहर कढ्ढाइंदा। हौली जेही फड़के छित्तरां वाली किली नाल दए टंग, जगत नेत्र वेख कोई ना पाइंदा। चारे कहार वेख होए दंग, एह की खेल रचाइंदा । असीं समझया एहदे कोल भुक्ख नंग, एह लालां ढेर छित्तरां विच टिकाइंदा। जे सानूं इक इक देवे वंड, साडा सोहणा झट्ट लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहारा वर, सिख्या इक समझाइंदा। रविदास वेख अन्दर ख्वाहिश, हस्स के रिहा सुणाईआ। एह कंगन किसे हट्ट बज़ार ना करे तलाश, ज़रगर ना कोई घड़ाईआ। ज़ौहरी रखे कोई ना पास, कीमत सके ना कोई मुकाईआ। इक्को रखयो आस, धुर दी बात सुणाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, देवे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच रखाईआ। चारे बोले हो इकट्ठे, इक आवाज़ सुणाईआ। रविदास तेरी चरणी ढट्ठे, माण मोह मिटाईआ। सानूं दस्स साचे पते, पतिपरमेश्वर दे वखाईआ। असीं वेखीए आपणी अक्खे, आखर तेरा संग निभाईआ। साडी साहिब पत रखे, जिस हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तेरे बचन होणे सच्चे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साडे काया माटी भाण्डे कच्चे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे सुणो कन्न ला, कर्मां वाल्यो दयां समझाईआ। मेरा साहिब बेपरवाह, बेपरवाह धार चलाईआ। सब दा लहिणा दए मुका, देणा

भुल्ल कदे ना जाईआ। जो इष्ट करी दुआ, रहमत इस दे उते कमाईआ। जिस ने एहनूं लयांदा उठा, मेरा यार नज़री आईआ। पंजां नूं देवां इक सलाह, सच सच समझाईआ। ओस मेरी नार वल ल्या ध्यान लगा, दुःख याद करके रिहा समझाईआ। तुसीं डोली चुकणी समझी गनाह, नार बणना खुशी वखाईआ। मैनूं मेरा हो के रिहा सुणा, मेरी आवाज़ सुणे धुरदरगाहीआ। अन्त आउणा पऊ वेस वटा, जामा नारी रूप वखाईआ। उस वेले मैं तुहाढ्ढा ज़रूर बणा गवाह, शहादत देवां भुगताईआ। मेरा पुरख अकाल तरस लए कमा, मेहर नज़र उठाईआ। तुहाढ्ढे उपर पर्दा देवे पा, एथे ओथे सदा सहाईआ। मरन तों पहलों लए बचा, बच्चयां वांग गोद उठाईआ। हरिसंगत दए समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। ब्राह्मण फिरदा तुरदा ओथे जाए आ, नौ जन्म पन्ध मुकाईआ। रविदास हथ्थ फड़के कलम छाह, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर बण मलाह, बेड़ा सब दा इकट्ठा पूर तराईआ। पंज इकट्ठे हो के रहे आख, आखर वार सुणाईआ । सानूं नहीं रहिणा याद, साडी समझ ना कोई वड्याईआ। रविदास किहा प्रभ मेरा सुणन वाला फरयाद, सुत्यां लए जगाईआ । उस नूं बड़ी सोहणी जाच, जो मैनूं जुत्तीआं गंढ्ढुण लाईआ। उस दे विच वड्डा राज़, जिस दी सार कोए ना पाईआ। उह लेखा जाणे स्वास स्वास, जुग चौकड़ी भुल्ल कदे ना जाईआ। मित्रो तुसीं रखयो आस, छित्तरां विच्चों मिली वड्याईआ। जे सच पुच्छों ओन इक वार उडाउणे पहले तित्तरां पिच्छे बाज़, शाह सवारा रूप वटाईआ। सत्तरां दे के जावे दाज, सरसे उते मोहर लगाईआ। कलयुग अन्तिम मार अवाज़, सारे लए उठाईआ। पूरब जन्म दी पूरी करके आस, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। सब दे वसे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। पूरब लेखा जाणे माथ, मस्तक लहिणा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। इष्ट ल्याउण वाला जो रविदास यार, जगत संगी नज़री आईआ। थोड़ा घर करन नाल प्यार, दिती माण वड्याईआ। जो डोली वाले कहार, हौली हौली दए समझाईआ । पंजे सुणो इक्को वार, एका हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रविदास मित्र बीबी प्यारी, प्यार नाल समझाईआ। पहला कहार जीतां आधारी, अन्तर वेख वखाईआ। दूजा कहार बीबी चरण सहारी, चरणोदक मुख चुआईआ, तीजा कहार बावी नाम करके रहे पुकारी, रसना जेहवा सुणाईआ। चौथा कहार जिस दे अन्दर दयां धारी, सुलखणी रूप वटाईआ। पंजां उते प्रभ ओडण दे अपर अपारी, पिछला लेख चुकाईआ। रविदास नूं नाल लै के खरीद लिआया बण व्यपारी, समझ किसे ना आईआ। करनहारा सच विहारी, आपणी बिध आपणे हथ्थ रखाईआ । जगत जहान तोड़ यारी, भगतां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल बेपरवाहीआ। रविदास नूं चेता आया मेरी रोटी सुक्की, अज्जे ना किसे वरताईआ। खांदया खांदया खांदया किसे कोलों ना मुक्की, आपणे भण्डारे बैठी भराईआ। उस दा आटा गुद्धा प्रेम नाल दे के मुक्की, पाणी जल हथ्थां नाल तुणकाईआ। सेवा करी नाल शौकी, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। वस्त सारी सांभ सूत साफ कीती चौकी, चौंका चौके नाल पवित वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, पिछले लहिणे रिहा मुकाईआ। रविदास कहे मेरे सच्चे रब्ब, आदि जुगादि तेरी वड्याईआ। की तैनूं खाण पीण दा हो गया लब, मेरा वेला गया भुलाईआ। मैं सुक्के टुक्कड़े जो आया छड्ड, साभ सूत के तेरी झोली पाईआ। एसे करके इक दिन पहलों तेरे नंगे देखे हड्ड, वांग ग़रीबां नज़री आईआ। अग्गे मेरे नालों रिहा अड्ड, हुण सोहणा जोड़ वखाईआ। आपणे सज्जण रिहों कढ्ढ, गुरमुख रूप वखाईआ। इक मंगा तैथों मंग, सोहणा वक्त सुहाईआ। हुण कट दे भुक्ख नंग, दुखियां दर्द वंडाईआ। तैनूं केहड़ा नहीं आउँदा ढंग, केहड़ा देवे जाच सिखाईआ। मेहर नज़र करें ते चाढ़ें रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। तेरे चरणां थल्ले वगदी दिसे गंग, गहर गम्भीर मेरे गुसाईआ। मेरा ला सच तन्द, पाणा गंडणवाला रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। साहिब मेरे तैनूं बड़ा चाहीदा सुख, सुखआसण सोभा पाईआ। मैं तेरे पिच्छे कट रिहा भुक्ख, भुक्ख विच खुशी मनाईआ। साडी वारी हो ग्यों चुप्प, मुख बोल ना कोई अल्लाईआ। असीं तैनूं रहे पुछ, दे जवाब सच गुसाईंआ। की तेरे कोल नहीं कुछ, जे है फिर बैठा क्यों छुपाईआ। अज्ज असीं तेरे नाल जाणा रुस्स, लैणा मुख भवाईआ। रात सारी तेर वंडे देणी भुक्ख, थाली परोस ना अग्गे टिकाईआ। तेरे लग्गण नहीं देणा कुछ मुख, भोग ला ना खुशी मन्नाईआ। तेरे विछोड़े अन्दर गए सुक्क, तैनूं तरस कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे इक वर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। भगवान कहे रविदास तेरा तीर, निराला नज़री आईआ। खाण पीण ना कोए सीर, मुख वस्त ना कोए टिकाईआ। रातीं सुत्यां कटां भीड़, दुखियां पीड़ आपणी झोली पाईआ। ना कोई ब्राह्मण खावे खण्ड खीर, भोजन भा ना किसे विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साढे दस देवे रस हो के वस सब किछ दए समझाईआ। ब्राह्मण फड़के डगोर हथ्थ रखाईआ। उत्तों बोदी हिले चोटी, सोहणी टिंड बणाईआ। नाल तृष्ना होवे खोटी, जिस उते भार लदाईआ। ममता होवे बहुती, माया संग वखाईआ। एथे औदयां रात नूं मिले कोई ना रोटी, भुक्खयां रैण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभना देवे माण वड्याईआ। ब्राह्मण कहे साडा की गुनाह, सच दे समझाईआ। सारे तेरी सेवा

रहे कमा, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। बच्चयां उते तरस रखा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिन्हां मीह अन्धेरे बारश सर्दी विच हथ्थ पैर लए गला, दिवस रैण इक्को रंग नज़री आईआ। मैनूं खूब रहे खवा प्या, घर घर वर्जन वड्डे छोटे आखण चाईं चाईंआ। सारा दिन दुद्ध रहे प्या, मठिआईआ नाल खवाईआ। मैं खाण पीण लई इन्हां दा बणां गवाह, शहादत आपणी नाल भुगताईआ। रविदास नूं लवां मना, जे मेरा संग रखाईआ। कहवां यार क्यों भुक्खयां रिहां मरवा, खांदयां पीदयां गाईए चाईं चाईंआ। रविदास अग्गो दए सुणा, इक्को बोल अलाईआ। जिवें मन्नदा उसे तरां लवो मना, भुक्खे रह के एहदा घट कुछ ना जाईआ। तुसीं जे कुछ खाणा तां लवो खा, आपणा पेट भराईआ। मैं ढाई टुक्कड़े सुक्के अग्गे देणे टिका, जो चमड़े विच छुपाईआ। इक्को घुट्ट पाणी देणा प्या, आपणी सेव लगाईआ। जे भुक्खा रह के मरदा दिसे खुदा, एहो जहे खुदा दी लोड़ रहे ना राईआ। असीं होण नहीं देणा जुदा, सगला संग निभाईआ। रल मिल अज्ज सारे मता लईए पक्का, सलाह इक रखाईआ। ना मन्ने ता वी लईए मना, मनसा आपणी नाल रलाईआ। साढे दस अन्दर वड़ के लईए सुणा, सोहणा नाद वजाईआ। इक अदा एहदी झोली पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, देवणहार सर्ब वड्याईआ। हरिसंगत मंगवीं दयो इक रात, मांगत हो के झोली डाहीआ। जिस विच मेरी तुहाडे अन्दर वड़े ज़ात, ज़ाहर रूप वखाईआ। अग्गे खुशीआं वाली आए प्रभात, सोहणा रंग वटाईआ। नैण नेत्र लवां झाक, धुर दी अक्ख खुल्हाईआ। रविदास दा पूरा करके वाक, भुख्यां रह के झट्ट लँघाईआ। मेरा तुट ना जावे साक, मेरा सज्जण ना मुख भवाईआ। मुढ कम्म ना आवे बिन डाल पात, बिन शाख ना कदे लहराईआ। जे कोई परसों दी रिदी रह गई भात, उह खुशीआं नाल झोली पाईआ। एह वक्खरी सब तों बात, शब्दां विच्चों शब्दी रूप वटाईआ। अज्जे कुछ होरना दी रहिंदी आस, जेहड़े बैठे राह तकाईआ। अद्धी रात तक्क सुणो ओन्हां दी बात, आपणा ध्यान लगाईआ। तुहाडी सारयां दी कद्दी करां इक्को वार याद, यादाशत इक बणाईआ। सोहणी सुचज्जी सुणाऊं आवाज़, धुर दा राग प्रगटाईआ। फिर जरूर कहोगे साडा एह बाप, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। इस नूं छड्ड के केहड़ा करीए जाप, मंगण किस घर जाईआ। जो कुछ कहे सो आपे आप, आप आपणे विच समाईआ। जे कोई एहदी वस्त लभ्भे उह गुरमुखां दी राख, जेहड़ी साहिब भेंट चढ़ाईआ। वड्डी ते अनमुल्ली दात, छोटे बच्चयां नाल रलाईआ। इकीआं वड्याई नाल करे साथ, जोड़ी जुड़दयां नाल जुड़ाईआ। हौली हौली मंज़ल पन्ध मुका के वाट, दर दरवाज़ा खोल्हे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच करनी कार कमाईआ।

* २५ माघ २०२० बिक्रमी मेला सिँघ दे कमाद विच बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर *

सुण आवाज़ ब्राह्मण दी आया डूम मर्दाना मरासी, वेख पिछला कर्म धुरदा साथी, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जिस मन्नी नहीं सी नानक आखी, वलीआं विच्चों वली अख्वाईआ। कंध्यां नालों जिस दी चौड़ी छाती, कध्धारी लोकी रहे सदाईआ। मैनूं पिछली आई याद साखी, सोहणी तरां सुणाईआ। मार एसे वल झाती, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। औखा हो के चढ़ के गया उते घाटी, पाणी खातर वाहो दाहीआ। एस मैनूं गल्ल अग्गों एह आखी, माण नाल सुणाईआ। जा मुड़ के पिच्छे लै जा खाली बाटी, प्याला भरे ना कोई सुराहीआ। नानक तपे जा के आखीं, मेरा संदेसा इक सुणाईआ। एथे कुछ नहीं तेरा बाकी, लहिणा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जे ज़ोर हैगा छाती, लै ला वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। मर्दाना अग्गों कहे बोल, मरदां वाली जणाईआ। एह पाणी थोड़ा जेहा तेरे कोल, उह भी प्रभ इट्टां विच्चों धार वहाईआ। ऐवें खाली वजावें ढोल, कूड़ा डग्गा लगाईआ। मैं उस नूं लेखा दस्सां खोल्ह, सच्ची तरां समझाईआ। तेरा हुणे कढ्ढ दए पोल, तुटे माण वड्याईआ। मैं खुश नहीं वेख के घोल, फक्करां साधां होवे लड़ाईआ। जे तूं किहा नाल मखौल, हँसी इक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। वली कंधारी हो के गुसे, गहरी अक्ख नाल डराईआ। एथे नानक वरगयां कौण पुच्छे, फिरन वाहो दाहीआ। मैथों डरदे सारे लुके, सिर ना कोई उठाईआ। कई साध मैं फड़ फड़ कुट्टे, भुजां नाल दबाईआ। कई फड़ के टंगे पुट्ठे, दोहरी देवां सजाईआ। किसे पाणी मूल ना पावां मुखे, तृखा विच तड़फाईआ। मेरे हथ्थो कोई विरला छुट्टे, जिस उपर रहम कमाईआ। जा मुड़ जा नहीं ते तेरा दाणा पाणी मुक्के, इक्को मुक्की नाल मुकाईआ। तुसीं मंग मंग खावणहारे टुक्कड़े रुक्खे, मैं भेड खा के खुशी मनाईआ। मेरे बूटे फेर ना लग्गे पुट्टे, जड़ों दयां उखड़ाईआ। वेख डूंगीआं गारा विच किन्ने सुट्टे, हड्डीआं पिंजर नज़री आईआ। मार मार के ओन्हां ठुड्डे, सुरत दिती भुलाईआ। एथे आ कोई ना बुक्के, भय मेरा सर्ब डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म वरताईआ। मर्दाने अन्दरों आई आवाज़, हौली जही सुणाईआ। इस विच कोई डूंघा राज़, करीं ना संग लड़ाईआ। चुप चपीता पिच्छे आ भाज, नानक राह तकाईआ। बाला वजावण वाला साज़, आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दरे अन्दरे अन्दर भेव खुल्हाईआ। मर्दाना सुण के आया मुड़, खाली कासा हथ्थ रखाईआ। उस दे औदयां सार रबाबी वज्जी सुर, सोहणा ताल बणाईआ। नानक निरँकार नाल गया जुड़, इक्को रूप समाईआ। मर्दाने आ के किहा ओथे

लेखा होर, मेरी चली ना कोई वड्याईआ। वली सब नूं वखावे जोर, आपणा बल जणाईआ। अग्गे ओस मानस रखे नाल ढोर, गारां विच सुटाईआ। एथे नानक तेरी लोड़, बिन तेरे पाणी हथ्थ किसे ना आईआ। नानक किहा मर्दाने ना पा शोर, पुरख अकाल खेल रचाईआ। ओने चिर नूं वली उठया दौड़, आपणा बल प्रगटाईआ। सहिज सुभाओ पत्थर दित्ता रोड़, धक्का इक लगाईआ। नानक तक्कया कर के गौर, गहर गवरा आईआ। पौदा आवे डाहडा शोर, निक्कयां निक्कयां भन्न वखाईआ। सतिगुर हथ्थ ला के किहा तेरी नहीं अज्जे लोड़, चुप चपीता बहि जा आपणी थाईंआ। उसे वेले धुर दा मन्त्र फुरया फोर, फुरना इक जणाईआ। निरगुण बण के आया चोर, नाम वरमा हथ्थ उठाईआ। जिथों पहाड़ी दा आवे मोड़, उस विच्चों सुराख दित्ता कराईआ। हौली हौली पाणी दित्ता रोड़, झरना वगे बेपरवाहीआ। मर्दाने प्याला भरया जिंनी लोड़, आ के नानक अगे टिकाईआ। नानक किहा बाल्या एहदे विच मिट्ठा रस खोर, सोहणा रस बणाईआ। बाला कहे मेरे नहीं कुछ कोल, बगली खाली नज़री आईआ। नानक किहा मैं नहीं पीणी पोहल, डूमा हथ्थ क्यों दित्ता लगाईआ। मर्दाना कहे नानक तूं आपणी गठड़ी खोल, क्यों बैठा आप लुकाईआ। नानक किहा मेरे चरणां उते डोल्ह, थल्ले बाटा होर रखाईआ। मिट्ठा रस परम पुरख परमात्मा एहदे विच देवे घोल, सोहणा रस बणाईआ। एन्हे चिर नूं वली कंधारी आया कोल, दर्शन पा नैण शरमाईआ। मेरा माफ करदे बोल, अनबोलत तेरी वड्याईआ। मैं साधां वांगू करदा रिहा मखौल, झूठयां नाल झूठी रीत चलाईआ। तूं बैठा दिसे अडोल, अडुल तेरी बेपरवाहीआ। खुशी नाल नानक आपणे बाटे विच्चों भरके दित्ता इक निक्का जिहा कौल, लै पी ले मुख लगाईआ। मर्दाने गुस्से नाल हथ्थ मार के दित्ता डोल्ह, खाली दित्ता कराईआ। मैं गया तां मैनूं अग्गों मारन लग प्या धौल, मुक्कीआं नाल डराईआ। हुण वेखा एहदा घोल, किवें करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। वेख डूम जगत मरासी, मसला गुर समझाईआ। मैं एसे कारण आया एहदी करनी बंद खलासी, बिन बंदगीउँ बंदा देवां बणाईआ। की होया जे तेरे नाल करी हासी, मेरे नाल चले ना कोए चतुराईआ। सारी भुल्ली पिछली बदमुआशी, निउँ निउँ सीस रिहा झुकाईआ। तूं इस दी खाली कीती बाटी, कौल हथ्थां नाल रुढ़ाईआ। एह अमृत रस अगम्म जो इस ने लए चाटी, तिस रसना धरत मिले वड्याईआ। मर्दाने किहा मैं नहीं मन्नणा गल्ली बातीं, मैनूं सच दे समझाईआ। सतिगुर नानक किहा मर्दानयां जिस वेले पंझी माघ दी आवे राती, राती सब कुछ दयां समझाईआ। जिस दी बणे अगम्मी साखी, पुरख अकाल दए वड्याईआ। सब दा लहिणा देणा बाकी, दूई द्वैत ना कदे रखाईआ। बेशक मैं भी तुहाढे वरगा बंदा खाकी, मेरे अन्दर निरँकार निराकार डेरा लाईआ। तूं मन्न

लै मेरी आखी, तैनूं सच दयां समझाईआ। बेशक गुनाही होवे पापी, मैं सारे दयां तराईआ। जिस तरां तुहाढ्ढी करां राखी, एसे तरां सर्ब सहाईआ। एह मन्ने रसूल पाकी, मुहम्मद अनहद राग अल्लाईआ। एह पढ़े इलम सिफ़ाती, आफ्ताबी नूर रुशनाईआ। एह निक्की जेही मताबी, शोहलया नाल जगाईआ। की जाणे परवरदगार किडा वड्डा साकी, साख्यात आपणी रचन रचाईआ। एह धूएं लावे नाल पाथी, ईंदन लकड़ां रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे विच समाईआ। मर्दाना कहे की होया जे डिगा जल, पाणी एसे दा नज़री आईआ। घट्टे मिट्टी विच गया रल, आपणा आप मिटाईआ। तैनूं मैनूं नानक काहदा सल्ल, आपे भुक्खा मरदा नाले तेह सताईआ। हुण उठ एथों चल, बणीए पांधी राहीआ। जिथ्थे कटीए पिछली रात ओथे नहीं रहिणा कल्ल, घर अगले डेरा लाईआ। नानक तूं थोड़ा थोड़ा देदां जा फल, क्यों ऐवें रिहा लुटाईआ। जे तूं नहीं जाणा ते सानूं अग्गों घल्ल, कोई जजमान लईए मनाईआ। जिहड़ा जांदयां नूं देवे अन्न जल, बिस्तरे दए विछाईआ। तेरे आखे लग्गीए रात ठर जाए काया खल्ल, ओढन नज़र कोई ना आईआ। नानक किहा मर्दानयां आ दस्सां वल, तैनूं दयां समझाईआ। नेत्र चुक के वेख उस वल, जिहड़ा विच्चों कतरा बचया नज़री आईआ। निगह मारी दीपक जोत रही बल, नूरो नूर रुशनाईआ। कुछ मर्दाना गया ढल, बाले नूं अक्ख नाल समझाईआ। ए सारयां नाल जावे रल, सज्जण दुश्मण समझे कोई ना राईआ। तूं हो जा मेरे वल, दोवें बैठ सलाह पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सुण के गल्लां वली कंधारी, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। ए कोई वली औलीआ गौंस भारी, कुतबा रिहा पढ़ाईआ। एहदे नाल लौणी चंगी यारी, यराना सोहणा दए निभाईआ। जिन मेरी इशारे नाल डक्की पहाड़ी, उंगलां नाल उठाईआ। जिन अन्दर खेल कीती न्यारी, पहाड़ां विच्चों धार वहाईआ। क्यों ना मैं एहदे चरण छुहावां रत्ती निक्की जेही दाढ़ी, जो मैंहदी नाल रंगाईआ। एहदी प्रेम प्रीती लग्गे गाढ़ी, सोहणा रूप वटाईआ। अन्दरे अन्दर सट्ट लग्गी न्यारी, चोटी चोट जणाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कारी, सीस दित्ता झुकाईआ। नानक बैठा विच नाम खुमारी, इक ध्यान लगाईआ। रबाब करे तूही निरँकारी, निरँकार तूंही नज़री आईआ। तेरी रहमत सदा न्यारी, रहमान तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम धार इक बंधाईआ। प्रेम धार बंधाई रीत, अन्तर दए जणाईआ। सुण के सोहणा शब्द संगीत, मलंग रूप वटाईआ। उठ के नच्चया भुल्ली मसीत, मसला बैठा मुख छुपाईआ। चरणां उते डिगा हो के डीठ, आपणा आप तजाईआ। नानक अचानक तेरे नाल लग्गी प्रीत, भ्यानक दे मिटाईआ। मेरे हथ्थ ना आया अमृत बाटा मैं पींदा ला के झीक, अन्दर भण्डार भराईआ। मर्दाना वट्ट के कहे कचीच,

अक्खां लाल वखाईआ। ऐवें अग्गे हुन्दे मरासी नीच, डूम कर बुलाईआ। नहीं ते मैं दस्सां कहाणी जो पिच्छे गई बीत, जिहड़ीआं गल्लां मैनूं रिहा सुणाईआ। वली किहा जो कहें सो ठीक, मेरे मौला खेल खिलाईआ। भावें हो गुसे भावें हस्स मेरी हुण लग्ग गई प्रीत, सके ना कोई तुड़ाईआ। मैनूं दस्स उह अमृत किथे किथे डुल्ला ठीक, मैं वेखां चाईं चाईंआ। मर्दाने किहा उह पथरां विच वड़ गया हो के बरीक, नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सुण कंधारी आया चा, खुशीआं विच समाईआ। रसना नाल चटीए उह थाँ, मिटी ख़ाक ना कोई वखाईआ। नाले करो हूं नाले करो हां, हां हूं पिच्छों तूं तूं सुणाईआ। बाले रबाब सतार खिच्ची करे ऊँ ऊँ, तुनक पोटे नाल लगाईआ। रमज़ नाल मिटी विच खुबिआ मूँह, आपणी सुध भुलाईआ। नानक थापी दे के किहा हुण पाक होया रूह, बुत दया कमाईआ। तेरा खुशी लूं लूं, रोम रोम वड्याईआ। वली किहा मैनूं नज़री आए अल्ला मीआं हूबहू, नूर नूर रुशनाईआ। नानक किहा याद रखीं कलयुग अन्त ज़रूर आवे तेरी जूह, आपणा फेरा पाईआ। तूं वाहवीं सोहणा खूह, गेड़ा गेड़े नाल भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण के बात कौल

५४२ वाला जल प्या हस्स, ताली हथ्थ दे नाल लगाईआ। नानक कुछ मैनूं वी दस्स, मैं चरण चुम्म के तेरे खुशी मनाईआ। ५४२

की होया जे मर्दाने मैनूं बाहर दित्ता सट्ट, धरनी उते रुढ़ाईआ। मेरा किथे गया रस, जो मिट्ठा रूप वखाईआ। एह मेरा

१६ नहीं कुछ वस, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जो हुण नहीं आया इस दे हथ्थ, वली कंधारी तों अग्गे दित्ता समझाईआ। नानक १६

किहां तैनूं बख्शया एस दा साथ, सोहणी बणत बणाईआ। काना कलम फड़के पाई विच दवात, लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। काना कहे हुण मैनूं दस्स बात, नानक क्यों मेरे उते उंगल लगाईआ। मैं भुक्खे घर नहीं रखणा वास, कूड़ा संग ना कोई निभाईआ। मैं विच्चों पोला अन्दरों मंगां दात, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। नानक सच सही दित्ता आख, एहदे नाल तैनूं दिती वड्याईआ। कलयुग अन्तिम तेरी बदले ज़ात, काना कमाद रूप वटाईआ। वली कंधारी तैनूं आपे करे अबाद, बूटा लावे चाईं चाईंआ। पुरख अकाल वेखण आवे आप, फेरा पा धुरदरगाहीआ। मर्दाने किहा की प्रभू कल्ले दा एहदे नाल साक, ओह कल्ला नज़र किसे ना आईआ। बाला कहे मैं मंगा हो के दास, थोड़ी मेरी झोली दे भराईआ। मैं सुणया श्री भगवान सद भगतां रखे साथ, सगला संग निभाईआ। नानक किहा जे सच पुच्छो उह भगतां नाल ल्याए बणा जमात, सोहणी बणत बणाईआ। अग्गों काने ल्या आख, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जे ओस वेले मैनूं कहिण कमाद, मेरी समझ ना कोई समझाईआ। नानक किहा उह आपे रखे याद, जिस हथ्थ दिती वड्याईआ। कंधारी दा डुलया धरती रस, धरनी

विच्चों गन्यां विच भराईआ। काने कमाद पूरी करके आस, लहिणा दए चुकाईआ। गुरमुख पोरी पोरी मट्टी मट्टी दा लैण स्वाद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। वली कंधारी फेर कहे मेरा रसूल पाक, बेपरवाह नज़री आईआ। जिस दा कदे ना टुट्टे साक, साचा नाता रिहा जुड़ाईआ। बाला मर्दाना दोवें रहे आख, सच्ची कहाणी रहे समझाईआ। हुण पंडत ब्राह्मण तेरे मंगण दी औदी जाए रात, साडा पिछला पन्ध मुकाईआ। असीं सिरफ दरस्सण आए खास, एह ओहो दाता बेपरवाहीआ। जिस दी नानक रखी आस, निरगुण निरवैर नूर रुशनाईआ। डूमां कोलों ब्राह्मणां सिक्खी जाच, ब्राह्मणां कोलों डूम करन पढ़ाईआ। जजमान मंगण दी आदत एहनां खास, मंगदयां शरम ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डूमां कोलों ब्राह्मणां जोड़ जुड़ाईआ। डूम मरासी हो गए चुप्प, आपणा हाल सुणाईआ। अग्गे हुण ब्राह्मण कोलों पुच्छ, की आपणी मंग रखाईआ। रविदास कोलों प्या उठ, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। चार कहार कहिण साडा लेखा केहड़ा गया मुक्क, लहिणा देणा बाकी नज़री आईआ। मित्र कहे मेरा साक अजे ना गया छुट, मुख सक्या ना कोई भवाईआ। अजे अद्धा विचला फोलना दुःख, जेहड़ा सके ना कोई समझाईआ। की होया जे माँ जननी बणके रखे कुख्ख, मुंमां सीर रस प्याईआ। सानूं अजे उह नहीं मिल्या सुख, जेहड़ा चम्यार दित्ता समझाईआ। अज्जे असां वेखणा सुक्का खांदा टुक्क, रुक्खी रोटी खा के खुशी मनाईआ। भुक्खा रह के जे फेर आखू पुत्त, बच्चयां वाग बुलाईआ। फेर मंगांगे की कुछ, झोली आपणी डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वली कंधारी एह तेरा धन, जिस नूं खा ना विगढ़े मन, अमृत तृप्त रहे तन, रस रसां विच्चों रस नानक नज़री आईआ। वलो नालो एह चंगा, चंगी तरह्रां समझाईआ। बिन बंदगीउँ बणया बंदा, बन्धन रिहा तुड़ाईआ। जन भगतां प्रभ आप वंडा, सोहणी वंड वंडाईआ। खुशीआं नाल पहलों हथ्थ विच फड़के वांग डण्डा, कानयां वांग हिलाईआ। फेर सब ने रस माणया इक्को जेहा चंगा, मंदा कहि ना कोए सुणाईआ। ब्राह्मण याद आ गई गंगा, धोती मोडे उत्तों लाहीआ। मैं केहड़े बहिवां कन्ढा, आपणा आसण लाईआ। जिथ्थे मैनूं सारे दे के जाण मण्डा, मण्डा भोरा भोरा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे विच्चों सब दा लेखा रिहा वरताईआ। कमाद कहे मैं काना जड़, गुरमुख गंडास्सयां नाल कटाईआ। नाले तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहे पढ़, सोहँ रूप समाईआ। मैं किहा मेरी एहनां नाल टुट्टी बन्न, प्रभ जोड़ी आप जुड़ाईआ। जिथ्थे मैनूं पीड़ के गुड़ बनाउणा घन, कड़ाहे विच तपाईआ। हुण मैं गुरमुखां ठंडां करां मन, आपणा रस प्याईआ। एहना नाल मिल के मैं दर करां धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। बहुतयां सिखां मैनूं हथ्थां नाल आंदा भन्न, हुलारा इक्को वार लगाईआ। मेरे

ओसे वेले खुल्ह गए कन्न, नेत्र चारों तरफ़ उठाईआ। जां वेख्या नज़री आया श्री भगवंन, जिस अगली पिछली बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साहिब हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख प्रेम नाल करन टोटे, मेरीआं वंडीआं रहे पाईआ। जिस तरहां संगत विच बच्चे निक्के वड्डे छोटे, इक्को जेहा मेरा रूप बणाईआ। मैनूं छिल के हथ्थां नाल पोटे, सोहणा साफ कराईआ। मुख विच पौण हो के सौखे, दन्दां नाल दबाईआ। लाह के छिलका फिर सिख कुछ ना सोचे, चिथ चिथ चूपे वाहो दाहीआ। मेरे रस विच्चों घुट औण बहुते, हरिजन खुशीआं नाल अन्दर लँघाईआ। मेरे मुहम्मद नालो चंगे बण गए रोज़े, ईद नयाज नालो वड्याईआ। मेरा छिलका की हुण सोचे, सोच समझ रही ना राईआ। गुरसिख अकट्ठे हो के आ गए बहुते, वली कंधारी वेख वेख आपणी खुशी मनाईआ। जिन्हां पिच्छे मैं लौंदा रिहा जोते, सोहणा हल चलाईआ। पाणी देदां रिहा बहुते, रात अन्धेरी खूह वगाईआ। ओ मेरे पिछले सारे कढ्ढ जा रोसे, गुसा गिला ना कोई रखाईआ। पुरख अकाल नाल मिलके पहुंचे, आए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रस इक्को इक वखाईआ। कोई कहे गंना मैनूं आखण करड़ा, डाहडा रहे जणाईआ। मैं कहां मैनूं दन्दा हेठां दयो रगढ़ा, मेरा दुःख रहे ना राईआ। मैं चंगा गुड़ नालों शकरा, शुक्रिया तुहाड्डा रिहा सुणाईआ। जिन्हां मेरा लेख बणाया आ के अक्खरां, अखीर आपणे नाल रलाईआ। मैनूं प्रगट कीता विच्चों पत्थरां, जिथ्थे मर्दाने कौला दित्ता रुढ़ाईआ। मैं मारदा रिहा सी ऐवे टक्करां, आपणा आप गंवाईआ। हुण वली कंधारी मेरा सांभ के वत्तरा, सोहणा खेत बणाईआ। मैं सारयां नालो हो के वक्खरा, गुरमुखां अन्दर बहिके डेरा लाईआ। हुण वेखो मेरा नखरा, मैं नच्चां टप्पां कुद्दां चाईं चाईंआ। अज्जे वी ब्राह्मण दिसे मकरा, गठड़ी आपणी बंद रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गंना मट्टी पोरी जड़ बूटे जावे बौहड़ी, लेखा दे दे खुशी मनाईआ।

५४४ १६

*** २५ माघ २०२० बिक्रमी बीबी सलखणी दे घर अलड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ***

डोले वाली बहू कर गई विहार, अन्दरे अन्दर प्रेम वधाईआ। सज्जी बांह नालों कलीरा दित्ता उतार, रविदास वल ध्यान लगाईआ। संगदी संगदी करके निमस्कार, भेंटा दित्ता चढ़ाईआ। मेरी सुण पुकार, पुकार सुण सच्चे माहीआ। रविदास उसे वेले ल्या उठाल, आपणा हथ्थ लगाईआ। किली नाल टंगया आण, उपरों नीचे नूं लटकाईआ। आप फड़ के आपणी

आर, पाणा गंढुण लग्गा चाईं चाईंआ। उधरों ब्राह्मण धोती बोदी आ संवार, गल्लां रिहा जणाईआ। हुण चलीए गंगा दुआर, मईआ दर्शन पाईआ। चम्यार पुच्छे कर प्यार, की कुछ भेंट चढ़ाईआ। ब्राह्मण गठड़ी खोल्ह दित्ता वखाल, अड्डो अड्डी गंढ्ढां दयां जणाईआ। वेख मेरे जजमानां दित्ता दान, जेड़ा गंगा माता गंगा विच सुटाईआ। रविदास किहा मैं होवां आप हैरान, हौली जेही जणाईआ। जे घर होवे पिच्छे पीण खाण, मैं भी देखां चाईं चाईंआ। ब्राह्मण किहा वाह तूं भी बण मेरा जजमान, कुछ मेरी झोली पाईआ। मैं गंगा देवां दान, तेरा नाउँ कहि के विच सुटाईआ। रविदास कलीरे वल मारया ध्यान, विच्चों नोजवान जोबन नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। रविदास वेख अक्ख, मौली तन्द रिहा कुरलाईआ। सब तों पहलों मेरा हक़, सच दे वड्याईआ। बद्धा कसीरा कहे मैं लम्मकदा गया थक्क, मेरा भार ना कोए वंडाईआ। मेरी कीमत पैणी नहीं किसे हट्ट, उत्तों मेरा सिर दित्ता कटाईआ। इस बंदश विच्चों कर वक्ख, रविदास तेरी सरनाईआ। मैं दुक्खां भरया रिहा दस्स, दुखियां दर्द लै वंडाईआ। चम्यार हत्थ उठाया झट्ट, तिक्खी रम्बी नाल मिलाईआ। इक्को झट्टके नाल कट, आपणी तली टिकाईआ। खुशीआं नाल प्या हस्स, बुल्हां मुसकराईआ। ब्राह्मण अग्गे आ के वेख तैनूं देवां दस्स, सच सच्च समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा

५४५ खेल रचाईआ। कसीरा कहे एह झूठा ब्राह्मण, ब्रह्म रूप नज़र ना आईआ। रविदास कहे मैं बण के जामण, तैनूं हत्थ ५४५

१६ फड़ाईआ। ब्राह्मण कहे मैं बिन पैसिउँ टक्यों कदे नहीं जपयां राम रामण, कौडीआं पिच्छे आपणा ना वक्त गंवाईआ। रविदास १६

धोती दा फड़ के दामण, हलूणे नाल हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। ब्राह्मण कहे उह चम्यारा कोडी, मेरे कम्म किसे ना आईआ। ना तूं मेरे हत्थ लाया गोडी, ना माण ताण रखाईआ। ना तूं मेरी उत्तों हिलदी वेखी बोदी, जो इशारयां नाल समझाईआ। तैनूं अज्जे ना आई सोझी, की ब्राह्मण भेंट चढ़ाईआ। बण के दलिद्दरी रोगी, भुख्या भुक्ख मेरी झोली पाईआ। मैनूं मत्था टेकण लोकी, गठड़ीआं भार बंधाईआ। तूं किथों रखी मेरे जोगी कौडी, कोढ़या तैनूं देंदया शरम ना आईआ। रविदास कहे मेरी मइया दी एहो लै जा गोदी, निउँ के वास्ता पाईआ। जे तैनूं दिसे खोटी, वापस देणी फड़ाईआ। जे गंगा माता कहे मेरे घर दा सुच्चा मोती, माणक रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। ब्राह्मण फड़ हत्थ कसीरा, मत्थे तरोउड़ी पाईआ। ना कोई मिलख दिती जागीरा, ना कोई झोली दिती भराईआ। ऐं दिसे जिवें एहदी गंगा माँ अग्गे डाह के बैठी पीड़ा, सोहणा सुभर सालू सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। ब्राह्मण कहे मेरी

जुत्ती दे दे जो दिती गंढु, मैं चरण देवां टिकाईआ। जोड़ा दे के रविदास टका ल्या मंग, अग्गे आपणा हथ्थ डाहीआ। ब्राह्मण पासा वट्ट के रिहा खंघ, वेखो की करे सुदाईआ। एहनूं पता नहीं ब्राह्मण हुन्दा बख्शंद, बख्शिश झोली पाईआ। ना कुछ खवाया प्याया ना घसाई दिती दन्द, दच्छना होर ना नाल रलाईआ। मैनूं किवें पवे ठंड, मेरा अन्दर मारे धाईआ। की होया जे मेरी जुत्ती दिती गंढु, होर कुछ भेंट ना दित्ता चढ़ाईआ। मैं तेरे ते खुश नहीं अनन्द, ऐवें बहि की वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईआ। ब्राह्मण उठ के हो त्यार, आपणी लई अंगड़ाईआ। इशारे नाल कहे आउ कहार, यार चलीए चाईं चाईंआ। तुहानूं जजमानां घरों देवां खवाल, खीर कड़ाह मिलाईआ। नाले मैनूं खोल् के दस्सो आपणे रुमाल, की कुछ इनां विच बंद कराईआ। इक कहे मेरे कोल रुपीए चार, सोहणी गंढु रखाईआ। दूजा कहे मेरे कोल ढाई ढाईआं दा कीता उधार, दोवें जुड़ के पंज रकम जणाईआ। तीजा कहे मैं सत्त रुपीए घरों लै के आया बाहर, आपणी गंढु रखाईआ। चौथा कहे मेरे कोल इक चवंनी जेहड़ी रखी संभाल, खोटी खरी समझ ना पाईआ। ब्राह्मण कहे जा शोहदे कंगाल, तेरी गल्ल मोहे ना भाईआ। इन्हां दे चंगे लग्गण रुमाल, जिन्हां माया नाल रखाईआ। उह वेखो हलवाई दी आई दुकान, अधवाटे डेरा लाईआ। सवा सवा रुपीआ कर के दान, कुछ मैनूं दिउँ खवाईआ। जिस वेले अग्गों मेरा मिलू जजमान, तुहाढ्ढे पल्ले देवां भराईआ। सुण बात कहार होए हैरान, इक दूजे नाल करन सलाहीआ। एह ब्राह्मण बड़ा शैतान, सानूं विच्चों नज़री आईआ। दूजा कहे करो एतबार, थोड़ा थोड़ा दईए खवाईआ। चवां रुपीए दो कढ्ढे बाहर, इशारे नाल वखाईआ। ब्राह्मण कहे एहदे नाल ना चले भण्डार, मेरा भण्डारा बेपरवाहीआ। पिछलीआं वहीआं रिहा वखाल वेखो जजमानां की की मेरी सेव कमाईआ। चारे कहिण एहनूं दे दयो दान, आपे शर्मिन्दा हो के फिर साडी झोली पाईआ। चवां रल्ल के सारे पैसे दित्ते नकाल, ब्राह्मण हथ्थ फड़ाईआ। ब्राह्मण हो के दयाल, कहे वाह वाह तुसीं ही जजमान नज़री आईआ। तुसां मैनूं रज्ज के दित्ता खवाल, हुण पिच्छे मुड़ो मेरे भाईआ। जा के मिलो यार चम्यार, जो तुहाढ्ढे वरगां भुक्खा नंगा नज़री आईआ। ब्राह्मण अग्गा पिच्छा वेख के मारी छाल, हथ्थ जंजू उते फिराईआ। वेखो मैं कीता बड़ा कमाल, चौहां ठग्ग आपणी झोली लई भराईआ। विच्चों थोड़ा जिहा फुल्ली भर के थाल, गंगा विच सुटाईआ। जे उथ्थे कोई फिरदा तुरदा मिल्या जजमान, ढाई ढाई ओथे मंग मंगाईआ। जेड़ा कसीरा दित्ता चम्यार, कौडी रूप नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचन रचाईआ। चार कहार दे के दान, विचे विच पछताईआ। किथों ब्राह्मण चन्द्रा मिल्या आण, साडीआं गंढां गया खुल्हाईआ। जे घर जांदयां नूं धी वालयां घर बैठी होए

मुकाण, साडी सार कोए ना पाईआ। चलो चल्लीए पुछीए रविदास चुमार, जे कुछ सानूं दए समझाईआ। सानूं ब्राह्मण करके गया कंगाल, ठग्ग बण के ठग्गी गया लगाईआ। जे सानूं इक इक रोटी दे दए नाल दाल, साडा दलिद्दर दए गंवाईआ। फेर फड़ लईए आपणी चाल, भज्जीए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता रिहा कमाईआ। चारे मुड़ के लै के आए डोली, खाली दिती रखाईआ। हौली हौली आ के मारी बोली, रविदास रहे सुणाईआ। साडी गठड़ी ब्राह्मण फोली, खाली हथ्थ गया कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की खेल रिहा वरताईआ। रविदास चुप्प विच्चों प्या हस्स, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तुसी क्यों पए उहदे वस, एथो मेरा संग तजाईआ। हुण की देवां दस्स, सब कुछ आए लुटाईआ। मैनूं दिखाउ दोवें दोवें हथ्थ, नेत्र नैणां वल तकाईआ। चार कहार करन झट्ट पट्ट, बाहवां अग्गे वधाईआ। चम्यार वेख्या इन्हां दा लहिणा कुछ हक़, मेरे वल नज़री आईआ। इक ते रम्बी इक ते आर दिती रख, दोहां दोहां हथ्थां दए वड्याईआ। किरपा करे पुरख समरथ, होए सद सहाईआ। चारे कहार चरणी डिगे ढट्ठ, निउँ के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। इक कहे कुछ करीए सेवा, भुक्खयां दए रजाईआ। दूजा कहे सेवा विच्चों मिलदा मेवा, पिच्छे गए समझाईआ। तीजा कहे एहदी वड्याई करे जेहवा, वाह वाह कर सुणाईआ। चौथा कहे एहदे अन्दर अलख अभेवा, मैनूं बैठा नज़री आईआ। जे मेहर नज़र करके साडे मस्तक लावे थेवा, कौस्तक मणीआं रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। इक कहे चरण लईए घुट्ट, हथ्थ हौली जेही लगाइंदा। दूजा कहे एहदे बणीए पुत्त, पुत्तां वेख तरस कमाइंदा। तीजा कहे फड़के बांहों मंगीए कुछ, कुछ ना कुछ झोली दए पाईआ। चौथा कहे एह सति सरूप दिसे सच सुच, सति सतिवादी नाल समाईआ। रल के चारे वेखीए एहदा मुख, मुख विच तू ही तू ही राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी कार रिहा कमाईआ। चारे कर सलाह, सोहणा मता पकाईआ। सानूं भुख्यां कुछ खवा, तृष्ना दे मिटाईआ। भावें पाणा गंढुण ला, ढोरा लै सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रिहा चुकाईआ। रविदास कहे तुसीं चारे सच्चे, मैनूं सच नज़री आईआ। बेशक रसना नाल कहो तेरे बच्चे, फिर मापया नालों ना होए जुदाईआ। हुण रोटी कारण मारों भच्चे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। एसे करके लगदे हच्छे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेखो फिर ना बणयो कच्चे, गुथ्थी विच्चों कढ्ढ के कच्चा तन्द तोड़ वखाईआ। सारे रह गए हक़े बक्के, की चम्यार खेल रचाईआ। कच्चे नूं फड़के दोहां हथ्थां वट्ट घत्ते, दन्दां विच लै के पाणी नाल सूता खूब

लगाईआ। फिर खिच के वेख्या खूब पक्के, तन्द टुट्टदा नज़र कोए ना आईआ। रविदास किहा एहो जिहा नफे खट्टे, झोली लए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कहार कहिण सब कुछ लईए मन्न, मणसा रहे ना राईआ। भुक्ख नाल सुक्कदा वेख तन, दुःख रिहा सताईआ। सानूं खवाल कुछ अन्न, धीरज रूप वटाईआ। जे वेखीए तेरी खाली दिसे छन्न, तवा परात ना कोई सहाईआ। साडा दुखी होया मन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक दे सच्चा वर, साडी आसा पूर कराईआ। रविदास अन्दर आई खुशी, खुशी नाल जणाइंदा। मेरे कोल रोटी सुक्की, जो आयां गयां झोली पाइंदा। दिन सु रैण कदे ना मुक्की, घाटा नज़र कोए ना आइंदा। हथ्थ लाया गंढुदे जुत्ती, उगलां नाल फड़ाईआ। कहार कहिण एहनूं मारो मुक्की, जो साडा जन्म बदलाईआ। रविदास कहे मैं तुहाढ्ढे नालों दुखी, दुखियां दर्द वंडाइंदा। एधर वेखो सुक्की दी बणी पूरी लुच्ची, जेहड़ी ब्राह्मणा कोलों छुपाइंदा। एधर वेखो फल फुलवाड़ी फुट्टी, सोहणा फल लगाइंदा। एधर वेखो थाल परोस्सया विच सुची, सोहणे वस्त्र उते टिकाइंदा। एधर वेखो टीसी सब दे नालों उच्ची, छत्ती भोजन सीस निवाइंदा। एधर वेखो एह चोग ना कदे नखुट्टी, अतोट अतुट वरताइंदा। कहार कहिण हुण ताअ दयो मुछी, खाणा बहुता नज़री आइंदा। रविदास फड़ के आपणी गुच्छी, विच्चों इक चावल बाहर कढ्ढाइंदा। जिहड़ा उखली विच ल्या कुट्टी, मोहली नाल छड़ाइंदा। एस नाल लख चुरासी रज्जे भुक्खी, जे साहिब मेरा दया कमाइंदा। एह मैं सांभ के रख्या गुट्टी, हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। गुजारा करां गंढु के जुत्ती, टका टका मंग मंगाइंदा। अगों कहार रहे पुच्छी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। कहार कहिण ल्या खाईए खाणा, बैठे चौतड़ा लाईआ। रविदास कहे गाओ गाणा, तूं देवणहार बेपरवाहीआ। कहार कहिण सानूं दे पीणा, ठंडा जल भराईआ। रविदास कहे प्रभ नूं कहो असीं मस्कीनां, निर्धन नज़री आईआ। इधर वेखो चौलां दा बणया चीणा, निक्का निक्का रूप वटाईआ। इक इक दाणा सब दा ठांडा करे सीना, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। फेर भुक्ख ना लग्गे महीना, बुत्तीआं करो चाईं चाईंआ। तुसां थोड़े दिन जीणा, वेला अन्तिम आईआ। पाटा चीथड़ किन्हू ना सीणा, टुट्टी गंढु ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। यार कहे दस्स रविदास, की गल्लां नाल परचाईआ। तेरे कोल की रास, केहड़ी वस्त वरताईआ। तैनूं किवें गया भास, इन्हां अग्गा नेड़े आईआ। घड़ी दी घड़ी तेरे नाल दित्ता साथ, कोल बहि के झट्ट लँघाईआ। इन्हां दी ऐवे खोटी करें वाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर लेखा लेख वेख वखाईआ। रविदास कहे वाट नहीं खोटी, खोट्टयां

खरे बणाईआ। इन्नां मंगी मेथों रोटी, मैं रोटी नाल रजाईआ। इन्नां चवां गल्ल सोची, जेहड़ी तैनूं इक समझाईआ। बाकी सारे मैनूं समझण मोची, इन्नां विचो इक मेरा ध्यान लगाईआ। तिन्नां गल्ल ना दिसे औखी, सौखी धार समझाईआ। इनां पौड़ी चढ़ना चौथी, चौथा डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। चार कहार सुणदे रहे चोरी, कन्न रविदास वले लगाईआ। सानूं दिसे अन्दर दा घोरी, गुझी रमज़ सुणाईआ। बेशक एहदे हथ्थ विच आर डोरी, रम्बी नाल रखाईआ। एह छित्तर टुट्टे रिहा जोड़ी, रीझ नाल गंढु वखाईआ। जे साडी अग्गे उमर रह गई थोड़ी, इस दे लेखे पाईआ। परां सुट्टो खाली डोली, डोली विच बहिण वाली जगत नज़र ना आईआ। एह सुण के उच्ची बोली, रविदास दा यार नेड़े आईआ। कारज रास ना आवे बिनां वचोली, मैनूं वचोला लवो बणाईआ। मैं एहदा पिछला बेली, वेले कवेले सच संग रखाईआ। एह चम्यार ते मैं तेली, ज़ात दोहां दी विच ना कोए वड्याईआ। मैनूं आपणी बणाओ सहेली, कहारो तुहाढ्ढी की चतुराईआ। तुहाढ्ढी ब्राह्मण लुट्ट के लै गया थैली, मूर्खो समझ कोई ना आईआ। तुहाढ्ढी डोली दिसे वेहली, सुहागण बहि ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ। चारे कहिण आ जा नेड़े, पंजां विच परमेश्वर नज़री आईआ। सारे रविदास दे पईए खहिड़े, इक्को आवाज़ सुणाईआ। सानूं चढ़ावे ओस बेड़े, जेहड़ा धुर दा मलाह नज़री आईआ। असीं भुल्ले भटके आ गए तेरे डेरे, तेरे नाल प्रेम रखाईआ। साडे होर नहीं कोई नेड़े, साक सज्जण संग ना कोई वखाईआ। झूठे मित्र वेखे बथेरे, लग्गी तोड़ ना कोए निभाईआ। हुण करीं ना हेरे फेरे, सच सच्च देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। रविदास कहे सुण यार, तैनूं समझ किथों आईआ। एह किधर दे चार कहार, बैठा नाता नाल जुड़ाईआ। पंजे कहिण साडा बण गया प्यार, सोहणी बणत बणाईआ। इक ने फड़ के तिक्खी आर, रम्बी उंगली उते लाईआ। दूजे खिच के कड्डी बाहर, सोहणी धार खून वखाईआ। तीजे करके सच प्यार, आपणा अगूंठा उते छुआईआ। चौथा बांहों फड़ उठाल, मस्तक टिक्के सब दे लाईआ। पंजवां कहे वेख रविदास यार, तेरे नाल प्रीत लगाईआ। जे मेरे आउँदे दुआर, कोलू वाह के तेल नाल देंदा नुहाईआ। तेरी रम्बी होई ख़बरदार, आपणा हाल सुणाईआ। तेरी आर हो के आर पार, साचा रंग चढ़ाईआ। तूं चम्यारां वरगा नहीं चम्यार, तेरी चमड़ी विच नूरी चमक इलाहीआ। तेरा नज़री आवे उह दीदार, जिस दीदार विच्चों ईद चन्द रुशनाईआ। जे भुल्ले भटके आए कहार, दर बैठे तेरे डेरा लाईआ। इक दर्दी ते कर प्यार, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। रविदास कैहन्दा छड्ड यार, केहड़ी गल्ल सुणाईआ। एह की जानण रब्ब दी सार, परमात्मा कवण अख्वाईआ।

चौथा रोया भुब्बां मार, तिन्नां रिहा रलाईआ। चारे कट्ठे हो के करो पुकार, मिले बेपरवाहीआ। पंजवां हौली जेही दए सखाल, गुझी रमज़ लगाईआ। इस नूं करो दयाल, इस तों परे नहीं बेपरवाहीआ। एहदी रम्बी विच प्यार, एहदी आर विच दतार, इस दे धागे विच आधार, उपर तों पार कराईआ। जन्म मरन तों कढ्ढे बाहर, कर्म कर्म दा रोग नवार, सोग चिन्ता दए गंवाईआ। मैं कोलू वौहण वाला करां ख़बरदार, तुसीं लाड़ीआं चुकण वाले अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। उह जे कहारो तुहाड्डा बण जाए इक वार, डोल आपणी विच रखाईआ। तुसीं समझो मेरा हो गया यार, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। उधर ब्राह्मण वेखो की करे कार, गंगा कनारे डेरा लाईआ। जो जजमानां तों भेंटा लयांदी नाल, गंगा नूं वखा वखा फिर आपणी गठड़ी विच बंधाईआ। जिहड़े कहारां दे लटके रुमाल, सोहणे उते रिहा विछाईआ। औदया जादयां नूं वाजां रिहा मार, कुछ पुच्छो मेरे भाईआ। पत्री दे पत्रे रिहा वखाल, कुण्डलीआं नाल समझाईआ। बारा रासी कर त्यार, मेख कुम्ब दए वड्याईआ। जे कोई फस जाए आण अञ्याण, सब कुछ लुट्ट के आपणी झोली पाईआ। हथ्थ ते हथ्थ रख के कहे जा मेरे जजमान, घर जांदयां नूं गंगा माता तेरे घर माया ढेरी दए लगाईआ। खाली हथ्थ उस नूं अग्गे ना मिले पकवान, पेट धीरज ना कोई रखाईआ। राही कहे ब्राह्मण बड़ा शैतान, सरारती कट के लै गया मेरी खाली गंढु कराईआ। ब्राह्मण मन्दिर दी गुट्ठे हो के ओहले मकान, आपणा पैसा टका गिणे चाईं चाईंआ। इक दिन विच चालीआं दा भान, चाली पैसे नाल रलाईआ। फिर कहे जे पंज सत्त होर मिल जाण जजमाण, गंढ्ढां भारी लवां बणाईआ। जिस वेले मिशराणी अग्गे रखां आण, उह साड़ी लै के भज्जे वाहो दाहीआ। फिर मैनूं खुशीआं नाल खवाए पकवान, परोस थाले खीर टिकाईआ। मैं नहा धो करां अशनान, नाले चोरी नाले हराम, नाले ठग्गी गठड़ी विच रखाईआ। मेरा सुफल होवे काम, लेखे चढ़े निष्काम, आसा पूर कराईआ। मेरा बणया रहे ईमान, सिदक भरोसा एहो जेहा रखाईआ। गिटीआं गिणदयां रात बीती आण, सूरज देवता आपणा नूर चमकाईआ। ब्राह्मण उठ के कहे चलो गंगा करीए अशनान, लख लख शुकर मनाईआ। जा के चम्यार दा कसीरा करां दान, ऐंवे भार चुकाईआ। हौली हौली कन्ढे पहुँचया आण, तट किनारा सोभा पाईआ। उच्ची बोल किहा ज़बान, सुण मेरी गंगा माईआ। रविदास चम्यार ने दित्ता निशान, तेरी कीमत कौडी पाईआ। विच्चों अवाज़ आई हाए मेहरवान, मेरा भगत मेरी याद रखाईआ। बांह कढ्ढ के किहा सुण जवान, सोहणी तरां समझाईआ। उहदा कसीरा मैनूं परवान, मेरा कंगन देणा चाईं चाईंआ। ब्राह्मण वेख होया हैरान, एह मुटयार जोबनवन्ती किथों नज़री आईआ। जे एहो जेही मैनूं मिल जाए नार, जीवण खुशीआं नाल हंढ्ढाईआ। एहदे कोल लखां करौड़ां दा माल, जेहड़ा बाहवां नाल लटकाईआ।

मैं फिर ना रहां कंगाल, भुक्ख नंग नज़र कोए ना आईआ। धोती बन्नके सवा आपणे विच मकान, लत्त उते लत्त टिकाईआ। रोज़ नित नवां मिले पकवान, दिवस रैण खावां चाईं चाईंआ। फेर कहां तूं मेरा भगवान, इक्को मेरे वंडे आईआ। मेरे वल्लो सारा भुक्खा मरे जहान, मेरे घर विच भण्डारा सोहणा देणा भराईआ। मैं वड़ा खुशी हो के कहूं मेरा एह जजमान, मैनूं लोकी भगवान कहि कहि सीस निवाईआ। मैं झूठ नहीं बोलया तुफान, आपणे दिल दी गल्ल सुणाईआ। मैं मिशराणी लै के जाउँ पान, सपारी नाल रलाईआ। उह मेरे खुशीआं नाल गाऊं गाण, मेरा पती बेपरवाहीआ। जेहड़ा लुट्ट लिआया दुकान, खुल्ले हथ्थ वरताईआ। फिर मैं कहूं तूं वी मेरे वरगा कर इमान, सच सच्च दृढ़ाईआ। आंढीआं गुआढीआं घर कदी ना देवी पीण खाण, असीं मंगण वाले देण विच बदल ना जाईआ। उधर चार कहार खुशी मनाण, पंजवां यार रिहा समझाईआ। रविदास कुछ ता दे ज्ञान, थोड़ा थोड़ा समझाईआ। मरन पिच्छों किवें मिले भगवान, पहलों नज़र क्यों ना आईआ। की उह वड्डा छोटा के बाल अञ्याण, के सुत्या वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी खेल रचाईआ। सुण के गल्लां डोली पई रो, खाली दए दुहाईआ। मेरे नाल की होया धरो, बौहड़ी बौहड़ी रही सुणाईआ। मेरा छड्ड के नाता मोह, मुहब्बत लई तुड़ाईआ। अजे पैंडा घर दा रहिंदा पंज कोह, जिथ्थे मेरा आसण लाईआ। मेरा कपड़यां नाल दरवाज़ा दित्ता ढो, लाल रंग फुलकारीआं उते छुहाईआ। मेरे कालजे पैंदी खोह, धीरज नज़र कोए ना आईआ। एह की गया हो, मेरा नाता सारे गए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज धार चलाईआ। डोली नूं कहिण उसे दे डण्डे बांस मुट्ठी, गंढु गंढु कुरलाईआ। सानूं पुच्छ जिहड़े तैनूं फिरदे चुक्की, आपणे नाल गंढु बंधाईआ। तूं मोडयां उते चढ़ी अजे ना अक्की, थकावट नज़र कोए ना आईआ। वेख तेरे अन्दर बहिण वाली किथे गई छड्डु के हथ्थों पक्खी, जिहड़ी गर्मी विच हलाईआ। सानूं सच सच्च दस्सी, आपणा राज़ समझाईआ। तेरी डोली विच कोटन चढ़ गए वेहदयां अक्खी, नाता जगत कन्त नाल जुड़ाईआ। उह कमलीए तूं अजे किसे नूं नहीं मिलाया कमलापती, पतिपरमेश्वर प्रनावण किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। दुनिया नूं कहिण सुणदे रहे रस्से , सोहणी तरॄां समझाईआ। वेखो असीं प्रेम नाल कसे, बन्धन दित्ता जड़ाईआ। दो दे चार चार दे अड्डे, अड्डा तत्ता नाल रखाईआ। सेवा करदे अजे ना थक्के, थकावट विच ना कदे आईआ । कदी सौहरे कदी पेके, आईए जाईए चाईं चाईंआ। पहलों सानूं कोई देखे, ध्यान डोले वल लगाईआ। फेर पल्लू उत्तों लपेटे, पर्दा दए चुकाईआ। नव जोबन लाड़ी अन्दर मुख लुका के बैठे, सिर गोडयां विच टिकाईआ। जे कोई आए मुख वेखे, नीवें नैण करके चोरी

जिहे अक्ख उठाईआ। मैं कुँवार कन्यां छड्ड के आई पेके, सौहरयां घर शरम हया मेरे उते छाईआ। आपणयां हथ्थां नूं लपेटे, मैंहदी रंगले बाहर ना सके कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। रस्सीआं नूं कहे मरोड़ी वाली गंढ्ढ, उच्ची हो सुणाईआ। मेरे बिनां तुसीं सारे हो जाओ अड्ड अड्ड, मेला ना सके कोए मिलाईआ। मैं तुहाढ्ढे कढ्ढे कीते हड्ड, हड्डीआं जोड़ जुड़ाईआ। तुसां मेरे उते भार दित्ता लद्द, अपणीआं भुजां खुल्ल्हाईआ। अगली पिछली पार करदे जाओ हद्द, बेगानी हद्द विच मैनूं साह दवाईआ। मैं ओथे गावां छन्द, वाहवा प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। एह सारे तेथों होए अलग, पेट कारण डोली कंधे रहे उठाईआ। जेहड़ी एस दे विच बैठी सज, सोहणा रंग चढ़ाईआ। कज्जल पा के नेत्र अक्ख, धार नाल मटकाईआ। बिंदी टिक्का ला के लाल बुल्ल कीते झट्ट, सुरखी हट्ट बजार मंगाईआ। जिस वेले वेखां प्रभ नालों बैठी वक्ख, ध्यान जगत विच लगाईआ। जिस दे पिच्छे मापिआं डोली दित्ता घत्त, उह कन्त अन्त ना तोड़ निभाईआ। पता नहीं घर जांदी नूं जावे छड्ड, जां मुकलावे पहलों नाता जाए तुड़ाईआ। जां इक दो धीआं पुत्तर निशान जाए रख, जां जांदा जांदा आपणी जायदाद दा मैनूं दे जाए हक़, रहिण फक्क दए कराईआ। जे शरीकां नूं पै जाए शक़, दावा दाइर जाए कराईआ। मिल जुल के मैनूं घरों कढ्ढण धक्क, धक्का करन वांग सौदाईआ। मैं नेत्र रोवां अक्ख, कजल वाली अक्ख हन्झूआं हार परोईआ। विच्चों आवाज़ आई सुण नढ्ढी सच्च, तैनूं सच दयां समझाईआ। आपणे पती नूं वेखण वाली बणा पहलों अक्ख, दोहां अक्खां नाता दे तुड़ाईआ। उस नूं मन्न आपणा हक़, हकीकत विच्चों नज़री आईआ। जे उह मिल जाए कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। एथे तेरे नाल जावे वस, अग्गे लै के जावे चाईं चाईंआ। आपणी हथ्थी पाए सुहाग दी नथ्थ, सुहागण आपणे नाल हंढ्ढाईआ। तैनूं होण ना देवे वक्ख, वक्खरी रोटी ना कोए पकाईआ। उह छड्ड रविदास चुमार जिन प्यार अन्दर टुकड़यां रख्या ढक, खाण नूं आवे सच्चा माहीआ। उधर ब्राह्मण पै गया शक़, गंगा माता कंगण दित्ता फड़ाईआ। उधरों पंजवां यार प्या हस्स, उच्ची उच्ची सुणाईआ। ओ चारे रल के करो अकट्ठ, इक्को मता पकाईआ। ओधरो डोली कहे मैं विछोड़े विच रही मच्च, आपणा हाल सुणाईआ। अन्दरों लाड़ी कहे मैनूं मिले पुरख समरथ, मेरी आसा पूर कराईआ। रविदास कहे भाई मैनूं गा लैण दयो उहदा जस, जिस मेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। कहार कहिण पंजवें मीत, इक सलाह रखाईआ। डोली कहे मेरी तुहाढ्ढे नाल रीझ, सोहणी खुशी मनाईआ। लाड़ी कहे मैं ओस पती नाल जावां पतीज, जो मेरी पत्त रखे थाउँ थाईंआ। रविदास किहा एह सब कुछ ठीक, जे ठाकर सच्चे भाईआ। मैं ग़रीब निमाणा नाचीज, पाणा गंढ्ढणहार अख्वाईआ।

उहदे तों मंगां भीख, आपणी झोली डाहीआ। अजे मैनूं उहदी उडीक, साइद आवे मेरा माहीआ। मेरे नाल मकरर करके गया तरीक, तरीके नाल समझाईआ। वेखो मैं उहदी करन लग्गा उडीक, बुक्कल विच ध्यान लगाईआ। उहदी धार बड़ी बरीक, इन्हां अक्खां नज़र ना आईआ। मैं काया अन्दर वड़ के मारां चीक, उच्ची उच्ची सुणाईआ। फिर आवे साहिब ठीक, हौली हौली कुण्डा लाहीआ। मेरे नाल करके प्रीत, घुट्ट गलवकड़ी लए पाईआ। मैं हो के ठंडा सीत, आपणी छाती सेज सवाईआ। फिर कहां मैं नीचां दा नीच, तूं शहिनशाह बेपरवाहीआ। मेरा वेख पाटा चीथ, चीथड़ा रिहा कुरलाईआ। श्री भगवान फड़ बांहों मैनूं घसीट, मेरा वस्त्र देवे लाहीआव। चुमारा पुराणी सुट कमीज, दुशाले तेरे उते टिकाईआ। मैं कहवां मैनूं प्रेम दी देदे भीख, भिच्छया मेरी झोली पाईआ। मैं सोहणा बणा कमीज़, तेरे चरण धूढ़ मेरे उते ओढण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। उह सुण रवी, राम रिहा जणाईआ। मैं तेरा बणके कवी, गाइन रिहा सुणाईआ। मैं रोटी वाग तपां उते तवी, पकवान आपणा आप चढ़ाईआ। तूं मेरी सेजा सवीं, सोहणा आसण हंढ्ढाईआ। मेरे मन्दिर विच बव्हीं, जन्दर दवां खुल्हाईआ। फेर इक वार कहवीं, तूं ग़रीबां होएं सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। रविदास कहे मैं चढ़ के छाती, छत्रधारी वेख वखाईआ। नार बण के मिल्या कमलापाती, कँवल नैण सोभा पाईआ। एहो जिहा सुख किसे ना मिल्या सुहागी राती, कोटन कोटि सखीआं गए हंढ्ढाईआ। एहो जेहा रस मिल्या ना किसे प्रभाती, कोटन कोटि गाणे गए सुणाईआ। एहो जेहा घर किसे ना मिल्या दो जहानां मारी झाकी, नेत्र नैण उठाईआ। एहो जेहा वर किसे दा ना बणया साथी, जो जीवदयां मरयां मरयां जीवदयां आपणा संग निभाईआ। मैं रविदास की मन्नां आखी, आपे रिहा समझाईआ। एह मेरा पुरख अबिनाशी, मेहरवान वड्याईआ। मैं इस दा बणया रागी, सोहणी सेव कमाईआ। कहारो तुहाढ्ढी प्रीत मेरे नाल लागी, मैं अग्गे दयां जुड़ाईआ। जिहड़ा सब दा कन्त सुहागी, सोहणा रूप वटाईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां बाज़ी, लख चुरासी आपणे हुक्म भवाईआ। मेरा साहिब जे होवे राज़ी, तुहानूं राजे नालों उच्चे दए बणाईआ। तुहाढ्ढी ला के सुन्न समाधी, आपणे विच समाईआ। मेरे साहिब दी खेल डाहडी, कोई समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। चार कहार पंजवां सज्जण, बांहवां पंजे रहे उठाईआ। खाली हथ्थ आए मंगन, कूकन देण दुहाईआ। जिस वेले डोली दे कोल दी लग्गे लँघण, उह वी कूंज वांग कुरलाईआ। ओ सज्जणो, मैनूं वी लै जाओ अंगन, आपणे नाल मिलाईआ। विच्चों लाड़ी कहे मैनूं नहीं रही कोई संगन, नेत्र अक्ख ना कोई शरमाईआ। मैं वेखां तुहाढ्ढ नाल साहिब बख्शंदन, जो बख्शिश

रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज रीत चलाईआ। रविदास कहे रखो धीर, धीरज नाल जणाईआ। मैं उहदे औण लई आपणे तन दी विछावां लीर, बिस्तर इक सुहाईआ। उह पीरां दा पीर, मैं नीचां विच्चों नीच अख्वाईआ। मेरी उहदे नाल जंजीर, कड़ी कड़ी नाल जुड़ाईआ। सुण के चौथे कहार नक्क नाल कढ्ढी लकीर, फड़के तिन्नां सीस निवाईआ। पंजवां झुकया नाल अखीर, आपणा माण मिटाईआ। जे साडी बदल जावे तकदीर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जे रविदास दी पाटी टाकी मंज़ूर करे लीर, घर ग़रीबां फेरा पाईआ। साडे कोल ना कपड़ा ना टाकी ना लीर, लकीर उंगली नाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल समझाईआ। रविदास वछा के सोहणा सिँघासण, कन्नीआं रिहा लमकाईआ। जिस वेले बहे मेरा पुरख अबिनाशन, सोहणी सेज सुहाईआ। मैं बण के दासी दासन, एहदी सेव कमाईआ। मैनूं कोझा कमला लोकी आखन, मेरीआं अक्खीआं दर्शन पाईआ। जिहड़ा सखीआं कोलों खांदा रिहा माखन, भगवन रूप वटाईआ। जिहड़ा भीलनी बणया साथन, राम रमईआ हो के जूठयां बेरां भोग लगाईआ। जिहड़ा वसे उते अकासन, अगम्म अथाह गोसाईंआ। उह मेरी धरती उते लावे आसण, असल रूप वटाईआ। रविदास कहे मैं प्रेम दी करके दातन, हस्स के दन्दासा दयां वखाईआ। जे मेरे वले इक वार खुशी नाल झाकण, मैं आखां तूं मेरा मैं तेरा तूं दाता बेपरवाहीआ। तेरा मोह मंगां बातन, अन्दर तेरा नूर रुशनाईआ। चरण घुट के कहां मैं तेरी बणां साथन, अन्त तेरी अख्वाईआ। तूं दीनां बंधप नाथ अनाथन, अनाथा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। रविदास कहे एह सेज अज्जे नहीं होई साफ, झाड़ झाड़ बणाईआ। प्रभ मेरा ग़ुसा कर दए मुआफ, भुल्ल देवे बख़्शाईआ। जिहड़ी मैनूं बख़्शी ओस दात, ओसे विच्चों एह वी कढ्ढ विछाईआ। जे कुछ लुका के रखां फिर बणा नार कमज़ात, कुलखणी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी दए वड्याईआ। रविदास सेज करके सोहणी, टुट्टे चमड़े रिहा विछाईआ। प्रभ मेरे नूं लग्गे सोहणी, सोहणी रूप वटाईआ। इक टका जो कीता बौहणी, ओहो भेंट चढ़ाईआ। नाले कहे एहो मेरी हाढ़ी सौणी, एसे नाल झट्ट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल चाईं चाईंआ। रविदास सेज होई त्यार, सोहणी बणत बणाईआ। दूर दुराडे आदि निरँकार, उते आसण लाईआ। खुशी विच कहे वाह मेरे यार, किड्डी सोहणी बणत बणाईआ। एहो जेही लभ्भी नहीं जुग चार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। एह वेख के कहार होए हैरान, प्रभ की खेल रचाईआ। भुक्खे नंगे दे घर बैठा आण, आपणा आसण लाईआ। उधरों डोली विच्चों निकली रकान, आपणा पल्ला सांभ सूत के भज्जी वाहो दाहीआ। मैं

सुणया रविदास घर आया भगवान, भगतन हित फेरा पाईआ। डोली किहा जा नी उह सब दा सच्चा काहन, धुर दा मालक माहीआ। जे ओस उते रखणा इमान, फिर ओस वल अक्ख उठाईआ। जे लोकमात करना हराम, मेरे प्रभ दे दर ना मुख वखाईआ। रविदास चुमार कर प्रणाम, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। हे भुक्ख्यां दे भगवान, दुखियां दे सहाईआ। एह चार कहार तैथों मंगदे रहे पकवान, मेरे घर रोटी नज़र ना आईआ। एहनां नूं मिल्या ब्राह्मण शैतान, रहिंदी पूंजी लुट के नाल लै जाईआ। ओधर कसीरा मैं भेज्या महान, जिहड़ा जोबनवन्ती मैनूं दे के गई खुशी मनाईआ। शहिनशाह कहे रविदास मैं केहड़ा अन्जाण, मैं वेखां थाउँ थाईंआ। मैं ब्राह्मणां दा ब्राह्मण शतान, शतानी विच उहनूं देवां फसाईआ। मेरा देख खेल महान, लेखा राजे नाल जुड़ाईआ। दोवे चल के औण बण दरबान, दर तेरे सीस निवाईआ। तेरा कसीरा तेरा कंगण तेरी आए पछाण, दूजा समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार जणाईआ। भगवन बैठा चुप चपीता, रविदास आपणे कोल बैठाईआ। प्रभू मैं अजे जोड़ा इक्को गंढु के सीता, टका आपणी झोली पाईआ। नवां दी बाकी रह गई रीता, दस करके झट्ट लँघाईआ। मेरी तेरे नाल ठीक प्रीता, बच्चयां वासते एह वी कार कमाईआ।
५५५ बड़ी खुशी तूं आयों घर नीचां, आपणा फेरा पाईआ। मेरा वेख खाली खीसा, खाली हथ्थ वखाईआ। उधरों ब्राह्मण राजा आ गए मार के चीकां, महाराणी नाल लिआईआ। डण्डौत करे हो के नीकन नीका, राजन सीस रिहा झुकाईआ। रविदास जाणे भेव जीव जी का, जुगती नाल पुच्छे चाईं चाईंआ। शहिनशाह मैं कमीनी ज़ात होछा नीचा, तूं शहिनशाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ। अन्दर बैठा भगवान कहे रविदास चुप्प, चुप्प चपीता जणाईआ। पहलों इन्हां कोलों पुच्छ, ब्राह्मण की की खेल रचाईआ। ब्राह्मण डरदा मौत तों गया झुक, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं कंगण लै के रविदास तैथों गया लुक, चोरी रिहा कमाईआ। राजे कोल जा के दित्ता सुट्ट, बहुता धन दौलत आपणी झोली पाईआ। एसे कंगण मेरी जड़ दिती पुट्ट, राजा देवणहारा सजाईआ। मेरा काला करके मुख, गलीआं विच फिराईआ। मैनूं धीआं पुतां दा पिच्छे लग्गा दुख, मिशराणी रोवे मारे धाईआ। जे मैं सिध्धा आ के तेरी चरणी जांदा झुक, कसीरे पिच्छे कंगण दिन्दा फड़ाईआ। फिर मैनूं होणा नहीं सी कोई दुःख, जो कुछ मर्जी हुन्दी तैथों मंगदा चाईं चाईंआ। श्री भगवान हौली जेही किहा ब्राह्मणा केहड़ी गल्ले खुश, मैं फैसला दयां कराईआ। ब्राह्मण कहे तेरे जींदे रहिण पुत्त, तूं वड्डा जजमान मेरा हो सहाईआ। एहो जेहा कंगण मैनूं इक होर दे दे चुक्क, मेरा खहिड़ा दे छुडाईआ। श्री भगवान रविदास वल्ले कीता मुख, नैण नैणां नाल मिलाईआ। ओथे उहदे फूड़ी होठों कोटन कोटि कंगण लए पुट, जेहड़ा चम्म

रम्बीआं नाल लाह के थल्ले दबाईआ। ब्राह्मण खुशीआं नाल हो के खुश, बोदी उते हथ्थ फिराईआ। मैं हुण वेखां आपणे पुत्त, जिहड़े ब्राह्मणी गोद विच टिकाईआ। एथों भज्जां ओहले जावां लुक, फिर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च समझाईआ। वेख के ब्राह्मण मिलदा कंगण, चार कहार खुशी मनाईआ। चलो पंज उठ के चलीए मंगण, आपणी झोली डाहीआ। जे सानूं चाढ़े रंगण, भुख्यां भुक्ख दए गंवाईआ। डोल कहे मैं केहड़ी भागां मंदन, मैं वी चलां चाईं चाईंआ। लाड़ी खड़काउँदी आई छणकंगण, दोवें बाहवां हलाईआ। मैं वेखां सूरा सरबँगन, धुर दा सच गोसाईंआ। जे लावे आपणे अंगण, अंगीकार कराईआ। मैं खुशीआं नाल हलावां कंधन, चारों कुण्ट वेखां चाईं चाईंआ। चार कहार कहिण फिर असीं वी तेरे मथ्थे लाए चन्दन, सोहणा टिक्का सुहाईआ। पंजवां कहे मैं फिर खुशी विच तैथों कुछ आवां मंगण, भागा भरीए मिट्ठा मूँह दे कराईआ। सारे सलाह करके अग्गे लँघण, रविदास दवारे सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। रविदास कहे एह मेरा शाह, शहिनशाह अख्वाईआ। जिस दे चरणां मिले पनाह, रहमत हथ्थ उठाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमति मैल धवाईआ। जे एहनूं सच देवो सुणा, दुखियां दुःख मिटाईआ। जे पर्दा लउँ रखा, लख चुरासी विच भवाईआ। जे बणाउँ पिता माँ, गोदी रखे चाईं चाईंआ। जे कन्त करके लओ हंढ्ढा, सोहणी सेज सुहाईआ। जे मांगत बण के अग्गे झोली देवों डाह, अनमुलड़ी दात झोली पाईआ। एह दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। इस दे अग्गे करो दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। साडा सच्चा संग निभा, विछड़ कदे ना जाईआ। उह सज्जणो मैं भी तुहाढ्ढा बणां गवाह, मेरे घर जो बैठा डेरा लाईआ। सारे कहिण वाह वाह, रविदास तेरी वड वड्याईआ। पहलों सानूं भुक्खयां नूं कुछ खवा, भुख रही सताईआ। रविदास उह सुक्के टुक्कड़े कढ्ढ के दित्ते वखा, एह मेरा भोजन सहिज सुभाईआ। श्री भगवान वेख के चढ़या चा, खुशी विच्चों खुशी प्रगटाईआ। रविदास मैनूं वी थोड़ा जेहा स्वाद वखा, मैं आपणा आप पूर कराईआ। रविदास किहा मैं खवाउणा नहीं तूं भोग लगा, एहो तेरी वड्याईआ। श्री भगवान किहा बेहे टुकर नहीं ए शुकर खुदा, शुक्रिए नाल समझाईआ। दाणे दाणे उते मोहर लगा, भगतां हथ्थ फड़ाईआ। मेहर दृष्टी इक्को वार पा, सुक्के टुक्कड़े सोहणा पलाओ बणाईआ। किहा सारे रल मिल लओ खा, भुक्ख रहे ना राईआ। रविदास थोड़े वरता, उंगलां पंजे नाल छुहाईआ। इस दे खाण नाल एहनां दा जामां दयां बदलां, जो तेरे कोल दित्ता सुणाईआ। फिर वेखां आप आ, लोकमात फेरा पाईआ। रविदास किहा साहिब तूं दाता बेपरवाह, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं चलां तेरी रजा, हुक्म विच सरनाईआ। श्री भगवान कहे हुण बण गवाह, फिर सहादत

दयां भुगताईआ। तेरे हथ्थो लेख लिखा, मेख मस्तक दयां लगाईआ। पंजा चरणां नाल छुहा, जन्म मरन दयां कटाईआ। सोहणी डोली इक सुहा, धुर दी बणत बणाईआ। चारे जुग कहार लगा, कंध्यां उते दयां टिकाईआ। सोहणी लाड़ी रूप वटा, गुरमुख विच समाईआ। हार श्रृंगार खूब करा, भूषण वस्त्र अंगन तन छुहाईआ। रविदास चम्यारा नाल रला, वेखां चाईं चाईंआ। सुक्के टुक्कड़ तों जिस पकवान दित्ता बदला, सोहणा पलाओ वखाईआ। उस पलाओ विच्चों थोड़ा रखां छुपा, आपणे विच छुपाईआ। जिस वेले फेर जावां आ, सोहणी बणत वखाईआ। सारे सन्त भगत अकट्ठे लवां करां, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। धुर दा हुक्म देवां सुणा, सच्चो सच दरसाईआ। हरिसंगत रलके मेरे पिछले चौल लओ बणा, सोहणी भट्ठी उते चढ़ाईआ। थोड़े जहे विच्चों लालो गया खा, नानक घर आईआ। ओदों बणया गवाह, सफाई देवे चाईं चाईंआ। गुरमुखो तुहाड्डे सिर तों लाहे कजा, राए धर्म नेड़ कोई ना आईआ। इस दा वेखो इक मज़ा, मंज़ल अगली दए मुकाईआ। खाणा खुराक नहीं गज़ा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। फिर वी एहदे विच्चों लए बचा, रविदास दा सुक्का टुक्कड़ा चेते आईआ। संगत सारी नूं आप खवा, विच्चों इक दाणा आपणे सीस लुकाईआ। जिहड़ा फेर आपणे विच ल्या छुपा, अग्गे वासते भण्डारा ल्या बणाईआ। तिन्नां लोकां वल तिन्न दिन तक्कदा रिहा राह, आपणा ध्यान लगाईआ। तीजे दिन इक अवाज़ दिती सुणा, सोहणी आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो अकट्ठे होवो आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो तुसीं वी दयो सलाह, सब नूं पुच्छे बेपरवाहीआ। हरिसंगत ल्या पहलों ल्या खवा, बचया तुहाड्डा हिस्सा बेहा रखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सुण के चढ़या चा, वाह वाह तेरी वड्याईआ। श्री भगवान किहा नहीं उहनां नूं दयो सलाह, जो मिटी गारे चिकड़ विच सच्ची सेव कमाईआ। सारे कहिण प्रभू उहना पंजां दी कुझ झोली पा, जिहड़े तेरा ध्यान लगाईआ। श्री भगवान कहे आओ खट्टा मिट्ठा रलाईए पला, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। चौथा कहार कहे मेरी वारी गई आ, मेरी आसा पूर कराईआ। रविदास पाटा चीथड़ दित्ता विछा, मेरे कोल उह वी नज़र ना आईआ। क्यों मेरे बापू दा बापू नाता पहलों दित्ता तुड़ा, देवणहारा तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। मैं प्रेम प्यार दा विछोणा दित्ता विछा, सोहणा रंग रंगाईआ। जिस उते बहि जे खाणा लवे खा, गुर अवतारां नाल मिलाईआ। फेर वेखे ध्यान लगा, पिछली याद कराईआ। जिहड़ी डोली विच जांदी रंडी होई घड़ीआं ढाई सौहरे सोभा ना पाईआ। उस दा लेखा सोहणा दित्ता बणा, लालो नाल जोड़ जुड़ाईआ। रविदास चम्यार वले रही तका, मेरा विचोला नज़री आईआ। जिस झूठे सौहरे दित्ते छुडा, नाता जगत मुकाईआ। फेर ओस नाल दित्ता मिला, जिस नूं मिलके मिल्या बेपरवाहीआ। उह पिछला भात रही सुहा, चौकी उंगला नाल हिलाईआ।

चौथे कहार रही समझा मिट्ठा थोड़ा नाल रलाईआ। जो संगत कोलो बचा के दुद्ध रिड़क के घिओ ल्या कढ्ढा, कल परसों कम्म किसे ना आईआ। अज्ज ओस नूं विच दित्ता रला, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। खुशीआ नाल प्रभ अग्गे दयो टिका, भोजन भगवान भगवान भोजन रूप वटाईआ। दोहां बिना ना जीवे जहां, जगत जीवण ना कोए वखाईआ। खुशीआं नाल रिहा खा, खा खा आपणा झट्ट लँघाईआ। लै रविदास जिहड़ा पिछला सुक्का टुक्कड़ा ल्या बचा, तेरे अन्दर दयां टिकाईआ। जिथ्थे गोबिन्द बच्चे रिहा सुहा, ओथे तैनूं मिले वड्याईआ। तेरे पिच्छे पंजां बख्श गुनाह, पंचम सोभा पाईआ। वारी वारी सारे गले लगा, इक्को रंग चढ़ाईआ। सोहणी डोली लवे पा, आपणा खेल वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त गुरमुख दूलहन बणके दूल्हा लए प्रना, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। हरिसंगत एह पकवान इक इक किनका सब ने लैणा खा, खांदयां खांदयां खांदयां ख्वाहिश पूरी दए कराईआ। खा पी के फेर कहो एहो पिता एहो माँ, इक्को गोद उठाईआ। खुशी नाल कहिणा साडे बख्शे गए गुनाह, पाप नज़र कोए ना आईआ। रविदास नाल मिल के पकड़ी बांह, सच्चा संग वखाईआ। रम्बी कहे मैनूं चढ़या चा, खुशीआं हाल सुणाईआ। आर कहे मैं भुला ना, तिक्खी धार प्रभ दी ओही नज़री आईआ। कच्चा तन्द कहे रविदास जोड़ा दित्ता जुड़ा, हथ्थीं गंढु पुआईआ। धागा कोरा दित्ता ला, डोरा विच ना कोए रखाईआ। कलयुग रुढ़दयां रुढ़दयां जादयां मोड़ा दित्ता पा, अग्गे आपणा चरण टिकाईआ। जिस वेले भोरा भोरा दित्ता खवा, अन्दरो तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। फेर इक्को जपीए एहदा नाँ, जिस दी नाम विच वड्याईआ। धाम सोहणा लग्गे मकाम, मुकामे हक़ नूर अल्लाईआ। सब नूं दए पैग़ाम, पीर पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। औखी मुश्किल करे आसान, सोहणा राह वखाईआ। इक्को दस्से गुरमुखो बोलो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजी करे ना कोई पढ़ाईआ। ऐसे नाल साडी एथे ओथे पत जाए रहि, परमेश्वर होवे आप सहाईआ। इकीआं दा जो लेखा बाकी रहे, अगले लेखे विच लिखाईआ। पंजां अन्दर आपे बहे, आपणा बंक सुहाईआ। गोतम उठ के अग्गो कहे, वाह वाह तेरी वड्याईआ। लंडा हो के चैन नाल ना बहे, भज्जे वाहो दाहीआ। रंगढ़ जिहड़ा संडे सोटा मारे धै, जोर नाल लगाईआ। जिहड़ा अनाइत नाल गंढे पुट्ट के कहे, एह वी तेरी वड्याईआ। उहदी मुका के आपणी मैं, ममता विच्चों चुकाईआ। लंगर विच लांगरी हो के रहे, लंगर मन्दिरां नालों चंगा नज़री आईआ। रविदास सुक्का टुकड़ा दे के गया कह, सब नूं सच सुणाईआ। जिस पकवान नूं भगवान बेहा कदे ना कहे, सद अमृत रूप वखाईआ। एथे ओथे इक्को जेहा रहे, हरिसंगत लंगर कूकरां शूकरां अग्गे ना कोई सुटाईआ। ओस लंगर विच परमात्मा बहे, अग्ग उते सड़ के तवे उते आपणा आप तल के, प्रेम प्रीती विच रल के, आपणा रंग वखाईआ।

५५८ १६

गुरमुख जेहड़े आवण चल के, उहना दा अन्दर बहे मल के, सोहणा आसण लाईआ। हरिसंगत खाए रल मिल के, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। एह खेल दिलदार दिल दे, दिल विच्चों दलील दलील नाल मिलाईआ। गुरमुख गुर दी रहिणीउँ कदे ना हिलदे, डुल्ले सर्ब लोकाईआ। गुरमुख प्रभ दे मेले सदा नहीं मिलदे, जिस मिलयां विछोड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा भात रिहा खाईआ। भात कहे मैं भागां भरया, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। पिछले भुक्खे अज्ज पेट आपणा भरया, नाल रविदास दित्ता रजाईआ। बाकी संगत अन्दर धरया, भोरा भोरा चखाईआ। सच प्रीती नाल जड़या, सोहणा जोड़ बणाईआ। ना जीउदा ना मरया, मरन जन्म विच नज़र कदे ना आईआ। आपणा कारज आपे रिहा करया, करन करावनहार अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां सेजे आपे चढ़या, पिर धन रावे चाईं चाईंआ।

* २६ माघ २०२० बिक्रमी चरण कौर दे घर अलड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर *

रविदास दवारे मिल भगवान, सब ने खुशी मनाईआ। भोग लग्ग सोहणा बणया पकवान, सुक्के टुक्कड़े रूप वटाईआ। चार कहार मिल के खाण, पंजवां यार नाल मिलाईआ। खांदयां खांदयां आया ध्यान, अन्दर दलील बणाईआ। एहदा मिट्ठा रस महान, सोहणा नज़री आईआ। सारे आपणे पल्ले थोड़ी थोड़ी गंढ बंधाण, एहनूं नाल लै के जाईआ। जिस वेले भुक्ख फेर सतावे आण, उस वेले लईए खाईआ। करो निमस्कार वाली दो जहान, जिस सोहणी बणत बणाईआ। चौथा कहे तुसीं बाल निधान, रसना मंग ना मंगाईआ। खुशी हो गए खा के खाण, आपणा पेट भराईआ। एहो जिहा सारा जहान मंगे दान, देवणहार सदा सदा वरताईआ। रल के एहदे कोलों मंग लओ नाम, जिस विच मिले वड्याईआ। जे होवे मेहरवान, सोहणी वस्त दए वरताईआ। जे रविदास घर भोग लगावे आण, साडे घर क्यों ना आईआ। सारे सुण के खुशीआं मन्नाण, अन्दरे अन्दर ध्याईआ। इकट्ठे चरणी डिगे आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर गुण निधान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ मूर्ख बाल अञ्याण, समझ सोच ना राईआ। तूं वड्डा शाह सुल्तान, शहिनशाह अख्वाईआ। पंजवां कहे मैं इन्नां नालों अञ्याण, जगत यराना चमरेटे नाल रखाईआ। हुण थोड़ी जही आई पछाण, जिस वेले प्रभ तेरा दर्शन पाईआ। तुहाड्डा दोवां दा इक्को दिसे निशान, इक्को रंग वखाईआ। ख़बरे की खवाया विच पकवान, मैनूं अन्दरों पक्का दित्ता बणाईआ।

मैं वी मंगां इन्हां नाल, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होणा सहाईआ। पंजां सुण के सच अरदास, डोली ध्यान लगाईआ। मैं वी सदा इनां साथ, सोहणा काज रचाईआ। मापिआं घरों चुक के धीआं वरगी दात, सौहरयां घर पुचाईआ। लाड़ी लाड़े दी पूरी करके आस, जोड़ी जगत बणाईआ। डोली विच्चों लाड़ी मार आवाज़, हौके नाल जणाईआ। मैं वी तेरे दर दी मुहताज, इक्को ओट रखाईआ। मेरे बिनां किसे कम्म ना आवे साज बाज, कहारां सेव ना कोई लगाईआ। क्यों प्रभू मेरे नाल नराज, किस बिध मुख भवाईआ। जां मैनूं मंगण दी नही जाच, जां तूं देण वाला दे ना खुशी मनाईआ। मैं जो किहा सो साच, सच्चे सच समझाईआ। सब दी पूरी करदे आस, बैठे ध्यान लगाईआ। चरण प्रीती तेरी खाहश, दूजी वस्त ना मंग मंगाईआ। रविदास किहा शाबाश, धन्न तुहाढ्ढी वड्याईआ। जिन्हां मेरा दित्ता साथ, सिख्या सिख के झोली पाईआ। उधरों ब्राह्मण झाड़ी ओहले बैठा रिहा झाक, हरि जी की की वरताईआ। जां मिलदी वेखी दात, धोती बोदी सांभ के नेड़े आईआ। डण्डौत करके कहे गुरू महाराज, ठाकर स्वामी तेरी सच्ची शरनाईआ। मैनूं भात विच्चों दे खाज, खावन नूं चित लाईआ। रविदास किहा तूं रल उस जमात, जो पंगत रूप वटाईआ। ब्राह्मण इदर उदर वेख के कहे मैनूं तक्के ना मेरा साक, ब्राह्मण शूद्रां घर डेरा लाईआ। पहलों पेट भरीए पूरी करीए आस, फिर पाप आपणी गठड़ी विच लीजे बंधाईआ। जिस वेले गंगा किनारे जा के ओम करूँ जाप, हरीओम कहके गंगा विच रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। ब्राह्मण कोल बठा ल्या एक, चार कहार बाहवां रहे फरकाईआ। जिस ने कीता साडे नाल वेस, उह अड़िके गया आईआ। हुण पैस्सयां नाल जिन्ना चिर बाहमणी ना देवे भेत, पल्ला सके ना साथों छुडाईआ। जे ना मन्ने कपड़यां विच लपेट, डोली विच लईए टिकाईआ। जे कोई पुच्छे कहीए एह राजे दी बेट, एहदा मूँह वेखण कोई ना आईआ। गंगा किनारे जा के खेडीए एहदे नाल खेड, फड़ बोदीयों रेता उते फराईआ। धुप कड़ाके दी होए महीनां जेठ, उते मुठीआं नाल टिकाईआ। जिनां चिर ना दस्से अन्दरला भेत, मारीए कुटीए वाहो दाहीआ। इने चिर नूं ब्राह्मण ओन्हां वल ल्या वेख, हौली हौली गल्लां करदे नज़री आईआ। उसे वेले खोल्ह के आपणी जेब, दूणे पैसे दित्ते फड़ाईआ। मेरे जजमानां मैनूं दित्ते भेज, मैं तुहाढ्ढे वासते लै के आईआ। सारे हस्स के कहिण एह बड़ा चंगा ना करे फरेब, एसे नूं दिउँ फड़ाईआ। ब्राह्मण उसे वेले आपणी जंतरी कढ्ढ के लिखे उते कतेब, हिंनस्सयां विच गणाईआ। जिस वेले मंगो मैं तुहाढ्ढे घरीं देवां भेज, सवाए डिउड़े नाल रलाईआ। कहारां किहा तूं ब्राह्मण एहदा बणाईं खेस, उते लै के जगत हंढ्ढाईआ। असीं तेरे जजमान तूं सानूं दईं आदेश, तेरे वरगा ब्राह्मण कीती वाला नज़र कोई ना

५६०
१६

आईआ। ओधर रविदास किहा तूं केहड़ी खेलें खेल, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। सारे मंगो एहदा मेल, जो मिल्या बेपरवाहीआ। खुशीआं नाल इक दूजे दी झोली पाओ वेल, मुट्ठी मुट्ठी सोहणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सारे कहिण रविदास असीं कुछ लईए सोच, आपणा मता पकाईआ। सानूं पूरी नहीं होश, समझ ना कोई वड्याईआ। किते ठट्ठा करन ना लोक, मखौल ना देण उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सानूं सच मति दे जणाईआ। रविदास किहा थोड़ी देर बाहर जा के करो सलाह, मता आपणे नाल पकाईआ। उन्हां चिर मेरे घर सुत्ता रहे बेपरवाह, मेरी सेजा सोहणी इस नूं भाईआ। मैं इसदे उते कच्चे चमड़े दा दसाला देवां पा, जिस नूं सोहणा रंग चढ़ाईआ। थोड़ा चिर कर लईए आराम, आरामगाह इक्को इक वखाईआ। फिर तुहाडा करे काम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। सारे घरों गए बाहर, कदम कदम उठाईआ। चार कहारां नाल पंजवां यार, सोहणा संग बणाईआ। ब्राह्मण गढ़वी लै के चढ़दी दिशा विचार, गया वाहो दाहीआ। करे खेल करतार, समझ किसे ना आईआ। उधरों खोते उते चढ़या आवे घुमिआर, पगड़ी लाल रंग रंगाईआ। वट्ट चाढ़ बन्नी दस्तार, वड्डा सिर वखाईआ। हथ्थ विच डण्डा रिहा हुलार, डिचकर मारे चाईं चाईंआ। उसदे नाल खोते होर चार, हिणक हिणक के रौला पाईआ। चौवां उते चार होर अस्वार, निक्के बाले नज़री आईआ। उन्हां विच्चों इक रो प्या ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अग्गों मिल पए चार कहार पंजवां सच्चा यार, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। चौथे किहा उह जाण वाले घुम्यार, क्यों बच्चयां रिहा रवाईआ। जरा खोते ते घलयार, खुस्सया टुट्टया भज्जा जावें वाहो दाहीआ। उस उत्तों उतर अग्गों रोके चार, डण्डे नाल डराईआ। गधे इक दूजे वल नैण रहे उठाल, वेखण चाईं चाईंआ। उन्हें चिर नूं बच्चे मारी आवाज़, उच्ची कूक सुणाईआ। सानूं भुक्ख लग्गी आज, बौहड़ी रही सताईआ। ना कोई रोटी ना कोई दाल, कुलर कुट ना कोई बंधाईआ। घुम्यार गुस्से विच कहे मैं की तुहानूं देवां खवाल, नाल लै के कुछ ना आईआ। एह सुणके पंजां समझया एह निक्के बाल, सब नूं इक्को जहे नज़री आईआ। इक दूजे नूं मार के अरक दस्सण इशारे नाल, हौली हौली समझाईआ। आपणे खोल्हो गंढु रुमाल, जो रविदास दवारयों भात लयांदा बंधाईआ। विच्चों थोड़ा थोड़ा इन्हां नूं दईए खवाल, साडा की घट जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दए वड्याईआ। सारयां खोल्ही रुमाल गंढु, विच्चों खाणा इक इक उठाईआ। इक इक सब नूं दित्ता वंड, पिउँ पुत रल के खाईआ। खादयां आया अनन्द, खुशीआं ढोले गाईआ। घुम्यार कहे कुछ मैथों लओ मंग, मैं खोते तुहाडी भेंट चढ़ाईआ। उन्हां किहा तूं

पहलों साडा कर संग, रविदास दवारे फेरा पाईआ। ओथे वेख खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। तेरे कोल खोते, उह टुट्टे गंडे चम्म, एह ओहदी वड वड्याईआ। असीं उसे दे घरों ल्याए बन्नृ, जो तुहानूं दित्ता खवाईआ। जे उहवी तेरे नाल जाए मन्न, तेरे बच्चयां नूं भुक्ख रहे ना राईआ। घुम्यार कहे एहो जिहा सौदा जे जाए बण, मैं वी लवां चाईं चाईंआ। उधरों ब्राह्मण आउँदे सुण ल्या कन्न, एह की मता पकाईआ। ब्राह्मण वेख घुम्यार नूं पै गया जन, कहे इस तों पुछीए की एह खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी चाल चलाईआ। घुम्यार कहे दस्स परोहत, साची मंग मंगाईआ। मेरे समझ ना कोई सोच, गंवार नज़री आईआ। मैनूं एह की कैहन्दे लोक, चल रविदास दवारे दर्शन पाईआ। उथ्थे मिल्या भोजन भोज, जो भोरा भोरा मैनूं बच्चयां समेत दित्ता खवाईआ। बच्चे रोणों हो गए खमोश, सोहणी ठंड वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। ब्राह्मण कहे एधर आ हो अलग, वक्खरा हो समझाईआ। बिन ब्राह्मण तों किसे दा पूरा होए ना जग्ग, समग्री कम्म किसे ना आईआ। जे कुछ है तां इस लोटे विच घत्त, पल्ला उते रख के चोरी चोरी वखाईआ। मैं तेरी कुण्डली बणावा झट्ट, गरिह रहिण कोए ना पाईआ। तेरे घर खजाने खोलूां हट्ट, वड्डी देवां वड्याईआ। इन्नृां मूर्खां तैनूं देणा की दस्स, बिनां ब्राह्मणां समझ किसे ना आईआ। जो कुछ सो मेरे हथ्थ, मणका मणका रिहा भवाईआ। तुसीं वेखो मेरे मथ्थे वल अक्ख, शंकर तरशूल लै के बैठा चाईं चाईंआ। जिहड़ी दक्षिणा देओ मैं केहड़ी लैणी रख, मैं सोहणे कम्म लगाईआ। मैं खीर कड़ाह बणा के लैणा छक्क, तुहाड्डा शुकर मनाईआ। नाले गौंदा फिरां जस, खोते वाला होर वी कोई नज़री आईआ। इने चिर नूं चौथा कहार कहे ब्राह्मणा पिच्छा छड्ड, ऐवें रौला पाईआ। असीं कड्डा खादा क्यों होईए अड्ड, जिहड़ा रविदास दित्ता वरताईआ। साडे सांझे हो गए हड्ड, नाड़ी नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। हुण ते मंगण वाली आदत छड्ड, देण वाले नज़री आईआ। ब्राह्मण कहे एह प्यो दादे दी कार चली औदी साडी विच यद्द, वडुयां दी रीती देवां किवें गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। घुम्यार अन्दर आया उछाल, सोहणा दिल बणाइंदा। भरावो मैनूं उह दयो दिखाल, जेहड़ा भुख्यां नंगयां अन्न वरताइंदा। पंजे उठ के तुर पए नाल, सोहणा संग सोभा पाइंदा। बच्चे कहिण सानूं वी दे दयो एह रुमाल, जिस विच्चों खाणा खादयां सुख दुःख दर्द मिटाइंदा। रोण वाला बच्चा कहे मैं ज़रूर लै के जाणा नाल, ज़िद आपणी ना कदे गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। पंज पंज दे हो गए दस, दहि दिशा खुशी मनाईआ। रविदास दवारे आए हस्स, सोहणी बणत बणाईआ। चम्यार यार दित्ता

५६३
१६

दस्स, पंजां नाल पंज होर रलाईआ। इन्हां वी खादी तेरी भात, दाणा दाणा मुख विच पाईआ। एह बण गए साडे साक, सज्जणा वांगू संग रखाईआ। पर एह ब्राह्मण बड़ा चलाक, चलाकी करन तों बाज़ ना आईआ। झट्ट ब्राह्मण किहा मैं नाथां दा नाथ, ग़रीबां विच्चों ग़रीब ग़रीब नज़री आईआ। जे जजमान खुशीआं मेरी झोली पावण दात, मैं खुशीआं नाल गाईआ। रविदास किहा तुहाढ्ढी सोहणी बणी जमात, दस इक ग्यारां ग्यारां दा एका एका इक्को नज़री आईआ। सारे मंगो सच्ची दात, मैं सच दयां समझाईआ। प्रभ तेरे रहीए साथ, सोहणा संग निभाईआ। सब दी पूरी करे आस, हरि वड्डा वड वड्याईआ। एहदे घर केहड़ा घाट, देदयां तोट रहे ना राईआ। घुम्यार कहे साडी खोटी ना होवे वाट, आउणा जाणा लेखे पाईआ। रोण वाला बच्चा कहे चम्यार दा फड़ के हाथ, मैनूं भात दे खवाईआ। जिस दी सुकयां टुकड़यां विच्चों बदली ज़ात, मेरी जात देवे वटाईआ। रविदास हस्स के किहा शाबाश, किडी सोहणी गल्ल सुणाईआ। आपणी सवाणी नूं मार आवाज़, नेड़े ल्या बुलाईआ। कोई है रख्या खाज, बच्चयां देवां वरताईआ। कहे मैं थोड़ी जही थल्लयों घरोड़ी रखी सांभ, खुरपीआं नाल लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। रविदास सवाणी लै के आई वस्त, अग्गे दिती टकाईआ। रविदास फड़ के हस्त, थोड़ी थोड़ी वरताईआ। खांदयां सार सारे हो गए मस्त, खुशी विच नच्चण टप्पण ढोले गाईआ। छोटा बाला कहे मैनूं नज़री आया अर्श फर्श, मेरी सोहणी अक्ख खुल्हाईआ। रविदास खुशी नाल मार थप्पड़ उह वेख पुरख अबिनाश, बैठा डेरा लाईआ। ओस आपणयां भाईआं दित्ता आख, इन्हां देवे समझाईआ। नाले तक्क के वल बाप, कहे बापू जी ओह बापू बेपरवाहीआ। तेरा मेरा प्यो पुत दा साक, मैं बाल तूं पिता जगत अख्वाईआ। पर ओहो जिहा ना जाणे जाप, जिस दे अन्दर नूर ज़रूर नज़री आईआ। मैं तैनूं रिहा आख, ओस दे लग्ग पाईआ। घुम्यार कहे की एह सच बात, जो कुछ मैनूं रिहा जणाईआ। अन्दरो आई इक आवाज़, सोहणी धुंन उपजाईआ। जो कुछ है सो एसे दे पास, देवणहार अख्वाईआ। घुम्यार आई कयास, की कुछ इस दी भेंट डाईआ। सारे हथ्थ मारया कुछ नहीं साथ, अन्दरे अन्दर शरमाईआ। फिर आ गई याद, खुरजी खोते उते टिकाईआ। जीहदे विच वस्त खास, मैं आपणी लई रखाईआ। हुण ओहो देवां दात, इस दी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। घुम्यार उठ के खुरजी रिहा फोल, खुशीआं विच गाईआ। एहदे विच वस्त अनमोल, भेंटा देवां चढ़ाईआ। इक निक्की जही गुच्छी तमाकू दी जो सदा तोलां तोल, लीरां विच बंद कराईआ। चुप कीते होली जेही अग्गे रखी अडोल, प्रभ दी भेंट चढ़ाईआ। मूंहों कुछ ना सक्या बोल, कहि ना सके राईआ। नाले डरे नाले शरमाए किते रविदास ना लवे फोल,

की कुछ रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रचाईआ। छोटा बच्चा कहे बापू, की प्रभ नूं भेंट चढ़ाईआ। उह पुत्तर मैं उह दित्ता तमाकू, जो आपणे लई रखाईआ। सारे कहिण पता नहीं परमात्मा की आखू, गुस्से विच की सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। तमाकू भेंट चढ़या, गठड़ी बंद रखाईआ। श्री भगवान हथ्थ फड़या, खुशीआं नाल ओसे दी झोली पाईआ। तेरा कारज पूरा सरया, लैण देण दी लोड़ रही ना राईआ। जे घुमिआर कोई भाण्डा घड़या, मैनूं कच्चा देणा लिआईआ। उस विच पाणी रहे ठरया, ठंडा रूप बणाईआ। घुमिआर कहे मैं चक्क ते चाढ़ आवी विच धरया, अग्न भेंट चढ़ाईआ। जिस वेले घर जावां मुड़या, उसे वेले लै के आईआ। उधर चार कहार पंजवें यार फुरना फुरया, आपणी गल्ल सुणाईआ। घुमिआरा क्यों लालच विच जांदा रुढ़या, घड़े पिच्छे आपणा मुख भवाईआ। ओए एथे आ के ना रहीं नगुरया, सतिगुर कोलों कुछ मंग दात तेरी झोली देवे पाईआ। ओन्हे चिर नूं निक्का बाला पाउण डहि प्या डण्ड, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां चिर मेरे मूंह विच पाए ना मिट्ठी खण्ड, चुटकी आपणे हथ्थ नाल फड़ाईआ। मैं रोणो नहीं होणा बंद, बापू चुप्प ना सके कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। बच्चा रोवे ज़ोरो ज़ोर, हौके लै लै रिहा सुणाईआ। सानूं भुक्ख्यां ना तोर, तेरे दर ते मंगण आईआ। तेरे बिनां नहीं कोई होर, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। सानूं इक्को तेरी लोड़, दूजी लोड़ ना कोई रखाईआ। पुरख अकाल पिता बापू साडे बापू दी बच्चयां संग बन्न आपणी डोर, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। विछोड़ा दे ना जावी छोड़, छोटे छोटे रहे कुरलाईआ। घुम्यार ने उत्तों लाह के आपणी दोहर, लाल पट्टी वाली प्रभ दी भेंट चढ़ाईआ। बच्चयां होर मचाया शोर, नैणां नीर वहाईआ। हौली जेही प्रभू उठ के आया कोल, फड़ बांहों गले लगाईआ। चुक्क के गोदी करे चोल्ह, हलारया नाल हिलाईआ। मैं सदा तुहाड्डे कोल, वसां हर घट थाईंआ। रविदास प्या बोल, एसे दी वड वड्याईआ। निक्का बच्चा खोते नूं कुट्टण लग्गा वांग ढोल, डग्गा हथ्थां नाल बणाईआ। गधा अग्गों प्या बोल, हींग हींग सुणाईआ। मेरा पर्दा दित्ता खोल्ह, मैनूं वी एहो नज़री आईआ। जेहड़ा तुहाड्डे वसे कोल, ओहो मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। ओधर वेख घुम्यार दी दोहर, पट्टी लाल नज़री आईआ। रविदास किहा कुछ मंग ला होर, देवणहार दया कमाईआ। फड़ के गठड़ी तमाकू वाली कैहन्दा अजे मैनूं एहो लोड़, बाकी आपे देवे जेहड़ी एहनूं भाईआ। बच्चे कहिण एहदे अग्गे केहड़ा ज़ोर, निमाणे हो के सीस झुकाईआ। साडा जे होवे सानूं जावे बौहड़, बौहड़ लए गल लाईआ। उधरों ब्राह्मण उठ के आया कोल, एह की रौला रहे पाईआ। लैण

देण वाली वस्त दोहां दे नहीं कोल, गल्लां नाल प्रचाईआ। आपणे कोलो कढ्ढ के थोड़े जेहे तिल थोड़े जहे चौल, कणक दाल आटे विच सतनाजा दित्ता बणाईआ। उते रख के तन्द मौल, चिटा लाल रंग वखाईआ। आ वेखो मैं जजमानां दे लुट्ट के लयांदे बोहल, घर मिशरानी कोल रखे टिकाईआ। थोड़े जहे तुहानूं वखावण लई रखे कोल, तुसीं वी मैनूं एसे तरां दयो चाईं चाईंआ। फिर आपणी गठड़ी वखाई फोल, गंडां इक्की विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिहड़े बहुते जजमान अनभोल, ओहनां कोलों पगड़ीआं मंग के लिआईआ। इक होर पर्दा ल्या खोल्ह, जिस विच तक्कड़ी पसेरी रिहा टिकाईआ। जे माईआं बीबीआं मिलण तां ओहनां दे बच्चयां दे तोलां तोल, आटा दाणा ढाई गुणा पुआईआ। जे मेरे साहमणे कोठी दा बूहा देण खोल्ह, अगों वड्डा भण्डारा नज़री आईआ। फिर सत्त करां पूरे तोल, जे भारे होण जजमाना नूं चुक्कण नाल लिआईआ। नाले कहवां बैठे रहो अडोल, मैं तुहाढ्ढे गुड्डे रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी रचन रचाईआ। सुण के बचन बोले चार कहार, पंजवां नाल रलाईआ। घुम्यार दा साडे नाल की विहार, रविदास दे समझाईआ। रविदास कहे एह खेल करे करतार, जो बच्चयां दए वड्याईआ। बच्चा कहे असीं भुक्ख्यां मंगी दात, आपणी झोली डाहीआ। ब्राह्मण कहे मैं मंगण नूं इक्को तकड़ा तुसीं मैनूं कहो शाबाश, तुसीं देवणहार जजमान, मंगण क्यों आईआ। तुसीं दस्सो तुसां किथे कटणी रात, मैं उथ्थे तुहाढ्ढे कोल आवां बणके पांधी राहीआ। जेहड़ी खुशी नाल बख्शोगे दात, उसे नूं लै के तुहाढ्ढा जस गाईआ। बिनां ब्राह्मणां तुहाढ्ढी किसे ना पुछणी वात, बिनां सानूं दित्ता दान अग्गे हथ्थ कोई ना आईआ। असीं परोहत तुसीं जजमान, प्रभ ने बणत बणाईआ। तुहाढ्ढा दान ते साडा पीण खाण, दोहां नूं नज़री आईआ। तुसीं मैनूं करो प्रणाम, मैं भगवान नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्मी खेल रचाईआ। घुमिआर दी दोहर गई विछ, चारे कन्नीआं गई फलाईआ। मेरे उते बहिण सारे रिख, सोहणी संगत बणाईआ। श्री भगवान सब नूं पए दिस, इक्को रूप नज़री आईआ। विच्चों ब्राह्मण बाहर हो गया करके जिद, मेरी वक्खरी जग्ह क्यों नहीं रखाईआ। रविदास किहा एह धुर दी बिध, बिध दाता रिहा बणाईआ। श्री भगवान किहा रविदास कुछ लेख लिख, जो मैं दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। छोटे बाले किहा प्रभू लग्गा की लखाउण, केहड़ी कलम चलाईआ। कि बच्चयां वांग सानूं लग्गा पर्चाउण, थोड़ी थोड़ी वस्त झोली पाईआ। जिन्हां चिर रविदास ना आवे समझाउण, साडी समझ समझ नाल रलाईआ। असां कोई अक्खर नहीं देणां पाउण, कलम देणी ना चलण नाल सिआईआ। मार दुहथ्थड़ां लग्गा रोण अक्खां विच घसुन्न रखाईआ। सिर दे वालां लग्गा खोहण, सोहणा दु:ख बणाईआ। मार टक्करां

छुरी लग्गा वखाउण, आपणा आप मिटाईआ। धरती उते लेट के लम्मा पै के लग्गा सौण, मैं आपणा आप देवां तजाईआ। असीं आए प्रभू मनाउण, इस सानूं दित्ता ना कोई समझाईआ। कहारो की सानूं ल्याए खवाउण, खादा पीता नज़र कुछ ना आईआ। अग्गों ब्राह्मण उठके आया पिच्छे हटाउण, ऐवें रौला ना पाउ भाईआ। घुम्यार नूं गुस्सा चढ़या उन मुकी मारी धौण, परां दित्ता हटाईआ। मैं बच्चयां रोंदयां नूं आया हसाउण, सो भुक्खे रहे कुरलाईआ। एहदे कोलों आया कुछ दवाउण, खाली झोली देवां भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दए लिखाईआ। दूहरी दोहर हेठां पई गई थक्क, हौली जही सुणाईआ। मेरे भार बहुता आया लक्क, हौला दयो कराईआ। मूधी पई दा रगड़या गया नक्क, मस्तक दर्द मन्नाईआ। मैनूं कुछ ते दयो मेरा हक़, तुहाडी सोहणी सेव कमाईआ। ओधरो ब्राह्मण बोलया झट्ट, जे औखी आ के मेरी भेंट दयो चढ़ाईआ। मैं लै के होवा पत, ब्राह्मणी हथ्थ फड़ाईआ। फेर आवां नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। आ के घुम्यार दा गावां जस, जिस दूहरी दोहर तैनूं दान कराईआ। गुस्सा गिला देवां छड्ड, जेहड़ी धौल सिर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह चलाईआ। सुणके ब्राह्मण बात, चौथा कहार रिहा सुणाईआ। तैनूं केहड़ी केहड़ी दईए सौगात, तेरी आसा पूरी नज़र नहीं आईआ। जे कुछ मंगणां एस प्रभू कोलों मंग दात, तेरी तृखा दए बुझाईआ। ब्राह्मण मिल गया एस जमात, आपणा आप गंवाईआ। ब्राह्मण अन्दरो थोड़ी जही होई खाहश, आप आपणा ध्यान लगाईआ। जे पता लग्ग जाए मेरी ज़ात, ब्राह्मण शूद्रां विच डेरा लाईआ। साडी कुल हो जाए नास, अगाड़ी झोली दान कोई ना पाईआ। मेरी मिशराणी घर बैठी किस तरह करू राज, खाणा पीणा सोहणा बणाईआ। एथों चुप करके चल्लीए भाज, आपणा पल्लू छडाईआ। पिउँ दादे दा क्यों छड्डीए रवाज, खाणा पीणा एह रंग हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच दए वड्याईआ। रविदास सब कुछ रिहा सुणदा, आपणे अन्दर ध्यान लगाईआ। वेखो खेल अगम्मी धुर दा, धुर दी धार वड्याईआ। वेखो जोड़ किवें जुड़दा, पंजां होवे कुड़माईआ। ब्राह्मण कदे आवे कदे मुड़दा, सलाह विचो विच रखाईआ। कदे जीउदा कदे मुर्दा, अपणा रूप वटाईआ। इक फुरनां फुरया हिरदा, एहदे विच्चों अवाज़ सुणाईआ। जिस नूं लभ्भदा फिरदा चिर दा, चिरी विछुंना नेड़े आईआ। वेख कहारां गेड़ा गिढ़दा, रविदास चम्यारे दए वड्याईआ। घुम्यार किधरों आया फिरदा फिरदा, चौहां बच्चयां नाल मिलाईआ। सच दवारे घेरा घिरदा, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। वेखो अगम्मी गेड़ा गिढ़दा, गेड़े विच रखाईआ। केहड़ा लेखा अग्गे छिड़दा, छेकड़ अजे हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सभना रिहा समझाईआ।

साहिब सतिगुर कर प्यार, रविदास रिहा सुणाईआ। पहलों सद्द चार कहार, पंजवां हौली जही नाल मिलाईआ। उनां देवां जगत हुदार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। टुक्कड़यां विच्चों जे टुक्कड़ा दित्ता खवाल, भात भली भूत नज़री आईआ। उन्हां सिर ते दे रुमाल, सोहणा पर्दा पाईआ। मंगी मंग दे के दान, धुर दी आस पुचाईआ। तेरा संग नाल महान, देवां जोड़ जुड़ाईआ। बेशक बदल देवां ज़िमी असमान, भगत भगवन्त लेखा सके ना कोई बदलाईआ। मेरी तेरे नाल जबान, एहनां नाल रखाईआ। पंजां नूं जामा मिले महान, मानस विच्चों मानस रूप वटाईआ। चिन्ह बदले निशान, पुरख पुरुष नारी नर नरायण दरसाईआ। अगला लेखा फेर दस्से आण, लहिणा मात चुकाईआ। रविदास चरण कँवल कर निमस्कार, दोवे जोड़ सीस झुकाईआ। तेरीआं तू ही जाणें करतार, करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर वसाईआ। रविदास घुमिआर सद्द, जिस दोहर भेंट चढ़ाईआ। अन्दर लँघे हद्द, आपणा चरण टिकाईआ। उहदे नाल बच्चे आवण भज्ज, सोहणा बंस सुहाईआ। मैं रखा उन्हां लज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उन्हे चिर नूं निक्के बाले किहा गज्ज, ज़ोर ज़ोर नाल चिलाईआ। चरण फड़ के मुख चुक्क के अक्ख खोल्ह के कहे दरस कर लैण दे रज्ज, अज्ज वेला भुक्ख्यां हथ्थ आईआ। बाकी सारे बच्चे पए नच्च, घट्टा पैरां नाल उडाईआ। उन्हां दे हिरदे वसया सच्च, सच सरूप वेख खुशी मनाईआ। प्रभू असीं गुनाह तों जाईए बच, छोटे हुंदयां मंग मंगाईआ। तेरे प्रेम विच रंगी जाए रत्त, रत्ती रत्त सुकाईआ। छोटे बच्चे प्रभ दा फड़के हथ्थ, चुंम्यां चाई चाईंआ। चुम्मण नाल गया ढह्व, आपणी होश गया भुलाईआ। घुम्यार बच्चे दे सिर ते हथ्थ ल्या रख, हौली हौली हलाईआ। उह वी होया बेवस, सिर तों पगड़ी लाहीआ। मूँह दे भार डिगा झट्ट, आपणी होश भुलाईआ। बोझे विच्चों डिग पई तमाकू वाली गट्ठ, कतरा कतरा धरनी वंड वंडाईआ। बेहोशी विच मारे हथ्थ, एधर ओधर भुआईआ। भाउदयां भाउदयां प्रभ चरणां ते गया लग्ग, सोहणी खुशी मन्नाईआ। उसे वेले खुल्ह गई अक्ख, निरगुण नज़री आईआ। जोड़ के किहा हथ्थ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जे मेरा बच्चा जाए बच, जो तेरी भेंट चढ़ाईआ। मेरा इस दे उते नहीं हक़, दर तेरे सेव कमाईआ। श्री भगवान किहा हस्स, एह मुढ तों आदत मेरी चली आईआ। जो मेरा मैं उहदे हो जां वस, वारता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी खेल रचाईआ। वेख खेल ब्राह्मण सोचे, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। मेरे खाली होए बोझे, भेंट नज़र कोई ना आईआ। घुम्यार कदों हिक़े खोते, डेरा अगले पिण्ड लगाईआ। ब्राह्मण इस दे कोलों हेरा फेरी नाल सब कुछ बोचे, खाली हथ्थ दए कराईआ। अमृत वेले उठ के धोती बन्न्हे वांग लंगोटे, चोरी भज्जे वाहो दाहीआ। एहो जहे घुम्यार बहुते,

मैं लुट्टे राह जांदे राहीआ। जे होर कुछ ना दिऊ एहदी पैरीं जोड़ा दिसे खोसे, अगों नोक उठाईआ। जिस दी लम्बाई चौदां उंगलां दो पोटे, अक्खां नाल तकाईआ। उत्तों कढ्ढी धार नाल तिले सच्चे गोटे, सोहणा रंग वखाईआ। जे वड्डी होऊ विच्चों कर लऊँ दो टोटे, बगल विच टिकाईआ। एहदा तिला साभ के रखूं उस कोठे, जिस कोठे विच बहुता धन्न रखाईआ। जिस वेले मेरे जम्मणगे पोते, एह वढ्ढुयां पैरां निक्के पैर देवां बणाईआ। जे पोतयां पहलों जम्मण दोहते, उन्हां दी भेंट चढ़ाईआ। रविदास ओसे वेले सोचे, अन्तर ध्यान लगाईआ। उस दी पिठ हौली जही ठोके, ब्राह्मण नूं समझाईआ। किसे कम्म नहीं आउणे कोठे, किधर ध्यान लगाईआ। ब्राह्मणा तेरे घर पुत ना पोते, परमेश्वर बैठयां एहो नीत रखाईआ। तूं मंग मेरे प्राण रहिण सौखे, दु:ख दर्द ना लागे राईआ। एहो जहे कदी नहीं मिलदे मौके, मिले मेल बेपरवाहीआ। लख चुरासी गई सौं के, नार कन्त सेज हंढ्ढाईआ। मुड़ के कोई नहीं आया भउ के, मानस मानस विच्चों रूप वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए गौं के, फेर फेरा कोई ना पाईआ। ब्राह्मण पिच्छा वेख्या भौं के, आपणा मुख भुआईआ। इक्को वार अन्दरों निकले हौके, हौकयां नाल कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी वासना निकली गंदी, आपणा गई तजाईआ। ब्राह्मण मंग इक मंगी, रविदास नाल मिलाईआ। मेरी टुट्टी देणी गंढ्ढी, धागा डोर तेरी हथ्थीं नज़री आईआ। रविदास कहे मैं रम्बी तिक्खी चण्डी, उच्चे नीचे सारे पध्धर देवां कराईआ। आर कहे मेरे अगे निक्की जही कुण्डी, फड़के तन्द धागा डोर खिचके बाहर लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सुण के बचन ब्राह्मण खुल्ही अक्ख, अक्खां लईआं बदलाईआ। मैनूं की चम्यार दित्ता दस्स, दस्सदयां सुरत बदलाईआ। मेरे कुछ नहीं रह गया वस, ब्राह्मणी याद ना कोई सताईआ। हुण मैं किसे वस्त नूं लाउणा नहीं हथ्थ, जजमानां घर मंगण ना जाईआ। प्रभ दी चरणी गया ढह्ढ, सीस जगदीश झुकाईआ। पत मेरी लैणी रख, साहिब मेरे गुसांईआ। उधरों चौथा कहार प्या हस्स, खुशी नाल सुणाईआ। प्रभू एह बड़ा ठग्ग, साडे पैसे लुट्ट के आपणे गंढ्ढ बन्नाईआ। ब्राह्मण कहे मैं फिर डरदे इन्हां अग्गे दित्ते रख, भरोसा दित्ता कराईआ। एहनां भुक्ख्यां फिर मेरे अग्गे दित्ते सट्ट, खुशीआं नाल फड़ाईआ। मैं ब्राह्मणी दी घड़ा के आया नथ्थ, तिन्न बलाक, रखाईआ। उह गाउँदी सदा जस, सोहणी खुशी मनाईआ। मेरे प्रभू वेख खाली हथ्थ, मैं एधरों ल्या एधर दित्ता भेंट चढ़ाईआ। अग्गे वासते कीती बस्स, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। मेरे सिर ते रखीं हथ्थ, देवीं सच सरनाईआ। रविदास किहा हस्स, नौ दवारे वासना दिती तजाईआ। छोटा बच्चा बोलया झट्ट, हौली जही समझाईआ। अजे थोड़ी जही खुल्ही अक्ख, साफ सुथरी

५६८ १६

नज़र ना आईआ। एह चाहुंदा सारयां नालों बहुता मैनूं मिले हक़, मेरी फेर होवे वड्याईआ। इस दा कढ्णा चाहीए शक़, पुरख अकाल अग्गे उहला रहिण कोई ना पाईआ। श्री भगवान खुशी नाल किहा हस्स, बच्चा तेरी वड वड्याईआ। इस शक़ विच नौ जन्म देवां रख, मानस मानस रूप वटाईआ। अग्गे करके पूरा हक़, लेखा लेखे लाईआ। रविदास प्रभ नूं किहा झट्ट, एनी बड़ी सजाईआ। मेरे संग एहनूं लवीं रख, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। ब्राह्मण किहा कंगण पिच्छे मैं गया नट्ठ, आपणा मुख छुपाईआ। वेखो रविदास ने फेर वी दित्ता छड्ड, सिफारिश कर के मैनूं रिहा तराईआ। हुण मैं वी नहीं होणां अड्ड, सोहणा संग निभाईआ। उधरों वड्डी पग्ग वाला घुम्यार बोलया झट्ट, इक वार सुणाईआ। कुछ सानूं वी दे हक़, चढ़के खोतयां उते मंगण आईआ। निक्का बच्चा फड़के मूँह खोलया झट्ट, आंदा प्रभू एहदे विच सब कुछ दे टिकाईआ। श्री भगवान इक चौलां दा दाणा विच दित्ता रख, सिर ते हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम लवां लभ्भ, आपणा भेव चुकाईआ। पिछला नाता तोड़ के हद्द, अगला जोड़ जुड़ाईआ। भाग लगा इक्को यद, इक्को बंस सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। रविदास किहा सुण घुम्यार, गुथ्थी तेरी रहिण कोई ना पाईआ। तैनूं ल्याए चार कहार, पंजवां नाल मिलाईआ। तुसीं पंजे खोतयां ते अस्वार, नट्ठे वाहो दाहीआ। बच्चे कीती गिरयाजार, भुक्ख रही सताईआ। चौथे आया इक प्यार, सभनां नूं समझाईआ। थोड़ा थोड़ा एहनां दईए खवाल, जो रुमाल विच बंधाईआ। उस खादयां मिल्या जमाल, नूर ज़रूर रुशनाईआ। तुसीं आए घर सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा सोभा पाईआ। वेख इक तूं चार लाल, पिउँ पुत पंजे इक्को रंग समाईआ। छोटा बच्चा फेर करे कमाल, आपणी गल्ल सुणाईआ। साडा पिउँ खोते वाह के करे वणज व्यपार, जिणस घरो घरी खरीद लिआईआ। हुण असीं तक्कया ते इक्को बणाउणा दलाल, सौदा इके घरों दए बंधाईआ। नाले भुक्ख्यां पुछे हाल, दुखियां दुःख गंवाईआ। जे किते संसार विच पै जाए काल, सानूं तोट रहे ना राईआ। जेहड़ा इक दाणा दए खवाल, बिन खादयां तृप्त कराईआ। एहो जिहा सोदा किते नहीं मिलणा माल, नाले बिन पैस्सयां टक्या वरताईआ। जिन्ना चिर ना मन्ने सवाल, घर मुड़ कोई ना जाईआ। रविदास किहा सुण बाल, प्रभ देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बाल कहे मैं नहीं मन्नणा, पक्की जिद रखाईआ। जे सानूं खाली घल्लणा, फेर असीं एथे बहि के झट्ट लँघाईआ। तेरे नाल लाहीए ढोरां खल्लणा, जुतीआं सीण दी जाच देणी सिखाईआ। सच दवारा इक्को मल्लणा, बेशक सानूं मलेश कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान सुण के किहा रविदास, एहनां पूरी आस कराईआ। आह

लै वस्त खास, एहनां दे खवाईआ। कोई ना होवे निराश, धीरज धीर दवाईआ। जे मंगदे मेरा साथ, मैं देवां साथ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी धार चलाईआ। रविदास फड़या इक भोरा, आपणे हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान किहा एह अजे थोड़ा, इक वेरां होर दूजा हथ्थ लगाईआ। बच्चा रो के पावण लग्गा शोर, पहलों मेरी झोली भराईआ। रविदास खुशी नाल थोड़ा जिहा विच दित्ता भोर, पहला हिस्सा वरताईआ। फेर दूजे दी पई लोड़, उह वी विच रखाईआ। एसे तरां पंजां नूं वरताया जिंनी लोड़, झोली सब भराईआ। जिस वेले दोवें उगलीआं दितीआं खोल्ह, आपणे हथ्थ वखाईआ। श्री भगवान किहा बोल, रविदास दा प्रशादा दो दो जन्म दवाईआ। पहलां जन्म दस्सां अनमोल, छोटा बच्चा लालो रूप वटाईआ। नानक तोले तोल, तक्कड़ी हथ्थ उठाईआ। एह चारे आंढी गवाढी बण के वसण कोल, सोहणा संग निभाईआ। नानक करके जाए घोल, इक इकरार रखाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान तुहाडे आवे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। साचा नाता देवे जोड़, पिता पुत पंजे जणे भाई भाई बणाईआ। भैणां भाईआं दी प्रभ नूं लोड़ा, विच्चों लालो मुख रखाईआ। एह सुण के चार कहार ते पंजवें मित्र दित्ता ज़ोर, रविदास फड़के रहे हिलाईआ। की प्रभ नूं साडी नहीं लोड़, जे आवे ते क्यों ना संग लिआईआ। फेर बच्चे किहा तुसीं सारे रौला पाओ होर, रो रो के लओ मनाईआ। मैं वी एसे करके पाया शोर, शोर विच्चों एहदी रहमत नज़री आईआ। पुरख अकाल किहा सारे रहो अडोल, धीरज धरवास बंधाईआ। मैं तुहाडे हिसे दा सांभ के रख्या इक चौल, दाणा दाणे विच्चों बचाईआ। सारे अकट्ठे करके रखां आपणे कोल, विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। नाल ब्राह्मण रखां चोर, ठग्गां विच्चों ठग्ग दयां तराईआ। प्रीती रविदासे नाल जोड़, सोहणी बणत बणाईआ। चार कहारां कोलों जो पैसे लए बटोर, आपणी गंढु टिकाईआ। ओस वेले मैनूं पवे ओहनां दी लोड़, ओह रकम तुहाडे साम्हणे मंग मंगाईआ। बेशक मिशराणी सूमणी हो के लए जोड़, आपणे घर टिकाईआ। जे ना देवे उहदे नक्क नथ्थ सुहाग दी टुट्ट जाए डोर, ब्राह्मण लोकमात नज़र ना आईआ। किसे कम्म नहीं औणे बलाक बोर, तिन्नां लोकां मिले ना ढोईआ। सारया किहा प्रभ जे तूं जाएं बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी सारे रहे सुणाईआ। सानूं किसे दी नहीं लोड़, घर बार सारे दित्ते तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। श्री भगवान कहे मैं दयावान, दया विच समाईआ। रविदास दे टुक्कड़े सुक्के कर परवान, लहिज फहिज भक्ख भोज रूप वटाईआ। एहो जिहा किसे नहीं मिल्या पकवान, खा खा गई जगत लोकाईआ। जिस विच्चों तुहाडे जोगा रख ल्या दान, आपणे कोल छुपाईआ। कहारो जेहड़े तुहाडे पैसे ठग्ग के गया बेईमान, मेरे साम्हणे ठग्गी कमाईआ। रविदास नाल ना साबत रिहा ईमान, सिदक दित्ता

तुड़ाईआ। एह लेखा कदी ना छड्डा विच जहान, जामन हो के पूर कराईआ। ओस वेले रविदास किहा श्री भगवान, दोए जोड़ सीस निवाईआ। जे कुछ लेखा है मै वी इस ब्राह्मण ठगणे नूं देवां दान, टका टका बचया सवा एहदी भेंट चढ़ाईआ। पारब्रह्म कहे एहदे वल मेरा ध्यान, सद वेखां थाउँ थाईंआ। लहिणा देणा चुकावां आण, पिछला लेखा मात चुकाईआ। ओने चिर नूं घुम्यार उठया बलवान, पगढ़ू वाला रिहा सुणाईआ। मैं पहलो लैणा तैथो ब्यान, प्रभ साचे सच दे सुणाईआ। दूजे जन्म विच किथे मिलें आण, कवण धाम सुहाईआ। पंजां किवें करे परवान, प्यो पुत्त समझ किसे ना आईआ। भाईआं नाल भाई मात शिकम विच कट्ठे करें आण, गर्भ निवास रखाईआ। रविदास किहा एह मेरा मेहरवान, महिबूब वड गोसाईआ। घुम्यार पिच्छे आया ध्यान, हथ्थ जेब विच टिकाईआ। तमाकू वाली गठड़ी दा ना मिल्या निशान, हौके लै के रिहा सुणाईआ। मेरी एहदे विच जान, लभ्भो मैनूं हथ्थ किसे ना आईआ। छोटा बच्चा कहे बापू किडा निधान, निक्की जही गल्ल पिच्छे रौली रिहा पाईआ। अग्गों गुस्से नाल किहा चल्ल मेरे शैतान, तैनूं इस दी समझ जरा ना आईआ। जिस वेले खा पी के एहदा सूटा लावां धूआं उडे असमान, फुनकारा इक्को वार लगाईआ। गुड़ गुड़ करके खेल करे महान, मेरा दिल प्रचाईआ। थक्कयां टुट्टयां दी लाह देवे थकान, सोहणा सुख वखाईआ। जे कोई घर विच्चों साथी करे ना बोल चाल, एहनूं अड्ड लै के बहि के एहदे नाल आपणा झट्ट लँघाईआ। जीवण बण जाए साथी, साथीआं विच्चों साथी एहो नज़री आाईआ। इस तमाकू पिच्छे आपणी दोहर थल्ले दिती विछा भगवान, सारयां नूं उते बहाईआ। तुसीं मैनूं सारे एह मंग दयो निक्का जेहा दान, जे जम्मां मेरे नाल गठड़ी देवे बंधाईआ। मेरे एसे विच प्राण, प्राणां विच्चों एहो नज़री आईआ। जे घुम्यार नूं तारे भगवान, भगवान फिर ना लए तराईआ। एह वेख खेल महान, चार कहार खुशीआं रहे मनाईआ। पंजवां बोले नाल जबान, सुणो कन्न लाईआ। अज्ज सारे इक्को पक्का करो ईमान, हथ्थ नाल हथ्थ लओ मिलाईआ। इक दूजे दी बण जाओ जान, नाता तुट कदे ना जाईआ। जिहड़ा पंडत साथों लैदा रिहा दान, एहदे वल तक्को सारे ध्यान लगाईआ। फिर शरारत करे ना बण शैतान, धोखा साडे नाल रखाईआ। अग्गों खुशी हो के किहा श्री भगवान, बच्चयो फिकर करो ना राईआ। तुहाडा दित्ता आपे देवे आण, अमानत एहदे कोल टिकाईआ। करां खेल महान, अभेव अभेद खुलाईआ। बण के वाली दो जहान, दोहां लेख चुकाईआ। पहलों सारयां नूं रविदास दा खवा पकवान, तृष्ना तृप्त कराईआ। फेर ब्राह्मण कोलों रख्या लवे दान, धुर दी मंग मंगाईआ। ब्राह्मण हो के कहे हैरान, चंगा लम्मा झंझट पाईआ। पता नहीं फेर मिशराणी शायद होवे मेरे नाल, के नालों नजर कोए ना आईआ। रविदास किहा एह ना कर ख्याल, दलील दलील ना कोई रखाईआ।

जेहड़ी नक्क नथ्थ पा के सुहागण बण गई रकान, कच्चा तन्द डोर पा के कन्न नाल लमकाईआ। उस दा खहिड़ा छुट्टा ना मेरा विच जहान, सोहणी जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। उह तेरे पिच्छे करे दुकान, पिछला घाटा पूर कराईआ। चालीआं विच्चों वीह परवान, वीह निशान सोहणा रंग रंगाईआ। चालीआं पैस्सयां नाल चालीआं वाली चलदी रहे दुकान, चाली चालीआं विच्चों लेखे पाईआ। बीस चाली इक फ़रमाण, इक तों दो नज़री आईआ। लहिणा अज्ज मुक्के जहान, बाकी फेर रहे ना राईआ। संगी साथी सारे मिल के खाण, खुशीआं रंग वखाईआ। रविदास किहा श्री भगवान, तेरी बेपरवाहीआ। की एहदा पक्कू पकवान, किस तरह वंड वंडाईआ। शहिनशाह कहे मैथों वड्डा किसे दा नहीं पीण खाण, देवण वाला नज़र कोई ना आईआ। जिस उते होवां मेहरवान, मेहर नज़र दयां टिकाईआ। सो मेरयां भगतां सेवा करे महान, भेंटा कड़ाह प्रशादि चढ़ाईआ। जिस प्रशादि विच्चों प्रशादी मिले आण, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सुण के बचन सुहञ्जणा वेला, घुम्यार लए अंगड़ाईआ। जगत जहानो हो के वेहला, शब्दी फेरा पाईआ। मैं कुछ आपणे बंस नूं कहिणा, कहि के देवां समझाईआ। जिस दे पिच्छे तुहानूं मिल्या लहिणा, प्रभ दर मिली वड्याईआ। मेरी दोहर दा विछोणा किसे नहीं रहिणा, सच सच्च दयां जणाईआ। जिस उते श्री भगवान बहिणा, सोहणा आसण लाईआ। जे मैं नहीं रिहा होर किसे वी नहीं रहिणा, सब ने आउणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवण वाला वड्याईआ। घुम्यार कहे मैं आया घुंमदा, सोहणा चक्र लगाईआ। मैनूं याद आया लेखा पिछला गुण दा, जो मेहरवान दया कमाईआ। मेरे बंस विच्चों किशन सिंघ वकील सिंघ अछर सिंघ जे होवे सुणदा, वढ्डयां छोटयाँ नाल रलाईआ। वेखो कीमत चुकावे मुल दा, अनमुल्ल वस्त वरताईआ। जे मैं वड्डा ना हुन्दा इस कुल दा, रविदास चम्यार ना देदां गवाहीआ। पंजां दा परिवार ना एनां फुलदा, फुलवाड़ी विच माली कदे ना आईआ। ग़रीबां पिच्छे गहर गम्भीर कदे ना रुलदा, सचखण्ड दुआर तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। किशन सिंघ रख याद, फेर दयां समझाईआ। जिस वेले प्रभू दे आखे मैनूं मारी सी आवाज़, आपणा ज़ोर लगाईआ। प्रभ ने उसे वेले मेरा खोल्ह दित्ता राज़, रविदास वेले दा चेता दित्ता कराईआ। एह कोई कम्म खास, जिस दे पिच्छे फिरे बेपरवाहीआ। उह दूजे जन्म दी दूजी मारे आवाज़, पिछला लेख मुकाईआ। आपणे सिरो लाह के ताज, गुरसिखां सिर पहनाईआ। मैं इक्को मंग मंगां बण मुहताज, सब परिवार अग्गे झोली डाहीआ। जिस रखी साडी लाज, ओस दा संग लैणा रखाईआ। मैं सच दस्सां बात, तुहानूं दयां समझाईआ। जिस वेले तेई माघ दी आई रात, घड़ी

अठ दस वजाईआ। हौली हौली चल्ल के आया मेरे पास, बैठ सरहाणे ख़ुशी मनाईआ। तिन्न वार बैटरी नाल मार के लाट, मेरी ललाट विच कीती रुशनाईआ। मेरीआं अक्खां वल अक्खां नाल झाक, आखर आपणा रंग वखाईआ। जिस वेले मैनूं पुच्छे वात, हौली जेही तिन्न वार हौली जेही ऊँह कर सुणाईआ। ओसे वेले मेरे लई जा के घलया सोहणा राथ, घोड़ा वड्डा दए वखाईआ। क्यों, मेरी घोड़ी ते चढ़या मार पलाक, ओस दे बदले मैनूं दित्ता चढ़ाईआ। नाले करके पूरा वाक, आपणा खेल वखाईआ। मैनूं जाण लग्गे नूं चेता आया तमाकू नहीं साथ, हथ्थ डब्ब उते टिकाईआ। ओने चिर नूं मेरे निकल गए सास, साथ बणया बेपरवाहीआ। अग्गे वेख्या खेल तमाश, सोहणा रंग नज़री आईआ। नच्चण कुद्दण टप्पण परीआं करन नाच, मैं वेखां अद्भविचकार बैठा चाईं चाईंआ। ओने चिर नूं प्रभ ने विच्चों समझ ल्या राज़, मोहणी रूप हो के मोहणीआं विच लुभाईआ। छोटे बच्चे पिछले जन्म दे लालो दूजे जन्म दे किशन सिँघ नूं सुणाई आवाज़, सुरती सुरत विच्चों बदलाईआ। हरिसंगत विच सद्द के रख चरणां पास, मस्तक धूढ़ी टिक्का दित्ता लाईआ। पिठ ते रख के हाथ, ठोकर ठोक ठोक दित्ता समझाईआ। हुण चढ़ जा उते अकाश, प्रकाश विच समाईआ। मैं किहा मैनूं फिर वी करेंगा याद, आपणे कोल बहाईआ। उस वेले कहिणा प्या तेरा देवां साथ, सोहणा संग निभाईआ। जे सच पुच्छो जिहड़ी इस ने रात खादी भात, ओस विच्चों थोड़ा जेहा हिस्सा सानूं दित्ता पुचाईआ। असीं चलदे रहे सारी रात, ख़ुशीआं पन्ध मुकाईआ। मेरे नाल वेखो गुरमुख गुरसिख सारे ओथों आई बण जमात, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। एहनां सारयां दी ख़्वाहिश, रज्ज ब्राह्मण दा भोजन खाईआ। जे घर दे पुच्छण साडी वात, असीं खेल वेखीए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा खलाईआ। घुम्यार कहे मैनूं तेरी तांघ, तेरा ध्यान लगाईआ। जे कोई मैनूं रोके मैं फड़ लवां डांग, चौधरी सारयां नूं दए डराईआ। मेरी पैंदी सी कदे धांग, जोड़यां सिर हिलाईआ। कदे देदां सा कुकड़ बण के बांग, सन्तां सुत्यां देवां उठाईआ। जे अज सवांगी बण के रचया स्वांग, सोहणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। ओधर ब्राह्मण रिहा सोच, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। अग्गे वस्त खाण पीण दी मौज, हुण वारी देण दी आईआ। मैं किथों खोज्या खोज, पिछला चेता रिहा कराईआ। पर्दा लाह के गोझ, मेरी करनी रिहा समझाईआ। अज्ज मैनूं किसे नहीं देणी मोख, मेरे पल्ले खाली देण कराईआ। फिर ब्राह्मणी दी टिकाणे आऊ होश, नथ्थ वेच के घाटा पूर कराईआ। की कहिणगे लोक, दोवें होए शुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सुण के बचन उठे पंज, चार कहार पंजवां मित्र नज़री आईआ। सानूं ब्राह्मण उते अजे रंज, गुस्सा अजे निकल ना जाईआ।

जी करदा पहलों एहदा भंनीए गंज, ठोकर सीस लगाईआ। चौथा कहे उह साडी तत विच्चों कढ्ढो लम्बे लम्बे वञ्झ, मै वी मोटा ताजा नज़री आईआ। वेखो फिर किवें खोल्हदा गंढु, बाकी बचे वी नाल रखाईआ। सानूं फिर पऊगी ठंड, जिस वेले कहे छड्डो मेरे भाईआ। मैं मुड़के नहीं करदा पखण्ड, पखण्डी रूप ना कोई वटाईआ। नाले रोवे नाले पावे डण्ड, हौके लै सुणाईआ। दूजा कहे जे इस नूं आवे खंघ, एहदी संघी दयो दबाईआ। तीजा कहे जे साडे साम्हणे बहे उते पलँघ, एहनूं थल्ले देओ लाहीआ। चौथा कहे जे भुल्ल जाए मन्न, बख्शश दयो कराईआ। पंजवां कहे चोर कदी ना छड्डो फड़या संन, मुलजम लओ बणाईआ। जिन्ना चिर कढ्ढ के ना देवे जन्म दा लुट्टया धन, प्रभ अग्गे डेरा लाईआ। ओनां चिर एहदे पकड़े छड्डो ना कन्न, हौली हौली दयो हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दए मुकाईआ। ब्राह्मण कहे मैनूं पैंदी दिसदी बिपता, सज्जण नज़र कोई ना आईआ। ओस वेले पता नहीं इस केहड़े वेले कीती लिख्ता, रविदास दित्ता समझाईआ। मेरा रूप बणाया सिख दा, मेरा गुनाह रिहा ना राईआ। तेई माघ मैनूं भात उते नहीं दिस्सया पिसता, मेरा मन फेर ललचाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों कढ्ढाईआ। एधरों घुम्यार फड़ के सोटा, डण्डा बेरी रिहा उठाईआ। ढाई गज दुपट्टे दा बन्न लगोटा, सांभ सूत लक्क रखाईआ। ब्राह्मण रहिण नहीं देणा खोटा, खोटी मति कढ्ढाईआ । मैं वेखके आया उपर चौदां लोका, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। ओहनूं मिलणा नहीं सौखा, लभ्भया हथ्थ किसे ना आईआ । जे ओस वेले तेई माघ पकवान वाला हथ्थ औदा खौंचा, मैं पंडत दे सिर विच मारना सी चाईं चाईंआ। फेर मैनूं पता लग्गा उहदा प्रभ दे हथ्थ पौचा, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। मैं मुड़ आया जा के कोल चौका, आपणा मुख भवाईआ। जे ब्राह्मण मर गया मैनूं ब्राह्मणी ना कहे औता, औतर जाए मेरा घर दित्ता डुबाईआ। जे वेख्या मेरा परिवार बहुता, वड्डा घराना नज़री आईआ । मैं एसे करके फेर देण आया होका, सब नूं रिहा सुणाईआ। जे आखो भगवान कोलों तुहाड्डे घर लुआ दया टोका, पट्टे दयां कुतराईआ। जे माढ़ा दिसे कोठा, नवां दयां बणवाईआ। जे कोई कपड़ा नहीं सूसा, सोहणे वस्त्र दयां सवाईआ। इक दुःख तुसां मेरा हुक्का रोका, इस हुक्के पिच्छे तुहानूं मिली वड्याईआ। मेरे यार कोल तमाकू बहुता, वेख वेख के खुशी मनाईआ। ओह मैनूं होण नहीं देदा औखा, औख्यां सौख्यां कर वखाईआ। बच्चयां नालों लाड करे बहुता, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मैनूं सब कुछ रिहा वखाईआ। अज मैं वेखणे उह बलाक तिन्न, जिहड़े हथ्थ नाल जुड़ाईआ। जिन्हां नूं सवेरे उठके ब्राह्मणी लैंदी गिन, कोई टुट्ट के सवेरे मंजी उते रह ना जाईआ। कोई मैनूं ना लै जाए लुट पुट के,

मेरा झुगा चौड़ कराईआ। जिस वेले ब्राह्मण लड़े मैं पेके जाऊं रुस्स के, ओस वेले नक्क विच लवां लटकाईआ। घरों निकलूं हौली चुपके, चोरी चोरी जाईआ। जिहड़े मेरी माँ ने पाए झुमके, उह वी बगल विच टिकाईआ। जिहड़ीआं पत्रीआं आदीआं लुट्ट के, चांदी तोल इक्की तोले समझाईआ। मैं उह वी नहीं जाणा पिच्छे सुट्ट के, संभाल सूत आपणी झोली पाईआ। जिस वेले घरों गई उठ के, घर दी कर जाउँ सफाईआ। मापिआं कोलो पुछ के, महीने छे उहनां घर झट्ट लँघाईआ। फेर ब्राह्मण चोरी चोरी मेरे कोल आऊ लुक के, दोहां अक्खां विच्चों नीर वहाईआ। चल मैं तेरी गठड़ी लै जावां चुक्क के, क्यों बैठी घर भुलाईआ। तूं कमलीए मैनूं ते औदी पुच्छ के, क्यों पिच्छा दे के पल्लू आई छुडाईआ। मेरे ताअ मट्ठ कीते मुच्छ दे, आकड़ रही ना राईआ। ब्राह्मणी कैहन्दी हुण बचन नहीं लुक्कदे, तैनूं सच दयां समझाईआ। साडे शौक पूरे कौण करे पुत्त दे, पुत्तर गोद ना कोई सुहाईआ। मेरे अन्दरों उबाले उठ दे, अग्न वांग तपाईआ। तूं वेख ते सही उहनूं पुच्छ के, क्यों खाली झोली रखाईआ। उधरों रविदास आया उठ के, पहला चेता याद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शहिनशाह शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। चार कहार होए तकड़े, पंजवे नाल रलाईआ। अग्गे हो के लैण ख़बरे, आपणा बल धराईआ। दस्सो पंडत जी हुण किस तरह बणोगे मकरे, फरेबां नाल प्रचाईआ। असीं अकट्ठे होए सणे टब्बरे, वड्डा जोड़ जुड़ाईआ। थक्क गए तैनूं लभ्भदे लभ्भदे, हुण हथ्थ असाडे आईआ। छेती दस्सदे झब्ब दे, किस वेले धर लईए कड़ाहीआ। जिहड़े वीह रुपईए तेरे अद्ध दे, उह अद्धे साडा हिस्सा नज़री आईआ। पंज चेत नूं तैनूं फेर सद्द दे, चार चार पंजां हथ्थ फड़ाईआ। फेर वेखीं दीपक जगदे, घर सच्चे होए रुशनाईआ। एह लेखे नहीं अज्ज दे, रविदास दए गवाहीआ। बेशक असीं कन्यां रूप हो गए फिर वी नहीं भज्जदे, सोहणा बैठे जोड़ जुड़ाईआ। तैनूं सच्ची सच्ची दस्सदे, आपणा हाल सुणाईआ । असीं उदो दे अट्ठे पहर प्रभ नाल वसदे, रविदास चम्यार साडीआं फड़ फड़ रखे बांहीआ। लोकी सौंदे ते असीं हस्सदे, हस्सदयां विचो हस्ती इक्को नज़री आईआ। जिस दे चरण कँवलां विच वसदे, सोहणी सेव कमाईआ। हुण वेखीए तेरे भट्ठ तपदे, कड़ाही केहड़ी लएं चढ़ाईआ। पहलों मैनूं दर्शन करां हुण नाल अक्ख दे, तेरे कोलों मंगां सफाईआ । उह साडे पैसे हक़ दे, जो लुट्ट के घर दए पुचाईआ। फिर वी ऐनयां चिरां पिच्छों ओने ही मंगदे, वाधा लाया कोई ना राईआ। एह वी प्रभ चरणां विच रखदे, तैनूं सति समझाईआ। ब्राह्मण किहा हस्सदे हस्सदे, आपणी खुशी वखाईआ। हुण वेखो असीं अकट्ठे किस तरह वसदे, प्रभ सोहणी खेल रचाईआ। गीत गौदे उहदे जस दे, सोहणा नाद सुणाईआ। सारे अकट्ठे हो के प्रेम प्रीती विच फसदे, पल्ला सके ना कोई छुडाईआ। रविदास

५७५
१६

ਗੁਰਮੁਖ
गुरमुख सिँघ रूप आया बणके, सोहणी सेव कमाईआ। ब्राह्मण तारा सिँघ घल्लया माँ जणके, पंज तत दिती वड्याईआ। उधरों गौतम आया गिरधारा बण के, सोहणी सेव कमाईआ । रंगढ़ आया इरादा तण के, सिँघ बख्शीश रूप वटाईआ। अनाइत यार आया गंडे पट्टके, पाल प्रितपाल पल्लू फिराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची समग्री रही बणाईआ। सुण बचन रोवे कड़ाही, देण लग्गी दुहाईआ । मेरा हथ्था वेख मेरे अन्दर तेरे वरगी छाही, साफ नौ वेरा कराईआ। मेरी तेरे अग्गे दुहाई, मैं वास्ता पा सुणाईआ। पंजां नाल लैणा रलाई, सोहणा रंग चढ़ाईआ। मैनूं लै के साफ धो के प्रभ चरण देणा टिकाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लए उठाईआ। कड़ाही कहे मेरी सुण अरदास, ब्राह्मण भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस वेले प्रभ चरण खड़ो पास, पासा बदली लैणी कराईआ। मैं चरण कँवल लग्ग बुझावां प्यास, आपणी तृष्ना तृखा बुझाईआ। पंजां कोल पंज ग्लास, सेवा करनी तेरे दोवें हथ्थ धार वारो वारी पाईआ। ओस वेले रविदास नूं नाल चाहीदी कलम दवात, लेखा लिखे छाहीआ। फिर वेखो बणदा आबे हयात, अमृत विच्चों अमृत नज़री आईआ। उस नूं पी के सारे हो जाण लाजवाब, मेरा दुःख रहे ना राईआ। मैं अग्ग ते चढ़ के झल्लदी रही अजाब, भट्ठीआं उते दित्ता तपाईआ। जिस वेले जन भगत करन कड़ाह प्रशादि, तिन्न वस्तू देण मिलाईआ। ओस वेले तिन्न प्रगट होवन बलाक, जिहड़े ब्राह्मणी नथ्थ सुहाईआ। तूं करीं ओस वेले सोहँ जाप, आपणा माण मिटाईआ। तेरे नाल मेरा मिल जाए बाप, पतित पुनीत दए कराईआ। मैं वी उदो दा तुहाड्डा साक, सज्जण पहला नज़री आईआ। जे खौचा फिरे नाल हाथ, चारों कुण्ट भवाईआ। उधरों मुक्के वाट, सेवा कर कर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। खौचा कहे मेरा साथी रुमाल, जिहड़ा हथ्थां विच सेव कमाईआ। गुरमुख जिस वेले कड़ाही चुक्कण उहनूं रखण नाल, अग्नी तपत तों दए बचाईआ । तिन्नां मिल के इक दस्सणी बात, वेले नाल सुणाईआ। पता नहीं अज्ज दी कोई कटण देवे एथे रात, जे ना मन्नण चले जाणा बण के राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ । उधरों वेखो चौधरी आया नड्डा, खलड़ी साह नाल भराईआ। मैं वेख्या पलँघ डड्डा, मेरा अन्तर खुशी मनाईआ। मैं अजे नहीं कीता अच्छा, तैनूं कल्ले नूं दयां जणाईआ। जिन्ना चिर रविदास वाला पाटा चोला उते ना विछा, सोहणी सेज सहाईआ । तेरा अज्जे नहीं छड्डणा पिच्छा, चौथी रात चौथे घर ना होए जुदाईआ। जदों सब ते करके जाएं रिच्छा, रिछक तेरे नाम वड्याईआ । मेरी पाटी चादर पा भिच्छा, जिहड़ी गंढां नाल जोड़ जुड़ाईआ। मेरे परिवार दा ज़रूर कढु के जाईं सिटा, चोटी तेरे हथ्थ नज़री आईआ। जे भज्जें

मैं वड्डा जणा तेरा फड़ लऊँ गिटा, दोवें हथ्थ लगाईआ। आह वेख घुम्यार वेले दा चिट्टा, जो बच्चयां नाल दित्ता रखाईआ। हुण क्यों पैना फिका, आपणा मुख भवाईआ। एहनूं तूं दस्स जाईं तुहाड्डा पिता, परम पुरख अख्वाईआ। मैनूं इक्को जेहा वड्डा निक्का, छोटे बाले सारे गले लगाईआ। आप बड़ा सोहणा बण के बैठा रहीं चिटा, सानूं कक्खां विच रुलाईआ। हुण मैनूं तेरा दरबार दिसा, बहुता चंगा नज़री आईआ। जिस वेले वेख्या बिस्तर विछा, मैं लत्तां बाहवां खिलारके सौ गया चाईं चाईंआ। मैनूं भुल्ल गया पिच्छा, फेर तेरी याद सताईआ। अजे मैं वी ब्राह्मण दा खाण आउणा हिस्सा, लै के तेरे कोलों खाईआ। जे ना देवे ज़ोर वखाऊँ हिक़ा, आपणा बल धराईआ। सारी रात सोण ना दऊँ करूँ जिचा, हौली हौली हिलाईआ। जे मुकरें फिर वखाउँ लेख धुर दा लिखा, रविदास चम्यार नाल रलाईआ। रविदास नूं कहूं गुरमुख सिँघा तूं मेरा भरा निक्का, मेरी मदद कराईआ। जे इक वेरां काला पा दएं उते चिटा, लिख के कलम छाहीआ। मैं बदो बदी वंडा लवां हिस्सा, दरगाह साची सच अदालत दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर साची कार कमाईआ।

कड़ाही कहे प्रभ सुण हालत, बिनां हरख़ सोग सुणाईआ। मेरी रविदास देवे ज़मानत, जामनी कागज़ां उते भराईआ। मैं बणी रही अमानत, दर घर डेरा लाईआ। जां वेख्या ब्राह्मण बाहरो चिटा अन्दरों कालख, नाड़ी नाड़ी नज़री आईआ। मेरा आप बणीं सालस, बेपरवाह हो सहाईआ। जे रविदास करे सिफारिश, रसना बोल जणाईआ। एहदा रूप बणे ख़ालस, ख़ालस तेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेख धुरदरगाहीआ। कड़ाही कहे मेरा वेख बाहरों काला रंग, छाही मुख लगाईआ। मैनूं अग्नी डाह डाह करदे तंग, भठीआं उते तपाईआ। मेरी अन्दर इक उमंग, सदा ध्यान लगाईआ। जेहड़ी वस्त सब दा देवे संग, उह मेरे विच आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वड्याईआ। कड़ाही कहे बाहरों काली अन्दरों चिटी, सोहणी साफ नज़री आईआ। मेरे पेट विच कोई नहीं खेत मिट्टी, कूड़ा किरकट ना कोई रखाईआ। मैं भगतां कोलों पहलां गल्ल सिक्खी, सिख्या आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख हाल बेपरवाहीआ। कड़ाही कहे मेरा अन्दर लओ तक्क, सोहणा साफ नज़री आईआ। एहो जेहा कोई ना सके रख, मल मूत भरी लोकाईआ। इक्को घाटा मेरे कोल नहीं अक्ख, तेरा दर्शन पाईआ। धन्न भाग जिहनां मैनूं लयांदा चक्क, चरणां विच रखाईआ। हुण देवीं पूरा हक़, दूसर कोई

रहिण ना पाईआ। मैं तपदी सड़दी गई थक्क, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। अज्जे तक्क मेरे विच श्री भगवान चरण ना दित्ते रख, जुग चौकड़ी बीते विच जगत जहान विच लोकाईआ। जे प्रभ मेरे होण हथ्थ, खुशीआं नाल सेव कमाईआ। एह वी मेरा नहीं वस, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। कड़ाही कहे मेरा वेख अन्दर, आपणा ध्यान लगाईआ। ना कोई कुफल ना कोई जन्दर, तख्ता चुगाठ ना कोई सहाईआ। इस कारण एह सोहणा बणया मन्दिर, प्रभ दित्ता चरण टिकाईआ। एह दात भीलणी लग्गी सी मंगण, राम आपणा चरण टिकाईआ। उह भरा के कोहझी कमली, उहदे पैर दित्ते धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। कड़ाही कहे कर ध्यान, घनईआ तैनूं रही जणाईआ। द्रोपती कोलों सिख्या मैं ज्ञान, जिहड़ी पंजां विच्चों पदम वाला इक ध्याईआ। उस वेले उहदे आपणे नैण नीर वहान, रोवे वाहो दाहीआ। मैं किथें वेखां भगवान, मेरा साहिब नज़र ना आईआ। मेरी कोझी वल प्या ध्यान, जो पाणी विच रख के बैठी डेरा लाईआ। ओस जल विच्चों नज़री आया लक्ष्मी नरायण, मकंद मनोहर रूप वटाईआ। मैं रो के पाया वैण, दुखी हाल सुणाईआ। वेख द्रोपती मेरी भैण, पंजां हुंदयां शरमाईआ। एह सब दा देवे देण, लहिणा रिहा चुकाईआ। जे चरण कँवल एहदे मेरे विच रहिण, मैं तैनूं दवां छुडवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। द्रोपती तक्कया वल पाणी, कड़ाही विच नज़री आईआ। विच बैठा जाण जाणी, जानणहार गोसाईंआ। नेत्रां नाल किहा मैं निमाणी, अक्खां नाल शरमाईआ। इक्को तेरे नाम दी पढ़ां बाणी, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। एह सेवा मैं कमाणी, मेरे वंडे आईआ। कड़ाही किहा मैं भागां वाली, जिस घर बिन सद्दयां पुच्छयां फेरा पाईआ। मैं सोहणी बण गई सवाणी, आपणे कन्त नाल सोभा पाईआ। ओस वेले कृष्न कहि के गया तूं बाल अञ्याणी, तैनूं अगला लेखा दयां जणाईआ। जिस वेले आवे जोती नूर शाह सुल्तानी, दाता बेपरवाहीआ। तेरी लेखे लाए कुरबानी, जो आपणा आप मेरे भेंट चढ़ाईआ। कड़ाही कहे प्रभ दस्स के जा निशानी, किस बिध होए सहाईआ। ओस किहा ब्राह्मण फड़े वड्डा विद्वानी, ठग्ग चोर बन्न लिआईआ। रविदास नाल होवे निशानी, लेखा लिखे कलम छाहीआ। पंजां दा पंज खेल महानी, पंज अगला जोड़ जुड़ाईआ। सब दा लेखा देवे दो जहानी, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कड़ाही कहे कुछ होर दस्स भगवानी, भगवन भेव खुलाईआ। अवाज़ आई जिस वेले तेरे विच तत्ती रेत पै के पए सिर सुत भानी, कड़छीआं धार वहाईआ। उह दे के सच कुरबानी, मुखो आख सुणाईआ। कर्मां वालीए कदे तेरे विच श्री भगवान चरण रख के पवाए ठंडा पाणी, पंज आपणे नाल रलाईआ। जिन्हां जामा बदल के रावी कन्ढे कराया अशनानी, आसा

आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दए चुकाईआ। कड़ाही कहे मेरा अन्दर छोटा, तिल रत्ती नज़र ना आईआ। एहो जेहा कदे किसे सवाणी नहीं फेरया पोचा, आपणा घर बणाईआ। दूजे नूं मांजणा बड़ा सौखा, आपणा रोग ना कोई मिटाईआ। जिहड़ा ठग्गदा रिहा लोकां, धोती टिक्का बोदी खूब सुहाईआ। तेरी वड्याई तूं ओस नूं दित्ता मौका, जन्म जन्म दा रोग गंवाईआ। भगतीआं नालो कैहन्दा कम्म सौखा, घड़ी पल विच आपणा लेखा पूर कराईआ। थोड़ी करनी लहिणा बहुता, ब्राह्मणी दी आदत अजे ना जाईआ। ब्राह्मण कहे मैं एसे तरह साफ करदा रिहा आपणा चौका, जिस उते बहिके जजमानां घरों खाईआ। हुण देण दा आ गया मौका, मुकीआं वाले रहे डराईआ। घेरे विच वड़ गया उहनां दे कोठा, चार दिवारी बंद कराईआ। मैनूं डर मेरे उते वज्जण वाला सोटा, आपणा बल धराईआ। चौथा कहार ताजा मोटा, पिछला रूप नज़री आईआ। जिस दे अन्दर डूंघी सोचा, सोच के दूज्जयां दए समझाईआ। मैं हुण नहीं होणा होछा, चुप्प करके वक्त लँघाईआ। ना कोई दोहता ना कोई पोता, रविदास वेख ला खाली घर नज़री आईआ। मेरे नाल हुण ना करें रोसा, रुस्सया लै मनाईआ। मैं विछोड़ा सह ल्या चोखा, नौ जन्म जन्म विच भवाईआ। अग्गे हरिसंगत नाल कदे ना करां धोखा, धोखे करन वालयां दयां हटाईआ। मैं नहीं ते मेरे पहले जन्म दा पढ़ के वेख लओ पोथा, पुस्तक सब नूं दयां वखाईआ। कूड़ी करनी मैनूं कीता थोथा, होछी मति बणाईआ। जे हुण लँघ जांदा हथ्थों मौका, फिर लख चुरासी पार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कड़ाही कहे मेरा वेखो घेरा, इक्को जेहा नज़री आईआ। एहदे विच वड़े केहड़ा, जिहड़ा वड़े अग्नी नाल तपाईआ। मेरे कोई ना आवे नेड़ा, दूरों खौचयां नाल सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेख बणाईआ। कड़ाही कहे मेरे अन्दर लग्गा जोड़, जोड़ जोड़ रिहा दरसाईआ। जिवें मैनूं इक दूजे दी पई लोड़, सोहणा संग बणाईआ। तुसीं क्यों आपणा प्रभू रहे विछोड़, जिस विछड़यां साथी कोई रहिण ना पाईआ। जिवें अज्ज ब्राह्मण नूं पै गई मेरी लोड़, प्रभ मेरे विच चरण टिकाईआ। बाहरों काली अन्ध घोर, कालख टिक्का नज़री आईआ। अन्दरों दिसां नवी नकोर, सोहणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। कड़ाही कहे मेरे जागे कर्म, सभना रही सुणाईआ। मैं प्रभ दी आई सरन, छाती चरणां हेठ रखाईआ। मैं दो जहानां आई तरन, तारी इक लगाईआ। मैं ठग्ग चोर आई फड़न, विछड़े नाल मिलाईआ। सच पुच्छो मैं सेवा आई करन, सेवक रूप वटाईआ। थल्लउँ खुशी होवे धरती धरन, धौल रही जस गाईआ। धन्न भाग तेरे अन्दर कँवल चरण, प्रभ दित्ता टिकाईआ। मैं केहड़े

दवारयों आवां फड़न, दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। जे बाहरों लग्गा चढ़न, जन भगत घेरा बैठे पाईआ। मैं तेरे थल्ले पई मंगां सरन, आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखे दे मुकाईआ। रविदास नाल ला के आया शर्त, सोहणा मता पकाईआ। ब्राह्मण नूं होण नहीं देणा गरक, मेरा दर्शन गया पाईआ। अन्तिम कढ्ढा पिछली रड़क, रेड़का नज़र कोई ना आईआ। दुनिया कोलों बणया रिहा चटक, एथे चले ना कोई चतुराईआ। जजमानां डरौदा रिहा बण के सख्त, आपणा भय वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा रिहा चुकाईआ। ब्राह्मण कहे सुण कड़ाही, तूं क्यों दए दुहाईआ। मैं तेरी सेव वेख कमाई, मांज साफ धो करके लयांदा उठाईआ। तूं मेरे वल दी हो, आपणा संग बणाईआ। तेरे विच चरण गया छोह, तैनूं मिली वड्याईआ । मैनूं थोड़ी थोड़ी होई लो, पिछला अन्धेरा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ । कड़ाही कहे सुणो परोहत, पत्री किथे रखाईआ। किथे गई चौमुखीए विच जगण वाली जोत, लाटां वाली मुख छुपाईआ। किधर गए खीर खाण वाले होंट, दन्द घसाई किथे रहिउँ रखाईआ। की एहनूं सोच, समझ चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप समझाईआ। कड़ाही कहे ब्राह्मण जी, जी जी वड्याईआ। पिच्छे कीता की, हुण की आस रखाईआ। हुण ना पुत्त ना धी, कल्ली नार रही कुरलाईआ। किस सहारे रिहों जी, की मिली वड्याईआ। प्रभ चरण सहारे थी, आपणा माण मिटाईआ। तेरे लेखे लग्गे साडे तिन्न हथ्थ सीं, रविदास चम्यारा दोहरी करे लिखाईआ। फल सोहणा सुच्चा बी, तन क्यारी दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। ब्राह्मण कहे मैं आवां अग्गे, हौली हौली हथ्थ उठाईआ। प्रभ चरण जे मेरी उंगली लग्गे, आपणी खुशी मनाईआ। सुण के बचन खौंचा अग्गों उठ के भज्जे, दूरों सीस निवाईआ। फिरदा सज्जे खब्बे, बाहां टंग टंग फेरीआं पाईआ। जे किते मैनूं ब्राह्मण लभ्भे, मैं खोपरी दयां सजाईआ। जेहड़ा खीर मेरे उत्तों रसना लाल चट्टे, मेरा हिस्सा वी आपणी झोली पाईआ। मैं उहनूं दस्सां सारे पते, अगली होश भुलाईआ। मेरे अग्गे उहनूं केहड़ा रखे, सके कौण बचाईआ । मैं कड़ाही विच वड़ के अग्ग विच सड़के अग्गे पिच्छे खाधे धक्के, चारों कुण्ट आपणा आप भवाईआ। जिस वेले मैनूं कोई बाहर कढ्ढे, मेरा हिस्सा उते ठोक ठोक विचे देण सुटाईआ। जे कोई थोड़ा बहुता जाए बचे, ब्राह्मण उंगलां नाल लाह के मूँह दे विच लैण पाईआ। मैं बचन सुणावां सच्चे, झूठ जरा ना कोई रखाईआ। एसे करके मैं आपणे साथी कीते अकट्ठे, रल मिल खा के खुशी बणाईआ। जे मेरे कोलों बचे, मैं भरावां वाज लगाईआ। चार कहार औण नट्ठे, डागां सोटे संभाल हथ्थां विच

उठाईआ। पंजवां यार कहे एहदे खोह दयो पटे, मारो वाहो दाहीआ। ब्राह्मण कहे हुण कौण पत रखे, चारो कुण्ट ध्यान लगाईआ। रविदास हौली जेही खोलू आपणी अक्खे, सारयां वल तकाईआ। गुस्से वाले सारे हो गए अच्छे, गुस्सा खुशी विच बदलाईआ। नाल इशारे दस्से, श्री भगवान बैठा बेपरवाहीआ। पंजे प्रेम नाल रत्ते, प्रेमी रूप नज़री आईआ। कड़छा वेख वेख हस्से, ब्राह्मण नीवीं पाईआ। कड़ाही कहे मेरे विच सोहणे खादे भत्ते, खीर कड़ाह बणाईआ। हुण क्यों पिच्छे हटे, वारी देवण दी आईआ। ब्राह्मण सिर चरणां ते रखे, रो के हाल सुणाईआ। भई तुसीं सारे हो गए अकट्ठे, मेरे कल्ले दी चले ना कोई चतुराईआ। मैं वी याद करावां तूं धन्ने दे चारे वच्छे, नामे छन्न छुहाईआ। त्रलोचण बहि के हट्टे, सौदा दित्ता विकाईआ। सुदामे तन्दल चब्बे, सोहणे महल वखाईआ। बिदर अलूणे साग भोग लग्गे, केला छिलका मुख रखाईआ। द्रोपती पिच्छे दो जहान छड्डे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भीलणी तैनूं किथों लभ्भें, आपे आएयों बेपरवाहीआ। गज दीआं तारां आ के कटे, होवें सदा सहाईआ। प्रहलाद अग्नी विच्चों रखें, हरनाक्ष दित्ता खपाईआ। कबीर पाणी विच ना डुब्बे, जलधारा दित्ता रुढ़ाईआ। सैण पिच्छे राजे नूं मुठीआं नाल दब्बें, घर घर सेव कमाईआ। प्रभू मैथों क्यों भज्जें, मेरी लज्जया तैनूं ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। ब्राह्मण कहे सुणो यार, मैं पंजां रिहा सुणाईआ। सारे मिल के करो विचार, मेरा संग निभाईआ। मैथो झल्ली नहीं जाणी तुहाडी मार, डागां सोट्टयां कोलों डर आईआ। जे मेरा सिर दित्ता पाड़, ब्राह्मणी पट्टी ना कोई बंधाईआ। उधरों चल के आ गया घुम्यार, आपणा डण्डा रिहा खड़काईआ। ब्राह्मणा हो जा ख़बरदार, वारी तेरी हुण आईआ। नहीं ते कढ्ढुणे पिछले लुकाए हार, चांदी साडी झोली पाईआ। नहीं ते आवी विच देऊँ चाढ़, भाडयां विच तपाईआ। फेर करीं पुकार, कूकी मारीं धाईआ। ब्राह्मण ओस वेले आई विचार, आपणा हाल सुणाईआ। असीं अकट्ठे यार यार, क्यों गुस्से नाल डराईआ। साडा ओस दे नाल प्यार, जिस प्रहलाद भट्ठी आवी विच्चों ल्या बचाईआ। घर आयां नूं ना मार, घर आया दुश्मण सज्जण नज़री आईआ। सोटा सुट्टके परे घुम्यार, हस्स के किहा चाईं चाईंआ। मैं वेख्या तेरे नाल मैनूं नज़र आया मेरा परिवार, एसे करके खाली हथ्थ कराईआ। नहीं ते खोते उते देणा सी चाढ़, मुख काला कर भवाईआ। तैनूं छड्ड के आउणा सी ओस उजाड़, जिस जंगल विच मनुष नज़र कोए ना आईआ। ब्राह्मण मिट्ठा हो के फिर करे प्यार, हौली हौली रिहा सुणाईआ। तूं तेजा सिँघ नहीं तारा सिँघ दोहां दा इक्को सांझा यार, तेरे घर बैठा चाईं चाईंआ। हस्स के किहा एह बड़ा दयाल, मेरे उते गया तरस कमाईआ। हुण वी ब्राह्मणा तेरे नाल, सिफारिश करन आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ।

तेरी करां सिफारिश बहुती, दो अक्खरां विच बताईआ। पहलों आपणी मैनूं दे दे धोती, आपणा पिछला लेख चुकाईआ। मैनूं इक वारी हथ्थ ला लैण दे बोदी, मुक्के तेरी चतुराईआ। मैनूं हुणे चार दिन पिच्छों आई सोझी, पहलों समझ कोए ना आईआ। हुण इक्को गल्ल सोची, तैनूं दयां समझाईआ। चम्यार नहीं एह मोची, मोची चम्यार गुरमुख रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कड़ाही कहे मैं की कुछ सुणदी, हैरानी मेरे उते छाईआ। मैं सब नूं आपणे विच पुणदी, साफ सुथरा बणाईआ। मैं की सार जाणा ब्राह्मण गुण दी, ठग्ग चोर कहि भगत नज़री आईआ। जे मेरे अन्दर वड़े मैं कबाब वांगू भुंनदी, अग्नी तत जलाईआ। जे रोंदा पुकार कदे ना सुणदी, गहर गम्भीर हो के बहिंदी पीड़ा डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेख वखाईआ। ब्राह्मण कहे बहुत कुछ होया, हौका लै के रिहा सुणाईआ। नेत्र नैणां नाल रोया, रो रो दए दुहाईआ। बिन मारयां होया अध मोया, बलहीण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पिता माईआ। कड़ाही कहे सुणो सारे, पंजां रही जणाईआ। हुण अकट्ठे हो के आ गए प्रभू दवारे, पिछले गुस्से दयो मिटाईआ। तुसीं दोवें एहदे सहारे, सब दा सच्चा साईंआ। कोई व्याहे कोई कुँवारे, रंग इक्को जेहा चढ़ाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर किरपा करे चरण कँवलारे, चरण चरण नाल मिलाईआ। ब्राह्मण बणे सेवादारे, दोहां हथ्थां सेव कमाईआ। चौथा कहार पाणी धार डारे, सुलखणी सुख संदेस सुणाईआ। बावी जीता चरणो चरण दवारे, चरणोदक मुख चुआईआ। पंजवां पंज प्यारी प्यारी नाम उच्चारे, देवे माण वड्याईआ। ब्राह्मण खुशीआं नाल हथ्थ मारे, उंगलां अंगूठे नाल मिलाईआ। संगत वेखे एह नजारे, प्रभ आपे रिहा वखाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी वेखो आईआं दवारे, आपणा ध्यान लगाईआ। जो त्रिबैणी दे के आएयों लारे, इकीआं सिखां कोलों चुली चुली आपणे चरणां उते पवाईआ। असीं हुण तक्क रहीआं उसे दे सहारे, दूजी आस ना कोई रखाईआ। गंगा उठके विच्चों वाज मारे, रविदास साडी दे गवाहीआ। लै ला कंगन होर कोट हजारे, मेरा प्रभू दे मन्नाईआ। जो ब्राह्मण पैज संवारे, चोरां ठग्गां रिहा तराईआ। साडी अर्ज़ मंज़ूर करे दरबारे, बेनन्ती कहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। गंगा कहे मैं लै के आई गंगा सागर, फुल्ल ठूठी सिर ना कोई रखाईआ। जमना कहे मैं वड्डी चुक्की गागर, सोहणा बिनू हेठां बणाईआ। सुरस्ती कहे मैं धो के ल्याई आपणे प्रेम नाल चिटी चादर, जेहड़ी त्रबैणी कन्ढे विछाईआ। गोदावरी कहे मैं गुफा विच वड़के आपणा कर्म करके आई उजागर, जिस विच सिंघ गिरधारा दित्ता लँघाईआ। तेरे दर वणज करीए बण सौदागर, वस्त अमोलक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। गंगा कहे मेरा सोहणा नीर, निर्मल नज़री आईआ। औह वेखो आ गया कबीर, शहादत खुशीआं नाल पाईआ। एसे मैनूं डुब्बदी दिती धीर, जिस विच तेरा रूप नज़री आईआ। मेरे कट दित्ते ज़ंजीर, दुःख दर्द रिहा ना राईआ। प्रभ एहनूं होण ना देवीं दिलगीर, वेख किड्डी सोहणी आपणा आप गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जमना चल के आई नेड़े, कहि कहि रही सुणाईआ। मेरे कन्ढे घनईए लाए डेरे, मथरा बिन्दराबन रास पवाईआ। सखीआं नाल कीते खेल बथेरे, गोपीआं नाल खुशी हंढ्ढाईआ। मेरे अन्दर वड़के करे कलोल बथेरे, नागां नथ्थ पवाईआ। हुण प्रभ आई तेरे खेड़े, बण के पांधी राहीआ। मेरी गागर उछल उछल के मेरे कपड़े लबेड़े, मेरी साड़ी हवा नाल उड उड कंडयां विच अड़ के, लीरो लीर वखाईआ। उधरों रविदास बोलयां नाल कड़के, उच्ची दे समझाईआ। मैं वेख्या सवेरे तैनूं तड़के, तूं सुत्ती हो के गुमराहीआ। मेरे प्रभू दा दर मिलदा मर के, जीवदयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिहड़ी सीस उते आई धरके, सोहणी मैंडी थल्ले गुंदाईआ। इस नूं खोल़ रविदास किहा अग्गे आ चल्ल के, तैनूं दयां समझाईआ। जमना आपणयां केसां नाल चौर वेख झल्ल के, एहनां मिले वड्याईआ। फेर हथ्थ नहीं आउणा भलके, वेला इक सुहाईआ। एह खुशी नहीं हुन्दा रोटी पाणी जल ते, प्रेम प्रीती अन्दर समाईआ। जमना नेत्र नैणां नीर सुट्ट के, हन्झूआं हार बणाईआ। सोहणी मैंहडी हथ्थां नाल पुट के, खुल़ी गुत वखाईआ। सिर चरणां उते सुट्ट के, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। प्रभू मेरा ब्राह्मण सब कुछ लै गया लुट पुट के, रो के दए दुहाईआ। उधरों गंगा बोले उठ के, नी तेरा की खड़या मेरे बाहवां कंगन गया चुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वखाईआ। सुरस्ती कहे मैं ल्याई चादर, बण धोबन सेव कमाईआ। मैनूं एथे मिले आदर, चरण कँवल सरनाईआ। रविदास किहा नहीं एह माण तेग बहादर, जिस दा रूप चिटी धार नज़री आईआ। तेरा गंगा जमना विच मिल के होवे आदर, नरायण तिन्नां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। गोदावरी कहे मैं आई भज्जी, आपणा पन्ध मुकाईआ। गोतम कहे नी तूं गंजी, मैंडी सीस ना कोई गुंदाईआ। तेरे कन्ढे गया पुरख अकाल तूं कोई ना डाह के दिती मंजी, कन्ढी उते डेरा लाईआ। आपणी वौहदी रहीउँ कंघी, पट्टी मुख सीसे नाल सुहाईआ। नेत्र नैण रहीउँ अन्धी, अक्ख ना कोई खुल़ाईआ। इक गल्लों तूं चंगी, तेरे अन्दर गुर गोबिन्द चरण गया टिकाईआ। नहीं ते सदा रहिंदियो रंडी, सुहागी कन्त ना कोई हंढ्ढाईआ। गोदावरी कहे मैं पौण दिती ठंडी, जिस वेले हरिसंगत मेरे अन्दर नहावण जाईआ। मैं उहनां दे अन्दरो प्रेम दी लई सुगंधी, उह मेरे लूं लूं विच समाईआ। भावे चंगी भावे मंदी, उहनां

गुरसिखां घर आईआ। इकीआं विच्चों किशन सिँघ दे घर दी लभ्भी डण्डी, मैं भज्जी वाहो दाहीआ। राह विच तीर्थां उते वेखी गुंडयां दी लग्गी मण्डी, सन्त साध साधना वाला नज़र कोई ना आईआ। एथे आ के वेख्या हरिसंगत सारी लग्गी चंगी, जो प्रभ चरण ध्यान लगाईआ । चरणां विच बैठीआं जमना गंगी, सुरस्ती नाल मिलाईआ। मैं इक नाल ल्याई रबाब तन्दी, सोहणी तार बणाईआ। जिस विच्चों गोबिन्द गीत निकले प्रभ तोड़णहारा खानाबंदी, बन्धन दए कटाईआ। वेखो मेरी भज्जदयां भज्जदयां तणी टुट गई अंगी, सूई धागा हथ्थ कोई ना आईआ। मेरी अद्धी छाती नंगी, अक्खां शरम नाल शरमाईआ। प्रभू धन्न भाग एह गुरमुखां दी संगत चंगी, मेरे नग्न वल अक्ख ना किसे तकाईआ। मैं हो गई ठार ठंडी, ठंडक इक वरताईआ। जे सच पुछे एथे इक बैठा पोसती भंगी, सिँघ जसबीर नाउँ रखाईआ। जिस नूं घर मिली सी तंगी, गोबिन्द नाल गोदावरी गया चाईं चाईंआ। मैं उहदे लई इक मंग मंगण लग्गी, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी एहदी सवाणी होणी रंडी, कन्त सुहाग गंवाईआ। जे संगत होवे चंगी, गल पल्लू लवे पाईआ। तिन्न दिन पहलों अठ्ठ फग्गण संगत होए इकठ्ठी, फिर अगला लेखा दयां जणाईआ। ओना चिर मैं नहीं करनी पक्की, पक्का लेख ना कोई लिखाईआ। मैं एसे करके आई नस्सी, गुरसिख गुरसिखां नालो करे ना कदे जुदाईआ। मैं तिन्न वारां डिगी विच पाणी कस्सी, आपणी धोती रही वखाईआ । इक दो वार तर गई वांग मच्छी, मेरे पैर थल्ले उते नज़री आईआ। गुरमुखो मैं एहदी किरपा नाल बची, बच्चयां वाल्यो एसे ल्या मंगाईआ। मैं करां गल्ल सच्ची, अच्छी तरह समझाईआ। पैर खिचण लग्गा मैनूं कन्ढे उते करके गया पक्की, हौली जेही समझाईआ। मेरे भगतां दा संग रखीं, गुरमुखां नाल करीं कुड़माईआ। फिर पुरख अकाल तैनूं दिसे अक्खीं, दर जा के दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। कड़ाही कहे मेरा लेख धुर दा, रविदास रिहा जणाईआ। जिस दे पिच्छे पाड़ के कुड़ता, कूड़ी क्रिया गलों लाहीआ। गुरमुख होण ना देवे मुर्दा, मुर्शद बेपरवाहीआ। मैनूं इक्को फुरना फुरदा, दोहा कुंडयां वाली रही समझाईआ। जिहड़ा एहदे चरणां जुड़दा, जोड़ी दो जहानां वखाईआ। गुरमुखो अग्गे गया फेर कोई नहीं मुड़दा, घर साचे लए बहाईआ। ओधरो तेजा सिँघ आ गया फिरदा तुरदा, हौली जेही सुणाईआ। उह मुंडिओ भा की आ गुड़ दा, सारे दयो सुणाईआ। एह लेखा मेरा धुर दा, जिस कारण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे गुड़ केहड़े कम्म, सच दे समझाईआ। घुम्यार कहे तमाकू केहड़े कम्म, बिनां गुड़ रस ना कोई भराईआ। मेरा हल्क ना सुक्के दम, सौखा शाह रखाईआ। हरख सोग ना ग़म, खुशीआं रंग रंगाईआ। रविदास प्रेम नाल किहा तेरा

चंगा लग्गे चम्म, सोहणा रूप वटाईआ। घुम्यार कहे मेरा बेड़ा दित्ता बन्न, तमाकू लैण दी लोड़ रही ना राईआ। मेरे वंडे दा गुड़ संगत विच देणा वंड, इक्को वार देणा वरताईआ। नाल ब्राह्मण नूं पै जाए ठंड, गद्दड़ी परां दए सुटाईआ। अमृत धार बणे जल, चरणां नाल छुहाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी अक्खां चुक्क के वेखण पल पल, प्रभ एह की खेल रचाईआ। खौचा कहे प्रभ डांगा वाले घल, सोहणा संग बणाईआ। इस ब्राह्मण नूं लईए भन्न, हँकार विकार गंवाईआ। रविदास हौली जेही सारयां नूं किहा विच कन्न, प्रभ अग्गे दयो सीस निवाईआ। तुसी क्यों डागां सोटे रहे भन्न, प्रभ किरपा नाल दए समझाईआ। सारे अकट्ठे गए मन्न, दोए जोड़ प्रभ चरण सीस निवाईआ। रविदास पुच्छे ब्राह्मणा की निकलया जन, के बाकी कुछ रखाईआ। ब्राह्मण कहे मेरे हुण कुछ नहीं विच तन, साफ भाण्डा दित्ता कराईआ। कड़ाही कहे एह मेरे वरगा अन्दरों हो गया चन्न, सोहणा रूप वटाईआ। खोंचा कहे मैं रगढ़ रगढ़ के साफ कीती खल, सोहणी सेव कमाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी कहिण असीं वेखीए अमृत चरणा विच जल, धुर दा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गंगा कहे मैं ल्याई गंगा सागर, लुटीआ नज़री आईआ। आउँदी मिल्या दर आदर, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ । उधरों जमना दी बोली गागर, उच्ची उच्ची सुणाईआ। मेरा निर्मल कर्म होया उजागर, सोहणा रूप वटाईआ। सुरस्ती कहे मेरी सुरती बणी चिटी चादर, किसे सूत ताणा पेटा ना कर उणाईआ । गोदावरी कहे प्रभ वेख्या करदा आदल, अदालत इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे पंजे फड़ो सोटे, सज्जे हथ्थ रखाईआ। इक दे दो दो करो टोटे, दोहां मिले वड्याईआ । ब्राह्मण नाल काहदे रोसे, प्रभ रुस्सयां ल्या मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणे पाईआ। इक दे टोटे कीते दो, पंजां दस बणाईआ। दस्सां विच प्रभ आपे हो, सोहणा रंग वखाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी ब्राह्मण पंजे एहदी कट्ठे हो के सुणी सच्ची सो, सच ध्यान लगाईआ। गंगा कहे बेशक साडे नाल करदा रिहा धरो, पर तेरे चरणां बैठा चंगा नज़री आईआ। जमना कहे मेरा सब कुछ ल्या खोह, ठग्गी चोरी नाल रलाईआ। प्रभ एहदा भगत नाल मोह, इस करके कुछ कहि ना सकां राईआ। सुरस्ती कहे मेरे अन्दर वड़ के मैनूं आया टोह, मेरीआं डण्डीआं लिआया चुराईआ। जी करदा एहदी बोदी देवां खोह, पर तेरे दुआरे बैठा तेरा नूर नज़री आईआ। गोदावरी कहे जिस वेले सत्त सौ पौड़ी चढ़ के मेरे नाल कीता धरोह, मेरा लहिंगा ल्या उठाईआ। जी करदा भट्ठी वाला मारां एहदे सिर विच चो, पिछला लेखा दयां मुकाईआ। प्रभू तेरे चरणां वल तक्क के मैं पई रो, ऐं जापे जिवें तेरे चरणां सेव कमाईआ। चारे कहिण नीं

हुण एहदे नाल जाए छोह, खवरे सानूं एहदे नाल मिलाईआ। जो दो जहानां दा वाली बणया छब्बी पोह, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जन भगतां देवण आया ढोआ ढो, धुर दी वस्त वरताईआ। गंगा कहे इन्हां पंजां कोलों सोटे लईए खोह, प्रभ चरण भेंट चढ़ाईआ। सारे इक्को जिहे जाईए हो, होका दे के इक्को अवाज़ लगाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एहदे जामे कट दे पूरे नौ, नौका नईआ आपणे नाम चढ़ाईआ। हुण ब्राह्मण नूं घर दा नहीं गौ, ब्राह्मणी याद कदे ना आईआ। कक्खां उते जांदा सौं, मंगे ना लेफ तुलाईआ। साडे विच बहि के जांदा गाओ, सोहणा राग सुणाईआ। लेखा छड्डया मैं हउँ, हँकार विच्चों तजाईआ। हँस बणया काउँ, काग हँस रूप वटाईआ। रविदास कहे प्रभ एहदे सिर ते रख ठंडी छाउँ, हरिसंगत नाल मिलाईआ। तू ही माता तू ही पिता माउँ, मापया विच्चों मापा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पिछली भुल्ल सर्ब बख्शाईआ। रविदास कहे मैं फेरां लीक, कलम शाही नाल लगाईआ। की प्रभू एह उहो तरीक, जेहड़ी पिच्छे गया समझाईआ। गंगा माता कहे ठीक, मैं एसे करके वेखण आईआ। जमना कहे धन्न भाग जे ब्राह्मण होया सुरजीत, सोई सुरत जगाईआ। सुरस्ती कहे एह बणया रहे अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। गोदावरी कहे बणी रहे प्रीत, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। पंज कहिण हुण नहीं तेरे शरीक, सोटे प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। रविदास कहे ओह सारे कट्ठे हो के मंग लओ भीख, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जे नीचों कर जाए ऊँच, आपणे रंग रंगाईआ। सारे बण जाओ एसे दे पूत, पिता इक्को बेपरवाहीआ। कबीर कहे हुण कढ्ढणा नहीं पैंदा तागा ताणा पेटा सूत, कुछ नाल करनी ना पए सफाईआ। खड्डीआं विच रलाउणा ना पए पंज तत कलबूत, नलीआं वट्ट चरखे उते ना कोई चढ़ाईआ। उए जन भगतो तुहाडा किडा सोहणा कम्म आया सूत, वेला वक्त लओ सुहाईआ। चुल्हा समझो ना पंज तत भूत, बेअन्त बेपरवाह नर निरँकार नज़री आईआ। जिस दा लेखा चार कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। इस दी झोली पाओ जूठ झूठ, साफ आपणा आप कराईआ। धुर दा माही सच्चा महिबूब, मुहब्बत करन लोकमात आईआ। हज़र वलो हज़ूर मौजूद, हज़रत दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत रिहा कमाईआ। कड़ाही कड़छा उठे बोल, इकट्ठ रहे सुणाईआ। प्रभ मिट्ठा रस साडे विच दित्ता घोल, अमृत अमर रूप वखाईआ। इस विच रसत चीनी क्यों नहीं पाउँदे तोल, तकड़ीआं वट्टयां लेखा दए चुकाईआ। फेर पंडत तेरे कड़ाह प्रशाद दी सब नूं खवावे पौल्ह, विच आपणा हिस्सा रखाईआ। बंद दरवाजे देवे खोल्ह, खुल्ल्हा राह समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। एधरों कड़ाही नीर करे पुकार, इक्को वार सुणाईआ। प्रभू तेरे चरण बलिहार, जिस

दिती माण वड्याईआ। मैं मंगां मंग बण भिखार, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जे आपणयां भगतां कराए मैनूं दीदार, मैं खुशीआं विच सच्चा गीत गाईआ। अबिनाशी करता दीन दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। आपणे हथ्थ दे उते लए बहाल, हरिसंगत तेरा दर्शन दए वखाईआ। जिस विच बैठे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रूप रखाईआ। थोड़ा थोड़ा छिटा देवे मार, तन माटी साफ कराईआ। उधरों आया गुजरी लाल, गोबिन्द सच्चा माहीआ। कढ्ढ के गढ़ी वाला रुमाल, मुख सिक्खां साफ कराईआ। नेत्र खोल्हो वेखो दीन दयाल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बैठा आसण लाईआ। किसे हथ्थ नहीं आउँदा मन्दिर मस्जिद गुरदुआर धर्मसाल, तट तीर्थ रहे कुरलाईआ। छेती छेती कड़ाही कहे मेरी अग्न दयो बाल, मैं उते आवां चाईं चाईंआ। होर पाणी देणा नाल डाल, तिन्न लांगरी इक्को जेही सेव कमाईआ । अगला फेर दस्सां हवाल, बाकी की कुछ देणा वरताईआ। किते भुल्ल के ना कहों सानूं करन आया कंगाल, खा पी आपणा झट्ट लँघाईआ। नहीं, एह धुर दा बण दलाल, बेड़ा पार कराईआ। एथे ओथे एस दे अग्गे किसे दी की मजाल, गुरमुखां वल अक्ख तक्क के लए उठाईआ। एथों चुक के सचखण्ड दए बहाल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। गुरसिखो थोड़ा चिर खा पी कर लो कुछ आराम, तुहाढ्ढे जोगी होर वस्तू लै के आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बण सेवक सेव कमाईआ। कड़ाही कहे किरपा करी पुरख समरथ, मेहरवान हो के दया कमाईआ। चरण कँवल दित्ते रख, मेरी सुण के हाल दुहाईआ। सब ने वेख्या आपणी अक्ख, पल्ला उहला ना कोई जणाईआ। ब्राह्मण दोवें लाए हथ्थ, पाणी पंजां कोलों पुआईआ। नौ जन्म दे गरौह इक्को वार कर अकट्ठ, प्रभ चरण डिगे मारन धाईआ। हुण असीं पिच्छे आए हट, आपणा पन्ध मुकाईआ। ब्राह्मण दी गठड़ी वी खाली रह गई गट्ठ, आपणा पल्लू आए छुडाईआ। तेरे चरणां जाए वस, नाता अवर तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान लज्जया दए रखाईआ । गरौह कहिण असीं पए गिर, सिर सके ना कोई उठाईआ। नौ जन्म वथेरा ल्या फिर, ब्राह्मण नाल यराना लाईआ। अन्तिम ढै ढेरी होए ढेर, आपणा माण मिटाईआ। साडे लेखे आंदा ढेर, भुलेखे दित्ते चुकाईआ। किथों चेते रखे सिँघ शेर, पहले लहिणे याद कराईआ। लख शुकर जे हुण देवे नबेड़, अग्गे कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पूरा दए कराईआ। गरौह कहिण असीं वड़ गए विच कड़ाही, प्रभ चरणां सीस निवाईआ। नाले रोईए साडी हुन्दी जाए तबाही, संगी संग ना कोई निभाईआ। वेंहदयां वेंहदयां ब्राह्मण दी सारे दे गए गवाही, शहादत रविदास नाल रलाईआ। साडीआं उस वेले निकलण हाईं, सानूं खीर कड़ाह कवण खवाईआ। एथों चलीए नट्ठ के बण के पांधी राही, आपणा पल्लू छुडाईआ। उधरों कड़ाही

घुट के फड़या बाहीं, ब्राह्मण बदो बदी विच टिकाईआ। मैं तुहानूं नाल लै के बैठी चढ़ना चाईं चाईं, सोहणी अग्ग तपाईआ। तुसीं मनाउँदे रहे गाईं, धानां नाल घर भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख वेख वखाईआ। कड़ाही कहे मैं कीते काबू, आपणा घेरा पाईआ। लांगरी छेती लाओ अग्ग नूं लांबू, अग्नी रूप वटाईआ। वेखां कवण छुडावे एहनां दा बापू, ब्राह्मण बैठा मुख भवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पूरा रिहा कराईआ। कड़ाही मार के छाल चढ़ गई उते भट्ठी, आपणा आसण लाईआ। थल्ले अग्ग लग्गी मट्ठी मट्ठी, आपणी लाट वखाईआ। गरौह कहिण असीं केहड़ी खट्टी खट्टी, ब्राह्मण किथे गया फसाईआ। असीं एहदे पिच्छे भरदे रहे चट्टी, घर घर फेरा पाईआ। एहदे किल्ले बन्नदे रहे ढग्गी वच्छी, दाणे धड़तां नाल तुलाईआ। उधरों इक चल के आया वच्छा खस्सी, उच्ची कूक सुणाईआ। मैं वी वेख्या अक्खीं, मेरी माँ एसे ब्राह्मण जजमानां कोलो लै के मेरा नाता दित्ता तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल बेपरवाहीआ। कड़ाही कहे मेरे अन्दर गरौह, ब्राह्मण मेरे अन्दर गया टिकाईआ। तुसीं भरावो एथे बहो, मैं फिर आवां चाईं चाईंआ। घरो आवां भौं, आपणा फेरा पाईआ। हौली जेही दस्स के गया हुण नहीं मैनूं तुहाड्डा कोई गौं, मेरा मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त खेल खिलाईआ। गरौह कहिण असीं जाईए सड़, लेखा लोकमात रहिण ना पाईआ। सड़न तों पहलों जे जाईए मर, आपणा आप मिटाईआ। मरन तों पहलों जे गुरमुखां दर्शन लईए कर, आपणा रोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर कराईआ। गरौह कहिण कड़ाही सुण फरियाद, तेरे अग्गे अवाज़ लगाईआ। सानूं थोड़ी जेही दे दाद, आपणी मेहर नज़र उठाईआ। इक वार दस्स के खोल्ह राज़, कवण तेरे विच चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाईआ। कड़ाही किहा सुणो भुक्खे नंगे, सच दयां सुणाईआ। करया खेल सूरे सरबँगे, सूरबीर वड्याईआ। तुसीं क्यों बैठे रहे अन्धे, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ब्राह्मण नूं वज्जदे वेखे नही डण्डे, जिनां नाल तुहानूं सिर तों दित्ता लाहीआ । तुसीं इस करके ठंडे, गुरमुखां दिती सज़ाईआ। एसे कारण चंगे, मेरे विच डिग के प्रभ चरणां नाल आपणा आप छुहाईआ । गरौह कहिण की एह माता गंगा नालों चंगे, चंगी तरां जणाईआ। कड़ाही कहे उह तुहाड्डी माता फिर फिर पैरीं नंगे, गंगा मईआ वेस वटाईआ। की तुसीं जाणा उहदे कंडे, ओस दे लुटीआ विच बंद कराईआ। ओथे जा के फेर बणो मुशटंडे, कूड़ी कार कमाईआ। गरौह कहिण नहीं असीं हुण एथे चंगे, प्रीती तेरे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे चाईं चाईंआ। कड़ाही कहे मेरे नाल जे देणा साथ, सच दयां समझाईआ।

पहलों आपणा आप बणाओ ख़ाक, ख़ाकी रूप वटाईआ। फिर भगत बणो साक, सज्जण नज़री आईआ। सच दुआरयों मंगो दात, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा करे जे पुरख अबिनाश, आपणी दया कमाईआ। तुहाडे मुख विच पावे थोड़ी जेही भात, कतरा कतरा वरताईआ। उधरों पंजे उठ के कहिण एह ठीक बात, एसे नाल सानूं मिली वड्याईआ। साडी पवित होई ज़ात, पाक दित्ता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। गरौह कहिण असीं जाणा मर, नाता अवर रहिण ना पाईआ। ब्राह्मण मिल गया नाल हरि, हरी रूप समाईआ। असीं ओसे दुआरे जाणा खड़, इके ओट तकाईआ। उधरों ब्राह्मण आया कुछ हौली हौली रिहा पढ़, निंमां निंमां राग अलाईआ। गरौह कहिण एह की रिहा कर, समझ ना कोई समझाईआ। उधरों संगत आ गई घर, कट्ठी हो के सोभा पाईआ। सारया मिल के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ल्या पढ़, गरौह सुण के खुशी मनाईआ। सुणदयां सार डिगे दड़, आपणा आप गए तजाईआ। ब्राह्मण दा खाली होया घर, साथी गए मुख छुपाईआ। अग्गे मिले इक्को वर, जिस घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दित्ता चुकाईआ। गरौह गए कड़ाही होई खुश, खौंचा रिहा हसाईआ। मैं पहलों रिहा चुप्प, बैठा मुख छुपाईआ। ओहले रिहा लुक, पर्दा अग्गे टिकाईआ। हुण तकड़ा हो के पवा उठ, आपणा बल वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं देवे माण वड्याईआ। खौंचा कहे मैं कड़ाही साथ, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। घृत पाणी आटा बणा प्रशाद, प्रशादी अग्गे टिकाईआ। जिस दा डूंग्घा राज़, समझ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रशाद कहे पंजां दी धार, पहली याद कराईआ। ब्राह्मण दा चुक्कया उधार, वीह चाली झोली पाईआ। अग्गे ना होवे ख्वार, दुःख ना कोए सताईआ। जिस दा लेखा नाल घुम्यार, पंच मिली वड्याईआ। बण वचोला चम्यार, सब दा लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा थाउँ थाईंआ। वीह कहिण असां पुजाई वीह, बीस बीस मिली वड्याईआ। साडे पिच्छे ना घर पुत्त ना धी, माया पिच्छे आपणा आप गंवाईआ। अग्गे वासते गुरमुख कोई ना बीजिओ एहो जेहा बी, जिस दा फल नज़र कोए ना आईआ। ब्राह्मण तुहानूं दस्सण आया अगली लीह, लकीर पिछले उते फराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे आपणे नैण उठाईआ। चाली कहिण असीं सारे चंगे, चंगी तरह समझाईआ। ब्राह्मण सानूं खुशीआं नाल मंगे, मंग मंग कट्ठा दित्ता बठाईआ। जे वज्जदे ना इस दे डण्डे, आपणी गंढ ना कदे खुल्हाईआ। वेखो जे खांदा रिहा खीर मण्डे, ओनां पिच्छे कड़ाह प्रशाद वरताईआ। जिस नूं खा के मंदे हो जाण

चंगे, चंगी तरां देवे प्रभ वड्याईआ। कोई विच धार नहीं फेरी खण्डे, शब्दी रूप विच समाईआ। इस ने सोहणे बणौणे बंदे, बन्दना प्रभ दी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। प्रशाद कहे मैं होया पारस, आपणा आप बदलाईआ। पंडत दी रविदास कहिण सिफारिश, बण वचोला ल्या छुडाईआ। नाले लिखे सोहणी अबारत, कलम शाही नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख बेपरवाहीआ। वीहां दा लेखा चालीआं दी पत्ती, पिछला लहिणा चुकाईआ। जिस दी रसद लई पक्की, सोहणा तोल तुलाईआ। चल्ल के वेखण आई अक्खीं, रविदास दी सपुत्री चाईं चाईंआ। जिस नूं प्रशाद दित्ता सी हथ्थीं, खुशीआं नाल वरताईआ। दुआरे आ के चरणी ढठ्ठी, कहि के रही सुणाईआ। प्रभू मैं तेरी उह सवरन बच्ची, जिहड़ी बच्चयां वांग गोद खिडाईआ। मेरे हथ्थ विच वेख कच्ची लस्सी, दुध पाणी रही मिलाईआ। एह दात ओदो दी सांभ के रखी जिस वेले घर साडे चल के आएयों बेपरवाहीआ। मैं एहदे उते बहिण नहीं दिती मक्खी, परदे नाल ढक वखाईआ। पाणे विच्चों मैनूं मिली सी बूँद रत्ती, मेरी अगली पिछली सुरत खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मैं दर तों मंगण आईआ। सच कहे रविदास सपुत्री, आपणा हाल सुणाईआ। प्रभू वेख मैं किथों सचखण्ड दवारयों उतरी, तेरे कोल आईआ। मैं निक्की जेही पुतली, वड्डी झोली डाहीआ। आपणे लेखिउँ आप ना मुकरी, एसे करके फेरा पाईआ। लोकमात ना होई नाशुकरी, शुकर कहि कहि खुशी मनाईआ। शब्दी धार वेखा मुडली, की ओहो कार कमाईआ। तूं पिछली खेल किवें पुच्छ लई, कहार यार घुम्यार कट्ठे कीते आईआ। मेरा पिता नाल चम्यार, तेरा संग रखाईआ। मैं वेखण आई दरबार, आपणा पन्ध मुकाईआ। की ओसे तरां रिहा तार, जिस तरां मेरे उते दया कमाईआ। एह पंजे मेरे वांग मुटयार, लोकमात नज़री आईआ। मैनूं चुप कीत्यां गोदी दित्ता सवाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। की इन्नां नूं तोरेगा मेरे नाल, सोहणा संग बणाईआ। सत्त महीने लँघदयां केहड़े बीतणे साल, घड़ी पल ऐवें जाण विहाईआ। आह वेख मैं लै के आई दुशाल, सोहणे पट्टू उणाईआ। जे मेरा मन्ने सवाल, हुणे जावां फड़ाईआ। मैनूं उह वेला याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। नरंगबाद दिती दाद, प्रशाद आपणे हथ्थ दा घलाईआ। मैनूं अजे तक्क ओहो आवे स्वाद, ओसे स्वाद दी मारी चल के आईआ। नाले जाए वेखां आपणा बाप, केहड़ीआं खुशीआं विच सोभा पाईआ। नाले तक्कां बाप दा बाप, जिस सब दी बणत बणाईआ। भगत नाल मिलण दी दस्सी जाच, सिख्या सच समझाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि, जुग जुग झोली पाईआ। सन्त सुहेले लए लाध, घर घर फोल फुलाईआ। मैं वेखण आई की एहदा अजे वी ओहो रवाज, ग़रीब निमाणयां रिहा तराईआ। एथे आण के वेख्या

एह ओदूं चंगा करे काज, सोहणी बणत बणाईआ। खुशीआं नाल झोली पावे दात, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। खा के रुक्खा सुक्का भात, भाण्डे सब दे पोच वखाईआ। होर कुछ वेख्या पंजां हथ्थ ग्लास, अमृत धार वहाईआ। मेरी वेख के बुझ गई प्यास, तृष्ना रही ना राईआ। वाज आई उत्तों आकास, मैं ल्या ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त सारे हथ्थ जोड़ के करन अरदास, प्रभू तेरी वड्याईआ। थल्ले तक्कया गुरमुखां दी सोहणी नज़री आई जमात, जेहड़ी इक्को करन पढ़ाईआ। अक्ख खोल्ही नज़री आया साख्यात, सब दा सच्चा माहीआ। अग्गे हो के वेख्या मेरा पिता लिखे कलम दवात, चिटे उते काला पाईआ। मैनूं इक होर गल्ल आ गई याद, जिस वेले पिता कोल बैठी रोटी रही खवाईआ। ब्राह्मण गल्लां करन वाला बदमाश, एथे गया आईआ। मैं हुण चंगी तरह ल्या जाच, एह ओहो नज़री आईआ। हुण पता नहीं किस तरह बण गया साध, सिख्या किथों पाईआ। ओधरो पंजे बोले असीं डागां नाल एहदे नाल कीता फसाद, कुट्ट कुट्ट के सिध्धा ल्या कराईआ। उधरों घुम्यार कहे मैं दस्सी जाच, आपणा डर वखाईआ। रविदास कहे बच्ची नहीं मेरे प्रभ ने चरण धूढ़ दिती दात, दुरमति मैल धवाईआ। बच्ची कहे पिता जी कदों, रविदास कहे आज, हुणे लेख मुकाईआ। निक्की नंन्ही कहे ब्राह्मणा तेरे वड्डे भाग, बुढया तेरी लाज रखाईआ। मैनूं बड़ी खुशी होई तूं चड़्हिउँ इस जहाज़, जिस दा मलाह बेपरवाहीआ। ब्राह्मण अग्गों रिहा आख, खुशीआं नाल सुणाईआ। लोकी पता नहीं केहो जिहा मजन करदे माघ, मेरे वरगा मजन हथ्थ किसे ना आईआ। वीहां नाल चाली रलाए हो गई बंध खलास, पिछला लेखा दित्ता मुकाईआ। नाले प्रभू मिल गया साथ, नाल हरिसंगत जोड़ जुड़ाईआ। मेरी पूंजी आई रास, प्रभ मिली सरनाईआ। मेरे हौकयां तों छुटे स्वास, खुशीआं रंग वटाईआ। हुण मेरे कुछ नहीं पास, खाली हथ्थ रखाईआ। बच्ची मैं भी तेरे नाल रल्ल के एहनूं आख्या बाप, खाणा पीणा एहदी झोली पाईआ। तेरे नालों हुण रविदास मेरा वड्डा बण गया साक, जिस सज्जण दित्ता मिलाईआ। छोटी बच्ची ब्राह्मण दे मोडयां उते चढ़ गई मार पलाक, फड़ के सिर रही हलाईआ। चल वेखीए ओह पतण घाट, जिस कनारे उते बापू ओथे किहो जही पाणी दी वज्जे ठाठ, लहर लहर नाल टकराईआ। नाल वेखीए बचन सिंघ किहो जेहा राठ, सूरमा डेरा लाईआ। आर पार दोवें उस दे घाट, खुशीआं रंग वखाईआ। फिर भठयारे दी करीए तलाश, जिन अर्जन हेठां अग्नी डाह के सेव कमाईआ। कड़ाही कहे मैनूं पुच्छो बात, मैं भी आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जिस विच सोहणी बण गई सौगात, अमृत रूप नज़री आईआ। जिस दा स्वाद तों परे स्वाद, स्वाद विच्चों आदि दए वखाईआ। स्वाद नूं सुण के उह वेखो हिस्सा वंडावण आया कमाद, नानक बाला मर्दाना आपणे नाल रलाईआ। हौली जेही मारी अवाज़, शहिनशाह मेरे शाह पातशाह

बेपरवाहीआ। मैं वी सरन जावां लाग, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। बेशक मेरा सुक्का उत्तों आग, थल्ले तेरा रस नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेल रिहा वखाईआ। बच्ची कहे ब्राह्मण बुढे, उठ लै अंगड़ाईआ। वेख रविदास भगवान दोवें रुज्झे, आपणी कार कमाईआ। इन्हां दी जे कोई रमज़ बुझे, आपणा आप देवे मिटाईआ। ओस नूं फिर सब कुछ एथे बैठया सुझे, दो जहान नज़री आईआ। एहदे कोल बड़े भेत गुज्झे, बिन गुरमुखां हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। बेशक गिरधारे वरगे फिरन डुड्डे, लंगड़यां लूलयां दए वड्याईआ। जिस तरां मैनूं गोदी चुक्के, आपणी छाती लाईआ। अग्गे दिसदा पंजां दा दाणा पाणी मुक्के, महीनां सावण राह तकाईआ। टाणीआं नालों टाणी वाले गुच्छे, कच्चे फल रहे कमलाईआ। जे कोई मेरे कोलों पुच्छे, मैं सच दयां समझाईआ। बापू जे तेरा हथ्थ होवे साडे सिर उते, लाड़ी मौत क्यों लए प्रनाईआ। एथे ओथे तेरे बूटे फुट्टे, पत्त डाली रही महकाईआ। क्यों भेत रखदा गुज्झे, सच सच्च दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्न अरज़ोईआ। रविदास सपुत्री करे इशारा, चरण ध्यान लगाईआ। प्रभ तैथों वड्डा कीहदा दुआरा, किस घर मंगण जाईआ। जन भगत दिसे तेरा सहारा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। की होया जे इन्हां नेड़े आया कनारा, बैठे पन्ध मुकाईआ। तूं देवणहार अतुट भण्डारा, आपणी दात दे वरताईआ। सच सच्चा हो के कर त्यारा, सच तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सपुत्री मैं सब कुछ करनजोग, जगत दाता अख्वाइंदा। मेरे हथ्थ संजोग वजोग, दोवें राह चलाइंदा। जिन्ना चिर चाहां खवावां चोग, जिस वेले चाहां पन्ध मुकाइंदा। मेरे हथ्थ दुःख चिन्ता रोग, सुख सब दी झोली पाइंदा। मेरा लहिणा लोक परलोक, दोए जहान चरणां हेठ दबाइंदा। मेरा नाउँ सति किला कोट, लख चुरासी विच टकाइंदा। मेरा प्रकाश निर्मल जोत, जो घट घट नज़री आइंदा। मेरा शब्द नगारा चोट, जो तन रबाब वजाइंदा। मेरा लेख कोई ना सके सोच, सोच विच कदे ना ल्याइंदा। जे भगतां देवा आपणी मौज, मुफ्त आपणा नाम वरताइंदा। मंगण वाली दे दे होश, सुरती शब्द खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। बच्ची कहे सब कुछ तेरे हथ्थ, वड्डी तेरी वड्याईआ। मैनूं देदे कुछ हक़, दर तेरे मंगण आईआ। पंजां मेरी खातर लै रख, दोए जोड़ सीस निवाईआ। एथे ओथे तेरे वस्स, दूजा हुक्म ना कोए वरताईआ। तेरे चरणां दा चरणामत चढ़या उते भट्ठ, जो पंजां धार वहाईआ। ओस पिच्छे इन्हां रख, तेरी करन वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा हो सहाईआ। बच्ची तूं निक्की जेही गुस्ताख़, अचरज गल्ल सुणाईआ। बच्ची कहे नहीं मैं रविदास दी उह शाख़, जिस

विच्चों तेरा नूर नज़री आईआ। तूं एडा वड्डा साडा बाप, क्यों ना मंगीए चाईं चाईंआ। तेरे घर की घाट, दिंदया तोट रहे ना राईआ। मैं नंगीं पैरीं कट के आई वाट, ताजे छाले रही वखाईआ। काही काने वेखे उते रहवां घाट, सोहणा रस्ता नज़री ना आईआ। सिधी आई सुण के आवाज़, गुरमुख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। भगवान कहे एह निक्की नन्ही, बच्चीयां विच बच्ची नज़री आईआ। किथो आई भंनी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कोई कहे बाबू पूरों कोई कहे हरदो छन्नी, एहो राह तकाईआ। बच्ची कहे प्रभ किरपा नाल मैं किडी होई लम्मी, पहला कदम एथे दित्ता रखाईआ। क्यों रविदास घर जम्मीं, दर मिली वड्याईआ। मेरी वड़ी प्रेमण अम्मी, सच्ची सेव कराईआ। चंगयां मापिआं दी धी कदे ना होवे निकम्मी, एथे ओथे दोहां घरां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेल रिहा वखाईआ। बच्ची कहे मैनूं आया चेता, पिछली याद कराईआ। जिस वेले मेरे बापू ढोर ढोण दा ल्या ठेका, चालीआं उते मुकाईआ। पहलों वीह कीते भेंटा, वीह अगली देण छुमाईआ। उधरों संग आया बनारस थेटा, ब्राह्मण नाल रलाईआ । मेरे पिउँ नूं कहिण रविदास चमरेटा, चमड़े गंढु वखाईआ। ओस वेले पिता ने किहा मेरा प्रभ दे नाल लेखा, कोई समझ ना सके राईआ। एह भी प्रभ ने पाया भुलेखा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मैनूं नाल जांदी नूं लग्गा ठेडा, मूँह दे भार सुटाईआ। रविदास बांहों फड़ के किहा उठ बेटा, बच्ची कोई सट्ट नहीं लग्गी राईआ। मैं किहा प्रभू पिता मैं इक एहो जिहा वेखा, जिस विच्चों इक्को नूर होवे रुशनाईआ। ओस मेरे मस्तक लाई मेखा, हौली जेही उंगली दिती छुहाईआ। मैं डिगी नहीं मैं उस दी गोद विच खेडा, दोहा भुजां उते हिलाईआ। मैनूं वड़ी सोहणी लग्गी सेजा, मेरी माँ ओहो जही कदी ना बणाईआ। जी करे मैं एथे खुशीआं नाल रज्ज खेडां, कल्ली बहि के झट्ट लँघाईआ। नाले नेत्रां नाल वेखां, जिस दा नूर सोहणी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी रचन रचाईआ। बच्ची कहे रविदास बाप, मैं निक्की मंग मंगाईआ। तूं दस्स कीहदा करदा ऐं जाप, मैनूं दे समझाईआ। सारे छड्ड गए सज्जण साक, बैठा मुख भवाईआ। मापिआं नाल नहीं कोई मिलाप, चाचयां नाल ना कोई वड्याईआ। सजणां नाल ना जावें साथ, हाणीआं नाल ना खेड वखाईआ। पैसा धेला नहीं कुछ पास, पूंजी रास ना कोई बणाईआ। तैनूं दस्स कीहदी आस, जिस पिच्छे सब कुछ दित्ता तजाईआ। रविदास हस्स के गिचीउँ फड़ के थल्ले नप्प के आखे बच्ची एधर वेख खास, दोवें अक्ख खुल्हाईआ। जां तक्कया रघुनाथ, हर घट वसया साख्यात, सच सिँघासण सोहणा आसण लाईआ। बच्ची कहे मैं कीहदी करां तलाश, अग्गे बैठा कोई वड्डा बेपरवाहीआ। रविदास किहा एहो सब

दा बाप, तेरा मेरा दोहां दा पिता माईआ। बच्ची कहे की मैनूं अग्गे वी रखो साथ, आपणे नाल रलाईआ। रविदास किहा एह एहदा खेल तमाश, सद चले आपणी सच रज़ाईआ। ओस रो के दित्ता आख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं नहीं आपणा मेटण देणा साक, पिउँ धी ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सदा माण वड्याईआ। निक्की नढ्ढी पंजां वल रही तक्क, आपणा ध्यान लगाईआ। तुसीं वी भैणो मंगो आपणा हक़, तुहाढ्ढी झोली दए भराईआ। एहदे सब कुछ दिसदा हथ्थ, जन्म मरन दोवें वेख वखाईआ। जे पुच्छण तों पहला गया नट्ठ, फिर चले ना कोई चतुराईआ। मैं तुहानूं जाच देवां दस्स, बीती कहाणी आपणी नाल रलाईआ। जे मरनो जाणा जे बच, सच संदेसा दयां चाईं चाईंआ। हस्स के रो के चरणी ढट्ठ के करो हठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जे सीत प्रसाद देवे आपणे हथ्थ, फिर मिले माण वड्याईआ। मैं वी तुहाढ्ढे नाल रलू नट्ठ, अग्गे हो के सीस निवाईआ। जे प्रभ किरपा करे पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। एथे ओथे सब दी रह जाए पत, परमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। वेख्यो जायो ना संग, मैं इक्को वार जणाईआ। प्रभ दे कोलों गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे मंग, झोलीआं आपणीआ अग्गे डाहीआ। तुसीं जे होर कुछ नहीं मंगणा एहो मंगो साडा रहे तेरे नाल संग, होए ना कदे जुदाईआ। साध संगत विच बहि के माणीएं अनन्द, सचखण्ड एहो नज़री आईआ। फेर आपे टुटी देवे गंढ्ढ, अगली बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, रविदास सपुत्री कहि के रही सुणाईआ। नी बैठो करो सलाह, मैं सच सच्च दृढ़ाईआ। जे होर नहीं मेरा पिता बणा लओ गवाह, जेहड़ा लेखा रिहा लिखाईआ। एहदे कोलों कदी ना करे नाह, सदा हां विच हां मिलाईआ। जे नहीं मन्नदा ते फड़ लओ बांह, आपणा प्रेम वखाईआ। एथे लोड़ नहीं किसे नूं पिता माँ, भैण भाई संग ना कोई रखाईआ। मेहरवान इक्को देवण वाला ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टकाईआ। भुल्लयां भटकयां बच्चयां आपणी छाती लए लगा, सति सरूप नज़री आईआ। मैं इक तुहानूं पंजां नूं उह चिट्ठी देवां वखा, जेहड़ी सुक्के टुक्कड़े खाण लग्गयां लेख दित्ता लिखाईआ। मैं उह फड़ के आपणी माँ नूं आई फड़ा, जिस सांभ के मेरी झोली पाईआ। उहदे विच चार कहार पंजवें यार दा नाँ, सोहणी मोहर लगाईआ। मैं वेखो निक्की जेही ने किन्नां चिर रखी छुपा, अज्ज तुहाढ्ढे पिच्छे लै के एथे आईआ। मैं अग्गे कदी ना जाणा किसे अलड़पिण्डी दा राह, दूजा संग ना कोई रखाईआ। मैनूं चेता कराया उस वच्छे वाले गां, जेहड़ा ब्राह्मण आपणी भिच्छया विच मंग लिआईआ। मैं भी हुन्दी सी किसे दी माँ, पुत्तर नालों कीती जुदाईआ। बच्चयां बिनां ना रहे नाँ, मिले ना माण वड्याईआ। खाणा पीणा खेल सर्ब जहां, चारे

खाणी पेट भर के वक्त लँघाईआ। जिन्हां चिर कोई मालक ना होवे पकड़ण वाला बांह, साईं सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव खुल्हाईआ। गाँ दा सुण के मैं अड़ाट, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मेरी नज़र पई रावी घाट, जिथ्थे कंडे बेले काने काहीआ। ओथे नज़री आई इक जमात, पंजां जोड़ जुड़ाईआ। फड़े हथ्थां विच ग्लास, हिरदे अन्दर राम ध्याईआ। नाले डण्डे घड़े खास, वंजां वांग वड्याईआ। उधरे ब्राह्मण तक्कया चरण धोवे नाल हाथ, आपणी सेव कमाईआ। दूजे पासे घुम्यार रिहा तांघ, आपणा बल धराईआ। एधर रविदास लिखे नाल कलम दवात, शाही चिटे उते सोहणा रंग चढ़ाईआ। जिस वेले चंगी तर्हां कीती जाच, बेपरवाह विच बैठा सोभा पाईआ। मेरे अन्दर आई ख्वाहिश, मैं वेखां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सच बच्ची तेरी आसा की, श्री भगवान जणाइंदा। तूं रविदास दी प्यारी जेही धी, मैं पुतां वांग उठाइंदा। उह कहे हां जी, हां जी विच्चों तेरा रूप नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाइंदा। बच्ची सच कुछ मंग, जे मंगण दर ते आईआ। मैं देवणहार सूरा सरबँग, शहिनशाह अख्वाईआ। तेरा बचन होण ना देवां भंग, मूँहो मंगया झोली पाईआ। रविदास सपुत्री कहे मैनूं फेर पवे ठंड, जे मेरीआं भैणां उते दया कमाईआ। चरण फड़ के घुट के कहे इन्हां दी टुट्टी गंढु, तेरे नालों ना होए जुदाईआ। एह गऊआं निमाणीआं मिटी दी कंध, आपणा जोर ना कोई वखाईआ। तेरी किरपा नाल मैं जदों वेखां तेरा गौंदीआं छन्द, तेरा नाम ध्याईआ। धन्न भाग इन्हां दे वड्डे वढ्डयां वाले दन्द, बत्तीआं विच्चों बत्ती सिफ्त सालाहीआ। पंजां दा तूं इक्को नूरी चन्द, तेरी किरन किरन रुशनाईआ। जे प्रशाद इन्हां नूं देवें वंड, कर किरपा आपणा हथ्थ रखाईआ। फिर सारी संगत नूं पै जाए ठंड, हौका लै ना कोई सुणाईआ। जे तारया ब्राह्मण दा ऐडा वड्डा पखण्ड, गरौह एसे कड़ाही विच तपाईआ। आपणयां भगतां प्रभ तू कदी ना देवीं दंड, भुल्लयां भटकयां सदा गले लगाईआ। मेरी एहो निक्की जेही मंग, पूरी कर देईं हुणे उठ के अपणे घर तुर जाईआ। मैं आसा पूरी करां जरूर, मेहरवान हो के दया कमाईआ। ब्राह्मण बख्शे सर्ब कसूर, साफ सुथरा दित्ता बणाईआ। पंजां दा डुब्बण नहीं देंदा पूर, बेड़ा लवां तराईआ। पर ओस दिन अउणा पऊ जरूर, आपणी रहमत नाल लिआईआ। पंजां नाल पंजां दा होर मुआफ करके जाऊं कसूर, जिन्हां दा अग्गा नेड़े आईआ। जो लिख्या ना होवे कूड़, सच एसे दी वड्याईआ। भगतां पिच्छे मैनूं होणा पए मजबूर, जुग जुग आपणी खेल रचाईआ। जे भगत ना होण मैनूं कौण करे मशहूर, कवण मेरा ढोला नाम गाईआ। एसे करके मैं तुहाड्डा बणया मशकूर, मुश्किल नज़र कोए ना आईआ। परमात्मा समझो भावें समझो मजदूर, दोहां रंगां विच

आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। बच्ची कहे मैं करां निक्की जिही गल्ल, हौली जिही सुणाईआ। वेखीं किते कर ना जाईं वल छल, अछल अछल्ल तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। अमृत बणया जो तेरे चरणां नाल लग्गा जल, विच कड़ाही सोभा पाईआ। जिस दे थल्ले अग्नी गई बल, आपणा ज़ोर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, की तरस रिहा कमाईआ। मैं ज़रूर करां तरस, दयावान अख्वाईआ। अग्गे रहिण ना देवां फ़र्क, पिछला लेख चुकाईआ। लहिणा चुका के सोग हरख़, चिन्ता ग़म मिटाईआ। मरन दे बदले आ के देवां दरस, सच्चा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सपुत्री कहे रविदास पिता, इक गल्ल प्रभ तों दे मनाईआ। सब नाल करीं इक्को जेहा हिता, राउ रंक ना कोई रखाईआ। तेरे घर ना कोई वड्डा ना कोई निक्का, मात गर्भ तेरी सरनाईआ। वेखीं भगतां नूं कदी ना देवीं पिच्छा, आपणा मुख भवाईआ। जे करें तां करीं सदा रच्छया, भिच्छया आपणी झोली पाईआ। जगत जहान दिसे मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरा लेख प्रभू कदे ना मिटे लिख्या, मिटावणहारा होर ना कोई अख्वाईआ। वेख रविदास दास चीथड़ पुराणा तेरे सिँघासण उते विछिआ, सोहणी सोभा रिहा पाईआ। एह कदी ना जावे भिटया, छूत छात ज़ात पात विच आपणा पैर ना कदे रखाईआ। दोहर वाला आया नस्सया, आपणा पन्ध मुकाईआ। बल्ले किडा सोहणा लग्गदा फबिआ, घर मेरे डेरा लाईआ। मैनूं पहलों क्यों ना तूं लभ्भया, बैठा रिहों मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। मेरी दोहर वेख धोती, मैल नज़र कोए ना आईआ। इस नूं ला के दस्से आपणी सोटी, हौली जेही छुहाईआ। उधरों ब्राह्मण दी हिलण लग्गी बोदी, हौली हौली आपणा सिर उठाईआ। दूजे पासे पंजां आ गई सोझी, आपणा ध्यान लगाईआ। उधरों रविदास दी बच्ची बण गई मोढी, अग्गे कदम उठाईआ। उह गुरमुखो गुरसिखो सुणो एसे नूं मन्नदे गए वेदी सोढी, एहो पुरख अकाल नज़री आईआ। राम कृष्ण एसे दी नूरी जोती, जोत जोत विच्चों रुशनाईआ। आदि शक्ति वेखो सज्जे पासे हथ्थ रख के बैठी उते ठोडी, अक्खां नाल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। आदि शक्ति कहे मैं दस्सां कहाणी, कहावत विच कदे ना आईआ। बाणीआं तों वक्खरी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। खाणीआं दा जाण जाणी, जानणहार वड्डी वड्याईआ। सारे पिछले कड्ढे कीते पिछले हाणी, सोहणा मेल मिलाईआ। किसे हथ्थ फड़ाया पाणी, कोई चरण धोवण डाहीआ। कोई कलम नाल लिखे निशानी, सोहणा लेख बणाईआ। कोई खेल करे बण के वाली दो जहानी, निरगुण आपणी कार कराईआ। किसे नूं बच्ची बणा के दित्ता पद निरबाणी, घर

साचे मिली वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर रिहा दरसाईआ। सारे कट्ठे हो के लग्गे कहिण, इक्को वार जणाईआ। प्रभ दर्शन दे दे नैण, नेत्र लोचा पूर कराईआ। जे तुट्ठा अइउँ देण देण, खुल्हे भण्डारे दे वरताईआ। चरणां विच बख्श सच्चा बहिण, होवे ना कदे जुदाईआ। हरिसंगत नाता जुड़या रहे भाई भैण, बुरी अक्ख ना कोए तकाईआ। तेरा सहारा सारे लैण, कनारा इक्को नज़री आईआ। जे कोई रोवे गुरमुख तेरे विछोड़े दा पावे वैण, मरयां नीर ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं दे इक्को जेही वड्याईआ। सब नूं वड्याई देवां केहड़ी, सच दे सुणाईआ। गुरमुख कहिण असीं चढ़ना तेरी बेड़ी, मलाह तैनूं लैणा बणाईआ। तेरे अग्गे गल्ल केहड़ी, डुब्बदयां लएं तराईआ। तेरी प्रीती सद लग्गी रहे बथेरी, बिरथा जन्म ना कोए गंवाईआ। रविदास सपुत्री तेरी चेरी, चेलयां सारयां रही समझाईआ। इस दे हथ्थ साढे तिन्न हथ्थ ढेरी, सब नूं देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र करके ला भोग, भगत रहे जस गाईआ। प्रेम दा देदे सच्चा जोग, जोगी बण के अलख जगाईआ। तेरे नाल होवे संजोग, धुर दी सच कुड़माईआ। आत्म परमात्म तेरी सेजा लए भोग, सोहणा रंग सुहाईआ। घरों कढ्ढुणे हरख़ सोग, चिन्ता ग़म गुआईआ। आपणे प्रेम प्यार दी देदे चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सारे रल मिल गाईए इक श्लोक, तेरा नाम वड्याईआ। तेरी किरपा नाल अन्त मिलीए तेरी जोत, जोत जोत विच समाईआ। साडे लई हुण प्रभ आप समझ सोच, सब कुछ तेरी झोली पाईआ। साडे कोलों ब्राह्मण वांगराँ दिती नहीं जाणी दक्षिणा मोख, ना कोई भिच्छा भेंटा दईए चढ़ाईआ। ना कोई पका के रखीए अग्गे रोट, पीरां वांग मनाईआ। थाल सेमीआं ना दईए परोस, घृत पा ना खुशी मनाईआ। खण्ड खीर ना दईए रोज, दुद्ध नाल ना मिले मलाईआ। रोज़ थाँ ना बहाईए पोच, साथों हथ्थ ना जाण घसाईआ। दन्द घसाई नही देणी कोई होंट, पैसा टका ना झोली पाईआ। जे घर आवें ते बहिण नहीं देणा खमोश, तेथों आपणा नाम जपौण दी सेवा लाईआ। तेरी फेर टकाणे आऊ होश, आपणे आप वेखे नैण उठाईआ। जे मैं भगतां दी लाज ना रखी मैनूं की कहिणगे लोग, लोकां विच ना कोई चतुराईआ। जन भगतो तुसीं कुछ ना सोचो सोच, मैं सब कुछ आपे दयां वरताईआ। तुहानूं माणदयां वेखां मौज, आप नंगी पैरीं वेखां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ । सच कहे तूं केहड़ा सच्चा, की तेरी वड्याईआ। श्री भगवान बांहों फड़ वखाया वेखो रविदास दा बच्चा, एहो सच्चा नज़री आईआ। जे होर कुछ वेखणा लिख्या लेख ना होवे कच्चा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सारे कहिण प्रभू जो कुछ है सोई अच्छा, अच्छा बुरा तेरा नज़री आईआ। रो

के कहे उह गाँ वाला वच्छा, नैणां नीर वहाईआ। मैं तेरे भगत दे किल्ले बद्धा, उमर थोड़ी अजे लँघाईआ। जो छेती दे देवें सद्दा, आवां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा हौली हौली मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एसे खेल अन्दर फिरे भज्जा, होर कम्म काज ना कोई रखाईआ। प्रसाद चुको उते हथ्थ सज्जा, नेड़े ल्याउँ चाईं चाईंआ। पर्दा लाहो जे दे के कज्जा, सोहणा रूप प्रगटाईआ। वेखण आए मनजीत जग्गा, सवरन गुरदयाल नाल मिलाईआ। पाल सिँघ सोहणा दस्तार सीस बद्धा, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ गोबिन्द नाल रलाया बच्चा, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। खब्बा हथ्थ रख के उते मथ्था, मस्ती इक वखाईआ। हथ्थ नीवां करके सज्जा, पंजां दए बहाईआ। वेखो ऐस प्रसाद दा मज़ा, जिस दा हिस्सा विच पाईआ। अग्गे कोई ना देवे सज़ा, जो इस नूं गया खाईआ। घुम्यार आपणे लै के आया पंजे गधा, दरवाजिउँ बाहर रिहा वखाईआ। मेरा नेड़े लग्गा अड्डा, थोड़ी वाट पन्ध मुकाईआ। उधरों संडयां वाला आवे गड्डा, श्री भगवान हिक्क़े वाहो दाहीआ। सारयां दा जोड़ इके थाँ बज्झा, कड्डा मेल मिलाईआ। मेल मिला के कहे गुरमुखो तुहाड्डा वधे अग्गा, पिछला लेख मुकाईआ। थल्ले रविदास दा पिछला वछाया झग्गा, सोहणी सेज सुहाईआ। उपर साहिब सुल्तान सजा, आपणा आसण लाईआ। तुहाड्डे नाल कदे ना करे दगा, ब्राह्मण धोखिओ दित्ता हटाईआ। जद वेखो ते दिसे उपर शाह रगा, निज नेत्र नज़री आईआ। प्रेम प्रीती अन्दर फिरे भज्जा, सोहणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिसंगत सीत प्रसाद मुख विच देवे पाईआ। पंजे अग्गे आओ, प्रभ देवे माण वड्याईआ। धुर दी वस्त झोली पाओ, भिच्छया इक वरताईआ। जन्म मरन दा रोग मिटाओ, सोहणा रंग वखाईआ। धुरदरगाही ढोला गाओ, इक्को राग अलाईआ। नेत्र लोचण दर्शन पाओ, पुरख अबिनाशी नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा ध्याओ, सिमरन विचो सिमरन नज़री आईआ।

* २७ माघ २०२० बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर *

बच्चयो सदा रहे तुहाडा घेरा, घेरे अन्दर साहिब सोभा पाइंदा। दो जहानां छड्डुया डेरा, डेरयां विच्चों डेरा गुरमुख नज़री आइंदा। सब दा कट्ठा बन्ने बेड़ा, जगत वहिण ना कोई रुढ़ाइंदा। अजे अग्गे लेखा बथेरा, हौली हौली वरताइंदा। पहली चेत दा आए सवेरा, सोहणा वक्त सुहाइंदा। मेहरवान करे आपणी मेहरा, मेहर नज़र उठाइंदा। जन्म जन्म चुका झेड़ा, झगड़ा अवर गवाइंदा। दरस दिखाए हो के नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जिस राह नूं तक्के चिट्टा घोड़ा वछेरा, आपणा नैण उठाइंदा। ओस वेले फेर सोहणा लग्गे घेरा, चारों कुण्ट गुरमुख गुरमुख गुरमुख नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा। घेरे वाल्यो रहो ख़बरदार, धुर दी ख़बर सुणाईआ। पंजां अजे होर उधार, देणा बाकी नज़री आईआ। पहली चेत किरपा करे निरँकार, निरवैर होए सहाईआ। चिटे वस्त्र कर त्यार, पंजां देवे पहनाईआ। इक इक नाल रखे रुमाल, सोहणी भेंट चढ़ाईआ। पंजां बहा के खवाए इक्को थाल, ब्राह्मण कोलों अग्गे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वस्त्र पावे सोहणे चिट्टे रंग, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। ओस वेले जल लै के आई माई गंग, जमना सुरस्ती नाल रलाईआ। गोदावरी आ के गावे छन्द, सोहणा राग अल्ाईआ। रविदास फेर मंगे इक मंग, पिछली याद कराईआ। ओधरो अजीत जुझार आ जाण करदे जंग, आपणा संग वखाईआ। एधरो रो पए गढ़ी चमकौर कंध, नैणां नीर वहाईआ। एह उह दिसदे पंज, जिन्ह़ां गोबिन्द दिती वड्याईआ। अग्गे दस्सणा करना बंद, लेखा फेर देवे समझाईआ। हुण खुशीआं नाल गा लओ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान छन्द।

* २८ माघ २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल विच अजीत सिँघ दे नवित्त *

बीस चाली कहे साडा प्या मुल, कीमत करते अन्त चुकाईआ। साडा उधार उबलया उते चुल, अग्नी प्रेम प्यार वधाईआ। पान जल गए भुल्ल, आपण आपा छुपाईआ। घृत तुल के आपणे तोल, तुरत आपणा रूप वटाईआ। खुशीआं नाल विच कड़ाही फरकण लगे मेरे बुल्ल, सोहणी अवाज़ सुणाईआ। इक दूजे नाल रहे घुल, उठ उठ बल वखाईआ। करया खेल प्रभू अनमुल्ल, मेहर नज़र उठाईआ। भाग लगा के भगवन कुल, भगतां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिती माण वड्याईआ। प्रसाद कहे मैं सतिगुर किरपा, मेहर रूप वटाईआ। मेरा रस ना जाए

बिरथा, बिन गुरमुखां हथ्थ किसे ना आईआ। एह लेखा पूरब देर दा, पिछला लहिणा चुकाईआ। सांभ रखी जो बणा के विरसा, धन दौलत जगत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। प्रसाद कहे प्रभ कीती किरपा, कृपानिध दया कमाईआ। जन भगतां कटणहारा बिपता, पूरब वजोग चुकाईआ। अग्गो बंधावे सच्चा निसचा, चरण प्रीत जणाईआ। दो जहानां बदलणहारा फिरका, हुक्म हाकम इक सुणाईआ। वेखो खेल साचे पिर का, परम पुरख रिहा जणाईआ। उलटा गेड़ निरगुण गिढ़दा, सरगुण धार जणाईआ। जन भगतां सब तों वक्खरा रखे हिरदा, सन्तां हिरदा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। प्रसाद कहे मेरी बणी बणत, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। गुरमुख खाए विरला सन्त, जिस मेहर नज़र उठाईआ। मेल मिलावे नर हरि कन्त, नर नरायण होए सहाईआ। उत्तम श्रेष्ट विच्चों जंत, लख चुरासी माण रखाईआ। लेखा जाणे ब्राह्मण पंडत, जजमान ठाकर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। प्रसाद कहे प्रभ भए दयाल, दिती माण वड्याईआ। गुरमुख सन्त सुहेले उपजा आपणे लाल, लालन रंग रंगाईआ। प्रेम प्रीती परोस थाल, सोहणी वंड वंडाईआ। धुर दे विछड़े मेल नाल, धुर दा संग रखाईआ। जगत अवल्लड़ी चल के चाल, जरा दए समझाईआ। भगत वछल बण कृपाल, भगवन होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। प्रसाद कहे मोहे रखा परात विच ढक, ओडण उते पाईआ। मैं अन्दर बैठा रिहा हस्स, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। प्रभ अन्दरे अन्दर मैनूं देवे रस, आपणी धार चुआईआ। मैं चरणी गया ढह्, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, शब्द इशारे नाल उठाईआ। उठ लवा मेरा धुर दा हथ्थ, जिस लग्गयां तेरी लागत कीमत दयां बदलाईआ। तेरा गृह तेरा मन्दिर तेरा घर गुरमुखां अन्दर वसया, तेरा बंक दए समझाईआ। उथ्थे जावीं नाल चावां नह्रया, खुशीआं राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। प्रसाद कहे प्रभ कीती मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। नज़री आया नेड़न नेड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जां वेख्या शब्द सरूप धुर दा शेर, भबक आपणा नाम लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आ लयांदे घेर, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। आओ वेखो प्रभ दा खेल, निरवैर निराकार निरँकार रिहा वखाईआ। सच कटार आपणा नाम विच फेर, चारों कुण्ट भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख प्रसाद, सारे खुशीआं मनाईआ। प्रभ एस विच्चों जे थोड़ी थोड़ी देवे दाद, वस्त अगम्मी झोली पाईआ। असीं एथे ओथे रखीए याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। अगम्म

अगम्मड़ा आवे स्वाद, रसना जिह्वा ना कोए समझाईआ । श्री भगवान वेखणहारा खेल तमाश, तरह तरह समझाईआ। जुग चौकड़ी पा के गए गोपी काहन रास, राम सीता मात हंढ्ढाईआ । रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे गए बिलास, कागज कलम शाही ढोल नाल भराईआ। लख चुरासी जीवां जंतां गए आख, धुर संदेसा इक सुणाईआ। चारों कुण्ट कैहन्दे गए असीं प्रभ दी ज़ात, चाकर सेवक रूप अख्वाईआ। नित नवित्त धुर दी रखदे गए आस, बेपरवाह परवरदगार गुसाईंआ। सब दी पूरी करे ख्वाहिश, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। परात कहे मेरा धन्न भाग, भागां भरी आपणा नाम रखाईआ। पुरख अबिनाशी रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस अन्दर हरि किरपा भरया प्रसाद, प्रसाद आपणी मेहर समझाईआ। जिस प्रसाद दा अन्दर वड़ वेख्या किसे ना राज़, पर्दा सके ना कोए रखाईआ। साध सन्त जीव जंत रसना जिह्वा इस तों लभ्भण स्वाद, मन वासना खुशी मनाईआ। सति प्रसाद सतिगुर प्रसाद गुर प्रसाद किसे हथ्थ ना आवे हाथ, पृथ्मी आकाश गगन मण्डल ना कोए वरताईआ। जे वरतावे तां पुरख अबिनाश, गुर अवतारां भोरा भोरा झोली पाईआ । दूजी वार किसे फेर लभ्भे ना उह स्वाद, रस विच्चों रस ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी करदे फिरन तलाश, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। परात कहे जिस वेले मेरे अन्दर वड़या, प्रसादी आपणा रूप वटाईआ। चाउ घनेरा मैनूं इक्को चढ़या, खुशीआं रंग वखाईआ। तपदा तपदा मेरे विच बहि के ठरया, आपणा रूप वटाईआ। मैं हस्स के किहा क्यों मेरी छाती चढ़या, आपणा भार टिकाईआ। प्रसाद कहे मैं ना जींदा ना मरया, खौंचे मार मार मेरा अग्गा पिच्छा दित्ता हलाईआ। सच पुच्छें कड़ाही विच सड़या, अग्नी भेंट चढ़ाईआ । बल सड़ फेर तेरे घर वड़या, आपणा वेस वटाईआ। गुरमुखां आपणे हथ्थ फड़या, सच दवारे दित्ता टिकाईआ। सच पुच्छें मैं खुशीआं नाल भरया, प्रभ दर्शन सच्चा पाईआ। एसे कारण वड्डा दुःख जरया, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आप बणाईआ। परात कहे सुण मेरा बल, मैं सच दयां सुणाईआ । सड़दे बलदे नूं आपणे उते ल्या झल्ल, सी कीती जरा ना राईआ। उत्तों वेख मेरी सड़ गई खल्ल, मनसूर वेख नैण शरमाईआ । थल्लउँ अजे ना जावां हल्ल, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ । प्रसाद कहे तेरे मेरे किछ नहीं वस्स, करन करावणहार अवर अख्वाईआ। मैं तक्कां किस वेले प्रभ मेरे उते रखे हथ्थ, आपणी दया कमाईआ। मेरा प्रेम भरया स्वाद लए चक्ख, आपणे मुख लगाईआ। परात कहे मैं वेखां आपणी अक्ख, नेत्र नैण उठाईआ। घृत कहे मेरी पूरी होवे आस, तृष्ना मेट मिटाईआ।

जल कहे मैं धरां धरवास, अन्न कहे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। प्रसाद कहे मेरे उते प्रभ रख्या हथ्थ, हौली जेही टिकाईआ। मेरी सुत्ते दी खुल्ली अक्ख, नेत्र नैणां लई अंगड़ाईआ। जां वेख्या प्रभ निरगुण रूप ल्या तक्क, जोती जाता नज़री आईआ। मैं चरण कँवल गया ढट्ठ, सीस जगदीश झुकाईआ। नेत्र रो के किहा मैनूं दे मेरा हक़, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी कौलयां विच वड़ वड़ गया थक्क, मैनूं भोग लाउण वाला नज़र कोए ना आईआ। चोरां वांग पीड़िआं थल्ले छड्डुया रख, ठग्गां वांग चुराईआ। पिच्छे हो के खावण झट्ट, वड्डे वड्डे बहि के थाईंआ। जे भौं ते जांवां ढट्ठ, डरदे पैरां हेठ देण दबाईआ। एसे करके मैं गोबिन्द इक वार दित्ता दस्स, सच्ची तरां जणाईआ। कुछ मैनूं सब ते हो गया शक़, सहिसा घर घर नज़री आईआ। कसाई कोई ना लावे मैनूं हथ्थ, खावे उह ना जिस होई तेरी जुदाईआ। मैं विकणा नहीं किसे हट्ट, कीमत कोए ना मेरी रखाईआ। इक्को आस पुरख समरथ, तेरे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी इक वड्याईआ। श्री भगवान कहे सुण समग्री बच्चे, सगली चिन्त मिटाईआ। तेरे रिंन ना खावे कोई भत्ते, खुशीआं रंग उडाईआ। तैनूं वेख साध सन्त ना कोई नच्चे, बाट्टयां विच ना कोई छुपाईआ। ओहले हो ना मारे फक्के, मूठीआं नाल अन्दर धकाईआ। सब दे नकेल पाउँ नक्के, बन्दर कलन्दरा वांग नचाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े कढ्ढां अच्छे, जिन्हां अच्छी तरां समझाईआ। पहलों कट के फाँसी रस्से, जम का तरास गुआईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्से, सच करां पढ़ाईआ। फेर तेरे वल्ल तक्के, आपणा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर अकट्ठे, सभना दए दखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा झोली पाईआ। प्रसाद कहे प्रभू तेरी ओट, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। तेरी किरपा इक्को बहुत, दूजी आस ना कोई रखाइंदा। तेरी वड्डी सब तों सोच, दूजा सोच समझ ना कोए रखाइंदा। बिन तेरी किरपा मेरे खादयां किसे ना आवे मौज, मुफलस शाह ना रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तेरे दर मंग मंगाइंदा। श्री भगवान बख्शे टेक, सच देवां सरनाईआ। जिस वेले गुरमुख मेरी करन भेंट, तेरा सोहणा रूप बणाईआ। मेहरवान हो के अगम्मे नेत्र लवां वेख, जगत लोचण बंद कराईआ। तैनूं अग्ग कड़ाही दा लग्गया भुल्ल जाए सेक, सांतक सति सति समाईआ। सच प्रेम करे हेत, प्रीती इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। प्रसाद कहे प्रभ तेरा भोग, भगवन मोहे भाईआ। धुर दा होवे सच संजोग, मिले ना कोए जुदाईआ। पूरब कटया जाए रोग, अग्गे चिन्त ना कोए रखाईआ। मैं हथ्थ नहीं आउणा रोज, बिन तेरी किरपा मेरी बणत ना कोए बणाईआ।

कोट जन्म दे विछड़े जो गुरमुख रहे लोच, तिन्नां देणा आप वरताईआ। बाकी वासते प्रभ हो जावे खमोश, सद्दा दे ना किसे खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद होणा सहाईआ। सुण प्रसाद मेरे लाल, बच्चू अच्छी तरां जणाईआ। तेरा वचोला दीन दयाल, दया रूप समाईआ। तेरे उते पर्दा पाया चिटा रुमाल, धुर दी धार वखाईआ। अन्दर रख्या तैनूं संभाल, सोहणा घर वखाईआ। सहिज सहिज आपणी उंगली लाए नाल, तेरा जोड़ जुड़ाईआ। छोटा भोरा लए उठाल, आपणे मुख लगाईआ। उह मन्दिर गुरूदवारा सच्ची धर्मसाल, जिस गृह साहिब सतिगुर पुरख अकाल प्रगट हो के तेरा रस बणाईआ। ओसे वेले प्रसाद खुशी नाल मारी छाल, परात विच्चों थालीआं विच आईआ। कहे मैनूं छेती छेती भगतां दयो खवाल, मैं भगतां अन्दर रल के भगतां विच समाईआ। मेरी लेखे लग्गे घाल, पुरख अबिनाशी थाएँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण प्रशाद प्रभ दस्से सच्च, सच सच्च रिहा जणाईआ। तेरे अन्दर मेरा रस, रसीआ हो के दित्ता भराईआ। जन भगतां हिरदे जा के वस, सोहणा धाम सुहाईआ। कूड़ अन्धेरा मेट हस्स, सच्चा चन्द कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस अलाईआ। प्रसाद कहे मैं अन्दर वड़दा हां। जन भगतां जा के दस्सदा हां। सोहणा रस भरदा हां। दर दर सेवा करदा हां। पंच विकारे नाल लड़दा हां। सोहणे पौड़े चढ़दा हां। नाड़ी नाड़ी फिरदा हां। घुंमण घेरी विच घिरदा हां। फेर जन भगतां हिरदे विच खड़दा हां। जिथ्थे इक्को तेरा नाम पढ़दा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा वर, मैं सच्ची आसा रखदा हां। सच्ची आस प्रभू मेरी एक, एकँकार तेरे अग्गे अरज़ोईआ। मेरा लिख अग्गे लेख, पिछला लेख चुकाईआ। जो तेरा करन हेत, सद तेरे विच समाईआ। मैनूं ओन्नां कोल भेज, बाकी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैं माणां भगतां सेज, घर सोहणे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। सुण प्रसाद, परम पुरख जणाईआ। जन भगतां दे के सच्ची दाद, तेरा संग बणाईआ। अड्डरा वक्खरा सब तों स्वाद, आपणा नाम भराईआ। दीन दयाल रच के काज, करनी रिहा कमाईआ। पूरब लेखा पूरी कर के ख्वाहिश, ख़ालस धार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल थाउँ थाईंआ। प्रसाद कहे मैं भगतां रंग रंगावांगा। अन्दर वड़ के सच समझावांगा। पौड़े चढ़ के कुण्डा लाहवांगा। दर दवारे खड़ के अलख जगावांगा। प्रतख तेरा रूप दरसावांगा। हक़ हकीकत खोल्ह अक्ख, नेत्र नैणां नैण मिलावांगा। सच प्रीती दे रस, अमृत इक चवावांगा। जो मैनूं खाए सो तेरा गाए जस, जस वेद पुराणां नालों वक्खरा, तेरा निष्अक्खरां विच दृढ़ावांगा। वेखीं मेरी भेंटा ना कराईं अग्गे पत्थरां, कीमत

कागज़ां उते ना पाईआ। मैं वी वक्खरां तूं वी वक्खरा तेरा भगत वक्खरा, वक्खरयां दी वक्खरी राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। प्रसाद सोहणे सुत, अच्छी तरह जणाईआ। अच्छा होया तूं ल्या पुछ, आपणा दुःख सुणाईआ। हुण ना उहला ना कोई लुक, पर्दा उपर ना कोए रखाईआ। कर किरपा तैनूं आप पावां भगतां मुख, आपणी सेव कमाईआ। जिन्हां देवां सदा सुख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर निगह उठाईआ। प्रभू जे भगतां मुख पावेंगा। मेरा ध्यान रखावेंगा। सोहणा संग बणावेंगा। आपणा रंग चढ़ावेंगा। अन्दर लँघ की मेरे कोल आवेंगा। सोहणी सेज पलँघ हंढ्ढावेंगा। प्रेम रस किस वेले मेरा मेरे विच्चों प्रगटावेंगा। सच दस्स आपणा दस्त मुबारक हथ्थ, किस वेले मेरे उपर टिकावेंगा। आपणे प्रेम प्यार दी खोल्ह के अक्ख, नेत्र नैण आपणी झलक वखावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावेंगा। सच करनी ज़रूर करावांगा। जो जन आए सरनी, तिन्हां तेरा रस चखावांगा। रस खा के चुक्के मरनी डरनी, लख चुरासी डेरा ढाहवांगा। सच तरावां इक्को तरनी, शौह दरिया पार वखावांगा। लहिणा चुका वरनी बरनी, ज़ात पात मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद तेरा संग रखावांगा। प्रसाद कहे मैं जावां मन्न, मन मनसा रहिण ना पाईआ। जिस वेले गुरमुख अन्दर वसां तन, तपदे हिरदे ठंडे दयां कराईआ। जो तेरे सच्चे जन, तिन्हां भरम भुलेखा मेट मिटाईआ। जो प्रभू सिधे तैनूं रहे मन्न, तिन्हां मिल के तेरा रूप वेखां चाईं चाईंआ। फेर मैं होवां बड़ा प्रसन्न, परसन्ता विच गुरमुख सारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ। प्रभ कहे प्रसाद तेरी सच वंड, हरि करता आप कराइंदा। भगतां नाल नाता गंढ्ढ, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। दोहा मेल मिला के पावे ठंड, आपणी निगह नाल तराइंदा। जे तैनूं गुरमुख खावे बत्ती दन्द, रस नाल रसना सोभा पाइंदा। सो सन्त सुहेला मेरा चन्द, नूरी जोत जगत चमकाइंदा। जन्म मरन दा तोड़ के फंध, बन्धन कूड़ सर्ब गुआइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी हो बख्शंद, रहमत आपणा नाम कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। प्रसाद कहे मेरा पूरब लेखा, रविदास रिहा चुकाईआ। श्री भगवान तूं वी रख्या चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। हुण परोहत बण किसे ना वरज्या नेंदा, घर सद्दण कोए ना जाईआ। ब्राह्मण चारे कुंट वेंहदा, नेत्र नैण उठाईआ। अबिनाशी करता दूर दुराडा सब तकेंदा, बिन अक्खां नैण उठाईआ। लहिणा देणा सब दा देंदा, देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। प्रसाद कहे प्रभ मैं तेरे नवित्त, आपणा आप भेंट

चढ़ाइंदा। मैनूं किसे गोचरा ना देवीं सुट्ट, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। जिन्नां चिर हाजर हो ना लावें मुख, ओन्नां चिर मैनूं प्रसाद ना कोए अख्वाइंदा। एहो मैनूं वड्डा दुःख, पंडत पांधा साधू सन्त तेरा नाम लै के मुड़के आपे बहि के खाइंदा। वड्डा कढु के बुक्क, बच्चयां लई लुकाइंदा। साहिब तेरे अग्गे काहदा लुक, पिछला हाल सुणाइंदा। वड्डी गल्ल छोटा मुख, दस्सदयां नैण शरमाइंदा। तेरे बिनां कोई नहीं रिहा पुच्छ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दा जे लोकमात ठेका गया मुक्क, मेरा लेख क्यों नहीं आपणी झोली पाइंदा। बिन तेरे कितों ना मिले सच सुच्च, जूठ झूठ जगत जहान नज़री आइंदा। जन भगतां सदा पा मुख, दोए जोड़ एहो मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा।

६०५

१६

* २६ माघ २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल दरबार विच *

जन भगत कहे प्रभ सच्चा, घर सच देवे वड्याईआ। हरि सन्त कहे प्रभ प्रेम रत्ता, रंग रंगीला रंग रंगाईआ। गुरमुख कहे सद खवाए अगम्मी भत्ता, राज़क रहीम वड्डी वड्याईआ। गुरसिख कहे सीत प्रसाद जिस वेले चक्खा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द जोड़ जुड़ाईआ। काया दुआर डूंघी भँवरी रखा, गृह मन्दिर टिकाईआ। सोहणा रस वेख्या मिट्ठा, अनरस रूप वखाईआ। अन्तर खुल्ल गई इक्को अक्खा, दोए लोचण बंद रखाईआ। आत्म परमात्म गावे जसा, सोहणा राग अलाईआ। मिट गई रैण अन्धेरी मस्सा, जोती चन्द नूर रुशनाईआ। ठाकर मिल्या अलख अलखा, बेअन्त बेपरवाहीआ। रोम रोम अन्दर रचा, रचना आपणी दए समझाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर कहे उठ मेरे बच्चा, मेहर नज़र उठाईआ। वेख वखाया काया माटी पंज तत भाण्डा कच्चा, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। मन मनुआ दहि दिशा चार कुण्ट उठ उठ नट्ठा, दिवस रैण भज्जा वाहो दाहीआ। अन्ध अन्धेरे सञ्झ सवेर वगा, सीतल पौण ना कोई वखाईआ। कूड़ी क्रिया तत वकारी जगत हँकारी गंदा, वासना ममता मोह जणाईआ। काया माटी पोच वस्त्र पा के चंगा, शस्त्र आपणा अंग बणाईआ। बिन साहिब सतिगुर किरपा दिसे नंगा, ओडण सीस ना कोए टिकाईआ। लेखा जाणे ना ब्रह्म ब्रह्मण्डा, भेव अभेद ना कोई खुलाईआ। उत्तम श्रेष्ट गुरमुख गुरसिख गुरप्रसाद बणाए चंगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। प्रसाद कहे मेरा गुरमुख संग, नित नवित्त वड्याईआ। गुरसिख कहे मेरी सतिगुर कोलों मंग, धुर किरपा झोली पाईआ। दोहा मिल के आवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मिल के ढोला गावण छन्द, शब्द नाल शनवाईआ। करे खेल सूरा

६०५

१६

सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। गुरमुख कहे मैं सीत प्रसाद खादा, साहिब सतिगुर दित्ता वरताईआ। मैनूं नज़री आया गोबिन्द पिता पुरख अकाल दादा, दो जहानां वेख वखाईआ। उपर तक्कया शाह पातशाह शहिनशाह दिसे राजा, भूपत भूप बेपरवाहीआ। चार कुण्ट पेख्या निरगुण सरगुण करे काजा, लख चुरासी जोड़ जुड़ाईआ। भविक्खत वेख्या निरगुण निरवैर निराकार जोत प्रकाशा, अजूनी रहित रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। अन्दर तक्कया घर सज्जण बणे साथा, सोहणा संग निभाईआ। पर्दा चुक्कया धुर दा राग सुणाई गाथा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब देवे माण वड्याईआ। गुरमुख कहे गुर प्रसाद, हरि किरपा नज़री आईआ। बिन भगतां किसे ना आवे हाथ, लख चुरासी रही कुरलाईआ। कोटन कोटि खा खा थक्के साध, साधना सके ना कोए कराईआ। नेत्र अक्ख खोल्ह ना सके जाग, आलस निंद्रा ना दूर कराईआ। घर मन्दिर महल दीपक जोत ना जगे चराग़, हवण पौण सुगंधी सति ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म मिल के पूरी करे ना कोई ख्वाहिश, ख़ालश रूप ना कोए समाईआ। कर किरपा जिस देवे दात, प्रभ आपणी वस्त वरताईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन बणाए सज्जण साक, भगत भगवान मेल मिलाईआ। बजर कपाटी खोल्ह ताक, तग़ां तग़ां समझाईआ। सन्त सुहेला बणके पुच्छे बात, दर दरवेश अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। प्रसाद कहे प्रभ होए मेहरवान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। लोकमात ना कोई माण, नव खण्ड ना कोई चतुराईआ। मैनूं तेरी भेंट चाढ़न वाले बेईमान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। ठग्ग चोर यार मेरा हिस्सा पाण, पैस्सयां टकयां नाल तैनूं रहे मनाईआ। दिने ठग्गी रात हराम, सति सन्तोख ना कोई वखाईआ। दिने कलमा रात बेईमान, शरअ शरीअत झूठा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेख दे चुकाईआ। प्रसाद कहे प्रभ मेरे ठाकर, दर तेरे अरज़ोईआ। कलयुग जीव बणे सौदागर, तेरा नाउँ हट्ट चलाईआ। निर्मल कर्म करे ना कोई उजागर, दुरमति मैल पापां भरी लोकाईआ। किसे दुआरे मिले ना मैनूं आदर, साध सन्त संग ना कोई निभाईआ। किसे गृह किसे मन्दिर किसे गुरुदुआर साहिब सतिगुर आप कदे ना होयो हाजर, भोग ला ना खुशी मनाईआ। तेरे साम्हणे तेरे दुआर तेरे नाल करदे साज़श, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, शहिनशाह तेरी शरनाईआ। प्रसाद कहे मेरे सच भगवन्त, हथ्थ तेरे वड्याईआ। उठ के वेख कलयुग सन्त, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। गुरमुख गुरसिख ग़रीब निमाणे तेरी भेंट चढ़ावण सन्त, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे

सच दे वड्याईआ। प्रभू मेरे नाल क्यों करें धरोह, दुखी हो के हाल सुणाईआ। गोबिन्द पिच्छों मेरे नालों तोड़या मोह, ढईआ नज़र किसे ना आईआ। जूठे झूठे मेरे नाल रहे छोह, हथ्थां उगलीआं नाल हिलाईआ। नाल पोट्टयां रहे कोह, बणे जगत कसाईआ। संगत तेरी कोलों खोह, घर बच्चया रहे खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सच तेरी शरनाईआ। प्रसाद कहे मेरे सुल्तान, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। कलयुग वेख मार ध्यान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साध सन्त बेईमान, बेवा रूप नज़री आईआ। साबत दिसे ना किसे ईमान, सबर सबूरी ना कोए रखाईआ। रसना जिह्वा करन कलाम, कायनात सुणाईआ। बत्ती दन्द पढ़न नाम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कूड़ी क्रिया संग शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। दलासे धीरज दे दे सर्ब पर्चाण, गल विच पल्लू पाईआ। रसना बोल भोग लगवाण, भोगां वाला नज़र किसे ना आईआ। झूठी क्रिया विच आपणा झट्ट लँघाण, तेरी करे ना कोए वड्याईआ। आपणा पीण आपणा खाण, आपणा हुक्म रहे वरताईआ। साहिब तूं केहड़ा अणजाण, समझ सोच रखें ना राईआ। लख चुरासी भुल्लया तेरा ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। प्रसाद कहे तेरी मंगदे मोख, मुफ्त आपणा पेट भराईआ। पेट कारण जगावण जोत, हवन दीप रुशनाईआ। माया कारण अरदासा सोध, नेत्र मीट ध्यान लगाईआ। उच्ची बोल नाल जोश, नाअरयां नाल सुणाईआ। जिस वेले मैं तक्कां तेरे मिलण दी किसे ना आवे सोच, मिल के मेल ना खुशी मनाईआ। रोज़ कहिण भगवान लगावे भोग, थाले बाटे अग्गे डाहीआ। भगवान बण आप उडावण मौज, मौजूदा आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। प्रसाद कहे प्रभ पा पर्दा, मैं अन्तर मंग मंगाईआ। चार जुग तैथों रिहा डरदा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। अग्नी उते रिहा सड़दा, कड़ाही विच तपाईआ। बिन तेरे मिलयां जीव जहान रिहा पढ़दा, गा गा रिहा समझाईआ। किसे दर ना वेख्या तेरे घर दा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। दर दरवेश भिखारी मैं बणया बरदा, नीवां हो के सीस झुकाईआ। करें खेल नर हरि दा, नरायण तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। प्रसाद कहे मैं कहां हक़, हकीकत तेरे अग्गे सुणाईआ। मैं बहि बहि गया थक्क, परातां विच आसण लाईआ। कोटन कोटि साध सन्त मेरा लाहा खट्ट, आपणे घर बार बणाईआ। मैनूं वेच के कूड़े हट्ट, भेंटा आपणी झोली पाईआ। मैं औखा हो के साहिब तैनूं रिहा दस्स, कलयुग अन्तिम हाल सुणाईआ। मेरा हुण नहीं किछ वस, कुछ वस्त ना कोल टिकाईआ। मेरे ख़ाली दिसे हथ्थ, बिन हरि नामे ख़ाली होई लोकाईआ। ना प्रेम ना रस, स्वाद सच ना

कोए समझाईआ। तेरे नालों कीता वक्ख, वक्खरी वंड वंडाईआ। परदे नाल मैनूं ढक, बैठण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच दर, जिस गृह मिले माण वड्याईआ। प्रसाद कहे मेरा आख़री पर्चा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। बिन भगतां मेरा किते ना बन्नृ ख़र्चा, गठड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। मन्दिरां मस्जिदां शिवदुआलयां मट्ठां विच मेरा चर्चा, खाण पीण मज़ा उडाईआ। इस विच प्रभ मेरा होवे हर्जा, तेरा विछोड़ा दु:ख सताईआ। नेत्र रोया अन्त मरदा मरदा, दिती सच दुहाईआ। मैं मिलापी सन्तां दर दा, गुरमुखां जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिखां लड़ फड़दा, धुर दा संग रखाईआ। जिस वेले गुरमुखां अन्दर वड़दा, प्रेम प्रीती नज़री आईआ। ओन्नृां नाल मिल के तेरा नाउँ पढ़दा, सोहणी करां पढ़ाईआ। वेख गृह नरायण नर दा, नर हरि इक्को नज़री आईआ। लेखा चुक्के चोटी जड़दा, भेव अभेद आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सिर मेरे हथ्थ रख महिबूब, मुहब्बत तेरे नाल लगाईआ। महल अटल अगम्म अथाह तेरा अरूज, अर्श फर्श दोवें सीस निवाईआ। तेरा धाम सच मंज़ल मक्सूद, महिफ़ल इक्को सोभा पाईआ। परवरदगार ना कोई दूज, वाहिद नूर नूर खुदाईआ। तुध बिन सच देवे ना कोए सबूत, साज़श भरी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सुण प्रसाद धुर दे रस, हरि रसीआ सच दृढ़ाइंदा। परम पुरख परमात्म सब दा देवे हक़, जुग जुग झोली आप वरताइंदा। कूड़ी क्रिया जगत खेड़ा होवे भट्ठ, कलयुग भाण्डा भरम भंनाइंदा। लेखा चुक्के मन्दिर मसीत शिवदुआले मट्ठ, मस्त अलमस्त आपणी कार कमाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, मूर्त अकाल इक्को नूर दरसाइंदा। शब्द सतिगुर सब कुछ लै के आपणे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमी असमान जेरज अंड उत्भुज सेत्ज खोलृणहारा अक्ख, आखर आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म सृष्ट सबाई दे ब्रह्म मति, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। कूड़ कूड़यारे तेरा साथ जाइण छड्ड, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा लेखे विच रखाइंदा।

* पहली फग्गण २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

प्रसाद कहे पुरख समरथ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी धुर दी वथ, वस्त अमोलक बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर करदा रिहा आस, नित नवित्त तेरा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात

कट के गए वाट, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। पीरन पीर सरगुण करदे गए तलाश, लोक परलोक तेरा ध्यान लगाईआ। साहिब स्वामी तेरी किसे ना लभ्भी ज़ात, जाति रूप ना कोए जणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द धुर संदेसा गा के गाथ, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे वड्याईआ। प्रसाद कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी लोकमात फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरा करदे गए आदर, थोड़ा थोड़ा पर्दा पाईआ। निर्मल कर्म ना होया उजागर, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। साचा वणज ना कीता बण सौदागर, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। प्रसाद कहे मेरे अन्तरजामी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरा खेल खालक खलक महानी, बेपरवाह बेअन्त अन्त कहिण कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी गावत गा गए सच ज्ञानी, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। रस अंमिउँ रस ठंडा पाणी, धारा तेरी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भेव दए खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्ह निरँकार, निरगुण हथ्थ तेरे वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण के सेवादार, नित सेवा रहे कमाईआ। त्रैगुण माया खोल्ह भण्डार, पंज तत करी कुड़माईआ। घाड़त घड़ बण ठठयार, लख चुरासी रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, नाता जोड़ जुड़ाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सोभा पाईआ। मन मति बुध दए आधार, नौ दर जगत रस वखाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ। साचा लेखा दस्स श्री भगवन्त, बेअन्त तेरी सरनाईआ। किस बिध बणाई मेरी बणत, कवण धारा रंग रंगाईआ। कवण लेखा जाणे साध सन्त, गुर अवतारां कवण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दे उठाईआ। साचा पर्दा देणा खोल्ह, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। दर दरवेश मंगां बोल, अलख निरँजण इक्को अलख जगाईआ। कवण कंडे तोलें तोल, तराज़ू कवण हथ्थ उठाईआ। कवण दवारा देवें खोल्ह, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। कवण वस्त देवें वरोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। शहिनशाह प्रभ ठाकर स्वामी, दर तेरे इक अरज़ोईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, देणी दर दवारे सच्ची ढोईआ। लेखा वेख्या चारे खाणी, चारे बाणी करे रुशनाईआ। अमृत भरे ठंडा पाणी, शब्द सुरत रिहा ढोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दूजा नज़र ना आवे कोई आ। प्रसाद कहे मेरी दस्स रीता, किस बिध मात बणाईआ। कवण दवारे मोहे रखीता, कवण मन्दिर सुहाईआ। कवण

६०६ १६

मिले धुर दी दीक्षा, झोली कवण भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण प्रसाद धुर दे सच्चे, हरि सच सच्च जणाईआ। किरपा करी पुरख अकाल आपणे उते शब्दी बच्चे, मेहर नज़र नैण उठाईआ। चरण प्रीती नाल रत्ते, रंग इक्को इक रंगाईआ। साहिब स्वामी सिर हथ्थ रखे, समरथ दए वड्याईआ। चरणां नाल चरण कर इकट्ठे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र कर पारब्रह्म, हरि करता आप जणाईआ। सति प्रसाद सुण ला कर कन्न, करनहार दृढ़ाईआ। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जणाईआ। हउमें रोग ना तृष्ना तम, माया ममता ना कोए वड्याईआ। जिस दवारे शब्द सुत बिन जननी ल्या जण, निरगुण बणया पिता माईआ। ओसे दर बेड़ा दित्ता बन्न्, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा सुण लै मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। थिर घर चलाई तेरी रीत, निरगुण निरवैर कार कमाइंदा। शब्दी झोली पाया ठीक, सोहणी वस्त वरताइंदा। रस दे के अगम्मी सीत, सांतक आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, आदि पुरख आप कमाईआ। निरगुण निरवैर निराकार किरपा धार, अजूनी रहित दिती वड्याईआ। बख्शिश कर अगम्म अपार, अलख अगोचर दित्ता वरताईआ। आपणे चरणां दी लै के धूढ़ी छार, शब्दी सुत मुख लगाईआ। एह प्रसाद सदा निराहार, निराकार रिहा जणाईआ। जिस दा भेव पाए ना कोए जुग चार, चौकड़ समझ कोए ना आईआ। एसे प्रसाद विच्चों प्रगट कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ । प्रसाद कहे मेरी निमस्कार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। दर ठांडा दित्ता दरबार, थिर घर वज्जी वधाईआ। तेरा शब्दी सुत रखे संभाल, आपणे नाल निभाईआ। जुग चौकड़ी दे अधार, लोकमात दए वरताईआ। मेरा लेखा होवे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सुण प्रसाद बाले निक्के, श्री भगवान आप जणाइंदा। चारों कुण्ट साहिब स्वामी तेरे अन्दर दिसे, गृह मन्दिर डेरा लाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कीते तेरे हिस्से, सोहणा हिस्सा वंड वंडाइंदा। सच बंधावे धुर दे निश्चे, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सुण प्रसाद चढ़या चा, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। शब्दी शब्द बणे गवाह, तेरी शहादत रिहा रखाईआ। अग्गे मंगां मंग बेपरवाह, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी सेवा लवां कमा, लोकमात वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा देवां लिखा, जिस लेखे विच्चों रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच सच्च दे समझाईआ। सुण लाल सोहणे सुचज्जे, साहिब देवे वड्याईआ। अन्तकाल तेरा पर्दा कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे बद्धे, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिसन्त भगत तेरी आस रखे, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सच मिले तेरी सरनाईआ। सच सरनाई दे भगवन्त, इक्को ओट तकाईआ। कवण वेला बणे साचा कन्त, घर आपणा मेल मलाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, निरअक्खर दए समझाईआ। सति सतिवादी देवे संगत, विद्या पारब्रह्म पढ़ाईआ। दर दरवेश बण के मंगत, इक्को अलख जगाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म समझाईआ। लेखा जाणे पंकज, पवित तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी वड्याईआ। साहिब दस्स पुरख अकाल, दर करते मंग मंगाईआ। कवण वेले होए दयाल, दीनन आपे होए सहाईआ। जुग चौकड़ी केहड़ी चाल, कवण धार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए समझाईआ। श्री भगवान कहे सुण एक, एकँकार जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी टेक, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। बिन भगतां किसे ना देवां भेत, पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ। घर नामे आ के लवां वेख, धन्ने लेखा दयां चुकाईआ। रविदास चुमारे करके चेतन चेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। सुण प्रसाद बात अगम्म, लिखण पढ़न विच ना आईआ। मेरे लाडले सच्चे चन्न, चमत्कार दयां चमकाईआ। भोग ला के नामे छन्न, छन्नां सोभा पाईआ। धन्ने देवां इक्को धन, आपणा आप झोली पाईआ। रविदास दवारे जावां मन्न, सोहणी बणत बणाईआ। सच संदेसा सुण लै कन्न, हरि करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण के बचन होया चुप, प्रसाद आपणा सीस निवाईआ। श्री भगवान कवण वेले वेखां मुख, तेरा सच सरूपी दर्शन पाईआ। पुरख अकाल किहा तुठ, सच दयां दरसाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग होणा चुप, नव नव चार चौकड़ी जुग पार कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तैनूं आपे लए पुच्छ, पर्दा उहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। प्रसाद किहा मेरी अरदास, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरे मिलण दी इक्को ख्वाहिश, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। जुग चौकड़ी की रवाज, कवण धार बंधाईआ। साहिब समरथ मार अवाज़, इक्को वार जणाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणे समाज, सोहणी बणत बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवां साथ, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। तेरी वक्खरी मण्डल बणावां रास, सोभावन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए वखाईआ। तेरा लेख प्रभ जणाउँदा ए। धुर दी धार

६११
१६

आप समझाउँदा ए। लोकमाती वंड वंडाउँदा ए। साचा मेला मेल मलाउँदाए। जल अमृत रूप वटाउँदा ए। घृत अगम्मी इक्को पाउँदा ए। अन्न झोली दान वखाउँदा ए। तिन्नां सच मेल मलाउँदा ए। फड़ अग्नी भेंट चढ़ाउँदा ए। धुर दा लेखा आप वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी डोर लोकमात गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हथ्थ रखाउँदा ए। पीर पैगम्बर मात आउणगे। गुर अवतार रूप वटाउणगे। मेरा धुर दा नाम जपाउणगे। सच संदेस इक सनाउणगे। कर के देही खेल खलाउणगे। बण नरेश हुक्म वरताउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी मात कमाउणगे। साची करनी मात कमावणगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर फेरा पावणगे। धुर संदेस इक सुणावणगे। बण कातब लेख लिखावणगे। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अंक बणावणगे। अञ्जील कुराना कर परवान, मसला हक़ हक़ सुणावणगे। गुरू गुरु गुरदेव अगम्मी बाण, तीर निराला इक चलावणगे। लालच दे के जीव जहान, सोहणी रीती मात वखावणगे। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ बणा मकान, सोहणा बंक वडयावणगे। अन्दर रख चार जुग दी खाणी बाणी कर प्रधान, सोहणा राह वखावणगे। माया नाल कर पकवान, पक्की तरां जगत समझावणगे। सब तों उत्तम एह खाण, सृष्टी इष्ट दृष्ट एहदे विच वखावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमावणगे। धुर प्रसाद प्या हस्स, प्रभ अग्गे आख सुणाईआ। वेखीं प्रभ मैनूं होर किसे ना पावीं वस, वास्ता तेरे नाल रखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मैनूं लाए हथ्थ, उस हथ्थ विच्चों तेरा रस आपणे मुख लगावांगा। उह तेरे वस मैं ओनां वस, फिर भी वास्ता तेरे अग्गे पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवावांगा। दर तेरे सीस नवावांगा। अलख अगोचर इक्को संग निभावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे के संग, लग्गी तोड़ निभावांगा। सृष्ट सबाई कर के नंग, चारों कुंट खेल करावांगा। फिरे दरोही विच वरभण्ड, ब्रह्मण्डी नाद वजावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर होए घमण्ड, माया ममता मोह वधावांगा। गुर मर्यादा कर के भंग, भंगढ़ा आपणा फेर वखावांगा। साध सन्त पंडत ब्रह्मण मुल्ला काज़ी मेरे उत्तों लँघावण डंग, सोहणी कूड़ी वंड वंडावांगा। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, आत्म परमात्म भरम भुलावांगा। मैनूं खा के किसे ना आवे अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द बाहर कढ्ढावांगा। मैनूं कहि के गया गुजरी चन्द, सच संदेसा इक समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवावांगा। दोए जोड़ वास्ता पावांगा। धुर दा साथ इक रखावांगा। पुरख अकाल ओट तकावांगा। दीन दयाल दर्शन पावांगा। तोड़ जंजाल जगत, भगत भगवान मनावांगा।

मन्दिर मस्जिद बेशक मेरी सारे चाढ़न रसद, रस्ता सब दा बंद करावांगा। बिन पूरे गुरमुख मैनूं खा के कोई ना होवे मस्त, गध्यां वांग सर्ब लिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगावांगा। दर तेरे मंग मंगौदा हां। दोए जोड़ वास्ता पाउँदा हां। अन्तर आपणी आवाज़ सुणाउँदा हां। जुग चौकड़ी वेख वखाउँदा हां। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल तोड़ निभाउँदा हां। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरूदवारे सोभा पाउँदा हां। जिन्हां चिर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रगट हो ना लावें हथ्थ, प्रसाद रूप ना मैं वखाउँदा हां। बेशक मैनूं रुमालयां हेठ देण ढक, ओपर पख्खयां चौर झुलाउँदा हां। जिन्ना चिर मिले ना पुरख समरथ, आपणी भेंट ना किसे चढ़ाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाउँदा हां। सुण प्रसाद सच्ची बात, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। तेरा लहिणा कोए ना जाणे विच परात, भेव अभेव ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण साथ, लोकमात संग निभाईआ। साचा खेल वेखो तमाश, शब्द सुत वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख इक्को रिहा दृढ़ाईआ। जो किहा पुरख अकाल, धुर दी बात सुणाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध वड्याईआ। निरगुण चले अवल्लड़ी चाल, लिखण पढ़न विच लेख ना कोई बणाईआ। सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल, सच प्रसाद तैनूं दए प्रगटाईआ। आ के सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोहे देवे सच वड्याईआ। सच वड्याई आप दवावांगा। निरगुण हो के वेस वटावांगा। रविदास दवारे चल्ल के आवांगा। सच सिँघासण सोभा पावांगा। पाटा चीथड़ उपर विछावांगा। बण के मीतल, मित्र प्यार अख्वावांगा। कर के ठांडा सीतल, अमृत मेघ बरसावांगा। तूं रखीं मेरी उडीकण, मैं आपणा वेस वटावांगा। भुल्ल ना जाईं तरीकण, तरीके नाल समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावांगा। की प्रभू कार कमावेंगा। जिस वेले रविदास कोल आवेंगा। कवण रूप अनूप वटावेंगा। कवण कूट सोभा पावेंगा। कवण जोत नूर चमकावेंगा। कवण शब्द चोट नगारे लावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, किस बिध आपणा मेल मिलावेंगा। रविदास चमारे जदों आवांगा। निरवैर निरँकार निराकार अख्वावांगा। जोती धार रूप प्रगटावांगा। शब्दी तूर नाद इक वजावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हावांगा। स्वच्छ सरूपी हो प्रतख, गृह मन्दिर नज़री आवांगा। लै के वस्त इक अकथ, घर साचे फेरा पावांगा। अगला मार्ग देवां दस्स, पिछला पन्ध मुकावांगा। सच प्रसाद तेरा रस, आपणे रस विच्चों प्रगटावांगा। जिस दा कोई गा ना सके जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव

ना किसे दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। प्रसाद कहे मोए चाउ घनेरा, प्रभ वज्जे इक वधाईआ। नाता जुड़े तेरा मेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धन्न भाग मेरा बन्ने बेड़ा, लोकमात आपणे कंध टिकाईआ। मैं वसदा वेखां सोहणा खेड़ा, जिस गृह बहि के सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी रखां जेरा, चरण कँवल ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पावे फेरा, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चे देणी वड्याईआ। सुण प्रसाद मेरे लाल, हरि लालन दए जणाईआ। सच दुआर सोहे सच्ची धर्मसाल, श्री भगवान सोभा पाईआ। इक्को खेल करां महान, महिमा कथ अकथ वड्याईआ। रविदास दा लै सुक्का पकवान, सच प्रसाद दयां बणाईआ। गुरमुख विरले गुरसिख खाण, हरिभगत रसना लैण लगाईआ। खादयां लेखा चुक्के दो जहान, आवण जावण रहिण ना पाईआ। सो प्रसाद मोहे परवान, जो मेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। प्रसाद कहे प्रभ उह केहड़ा प्रसाद, जो जगत नाल बंधाईआ। जिहनूं खा खा कहिण जीव जंत बड़ा स्वाद, साध सन्त ख़ुशीआं रहे मन्नाईआ। रसना कहिण अज्ज वड्डे होए भाग, सोहणा पेट भराईआ। ऐहो जिहा मिले रोज़ खाज, प्रभ आसा पूर कराईआ। किस बिध चलाया ओह रवाज, जगत जीव दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्लाईआ। सुण प्रसाद जगत दा जस, जगजीवण दाता आप जणाईआ। नौ दवारे नौ रस नौ खण्ड गए लग्ग, मन वासना ध्यान लगाईआ। माया ममता रसन प्यार करन हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए वखाईआ। मिट्ठा रस सृष्ट सबाई लए छक, शिकवा अन्दर ना कोए मिटाईआ। गुर प्रसाद कहि के करन आपणा हक़, हकीकत विच्चों सार किसे ना आईआ। बिन भोग लगाया विच्चों हिस्सा कढ्ढ के लैण रख, आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किसे नज़र ना आवे प्रतख, ज़ाहर ज़हूर नूर ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दित्ता समझाईआ। प्रसाद कहे ओह वेला केहड़ा, प्रभ देवें माण वड्याईआ। लोकमात चुक्के झेड़ा, खहिड़ा दएं छुडाईआ। नज़री आवें नेड़न नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के करे मेहरां, मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया चुके झेड़ा, झंजट रहिण कोई ना पाईआ। इक्को मन्दिर इक्को गुरुदुआर प्रभू तेरा, श्री भगवान नज़री आईआ। उस गृह लग्गे मेरा डेरा, घर बहि बहि ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच देवां समझाईआ। सुण प्रसाद कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाइंदा। रविदास दवारे खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। पिछला लेखा जाणे जीव जहान, परम पुरख पर्दा लाहइंदा। वेद व्यासा दे के गया ब्यान, नारद मुन समझाइंदा। कुँवारी कन्या जंम्यां

बाल, पूत सपूता आप अख्वाइंदा। धुर दा बण वड्डा विद्वान, बोध अगाधा लेख जणाइंदा। मछन्दरी वेख नैण शरमाण, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। किधरों आया अगम्मी बाल, रूप अनूप कवण वखाइंदा। वेद व्यास कर प्रणाम, माता कहि के सच सुणाइंदा। सप्त ऋषी होया मेहरवान, नौका नईआ सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाइंदा। वेद व्यास फड़ के लोटा, आपणा कदम उठाईआ। बणया बाल ना वड्डा ना छोटा, उच्चा लम्मा समझ किसे ना पाईआ। ढाई गज तेड़ बद्धा धोता, दुपट्टा लाल रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए वड्याईआ। वेद व्यास फड़ करमण्डल, डोरी हथ्थ उठाईआ। वेख ब्रह्मांड धुर दा मण्डल, आपणी खुशी मनाईआ। मस्तक लगाया अगम्मी चन्दन, तिलक ललाट रुशनाईआ। मिल्या मेल अगम्मी नंदन, अनन्द विच समाईआ। कर के आपणी बंदगी बन्दन, बंदीखाना तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। वेद व्यास चलया अग्गे, आपणा कदम उठाईआ। अग्गों आए शेर बग्गे, पंज रूप वखाईआ। जन्म दे दिसण भाई सके, भईआ रूप वटाईआ। जिन्हां लग्गे मस्तक टिक्के, सोहणा रंग वखाईआ। सब तों पहला किहा निक्के, की तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वखाईआ। वेद व्यास कहे मैं दस्सां एक, इक्को वार जणाईआ। पहली वार तुसां मैनूं ल्या वेख, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इधर तक्को ओह माता मेरी अचन चेत, पिता रूप ना कोए वखाईआ। जिस दे छन्नयां पेट, जन्म वाली समझ कोए ना पाईआ। आपणा आप ल्या लपेट, उठ के तुरिया पांधी राहीआ। पुरख अकाल अगम्मी खेले खेल, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, चक्र चिहन् ना कोए जणाईआ। सप्त ऋषीआं कीता हेत, सच संदेसा गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शेर कहिण उह माता चंगी, जिस मिले माण वड्याईआ। साडी किस्मत तैथों मंदी, जंगल जूह बेले फेरा पाईआ। असीं वेख्या किनारे नदी, बेड़ा आपणा रही टिकाईआ। जो आर पार करके हद्दी, सोहणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। शेरां अन्दर आया ध्यान, अन्दरे अन्दर मिले वड्याईआ। किरपा करे श्री भगवान, सोहणी साडी बणत बणाईआ। एहो जिहा बाल जे साडे घर जन्मे आण, दो जहान वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ। वेद व्यास अन्तरगत गया बुझ, सभना सच सुणाईआ। केहड़ी करनी गए रुझ, नीती विच्चों बदलाईआ। तुसीं शेर हो के मारो भबक भुब्ब, उच्ची कूक सुणाईआ। सब तुहानूं जावण झुक, आपणा सीस निवाईआ। तुहाडी सोहणी लग्गे बग्गी मुच्छ, मुखड़े उते सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। पंजे कहिण नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी सानूं की गया हो, सोच समझ रही ना राईआ। किधर गया साडा मोह, मुहब्बत कवण रखाईआ। किस बिध नारी रूप जाईए हो, जामा आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच्च दए समझाईआ। सच संदेसा दे के एक, वेद व्यास जणाइंदा। अन्तर आत्म लओ वेख, भेव अभेद खुल्हाइंदा। सर्ब स्वामी इक्को टेक, रघुनाथ इक वडियाइंदा। साहिब नाल करो हेत, मित्र प्यारा सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी बदलणहारा भेस, वेस अनेका रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाइंदा। निक्का शेर खोल्ह के अक्ख, वेद व्यास वल तकाईआ। किवें प्रगट होइउँ प्रतख, साख्यात नज़री आईआ। भेव आपणा खोल्ह दस्स, मछोदरी केहड़ी माईआ। झीवर कन्या हो के वस, मलाह बेटी जन्म दवाईआ। सप्त ऋषी गए नट्ठ, आपणा पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे दृढ़ाईआ। वेद व्यास कहे मैं दस्सां बात, बातन दयां जणाईआ। जिस दिती मेरी ज़ात, सो मेरा ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा साथ, सगला संग निभाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वेख वखाईआ। दो जहानां पावे रास, गोपी काहन नचाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह करे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। शेर कहिण पंज उठा पंजा, इक्को वार जणाईआ। वेद व्यास तूं सिरों दिसें गंजा, जटा जूट ना कोए वड्याईआ। बचन इक्को तैथों मंगा, सच सच्च दे समझाईआ। कवण वेले मिले सूरा सरबँगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे घर इक्को वज्जे मृदंगा, ढोलक छैणा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गावे छन्दा, ढोला सिफ्त सालाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो लख चुरासी नाल हंढ्ढा, ना मरे ना जाईआ। साडी ओस नाल पवे गंढ्ढा, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। वेद व्यास किहा सुणो सच पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण होए बंदा, बंदगी आपणी दए जणाईआ। दो जहानां नूरी चन्दा, जोती जोत करे रुशनाईआ। खुशीआं विच सति धर्म दा फड़ के खण्डा, इक्को रंग चमकाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखे गंदा, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां देवे उच्चा डण्डा, चौथे पद आपणे घर बहाईआ। दीन दयाल हो बख्शंदा, मेहर नज़र उठाईआ। अन्दर वड़ के पावे ठंडा, अग्नी तपत बुझाईआ। आसा मनसा पूरी करे मंगा, जो बैठे ध्यान लगाईआ। निक्कयां नालों कहे वड्डा, मैं इक्को वार सुणाईआ। पुरख अबिनाशी जे पहली वार देवे सद्दा, अद्धा निउँ के सीस निवाईआ। दूजा कहे मैं फड़ के पाड़ां उहदा झग्गा, चोली सोहणी ना कोए

वखाईआ। तीजा कहे मैं वेखां उहदयां हड्डां, तन माटी नज़री आईआ। चौथा कहे मैं चरणां विच ढट्ठां, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पंजवां कहे मैं निक्का हो के उह दी सोहणी गोदी वसां, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। दर्शन करां आपणीआं अक्खां, लोचण नैणां वांग चमकाईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, खुशीआं रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। वेद व्यासा कहे सुणो शेर, शेर शेरां वांग जणाईआ। परम पुरख परमात्मा कलयुग अन्तिम आवे फेर, फेरा आपणा इक वखाईआ। जिस नूं कैहन्दे बब्बर केहर, केहरां नालों केहर हो दलेर वेस वटाईआ। लहिणा देणा दए नबेड़, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ । छोटा कहे मैं सुणी बात धुर प्रसाद, हौली हौली जणाईआ। श्री भगवान घर आउणा रविदास, चमरेटे दए वड्याईआ। ओथे कम्म कोई ख़ास, जिस दी लिख्त ना कोए लिखाईआ। उस दे कोल वस्त अगम्मी होणी साथ, सच प्रसाद आपणा लै के आईआ। ओन्हां देणी दाद, जिन्हां लेखा आपणे लेखे पाईआ। वेद व्यास किहा मार आवाज़, सुणो सच दयां सुणाईआ। पंजां पंजां देवे दात, इक दो मिले वड्याईआ। सोहणी बणा के आपणी भात, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। आत्म परमात्म दे के खाज, भरपूर दए कराईआ। मार के इक आवाज़, धुर विछड़े लए मिलाईआ। ब्राह्मण कहार दे के अवाज़, घुम्यार खुशी कराईआ। डोली डण्डे रस्से देवे लाग, सोहणा मुल्ल पवाईआ। लाड़ी वेख नक्क नथ्थ सुहाग, साचा कन्त मिलाईआ । पंज शेर ओस वेले जाणा जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जन्म विच जन्म ना होवे कर्म विच कर्म ना होवे करे खेल तमाश, वड वड्डा बेपरवाहीआ । शब्दी शब्द होए मुहताज, शब्दी पूरी करे आस, ख्वाहिश शब्द विच रखाईआ। घर सद्दे दर रविदास, बण दास खुशी मनाईआ। थोड़ी जेही खवावे तुहानूं भात, बिन तत्तां मुख पवाईआ। निरगुण हो के आप, निरगुण तुहाडे लेखे लाईआ। ओस वेले खुशी नाल कहिणा बाप, पिता पुरख तेरी सरनाईआ। चौथा कहे मैं मन्नां इक्को साक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंजवां कहे मैं फड़ लैणां हाथ, घुट के आपणे हथ्थां विच दबाईआ। हुण नहीं छड्डणा तेरा साथ, झल्ली ना जाए जुदाईआ। श्री भगवान शब्दी धार जाए आख, सोहणा राग अल्हाईआ। वेद व्यासा वेखे मार झात, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। परम पुरख परमेश्वर किस बिध रखे याद, किताब हथ्थ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण के बचन अगम्मी धुर, धुन वज्जदी सोभा पाईआ। उधरों ब्राह्मण खोल्ह मुन, आपणे नैण उठाईआ। किस नाल कवण करे गुण, गुण नेत्र नज़र ना कोई वखाईआ। जे कोई लभ्भे मैं बणा के जजमान चोटी लवां मुन्न, ख़ाली हथ्थ फिराईआ। जो मेरे कोल

६१७
१६

आ जाए भुल्ल, गृह जावे रोंदा मारदा धाहींआ। मेरा भण्डारा जावे खुल्ह, झोली भरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। ब्राह्मण वेख आत्म अन्तर, रविदास रिहा सुणाईआ। किथों लग्गी तैनूं बसन्तर, तृखा रही तपाईआ। गुरदेव स्वामी जीव मन्त्र, नमो सति वड्याईआ। जिस दा लेखा जुगा जुगन्तर, जुग चौकड़ी रचन रचाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, पर्दा सके ना कोए लुकाईआ। खेले खेल गगन गगनंतर, दो जहानां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। ब्राह्मण कहे सुण रविदास, मैं आपणी नीती दयां जणाईआ। चार कहारां कोल आया ख़ास, पल्लू सब दे ख़ाली गया कराईआ। घुम्यार कोल जेहड़ी दात, जोड़ा चुक्क के आपणी गठड़ी बंधाईआ। होर जिहड़े सज्जण साक, सारे ठग्ग के खाईआ। गंगा माता दे धरवास, तेरा कंगण लै के आईआ। जे राजा ना हुन्दा बदमाश, फिर मेरी वज्जदी रहिंदी वधाईआ। वेख मेरा खेल तमाश, मैं सब दा भला तकाईआ। डोली वाली लाड़ी दे वेख नथ्थ बलाक, मेरा मन गोते खाईआ। किस वेले मेरा पवे हाथ, ज़ोर आपणा दयां वखाईआ। एह केहड़े पंज जेहड़े ओहले करदे गल्ल बात, अक्खां विच नज़र ना आईआ। किथे बैठा पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा डेरा लाईआ। मैं उहदी रखां आस, जे कुछ मेरी झोली देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। साहिब पुच्छे रविदास की, कौण सोभा पाईआ। रविदास किहा जी, एह साहिब तेरी वड्याईआ। साहिब किहा वंडां वंड साढे तिन्न हथ्थ सीं, सब दी दात झोली पाईआ। रविदास कहे तेरी मेहर अमृत मींह, मेघ दे बरसाईआ। भगवान किहा की शेर बणे धी, वेद व्यासा झट्ट देवे गवाहीआ। साहिब प्रभू एह ठीक, पिछला लहिणा दए जणाईआ। शेर कहिण असां मंगी भीख, झोली इक्को अग्गे डाहीआ। तेरे नाल मिलण दी रखी उडीक, सच वक्त दे सुहाईआ। रविदास कहे प्रभ चरण करो प्रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सच सच्च दए दृढ़ाईआ। पंजे कहिण प्रभ प्रीती गई लग्ग, सरन तेरी सरनाईआ। सानूं मात जन्म दवाउणा जग, जगदीशर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन्म जन्म दी बुझे अग्ग, तृष्ना रोग मिटाईआ। तेरा दर्शन कर के अज्ज, घर साचे खुशी वखाईआ। जन्म जन्म दी पार होवे हद्द, कर्म कर्म दा रोग गंवाईआ। साडे नाल लडौंणा लड, आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। रविदास किहा झुकाओ सीस, चरण कँवल सरनाईआ। किरपा करे मेरा जगदीश, जगदीशर हथ्थ वड्याईआ। माण दवाए नीचां नीच, ऊँचो ऊँच रूप नज़री आईआ। जो लँघ के आया एहदी दहिलीज़, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ। श्री

भगवान कहे सच रविदास, पंजां दयां वड्याईआ। वेद व्यासा लेखा लिखे खास, लहिणा देणा आपणा रिहा भुगताईआ। पंजां दी इक जमात, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। निक्का शेर मार के चीक, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जो किहा प्रभू सो ठीक, सच तेरी वड्याईआ। तेरे दर तों मंगां भीख, भिच्छया इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी गोद बहाईआ। पारब्रह्म कहे अबिनाश, दीन दयाल दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम रखां पास, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। देवां वड्याई धरत धवल उपर आकाश, आकाश आकाशां विच्चों आपणा नूर दरसाईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा करां रास, मेहर नज़र उठाईआ। उधरों रविदास अर्ज कीती ख़ास, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाईआ। छोटी सपुत्री आई भाज, रविदास रही जणाईआ। पिता अज मैं दर्शन कीता जिस दे सीस उते अगम्मी ताज, पंचम मुख सुहाईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव उस दे चरण करन अरदास, सजदा सीस रहे झुकाईआ। शब्द अगम्मी वड सुरीली उहदी आवाज़, तन्दी तन्द सतार किसे ना बाहर कढ्ढाईआ। मैं आख्या मैं पुछां आपणे बाप कोलों राज़, जो पानहा गंढ्ढ के आपणा यार मनाईआ। जिस दे कोल आर रम्बी सच्चा साज, कच्चे तन्द गंढ्ढ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ।
रविदास कहे सुण सपुत्री, सच सच्च सच दयां दृढ़ाईआ। एह धार धुरदरगाहों उतरी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। मेरी एसे साहिब सुहाई रुतड़ी, रुत्त आपणे नाम महकाईआ। दर आया वेख के कोढ़ी चमड़ी, मेरे पाटे चीथड़ उते डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। बच्ची कहे सुण पिता कर ध्यान, होली जेही जणाईआ। उह इक्को वार देवे इक ज्ञान, इक आपणे नाल मिलाईआ। मैं वेख्या ओथे लोड़ नहीं पढ़न दी वेद पुराण, शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान कम्म किसे ना आईआ। मुल्ला शेख़ मसायक पंडत पीर फ़क़ीर सर्ब सीस निवाण, उपर अक्ख ना कोए उठाईआ। तू ही तू ही राग गाण, मैं ममता डेरा ढाहीआ। मैं वेख के होई हैरान, प्रभ निक्का जिहा किड्डी वड्डी रचन रचाईआ। जग नेत्र खोल्ह के वेख्या नज़र ना आया निशान, बैठा मुख छुपाईआ। अन्दर वड़ के मैं बोल बोलयां बिनां ज़बान, इक आवाज़ सुणाईआ। कर किरपा मेरे भगवान, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। झट पट नूरी दीपक जोत जगी महान, इक्को वार डगमगाईआ। जां तक्कया भगत भगवान कढ्ढे बहि के खुशी मनाण, सेजा इक्को इक सुहाईआ। बापू तेरे सुक्के टुकड़यां दा वेख्या पकवान, दो जहान खाध्यां मुक्क कदे ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगदे दान, देवणहारा दाता इक्को नज़री आईआ। ओन्हां मैनूं किहा तेरे बाप दा वड्डा खानदान, शाह पातशाह शहिनशाह सारे सीस निवाईआ।

वड्डे वड्डे शेर जिस दवारे बैठे आण, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किणका किणका खा के ओन्हां आया ज्ञान, वेद व्यासा लेखा याद कराईआ। कर बेनन्ती मंगण दान, सीस जगदीश भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। रविदास किहा पुत्री तेरा ठीक कहिणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। सोहे नेत्र जिन्हां दर्शन कीता नैणां, अक्ख प्रतख खुशी मनाईआ। सतिगुर प्यार सदा जग रहिणा, दूजा संग ना कोए निभाईआ। सच संदेस तैनूं कहिणा, कहि के दयां सुणाईआ। एन्हां संग सदा बहिणा, जिन्हां विच मेरा पतिपरमेश्वर रिहा समाईआ। अग्गे लेखा होर देणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड वंडाईआ। बच्ची कहे की प्रभ खेल, सच दे समझाईआ। किस बिध होवे अगला मेल, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। ठाकर मिले सज्जण सुहेल, सोहणा रूप वटाईआ। वसणहारा सद नवेल, घर सज्जण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ साचा दया कमावेगा। निरगुण निरवैर वेस वटावेगा। लेखा पेख पूर करावेगा। ब्रह्मण गौड़ा नाम प्रगटावेगा। सम्बल डेरा इक्को लावेगा। निरगुण जोत जोत रुशनावेगा। शब्द नाद चोट सुणावेगा। बोध अगाध भेव खुल्हावेगा। साजण सच सच्च बण, साची सेव कमावेगा। प्रगट हो पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ावेगा। सन्त सुहेले लए रख, गुरमुख आपणी गोद बहावेगा। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, पर्दा अगला पिछला लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी प्रभ कमावेगा। भेव अभेदा आप खुल्हावेगा। अछल अछेदा वेस वटावेगा। अचरज खेले खेडा, समझ कोई ना पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगावेगा। साचा रंग प्रभ रंगाएगा। जन भगतां दया कमाएगा। हो प्रितपाल वेख वखाएगा। दर दवारा इक सुहाएगा। गढ़ी चमकौर डेरा लाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण ताण आप दृढ़ाएगा। माण ताण प्रभू दवाउणा ए। अचरज खेल खलाउणा ए। शब्द सुत इक प्रगटाउणा ए। अबिनाशी अचुत फेरा पाउणा ए। माता गुजरी गोद सुहाउणा ए। तेग बहादर माण दवाउणा ए। नूर आपणा विच टिकाउणा ए। गोबिन्द धार विच्चों गोबिन्द आप प्रगटाउणा ए। शब्द खण्डा इक चमकाउणा ए। ब्रह्मण्डां खोज खुजाउणा ए। जेरज अंडां वेख वखाउणा ए। उत्भुज सेत्ज डेरा ढाउणा ए। जल थल महीअल आप समाउणा ए। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाउणा ए। गृह मन्दिर महल अटल आप सुहाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा वेस आप धराउणा ए। सच्चा वेस आप धरावेगा। सुत दुलारा इक प्रगटावेगा। अबिनाशी अचुत खेल खलावेगा। बणा के आपणा धुर दा पुत, गोबिन्द सीस जगदीश छत्र

सीस झुलावेगा। सहिज सुभाउ गोदी चुक्क, अंगण इक्को इक सुहावेगा। उजल कर के मुख, मुख मुखड़े नाल वडयावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी गढ़ी चमकौर, हरि करता कार कमाईआ। वेखणहारा करके ग़ौर, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। पंजां हथ्थ विच फड़ के डोर, नाता साचा दए जुड़ाईआ। इक इक नाल जोड़, जुझार अजीत मेल मिलाईआ। आपणा मन्त्र दस्स के फोर, फुरना अगला दए वखाईआ। पारब्रह्म पुरख अकाल पतिपरमेश्वर तेरी लोड़, दूजा संग ना कोए निभाईआ। सच प्रीती सचखण्ड दवारे जोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। गृह वेखे चढ़ के धुर दे घोड़, वागां इक्को वार भवाईआ। दीनां बंधू तेरी लोड़, बन्धन मात दे तुड़ाईआ। अबिनाशी करते किहा अगला खेल होर, समझ किसे ना पाईआ। हौली हौली सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस दए तोर, बच्चयां नाल सोभा पाईआ। अन्त काल पतिपरमेश्वर निरगुण आपे जाए बौहड़, बौहड़ी सुणे मात दुहाईआ। उधर पंजां शेरां पाया शोर, रविदास दवारे रहे कुरलाईआ। चार कहार पंजवें रहे लोड़, वाजां मार मार जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सच वड्याई देवे माण, मन ममता मोह चुकाइंदा। जिस उपर किरपा करे भगवान, भगवन आपणा भेव खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म दे दान, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। सब दा लेखा देखे जहान, जागरत जोत इक जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। पंजे शेर निवावण सीस, नेत्र नैण नीर वहाईआ। किरपा कर प्रभू जगदीश, घर तेरी ओट तकाईआ। वेद व्यासा लेखा ठीक, ठीकर कूड़ा दए भंनाईआ। तेरी रखी इक उडीक, नेत्र नैण तरसाईआ । साडी कर काया ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। अमृत पीवे ला के झीक, निझर झिरना दे झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे वड्याईआ। रविदास कहे पंजे लावो पंजा, पंज पंजां लेख चुकाईआ। वेद व्यास वेखे सिरों गंजा, नारद इशारे नाल उठाईआ। प्रभ दा खेल लग्गे चंगा, सोहणी बणत बणाईआ। मिले जन्म मूँहो मंगां, पंज तत सोभा पाईआ। करे खेल सूरा सरबँगा, शहिनशाह दाता इक अख्वाईआ। वंडणवाला धुर दीआं वंडा, सोहणी वंड कराईआ। देवे वड्याई विच वरभण्डां, माणस रूप वखाईआ। गुरमुख लख चुरासी विच कदे ना होवे गंदा, गंदगी विच ना कदे समाईआ। जद आवे प्रभ दा बंदा, बंदगी विच रखाईआ। स्त्री पुरुष प्रभ नूं इक्को जेहा चंगा, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां देवे परमानंदा, निज आत्म करे रसाईआ। तिन्हां लेखा चुके हँ ब्रह्मा, ब्रह्म पारब्रह्म इक्को नज़री आईआ। पूरब कर्म वेख कर्मां , नेहकर्मी फोल फुलाईआ। नाता तोड़े वरनां बरनां, ज़ात पात डेरा ढाहीआ।

पुरख अकाल जिस जन लाए आपणे चरणां, चरणोदक मुख चुआईआ। उस खुल्हे हरनां फरनां, निज नेत्र नर हरि नज़री आईआ। भउ चुक्के मरना डरना, भ्यानक रंग ना कोए वटाईआ। साहिब सतिगुर सरना इक्को पड़ना, साची सिख्या दए समझाईआ। सच दुआरे धुर दे वड़ना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। अन्तिम जोती जोत रलना, पंज तत नाता जगत तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। रविदास कहे सुणो भाई शेर, प्रभ दी शरअ दयां समझाईआ। जिस उपर करे आपणी मेहर, ओस दूजी लोड़ रहे ना राईआ। सारे मिल के एनूं लवो घेर, प्रेम प्रीती घेरा पाईआ। आपणा लहिणा देणा लवो निबेड़, हक़ हकीकत आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च देवे वड्याईआ। पंजां शेरां सिख्या सबक, रवीदास दित्ता समझाईआ। निवा के सीस मारी भबक, तुध बिन भवजल पार कवण कराईआ। असीं सारे रहे तबक, भय भउ रिहा सताईआ। साडी करनी विच रहे ना फर्क, फैसला तेरे अग्गे रखाईआ । लेखा लिख बिनां हरफ़, अल्फ ये ना कोई वड्याईआ। तेरे घर इक्को जेहा माण नार मर्द, मर्द मर्दाने तेरी बेपरवाहीआ। पूरब जन्म दा साडा कर्ज़, मकरूज़ हो के देणा चुकाईआ। आपणा पूरा करनां फ़र्ज, फैसला हक़ हक़ सुणाईआ। साहिब सुल्तान तेरे अग्गे अर्ज़, अरज़ोई इक्को वार सुणाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, अचरज रीती आपणी इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वड्याईआ। श्री भगवान बोलया हस्स, खुशीआं नाल जणाईआ। पंजां देवां धुर दा हक़, सब दी झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम रखो आस, वेला वक्त सुहाईआ। माणस जन्म देवे दात, पंज तिन्न नाता जोड़ जुड़ाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, आत्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सोहणा बणावे आपणा साथ, सगला संग रखाईआ। लेखा चुका चुमार रविदास, चार कहारां जोड़ जुड़ाईआ। पंजवां मित्र रखां साथ, सोहणी बणत बणाईआ। ब्राह्मण पूजा वेखां रास, चाली चाली होए सहाईआ। पंज घुम्यारां दे के दात, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। डोले वाली लाड़ी बणा के साथ, सोहणा संग वसाईआ। डोली बहा के साचे घाट, पत्तण इक्को दयां जणाईआ। वञ्झां डंडयां मुक्के वाट, रस्सयां गंढु खुल्हाईआ। पर्दा खोल्ह देवां ताक, मुख नकाब देवां उठाईआ। कड्डी करके इक जमात, रविदास सपुत्री सोभा पाईआ। उस दी सुण इक अवाज़, धुर दी लवां अंगड़ाईआ। सब दी पूरी करे ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणी नाल रलाईआ। अगला चले खेल तमाश, अचरज धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। चाली चाली विच्चों कहिण चाली बीस, चारों कुण्ट सुणाईआ। वेखो लेख चुक्के बीस बीस, बीस बीसा फेरा पाईआ। जिस दा कलमा इक हदीस, हज़रत

करे पढ़ाईआ। जिस दा मुकामे हक़ ठीक, परवरदिगार डेरा लाईआ। जिस नूं कैहन्दे लाशरीक, शहिनशाह दाता नूर खुदाईआ। जिहड़ा सचखण्ड दस्से इक प्रीत, प्रीतीवान नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। बीस कहे मेरा पिछला लहिणा, परोहत पंडत रिहा चुकाईआ। हरिसंगत विच मिल्या बहिणा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। बीस लेखा अजे लैणां, सके ना कोए मुकाईआ । ब्राह्मण दब्बया कढ्ढे गहिणा, धरनी धरत धौल फोल फुलाईआ। वेला आया अन्त मीटण वाला नैणां, नाता लोकमात तुड़ाईआ । पिच्छों सब ने कहिणा, ब्राह्मण करदा रिहा चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ । अन्दरों रविदास रिहा तक्क, नेत्र नैण तकाईआ। वेखो सब नूं मिलदा हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। जिन्हां नूं अजे रहिंदा शक़, ओन्हां दे शक़ देवे कढ्ढाईआ। जिस वेले पंज तत काया कीती फक्क, बिस्तरे गोल देवे कराईआ। बेशक अग्गे सचखण्ड लवे रख, लोकमात करे जुदाईआ। प्रभ का खेल जगत जहान जीव ना हस्स, हस्सीआं विच मखोल ना कदे उडाईआ । जिस साहिब दे हथ्थ नथ्थ, चारों कुण्ट दए भवाईआ। फरकण ना देवे किसे अक्ख, फुरने विच मेटे सर्ब लोकाईआ। उस दा क्या कोई देवे दस्स, समझणवाला समझ ना कोए रखाईआ। कर किरपा जे मेहर करे पुरख समरथ, डुब्बदे पाथर लए तराईआ। उधरों पंजां शेरां खोल्ह अक्ख, नेत्र नैण रहे उठाईआ। प्रभ साडा लहिणा देणा दस्स, बीस बीसा नेड़े आईआ । पहला जन्म देणा हक़, हकीकत तेरे कोल सके ना कोए छुपाईआ। अजीत जुझार आवण नढ्ढ, बण के पांधी राहीआ। तेरा सोहणा बणया साथ, गोबिन्द जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, साहिब तेरी सरनाईआ। रविदास कहे उह नहीं रविदास, जिहड़ा पाणा गंढ्ढ के वक्त लँघाईआ। हुण कलम दवात मेरे पास, दो जहानां लेख लिखाईआ। जेहड़ी सेवा किसे नहीं लभ्भी खास, गुर अवतार पीर पैगम्बर थोड़ा थोड़ा गए समझाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर निरगुण हो के किसे ना चलया साथ, दिवस रैण बण के पांधी राहीआ। जो आया सो उसे दा करके गया पाठ, दोए जोड़ सीस निवाईआ। खाली झोली मंगदे गए दात, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे वरगा किसे दा ना बणया साक, सज्जण बण के आपणी उंगली लाईआ। एह आर पार किनारा घाट, जिस दे नाल लेख रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। रविदास कहे कूकदी शाही, शहिनशाह सेवा लाईआ। ज़बानी नहीं लिख के दयां गवाही, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दवारे चलदे चलदे तरे राही, डोली वाले कहार पंजवां यार नाल रलाईआ। ओस दर ते बेपरवाही, बेअन्त नूर खुदाईआ। उह साहिब धुरदरगाही परवरदगार नूर अलाही सचखण्ड वसे साची थाई, सच सिँघासण डेरा लाईआ।

कलयुग अन्त आ के पकड़े बाही, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सदा सुहेला हो के देवे सिर ठंडीआं छाईं, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिन्हां मिल्या तिनका राई, ओह उच्ची कूक कूक कूक गए सुणाईआ। साडा संग करे बण के पांधी राही, रहिबर दाता आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वखाईआ। रविदास कहे उह सुणो पिछले संगी, सगला संग निभाईआ। एहो दात जुग जुग जन भगतां मंगी, प्रभ देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। नाम भण्डारयों कदी औण ना देवे तंगी, तोहफा आपणे घरों पहुंचाईआ। गुरमुख कंड होण ना देवे नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ आपणा दए टिकाईआ। प्रभ वड्याई जिस टुट्टी गंढी, विछड़यां लए मिलाईआ। दर औण ना देवे कोई पखण्डी, भेखीआं दए दुरकाईआ। सोभावन्त गुरमुख नार सुहागण चंगी, चंगी तरां वड्याईआ। मनमुख कूड़ कुड़यारी फिरे दुहागण रंडी, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। रविदास कहे सुण भाई मीत, सच दयां सुणाईआ। उह किसे हथ्थ नहीं आउँदा मन्दिर मसीत, शिवदुआले दोहरे मट्ठ रहे कुरलाईआ। परम पुरख दी अचरज रीत, अगम्मी धार जणाईआ। जो अन्दरों होवे उस दे नज़दीक, दूर दुराडा चल के आवे माहीआ। सच बंधाए चरण प्रीत, कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोभावन्त सोहणी बणत बणाईआ। सोहणी बणत बणाए आप, हथ्थ रखे वड्याईआ। दो जहानां माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करदे गए जाप, अन्दर बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ शेरां आया वक्त, धुर दा लेखा दे समझाईआ। की नाता बणया जगत, कवण पिता कवण माईआ। कवण बूँद कवण रक्त, कवण लेखा लेखे पाईआ। कवण धार कवण आए परत, कवण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। रविदास सपुत्री कहे मैनूं आई याद, सच दयां सुणाईआ। ओन्हां अन्दरे अन्दर करी फ़रयाद, वेद व्यास भेव खुल्हाईआ। धुर दी सुण इक आवाज़, अगम्मी नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। दस्स सपुत्री की सुणया कन्न, रसना दे जणाईआ। बच्ची कहे मैं ल्या मन्न, जो धुर दा खेल वखाईआ। शेरां किहा सानूं मिले नारी तन, पंज तत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ लिखा के सच्च, सच सच्च दृढ़ाईआ। पंज तत काया माटी कच्च, गगरीआ नज़री आईआ। निरगुण अन्दर गया रच, सरगुण सोभा पाईआ। नेत्र लोचण लाए अक्ख, आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग रंगाईआ। पंज शेर शब्दी धार,

साची मंग मंगाईआ। माणस जन्म विच संसार, सच दए समझाईआ। समझ ना पाई बण गंवार, पर्दा ना कोए उठाईआ। वीह सौ तिन्न बिक्रमी रखी याद, साल सतारां पहले दए जणाईआ। छोटी बच्ची मार अवाज़, आपणे कोल लयां बठाईआ। सिर तों फड़ के खोल्लया राज़, निक्के निक्के वाला रिहा खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। निक्का शेर निक्की बच्ची, बचपन इक वखाइंदा। पूरब जन्म दी धुर दी सच्ची, नाता आप बंधाइंदा। पहलों खेल वखाया अक्खीं, दादी पोती आप समझाइंदा। जेठ महीना फड़ के लखीं, सोहणी ठंड वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा। पहले शेर दयो वधाई, वाहवा साहिब हथ्थ वड्याईआ। कन्या जसबीर प्रीतम सिँघ दी जाई, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। बीबी छिन्दो सोहणा लेख लखाई, पर्दा उहला आप चुकाइंदा। आत्मा सिँघ दयो वधाई, जिस दी आत्मा परमात्मा आपणे नाल रलाइंदा। तीजा लेखा दए समझाई, तृप्त तृष्ना लोकमात गुआइंदा। शान बेटा कहि सुणाई, राम सिँघ जगत पिता अख्वाइंदा। चौथे शेर महिमा चुके, चुकावणहार दया कमाईआ। पिछले लेखे पूरब मुक्के, मुफ्त दया कमाईआ। अगले पिछले बन्धन टुट्टे, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। उजल करे मात मुखे, सोहणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे अतीत, हरि करता वड वड्याईआ। काया करे ठंडी सीत, मुख अमृत धार चुआईआ। दयावान सदा जगदीश, जागरत जोत करे रुशनाईआ। देवे माण मन मनजीत, पिता अर्जन सिँघ अख्वाईआ। सदा सदा प्रभ दी अचरज रीत, कोई समझ ना सके राईआ। पंजवां कहे मेरा लेख दस्स ठीक, मेहरवान मेरे गुसाईंआ। अग्गे वेला दिसे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हउं कीटां दे कीट, शाह पातशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच्च आपणा रंग रंगाईआ। पंजवां कहे रविदास कुछ दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। मेरी अजे ना खुल्ही अक्ख, नेत्र नैण नूर ना कोई चमकाईआ। पिछला पूरा करे हक़, प्रभ मेरा बेपरवाहीआ। जे मेरे खाली हथ्थ, आपणे कोलों देवे वरताईआ। क्यों पिच्छे रिहा छड्ड, खहिड़ा मात चुकाईआ। मेरा नेत्र रोवे अक्ख, अक्खीआं देण दुहाईआ। कवण वेले प्रभ मिले हस्स हस्स, सोहणा रूप वटाईआ। चरण कँवल जावां ढट्ठ, आपणा माण ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब देवणहार सच्ची वड्याईआ। रविदास कहे सुण मेरी रमज़, इशारे नाल जणाईआ। प्रभ दा खेल प्रभ ही जाए समझ, दूजे सार किसे ना पाईआ। जगत जहान कोई ना जाणे मर्ज़, तबीब रूप ना कोए वटाईआ। पता नहीं जुग चौकड़ी पिच्छों किथों कढ्ढे फरद, फोल वखावे थाउँ थाईंआ। हुण मन्न के मेरी अर्ज़, आरज़ू आपणी झोली पाईआ। पिछला देवे

कर्ज़, लहिणा मात चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, लेखा दए जणाईआ। पंचम सुण प्रभ सुणाए आप, सोहणी बणत बणाईआ। तेरा दिसे धुर दा साक, सच सच्च समझाईआ। वेद व्यास जो गया आख, आखर पूर कराईआ। रविदास चुमारा लिखे खास, गुरमुख आपणी कलम उठाईआ। सब तों वड्डा साथ, सभना नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण के बचन जावे मन्नण, नेत्र चरणां वल लगाईआ। करे खेल श्री भगवानन, पारब्रह्म वड्याईआ। धुर संदेसा सुणाए कन्नण, अगम्मी राग अलाईआ। पंजवां शेर कौर चन्नण, गुरमुख नारी उरफ रविदास कहि सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। पंजां दसां मिलदा माण, ब्राह्मण वेख वेख नैण उठाईआ। प्रभ किहा जिहा जजमान, कोझयां कमल्यां रिहा तराईआ। मेरी झोली अजे ना पाया कुछ दान, खाली गुछी रिहा दखाईआ। मैनूं चंगा ना लग्गे करनां अशनान, पीण खाण ना सोभा पाईआ। किसे घर पकदा ना दिसे पकवान, खीर कड़ाह ना कोए चढ़ाईआ। पोचा चौंका कोई ना करे आण, प्रोहत जी बैठे आसण लाईआ। मैं फिर कहां मेरे वस भगवान, बिन मेरे हथ्थ किसे ना आईआ। जे चंगा खवाओ पकवान, मैं पक्की तरां समझाईआ। उधरों नेड़े आया रविदास, सुण के हस्सी रिहा उडाईआ। ब्राह्मण केहड़े तेरे साथ, किथे डेरा लाईआ। ब्राह्मण गई भाख, झट्ट आपणा आप बदलाईआ। एहो जही मैनूं बड़ी जाच, हेरा फेरी तेरा संग रखाईआ। जिस नूं कैहन्दे कमलापात, कँवल नैण नूर खुदाईआ। उह पंजां दस्सां देवे दात, सोहणी वंड वंडाईआ। प्रगट होवे साख्यात, सोहणी तरां समझाईआ। पहली चेत्र रखणी याद, धुर दा हुक्म सुणाईआ। खेल करे पुरख अबिनाश, बेपरवाह धार चलाईआ। चिटे अस्व लै के राक, सोहणा आसण लाईआ। धूढ़ी मस्तक लावे खाक, इक्को टिक्का नाम वखाईआ। ब्राह्मण आपणी हथ्थीं खवाए भात, सोहणा भोजन दए बणाईआ। नाले उच्ची कूक मारी आवाज़, सुण फरियाद धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। ब्राह्मण ला के कन्न ल्या सुण, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। मेरे गुण जाणे कवण, की मेरी वड्याईआ। मैं झट्ट पट सारयां लवां छाण पुण, गंढ्ढां कवण आपणे पल्ले बन्न वखाईआ। जे मौका मिले फुन, सारयां हथ्थ खाली दयां वखाईआ। उधरो रविदास कहे श्री भगवान डाहडा तेरी चोटी देवे मुंन, बोदी हिलणो दए हटाईआ। बण के जट्ट मारे घसुन, सुरती अगली पिछली दए भुलाईआ। तेरीआं रोवण अक्खीआं फरकण बुल्ह, हौके सिसकीआं नाल रलाईआ। कूड़ी क्रिया तेरी झोली विच्चों जावे डुल, बौहड़ फेर ना कोई टिकाईआ। तैनूं हरिसंगत विच आवण जावण दी देवे खुल्ह, खुल्ही तरां समझाईआ। परोहत दस लै के औणे फुल्ल,

फुल्लां विच्चों तेरे अन्दर वासनां दए रखाईआ। फेर नहां धो के लंगर विच बनाउणा चुल, सिँघ गिरधारा नाल रलाईआ। दाल वांगू पाणी अन्दर जाणा घुल, रेड़का रोड़ विच ना कोए रखाईआ। तिन प्रेम प्यार नाल गुरमुख लैण गुंन, आटा पाणी इक्को वार देण मलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। सुण पंडत खोलू अक्ख, हरि आखर आप जणाइंदा। पिछला लेखा रह गया वक्ख, अग्गे आपणी धार समझाइंदा। हिरदे अन्दर हरि जी वस, हरिमन्दिर सोभा पाइंदा। नेत्र खोलू निज अक्ख, आखर आपणा मेल मलाइंदा। ओधरो रविदास चुमारा करे झट्ट, सोहणी सेव कमाइंदा। जिहड़ा चोला गया फट, सच सिँघासण उपर विछाइंदा। उपर बैठ पुरख समरथ, पंजां पंजां जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा देवे हथ्थो हथ्थ, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। रखणहारा धुर दी पत, पतिपरमेश्वर वेस वटाइंदा। चिट्टे वस्त्र पहनण दा सब नूं हक़, दसां इक्को रंग रंगाइंदा। अगला लेखा फेर देवे दस्स, निक्कीआं बच्चीयां होर नाल मिलाइंदा। मिलाउँदा मिलाउँदा आपणा करके झट्ट, झटका शब्दी जोत तुणका इक लगाइंदा। बजर कपाटी जाए फट, धुरदरगाही आप खुलाइंदा। अन्दर वड़ के पुरख समरथ, सोहणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा सब दी झोली पाइंदा।

*** ११ फग्गण २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल दरबार दे विच ***

पंच परमेश्वर जाणा मन्न, परपंच रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म भाग लग्गे तन, काया मन्दिर वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बेड़ा देवे बन्नू, साहिब समरथ आपणे कंध उठाईआ। लेखे लाए भगत भगवान जन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कर वसेरा धुर दी छप्परी छन्न, महल अटल दए वड्याईआ। धुर दा राग सुणाए अगम्म, शब्द अनाद सच्ची शनवाईआ। कृपानिधान हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम लेख लिखाईआ। पंचम लेख दरगाह सच्च, साहिब सज्जण समझाइंदा। तन माटी विच्चों पंज तत, ततव तत आपणा भेव खुलाइंदा। वस्त अमोलक बुध मन मति, निरवैर आपणी वंड वंडाइंदा। धीरज सन्तोख दे सति, सति सतिवादी दया कमाइंदा। धुर लेख ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ दृढ़ाइंदा। लोचण नैण खोल्हे अक्ख, आखर आपणा पर्दा लाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, सच करनी कार कमाइंदा। भगत सुहेले गाए जस, सिफ्त सालाही राग अलाइंदा। पंच मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा भेव चुकाइंदा। अन्तिम अन्तर हरि जी वस, वसल आपणा सच कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम इका घर वखाइंदा। पंचम घर

सच ज्ञान, साहिब सुल्तान दए समझाईआ। पुरख अकाल चरण ध्यान, महल अटल होए रुशनाईआ। अट्ठे पहर इक ध्यान, अन्तर आत्म परमात्म लिव लाईआ। अमृत रस पीण खाण, निझर झिरना नाम झिराईआ। गुरमुख गुर गुर कर परवान, गुरसिख वेख वखाईआ। सन्त सुहेले देवे दान, भगत भगवान अंक लगाईआ। सच संदेसा देवे आण, दो जहान वाली फेरा पाईआ। पूरब लहिणा देखे नौजवान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। मेहरवान हरि पंचम मीता, मेहर नज़र उठाइंदा। जुग जन्म दी जाणे रीता, कर्म कर्म दा पर्दा लाहइंदा। करे खेल इक अनडीठा, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। जन भगतां बख़्श चरण प्रीता, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाइंदा । भांणा दस्से आपणा मिट्ठा, भय भउ ना कोई रखाइंदा। त्रैगुण तपे ना कोए अंगीठा, पंज तत ना कोए तपाइंदा। अमृत मेघ ठंडा सीता, रस आपणा आप झिराइंदा। करनहार पतित पुनीता, पतित पापी पार लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर पंचम खेल खलाइंदा। धुर पंच कहे होए पंज, पंचम मिली वड्याईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। लेखा चुक्कया सवेर सञ्झ, अट्ठे पहर इक्को नूर ज़हूर सोभा पाईआ। जन्म जन्म दा चुक्कया पन्ध, जुग जुग दा डेरा ढाहीआ। कूड़ी भरमां ढाई कंध, भाण्डा भरम ना कोई वखाईआ। लहिणा चुक्कया दुहागण रंड, जगत संताप ना कोई सताईआ। साडी पूरी करनी मंग, मांगत हो के सीस झुकाईआ। लेखा चुके कूड़ झूठ पाखण्ड, माया ममता मूल तजाईआ। गृह तेरे चमके चन्द, भान करे रुशनाईआ। मनसा विच इक उमंग, मानस लेखे लैणा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंच सुण साहिब फरियाद, दरगाह साची सच सुणाईआ । पूरब जन्म दी देवे दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। वेख वखावे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी पर्दा लाहीआ। दीन दयाल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग जो दे गए आवाज़, भविक्ख्त ढोला अवाज़ सुणाईआ। पुरख अकाल वड कृपाल खोल्हे राज़, रहमत आपणी आप कमाईआ। जन भगतां रखे लाज, वेखणहारा जगत समाज, समग्री घट घट फोल फुलाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। लख चुरासी करे मोहताज, गुर अवतार पीर पैगम्बर भिच्छया मंगण झोली डाहीआ। सच महल्ले हक़ महिराब, महिबूब वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदाब इक्को इक समझाईआ । आदाब समझाए धुर दा अदब, अदने दए वड्याईआ। लेखा जाणा हरिजन कदम, मंज़ल मंज़ल खोज खुजाईआ। भेव चुका असंख पदम, असंख आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाण मूर्त अकाल मोहन मदन, सूत्रधारी सहिज सच सुखदाईआ।

६२८
१६

जुग चौकड़ी देवे बदल, तबदीली आपणे हथ्थ रखाईआ। तख्त निवासी करे अदल, सच अदालत इक लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे गदर, गदागर वेखे सर्ब लोकाईआ। जन भगतां पूरी करे सधर, सदके वारी घोली सतिगुर घोली घोल घुमाईआ। नाम प्याला प्याए मधुर, रस इक्को इक बणाईआ। ढोला सोहला राग सुणाए ग़ज़ल, तोहफा इक्को इक जणाईआ। सिर काल ना कूके अजल, अजराईल ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम रंग रंगाईआ। पंचम रंग गुरमुख चोला, काया तत दए दृढ़ाईआ। जन्म कर्म दा करे भार हौला, हौली हौली दर्द वंडाईआ। लहिणा देणा चुकाए कीता कौला, इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। वेखणहार जगत कहार डोला, रविदास वचोला नज़री आईआ। पंजां मुकाए पर्दा उहला, मन्त्र आपणा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंच कहिण पंचम मेला, पंच पंज सहाईआ। नज़री आए सज्जण सुहेला, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। दरसणहारा धाम नवेला, अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। वेखणहारा उच्चे टिल्ले जंगल जूह पर्बत बेला, चार कुण्ट दहि दिशा जमीन असमान फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवे वड्याई पुरख समरथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

* १२ फग्गण २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल दरबार विच *

पंच कहिण अन्ना हू, अनाइत तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा कलमा तेरी रूह, ब्रह्म तेरा नूर रुशनाईआ। तेरा नाअरा अल्ला हू, हुक्म तेरा शहिनशाहीआ। जां तक्कां नज़री आवें हूबहू, बेनज़ीर फकीर हकीर वेस वटाईआ। नाद सुणा तूं ही तूं, राग भेव चुकाईआ। नैण वेखां निराकार जूह, जिस दी हद्द हदूद समझ कोए ना पाईआ। आफ्ताब ना कोई तलूह, कूट दिशा ना कोई वखाईआ। तेरे प्रेम दी इक रज़ूह, रुजत अवर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। अन्ना हू कहे मेरी तोबा, सबक आपणा रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी मुक्की ना सोभा, सिफ्ती साहिब ना कोई सालाहीआ। पीर पैगम्बर फाके कटदे गए रोज़ा, तेरे रोज़े विच्चों तेरा नूर जहूर ना कोई दरसाईआ। मैं निक्का जिहा उम्मत उम्मती देंदा रिहा मोजा, मुअज़ज़ आपणा आप वखाईआ। तोफयां विच्चों बण के निक्का तोफा, तबीअत तबअ तबदील कराईआ। मेहरवान हो के करदा रिहा रोसा, गुस्सा ग़म ग़मगीन ग़मख़ार इक दृढ़ाईआ। बेज़बान बेदर बणया रिहा खमोसा, खास खशूसीअत असलीअत आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा

सच्चा वर, मैं निक्का जेहा बेदोषा, दोष नज़र कोई ना आईआ। अन्ना हू कहे नाअरा हक़, हकीकत दे जणाईआ। मैं वेखां खुल्ही अक्ख, गृह मन्दिर पर्दा लाहीआ। सोहणा सुहञ्जणा दिसे हट्ट, वणजारा परवरदिगार बेपरवाहीआ। मैं ओहले हो के पई हस्स, सनमुख रूप ना कोई वखाईआ। अल्ला मीआं मैनूं रहे लभ्भ, बिन मेरे चले ना कोई वड्याईआ। मैं बहि के आपणी हद्द, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। साचा ढोला गावां छन्द, ध्यावां आपणा आप माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, रहमत रहमान तेरी सरनाईआ। अन्ना हू कहे मेरे महिबूब, मुहब्बत तेरे नाल लगाईआ। अवरा दर मेल ततव तत कलबूत, कलमा नूर जोड़ जुड़ाईआ। पीर पैगम्बरां सूफीआं दित्ता सबूत, सफा हस्ती मात मिटाईआ। मैं वसां थाँ महिफूज़, खाहमखाह हथ्थ किसे ना आईआ। जे कोई समझे मेरा अरूज, अर्श कुर्श वेखण जाईआ। हथ्थ ना आए किसे हदूद, चारों कुण्ट नज़र दौड़ाईआ। मुर्शद मेहर मुरीदां सदा मौजूद, हुजरा घर घर दयां वखाईआ। ना तत ना कोई वजूद, वसल असल आपणा दयां कराईआ। मंजल वखा मंजले मक्सूद, मकसद पिछला हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार पर्दा इक कराईआ। अन्ना हू कहे मेरे खुदा, ख़ालक ख़लक मख़लूक ख़ालस तेरे नूर खुदाईआ। तूं मेरा मैं तैथों ना होवां जुदा, जुज़ वंड ना कोई वंडाईआ। रहमत अन्दर रहिबर राह दसा, मार्ग पन्ध दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अन्ना हू कहे मेरे आलमीन, नौबत इक्को नज़री आईआ। तेरा खेल यामबीन, मुहब्बत महिफल इक दरसाईआ। सूफी करके गए तलकीन, तुलबा तालब जगत पढ़ाईआ। परवरदगार बेज़बीन, अर्श कुर्श रुशनाईआ। नूर नुराना जिस दा सीन, जल्वागर ज़ाहर जहूर बेपरवाहीआ। ना नर ना मदीन, हस्ती बस्ती ना कोई वसाईआ। पैगम्बरां दिती गोई पेशीन, पोशीदा राज़ इक समझाईआ । हाज़र बेहाजर करो यकीन, आलम उल्मा इक पढ़ाईआ। नूरी इस्म शाह मुतलकीन, समस तबरेज़ इशारया नाल समझाईआ । जिस दी धार लकीर महीन, चश्मदीद ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे नूर अलाहीआ । अन्ना हू कहे मेरे साहिब सादक, सजदा सीस झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरी थाँ महावत, साची सेव कमाईआ। पीर पैगम्बर तेरी दस्स के गए अलामत, पर्दा ओहला कुछ उठाईआ। जामन बण देवे ना कोई ज़मानत, बरीखाना ना कोई जणाईआ। ऐनलहक़ किहा तेरी महानत, अमानत तेरी झोली पाईआ। मैं किहा खुदा सही सलामत, खुदगर्ज़ी विच कदे ना आईआ। अनाइत किहा मैनूं इक्को करे ममानत, इशारे नाल समझाईआ। रूहां विच्चों रूह नबीआं विच्चों नबी पैगम्बरां विच्चों पैगम्बर इन्सानां विच्चों इन्सानीअत, असलीअत आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, नूर नुराना इक अख्वाईआ। अन्ना हू कहे तेरी याद पिछली, लेखा धुरदरगाहीआ। पर्दा लाह घुंडी खोल्ह विचली, जलवा दिसे नूर इलाहीआ। बेपरवाह तेरी चमक कोटन धार चले ना बिजली, मंज़ल आसान ना कोई रखाइंदा। सर्ब जीआं जाणे दिल दी, दलेर आपणी खेल खलाइंदा। बिन परवरदिगार मेरी तार मुरीदां नाल ना मिलदी, बिन मुर्शद तन्दी तन्द ना कोई जुड़ाइंदा। खेल दिसे ना कोई धुरदरगाह दी, धीरज धीर ना कोई वखाइंदा। अगम्मी खेल मेरे पिर दी, भेव अभेव ना कोई जणाइंदा। मेहरवान महिबूब तेरी उडीक चिर दी, चौदां सदीआं तेरा राह तकाइंदा। पढ़दी, जिथ्थे हसन हुसैन बिन हुजरे शुकर मनाइंदा। लाश धरनी उते गिरदी, शंकर कैलाश बहि के वेख वखाइंदा। अग्गे छेड़ होर छिड़दी, छेकड़ सब दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। मैं जंगल बेले रही फिरदी, सच कहाणी ना कोए सुणाइंदा। अक्खीं वेखी जवानी मस्तानी मस्त ना कोए कराइंदा। उडीक तेरी चिर दी, हन्झू आंसू मोती रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। वेख यार आपणी करबला, करवट लै बदलाईआ। मेहरवान हो के कहि दित्ता मसीह मरहबा, मर्द मर्दान अख्वाईआ। सिफ्त सालाह जगत करतबा, करतब करतब नाल मिलाईआ। हसन हुसैन किहा उह रब्बा रबीह रबीह बिस्तर मरग इक सुहाईआ। नूरी ज़हूर हो मौजूद, मसकूक मुश्किल हल्ल कराईआ। ओस वेले अन्ना हू कहे जिस दित्ता सच सबूत, विचला भेव खुल्ह्राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा नज़री आईआ। अन्ना हू कहे मैं बणया मुनसफ, मुनसफी आप कराईआ। दोहां मिल के कीती उलफत, मुहब्बत संग रलाईआ। कोटां विच्चों मैनूं थोड़यां नाल मिलण दी मिले फुरसत, मुरीदां विच्चों मुरीद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, साची सेव कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान।

* १३ फग्गण २०२० बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे घर करतार पुर ज़िला जलन्धर *

पुरख अकाल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाइंदा। सचखण्ड निवासी साची धार चला, साची खेल वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा सलाह, जुग चौकड़ी धुर दा हुक्म सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडा, चारे खाणी चारे बाणी मेल मिलाइंदा। साहिब सुल्तान बण के शहिनशाह, भूपत भूप आपणी कार कराइंदा। पंजां देवे माण वडया, वड्याई आपणे हथ्थ वखाइंदा। भेव अभेदा आप खुल्हा, पर्दा ओहला मूल चुकाइंदा। गोबिन्द लेखा सहिज सुभा, नर निरँकारा झोली

पाइंदा। नानक लहिणा पूर करा, पंचम साचा संग निभाइंदा। नव नौ चार पन्ध मुका, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। नेहकर्मी आपणा खेल करा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सन्त सुहेले लए उठा, गुर चेले वेख वखाइंदा। जन भगतां गोदी लए टिका, मेहरवान मेहर नज़र इक तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी खेल वखाइंदा। साची करनी करने आया, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण वेस वटाया, सरगुण सरगुण सोभा पाईआ। जोती जोत नूर रुशनाया, जलवा इक्को इक वखाईआ। दस्तगीरां दस्त फड़ाया, पीर पैगम्बरां दए वड्याईआ। बेनज़ीरा नज़र ना आया, लातस्वीर तसव्वर सके ना कोए कराईआ। शाह फकीरां वेख वखाया, दरवेश दर्दी दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। धुर दी करनी करे करतार, हरि करता खेल कराइंदा। बेऐब खुदाई परवरदिगार, महिबूब मुहब्बत इक समझाइंदा। पंचम मेला धुर दरबार, सच दवारे सोभा पाइंदा। पूरब लेखा कर्म विचार, सच संदेसा इक सुणाइंदा। भगतन देवणहारा उधार, लहिणा पिछला मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी दया कमाइंदा। पंच कहे प्रभ मिटे मोह, मुहब्बत जगत रहिण ना पाईआ। तेरी सुणीए सच्ची सो, सोभावन्त सच्ची सरनाईआ। घर प्रकाश कर अगम्मी लो, मन्दिर अन्दर वज्जे वधाईआ। अंमिउँ रस अमृत इक्को चो, तृष्ना भुक्ख बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरा मंग मंगाईआ। पंच कहे सुण पंच मीत, पंच दए वड्याईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चुक्के रीत, रीतीवान आप चुकाईआ। लेखा जाणे मन्दिर मसीत, मट्ठ शिवदुआले खोज खुजाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। सति पुरख दी खेल अनडीठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, हरिजन उतर कदे ना जाईआ। धर्म दुआरयों पाए भीख, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे उडीक, नेत्र नैणां ध्यान लगाईआ। उच्ची कूक कूक पुकार करदे रहे चीख, नैणां नीर नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल आप समझाईआ। पंच कहिण प्रभ तेरी ओट, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार तेरी जोत, पीर पैगम्बर तेरा नूर रुशनाइंदा। दो जहानां तेरा नाम श्लोक, सोहला ढोला इक्को नज़री आइंदा। वज्जे वधाई लोक परलोक, मण्डल मण्डप डंक सुणाइंदा। तेरे मिलण दा सब नूं शौक, बिन तेरी किरपा जोड़ ना कोई जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी आसा रखाइंदा। सुण पंच लै परवाना, पारब्रह्म जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख दे गए जमाना, जमानत आपणी नाल भराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेख जाणे नौजवाना,

नौबत आपणा नाम वजाईआ। लख चुरासी बण के काहना, गोपी इक्को रंग वखाईआ। नाम धुन शब्द तराना, रागी राग सुणाईआ। दीआ जोती दीप महाना, डगमग करे रुशनाईआ। पंचम मेला साहिब सुल्ताना, घर पंचम सोभा पाईआ। भगत दुआर सुहाए मकाना, छप्पर छन्न वड्याईआ। चरण प्रीती देवे माणा, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, पंच पंच पंच पंच पंच दए जणाईआ।

* १३ फग्गण २०२० बिक्रमी प्रीतम सिंघ दे घर धन्नोवाली ज़िला जलन्धर *

चारे जुग होए इकट्ठे, प्रभ दर बैठे सीस झुकाईआ। चार कुण्ट फिरन नट्ठे, दहि दिशा पई दुहाईआ। चार वेद हक्के बक्के, भेव किसे ना आईआ। चार वरन माया मोह रत्ते, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। चार यारी कूड़ी क्रिया हस्से, सच सुच्च ना कोए समझाईआ। जीवां जंतां कलयुग पत्त कोए ना रखे, परमेश्वर संग ना कोए निभाईआ। निज नेत्र नैण सतिगुर दरस ना कोए तक्के, दोए लोचण वेखण जगत लोकाईआ। अमृत आत्म रस घर सरोवर कोई ना चक्खे, अठ सठ भज्जण वाहो दाहीआ। अनहद नाद अनादी धुन अगम्मी सट्ट कोई ना वज्जे, ढोल छैणे सर्ब खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर बैठे सीस झुकाईआ। चारे जुग रहे बोल, उच्ची उच्ची कूक सुणाईआ। सतिजुग कहे मैं होया अनभोल, अनभव भेव ना कोए खुल्हाईआ। त्रेता कहे कोई ना तोलया तोल, कंडा हत्थ ना किसे वखाईआ। द्वापर कहे वेख्या घोल, दो जहान नैण उठाईआ। कलयुग कहे चारों कुण्ट जूठ झूठ वज्जे ढोल, सच मृदंग नाम ना कोए सुणाईआ। वस्त अमोलक दिसे ना किसे कोल, खाली हट्ट जगत वणजारा नज़री आईआ। सच प्रीती पुरख अकाल कोई ना जाए मौल, आत्म परमात्म संग ना कोए रखाईआ। सृष्ट सबाई मात गर्भ भुल्लणा कौल, लिव छुटकी फेर ना कोए लगाईआ। साचा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ मुशायक काज़ी समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। चारे युग चरणी ढट्ठ, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध लेखा थाउँ थाईंआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सृष्ट सबाई नाड़ बहत्तर उबले रत्त, सांतक सति ना कोए वरताईआ। हरि चरण प्रीती कोई ना बन्न्हे नत्त, साचा सज्जण नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग मार्ग गए दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पढ़ाईआ। किसे ना मिले मुकामे हक़, लाशरीक तेरा नूर नज़र ना आईआ। मन वासना दर दर घर घर रहे नट्ठ, बण पांधी

पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी ओट रखाईआ। चारे जुग रहे कुरला, दरोही तेरे नाम खुदाईआ। गुर अवतार देंदे रहे सलाह, पीर पैगम्बर इशारयां नाल जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक मलाह, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। डुब्बदे पाथर लए तरा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। आदि अन्त हो सहा, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा रिहा छा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता तुटा पुत्तां माँ, पिता पूत संग ना कोए रखाईआ। हँस बुद्धि होई काँ, रसना काग वांग कुरलाईआ। हिरदे वसाए ना कोई हरि का नाँ, हरि सतिगुर दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडा तेरा नज़री आईआ। चारे जुग रहे दस्स, पूरब लेख जणाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त रैण अन्धेरी मस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। तेरे मिलण दी कोए ना रखे आस, जगत तृष्ना मात वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। श्री भगवान सर्ब गुणवन्ता, हरि करता आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल खलंता, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण बणाए बणता, लख चुरासी घाड़न आप घड़ाईआ। कोटन कोटि विच्चों रखे गुरमुख साचे सन्ता, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
६३४ आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। चारे जुग कहिण सच्च, कलयुग आपणा हाल सुणाईआ। नव नौ चार ६३४
वेख्या नट्ठ, दहि दिशा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। साधां सन्तां खेड़ा कीता भट्ठ, बण भठयारा अग्नी डाहीआ। किसे रहिण ना दित्ता धीरज जत्त, सति सरूप ना कोए समाईआ। जोती अग्नी लाई मट्ठ, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे मैं छोटा पुत्त, प्रभ तेरी इक सरनाईआ। दीन दयाल आ के पुच्छ, लोकमात फेरा पाईआ। किसे घर रहिण ना दिती सुच्च, संजम चले ना कोए चतुराईआ। सुलखणी दिसे ना कोई कुक्ख, भगत जणे ना कोई माईआ। उजल किसे ना दिसे मुख, मुख कालख टिक्का लाया शाहीआ। लख चुरासी लग्गा दुःख, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। सच धर्म दा बूटा दित्ता पुट्ट, शोह दरया रुढ़ाईआ। तेरे नालों श्री भगवान वेख सारे गए रुस्स, गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरि जी तेरी ओट रखाईआ। श्री भगवान कहे सुण छोटे बाल, कलयुग आप जणाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी आप समझाईआ। जुग चौकड़ी मेरी अवल्लड़ी चाल भेव अभेद समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त हो कृपाल, किरपन आपणा रंग वखाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत

सुहेले लवां भाल, गुर चेले वेख वखाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। शब्द गुरू बण दलाल, घर घर आपणा हट्ट चलाईआ। अन्दर बाहर चला नाल, गुप्त ज़ाहर संग रखाईआ। रस अमृत इक प्याल, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दीआ दीपक जोती बाल, अज्ञान अन्धेर गुआईआ। घर विच घर वखा सच्ची धर्मसाल, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। साची सिख्या इक सखाल, धुर दी धर्म करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभ तेरी ओट, साहिब तेरी वड वड्याईआ। मैं लख चुरासी भरया खोट, बण सेवक सेव कमाईआ। किसे घर प्रगट दिसे ना तेरी जोत, शब्द नाद धुन ना कोई सुणवाईआ। जीआं जंतां भुल्ली होश, मदिरा कूड़ा पान कराईआ। कवण मन्दिर कवण दुआर कवण मंज़ल बैठों आप खामोश, सुन्न समाध डेरा लाईआ। तेरे नाम दा लोकमात रहिण ना दित्ता खोज, ख़ालक ख़लक मखलूक गई भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। भगवन कहे कलयुग सोच, सो सतिगुर आप जणाईआ। प्रभ दर्शन गुरमुख विरले रहे लोच, अन्दर अन्दर ध्यान लगाईआ। सो सन्त सुहेले वेखे निर्दोष, दोषी बणा डण्ड ना कोए लगाईआ। नाम अधारी करे सन्तोश, सुख सागर सांतक सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। कलयुग कहे प्रभ तेरे केहड़े भगत, जिन्हां देवें वड्याईआ। मैं बचया रहिण ना दित्ता कोई जगत, घर घर आपणा हुक्म वरताईआ। दर दर वेखे बूँद रक्त, रग रग आपणी कार कमाईआ। सेवा विच पैण नहीं दित्ता फरक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरा नज़री आईआ। भगवन कहे कलयुग सुण, कलकाती दयां समझाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख थोड़े चुण, चरण कँवल दयां सरनाईआ। मेरे हथ्थ गुण अवगुण, पतित पापी पवित कर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। कलयुग कहे प्रभ भगत केहड़ा, सच सच दे जणाईआ। अबिनाशी करता कहे जिस गृह मन्दिर अन्दर मेरा डेरा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कलयुग कहे मैं करां झेड़ा, झगड़ा आपणा आप रखाईआ। पुरख अकाल कहे मैं बन्नां बेड़ा, जिन्हां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कहे मैं देवां गेड़ा, उलटी लठ्ठ भवाईआ। श्री भगवान कहे मैं नेड़न नेड़ा, सन्त सुहेले रिहा तराईआ। कलयुग कहे मैं तेरा छोटा पुत्त नौजवान इक बथेरा, लख चुरासी भरम भुलाईआ। दीन दयाल कहे मैं शाह सुल्तान शहिनशाह शेरा, भबक आपणा नाम लगाईआ। कलयुग कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ सच नबेड़ा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी

कार कमाईआ। कलयुग कहे प्रभ तेरी सरन, सरनगति इक रखाईआ। दे वड्याई आपणे चरण, धूढ़ी टिक्का मस्तक इक लगाईआ। लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात नज़र ना आईआ। गुरमुख तेरे तेरे पौड़े चढ़न, दूजी मंज़ल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, जिस विच मेला सहिज सुभाईआ। परम पुरख कहे सुल्तान, सो सतिगुर आप जणाईआ। साचे भगत मोहे परवान, अंगीकार आप लगाईआ। कृपानिधान हो के देवां दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म परमात्म सच्चा गान, गीत गोबिन्द इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया झगड़े सब मिट जाण, जूठ झूठ नजर कोए ना आईआ। जिस घर ठाकर स्वामी हरि सतिगुर मिले आण, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन चतुर सुघड़ सुजान, सोभावन्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुणाए कलयुग, श्री भगवान हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी औध जाए पुग, नव नौ चार डेरा ढाइंदा। आपणी धारों निरगुण उठ, सरगुण साख्यात वेख वखाइंदा। जन भगतां उपर जाए तुठ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस इक्को इक वखाइंदा। जन्म कर्म जो गए रुट्ठ, फड़ बांहों गले लगाइंदा। धुर दवारे बणा साचे सुत, जन जननी रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आप प्रभ, जुग चौकड़ी दया कमाईआ। गुर गुर सज्जण लभ्भ, ठगोरी रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया जगत दुआर पार हद्द, नौ दर डेरा ढाहीआ। सच दुआरे आपे सद्द, सुनेहड़ा आप इक्को नाम सुणाईआ। बिन मक्के काअब्यो काया हुजरे कराए हज्ज, महिबूब इक्को नज़री आईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच शरअ शरीअत देवे तज, लाशरीक तौफीक इक खुदाईआ। साचे मन्दिर शिवदुआले मट्ठ बहे सज, इष्ट देव स्वामी चतुर्भुज बेपरवाहीआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जन भगतां बण जाए दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, स्वच्छ सरूपी रूप वखाईआ। लहिणा देणा चुका पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। सच दुआर चरण कँवल कराए निवास, आसण सिँघासण इक दरसाईआ। कलयुग जन भगतां कदे ना आवे पास, दूर दुराडा बहि बहि आपणा सीस निवाईआ। कलयुग जीवां कूड़ी क्रिया पूंजी देवे रास, मनमुखां झोली जगत भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुखां वसे सदा साथ, सगला संग आप निभाईआ।

६३७

१६

* १३ फग्गण २०२० बिक्रमी मस्सा सिँघ दे घर कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर *

जन भगत मंगण मंग, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। कलयुग वेख कूड़ पखण्ड, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा मिले ना कोई संग, सज्जण सैण ना कोए वड्याईआ। माया ममता हउमे हंगता पाए डण्ड, जूठ झूठ दए दुहाईआ। आत्म परमात्म तेरा कोई ना गावे छन्द, साचा राग ना कोए अलाईआ। दूई द्वैती घर ना ढाए कंध, मन का मणका ना कोए भवाईआ। किरपा कर साहिब बख्शंद, तेरे हथ्थ प्रभ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन बैठे ध्यान लगाईआ। हरिजन मंगण धुर दी दात, दर ठांडे सीस निवाईआ। ठाकर स्वामी वेख अन्धेरी रात, कलयुग रैण अन्धेरा छाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए आख, पुरख अकाल इक्को नूर खुदाईआ। काया मन्दिर सच दुआरे कोई ना खोल्हे ताक, निज नेत्र तेरा दरस कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत आवण जावण कटण वाट, धुर पांधी नज़र कोए ना आईआ। साहिब सुल्तान सच स्वामी ज़ाहर बातन कर बात, गहर गम्भीर हउँ सरनाईआ। नाम अमोलक शब्द अगम्मी दे दात, वस्तू इक्को घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। भगत कहिण प्रभ ठाकर स्वामी, तुध बिन नज़र कोए आईआ। फिर फिर थक्के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध ना कोए मुकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के चारे बाणी, निरगुण तेरा मेल ना कोए मलाइंदा। फिर फिर थक्के अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पाणी, अमृत सरोवर घर साचा जाम ना कोए प्याइंदा। वेख वेख थक्के जगत निशानी, धर्म निशान नज़र कोए ना आइंदा। शाह पातशाह निरगुण नूर जोत नुरानी, निरवैर निराकार तेरी करनी ना कोए दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, हरिजन पंचम ध्यान लगाइंदा। भगत कहे प्रभ ठाकर सति, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्को दे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या सच पढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सिर ठाकर रख आपणा हथ्थ, मेहर नज़र उठाईआ। वस्त अगम्मी इक्को घत, काया चोली दे भराईआ। लहिणा चुक्के मनमति, गुरमति इक्को इक समझाईआ। आपणे मिलण दी दे अक्ख, जगत लोचण बंद कराईआ। सतिगुर स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन बैठे सीस निवाईआ। पारब्रह्म हरि सतिगुर मीत, सज्जण तेरे हथ्थ वड्याईआ। किसे हथ्थ ना आएयों मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ खोजे थाउँ थाईंआ। कवण दुआर धाम अनडिठड़े वसिउँ ठांडा सीत, सीतल धार आपणी इक प्रगटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा थक्के गीत, गोबिन्द मिलण कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप

६३७

१६

हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। भगत कहे प्रभ आ जा घर, घर घर विच राह तकाइंदा। निरभउ चुका भय डर, भ्यानक तेरी झोली पाइंदा। दरस वखा अग्गे खड़, नेत्र लोचण नैण इक उठाइंदा। सच सतिवादी दे वर, वरदाता तेरी ओट तकाइंदा। आत्म परमात्म ला लड़, पल्लू तेरी गंढु बंधाइंदा। सिफ्त सालाही ढोला पढ़, सोहणा राग अलाइंदा। तेरा लेखा चोटी जड़, मध तेरा नूर विच्चों टपकाइंदा। गुर पीर पैगम्बर गुर अवतार वेखण दर, दर दरवाज़ा इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन सच सच ध्यान लगाइंदा। भगत मंगण तेरा नाउँ, रसनां जिह्वा ना कोई वड्याईआ। मिले मेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह सहिज सुखदाईआ। निर्धन पकड़े आ के बांहो, सरधन होए सहाईआ। बण सुहेला देवे ठंडी छाउँ, मेहरवान आपणा हथ्थ रखाईआ। फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। लख चुरासी हक़ न्याउँ, हकीकत वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दूर दुराडे साहिब सुल्तान, जन भगतां तेरी ओट तकाईआ। आ के वेख साढे तिन्न हथ्थ मकान, घर घर विच डेरा लाईआ। दीआ दीपक जोती एका जगे महान, तेरा नूर होए रुशनाईआ। अमृत आत्म मिले पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख रहिण ना पाईआ। शब्द अनाद सुणा सच्ची धुन्कान, अनहद नादी राग सुणाईआ। साची सखी प्रभू मिल आ के काहन, गोपी तेरी रही कुरलाईआ। नैण खोल्ह कर ध्यान, बिन अक्खां रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। साहिब सतिगुर आ प्रभ नेड़े, हरिजन चरण कँवल ध्यान लगाईआ। तुध बिन उजड़े खाली खेड़े, मन्दिर सोभा कोई ना पाईआ। नौ दुआरे लग्गे झेड़े, पंच विकार करन लड़ाईआ। साची नईआ चढ़ाए ना कोई बेड़े, पार किनारा सके ना कोए दिखाईआ। कोटन कोटि बैठे ला के डेरे, साध सन्त कलयुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरि साहिब सच गोसाईआ। वेख गोसाईं भगत रंग, जिन तेरा ध्यान लगाईआ। खाली दिसे सेज पलँघ, सुंञी सेज ना कोई सुहाईआ। तुध बिन मिले ना कोई अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों ना कोई प्रगटाईआ। घर प्रकाश ना दिसे चन्द, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। अमृत सीर ना पावे ठंड, झिरना निझर ना कोए झिराईआ। जुग जन्म दे विछड़यां कोई ना पावे गंढु, आत्म परमात्म मेल ना कोए मलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाल साचा घर, जिस घर आपणा आसण लाईआ। भगत कहे प्रभ खोल्ह पर्दा, उहला रहिण कोए ना पाईआ। तेरे बिरहों वैराग अन्दर मरदा, मुर्दा गोर नज़री आईआ। विछोड़े अन्दर रिहा सड़दा, अग्नी तत जलाईआ। बिन तेरी किरपा साची मंज़ल कोई ना चढ़दा,

चौथे पद हद्द नज़र किसे ना आईआ। हउँ ग़ुलाम सेवक तेरे दर दा बरदा, बंदीखाना दे तुड़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण घाड़न घड़दा, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाईंआ। कर खेल नरायण नर दा, नर हरि तेरी इक चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, नेत्र लोचण अक्ख खुल्हाईआ। साहिब प्रभू खोल अक्ख, भगत जन रहे जणाईआ। घर मेल मिला पुरख समरथ, समरथ तेरी सरनाईआ। पूरब लहिणा देवे हथ्थो हथ्थ, सौदा इक्को हट्ट वकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लै रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दूर दुराडे नेड़न नेड़े घर आ के मार्ग सच दस्स, साची सिख्या इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख वखाईआ। भगत कहे प्रभ क्यों रख्या ओहला, ओहले विच तेरी ना कोए वड्याईआ। धुर सुणा सच बोला, अणबोलत राग अल्हाईआ। तेरा नाउँ पीर पैगम्बर कहिण मौला, मौलया हर घट थाईंआ। तेरा आदि जुगादी धुर दा सोहला, गुर अवतार रहे जस गाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गाया ढोला, हुजरा हक़ रहे सुणाईआ। शब्दी धार बण विचोला, गुर गुर आपणा वेस वटाईआ। कलयुग वेख चारों कुण्ट प्या रौला, झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। झगड़ा वेख लोकमात, जन भगत रहे जणाईआ। पुरख अबिनाशी मार झात, झाकी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तेरी कोई ना गाए साची गाथ, हिरदे सच ना कोए वसाईआ। तेई अवतार बण ज़मात, भगत अठारां जोड़ जुड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दस्सण बातन बात, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। नानक गोबिन्द साख्यात, निरगुण सरगुण रूप दरसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दस्से हालात, तीस बतीसा ढोला गाईआ। खाणी बाणी पूरी कर आस, आसावन्त तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, बेपरवाह तेरी नज़री आए बेपरवाहीआ। भगत कहिण प्रभ उठ के वेख, आपणी लै अंगड़ाईआ। सृष्ट सबाई कूड़ा भेख, सति सरूप ना कोए समाईआ। माया ममता रहे खेड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सच संदेसा धुर दा भेज, अलख अगोचर आपणा नाम दृढ़ाईआ। जोती जलवा दे तेज, नूरो नूर रुशनाईआ। सुहञ्जणी सोभावन्त कर सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। चार युग दा पिछला वेख लेख, गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लोकमात गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणा इक वर, बण दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। भगत कहिण नाल गुस्से, श्री भगवान सच जणाईआ। तेरे नालों सारे रुस्से, बैठे मुख भवाईआ। सति धर्म पैंडे मुक्के, पांधी नज़र कोए ना आईआ। खाली दिसण पाणीउँ हुक्के, गटा नेज़ा ना कोए वड्याईआ। नबी रसूल सारे रुठ्ठे, परवरदिगार ना कोए

६४०

१६

सहाईआ। गुर अवतार किसे ना पुच्छे, अन्तर सार कोए ना आईआ। बेपरवाह तेरे दर सीस कोए ना झुके, सजदा हक़ ना कोए वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया राह पए पुट्ठे, भरमी भरम करे लड़ाईआ। नाते तुटे मात पुत्ते, पिता पूत संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की खेल वरताईआ। पंज तत काया जुस्से अट्ठ तत्त, ब्रह्म मति नज़र कोए ना आईआ। भगत कहे भगवान दस्स सच्च, दर तेरे मंग मंगाईआ। काया माटी दे के भाण्डा कच, सोहणा पोच पुचाईआ। डूंघी कन्दर बैठों रच, रचना आपणी आप रचाईआ। क्यों साथों होइउं वक्ख, आपणा मुख भवाईआ। ठाकर हो के देदे हक़, हकीकत साची झोली पाईआ। चरण प्रीती जोड़ नत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच सच सरनाईआ। भगतां सुण अवाज़, कलयुग लए अंगड़ाईआ। सच दुआरे आया भाज, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। निउँ निउँ सजदा पढ़े नमाज़, सीस जगदीश झुकाईआ। साहिब मेरे इस दे विच कोई राज़, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मेरा बेड़ा भरया जहाज़, लख चुरासी उपर डेरा लाईआ। किसे मन्दिर अन्दर रहिण ना दित्ता कोई राग, रागण चले ना कोए चतुराईआ। भरम भुलाया जगत समाज, समाजी देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरी अरज़ोई, धुरदरगाही इक जणाइंदा। तेरी लिख्त ना मेटे कोई, मिटावणहारा नज़र कोए ना आइंदा। तुध बिन देवे ना कोई ढोई, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। कलयुग कहे सुण भगवन्त, वेख मेरी चतुराईआ। तेरे हुक्मे अन्दर सेवा कीती बेअन्त, चाकर आपणा आप बणाईआ। नाता जुड़या रहिण ना दित्ता नार कन्त, सच सरूप सच ना कोए समाईआ। घर घर दर दर गढ़ बणाया हउमे हंगत, कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन बणन ना दिती संगत, सांझा यार सच ना किसे दरसाईआ। खेल खलाया मुल्लां शेख़ पंडत सन्त, ग्रन्थी पन्थी धार जणाईआ। माया पाई बेअन्त, त्रैगुण नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, मेरा लेखा पूर कराईआ। कलयुग कहे प्रभ लेखा देणा, देवणहार इक अख्वाइंदा। सदी चौधवीं वेखां नैणां, नेत्र नैण इक उठाइंदा। मैं नाता तोड़ां भाई भैणां, सज्जण संग ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी उच्चा बुरज हँकारी ढैणा, चारो कुण्ट नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, खाली झोली आपणी डाहइंदा। पुरख अबिनाशी दए दलासा, हक़ो हक़ जणाईआ। लख चुरासी तेरा साथा, सोहणा संग बणाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले बणां राखा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

गोदी चुक्कां बण के पिता माता, सोहणी सेव कमाईआ। चरण प्रीती जोड़ां नाता, धुर दा मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म दस्सां गाथा, पूजा पाठ इक्को इक समझाईआ। आत्म सरोवर तीर्थ ताटा, घर इश्नान इक नुहाईआ। मुक्की रैण अन्धेरी राता, जोती नूर चन्द चमकाईआ। शब्द अगम्मी देवां दाता, निरअक्खर इक समझाईआ। भाग लगावां काया कासा, खाली भण्डारा इक भराईआ। जन्म जन्म दी पूरी करां आसा, कर्म कर्म दा रोग गंवाईआ। आत्म सेजा भोग बिलासा, सोहणी रुत्त सुहाईआ। सेवा करां बण दासी दासा, घर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग रिहा जणाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरी निमस्कार, जगदीश तेरी सरनाईआ। तेरा भगत सोहे तेरे दुआर, दर ठांडे डेरा लाईआ। मैं दूर दुराडा वसा बाहर, गुरमुख नेड़ कदे ना आईआ। लख चुरासी करां ख्वार, जीव जंत जगत हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, तेरी साची सेव कमाईआ। श्री भगवान कहे सुण कलयुग अन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। जन भगतां मेला जिउँ नार कन्त, हरि पुरख निरँजण जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म चाढ़े रंग बसन्त, इकउँकार दए वड्याईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, जोती जाता दए पढ़ाईआ। चरण कँवल लगाए अंगत, अबिनाशी करता होए सहाईआ। मेल मिलावा साची संगत, श्री भगवान भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म पारब्रह्म दरसाईआ। कलयुग कहे मेरे वखाए भाग, प्रभ सच सच दृढ़ाईआ। जन भगतां मिले कन्त सुहाग, कल सोहणी रुत्त सुहाईआ। दीपक जोत जगाए चिराग़, कमलापाती बेपरवाहीआ। अग्नी तत बुझाए आग, सांतक सति रूप समाईआ। सरगुण निंद्रा खोले जाग, जागरत जीवण इक दृढ़ाईआ। घर विच घर खुलाए राज़, पर्दा ओहला परे हटाईआ। नाता तोड़ कूड़ समाज, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सच सुणा अगम्मी अवाज़, धुर संदेसा दए समझाईआ। बण सुहेला वसे पास, घर गुरमुख डेरा लाईआ। जन भगत कहे शाबाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। भगत कहे प्रभ मिलाए कौण, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। भगवन कहे जन भगत गूढ़ी नींदे सौण, सुख आसण सेज सुहाईआ। अबिनाशी करता निरगुण आए आप उठौण, सति सतिवादी फेरा पाईआ। महल अटल सच दुआर आए बहौण, पर्दा उहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच्ची वड्याईआ। सच वड्याई इक दवावांगा। हरिजन साचे सच उठावांगा। भगत वछल रूप धरावांगा। अछल अछल्ल खेल खलावांगा। उजल धाम अटल वसावांगा। दीपक जोती जाए बल, तेल बाती ना कोए रखावांगा। धुर संदेसा शब्दी घल्ल, गुरमुख आपणे नाल मिलावांगा। सुक्के काष्ट लाह के फल, अमृत रस चुआवांगा। चरण

चरणोदक धुर दा जल, अमिउँ रस इक्को मुख चुआवांगा। जोती शब्दी धार रल, निरगुण निरवैर खेल वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगतां रंग रंगावांगा। जन भगत कहे तेरा रंग अवल्ला, नेत्र जगत नज़र ना आईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा उच्च महल्ला, बिन भगतां वेखण कोए ना पाईआ। जन भगत कहे तेरी डूंग्घी डल्ला, पार सके ना कोए कराईआ। श्री भगवान कहे जिस फड़ावां पल्ला, दो जहानां चरणां हेठ रखाईआ। भगत कहे तूं अछल अछल्ला, वल छलधारी आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा दए जणाईआ। भगत कहे घर आ ठाकर, ठोकर आपणा नाम लगाईआ । कलयुग भँवरी डूंघा सागर, तुध बिन तरन कोए ना पाईआ। किरपा कर करते कादर, करीम रहीम तेरी सरनाईआ। निर्मल कर्म होण उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। बणीए तेरे दर सौदागर, वणज इक्को नाम वखाईआ। ग़रीब निमणयां दे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिदक सबूरी बख्श साबर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतो सद रखो याद, सो साहिब आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार सुणे फरियाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जानणहारा अन्दरे अन्दर अन्तर आवाज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। वेखणहारा अगम्म अगम्मड़ा राज़, पर्दा उहला दए चुकाईआ। निरगुण सरगुण वसे साथ, सगला संग निभाईआ। इक्को मन्त्र इक्को पूजा पाठ, इष्टदेव स्वामी इक्को इक दरसाईआ। सो साहिब सब दी पत लए राख, परमेश्वर परमात्मा आत्मा बन्धन पाईआ । सदा सुहेला अनाथां नाथ, दीनन दीन गले लगाईआ। पत्तण बहि के वेखे घाट, माही आपणा डेरा लाईआ। जन भगतां बख्श सच प्रीती दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। लेखा चुका ज़ात पात, दीन मज़्ह़ब डेरा ढाहीआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे सगला साथ, सांझा यार बेपरवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरिभगत सद देवे माण वड्याईआ ।

* १४ फग्गण २०२० बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर *

वेख खेल पुरख समरथ, गुर अवतार लैण अंगड़ाईआ। पीर पैगम्बर खोल्ह अक्ख, नेत्र लोचण राह तकाईआ। निरगुण धार रहे दस्स, धुर संदेस शब्द अलाईआ। सच दवारे करो इकट्ठ, दरगाह साची सोभा पाईआ। खाली वखाओ आपणे हथ्थ, दोए दोए दोए उठाईआ। जुग चौकड़ी जो मार्ग आए दस्स, लोकमात जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सच दे इक वड्याईआ। वेखो खेल पुरख अकाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। निरगुण जोत सति सरूप सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठ दीन दयाल, दयानिध आपणी कार कमाईआ। शब्दी सुत सच दुलारा वेखे आपणा लाल, लालण इक्को इक जगाईआ। चार युग दी दस्स घाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साचे खुशी वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जिस दा खेल लोक परलोक, दो जहानां वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा ढोला गाउँदे रहे श्लोक, नाम निधाना मात प्रगटाईआ। तत ततव तक्कदे रहे ओट, निउँ निउँ चरण कँवल सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे तक्क, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। निरगुण निरवैर निराकार बैठा अलग, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ । दरगाह साची नूर प्रगट, ज़हूर इक्को इक रुशनाईआ। परवरदिगार मुकामे हक़, लाशरीक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। पीर पैगम्बर मारन झाक, पर्दा उहला इक उठाईआ। आदि जुगादी सज्जण साक, साहिब सुल्तान इक्को नजरी आईआ। नित नवित्त लोकमात जो लेखा करे बेबाक, लहिणा देणा मूल चुकाईआ । जुग चौकड़ी जिस दे हाथ, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। कलमा कलाम जिस दी गाथ, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पीर पैगम्बर सजदा सीस, दर साचे इक कराईआ। चरण कँवल तेरे जगदीश, जगदीश्र सच सरनाईआ। परवरदिगार तेरी हदीस, हकीकत हक़ दृढ़ाईआ। गा गा थक्के तीस बतीस, लोकमात रसना जिह्वा बत्ती दन्द हल्काईआ। तेरा निशाना तेरी रहमत दस्सदे गए ठीक, ठोकर तेरा नाम लगाईआ। जगत अन्धेरा वेख तारीक, नवां चन्द सच चमकाईआ। दस्सया सदा वाहिद लाशरीक, सच तौफ़ीक इक खुदाईआ । गृह गृह वसे सदा नज़दीक, सच महिराब डेरा लाईआ। काया काअबे तेरी उडीक, हुजरा इक्को इक वड्याईआ। दर दरवेश मंगदे भीख, खाली झोली इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार नेत्र खोल्ह, दो जहान ध्यान लगाईआ। पतिपरमेश्वर बैठा सदा अडोल, डुल कदे ना जाईआ। सच दुआरे तोले इक्को तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। शब्द अगम्मी इक्को बोल, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं पताल अकाश करे शनवाईआ। लख चुरासी अन्दर काया मन्दिर वजावे ढोल, सोहला इक्को राग सुणाईआ। सच दवारा जुग जुग खोल्ह, रहिबर इक्को राह वखाईआ। दे वस्त नाम अनमोल, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ बेनज़ीर, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। सच दिसे ना कोए तस्वीर, मसव्वर रंग ना कोए रंगाइंदा। चोटी जाणे ना कोई अख़ीर, आखर हद्द ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। गुर अवतार रहे आख, होका इक्को नाम जणाइंदा। परम पुरख पतिपरमेश्वर दीन दयाल साहिब समराथ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण शब्द अगम्मी देवे गाथ, धुर दा रागी राग सुणाईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, सच्चा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, घर साचे मता पकाईआ। उठो वेखो बेपरवाह, पर्दा ओहला रिहा चुकाईआ। मुख नक़ाब रिहा उठा, घूँगट रहिण कोई ना पाईआ। साचा कलमा रिहा पढ़ा, महिबूब इक्को हुक्म वरताईआ। रहमत करे आप खुदा, मेहर नज़र उठाईआ। निज नेत्र दर्शन लवां पा, साचा दीद करे रुशनाईआ। मुहब्बत इक्को रिहा सखा, सखावत आपणी रिहा वरताईआ। इबादत इक्को रिहा जणा, अवल्ल अलाही नूर इक्को नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे होए दोए जोड़, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पई लोड़, आसा आसा नाल वधाईआ। बिन अक्खां वेखो कर के गौर, गहर गम्भीर सोभा पाईआ। जिस मंज़ल जिस दुआरे गृह कोई ना सके बौहड़, तिस महल अटल बैठा डेरा लाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण जोत ना कोई और, अवर रूप ना कोए जणाईआ। जिस दा मन्त्र आदि जुगादि शब्दी फोर, फुरना इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची खुशी मनाईआ। गुर अवतार कहिण वेखो मीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। साचे गृह बैठा अतीत, सच सिँघासण सोभा पाईआ। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, शिवदुआला मट्ठ नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी इकउँकार इक्को जाणे गीत, नाम निरँकारा आप सुणाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त जाणे साची रीत, रीतीवान वड्डी वड्याईआ। सति सच दस्से इक प्रीत, कूड़ा राह ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे जणा, जानणहार वड्याईआ। इक्को ढोला रहे गा, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। मौला नूरी इक खुदा, हज़रत वड्डा बेपरवाहीआ। पुरख अकाल शहिनशाह, राज राजान आप अख्वाईआ। पारब्रह्म बेपरवाह, बेअन्त नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। गुर अवतारां सुण सुण बात, बातन भेव जणाइंदा। उठो वेखो लोकमात मारो झात, चारों कुण्ट अन्ध अन्धेरा छाइंदा। तेई अवतार खोलो आख, ईसा मूसा मुहम्मद नैण उठाइंदा। नानक गोबिन्द वेखो ताक, दहि दिशा

भेव चुकाइंदा। लेखा लिख के आए कलम दवात, काग़ज़ शाही वंड वंडाइंदा। नेत्र रोवे जीव जंत साध सन्त, सुख आत्म नज़र किसे ना आइंदा। नार विछोड़ा होया कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाइंदा। गुर का मन्त्र ना कोई मंत, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। लख चुरासी गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दृढ़ाइंदा। चार वरन दिसे ना कोई साची संगत, क्षत्री ब्राह्मण शूदर वैश जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। धुर दा दिसे ना कोई पंडत, ब्रह्म विद्या ना कोए सिखाइंदा। दूई द्वैत कोई ना करे खण्डत, खण्डा खड़ग नाम ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर दा हुक्म इक सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ख्याल, हरि करता आप जणाईआ। लोकमात कलयुग अन्त अन्त अन्त सच ना कोए दलाल, साचा वणज ना कोए कराईआ। हकीकत नज़र ना आए हलाल, हक़ झोली ना कोए पाईआ। बिन हरि नामे काया माटी खाली दिसे खाल, ख़ालक ख़लक गई भुलाईआ। मुरीदां मुर्शद पुच्छे ना जां के हाल, फेरा मारे ना चाईं चाईंआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिंमल रुक्ख नज़री आईआ। चारों कुण्ट कूके काल, दहि दिशा महाकाल दए दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ नेत्र रोवे धर्मसाल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आत्म परमात्म घालण कोई ना रिहा घाल, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। गुरमुख लभ्भे ना सच्चा लाल, गोबिन्द गोद ना कोए सुहाईआ। माया ममता कूड़ा प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। साहिब सतिगुर अन्तरजामी शब्द स्वामी किसे ना वसे नाल, घर घर विच बैठा मुख छुपाईआ। आत्म दीपक दीआ जोती देवे ना कोए बाल, अज्ञान अन्धेर ना कोए मुकाईआ। अमृत जाम सच प्याला देवे ना कोए आण, अमृत रस ना कोए चखाईआ। साचा खण्डा खड़ग तन गात्रे पाए ना कोई किरपान, रक्षया करे ना थाउँ थाईंआ। नाता तुटे ना पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। साध सन्त कूड़ी क्रिया खोल्ह के बैठे दुकान, हरि का नाम हट्ट ना कोए वकाईआ। मुल्ला शेख मुशायक सर्ब कुरलाण, तसबी माला तबअ सके ना कोए बदलाईआ। नूरी जलवा ना कोई जलाल, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। महिबान बीदो हल्ल करे ना कोई सवाल, मजलस कूड़ी डेरा कोए ना ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण मात, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। दहि दिशा दिसे अन्धेरी रात, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। भगत भगवन्त दिसे ना कोई साथ, मुरीद मुर्शद जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सचे पत्तण बहे ना कोई घाट, मिले मेल ना बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म पूरी होए ना आस, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समाईआ। लेखा छुट्टे ना पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध ना कोए मुकाईआ। सुरती शब्द ना

पाए रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। सीता राम ना वसे पास, महल अटल ना कोए वड्याईआ। निरगुण जोत ना कोए प्रकाश, नानक निरवैर दरस ना कोए कराईआ। गोबिन्द नज़र ना आए साख्यात, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ । कलयुग कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया ममता पई दात, जीव जंत झोली रहे भराईआ। नाता जुड़या कूड़े सज्जण साक, सच्चा सज्जण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार इकट्ठे होए पए हस्स, सच दुआरे खुशी मनाईआ। सब कुछ पुरख अकाल तेरे वस, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। तेरा हुक्म फ़रमाण मार्ग आए दस्स, लोकमात जीव जंत जणाईआ । तेरे मिलण दी जणा के आए अक्ख, निज नेत्र इक समझाईआ। तेरे प्रेम दा खोल्ह के आए हट्ट, बण वणजारे हट्ट चलाईआ। तेरे नाम दी गा के आए गाथ, सोहणा ढोला कलमा राग सुणाईआ। उच्ची कूक कहि के आए पारब्रह्म सब दा कमलापात, पतिपरमेश्वर इक्को इक अख्वाईआ। लख चुरासी देवे साथ, सगला संग निभाईआ । भरमे भुल्ले ना कोई ज़ात पात, दीन मज़्ह्ब ना कोए लड़ाईआ। हर घट अन्दर हरि स्वामी पुछे वात, घट घट वेख वखाईआ । अगम्म अथाह बेपरवाह अलखणा अलाख, अलख निंरजण नर नरायण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ साडे खाली हथ्थ, दर तेरे इक अरज़ोईआ। सदी बीसवीं साडी होई बस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। तेरा नाउँ नर निरँकार इक्को आए दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। कल कल्की होवे प्रगट, नेहकलंका नाउँ धराईआ। अमाम अमामा आवे नस्स, दो जहानां रंग रंगाईआ। सच जणाए इक गाथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पुछे वात, भेव अभेदा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण तेरी ओट, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सरगुण निरगुण हो के मिले तेरी जोत, काया नाता पंज तत तुड़ाईआ। अग्गे रही ना कोई सोच, सोच समझ तेरे विच छुपाईआ। तेरा दर्शन रहे लोच, दूजी लोचा ना कोए वधाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे किले कोट, गगन मण्डल तेरी वड्याईआ। तेरा खेल चौदां लोक, तेरा हुक्म चौदां तबक मनाईआ। तेरे दर कोई ना सके पहुंच, अन्त दिसे ना कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बचन कहिण सच्चा, सच सच जणाईआ। आह वेख नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा पिछला पता, तेरे अग्गे धराईआ। अग्गे दा सानूं नहीं कुछ पता, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणया भाई सका, पूत सपूता तेरा इक अख्वाईआ। सच दुआरे खोल्ह खाता, खता सब दी दे समझाईआ। परम पुरख तूं उह आका, मालक वड्डा वड वड्याईआ। दो जहानां

खोल्हीं ताका, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड आपणी धार चलाईआ। चार युग तेरे नाम दा गाया साका, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रंग वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिमरन पूजा दस्सया पाठा, जोग अभ्यास जुगत जणाईआ। अमृत सरोवर खेल वखाया तीर्थ अठ्ठ साठा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती माण वखाईआ। घर विच घर सच वखाया तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड पिण्डे इक दरसाईआ। निर्मल नूर तेरा प्रकाशा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अनहद वज्जे नाम अनादा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। शब्दी ढोल बोध अगाधा, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा लेखा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वखावण झोली, कलयुग खाली नज़री आईआ। नौ खण्ड पृथमी कूड़ी चुकी पंज तत डोली, सच्चा संग ना कोए निभाईआ। हो सेवक चाकर तेरे दर दी गोली, फरमाबरदार बरखुरदार रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर गाई बोली, अनबोलत तेरा राग सुणाईआ। लख चुरासी फुलवाड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात मौली, मौला वेखी रुत बसन्त बहार आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, सद तेरे दर सीस झुकाईआ। गुर अवतार कहिण तेरी रज़ा, पीर पैगम्बर सजदा इक कराईआ। तेरे नाम दा कलयुग अन्त किसे ना आए मज़ा, मज़ाक रहे उडाईआ। दीन मज़्ब दीआं लँघ के हद्दा, आपणी वंड रहे वखाईआ। तेरे नाम दा देवे कोई ना सद्दा, साध सन्त मुल्ला शेख़ पंडत पांधे आपणी करन चतुराईआ। धुर दा नाद किते ना वज्जा, साचा रंग ना कोए वखाईआ। ग़रीब निमाणयां पर्दा ना किसे कज्जा, कूड़ी दिसे जगत शाहीआ। मक्के काअबे कोई ना हज्जा, हक़ महिबूब ना कोए मिलाईआ। मन वासना मन्दिर शिवदुआले मठ्ठ फिरे भज्जा, मन का मणका ना कोए भवाईआ। गुरदुआर गुर सति सरूप किसे ना लभ्भा, निज नेत्र लोचण निरवैर तेरा दर्शन कोए ना पाईआ। सति धर्म सच दा सब ने खहिड़ा छड्डा, भरमे भुल्ली मात लोकाईआ। प्रेम अन्दर प्रेम किसे ना बद्धा, प्रीतीवान हो के प्रीत ना कोए लगाईआ। कूड़ी रसना लैण मज़ा, आत्म रस निझर झिरना ना कोए झिराईआ। जिउँ भावे तिउँ लख चुरासी दे सज़ा, गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे देवे ना किसे गवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे ना कोई शहादत, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। जिन्हां भुल्ली तेरी इबादत, कलमा मिले ना कोए वड्याईआ। अग्गे देवे ना कोई ज़मानत, बरीख़ाना ना कोए जणाईआ। तूं साहिब सदा सलामत, सच तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सब दा लहिणा झोली पाईआ। गुर अवतार कहिण पुरख समरथ, साहिब इक अरज़ोईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ, जिउँ भावे लए चलाईआ। सृष्ट सबाई तेरे मिलण दी खोल्हे ना कोई अक्ख, दोए लोचण जगत तकाईआ।

६४७
१६

तेरे नाम दा किसे ना आवे रस, रसना कूड़ी क्रिया मध हल्काईआ। धीरज दिसे ना कोई जत, गोबिन्द सके सीस ना कोए टिकाईआ। अमृत जाम पीए ना कोई घुट्ट, साचा रस ना कोई वखाईआ। बिन सखावत खाली हथ्थ, बग़ावत पंज तत करे लड़ाईआ। नाम अमानत सब तों गई नस्स, बैठी मुख भवाईआ। नाड़ नाड़ उबले रत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। नानक गोबिन्द भुल्ली गुरमति, ब्रह्म मति संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ ठाकर, वड तेरी वड्याईआ। कलयुग वेख डूंघा सागर, भँवर भौरी खोज खुजाईआ। तेरयां भगतां मिले कोई ना आदर, अदल करे ना कोए जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी साज़श, दर दर घर घर बैठी आसण लाईआ। तेरे नाम दी करे ना कोए नवाज़श, नग़मा सच ना कोए सुणाईआ। सच दुआरयों करन ममानत, रहमत रहीम ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जिस घर विच वसे जगत लोकाईआ। आ के वेख ग़रीब नवाज़ा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लोकमात दा खोल्ह दरवाज़ा, वाहिद आपणा भेव चुकाईआ। शाह भूप वड राजन राजा, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी जो दस्स के गए गाथा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सारे गए भुलाईआ। सतिगुर शब्द कोई ना मन्ने आखा, मनमति चले जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सुण के बात, कलयुग भज्जया वाहो दाहीआ। दूर दुराडा करे अरदास, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं छोटा पुत्त तेरा उदास, बण सेवक सेव कमाईआ। नौ खण्ड पृथमी पाई रास, सत्त दीप कूड़ी क्रिया गोपी काहन नचाईआ। मेरा वेख खेल तमाश, सृष्ट सबाई रिहा जणाईआ। झगड़ा पाया ज़ात पात, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। मैं वेखां खेल ख़ास, ख़ाहिश आपणी नाल मिलाईआ। मेरा मुहम्मद देवे साथ, अल्ला राणी गंढु पवाईआ। चौदां तबकां फिर के वेखी वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। अल्फ ये सुणके आया अवाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, कलयुग दर ते मंग मंगाईआ । कलयुग कहे मेरे भगवान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। जिहड़ा मैनूं बख्शया दान, सो मेरा पूरा दे कराईआ। आ वेख पंज शैतान, पंजां तत्तां नाल मिलाईआ। चारे कुण्ट करां हराम, सति धर्म ना कोए जणाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, सच सुच्च ना कोए समझाईआ। काम क्रोध चले दुकान, कलयुग सन्तां हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरी मंग, सच सच दृढ़ाईआ। काया चोली चाड़्या सब नूं रंग, कूड़ा उतर कदे ना जाईआ। घर घर नच्चदे वेख मलंग,

डौरु डंका रहे वजाईआ। किसे ना आवे परमानंद, निज़ा नंद ना कोए रसाईआ। मदिरा मास पान करन गंद, अमृत धार मुख ना कोए चुआईआ। सुरत दुहागण होई सब दी रंड, कन्त सुहागी मेल ना कोए मिलाईआ। जिध्धर वेखां नज़री आवे भेख पखण्ड, एसे अन्दर खुशी मनाईआ। मैं तेरा निक्का पुत्त सोहणा चन्द, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दीन दयाल प्रभ वेख मेरी सेवा, कलकाती आप जणाइंदा। अमृत फल किसे ना दिसे मेवा, कूड़ा रीठा जगत बणाइंदा। संग तुड़ाया देवी देवा, देवत सुर मेल ना कोए मलाइंदा। नात तुड़ाया अलख अभेवा, अभेव अभेदा ना कोए समझाइंदा। सृष्ट सबाई गावे रसना जिह्वा, घर मेल ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। पुरख अकाल सुणाए इक, एकउँकार जणाईआ। कलयुग तेरा लेख दित्ता लिख, लिख्या लेख ना कोए मटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साहमणे रहे वेख, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। कोई ना करे साचा हेत, हितकारी रूप ना कोए वटाईआ। अन्तर अन्तर देवे ना सच्चा भेत, पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। कलयुग कहे मैं वेखा एक, एकउँकार तेरी सरनाईआ। कीती इक अगम्मी खेड, दर तेरी ओट तकाईआ। लहिणा चुकाया शमस तबरेज़, मनसूर सूली उते चढ़ाईआ। अर्जन सीस पवाई तत्ती रेत, गोबिन्द बाले नीहां हेठ रखाईआ। सोहणी सुहञ्जणी बणा सेज, सच सिँघासण दित्ते सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी सोहणी सेव कमाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुता, शहिनशाह दर तेरे मंग मंगाइंदा। मैं सुहाई आपणी रुत्ता, रुत्त रुतड़ी वेख वखाइंदा। गोबिन्द सूला सेज मेरे विच सुत्ता, सत्थर यारड़े तेरा इक हंढाइंदा। तूं मेरे उते काहदा करे गुस्सा, तेरा हुक्म ठीक ठीक आपणे सिर रखाइंदा। पुरख अकाल कर प्यार मैनूं कहि आ मेरे लाडले पुत्ता, मैं सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। मैं तेरे दरस दा भुक्खा, दूजी ओट ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। पुरख अकाल मैं तेरा बी, चौथा जुग नाम धराईआ। रविदास चुमारे साढे तिन्न हथ्थ वंडी सीं, सोहणी बणत बणाईआ। गोबिन्द डूंघी रखी नीं, बाले इक्को रंग रंगाईआ। औह वेख तेरी नेत्र रोवे मुहम्मद ख़ाहिश अल्ला राणी धी, खुल्ही मींडी सीस साच ना कोए गुंदाईआ। मैनूं बरखुरदार कहे तूं सदा जी, दर साचे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, प्रभ तेरी सरन मिले सरनाईआ। पुरख अकाल प्या हस्स, धुरदरगाही सच जणाइंदा। कलयुग तेरा वेख्या रथ, चारों कुण्ट खोज खुजाइंदा। पन्ध मुकावीं नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण पांधी नज़री आइंदा। आपणी पत्त तूं आपे लईं

रख, बण सेवक सेव कमाइंदा। तेरी झोली पावां तेरा हक़, हकीकत सब दे नाल मिलाइंदा। उठ वेख खोल्ह अक्ख, गोबिन्द इक्को नज़री आइंदा। जिस दी लेखे लग्गी रत्त, रत आपणे रंग रंगाइंदा। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को मत्त, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मार्ग देवें दस्स, रहिबर इक अख्वाइंदा। मुकामे हक़ सचखण्ड थिर घर दुआरे रिहा वस, सुन्न अगम्म बेपरवाह आपणा राह चलाइंदा। औह वेख विष्न ब्रह्मा शिव रोंदे नेत्र नैण अक्ख, हन्झूआं हार सर्ब बणाइंदा। करोड़ तेतीसा लथ्था सथ्थ, सीस उपर ना कोए उठाइंदा । भगत अठारां चरणी रहे ढठ्ठ, दोए जोड़ सर्ब वास्ता पाइंदा। त्रैगुण माया कहे मेरा खेड़ा होया भठ्ठ, पंज तत संग ना कोए निभाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहि गए बस्स, अग्गे हुक्म ना कोए वरताइंदा। सदी बीसवीं जो कुछ सो प्रभ दा होया हक़, हक़ूक आपणे हथ्थ रखाइंदा। गोबिन्द रहिण ना दित्ता शक़, शिकवा सर्ब मिटाइंदा। निरगुण निरवैर निरँकार पुरख हो प्रगट, जोती जामा वेस वटाइंदा। सम्बल नगरी खेल समरथ, महिमा अकथ आप दृढ़ाइंदा। शब्द अगम्म दो जहान मारे सट्ट, आलस निंद्रा सर्ब गवाइंदा। करे नबेड़ा हक़ो हक़, लाशरीक सच तौफीक वड मेहरवान महिबान आपणा हुक्म वरताइंदा। जन भगत भगवन्त लए रख, सन्त सुहेले करे वक्ख, गुरमुखां खोल्ह निज नेत्र अक्ख, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। लख चुरासी कूड़ा बुरज हँकारी जाए ढठ्ठ, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। लेखा चुक्के तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणा हुक्म वरताइंदा । धुरदरगाही बेपरवाही दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं आकाश पाताल गगन गगनंतर इक्को नाम देवे दस्स, रिख मुन देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण हस्स हस्स, सोहँ हँसा आत्म परमात्म इक्को भेव खुल्हाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म इक्को मन्दिर इक्को घर गृह इक्को महल अटल जाणा वस, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर घर घर विच मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत विकार दर तों जाए नठ्ठ, जिस जन आपणा राह वखाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि निरगुण निरवैर निराकार अजूनी रहित अनभव प्रकाश आपणा इक रखाइंदा।

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी मनसा सिँघ राम सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर *

परम पुरख प्रभ धुर दा मालक, शाह पातशाह दया कमाइंदा। आदि जुगादी ख़लक ख़ालक, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। कलयुग अन्तिम बणे सालस, सच सालसी आप कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख कढ्ढे ख़ालस, ख़ालस आपणा

संग वखाइंदा। कूड़ी क्रिया निंद्रा मेटे आलस, दुरमति मैल धवाइंदा। सच दुआरे बहि करे अदालत, हक़ हुक्म इक दृढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे करे ना कोई सिफारिश, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करे कोए ना अलामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड डंक सुणाईआ। शब्द संदेसा सुणो कान, धुर दा रागी राग अलाईआ। कलयुग अन्त मिटे निशान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सतिजुग सति होए प्रधान, सच सुच वज्जे वधाईआ। जीव जंत साध सन्त साचा ढोला इक्को गाण, कलमा कायनात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा इक दृढ़ाईआ। धुर दा लेखा श्री भगवन्त, हरि करता आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी महिमा अगणत आदि अन्त भेव ना कोए वखाइंदा। हरिजन उठाए गुरमुख सन्त, सज्जण आपणे घर वसाइंदा। मानस जन्म बणाए बणत, मानुख मानव आपणे दर सुहाइंदा। गुरमुख नारी शब्द प्यारी मेल मिलावा नर हरि नरायण कन्त, आवण जावण जगत विछोड़ा निरगुण सरगुण आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी साहिब सुल्तान, करता पुरख आप कराईआ। लेख जाण ज़िमी असमान, रविदास हुक्म मनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हो प्रधान, जेरज अंड दए समझाईआ। उत्भुज सेत्ज दे ज्ञान, सच संदेसा इक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, दो जहानां वेख वखाइंदा। भेव खुलाए गगन गगनंतर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। शब्द अनादी धुर दा मन्त्र, सति सतिवादी आप पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, लख चुरासी घट घट अन्दर वेख वखाइंदा। बोध आगाधा बण के पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तत ततव सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। खण्ड खण्ड ना कोई वंड, दूजी धार ना कोई चलाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, राजन राज बेपरवाहीआ। सति चढ़ाए सदा सच्चा चन्द, जोती नूर नूर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए छन्द, सोहणा ढोला इक्को गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंग मंग, खाली झोली रहे भराईआ। निरगुण सरगुण वसे संग, आत्म परमात्म लग्गी तोड़ निभाईआ। आवण जावण पतित पावण गिढ़ाउँदा रहे पन्ध, रहिबर आपणा नाउँ रखाईआ। दीन दयाल हो बख्शंद, गुरमुख गुर गुर सज्जण लए तराईआ। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड, पंज तत ब्रह्म मति इक समझाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई गुरमुख गुरसिख, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। नाम अनादी

पा भिख, भरम भुलेखा दूर कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे हित, घर सज्जण मेल मिलाइंदा। करता अबिनाशी वसे चित, चितवत ठगौरी मन ना कोई रखाइंदा। एथे ओथे बण के पित, पूत सपूते गोद बहाइंदा। दरस वखावे नित नवित्त, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। करे खेल साहिब अनडिठ, अनुभव आपणी धार वखाइंदा। लख चुरासी जित, हार सब दी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। हुक्म वरताए इकउँकार, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। लेखा जाण जुग चौकड़ी चार, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, करोड़ तेतीसा नाल मिलाईआ। सुरप्त रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां छहबर रिहा वखाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, दहि दिशा ना कोई रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साडा कोई ना करे एतबार, कलयुग जीव भरमे भुल्ले माया पर्दा ना कोए उठाईआ। जा के वेख आपणा संसार, लोकमात वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। श्री भगवान दया कमौदा ए। निरगुण निरवैर आख सुणौदा ए। लोकमात कूड़ी क्रिया चढ़या कहर, चारों कुण्ट अन्धेरा पौदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। सच संदेसा इक सुणावांगा। हो के निरवैर कार कमावांगा। गुरमुख गुरसिख सज्जण सन्त दुरमति मैल धो के, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। लख चुरासी कोलों साची वस्त खोह के, हरि भगतां झोली आप भरावांगा। दो जहानां ज़िमी असमानां अन्दर वड़के टोह के, कुण्डा खिड़की सब दा आपे लाहवांगा। सति सतिवादी आपे हो के, होका दे के नाम दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी कार कमावेगा। प्रभ आपणा वेस वटावेगा। जोती नूर डगमगावेगा। शब्द नाद तूर सुणावेगा। सर्ब कला भरपूर, समरथ आपणा हुक्म दृढ़ावेगा। कलयुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। बण के दाता योद्धा सूर, गुरमुख सूरे आप उठावेगा। जन्म जन्म दी आसा मनसा पूर, कर्म कर्म दा रोग गंवावेगा। अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर, स्वच्छ सरूपी दरस वखावेगा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, शब्द ज्ञान इक दृढ़ावेगा। जिन्हां बख्शे चरण धूढ़, मस्तक टिक्का इक्को नाम लगावेगा। चार जुग होण मशहूर, मश्वरा आपणे नाल रखावेगा। आदि जुगादी कदी ना तोड़े आपणा दस्तूर, दस्त बदस्त आपणी वस्त हथ्थ फड़ावेगा। जन भगत अरज़ोई कर मंज़ूर, मंज़ल आपणी सच चढ़ावेगा। कोट जन्म दे मुआफ कर कसूर, पतित पापी पार करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनन्द चन्द चन्द अनन्द इक रंग रंगावेगा। अनन्द चन्द गुजरी लाल, गोबिन्द

वेस वटाईआ। सच दुआर सच्ची धर्मसाल, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। ना शाह ना दिसे कंगाल, अदने रूप ना कोए वखाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, नाड़ बहत्तर तलवाड़ा रिहा वजाईआ। अमृत सरोवर सुहाए ताल, साचा झिरना इक झिराईआ। सुण मुरीदां हाल, पुछणहारा थाउँ थाईंआ। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण कँवल दए सरनाईआ। ठाकर स्वामी हो दयाल, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। निरगुण सरगुण मन्न सवाल, सोहणा आपणा मेल मिलाईआ। वेले अन्त ना होए ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। गुरमुख सच्ची मंग मंगाउँदा ए। प्रभ दर अलख जगाउँदा ए। कवण वेला होए प्रतख, भेव अभेदा कवण सखाउँदा ए। लख चुरासी विच्चों रख, सिर आपणा हत्थ टिकाउँदा ए। नाम अमोलक दे के वथ, सच खजीना आप भराउँदा ए। आपणे मिलण दी दे के अक्ख, आखर आपणा मेल कराउँदा ए। हकीकत जाण हक़ो हक़, दूई द्वैत डेरा ढाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लभ्भदे लभ्भदे गए थक्क, लभ्भयां हत्थ किसे ना आउँदा ए। नेत्र रोवे तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नैण शरमाउँदा ए। उच्चे टिल्ले पर्बत सत्थर बैठे घत्त, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर रंग ना कोए रंगाउँदा ए। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खाली दिसण हट्ट, सति वणजारा सौदा सच ना कोए वकाउँदा ए। चले चतुराई ना कोए मन बुध मति, सोच समझ ना कोए रखाउँदा ए। किरपा कर पुरख समरथ, हरिजन इक्को ध्यान लगाउँदा ए। तेरी मेहर किरपा नाल चरण जाए ढठ्ठ, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाउँदा ए। सच सरनाई जाए लग्ग, अगला लेखा तेरी झोली पाउँदा ए। दरस वखा उपर शाह रग, शहिनशाह तेरा नूर इक्को इक डगमगाउँदा ए। त्रैगुण माया अग्नी बुझे अग्ग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए सताउँदा ए। कूड़ी क्रिया जावे छड्ड, भाण्डा भरम भउ भंनाउँदा ए। तेरी आत्म परमात्म क्यों होवे तैथों अड्ड, तुध बिन विछड़े मेल ना कोए मलाउँदा ए। नौ दुआरे जगत वासना चुक्के हद्द, माया ममता तृष्ना तृखा आप भजाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, गुरमुख झोली इक वखाउँदा ए। पुरख अबिनाशी दया कमाउँदा ए। मेहर नज़र इक उठाउँदा ए। साचा फज़ल आप कमाउँदा ए। धुर दा नाम गज़ल सुणाउँदा ए। मंज़ल मंज़ल आप चढ़ाउँदा ए। हरदिल बण सेव कमाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुर आपणी धार मलाउँदा ए। गुरमुख गुर गुर, साचा मेल मिलाउँदा ए। लेखा जाणे लिख्या धुर, मस्तक रेखा पिछली मेट मटाउँदा ए। सच प्रीती जाए जुड़, जोड़ी आपणे नाल रखाउँदा ए। शब्द अगम्मी चढ़ के घुड़, चारों कुण्ट वेख वखाउँदा ए। जन भगतां प्रभ रखी लोड़, बिन भगतां प्रभू कम्म किसे ना आउँदा

ए। लख चुरासी कूड़ा मेटे शोर, साचा कलमा इक समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, गुरसिख गुर गुर गोद बहाउँदा ए। गुरसिख कहे प्रभ तेरी गोदी, साहिब सतिगुर मोहे भाईआ। जिथ्थे बहि के आवे धुर दी सोझी, कूड़ी सोच समझ गंवाईआ। नाम भण्डारा अमृत मिले रोज़ी, राजक रहीम दए पुचाईआ। लेखा चुके लोक परलोकी, दो जहानां डेरा ढाहीआ। शब्द सुणा सच श्लोकी, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ इक्को राग अलाईआ। नाता तुटे जगत पोथी, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। घाटी चढ़ां दशवार औखी, दर तेरे सोभा पाईआ। जगत वासना रहे ना खोटी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। घर वेखां उपर चोटी, चोट नगारे नाम लगाईआ। जिस मन्दिर घर जगे निर्मल जोती, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। जिस गृह बहि के पुरख अकाल सोच सोची, जन भगतां दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा नाम वर, वर दाते तेरी इक सरनाईआ। गुरसिख कहे प्रभ तेरा संग, साहिब सतिगुर सच्चा नज़री आइंदा। जिस विच इक्को प्रेम अनन्द, अनन्द आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म पाए गंढु, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाइंदा। सांतक सति सरूप पाए ठंड, अग्न तत ना कोए रखाइंदा। एथे ओथे दो जहान चरण प्रीती जाए हंढु, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाइंदा। नित नवित्त भगत भगवन्त दर दरवेश मंगण मंग, मांगत गुरमुख इक अख्वाइंदा। तूं साहिब सतिगुर देवणहार सूरा सरबँग, भण्डारा अतोट अतुट वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, वस्त वास्तव आपणी इक वरताइंदा।

६५४ १६

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर *

श्री भगवान कहे मेरा धुर दा कर्म, नेहकर्मी हो के दया कमाइंदा। भगत उधारना मेरा धर्म, सच धर्मी धर्म रखाइंदा। सरन सरनाई देवां सरन, सरनगति इक समझाइंदा। भेव चुका वरन बरन, ज़ात पात डेरा ढाइंदा। गेड़ निवार मरन डरन, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। दयाल बणके तारन तरन, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख पोड़े साचे चढ़न, फड़ बांहों आप उठाइंदा। साचा ढोला इक्को पढ़न, जुग चौकड़ी सोहँ राग सुणाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे वड़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरि जन जन साचे आप समझाइंदा। आदि जुगादी मेरी कार, हरि करता आप जणाइंदा। सन्त सुहेले देवां तार, भवजल पार कनारा आप वखाइंदा । जगत विछोड़ा देवां नवार, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप वखाइंदा। भगत

६५५ १६

कहे प्रभ दस्स बिध, दर इक्को मंग मंगाईआ। कारज कर गुरमुख सिध, सिध साधक तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के नौ निध, सिध अठारां डेरा ढाहीआ। इक्को उपजे तेरा हित, सच प्रेम दे प्रगटाईआ। अट्ठे पहर वसें चित, नित नवित्त आपणा नाम जपाईआ। बण के धुरदरगाही पित, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। अगला लेखा दे लिख, पिछला लहिणा दे मुकाईआ। घर दर्शन देणा निज, निज गृह डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लै मलाईआ। जन भगत मलाउणा मेरा खेल, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। आदि जुगादि बण के सज्जण सुहेल, घर सच्चा संग निभाइंदा। पर्दा लाह धाम नवेल, गृह मन्दिर इक वखाइंदा। कूड़ी क्रिया कटे जेल, बंदीखाना बंद नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत कहे प्रभ तूं बंदी छोड़, साडे बन्धन दे कटाईआ। तेरे हथ्थ फड़ाई डोर, दूजा नज़र कोई ना आईआ। कर प्रकाश अन्ध घोर, जगत अन्धेर दे मिटाईआ। नाद सुणा सच्ची घनघोर, अनहद आपणा राग अलाईआ । लेख चुक्के मोर तोर, तेरा मेरा इक्को रूप समाईआ। दीन दयाल तेरी लोड़, भगत वछल तेरी सरनाईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, जिस विच तेरा नूर नज़री आईआ। श्री भगवान कहे मेरा सच्चा राह, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सदा सुहेला बण मलाह, खेवट खेट सेव कमाइंदा। धुर दी देवां सच सलाह, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सन्त सुहेले आप जगा, जागरत जोत इक जगाइंदा। परम पुरख दा सिमरो नाँ, दूजा इष्ट ना कोए रखाइंदा। दीन दयाल हो के मेहरवां, मेहर नज़र उठाइंदा। कोट जन्म दे पाप गंवा, दुरमति मैल धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जन भगत कहे प्रभ तेरी आस, इक ध्यान लगाईआ। जन्म जन्म दी मिटे प्यास, तृष्ना तृखा रहिण ना पाईआ। सदा सदा सद वसो पास, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म कारज करीं रास, मण्डल रास आप रचाईआ। सब कुछ प्रभ तेरे हाथ, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। हउँ बालक दीन अनाथां नाथ, चाकर ख़ाक रूप अख्वाईआ। सदा सदा सद मंगां तेरा साथ, सच तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दे धुर दा वर, जिस विच तेरा विचला घर नज़री आईआ।

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी बीबी चरण कौर दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर *

जन भगतां दे नाम वस्त, प्रभू आपणे रंग रंगाइंदा। नाम खुमारी करे मस्त, साचा रस इक जणाइंदा। लेखा चुका

कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे गले लगाइंदा। नाम वस्त शब्द खुमारी, रंग सच्चा इक चढ़ाईआ। सच प्रीती दरस दीदारी, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूंघी कन्दर फोल फोलाईआ। नौ सौ चुरानवे युग पिच्छों जन भगतां आई इक्को वारी, वार थित सच समझाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर जो सति सरूप ला के गए फुलवाड़ी, सो पुरख अकाल पत डाली वेख वखाइंदा। कवण बूटा रुत्त बसन्त लए बहारी, कवण खिजां विच समाइंदा। कवण गुलशन खिली सच क्यारी, कवण गुल फुल्ल महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचे वेखण आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरमुख गुर गुर लए जगाया, सन्त सुहेले लए उठाईआ। त्रैगुण माया पर्दा लाहया, सच मेला सहिज सुभाईआ। सज्जण सुहेला अक्ख खुल्हाया, नेत्र नैण करे रुशनाईआ। महल अटल इक दरसाया, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीआ बाती कमलापाती इक जगाया, जोती नूर करे रुशनाईआ। बण के साकी जाम प्याया, सच सुराही हथ्थ उठाईआ। नाम खुमारी नशा चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन कहे मेरे महिबूब, मुहब्बत तेरी नज़री आईआ। महल अटल तेरा अरूज, अर्श कुर्श तेरी रुशनाईआ। तेरे चरण दुआरे सदा महिफूज़, दुःख दर्द ना लागे राईआ। साचा दे इक हकूक, दर तेरे मंग मंगाईआ। तेरे होईए सदा मशकूर, मुश्किल डेरा दी ढाहीआ। नाम जणा बिनां हरूफ़, हरफ़ तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरे प्रेम अन्दर रहीए मसरूफ़, अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। मंज़ल चढ़ीए सच मक्सूद, साहिब तेरा दर्शन पाईआ। भेव खुल्ह्या अगम्मी गूझ, गुर पर्दा दए उठाईआ। चारों कुण्ट दिसे मौजूद, हर घट बैठा नज़री आईआ। तेरे मिलण दी लग्गी भूख, भुक्ख्यां तृप्त दे कराईआ। पिछला लहिणा कर मनसूख, अगला लेखा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक लगाईआ। साहिब सतिगुर देवे दरस, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। भगत सुहेला भगतां वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ । हरिजन मन्नों धुर दा सच्च, सच शब्द गुरू शनवाईआ। काया माटी भांडा कच्च, पंज तत वज्जे वधाईआ। दोए जोड़ बन्दन खोल्ह हथ्थ, सरन धूढ़ चरण रमाईआ। बिन रसना जिह्वा गाओ गथ, आत्म परमात्म राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दे वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ देणा की, तेरे हथ्थ कुछ नहीं आइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मेरा उत्तम जी, ब्रह्म मेरा रूप सोभा पाइंदा। गुरमुख कहे एह नहीं ठीक, तेरा भेव सच ना कोए समझाइंदा। श्री भगवान कहे उह वेला अन्त तारीख, थित वार वेख वखाइंदा। जिस वेले लेखा चुकावे लाशरीक, शरारत सब दी आप गवाइंदा। आपणे हथ्थ रख

तोफीक, ताबिआदार सर्ब बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। पारब्रह्म की तेरा हुक्म, हुक्मे अन्दर सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मेरा तुख्म, तासीर आपणे नाल मिलाईआ। भगत कहे मेरा रूप सूखम, सति सति तेरी वड्याईआ। भगवान कहे मेरा गुरमुख उत्तम, श्रेष्ट इक्को नज़री आईआ। भगत कहे मैं तेरा पुत्तर, पिता पुरख अकाल मनाईआ। अबिनाशी करता कहे मैं करां शुकर, घर साचे खुशी मनाईआ। गुरमुख कहे मैं तेरी धारों आया उतर, घर घर विच सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे खेल रिहा वखाईआ। पुरख अकाल कहे जन वेख भगत, सुरत तेरी खुल्हाईआ। भगत कहे मैं छड्डुया जगत, प्रभू तेरी ओट तकाईआ। दोहां सुहेला होए वक्त, घड़ी सुहञ्जणी सोभा पाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अन्दर रहे कोई ना फरक, फैसला इक्को वार समझाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी लाउँदे गए शर्त, सो शहिनशाह वेख वखाईआ। निरगुण हो के आया परत, सरगुण देवणहार वड्याईआ। पिछली वेख लिख्त पढ़त, परदे सब दे फोल फुलाईआ। करे खेल आप नधड़क, भय भउ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख होण ना देवे हर्ज, हर्जाना पिछला पूर कराईआ।

६५७ १६

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी बीबी हरबंस कौर दे गृह आरीआ महल्ला लुधियाणा *

जुग जुग मेला भगत भगवन्त, हरि करता आप कराइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़ गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाइंदा। लहिणा देणा चुका माया ममत, तृष्ना भुक्ख सर्ब गवाइंदा। काया चोली चाढ़ साचा रंगत, रंग अगम्मड़ा आप रंगाइंदा। गुरमुख बणा साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। सुरती शब्दी मेल कराए नार कन्त, घर घर सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। लहिणा देणा तोड़ बहिश्त जन्नत, स्वर्ग चरणां हेठ रखाइंदा। जोत मिलावा देवे अन्त, जोती जाता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, भगवन आपणा खेल वखाइंदा। भगत भगवान सदा जग मेला, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आदि जुगादि इक अकेला, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। जन भगत बणा के सज्जण सुहेला, धुर दा संगी संग निभाईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, धुर दा लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत मिले प्रभ ठाकर स्वामी, दीन दयाल दया कमाइंदा। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट अन्तर फोल फुलाइंदा। बोध अगाध अगम्मी सुणाए बाणी, शब्द अनादी राग अल्हाइंदा। अमृत आत्म

पीए ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराइंदा। पर्दा लाहे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए हाणीआं हाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। आत्म परमात्म करे मिलाप, घर साचे वज्जे वधाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। बिन रसना जिह्वा जपाए जाप, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। शब्द अगम्मी धुर दा पाठ, पूजा सिमरन इक रखाईआ। महल अटल कर प्रकाश, जोती नूर करे रुशनाईआ। धुन आत्मक वज्जे नाद, अनहद सेव कमाईआ। सुरत शब्द देवे दात, दाता दानी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर पुछे बात, सदा सुहेला होए सहाईआ। लेखा जाण त्रिलोकी नाथ, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जन भगतां संग पावे रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। काया मन्दिर अन्दर सद वसे पास, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। आत्म परमात्म दस्से इक्को ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वेख वखाईआ। भगत सुहेला साहिब ठाकर, हरि करता खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया गागर, गहर गम्भीर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगतां वेख होए दयाल, साहिब स्वामी वड वड्याईआ। हरिजन बणाए आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंज तत करे सफ़ाईआ। दीआ बाती जोती नूर इक्को बाल, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। भाग लगा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक जणाईआ। जिस गृह पोह ना सके काल, महाकाल नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां सहाई साहिब सुख दाता, भगवन आपणी खेल वरताइंदा। लख चुरासी विच्चों उत्तम ज़ाता, अजाति रूप ना कोए वटाइंदा। नज़री आए इक इकांता, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। बातन ज़ाहर करे बातां, गुप्त शनीद रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसाए साचे मन्दिर, महल अटल करे रुशनाईआ। भाग लगाए काया कन्दर, डूंघी भँवरी फोल फुलाईआ। आपे तोड़ हँकारी जन्दर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। मन वासना भज्जे ना बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन देवे हरिजू जोग, जुगत आपणी इक जणाइंदा। आत्म परमात्म धुर संजोग, बण संजोगी मेल मलाइंदा। जन्म कर्म दा कटे रोग, चिन्ता रोग सर्ब चुकाइंदा। निज नेत्र देवे दरस अमोघ, दोए लोचण बंद वखाइंदा। नाम सुणाए सच श्लोक, सोहला इक्को राग अलाइंदा। भेव मिटाए चौदां लोक, चौदां तबक डेरा ढाइंदा। पुरख अकाल दस्से ओट, जोती जोत सरूप हरि,

६५८
१६

आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आपणे रंग रंगाइंदा। हरि भगत रंगे रंग एक, इकउंकार वड्डी वड्याईआ। चरण कँवल बख्शे टेक, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। बुद्धी करे आप विवेक, विवेकी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दए वड्याईआ। हरि भगत कलयुग अन्त, सो साहिब सतिगुर आप बणाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दी करे नाम पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया करके खण्डत, अखण्ड रूप दरसाईआ। दर बण के मंगत, साची भिच्छया इक्को इक समझाईआ। सच दवारा हरि की संगत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत राह जणाईआ। जन भगतां राह दस्से अवल्ला, अवल्ल आपणा नूर दृढ़ाईआ। परवरदिगार फड़ाए पल्ला, मुरीद मुर्शद होए सहाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, अगम्म अथाह फेरा पाईआ। जोती शब्दी धार रल्ला, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। वेखणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। सच सिँघासण जिस ने मल्ला, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। जन भगत दुआर फिरे हो के झल्ला, निर्धन आपणी झलक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा देवे थाउँ थाईंआ। हरिजन लेखा देवे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। परम पुरख प्रभ माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। अन्तर अन्तर जपाए जाप, सोहणा मन्त्र इक समझाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैभवण धनी आपणा फेरा पाईआ। पतित पुनीत करे पाक, पवित आपणा रंग वखाईआ। निरगुण सरगुण बण बण सज्जण साक, बंधप बन्दन इक्को इक रखाईआ। घर दरवाज़ा खोल्ह ताक, पर्दा ओहला दए उठाईआ। जोती नूर कर प्रकाश, साचा चन्द इक चमकाईआ। लेखे ला पवण स्वास, पवण पवणा रंग रंगाईआ। प्रीतम हो के वसे पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत वड्याई अन्तिम कल, हरि करता आप जणाइंदा। लख चुरासी वल छल, अछल अछल्ल आपणा खेल वखाइंदा। गुरमुखां अन्दर जाए रल, रचया नज़र किसे ना आइंदा। भाग लगा काया माटी पंज तत खल्ल, दर मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे लए फड़, शब्दी डोरी तन्द बंधाइंदा। भगत भगवान आप फड़, लख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। निरगुण निरवैर होए अन्दर जाए वड़, सुखमण टेडी बंक पार कराईआ। साचा ढोला सुणाए पढ़, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रूप नज़री आईआ। दरस दिखाए सच दवारे खड़्ह, सति सरूपी रूप प्रगटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेला लगाए लड़, पल्लू आपणे गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जुग जुग भगतां लए तराईआ।

जुग चौकड़ी भगतन रीता, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी अचरज रीता, असचरज आप समझाईआ। जिस दी सिफ्त शास्त्र वेद पुराण करे गीता, अञ्जील कुरान मसला हक़ सुणाईआ। सो साहिब पुरख अकाल पवरदिगार सदा अनडीठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। हर घट वसया लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँच नीचां मेल मलाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस प्रगट कीता, पंज तत दिती वड्याईआ। सो साहिब सतिगुर ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कलयुग अन्त सर्ब जीआं परखे नीता, नीतीवान घर घर वेख वखाईआ। फोल फुलाए मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला मसीता, गुरदवारा पर्दा लाहीआ। गुरमुख विरला जिस हरि हिरदे वसया चीता, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। तत्तां पुरख अकाल चाढ़े रंग इक मजीठा, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। कूड़ी क्रिया तपे ना कोए अंगीठा, पंज तत ना कोए जलाईआ। मेहर नज़र मेहरवान करके हरि भगत करे ठंडा सीता, अमृत धार इक वहाईआ। एथे ओथे दो जहान रखे अतीता, लोक परलोक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक वर, सच प्रीती श्री भगवान आपणे नाल रखाईआ।

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी नछत्र सिँघ दे गृह दोराहा ज़िला लुधियाणा *

६६० १६

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, सति सतिवादी आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह सिक्दार, शहिनशाह आपणी खेल कराइंदा। इकउँकार हो त्यार, धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। आदि निरंजन नूर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। अबिनाशी करता पावे सार, बेपरवाह भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। श्री भगवान वेखे विगसे वेखणहार, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ खोल्ह किवाड़, दर घर साचा इक सुहाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल न्यार, पतिपरमेश्वर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर निराकार नर हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। सचखण्ड दवारे सच महल्ले, हरि साची रचन रचाईआ। दीआ दीपक जोती आपे बले, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। सच संदेसे बोध अगाधी आपे घल्ले, धुर दी करे इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण, सोभावन्त सोभा पाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता वेस वटाईआ। निर्मल नूर जोत प्रकाशन, नूर ज़हूर इक जणाईआ। निरगुण निरगुण बणया साथन, दूजा संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए वड्याईआ। सच दवारा धुरदरगाह, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। लाशरीक इक खुदा, नूरी जलवा नूर डगमगाइंदा। सति सतिवादी वेस वटा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सच दरबार इक लगाइंदा। सच दरबारा गया लग्ग, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी सूरा सरबग्ग, शहिनशाह आपणा खेल रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लए सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जीव जगत वखाई हद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। निर्भय चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लोकमात जो आए धर, धरनी धरत धवल दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। सचखण्ड दवारे बैठ निरँकार, निरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। विष्नूं वेख कर ध्यान, नेत्र लोचण नैण इक खुल्हाईआ। ब्रह्मे हो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। शंकर नेत्र नैण उग्घाड़, जटा जूट दए समझाईआ। भगत भगवान लए उठाल, भेव अभेद आपणा आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पर्दा ओहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सचखण्ड दवारे पुरख अबिनाशा, हरि करता खेल रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात वेखो तमाशा, कलयुग अन्तिम रिहा जणाईआ। चारो कुण्ट अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जीव जंत धुर दा भुल्लया पूजा पाठा, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म देवे किसे ना साथा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मलाईआ। साहिब सरनाई चरण कँवल जोड़े ना कोई नाता, बिधाता सीस ना कोए झुकाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता काया भरया बाटा, अमृत रस निझर झिरना घर घर ना कोए झिराईआ। नेत्र रोवे तीर्थ अठ साठा, सगला संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी भेव खुल्हाईआ। जन भगत करो विचार, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। दर दर घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना माया ममता करे लड़ाईआ। सतिगुर शब्द ना कोए प्यार, सुरत सुआणी साचा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच घर बैठा सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारे हरि जू चढ़, गुर अवतार पीर पैगम्बरां रिहा जणाईआ। लख चुरासी वेखे खड़, निरगुण सरगुण पर्दा सर्ब उठाईआ। जानणहारा चोटी जड़, मध आपणी धार प्रगटाईआ। जीव जंत नौ दवारे पार करे ना कोई हद्द, घर विच घर होए ना किसे रसाईआ। गुरमति सारे गए छड्ड, मन मति फिरे जगत हल्काईआ। आत्म परमात्म होई अड्ड, धुर दा मेल ना कोए मलाईआ। धुर निशाना कोई ना देवे गड्ड, साचे तख्त सोभा कोए ना पाईआ। अनहद शब्द नाद धुन कोई ना वजावे नद, आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। पंच विकारा पर्दा कोई

ना देवे कज्ज, ओढण नज़र कोए ना आईआ। विष्नूं दिसे कोए ना यद, ज़ात पात करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी साचा पर्दा आप उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्के राह, हरि करता आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण बण के आए मलाह, बेड़ा लोकमात इक्को कंध उठाइंदा। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी जीवां जंतां आए सुणा, सोहला ढोला राग अल्हाइंदा। कागद कलम लिख के छाह, नाता जगत मात जुड़ाइंदा। सब दा दाता बेपरवाह, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जो वसे उच्चे टिल्ले पर्बत जल अस्गाह, डूंघी कन्दर समुंद सागर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप दृढ़ाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो कम्म, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। हरि का नाम कोई ना गाए दमां दम, रसना जिह्वा बंती दन्द संग ना कोए निभाईआ। माया ममता हउमे हंगता प्या जन, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। कूड़ विकारा देवे डंन, डंका नाम ना कोए सुणाईआ। दोए लोचण होए अन्न्ह, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। सच संगीत ना सरवण सुणन कन्न, दीद ईद चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग दिशा रिहा वखाईआ। पीर पैगम्बर वेखो हालात, परवरदिगार आप जणाईआ। चौदां तबक खेल तमाश, हरि करता आप दृढ़ाईआ। लेख वेखो लिख्या कलम दवात, शाही देवे आप गवाहीआ। अल्फ़ ये अन्त ना देवे साथ, नाता लोकमात तुड़ाईआ। कलमा नबी रसूल पाक, बेपरवाह इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा समझाईआ। पीर पैगम्बर खोल्हो ताक, हरि तकवा इक जणाइंदा। सदी चौधवीं साचा कलमा किसे ना साथ, कायम नज़र कोए ना आइंदा। लहिणा देणा कोई ना करे बेबाक, हिसाब किताब ना कोए चुकाइंदा। साचे हुजरे मिले ना कोए खताब, महिराब हक़ ना कोए वखाइंदा। उच्ची कूक देवे ना कोए आवाज़, बांग सदा ना कोए अल्हाइंदा। साची पढ़े ना कोई निमाज़, रोजा हक़ ना कोए वखाइंदा। दरगाह साची मिले ना कोए खिताब, खता माफ़ ना कोए कराइंदा। सजदा सीस ना झुके आदाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर लाहो पड़दा, परवरदगार आप जणाईआ। मुल्ला शेख़ मुशायक वेखो सड़दा, कूड़ी क्रिया कलयुग अग्नी लाईआ। साची दरगाह कोई ना वड़दा, दोज़ख बहिश्त दोवें रहे डराईआ। दीन दयाल करता पुरख हरि करनी आपे करदा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साचा धाम अवल्ला, वसणहारा इक अकल्ला, आलमीन रिहा समझाईआ। गुर अवतार लउँ तक्क, सो साहिब सच सच जणाईआ। सृष्ट सबाई प्या शक़, पुरख अकाल ध्यान ना कोए लगाईआ। भेख पखण्ड चारों कुण्ट

रिहा नट्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, सर सरोवर सोभा कोए ना पाईआ। काम वासना खुल्ह्या हट्ट, लख चुरासी जगत वणजारा नज़री आईआ। हिरदे हरि का नाम कोई ना लए रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। मिले मेल ना कमलापति, कन्त कन्तूहल घर सेज ना कोई सुहाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सब नूं भुल्ली धुर दी मति, गुरमति हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां रिहा तक्क, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा ध्यान लगाईआ। सचखण्ड निवासी हरि निरँकार, जन भगतां आख जणाईआ। उठो वेखो मात संसार, सगल सृष्टी रिहा दृढ़ाईआ। घर घर दिसे कूड़ विभचार, नार दुहागण नज़री आईआ। हरि कन्त ना कोए प्यार, सुहञ्जणी सेज सोभा कोए ना पाईआ। मिल सखीआं कोई ना मंगलाचार, गीत गोबिन्द ना कोए अल्हाईआ। गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले हाहाकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, धुरदरबारी पर्दा आप उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, मता इक्को वार पकाईआ। कलयुग अन्तिम भुल्ले सारे राह, साचा मार्ग सके ना कोए समझाईआ। नानक निरगुण निरँकार दस्स के आया इक्को बेपरवाह, परवरदगार सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द गुर किहा पुरख अकाल लओ मना, दूजा इष्ट दृष्ट ना कोई खुल्हाईआ। हर घट हर थाँ होए सहा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी रचन रचाईआ। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर सर्ब जीआं दा पिता माँ, पूत सपूते गोद उठाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाईआ। इक जणाए धुर दा नाँ, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। चार वरनां देवे सच पनाह, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक घर वखाईआ। निमाणयां निताणयां ग़रीबां पकड़े बांह, कोझयां कमल्यां आपणे गले लगाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि सतिगुर पुरख आप लए मिला, घर मिलणी जगदीश आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत प्रकाशी, नूर नुराना शाह सुल्ताना वड रहमाना रहीम रहमत आपणी आप कमाईआ।

✻ १५ फग्गण २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह बरकत पुरा ज़िला पटियाला ✻

सतिगुर पास ना रहे अड़क, अड़िकणा कूड़ ना कोए वखाइंदा। जुग जन्म दे जो रहे भटक, कर किरपा भटकणा सर्ब मिटाइंदा। नेत्र निज दरस रहे तड़प, तिन्हां आपणा रंग वखाइंदा। अद्धविचकार ना जाए अटक, फड़ बांहो पार कराइंदा। सच दुआर दी सिधी सड़क, शब्द इशारे नाल वखाइंदा। शहिनशाह सुल्तान परम पुरख प्रभ इक्को मर्द, मर्द मर्दाना इक अख्वाइंदा।

गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां साचे सन्तां जुग जुग वंडे दर्द, दर्दी होए फेरा पाइंदा। मानस जन्म लख चुरासी विच्चों होण ना देवे हर्ज, पूरब हर्जानां झोली पाइंदा। घर मुकाम महिबूब वखाए असचरज, पर्दा उहला आप उठाइंदा। आसा तृष्ना पूरी करे गरज़, ग़ज़ल नगमा नाम निधान इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख अन्दर अड़क ना कोए रखाइंदा। अड़क कढे प्रभ सच्चा आप, पूरे सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म सति सरूप जपाया जाप, सोहँ सच वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे मिलाप, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। निज घर निज गृह घर मिले सज्जण साक, सगला संग वखाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। वस्त वकाए इक्को हाट, नाम वणजारा बेपरवाहीआ। जगत मेट अन्धेरी रात, शब्दी चन्द नूर चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरी दोहा दी इक्को गाथ, दूजी करे ना कोई पढ़ाईआ। एथे ओथे मुके वाट, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस अड़क अटक रहिण कोए ना पाईआ। अड़क निमाणी पवे रो, नेत्र नैणां मारे धाईआ। जिन्हां गुरमुखां साहिब सतिगुर निरगुण सरगुण रूप मिल्या आपे हो, पंज तत काया चोला वेखे चाईं चाईंआ। शब्द अगम्म धुरदरगाही सुणाए सो, सोहला ढोला राग अलाहीआ। हँ ब्रह्म आपे हो, घर मेला सहिज सुभाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना देवे चो, रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। सतिगुर मिलयां अड़क हो जाए चूर, आपणा आप मिटाईआ। नज़री आए हाज़र हज़ूर, हिरदे अन्दर वसया बेपरवाहीआ। शब्द नाद धुन उपजाए साची तूर, अनहद रागी राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े कूड़, सच सुच्च दए समझाईआ। आसा मनसा करे पूर, तृष्ना जगत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मार्ग सिध इक्को इक रखाईआ। अड़क कहे मैं हो निमाणी, बलहीण दयां दुहाईआ। जिन्हां गुरमुखां साहिब सतिगुर देवे पद निरबाणी, निरबाण पद इक दरसाईआ। सो गुरमुख सच दुआर दी वेखण सच निशानी, सचखण्ड हरि साचा नज़री आईआ। आत्म परमात्म मिल के गाइन कहाणी, कथा वारता इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ्त सालाही जगत बाणी, खाणी चारे दए वड्याईआ।

* १५ फग्गण २०२० बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल *

पारब्रह्म तेरा वेख्या जग्ग, जन भगत रहे सुणाईआ। नव नौ चार लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए वरसाईआ। कूड़ी

क्रिया सृष्टी रही भज्ज, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा दरस मिले ना किसे उपर शाह रग, शाह पातशाह नज़र किसे ना आईआ। सूफी करे कोई ना हज्ज, हकीकत हक़ ना कोए वड्याईआ। सन्त खोल्हे कोई ना अक्ख, लोचण नैण ना कोए जणाईआ। दहि दिशा खेड़ा दिसे भड्ड, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। फिरी दरोही अठसठ, मक्का काअबा रिहा कुरलाईआ। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, साचा नद ना कोए शनवाईआ। मिले मेल ना सूरे सरबग्ग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, मिले तेरी सरन सरनाईआ। भगत कहिण प्रभ वेख्या लोकमात, तेरे हुक्मे अन्दर फेरा पाईआ। साची दिसे ना कोई जमात, वरन बरन करे लड़ाईआ। मन्त्र जाणे ना कोई पाठ, पूजा करे सर्ब लोकाईआ। मण्डल वेखी ना पैंदी रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। तेरे भगत होए उदास, बिन तेरे रहे कुरलाईआ। कर किरपा पूरी कर आस, कूड़ी तृष्ना दे मिटाईआ। पवणां विच्चों पवण स्वास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मी वर, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दर तेरे कूक, चार कुण्ट जणाईआ। केहड़ी नींदे सुत्ता घूक, निरगुण निरवैर लै अंगड़ाईआ। नेत्र वेख चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। घर घर अन्दर दिसे झूठ, कूड़ी क्रिया करी कुड़माईआ। जीव जंत बणे कपूत, सच सपूत नज़र कोए ना आईआ। भाग लग्गे ना पंज तत काया भूत, भेव भविक्खत ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करके गए कूच, कूचा गली खाली नज़री आईआ। जन भगत कहिण प्रभ नेत्र खोल्ह, बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। साची वस्त ना किसे कोल, चौदां लोक खाली देण दुहाईआ। चौदां तबक वज्जया ढोल, पीर पैगम्बर हाहाकार रहे सुणाईआ। सति सरूपी पूरा कर आपणा कौल, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत धौल, धवला हौला भार ना कोए कराईआ। तेरा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, ग्रन्थी पन्थी मुल्लां शेख़ मुशायक समझ कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया पंज तत प्या घोल, आसा तृष्ना माया ममता हउमे हंगता करे लड़ाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले ठग्गां चोरां लए फोल, दिवस रैण वेख वखाईआ। तेरे गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले होए अनभोल, बिन तेरी किरपा सुरत ना कोए खुल्हाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म वस कोल, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। आदि जुगादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सदा अडोल, अडुल तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ ठाकर स्वामी, सच तेरी ओट तकाईआ। घट घट वेखीं अन्तरयामी, भेव अभेदा नैण खुल्हाईआ। इक्को सुणीए तेरी बोध अगाध अगम्मी बाणी, दूजा राग नाद ना कोए वड्याईआ। निर्मल नूरी जोत दरस तेरा महानी, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ।

लेखा चुक्के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाता दे तुड़ाईआ। अमृत आत्म सच सरोवर ठंडा रहे पाणी, अंमिउँ रस इक्को बूँद चुआईआ। शब्द मिलावा सुरती हाणी, घर साचा जोड़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा घर, जिस गृह बहि के खुशी मनाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, की तेरी वड्याईआ। कलयुग वेख जगत रुत्त, तेरे भगतां मूल ना भाईआ। बेपरवाह क्यों बैठों लुक, आपणा मुख छुपाईआ। निरगुण निरगुण धारों उठ, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तेरे दवारे मिले सच सुच, तेरा रूप नज़री आईआ। ग़रीब निमाणयां कोझया कमल्यां आ के पुच्छ, बेनज़ीर आपणा पन्ध मुकाईआ। असीं दरस करीए नेत्र नैण झुक, चरण कँवल सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे मुकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ उठ जाग, सचखण्ड निवासी आपणी लै अंगड़ाईआ। बिरहों विछोड़ा लग्गा इक विराग, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ा लग्गे समाज, सच समग्री हथ्थ किसे ना आईआ। आत्म परमात्म किसे ना रचया काज, लख चुरासी घर घर करे कुड़माईआ। तेरा नाम दौलत कोई ना देवे दाज, वस्त अमोलक हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। शब्द अगम्म धुन अनाद आत्म बोध कोई ना लावे आवाज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब हिलाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना करे विस्माद, बिस्मिल रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग भरया जहाज, डूंघा सागर पार ना कोए कराईआ। जन भगत तेरा मुहताज, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। जन भगत कहे प्रभ मैं ग़रीब, मेरे विच ना कोए वड्याईआ। बाला नढ्ढा तेरा अज़ीज़, बाली बुध रखाईआ। बोलण दी दस्सी ना किसे तमीज़, तबअ देवे ना कोए बदलाईआ। इक्को तेरे मिलण दी रीझ, दूजी आस ना कोए तकाईआ। ठाकर स्वामी मंगां भीख, भिखक भिच्छया झोली दे भराईआ। दूर दुराडे नज़र आ नज़दीक, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तेरा पन्ध मार्ग रहिबर राह तेरा बारीक, रस्ता समझ किसे ना आईआ। सचखण्ड निवासी मुकामे हक़ वसें ठीक, लाशरीक आपणा नाउँ रखाईआ। परवरदिगारा तेरी तौफ़ीक, तुआरफ करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरिजन तेरा ध्यान लगाईआ। भगत कहे प्रभ मेरे ठाकर, सच सच दयां दृढ़ाईआ। उठ वेख आपणा कलयुग सागर, भँवरी इक्को नज़री आईआ। साचा वणज करे ना कोए सौदागर, कूड़ा हट्ट जगत लोकाईआ। भाग लग्गे ना काया गागर, गहर गम्भीर नज़र कोए ना उठाईआ । तुध बिन देवे कोई ना आदर, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत, धुर दा लेख जणाईआ। सच वड्याई देवां जगत, जागरत जोत इक रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ

के फकत, फिकरा आपणा नाम सुणाईआ। लेखे ला बूँद रक्त, रत्ती रत आपणे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म देवां शक्ति, शकसीअत इक्को इक समझाईआ। सो वेला सुहञ्जणा आए वक्त, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। लेखा चुक्के चिन्ता सोग हरख़, ग़मी ग़म ना कोए वखाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले करे परख, नाम घसवटी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां देवे प्रभू दिलासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाढ्ढे अन्दर निरगुण वासा, सरगुण सोभा पाईआ। दीआ दीपक निरगुण जोत करे प्रकाशा, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। अमृत आत्म भर प्याए कासा, साचा जाम इक रखाईआ। जन्म जन्म दा कटे फाँसा, कर्म कर्म दा रोग गुआईआ। लेखा जाणे पवण स्वासा, पवण पवणां वेख वखाईआ। डेरा ढाए पृथ्मी अकाशा, मण्डल मण्डप चरणां हेठ रखाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरा करे घाटा, लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत हरि भगवन बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। जन्म कर्म दा होया सच्चा, नेहकर्मी वेख वखाईआ। काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन रूप आप वटाईआ। लूं लूं अन्दर निरगुण रचा, साढे तिन्न करोड़ दए वड्याईआ। प्रेम प्रीती अन्दर कहे गुरमुख अच्छा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। जन भगत तेरा धुर दा नाता, हरि सतिगुर आप बंधाईआ। निरवैर निराकार निरगुण देवे साथा, सगला संग निभाईआ। गृह मन्दिर घर स्वामी करे हासा, खुशीआं गीत अलाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही आपणी मंज़ल आए नाठा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी राता, सति सतिवादी चन्द चमकाईआ। दो जहानां बणके पिता माता, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। नाम भण्डारा दे के दाता, दातार वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। भगवान कहे जन भगत सुत, सुत दुलारा इक अख्वाईआ। दो जहान सुहाए रुत्त, बसन्त बहार नैण शरमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी सो रहे पुच्छ, सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण झुक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत रखो सदा याद, हरि करतार आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों सुणी फरियाद, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, बिन नेत्र अक्खां वेखे चाईं चाईंआ। अन्दर वड़ के खोले राज़, गृह मन्दिर भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। जन भगत अग्गों सुणाउँदा ए। उच्ची कूक कूक अलाउँदा ए। पिछला दुःख आप ए। सुख तेरी झोली पाउँदा ए। किस दवारे बैठा लुक, प्रभ नज़र मूल ना आउँदा ए। साडे

६६८
१६

कोल नहीं किछ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा इक रखाउँदा ए। श्री भगवान आख सुणाया ए। धुर दा बोल इक जणाया ए। अडोल अडुल वेस वटाया ए। हरिजन वसे सदा कोल, घर मन्दिर सोभा पाया ए। शब्द अगम्मी कंडे तोल, तराज़ू इक्को हथ्थ उठाया ए। सच भण्डारा दए अनमोल, अनमुलड़ी दात वरताया ए। हिरदे अन्तर आत्म जाए मौल, मौला आपणा रंग रंगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आप वडयाया ए। जन भगत कहे मैं मूल ना मन्नां, मनसा तेरे नाल मिलाईआ। जिन्ना चिर ना आवें भंनां, घर मैंडे फेरा पाईआ। की साडे नालों चंगा जट धन्ना, जिस गृह आपणी खुशी मनाईआ। नामे छुहाई छप्पर छन्ना, मेहर नज़र टिकाईआ। रविदास चुमारे मेल मिलाया बण के अन्ना, नेत्र नैण वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी तेरीआं सुणदे रहे गल्लां, वल छलधारी बेपरवाहीआ। मुरीद मुर्शद सुणाउँदे रहे अल्ला, अलाही नूर धुरदरगाहीआ। गुर अवतार फड़ाउँदे रहे पल्ला, पल्लू तेरी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन दे सहिज सुखदाईआ। भगत कहे प्रभ मैं होया हैरान, की तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहों शैतान, शरअ मज़्हब करे लड़ाईआ । चारों कुण्ट कर वैरान, जुग चौकड़ी खेह उडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बाल निधान, धुर दा हुक्म आप जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान लेखा लिख के अञ्जील कुरान, तरैत शरायत इक दृढ़ाईआ। खाणी बाणी बोध अगाध दे मेहरवान, परवाना आपणा नाम हथ्थ फड़ाईआ। संग रला गोपी काहन, मण्डल मण्डप रास रचाईआ। माण दे सीता राम, सखीआं मंगल इक सुणाईआ। आप सचखण्ड दवारे करदा रिहों आराम, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे पैग़ाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। नानक निरगुण मन्त्र सतिनाम, सति सतिवादी इक समझाईआ। गोबिन्द अमृत प्या जाम, रस इक्को इक वखाईआ। फतहि डंका विच जहान, वाह वाह गुरू करी शनवाईआ। आपणा दस्सया ना किसे निशान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि कहि सारे गए सुणाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। आ के वेख आपणा जहान, जहालत घर घर नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया झूठ तुफान, तोहफा कलयुग रिहा वरताईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना किसे ज्ञान, आत्म परमात्म पर्दा कोए ना लाहीआ। सति धर्म दा दिसे ना कोए विधान, राउ रंक राज राजान बैठे ढेरीआं ढाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ्ढ पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी धीआं भैणां तकाण, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना किसे शरमाईआ । अढ्ढ सढ्ढ तीर्थ कूड़ी क्रिया खुल्ही दुकान, नारी पुरुष नर नरायण सार किसे ना आईआ। साध सन्त बेईमान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कर किरपा श्री भगवान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। पढ़ पढ़ थक्का जीव जहान, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। फिर फिर थक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बियाबान, समुंद सागर

६६८
१६

डूंघी कन्दर फोल फुलाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर तेरा मिल्या ना किसे निशान, सच दवारा वेखण कोई ना पाईआ। सिदक सबूरी सति सन्तोख ना रिहा ईमान, हठ तप ना कोई वड्याईआ। उठ वेख शास्त्र सिमरत चारे वेद सर्ब कुरलाण, चारे युग नाल रलाईआ। हाहाकार करे अञ्जील कुरान, अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारे खाणी करे ना कोए परवान, चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला ना कोई सुणाईआ। कलयुग बुद्धी होई निधान, मन मनुआ भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जन भगत देण दुहाईआ। जन भगत दुहाई देवण तेरे दर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, बेपरवाह फेरा पाईआ। चारों कुण्ट आवे डर, चौथे पद ना कोई समाईआ। कूड़ी क्रिया कोट गढ़, काया कंचन रूप ना कोए वटाईआ। सृष्ट सबाई रही सड़, त्रैगुण अग्नी तत तपाईआ। गुरमुख गुरसिख तेरा भाणा रहे जर, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। ना जिउदे ना गए मर, इक्को तेरी आस तकाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान घर स्वामी आ के वड़, गृह मन्दिर कुंडा लाहीआ। हौली हौली सच दवारे चढ़, घर घर विच सोभा पाईआ। आपणा मन्त्र अन्तर आ के पढ़, साचा ढोला दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखा इक्को घर, जिस घर तेरा नूर नज़री आईआ। पुरख अबिनाशी जन भगतां तेरी उडीक, ध्यान इक्को इक लगाईआ। मेहर नज़र कर लाशरीक, शरकत पिछली दे गुआईआ। तेरे विच इक तौफीक, तारीफ़ तेरी वड्डी वड वड्याईआ। चरण कँवल दे प्रीत, प्रीतीवान परम पुरख तेरी सरनाईआ। साचा ढोला सुणा अगम्मी गीत, धुर दा राग इक शनवाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। घर नज़री आए मक्का काअबा मन्दिर मसीत, शिवदुआले मड्ड इक्को इक जणाईआ। आदि अन्त दी तेरी रीत, जुगा जुगन्त वेख वखाईआ। तेरा लेखा बीस बीस, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। तेरा कलमा इक हदीस, हज़रत तेरी पढ़ाईआ। तेरा अंक सच इकीस, दूआ एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगत वेख मुर्शद मुरीद, मदद तेरी इक तकाईआ। साचा जलवा दे नूरी दीद, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे के गए रसीद, उम्मत उम्मती आप समझाईआ। सदी चौधवीं वक्त करीब, परवरदिगार वेस वटाईआ। दो जहानां बण तबीब, लख चुरासी वेख वखाईआ। करे खेल इक अजीब, नूर नुराना वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। मुरीद मुर्शद आ के तक्क, ताकतवर तेरी सरनाईआ। कर नवेड़ा हक़ो हक़, हकीकत तेरे विच नज़री आईआ। लेखा चुक्के तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मति बुध डेरा ढाहीआ। सच्चा मार्ग इक दस्स, चार वरन इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धर्म जैकारा बोल अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। श्री भगवान प्या हस्स, जन भगतां आख जणाईआ। आदि जुगादि मेरे वस, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मार्ग दस्स, इकावन बावन बन्धन इक पवाईआ। शब्द सरूपी खेल समरथ, पिता पूत दए वड्याईआ। अन्तिम सब दे खाली कर के हथ्थ, ख़ालक ख़लक दए वखाईआ। जन भगतां दे अगम्मी वथ, वसल आपणा इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जन भगत मारो ताली, हरि करता खुशी वखाइंदा। पुरख अबिनाशी करे दलाली, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। जलवा नूर जोत जलाली, ज़ाहर ज़हूर पर्दा लाहइंदा। जगत वेख हक़ हलाली, चारो कुण्ट खोज खुजाइंदा। हर घट हो के धुर दा माली, गुरमुख साचे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वड वडियाइंदा। जन भगतो गावो गीत, सद ढोला इक जणाईआ। आदि जुगादी जिस दी रीत, सो रीतीवान फेरा पाईआ। इक्को दस्से चरण प्रीत, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। सच दवारा मन्दिर मसीत, सचखण्ड निवासी इक वखाईआ। जिस घर वसे ऊँच नीच, राउ रंक मिले वड्याईआ। सो साहिब भिच्छया पाए भीख, धुर दी वस्त आप वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी करदे गए उडीक, तारीफ़ अक्खरां नाल लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। हरिजन गाओ गहर गम्भीर, गुणवन्ता आप जणाईआ। नज़री आए वड पीरन पीर, दस्तगीर इक अख्वाईआ। शरअ कट जगत ज़ंजीर, तकदीर दए बदलाईआ। आपणे हथ्थ रख नाम शमशीर, दोहरी धार रिहा चमकाईआ। लेखा जाण शाह हकीर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं लभ्भदे पीर फ़कीर, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे दए वड्याईआ। हरिजन वेखो हरि का रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। जन भगतां आपणी सेज पलँघ, सोहणी सच हंढ्ढाईआ। उपर बैठ सूरा सरबँग, शाह पातशाह आपणा आसण लाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाईआ। निज देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचो प्रगटाईआ। सुरती शब्द मिल के गाए छन्द, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। जन्म जन्म दा मुकावे पन्ध, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। कलयुग अग्नी पावे ठंड, अमृत मेघ बूँद बरसाईआ। दूई द्वैती मेटे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुरमुख गुर गुर चाढ़े चन्द, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप वरताईआ। सदा सुहेला निभाए धुर दा संग, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। देवे वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड पार कराईआ। अन्तिम लै के जाए विच सचखण्ड, सच दवारे आप टिकाईआ। परम पुरख दा परमानंद, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आईआ। जुग जन्म दे विछड़यां टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी मेहर नज़र

इक उठाईआ। पूरी करे आसा मनसा मंग, मांगत भिच्छया इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लए लगाईआ। जन भगत कहे प्रभ की देवेंगा दात, दर तेरे अलख जगाईआ। सच मेटेंगा अन्धेरी रात, कलयुग कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। चार वरन बणाएंगा इक जमात, दीन मज़्ब ज़ात पात डेरा ढाहीआ। निरगुण हो के सरगुण देवें आपणा साथ, सगला संग रखाईआ। सच दस्स कवण मन्त्र दस्सें पाठ, पूजा इक्को इक समझाईआ। श्री भगवान कहे शाबाश, जन भगत तेरी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जपाया जाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। जिस जपयां जन्म जन्म दा रहे कोई ना पाप, पतित पापी पुनीत रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ दवारे सारे रहे आख, वाह वाह शहिनशाह शाह पातशाह तेरी सच सरनाईआ। जन भगत उतारे आपणे घाट, पत्तण बहि के सच्चे माहीआ। कलयुग अन्तर आत्म मार आवाज़, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। कोटां विच्चों विरले दस्से राज़, आपणा भेव खुल्हाईआ। तिन्नां भुल्ल जाए पूजा पाठ पढ़नी नमाज़, सजदा सीस जगदीश इक कराईआ। मक्का काअबा छड्ड के हाजी हाज, हुजरा तेरा वेख वखाईआ। जिस घर मन्दिर महल अटल महिबूब मुहब्बत करे साच, सच साचा मेल मिलाईआ। सो साहिब बण ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। भगत कहे प्रभ वेला केहड़ा, सच सच दे दृढ़ाईआ। जिस वेले मेटें झूठा झेड़ा, कलयुग झगड़ा रहिण ना पाईआ। उजड़यां वसावें फेर खेड़ा, रुत्त बसन्ती गुलशन विच गुल आप महकाईआ। डुब्बदा तारें फड़ के बेड़ा, भार आपणे कंध उठाईआ। बेपरवाह नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग देंदा रिहों करके वड्डा जेरा, बेतरस तैनूं तरस कोए ना आईआ। लख चुरासी फेरदा रिहा गेड़ा, गेड़ा गेड़े नाल भवाईआ । मेहरवान श्री भगवान हुण कर आपणी मेहरा, मेहरवान क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरयां भगतां तेरे चरण लाया डेरा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कहे मैं खुल्ह्ला करां वेहड़ा, दो जहान इक घर वखाईआ। सचखण्ड जन भगत कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बहुतयां विच्चों गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच्चा सच बथेरा, जिस दा मार्ग वेखे जगत लोकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी शब्दी शेरा, पंज तत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां बिन भगती पार कराईआ। भगत कहे की भगती लोड़, लोहड़ा भगती कम्म किसे ना आईआ। जिस जन आपणे चरण कँवल लए जोड़, दरगाह साची मिले माण वड्याईआ। तुध बिन दस्स केहड़ा होर, जिस दी मंगीए जा शरनाईआ। तेरा मन्त्र आदि जुगादि फुरना फोर, कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। तेरा प्रकाश अन्ध घोर, साचा नूर तेरी

रुशनाईआ। प्रभू सद तैनूं भगतां लोड़, जन भगतां तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। जन भगतो मैं सेवक इक, पुरख अकाल दए जणाईआ। नित नवित्त तुहाड्डा लेखा देवां लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। लख चुरासी दे के पिठ, जुग चौकड़ी करवट ना कदे बदलाईआ। सन्त सुहेले रखां साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त अन्दर वड़ के दस्सया भेत, बाहरों करी ना कोई पढ़ाईआ। एहो प्रभू दी अचरज खेड, जेहड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। जगत नेत्र सारे रहे वेख, बिन सतिगुर नेत्र सार कोए ना पाईआ। जन भगतो लोकमात प्रभ पहलों भेज, फेर आपणे नाल मिलाईआ। काया मन्दिर अन्दर चढ़ के माणे सोहणी सेज, छैल छबीला बेपरवाहीआ। उठो वेखो नेत्र लोचण नैण लओ पेख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर नुराना निरगुण इक्को नज़री आईआ। हरिजन करे साचा हेत, हितकारी आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां कर आपणी भेंट, भेंटा गुरमुख लए चढ़ाईआ।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी जस्सा सिँघ दे गृह पहेवा नहर कालोनी ज़िला करनाल *

जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण देवे दान, गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव चुकाइंदा। जन भगतां उपर हो मेहरवान, नेत्र लोचण अक्ख इक खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म दे के दान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। लख चुरासी देवे इक ज्ञान, शब्द अनादी बोध अगाध समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल निरँकार, हरि करता आप कराईआ। सचखण्ड निवासी बैठ सच्चे दरबार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म इक वरतार, दो जहानां वाली आप जणाईआ। शब्द दुलारा कर सिक्दार, ब्रह्मण्ड खण्ड गगन गगनंतर वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, प्रेम प्रीती इक दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। घाड़त घड़ अगम्म अपार, चारे खाणी सोभा पाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, शब्द अनादी राग सुणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह धुर दरबार, अनभव आपणा राह जणाईआ। लेखा जाण गुर अवतार, पीर पैगम्बर मुरीद मुर्शद पर्दा आप उठाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा देवे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। नव नौ चार जाणे कार, दहि दिशा आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची

करनी श्री भगवान, जुग चौकड़ी आप कराइंदा। देवणहारा धुर दा दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। नित नवित्त हो प्रधान, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि जगदीश, जग जीवण दाता आप वरताईआ। जुग चौकड़ी नाम हदीस, कलमा हक़ हक़ समझाईआ। लख चुरासी पीसण पीस, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्से सच्ची रीत, साची सिख्या इक समझाईआ। खेलां खेल मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर रंग वखाईआ। लेखा जाण ऊँच नीच, राउ रंक देवणहार वड्याईआ। सब तों उत्तम दस्से पारब्रह्म पतिपरमेश्वर चरण प्रीत, परवरदिगार सच्ची सरनाईआ। जिस घर लेखा चुक्के हस्त कीट, निर्धन सरधन इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सति सतिवादी पारब्रह्म, परम पुरख इक अख्वाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाइंदा। जुग चौकड़ी जाणे कम्म, नेहकर्मी कर्म कमाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बेड़ा बन्नृ, धुर फुरमाना हुक्म सुणाइंदा। एका राग नाद सुणाए बिन कन्न, धुन अनादी नाद वजाइंदा। निर्मल जोत प्रकाश करे धुर दा चन्न, सूरज चन्न नैण शरमाइंदा। लेखा जाण काया पंज तत तन, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल करे निरँकार, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वेखे चार, चारे वेद संग निभाईआ। चारे वरन कर प्यार, चारे खाणी खोज खुजाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी धार जणाईआ। चारों कुण्ट हो उज्यार, चार यारी जोड़ जुड़ाईआ। चौथे पद सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा डेरा लाईआ। गुरमुख हरिजन भगत सुहेले सद्दे कर प्यार, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, कातब करे ना कोए लिखाईआ। जगत मजलस ना कोए गुफ्तार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। मन मति बुध ना पावे सार, जीव जंत चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कर कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ला के सेवादार, साची सेवा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता बेपरवाहीआ। हरि करता आदि जुगादी बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा दो जहान चलाइंदा। शब्द अगम्मी दे सलाह, सति सतिवादी आप पढ़ाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी भेव खुल्हा, पड़दा उहला आप उठाइंदा। जोती जलवा नूर कर रुशना, हक़ हकीकत लाशरीक आप जणाइंदा। दरगाह साची सोभा पा, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। नौबत नाम इक वजा, कलमा नबी रसूल सुणाइंदा। महिबूब खेल करे इक खुदा, वाहिद आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड निवासी निरगुण जोत कर रुशना, महल अटल सोभा पाइंदा।

दीवा बाती कमलापाती इक जगा, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। जेरज अंड रचन रचा, उत्भुज सेत्ज आपणा रंग वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच संदेसा इक सुणा, लोकमात मात वडियाइंदा। तेई अवतारां बन्धन पा, भगत अठारां रंग वखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण खुल्हा, कलमा कायनात दृढ़ाइंदा। नानक निरगुण गोबिन्द जोती जोत जगा, जोती जाता डगमगाइंदा। धुर संदेसा इक सुणा, साहिब सुल्तान आपणा राह वखाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग कलकाती जाए आ, सृष्ट सबाई अन्धेरा छाइंदा। सति धर्म ना दीसे नाँ, सच सुच्च ना कोए वडियाइंदा। जन भगतां मिले ना कोई थाँ, थान थनंतर सोभा कोए ना पाइंदा। प्यार रहे ना पुत्तर माँ, पिता पूत ना गोद सुहाइंदा। हँस बुद्धी होए काँ, कलयुग जीव काग वांग कुरलाइंदा। पारब्रह्म तेरा नाउँ सारे जाण भुल्ला, हरि मन्दिर अन्दर बहि के दरस कोए ना पाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाह, अठसठ माण ना कोए रखाइंदा। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट चढ़े चा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर नज़री आइंदा। साचा इष्ट देव स्वामी कोई ना सके मना, बंसुरी घनईया शाम नाम नाद ना कोए सुणाइंदा। सीता सुरती राम सके ना कोए प्रना, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाइंदा। निरगुण मेला सके ना कोए मिला, गुर चेला रूप ना कोए वटाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर धीआं भैणां रहे तका, कूड़ी क्रिया तन दूर ना कोए कराइंदा। मन वासना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी वेख जग, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई लग्गी अग्ग, त्रै पंज करे लड़ाईआ। वरन बरन रहे भज्ज, ज़ात पात नाल मिलाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भुल्ली ब्रह्म मति, विद्या ब्रह्म ना कोए पढ़ाईआ। परम पुरख परमात्म चरण कँवल ना कोए नत, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाईआ। प्रभ मिलण दी किसे ना खुल्हे अक्ख, निज नेत्र करे ना कोए रुशनाईआ। काम वासना जगत जवानी रही नट्ठ, जोबन सच ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा जगत लोकाईआ। वेख लोकाई लोकमात, जन भगत रहे कुरलाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, बेअन्त तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द घर घर पढ़दे तेरा पाठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जीवां जंतां करदे घात, सच सुच्च ना कोए समाईआ। ज्ञानी ध्यानी रहे आख, उच्ची कूक कूक समझाईआ। पंडत पांधे करन बात, जगत विद्या करे लड़ाईआ। मुल्लां शेख़ दस्सण कायनात, कलमा हक़ रसूल समझाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता सारे होए मुहताज, मुहब्बत तेरे नाल ना कोए रखाईआ। किरपा कर ग़रीब निवाज,

मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख कूड़ा रंग, हरिजन कूकण देण दुहाईआ। श्री भगवान तेरा देवे ना कोई संग, नाता जुड़या कूड़ लोकाईआ। घर आत्म परमात्म वज्जे ना कोए मृदंग, सृष्ट सबाई कूड़े ताल रही वजाईआ। भेव चुक्के ना ब्रह्म हँ, सो सच ना कोए सुहाईआ। नेहकर्मी तेरा करे ना कोई कर्म, कर्म कांड फसी सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी आवे जावे मरे पए जम्म, जम्मण मरन गेड़ ना कोए कटाईआ। साचा बेड़ा कोई ना देवे बन्न्, गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्त साचा संग ना कोए रखाईआ। लग्गी अग्ग पंज तत तन, ततव तत रिहा जलाईआ। दोए नेत्र होए अन्न्, साहिब सतिगुर तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, सच दवारे तेरी ओट तकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कल वेख अन्धेरा, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गा डेरा, सफ़ा सके ना कोए उठाईआ। माया ममता पाया घेरा, साध सन्त बचया नज़र कोए ना आईआ। हउमें हंगता दित्ता गेड़ा, लख चुरासी रही भवाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर उजड़या खेड़ा, बंद किवाड़ी कुण्डा कोए ना लाहीआ। भेव ना पाए मेरा तेरा, तेरा मेरा भेव ना कोए चुकाईआ। लहिणा देणा चुक्कया सञ्झ सवेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। भगत कहिण प्रभ वेख अन्धेरा अन्ध, वरभण्ड ध्यान लगाईआ। क्यों सुत्ता दे कर कंड, करवट आपणी लै बदलाईआ। तेरी आत्म परमात्म होई रंड, सुहागी कन्त सच ना कोए हंढ्राईआ। मन वासना पाउँदे सारे डण्ड, डंका नाम ना कोए लगाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती कोई ना ढाए कंध, दीन मज़्हब ज़ात पात लेखा ना कोए मुकाईआ। तेरा आत्म गाए कोई ना छन्द, सोहँ ढोला राग ना कोए सुणाईआ। जन्म जन्म दा मिटे ना किसे पन्ध, मंज़ल हक़ ना कोए पुचाईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्त वेख निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। सृष्ट सबाई सच ना दिसे कोई प्यार, नाता प्रेम ना कोए जुड़ाईआ। लेखा लिख लिख जो दे के आए जुग चार, चारे वरनां झोली पाईआ। तिस दा करे ना कोए विचार, सच समझ ना कोए समझाईआ। पूजा पाठ करन कढ्ढण मात वगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे होका, दर साचे कूक कूक सुणाईआ। फिरी दरोही चौदां लोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। सच गाए ना कोई श्लोका, सच्चा राग ना कोए अल्लाईआ। जीव जंत साध सन्त मनमति होया होछा, गुरमति बैठे सर्ब भुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ

६७६
१६

तेरे नाल कर के रोसा, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। मन वासना जगत जहान होया खोटा, खुदी भरी सर्ब लोकाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए निर्मल जोता, अज्ञान अन्धेर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जिस घर रचना आप रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे दस्स, श्री भगवान साडी अरज़ोईआ। कलयुग अन्तिम साडा नहीं कोई वस, लोकमात मिले ना ढोईआ। सृष्ट सबाई खेड़ा दिसे भठ्ठ, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। धीरज जत सति सन्तोख कोई ना सके रख, सति सतिवादी रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया खुल्ह्या हट्ट, नाम वणजारा नज़र कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जो मार्ग रही दस्स, तिस भुल्ली जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सण हाल, हालत सब दी रहे जणाईआ। सृष्ट सबाई सच वस्त रखे ना कोई धन माल, नाम ख़ज़ाना घर ना कोए टिकाईआ। काया मन्दिर अन्दर ना वेखे कोई धर्मसाल, गृह सोभा कोए ना पाईआ। दीआ बाती कमलापाती महल अटल सके कोई ना बाल, सच करे ना कोए रुशनाईआ। अमृत आत्म सुहाए ना कोई ताल, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना तेरी करन भाल, आत्म परमात्म ध्यान ना कोए लगाईआ। भाग लग्गा किसे ना दिसे काया माटी खाल, चम्म दृष्टी जगत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सण बोल, अनबोलत राग जणाईआ। चारों कुण्ट डौरु डंका वज्जे ढोल, नाम मृदंग ना कोए सुणाईआ। साचा तोले ना कोए तोल, नाम तराज़ू हथ्थ ना कोए उठाईआ। अन्तर आत्म प्रेम रस देवे ना कोई पौहल, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। साहिब सतिगुर किसे ना वसे कोल, घर मन्दिर बहि खुशी ना कोए मनाईआ। माया ममता प्या घोल, दिवस रैण करे लड़ाईआ। जन भगत चोरी चोरी डर डर तेरा नाम रहे बोल, नेत्र नैणां नीर नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वेला अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहे वेला अन्तिम आया, चार युग प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण माया घेरा पाया, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जगत जंजाल ना कोए तुड़ाया। सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच दवारे मंग मंगाईआ। सच दवारे मांगत एक, भिच्छया दे वरताईआ। सृष्ट सबाई कर बुध विवेक, विवेकी आपणी कार कमाईआ। सति सतिवादी लिख लेख, लेखा लिख्त दे बदलाईआ। सर्ब जीआं सच देणी टेक, चरण कँवल सरनाईआ। कूड़ी क्रिया ना लाए सेक, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। निरगुण निरवैर

निरँकार दस्स आपणा भेत, पर्दा उहला आप चुकाईआ। आत्म परमात्म बख्श हेत, सच प्रीती इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन दे वड्याईआ। चार वरन तेरा रूप, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। तूं साहिब सुल्तान आदि जुगादी भूप, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। तेरा खेल चारे कूट, दहि दिशा तू ही नज़री आइंदा। पहला लेखा कर मनसूख़, गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब ध्यान लगाइंदा। भगत भगवान बणा साचे पूत, गोद सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। इक्को ताणा पेटा सूत, इक्को नूर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे धुर दा वर, जिस विच्चों तेरा नूर नज़री आइंदा। परम पुरख प्रभ दे ज्ञान, बोध अगाध तेरी पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया झगड़े सर्ब मिट जाण, ममता मोह ना करे लड़ाईआ। चार वरन मन्ने तेरी आण, मिले सच सरनाईआ। इक्को नाम श्री भगवान, वाहिद कलमा दे पढ़ाईआ। परवरदिगार तेरा ईमान, सिदक सबूरी नज़री आईआ। पुरख अकाल तेरा मकान, मन्दिर सोहणा सोभा पाईआ। अबिनाशी करते तेरा निशान, दो जहान इक झुलाईआ। पारब्रह्म कर परवान, ब्रह्म तेरा रूप नज़री आईआ। विचोला बण निगहबान, बिन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सब तेरा राह तकाण, तकवा तेरे उपर रखाईआ। तेरे मिलयां रोग सोग चिन्ता दुःख सर्ब मिट जाण, भरम भय भउ रहिण ना पाईआ। अन्तर आ के मिल श्री भगवान, बाहर मिलण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जो घर विच घर रिहा बणाईआ। वेख घर आ के ठाकर, हरिभगत राह तकाइंदा। काया डूंघी भँवर दिसे सागर, पार किनारा ना कोए वखाइंदा। किरपा निधान निर्मल कर्म कर उजागर, दर दरवेश मंग मंगाइंदा। कोझयां कमल्यां ग़रीब निमाणयां दे आदर, आदर्श तेरा इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखा आपणा घर, जिस गृह बहि के जोती जोत डगमगाइंदा। भगत कहे प्रभ घर दस्स आप, आपणा पर्दा लाहीआ। जिस मन्दिर तेरा मेरा इक्को जाप, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं पूत तूं मेरा बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब कुछ तेरे हाथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर त्रिलोकी नाथ, राम रमईया शाम घनईया लोकमात सोभा पाईआ। तेरा खेल वासतक वास, देव आत्मा तेरी ओट रखाईआ। परवरदिगार दे साथ, बेपरवाह तेरी इक शरनाईआ। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। सच दुआर मिले निवास, चरण कँवल सरनाईआ। तेरा महल अटल सोहणा पुरख अबिनाश, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। जिथ्थे निरगुण निरगुण गोपी काहन पावे रास, सरगुण सरूप ना कोए वखाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर तेरे मिलण दी इक्को आस, हरिजन तेरी ओट तकाईआ। सदा सुहेले

६७७ १६

इक इकल्ले रख आपणे पास, जगत विछोड़ा दे चुकाईआ। आवण जावण लख चुरासी मुक्के वाट, जन्म अजन्म ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाल आपणा घर, जिस घर तेरा नूर ज़हूर रुशनाईआ।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी मोहण सिँघ दे गृह गढ़ी लांगरी ज़िला करनाल *

जन भगत तेरा सोहणा मन्दिर, सो साहिब सतिगुर आप सुहाइंदा। भाग लग्गे डूंघी कन्दर, काया काअबा हुजरा हक़ वडियाइंदा। मन वासना बन्ने बन्दर, नाम डोरी तन्द वखाइंदा। सच दुआर वखाए अगम्मी मंज़ल, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हरिजन साचे वेख वखाइंदा। जन भगत तेरा सोहणा दुआर, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर नज़री आईआ। काया माटी खेल करे करतार, गृह साचा वेख वखाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जोत नूर करे रुशनाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल शब्द अनाद सच्ची धुनकार, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा बंद किवाड़ी खोल्ह देवे दीदार, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म सच प्रीती करे प्यार, सुरती शब्दी साचा जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख सखीआं मिल के मंगलाचार, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। गुरमुख महिमां अपर अपार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे पुकार, खाणी बाणी कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर मिल्या आण, लेखा चुक्के दो जहान, आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच्चा घर, हरिजन अन्तर फोल फुलाईआ। गुरमुख तेरा मन्दिर उच्चा, साहिब सतिगुर सोभा पाईआ। लख चुरासी नालों सुच्चा, निर्मल रूप इक दरसाईआ। जिस मंज़ल पुरख अकाल दीन दयाल पुज्जा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सेज सुहञ्जणी सोहणी सुत्ता, सच सिँघासण आसण लाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुता, चेतन आपणी धार जणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेला बणाए नादी सुत्ता, पिता पूत दए वड्याईआ। उजल करे मात मुखा, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत तेरी सच अटारी, छप्पर छन्न मिले वड्याईआ। जिस घर निर्मल जोत जगे निरँकारी, निरवैर आपणा रूप वखाईआ। लेखा जाणे शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा सिक्दारी, भूपत भूप राज राजान वड्डा बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर सचखण्ड निवासी खेल करे न्यारी, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी धार जणाईआ। आत्म परमात्म नाम रस दए खुमारी, दिवस रैण इक्को रंग चढ़ाईआ। कागद कलम ना कोई लिखे लिखारी, कातब शाही देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जन भगत दवारे सोभा पाईआ। जन भगत दवारे सोहे श्री भगवन्त, पुरख अकाल सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण सुहाए महिमा अगणत, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख उठाए सन्त, सति सतिवादी आपणा मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दा राग आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दवारा इक वडियाइंदा। जन भगत दवारा साची कूट, दिशा हरि जी वंड वंडाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के जूठ झूठ, सच सुच्च इक वरताईआ। जन्म कर्म दी मेट के भूख, तृष्ना रोग गंवाईआ। वेखणहारा काया पंज तत भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोजे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वेखे घर वधाईआ। जन भगत घर वज्जे वधाई नाम, साची सखीआं मंगल गाइंदा। सचखण्ड निवासी वेखण आए राम, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। निरिच्छत पूरा करे काम, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सोहणा नगर खेड़ा वेखे ग्राम, जिस गृह आपणा चरण टिकाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, रवि ससि इक्को जोती नूर डगमगाइंदा। सच सिँघासण कर आराम, सुख सागर रूप वटाइंदा। जन्म जन्म दी मुश्किल कर आसान, दु:ख रोग संताप डेरा ढाइंदा । शब्द अगम्मी मार बाण, तीर अणयाला इक चलाइंदा। अमृत निझर झिरना झिरे महान, प्रेम प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। निर्धन देवे धुर दा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दवारा वेख खुशी मनाइंदा। हरिजन दवारा वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस मन्दिर अन्दर इक्को तूं ही जाप, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। बजर कपाटी खुल्ले ताक, घर घर विच होए रुशनाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रसना जिह्वा बत्ती दन्द गए आख, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। कागज़ कलम शाही लिख्या भविक्खत वाक, भाख्या दिती सर्ब लोकाईआ। चार वरनां दाता इक्को पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हरि रघुराईआ। हर घट निरगुण जोत करे प्रकाश, घर घर बैठा डेरा लाईआ। जागत सोवत करे बात, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। सदा सहाई बाद वफात, मरन जीवत इक्को रंग जणाईआ। एथे ओथे दए नजात, दो जहानां होए सहाईआ। जन भगतां बणे सज्जण साक, बंधप इक्को नज़री आईआ। मुरीद मुर्शद देवे साथ, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दवारे देवे माण वड्याईआ। गुरमुख बंक सोहणा सुहञ्जणा, चार युग रहे जस गाईआ। जिस घर दीवा बाती बले आदि निरँजणा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अबिनाशी वसे साचा सज्जणा, मीत प्यारा इक अख्वाईआ। चरण धूढ़ सति सरोवर कराए मजना, दुरमति मैल धवाईआ। आदि जुगादि जिस पर्दा कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा गुरमुख घर, जिस घर दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख घर सोहणा चंगा, पुरख अबिनाशी बणत बणाईआ। आत्म सेजा सच पलँघा, पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। उपर बैठ सूरा सरबँगा, श्री भगवान आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण जोत चाढ़े चन्दा, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। साचा ढोला गावे छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा धुर दा मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म देवे अनन्दा, अनन्द अनन्द गुरु गुरदेव समझाईआ। कूड़ी क्रिया मारे शब्दी खण्डा, खड़ग इक्को इक चमकाईआ। लेखे लाए आपणा बंदा, बंदगी आपणी इक समझाईआ। लहिणा देण चुकाए विच ब्रह्मण्डा, वरभण्डा डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच्चा घर, गुरमुख मन्दिर इक्को नज़री आईआ। गुरमुख मन्दिर सोहणी बणत, पुरख अबिनाशी आप बणाईआ। जिस घर साहिब सतिगुर मिले कन्त, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। हरिजन काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। देवे वड्याई विच्चों जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सो गुरमुख गुरसिख कहीए सन्त, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। लेख चुकाए आदि अन्त, अन्तष्करन वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मन्दिर दए सुहाईआ। गुरमुख मन्दिर कक्खां कुली, कुलवन्ता वेख वखाइंदा। आदि जुगादि कीमत रखे अनमुल्ली, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। सृष्ट सबाई माया भरम भुल्ली, भाण्डा भरम ना कोए भंनाइंदा। काया फलवाड़ी सब दी हुली, पत्त डाली नज़र कोए ना आइंदा। गुरमुख विरले आत्म प्रभ चरण प्रीती घोल घुली, घोल घुमाई आपणे लेखे लाइंदा। एथे ओथे दो जहान फली फुली, रुत्त बसन्त बहार ख़िज़ां रूप विच्चों प्रगटाइंदा। नाद शब्द सुणाए धुर दी धुनी, आत्मक इक्को राग अलाइंदा। दाता योद्धा सूरबीर वड गुण गुणी, गहर गम्भीर मेहर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दवारा इक सुहाइंदा। कुली कक्ख रहे हस्स, ख़ुशीआं गीत गाईआ। श्री भगवान रहे दस्स, आपणा हाल जणाईआ। बेपरवाह किधरों आयो नस्स, बेअन्त आपणा पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दवारा छड्ड, लोकमात वेखें चाईं चाईंआ। कोटन कोटि राज राजान शाह सुल्तान एथों गए लद्द, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए दस्स, लेखा लिख्त विच लिआईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर पुरख अकाल होवे प्रगट, हर घट वासी आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान मेले नट्ठ नट्ठ, दर दर घर घर बण बण पांधी राहीआ। वस्त अमोलक नाम निधान देवे वथ, धुर दी दात आप वरताईआ। अमृत साचा देवे रस, निझर झिरना इक झिराईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के आप अक्ख, घर घर विच करे रुशनाईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी प्रेम प्रीती गाए जस, जस वेद पुराण सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। जिस

नालों धार बण के होए अड्ड, कर किरपा अन्त ओसे विच मिलाइंदा। गुरमुख दवारा आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सतिगुर दी साची हद्द, दूजा दर वेखण कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक्को एक एकँकार अख्वाइंदा।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे गृह गढ़ी लांगरी ज़िला करनाल *

जुग चौकड़ी मुकया पन्ध, दो जहान रहे कुरलाईआ। गुर अवतार मंगां रहे मंग, ख़ाली झोली इक वखाईआ। पीर पैगम्बर सीस सजदा करन नंग, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। भगत भगवान गावण छन्द, साचा ढोला इक इलाहीआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। सृष्ट सबाई आत्म दिसे रंड, साचा कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। नव नौ चार भेख पखण्ड, धर्मी धर्म ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म किसे ना मिले अनन्द, चारे खाणी बैठी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, शाह पातशाह दर तेरे आस रखाईआ। जुग चौकड़ी रही लँघ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। साचा दिसे ना कोए सच पलँघ, सिँघासण आसण कोए ना लाईआ। सतिगुर शब्द ना कोए मृदंग, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। सुरती शब्दी कोई ना पाए गंढ्ढ, गंढ्ढणहार गोपाल स्वामी नज़र ना कोए जणाईआ। दहि दिशा नव खण्ड सत्त दीप नूरी चमके कोई ना चन्द, घट अन्धेरा नज़री आईआ। कलयुग औध रही हंढ्ढ, सदी सदीवी वक्त चुकाईआ। साहिब सतिगुर ठाकर स्वामी सच दुआर आपणा लँघ, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। जुग चौकड़ी गई बीत, बीती कहाणी समझ किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पारब्रह्म चलाई रीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा मार्ग दस्सदा रिहा ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। लेख जणाउँदा रिहा ऊँच नीच, राउ रंक आप समझाईआ। पंज तत काया साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वसदा रिहा बीच, घर घर विच डेरा लाईआ। जन भगतां सदा सुहेला करदा रिहा शब्दी रीझ, सोहणी आपणी सेव कमाईआ। चरण प्रीती धुर दी नीती दस्सदा रिहा रीत, रीतीवान आप अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश मंगदे रहे भीख, भिच्छया इक्को नाम वरताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण बणया रिहा सुरजीत, जीवण मरन ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जाए नट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ। सृष्ट सबाई खेड़ा दिसे भट्ठ, कलयुग अग्नी तत

तपाईआ। गुर अवतार जो मार्ग गए दस्स, जीव जंत गए भुलाईआ। पीर पैगम्बर मेल मिले ना हक़, हकीकत हथ्थ किसे ना आईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया होए वस्स, हरि का शब्द सच ना कोए कमाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पाई नथ्थ, डोरी तन्द हथ्थ उठाईआ। लेखा चुक्के ना तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मति बुध सार ना कोए जणाईआ। निज आत्म निज घर निझर मिले ना कोए रस, रसना कूड़ रूप हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, दर ठांडे भीख इक्को मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी रिहा मुक्क, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। आत्म मिले ना किसे सुख, परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। माया ममता लग्गी भुक्ख, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। सफ़ल होए ना कोई कुक्ख, जननी जन ना कोए जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि नरायण वेख लोकमात थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी अन्तिम वेला, वेला वक्त सर्ब जणाईआ। वरन बरन ना कोए सज्जण सुहेला, सरनगति ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर क्यों वसिउँ घर नवेला, सचखण्ड बैठा मुख छुपाईआ। जोत निरँजण चाढ़े कोई ना तेला, आदि निरँजण सगन ना कोए मनाईआ। जुग चौकड़ी अचरज तेरी खेला, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख आपणी मात लोकाईआ। जुग चौकड़ी रही रो, कल अन्त ध्यान लगाईआ। पतिपरमेश्वर तेरा तुटा मोह, मुहब्बत महिबूब ना कोए कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी दे के गए सो, हँ ब्रह्म कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर आपे जाए हो, होका आपणा नाम सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे पुरी लोअ, बिन अक्खां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दे घर, दो जहान तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेख हाल, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया कर बहाल, मेहरवान दया कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद बण के फेरा पाईआ। साचा सोहे ना कोई ताल, अठसठ अमृत सीर ना कोए जणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ ना कोई धर्मसाल, धर्म दवारा नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सब दे सिर ते कूके काल, कलयुग डौरु डंक नगारा रिहा वजाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत बिन तेरे होए बेहाल, बिहबल हो के देण दुहाईआ। गुर अवतार करन सवाल, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाईआ। भगत वछल भगवन कर ख्याल, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दिसे ना कोए दलाल, रहिबर राह ना कोए वखाईआ। दीआ दीपक जोती घर मन्दिर देवे कोई ना बाल, रैण अन्धेरी नज़री आईआ। पुरख अगम्म अथाह कर खेल बेमिसाल, तेरी मिसल सके ना कोए समझाईआ। लेखा कोई ना जाणे शास्त्र

सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान, अन्त कहिण ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा घर, जिस घर लख चुरासी रचन रचाईआ। जुग चौकड़ी मुक्के झेड़ा, लोकमात रहिण ना पाईआ। परवरदिगार कर हक़ नबेड़ा, लाशरीक तेरी सरनाईआ । श्री भगवान आपणा वसा धुर दा खेड़ा, घर मन्दिर दे वड्याईआ। दूर दुराडे नज़री आ नेरन नेरा, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरा, तुध बिन नूर ना कोए रुशनाईआ। धरत मात दा खुल्ला कर वेहड़ा, धरनी धवल रही कुरलाईआ। जन भगतां पार कर बेड़ा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए बथेरा, नाता जोड़ कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी करे पुकार, नेत्र रो रो दए दुहाईआ। उठ वेख दीन दयाल, दीनन सारे रहे कुरलाईआ। लेखा लिख के क्यों रख्या संभाल, सचखण्ड दवारे आपणे विच छुपाईआ। मंगी मंग गोबिन्द सुत दुलार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। किरपा कर हरि निरँकार, निरगुण निरवैर तेरी वड्याईआ। जोती जामा खेल अपार, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। सचखण्ड सोहे सच दुआर, थिर घर वज्जे तेरी वधाईआ। सुन अगम्म पार किनार, मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। साचा दे आप दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। पीर पैगम्बर सजदा करन वारो वार, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। कलमा नबी रसूल कूक करन पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। आ के वेख प्रभ लोकमात, मात्र भूमी दए दुहाईआ। सच दिसे ना कोई जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग ना कोए रंगाईआ । निर्धन सरधन देवे ना कोए साथ, राउ रंक ऊँच नीच मेल ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म कोए ना पूजा पाठ, जगत विद्या करे लड़ाईआ । चौदां लोक वेख खेल तमाश, चौदां तबकां पर्दा लाहीआ। अलिफ़ ये लेखा बणया जगत लुग़ात, तेरा हरफ़ हरूफ़ हासल हक़ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख जगत लोकाईआ। जगत लोकाई वेख आप, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। चारों कुण्ट दिसे पाप, सति धर्म ना कोए रखाईआ। रूह बुत ना कोई पाक, पवित रूप ना कोए जणाईआ। घर मन्दिर खोल्हे ना कोई ताक, हरिमन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो धुर संदेसा गए आख, कलयुग अन्तिम भुली सर्ब लोकाईआ। सच किनारा हथ्थ ना आवे घाट, पतण मिले ना बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी मेटे कोई ना वाट, कर्म कर्म दा रोग ना कोए गंवाईआ । घर दीप ना कोए प्रकाश, अनहद नाद शब्दी धुन ना कोए शनवाईआ। कूड़ी क्रिया भोग बिलास, सृष्ट सबाई होई हल्काईआ। साचा शब्द ना कोए बिलास, रस अनडिठा हथ्थ किसे ना आईआ। जगत मदिरा हथ्थ ग्लास,

अमृत झिरना सीर ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख अगम्मी घर, जिस दी बणत नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे बोल, धुर दी आवाज़ सुणाईआ। सृष्ट सबाई रही डोल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली ठूठे जगत लोकाईआ। परम पुरख तेरी प्रीती कोई ना जाए मौल, बिस्मिल रूप ना कोए समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो पूरब कीता कोल, इकरार आपणा पूरा दे कराईआ। प्रगट हो के उपर धौल, धरनी धरत धवल दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्को खोल्ह, जिस घर तेरा रूप नज़री आईआ। सच दुआर खोल्ह प्रभ मात, दर तेरे मंग मंगाईआ। चार वरनां दे दात, बरन अठारां आप समझाईआ। मनमति नाता तोड़ नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक वखाईआ। अन्तर आत्म दे साथ, परमात्म आपणा मेल मिलाईआ। लेखा चुक्के ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। नज़री आएं साख्यात, हर घट बैठा डेरा लाईआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक, सदी बीसवीं रही कुरलाईआ। नेत्र खोल्ह मार झाक, झलक आपणी दे जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी करदे रहे तलाश, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। शिव जी रोवे उते कैलाश, हथ्थ त्रिसूल रिहा सुटाईआ। ब्रह्मा लभ्भदा फिरे प्रकाश, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समाईआ। विष्न बण के दासी दास, सेवा करे सेवक रूप वटाईआ। गुर अवतारां पूरी कर ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाईआ। पीर पैगम्बरां दे साथ, परवरदिगार हो सहाईआ। त्रैगुण माया वेख घाट, घाटा पूरा दे कराईआ। पंज तत कूड़ी मिटे वाट, साचा मार्ग पन्थ दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। मेहरवान प्रभ निरगुण आ, आदत आपणी दे बदलाईआ। दो जहानां बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार दे के गए सलाह, पीर पैगम्बर इशारे नाल समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान बणे गवाह, खाणी बाणी शहादत इक्को वार भुगताईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर कल आवे वेस वटा, कल कल्की फेरा पाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई नज़र कोए ना आईआ। साक सज्जण सके ना कोए बणा, बन्धन बंधप अवर ना कोए रखाईआ। साचे मन्दिर सच सिँघासण लए रखा, साढे तिन्न हथ्थ देवे माण वड्याईआ। सम्बल रखे सोहणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। वेद व्यासा चरणी डिगे आ, मूसा ईसा नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। मुहम्मद रो के मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नानक निरगुण कहे मेरा साहिब बेपरवाह, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द कहे मेरा नाता लए जुड़ा, पिता पूत देवे माण वड्याईआ। चारे युग कहिण पुरख अबिनाशी होए सहा, मेहर नज़र इक उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गीत सुहागी लैण गा, सोहला ढोला राग अल्हाईआ। करोड़ तेतीस सुरप्त इन्द साची छहबर लैण ला, बरखा

इक्को प्रेम कराईआ। धरनी धरत धवल चढ़े चा, चाउ घनेरा दए वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड नेत्र नैण लैण खुल्हा, रवि ससि निउँ निउँ सीस झुकाईआ। समुंद सागर उछाले लैण लगा, अठसठ तीर्थ आपणा सीस भेंट कराईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले खुशीआं नाल लैण ध्यान लगा, साडा आए बेपरवाहीआ। हकीर फ़कीर बेनज़ीर तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सूफ़ी कहिण साडा मिले इक खुदा, महिबूब इक्को नज़री आईआ। भगत कहिण भगवन होए ना कदे जुदा, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। सन्त कहिण सच स्वामी मिले आ, जिस दा रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख कहिण गुर सतिगुर डेरा देवे ला, घर साचे सोभा पाईआ। गुरसिख कहिण गुर गुर दर्शन लईए पा, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। पारब्रह्म पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब दए समझा, जीव जंत लख चुरासी एका नाम नगारे चोट लगाईआ। नव नौ चार करो ध्यां, सति सतिवादी दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी रही कूक, दरोही तेरे नाम खुदाईआ। कलयुग माया रही फूक, अग्नी तत तत्त जलाईआ। उठ के वेख आपणी कूट, चारों कुण्टां खोज खुजाईआ। जिध्धर वेखें नज़री आए झूठ, एह वी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, राह तक्के ख़लक खुदाईआ। राह तक्के ख़ालक मख़लूक, बेनज़ीर नैण उठाईआ। तेरा मिले ना कोए सबूत, सच तस्वीर ना कोए वखाईआ। भाग लग्गे ना तत कलबूत, काया काअबा ना कोए जणाईआ। सच दिसे ना कोए अरूज, अर्श कुर्श पर्दा ना कोए उठाईआ। मिले किसे ना आप महिबूब, मुहब्बत सच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच आपणा मेल मिलाईआ। श्री भगवान सच जणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव समझाउँदा ए। सुरप्त इन्द आप उठौंदा ए। गुर अवतार रंग रंगाउँदा ए। पीर पैगम्बर संग बणाउँदा ए। भगत भगवन्त छन्द अलाउँदा ए। सच अनन्द इक दरसाउँदा ए। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, धुर दा जोड़ जुड़ाउँदा ए। चार युग दी मंगी मंग, कलयुग अन्तिम पूर कराउँदा ए। प्रगट हो सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताउँदा ए। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपे लँघ, लोकमात वेखण आउँदा ए। सच सुहञ्जणा वेख पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाउँदा ए। धुर दा ढोला इक्को गाए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ साचा राग समझाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप अख्वाउँदा ए। करनी करता हरि अख्वाउंदा ए। निरगुण निरवैर वेस वटाउँदा ए। जोती जामा नूर चमकाउँदा ए। शब्द दमामां इक सुणाउँदा ए। वड अमाम फेरा पाउंदा ए। मुकामे हक़ सोभा पाउँदा ए। कलयुग अन्त हो प्रगट, हर घट आपणा डेरा लाउँदा ए। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिछली खोल्ह अक्ख, नेत्र लोचण सर्ब दरसाउँदा

ए। सच दवारे होया इकट्ठ, सोहणा मेला मेल मिलाउँदा ए। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे कट, बिन कलम शाही लेख लिखाउँदा ए। सच दवारा खोल्हे हट्ट, सतिगुर इक्को घर दसाउँदा ए। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना उबले रत्त, अमृत मेघ इक बरसाउँदा ए। चार वरनां इक्को मति, साचा नत आप जुड़ाउँदा ए। अन्दर वड़ चलाए रथ, बाहरों नज़र किसे ना आउँदा ए। किरपा करे पुरख समरथ, साहिब सतिगुर दया कमाउँदा ए। सतिजुग पूरा दे के हक़, उपर आपणी मोहर लगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाउँदा ए। साची करनी कार कमावांगा। मेहर नज़र इक उठावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख्या लेख पूर करावांगा। लोकमात रच सुअम्बर, सोहणी साची बणत बणावांगा। सर्ब कलां बण भरतम्बर, भरपूर हर घट नज़री आवांगा। कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, सच सुच इक दृढ़ावांगा। कर प्रकाश अन्धेरी कन्दर, जोती नूर इक चमकावांगा। मन वासना मिटे बन्दर, दहि दिशा वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपणे हथ्थ रखावांगा। साची करनी आपणे हथ्थ रखावेगा। पुरख अबिनाशी राह चलावेगा। घट घट वासी वेख वखावेगा। मुल्लां शेख़ मसायक पीर फ़कीर पंडत, पांधा ग्रन्थी पन्थी आप समझावेगा। लख चुरासी सृष्ट सबाई बणाए नायक, हुक्म इक्को इक वरतावेगा। नाम निधाना कर अनाइत, रहमत फ़ज़ल आप रखावेगा। चार युग दी पूरी कर शरायत, शिरकत पिछली मेट मिटावेगा। अग्गे करे इक हदाइत, हज़रत इक्को नाम समझावेगा। जिस दी कोई ना करे अज़माइश, आलम उल्मा समझ ना कोए रखावेगा। जिस दी दो जहान नुमाइश, फुल फुलवाड़ी लख चुरासी वेख वखावेगा। जिस दी सचखण्ड मुकामे हक़ रिहाइश, दरगाह साची सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक दृढ़ावेगा। साचा हुक्म प्रभू दृढ़ावेगा। सतिजुग साचा राह वखावेगा। वेखणहारा जल थल अस्गाह, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजावेगा। जपावणहारा धुर दा नाँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ावेगा। वसावणहारा सच्चा थाँ, महल अटल इक सुहावेगा। काया मन्दिर भाग लगा, वज्जा जन्दर आप तुड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक समझावेगा। साचा मार्ग प्रभू समझाउणा ए। कलयुग अन्तिम वेख वखाउणा ए। पिछला लेखा सर्ब चुकाउणा ए। कूड़ी क्रिया डेरा ढाउणा ए। सतिजुग मार्ग इक्को लाउणा ए। चार वरन हरि की सरन इक तकाउणा ए। पुरख अकाल इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आउणा ए। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत सर्ब समझाउणा ए। नाम अनमुलड़ी दे के दात, ख़ाली भण्डारा पूर कराउणा ए। मेल मिला के कमलापात, आवण जावण जगत विछोड़ा पन्ध मुकाउणा ए। जन भगतां दे के धुर दा साथ, सगला संग निभाउणा ए। सतिजुग पुच्छे तेरी वात, वास्ता तेरे नाल रखाउणा ए।

आदि अन्त दा सोहँ जाप, जप जीवत जीव जगत दृढ़ाउणा ए। नानक गोबिन्द अन्तिम गए आख, बिन आत्म परमात्म मेल किसे ना मिलाउणा ए। जुग चौकड़ी जिस दा करदे पाठ, पूजा सिमरन जोग अभ्यास हठ तप जिस दा नाद वजाउणा ए। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल जोत सरूपी वेखे आप, पर्दा आपणा आप उठाउणा ए। जन भगतां कोट जन्म दे लाह के पाप, पतित पापी पार कराउणा ए। मुरीदां मुर्शद खोल्हे ताक, तसबी माला गल ना कोए लटकाउणा ए। कर किरपा करे पाक, पाक रसूल रंग चढ़ाउणा ए। परम पुरख दी इक्को ज़ात, लख चुरासी आपणी ज़ात विच रलाउणा ए। पिछला लेखा जो लिख्या कलम दवात, काग़ज़ शाही वंड वंडाउणा ए। अन्तिम सब नूं दे नजात, सच घर साचे आप बहाउणा ए। सतिजुग सति सतिवादी तेरा इक्को सिमरन पूजा चले पाठ, पाठशाला अन्दर स्वामी इक्को नज़री आउणा ए। इक्को सरोवर तीर्थ तट घाट, सच किनारा आप वडयाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सब दी पूरी करे आस, निरासा दो जहान नज़र कोए ना आउणा ए। आदि पुरख जिस रचन रचाई, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण जिस बणत बणाई, एकँकार राह चलाइंदा। आदि निरँजण जिस जोत जगाई, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। श्री भगवान जिस करी पढ़ाई, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या आप समझाइंदा। सचखण्ड जिस जोत टिकाई, थिर घर आपणी वंड वंडाइंदा। नार कन्त जिस करी कुड़माई, सो निरगुण निरवैर आपणी कार कमाइंदा। सुत दुलारा जो रिहा जाई, शब्दी नाउँ वडियाइंदा। आपणी इच्छया जिस प्रगटाई, विष्न ब्रह्मा शिव धार उपाइंदा। साची भिच्छया जिस वरताई, त्रैगुण माया पंज तत वंड वखाइंदा। किरपा करी जिस रघुराई, लख चुरासी घाड़त घड़त घड़ाइंदा। नव दर जिस ने खेल रचाई, घर घर विच आपणा नूर टिकाइंदा। कर्म कांड जिस बणत बणाई, प्रकृती आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करते हथ्थ वड्याईआ। लेखा लिख के अगम्म अपार, घर आपणे ल्या टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा हुक्म वरताईआ। लख चुरासी कर उज्यार, निरगुण सरगुण रूप वखाईआ। आपणी किरपा आपे कर प्यार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर शब्द रूप समझाईआ। लेखा लिख के अगम्म अपार, कातब बण के कलम चलाईआ। सिख्या दे सर्ब संसार, सृष्टी करी जगत पढ़ाईआ। ओहले बैठ सिरजणहार, सोहणी आपणी खेल खलाईआ। नेहकर्मी कर्म करे अपार, अपरम्पर समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। रचना रच के हरि मीत, प्रभ आपणी खेल रचाईआ। सृष्ट सबाई दस्स के रीत, गुण अवगुण दोवें दए समझाईआ। मन मति बुध घर घर विच पाई ठीक, बचया कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म

सब दी कीती रीझ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मात गर्भ सब दे नाल कीती प्रीत, प्रेम प्रीती इक जुड़ाईआ। जन्म तों पहलों दस्सया ठीक, साची समझ इक समझाईआ। प्रभ दा गाउणा गीत, ढोला इक्को नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल करदा, करनहारा आप अख्वाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़दा, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। निरगुण हो के अन्दर वड़दा, सरगुण साचे सोभा पाइंदा। महल अटल अगम्मी चढ़दा, जिस घर नज़र किसे ना आइंदा। प्यार विकार दोवें घल्लदा, काया तत श्रृंगार बणाइंदा। सृष्ट सबाई आपे रलदा, रल मिल आपणा खेल वखाइंदा। गुर अवतार बण के आपणा संदेसा घल्लदा, धुर हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। दोवें रूप धरे संसार, वड संसारी भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी कर त्यार, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। कर्म कर्म दा कर विहार, जन्म जन्म दा मेल मिलाईआ। धर्म धर्म दा कर प्रचार, सोहणी करे पढ़ाईआ। वरन वरन दा लग्गे अखाड़, बरन बरन दी वंड वंडाईआ। गुर अवतार भेज वारो वार, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। अन्दरों दस्से मैं सब दा सांझा यार, बाहरों दीन मज़्हब समझाईआ। अन्दरों दस्से निरगुण नूर जोत उज्यार, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। बाहरों दस्से चम्म दृष्टी चंगी बहार, माया ममता काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल प्रनाईआ। दोहां अन्दर वस के करे खेल आप करतार, आपणी खुशी विच समाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स के, भरम भुलेखे आपणे इशारे नाल जणाईआ। गुरमुखां अन्दर रल के, गुर गुर आपणी धार प्रगटाईआ। जिन्हां कोलों जाए नठ्ठ के, जांदा आउँदा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी करनी आप कमाईआ। आपे रहिबर बणे खुदा, पीर पैगम्बर आप अख्वाइंदा। आपे बैठे हो जुदा, पर्दा उहला विच टिकाइंदा। आपे फ़ितरत दए वखा, आपे सम्बल रूप समाइंदा। आप कलमा दए पढ़ा, आपे मुख भवाइंदा। दोहां विचोला बण के बेपरवाह, हरि करनी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आपणा हुक्म वखाइंदा। गुर अवतार बणदा आया, निरगुण सरगुण लै अंगड़ाईआ। आपे राम कृष्न अख्वाया, तेई अवतार आपे गंढु पवाईआ। आपे ईसा मूसा मुहम्मद हो के कलमा पढ़ाया, दूई द्वैत विच्चों गंढु जणाईआ। आपे नानक हो के मन्त्र सतिनाम दृढ़ाया, आपे गोबिन्द हो के फ़तिह डंका इक सुणाईआ। आपे शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिखाया, आपे अञ्जील कुराना वंड वंडाईआ। आपे शब्दी राग अलाया, गुरू ग्रन्थ गुरदेव स्वामी इक्को रूप वखाईआ। आपे भरम भुलेखा पाया, हर घट आपणा खेल रचाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां एसे करनी विच सब दा माण गंवाया, मालक कोए नज़र ना आईआ।

जो आया सो प्रभू ध्याया, पुरख अकाल सीस निवाईआ। जे सब नूं देंदा हुक्म मनाया, हरि का जस फेर कोई ना गाईआ। एहो प्रभ ने भेव छुपाया, जुग जुग गुरमुख विरले लए जगाईआ। जिन्हां सिध्धा आपणा मेल मिलाया, लिखण पढ़न दी गल्ल रही ना राईआ। जिन्हां मिल्या ओ्हनां गाया, ओन्हां दा गाया शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान रिहा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे वेख वेख आपणी ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार जो रिहा घल्लदा, लोकमात दए वड्याईआ। चरण साया हेठां रिहा पलदा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। दिवस रैण रिहा डरदा, प्रभ निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लेखा समझा घड़ी घड़ी पल पल दा, छिन छिन रिहा दृढ़ाईआ। सब दा डेरा अज कल दा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। करया खेल अछल अछल्ल दा, वल छल धारी आपणी रचन रचाईआ। परम पुरख दा दीपक इक्को बलदा, जिस घर विच्चों कोटन कोटि शमा गुरू अवतार पीर पैगम्बर मात प्रगटाईआ। लेखा जाणे महल अटल दा, जिस घर सच्चा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भरम भुलेखा आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आया जग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करी पढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले बणाए मड्ड, तीर्थ तट गए जणाईआ। सृष्ट सबाई दस्सदे गए पुरख अकाल अग्गे जोड़ के हथ्थ, समरथ इक्को नज़री आईआ। नानक गोबिन्द किहा सच्च, पुरख अकाल लओ मनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब तों बैठा वक्ख, जे वेखों तां घट घट नज़री आईआ। जिन्हां देवे आपणी अक्ख, तिन्हां असल दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल आप रचाईआ। साचा खेल गुरमुख मनमुख, हरि करते धार चलाईआ। दोहां विच इक्को सुख, श्री भगवान रोग सोग ना कोए सताईआ। जे सारे सन्त भगत बणा के गोदी लए चुक, लख चुरासी कायम रहिण ना पाईआ। अन्त नूं सृष्टी जाए मुक, जूनी जून ना कोए भवाईआ। एह प्रभ ने पहलों सोची सोच, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। बेशक सचखण्ड दवारे बैठा रहे ख़मोश, जन भगतां अट्ठे पहर गीत गाए चाईं चाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इस दे विच सारे निर्दोष, परम पुरख अकाल हुक्मे अन्दर सारी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता करतार कुदरत कादर वेखणहारा वेखे विगसे बेपरवाहीआ।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह कौमी फ़ारम ज़िला करनाल *

खुशी मनाए धरनी धरत धवल, जन भगतां रही जणाईआ। उठो वेखो योद्धा सूरबीर हरि मर्द, मर्द मर्दानगी इक वखाईआ।

कलयुग अन्त श्री भगवन्त ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दर दरवेशा रूप वटाईआ। निरगुण निरगुण पुरख अकाल आया परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे नाम दी ला के गए शर्त, लख चुरासी जीव जंत जणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह लोकमात आए नधड़क, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। शब्द खण्डा अगम्मी खड़ग, तिक्खी धार आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दया आप कमाईआ। धरनी कहे मोहे चाउ घनेरा, घर वज्जे नाम वधाईआ। पुरख अबिनाशी पाया फेरा, परवरदिगार वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया ढाहे ढेरा, माया ममता मोह चुकाईआ। कलयुग अन्तिम देवे गेड़ा, लख चुरासी लड्ड भवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे खेड़ा, दो जहानां खोज खुजाईआ। लहिणा देण चुकाए गुरु गुर चेरा, चेला गुर भेव खुल्हाईआ। जन भगतां उते करे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। लेख चुकाए तेरा मेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे मोहे दयो वधाई, गुरमुखां रही समझाईआ। परम पुरख प्रभ जोत जगाई, नूरी जलवा इक रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण चाईं चाईं, बिन अक्खां नैण खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणन राही, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ढोला जस रहे गाई, अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहीआ। मुल्लां शेख़ मुसायक वेखण नूर इलाही, जल्वागर इक्को नज़री आईआ। नेत्र तक्को ख़लक खुदाई, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। दीद ईद करे रुशनाई, नूरी चन्द इक चमकाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन सुत्ते रिहा उठाई, कूड़ी निंद्रा आलस लाहीआ। आत्म अन्तर नाद धुन करे शनवाई, अनहद रागी राग सुणाईआ। अमृत आत्म जाम रिहा प्याई, निझर झिरना इक झिराईआ। जुग जन्म दे विछड़े रिहा मिलाई, घर मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण दर्शन रिहा दिखाई, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। चार वरन बणाए भाई भाई, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। साचा कलमा रिहा समझाई, नौबत आपणा नाम वजाईआ। साचा नग़मा रिहा गाई, धुर दा राग आप सुणाईआ। साचा मन्त्र रिहा समझाई, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साचा मन्दिर रिहा वखाई, घर घर विच डेरा लाईआ। साचा दीपक कर रिहा रुशनाई, जोती जाता डगमगाईआ। सुरती शब्द करे कुड़माई, सचखण्ड वासी इक्को सगन मनाईआ। उठो वेखो चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे गाओ गीत, साहिब सतिगुर सोभा पाईआ। आदि जुगादी जिस दी रीत, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जिस दे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ मसीत, सो साहिब नूरी नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी सदा अतीत, त्रैगुण अतीता नज़री आईआ। देवे वड्याई हस्त कीट, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। सच प्रीती बख़्शे हरि चरण कँवल प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं कैहन्दे रहे अनडीठ, रूप रंग

रेख नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे मैं दस्सां सच्च, सच सच जणाईआ। जन भगतो वेखो निरगुण सरगुण रिहा वस, साची करनी कार कमाईआ। शब्द अगम्मी देवे रस, अमृत आत्म जाम प्याईआ। नाम अमोलक धुर दी वथ, हरि करता इक वरताईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, करे हक़ पढ़ाईआ। प्रभ मिलण दी खोल्हे अक्ख, तीजे लोचण कर रुशनाईआ। कूड़ी रैण मेटे अन्धेरी मस, साचे घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। धरनी कहे आओ वेखो मेरा घर, जिस गृह हरि जू सोभा पाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक डेरा देवे ढाहीआ। सन्त सुहेले लाए लड़, शब्दी डोरी गंढु बंधाईआ। चरण धूढ़ नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म ढोला लैणा पढ़, गीत सुहागी इक जणाईआ। कलयुग अग्न ना जाणा सड़, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। वेख वखाए काया माटी पंज तत धड़, मास नाड़ी हड्ड फोल फुलाईआ । डूंघी भँवरी कवरी काया मन्दिर अन्दर जाए चढ़, सच सिंघासण सोभा पाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मेरा वेखो रंग, पुरख अकाल आप रंगाईआ। प्रगट हो सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। सति सतिवादी शब्द पलँघ, पावा चूल ना कोए वखाईआ। भगतां देवे इक अनन्द, निज आत्म रस चखाईआ। पंच विकार ना पावे डण्ड, कूड़ी क्रिया ना कोए हल्काईआ। नाता तोड़े भेख पखण्ड, सच सुच दए समझाईआ। भगतां नाल मिल के गावे छन्द, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रूप दरसाईआ। सुखी करे बंद बंद, बंदगी हरि हरि नाम जणाईआ। सुरत सवाणी ना होवे रंड, शब्दी कन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। धरनी कहे उठ वेखो सखी, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ । नूर ज़हूर तक्को अक्खीं, आखर आपणा रंग रंगाईआ। घर मन्दिर जगावे दीआ बत्ती, जोती नूर करे रुशनाईआ। नज़री आए कमलापती, पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार कहाणी जिस ने दस्सी, पीर पैगम्बर भेव खुल्हाईआ। जिस दा नाम अनोखा रत्ती, रत्ती रंग दए चढ़ाईआ । भेव चुकाए कूड़ी क्रिया मनमती, गुरमति इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। धरनी कहे जन भगत जाग, सच संदेसा इक सुणाईआ। सन्त सुहेले कर वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। गुरमुख बुझा आपणी आग, तृष्ना तृखा तृप्त कराईआ। गुरसिख सरनाई साची लाग, चरण कँवल मिले वड्याईआ। लख चुरासी उठ उठ भाग, सदा हरि हरि नाम सुणाईआ। निरगुण सरगुण रचया काज, हरि करता खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दात, दाता दानी इक अख्वाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बख्शे साथ, सगला संग निभाईआ। सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दस्से पूजा पाठ, सिमरन जोग अभ्यास आप समझाईआ। नित नवित्त निरगुण जोत कर प्रकाश, सरगुण भेव अभेद खुल्हाईआ। लहिणा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वेख वखाईआ। जन भगतां बण के जुग जुग दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। आपणे रखे ख़ाली हाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना वेख वखाईआ। धरनी कहे मैं दयां संदेसा, सच सच दृढ़ाईआ। परम पुरख प्रभ इक नरेसा, नर निरँकार वेस वटाईआ। सम्बल नगर साचा देसा, महल अटल सोभा पाईआ। बिन गोबिन्द जाणे ना कोई भेता, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। जन भगतां करे साचा हेता, गुरमुख आप उठाईआ। दो जहानां बण के नेता, सच्चा हुक्म मनाईआ। लहिणा देणा मुकाए मुल्लां शेख़ मसायक पूरब कराए चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं दस्सां एक, एका वार जणाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी टेक, सो करता खेल वखाईआ। जोती जामा धर के भेख, वेस अवल्लड़ा ल्या वटाईआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, चक्र चिन्ह ना कोए समझाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी महल अटल वसे अगम्मी देस, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। लख चुरासी रिहा वेख, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। सेवा ला विष्न ब्रह्म शिव महेष, मश्वरा आपणा नाम जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे भेज, धुर संदेसा इक सुणाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा दस्से लेख, जुग चौकड़ी हुक्म मनाईआ। घट घट अन्दर लख चुरासी माणे सेज, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। गुरमुख विरले दस्से भेत, भगत भगवान पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा रिहा चुकाईआ। धरनी कहे उठ जीव जग, धुर दी बात सुणाईआ। साहिब सुल्तान दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। घर घर मक्का काअबा वखा कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। आत्म सेजा चढ़े भज्ज, दूर दुराडा सच्चा माहीआ। निज नेत्र दर्शन करो रज्ज, जग लोचण नज़र किसे ना आईआ। सच प्रीती जाओ बज्झ, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। अमृत जाम पीओ मदि, रसना जिह्वा ना होए हल्काईआ। नाम जैकारा बोलो गज्ज, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया भरम भुलेखा दयो कढ्ढ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जिस परमात्म नालों होए अड्ड, सो आत्म आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया जगत दुआर पार कराए हद्द, घर मेला सहिज सुभाईआ। सच सरनाई जाओ लग्ग, लागत मंगे कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। धरती कहे मैं मिट्टी ख़ाक, कोझी कमली नज़री आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों मेरे जागे भाग, भागां भरी खुशी मनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जगे चिराग़, दीआ

६६२
१६

बाती इक्को इक रुशनाईआ। मैं साधां सन्तां सूफीआं रही आख, गुरमुख उठो चाईं चाईंआ। काया मन्दिर अन्दर बंद किवाड़ी खोल्हो ताक, बजर कपाटी पर्दा लाहीआ। पतिपरमेश्वर पुरख अकाल आपणे अन्दर वेखो साथ, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। गुप्त ज़ाहर बातन करे बात, दीद शुनीद इक शनवाईआ। डूंग्घी भँवरी खोल्हे राज़, रहमत आपणी आप कमाईआ। लेखा चुक्के रोज़ा निमाज़, वुज़ू बांग ना कोए सुणाईआ। नज़री आए साख्यात, पीर पीरां बेपरवाहीआ। सच प्याए आबे हयात, हयाती देवे आप बदलाईआ। धुर दा देवे सच ख़िताब, ख़ता पिछली मुआफ कराईआ। मेल मिलाए हक़ जनाब, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच देवे वड्याईआ। धरनी कहे मेरी वेखो धूढ़ी, चार कुण्ट नज़री आईआ। पुरख अबिनाशी आसा करी पूरी, मनसा अवर ना कोए वधाईआ। दर्शन दित्ता इक्को नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। रंग चाढ़ अगम्मी गूढ़ी, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी सिफ्तां नाल करदे रहे मशहूरी, अञ्जील कुराना लेख लिखाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल जुग चौकड़ी बड़ा दस्तूरी, हुक्म आपणा आप वरताईआ। जिस दे पिच्छे सरगुण नानक निरगुण चुक्की भूरी, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। सो पुरख अकाल जन भगतां पिच्छे करे मज़दूरी, बण सेवक सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त हाज़र हज़ूरी, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। धरनी कहे मेरा रूप मिट्टी घट्टा, सोहणा रंग ना कोए वखाईआ। परम पुरख मैनूं लग्गे अच्छा, चरण मेरे उते टिकाईआ। जां नैणां तक्कां गोबिन्द दिसे उस दा बच्चा, जिस विच वड्डी वड्याईआ। चारों कुण्ट वेखां गुरसिख मैनूं लग्गे अच्छा, जो सतिगुर सति रिहा ध्याईआ। गुरमुखां वेख मैं ख़ुशी ख़ुशी हस्सां, घर ख़ुशीआं रंग वखाईआ। जन सन्तां वेख बण निमाणी हो हो नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। जन भगतां वेख सीस पैरां हेठां रखां, बण निमाणी आपणा आप मिटाईआ। सच संदेसा कलयुग अन्तिम वार दस्सां, जुग चौकड़ी हाल सुणाईआ। नव नौ चार पिच्छों वेला आया मसां, मस्ती नाम इक्को इक चढ़ाईआ। चरण कँवल सरनाई ढट्ठां, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। जिस दा राग सवय्यां विच गाया भट्टां, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। जिस दा खेल तीर्थ तट्टां, अठसठ आपणा भेव चुकाईआ। जिस दा नाम दिवस रैण अन्तर अन्तर रटां, सोहणा राग सुणाईआ। जिस दा खेल वेखां चौदां लोक हट्टां, चौदां तबक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मैं वेखां सनमुख, हरि सतिगुर दर्शन पाईआ। नेत्र रो के दस्सां दुःख, दुखियां हाल जणाईआ। मेरी सफ़ल ना होए कुक्ख, जननी रूप ना कोए वटाईआ। गोद सोहे ना सोहणा पुत्त, सुहञ्जणा रंग ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम पई लुट्ट, लुट्टी जाए ख़लक ख़ुदाईआ।

साधां सन्तां अन्दर फुट्ट, गुरमुख रूप नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी आ के पुच्छ, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तेरे तेरे नालों गए रुठ, सच ध्यान ना कोए लगाईआ। मैं ओन्हां दा भार रही चुक्क, जो तैनूं रहे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे आ प्रभ वेख हाल, हालत आपणी दयां जणाईआ । कलयुग अन्त होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। साची दिसे ना कोई धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद मड्ड कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। हकीकत जाणे ना कोई हलाल, हक़ हक़ ना कोए समझाईआ। साधां सन्तां उलटी पकड़ी चाल, आपणा आपणा नाउँ रहे दृढ़ाईआ। धुर दा बणे ना कोई दलाल, सच्चा संग ना कोए रखाईआ। ठग्ग चोर लुट्टण धन माल, कूड़ कुड़यार भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे इक वड्याईआ। धरनी कहे मैं रोवां नेत्र, नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्त वेख झक्खड़, जगत रैण अन्धेरी छाईआ। रुत्त बसन्ती दिसे ना कोई चेत्र, गुरमुख फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। काम वासना सारे खेडण, हँकार करे लड़ाईआ। सुहञ्जणी दिसे ना कोए सेजण, नार कन्त ना कोए वड्याईआ। मस्तक लाए ना कोई मेखन, जोत ललाट ना कोए रुशनाईआ। भरमे भुल्ले मुल्लां शेख़ण, मसला सच ना कोए समझाईआ। पंडत पांधे धीआं भैणां वेखण, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। आ के वेख मेरी हालत, धरनी सच सच जणाईआ। तुध बिन करे ना कोई धुर अदालत, अदली नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया करे बग़ावत, बगलगीर सज्जण ना कोए अख्वाईआ। सति धर्म दी देवे ना कोई ज़मानत, गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई सही सलामत, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ । कूड़ी क्रिया मेट अलामत, आलम उल्मा कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे प्रभ नेत्र वेख, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। कलयुग अन्तिम मेरे खुल्हड़े केस, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मैनूं हौली जिही दस्स के गया गुरू दस्मेस, शब्द इशारे नाल समझाईआ। तेरी सोहणी लग्गे सेज, माछूवाड़े जो हंढाईआ। मैं तेरा स्नेहड़ा देवां भेज, पुरख अकाल जणाईआ। कलयुग अन्तिम बदले तेरी रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सच दुआर वसाए तेरा देस, देस दसन्तर खोज खुजाईआ। जोती जामा धर के भेस, सम्बल बैठे डेरा लाईआ। सच स्नेहड़ा तैनूं देवे भेज, कोझी कमली लए बुलाईआ। पूरब लेखा वखाए लेख, देवणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा सुण धरनी बात, इक्को वार जणाईआ। सदी बीसवीं मार झात, झाकी हरि हरि आप वखाईआ। तेरी आ के पुच्छे वात, दाता दानी खोज खुजाईआ। जिउँ भावे पत्त लए राख, पतिपरमेश्वर हथ्थ वड्याईआ। तेरा भगतां नाल बणाए

६८४
१६

साथ, सोहणा संग रचाईआ। आपे वेखे खेल तमाश, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। तेरी पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। धरनी तैनूं देवे माण, हरि करते हथ्थ वड्याईआ। सति धर्म दा सच निशान, तेरे उते दए झुलाईआ। तेरी भेंटा कर के नीहां हेठ दबाए बाल, सोहणी साची सेव कमाईआ। उपर मन्दिर बणाए महान, महिफल आपणा नाम लगाईआ। दो जहान झुलाए निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। खुशीआं गाए सच्चा गाण, गीत गोबिन्द सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे खुशी मनाण, दर दर घर घर देण वधाईआ। भगतन मेला विच जहान, सोहणा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई मिले मात, कलयुग अन्तिम सोभा पाईआ। सच सुहञ्जणी देवे दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। चरण कँवल बंधाए नात, बिध आपणी इक समझाईआ। लेखा लिख बिन कलम दवात, शाही आपणा प्रेम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। सुण के हुक्म धुर फ़रमाणा, धरनी खुशी मनाईआ। किरपा करे श्री भगवाना, भगवन आपे होए सहाईआ। गुरमुख गुरसिख करे परवाना, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सच सुणाए इक्को गाणा, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर कराइंदा। जुग चौकड़ी मेटे चिन्द, चिन्ता रोग गवाइंदा। दीन दयाल बण बख्शिंद, बख्शिश आपणा नाम वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी धरत धवल धौल वडियाइंदा। धरनी कहे मेरी आसा पूर, हरि तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरे उते फिरन ज़रूर, पंज तत काया चोला जगत हंढाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल के तेरा गायण ज़हूर, नूर तेरा करन रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा झोली पाईआ। तेरा लहिणा देवे हथ्थ, हरि करता दया कमाइंदा। मेहरवान पुरख समरथ, जुग जुग लेखा आप चुकाइंदा। भगत सज्जण देवण साथ, सोहणा संग बणाइंदा। दोहां मिल के गौणी सच्ची गाथ, सच्चा मार्ग इक समझाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पुरख अबिनाश, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। धरनी धरत धवल निरगुण सरगुण तेरे उते पाए रास, गोपी काहन वेस वटाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ सुहाए प्रभास, टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आसा मनसा मनसा आसा सब दी पूर कराइंदा।

* १७ फग्गण २०२० बिक्रमी गुरमेज सिँघ दे गृह पिण्ड खरका ज़िला करनाल *

सो पुरख निरँजण आदि जुगादी, हरि करता खेल रचाइंदा। सचखण्ड निवासी खेले खेल ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाइंदा। बोध अगाध इक चलाए शब्द अनादी, निरगुण निरवैर हुक्म वरताइंदा। थिर घर साजणा सच स्वामी साजी, महल अटल सोभा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर आबादी, सोहणी रचना आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण ठांडा सीता, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। करे खेल सदा अनडीठा, समझ सके कोए ना राईआ। निरगुण निरगुण बैठा रहे अतीता, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। मेहरवान हो के देवे भीखा, भिच्छया आपणी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। एकँकार खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा। सचखण्ड दवारे हो उज्यार, थिर घर आपणा नूर वखाइंदा। शब्दी सुत वड सिक्दार, शाह पातशाह आप प्रगटाइंदा। धुर दा हुक्म सच्ची सरकार, पुरख अकाल आप दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी तेरी धार, दो जहानां आप समझाइंदा। भेव अभेदा खोल्ह ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा रंग वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, रवि ससि तेरा नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव शब्दी सुत, हरि करता आप खुल्हाईआ। मेहरवान मेहर कर अबिनाशी अचुत, देवणहार सति वड्याईआ। साची धारों पैणा उठ, थिर घर साचे सोभा पाईआ। लख चुरासी अन्दर तेरा नूरी इक्को मुख, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सच प्रीती उत्तम सुख, सति सतिवादी आप दृढ़ाईआ। घट घट अन्दर बैठा लुक, आपणा आप छुपाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जुग चौकड़ी लए पुछ, दूर दुराडा फेरा पाईआ। तेरा पैंडा ना जाए मुक्क, पांधी बणे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुत शब्द सुण धुर दी धार, हरि करता आप जणाईआ। लख चुरासी तेरा पसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। चारों कुण्ट तेरा जैकार, दहि दिशा तेरी शनवाईआ। तेरा रूप गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वेस वटाईआ। तेरा प्रेम भगत भण्डार, तेरा नाम सन्तन ढोला गाईआ। तेरा रंग गुरमुख लैण चाढ़, गुरसिख तेरे विच समाईआ। तेरा हुक्म जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप जणाईआ। तेरा लेखा शास्त्र सिमरत वेद पुराण कुरान, गीता ज्ञान अञ्जील नाल कुड़माईआ। तेरा मन्दिर काया बंक साढे तिन्न हथ्थ मनार, महल अटल नज़री आईआ। तेरा नाद सच्ची धुनकार, घर घर आपणा राग सुणाईआ। तेरा सरोवर अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना इक वखाईआ। तेरा नूर जोत उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। तेरा घर विच घर सोहे सच दरबार, धुर दरबारी आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

६९६
१६

आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत वड्ड बलवान, हरि करता आप कराईआ। दो जहान तेरा निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड वखाईआ। गुर अवतार मन्नण आण, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ । शाह सुल्तान वेखण आण, राउ रंक सेव कमाईआ। दरोही फिरे ज़िमीं असमान, चौदां तबक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चौदां तबक मन्नण ईमान, सिदक सबूरी तेरे नाल हंढ्ढाईआ। लेखा जाणे श्री भगवान, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द सुत सच तेरा ज़ोर, हरि करता आप रखाइंदा। दो जहानां तेरी लोड़, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरे हथ्थ डोर, वागां चारों कुण्ट भवाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पुरख अकाल जाए बौहड़, निरगुण निरवैर मेल मिलाइंदा। तेरा मन्त्र फुरना फोर, साहिब सुल्तान आप दृढ़ाइंदा। निज घर वासी वसे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। चार युग वज्जदा रहे ढोल, चार वरनां आप सुणाइंदा। नित नवित्त अवल्लड़ा बोल, अनबोलत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वड्याई इक वखाइंदा। शब्द सुत अग्गों प्या हस्स, पुरख अकाल सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी सच दस्स, की अचरज खेल रचाईआ। जुग चौकड़ी वेखां नस्स नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मार्ग देवां दस्स, तेरा कोटन कोटि नाम समझाईआ। सति धर्म दा खोल्हां हट्ट, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। लख चुरासी चलावां रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। तेरा प्रेम देवां रस, रसीया इक्को रूप वटाईआ। सब दी झोली पावां हक़, हकीकत वेखां थाउँ थाईंआ। तेरे अग्गे जोड़ के दोवें हथ्थ, कँवल चरण सीस निवाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, बेपरवाह दे समझाईआ। कवण वेला मेरी पूरी करें आस, जुग चौकड़ी तृष्ना दएं बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ मेरे पित, पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। सच्चा लेखा मेरा लिख, आदि जुगादि सके ना कोए मिटाईआ। कवण वेला करें हित, सुहञ्जणी घड़ी सुहाईआ। दरस दीदार दी पावें भिख, पर्दा मुख नक़ाब उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। श्री भगवान दस्से बोल, बिन रसना जिह्वा गाईआ। जुग चौकड़ी तोलां तोल, निरगुण कंडा नाम उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत करां अनभोल, कोटां विच्चों गुरमुख विरले सोझी पाईआ। अन्तर आत्म पर्दा देवां खोल्ह, दूई द्वैती परे हटाईआ। अमृत आत्म बख़्शां पौहल, निझर झिरना इक झिराईआ। सुरती शब्दी जावां मौल, मौला आपणा नाम समझाईआ। उलटा करां नाभ कँवल, कँवला मुख आप भवाईआ। देवां वड्याई उपर धौल, धरनी धरत ख़ुशी मनाईआ। भेव चुकावां पर्दा ओहल, ओढण नज़र कोए ना आईआ। सार पाए ना कोई पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ समझ कोए ना आईआ। निरगुण

प्रगट होवां अडोल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतां वसां कोल, दूर दुराडा नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ तेरी वड्याई, हउँ सेवक चाकर सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा ध्यान लगाई, चरण कँवल मंगां सरनाईआ। दोए जोड़ निमस्कार नमो सीस निवाई, वाहिद तेरी ओट तकाईआ। परवरदिगार नूर खुदाई, लाशरीक तू ही तू ही गाईआ। जुग चौकड़ी वेखां चाईं चाईं, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम नाद वजाई, सृष्ट सबाई करन पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर लेखा लेखे पाईआ। पुरख अबिनाशी दस्से सति, सति सतिवादी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त होवां प्रगट, निरगुण नूर डगमगाइंदा। धर्म दवारा खोल्हां हट्ट, वस्त नाम इक वरताइंदा। सृष्ट सबाई ब्रह्म मति, विद्या धुर दी इक पढ़ाइंदा। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, प्रतख आपणा रूप दरसाइंदा। दुरमति मैल देवां कट, पतित पापी पार कराइंदा। शब्द अगम्मी मारां सट्ट, तेरा नाद राग अल्हाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। लेखे ला पवण स्वास, स्वास स्वासां वंड आपणा मेल मिलाइंदा। जन भगतां पूरी कर के आस, जन्म जन्म दा तृष्ना रोग गवाइंदा। निरगुण सरगुण रखां पास, आत्म परमात्म मिल मिल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। शब्द सुत कहे प्रभ मोहे तेरा माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। तूं पिता हउँ बाल अंजाण, ठाकर स्वामी तेरी इक सरनाईआ। तूं घाड़त घड़ें महान, लख चुरासी बणत बणाईआ। मैं अन्दर वड़या आण, घर घर विच डेरा लाईआ। अट्ठे पहर करां फ़रमाण, लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। लोकमात ना बणो अणजाण, धुर संदेसा इक अल्हाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर मिलो आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। शब्द सुत तेरी सेवा सच्च, हरि करता आप जणाइंदा। भाग लगाए काया माटी कच्च, पंज तत मन्दिर वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथ, धुर दा राग अल्हाइंदा। जन भगतां मार्ग देवें दस्स, सच सन्तां राह जणाइंदा। गुरमुखां देवें अमृत रस, निझर झिरना इक झिराइंदा। गुरसिखां प्रभ मिलण दी दे के अक्ख, घर सच्चा इक जणाइंदा। जिन्हां उते पै जाए शक़, तिन्हां लख चुरासी विच भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। शब्द कहे मैं मंगां चरण धूढ़ी ख़ाक, प्रभ अवर ना कोए वड्याईआ। जन भगतां बणां सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। निरमाणता विच धूढ़ी टिक्का मस्तक लावां ख़ाक, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। तेरा दरस मंगां कमलापात, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। सच प्रीती पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। श्री भगवान

देवे दान, दयावान दया कमाईआ। जुग चौकड़ी वेखां आण, नित नवित्त वेस वटाईआ। सति धर्म दा सच निशान, गुरमुख साचे दयां प्रगटाईआ। भगतां देवां भगती ज्ञान, नाम निधान झोली पाईआ। मिल मिल सोहला इक्को गाण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ दस्स सच स्वामी, दहि दिशा तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तरगत सब दी वेख वखाईआ। बोध अगाध अगम्मी तेरी बाणी, शब्द नाद सच्ची शनवाईआ। गुरमुख विरले मात पहचानी, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। भरमे भुल्ली चारे खाणी, हरि का भेव किसे ना आईआ। श्री भगवान कहे देवां धुर फ़रमानी, सच संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। श्री भगवान कहे तेरा निशाना भगत, बिन भगतां प्रभ जू नज़र किते ना आईआ। देवे वड्याई विच जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक्को शक्ति, शख़सीयत आपणी दए समझाईआ। चिन्ता सोग रहे ना हरख़, ग़म नेड़ कोए ना आईआ। मन वासना मूल ना जाए भटक, मति मतिवाली ना दए दुहाईआ। बुद्धी विच ना रहे फ़र्क, फ़ैसला इक्को नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ तेरा भगत चंगा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जिस दे अन्दर तेरा मृदंगा, साचा नाम ढोला राग सुणाईआ। दूई द्वैती ढाए कंधा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सच प्रीती गाए छन्दा, इक्को नाम ध्याईआ। अट्ठे पहर परमानंदा, निज आत्म करे रसाईआ। रसना जिह्वा होए ना गंदा, कूड़ी क्रिया ना कोए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, गृह शब्दी मंग मंगाईआ। शब्द कहे प्रभ तेरा भगत अमोला, अमुलड़ा नज़री आईआ। तेरे घर दा होया गोला, साची सेव कमाईआ। आपणा आप नाम कंडे तोला, तराज़ू अवर ना कोए रखाईआ। सच दवारा इक्को खोल्ा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। शब्द अनादी गावे ढोला, अनहद नादी राग अल्ाईआ । एथे ओथे दो जहान साहिब सतिगुर लभ्भे वचोला, दूजा बन्धन ना कोए पाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना जगत ना पाए रौला, कूक कूक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। शब्द कहे प्रभ हरिजन तेरा, तेरा रूप नज़री आईआ। धन्न भाग उह वसे खेड़ा, जिस गृह तेरा नूर रुशनाईआ। माया ममता चुक्के झेड़ा, हउमें हंगता गढ़ ना कोए वखाईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, पांधी पन्ध ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ । सच सरनाई राखो एक, हरि करता आप जणाइंदा। शब्द स्वामी देवे टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मन मति बुध करे विवेक, ख़ालस आपणा रूप वटाइंदा। कूड़ी क्रिया लेख चुकाए भेख, सति सरूपी नज़री आइंदा। आत्म

परमात्म करे हेत, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। सुरती शब्दी खेले खेड, गोपी काहन रास रचाइंदा। भाग लगाए सुहञ्जणी सेज, हरि कन्त कन्तूलह सोभा पाइंदा। जोती जलवा नूरी तेज, दीआ बाती इक्को डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्दर वड़ के दस्से भेत, भेव अभेव अभेद आप खुल्हाइंदा।

* १७ फग्गण २०२० बिक्रमी करनैल सिंघ, जरनैल सिंघ दे गृह
खरका ज़िला करनाल *

धुर दा शब्द सतिगुर प्यार, हरी नाम मिले वड्याईआ। दो जहानां बणे सहार, एथे ओथे वेख वखाईआ। डूंघी भँवरी करे पार, भव सागर पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी गेड़ निवार, आवण जावण दए कटाईआ। माणस जन्म पैज स्वार, देवत सुर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम बुझाईआ। हरि का शब्द सतिगुर रूप, आदि जुगादी नज़री आइंदा। कूड़ी क्रिया मिटाए झूठ, सच सुच इक समझाइंदा। भेव चुकाए चारे कूट, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। घर आत्म देवे सूख, परमात्म मेल मिलाइंदा। जुग जन्म दी मेटे भूख, सच भण्डार वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नाम इक वडियाइंदा। हरि का नाम ठांडा सीता, अग्नी तत बुझाईआ। घर स्वामी मिले धुर दा मीता, पुरख अकाल नज़री आईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीता, शिवदुआला मठ्ठ इक्को रूप दरसाईआ। देवे वड्याई ऊँचां नीचां, राउ रंकां गले लगाईआ। सच दुआर मार्ग दस्से सीधा, सिध साधक आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम देवे वड्याईआ। सतिगुर नाम सर्ब सुख सागर, चिन्ता रोग सोग गवाइंदा। ताल सुहाए अमृत गागर, काया बंक वडियाइंदा। भगत वछल निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मन्त्र नाम समझाइंदा। सतिगुर नाम साहिब देवे सच मन्त्र, अन्तष्करन वेख वखाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट पर्दा उहला दए चुकाईआ। वेख वखाए ऊँच अगम्म गगन गगनंतर, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी जगत वासना मेटे बसन्तर, अग्नी अग्ग बुझाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आत्म करे स्तंतर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। सति धर्म बणाए बणतर, घड़न भंनणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्द इक दरसाईआ। सतिगुर शब्द अलख अभेवा, अनभव धार चलाइंदा। अमृत रस अगम्मी मेवा, दो जहानां हथ्थ किसे ना आइंदा। कर किरपा जिस देवे वड्ड देवी देवा, देवत सुर सर्ब ध्यान लगाइंदा। गुरमुख विरला

रस वेखे बिन रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोए वडियाइंदा। भेव खुल्हाए वसणहारा नेहचल धाम सदा नेहकेवा, निरगुण आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि नाम आप सालाहइंदा। सतिगुर नाम सति सरूप, जग नेत्र नज़र ना आईआ। रूप रंग कोई ना जाणे भूप, राज राजान वेखण कोए ना आईआ। ग़रीब निमाणयां उपर जाए तूठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दूई द्वैत पंच विकारा काम क्रोध लोभ मोह हँकारा कढ्ढे कुट्ट, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। मेहरवान श्री भगवान सुहाए साची रुत्त, पत डाली फुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नाम इक उपजाईआ। सच नाम सतिगुर बाण, अणयाला तीर लगाइंदा। गुरमुख विरला करे पछाण, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी जीव जंत शैतान, शरअ विच सर्ब लड़ाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। दीन मज़्ब दिसे ना कोए ईमान, इष्ट देव ना कोए जणाइंदा। काग़ज़ कलम शाही नेत्र नैणां नीर वहाण, मेहरवान मेहर नज़र ना कोए उठाइंदा। गुरमुख विरले आदि जुगादि हरि का नाम मिले दान, हरि करता वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सो गुरमुख गुरसिख चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़ नज़र कोए ना आइंदा। अन्तर आत्म बिन पढ़यां उपजे ज्ञान, अल्फ़ ये पट्टी ना कोए सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम वखाइंदा। सतिगुर नाम सदा अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी दे कर पिठ, घर घर विच रिहा डेरा लाईआ। भगतां करे साचा हित, हितकारी लए अंगड़ाईआ। कर प्रकाश घर निज, निज मन्त्र दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपाईआ। साचा नाम हरि दी उपमा, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई दीसे सुफना, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध अन्तिम मुकणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना कोए कराईआ। लख चुरासी जीव जंत मात गर्भ उलटा रुक्खणा, जम की फाँसी सके ना कोए तुड़ाईआ। गुरमुख विरले सतिगुर मार्ग पुच्छणा, नेत्र रो रो नैणां नीर वहाईआ। कवण प्रभ जिस ठाकर अन्तिम गोदी चुक्कणा, जन्म मरन दोवें दए मुकाईआ। सच दवारे सचखण्ड जिस दे चरणां हेठां लुकणा, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी खेल वखाईआ । सतिगुर शब्द कहे मैं सब तों उच्चा, प्रभ दिती मोहे वड्याईआ। आदि जुगादि मेरा पैंडा ना मुक्का, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के आए राहीआ। दो जहान उजल मुखा, दुरमति मैल ना कोए लगाईआ। मेरा बूटा कदे ना सुक्का, सिम्मल रूप ना कोए वटाईआ। फुल फलवाड़ी नाल झुका, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। दीन दयाल हरि कृपाल हो के तुट्ठा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा सोहणा महल्ला, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सच दवारे रहिवां इकल्ला, एकँकार दिती वड्याईआ। जोती नूर आपे बला, ढोला राग शब्दी आपे गाईआ। पावां सार जलां थलां, डूंग्घे सागर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी जन भगत फड़ावां पल्ला, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। सूफीआं मैनूं किहा हकीकत विच अल्ला, आलमीन नूर खुदाईआ। मेरी धार सदा बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणा आप वखाईआ। मेरा नाअरा इललिल्ला, लाशरीक खुशीआं नाल सुणाईआ। ऊँच अगम्म अथाह मेरा टिल्ला, मुकामे हक़ मिले वड्याईआ। जुग चौकड़ी कोई ना कटया छिला, सच दवारे सोभा पाईआ। पीर पैगम्बर मुर्शद मुरीदां आ के मिला, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा कलमा, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। मेरा भेव ना पाए आलम उल्मा, चौदां विद्या दए दुहाईआ। बिन परवरदिगार किसे दवारयों मूल ना मिलणा, हट्ट बाज़ार ना कोए विकाईआ। अगम्म अथाह लोक परलोक खेल खेलणा, ख़ालक ख़लक रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्द इक समझाईआ। सच शब्द कहे मेरा पिता परवरदिगार, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दा लेखा धुर दरबार, दरगाह साची खुशी मनाईआ। मक्का काअबा जिस खुलाया किवाड़, जगत हुजरा इक वखाईआ। सो महिबूब मुहब्बत करे अपार, महव आपणा मेल मिलाईआ। तालब तुलबा करे विचार, भेव अभेद आपणा आप जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, अञ्जील कुरान ना सके समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, आपणा शब्द नाम कलमा इक्को इक दृढ़ाईआ। कलमा शब्द नाम करे प्रसिद्ध, पुश्त दर पुश्त वेख वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाम जपण दी दस्सी बिध, मार्ग धुर दा आप समझाइंदा। आत्म परमात्म तीर निशाने दित्ता विध, मुखी तिक्खी धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां मित्र, गुरमुखां संग निभाईआ। सच दवारयों आवां निकल, घर घर विच पर्दा लाहीआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान मेरा करे ज़िकर, ज़िकरीआ मेरे पिच्छे आपणा आप बैठा चिराईआ। साचे सन्तां मैनूं सदा फिकर, फिकरे अन्दर सिफ्ती नाम पढ़ाईआ। दो जहानां लोकमात बण के साचा मित्र, मीत मुरारा रूप वटाईआ। आत्म परमात्म मिलौण दा नित नवित्त मैनूं इश्क, आशक माअशूक हकूक इक्को जिहा रखाईआ। सर्ब जीआं दा बण स्वामी इष्ट, दृष्ट देवां पर्दा लाहीआ। जिस नूं राम गुरू दोवें मन्नदे रहे वशिष्ट, विशेषता सब नूं दयां जणाईआ। जिस दा खेल स्वर्ग बहिश्त, दोज़ख अग्नी भा तपाईआ। सो सतिगुर शब्द गुरमुखां देवे अन्तर सिदक, भरोसा सच सच सच दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नेड़ ना आवे निन्दया

निन्दक, रसना जिह्वा हरि हरि नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन हरि हरि रूप समाईआ।

*** १७ फग्गण २०२० बिक्रमी चानण सिँघ दे गृह पिण्ड हंढोला ज़िला करनाल ***

सचखण्ड निवासी तेरी ओट, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। फिरी दरोही लोक परलोक, दो जहान रहे कुरलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ना कोई सोच, ज़िमी असमान धीर ना कोए धराईआ। सच प्रकाश नज़र ना आवे निर्मल जोत, अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। लख चुरासी जीव जंत तन माटी भरया खोट, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। साहिब सतिगुर पारब्रह्म क्यों बैठा अन्त ख़मोश, निरवैर आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। सचखण्ड निवासी आ के वेख, गुर अवतार मंग मंगाईआ। सृष्ट सबाई कूड़ा भेख, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। हरि का नाउँ कोई ना लए चेत, चेतन रूप ना कोए वटाईआ। माया ममता रहे खेड, हउमें हंगता गढ़ बणाईआ। किसे नज़र ना आवे नेतन नेत, निज घर दरस कोए ना पाईआ। कोई ना जाणे तेरा भेत, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी सुंञां खेत, तुध बिन होवे ना कोए सहाईआ। आत्म परमात्म माणे ना कोई सेज, घर वज्जे ना नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। पीर पैगम्बर तक्कण राह, नेत्र नैण उठाईआ। परवरदिगार बण मलाह, बेनज़ीर निरगुण नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। उम्मत उम्मती भरी गुनाह, मुहब्बत सच ना कोए समझाईआ। साचा दिसे ना कोई मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। तेरा कलमा गए भुला, सच सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। मक्का काअबा कोई ना पढ़े दुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर जोती जोत कर रुशनाईआ। पीर पैगम्बर मारन ताअना, परवरदिगार सच जणाईआ। चौदां तबक दिसे वैराना, सच फुलवाड़ी रंग ना कोए वखाईआ। ना कोई दिसे मुल्लां शेख़ मुसायक मौलाना, मुहब्बत हक़ ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पंच विकारी फिरे शैताना, घर घर शरअ करे लड़ाईआ। साबत रिहा ना कोई ईमाना, अमल आलम करे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। भगत जन रहे चीक, अन्तर रो रो रहे जणाईआ। परम पुरख तेरी इक उडीक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। दरस दे शाह पातशाह मंगण भीख, भिच्छया इक्को नाम झोली पाईआ। मेहर नज़र मेहरवान कर बख़्शीश, रहमत तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगत नव नौ चार करदे रहे उडीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सन्त कहिण प्रभ मार झात, झाकी आपणी आप जणाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म पढ़े कोई ना गाथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब हल्काईआ। सच प्रीती कोई ना जोड़े नात, नाता बिधाता मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो गए आख, धुर संदेसा तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, लोकमात फेरा पाईआ। गुरमुख कहिण प्रभ खोल्ह अक्ख, नेत्र नैण नैण उग्घड़ाईआ। तेरे उते सब नूं प्या शक़, तेरा इष्ट ना कोए मनाईआ। कूड़ी वासना जगत खुल्ह्या हट्ट, तेरा नाउँ सच ना कोए जणाईआ। साध सन्त कलयुग अन्त धीआं भैणां रहे तक्क, नेत्र लज्जया शरम हया ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया नच्चे मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले देण दुहाईआ। धाहीं मारे तीर्थ तट, स्त्री पुरुष नंगे तारीआं रहे लाईआ। घर घर दर दर उबले बहत्तर नाड़ी रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरे मिलण दी किसे ना खुल्ही अक्ख, निज नेत्र दर्शन कोए ना पाईआ। मणका मणका माला सारे रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुरसिख कहिण प्रभ फेरा पा, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाता तुटा पुत्तरां माँ, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। भाई भैणां रहे तका, नार कन्त सेज सुहञ्जणी सोभा कोई ना पाईआ। हरि हरि भुल्लया घर घर नाँ, कूड़ी क्रिया नाच नचाईआ। साचा इष्ट लवे ना कोई मना, दृष्ट सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी रोवे करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी बीते चार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सज्जण मिले ना कोई यार, मीत मुरारा नज़र कोए ना आईआ। आए गए गुरू अवतार पीर पैगम्बर फेरा पाईआ। लिख लिख लेखा कलम दवात, कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। अन्त किसे ना दित्ता साथ, पल्लू सारे गए छुडाईआ। मेरा वेख लेख मस्तक माथ, मुख घूँगट रही उठाईआ। बण निमाणी हो अनाथ, नाथ अनाथां सीस झुकाईआ। जिउँ भावे पत लै राख, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। कूड़ी क्रिया मेरे उते करे नाच, सति धर्म बैठा मुख छुपाईआ। माया ममता लग्गी आंच, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। ठग्ग चोर यार पाइण रास, गोपी काहन तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले मारन धाह, श्री भगवान रहे जणाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ होए बेवफ़ा, वफ़ादारी सच ना कोए कमाईआ। तेरे दर दिवस रैण होवण गुनाह, पाक पवित नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन पकड़े कोई ना बांह, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, दर ठांडा मंग मंगाईआ। तीर्थ तट रहे दस्स, आपणा हाल जणाईआ। साडे रिहा नहीं किछ वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। रैण अन्धेरी कलयुग दिसे मस, मस्ती कूड़ी चढ़ी लोकाईआ। लेखा कोई ना जाणे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध खोज ना कोए खुजाईआ। सच दुआर नज़र ना आवे हट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक वर, सच तेरी सरनाईआ। सच सरनाई तेरी एक, एकँकार दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे चेत, चेतन हो के ध्यान लगाईआ। परम पुरख प्रभ आ के वेख, वास्ता इक्को वार पाईआ। कोई ना करे साचा हेता, हितकारी नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ा भेख, सत्त दीप सति रंग ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, जिस घर कलयुग डेरा लाईआ। सुण के कलयुग प्या उठ, आपणी लै अंगड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ अग्गे झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मैं तेरा प्रभू छोटा पुत, चौथा युग नाउँ रखाईआ। किसे घर रहिण ना दित्ता सुख, वेख मेरी वड्डी वड्याईआ। मावां पुत्रां लग्गा दुःख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पाई लुट्ट, बचया कोई रहिण ना पाईआ। तेरी प्रीती सब दे कोलों गई छुट, हिरदे तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। सति धर्म दा बूटा पुट्ट, मैं दिती जड़ उखड़ाईआ। पुरख अकाल तूं मेरे उते हो खुश, तेरी सोहणी सेव कमाईआ। गोबिन्द सुत नीहां हेठां दित्ते सुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे मोहे वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे मैं कीता कम्म, प्रभ तेरी करनी कार कमाईआ। किसे नाम जपण ना देवां दमो दम, पवण वासना आपणा रूप वखाईआ। धन्न भाग मैं तेरे घर प्या जम्म, धरनी धरत धवल उपर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, तेरी साची सेव कमाईआ। सुण के कलयुग कल दी बात, सतिजुग नैण खुल्हाईआ। परम पुरख उठ वेख मार झात, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। गोबिन्द सूरा अन्तिम गया आख, सच संदेसा जगत सुणाईआ। कल कल्की होवे प्रगट, निरगुण निरवैर रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, दो जहानां डेरा ढाहीआ। सति धर्म दा खोल्हे हट्ट, बण हटवाणा हट्ट चलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेड़ा करे भट्ठ, जोती लम्बू अग्नी लाईआ। सृष्ट सबाई इक्को मार्ग देवे दस्स, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। निज नेत्र खोल्हे अक्ख, दोए लोचण मिले वड्याईआ। सति सन्तोख धीरज देवे जत, रत्ती रत आपणे रंग रंगाईआ। भगत सुहेले मेले पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। सतिजुग बात सुण, गुर अवतार पीर पैगम्बर श्री भगवान रहे जणाईआ। अबिनाशी करते तेरे गुण, हथ्थ तेरे वड्याईआ।

लख चुरासी वेख छाण पुण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू तेरे हथ्थ वड्याईआ। श्री भगवान प्या हस्स, सचखण्ड निवासी खुशी मनाइंदा। सो पुरख निरँजण आप समरथ, हरि पुरख निरँजण कार कमाइंदा। एकँकार चलाए रथ, आदि निरँजण सेव कमाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा वथ, श्री भगवान सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रगट, ब्रह्म आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा इक सुणाइंदा। शब्द संदेसा श्री भगवान, आदि जुगादी इक जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करो ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतारो तुहाड्डा लेख करे परवान, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। पीर पैगम्बर सजदा सीस करो सलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बर रखणा याद, याददाशत हरि जणाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी धुरदरगाही गॉड, वाहिद इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा सब दा दए चुकाईआ। लहिणा चुकाए श्री भगवन्त, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। माण दिवाए जन भगतां जगत, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। सन्तां सुहेला करे वक्त, वार थित आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां लेखे लाए बूँद रक्त, सुत नादी रूप वटाईआ। गुरसिखां देवे शब्दी शक्ति, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। लहिणा देणा चुकाए धरनी धवल धरत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। वेख वखाए आप प्रभ, बेअन्त खेल कराइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे हद्द, लहिणा देणा झोली पाइंदा। वेख वखाणे मक्का काअबा हुजरा हज्ज, हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता गढ़ जाए भज्ज, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त इक सुणाए अगम्मी नद, अनहद रागी राग सुणाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां परदे लए कज, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी लए सद्द, सद्दा साचा नाम सुणाइंदा। धरत मात दी गोदी बहिणा भज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करां संसार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। धीरज रखो गुरू अवतार, पीर पैगम्बर धरवास रिहा रखाईआ। जन भगतो नेत्र नैण वेखो उग्घाड़, घर बैठा बेपरवाहीआ। सन्तो शब्द अगम्मी मारो आवाज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। गुरमुखो अन्दर वड़ के समझो राज़, बाहर ढूंडण कोए ना जाईआ। गुरसिख तेरी काया अन्दर वसे साथ, घर घर विच डेरा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा परम पुरख सद गाए गाथ, आत्म परमात्म भुल्ल कदे ना जाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, निरगुण जोत कर प्रकाश, लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वेखे चाईं चाईंआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग देवे साची दात, किरपा करे पुरख समराथ, नाम अनमुलड़ी

दौलत आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वखाए काज, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नज़री आए गुरू महाराज, भगतां सन्तां रखे मात लाज गुरमुख गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार झात, सत्तां दीपां डूंघा फोले खात, ज़िमीं असमानां पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान दए दिलासा, सच स्वामी आप जणाईआ। परम पुरख ते रखो भरवासा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। आदि जुगादि जिस साजण साजा, नित नवित्त वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दासी दासा, सरगुण निरगुण सेव कमाईआ। कलयुग अन्त सब दी पूरी करे आसा, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान जिस दा गाए खुलासा, खाणी बाणी जिस दा नाम ध्याईआ। सो साहिब सुल्तान श्री भगवान सर्ब जीआं दा सज्जण साका, घर घर नाता जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, नाम अमोलक झोली पाईआ। बंद किवाड़ी खोल्हे ताका, निर्मल जोत करे प्रकाशा, आत्म सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुण निरँकार, सारे खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक दूजे नूं वाजां रहे मार, इशारयां नाल समझाईआ। गुर अवतार करन प्यार, प्रेम प्रीती इक वखाईआ। पीर पैगम्बर करन गुफ्तार, गुफ्त शुनीद खुशी मनाईआ। भगत कहिण सच्ची सरकार, करता पुरख देवे वड्याईआ। सन्त कहिण हरि सतिगुर मिले आण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख कहिण मिले इक्को सच ध्यान, लिव छुटकी फेर लगाईआ। गुरसिख कहिण लख चुरासी मिटे निशान, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। अबिनाशी करता कहे मैं सब दा जाणी जाण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सचखण्ड दुआर सच बेनन्ती करां परवान, परवाना आपणे लेखे लाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, शब्द प्रधानगी इक कमाईआ। शाहो भूप बण राजान, डंका आपणा नाम वजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक पुरी लोअ आकाश सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म ढोला इक्को गाण, तू ही तू ही राग सुणाईआ। सति धर्म दी खोल्हां इक दुकान, मजलस आपणा नाम वखाईआ। लेखा चुक्के कूड़ी क्रिया जगत शैतान, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक सर्ब मिट जाण, सीस ताज ना कोए रखाईआ। करे खेल श्री भगवान, लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वाली जोत अकाली रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा झगड़ा दए चुकाईआ। कूड़ा झगड़ा जाए मुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल आपे तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कूड़ा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा सच चमकाईआ। सतिजुग उपजाए साचा सुत, धर्म वस्त झोली

पाईआ। दर दर घर घर जा जा गुरमुखां लए पुछ, गुरसिखां मेल मिलाईआ। उजल करो सारे मुख, लख चुरासी विच्चों मानस जन्म उत्तम नज़री आईआ। प्रभ मिलण दी इक्को भुक्ख, दूजी तृष्ना ना कोए वधाईआ। सफल करो मात कुख, जन जननी मिले वड्याईआ। दूजी वार ना होवे उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। गुरमुख बणो साचे गुरसिख, सिख्या गोबिन्द इक दृढ़ाईआ। तुहाढे पिच्छे नींहां हेठ रखाए पुत, पिता मात भेंट चढ़ाईआ। उस कोलों जा के लवो पुछ, जो दुखियां दुःख दर्दीआं दर्द रिहा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। गुरमुख वेख गुर का रंग, हरि सतिगुर आप जणाईआ। आत्म सेजा बैठा पलँघ, सोहणा आसण लाईआ। दिवस रैण वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत धारा देवे गंग, निझर झिरना इक झिराईआ। निरगुण जोत प्रकाश करे चन्द, कोटन कोटि रवि ससि नैण शरमाईआ। पुरी अनन्द वाला देवे इक अनन्द, जिस अनन्द विच्चों आपा नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना लाए गंद, अमृत बाणी इक्को जाम प्याईआ। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा सच चमकाईआ। आत्म होण ना देवे रंड, परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गुरमुख गंढ, बिन सतिगुर पूरे तोड़ ना कोए निभाईआ। सच वस्त अमोलक दात धुरदरगाहों मंग, देवणहार दातार अतोट अतुट वरताईआ। सच दुआरयों कदे ना संग, भज्जा जा वाहो दाहीआ। कर किरपा गुर शब्दी काया चोली चाढ़े रंग, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। जगत नाता तुटे संग, सतिगुर मेला गुर चेला सहिज सुभाईआ। मिल पए सीतल धार ठंड, अग्नी अग्ग बुझाईआ। गुरसिख तूं सदा सदा गुर पूरे दा सिक्खी चन्द, दो जहान तेरी चमक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सच मन्त्र इक आपणा नाम दृढ़ाईआ।

* १८ फग्गण २०२० बिक्रमी अर्जन सिँघ, गुरदीप सिँघ दे गृह बलोचपुरा ज़िला करनाल *

सचखण्ड निवासी पुरख सुल्तान, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। शाहो भूप राज राजान, शाह पातशाह नाउँ वडियाइंदा। तख्त निवासी हुक्मरान, धुर दी धार आप समझाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, वस्त अगम्म आप वरताइंदा। एकँकारा वड्ड बलवान, बलधारी भेव कोए ना पाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वखाइंदा। श्री भगवान वसणहारा सच मुकाम, महल अटल डेरा लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सति प्रधानगी इक कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

७०८
१६

किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी परवरदिगार, हरि करता आप कराईआ। नूर नुराना हो उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। दरगाह साची धाम न्यार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सच तौफ़ीक हरि सांझे यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता रिहा कमाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। महल अटल इक उसार, महिफ़ल आपणी आप लगाईआ। दूजा ना कोई मीत मुरार, संगी संग ना कोए निभाईआ। कमलापाती हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। वसणहारा ठांडे दरबार, दर घर साचा इक सुहाईआ। आपणी इच्छया आपे धार, भिच्छया देवणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी पुरख समरथ, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण निरवैर हो प्रगट, अजूनी रहित आपणा वेस वटाइंदा। सचखण्ड दवारा खोल्ह हट्ट, दरगाह साची सोभा पाइंदा। सति सति बोल अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी आप कमाइंदा। साची करनी श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लेखा जाण सच महान, महिमा कथनी कथ सके कोए ना राईआ। महल अटल इक मकान, सच दुआर दए वड्याईआ। निरगुण रूप निरगुण जोत निरगुण निशान, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण मर्द निरगुण मर्दान, निरगुण दया इक कमाईआ। निरगुण वस्त निरगुण देवणहार, निरगुण झोली आपणी आप भराईआ। निरगुण गोपी निरगुण काहन, सुरती शब्दी सोभा पाईआ। निरगुण मेला मेल मिलाए आण, दूजा वचोला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सच्चा इक्को इक अख्वाईआ। निरगुण दाता गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि ना होए दिलगीर, दुतीआ रूप ना कोए वटाइंदा। निरगुण देवे आपे धीर, धीरजवान आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी कर निरँकार, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, भिच्छया इक वरताईआ। प्रेम प्रीती बन्न्ह प्यार, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। आपे पुरख आपे नार, कन्त कन्तूहल आपणा वेस वटाईआ। आपे सेज सुहञ्जणी पावे सार, सोभावन्ती हो खुशी मनाईआ। आपे गावे मंगलाचार, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। आपे दीआ बाती कर उज्यार, घर वेखे बेपरवाहीआ। आपे महल अटल पावे सार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सचखण्ड दवारे इक जैकार, नर हरि करता आप कराईआ। वेखे विगसे वेखणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड दवारे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता धार चलाइंदा। वेखणहारा खेल तमाशा, निरगुण निरगुण पर्दा आपे लाहइंदा। आपणे

अन्दर आपे कर के वासा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। घर विच घर कर प्रकाशा, जोती नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा इक वडियाइंदा। सचखण्ड दवारा कहे मोहे चाउ घनेरा, घर वज्जी इक वधाईआ। श्री भगवान बद्धा बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। दूजा अवर ना दिसे कोई डेरा, चार दीवार नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल वसाया खेड़ा,गृह मन्दिर सोभा पाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच देवे वड्याईआ। सचखण्ड कहे मैं करां दीदार, नित नित हरि हरि दर्शन पाईआ। अट्ठे पहर इक प्यार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सज्जण मिल्या मीत मुरार, साहिब सच्चा बेपरवाहीआ। सच दवारे जो बैठा आण, सच सिँघासण सोभा पाईआ। दीवा बाती जगया महान, नूर इक्को इक रुशनाईआ। बाढी घाड़त घड़े ना कोए तरखाण, बणावणहार आप अख्वाईआ। महल अटल बणाई मेरी शान, शहिनशाह रहमत आप कमाईआ। चरण कँवल धरे उपर महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवे वड्याईआ। सचखण्ड कहे मैं कहां सति, सति सति जणाईआ। पुरख अबिनाशी रखी पत्त, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। अन्दर वड़ पुरख समरथ, सोहणी सेज हंढ्ढाईआ। हौली हौली मैनूं रिहा दस्स, बिन रसना जिह्वा बोल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दवारा कहे मोहे चढ़या चा, घर मेरे वज्जी वधाईआ। परम पुरख मेरी बणत लई बणा, आदि जुगादि सके ना कोए मिटाईआ। निरगुण निरवैर हो के बैठा आ, मूर्त अकाल जोत रुशनाईआ। पर्दा ओहला दित्ता चुका, मुख नक़ाब ना कोए टिकाईआ। नूरो नुर परवरदिगार सच खुदा, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। मेरे नाल ना होए जुदा, जुज़ अंग ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड अन्दर खुशी करे सिँघासण, हस्स हस्स रिहा सुणाईआ। मैं सेवक सेवा करां बण के दासी दासण, चाकर ख़ाक रूप वटाईआ। मेरे उते बहे पुरख समराथण, मेहरवान डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही पुरख अगम्म निरगुण धार आपे बोल, सच संदेसा इक जणाईआ। सच सिँघासण रहिणा अडोल, डुल कदे ना जाईआ। सचखण्ड वसां तेरे कोल, सद तेरा संग निभाईआ। बणत बणाई आप अनमोल, अनमुलड़ी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां दृष्टी इक जणाईआ। दोहां दृष्टी दे इक, इकउँकार दए वड्याईआ। मेरा लेखा कोई ना सके लिख, इक्को वार दयां जणाईआ। मेरा सदा रहे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। आदि जुगादि ना देवां पिठ, करवट सद ना कदे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सचखण्ड

कहे प्रभ तेरा मेरे नाल प्यार, अन्तर अन्तर नज़री आईआ। अगम्म अथाह तेरा विहार, सोच समझ सके ना राईआ। तेरा मन्दिर तेरा मनार, तेरा महल करे रुशनाईआ। तेरा रूप सच्ची सरकार, शहिनशाह वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, खुशी खुशी जणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सच कहाणी देवां दस्स, भेव अभेद खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवां वथ, तेरी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। पुरख अकाल कहे करतार, हरि करता आप जणाईआ। करां खेल पुरख नार, आप आपणा भेव चुकाईआ। बाल जन्मां अपर अपार, जननी जन नाउँ धराईआ। शब्दी सुत इक अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे तोहे माण वड्याईआ। सचखण्ड सुण धुर दी गाथ, हरि करता आप जणाईआ। पुत्तर जन्मे कमलापात, सपूत इक्को नज़री आईआ। शब्द दुलारा तेरा देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जिस दा सच दवारे करे वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड कहे प्रभ उह केहड़ा घर, जिस घर मिले माण वड्याईआ। सुत दुलारा जावे वड़, सोभावन्त सोभा पाईआ। नित नवित्त तेरा दर्शन लए कर, बिन अक्खां नज़री आईआ। कवण कूटे जाए चढ़, कवण महल डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान कहे सचखण्ड, सच सच दृढ़ाईआ। घर विच घर वंडां वंड, तेरे अन्दर थिर घर रूप वटाईआ। उस विच वड़े मेरा चन्द, शब्दी डेरा लाईआ। पूरी करां धुर दी मंग, वस्त आपणी झोली पाईआ। आदि जुगादी इक्को अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। किरपा करां हो सूरा सरबँग, शहिनशाह हो दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। घर विच घर बणे अवल्ला, सो साहिब आप जणाईआ। थिर घर वसे इक महल्ला, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। शब्दी सुत फड़ाए पल्ला, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सुत छन्नयां हरि जू बाल, जन जननी नाउँ धराइंदा। जिस नूं आदि जुगादि कोई ना खाए काल, महाकाल नेड़ कोए ना आइंदा। सच दवारे वसे सच्ची धर्मसाल, घर घर विच डेरा लाइंदा। थिर घर साचे दए बहाल, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। चरण कँवल दए ध्यान, साचा मेला मेल मिलाइंदा। किरपा कर श्री भगवान, भगवन आपणी कारे लाइंदा। धुर दा दे इक फ़रमान, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे पुरख समरथ, बेपरवाह दया कमाईआ। धुर दा मार्ग अगम्मी दस्स, करे सति पढ़ाईआ। वस्त अमोलक दे के वथ, वाह

वाह बणत बणाईआ। शब्द सुत खोल्ह अक्ख, हरि सतिगुर नेत्र आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। सुत दुलारा छोटा बाला रिहा कूक, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ । मैं तेरी गोदी सुत्ता रहां घूक, सुख आसण डेरा लाईआ। साहिब सुल्तान तेरा बण के पूत, दु:ख रोग ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे इक वड्याईआ । श्री भगवान कहे तूं बाला सच्चा, बचपन तेरा आपणी झोली पाईआ। सच दुआर दा देवां पता, पतण बहि के बेपरवाहीआ। तेरी लज्जया सदा रखां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। सुत दुलारा कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ । तूं साहिब सतिगुर सिरजणहार, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। हउँ बालक नढ्ढा इक अञ्याण, तेरा भेव कोए ना पाईआ। तेरी किरपा मंगां महान, तेरी महिमा सिफ्त सालाहीआ। तेरी भिच्छया मिले दान, मेरी इच्छया पूर कराईआ। तेरा मेरा इक मकान, घर इक्को सोभा पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी नौजवान, मैं थिर घर तेरे मन्दिर डेरा लाईआ। तूं देवणहारा दान, मैं मांगत रूप वटाईआ। तेरा सुण सच्चा फ़रमान, हउँ खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, मेहरवान दया कमाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सो पुरख निरँजण भेव खुल्हाउँदा ए। हरि पुरख निरँजण राह जणाउँदा ए। एकँकारा रंग चढ़ाउँदा ए। आदि निरँजण नूर रुशनाउँदा ए। अबिनाशी करता वड वडयाउँदा ए। श्री भगवान पकड़ उठाउँदा ए। पारब्रह्म पड़दा लाहउदा ए। सचखण्ड निवासी साची करनी कार आप समझाउँदा ए। धुर दा करना इक्को कम्म, निहकर्मी आप दृढ़ाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा बन्न्ह, साचा मार्ग इक वखाउँदा ए। त्रैगुण माया देवे बन्न्ह, पंचम मेला मेल मिलाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड बेड़ा देणा बन्न्ह, ज़िमी असमान सूरज चन्न नूरी नूर रुशनाउँदा ए। मण्डल मण्डप खेल करे भगवन, श्री भगवान साचा राह चलाउँदा ए। लख चुरासी देवे दान, चारे खाणी तेरी झोली पाउँदा ए। चारे बाणी गाउणा गाण, सोहला ढोला राग अलाउँदा ए। निरगुण सरगुण कर प्रधान, पंच तत चोला जगत वखाउँदा ए। नौ दवारे खोल्ह दुकान, घर विच घर दसवें धार बंधाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर करे खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाउँदा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान जगत दृढ़ाउँदा ए। तेरा नाउँ इक प्रधान, जुग जुग सोहणा राग सुणाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद कर परवान, कलमा नबी रसूल पढ़ाउँदा ए। मुकामे हक़ इक निशान, नौबत इक्को नाम वजाउँदा ए। भगत भगवान बख्श ध्यान, सच प्रीती जोड़ जुड़ाउँदा ए। सन्तन दे के ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक समझाउँदा ए। गुरमुख गुर गुर मेले आण, गुर सतिगुर सच्चा संग निभाउँदा ए। गुरसिख अट्ठे पहर मंगे ध्यान, सद तेरा राह तकाउँदा ए। सतिजुग त्रेता

द्वापर कलयुग तेरी सिफ्त दी करन कल्याण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द जीव जंत साध सन्त बत्ती दन्द सिफ्त सलाहउदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत तेरा माण रखाउँदा ए। सुण संदेसा श्री भगवन्त, सुत शब्दी खुशी मनाईआ। पारब्रह्म तेरी महिमा अगणत, हउँ सेवक कहिण किछ ना पाईआ। जुग चौकड़ी महिमा अगणत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी धार नज़री आईआ । दर दरवेश रहां मंगत, बण भिखारी अलख जगाईआ। बोध अगाधे हरि जू पंडत, साची सिख्या देणी पढ़ाईआ। दूजे दर ना जावां मंगत, तेरा मन्दिर सोहणा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सुत दुलारे आप समझाउँदा ए। सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। मेहर नज़र इक तकाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव लगाउँदा ए। त्रै पंज सोहणा जोड़ जुड़ाउँदा ए। नौ अट्ठ गंढु पवाउँदा ए। दसवें तेरी धार प्रगटाउँदा ए। गुर अवतार हुक्म मनाउँदा ए। जुग चौकड़ी वेख संसार, निरगुण सरगुण वेस धराउँदा ए। कागज़ कलम दे अधार, शाही नाता जोड़ जुड़ाउँदा ए। रसना जिह्वा बोल जैकार, मानस मानुख आप दृढ़ाउँदा ए। अठसठ तीर्थ खोल्ह किवाड़, तट किनारे सोभा पाउँदा ए। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाउँदा ए। जल थल महीअल पावे सार, समुंद सागर विरोल आपणी कार कमाउँदा ए। वसणहारा निहचल धाम अटल अपार, दो जहानां हुक्म वरताउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण मददगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द इक्को तेरा नाम वडयाउँदा ए। सुत शब्द गया झुक, प्रभ चरण सीस निवाईआ। तेरा लेखा ना जाए मुक्क, अगणत गणत ना कोए कराईआ। जुग चौकड़ी वेखण लुक लुक, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। सदा सदा सद तैनूं लवां पुछ, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जणां आपणी कुक्ख, जननी नाउँ धराईआ। वस्त अमोलक अमृत धारा देवां घुट, निझर झिरना इक झिराईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश आपणी धारों पवां उठ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। काल नगारा पंज तत अगम्मी मारां सट्ट, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। साचा मन्दिर खोल्ह हट्ट, वस्त इक्को नाम वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखां नट्ठ नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान तेरे भगतां दी खोल्ह के अन्तर अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहीआ। साचा मार्ग देवां दस्स, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। चौदां विद्या कर के भट्ठ, प्रेम विद्या इक समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त दयां सुकाईआ। सब दी झोली पावां हकीकत हक़, अदालत इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मंगे मंग शब्द दुलारा, आदि

आदी सीस निवाइंदा। सच दस मेरे निरँकारा, दर तेरे वास्ता पाइंदा। जुग चौकड़ी सेवा करां विच संसारा, लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दयां सहारा, नित नित आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी बण वणजारा, घट घट तेरा वणज कराइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुनकारा, गृह मन्दिर राग सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दर लिखारा, कातब इक्को कलम चलाइंदा। महल अटल कर उज्यारा, भगत दवारा सोभा पाइंदा। तीर्थ तट वेख किनारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती माण दुआइंदा। निशान जणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारा, तेरा हक़ इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेले प्रभ तेरा संग रखाइंदा। सच दस्स प्रभ मेरे ठाकर, सुत शब्द रिहा सुणाईआ। दो जहान तेरा वड्डा सागर, मैं अणतारू तरन ना पाईआ। जुग चौकड़ी बण सौदागर, तेरा वणज हट्ट चलाईआ। मेहरवान किरपा कर करीम कादर, कुदरत तेरी वेखां चाईं चाईंआ। सच दस्स कवण वेला कवण वक्त कवण रुत्त देवें आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। सब तों वड्डा साहिब सुल्तान योद्धा सूरबीर बहादर, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। मेरा निहकर्मी कर्म करें उजागर, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सच दस्स मेरे भगवन्त, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। कवण वेला मिलें कन्त, घर साचे सोभा पाईआ। मैं सेवा करां तेरी लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। लेखा जाणां जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। चारे खाणी चारे बाणी दस्सां मंत, सोहला ढोला राग अलाईआ। तेरा खेल वेखां उपर गगन गगनंत, पाताल आकाशां तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी पूरी आस कराईआ। श्री भगवान सच दृढ़ाउँदा ए। पुरख अकाल आप समझाउँदा ए। दीन दयाल दयालता विच आउँदा ए। सुत दुलारे लाल, गोदी आपणी विच बहाउँदा ए। उठ वेख कर ध्यान, हरि ध्यानी ध्यान लगाउँदा ए। सचखण्ड दुआर सच निशान, सति सतिवादी आप उठाउँदा ए। सुत शब्द तेरी बेनन्ती कर परवान, बेड़ा आपणे कंध टिकाउँदा ए। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, नव नौ चार पन्ध मुकाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब मनाण, ढोला सोहला हर घट राग दृढ़ाउँदा ए। तेई अवतार कर के जाणी जाण, भगत अठारां जोड़ जुड़ाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद करे कल्याण, कलमा नबी रसूल पढ़ाउँदा ए। परवरदिगार वड अमाम, जोती नूर नूर रुशनाउँदा ए। नानक गोबिन्द रसना जिह्वा बोल ज़बान, धुर दा शब्द राग अलाउँदा ए। लेखा चुक्के जगत जहान, पुरख अकाल वेस वटाउँदा ए। जोती जामा नौजवान, बिरध बाल नज़र कोए ना आउँदा ए। शब्दी नाद वज्जे महान, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाउँदा ए। वसणहारा सच मकान, साचे मन्दिर डेरा लाउँदा ए। जिस

दी करे ना कोई पहचान, बेपहचान फेरा पाउँदा ए। सुत शब्द तेरा लेखा वेखे आण, अलेख लिख्या ना कोए मिटाउँदा ए। कलयुग अन्त होए प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाउँदा ए। महाबली श्री भगवान, जोती जामा डगमगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। सच संदेसा इक जणाया ए। श्री भगवान सच सुणाया ए। सुत दुलारे धीरज धीर रखाया ए, जुग चौकड़ी तेरी सेव लगाया ए। वड देवी देव, भेव अभेदा आप खुल्हाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाया ए। सुत दुलारे अन्तिम आवांगा। निरगुण नूरी जोत चमकावांगा। वरन गोत ना कोए वखावांगा। ज़ात पात ना कोए वडयावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद वेख वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। त्रैगुण पर्दा आपे लाहवांगा। पंज तत नेत्र अक्ख खुल्हावांगा। सच दरबार इक लगावांगा। गुर अवतार विच बहावांगा। पीर पैगम्बर वेख वखावांगा। भगत अठारां आख जणावांगा। साख्यात नज़री आवांगा। बिन कलम दवात लिख्या लेख पूर करावांगा। कलयुग अन्त नेत्र पेख, दोए लोचण डेरा ढावांगा। सचखण्ड दी साची खेड, लोकमात आप करावांगा। जिस कारण तैनूं दित्ता भेज, सो अनन्द आपणी झोली पावांगा। सोहणी सुहञ्जणी माणां सेज, गोबिन्द आसण इक सुहावांगा। जोती जलवा चमके तेज, नूरी चन्द इक चमकावांगा। कोई ना जाणे हरि का भेख, जगत अवल्लड़ी कार कमावांगा। नज़र आए रूप रंग ना रेख, अनडिठड़ा आपणा खेल वखावांगा। जन भगतां दस्स के अन्दरे अन्दर भेत, पर्दा उहला आप चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरी पैज रखावांगा। सद तेरी पैज रखावांगा। दाता दानी हो के आवांगा। ब्रह्म ज्ञानी हो के समझावांगा। शब्द निशान इक वखावांगा। जोत महानी नूर चमकावांगा। चौदां लोकां वेख वखावांगा। चौदां तबकां पड़दा लाहवांगा। चौदां विद्या माण गंवावांगा। चौधवीं चन्द नैण शरमवांगा। साचा भगतां दे अनन्द, अनन्द तेरे नाल मिलावांगा। जुग चौकड़ी मेट पन्ध, अन्तिम आपणा खेल वखावांगा। कूड़ी क्रिया ढावां कंध, भाण्डा भरम भउ भंनावांगा। गुरमुख आत्म कोई ना होवे रंड, कन्त सुहागी मेल मिलावांगा। सच सुणावां धुर दा छन्द, सोहँ ढोला इक दृढ़ावांगा। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप वरतावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मंगां गए मंग, सब दी इच्छया पूर करावांगा। वेख वखावां नव खण्ड, सत्त दीप इक्को धार चलावांगा। चार वरन मेटां भेख पखण्ड, अठारां बरन इक्को घर वखावांगा। पिछली कीती जो गई लँघ, उस दा लेखा सब दी झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत बिन लिख्यां लेख तैनूं आप समझावांगा। बिन लिख्यां लेख तैनूं दृढ़ावांगा। शास्त्र सिमरत वेद विच्चों हथ्थ ना आवांगा। हो के पुरख समरथ, अगम्मी कार करावांगा। सति सति

७१६

१६

बोल अलख, नाअरा इक्को इक जणावांगा। सब दी झोली पा के हक़, तेरा धुर दा मेल मिलावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जाण थक्क, कलयुग वेला वक्त वखावांगा। लोकमात विच्चों जाण नठ्ठ, पंज तत नाता चोला जगत तुड़ावांगा। पुरख अबिनाशी सरन सरनाई सचखण्ड दवारे जावण ढठ्ठ, ज़ाहर ज़हूर पर्दा लाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच तेरा संग निभावांगा। शब्द सुत कहे मेरे भगवान, वाह वा तेरी वड्डी वड्याईआ। मेरा लेखा पूरा करें आण, अलेख तेरी शरनाईआ। हउँ याचक मंगया दान, तूं देवणहार बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम आपणा मेला मेलें आण, मिलणी जगदीश आप कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान होए हैरान, नेत्र नैण तक्कण ध्यान लगाईआ। वेखो की खेल करे मेहरवान, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। असीं चार जुग लिख लिख सिफ्ती करदे रहे ब्यान, नाता जोड़ कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। जिस वेले प्रभू आवेंगा। सच दस्स की की खेल खलावेंगा। कवण रूप नज़री आवेंगा। कवण कूट डेरा लावेंगा। पूत सपूत मात प्रगटावेंगा। कवण कूट दूत दुष्ट दौड़ावेंगा। कवण तेरा दए सच सबूत, साबत सूरत किस दवारे नज़री आवेंगा। की वसें पंज तत काया कलबूत, मात पित कवण बणावेंगा। की उलटा होवें रुक्ख, दस दस मास आपणा आप अग्न तपावेंगा। की तेरा सोहणा होवे मुख, की करूप नज़री आवेंगा। सच दस्स अबिनाशी अचुत, चेतन केहड़ी कार कमावेंगा। कि बैठा रहें लुक, पड़दा उहला इक उठावेंगा। कि शब्द मालक हो के पएं बुक्क, भबक आपणी इक लगावेंगा। बाले निक्के छोटे गोदी लए चुक्क, फड़ बांहों गले लगावेंगा। प्रेम प्रीती नाल चुम्में मुख, सिर आपणा हथ्थ टिकावेंगा। कर निमस्कार दर भिखार रिहा पुच्छ, भिच्छया भिखक कवण वस्त झोली पावेंगा। श्री भगवान सच दृढ़ाउँदा ए। शब्दी धार आप सुणाउँदा ए। भेव अभेदा भेव खुलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाउँदा ए। सुत शब्द निरगुण नूर रूप हो के आवांगा। सति सरूप समावांगा। मात पित ना कोई बणावांगा। पूत हो के गोदी ना डेरा लावांगा। जननी कुक्ख ना कोई सुहावांगा। उलटा रुक्ख ना दुःख उठावांगा। हथ्थ पैर ना कोए मुख, नक्क कन्न ना कोए प्रगटावांगा। जोत सरूपी आपणी धारों उठ, जोती जामा वेस वटावांगा। भगत सुहेले गोदी चुक्क, फड़ बांहों गले लगावांगा। इक्को लाडला गोबिन्द होवे सुत, गोबिन्द शब्दी शब्द आपणा नाउँ प्रगटावांगा। जिस मन्दिर बहिवां लुक, तिस सम्बल नाम रखावांगा। कर प्रकाश अगम्मी जोत, दीपक इक्को डगमगावांगा। तेरे प्रेम दी वज्जे चोट, शब्दी नाद इक अलावांगा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर जे को मेरी सोचे सोच, आदि अन्त सोच विच कदे ना आवांगा। हर घट बैठा रहां ख़ामोश, ख़ालस आपणा रूप

वखावांगा। दो जहान बणया रहां रूपोश, जग नेत्र नज़र किसे ना आवांगा। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत दर्शन रहे लोच, तिन्हां लोचा आसा पूर करावांगा। प्रेम प्रीती प्यार अन्दर हो के मोहत, मुहब्बत आपणे नाम रखावांगा। घर विच घर प्रकाश कर के आपणी जोत, जोती जोत जोत रुशनावांगा। सुत शब्द तेरी मेरी ना कोई गोत, बिन गोत वरन तों गुरमुख आप प्रगटावांगा। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के खोट, नाम कसवटी इक लगावांगा। सच सच सच दे इक ओट, आसरा इक रखावांगा। सजदा करे लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी पिता पूत पुरख अकाल सुत दुलारा कर प्यारा कलयुग अन्त श्री भगवन्त साहिब सतिगुर सच्चा संगी संग निभावांगा।

*** १८ फग्गण २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह नानक पुरा ज़िला करनाल ***

आदि जुगादी पिता पुरख अकाल, हरि करता नर नरायण अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे सच सच्ची धर्मसाल, थिर घर पर्दा उहला आप चुकाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे विगसे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। लख चुरासी

निरगुण सरगुण बणे दलाल, निरवैर निराकार खेल खलाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख लभ्भे साचे लाल, लाल अनमोला रंग चढ़ाइंदा। जोती जलवा नूरी दे जलाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। दीआ बाती कमलापाती एका बाल, सति सरूप अनूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी वजाए ताल, अनहद नादी राग सुणाइंदा। अमृत आत्म निझर रस दए प्याल, सच प्याला जाम हथ्थ उठाइंदा। लेखा तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग जन्म दी वेखे कीती घाल, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। अन्दर बाहर चले नाल, गुप्त ज़ाहर खेल खलाइंदा। नित नवित्त अवल्लड़ी चाल, जोती जाता पुरख बिधाता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी श्री भगवन्त, हरि करता आप कराईआ। लेखा जाणे जुगो जुगन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। बोध अगाधा धुर दा मंत, हरि सतिगुर नाम दृढ़ाईआ। नित नवित्त महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। धुरदरगाही बण के पंडत, परम पुरख प्रभ करे सच पढ़ाईआ। गुरमुखां गुरसिखां गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए बणाईआ। माणस जन्म बणाए बणत, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी मिले कन्त, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई साहिब समरथ, हरि करता दया कमाइंदा । जुग चौकड़ी चलाए

रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, रहिबर आपणा हुक्म वरताइंदा। सच दुआर खोल्ह हट्ट, नाम वणजारा रूप धराइंदा। इक्को देवे ब्रह्म मति, सच विद्या आप पढ़ाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। लेखा जाणे हकीकत हक़, हक़ हकूक सब दी झोली पाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए रख, लख चुरासी विच्चों पार कराइंदा। चरण कँवल बंधाए नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। प्रभ मिलण दी खोल्ह के अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे पारब्रह्म, ब्रह्मवेता वड वड्याईआ। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। लेखा जाणे पूरब जन्म, जन्म अजन्म दोवें फोल फुलाईआ। नाता तोड़ वरन बरन, साची सरन इक दरसाईआ। करता पुरख हरि करनी करन, करनहार होए सहाईआ। आदि जुगादी घाड़न घड़न, घड़ वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा तराईआ। जन भगतां तारे आप प्रभ, बेअन्त बेपरवाह अख्वाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, कोटन कोटां विच्चों आप जगाइंदा। कूड़ी क्रिया कर के पार हद्द, महल अटल इक वखाइंदा। जिस घर वसे पुरख समरथ, सो दवारा सोभा पाइंदा। घर विच घर वखाए साचा हट्ट, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अमृत आत्म तीर्थ तट, सर सरोवर इक नुहाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे झट्ट, नाम खण्डा खड़ग चमकाइंदा। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म कर के वस, सुरती शब्दी डोर बंधाइंदा। सच स्वामी देवे रस, अनरस आपणा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा। जन भगतां दया कमाए पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। आवण जावण गेड़ चुकाए लख चुरासी, पतित पावन डेरा ढाहीआ। गलों कटे जम की फाँसी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसी, आसा तृष्ना आपणी नाल मिलाईआ। औखी चढ़ाए सतिगुर घाटी, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। कलयुग वेख अन्धेरी राती, रंग राता फेरा पाईआ। जन भगतां देवे अगम्मी दाती, वस्त अमोलक आप वरताईआ। घर दीपक दीआ जगाए सच्ची बाती, तेल वट्टी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगत सहाई जुग जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। सन्त सुहेले गुरमुख गोदी लए चुक्क, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उजल करे मात मुख, प्रभ दुरमति मैल धवाईआ। सफल करे जननी कुक्ख, धन्न जणेंदी माईआ । मात गर्भ ना होवे उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ । सन्त सुहेले लए पुच्छ, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां देवे माण वड्याईआ । जुग चौकड़ी भगतन मीता, हरि भगवन इक अख्वाइंदा।

७१८ १६

सचखण्ड निवासी ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। वसणहारा हर घट चीता, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग इकरार जो कीता, कीता कौल तोड़ निभाइंदा। बेपरवाह सदा अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। कूड़ी क्रिया तपे अंगीठा, चारों कुण्ट ना कोए बुझाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां माया राणी भरे ना खीसा, ग़रीब निमाणयां दुखियां दर्द ना कोए वंडाइंदा। साचा कलमा पढ़े ना कोए हदीसा, हज़रत नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां आप जगाइंदा। जन भगत जग जाणा उठ, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। हरि पुरख निरँजण गया तुठ, एकँकार होए सहाईआ। आदि निरँजण करे प्रकाश निर्मल जोत, अबिनाशी करता वेखे चाईं चाईंआ। श्री भगवान लगाए सच्ची चोट, नगारा इक्को इक सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे भण्डार अतोट, अतुट आप वरताईआ। उठ ब्रह्म कर खोज, हरि खोजत खोजत रिहा जणाईआ। जिस दर्शन नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे लोच, सो साहिब खेल कराईआ। जिस दी आदि जुगादि मन मति बुध कोई ना करे सोच, समझ समझ विच ना आईआ। जिस दा लेखा लोक परलोक, दो जहानां हुक्म वरताईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोत, रवि ससि डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। जन भगत उठ खोल्ह अक्ख, सो सतिगुर सच दृढ़ाइंदा। निरगुण रूप वेख प्रतख, पारब्रह्म हर घट डेरा लाइंदा। आत्म उस दे कर वस, वसल साचा इक वखाइंदा। गृह मन्दिर मिल के हस्स, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। आपणा दुखड़ा ओहनूं दस्स, जो दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। सच सरनाई सतिगुर ढ्ठ, जो ढठ्ठयां गले लगाइंदा। जन्म मरन दुःख देवे कट, हउमे रोग चुकाइंदा। साची देवे इक्को मति, गुरमति इक दृढ़ाइंदा। अन्तिम पत लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सन्तां भगतां सद गाए जस, सिफ्त सालाही वड वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप उठाइंदा। जन भगत उठ जाग, हरि जागरत जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मात त्याग, माया ममता डेरा ढाहीआ। हँस बण कल काग, काग हँस रूप वटाईआ। घर दीपक जगे चराग़, अन्ध अन्धेर गुआईआ। आत्म परमात्म मिले साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए भविक्ख्त वाक, अक्खरां नाल कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेस वटाए पुरख समराथ, जोती जामा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ मैं बाला निक्का, सोच समझ जरा ना राईआ। तूं ठाकर स्वामी मेरा पिता, शहिनशाह अख्वाईआ। मैं की जाणा केहड़ा रस मिट्ठा फिक्का, सब कुछ तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवान हो के कर हिता, हितकारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ।

७१६
१६

भगत कहे प्रभ मैं बाल अञ्याणा, बाली बुध अखवाईआ। तूं साहिब चतुर सुघड़ स्याणा, समरथ तेरी सरनाईआ। दे नाम गुण निधाना, गुण आपणा झोली पाईआ। मैं गोपी तूं मेरा काहना, साची बंसुरी नाम सुणाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, बल तेरे विच नज़री आईआ। हउँ बाला नढ्ढा एका मंगां चरण ध्याना, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तूं देवणहारा बीना दाना, देंदया तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम पूरब लहिणा झोली पाईआ। श्री भगवान कहे सुण गुरमुख गुरसिख, गुर सतिगुर दया कमाईआ। सच नाम दी पावे भिख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। अगला लेखा देवे लिख, पिछला मूल रहे ना राईआ। दर्शन देवे घर निज, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। आपणे मिलण दी दस्स के बिध, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जन्म जन्म दे कारज सिध, कर्म कर्म दा रोग गुआईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर होए सहाईआ। गुरमुख तेरा राह तक्कण विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ कट दे गेड़ा, गेड़े विच ना कोए भवाईआ। जन्म मरन दा चुक्के झेड़ा, झगड़ा लाड़ी मौत ना कोए रखाईआ। नज़री आ नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। खुल्ला कर गुरमुख वेहड़ा, जिस गृह बैठा सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा पार कराईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, जन भगत रिहा जणाईआ। उठ वेख बाल अञ्याण, बाली बुध समझाईआ। तेरा पिता पुरख सुल्तान, शहिनशाह अखवाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड भज्जण वाहो दाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाण, गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। जिस दा आदि जुगादी इक्को नाम, जुग चौकड़ी मात वरताईआ। जो लख चुरासी सृष्टी दिसे काहन, इष्टी इक्को रूप दरसाईआ। स्वर्ग बहिश्ती जिस दा निशान, दोज़ख अग्नी भाह तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। धन्न भाग प्रभ तारें भगत, सच तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के दुनिया जगत, जग जीवण दाता मिल्या बेपरवाहीआ। सोहणा सुहञ्जणा होवे वक्त, घड़ी पल खुशी मनाईआ। निरगुण हो के आएयों परत, सरगुण रूप ना कोए वटाईआ। अमृत मेघ दित्ता बरस, धुर दा झिरना इक झिराईआ। मंज़ल विच रही ना अटक, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म विच रिहा ना फरक, मिल्या मेल सहिज सुभाईआ। आवण जावण कीता तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। गोबिन्द नाल लाई शर्त, कीता कौल तोड़ निभाईआ। गुरमुख तेरे फिरन नधड़क, जम काल नेड़ ना आईआ। हथ्थ फड़ नाम खण्डा साची खड़ग, दो जहानां रहे चमकाईआ। तेरे प्रेम दी गा के तर्ज़, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। चारे जुग होए असचरज, उंगलीआं मुख विच पाईआ।

७२० १६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा तराईआ। जन भगतो होवो खुश, हरि खुशीआं नाल जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों तुहाडी कीती पुच्छ, सृष्ट सबाई लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। आवण जावण लख चुरासी पैंडा गया मुक्क, मुक्ती मुफ्त चरणां हेठ दबाइंदा। गुरमुख बूटा कदे ना जावे सुक्क, अमृत सिंच हरा कराइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा लुक, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा । दीन अनाथां मेटे आवण जावण दुःख, रोग सोग चिन्ता ग़म गुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। जन भगतो दो हथ्थां मारो ताली, ताल तलवाड़ा इक रखाइंदा। मिल्या मेल जोत अकाली, अकल कलधारी वेख वखाइंदा। लेखा जाणे धुर दा माली, मालक दो जहानां फेरा पाइंदा। गगन मण्डल मस्तक वेखे थाली, दीआ दीपक जोती जोत जगाइंदा। आत्म परमात्म बण के पाली, पालणहारा सोभा पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाली, जीवन जुगत इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण दवाइंदा। जन भगत मारन गिध्धा, खुशीआं राग अलाईआ। परम पुरख प्रभ आ के मिल्या सिध्धा, जगत वचोला नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ना कोई जाणे हरि का रूप किडा, रेख रंग ना कोए वखाईआ। जिस पाया तिस आत्म निजा, निज घर बैठा डेरा लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए लिखाईआ। जन भगत कहे दस्स सच भगवान, की तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी गुरमुखां करें वैरान, वैरी घर घर दएं बणाईआ। जे कोई तेरा गावे गाण, शरीअत शरअ करे लड़ाईआ। असीं वेख होए हैरान, हरि जू हरि तैनूं तरस ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख दुकान, चारों कुण्ट काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। गुर का शब्द धरे ना कोई ध्यान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आत्म रस ना मिले पीण खाण, कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा मुख रखाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, दरोही तेरा नाउँ हिरदे हक़ ना कोए वसाईआ । साबत दिसे ना कोई ईमान, इशम आअजम नूर ना कोए रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद सर्ब कुरलाण, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। उठ वेख भगतां दे भगवान, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरे विछोड़े अन्दर विछड़े सर्ब कुरलाण, विछोड़ा सके ना कोए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह कहे भगवन्त, जन भगतां सच दृढ़ाईआ। नेत्र पेखो हरिजन सन्त, सति सतिवादी नज़री आईआ। आत्म परमात्म चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। मिल्या मेल घर नार कन्त, सुरती शब्दी करे कुड़माईआ। गुरमुख दूजे दर ना होवणा मंगत, वड अनमुल्ली दौलत तेरी काया अन्दर दए टिकाईआ। मिले माण मिल के हरि की संगत, हरि जू आपणा रंग चढ़ाईआ। जिस दा भेव कोई ना जाणे पांधा पंडत, मुल्लां शेख़ मुसायक सके ना कोई समझाईआ।

जिस दी महिमां आदि अन्त, चार जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। सो साहिब दयाल हो बणाए तुहाढ्ढी बणत, साची घाड़त आप घड़ाईआ। नाता तुड़ाए बहिश्त जंनत, स्वर्ग डेरा ढाहीआ। मेल मिलावा करे निरगुण जोत अन्त, अन्त आपणे विच समाईआ। सचखण्ड दवारा सोभावन्त, जिस घर बहि के हरि भगत सोहणी खुशी मनाईआ। मिले वड्याई विच्चों जीव जंत, लख चुरासी विच्चों फड़ बांहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत प्रभ समझाउँदा ए। वेला अन्त इक दृढ़ाउँदा ए। महिमा अगणत आप समझाउँदा ए। ठाकर स्वामी हो बेअन्त, बेअन्त खेल कराउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि आप दृढ़ाउँदा ए। जन भगतो अन्त जद आवेगा। पुरख अबिनाशी दरस दखावेगा। सति सरूप नज़री आवेगा। चारे कूट डेरा ढाहवेगा। जूठ झूठ पन्ध मुकावेगा। गुरमुख गुरसिख सच सपूत, आपणी गोद बहावेगा। महल अटल ऊँचो ऊँच, सचखण्ड दुआर इक वखावेगा। जगत जहानों कर के कूच, दरगाह साची आप टिकावेगा। पूरब पिछला मेट के सारा दूख, दु:ख सुख विच बदलावेगा। दो जहानां कर के उजल मुख, सनमुख आपणा दरस करावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे वेखण उठ, अबिनाशी करता सब दी अक्ख खुल्हावेगा। भगत भगवान निरगुण निरगुण गोदी ल्यावे चुक्क, बण सेवक सेव कमावेगा। प्रभ नाल मिल के जोती जोत रल के सचखण्ड दुआर मल्ल के होणा खुश, खुशीआं विच्चों खुशी आपणे नाल रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे दर घर साचे आप टिकावेगा।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी सोहण सिंघ दे गृह नानक पुरा ज़िला करनाल *

हं कहे प्रभ सुण सो, पुरख अकाल नैण खुल्हाईआ। तेरा तेरे दर रिहा रो, धीरज नज़र कोए ना आईआ। सच घर दिसे कोई ना लोअ, प्रकाश रूप ना कोए वटाईआ। मेरा दरवाज़ा दित्ता ढो, कलयुग कूड़ा पर्दा लाईआ। तेरे नालों मुहब्बत चुक्की मोह, प्यार रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रीती लई खोह, खाली हथ्थ दयां दुहाईआ। जगत वासना करे ध्रोह, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दरवाज़ा बैठे ढो, बंद किवाड़ी सके ना कोए खुल्हाईआ। चरण कँवल तेरे मूल ना जावां छोह, नेरन नेर नज़र ना आईआ। माया ममता मोह विकार सके कोई ना धो, अमृत जल ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। सो कहे सुण हँ, प्रभ साचा दया कमाइंदा। वेखणहारा दो जहान कर्म, काया कपड़ खोज खुजाइंदा। सति धर्म जाणे वरन, बरन भेव चुकाइंदा। दो जहानां वाली देवे एका सरन,

दूजी ओट ना कोए वखाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण हो के तैनूं आवे फड़ण, निरवैर हो के फेरा पाइंदा। साचे मन्दिर आवे चढ़न, महल अटल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तेरा लेख चुकाइंदा। हँ कहे प्रभ मेरा तुट्टा माण, ज़ोर नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त होया हैरान, हउका लै के रिहा सुणाईआ। चार वरन ना कोए ज्ञान, बरन अठारां ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग सन्त होए शैतान, मुल्लां शरअ करे लड़ाईआ। मसायक निभाए ना कोई ईमान, सिदक सबूरी झोली ना कोई पाईआ। बगले मार अञ्जील कुरान, मसले रसना जिह्वा सुणाईआ। मन्दिर मसीत दिसे हराम, काअबा हक़ ना कोए खुल्हाईआ। मैं सुण सुण तेरा पैग़ाम, आपणा ध्यान लगाईआ। किसे नज़र ना आवे राम, रमईआ रंग ना कोए चढ़ाईआ। संग वसे ना किसे काहन, गोपी सेज ना कोए सुहाईआ। धाईं मारे वेद पुराण, शास्त्र आपणा आप मिटाईआ। तेरा रंग ना चढ़े महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभू सच दे सरनाईआ। हँ कहे प्रभ मेरे भगवन्त, तेरी इक सरनाईआ। उठ वेख आपणा जीव जंत, जगत जुग दए दुहाईआ। होया विछोड़ा नार कन्त, सच मेल ना कोए मिलाईआ। तेरा घर बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सार कोए ना पाईआ। बण भिखारी मंगां मंगत, भिच्छया इक्को दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। सो कहे सुण हँ आप, हरि करता आप जणाईआ। तेरा मेरा नाता पूत बाप, पुरख अकाल दए समझाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। गुर अवतार कर कर दास, पीर पैगम्बर बरखुरदार बाल अञ्याणे मात प्रगटाईआ । बोध अगाधी दरसदा रिहा गाथ, कोटन कोटि शब्दी नाउँ प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण देंदा रिहा दात, गुर अवतार पीर पैगम्बर झोली इक भराईआ। आत्म जोती कर प्रकाश, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी दे नाद, साची धुन इक सुणाईआ। सच संदेसा भविक्ख्त वाक, जुग चौकड़ी आप समझाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे पुरख समराथ, साहिब सुल्तान वड्डी वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। हँ कहे प्रभ मैं जाणा की, की तेरी चतुराईआ। जुग चौकड़ी तेरी नींह, लोकमात आप टिकाईआ। लख चुरासी बीज बी, मेरा रूप दरसाईआ। कलयुग अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ सीं, रविदास चमारा गया समझाईआ। नाता तुटे जीवन जी, माटी ख़ाक ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे सरनाईआ। सो कहे सुण हँ एक, एकँकार जणाईआ। सति सतिवादी देवां टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। निरवैर हो के धरां भेख, निराकार हो के आईआ। पारब्रह्म हो के दस्सां भेत, ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ । परमात्म हो के खेला खेल, आत्म हो के मेल मिलाईआ। ठाकर हो के वसां देस, स्वामी हो के खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सो कहे सुण हँ मेरे, हरि करता आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी करे मेहरे, मेहरवान दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे झेड़े, झगड़ा विच रहिण ना पाईआ। भाग लगाए काया खेड़े, खिड़की कुण्डा आप खुल्हाईआ। दूर दुराडा आवे नेड़े, हरि जू बण के पांधी राहीआ। करे कराए हक़ निबेड़े, हकूक सब दी झोली पाईआ। तूं बैठा रहिउँ कर के वड्डे जेरे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अबिनाशी आवे तेरे डेरे, मन्दिर तेरा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस रिहा समझाईआ। हँ कहे प्रभ मोहे चाउ घनेरा, तेरा सुणया इक संदेसा। धन्न वड्याई पावें फेरा, मेरे साहिब सुल्तान नर नरेशा। भव सागर पार कराएं बेड़ा, निरगुण निरवैर धार भेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा लहिण चुकाएं पिछला पूरब लेखा। सो कहे सुण हँ पुत्तर, पिता पुरख अकाल जणाईआ। जोती धारों आवां उतर, मात पिता ना कोए बणाईआ। तेरा करां शुकर, जिस सद्दा दित्ता चाईं चाईंआ। कर प्रीती चुकां कुछड़, बाल अंजाणा गोद उठाईआ । सुहञ्जणी सोहे इक्को रुत्तड़, दो जहान नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ । हँ कहे मैं देवां होका, जिस वेले हरि जू आईआ। ढोला गावां नाल शौंका, सोहणा राग अल्हाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों मिले मौका, मेहरवान दया कमाईआ। मार्ग दस्से कोई ना औखा, साचे मग आप चलाईआ। मैं घर साफ़ कर के रखां चौंका, काया माटी पोच पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। सो कहे सुण बाले बच्चे, प्रभ सच्ची तरह समझाईआ। तेरे बोल दिसण सच्चे, कूड़ा रंग ना कोए वखाईआ। श्री भगवान भाग लगाए काया माटी कच्चे, काची गगरीआं सोभा पाईआ। साढे तिन्न करोड़ अन्तर रचे, लूं लूं अन्दर आपणा डेरा लाईआ। प्रेम प्रीती देवे सद्दे, सोहणा हुक्म सुणाईआ। साचे मन्दिर बहि के सजे, काया बंक वड्याईआ। शेर रूप हो के शहिनशाह गज्जे, नाम भबक इक लगाईआ। पंच विकार जाण भज्जे, कूड़ी क्रिया मुख छुपाईआ। फिर आवे तेरी हद्दे, हद हदूद रहिण कोए ना पाईआ । बण सहाई फिरे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे आपणी सेव कमाईआ। प्रितपालक हो के पर्दा कज्जे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। हौली हौली तैनूं लभ्भे, पर्दा उहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए दृढ़ाईआ। हँ कहे मैं गावां गीत, प्रभ तेरा नाम वड्याईआ। हत्थ रखें साहिब मेरे सीस, जगदीश होवें सहाईआ। मैं बाल अञ्याणा नीकन नीक, तूं ऊँचो ऊँच अगम्म अथाह अख्वाईआ। जिस वेले मेरे काया मन्दिर अन्दर लँघें दहिलीज़, आपणा चरण आप टिकाईआ। मैं प्रेम प्रीती करां रीझ, आप आपा भेंट चढ़ाईआ। तेरा दर्शन देखां ठीक, ठाकर इक्को नज़री आईआ। तूं मैनूं पौणी भीख, साची भिच्छया इक वरताईआ।

तेरे चरण लग्गे प्रीत, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। सो कहे सुण हँ तेरा प्रताप, प्रभ करता दए कराईआ। जिस वेले मिलां आप, आपणा भेव खुल्हाईआ। सांझा दस्स के सच्चा जाप, सोहँ ढोला दयां समझाईआ। तूं कहिणा मेरा बाप, मैं पूत सपूता फड़ के गोद उठाईआ । हँ रहे ना कोए संताप, सो साक सज्जण नज़री आईआ । दोहां मिल के इक्को पए रास, मण्डल मण्डप खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी पूरी होवे आस, निरासा कोए नज़र ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा देणा साथ, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां गाथ, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तैनूं देवां आख, सच सच जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को घर वास, घर घर विच सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा प्रकाश, जोती नूर नूर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पाठ, पाठशाला इक्को इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दास, सेवक सेवा रूप कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ताट, सर सरोवर इक्को इक सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा घाट, पत्तण बहि के वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां वसूरा जाए लाथ, सोग रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक प्रभात, संध्या नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी पूरी होवे ख्वाहिश, आसा आसा विच समाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म तेरा जोड़े नात, नाता बिधाता आपणे नाल रखाईआ । बिन भगतां मौका किसे ना आवे हाथ, ख़ाली हथ्थ सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों किरपा करी पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा मेला मेले सहिज सुभाईआ।

७२५
१६

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी निरँजण सिंघ दे गृह गुरूकुल फ़ार्म ज़िला करनाल *

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण राज राजान, भूपत भूप इक अख्वाईआ । एकँकारा वड बलवान, योद्धा सूरबीर भेव ना राईआ। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान वसणहारा सच मकान, सच दवारे सोभा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी पुरख समरथ, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण जोत नूर प्रगट, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। करे खेल अलखना अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा मार्ग आपे

दस्स, रहिबर आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। वसणहारा ठांडे दरबार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। दीआ बाती इक उज्यार, कमलापाती करे रुशनाईआ। ना कोई दूजा मीत मुरार, संगी संग ना कोए रखाईआ। महल अटल उच्च मनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। मुकामे हक़ नूर निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो सतिगुर आप कराइंदा। आदि जुगादी इक इकल्ला, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। वसणहारा सच महल्ला, निहचल आपणा आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, बण संगी संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाइंदा। दरगाह साची उच्च मनार, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जलवा नूर उज्यार, परवरदिगार इक रुशनाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी करता पुरख, श्री भगवान आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए प्रगटाइंदा। करे खेल सदा नधड़क, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, अक्षर वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, हरि करता आप वरताईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा दान, दाता इक्को बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया करनहार प्रधान, पंज तत लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी खेल महान, चारे खाणी दए वड्याईआ। चारे बाणी बोल बिनां ज़बान, निरअक्खर अक्खर रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी करे गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी डूंघा सागर सिन्ध, भेव अभेद हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए आपणी बिंद, सुत नादी नाउँ धराईआ। दीन दयाल बण बख़्शिंद, बख़्शिश रहमत आप वरताईआ। लेखा जाणे करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द, निरगुण सरगुण आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता बेपरवाहीआ। बेपरवाह परवरदिगार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। आदि जुगादी सांझा यार, साची करनी कार कमाइंदा। पीर पैगम्बर दे आधार, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। कातब बण अगम्म अपार, धुर दा लेखा आप दृढ़ाइंदा। सजदा सीस इक दरबार, महल अटल हुजरा इक सुहाइंदा। नौबत वज्जे दो जहान, लोक परलोक राग अल्लाइंदा। हक़ हकीकत वेखे आण, लाशरीक सिरकत अवर ना कोए रखाइंदा। मिहबान बीदो सदा मिहबान, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाइंदा। साचा काअबा वेखे मार ध्यान, महिबूब हुजरा

हक़ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाइंदा। साचा खेल दरगाह साची, हरि करता आप जणाईआ। लख चुरासी काया माटी, काची गगरीआ वेखे थाउँ थाईंआ। मण्डल मण्डप पावे रासी, निरगुण सरगुण गोपी काहन नाच नचाईआ। दीआ बाती इक्को जोत प्रकाशी, घट घट करे रुशनाईआ। शब्द अनाद बोध अगाध गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणाए साची साखी, शब्दी नाद धुन वजाईआ। सिमरत शास्त्र वेद पुराण देवे दाती, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान बण के साकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दयावान मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अबिनाशी एकँकार, अकल कलधारी वड वड्याईआ। आदि जुगादि जिस दा अन्त ना पारावार, गुर अवतार पीर पैगम्बर बेअन्त कहि कहि सीस निवाईआ। पंडत पांधा मुल्लां शेख़ मसायक कोई ना पावे सार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त ना कोए सालाहीआ। चौदां विद्या जाए हार, चौदां लोक हाहाकार, चौदां तबक करन निमस्कार, सीस सके ना कोए उठाईआ। दर दरवेश मंगण बण भिखार, तेई अवतार आपणी झोली डाहीआ। गुर गुर स्वामी मन्नण एकँकार, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद दर धूढ़ी मंगण ख़ाक छार, मस्तक टिक्का इक्को इक लगाईआ। सजदा तोहे परवरदिगार, तोबा तोबा रहे सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी तेरी कार, विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव कमाईआ। तेरे नाम दा बोल जैकार, जै जैकार इक्को ढोला रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारे साहिब चढ़, निरगुण आपणा डेरा लाइंदा। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे खड़, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा। लख चुरासी अन्दर वड़, घट घट आपे सोभा पाइंदा। शब्द अनादी एका पढ़, साचा राग अलाइंदा। सच सरोवर दे के सर, तट किनारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा खेल जणाइंदा। भगवन करे खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। आदि जुगादी बेड़ा बन्न, जुग चौकड़ी कंध उठाईआ। निर्मल जोत चाढ़ चन्न, सच दुआर करे रुशनाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल वखाईआ। लख चुरासी वेख वखाए काया माटी पंज तत तन, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरवैर पुरख बण के जननी जन, धन जणेंदी माई आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रखे वड्याई, वड्डा हरि जू इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी खेल रचाई, समझ कोए ना पाइंदा। घट घट अन्दर कर रुशनाई, जोती जाता पुरख बिधाता घर विच घर सोभा पाई, महल अटल वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म वंड वंडाई, रूप अनूप आप जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल वखाई, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। रूह बुत

बणत बणाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करनेहारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। आदि जुगादी कर पसारा, नित नवित्त फेरा पाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शाही मिले ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गा गा थक्के विच संसारा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। दर दरवेश मंगदे गए बण भिखारा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। तूं साहिब सतिगुर सिरजणहारा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। शाहो भूप वड सिक्दारा, आदि जुगादी आपणा हुक्म चलाईआ। ना कोई मेटे मेटणहारा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। ना कोई तोले तोलणहारा, कंडा तराज़ू नज़र किसे ना आईआ। आपणी धारन बोलणहारा, अनभव आपणा खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगम्म अथाह अलख अगोचर आपणा खेल वखाईआ। आपणी खेल करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। लेखा जाणे जीव जंत, साध सन्त पड़दा लाहइंदा। आत्म परमात्म मणीआं मंत, साचा मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। नार सुहागण मेला नर हरि कन्त, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। पंज तत बणा बणत, घाड़त आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच उपदेश नर नरेश निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण करे उपदेश, विष्न ब्रह्मा शिव महेष नाल रलाईआ। धुरदरगाही देवे सच संदेस, मन्त्र सति सति पढ़ाईआ। निज नेत्र लोचण नैण लैणा पेख, दोए अक्ख ना कोए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर के हेत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां दस्सदा रिहा भेत, अन्दर वड़ के आप समझाईआ। लख चुरासी खलाउँदा रिहा खेड, आवण जावण गेड़े विच भवाईआ। सन्त सुहेले विरले देवे जोती जलवा नूरी तेज, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि करे खेल, करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ । गुरमुख गुर गुर आपे मेल, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। कर प्रकाश बिन बाती तेल, जोती नूर करे रुशनाईआ। साहिब सज्जण बण सुहेल, सगला संग निभाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए मेल, मिलणी आपणे नाल कराईआ। लख चुरासी कटे जेल, राए धर्म ना दए सजाईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेल, चेला गुर शब्दी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। वेख वखाए थान थनंतर, सचखण्ड निवासी वड्डी वड्याईआ । फोल फुलाए गगन गगनंतर, मण्डल मण्डप फेरा पाईआ। नाम जणाए धुर दा मन्त्र, मंत इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई देवे आप, हरि करता खेल रचाइंदा। जन भगतां बण के माई बाप, पिता पुरख अकाल गोद उठाइंदा। सच स्नेहड़ा देवे अगम्मी जाप, सति सतिवादी आप समझाइंदा । निरगुण निरगुण जाए

आख, सरगुण पर्दा आप उठाइंदा। निर्मल स्वच्छ कर पाक, पवित आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाइंदा। जुग जुग खेल जन भगतां जोग, जोगीशर आपणा भेव चुकाईआ। अमृत देवे साची चोग, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। हउमे कटे कूड़ा रोग, माया ममता मोह मिटाईआ। लेखा चुके चिन्ता सोग, सांतक सति सति कराईआ। नाम जणाए सच श्लोक, सोहला ढोला इक्को गाईआ। दरस देवे आप अमोघ, जोती जाता नूरी नज़री आईआ। मन वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच नगारे लाए चोट, हरि शब्द डंका आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव खुल्हाईआ। जन भगतां सदा भेव खोल्हे, पर्दा उहला ना कोए रखाईआ। अन्दरे अन्दर आपे बोले, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। बजर कपाटी कुण्डा खोल्हे, खिड़की बंद ना कोए वखाईआ। आत्म सेजा साची मौले, मौला आपणा डेरा लाईआ। अमृत झिरना झिराए साचे कौले, रस इक्को इक वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगत सहाई सदा संग, निरगुण सरगुण विछड़ कदे ना जाइंदा। जुग चौकड़ी गई लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि रूप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगां गए मंग, पुरख अबिनाशी अग्गे सीस सर्ब झुकाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणी कार कमाइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड लँघ, लोकमात सोभा पाइंदा। नौ खण्ड पृथमी चाढ़े इक्को चन्द, सत्त दीप नाम रुशनाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्ड, सच सुच्च इक दृढ़ाइंदा। हरि का नाम वस्त अमोलक घर घर देवे वंड, दीन मज़्हब ज़ात पात भेव ना कोए जणाइंदा। आत्म परमात्म ढोला सुणाए छन्द, सोहला इक्को इक दृढ़ाइंदा। कोझे कमल्यां सिर होण ना देवे नंग, सीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। भगत सुहेले वखाए आपणे चन्द, जोती जलवा इक जगाइंदा। खुशी कराए बंद बंद, बंदगी इक्को इक समझाइंदा। घर घर विच देवे अनन्द, गृह गृह विच खुशी मनाइंदा । भगत दवारे पए ठंड, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। माणस जन्म ना होवे भंग, मानुख आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग भगत आप प्रगटाइंदा । जुग जुग भगतां बणे मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। करे खेल साहिब अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। वसणहारा हर घट चीता, चेतन आपणी धार चलाईआ। जन भगतां दस्से साची रीता, धुर दी करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ सच मसीता, गुरुदुआर इक्को नज़री आईआ। जिस गृह बहि के स्वामी भेव जाणे जीव जीअ का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ । सच वड्याई देवे वड्डा, सो पुरख दया कमाइंदा। भगत भगवान वेखे बाला नढ्ढा, नंन्हा आपणी गोद सुहाइंदा। कूड़ी क्रिया

पार करा के हद्दा, नौ दर डेरा ढाइंदा। घर साचे देवे सद्दा, धुर दा नाम आप सुणाइंदा। आत्म रस अगम्मी मज़ा, बिन रसना जिह्वा आप चखाइंदा। सुरत सवाणी शब्द हाणी रखे लज्जा, लाजावन्त वेख वखाइंदा। आत्म सेज सुहञ्जणी सोहणा दिसे मंजा, पावा चूल वंड ना कोए वंडाइंदा। जिस उपर सच स्वामी इक्को सजा, सोहणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव चुकाइंदा। भगतां भेव चुकाए पर्दा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। लेखा समझाए घर विच घर दा, घर घर करे रुशनाईआ। पुरख अकाल बण के बरदा, सेवक सेव कमाईआ। सच दवारे आपे खड़दा, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। पंच विकारे नाल लड़दा, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जन भगतां अन्दर हौली हौली वड़दा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सुखमन टेडी बंक पार कर दा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। मंज़ल मंज़ल आपे चढ़दा, पन्ध आपणा लए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत होए सहाईआ। जन भगत मलाए मेलणहारा, कृपानिध वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी खेल न्यारा, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर आपणी कार कमाईआ। सुरती शब्दी सच प्यारा, प्रेम डोर बन्धन पाईआ। नाद धुन शब्द जैकारा, सोहणा राग अलाईआ। घर घर दिसे दरबारा, महल अटल सोभा पाईआ। दीआ बाती इक उज्यारा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। भगतन मेला मेल अपारा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। दोहां मिल के गाया इक्को नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव रिहा ना राईआ। तेरा महल मेरा मनारा, मेरा मनारा तेरी छप्परी रूप वखाईआ। तेरा नाउँ मेरा धुनकारा, धुनकारा तेरा राग अख्वाईआ। तेरा संग सच निरँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। जन भगतां वेखण आए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी देवे टेक, मेहर नज़र नैण उठाईआ। बुद्धी करे जगत विवेक, विवेकी रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत डेरा ढाहीआ। पूरब लेखा जाणे लेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए जगाईआ। जन भगत जाए जाग, सो सतिगुर आप जगाईआ। आत्म उपजे इक वैराग, धीरज सके ना कोए धराईआ। अन्दरे अन्दर मारे इक आवाज़, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आ वेख आपणा राग, रहमत इक कमाईआ। ना कोई रोज़ा ना निमाज़, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, जोग अभ्यास ना कोए समझाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सरोवर नुहावण नज़र कोई ना आईआ। ना कोई पत्तण ना कोई घाट, ना कोई वञ्झ मुहाणा रिहा वखाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाथ, अञ्जील कुरान ना कोई पढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच स्वामी इक्को मंगां तेरा साथ, दूजी ओट ना कोई रखाईआ। तूं दीनन दीनां सदा नाथ, दीनां बंधप तेरी सच सरनाईआ। नित

७३१

१६

नवित्त दिवस रैण घड़ी पल तेरा गावां जस, सोहणा सच नाम सालाहीआ। जुगा जुगन्त श्री भगवन्त कलयुग अन्त मेरी पूरी करनी आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। मैं काग बणाउणा हँस, सोहँ हँसा माणक मोती जाप जपाईआ। जन भगत तेरा बंस, सरबंस वेखां चाईं चाईंआ। काम क्रोध कूड़ कुड़यार मेटे कंस, घनईआ आपणा वेस वटाईआ। तेरा नाम कोटन कोटि मुख गाए सहँस, दो सहँसर जेहवा बाशक तशका नाल मिलाईआ। आदि जुगादि तेरा किसे ना पाया अन्त, बेअन्त तेरी शरनाईआ। जन भगत करन बेनन्त, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। हे प्रभू कलयुग तेरे मिलण दी साडे विच रही ना हिम्मत, तूं आपे लैणा मिलाईआ। तेरे नाम दी कोई ना पावे कीमत, हट्टो हट्ट जगत वकाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म मिल्या गनीमत, ग़मी खुशी इक्को रंग वखाईआ। तेरा निशान अज़ीमुल अज़ीमत, इस्म आज़म दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरिजन साचे ध्यान लगाईआ। हरिजन ध्यान लगाए इक, इक्को ओट तकाईआ। घर आए प्रभू पा भिख, देवणहार तेरी सरनाईआ। अगला लेखा आपे दे लिख, पूरब लहिणा दे चुकाईआ। तेरे नाल प्रेम होवे हित, प्रीती इक्को इक लगाईआ। आत्म परमात्म रहे कोई ना भित, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश तेरा नूर नज़री आईआ। अमृत बूँद स्वांती दे छिट, मेघला इक्को वार वरसाईआ। आपणी करनी करते पुरख आपे लए नजिठ, तेरा मन तेरा तन तेरा धन तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत कर कारज सिध, दूर दुराडे नेड़न नेड़े सच्चे माही दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी देण गवाही, अञ्जील कुरान शहादत रही भुगताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साची सिख्या गए दृढ़ाई, जीवां जंतां मात जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे पुरख अकाल कोई ना पकड़े बांहीं, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ। सारे ओस दे अग्गे करदे रहे सवाल, बण सवाली अलख जगाईआ। निरगुण सरगुण हो के गए दलाल, जगत दलाली इक कमाईआ। अन्त कहि के गए परम पुरख परमात्म आत्म करे सदा संभाल, नित नवित्त कर कर हित, आपणा मेल मिलाईआ। जिस दे दर ना कोई शाह ना कंगाल, राउ रंक इक्को नज़री आईआ। ऊँच नीच राउ रंक हर घट अन्दर जोती रिहा बाल, दीन मज़्हब पुरख अकाल सचखण्ड वंड ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी भगत भगवन्त लए भाल, लभ्भण आवे चाईं चाईंआ। काया मन्दिर वेख सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे लए मिलाईआ। मेल मिलाए होए खुशहाल, खुशीआं गीत सुणाईआ। सन्त सुहेला मेरा लाल, अनमुलड़ा माणक मोती नज़री आईआ। जिस दा गुरू शब्द बणे दलाल, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक इकेला नित नवित्त करे प्रितपाल, बण प्रितपालक साची सेव कमाईआ।

* १६ फग्गण २०२० बिक्रमी मान सिँघ दे गृह पिण्ड बोडी ज़िला करनाल *

निरगुण रूप पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। सचखण्ड निवासी खोल्ह अक्ख, आखर तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार जोड़न हथ्थ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पीर पैगम्बर चरणी रहे ढट्ठ, सजदा इक्को इक वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। त्रैगुण माया वास्ता रही घत्त, गल पल्लू एका पाईआ। पंज तत अग्नी रिहा मच्च, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी अग्ग, सत्त दीप ना कोए बुझाईआ। किसे दरस मिले ना उपर शाह रग, शहिनशाह नज़र ना आईआ। मक्के काअबे भुल्ला सब नूं हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए वखाईआ। सच ईमान सारे गए तज, तकवा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। गुर अवतार सुणावण हाल, बिन रसना जिह्वा बोल अल्हाईआ। पीर पैगम्बर करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ख़ालक ख़लक वेख आपणा संसार, मख़लूक रोवे दए दुहाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, सगला संग ना कोए निभाईआ। मिले मेल ना परवरदिगार, शिरकत सके ना कोए मिटाईआ। कातब बणे ना कोए लिखार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, दीआ बाती चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे दस्स, सच सच हाल जणाईआ। पुरख अबिनाशी साडे नहीं कुछ वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। कलयुग कूड़ी रैण अन्धेरी मस, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। फिरी दुहाई शिवदुआले मन्दिर मस्जिद मट्ठ, सच प्रीती संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, अगम्म अथाह आपणा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। सच वस्त ना साडे कोल, खाली हथ्थ रहे दरसाईआ। कलयुग कूड़ा वज्जे ढोल, सच मृदंग ना कोए सुणाईआ। चार वरनां बणे ना कोए वचोल, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मचाया घोल, माया ममता करे लड़ाईआ। साचे कंडे तोले कोई ना तोल, नाम तराज़ू हथ्थ किसे ना आईआ। आत्म परमात्म दवारा देवे ना कोई खोल्ह, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। चौदां विद्या होए अनभोल, पुरख अबिनाशी तेरी सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेई अवतार मारन धाह, सचखण्ड दवारे आप सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणे गवाह, शहादत देवण थाउँ थाईंआ। सृष्ट सबाई आत्म परमात्म ढोला कोई ना सके गा, नाउँ निरँकारा हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। हँस बुद्धी होए काँ, चारों कुण्ट काग वांग कुरलाईआ। सिर देवे कोई ना ठंडी छाँ, अग्नी तत ना

कोए बुझाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े कोई ना बांह, शाह पातशाह राज राजान साचा अदल ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणौण सच्च, सच सच दृढ़ाईआ। आ के वेख आपणी अक्ख, निज नेत्र इक खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई तुटा हठ, धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। घर घर नाड़ी नाड़ी उबले रत, भाई भाई मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। त्रैगुण माया रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैनूं कोई ना देवे ढोआ ढो, साची वस्त संग ना कोए निभाईआ। आत्म परमात्म प्रभ तेरा तुटा मोह, कलयुग सद अनन्त कूड़ी क्रिया डेरा लाईआ। तेरा रूप सति सरूप कोई ना जावे हो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल, बेपरवाह दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, धुर संदेसा इक अल्हाइंदा। निरगुण सरगुण करे ख्याल, पर्दा आपणा आप चुकाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, दो जहानां वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पावे सार, महासार्थी वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दए अधार, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। पूरब लेखा लओ विचार, वाक भविक्ख्त आप दृढ़ाइंदा। कलम शाही करे पुकार, काग़ज़ आपणा रंग वखाइंदा। कलयुग खेल करे निरँकार, अन्तिम आपणा वेस वटाइंदा। जोती जाता सिरजणहार, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह होए उज्यार, दो जहाना वाली फेरा पाइंदा। पीर पैगम्बरां जाए पैज स्वार, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव दस्से भगवान, सो साहिब सतिगुर आप जणाईआ। शाहो भूप राज राजान, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, हुक्म हाकम इक दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश वेखे मार ध्यान, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। लहिणा देणा चुकाए ज़िमी असमान, मण्डल मण्डप आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार करो ध्यान, सचखण्ड निवासी अक्ख खुल्हाईआ। पीर पैगम्बर करो पहचान, वाहिद लाशरीक इक्को नज़री आईआ। जिस दा कलमा इलाही कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस दा मन्त्र सतिनाम, दो जहानां दए सुणाईआ। जिस दा फ़तिह डंका वज्जे लख चुरासी सुणे जीव अञ्याण, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जिस दा पूत सपूता गोबिन्द सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस दा खड़ग खण्डा तिक्खा तेज़ किरपान, दो धारा मुख वखाईआ। जिस दा अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सुणा, पारब्रह्म तेरी वड वड्याईआ। पुरख अकाल फेरा पा, अकल कल तेरी इक शरनाईआ। लख चुरासी

जीव जंत साध सन्त बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। चार वरनां अठारां बरनां दे सलाह, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाईआ। पुरख अकाल इक्को इष्ट लवो मना, दृष्ट सब दी दए खुल्हाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर इक्को रंग रंगा, रंग तेरा नज़री आईआ। हँ ब्रह्म दए समझा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। तेरा नूर ना होए जुदा, मुरीद मुर्शद एका धाम सोभा पाईआ। मुकामे हक़ कर रुशना, नूरी जलवा इक वखाईआ। ईसा मुसा मुहम्मद दर सीस रहे झुका, मत्थे धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे इक सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण अमाम, हक़ तेरी सरनाईआ। दामनगीर पकड़ दाम, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। पुरख अबिनाशी धुर दे राम, रमईया तेरी इक सरनाईआ। सति सरूपी पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे अग्गे करदे गए सवाल, बण सवाली अलख जगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर पौणी सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तुध बिन नज़र कोई ना आईआ। सचखण्ड निवासी पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा खेल अलख

७३४ अगम्म, अगोचर तेरी सार किसे ना आईआ। ना मरे ना पए जम्म, अजूनी रहित बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बेड़ा देवे बन्न्ह, ७३४

नव नव चार वेख वखाईआ। शब्द नाद सुणाए धुन, साचा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१६ इक्को देणा सच्चा वर, कलयुग चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कलयुग वेखो अन्धेरी रात, चन्द चांदना नज़र कोई ना आईआ। १६

नाता तुटा पिता पूत मात, नार कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। मिले मेल ना सज्जण साक, बन्धन बंदप ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया उडे ख़ाक, साची धूढ़ ना कोए रमाईआ। ऊँच नीच ना दिसे कोई पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। काया मन्दिर खोल्हे कोई ना ताक, बजर कपाटी कुण्डा कोए ना लाहीआ। कोई ना जाणे तेरे भविक्खत वाक, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली ज़ात पात, दीन मज़्हब ऊँच नीच करे लड़ाईआ। नानक निरगुण सति सति सब नूं गया आख, गोबिन्द अमृत जाम प्याईआ। सर्ब जीआं दा पुरख अबिनाश, पिता माता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख सच्चा घर, जिस घर लख चुरासी डेरा लाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत, प्रभ तेरी आस रखाईआ। आपणे लेखे ला बूँद रक्त, पंज तत तेरी झोली पाईआ। मानस जन्म विच रह ना जाए फरक, फैसला इक्को दे सुणाईआ। कर्म कांड कर तरक, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नाम कसवट्टी ला के परख, पारखू आपे होए सहाईआ। मर्द मर्दाने सूरे मर्द, सच मर्दानगी तेरी नज़री आईआ। ग़रीब निमाणयां नाल वंड दर्द, दर्दी हो के सेव कमाईआ। सचखण्ड

दवारे इक्को अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, जन भगत रहे कुरलाईआ। सन्त कहिण सुण सतिगुर सति, सच सच दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां भुल्ली ब्रह्म मति, मनमति रही कुरलाईआ। घर घर उबले बहत्तर नाड़ी रत्त, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी धीर ना कोई धराईआ। हरि का नाम कोई ना लए रट, मन का मणका ना कोई भवाईआ। तेरे मिलण दी कोई ना रखे आस, कूड़ी क्रिया मेला आपणा रहे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। साहिब सुल्तान हरि समझाउँदा ए। दीन दयाल दया कमाउँदा ए। विष्न विश्व धार वखाउँदा ए। ब्रह्मा ब्रह्म रूप उठाउँदा ए। शंकर तेरा सहिंसा रोग चुकाउँदा ए। गुर अवतार लिख्या लेख पूर कराउँदा ए। पीर पैगम्बर तेरी आसा मनसा आपणे नाल मलाउँदा ए। भगत भगवान पर्दा आप चुकाउँदा ए। सच धर्म दा इक निशान, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर आप प्रगटाउँदा ए। दीआ बाती जोती जगे महान, घर मन्दिर सोभा पाउँदा ए। शब्द अगम्म सुणाए धुन्कान, अगम्मी राग अलाउँदा ए। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे शैतान, शरअ शरीअत डेरा ढाउँदा ए। साचा बदले आप नज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाउँदा ए। चौदां लोक होण हैरान, चौदां तबक भेव खुल्लाउँदा ए। चौदां सदी करे प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाउँदा ए। धुर संदेसा इक पैग़ाम, पीर पैगम्बरां आप पढ़ाउँदा ए। शब्द अगम्मी नौजवान, सतिगुर आपणा हुक्म वरताउँदा ए। साचा चिल्ला तीर कमान, तरकश आपणे हथ्थ उठाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां वाली वेख वखाउँदा ए। दो जहानां वेख वखावेगा। सो पुरख निरँजण वेस वटावेगा। निरगुण निरवैर निरँकार आपणा नाम धरावेगा। सचखण्ड दवारे हो उज्यार, जोती जाता सति सरूप आपणा रूप आप प्रगटावेगा। लख चुरासी करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणावेगा। कूड़ी क्रिया मारे मार, नाम खण्डा इक चमकावेगा। नौ सौ चुरानवे जुग करनहारा पार, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरतावेगा। सतिजुग साचे दए अधार, रहिबर इक्को इक अख्वावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी प्रभू करावेगा। कलयुग अन्तिम डेरा ढावेगा। माया ममता मोह चुकावेगा। हउमें हंगता रोग गंवावेगा। चार वरन दी इक्को संगता, सति सतिवादी आप बणावेगा। हरि का भेव ना पावे कोई पंडता, मुल्लां शेख़ हथ्थ किसे ना आवेगा। देवे वड्याई जो भुक्खा नंगता, ग़रीब निमाणयां आपणी गोद बहावेगा। लेखा जाणे जेरज अण्डजा, उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक इक उठावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन इशारा, हरि साचे सच जणाईआ। कलयुग अन्तिम सन्तां भगतां चले ना कोई चारा, सारे बैठे मुख छुपाईआ।

चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग मारे इक ललकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साध सन्त आत्म परमात्म करे ना कोई प्यारा, पारब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ । दर दर नच्चे पंच पंच वकारा, पंचम शब्द नाद धुन सच करे ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, सच तेरी इक सरनाईआ। साहिब सतिगुर सच दृढ़ाउँदा ए। पुरख अकाल हुक्म सुणाउँदा ए। दो जहान वेख वखाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप हिलाउँदा ए। गुर अवतार नाल मिलाउँदा ए। पीर पैगम्बर उंगली लाउँदा ए। लोकमात वेख वखाउँदा ए। सच वस्त ना किसे पास, लख चुरासी फोल फुलाउँदा ए। कोटन विच्चों गुरमुख विरले बैठे उदास, जो हिरदे हरि हरि ध्यान लगाउँदा ए। रसना जपण स्वास स्वास, पवण उवंजा डेरा ढाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाउँदा ए। साचा खेल सच जणाएगा । प्रभू आपणी रचन रचाएगा। पूरब कीता बचन तोड़ निभाएगा। गुरमुख हीरे लाल अमोलक रतन, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाएगा। आप बणाए काया माटी कंचन, सच पारस नाम लगाएगा। कलयुग अग्नी मूल ना मच्चण, अमृत मेघ इक बरसाएगा। कूड़ी क्रिया हरिजन तज्जण, सच सुच इक समझाएगा। परम पुरख दा करन भजन, बंदगी इक्को इक वखाएगा। अट्ठे पहर रहिण मग्न, जोती जोत जोत मिलाएगा। घर ठाकर मिले सज्जण, निरगुण आपणा फेरा पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराएगा। हरिजन वेखे कलयुग अन्त, हरि करता वड वड्याईआ। जिन्हां हरि हरि हिरदे मणीआ मंत, गुर का शब्द रहे कमाईआ। सो गुरमुख सच्चे कहीए सन्त, वड मिले बेपरवाहीआ। करे मिलावा नार कन्त, घर सज्जण सहिज सुभाईआ । माणस जन्म बणाए बणत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सच बोल, दरगाह साची सच सुणाईआ। कलयुग वेख चारों कुण्ट सृष्ट सबाई होई अनभोल, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा नाम निधाना शब्द ज्ञाना बोध अगाधा आए बोल, लेखा लिख के कलम शाहीआ । जीव जंत रहे ना कोई अनभोल, मूर्ख मूढ़ां मिले वड्याईआ। अमृत आत्म साचा रस दे के आए पौहल, अमृत झिरना इक झिराईआ। नाम सति ब्रह्म मति वजा के आए ढोल, डंका फ़तिह इक सुणाईआ। सच जैकारा तेरा बोल, ख़बरदार करी लोकाईआ । किसे नाल नहीं मारया रोल, धोखा जगत ना कोए जणाईआ। सतिगुर शब्द सदा विचोल, विचोला इक्को इक दृढ़ाईआ। हर घट जाए मौल, मौला आपणा खेल वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे नाल जो कर के गए कौल, कीता कौल इकरार तोड़ निभाईआ। पंज तत काया चोला पा के धरनी धरत उपर धौल, धौला हौला भार कराईआ। अन्तिम आए तेरे कोल, तेरे चरण मिली सरनाईआ।

७३७ १६

सचखण्ड दवारे बैठे रहे अडोल, अडुल डुल कदे ना जाईआ। उठ वेख कलयुग कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया पंज तत रचया घोल, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी इक अखाड़ा नज़री आईआ। मन ममता हउमें हंगता वजाए ढोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे मुकाईआ। सुण के बचन कलयुग आया नठ्ठ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान सरनाई गया ढठ्ठ, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मेरा दे दे मैनूं हक़, हकीकत मेरी झोली पाईआ। मैं सच सच देवां दस्स, जो लोकमात सेव कमाईआ। तेरे मिलण दी खुल्ह्ण ना दिती किसे अक्ख, साध सन्त दित्ते भुलाईआ। मुल्लां शेख़ पंडत पांधे धीआं भैणां नेत्र रहे तक्क, आत्म परमात्म तेरा ज्ञान ना कोए जणाईआ। लख चुरासी नक्क विच पाई नथ्थ, चारों कुण्ट रिहा भवाईआ। सब दे खेड़े कीते भठ्ठ, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। काम वासना सारे रहे हस्स, लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। सब दे खाली वेख हड्ड, रक्त बूँद सोभा कोए ना पाईआ। तेरा प्यार प्रभू सारे गए छड्ड, कूड़ी क्रिया करी कुड़माईआ। कोई ना बणे विश्व यद्द, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। नौ दवारे किसे पार ना होवे हद्द, दसवें मेल ना कोए मिलाईआ। माया ममता घर घर लाई अग्ग, पिता पूत सके ना कोए बुझाईआ। हुण तेरे कोल आया भज्ज, सच संदेसा दयां सुणाईआ। मक्के काअबे किसे दा पूरा होवे ना हज्ज, सच अमाम नज़र किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ साचा काहन कोई लए ना लभ्भ, बंसुरी नाम ना कोए सुणाईआ। नानक गोबिन्द मनमुखां कोलों होए अलग, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाईआ। मैं खुशीआं नाल रिहा दस्स, हरि जू तेरी सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। कलयुग कहे मैं तेरा छोटा बच्चा, प्रभ चौथा युग नज़री आईआ। सब नालों निकलया बहुता सच्चा, सच्ची गल्ल समझाईआ। खुशीआं नाल मारे कच्छां, बगला रिहा हिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी प्रभू मैं नटुआ बण के नच्चा, बण स्वांगी वेस वटाईआ। जीव जंत मन ममता कीता कच्चा, कच्चा तन्द डोरी रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे इक वड्याईआ। प्रभू मैनूं कहु शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं किसे मन्दिर पैण ना देवां रास, साची गोपी काहन ना कोए नचाईआ। सीता सुरती राम ना वसे पास, बन खण्ड इक्को नज़री आईआ। निर्मल जोत होण ना देवां प्रकाश, तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। अन्तर आत्म कोई ना करे पूजा पाठ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब हल्काईआ। गोबिन्द सूरा इक्को इक गया आख, सच संदेसा मोहे सुणाईआ। कलयुग धूढ़ी उडे राख, चारों कुण्ट ख़ाक वखाईआ। सृष्ट सबाई लग्गे आंच, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख मेरी चतुराईआ। कलयुग कहे प्रभ मैं योद्धा सूरबीर, तेरे हुक्मे अन्दर

खेल कराइंदा। जूठ झूठ चलाया तीर, चार वरनां पार कराइंदा। शरअ पा जगत ज़ंजीर, कड़ी कड़ी नाल बंधाइंदा। सब दी बदल दिती तकदीर, सच तदबीर ना किसे समझाइंदा। चोटी चढ़े ना कोई अख़ीर, मंज़ल सब दी बंद कराइंदा। जो कलमा दस्स के गए पीर दस्तगीर, वास्ता सब दे नालों तुड़ाइंदा। भेव रखाया हस्त कीट, शाह फ़कीर पर्दा ना कोए उठाइंदा। राज राजानां करां दिलगीर, सांतक सति ना कोए वरताइंदा। तेरा नूर नज़र ना आए बेनज़ीर, नज़म नग़मा हक़ ना कोए सुणाइंदा। सब नूं भुल्ले सच तस्वीर, तसबी माला सब दे गल विच लटकाइंदा। घर घर हउमें लग्गे पीड़, बिरहों रोग ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा मोहे वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मेरी मंग तेरे दरबार, सचखण्ड निवासी तेरी सरनाईआ। उठ वेख मेरे निरँकार, निरगुण निरवैर ध्यान लगाईआ। पंज तत अखाड़ा बणया हँकार, गढ़ दित्ता इक सुहाईआ। कूड़ी क्रिया बोले जैकार, इक्को राग अलाईआ। सच ना करे कोई प्यार, मुहब्बत नाम ना कोए जुड़ाईआ। मैं बरखुरदार तेरा पुत्त ताबिआदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। मेरा लेखा चौदां सद, ईसा मूसा मुहम्मद मंग मंगाईआ। फिर वेखां तेरी हद्द, हदूद तेरे चरणां हेठ दबाईआ। पतिपरमेश्वर मैं नित सुणावां आपणा सद, साचा ढोला इक अलाईआ। तेरे नालो कदी ना होवां अलग, वखरा नाँ ना कोए वखाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर सेवा करां हस्स हस्स, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम सारे कर जाण बस, बसता लोकमात बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देणी इक वड्याईआ। पुरख अकाल कहे सुण कलयुग नीके, नन्हे नन्हे दयां जणाईआ। तेरे खेल वेख अनडीठे, प्रभ साचा ख़ुशी मनाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां अग्गे करने ख़ाली ख़ीसे, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। हुक्म देवे हरि जगदीशे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चाउ चढ़े सम्मत बीसे, बीस बीसा पर्दा लाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेला वक्त एहो उडीके, बैठे अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दए समझाईआ। सुण कलयुग धुर दा हाल, हरि अगली हालत दए जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी सब दे सिर ते कूके काल, महाकाल नगारा इक वजाईआ। जीव जंत सुरत सके ना कोए संभाल, साधना नज़र कोए ना आईआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिम्मल बिन फल फुल लहराईआ। त्रैगुण माया पा जंजाल, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले हरि भगत लए उठाल, रातीं सुत्यां चोरी चोरी जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। कलयुग कहे मेरे जगदीश, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। तेरा लेखा बीस बीस, बिस्तरे सब दे रिहा बंधाईआ।

७३८
१६

गोबिन्द गुर सतिगुर लिख के गया तरीक, तरीके नाल समझाईआ। जिस दी किसे हथ्थ ना आवे तवारीख़, हिंस्सयां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिस दा खेल बड़ा बारीक, जग नेत्र नज़र ना आईआ। मैं उहदी रखी उडीक, कवण वेला होए सहाईआ। तेरी उस दे नाल प्रीत, नाता जुड़या बेपरवाहीआ। ओधर मुहम्मद मारे चीक, नाअरा इक सुणाईआ। ओधर धरनी कहे मैं नीचन नीच, कमीनी आपणी झोली डाहीआ। ओधर कलमा कहे मेरा लाशरीक, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। एधर नानक कहे पुरख अकाल जो किछ करे सो ठीक, कूड़ी धार नज़र कोए ना आईआ। सारे रल मिल इक दवारिउं मंगो भीख, प्रभ देवणहार सच गोसाईंआ। दर दरवेश बणो नीचों नीच, ऊँचो ऊँच मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी दए कमाईआ। कलयुग कहे मेरी अरदास गुर गोबिन्द अग्गे, प्रभ सच सच दृढ़ाईआ। जिस दे बच्चे नीहां हेठां दब्बे, मेरी जड़ गया उखड़ाईआ। चार कुण्ट मैनूं लभ्भयां कितों ना लभ्भे, जग नेत्र नज़र ना आईआ। मैं जाणया सद वसे तेरी हद्दे, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। तूं आदि जुगादि उस दे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे फिरें चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, मोहे गोबिन्द दे मिलाईआ। पुरख अकाल कहे औह वेख मेरा सुत, गोबिन्द शब्दी धार नज़री आइंदा। मेरे हुक्मे अन्दर बैठा चुप्प, उच्ची आवाज़ ना कोए सुणाइंदा। उहदे चरणां जाए झुक, अभुल्ल भुल्ल इक दृढ़ाइंदा। जे मैनूं लए पुछ, मेहर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला इक मिलाइंदा। कलयुग खोल्ह नेत्र तक्कया राह, इक्को नूर नज़री आईआ। सति सरूपी बैठा डेरा ला, गोबिन्द गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। दर दरवेश झोली अग्गे डाह, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। रहमत कर दे पनाह, चरण तेरे सरनाईआ। मेरा पिछला बख्श गुनाह, गुनाहगार इक अख्वाईआ। मेरे उते रहमत इक कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे चुकाईआ। गोबिन्द अग्गों प्या हस्स, कलयुग आख सुणाईआ। उठ छेती एथों नट्ठ, धुर दी धार जणाईआ। पहलों मुहम्मद जा के दस्स, जो बैठा अक्ख शरमाईआ। अल्ला राणी वेख नक्क नथ्थ, सुहाग नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। कलयुग कहे मोहे दे प्यार, तेरी सरन इक तकाईआ। गोबिन्द कहे कर निमस्कार, पुरख अकाल तेरा सहाईआ। उधरों चल के आए मुहम्मद यार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दरोही खुदाए मेरी कोई ना पावे सार, सूरत सच ना कोए दरसाईआ। चौदां तबक होए ख्वार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। कलमा कायनात करे हाहाकार, नबी रसूल ना कोए पढ़ाईआ। सच दुआ ना परवरदिगार, खुदा मिले ना बेपरवाहीआ। मेरी इबादत होई बेज़ार, गफ्लत विच रहमत नज़री आईआ। सिफ़ारिश करे ना कोई विच संसार, अदालत हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ। मुहम्मद कहे कलयुग सुण, अणडिठड़ा हाल जणाईआ। प्रभ का भेव जाणे कौण, वल छलधारी अछल छल कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच्चों जिस गोबिन्द सूरा ल्या चुण, सूरबीर इक बणाईआ। ओस दा शब्द नाद वज्जे धुन, अनरागी राग सुणाईआ। ओस दा खेल अगम्मी कुंन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पर्दा दए उठाईआ। कलयुग कहे मुहम्मद मीत, भेव अभेद जणाईआ। परवरदिगार साची रीत, गोबिन्द दए समझाईआ। गोबिन्द सूरा ठांडा सीत, सति सरूप नजरी आईआ। इक्को ढोला गावे गीत, पुरख अकाल राग अल्ाईआ। आप बण के नीकण नीक, गुरमुख ऊँचो ऊँच बणाईआ। जिस गुरमुखां कोलों मंगी भीख, निउँ के आपणी झोली डाहीआ। जो माछूवाड़े सूलां सत्थर ठीक, सत्थर यारड़ा इक हंढाईआ। ओस दवारयों मिलणी भीख, दूजा सके ना कोए वरताईआ। जिस दे सीस पीतम्बर सोहे पीत, जगदीश दए वड्याईआ। जिस दा कलमा इक हदीस, नाम जैकारा सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। उधरों गोबिन्द आया नेड़े, घर घर विच पन्ध मुकाईआ। कलयुग काहदे करें झेड़े, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरे डुब्बदे बेड़े, मलाह नज़र कोए ना आईआ। उम्मत उम्मती उजड़दे दिसदे खेड़े, ख़ालक अग्गे हो ना बचाईआ। चारों कुण्ट आया घेरे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। हक़ नबेड़ा ना कोए नबेड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच जणाईआ। गोबिन्द कहे मुहम्मद उपर तक्क, क्यों नेत्र नैण शरमाईआ। सदी चौधवीं क्यों प्या शक़, हरि शिकवा दए मिटाईआ। जिस मासूम बाले नीहां हेठां दित्ते दब्ब, तेरा ज़ुल्म ज़ालम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम किधर जावें बच, राह खहिड़ा नज़र कोए ना आईआ। मेरे बुढ्ढे होए हड्ड, मैं जोबन ज़ोर जवान इक हंढाईआ। चौदां तबकां विच्चों लवां कढ्ढ, साचा खण्डा इक चमकाईआ। पिच्छे कुछ ना देवां छड्ड, हस्ती भेंट कराईआ। सफा सदी चौधवीं करके रद्द, रस्ता इक्को इक समझाईआ। तूं पुरख अकाल दा ढोला गाउणा छन्द, कलमा पिछला देणा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए जणाईआ। मुहम्मद कहे बेशक मैं बुढ्ढा शेख़, दाढ़ी मैहन्दी नाल रंगाईआ। लाल कीते उत्तों केस, अद्धविचकार कटाईआ। मेरीआं लबां विच भेत, जो बैठी शरअ मुंनाईआ। मैं परवरदिगार दा बणया नेक, कमच खेल खेल खलाईआ। मैं आपणा दस्सां भेत, भेव इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कहे सुण गोबिन्द मित्र, हथ्थ तेरे वड्याईआ। धन्न भाग तूं साची धारों आएयों निकल, निरगुण निरवैर रूप वटाईआ। साडा मुलम्मा लाहवें पित्तल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, धुर दा देवे साचा वर, मैं बाहर करदा ज़िकर, ज़ाकर हो के हाल सुणाईआ। गोबिन्द कहे ज़िकर दी नहीं लोड़, ज़ाहर ज़हूर वेख वखाईआ। धुरदरगाहों आया दौड़, वेस अवल्लड़ा रूप वखाईआ। हथ्थ पकड़ अगम्मी डोर, दो जहानां तन्द बंधाईआ। कलयुग अन्तिम रहिण देवां ना कोई हरामखोर, चोर यार नज़र कोए ना आईआ। सब नूं दस्सां पुरख अकाल दी लोड़, इष्ट देव स्वामी इक्को इक समझाईआ। मुहम्मद वेख करके गौर, गहर गम्भीर खेल खलाईआ। शाहसवारा चढ़या घोड़, घोड़ा नीला नीली धारों पार टपाईआ। लोकमात मारे आपणा पौड़, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। अगला भेव जाणे कौण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सके ना कोए समझाईआ। लेखा लिख्या सारे गौण, जीव जंत साध सन्त ढोले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द सूरा नाल लै के पिछली आवे ढौण, अगली खेल अवर रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। कलयुग लेखा मुके अन्त, अन्तष्करन सर्ब वेख वखाईआ। वेस वटाए श्री भगवन्त, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा चुकाए जीव जंत, जीवण जुगत आप समझाईआ। लख चुरासी मणीआं मंत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए नर नरायण कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। नाम सुणाए धुर दा मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग लग्गे जग, सति सति सतिवादी आप लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो गए दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। सब दी पूरी करे आस, निराशा कोए नज़र ना आईआ। वेखणहारा पृथ्मी अकाश, दो जहानां खोज खुजाईआ। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास, डूंघी कन्दर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। लख चुरासी घट घट अन्दर कर के वास, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार वेखण नेत्र अक्ख, हरि जू आपणी खेल वखाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। बोध अगाध शब्द महिमा अकथ, शब्दी नूरी इक दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रस, रस रसीया आप चखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गावे जस, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहीआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश राउ रंक ऊँच नीच राज राजान इक्को मार्ग देवे दस्स, चार कुण्ट दहि दिशा करे इक पढ़ाईआ। सति सन्तोख देवे धीरज जत, हठ तप इक्को नज़री आईआ। भेव खुल्हाए तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पर्दा आप उठाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण

निरगुण बण के दासी दास, सति सरूप स्वामी सेवा आप कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सदा वसे पास, घर विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां आर पार मझधार उतारे घाट, पतण बहि के सच्चा माहीआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख उत्तम श्रेष्ट वेखे आप, विशेषता आपणी दए जणाईआ। मुरीद मुर्शद करे पाक, पाकीजा इक्को नाम समझाईआ। दर दरवेश दर पर्दा खोल्ह ताक, बेनज़ीर नूर रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा बिन कल्मयों मारे आवाज़, संदेसा आपणा इक सुणाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के महल अटल खड़ के खोल्हे राज़, रहमत आप कमाईआ। साहिब सतिगुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा गुरमुखां गुरसिखां हरिभगतां कहे शाबाश, शनाखत आपणी इक कराईआ। सन्त सुहेला कदे ना होवे उदास, चिन्ता रोग ग़म हरख़ सोग नेड़ कदे ना आईआ। लोकमात सोया जाए जाग, जागरत जोत जग जीवण दाता इक जगाईआ। हँस बणे सति सरूप काग, काग हँस रूप वटाईआ। घर मन्दिर दीपक जगे चिराग़, जोती जाता करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म होवे काज, गृह मन्दिर सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे सदा सदा सद मुहताज, बिन मुहब्बत महिबूब नजर किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण चलदा रिहा रिवाज, राजा शाहो रंक दरबान इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण श्री भगवान इक अख्वाईआ।

* २१ फग्गण २०२० बिक्रमी रेशम सिंघ दे गृह मेरठ छाउणी उतर प्रदेश *

पारब्रह्म प्रभ वेख भविक्ख्त, गुर अवतार रहे सुणाईआ। पीर पैगम्बर वखावण लिख्त, जिस दा लेख बिन कलम शाहीआ। सृष्ट सबाई नव नौ चार श्री भगवान कोई ना मन्ने तेरा इष्ट, परवरदगार ध्यान ना कोए लगाईआ। अन्तर आत्म खुल्हे ना किसे दृष्ट, ब्रह्म पर्दा ना कोए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया फिरी दरोही सर्ब सृष्ट, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह नैण उठाईआ। गुर अवतार पूरब लेख, सचखण्ड निवासी रहे वखाईआ। पीर पैगम्बर दस्सण भेत, पर्दा उहला आप चुकाईआ। फिरी दरोही चौदां तबक लोकमात देस, ब्रह्मण्ड खण्ड धीर ना कोए धराईआ। गगन गगनंतर मिटदी दिसे रेख, सच प्रकाश नज़र कोए ना आईआ। चारे खाणी कूड़ी क्रिया वध्या भेख, चारे बाणी ना सिफ्त सालाहीआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा शब्द नाउँ रखे कोई ना टेक, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ।

आत्म परमात्म करे कोई ना हेत, कूड़ी क्रिया नाता जगत लोकाईआ। काम वासना सारे रहे खेड, प्रेम प्रीती नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त जो दित्ता भेज, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी तेरी माण के आए सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेख आपणा दर, लोकमात फेरा पाईआ। गुर अवतार दस्सण पिछला हाल, हालत कलयुग रहे जणाईआ। पीर पैगम्बर देण अहिवाल, पर्दा उहला आप उठाईआ। परवरदिगार नूर इलाही तेरा जलवा ना दिसे जलाल, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। साचा कलमा पढ़े ना कोए ज़बान, ईमान हक़ ना कोए वखाईआ। काया काअबा करे ना कोए ध्यान, सच महिराबे आसण कोए ना लाईआ। तेरा नग़मा सुणे ना कोए पैग़ाम, हकीकत नज़र किसे ना आईआ। मुल्लां शेख़ मसायक करन हराम, कूड़ी क्रिया नाता जगत जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेख थाउँ थाईंआ। गुर अवतार दस्सण सच्च, साची दिशा रहे जणाईआ। श्री भगवान साडे ख़ाली हथ्थ, दोए दोए रहे जणाईआ। लोकमात विच्चों आए नट्ठ, पंज तत काया चोला जगत हंढाईआ। तेरा संदेसा बोध अगाध नाम आए दस्स, लेखा लिख के कलम शाहीआ। सृष्ट सबाई खोल्ह के आए अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ । घर विच घर बणा के आए हट्ट, गृह मन्दिर पर्दा लाहीआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर चला के आए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई आए दस्स, सच संदेसा तेरा नाम सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पुरख समरथ, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ । पीर पैगम्बर मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नेत्र वेख परवरदिगारा, लाशरीक तेरी सरनाईआ। उम्मत उम्मती धूंआँधारा, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सज्जण मिले ना मीत मुरारा, सगला संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, अन्ध अन्धेर ना कोए गंवाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गा अखाड़ा, माया ममता नाच नचाईआ। किथे छुपिओ डूंग्घी ग़ारा, बेनज़ीर सच तस्वीर नज़र किसे ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तेरा कर के गए इशारा, अञ्जील कुरान कर कर सिफ्त सालाहीआ। अल्फ़ ये तेरी गाउँदी फिरे वारा, ढोला तेरा नाम सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा घर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार मारन ताअना, श्री भगवान रहे जणाईआ। शाह पातशाह श्री भगवाना, भगवन तेरी ओट तकाईआ। भूपत भूप वड राजाना, नौजवाना तेरे हथ्थ वड्याईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवाना, बलधारी आप अख्वाईआ। नेत्र वेख दो जहानां, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया झुल्ले निशाना, सति सरूप नज़र कोए ना आईआ। अन्तर आत्म परम पुरख तेरा कोई

ना गाए गाना, रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार मिल के गावण गीत, पुरख अकाल रहे जणाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी रीत, सच प्रीत ना कोए लगाईआ। उठ के वेख बीसा बीस, बिस्मिल रूप ना कोए समाईआ। जीव जंत साध सन्त कौड़ा होया रीठ, अमृत रस ना कोए भराईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात ऊँच नीच, राउ रंक राज राजान मिले ना कोए शरनाईआ। साचा कलमा पढ़े ना कोई हदीस, मन्त्र सति नाम ना कोए दृढ़ाईआ। लहिणा मुक्के ना हस्त कीट, हउमें हंगता माया ममता मोह ना कोए मुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार तेरी रखी बैठे उडीक, दो जहानां वाली ध्यान लगाईआ। मुहम्मद कहे वेख तारीख़, ईसा लेखा रिहा वखाईआ। मूसा नेत्र रोवे मारे चीक, पूरब लहिणा रिहा समझाईआ। गोबिन्द कहे मैं मंगया ठीक, सच भण्डारा झोली डाहीआ। नानक कहे मैं चिटे उते पाई लीक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नर हरि नरायण करे आप तस्दीक, पुरख अकाला वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र रो, सचखण्ड दुआर रहे सुणाईआ। लोकमात कोई ना देवे ढोआ ढो, सच प्रेम ना कोए लगाईआ। सति धर्म सारे बैठे खो, खाली हथ्थ फिरे लोकाईआ। अमृत आत्म कोई ना देवे चो, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जोत निरँजण करे कोई ना लो, घर विच घर दीप ना कोए रुशनाईआ। सुरती शब्दी सच मुहब्बत नाता जुड़े ना मोह, बन्धन बंदगी विच ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम की गया हो, हौका लै के रहे सुणाईआ। गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले होवे धरोह, तेरा भय सीस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां सुण के बात, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। कर निमस्कार दर दरवेश रहे आख, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सच वस्त प्रभ किसे ना पास, खाली भाण्डे नज़री आईआ। ब्रह्म जोत ना कोए प्रकाश, आत्म नूर ना कोए रुशनाईआ। कलयुग दिसे अन्धेरी रात, सच्चा चन्द ना कोए चमकाईआ। पत्तण मिले ना किसे घाट, नईया नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। दे वड्याई लोकमात जगत, जग जीवण दाते तेरी इक सरनाईआ। नेत्र रोवण तेरे भगत, भगवन तेरा ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे शक्ति, शख्सीयत नज़र कोए ना आईआ। किसे कम्म ना आई पढ़ी अलिफ़, फ़िकरा हक़ ना कोए समझाईआ। तेरे नालों होई बतरफ़, तरफ़दारी ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आ के वेख आपणा घर, नव नौ फेरा पाईआ। भगत कहिण सुण पुरख अगम्म, की तेरी वड्याईआ। नेत्र रोवण छम्म छम्म, नैणां छहबर इक लगाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा कोई ना देवे भन्न, भय भउ ना कोए मिटाईआ। प्रकाश मिले ना काया तन, घर जोत ना कोए रुशनाईआ। अनहद शब्द ना कोई धुन, अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। सच्चा नज़र ना आवे गुण, अवगुण बैठा डेरा लाईआ। भरमे भुल्ले रिख मुन, मुनी मुनीशर सच पीतम्बर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सन्त सुहेले मारन धाह, अबिनाशी करते रहे जणाईआ। सो पुरख निरँजण अक्ख खुल्ा, हरि पुरख निरँजण नैण उठाईआ। एकँकार बण मलाह, निरगुण बेड़ा कंध रखाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, जोत निरँजण डगमगाईआ। अबिनाशी करते पकड़ बांह, फड़ बांहों गले लगाईआ । श्री भगवान हो सहा, साहिब सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा लए मिला, जगत विछोड़ा दए चुकाईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान खाणी बाणी बणे मलाह, जुग चौकड़ी शहादत इक्को रहे भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचा हथ्थ रखाईआ। गुरमुख कहिण उठ वेख महिबूब, मुहब्बत नज़र कोए ना आईआ। सूफ़ी कहिण तेरा मिले ना कोए अरूज, मक्का काअबा मिले ना कोए वड्याईआ। तेरे नाम दा दस्से ना कोई सबूत, साबत सूरत ना कोए दरसाईआ। पंज तत काया ख़ाली दिसे कलबूत, रूह पाक ना कोए वड्याईआ। होया अन्धेरा चारे कूट, दहि दिशा शमा ना कोए चमकाईआ। तेरे उते कौण होवे मशकूक, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। अर्श फर्श ना तेरा अरूज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे जणाईआ। गुरसिख कहिण सुण सतिगुर मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट तकाईआ। हउँ बाल अंजाणा नीकन नीक, बेअन्त तेरा भेव कोए ना आईआ। कलयुग लेखा वेख ठीक, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। सच दवारे किसे ना मिले भीख, भिच्छया नाम ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि लेखा दे चुकाईआ। करे पुकार धरनी धरत, धवल रही जणाईआ। जोद्धे सूर हरि उठ मर्द, मर्दानगी आपणी दे वखाईआ। कलयुग जलाद मेरी छाती फेरे करद, छुरी आपणे हथ्थ टिकाईआ। पंडत पांधा मुल्लां शेख़ सन्त कोई ना मिटावे मेरा दर्द, दुखियां दुःख ना कोए वंडाईआ। चार कुण्ट वेख होई मैं असचरज, नेत्र नैण अक्ख खुल्ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सिख्या दे जो गए वर्ज, लेखा लेख लिख के काग़ज़ कलम शाहीआ। हुक्मे नाल फ़रमाण दे के गए वर्ज, वसल सद इक समझाईआ। बिन आत्म परमात्म दूजी अवर ना कोई ग़रज़, ग़ज़ल नग़मा नाम इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कढ्ढ के वेखण पिछली फ़रद, लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त सृष्ट सबाई प्रभ होई नपड़द, तेरा मन्त्र नाम ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जोती

७४६

१६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे आख, पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे दुहाईआ। साडा कोई ना देवे साथ, संगी नज़र कोए ना आईआ। बेशक रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे पाठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दिवस रैण कूड़ी क्रिया करन घात, माया ममता हउमें हंगता खण्डा हथ्थ उठाईआ। सच प्रीती कोई ना जोड़े नात, साक सज्जण सैण सारे रहे अख्वाईआ। सच सुहञ्जणी सोभावन्ती हथ्थ ना आए किसे रात, पतिपरमेश्वर सेज ना कोए सुहाईआ। जीव जंत साध सन्त बणे कुलखणी नार ज़ात कमज़ात, सच नाम जोबन रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मी वर, जिस दी समझ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पए कूक, बौहड़ी बौहड़ी रहे जणाईआ। मेहरवान क्यों सुता घूक, अञ्जील कुरान रही जणाईआ। साडी सार पाए ना कोई चार कूट, दहि दिशा मिले ना कोए वड्याईआ। असीं तेरा दस्सदे रहे सबूत, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। मुकामे हक़ वसे महिबूब, सचखण्ड दवारे नर निरँकार सोभा पाईआ। सरगुण मेला पंज तत कलबूत, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। घट घट दिसे सदा मौजूद, आत्म सेजा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख बेपरवाहीआ। खाणी बाणी रही उठ, चार कुण्ट लए अंगड़ाईआ। श्री भगवान आ के तुठ, दयावान दया कमाईआ। लख चुरासी तेरा बूटा रिहा सुक्क, माणस मानुख मानुष नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों बैठे लुक, सीस सके ना कोए उठाईआ। ठाकर स्वामी अन्तरजामी एन्हां आ के पुछ, जो अन्तर अन्तर तेरा ध्यान लगाईआ। सच सुहञ्जणी आपणी गोदी चुक, जिउँ बालक पिता माईआ। लोकमात कर उजल मुख, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म दे सुख, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जिउँ गोबिन्द बणाया पुत्त, पोतरे गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। चार वरनां रहे ना कोई फुट्ट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे ना कोए लड़ाईआ। सजदा सीस झुकावण तेरे चरणी जावण झुक, हउमे हंगता गढ़ ना कोए बणाईआ। आवण जावण पैंडे जावण मुक्क, लख चुरासी मात गर्भ दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक नाम निधान पाए वथ, मुश्किल सारी हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला दे चुकाईआ। कलयुग वेख रोवण ज़िमीं असमान, हालत आपणी रहे जणाईआ। परवरदगार मुहब्बत रही ना अञ्जील कुरान, बग़ले मुल्लां रहे उठाईआ। सच दिसे ना कोई ईमान, हज़रत हक़ ना कोए पढ़ाईआ। दरोही फिरी दो जहान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला तेरी सार किसे ना पाईआ। कलमा सुणे ना कोई पैग़ाम, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। किसे कम्म ना आई वेले पंज पढ़ी निमाज़, वुज़ू बांग बैठे डेरा ढाहीआ।

७४७

तेरे मिलण दी सूफी विरला रखे तांघ, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। परवरदगार सांझे यार वेस वटा अगम्मी स्वांग, अछल छलधारी आपणा फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर मंग के गए मांग, प्रगट होवे वड अमाम, परवरदगार आवे नूर इलाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति धर्म दा इक इस्लाम, इस्म आअज़म दए जणाईआ। कूड़ी क्रिया लाए ना कोई इलज़ाम, अज़ल नेड़ कोए ना आईआ। शाह सुल्तान शहिनशाह तेरा नाउँ होया बदनाम, बदी नेकी समझ कोए ना पाईआ। साचा बरदा दिसे ना कोई गुलाम, गुरबत सके ना कोए मिटाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट कूड़ तूफान, माया ममता तोहफा घर घर नज़री आईआ। किरपा कर वड अमाम, इलम आलम उल्मा चले ना कोए चतुराईआ। तेरा बरदा करे सलाम, दर दरवेश सीस झुकाईआ। तेरे हथ्थ तेरा नज़ाम, अदालत इक्को दए वखाईआ। तेरा नज़र ना आए किसे अष्टाम, लेखा कोई ना जाणे बेपरवाहीआ। वुकला करे ना कोई ब्यान, वाहिद आपणी खेल वखाईआ। सच दवारे ना कर अराम, आरामगाह आपणी दे तजाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी शाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, जिस विच तेरी वड्याईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ गए थक्क, होका तेरा नाम जग सुणाईआ। लेखा लिख के आए रख, भेव अभेद खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी तन नगारे मार के आए सट्ट, डंका इक्को हथ्थ उठाईआ। तेरे मिलण दी खोल्ह के आए अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। निझर झिरना अमृत आत्म आ के झट्ट, सर सरोवर इक दृढ़ाईआ। घर विच घर जोत कर के आए प्रगट, दस्म दवारी कुण्डा लाहीआ। सुखमन टेडी बंक पिंगल ईड़ा मार के आए दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। आत्म परमात्म इक्को घर रहे वस, पड़दा उहला रहे चुकाईआ। जीव जंत प्रभ मिलण दी सारे रखो आस, आसा तृष्ना इक्को इक वधाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मिटे फांस, अधर्म धर्म दा वजोग गंवाईआ। लेखे लावे पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। जिस दा खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल सोभा पाईआ। सो सब दे वसे पास, सतिगुर स्वामी विछड़ कदे ना जाईआ। राम राम कर के आए आख, धुर संदेसा इक सुणाईआ। घनईया शाम हो के पाए आपे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। मूसा कोहतूर डिगा सफ़ा हस्ती आपणी आप मिटाईआ। ईसा किहा मेरा बाप, नूर नूर रुशनाईआ। मुहम्मद किहा खोल्हे ताक, वड अमाम पर्दा दए उठाईआ। नानक निरगुण किहा साख्यात, पुरख अकाल नज़री आईआ। गोबिन्द किहा आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा दात, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे सब दा साथ, बण संगी संग निभाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जिस दी सिफ्ती गाथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर ढोले राग गए सुणाईआ। आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत जिस दी सच्ची ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ जिस

दा खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल आपणी धार चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त करोड़ तेतीसा जिस दी रखे आस, मुन जन बैठे ध्यान लगाईआ। सर सरोवर किनारा जिस दा तीर्थ ताट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जिस दी धार अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा खेल तमाश, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सो साहिब पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां धरनी धवल पृथ्मी आकाश पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। आदि जुगादी पतिपरमेश्वर कमलापात, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। नित नवित्त होए सहाई अनाथां नाथ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्तिम करे घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। ग़रीब निमाणयां कमल्यां कोझयां भुक्खे नंगयां पुच्छे वात, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़ाक, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद वेद व्यासा लिख्या पूरा करे भविक्ख्त वाक, वातावरन आपणे हथ्थ रखाईआ। पर्दा उहला दो जहानां खोल्ह ताक, तकदीर तदबीर तकबीर दए समझाईआ। लख चुरासी घट घट अन्दर काया मन्दिर लए झाक, बजर कपाटी पर्दा आप उठाईआ। मुरीद मुर्शद वेखणहारा रूह बुत पाक, पाकीज़ा आपणा खेल वखाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल खोल्हणहारा राज़, अनभव अपणी धार जणाईआ। दो जहान श्री भगवान शब्द अगम्मी मारनहारा आवाज़, सुत दुलारा थिर घर वासी आपणी सेवा लाईआ। सचखण्ड निवासी खेल तमाश अवण गवण, त्रैभवन लोक परलोक वेख वखाईआ। नित नवित्त खेले खेल लेखा जाणे दुष्ट दमन, गोबिन्द देवणहार वड्याईआ। भेव चुकाए दित्ता संदेसा माछूवाड़ा पवण, पवण पवणां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कर प्रकाश मूर्त गोपाल मदन, मद सूदन आपणी कार कमाईआ। पंज तत काया चोला हड्ड मास नाड़ी ना कोई बदन, ततव तत ना कोए रखाईआ। जोती जोत नूरी जलवा ज़ाहर ज़हूर होए मग्न, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म परम पुरख सच्चा लावे मुख सगन, थित वार घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति सतिवादी करे अदल, अदल अदालत इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता जूठ झूठ देवे बदल, सच सुच सतिजुग धार देवणहार वड्याईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना कोई ना पावे ग़दर, गदा चक्र नाम खण्डा इक्को इक चमकाईआ। बेपरवाह रहमत करे आपणा फ़ज़ल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दो जहानां करे वज़न, नाम कंडा शब्द तराज़ू धुर दा हथ्थ उठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बरां देवे सच समझाईआ। गुर अवतारां हरि जणाउँदा ए। पीर पैगम्बरां धीर रखाउँदा ए। पतिपरमेश्वर चोटी चढ़ अख़ीर, वेख वखाउँदा ए। सुच दृढ़ा सच तस्वीर, तालब तुलबा आप पढ़ाउँदा ए। जोती जलवा बेनज़ीर, बिन

अक्खां आप रुशनाउँदा ए। ना शाह ना हकीर, शहिनशाह आपणी कल वरताउँदा ए। ना शरअ ना ज़ंजीर, तसबी माला ना कोए लटकाउँदा ए। ना पैगम्बर ना पीर, फ़तवा काज़ी ना कोए वखाउँदा ए। ना नेत्र ना नीर, हन्झूआं धार ना कोए बणाउँदा ए। ना रोग सोग ना कोए पीड़, चिन्ता दुःख ना कोए जणाउँदा ए। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होए दिलगार, दिलबर आपणी कार कमाउँदा ए। हथ्थ फड़ नाम शमशीर, खण्डा खड़ग इक चमकाउँदा ए। वड दाता गुणी गहीर, गहर गवर आपणा पर्दा लौंहदा ए। करे खेल बिन शरीर, सदका आपणा नाम जणाउँदा ए। दो जहानां पा के चीर, कूड़ी क्रिया मेट मिटाउँदा ए। धुरदरगाही बण मशीर, मसला हक़ आप समझाउँदा ए। काया बण तत तबीब, मर्ज ममता मोह चुकाउँदा ए। प्यार कर सच हबीब, अहिबाब रबाब तन सतार इक वजाउँदा ए। दूर दुराडा आ करीब, काया काअबा सोभा पाउँदा ए। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, सो मौजूदा हो के वेख वखाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दी कर के गए ताईद, सो तुआरफ़ आपणे नाल जणाउँदा ए। बिन अक्खरां लिखी वखावे रसीद, लिख्त पढ़त आपणी आप समझाउँदा ए। सदी चौधवीं लेखा आए नज़दीक, चौदां तबकां डेरा ढाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाउँदा ए। गुर अवतारां देवे ओट, आसरा इक जणाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, कलयुग अन्धेरा दए मिटाईआ । जिस दी किसे ना आई सोच, सोचयां समझ कोए ना पाईआ। जिस दर्शन नूं रहे लोच, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो पुरख अकाल निरगुण निरवैर जाए पहुंच, दूर दुराडा बण के पांधी राहीआ। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां विद्या पर्दा दए उठाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा नाम सच श्लोक, सोहला ढोला रहे गाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो बैठा रिहा ख़ामोश, गुर अवतारां शब्द इशारे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतारां देवे धीर, धीरजवान धीर धराइंदा। कलयुग अन्त करे अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताइंदा। जन भगतां कटे भीड़, औझड़ राह नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ी क्रिया कट ज़ंजीर, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। पिछले लेखे उते मारे लकीर, चौथे जुग पन्ध मुकाइंदा। अगली फेर बणाए तकदीर, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी रख हथ्थ, हरि करता दए वड्याईआ। पारब्रह्म पुरख समरथ, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। दो जहानां पाए नथ्थ, शब्द डोरी तन्द वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखणहारा नट्ठ नट्ठ, बिन लत्तां बांहवां भज्जे वाहो दाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अगला लेखा देवे दस्स, पिछला पहलों पन्ध मुकाईआ। किसे दे कुछ ना रहे वस, ख़ाली हथ्थ सर्ब कराईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख विरले खोल्हे अक्ख, जिस आपणा

मेल मिलाईआ। दूई द्वैती मेट फट्ट, पटी इक्को नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवणहार वड्याईआ। जन भगतां प्रभ दए दिलासा, सन्तां सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ । गुरमुखां पूरी करे आसा, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। चरण कँवल धर भरवासा, सरन देवे इक सरनाईआ। पूरब करे पूरा घाटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राता, सति सतिवादी चन्द चमकाईआ। निर्धनां पुछे वाता, सरधन नाल मिलाईआ। लेखा जाणे रसूल पाका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि धुर दा राजा, रय्यत दो जहान वेख वखाइंदा। सीस जगदीश सोहे ताजा, भूपत भूप आपणा नाउँ धराइंदा। सचखण्ड दवारे साजण साजा, थिर घर शब्दी सुत आप वडियाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण आखा, धुर संदेसा इक अल्लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात मारन झाका, झाकी आपणे नाल मिलाइंदा। कवण गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सतिगुर मन्ने आखा, कवण गूढ़ी नींद ग़फ्लत विच नज़री आइंदा। कवण अनहद धुन आत्म अन्तर सुणे गाथा, कवण रसना जिह्वा पढ़ पढ़ आपणा आप भुलाइंदा। कवण हिरदे हरि वसाए आत्म परमात्म जोड़े नाता, कवण सीस निवा निवा भुल्ल भुल्ल आपणा मुख भवाइंदा। वेखणहारा प्रभू अजब तमाशा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल नज़र किसे ना आइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दर मंगण दाता, देवणहार दया कमाइंदा। उठो वेखो पिछला आपणा खाता, बिन खतरे खौफ़ ख़ास हरि जू आप वखाइंदा। झगड़ा प्या वरन बरन ज़ाता पाता, अठारां बरन भेव ना कोए चुकाइंदा। जिन्हां इक्को परम पुरख परमात्म मिलण दी ख्वाहिशा, तिन्हां ख़ालस आपणा रूप वखाइंदा। लभ्भयां तीर्थ तट जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मद्व किसे ना आवे हाथा, बांहों फड़ गले ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन फड़ आप आपणे रंग रंगाइंदा। हरि हरि रंगे आपणे रंग, रंग राता वड वड्याईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। उपर बैठ सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणी खुशी वखाईआ। आत्म परमात्म दे अनन्द, निजानंद करे रसाईआ। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, घर दीप नूर रुशनाईआ । नाद शब्द धुन अगम्म, अगम्मड़ा राग अल्लाईआ। भाग लगा काया माटी चम्म, घर अमृत आत्म सरोवर इक नुहाईआ । कूड़ी क्रिया डुब्बदा बेड़ा देवे बन्न्ह, फड़ आपणे कंध उठाईआ। मन वासना दहि दिशा ना भटके मन, मन मणका आप भवाईआ । कर प्रकाश चोले तन, ततव तत दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया ठीकर देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ मिटाईआ। गुरमुख बणाए आपणा जन, बणें धन्न जणेंदी माईआ। किरपा कर श्री भगवन, जन भगतां लए मिलाईआ। सचखण्ड दवारे चाढ़े चन्न, सूरज चन्द दोवें नैण शरमाईआ। भगत भगवान इक

दूजे नूं कहिण धन धन, सोहँ ढोला सच्चा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग वेख अन्धेरी राती, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मन्ने आखी, सतिजुग आप जणाए साची साखी, प्रगट होए कमलापाती, नाम निधाना देवे दाती, अमृत बूँद प्याए स्वांती, मेट मिटाए पात जाति, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान शहिनशाह इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतार एकँकार परवरदगार सांझा यार साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल दयानिध ठाकर स्वामी अन्तरजामी इक्को इक इक नज़री आईआ।

✻ २२ फग्गण २०२० बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी उतर प्रदेश ✻

गुरमुख आसा करे प्यार, तृष्ना जगत मिटाईआ। कर किरपा सिरजणहार, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। राह तक्कदी रही जुग चार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। नेत्र नैण नैण उग्घाड़, अक्ख प्रतख रूप वटाईआ। फिर फिर थक्की जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत भज्जी वाहो दाहीआ। बण वैरागण वाजां रही मार, बौहड़ी कूक कूक सुणाईआ। काग़ज़ कलम शाही तेरा दस्सदी गई निशान, गुर अवतार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुरमुख आसा फिरे दौड़ी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल आ के बौहड़ी, बौहड़ी बौहड़ी रही सुणाईआ। सच दवारे ला पौड़ी, डण्डा आपणा हथ्थ फड़ाईआ। सति सतिवादी चढ़ के आ अगम्मी घोड़ी, बेपरवाह आसण लाईआ। मेरी काया अन्दर निक्की जिही मोरी, दर दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। लँघ के आ चोरी चोरी, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गुरमुख आसा कहे वस्त्र लाह चीर, पर्दा दे उठाईआ। मैं फोल थक्की अठ सठ तीर्थ नीर, तट किनारे वेखे चाईं चाईंआ। वरन बरन वेखे शरअ वज्झा ज़ंजीर, शरीअत लेखा दे मुकाईआ। दर दरवेश मंगदे वेखे फ़कीर, शाह हकीर भज्जण वाहो दाहीआ। हरि जू तेरी नज़र ना आई किसे तस्वीर, तसबी माला गल विच जगत रहे लटकाईआ। चोटी चढ़ के वेख अख़ीर, मंज़ल आपणी इक सुहाईआ। तूं पीरां दा पीर, दस्तगीर तेरी वड्याईआ। घर साचे दे धीर, धीरजवान तेरी सरनाईआ। मेरी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। बिरहों विछोड़ा कट पीड़, हउमें रोग गंवाईआ। मैं रखां नित उडीक, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मेहरवान लाशरीक, पिछली शिरकत दे गंवाईआ। तेरे विच इक तौफ़ीक, तोबा तोबा रही सुणाईआ। दूर दुराडे आ नज़दीक, नेरन नेरा नज़री आईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। गुरसिख आसा फिरे नट्ठी, दहि दिशा वेख वखाईआ। सच दवारा खोल्ह हट्टी, पर्दा दूई द्वैत चुकाईआ। भाग लगा काया मट्टी, मटका सोहणा दे बणाईआ। बख्शिश कर नाम रत्ती, रत्ती रत्त दए बदलाईआ। मेल मिला कमलापती, कँवल नैण तेरी सरनाईआ। मैं दर्शन देखां आपणी अक्खी, घर साचे खुशी मनाईआ। प्रेम प्यार दी लै के पक्खी, परम पुरख तेरी सोहणी सेव कमाईआ। तेरे नाम दी पढ़ां पट्टी, लेखा चुके कलम दवात शाहीआ। सच दवारे बणां सखी, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। गुरमुख आसा कहे कर मंज़ूर, बेनन्ती तेरे अग्गे जणाईआ। शाह सुल्तान हाज़र हज़ूर, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। मैं कोझी कमली भरी नाल कसूर, तूं मेहरवान महिबूब नज़री आईआ। दर बांदी सेवा करां बण मज़दूर, चाकर आपणा नाउँ धराईआ। मैं होवां सदा मशकूर, मेरी मुश्किल हल्ल कराईआ। क्यों साहिब होइउँ मफ़रूर, बैठा मुख छुपाईआ। मेरा माण तुटा ग़रूर, गुरबत नज़र कोए ना आईआ। जोती जलवा दे नूर, सच ज़हूर कर रुशनाईआ। पंज तत ना मचाए फ़तूर, फतवा मन ना कोए लगाईआ। सच दवारा लँघ आपणी वेख हदूद, मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। मैं वेखां हक़ महिबूब, महव इक्को नज़री आईआ। मेरा लेखा चुक्के मशरक मग़रब शिमाल जनूब, चार कुण्ट अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरा सिफ्त सालाही गावां हज़ारा दरूद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गुरमुख आसा कहे मेरा पूरा कर दे शौक, शख्सीयत आपणी लैं प्रगटाईआ। परम पुरख मेरे साचे ख़ौत, बीवी बैवा रूप ना कोए वटाईआ। सच स्वामी आ के पहुंच, घर मन्दिर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। गुरमुख आसा भरे हौका, हाए हाए रही सुणाईआ। तुध बिन साची मिले ना कोई नौका, नईया नाम ना कोए वखाईआ। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म मौका, श्री भगवान दया कमाईआ। कर किरपा मार्ग दे सौखा, अच्छी तरह समझाईआ। तेरा प्रकाश वेखां निर्मल जोता, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मेरी तेरे उते ओटा, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैं कूक सुणावां लोकां, परलोकां दयां दुहाईआ। तेरे नाम दा बण के पोथा, पुस्तक आपणा तन वखाईआ। प्रभू तेरा की मेरे नाल रोसा, तूं सद रुस्सयां लएं मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गुरमुख आसा मंगे जगदीश, जग जीवण दाते झोली डाहीआ। नित नवित्त तेरी उडीक, नेत्र अक्ख राह तकाईआ। सच मिलण दी मोहे प्रीत, प्रीतीवान हो सहाईआ। मैं नकर्मण नीचन नीच, तूं उच्चो ऊँच ऊँच अख्वाईआ। मेरी लँघ के वेख दहिलीज़, किस बिध तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख आसा देवे सद्दा, सदके वारी घोली घोल

घोल घुमाईआ। तेरे प्रेम अन्दर तन मन बद्धा, नाता तुट्टया जगत लोकाईआ। विछोड़े वाली दे ना सज़ा, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। घर ठाकर आ भज्जा, दूर दुराडा बण के राहीआ। मैं खुशीआं नाल हस्सां, प्रेम नाल मुसकराईआ। गुरमुख सखीआं सच सच दस्सां, तेरा नाम वड्याईआ। सिर चरणां हेठां रखां, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। इक्को सोहला नाम रटां, तू ही तू ही राग अलाईआ। दर्शन पा के आपणी अक्खां, अक्खीआं तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा लै मिलाईआ। गुरमुख आसा कहे उठ वेख अगम्म, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। काया माटी सुक्का चम्म, रत्ती रत सुकाईआ। हरख सोग दिसे ग़म, ग़मखार नज़र कोए ना आईआ। नेत्रहीण होए अन्न्ह, चन्न नूर ना कोए चमकाईआ। डुब्बदा बेड़ा आ के बन्न्ह, आपणे कंध उठाईआ। इक्को मिन्नत मेरी मन्न, हिम्मत आपणी नाल रलाईआ। वस्त अमोलक दे धन, दौलत इक वखाईआ। भाग लग्गे साढे तिन्न हथ्थ तन, ततव तत आपणा दे जणाईआ। आ वेख श्री भगवन, भगवन तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लै लगाईआ। गुरमुख आसा रही लड़, गुसे नाल जणाईआ। बिन हथ्थां पल्लू रही फड़, बिन बांहवां रही हिलाईआ। सच दवारे आ के खड़, क्यों बैठा नैण भवाईआ। मेरी मंज़ल आपे चढ़, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। मेरा ढोला आपे पढ़, धुर दा राग अलाईआ। मेरी मरनी आपे मर, मर जीवत रूप वटाईआ। मेरी करनी आपे कर, करता पुरख तेरी सरनाईआ। मैं इक्को मंगां तेरे दर, दर सच अलख जगाईआ। कर किरपा जे लए वर, वसल आपणा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा घर, जिस घर मिलयां विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ।

७५३
१६

* २२ फग्गण २०२० बिक्रमी विश्वामित्र दे गृह मेरठ छाउणी उतर प्रदेश *

सतिगुर किरपा मिले प्रसाद, नाम अमोलक झोली पाइंदा। घर सुरत सवाणी सुणे नाद, अनहद नादी नाद वजाइंदा। भेव खुल्हाए ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लाहइंदा। कूड़ी क्रिया दूर दुराडी जाए भाज, माया ममता मोह मिटाइंदा। बिन रसना जिह्वा देवे इक स्वाद, अनरस मिठ्ठा आप वखाइंदा। निज नेत्र खुल्हे जाग, घर चन्द नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सच प्रसाद इक वखाइंदा। सच प्रसाद सतिगुर मेहर, लोकमात वड्याईआ। पंच विकारा करे ढेर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। मन का मणका देवे फेर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। उलटा गेड़नहारा गेड़, घर घर विच पड़दा दए उठाईआ। लेख चुकावे मेर तेर, तूं मैं रहिण ना पाईआ। लख चुरासी आवण

जावण लेखा दए नबेड़, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन नाम अमोलक वस्त वरताईआ। सच प्रसाद सतिगुर देवण जोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाम सुणाए अगम्म श्लोक, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। तन नगारे लाए चोट, धुन आत्मक राग अल्लाइंदा। करे प्रकाश निर्मल जोत, घर अन्धेरा आप मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, सति धर्म इक वखाइंदा। आत्म परमात्म मिल के माणे मौज, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सति प्रसाद आप चखाइंदा। सति प्रसाद जो हरिजन लए चक्ख, तिस भगत मिले वड्याईआ। प्रभ मिलण दी खुल्ले अक्ख, निज नेत्र होए रुशनाईआ। अमृत मिले आत्म रस, निझर झिरना इक झिराईआ। जगत विसूरे जाइण लथ्थ, दुःख रोग संताप मिटाईआ। करे निमस्कार नमो गुरदेव जोड़ हथ्थ, चरण कँवल सीस निवाईआ। अग्नी बुझे तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच प्रसाद, तिस पारस रूप दए वटाईआ। सतिगुर प्रसाद सदा सति, सति सतिवादी रूप वटाइंदा। घर उपजावे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक समझाइंदा। निझर देवे अगम्मी रस, अमृत झिरना आप झिराइंदा। कर प्रकाश जोत लट लट, नूर नुराना डगमगाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, नौ दवारे पार कराइंदा। सुखमन टेडी बंक आपे दस्स, औझड़ घाटी पार कराइंदा। ईड़ा पिंगल वेखे आपणी अक्ख, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सति प्रसाद इक्को झोली पाइंदा। सति प्रसाद सतिगुर किरपा, हरिजन साचा मंग मंगाईआ। जन्म कर्म दी रहे ना बिपता, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। लेखा चुके स्वर्ग बहिश्ता, प्रभ जोती जोत जोत मिलाईआ। नज़री आए इक्को इष्टा, श्री भगवान नूर इलाहीआ। बंद किवाड़ी खोल्ले दृष्टा, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। होए मिलावा जिउँ राम वशिष्टा, विश्व आपणी धार समझाईआ। सो सुहञ्जणा होए परविश्टा, घड़ी पल मिले वड्याईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल करावणहारा पूरा निसचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सति प्रसाद इक समझाईआ। सति प्रसाद सतिगुर हथ्थ, जुग चौकड़ी आप वरताइंदा। लख चुरासी नालों कर के वक्ख, भगत भगवान वेख वखाइंदा। मेहरवान सिर रख हथ्थ, ओट इक्को इक जणाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। जानणहारा मित गत, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर खोज खुजाइंदा। बीज बीजे साचे वत, फुल फलवाड़ी नाम महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रसाद इक वडियाइंदा। सच प्रसाद सदा भरपूर, श्री भगवान दए वड्याईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, माया ममता मोह चुकाईआ। अन्तर देवे इक सरूर, नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। जलवा जोती बख्शे नूर, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सच प्रसाद जन भगतां झोली पाईआ। जन भगतां झोली देवे पा, भगवन आपणी सेव कमाइंदा। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के दस्म दवारी खड़ के देवे सलाह, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण आदि जुगादि बणे मलाह, नित नवित्त बेड़ा पार कराइंदा। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला, गुरमुखां पकड़े बांह, फड़ बांहों गले लगाइंदा। बोध अगाधा शब्द अनादा इक्को देवे नाँ, नर निरँकारा आप समझाइंदा। जलवा नूर दरसाए इक खुदा, महिबूब मुहब्बत इक बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां गुरमुखां गुरसिखां हरिभगतां साचे सन्तां आपणा प्रसाद सच सच सच दए खवा, तिन्हां आत्म परमात्म ख्वाहिश पूरी आप कराइंदा। सतिगुर पूरा देवे नाम, बिन अक्खरां आप जणाईआ। अन्तर आत्म प्याए जाम, अमृत मुख चुआईआ। सफल कराए हरिजन काम, काम वासना मेट मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी चाम, पंज तत मिले वड्याईआ। रैण अन्धेरी मेटे शाम, अन्ध अँध्यार दए गंवाईआ। घर साहिब सतिगुर मिले राम, रमईया आपणा फेरा पाईआ। नज़री आए घनईया शाम, नाम बंसुरी इक सुणाईआ। गुरमुख सखी करे परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच संदेसा दे फ़रमाण, आत्म परमात्म इक्को नाम करे पढ़ाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे पछाण, पर्दा उहला दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक निशान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा रूप नज़री आईआ। लेखा जाण दो जहान, भेव चुक्के ज़िमीं असमान, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड सति सरूप वेख वखाईआ। कर किरपा सतिगुर सति पुरुष पुरख पुरखोतम दे दान, जिस मिलयां अन्तर उपजे ज्ञान, बाहर लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा दान, नाम शब्द भण्डारा सति, जन भगतां अन्दर रख, बिन मंगयां झोली पाईआ।

*** २२ फग्गण २०२० बिक्रमी दिल्ली दरबार विच ***

सचखण्ड निवासी तेरे देस, सोभावन्त वज्जे वधाईआ। जोती जामा निरगुण वेस, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे वेख, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाईआ। सजदा सीस झुका करन आदेश, नमो नमो रहे सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी खेड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नज़री आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा किसे ना आया भेत, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण माणी तेरी सेज, सच सिँघासण आसण डेरा लाईआ। शब्द स्नेहड़ा दित्ता भेज, धुर दा राग इक सुणाईआ। बिन कलम शाही लिख्या लेख, बिन कागज़ दिती वड्याईआ। निरवैर पुरख कर के हेत,

हितकारी मेल मिलाईआ। शाहो भूप बण नरेश, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दिती माण वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, दर तेरे ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा वेख्या खेल कमाल, कमले रमले तेरी सार कोए ना आईआ। जोती जलवा तेरा तक्क जलाल, नूर ज़हूर परवरदिगार सच्ची रुशनाईआ। दीपक दीआ जोती जगे बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। सचखण्ड दुआर सोहे सच्ची धर्मसाल, मुकामे हक़ तेरा ज़हूर नज़री आईआ। शब्द अगम्म बोध अगाध वज्जे ताल, तर्ज़ सुणन कोए ना पाईआ। नित नवित्त अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आपणी इक समझाईआ। नाम निधाना अन्तर अन्तर दित्ता सिखाल, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। दीपक दीआ जोती इक्को बाल, काया माटी पंज तत करी रुशनाईआ। ब्रह्म मति साची सिख्या इक सिखाल, धुर दी करी अगम्म पढ़ाईआ। अन्दर वड़ के चलिउँ नाल, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। मन्दिर चढ़ के वजावें ताल, धुर दा राग सुणाईआ। दवारे खड़ के वेखें हाल, मुर्शद वड्डे बेपरवाहीआ। साडा हल्ल करे सवाल, आसा मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अथाह, दो जहान तेरी शरनाईआ। धुर दे रहिबर नूरी इक खुदा, ख्वाहिश साची पूर कराईआ। तेरे चरण कँवल फ़िदा, हज़रत तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

७५६

१६

किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। सच सरनाई तेरे दर, दर दरवाज़ा दे खुल्लाईआ। चरण कँवल बैठे वड़, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। दरोही खुदाए किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्ट सबाई रही सड़, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। आपणी करनी असीं गए हर, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। जीवत जी कोई ना जाए मर, मरना समझ किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा अक्खरी ढोला रहे पढ़, निरअक्खर समझ किसे ना आईआ। दर दरवेश तेरे दवारे गए खड़, अलख अगोचर इक्को मंग मंगाईआ। ना चोटी ना दिसे जड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। सचखण्ड निवासी धुर दे बाप, पिता पुरख तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कड्ढे हो के रहे आख, आख़र तेरे चरणां सीस निवाईआ। चार जुग दी रही कलयुग गाथ, साची सिख्या हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। पट्टी पढ़े ना कोई जमात, नाम रमज़ ना कोए लगाईआ। ख़ाली दिसे कलम दवात, शाही शहिनशाह जस ना कोए लिखाईआ। तन वजाए ना कोए रबाब, महिबूब राग ना कोए सुणाईआ। प्याला मिले ना आबे हयात, हयाती सके ना कोए बदलाईआ। जुग चौकड़ी तेरा लैंदे रहे ख्वाब, ख्वाहिश तेरे नाल मिलाईआ। सजदा करदे रहे आदाब, निउँ निउँ लागे पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सृष्ट सबाई गए आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त

७५६

१६

प्रगट होवे आप, जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। नूर इलाही पाकी पाक, परवरदिगार अमाम इक्को नज़री आईआ। सच दवारे दिसे साख्यात, ज़ाहर ज़हूर पड़दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडा नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक आवाज़, इक्को वार उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार आ सांभ आपणा राज, रय्यत तेरी जगत लोकाईआ। तेरी झोली पाया तेरा ताज, तख्त निवासी लोकमात तख्ता दित्ता कराईआ। मक्का काअबा कोई ना हाजी हाज, हुजरे मिले ना कोए वड्याईआ। दर बरदे तेरे बण के दास, घर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रख वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे अग्गे करन सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा लेखा झोली पाया सर्ब तमाम, बाकी कोए नज़र ना आईआ। हउँ बरदे ठाकर तेरे ग़ुलाम, सेवक नज़री आईआ। लोकमात साडी कोई ना करे पहचान, कलयुग जीव बैठे मुख भवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ होवे हराम, धीरज जत सति नज़र कोए ना आईआ। अठ सठ अन्तर आत्म करे ना कोए अशनान, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। निज नेत्र घर मिले ना श्री भगवान, सोहँ काहन घनईआ दरस ना कोए वख। सीता सुरती होई बदनाम, राम रमईया बन खोजण कोए ना जाईआ। कलयुग रावण फिरे शैतान, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। शब्द निराला तीर मारे कोई ना बाण, तिक्खी मुखी ना कोए वखाईआ। चिल्ला चढ़े ना किसे कमान, गोशा सच ना कोए वखाईआ। खड़ग खण्डा ना कोए किरपान, तेज़ कटार ना कोए वड्याईआ। शरअ शरीअत होई बेईमान, बैवा रूप दिसे सर्ब लोकाईआ। अन्तर आत्म किसे ना मिले आराम, सेज सुहञ्जणी सोभा कोई ना पाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, रसना रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा तेरे अग्गे दित्ता धर, ख़ाली हथ्थ सारे रहे वखाईआ। परम पुरख लै आपणा राज, साडे कम्म किसे ना आईआ। तेरी चरणी सुट्टया सीस दा ताज, जगदीश तेरी सरनाईआ। कलयुग बेड़ा आपे तार जहाज़, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां तेरा संदेसा जो आए आख, अक्खरां नाल कर पढ़ाईआ। सो समझ आई ना किसे बात, बातन तेरा दरस कोए ना पाईआ। कलयुग जीव बण के नार कमज़ात, कुलखणी बैठी रूप धराईआ। गुरुमख कोई ना कहे बाप, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। आत्म परमात्म तेरा करे ना कोई जाप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द होई हल्काईआ। चरण कँवल बने कोई ना नात, कूड़ा बन्धन रहे पाईआ। साचा करे ना कोई पाठ, अजपा जाप ना कोए कराईआ। पतण नज़र ना आए घाट, घर मिल्या मेल ना सच्चे माहीआ। साडी पूरी ना होई ख्वाहिश, ख़ालश रूप ना कोए वटाईआ। प्रभ सब कुछ दित्ता तेरे हाथ, पिछला लेखा तेरी झोली पाईआ। अन्त वार सदी

बीसवीं करीए दोए जोड़ अरदास, सच दवारे ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, समरथ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार कहिण तख्त ताज लै सेली टोपी, कल्गी कम्म किसे ना आईआ। नाता तुट्टया काहन गोपी, मण्डल रास ना कोए रचाईआ। कलयुग जीव सारे होए दोषी, निर्दोषी नज़र कोए ना आईआ। साची सोच किसे ना सोची, तेरी समझ कोए ना पाईआ। तेरा लेखा लिखे रविदास चुमारा मोची, मुचलका सब दा रिहा भराईआ। वेख जगत वासना खोटी, ख़ालक खलक ध्यान लगाईआ। तूं सर्ब दवारे बैठों जोती, बण जाता आपणा मुख छुपाईआ। सानूं ताअने देवण लोकीं, परलोक ना कोए वड्याईआ। साडी पुस्तक हो गई थोथी, कीमत मात ना कोए चुकाईआ। चारे बाणी लोकमात हो गई औखी, सच्चा संग ना कोए रखाईआ। तेरे नाम पिच्छे साध सन्त मंगदे फिरन रोटी, दर दर घर घर फेरा पाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी जीवां जंतां कटदे बोटी, आप आपणा हुक्म वरताईआ। निर्मल नूर तेरी किसे नज़र आई ना जोती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। नव नौ चार सृष्ट सबाई वेखी ठोकी, ठोकर नाम लग्गे किसे ना राईआ। सब दी मति होई होछी, गुरमति घर ना कोए वसाईआ। ख़ाली दिसे जंजू बोदी धोती, तिलक ललाट ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी वस्त तेरे अग्गे टिकाईआ। आह लै आपणे दीन मज़्हब, गुर अवतार रहे जणाईआ। पीर पैगम्बर कहिण होया ग़ज़ब, ग़ाफ़ल सुत्ती सर्ब लोकाईआ। सदी चौधवीं वेख होए तअजब, हैरानी सब दे उते छाईआ। साडे चलया ना कोई कदम, मार्ग मन ना कोए वखाईआ। असीं किसे नहीं जाणा सद्दण, नाता तेरे नाल जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया विच मच्चण, त्रैगुण अग्नी तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ साडा चुक्कया ठेका, सदी बीसवीं अन्त दित्ता जणाईआ। आपणी झोली पा लै लेखा, लिख्त आपणी पूर कराईआ। आदि जुगादी बण नरेशा, नर नरायण हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल वेखा, वक्खरी वक्खरी धार तेरे हुक्म रखाईआ। किसे दे सीस रखाया केसा, किसे दी चोटी मूंड मुंडाईआ। किसे दे बाल दवाए भेंटा, किसे दी पुठी खल्ल लुहाईआ। किसे दा बण के सच्चा नेता, सीस ताज सुहाईआ। किसे दा भुल्ल के प्रभू चेता, ग़रीब निमाणयां दित्ता रवाईआ। किसे नूं अन्दर वड़ के दस्सया भेता, जन भगतां पर्दा लाहीआ। किसे नूं सेली टोपी दे के खेसा, अल्फ़ी इक्को तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, आपणा लेखा लेखे लाईआ। श्री भगवान आह लै आपणे वेद कतेब, शास्त्र सिमरत तेरी झोली पाईआ। अठ दस लै वेख, अठारां अन्त पूर कराईआ। अञ्जील कुराना लै लपेट, पड़दा

आपणा उपर पाईआ। कलयुग जीव छड्ड गए हेत, साडा संग ना कोए निभाईआ। जिस कारण दित्ता भेज, सो वेला दित्ता भुगताईआ। अन्तिम सोईए तेरी सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। आप आपणा धरे भेख, भेखाधारी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए चुकाईआ। तीर्थ तट मारन धाह, कूक इक्को वार सुणाईआ। तूं वसें थल अस्गाह, जंगल जूह पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाईआ। सारे विच बंधे गुनाह, गुनाह भरी सर्ब लोकाईआ। तट किनारे धीआं भैणां सारे रहे तका, नेत्र नैण अक्ख ना कोए शरमाईआ। नंगे तारीआं रहे ला, पड़दा उपर ना कोए टिकाईआ। ऐवें गावां रहे मणसा, तेरा नाम वचोला हथ्थ किसे ना आईआ। उच्ची रोईए कर के बांह, दोहां हथ्थां दईए दुहाईआ। साडा लहिणा दे मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे चरणां मिले पनाह, दुआर सच सरनाईआ। कलयुग जीवां कोलों पल्लू छुडा, नाता झूठा दे तुड़ाईआ। तेरा दर्शन करीए आ, चरण कँवल मिले सरनाईआ। तू ही पिता तू ही माँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ न्याँ, अदालत तेरी सच्ची नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा दे मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आखर सोच, सच सच जणाईआ। पुरख अकाल क्यों बैठा ख़ामोश, आपणा ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग माणे मौज, सति धर्म बैठा मुख छुपाईआ। लेखा वेख आपणे लोक, लुक लुक आपणी अक्ख खुल्हाईआ। वरनां बरनां कढ्ढ खोज, दीनां मज़्हबां पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अन्तिम दे मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साडा मुकया हिस्सा, हिस्सेदारी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग रस होया फिका, पापां भरी लोकाईआ। तेरा संदेसा सच्चा नाम दे के आए चिठा, बण चिट्ठी रसाइण सेव कमाईआ। तेरा खेल प्रभू किसे ना डिठा, नेत्र खोल्ह दरस कोए ना पाईआ। अन्तिम सब नूं दित्ता पिच्छा, करवट लै ना मुख वखाईआ। जगत कहाणी गाउँदे फिरदे किस्सा, किस्मत लए ना कोए बदलाईआ। तेरा नूर ज़हूर किसे ना लभ्भया विच्चों इट्टां, पत्थरां विच्चों मेल ना कोए मिलाईआ। काग़ज़ कलम किसे ना डिट्ठा, शाही पर्दा ना कोए चुकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुता, चेतन आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दए वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ सब कुछ तेरी झोली, कलयुग अन्त दित्ता टिकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सेवा कीती बण के गोली, चाकर आपणा नाउँ धराईआ। नाम शब्द धुर सुणाई बोली, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। बण वणजारे हट सच्ची खोली, वस्त इक्को इक टिकाईआ। नाम कंडे धुर दे तोली, तकड़ी वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब कुछ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरे हथ्थ फड़ाई डोर, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। कलयुग वेख अन्ध घोर, आपणा बल

७५६ १६

तेरी झोली पाईआ। तूं साहिब वसणहारा ठग्ग चोर, घट घट अन्दर डेरा लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां तेरी लोड़, साचे सन्तां वेख वखाईआ। आपणी किरपा सच दवारा दे खोल्ह, ख़ालस आपणा नाम दृढ़ाईआ। दो जहान वजा ढोल, निरगुण सरगुण आप समझाईआ। नाम निधान तोल तोल, तोलणहारा आप अख्वाईआ। घट स्वामी वसें कोल, ब्रह्मण्ड तेरी रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों लएं वरोल, गुरमुख गुर गुर बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रहमत आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साडी मुक्की पटेदारी, हक़ नज़र कोए ना आईआ। सदी बीसवीं तेरी यारी, सच याराना इक लगाईआ। सदी चौधवीं शहिनशाह परवरदगारी, साची ओट रखाईआ। लेख चुका वड संसारी भण्डारी, भण्डारा आपणे हथ्थ वखाईआ। काग़ज़ कलम नेत्र रोवे बण लिखारी, कातब चले ना कोए चतुराईआ। हउमें मिटी ना किसे बीमारी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। साहिब सतिगुर शब्द मिल्या ना सच्चा हाणी, सुरत सवाणी कन्त ना किसे प्रनाईआ। नेत्र रोवे चारे खाणी, अण्डज जेरज सेतज उत्भुज दए दुहाईआ। मिले माण ना चारे बाणी, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। नव नौ चार ना कोई निशानी, सच धर्म रूप ना कोए वखाईआ। जीव जंत साध सन्त मन वासना करन मन मानी, ममता मोह आपणे नाल रखाईआ। धुर दा लेखा लिख के गया सुत भानी, गुरु गुरदेव भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मारन झात, प्रभ तेरा राह तकाईआ। लेखा लिख दे बिन कलम दवात, शाही प्रेम नाल मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों पूरी करदे आस, तृष्ना कोए रहिण ना पाईआ। तेरा रूप नज़री आए ख़ास, ख़ालस आपणा रंग दे समझाईआ। तेरी करदे रहे तलाश, चार कुण्ट वेख वखाईआ। शिव जी लभ्भे उते कैलाश, ब्रह्मा श्री ब्रह्म ध्यान लगाईआ। विष्नूं वेखे आपणे सांगोपांग, बाशक तशका सेजा आसण लाईआ। परम पुरख परमात्म तेरा कोई ना जाणे स्वांग, स्वांगी की की खेल रचाईआ। तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस रखी तांघ, नेत्र लोचण नैण वेखण चाईं चाईंआ। प्रेम प्रीती साची नीती पारब्रह्म प्रभ इक चढ़ा अगम्मी कांग, कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता दए रुढ़ाईआ। सच शब्द धुर कलमा बिन नबी रसूलों दे बांग, हज़रत हक़ कर पढ़ाईआ। दो जहानां तेरे नाम दी पए धांग, नाम सति फ़तिह डंका इक वजाईआ। रवि ससि राह तक्कण सूरज चांद, मण्डल मण्डप बैठे ध्यान लगाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त कोई ना पावे सांत, त्रैगुण अग्नी पंज तत अग्ग ना कोए बुझाईआ। मेहरवान मेहरवान गुण निधान वखा आपणा स्वांग, अछल छलधारी आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा

सब दा पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे झुक, तख्त निवासी तेरे अग्गे सीस निवाईआ। परवरदगार सांझे यार दीन दयाल पुरख अकाल साडा पैंडा गया मुक्क, मुकम्मल दर तेरे रहे जणाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी आपणी धारों उठ, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। साडे कोलों सब कुछ गया खुस, ख़सम डोर तेरे हथ्थ फड़ाईआ। दयावान हो के पुच्छ, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड निवासी सच दवारे क्यों बैठा लुक, कलयुग वेला अन्तिम दए दुहाईआ। राह तक्के गोबिन्द तेरा सूरा पुत्त, पोतरे गुरमुख नाल मिलाईआ। निर्धन सरधन जा के पुछ, अगला पिछला लेखा तैनूं देण जणाईआ। अमृत इक्को दे घुट्ट, जिस पीत्तयां दुःख रहे ना राईआ। उजल कर मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। सच सुहा आपणी रुत्त, पत्त डाली फुल महकाईआ। साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। तेरे प्रेम दी मिले सुच, संजम इक्को दे जणाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देणी पुट, बूटा आपणा नाम लगाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कूड़ी क्रिया कढु फुट्ट, माया ममता हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जन भगतां नाल दीन दयाल मूल ना रुस्स, कर किरपा रुस्सयां लै मिलाईआ। तेरे विछोड़े दा झल्लया ना जाए दुःख, बिरहों रोग ना कोए मिटाईआ। प्रेम प्रीती दे अतुट, चरण कँवल सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देणा थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ वेख आपणा जगत, जग जीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन नाड़ी नाड़ी वेख बूँद रक्त, गृह गृह घर घर आपणा फेरा पाईआ। तेरे मिलण दा आया वक्त, गुर अवतार पीर पैगम्बर देण गवाहीआ। राह वेखण नेत्र भगत, भगवन इक ध्यान लगाईआ। जे ना मिलें तेरे उते करन हरख़, गुस्से हो के मुख भवाईआ। फेर एनां तेरे कोल नहीं आउणा परत, अक्ख आपणी लैण भवाईआ। श्री भगवान कहे मैं करां खेल नधड़क, भय भउ सर्ब मिटाईआ। जन भगतां उते कर के तरस, मेल मिलावां चाईं चाईंआ। देवां वड्याई अर्श फ़र्श, दो जहानां सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो पिच्छे रह गया फ़र्क, अग्गे पूरा घाटा पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तुसीं वेख होवो असचरज, हरि जू अचरज खेल रचाईआ। किस बिध आपणा पूरा करे फ़र्ज, फ़रद सब दी वेख वखाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, सच मर्दानगी आप कमाईआ। नाम खण्डा फड़े खड़ग, दो जहानां रिहा डराईआ। चाल अगम्मी चले मटक, कदम कदम नाल उठाईआ। कूड़ी क्रिया शौह दरयाए देवे पटक, पटनेवाला बेपरवाहीआ। पंच विकार ना रहे कटक, कंडा सब दा दए कढ्ढाईआ। अद्धविचकार जो रहे लटक, आर पार किनारे दए जणाईआ। जन भगत लोकमात जगत वासना कदे ना होवे ग़रक, वहिण कूड़ ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चार जुग दी पूरी करे शर्त, शरीअत शरअ आपणी झोली पाईआ। सच्ची सरन एकँकार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण अगम्म अपार, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठांडे दरबार, श्री भगवान वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए अधार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड निवासी खेल करतार, हरि करता बेपरवाहीआ। परमात्म आत्म खेल न्यार, निरगुण निरवैर धार चलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म भेव न्यार, पड़दा उहला आप उठाईआ। बण वचोला पुरख अकाल, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, सन्त सुहेले अक्ख खुल्हाईआ। गुरमुख गुर गुर बण दलाल, शब्द दलाला रूप वटाईआ। गुरसिख कर कर पूरे काम, चरण कँवल दए सरनाईआ। साचा ढोला धुर दा नाम, ओंकार एकँकार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। एकँकार सति सरूप, सति सतिवादी इक अख्वाइंदा। रेख रंग ना कोए रूप, ज़ात पात ना कोए जणाइंदा। वसणहारा दहि दिशा चारे कूट, घर घर विच सोभा पाइंदा। भाग लगाए पंज तत काया कलबूत, अनभव आपणी खेल वखाइंदा। नाता तोड़े जूठ झूठ, माया ममता मोह मिटाइंदा। परमात्म आत्म बणाए सच सपूत, पिता पूत गोद उठाइंदा। उजल करे निरगुण मुख, पर्दा उहला रहिण कोए ना पाइंदा। घर आत्म घर ब्रह्म घर देवणहारा सुख, सांतक सद वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एकँकार सच सच दृढ़ाइंदा। एकँकार इक इकल्ला, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। परम पुरख परमात्म वसावणहारा सच महल्ला, महिफल इक्को इक वखाईआ। दीपक जोती आपे बला, शब्दी राग धुन शनवाईआ। जिस सुरती गुर शब्द फड़ावे पल्ला, सो आत्म एकँकार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, धुरदरगाही अगम्म जाप, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह इक दृढ़ाईआ। एकँकार जो जन जपदे, माया ममता मोह मिटाईआ। त्रैगुण अग्न कदे ना तपदे, कूड़ी क्रिया ना कोए लड़ाईआ। नौ दवारे पार लँघदे, सुखमन टेडी बंक पन्ध मुकाईआ। पड़दा लाह नेत्र निज अक्ख दे, घर लोचण दर्शन पाईआ। शब्द अगम्मी नाद वज्जदे, अनहद्द रागी राग सुणाईआ। खुशी नाल आत्म परमात्म मिल मिल हस्सदे, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। सच दुआर सोहणे मन्दिर महल अटल इक्को वसदे, दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द लेखा जानण धुर दे रस दे, रस इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, एकँकार मेहर नज़र आपणी इक उठाईआ। नाम मन्त्र एकँकार जिन्हां मिल्या सति, घर साचे वज्जे वधाईआ। मन मति बुध मूँह दे भार देवे सट्ट, ब्रह्म मति इक प्रगटाईआ। कर प्रकाश

निर्मल जोत झट्ट, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे सट्ट, घर ताल तलवाड़ा इक्को नज़री आईआ। अट्ठे पहर खुली रहे अक्ख, निज नेत्र नूर होए रुशनाईआ। लेखा चुके सिमरन पूजा पाठ जोग अभ्यास जप तप, संजम नेम कर्म कांड रहिण कोए ना पाईआ। सच्चा नाअरा सुण अलख, प्रतख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दर्शन पाईआ। हकीकत वेख धुर दी हक़, मुकामे हक़ मिले वड्याईआ। सगल विसूरे जाण लथ्थ, जो जन गुरमुख एकँकार नाम सिमरन सिमर सिमर प्रभ दे विच समाईआ। एकँकार जिन्हां मिल्या नाम, सतिगुर पूरा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तीर निराला वज्जे बाण, अणयाला इक वखाईआ। पंच विकार ना रहे शैतान, शरअ मज़्ह्ब ना कोए लड़ाईआ। अन्तर अन्तर होए ज्ञान, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान जिस दा करे ज्ञान, अक्खरां नाल सिफ्ती ढोला गाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख दीन दयाल साचे मन्दिर घर स्वामी मिले आण, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। तिन्हां गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां साचे सन्तां पूरन होवे काम, कामना कूड़ी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकँकार इक्को नाम दए वड्याईआ। एकँकार कहे मेरा नाअरा हक़, हकीकत विच्चों नज़री आईआ। आदि जुगादि महिमा अकथ, रसना कथ ना सके कोई राईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर दीन दयाल अन्दर वड़ पौड़े चढ़ मार्ग देवे दस्स, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। धीरज जत सति सन्तोख गृह मन्दिर मिले हठ तप, तपीशर बैठण सीस झुकाईआ। बिन रसना जिह्वा एकँकार हरिजन नाम लए रट, मन का मणका आप भवाईआ। दूई द्वैती मिटे फट, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सो सज्जण गुरमुख अट्ठे पहर मिले रहिण पुरख समरथ, दिवस रैण घड़ी पल होए ना कदे जुदाईआ। एकँकार हर घट अन्दर निज स्वामी रिहा वस, सच सिँघासण सोभा पाईआ। धन्न भाग जन भगतां जो परम पुरख दा लैण रस, नाम सिमरन इक्को एकँकार ध्याईआ। एकँकार कहे मैं बड़ा चंगा, चंगी तरह समझाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा घर घर अन्दर डट्ठया मंजा, नज़र किसे ना आईआ। उपर बैठा सूरा सरबँगा, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। जिस दा नाद अगम्मा, सुर ताल समझ किसे ना आईआ। गुरमुख कर प्यार सच धर्मसाल अन्दर लँघा, वेंहदयां वेंहदयां खुशी मनाईआ। सतिगुर दया कर के शब्दी हथ्थ उठाया डण्डा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता कूड़ी क्रिया सारी पिच्छे हटाईआ। सति सरूप शाहो भूप दो जहानां वाली इक वखाए धुर दा खण्डा, खड़ग इक्को इक चमकाईआ। करे प्रकाश जगत अन्धेरे अन्धा, निज नेत्र नैण लोचण इक रुशनाईआ। घर घर दर दर जन भगतां पावां ठंडा, अमृत मेघ निझर झिरना नाभी कँवल चुआईआ। गुरसिख भावें चंगा भावें मंदा, जो मेरा नाम सिमरे फड़ बांहों गले लगाईआ। पार कर के कोटन कोटि ब्रह्मण्डां खण्डां, सचखण्ड दवारे चरण कँवल दयां सरनाईआ। ओथे

ना कोई सूरज ना चन्दा, मण्डल मण्डप गोपी काहन मिल सखीआं रास ना कोए रचाईआ। एकँकार परवरदिगार सदा बख्शंदा, बख्शिश रहमत जन भगतां झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम गुणी गहिंदा, गहर गम्भीर बेनज़ीर ला तस्वीर हरिजन इक्को रंग वखाईआ। एकँकार कहे मेरा गुरमुख सच्चा, जो मेरा नाम ध्याईआ। लख चुरासी नालों प्यारा बच्चा, वांग बच्चयां गोद उठाईआ। लूं लूं अन्दर साढे तिन्न करोड़ रचा, बहत्तर नाड़ खुशी वखाईआ। भाग लगा साढे तिन्न हथ्था, काया माटी सोभा पाईआ। लेखा जाणे तत अट्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो आपणा खेल वखाईआ। आवण जावण लख चुरासी मिटे रट्टा, मात गर्भ दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जिस उपर मेहर नज़र कर के एकँकार आपणा हथ्थ रखा, रक्षया करे थाईं थाईंआ। अन्दरे अन्दर खोल्ह के आपणी अक्खा, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन्हां एकँकार इक्को नाम जपा, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। वाक शब्द नाम रहमत, गुर शब्द स्वामी दया कमाइंदा। अन्दरे अन्दर सुरत सवाणी नाल होवे सहिमत, सगला संग निभाइंदा। जगत विकार कूड़ हँकार मेटे ज़हिमत, चिन्ता रोग सोग चुकाइंदा। अन्दर वड़ के मारे आपणी इक्को सैनत, इशारा देंदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शश विच्चों बख्शीश बख्शीश जगदीश जन भगतां झोली पाइंदा।

७६४
१६

✻ २४ फग्गण २०२० बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश ✻

जन भगत कहे प्रभ तेरी उडीक, आदि जुगादि ध्यान लगाईआ। बेपरवाह लाशरीक, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। शब्द अगम्मी दे भीख, भिच्छया इक वरताईआ। आत्म परमात्म बदले रीत, घर घर विच खेल वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण लेखा पन्ध मुकाईआ। सच निशाना दस्स ठीक, तीर निराला इक चलाईआ। धुरदरगाही सज्जण मीत, मित्र प्यारे मंग मंगाईआ। हउँ बाल अंजाणा नीचों नीच, ऊँच अगम्म अथाह इक तेरी ओट तकाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घर घर रिहा समाईआ। तेरा नाउँ बीठलो बीठ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान धुर दा ठाकर, शाह पातशाह दया कमाईआ। जन भगत निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। भाग लगाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ रंग वखाईआ। दर घर साचे देवे आदर, चरण कँवल बख्शे इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। जन भगत

कहिण प्रभ आ जा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मन्दिर वसीए इक्को खेड़े, घर घर विच डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया चुक्कण झेड़े, माया ममता मोह मिटाईआ। लेखा चुके सञ्झ सवेरे, दिवस रैण इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। श्री भगवान कहे सुण धुर दे भगत, सच देवां वड्याईआ। सिर रखां हथ्थ विच जगत, जागरत जोत इक रुशनाईआ। लेखे लावां बूँद रक्त, रत्ती रत्त वेख वखाईआ। अन्तर देवां ब्रह्म मति, बाहर करां ना कोए पढ़ाईआ। सति सन्तोख धीरज जत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, पड़दा उहला दयां उठाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के वक्ख, सोहणा मार्ग इक दृढ़ाईआ। लेखा चुका चौदां हट्ट, लोक परलोक पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्रीती देवां सच्च, कूड़ी क्रिया मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होवे आप सहाईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी लोड़, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़, लेखा मुक्के जगत लोकाईआ। घर स्वामी आ के बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी दयां दुहाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ घोड़, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। निरगुण तेरे हथ्थ डोर, सरगुण सच सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मीत, सच सच दयां दृढ़ाईआ। आदि जुगादि गावां तेरा गीत, लेखा लिख लिख कलम शाहीआ। साचा कलमा दयां हदीस, नाम निधान इक समझाईआ। घर घर विच करां रीझ, मेहर नज़र नैण तकाईआ। जुग चौकड़ी मेटणहारा लीक, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। दूर दुराडा आए नज़दीक, बेपरवाह फेरा पाईआ। चरण कँवल दए प्रीत, नाता इक्को इक जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहे प्रभ बण मलाह, खेवट खेटा रूप बणाईआ। दर मंगां इक पनाह, चरण कँवल सरनाईआ। साची दे शब्द सलाह, नाम निधान कर पढ़ाईआ। महल अटल इक सुहा, गृह होए सति रुशनाईआ। जन्म जन्म दा लेख मुका, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। दर तेरे सीस दित्ता झुका, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। तेरा नूरी जलवा इक खुदा, ततव तत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल बख्श सरनाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरे सुत, मेहर नज़र उठाईआ। दो जहानां मौले तेरी रुत्त, फुल फुलवाड़ी पत्त डाली आप महकाईआ। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, सुरत सवाणी आप उठाईआ। प्रगट होए जो बैठा लुक, आप आपणा मुख वखाईआ। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, मरन मरन दा रोग गंवाईआ। उजल करे मात मुख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहे प्रभ आ घर, गृह मन्दिर ध्यान लगाईआ। निरभउ चुका भय डर, भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ।

निरगुण आपणे लगा लड़, पल्लू डोरी तन्द जुड़ाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। दरस दिखा अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, शहिनशाह शाह पातशाह तेरी ओट तकाईआ। विष्नूं सुण लै ला कर कान, हरि करता आप जणाइंदा। ब्रह्मे कर इक ध्यान, पारब्रह्म भेव खुल्लाइंदा। शंकर उठणा नौजवान, बलधारी आप समझाइंदा। तेई अवतार सुणो फ़रमाण, धुर संदेसा इक जणाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद करो परवान, सच परवाना इक घलाइंदा। भगतां दए भगवन ज्ञान, भेव अभेव इक दृढ़ाइंदा। नानक निरगुण आउणा चल मकान, बेमुकाम आप समझाइंदा। गोबिन्द अवस्था दस्सणी बाल अंजाण, बाली बुध खेल खलाइंदा। साचा मन्दिर सोहे मकान, महल अटल इक वडियाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा खेले खेल श्री भगवान, मेहर नज़र आप उठाइंदा। नव नौ चार दा सति पकवान, भोजन ब्रह्म आप वखाइंदा। जिस दा दो जहान ना मिले निशान, लोकमात ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए झुक, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। सच दवारे करीए रुख, आपणा आप बदलाईआ।
७६६ जेहड़ा तैनूं लग्गे तेरा पुत, पिता पूत गोद उठाईआ। उस दवारे आ के मेटीए भुक्ख, तृष्ना तृखा बुझाईआ। दर्शन कर ७६६
के होईए खुश, खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी वड्याईआ।
१६ गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण धार, घर साचे दर्शन पावोगे। पुरख अगम्म करे प्यार, सति सतिवादी रंग रंगावोगे। दर्शन कर इक दीदार, दीद ईद चन्द चमकावोगे। सोहणे भरे वेख भण्डार, नेत्र नैणां तृसन मिटावोगे। बिन खाध्यां होए आधार, बिन पीत्तयां खुशी मनावोगे। सोहणा मिले मीत मुरार, मित्र प्यारा इक बणावोगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देवे इक वर, नाता इक्को घर जुड़ावोगे। सच दस प्रभ घर उह केहड़ा ए। किस बिध लईए लभ्भ, दूर दुराडा कर नेरन नेरा ए। चल के आईए झब्ब, वेखीए सच्चा डेरा ए। दो जहानां मुक्के हद्द, चुक्के जगत अन्धेरा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, तेरा हुक्म हक़ साहिब बथेरा ए। श्री भगवान कहे जिस वेले चल के आओगे। खुशीआं नाल पन्ध मुकाओगे। तेरा मेरा राग अलाओगे। दूर दुराडा नेड़ा पन्ध मुकाओगे। साचा खेड़ा इक सुहाओगे। पटने शहर डेरा लाओगे। गोबिन्द माता वेख खुशी मनाओगे। राज नरायण नहीं हुण राजा, राजिउँ उपर दर्शन पाओगे। जिस दा कारज करे ग़रीब निवाज़ा, गहर गम्भीर वेख वखाओगे। एथे ओथे रखे लाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पाओगे। श्री भगवान जिस वेले चल के आवांगे। तेरा

मेरा राग अलावांगे। नेत्र नैणां नैण शरमावांगे। राह विच ना किसे तकावांगे। गुरमुख दवारे सिधे, आपणा सीस निवावांगे। जिस घर प्रभू तेरे पकवान रिधे, बहि खुशीआं नाल खावांगे। प्रेम प्रीती विच भिजे, रस इक्को वेख वखावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, घर बहि के खुशी मनावांगे। श्री भगवान कहे सारे करो त्यारी, तरह तरह समझाइंदा। अज्ज दी नहीं एह पिछली यारी, याराने यारां नाल निभाइंदा। यारी नहीं एह गोबिन्द माँ प्यारी, बिन कुख्खों भाग लगाइंदा। एह खेल अगम्म अपारी, जिस दा अन्त किसे ना आइंदा। आपणी आपणी करयो अस्वारी, शब्द घोड़ा सब दे पास घलाइंदा। मारनी इक्को इक उडारी, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। महल अटल सोहे अटारी, जिस घर भगत भगवान सोभा पाइंदा। वार थित अपर अपारी, परविश्टा इक्को इक जणाइंदा। इक्की चेत मिले मेल इक्को वारी, जुग चौकड़ी विछड़े कट्ठे आप कराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा देवे वारो वारी, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। सो पुरख निरँजण तेरा दरबार, सति सतिवादी इक्को नज़री आईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा घर बार, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। एकँकार तेरा आकार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरा खेल अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह वड्डु वड्डे बेपरवाहीआ। श्री भगवान तेरा मुकामे हक़ खेल न्यार, जलवा इक्को इक जणाईआ। पारब्रह्म तेरा आदि जुगादि लेखा जुग चौकड़ी चार, भेव अभेव ना कोए समझाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा सिँघासण नज़र ना आवे विच संसार, सोभावन्त ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे जणाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा मनारा, ऊँच अटल इक अख्वाइंदा। दीआ बाती ना कोए उज्यारा, जोती नूर इक रखाइंदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, संगी संग ना कोए बणाइंदा। ना कोई गुरू पीर अवतारा, पैगम्बर अक्ख ना कोए खुलाइंदा। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे उच्चारा, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान ना कोए दृढ़ाइंदा। ना कोई नाम शब्द धुन जैकारा, रागी राग ना कोए सुणाइंदा। ना कोई ज़िमीं असमान सूरज चन्द सतारा, मण्डल मण्डप सोभा कोए ना पाइंदा। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जल थल महीअल रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई विष्न ब्रह्मा शिव बणे सेवादारा, चाकर रूप ना कोए जणाइंदा। ना कोई त्रैगुण माया दिसे भण्डारा, पंज तत वस्त ना कोए वरताइंदा। ना कोई खेले खेल खेलणहारा, चारे खाणी रंग रंगाइंदा। ना कोई चारे बाणी बणे वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे इक वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा । पुरख अबिनाशी अगम्म अथाह, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। मुकामे हक़ कर रुशना, ज़हूर इक्को इक जणाईआ। सति सतिवादी बण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाईआ। घर विच घर लएं

वसा, सचखण्ड देवें माण वड्याईआ। थिर घर आपणा लएं बणा, घाड़त आपणे हथ्थ वखाईआ। जिस दा लेखा कोई ना सके समझा, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, पड़दा उहला आप उठाईआ। पर्दा उहला लाह प्रभ इक, तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी डिगण झुक, सीस सके ना कोए उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरी वेखी हद्द, लोकमात फेरा पाईआ। वरन बरन तेरा नाम वजा के आए नद्द, अनहद रागी राग सुणाईआ। मक्का काअबा हज़रत पीर पैगम्बर करा के आए हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। निरगुण सरगुण तेरा वजा के आए नद, आत्म परमात्म ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे इक वड्याईआ। सुण संदेस सचखण्ड, पुरख अबिनाशी लए अंगड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो इक अनन्द, अनन्द आपणा आप जणाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणे हथ्थ वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात गया हंढु, वेला अन्तिम नेड़े आईआ। सिफ्त सलाही रसना जिह्वा बत्ती दन्द जो गाउँदे आए छन्द, जीव जंत जगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्हो अक्ख, हरि लोचण आप जणाईआ। कलयुग अन्त करे खेल पुरख समरथ, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा मार्ग रहे दस्स, खाणी बाणी करे पढ़ाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब तों वसे वक्ख, हर घट आपणा डेरा लाईआ। जिस दी महिमां सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जो लख चुरासी पावे नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इशारयां नाल रिहा दस्स, हुक्मे नाल फिराईआ। उस दा खेड़ा कदी ना होवे भट्ठ, आपणा मार्ग आपे लए बदलाईआ। वेखणहारा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, गुरूदवारे खोज खुजाईआ। पड़दा लाहे तीर्थ तट, अठ सठ मुख ना कोए लुकाईआ। कलयुग जीव माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया रहे रट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। खेलण खेल बाज़ीगर नट, बण स्वांगी स्वांग रचाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी साधां सन्तां तुटा जत, धीरज नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म नालों होई वक्ख, त्रैगुण माया जगत जंजाल ना कोए तुड़ाईआ। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के शब्द अगम्मी लाए कोई ना सट्ट, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। दूई द्वैती मेटे कोई ना फट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। चार वरन अठारां बरन पत्त सके ना कोई रख, राउ रंक ऊँच नीच लेखा ना कोए चुकाईआ। किसे ना मिल्या हकीकत हक़, लाशरीक नज़र ना आए नूर खुदाईआ। कलमा अल्फ़ ये रसना जिह्वा पढ़ पढ़ गए थक्क, काया काअबा हुजरा सच ना कोए वखाईआ। मुरीद मुर्शद घर मिले ना आ के झट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

७६८ १६ कर, लेखा जाणे साचे दर, धुरदरगाही आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण लग, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर सूरे सरबग्ग, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। कलयुग वेख अग्नी अग्ग, जीव जंत रही तपाईआ। साचा मिले ना किसे साथ, संगी साथी चोर यार नज़री आईआ। तेरा नाम बिन अक्खरां कोई ना रिहा रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा फोलो पिछला वरका, वाक्या तुहाढे नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत जो पाउँदा रिहा पर्चा, लिख लिख पट्टी कलम शाहीआ। श्री भगवान हो मेहरवान कलयुग अन्तिम पूरा करे सब दा हर्जा, हर्जाना देवे थाउँ थाईंआ। जन भगतां झोली पाए कर्जा, मकरूज आपणा लेख मुकाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा फ़रदा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पर्दा उहला दए उठाईआ। करे खेल इक असचरजा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जोड़ हथ्थ, गल पल्लू रहे पाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा नाउँ दे दे आए थक्क, सदा घर घर आप सुणाईआ। बिन आत्म परमात्म किसे ना मुक्के पन्ध, लख चुरासी गेड़ ना कोए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा बत्ती दन्द लाओ ना गंद, हउमें रोग गंवाईआ। परम पुरख दा इक्को गाओ छन्द, जो आदि जुगादि होए सहाईआ। घर विच घर माणो अनन्द, निजानंद रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान प्या हस्स, दरगाह साची खुशी मनाईआ। पीर पैगम्बरो की कुछ रहे दस्स, हकीकत आपणी आप जणाईआ। चौदां तबक वेखो नट्ठ नट्ठ, बण के पांधी राहीआ। कवण मिले वांग ऐनलहक, हक़ आपणा तुहाढे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण की दस्सीए मुर्शद, पाक रसूल की तेरी वड्याईआ। तैनूं मिलण दी कलयुग किसे कोल नहीं फ़ुरसत, तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। असीं चौदां लोकां विच्चों पा के आए रुख़सत, आपणा पल्लू छुडाईआ। साचा दिसे ना कोई मकतब, अल्फ़ ये करे मात पढ़ाईआ। तेरा तूं ही जाणें करतब, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र वहाइण नीर, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। परवरदिगार तेरी तदबीर, समझ विच किसे ना आईआ। तेरा लेखा शाह हकीर, शहिनशाह वड्डी तेरी वड्याईआ। तूं खिचदा जाएं लकीर, बिन अक्खरां अक्खर बणाईआ। तेरे बरदे पीर फ़कीर, ग़ुलाम रूप अख्वाईआ। तेरा जलवा बेनज़ीर, नज़र ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख आपणी आप लोकाईआ। गुर अवतार कट्ठे हो के देवण होका, नाअरा

इक लगाईआ। प्रभ फिरी दुहाई चौदां लोकां, चौदां विद्या मात ना कोए चतुराईआ । तेरा पढ़े ना कोई श्लोका, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। घर घर रखी फिरदे पोथा, काया पुस्तक वेखण कोए ना पाईआ । लख चुरासी विच्चों माणस जन्म इक्को मौका, वेला गया फेर सर्ब पछताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सचखण्ड निवासी मेहर नज़र उठाउँदा ए। सो पुरख निरँजण सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। हरि पुरख निरँजण धुर दी अक्ख इक खुल्हाउँदा ए। आदि निरँजण साचा दीप जोत रुशनाउँदा ए। अबिनाशी करता सचखण्ड किला कोट वसाउँदा ए। श्री भगवान शब्द अगम्मी चोट जणाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ लख चुरासी ब्रह्म, पर्दा आप उठाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे कम्म, हरि करता करनी कार कमाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत जो बेड़ा दित्ता बन्ह, ततव तत सोभा पाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर चाढ़े चन्न, निरगुण जोती जोत रुशनाउँदा ए। नाम अमोलक दे के धन, वस्त इक्को इक वखाउँदा ए। राग अनाद सुणा कन्न, अगम्मी ढोला आप जणाउँदा ए। सति सतिवादी बेड़ा बन्ह, फड़ आपणे कंध उठाउँदा ए। कलयुग अन्तिम सब दी पूरी करे मंग, आसा तृष्ना वेख वखाउँदा ए। पावे सार कोट ब्रह्मण्ड, गगन मण्डल पृथ्मी आकाश खोज खुजाउँदा ए। लहिणा चुका सूरज चन्द, रवि ससि भेव मिटाउँदा ए। तोड़नहारा बंदी बंद, बंदीखाना ना कोए रखाउँदा ए। भगत सुहेले लाए अंग, अंगीकार आप कराउँदा ए। घर आत्म परमात्म देवे अनन्द, सुख सागर रूप वटाउँदा ए। कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा खड़ग चमकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आप समझाउँदा ए। गुर अवतारां प्रभू जणाउँदा ए। सच संदेस इक सुणाउँदा ए। नर नरेश रूप वटाउँदा ए। जिस दा भेव किसे ना आउँदा ए। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि कहि सर्ब शुकर मनाउँदा ए। आदि जुगादि महिमां अगणत, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी कार कमाउँदा ए। जिस नूं जुग चौकड़ी सजदा करदे रहे साध सन्त, पीर पैगम्बर सीस नवाउँदा ए। सो कलयुग अन्त सच बणाए बणत, सोहणी घाड़त आप घड़ाउँदा ए। वेखणहारा लख चुरासी जंत, जागरत जोत इक रुशनाउँदा ए। गढ़ तोड़नहारा हउमें हंगत, हँ ब्रह्म आप दृढ़ाउँदा ए। बोध अगाधा बण के पंडत, साची विद्या इक समझाउँदा ए। तुहाढ्डी मन्न के दर ते मिन्नत, मेहर नज़र इक उठाउँदा ए। तुसां इक्को करनी हिम्मत, तुहाढ्डा हौसला आप रखाउँदा ए। लेखा चुके स्वर्ग जंनत, बहिश्त चरणां हेठ दबाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस अगम्म सुणाउँदा ए। सुण संदेस होए खुशी, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। प्रभ सूचना दिती सुची, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। लोकमात पुरख अकाल करे रुची, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। साडा पूरा

७७० १६

करे वाक भविक्ख्त जो बोलया मुखी, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान हौली जिही दित्ता सुणा, सचखण्ड अन्दर अवाज़ लगाईआ। थिर घर वेखो शब्दी सुत मंगे पनाह, बैठा डेरा लाईआ। जिस ने तुहाड्डा रूप दित्ता वटा, पंज तत चोला जगत वड्याईआ। जो तुहाड्डे अन्दर वड़ के मेरा ढोला आया गा, सोहणा राग अलाईआ। जो दस्स के आया नूरी खुदा, जल्वागर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा ध्यान आप लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मारन झाकी, थिर घर दवारे ध्यान लगाईआ। शब्द सुत अग्गों हौली जिही खोली ताकी, निरगुण निरगुण रूप नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो तुसीं जुग चौकड़ी मेरे साथी, लोकमात सेव कमाईआ। दस्सो की कुछ रह गई बाकी, मैं बाकी नवीस हो के लहिणा दयां मुकाईआ। सारे कहिण एह खेल पुरख समराथी, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जुग चौकड़ी स्नेहा दे के आए धुर दी पाती, बण हल्कारे सेव कमाईआ। लेखा लिख्या कलम दवाती, कातब आपणा रूप वटाईआ। नाम भण्डारा खोल के हाटी, काग़ज़ां अक्खरां दिती वड्याईआ। सब नूं दस्स के आए इक्को पुरख अकाल अबिनाशी, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। सब दी पूरी करे आसी, तृष्ना मेटे थाउँ थाईंआ। उस दे नाल करे क्या कोई बदमाशी, जो घर घर बैठा सोभा पाईआ। कलयुग अन्त सृष्ट सबाई कोई ना मन्ने आखी, साडा भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्द कहे क्यों रहे डोल, प्रभ देवणहार वड्याईआ। वेद व्यासा तेरे नाल कर के आया कौल, लेखा चार लख सतारां हजार श्लोक लिखाईआ। मूसा तैनूं सुट्ट के उपर धौल, होश हवास दित्ता गंवाईआ। ईसा तेरे नाल मिल के गया मौल, धुर संदेस इक जणाईआ। मुहम्मद कर के आप अडोल, पैगम्बर इक्को करी पढ़ाईआ। सदी चौधवीं नूर नुराना वजावां ढोल, लोक परलोक करां शनवाईआ। नानक निरगुण शब्द अगम्मी आया बोल, सृष्ट सबाई अक्ख खुलाईआ। निहकलंक प्रगट होवे उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। गोबिन्द तोल के आया साचे तोल, कंडा इक्को नाम हथ्थ उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाल सच दवारा देवे खोल, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख चेले भगत भगवान दए वरोल, नाम मधाणा नाल लिआईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ कढ्ढे पोल, पर्दा उहला सर्ब मिटाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अबिनाशी आपणा पूरा करे कौल, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी डिगे झट्ट, धुर दे शब्द तेरी वड्याईआ। करवट आपणी बदल खोल वखा हट्ट, पर्दा रहिण कोए ना पाईआ। करे खेल की पुरख

समरथ, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी शब्द इशारे नाल रिहा दस्स, इक्को वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। इशारा दित्ता इक्को वार, बिन अक्खां नेत्रां आप समझाईआ। सारे उठ के करो ख्याल, दलील पिछली लओ बदलाईआ। मैं तुहाढ्ढा बणां दलाल, बण विचोला सेव कमाईआ। जिस नूं कैहन्दे एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। जिस नूं कैहन्दे परवरदिगार, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जिस नूं सजदा करे जुग चार, विष्न ब्रह्मा शिव भीख मंग मंगाईआ। जिस दी सिफ्त करे संसार, कागज़ कलम शाही दए गवाहीआ। जिस ने तुहाढ्ढे नाल कीता उधार, वाक भविक्ख्त आया समझाईआ। जो सब दा सांझा यार, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। जिस दा कलमा इक जैकार, जिस दा नाम इक रुशनाईआ। जिस दा महल अटल मनार, जिस दा हुजरा सोभा पाईआ। जिस दा नूर सदा उज्यार, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। जिस दी सदा रहे गुलज़ार, गुलशन आपणा रिहा महकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात वेखो बहार, खिज़ां विच्चों रुत्त बसन्त वटाईआ। जुग चौकड़ी पिछले मेले आण, लहिणा देवे थाउँ थाईंआ। श्री भगवान नहीं अंजाण, सिख्या सके ना कोए समझाईआ। जिस नूं वेख अञ्जील कुरान होवे हैरान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अक्ख ना कोए उठाईआ। जिस दा संदेसा इक फ़रमाण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो जन भगतां देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जो लख चुरासी सच्चा काहन, बंसुरी इक्को नाम सुणाईआ। जो धुरदरगाही राम, रमया हर घट थाईंआ। जिस दा कलमा इक कलाम, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला नूर इलाहीआ। जिस नूं सजदा करे दो जहान, सीस सके ना कोए उठाईआ। जा के वेखो जन भगतां दए पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण दस्स केहड़ी तारीख़, सचखण्ड की हिसाब लगाईआ। घर घर मंगी इक्को भीख, अग्गे झोली रहे वखाईआ। शब्द कहे वेखो गाउँदा धुर दे गीत, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआले मट्ठ ना कोए वड्याईआ। अचरज प्रभू चलाई रीत, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। जो गुरमुख भगत करदे उहदी उडीक, उन्नां मिले चाईं चाईंआ। सदा सदा नित नवित्त रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। परम पुरख परमात्म बण के मीत, मित्र प्यारा आप हो जाईआ। लेखा जाणे ऊँच नीच, राओ रंकां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी रखी ओट, निउँ निउँ लागे पाईंआ। सो पुरख अकाल निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। ना कोई किला ना कोई कोट, महल अटल ना सोभा पाईआ। लेखा

जाणे लोक परलोक, दो जहानां खोज खुजाईआ। जिस दी किसे ना आवे सोच, सोच समझ विच सके ना कोए समझाईआ। चलो उस दी वेखीए जा के मौज, जो मौजूदा हो के दरस दिखाईआ। जिस दी किसे हथ्थ ना आई खोज, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ। उहदे खेल अगम्मे चोज, चोजी प्रीतम इक अख्वाईआ। उहदा जा के सुणीए श्लोक, की ढोला रिहा गाईआ। की भगतां देवे मोख, कि मुक्ती पैरां हेठ दबाईआ। कि बैठा चुप ख़ामोश, पड़दा उहला आप आपणे उते पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा मेला लए मिलाईआ। चलो चलीए बण के संग, सचखण्ड दवारे सारे मता पकाईआ। जा के वेखीए सूरा सरबँग, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जिस दा गोबिन्द इक्को चन्द, गुजरी सुत दिती वड्याईआ। उस नूं वेख के पए ठंड, कलयुग अग्न ना लागे राईआ। जिस भगतां नाल पाई गंढु, नाता गुरमुखां नाल जुड़ाईआ। जो छड्ड के पुरी अनन्द, सिँघ सिँघासण सोभा पाईआ। जो कट के दूर दुराडा दो जहानां पन्ध, मंज़ल मंज़ल नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे सर्ब वड्याईआ। चलो उठ के बणीए पांधी राही, आपणा पन्ध मुकाईआ। पिछला लेखा शहादत देवे गवाही, कूड़ा रूप ना कोए वटाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर पुच्छीए सच्चा माही, पत्तण केहड़े डेरा लाईआ। जन भगतां साचे सन्तां जुग विछड़े मेला रिहा मिलाई, मिलणी आपणे नाल कराईआ। जुग जन्म दी कूड़ी मेट के छाही, दुरमति मैल धवाईआ। हरिसंगत नाता जोड़ के भैण भाई, नेत्र अक्ख सब दी दिती बदलाईआ। सच प्रीत जिस ने लाई, दो जहान सके ना कोए तुड़ाईआ। गुरमुख उठावे आपणी बांहीं, सच गोदी आप सुहाईआ। सचखण्ड दवारे लै के जाए चाईं चाईं, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जिस दे नाम दी देंदे आए दुहाई, तोबा तोबा कहि के आए सुणाईआ। सो साहिब वेखणहारा जल थल अस्गाहीं, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर वेख वखाईआ। लख चुरासी आवण जावण राए धर्म दी कटे फाही, मात गर्भ दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आवण भज्जे, निरगुण धार नज़र किसे ना आईआ। नानक सतिगुर सब तों अग्गे, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सारे फिरन खब्बे सज्जे, पिच्छे आवण वाहो दाहीआ। चलो रल मिल करीए सच्चा हज्जे, हाजत होर रहे ना राईआ। जिस दा नग़मा नाम निधान दो जहान वज्जे, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रिहा सुणाईआ। उस दे हुक्मे अन्दर बद्धे, आपणा पन्ध मुकाईआ। जा के वेखीए कवण सिँघासण पुरख अबिनाशी नर नरायण सजे, परवरदिगार डेरा लाईआ। सच प्याले अमृत देवे मधे, रस इक्को इक वखाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जन भगतां पड़दे कज्जे, शब्द दोशाला उपर पाईआ। सच दवारे कर के कट्ठे, इकट्ठ आपणे

नाल वखाईआ। जन्म जन्म दे मेट के रट्टे, कर्म कर्म दा झेड़ा दए गंवाईआ। भाग लगा के काया पंज तत बुत्ते, त्रैगुण लहिणा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण उलमलायक उल अमाम फ़लीसा, फ़ज़ल रहमत इक कमाईआ। गुर अवतार कहिण उह सर्ब सदा नज़दीका, दूर दुरडा पन्ध मुकाईआ। जिस घर ओस होण उडीकां, ओथे आवे चाईं चाईंआ। मुश्किल लौणीआं सच प्रीतां, प्रीतम बिन प्रीती हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। मुहम्मद कहे बैतुल धाम मंज़ल मिलाइसी, महिबूब बेपरवाहीआ। गुर अवतार कहिण नहीं उहदा नाम इटारसी, हिंदी फ़ारसी समझ किसे ना आईआ। जिस दी जुग चौकड़ी कर दे रहे आरती, घृत दीव्याँ विच टिकाईआ। जिस दा लेखा लिखदे रहे नाल इबारती, कलम शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। जिस दे हट्ट चलाउँदे रहे बण के आड़ती, लोकमात फेरा पाईआ। उह जन भगतां बणया सफ़ारशी, बरीख़ाना इक खुल्हाईआ। अगला लेखा अग्गे दस्से, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण दया कमाईआ।

* २६ फग्गण २०२० बिक्रमी इटारसी औरंगाबाद संगत दे नवित्त मध्या प्रदेश *

दूर दुराडे गए आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। दर्शन करीए बेपरवाह, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखा जाणीए दो जहान, दो जहानां वाली की की रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सच दरवाज़ा आए लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। सच सिँघासण वेख पलँघ, सच वज्जी इक वधाईआ। जिस उपर सूरा सरबँग, साहिब सुल्तान आसण लाईआ। देवणहारा धुर अनन्द, रस आपणा नाम प्याईआ। कर प्रकाश नूरी चन्द, साची जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां पावे ठंड, गुरमुखां होवे सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच सिँघासण रहे तक्क, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। इक दूजे नूं रहे दस्स, इशरयां नाल रहे समझाईआ । वेखो साहिब पुरख समरथ, शहिनशाह एका डेरा लाईआ। दर दरवेश नाअरा बोलो अलख, अलख जैकार इक सुणाईआ। सब दी झोली पाए हक़, हाज़र हो के लेख मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिच्छे मारया ध्यान, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जन भगत करन प्रणाम, बैठे सीस निवाईआ। सारे वेख होए हैरान, हरि जू अचरज खेल रचाईआ। उच्ची कूक कूक मंगण दान, होका दे दे रहे सुणाईआ। आदि जुगादी इक भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दे जणाईआ। भगत कहिण भगवान बोल, आपणा

राग सुणाईआ। की एह सिँघासण उह अडोल, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। जिस उपर बैठा आदि जुगादि सदा अनभोल, अभुल रूप वटाईआ। जोती जाता हो के रिहों मौल, बिस्मिल रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच सच दे समझाईआ। सच दस्स प्रभ एह केहड़ी सेज, सुहञ्जणी नज़री आईआ। जिस उपर बहि के गुर अवतार देवें भेज, पीर पैगम्बर हुक्म वरताईआ। जिस उपर बहि के दो जहानां लवें पेख, बिन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस उपर बहि के लख चुरासी अन्दर जोती जलवा देवें तेज, नूरी नूर नूर चमकाईआ। जिस उपर बहि के निरगुण सरगुण खेलें खेड, बण खिलाड़ी बेपरवाहीआ। जिस उपर बहि के लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखें देस, गगन गगनंतर फेरा पाईआ। जिस उपर बहि के घाड़त घड़ें विष्न ब्रह्मा शिव महेष, करोड़ तेतीसा सुरप्त संग रखाईआ। जिस उपर बहि के आदि जुगादि जुग चौकड़ी लिखावें लेख, धुर संदेसा इक जणाईआ। जिस उपर बहि के जन भगतां खोलें भेत, पड़दा उहला आप उठाईआ। जिस उपर बहि के सूफ़ीआं सूली सवाएं सेज, पुठड़ी खल लुहाईआ। जिस उपर बहि के सीस तत्ती पवावें रेत, अग्नी अग्ग तपाईआ। जिस उपर बहि के बाले रखें नीहां हेठ, धुर दा हुक्म मनाईआ। जिस उपर बहि के सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी माणें आपे सेज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच साची मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण की सिँघासण सच्च, सच मिले वड्याईआ। आदि जुगादी धुरों दस्स, बोल अगम्म समझाईआ। साडी सब दी होई बस, समझ चले कोए ना राईआ। जुग चौकड़ी तेरे हुक्मे अन्दर चलदा रिहा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। अन्तिम सारे चरणी गए ढठ्ठ, निउँ निउँ वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणा लेखा दे जणाईआ। भगत कहिण प्रभ तेरे आए पास, अग्गा पिच्छा दित्ता तजाईआ। चरण कँवल दोए अरदास, निउँ निउँ मस्तक टिक्का धूढ़ी शाहीआ। रसना जिह्वा पवण स्वास, सुरती शब्द शब्द चित लाईआ। बाल नादाने बण अनाथ, दीनन मंग मंगाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, साहिब तेरी वड्याईआ। तेरे चरणां विच अरदास, आरजू इक्को इक सुणाईआ। की उह सिँघासण जेहड़ा घर रविदास, रवी आपणा आप बणाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल दस्स वात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सच सच दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे भगत जन, सच सच दृढ़ाईआ। सुणो अगम्मी ला कर कन्न, दोए कन्नां माण मिटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द मिल मिल कहो धन्न धन्न, धन्न प्रभू तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जो बेड़ा देवे बन्न्ह, फड़ आपणे कंध उठाईआ। करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, महल अटल इक्को इक सुहाईआ। जन भगतां अमोलक देवणहारा धन, साची वस्तू आप वरताईआ। जिस वेले परम

पुरख परमात्म जन भगतां उते जाए मन्न, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। प्रभ सिँघासण सद इक्को पलँघ, घर घर दए सुहाईआ। जिउँ रविदास काची खलड़ी रंगे रंग, ढोरां सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम आई वंड, साहिब बख़्शंद दया कमाईआ। मेला मेल गोबिन्द चन्द, नूरी जोत कर रुशनाईआ। भगत दवारे सोहणी ठंड, अमृत धार इक वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच्च सति जणाईआ। सच सिँघासण सोहे श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ नज़री आइंदा। निमस्कार करन दो जहान, ज़िमीं असमान सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी मंगण दान, ब्रह्मण्ड खण्ड झोली डाहइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाण, गुर अवतार पीर पैगम्बर सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। सच सिँघासण श्री भगवन्त, हरि करता सोभा पाइंदा। सचखण्ड निवासी आदि अन्त, निरगुण निरवैर कार कमाइंदा। जन भगत बणाए साची बणत, घाड़त अगम्म अथाह घड़ाइंदा। प्रगट कर आपणा सन्त, सति सतिवादी मेल मिलाइंदा, नाम निधाना दे मंत, मन्त्र इक्को इक समझाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हरी मन्दिर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण इक सुहाइंदा। सच सिँघासण श्री भगवान, पुरख अकाल सोभा पाईआ। सति सति झुल्ले निशान, सच सच रूप लहराईआ। संदेसा देवे हुक्मरान, धुर दी धार आप जणाईआ। लख चुरासी इक फ़रमाण, पारब्रह्म प्रभ आप दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म करो ध्यान, सच्चा मार्ग इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सच सिँघासण पारब्रह्म, हरि करता सोभा पाईआ। सदा सुहेला आपे जाणे आपणा कर्म, निहकर्मी आपणी कार कमाईआ। आदि जुगादि जिस दा सति सरूप इक्को धर्म, दीन मज़्हब समझ कोए ना पाईआ। निरगुण निरवैर जिस दा वरन, अवरन ना रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी शरन, सरनगति इक रखाईआ। मंज़ल मंज़ल जिस दे पौड़े चढ़न, बेअन्त नूर खुदाईआ। सिफ्त सालाही रसना जिह्वा जिस दे ढोले पढ़न, रागां नादां नाल गाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जिस दे पिच्छे मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। सच सिँघासण आदि निरँजण, नर नरायण सोभा पाइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर वेख वखाइंदा। निज नेत्र नाम निधान पावणहारा अंजन, गुर नेत्र आप खुलाइंदा। आत्म परमात्म सति सरोवर करावणहारा मजन, दुरमति मैल आप धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा लेखा आप दृढ़ाइंदा। सच सिँघासण पुरख अगम्म, हरि अगम्मड़ा सोभा पाईआ। जिस दा रूप रंग रेख ना कोई चिन्न्, जोती जाता जोत रुशनाईआ। जिस दा लेख अलेख कोई ना सके गिण, गिणती गणत ना कोए गणाईआ। जिस दा खेल भिन्न

भिन्न, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। जिस दा आदि अन्त कोई ना सके मिण, पैमाना नाप ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सच सिँघासण परवरदिगार, बेपरवाह सोभा पाईआ। साचा जलवा कर उज्यार, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। सच महिबूब बैठ दुआर, दुआ इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाश, घर अबिनाशी सोभा पाइंदा। मेहरवान सर्ब गुणतास, गुणवन्ता खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी कर प्रकाश, नूर ज़हूर इक रुशनाइंदा। सेवक बण के दासी दास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। सच सिँघासण चढ़ निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। खुशीआं नाल वेखण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर दर्शन पाईआ। भगत निउँ निउँ करन निमस्कार, सन्त खुशीआं सीस झुकाईआ। गुरमुख मंगण दर भिखार, गुरसिख झोली रहे भराईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, सच देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा चुकाईआ। लेखा चुक्कदा वेख मात, जगत सिँघासण खुशी मनाइंदा। सच प्रभू प्रभ दे दात, दयावान इक अख्वाइंदा। दो जहानां तेरा राज, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। सीस सुल्तान तेरे ताज, भूप तेरा नाम वडियाइंदा। जगत जहान तेरा काज, लख चुरासी तेरी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। सिँघासण कहे सुण मेरे मीत, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मैं होया ठांडा सीत, अग्नी तत रिहा ना राईआ। मैं अदना ग़रीब निमाणा नीचों नीच, तूं ऊँचो ऊँच अख्वाईआ। दर ठांडे मंगां भीख, भिच्छया इक्को देणी वरताईआ। जुग चौकड़ी रही उडीक, नित ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। सिँघासण कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरी वड वड्याईआ। तुध बिन देवे कोई ना आदर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तूं साहिब इक बहादर, सच तेरी सरनाईआ। तूं करीम दिसें कादर, कुदरत विच समाईआ। मेरा कर्म कर उजागर, उजरत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। सिँघासण कहे मैं बेशक निक्का, दिसे ना माण वड्याईआ। मेरा वस्त्र वेख चिटा, काला दाग़ नज़र कोए ना आईआ। मैं धुर दी सिख्या सिखा, जन भगतां करी पढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरे हेठां विछा, निउँ निउँ के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बख्श इक सरनाईआ। श्री भगवान कहे तेरी सेवा सच्च, साहिब सतिगुर सच्चे भाईआ। एह कहाणी भगतां दस्स, आपणा हाल सुणाईआ। मैं होया ओनां वस, मेरी चले ना कोए वड्याईआ। मेरे खाली दिसण हथ्थ, वस्त संग ना कोए जणाईआ। जिस वेले मेहरवान हो के मेहर दी खोलां अक्ख, आख़र लेखा दयां

चुकाईआ। जुग चौकड़ी तूं बैठा रिहों कर के हठ, सच इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला आए पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मेरा पूरब देवे हक़, पिछला लहिणा झोली पाईआ। मेरे उते बहे सज, मेरी आसा पूर कराईआ। मैं दर्शन करां रज्ज, बिन नैणां नैण तृप्ताईआ। मेरा पड़दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सिँघासण कहे सुण मेरे स्वामी, सच करां जणाईआ। पुरख अकाल अन्तरजामी, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। तैनूं दस्सां की कहाणी, कहिण सुणन विच कदे ना आईआ। मेरी सेजा अजे ना होई पुराणी, पाटा चीथड़ आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख चाईं चाईंआ। सिँघासण कहे मेरा वेख सुहञ्जणा वेला, वक्त तेरा गया आईआ। मैं राह तक्कां इक इकेला, संगी नज़र ना कोए मिलाईआ। कोटां विच्चों तेरा गुरमुख लभ्भे चेला, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। अचरज खेल प्रभू प्रभ पतिपरमेश्वर तूं आपे खेला, खेलणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। पाटे चीथड़ ना वेख लीर, कली कली ध्यान लगाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, शहिनशाह दे वड्याईआ। मैनूं तक्कण आए गुर अवतार पीर फ़कीर, पैगम्बर पन्ध मुकाईआ। जन भगत वेख ना होवण दिलगीर, दिल खुशीआं राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आपणी झोली पाईआ। सिँघासण कहि सुण मेरी फ़रयाद, दर तेरे अरज़ोईआ। रवी वेला रख याद, पूरब रिहा जणाईआ। जिस वेले बख्शिश कीती दाद, रहमत आप कमाईआ। दो जहानां छड्ड के राज, सचखण्ड निवासी डेरा लाईआ। हौली जिही मार आवाज़, मैनूं जांदा गया समझाईआ। कलयुग अन्त तेरा पूरा करां काज, मेहर नज़र उठाईआ। नाले गोबिन्द नाल गुरू महाराज, महाबली वेस वटाईआ। नाले शब्द खण्डा नाल दो जहानां सीस ताज, निरगुण निरवैर रूप वटाईआ। तेरे उते बहि के जन भगतां रखां लाज, सच सन्त दयां वड्याईआ। अन्दर वड़ के खोल्हां राज़, पड़दा उहला आप चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मार आवाज़, सोई सुरत आप उठाईआ। लेखा लिखे कलम दवात, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जगत वड्याई दी नहीं लोड़, सच सिँघासण आख जणाईआ। जे तुठां प्रभ चरण प्रीती जोड़, दूजी आस ना कोए तकाईआ। मेरे उते चरण कँवल धर अडोल, सहिज सुभाउ सोभा पाईआ। प्रेम प्यार दे शब्द अगम्मी बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। मैं भगत सुहेले वेखां तेरे कोल, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जो तेरे अन्तर रहे मौल, बसन्तर बाहरों दे बुझाईआ। मेरा पूरा करें कौल, इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। एथे ओथे रहे अडोल, अडुल तेरी वड्याईआ। धन्न भाग उह धरती सोहे धौल, जिस धरनी उते तेरा आसण

सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सुण सिँघासण उह सोभे धरत, जिस उपर दया कमाईआ। प्रगट कर धुर दे भगत, भगवन आपणा मेल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के तरस, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म दा कढ्ढ के फ़र्क, फ़ैसला इक सुणाईआ। दे वड्याई विच्चों जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सच देवे माण वड्याईआ। धरनी कहे मैं सोई जागी, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। धन्न भगत धन्न गुरमुख जिन्हां प्रभ चरण प्रीत लागी, सेवा सच सति कमाईआ। साहिब सुल्तान हो मेहरवान लेखे लावण आया कोट जन्म दी पिछली बाज़ी, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर वेखे हाज़ी, निमाज़ी सीस झुकाईआ। निमस्कार कर कर कहिण तूं पुरख समराथी, दीन अनाथी होएं सहाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी गाउँदी गई साखी, सो साख्यात नज़री आईआ। ओह्नां चुकावे बाकी जिन्हां खोल्ही अन्दरों ताकी, कमलापाती मेल मिलाईआ। रवीदास बणया साथी, श्री भगवान मन्नी आखी, सच सिँघासण दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरी हरि आपणी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा सच्चा दाअवा, हक़ आपणा रही जणाईआ। जिस वेले साहिब सिँघासण मेरी छाती उते रख्या पावा, खुशीआं हाल सुणाईआ। मेरा सच दवारे लग्गा नावां, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। मैं गीत इक्को गावां, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव रिहा ना राईआ। तेरे चरण कँवल सद बलि बलि जावां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नित नित तेरा दर्शन पावां, जन भगतां संग बहि के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। धरती सुण सिँघासण आखे, सच दयां जणाईआ। एह खेल प्रभू अबिनाशे, तेरी मेरी ना कोए वड्याईआ। उह भगतां लग्गा आखे, दूजा सके ना कोए मनाईआ। जिन्हां अन्दर वड़ वड़ झाके, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। पन्ध मुका के आया वाटे, बण के पांधी राहीआ। जन्म जन्म दे पूरे करे घाटे, लहिणा अगला झोली पाईआ। जिस दी किरपा नाल साडे जुड़े नाते, धुर दा मेल मिलाईआ। भगत दवारे बहि गए सच्चे एहाते, आपणी वंड वंडाईआ। किरपा कर जे लेखा ला लए खाते, ख़तरा साडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। धरती अग्गों नेत्र नीर ल्या वहा, छहबर इक लगाईआ। सिँघासण मेरा रविदास इक गवाह, मैं सच दयां जणाईआ। जिस ने पाटा चीथड़ थल्ले दित्ता विछा, सोहणी सेज बणाईआ। प्रभ चरण दी धूढ़ी मस्तक टिक्का आपणे ला, मैनूं दिती माण वड्याईआ। मैं ओस वेले रो के मारी सी धाह, हाए हाए कर सुणाईआ। मेरा विछोड़ा होवे ना, झल्ली ना जाए जुदाईआ। जस वेले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जावे आ, निरगुण लोकमात वेस वटाईआ। मैनूं कोझी कमली

नूं लए गले लगा, दुरमति मैल देवे धवाईआ। मैनूं खुशीआं नाल चढ़या चा, तेरे घर सोहणे वस्त्र सुत्ता बेपरवाहीआ। श्री भगवान हौली जिही दित्ता समझा, सुण नढी ध्यान लगाईआ। तैनूं एसे करके दयां वडया, तेरे उते बहि के जन भगतां होवां सहाईआ। अग्गों रविदास इक आवाज़ दिती लगा, अन्तर अन्तर जणाईआ। एह दाता बेपरवाह, बेअन्त अन्त अख्वाईआ। भगतां विच जे आप जाए समा, भगत आपणे लए बणाईआ। एहदी किरपा बिनां कोई भगत ना सके अख्वा, लोक परलोक ना मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। श्री भगवान किहा हस्स, हस्ती दोहां विच्चों इक्को नज़री आईआ। रविदास की रिहा दस्स, धरनी की मंग मंगाईआ। दोहां कर इकट्ठ, इक्को कूक सुणाईआ। तेरा दरस पुरख समरथ, साची मंग मंगाईआ। जिस वेले होएं प्रगट, लोकमात फेरा पाईआ। सति धर्म दा खोलें हट्ट, नाम वणजारा वणज कराईआ। जन भगतां देवें धुर दी मत्त, सच नाम समझाईआ। निज नेत्र खोलें अक्ख, आपणा रंग चढ़ाईआ। सच सिँघासण बहें नट्ठ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तेरी मेहर तेरी किरपा तेरे संग जाईए वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्को देणा सच वर, वर दाते तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ।

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी सन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

सिँघासण कहे प्रभ कृपाल, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, वड वड्डे तेरी वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरमुख भाल, गुर चेले रंग चढ़ाईआ। निरगुण निरवैर सुण हाल, बेहाल रहे कुरलाईआ। सच वस्त ना कोई नाल, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। चार कुण्ट थक्के भाल, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। जन्म कर्म दे वेख कंगाल, पूरब लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दे सरनाईआ। सिँघासण कहे साहिब वेख गुरसिख, मेहर नज़र इक उठाईआ। दर दरवेश मंगण भिख, भिच्छया इक्को दे वरताईआ। जे लेखा नहीं ते होर लिख, सब कुछ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी आदि जुगादि तूं देवणहारा नित, नवित्त फेरा पाईआ। ठग्गां चोरां यारां बणे मित, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। हो सहाई प्रभू भगवान, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। किरपा विच्चों मेहर कर दान, मेहर निगाहबान रूप वटाईआ। दर्दीआं विच्चों दर्दी दर्द वंड महान, दुखियां विच्चों दुःख आपणी झोली पाईआ। भुख्यां विच्चों भुक्ख आपणे चरण कर परवान, सुखां विच्चों सुख गुरमुखां दे वरताईआ। बेपरवाह बेअन्त बण निमाणा क्यों बैठों लुक, बेअन्त आपणा नाउँ रखाईआ। ठाकर हो

के जा तुठ, अतुट दया कमाईआ। जन भगतां भाग कदे ना जाए निखुट, जिन्हां मिले तेरी सरनाईआ। पिता हो के बालक गोदी चुक्क, अकाल हो के गुरमुख आपणी कुल तराईआ। तेरा बूटा कदे ना जावे सुक्क, अमृत सिंच हरया इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दे वस्त सच दुआर, तूं देवणहार अख्वाइंदा। वस्त अमोलक झोली डार, गोलक इक्को वार भराइंदा। तेरा लेखा अलख अगोचर अगम्म अपार, आदि जुगादि भेव कोए ना आइंदा। निर्धन सरधन सब तेरे दुआर, निरगुण सरगुण तेरा खेल इक्को नज़री आइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत दर घर ठांडे कर परवान, दर दरबार इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शिश बख्शीश कर दान, जिस दान विच्चों दातार दात रूप नज़री आइंदा।

7८9

9६

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी हरदित्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

सिँघासण कहे मेरे सोहणे सुच्चे, प्रभ प्रभू वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ उत्तम उच्चे, शहिनशाह सच तेरी शहिनशाहीआ। तेरे चरणां हेठ कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड लुके, सिर बैठे पर्दा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे पैंडे कदे ना मुक्के, अन्त कहि ना कोए समझाईआ। नित नवित्त तेरे सुहेले गुरमुख चेले बूटे कदे ना सुक्के, लख चुरासी नित नवित्त जुग कुमलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगत तेरे प्रेम प्यार दे भुक्खे, भुक्खयां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। सच भरोसे तेरे चरणां उते सुट्टे, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तेरी लग्गी दो जहान ना टुट्टे, गंढु इक्को वार पवाईआ। अन्त काल कोई ना पुच्छे, लेखा सके ना कोए वखाईआ। तेरे मार्ग राह तों गुरमुख कोई ना घुथ्थे, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। तेरे दुआर तेरे मन्दिर रंग तेरा इक्को लुट्टे, घर आपणे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। सिँघासण कहे पिछला लेखा दस्सां खोल, सच सच समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द नाल करें चोहल, प्रेम प्यार इक वधाईआ। गढ़ी चमकौर सेजा केहड़ी अडोल, जिस उपर सोभा पाईआ। लेफ तलाई तकीआ चारपाई ना दिसे कोल, गोबिन्द कच्ची दीवार सहारा इक बणाईआ। ओस वेले बचन किहा अनमोल, हौली हौली जणाईआ। टांक नाल तीर तोल, तीर चिल्ले नाल मिलाईआ। कमर नालों कमच खोल्ह, ख़ंजर शमस रूप वटाईआ। खड़ग खड़का वांग ढोल, चण्ड प्रचण्ड रूप वखाईआ। ठोकर मार के उपर धौल, धरनी दित्ता समझाईआ। उठ जाग ना हो अनभोल, सोझी इक जणाईआ। तेरे उते सति धर्म दा करन आया घोल, साची वंड वंडाईआ। आपणा खून खून विच्चों खून देवां डोल, रंग रतड़ी रंग घत के गई रंग मिले सच्चे माहीआ।

पंज सिख ओसे वेले पए बोल, गोबिन्द चरणां उते सीस टिकाईआ। दातार सतिगुर साडे नाल ना मार रोल, असीं बच्चयां नालों बच्चे तेरे नज़री आईआ। एन्हां नाल जे सानूं देवें तोर, आपणी हथ्थीं मस्तक टिक्का लाईआ। सति दवारा आपणा इक खोल्ह, मार्ग इक दृढ़ाईआ। फिर वी आउणा तेरे कोल, होवे ना कदे जुदाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिउँ सज्जणा नाल करे मख़ौल, मुखों इक आवाज़ सुणाईआ। बच्चयो तुसीं अजे अनभोल, मेरी समझ किसे ना आईआ। आह वेखो जेहड़ा मेरा तोलण वाला तोल, कच्ची गढ़ी विच्चों मेरी काया गढ़ी विच्चों नज़री आईआ। उह हौली हौली दस्स के रिहा बोल, बोली बोल मेरे नाल मिलाईआ। गोबिन्द कलयुग अन्त तेरे नाल तेरयां सिखां दी वी लोड़, जिन्हां डोर तेरे उते टिकाईआ। कर प्रेम घोड़ी चाढ़ देणे तोर, तरह तरह समझाईआ। अग्गे आपे जावां बौहड़, आपणी गोद उठाईआ। पातशाहां घर शहिज़ादे नाँ रखाउँदे कौर, गोबिन्द घर गुरमुखां मिले वड्याईआ। एन्हां पंजां उते पुरख अकाल लावे मोहर, बिन हरफ़ां हरफ़ बणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे नवें नकोर, हिंदसा सके कोए ना बदलाईआ। ना कोई लए चुराए ठग्ग चोर, भन्न तोड़ परे ना कोए सुटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर खेल अवर का होर, हरि आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जग जुग जगत भगत भगवान आपणा अंग बणाईआ। गोबिन्द थोड़ा पासा परत, तीर मुखी नाल सीस झुकाईआ। प्रभू एह तेरी मेरी लिख्त पढ़त, दूजा सुणन कोए ना पाईआ। प्यो पुत्त दी लग्ग गई शर्त, दोहां विच्चों भज्ज कोए ना जाईआ। जे तूं आवें परत, मैं अग्गों हो के मिलां चाईं चाईंआ। मेरा होण ना देवीं हर्ज, हर्जाना तेरे कोलों मंग मंगाईआ। पुरख अकाल आदी कढ्ढ के फ़रद, पहला फ़ैसला लिख्या दित्ता वखाईआ। अगला पासा अद्धा चुक के थोड़ा दस्सया गोबिन्द उह खेल असचरज, जो खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। तूं सूरबीर मैं मर्द मर्दाना हो के आवां मर्द, मेहरवान इक अख्वाईआ। आपणी ख़ाहिश तेरी नाल रलावां ग़रज़, मतलब दोहां दा इक्को रूप वटाईआ। कारण कर के पूरा करां फ़र्ज़, फ़ज़ूल लेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गोबिन्द किहा बेपरवाह बेरहम, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणा सुत दुलारा रखीं कायम, कयामत एहदयां चरणां हेठ दबाईआ। नुक्ता कोई ना रहे ऐन गैन, सिफ़रा रूप सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाल तूं मेरे घर आयों सिहन, गढ़ी घड़ी घड़ी घड़ी विच्चों मेल मिलाईआ। तूं वी कल्ला मैं वी कल्ला ना कोई भाई ना कोई भैण, पुत्तर तेरी भेंट चढ़ाईआ। दोहां नूं कट्ठा मिले बहिण, वाह वा सोहणी बणत बणाईआ। इक खुशी अजीत जुझार झूजदे वेख आपणे नैण, फिर मेरे शब्द ठंड वरताईआ। मेरे पंज सिख फेर तेरा दरस करन नैण, नहीं ते तेरा मुख वेखण कोए ना आईआ। पुरख अकाल किहा

गोबिन्द मैं सेवक बण तेरे बच्चे आया लैण, फड़ आपणी गोद बिठाईआ। इक संदेसा आया देण, अगला लेख जणाईआ। तेरे बच्चयां दी धूढ़ी रेण, जुग चौकड़ी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल चाईं चाईंआ। गोबिन्द कहे प्रभ वेख खेल कमाल, मैं अच्छी दिती सिखलाईआ। गुरमुख बच्चे सोहणे लाल, लाल लाल रंग रंगाईआ। छुरीआं नाल हो हलाल, तेरे चरणां राह तकाईआ। जे डोलण लग्गण मैं अन्दर वड़ के बणां दलाल, फड़ बांहों लवां उठाईआ। उठो बच्चयो चलो ओस धर्मसाल, जिस घर वसे बेपरवाईआ। हौली हौली तेरे दरवाज़े तक्क चलां नाल नाल, अन्दर वाड़ के फेर एथे नज़री आईआ । उधरों गढ़ी चमकौर दी रो पई दीवार, कूक कूक मारे धाहींआ। ओ यारां दे यार ओ प्यारा दे प्यार दुखियां दे दिलदार दर्दीआं दे दर्दी, तैनूं दर्द ज़रा ना आईआ। मैं वेख वेख हौके लै लै मरदी, सहिज सहिज आपणा आप गंवाईआ। तूं छोटयाँ बच्चयां नूं सोहणी पहिणा के वरदी, मस्तक टिक्का ला पिठ ठोक अगला मुख वखाईआ। नाले खुशी नाले शौक, नाले गीत नाले श्लोक, सोहणा राग सुणाईआ। खुशी खुशी ओथे जाणा पहुंच, जिस घर मिले माण वड्याईआ। पंजां तुरन लग्गयां आई होश, सोध अरदास अर्ज़ इक सुणाईआ। साहिब सतिगुर सदा तेरे कोल रहे ख़ामोश, सनमुख हो बचन सके ना कोए जणाईआ । इक ख्वाहिश सद तेरा संग तेरे दर्शन दी होवे लोच, आसा होर ना कोए रखाईआ। एहो जेही फेर नहीं लभ्भणी मौज, आपणी हथ्थीं सेवा रिहों कराईआ। असीं बण के तेरी रंगली फ़ौज, फ़ैसले फ़ासले दो जहानां रहे मुकाईआ। सच दस्स तेरे मिलण दी बाकी कितनी औध, आयू इक्को वार जणाईआ। गोबिन्द किहा एह आदि जुगादि वक्खरी सोच, सोच सच विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान अख्वाईआ ।

७८३ १६

७८३ १६

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी सुरिन्दर सिंघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

कर अरदास झुकया सीस, नेत्र नैण नीर वहाईआ। मिले मेल प्रभू जगदीश, जगदीश्र दए वड्याईआ। छत्र झुलदा वेखीए सीस, दो जहानां नज़री आईआ। इस दे नाल निभे प्रीत, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। रण भूमी रण जाईए जीत, संग अजीत सोभा पाईआ। तन काया माटी होवे ठांडी सीत, अमृत रूप समाईआ। गाउँदे जाईए खुशी दे गीत, तूं ही तूं राग अल्लाईआ। सच दवारे पहुंचीए ठीक, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जा के करीए इक हदीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। अरदास अन्दर अन्तर रुची, बेनज़ीर नज़ीर लगाईआ। बिन बोलयां रसना

बात अगम्मी पुच्छी, निर्धन हो के मंग मंगाईआ। एथे औध तेरे चरणां विच मुक्की, अग्गे सरन प्रभू सरनाईआ। साहिब कदे कदे खुशी विच दस्सदा सैं मेरे साहिब दा ताज पंज मुखी, पंजां उहदे बदले दिती वड्याईआ। जिन्हां पिच्छे मोरो परिवारा वसे सुखी, दुःख सुख रूप बदलाईआ। गंढु पवाएं दुधीं पुतीं, बंस सरबंस जोड़ जुड़ाईआ। साडी ओसे नाल लगावीं रुच्ची, रुख़सत दे ना करीं जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होणा आप सहाईआ। अन्तर ध्यान लग्गा इक, घर वज्जी सच वधाईआ। एस जन्म नूं ल्या जित, अग्गे मिले माण वड्याईआ। परम पुरख नाल करीए हित, दर ठांडे सेव कमाईआ। जो लोकमात आवे जावे नित नवित्त, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। जिस नूं कैहन्दे गोबिन्द पुरख अकाल पित, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उस दवारे जाईए विक, कीमत आपणा मूल चुकाईआ। उहदी सेजा जाईए लिट, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे मेहर बेपरवाहीआ। अन्तर आई इक विचार, विचला भेव चुकाईआ। मंगीए मंग जांदी वार, बेनन्ती हिरदे इक सुणाईआ। जे गोबिन्द आवें दूजी वार, विछोड़ा देणा सानूं ना राईआ। तेरा मेला पुरख अकाल, सोहणा जोड़ा रूप वटाईआ। साडे उपर होणा दयाल, फड़ बांहों लैणा उठाईआ। लोकमात लिआउणा आप संभाल, माणस रूप दिवाईआ। जगत माया तोड़ जंजाल, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। आपे लैणी सुरत संभाल, पर्दा उहला परे हटाईआ। तूं शहिनशाह हउँ तेरे बाल अञ्याण कंगाल, सब तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करन करावण आप अख्वाईआ। सुण आवाज़ अन्तरजामी, गोबिन्द खुशी मनाईआ। प्रेम प्यार दा अमृत जल ठंडा पाणी, खुशीआं नाल प्याईआ। वेखो जा घर सच निशानी, सच दवारा इक दरसाईआ। मिले मेल वाली दो जहानी, जगत जहान डेरा ढाहीआ। अन्तिम लेखा पूरा करे शाह सुल्तानी, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता आपणे विच रखाईआ।

✻ २७ फग्गण २०२० बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश ✻

वक्त सुहञ्जणा आवे जग, प्रभ देवे माण वड्याईआ। कृपाल हो के लए सद्द, संदेसा आपणा नाम सुणाईआ। दरस करावे रज्ज रज्ज, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। पार कराके कूड़ी हद्द, घर इक्को इक वखाईआ। चारे खाणी विच्चों कढ्ढ, चुरासी डेरा ढाहीआ। प्रेम प्याला प्या मदि, नाम खुमारी इक रखाईआ। पुरख अकाल हो बख्शंद, बख्शिश आपणी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अभुल्ल आपणा नाउँ रखाईआ। सद्दे आप पुरख अकाल, अकल कलधारी

होए सहाईआ। गुरमुख बणयो सोहणे लाल, गुर गुर गोद सुहाईआ। लेखे लाए कीती घाल, घालण आपणी झोली पाईआ। बण सहायक करे प्रितपाल, मेहर नज़र उठाईआ। गोद उठाए नन्हे बाल, बालक आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। करता पुरख मारे आवाज़, अवल्ल आपणी दया कमाईआ। अन्तर अन्तर खोल्ह राज़, रस्ता सच दए समझाईआ। नाम पदार्थ दे के दात, घर ख़ज़ाना इक वखाईआ। आत्म परमात्म दस्स के गाथ, सोहणी कर पढ़ाईआ। लहिणा चुका मस्तक माथ, पूरब अंकुर दए जगाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सति नूर कर रुशनाईआ। जो गोबिन्द दित्ता आख, सो पूरा प्रभ परमात्म आप कराईआ। लेखा नहीं भविक्ख्त वाक, भाषा विच लेख सक्या ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ।

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी टोपन लाल दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

पुरख अकाल अरदास लए मन्न, मनसा सब दी पूर कराईआ। लोकमात चढ़ाए चन्न, सच नूर नूर कर रुशनाईआ। दौलत दे नाम धन, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। भगत बणा साचे जन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कर प्रकाश नेत्र अन्न्ह, आपणा नूर दए दरसाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्न, भय भउ दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। पुरख अकाल करे मंज़ूर, पंच अरदास जणाईआ। अन्तिम हाज़र करे हज़ूर, हाज़त सब दी पूर कराईआ। लहिणा देणा चुकाए ज़रूर, ज़रूरत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लेखे लए लगाईआ। सच बेनन्ती झोली पा, आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्त लए प्रगटा, प्रगट जोत दए वड्याईआ। घर साचे सज्जण लए बुला, धुर दा नाद वजाईआ। पिछला लेखा दए समझा, अग्गे आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ।

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी कला बाई पटोला बाई दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

आदि जुगादि जो मंगे मंग, जुग चौकड़ी आस रखाइंदा। परम पुरख परमात्म देवे संग, श्री भगवान तोड़ निभाइंदा। जुग जन्म कर्म दी टुटी गंढ, धुर दा मेला आप मिलाइंदा। निरगुण सरगुण पावे ठंड, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। घर निझर देवे अनन्द, गृह गृह आपणी खुशी वखाइंदा। कूड़ विकारा करे खण्ड खण्ड, सति धर्म इक दृढ़ाइंदा। लोकमात सन्त सुहेले

चाढ़ चन्द, रोशन मनार आप प्रगटाइंदा। बोध अगाध समझा छन्द, सोहँ ढोला इक वखाइंदा। लहिणा चक्के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म प्रभ नज़री आइंदा। लेखे लग्गे पवण स्वास दम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट मनसा वेख वखाइंदा। प्रभ मिलण दी जो रखण आस, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। साहिब सतिगुर मिटावणहार प्यास, जन्म जन्म दी तृखा गंवाईआ। निरगुण हो के वसे पास, सरगुण पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे साथ, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनसा मनसा विच रखाईआ। परम पुरख दा जिस रख्या चाअ, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। सतिगुर मेला लए मिला, विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमति मैल धवाईआ। सच्चे मन्दिर लए बहा, काया अन्दर सोभा पाईआ। बंद किवाड़ी जंदा दए तुड़ा, नाम डंका इक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दए वड्याईआ । भगतन आस पूरी करे सति, सतिगुर हथ्थ वड्डी वड्याईआ। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या सच पढ़ाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, घर आपणा दरस दिखाईआ। सचखण्ड निवासी आवे नट्ठ, लोकमात फेरा पाईआ। हरिजन हरि हरि करके इक इकट्ठ, सोहणी बणत लए बणाईआ। जो पिच्छे आवे दस्स, सो अग्गे लए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच

अरदास लेखे जाए लग्ग, लगावणहारा आप लगाईआ। कलयुग अन्त सच दवारे सद्द, साचा लेखा दए मुकाईआ। जगत जहान दी मेट के हद्द, घर आपणा इक वखाईआ। जिस गृह वज्जे अगम्मी नद, अनहद धुन शनवाईआ। बिन मक्के काअब्यो होवे हज्ज, बिन मन्दिर मस्जिद नज़री नूर इलाहीआ। जगत विकारे नालों कर के अलग, अगला पड़दा दए उठाईआ। सच प्रीती जाए बज्झ, नाता इक्को इक जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवे माण वड्याईआ। वड्याई विच्चों देवे बदला, बदली जन्म जन्म कराइंदा । पन्ध मुकाए मज़लो मज़ला, राही बेपरवाही आप अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी कदे ना होवे अन्धला, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाइंदा। जन भगत सुहावणहारा तन मनारा बंगला, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाइंदा। रंग चढ़ावे शाह कंगला, शहिनशाह मेहर नज़र टिकाइंदा। लेखा रहिण ना देवे गंधला, पतित पुनीत दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर पर्दा आप उठाईआ। परदे विच्चों चुक्के उहला, ओहले विच्चों भेव अभेव खुल्हाईआ। भेव विच्चों निकले मौला, मौला विच्चों नूर इलाहीआ। नूर विच्चों सुणीए ढोला, ढोले विच्चों गीत गोबिन्द बेपरवाहीआ। गोबिन्द विच्चों सुणीए सोहला, सोहणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वड्याई विच्चों प्रभ वड्डा होया, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा । ना जन्मे ना कदे मोया, आवण जावण लख चुरासी खेल

खलाइंदा। आलस निंद्रा ग़फ्लत विच कदे ना सोया, खुशी ग़मी हरख़ सोग़ चिन्ता दुःख ना कोए जणाइंदा। वैराग विछोड़े विच कदे ना रोया, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाइंदा। कर प्रकाश लोक परलोक दो जहान इक्को जिहा होया, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी जन भगत धुर दा बीज जिस बोया, सो फुल फुलवाड़ी पत्त डाली वेख वखाइंदा। प्रेम प्रीती अन्तर जिस गुरमुख गुरसिख मोहया, मुहब्बत आपणे नाल रखाइंदा। सो साहिब दयाल कृपाल ठाकर स्वामी सदा नवां नरोया, निरवैर निराकार निराहार आधार सर्ब रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा अगला चेता दोहां विचोला आपणा आप बणाइंदा।

* २७ फग्गण २०२० बिक्रमी जसवन्त सिंघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश *

पूरब लेखा देवण जोग, हरि करता इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी मेलणहार संजोग, पारब्रह्म प्रभ जोड़ जुड़ाइंदा। मिलावणहारा आपणी गोत, वरन अवरन डेरा ढाइंदा। कर प्रकाश साची जोत, जागरत रूप इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। कच्ची मिटी पावे शोर, बिन अक्खां नैणां नीर वहाईआ। मेरे कोल नहीं कुछ होर, जो तेरी भेंट चढ़ाईआ। किरपा कर के चरण कँवल मेरे नाल ठकोर, मेरा दर्द दे मिटाईआ। तेरी किरपा मिटे अन्धेरा घोर, कलयुग रैण रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। पिठ बदल के ला चरण, करवट लै बदलाईआ। मेरा खुल्हे नेत्र हरन फरन, पड़दा इक उठाईआ। मैं गुरमुख वेखां जो सच दवारे चढ़न, मरन नज़र कोए ना आईआ। गीत सुहागी तेरा ढोला पढ़न, गावण चाईं चाईंआ। जा के मिलण प्रभू दी सरन, सच दवारे सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती ठंडी मिले पवण, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। चरण छुहा मोहे मिटी ख़ाक, ख़ालक तू ही नज़री आइंदा। दर तेरे होवां पाक, पतित रूप ना कोए वखाइंदा। जुग चौकड़ी मोहे किसे ना दिती दात, साची वंड ना कोए वंडाइंदा। किरपा कर अनाथां नाथ, दीनन दीन दयाल इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, लेखा तेरे हथ्थ नज़री आइंदा। गोबिन्द चरण दित्ता ला, सज्जा अंगूठा नाल छुहाईआ। अक्ख खुल्ही वेख्या बेपरवाह, नूर नुराना नूर इलाहीआ। पंज तत अन्दर खेल रिहा खला, त्रैगुण देवणहार वड्याईआ। सृष्ट सबाई भरम रिहा भुला, धुर दा भेद इक छुपाईआ। उठ के तक्कया नूरी जलवा नज़र आया खुदा, रहमत भरया बेपरवाहीआ। जिस दे अग्गे सजदे करदे झुक झुक मंगण दुआ, नेत्र

नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जलवा तक्क नूरी अक्ख, बिन अक्खरां दए सुणाईआ। मेरी पूरी होई आस, असली तेरा रूप नज़री आईआ। अग्गे कहिण तों हो गई बस, बसता आपणा बंद कराईआ। जो किछ सब तेरे हथ्थ, एथे ओथे दो जहान चले किसे ना कोए वड्याईआ। बेशक मैं जाणा ढट्ठ, ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। तेरी किरपा मेहर नाल जुग चौकड़ी मेरा गावे जस, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। गोबिन्द सूरे किरपा कर के जे मेरे अन्दर ना जानों वस, मेरी करे ना कोए वड्याईआ। तूं मेरी लज्जया लई रख, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। मेरे दोवें ख़ाली दिसण हथ्थ, तेरी भेंट ना किछ चढ़ाईआ। निउँ निउँ कर निमस्कार तेरे चरणी जावां ढट्ठ, एहो वस्त मेरे हिस्से नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सदा तेरी सरनाईआ। ना रो कच्ची गढ़ी कंध, गोबिन्द कंधिउँ फड़ हिलाईआ। उठ वेख मेरे दुलारे चन्द, जो चन्द रोशनी तेरे उते पाईआ। ओनूां पिच्छे गुरमुख तेरे गावण छन्द, सोहणा आपणा राग अलूाईआ। तूं बड़ी सुचज्जी जिन प्यार कर के गोबिन्द अन्दर कीता बंद, लखां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। तेरी मेरे नाल जाए हंढ, अन्त लग्गी तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए जणाईआ। गढ़ी कहे कोझी कमली, मातलोक ना कोए वड्याईआ। धूढ़ी ख़ाक दिसां बवली, सोभावन्त ना कोए सुहाईआ। ना अल्फ़ी ना कफ़नी बगली, फिरां वाहो दाहीआ। मिले वड्याई सुहञ्जणी धवली, जिस धरत तेरा चरण कँवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे इक वर, लेखा आपणे नाल रखाईआ। लेखा मंगया अगली दात, लिखणवाला नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई संगी ना कोई साथ, कलम दवात शाही वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई सज्जण ना कोई साक, बंधप मेल ना कोए मिलाइंदा। ना कोई माता पिता बाप, सैण नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण हो के निरवैर रिहा आख, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। तेरी लेखे लावां धूढ़ी ख़ाक, जिस ख़ाक नाल आपणा चरण छुहाइंदा। कर के जावां भविक्ख्त वाक, वाक्य आपणा आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम तेरा मेला करां इतफ़ाक, इतफ़ाकीआ आपणा रंग रंगाइंदा। लहिणा देणा करां बेबाक, हिसाब खाते विच्चों पूर कराइंदा। दो जहानां बण के शाह नवाब, शहिनशाह आपणे संग रखाइंदा। तेरे लेख दी कढ्ढां फेर किताब, कुतबख़ाना बिन आपणे होर ना किसे वखाइंदा। ढूंडया हथ्थ ना आए पृथमी आकाश, दो जहानां नज़र कोए ना पाइंदा। बिनां पुरख अकाल मेरी कोई ना जाणे बात, बातन हाल ना किसे सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा लेख बिन लिख्यां आप जणाइंदा। मिटी कंध कच्ची ढेरी, खुशीआं नाल सुणाईआ। मेरे विच्चों मुक्की मैं मेरी, तेरी हो के तेरे

७८८
१६

चरण सीस निवाईआ। मेरा लहिणा हक़ हकीकत विच्चों नबेड़ीं, लेखा देणा बेपरवाहीआ। तेरे सहारे तेरे कंधे सुट्टी आपणी बेड़ी, खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा चुकाईआ। खेवट वेख्या सच्चा खेटा, मलाह इक्को नज़री आईआ। मैं सुणदी रही जिस वेले पुरख अकाल आ के तैनूं किहा बेटा, घर मेरे फेरा पाईआ। मैं वेख हैरान होई अगम्मी खेडा, हरि जू एह की रिहा जणाईआ। तेरी खिच के वेखी तेग़ा, कमच आपणा हथ्थ छुहाईआ। तिक्खी धार उस दा चमकदा आया नेज़ा, शब्दी नूर नूर इलाहीआ। मेरे वेंहदयां वेंहदयां बदल के भेसा, साचे देसा गया धाईआ। शहिनशाह नज़री आया इक नरेशा, नर निरँकार नूर इलाहीआ। पूरा कर के गया वादा, इकरार इक्को इक जणाईआ। गोबिन्द जे तेरे नाल मेरा हो जाए फाइदा, फड़ बांहों मुफ्त लैणा तराईआ। मेहरवान दा सदा एहो काइदा, कातिल मक्तूल दोवें लए बचाईआ। मेरे नाल कर इक मुआहिदा, आपणा दस्त उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मिले वड्याईआ। प्रेम प्यार दी सुण के कूक, अन्तर अन्तर खुशी मनाईआ। किथों उठी एह सुत्ती घूक, आपणी नैण अक्ख खुल्हाईआ। करे दुहाई चारे कूट, हौकयां नाल जणाईआ। मैं वेखां तेरे सच सपूत, पुरख अकाल पोतरे जिन्हां बणाईआ। बाहरों पंज तत काया दिसे भूतक भूत, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आपा वार जिन्हां तेरे मिलण दी भूख, जगत तृष्ना गए चुकाईआ। मैं ओन्हां नूं आपणे अन्दर दित्ता सुख, गोदी विच टिकाईआ। तेरे चरण फड़े थल्लउँ घुट्ट, सोहणी सेव कमाईआ। तेरी प्रीती किवें जावे छुट्ट, छुडावण वाला नज़र कोए ना आईआ। ओन्हां पंजां कोलों पुच्छ, जो मेरे अन्दर वड़ के तेरे अग्गे बेनन्ती गए सुणाईआ। मैं सब किछ ओसे वेले ल्या बुझ, आप आपणी मति गंवाईआ। जे गोबिन्द जाए तुठ, इस तों परे नहीं बेपरवाहीआ। जिस वेले फेर निरगुण हो के आपणी धारों आवे उठ, लोकमात वेस वटाईआ। जन भगतां मेटे तृष्ना भुक्ख, गुरमुखां हरस गंवाईआ। मैं फिर वी इस नूं आपणे उते लवां चुक्क, बण सेवक साची सेव कमाईआ। मेरा करे उजल मुख, देवे माण वड्याईआ। पर इक मंग गढ़ी चमकौर वरगा ना वेखां दुख, जिध्धर जावें खुशीआं रंग वखाईआ। तेरे नाल सदा रहे अबिनाशी अचुत, दो जहान वज्जदी जाए वधाईआ। कट्ठे इक्को दर इक्को घर इक्को मन्दिर इक्को सिँघासण सोहवो प्यो पुत, पुरख अकाल गोबिन्द इक्को रूप नज़री आईआ। उह दवारा मैनूं नज़री आवे सच सुच, पिछला वेला याद कराईआ। गोबिन्द प्यार नाल किहा उठ, धुर दी दयां जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तक्क बैठी रहीं चुप, आपणा बचन ना किसे सुणाईआ। आपे आ के तैनूं लवे पुछ, पश्चाताप दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। की वड्याई देवे अन्त, आसा की रखाईआ। की खेल करे भगवन्त, की कवण रूप वटाईआ।

की देवे मणीआं मंत, की कवण नाम समझाईआ । की वेखे लेखा जीव जंत, की कवण गुरू अवतार लए समझाईआ। की बणाए बणत, की कवण घाड़त लए घड़ाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू दी महिमा अगणत, आदि अन्त किछ कोई कहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज रचना लए रचाईआ। अचरज रचना रच निरँकार, आपणी खेल खलावेगा। निरगुण निरवैर लै अवतार, जोती जोत डगमगावेगा। शब्दी सुत कर प्यार, गोबिन्द नाम वडयावेगा। सम्बल खेल अपार, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगावेगा। धुन शब्द जैकार, आत्म परमात्म ढोला गावेगा। भगत वछल गिरधार, गृह मन्दिर सोभा पावेगा। लेख मुका जुग चौकड़ी चार, चारों कुण्ट हुक्म वरतावेगा। हुक्मे अन्दर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सद बहावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, आलस निंद्रा सर्ब मिटावेगा। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरतावेगा। पूरब लहिणा सर्ब विचार, जुग विछड़े मेल मिलावेगा। रविदास चुमारे नाल जो कीता उधार, लहिणा उस दी झोली पावेगा। पंजां पंजां बेड़ा कर के पार, पंजां आपणे कंध उठावेगा। पंजां पंजां दा लेख लिख के भगत दुआर, सोहणी वंड वंडावेगा। पंजां विच्चों पंज गढ़ी मेरी करावण याद, वेला वक्त फेर सुहावेगा। बीस इकीसा दे के दाद, दोहरा ताल वजावेगा। जन भगतां घर घर लग्गे भाग, भाग हिस्सा सब दी झोली पावेगा। गुरमुख खेड़े करे आबाद, साची सेवा आप कमावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां पूरन कर के ख्वाहिश, ख़ास ख़ास सब दे नाम लिखावेगा ।

* पहली चेत २०२१ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच *

रवी वेखे खोल्ह किताब, अन्तर ध्यान लगाईआ। पिछला लेखा आया याद, घर परमेश्वर गया समझाईआ। निरगुण हो के खेल खेलया इक तमाश, नज़र किसे ना आईआ। सच सिँघासण बहि के दिती दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सो सुहञ्जणी सोभावन्ती रात, भिन्नड़ी रैण नाउँ रखाईआ। मुख तों पड़दा लाह नकाब, घूँगट दित्ता परे हटाईआ। राह तक्क पृथ्मी आकाश, दो जहानां नैण पार कराईआ। तख्त निवासी बैठा इक जनाब, हकीकत हक़ रिहा दृढ़ाईआ। निउँ सजदा कीता आदाब, चरण कँवल सीस टिकाईआ। हुजरा सोहया इक महिराब, महल अटल होई रुशनाईआ। घर सज्जण आया साक, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। प्रीत अगम्मी जोड़े नात, रिश्ता आपणे नाल रखाईआ। टुकड़यां रंग रंगाया आपणी भात, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सच धर्म दा इक खाज, सोहणा भोजन आप बणाईआ। चार कहारां मार आवाज़, पंजवें यार

दित्ता वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। रविदास पिछला आया चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। आदि जुगादी धुर दा नेता, नर निरँकार इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी भगत उधारन जिस दा पेशा, दूजी कार ना कोए कमाइंदा। नित नवित्त वटाए वेसा, रूप रंग रेख ना कोए समझाइंदा। निरगुण सरगुण दए संदेसा, धुर दा अक्खर नाम पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। रविदास पिछला आया ख्याल, अन्तर ध्यान लगाईआ। प्रभ दी दिसी अवल्लड़ी चाल, निरगुण आपणी कार कमाईआ। सच दवारे मैं बणया मात दलाल, वचोला रूप नज़री आईआ। जन्म विछड़े लैणे भाल, घर मेला सहिज सुभाईआ। लेखा पिछला दस्सां अहिवाल, पर्दा आप उठाईआ। जिन्हां संग मेरे नाल, तिन्हां प्रभू मिलावा चाईं चाईंआ। जगत कूड़ी क्रिया मेट जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। पूरब हल करां सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। चेता आया पगड़ी वाले घुम्यार, अन्त इक्को गल्ल सुणाईआ। सुण पाणा गंढुणवाले चम्यार, तेरी दलील मोहे भाईआ। तेरा परमात्म नाल प्यार, साडा मेला दित्ता मिलाईआ। जो कुछ मंगणा मैं देवणहार, दोहर आपणी रिहा वखाईआ। रवी हस्स के किहा वाह मेरे यार, यारी तेरी मोहे भाईआ। तेरा मेरा इक उधार, हौली हौली दित्ता समझाईआ। कलयुग अन्तिम लोकमात मंगां आण, दर दर आपणा फेरा पाईआ। तूं रहिणा चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मति ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। घुम्यार फड़ के सोटा, धरती नाल टकराईआ। वेख मेरा बदन ताज़ा मोटा, सोहणी तरह समझाईआ। मैं अस्वार रहां उते खोता, नाल बच्चयां जोड़ जुड़ाईआ। मैं नित नवित्त लुटदा फिरां लोकां, घर घर सौदे वणज कराईआ। फिरदयां फिरदयां तेरे दर ते प्रभ दा मिल गया मौका, मिल्या मेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा जोड़ रिहा जुड़ाईआ। रविदास कहे लै देवां दात, इक्को वार वरताईआ। उत्तों वेख अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा छाईआ। निक्के निक्के बच्चे तेरे साथ, नन्न्हे रूप वटाईआ। प्रभ दे खाते विच्चों बची भात, दाणा दाणा मुख छुहाईआ। जिस नाल बदले तेरी ज़ात, अजाति रूप वटाईआ। परम पुरख दा बणे साथ, जन्म जन्म दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रविदास पिच्छे करे ध्यान, मन मणका आप बदलाईआ। ब्राह्मण देवणहारा ज्ञान, याद पिछली रिहा कराईआ। नेत्र खोल्ह चतुर सुजान, क्यों बैठा मुख भवाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर पन्ध कट के आया विच जहान, सरगुण आपणा रूप वटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे साम्हणे दित्ता ब्यान, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रवीदास

आपणा खोल्ह वरका, बिन अक्खरां वेख वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच ला के गया शर्ता, लग्गी आपणी तोड़ निभाईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मरदा, मर्दानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। पूरब जन्म दा लाहवे कर्ज़ा , मकरूज कर्ज़ा दए चुकाईआ। करे खेल इक असचरजा, अचरज आपणा हुक्म वरताईआ। जिन्हां दी पुट्ठी होई नरदा, सिधी आपणे हथ्थ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। नरद कहे मैं छड्डया सार पाशा, माण जगत ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट ना कोए दिलासा, धीरज नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परमात्म रवी दा मन्नया इक्को आखा, आख़र आपणा खेल कराईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रवीदास खोल्ह अक्ख, अग्गे पिच्छे ध्यान लगाईआ। ओ्हनां लेखा देणा हक़, जिन्हां हुक्म मिल्या बेपरवाहीआ। वेंहदयां वेंहदयां नैण गए थक्क, लोचण सार कोए ना आईआ। पांधी बण बण रहे नट्ठ, दो जहान भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा वरताईआ । रवी कहे मैनूं देणा प्या उधार, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। इक मित्र ते चार कहार, डोली वाले नजर ना आईआ। नाल ब्रह्मण दिसे चण्डाल, आपणा रंग वटाईआ। जिस दा लेखा दीन दयाल, देवणहार इक गोसाईआ। जिस वेले मेरे घर गृह सुक्के टुकड़यां भोग लगाया थाल, सोहणी वस्त रूप वटाईआ। ओसे विच्चों थोड़ा सांभ के रख्या विच रुमाल, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा नानक लालो दित्ता खवाल, भोरा भोरा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। थाल विच्चों रख्या भोरा, समझ किसे ना आईआ। परम पुरख प्रभ बण के चोरा, चोरी आपणी गया कमाईआ। रविदास नूं कहि के गया इस दी पए लोड़ा, कलयुग अन्तिम भेव अभेद खुल्हाईआ। बाकी सब नूं मिल्या जवाब कोरा, धुर फ़रमाणा आप दृढ़ाईआ। तेरा लेखे लाए ढोया ढोरा, दृष्टी चम्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। रविदास कहे सुण ब्रह्मण संगी, सच दयां जणाईआ । वस्त पिछली दे दे मंगी, पर्दा उहला रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे वासना रहे ना गंदी, दुरमति मैल धवाईआ। कूड़ी क्रिया ना कोई पखण्डी, भेख संग ना कोए जणाईआ। अन्तर आत्म ना होए अन्धी, मन वासना देवे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मण कहे सुण दास रवी, रंग आपणा दयां जणाईआ । मैं कसम खावां ओस निशान थल्ले जिस दा लेखा हथ्थ चवी, दो जहानां हथ्थ किसे ना आईआ। अग्गे मेरी ज़िंदगी बण गई नवीं, पिछला डेरा दित्ता ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे सुण पंडत यार, सच ब्रह्म दयां दृढ़ाईआ।

ओह वेख पिछले चार कहार, जिन्हां ठग्गी गया कमाईआ। चाली चाली दा वणज व्यपार, गंगा मइया रही सुणाईआ। पिछला कर्ज़ा पहलों उतार, अग्गे मिले फेर वड्याईआ। वीह दा लेखा हरिसंगत अन्तर प्यार, गुर प्रसादी होए सहाईआ। वीहां दा नाता तुटे विच संसार, संसारी संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मण कहे मैनूं दिसदे सज्जण, नेत्र नैणां नज़री आईआ। भगत प्यारे साचे मंगण, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मैं पिछला लेखा आया मंगण, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। मैं कोझा कमला होया नंगन, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे सुण ब्रह्मण एक, सच दयां दृढ़ाईआ। ओह वेख आपणा पिछला लेख, श्री भगवान रिहा समझाईआ। नौ जन्म भरम के बण जा नेक, नीतीवान इक अख्वाईआ। अग्गे माणस जन्म दी मुकण वाली खेड, तत चोला संग ना कोए निभाईआ। जिस ने मातलोक दित्ता भेज, सो वेखण आया बेपरवाहीआ। तेरे संग तत्तां सज्जणा ख़ाली होवण वाली सेज, नार कन्त होए जुदाईआ। प्रभ दा कोई ना मेटे लेख, लेखा सके ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मण अन्दरों रिहा रो, हौकयां नाल सुणाईआ। तुध बिन प्रभू ना दिसे को, नाता तुटा जगत लोकाईआ। आपणा आप बैठा खो, चले ना कोए चतुराईआ। दुरमति मैल पांपा धो, निर्मल रूप वखाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों तेरी सुणी सो, सो पुरख निरँजण इक्को माहीआ। मेरे अन्दर कर लो, सच प्रकाश नूर इलाहीआ। बिन मात गर्भ तूं मेरा बीज बो, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे सुण ब्रह्मण जाति, ज़रा पिछला ध्यान दृढ़ाईआ। मेरे घर वाला एह ओहो साथी, जिस कोलों कंगण दित्ता झोली पाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां आदि जुगादि मन्ने आखी, जो चरण कँवल मंगण सरनाईआ। मेरे साहिब दी वड्डी हाटी, बेअन्त अतोट अतुट भण्डार वरताईआ। दो जहानां सच्चा साकी, भर प्याला जाम प्याईआ। आ वेख पिछली लिखी पाती, जो मेरे हथ्थ फड़ाईआ। इस विच लहिणा दिसे बाकी, रविदास रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सुण के बचन कूकी डोले वाली नार, सोहणा बचन सुणाईआ। मेरे साहिब सतिगुर सांझे यार, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैनूं तक्क लैण दे उह कहार, जेहड़े नारी रूप जामा बैठे बदलाईआ। भगत दुआर दा मिल्या प्यार, प्यार विच्चों प्रेम नज़री आईआ। रविदास चुमारे जिन्हां तेरा भोजन दित्ता खवाल, पकवान इक्को अग्गे टिकाईआ। नाले दित्ता धुर दा दान, पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। उधरों डोली उठ के पई हस्स,

घूँगट लाल वेख वखाईआ। मैं पन्ध मुकाया नस्स नस्स, भज्जी वाहो दाहीआ। नेत्र खोल्ह के वेख्या अक्ख, मैनूं मोढ़ुयां उते चुक्कण वाले नज़री आईआ। एह सब कुझ रविदास दे हथ्थ, जिस दा लेख ना कोए मिटाईआ। श्री भगवान उहदे वस, घर बहि बहि खुशी मनाईआ। हुण खेल वेखो प्रतख, वक्खरी धार चलाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, गुरमुख आपणी गंढु पवाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, वणज इक्को इक कराईआ। पिछला लेखा कर के याद, लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत आप बणाईआ। डोली वाले डण्डे करन मख़ौल, दो हथ्थां ताली रहे वजाईआ। उठो वेखो ब्राह्मण रौल, पंडत बैठा डेरा लाईआ। चार कहार उस दे कोल, आपणा माण ताण गंवाईआ। रविदासा लेखा रिहा फोल, श्री भगवान रिहा समझाईआ। सब दा पूरा करे कौल, कीता इकरार विसर कदे ना जाईआ। लहिणा देवे उपर धौल, धरनी आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रस्से कहिण असीं दस्सीए रस्ता, भेव अभेव खुल्हाईआ। गुरमुख खोल्लया पिछला बसता, श्री भगवान रिहा दृढ़ाईआ। वेखो ब्रह्मण हाल ख़सता, ख़ुशी ग़मी दोवें बैठीआं डेरा लाईआ। अग्गे जाण दा नहीं ख़र्चा, पिच्छे रहिण तों सके ना कोए बचाईआ। साम्हणे अक्खीआं पै गया पर्चा, हल्ल सवाल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

७६४

१६

ब्राह्मण कहे मेरे राम, रमईया इक सरनाईआ। मेरा पिछला लेखा होया हराम, हुरमत कोए रहिण ना पाईआ। अगला सुणया तेरा निशान, निशाना तेरा बेपरवाहीआ। चरण कँवल कर ध्यान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरी मुश्किल कर आसान, दुखियां दर्द गंवाईआ। सारे कट्ठे होए आण, विछड़यां रहिण कोए ना पाईआ। किरपा कर श्री भगवान, सच तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर मैं त्यार कीता पकवान, भोजन भेंटा तेरी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वड्याईआ। ब्रह्मण तेरा भोजन होया त्यार, श्री भगवान ध्यान लगाईआ। तेरी गंगा मइया ल्याए उठाल, नेत्र नैणां दरस करे जमना सुरस्ती दिसे नाल, भज्जण वाहो दाहीआ। गोदावरी वेखे आ के हाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी आईआं नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। पंडत किथे लाए डेरे, ब्रह्मण दे समझाईआ। साडे कन्ढे तूं जजमान लुट्टे बथेरे, आपणे हथ्थ वखाईआ। हुण आएयों केहड़े गेड़े, तैनूं सके ना कोए बचाईआ। पंडत हन्झूआं नाल कपड़े रिहा लबेड़े, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा मुकाईआ। गंगा जमना सुरस्ती खुशी हो के गावण गीत, ब्रह्मण रहे सुणाईआ। पंडत जी तुहाढ्ढी प्रभ ने वाहवा वेखी रीत, नीत तुहाढ्ढी तुहाढ्ढे नाल प्रनाईआ। जो कुछ हो रिहा सो होवे ठीक, फ़र्क रहिण कोए

ना पाईआ। साडे नाल झूठी करदा रिहों प्रीत, सच्ची यारी तोड़ ना किते निभाईआ। जिस रविदास नूं कैंहदा रिहों नीच, कसीरा आपणी झोली पाईआ। उहदी चोली वेख रंग चढ़या बसीठ, रूप इक्को इक दरसाईआ। ओस दर तों मंग लै भीख, तेरा वचोला इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रिहा कराईआ। ब्रह्मण कहे सुण गंगा मइया, मैं ममता दिती तजाईआ। मेरी डुब्बदी वेख नईया, बेड़ा पार ना कोए लँघाईआ। सज्जण दिसे ना कोई सईया, संग ना कोए वखाईआ। मेरी पकड़े कोई ना बहीआ, ब्रह्मणी बैठी मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी रिहा कमाईआ। ब्रह्मण कहे सुण जमना भैण, सुरस्ती नाल रलाईआ। मेरे नेत्र रोवण वहाइण नीर नैण, धीरज नज़र कोए ना आईआ। मैं सच सच तुहानूं आया कहिण, कहि कहि रिहा जणाईआ। अज्ज चुकणा लहिण देण, मेरी सोच समझ रही ना राईआ। नाता तुटणा सज्जण साक सैण, भाई भैण जाणा मुख भवाईआ। हरिसंगत विच ना मिलणा बहिण, प्रभ चरण धूढ़ी टिक्का ना कोए लगाईआ। मेरा साढे तिन्न हथ्थ बुरज लग्गा ढहिण, ढेरी ख़ाक विच रल जाईआ। अन्दरे अन्दर चोरी घरां विच दिसे डाइण, बाहरों सके ना कोए समझाईआ। औह वेख मैनूं नज़री आए जो मैनूं आए लैण, लहिणा देणा रहे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दए चुकाईआ। चारे भैणां करन सलाह, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। ऐस वेले केहड़ा बणे मलाह, जो बेड़ा पार कराईआ। गंगा हौली जिही दित्ता सुणा, इशारे नाल दृढ़ाईआ। रविदास चुमारा गुरमुख बैठा रूप वटा, जिस दे नाल सच गोसाईंआ। उस दे अग्गे रल के सारे वास्ता लवो पा, दोए जोड़ जोड़ आपणी झोली डाहीआ। जे मेहरवान मेहर नैण लए उठा, दुखियां दु:ख दर्द गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर खेल वरताईआ। चारे भैणां हौली जेही रविदास नूं रहीआं आख, बिन रसना जिह्वा बोल सुणाईआ। तेरा प्रभ दे नाल साथ, नाता जुड़या बेपरवाहीआ। तैनूं ग़रीब नूं मंगण दी सोहणी जाच, कोझे कमले आपणी झोली अग्गे डाहीआ। सानूं याद उह पिछली रात, जिस रैण अन्दर सोहणा भात दित्ता खवाईआ। चार कहारां खोल्ह के राज़, पंजवें यार दे के दात, साथ पंज घुम्यार जणाईआ। पंडत ब्रह्मण ग्यों आख, इशारा इक्को इक लगाईआ। कलयुग अन्त वेखां आण तमाश, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच गोसाईंआ। रविदास कहे सुण लओ सच्ची, इक्को वार समझाईआ। मैं प्रभ दे नाल कीती पक्की, आपणी गंढु बंधाईआ। मेरी डोरी नहीं तन्द कच्ची, आदि जुगादि टुट ना जाईआ। गल्ल इक सुणावां अच्छी, बुरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ मेरा रिहा दृढ़ाईआ। सुण गंगा कर के कन्न, रवी रिहा जणाईआ। साहिब

मेरा जाए मन्न, जे वास्ता अग्गे पाईआ। जिस पूरब जन्म दा लेखा देणा सो अग्गे ना देवे डंन, डौरु डंक कूड़ ना कोए वजाईआ। भाग लगावे साढे तिन्न हथ्थ तन, रंग आपणा इक रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। एधरों ब्राह्मण मारी धाह, कूक कूक सुणाईआ। उधरों गंगा नीर रही वहा, नैणां छहबर लाईआ। जमना खुले केस रही वखा, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। सुरस्ती धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमा, मुख भबूती इक जणाईआ। गोदावरी तन अल्फ़ी लीरो लीर लई करा, हार श्रृंगार नज़र कोए ना आईआ। चरण कँवल मंग पनाह, सच बेनन्ती इक सुणाईआ। प्रभू एस ब्रह्मण दा बख्श गुनाह, जिन तेरा प्रसाद दित्ता बणाईआ। जुग जन्म दी कड़ाही दी आसा पूर करा, तेरा चरण कँवल विच टिकाईआ। प्रेम प्यार नाल सेव कमा, सोहणी खुशी वखाईआ। पंजां कोलों जल पवा, मन्त्र पढ़या बेपरवाहीआ। साडा ल्यादां लेखे ल्या ला, जो दूर दुराडा तेरे दर ते ल्या टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रहमत दे कमाईआ। रहमत कर श्री भगवान, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। रल मिल सारे मंगीए दान, झोली इक वखाईआ। तूं साहिब सज्जण सुल्तान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी मेटणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। हउँ बाले बालक बाल अञ्याण, बाली बुध रखाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त सहिज सुखदाईआ। तेरा प्रभू इक आधार, रविदास चुमारा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला दे चुकाईआ। प्रभू कहे रविदास दास दा की, सच दयो जणाईआ। सारे कहिण ओस वंड वंडी साढे तिन्न हथ्थ नींह, जिस दा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। लख चुरासी तेरा जंत जीव जी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अमृत मेघ बरस मींह, धार इक्को इक वहाईआ। कृपाल हो के ठाकर थी, साहिब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। सच दस्सो की रविदास दस्से, प्रभ जू आख जणाईआ। रवी खुशीआं विच हस्से, गुरमुख आपणा रंग चढ़ाईआ। प्रभू प्रेम प्रीती अन्दर फसे, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। ब्राह्मण चरणां उते ढठ्ठे, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी नाल मिलाईआ। दीन दयाल वस्त अमोलक झोली घत्ते, दाता दानी आप वरताईआ। पिछले वेख के हिसाब खते, खाता आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे मैं खाता दस्सां एक, जिस विच्चों मिले वड्याईआ। परम पुरख दी राखो टेक, सच सच सरनाईआ। चरण कँवल करो आदेश, निउँ निउँ लागो पाईंआ। निरवैर पुरख वटाया भेख, जोती जाता नूर रुशनाईआ। इक्को वसे सम्बल देस, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। सच दवारे खेले खेड, जन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान लेखा दए मुकाईआ। रविदास कहे

सुण सच कहाणी, अच्छी तरह जणाईआ। जिस ने रचन रचाई चारे खाणी, सो ख़ालस रूप वटाईआ। जिस दी सिफ्त करे चार बाणी, आदि जुगादि रही जस गाईआ। सो साहिब सतिगुर लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। उस दे चरण कँवल विटुह जाओ कुरबानी, निमुख निमुख आपणा आप कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। रविदास कहे मेरा सुक्का भोजन, जिस सति रूप बणाईआ। जिस नूं नानक मिल्या उपर कोटन जोजन, जिस दी सिफ्त गगन गगनंतर ना कोए कराईआ। जिस दे दर्शन नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोचण, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जिस दा लहिणा गुर अवतार पीर पैगम्बर सोचण, सोच विच किसे ना आईआ। जिस दा वासा लोक परलोकन, दो जहानां खेल खलाईआ। जिस दे नाल रविदास माणे मौजन, गुरमुख सिँघ गुर गुर गोद उठाईआ। प्रभू सब दे सिर उते देवे ओढन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उहदे हुक्मे अन्दर जुग चौकड़ी भोग भोगण, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। रविदास कहे सच दस्सां बात, बातन दयां जणाईआ। नाल लेखा लिख के कलम दवात, कालख टिक्का दयां गंवाईआ। प्रभ मिलण दी सिखो जाच, पड़दा उहला इक उठाईआ। अन्तर निवणा मस्तक माथ, डण्डौत बन्दना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान होए सहाई सद, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। जो सच दवारे रिहा सज, सोहणा आसण लाइंदा। सब दे पड़दे देवे कज, मेहर नज़र इक टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप चुकाइंदा। पूरब लेखा कहे उधार, रविदासे इक जणाईआ। बण वचोला विच संसार, सोहणा मेल मिलाईआ। मेरा भुल्लया ना सिरजणहार, भुल्लयां रिहा उठाईआ। पंडत ब्रह्मण होणा ख़बरदार, तेरा लेखा पूर कराईआ। पिछला वेला कर लै याद, तेरी फ़रयाद आपणी झोली पाईआ। उस दा भेव खोल्हे राज़, रहमत इक कमाईआ। खीर कड़ाह दा नहीं स्वाद, दन्द घसाई नज़र कोए ना आईआ। मिशराणी वासते देवे कोई ना दात, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। परम पुरख दा उलटा वेख रवाज, अचरज आपणी खेल रचाईआ। जिन्हां कहारां मंगी दात, तिन्हां मनुक्खां नारी रूप वखाईआ। जिस रविदास दे यार उस दी स्त्री वल ल्या झाक, पंजवां यार सोभा पाईआ। रविदास चुमारा वचोला बण के रिहा आख, धुर दा ढोला इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पंडत जी अग्गे किसे ब्रह्मण मिले ना थाल परोसा, खीर कड़ाह ना कोए खवाईआ। किसे नाल ना करना रोसा, उलटी कल प्रभू भवाईआ। अग्गे जींदयां साध कोई ना करे मोह्छा, मोह्छा कीता कम्म किसे ना आईआ। किसे कम्म ना आया नीती विच्चों घुम्यार दा चुक्कया खोसा, पुत्त पोतरे नाता

गया तुड़ाईआ। धन दौलत दिसे मकान कोठा, स्त्री अंगीकार ना कोए कराईआ। धोती बोदी नज़र ना आवे फड़या सोटा, मथ्थे त्रिशूल ना कोए वखाईआ। गंगा सागर मूधा होया लोटा, पर्दा रख दान ना विच टिकाईआ। रविदास ने मार्ग दस्सया सौखा, हौली जिही समझाईआ। जन्म कर्म तों बचण दा इक्को मौका, हरि चरण मिले सरनाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे धोखा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पंडत जी वेखो चार कहार, पंजवां यार नज़री आईआ। कलयुग अन्त जामा धर के रूप नार, नर नरायण संग रखाईआ। दोहां वचोला बणया यार, गुरमुख इक्को नज़री आईआ। एनूं भोजन देणा खवाल, हिरदे हरि हरि नाम ध्याईआ। रोगन सोगन चिन्ता करे बाहर, दु:ख नेड़ ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। पंज थाल दाल रोटी, पंजां दए वड्याईआ। तेरी वासना कढु के खोटी, कीमत खरी दए बणाईआ। एथे नाल मेल के जोती, जोती जोत करे रुशनाईआ। तेरी सुरत उठा के सोती, घर सवाणी दए समझाईआ। तेरी फेर ना हिले बोदी, इशारा कर के जजमान ना कोए फसाईआ। तूं वेखी चढ़ के चोटी, चतुर दान इक्को नज़री आईआ। जिस दे हथ्थ विच दो जहानां रोज़ी, आदि जुगादि रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे इक सरनाईआ। रविदास कहे जो रूप गुरमुख, अच्छी तरह समझाईआ। सच दवारयों मिले भिख, भिच्छया प्रभू वरताईआ। पिछला लहिणा लए नजिठ, अग्गे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए वड्याईआ। रविदास कहे सुण ठाकर ब्रह्मण, ठोकर दयां लगाईआ। मैं तेरा बणया पहलों ज़ामन, ज़ामनी तोड़ निभाईआ। तूं वेख मेरा रामन, जिस राम विच्चों रहमत आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वड्याईआ। रविदास कहे तूं परोस थाल, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। मैं दोहां हथ्थां फड़ के ठाकर आपणे देवां खवाल, जो खा के तेरा शुकर मनाईआ। तेरा कट के जाए जंजाल, जीवण जुगत आपणे नाल रखाईआ। पंजां सुरत लए संभाल, सोहणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। पंज कहारो खाणा खाओ, हरि साहिब सतिगुर आप जणाईआ। परम पुरख दा दर्शन पाओ, पिछला लेख मिटाईआ। इक्की दिन घर सुत्यां रोज़ रात नूं दर्शन पाओ, साख्यात प्रभ नूर ज़हूर नज़री आईआ। इक ग्लास जल दा सरहाणे रखाओ, रातीं पी के तुहानूं दए उठाईआ। सत्तवें सत्तवें दिन रविदास चुमार नूं लागे चरण तकाओ, पुरख अबिनाशी अपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सच प्रसाद लैणा छक, ब्रह्मण रिहा वरताईआ। एह रविदास ने तुहाढ्ढी झोली पाया हक़, जो पिछला रख्या कोल लुकाईआ। श्री भगवान हो प्रगट,

७६८ १६

लहिणा दित्ता थाउँ थाईंआ। एहदा लेखा हथ्थो हथ्थ, जुग चौकड़ी रिहा मुकाईआ। मरन तों पहलों मार्ग दित्ता दस्स, मुर्दा हो ना कोए पछताईआ। सच सुच दा खोल्ह हट्ट, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे प्रभू तेरी मेहर अपार, अपरम्पर दएं वड्याईआ । मेरा लहिणा दित्ता कर्ज़ उतार, बख्शिश आप कमाईआ। बेशक पंजे बणे नार, आसा अन्तर इक रखाईआ। अग्गे देणी पैज स्वार, जन्म जन्म दा गेड़ कटाईआ। सत्तां महीनयां दा जो रख्या उधार, उह वी लेखा तेरे हथ्थ जिउँ भावे तिवें चलाईआ। दुरमति मैल उतार, चिट्टे वस्त्र दित्ते पहनाईआ। हथ्थां विच जो पंज रुमाल, उह जिन्हां विच खाणा किणका किणका दित्ता टिकाईआ। एन्हां विच्चों खोल्ह के पंजां कहारां कीता प्यार, घुम्यारां नाल दर्दीआं हो के दर्द वंडाईआ। एन्हां नूं लग्गण ना देणा दाग़, लोकमात सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सद जोती जगदी रहे चिराग़, तेरा नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी सच सच सच वड्याईआ। पंजां वेख वस्त्र चिट्टे, दो जहान खुशी मन्नाइंदा। वेद व्यासा आ के दर ते पिटे, नेत्र रो रो हाल सुणाइंदा। प्रभू तेरे लेख कौण मेटे लिखे, लिख्या लेख ना कोए गवाइंदा। मैनूं तेरा रूप इक्को दिसे, जो हर घट अन्दर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सब दा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। वेद व्यास प्रभू होया दलेर, अच्छी
७६६ तरह जणाईआ। तेरा लेखा लहिणा देवे नबेड़, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा । मैनूं सुण के धाहां मारदे तेरे पंजे शेर, जो ७६६
जन्मदयां तेरा दर्शन पाईआ। बीस इकीसा एहो मंगदा रिहा मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। पंजां तों दस दसां विच आपणा गेड़, गेड़े विच सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए नबेड़, सतिजुग साची धार बंधाईआ। उधरों पंज औण दौड़े, गढ़ी चमकौर ध्यान लगाईआ। अजीत जुझार चढ़े घोड़े, सोहणी वाग भवाईआ। ओस दे चलीए कोले, जिस कल्ग़ीआं वाले कल्ग़ी वाले दी बणत बणाईआ। उस दे प्रेम अन्दर फरकण डौले, जोबन खुशीआं रंग बेपरवाहीआ। दो जहानां तोल तोले, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। अगम्म अथाह बोल बोले, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। अज ओस आपणे कीते कौल पूरे करके उपर धवले, लेखा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पंज शेर पए गरज, आपणी भबक लगाईआ। इशारे नाल प्रभ ग्यों वर्ज, शब्दी शब्द जणाईआ। तुहाड्डी सुणां इक अर्ज़, अरज़ोई आपणी झोली पाईआ। माता घर पूत जम्मे मर्द, सूरबीर अख्वाईआ। तुहाड्डे नाल वंडां दर्द, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरा करां फ़र्ज़, फ़ैसला सच सच सच दृढ़ाईआ। सच फ़ैसला नौ बीस, पहली चेत खुशी मनाईआ। पंजां देवे इक हदीस, सच सच समझाईआ। किरपा करे हरि जगदीश,

जगदीशर खुशी मनाईआ। सतिजुग साचा करे उडीक, नेत्र नैण उठाईआ। चिट्टा बाणा मंगे भीख, सोहणे वस्त्र राह तकाईआ। एह लेखा जुझार अजीत, अच्छी तरह दृढ़ाईआ। सति धर्म दी चले रीत, परम पुरख आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज दस दस पंज इक्को रंग वखाईआ। दस पंज वस्त्र चिट्टे, पुरख अकाल सेव कमाईआ। हरिसंगत वेखे वड्डे निक्के, बिरध बाल खोज खुजाईआ। फड़ के तारे जिथ्थे किथे, दूर दुराडे वेख वखाईआ। पिच्छों कहाणीआं रह जाण किसे, किस्मत जन भगतां दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सद देवणहार वड्याईआ। पिछले जन्म दी रविदास ज़मानत, गुरमुख हो के रिहा जणाईआ। प्रभ तेरी झोली रखी अमानत, आपणी हथ्थीं टिकाईआ। पहली चेत कर दे सही सलामत, सुत्तयां दे जगाईआ। अग्गे दिसे ना कोई अदावत, झगड़ा पिछला दित्ता चुकाईआ। कूड़ी करे ना कोई बग़ावत, ठग्गी चोरी ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ खा लै टुकर, टुकड़ा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। गुरमुख भुल्ला फेर वी तेरा पुत्तर, तेरा रोस नज़र ना आईआ। तेरी धारों आए उतर, पिता मात जगत हंढ्ढाईआ। तैथों भुल्लयां तेरा कीता ना शुकर, शहिनशाह तेरा संग ना कोए निभाईआ। अग्गे वासते कदे ना जावे मुक्कर, मुख सके ना मात भवाईआ। जे तूं इक दाणे पिच्छे तारया ठठयार दा कुकड़, नानक निरगुण सरगुण दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। रविदास कहे मेरी मंज़ूर कर अर्ज़ी, आरज़ू इक रखाईआ। तेरा प्रभू कम्म नहीं कोई फ़र्ज़ी, सच सुच तेरी सरनाईआ। बेशक असीं सारे सदा ग़रज़ी, पर वड्डी ग़रज तेरे मिलण दी इक रखाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई दर्दी, दुखियां दुःख ना कोए वंडाईआ। तन पाटा सीवे ना कोई दरज़ी, बिन रविदास चुमारे टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। तेरी प्रेम वैरागण गुरमुख आत्म मरदी, विछोड़ा सह सके ना राईआ। बिन तेरी किरपा तेरी मंज़ल कोई ना चढ़दी, घर दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। सुण रवीदास ब्रह्मण नहीं एह चार, चारों दी वारी आईआ। जे बख्शां ते सारे करां पार, नहीं ते संग ना कोए तुड़ाईआ। बेशक विछोड़न वाले नहीं गल विच्चों हार, माणक मोती नज़री आईआ। पर मेरा ओथे एथे इक जिहा प्यार, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। जे दुःख होवे माँ प्यो भैण भ्रा सज्जण साक सैण प्यारी नार, मोहे दुःख ना लागे राईआ। जन भगत साचे सन्त गुरमुख गोदी आप उठाल, बैठां चाईं चाईंआ। दिवस रैण अट्ठे पहर वसां नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार अगम्मी थाईंआ। रविदास कहे मेरी तेरे नाल यारी, वादा कर के पिछला आईआ। एथे ओथे तेरी खुमारी, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जे

८०० १६

मनुख तों बणाएं नारी, ब्रह्मण दे कोटन पिछले पाप गंवाईआ। थोड़े स्वासां दी होर कर दे कारी, तेरी कीमत लागे कोई ना राईआ। साडा संग बणया संसारी, सोहणा मेला मिल्या बेपरवाहीआ। अजीत सिँघ कहे मोहे लोक लज्जया जांदी मारी, अक्ख सके ना उपर उठाईआ। फुम्मण सिँघ कहे मेरी की करूगी नारी, बच्चयां पालण वाला नज़र कोए ना आईआ। डल्ला कहे ब्रह्मण ब्रह्मणी मेरे पिच्छे आपे करे गिरयाज़ारी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विछोड़ा झल्ल ना सके माँ प्यारी, पिता पुत्त झल्ली ना जाए जुदाईआ। रविदास कहे मैं सुणन तों अग्गे इनकारी, जो सुणावें मैं मोड़ के तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। रविदास ना कर ज़िद, श्री भगवान सच जणाइंदा। एह वेख मेरी वड्डी बिध, भेव अभेद खुल्हाइंदा। जे मरन तों पहलों एहो जिहीआं मंगां मंगण गए गिझ, अग्गे मेरा संग ना कोए रखाइंदा। भावें ओथे बच्चया नालों ज़यादा देवां निघ, सोहणी आपणी गोद बहाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर जावां भिज, अमृत मेघ बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव खुल्हाइंदा। रविदास कहे मैं बैठां आख, वड्डा माण तेरे उते टिकाईआ। एह वी सिक्खी तैथों जाच, प्रभू तूं आपे दित्ता समझाईआ। हौली जिही मेरे अन्दर कर के वास, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। रविदास जेहड़ा सुख पंज तत चोले मेरे साथ, फेर हथ्थ कदे ना आईआ। चलदयां फिरदयां खेलदयां कुददयां प्रेम नाल करन बात, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। सज्जणा वांग बहिणा विच जमात, भरावां वांग गलवकड़ी पाईआ। दातयां वांग बख्शणी दात, शहिनशाह वांग आपणा हुक्म सुणाईआ। रातीं सुत्तयां मिलणा विच ख्वाब, दिने जागदयां उंगलां नाल लगाईआ। साथों फेर केहड़ा लेखा मंगे हिसाब, जे मिले तेरी सरनाईआ। प्रभू उह चंगी नहीं महिराब, जिस दवारे तेरा चरण कँवल नज़र ना आईआ। सानूं एहो तेरी चंगी लगे रबाब, जो तन सतार अन्दरे अन्दर हिलाईआ। इस दा मैनूं दे जवाब, जेहड़ा मेरे विच बहि के सुक्का टुक्कर भोग लगा के आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे सज्जण लै तराईआ। रविदास कहे मेरे नाल तेरा इकरार, इकरारनामा रिहा वखाईआ। मेरी शहादत देण चार कहार, पंजवां तेली यार आपणा रूप वटाईआ। घुम्यारां विच्चों रोण वाला बच्चा पिछले जन्म दा लालो जिस नाल कीता उधार, उह वेखे नैण उठाईआ। उह इट्ट करे पुकार, जिस दा माण ताण दित्ता मिटाईआ। उह बाले होए हुशियार, जिन्हां नीहां हेठ दबाईआ। तेरा वेख सच्चा दरबार, सारे सोभा पाईआ। इक्को बोलण उच्ची आवाज़, धुर संदेसा रहे जणाईआ। श्री भगवान वीह सौ इक्की बिक्रमी गुरसिख तेरा मात विच्चों कोई हो के ना जाए निरास, पंज तत चोला ना कोए तजाईआ। जे तेरे कोल देण जोगी नहीं दात, सानूं आपणे ख़ाली हथ्थ दे वखाईआ। जां कहु मैं नहीं पुरख अबिनाश, ठग्ग चोर यार बैठा डेरा लाईआ। जां

कहु मैं भगतां नूं लुट्टण वाला बदमाश, बेवफ़ा हो के फेरी पाईआ। जां कहु मैं सर्ब गुणतास, हरि करता रूप वटाईआ। जिंना चिर मेरी पूरी ना करें आस, गुरमुख आपणी आसा ना कदे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ। रोटी दाल पावे शोर, बौहड़ी बौहड़ी सुणाईआ। रविदास तेरी कलम विच है नहीं ज़ोर, ज़ोर नाल दे दबाईआ। तेरे हथ्थ विच प्रभ दी डोर, वांग पतंगे रिहा उडाईआ। जे भगवान दा नहीं बदलदा बोल, बोल भगतां बदल कदे ना जाईआ। पिछला तेरे नाल कौल, इकरार रिहा दसाईआ। हुण आ गया उते धौल, धौल धरनी उते रूप वटाईआ। फड़ बांहों बहाया कोल, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। जिस तेरे घर विच्चों लुका के रख्या इक चौल, थोड़ा नानक दित्ता खवाईआ। उस दा अजे ना मुक्कया मूल, लेखा बहुता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रोटी दाल कहे मेरा वेखो सबर, थाल परोसी रही सुणाईआ। जिस दा लेखा मिले उते अम्बर, धरनी थल्ले हथ्थ किसे ना आईआ। सर्ब व्यापी सदा भरतम्बर, हर घट स्वामी बेपरवाहीआ। सो साहिब रच आपणा अडम्बर, अचरज खेल कराईआ। जन भगतां सोहणा बणे सुअम्बर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देवे चुकाईआ। पुरख अकाल खेल अनदृष्टा, शब्दी दाता दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे लिख्ता, पूरब ध्यान लगाईआ। गुर अवतार विचारन वाक भविक्ख्ता, जो भाख्या गए सुणाईआ। पीर पैगम्बर भज्जण दोज़ख़ बहिश्ता, चौदां तबकां वाहो दाहीआ। भगत भगवान वेखण इष्टा, निज अन्तर ध्यान लगाईआ। धन्न भाग प्रभ नव नौ चार पिच्छों पहली चेत लयांदा परविश्टा, बीस इकीसा रंग रंगाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख चेले खोल्हे दृष्टा, अनभव आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतिजुग त्रेता तक्कण राह, द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। चारे वेद नैण रहे उठा, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। चारे खाणी रही राह तक्का, तकवा इक्को इक जणाईआ। चारे बाणी रही समझा, बोध अगाध करे शनवाईआ। चार वरन पर्दा रिहा उठा, चार यारी संग निभाईआ। चौथे पद भेव रिहा खुल्हा, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। दो जहान रहे तक्क, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पाताल रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण खेल करे समरथ, महिमां अकथ आपणे हथ्थ रखाईआ। वेख वखाणे तीर्थ तट, अठसठ मन्दिर मट्ठ शिवदुआले पर्दा आप चुकाईआ। नित नवित्त करे खेल बाज़ीगार नट, स्वांगी हरि करता आपणा स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह खेल रचाईआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी इक इकल्ला, जुग करता सोभा पाइंदा। सुहावणहारा

मुकामे हक़ सच महल्ला, लाशरीक परवरदिगार सांझा यार आप हो जाइंदा। आपणे हथ्थ रखे तौफ़ीक, देवणहारा सद हदीस, कलमा नबी रसूल कायनात आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेव आप खुल्हाइंदा। भेव अभेव खोल्हणहारा, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी निरगुण सरगुण लै अवतारा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। काग़ज़ कलम शाही कातब बण लिखारा, नित नवित्त करे सच पढ़ाईआ। नाम धुन शब्द नाद दरसावणहार जैकारा, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां जीवां जंतां जो देंदा रिहा लारा, सति इशारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, लख चुरासी वेखे खेल तमाश, घट घट अन्दर डेरा लाईआ। बोध अगाध वजाए नाद, धुन सुणाए सुन्न समाध, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह भेव खुल्हाईआ। पूरब लहिणा रखे याद, जन भगत सुणे फ़रयाद, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां देवे दाद, देवणहार इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह संदेसा इक, हरि करता आप जणाईआ। नित नवित्त जो लेखा दित्ता लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों श्री भगवान बदले आपणी पिठ, करवट इक्को लै अंगड़ाईआ । जन भगतां करे हित, हितकारी बण के वेस वटाईआ। अन्तर आत्म वसे चित, मन ठगौरी कोए ना पाईआ। प्रेम प्यार दी दे के भिख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। आत्म परमात्म देवे सिख, सिख्या सच करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आप हो जाईआ। मेहरवान प्रभ होया एक, एकँकार आप अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी जिस दी टेक, सो साहिब फेरा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर राह तक्कण नेतन नेत, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। घर प्रीतम पीआ पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे हेत, हितकारी पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। जिस दे हथ्थ दो जहानां लेख, लोक परलोक बणत बणाइंदा। लख चुरासी जिस दी खेड, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाच नचाइंदा। घट घट अन्दर जिस दा जोती तेज, आदि निरँजण नूर रुशनाइंदा। आत्म परमात्म माणे सेज, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सुहावणहारा सचखण्ड देस, महल अटल आप वडियाइंदा। सुत दुलारा शब्दी देवे भेज, हुक्म हाकम इक दृढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम धर के भेख, पड़दा उहला आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप दृष्टाइंदा। साची खेल करे गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जन भगतां मेटण आया चिन्द, चिन्ता चिखा दए मिटाईआ। वड दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। तिस दी क्या कोई

करे निन्द, कोटन कोटि निन्दक निन्दया मुख भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता बण साहिब बख़्शिंद, बख़्शश रहमत आप वरताईआ। बख़्शश रहमत वरते जग, कलयुग अन्त दए वड्याईआ। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्ट सबाई वेख लग्गी अग्ग, नौ खण्ड पृथ्मी अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। साचा हाजी करे ना कोई हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। सूफी बण के साहिब कोई ना लए लभ्भ, सुहबत विच फसी लोकाईआ। मन वासना रहे नच्च, मति मतिवाली रही कुरलाईआ। बुध सवाणी गई नट्ठ, सुरती हाणी शब्द ना कोए मिलाईआ। मणका मणका जगत माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जन भगत विरला अन्दर वड़ के वास्ता रिहा घत्त, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर ध्यान लगाईआ। आपणे मिलण दी दे अक्ख, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सच वड्याई दे लोकमात, प्रभ तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। साहिब सज्जण बण साक, सगला संग निभाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, पर्दा दे मिटाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत ललाट, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। पत्तण वेखीए तेरा घाट, कवण कन्ढे बैठा सोभा पाईआ। बातन ज़ाहर कर बात, गुफ़त शुनीद भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी सिफ्त सालाह सारे गए आख, बांहों फड़ सके ना कोए मिलाईआ। कलयुग अन्तिम असीं सिखण आए जाच, कोझे कमले बाले नढ्ढे, अंजाणी बुध आपणी आप रखाईआ। साक सज्जण भाई भैण मित्र प्यार सारे छड्डे, नाता तुट्टया जगत लोकाईआ। कूड़ कुड़यार पंच विकार काम क्रोध लोभ मोह हँकार अन्दरों कढ्ढे, हउमें हंगता माया ममता गढ़ तुड़ाईआ। तेरे नाउँ दा गाईए इक्को छन्दे, धुर दा ढोला राग अल्हाईआ। रविदास चुमारा तेरे दर ते मंग मंगे, झोली आपणी इक वखाईआ। प्रभू वेख मेरे वरगे भुक्खे नंगे, जगत ख़ज़ाना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। रविदास कहे प्रभ खोल्ह अक्ख, मैं सच दयां जणाईआ। एन्हां दे किछ नहीं वस, सब तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। घर घर दे दे पिछला हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। अन्दर वड़ के दे मति, बाहरों समझ सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाईआ। रविदास कहे प्रभ औह वेख ब्राह्मण, बनारस बैठा नज़री आईआ। जिस दा बणया मैं ज़ामन, पल्लू तेरे नाल बंधाईआ। अन्त छड्डणा ना पए दामन, दामनगीर तेरी सरनाईआ। लेखा पूरा करदे कामन, कर्म कांड डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी देणी इक वड्याईआ। धुर दी वड्याई मंगे पहली चेत, बीस इकीसा ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी तेरी वल छलधारी वेखी खेड, अछल छल तेरी सार किसे ना पाईआ। गुर

अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर दित्ते भेज, हौली हौली नाद सुणाईआ। पंज तत काया माण के गए सेज, सुहञ्जणा आसण इक सुहाईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता दे के गए संदेश, रसना जिह्वा ढोला बत्ती दन्द सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आवे जावे सदा हमेश, नित नवित्त आपणी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी लिखणहारा लेख, विष्न ब्रह्मा धुर दा हुक्म इक समझाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के देवे भेत, पड़दा उहला आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। पहली चेत चुक्के हथ्थ, पंजां उंगलां नाल इशारा रिहा कराईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, दीन दयाल धार चलाईआ। निरगुण जोत कर प्रगट, साची करनी कार कमाईआ। पूरब लहिणा देवे वथ, लेखा पिछला सर्ब मिटाईआ। अग्गे मार्ग देवे दस्स, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जन भगत खोल्ह के निज अक्ख, नेत्र आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई हरि जू वड्डा, कल करता खेल कराइंदा। गुरमुख वेखे बाला नढ्ढा, दूर दुराडा मेल मिलाइंदा। जगत विकार दी तोड़ के हद्दा, घर साचा इक समझाइंदा। घर नाद वजाए सच अनहदा, धुर दी धार आप समझाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर बज्झा, हरि करता कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। पहली चेत करनी करतार, हरि करता आप कराईआ। लेखा लिखे रविदास चम्यार, गुरमुख देवे वड्याईआ। पूरब जन्म दा कर्ज उतार, हिसाब बेबाक रिहा वखाईआ। कट्ठे कर इक दरबार, धुर दरबारा दए जणाईआ। इट्ट दा रिहा ना कोई उधार, चार कहार लेखे पाईआ। पंजवें मित्र कर प्यार, बेड़ा साचा कंध उठाईआ। ब्रह्मण नाल कर विहार, लेखा लेखे रिहा लगाईआ। संग वेख्या ओन्हां चार, मिल्या मेल साचे थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। ब्रह्मण कहे मेरे संगी चार, चौहां बणत बणाईआ। चारे युग करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चारे वेद करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चारे बाणी वाजां रही मार, सोहणा ढोला राग सुणाईआ। चारे ख़ाणी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज नज़र कोए ना आईआ। चौथे युग परम पुरख प्रभ लेखा रिहा विचार, दूजा संग ना कोए रलाईआ। लोकमात सच लग्गा इक दरबार, धुर दरबारी सोभा पाईआ। पिच्छे कर आया उधार, अग्गे लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। रविदास कहे सुण ब्रह्मण मित, तैनूं सच दयां दृढ़ाईआ। पहली चेत्र आ गई थित, आपणा आप बदलाईआ। प्रभू दवारयों मंग लै भिख, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। कृपानिधान जे लेखा देवे लिख, सब दी टुट्टी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। ब्रह्मण

कहे सुण चम्यार मोची, गुरमुख तैनूं दयां जणाईआ। एहो जिही गल्ल मैं कदे ना सोची, जिस विच मेरी होवे भलिआईआ। नौ जन्म मेरी वासना रही खोटी, फिरदा रिहा वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त मैं इक्को सुणया सच श्लोकी, जिस दी समझ अजे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रविदास कहे चेत महीना, नव नौ चार पिच्छों मात आईआ। जिस दिवस उते गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणा छड्डणा मज़्ब दीना, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। दो जहान चौदां लोक चौदां तबक सब दा छुट्टे खाणा पीणा, रस हथ्थ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रविदास कहे पंडत उठ डाह झोली, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। दर दरवेश बण गोली, गोलक पिछली दे गंवाईआ। रविदास दी समझ इक्को बोली, जो दो अक्खरां विच जणाईआ। अबिनाशी करता तोल रिहा तोली, तोलणहार हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। पंडत कहे सुण रविदास सज्जण, इक दयां जणाईआ। फड़ बांहों करा दे मजन, मेरी दुरमति मैल धवाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भज्जण, भरम भउ रहे ना राईआ। प्रेम प्रीती विच होवां मग्न, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। इक्को आवे परमानंदन, निजानंद रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। रवी किहा एह नहीं बात, पिछला लेख जणाईआ। परम पुरख प्रभ देवणहारा दात, जो भिखारी मंगण आईआ। उठ वेख गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब दे पूरे करे भविक्खत वाक, वाक्य आपणे नाल मिलाईआ। सच धर्म दा खोल्हण आया ताक, पर्दा उहला रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ब्रह्मण उठ के वेख्या चारों कुण्ट, नैण अक्ख खुल्हाईआ। की रविदास दस्सें सच एह बैकुण्ठ, धाम अवल्लड़ा सोभा पाईआ। मेरा हरख़ सोग ना रहे कोई चिन्त, ग़मी ग़म ना कोए सताईआ। प्रभ मिलण दी होवे हिम्मत, हौसला इक्को वार वधाईआ। दर ठांडे करां मिंत, निउँ निउँ लागां पाईंआ। अग्गे फेर ना करां इल्लत , कूड़ी क्रिया ना कोए चतुराईआ। मेरी पिछली पोशाक लहे ख़िलत, चोला चोले विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास ब्रह्मण सुण के बिलास, श्री भगवान लए अंगड़ाईआ। अन्दरे अन्दर कर तलाश, खोजत खोजत भेव चुकाईआ। दोहां दी वेख के हरि जू ख़ाहिश, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। साचा कारज आवे रास, धुर दी धार इक दृढ़ाईआ। चारे मिल जाण इक जमात, नाता जुड़े भाई भाईआ। कट्ठे हो के मंगण दात, दोए जोड़ सीस निवाईआ। तारा सिँघ पिच्छे खोल्हे सब दा खात, अजीत सिँघ पर्दा रहे ना राईआ। फुम्मण सिँघ पिछला नाता तुटे पिता मात, अग्गे पुरख अकाल जुड़ाईआ। नाज़र सिँघ लेखा जाणे सज्जण साक, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ।

डल्ले नाल कीता वाक, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। चौहां लेखा हथ्थ निरँकार, दूसर सके ना कोए समझाईआ। करे खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। वेद व्यासा उठ के रोवण लग्गा ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म तेरी सोहणी दिसे गुलज़ार, फुल फलवाड़ी मात महकाईआ। मैनूं याद आया पंजां प्यार, जिस वेले मेरा जन्म दित्ता मेरी माईआ। ना ज़िमी ना असमान, ना मन्दिर घर कोई मकान, जंगल जूह उजाड़ खुशी मनाईआ। पंजे बच्चे बाल नादान, अन्दरे अन्दर आया ध्यान, किरपा करे श्री भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सानूं देवे सच्चा माण, बालक जम्मीए विच जहान, जिन्हां मिले श्री भगवान, भगवन रूप अनूप समाईआ। ओन्हां लेखा चुक्के आण, ना कोई सके मात पछाण, लेखा लिखे ना कोई बुद्धिवान, मनमति समझ किसे ना आईआ। ओधर रविदास गाए गान, तेरा खेल प्रभू महान, तेरा झुल्लदा रहे निशान, दो जहानां इक्को रंग वखाईआ। ओधर तेई अवतार करन पहचान, ईसा मूसा मुहम्मद वेखण मार ध्यान, नानक गोबिन्द राह तकाण, कबीर जुलाहा भगत अठारां रिहा उठाईआ। ओधर रम्बी आर कहे मैं बलवान, तागा कहे मैं मेहरवान, जिस कोटन कोटि जोड़े जोड़े विच जहान, पाणा गंढु के खुशी मनाईआ। उधरों खुशी होया भगवान, सच संदेसा देवे आण, शब्द अगम्मी बोले बे ज़बान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। मेरा रविदास नाल मेल महान, नाता छुट्टे ज़िमीं असमान, नेत्र रोवण दो जहान, विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलाण, करोड़ तेतीसा सुरप्त धीर ना कोए धराईआ। पिछला लेखा कढु के दोवें खुशी मनाण, घर बहि के सोहणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। सुण के करनी करता पुरख, चारे युग भज्जे वाहो दाहीआ। चलो मेटीए चिन्ता दुःख, हरख सोग गंवाईआ। परम पुरख दा तक्कीए मुख, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। दर आया घर लए पुछ, मेहर नज़र उठाईआ। वस्त अमोलक देवे कुछ, जो आपणे संग रखाईआ। जगत भण्डारा ना जावे मुक्क, अतोट अतुट वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो रिहा लुक्क, कलयुग अन्तिम पड़दा दित्ता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र करे बेनज़ीर, दयावान अख्वाइंदा। जिस दी खिच्चे ना कोई तस्वीर, मुसव्वर भेव कोए ना पाइंदा। सो बदलण आया तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। औह वेखो चार कहार पिछले वीर, पंजवां संगी जोड़ जुड़ाइंदा। अन्तिम चोटी चाढ़ अख़ीर, हरि करता खेल वखाइंदा। रविदास चिट्टे उते पा काली लकीर, लेखा अगला इक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल वेखण अवतार गुरू, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। वेखो सतिजुग हुन्दा शुरु, जिस दी शरअ समझ किसे ना आईआ। परम पुरख

दा मन्त्र इक्को फुरू, फुरने सब दे बंद कराईआ। सच्चे मार्ग गुरमुख विरला तुरू, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बेड़ा रुढ़ू, अग्गे सके ना कोए बचाईआ। हरि का शब्द कदे ना मुड़ू, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतिजुग वेखो लग्गदा मात, प्रभ इक्को मति समझाईआ। देवे वड्याई वेद व्यास आपणी दात, जिस रात रुत्तड़ी इक सुहाईआ। पंजां पूरी कर के आस, आसा तोड़ रखाईआ। जन्म जन्म दी मेट प्यास, हरख़ रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। वेद व्यास तेरे पंजे शेर, शहिनशाह दिती सरनाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों जामा बदलया फेर, बदली आपणी आप कराईआ। मेहर नज़र कर लयांदे घेर, हुक्मे हुक्म वरताईआ। जिस दा पुराण अठारां ना पावण भेद, गीता ज्ञान ना कोए समझाईआ। एहो खेल अछल अछेद, वल छलधारी आपणे हथ्थ रखाईआ। हुक्मे अन्दर आपे भेज, फुरने अन्दर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा रिहा उठाईआ। पड़दा उहला देवे चुक्क, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। हरि भगत भबक ला के पए बुक्क, भय भउ सर्ब मिटाइंदा। उजल करे हरि जू मुख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट के दुःख, सुख सागर इक समझाइंदा। सफल करा के जननी कुख्ख, अन्तिम आपणी गोद बहाइंदा। करे प्यार जिउँ माता पुत्त, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। पंजां दे वड्याई जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उधरों रविदास चुमार हुक्मे अन्दर लयांदे सद्द, चार कहार पंजवां भाईआ। यार यारी नाल लई गंढ, लग्गी सके ना कोए तुड़ाईआ। पिछली पिच्छे गई हंढ, अगला पड़दा दए उठाईआ। आत्म अन्तर दे अनन्द, गुरमुख चन्द नूर रुशनाईआ। साचा ढोला दस्स के छन्द, करे कराए हक़ पढ़ाईआ। उधरों पंडत मुकया पन्ध, जन्म नौ लेख चुकाईआ। चार सज्जणा बणया संग, जिन्हां मइया बैठी राह तकाईआ। उधरों गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मुका के आईआं पन्ध, दर बैठीआं सीस निवाईआ। दोए जोड़ मंगां रहीआं मंग, गल पल्लू इक्को पाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। असीं वेखीए तेरे चमकदे चन्द, जलवा तेज जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। गंगा कहे मेरा गंगा जल, प्रभ सेवा तेरी कमाईआ। जमना कहे मैं दूर दुराडे आई लँघ, सिर गगरीआ इक उठाईआ। सुरस्ती कहे मेरा मुक्कया पिछला पन्ध, दर इक्को ओट रखाईआ। गोदावरी कहे मैनूं ढईए पिच्छों पई ठंड, दर तेरा दर्शन पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मार के ताली कहिण साहिब बख्शंद, बख्शणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गंगा जल खुश होवे पाणी, सम्मत

८०८
१६

पन्द्रां राह तकाईआ। पारब्रह्म प्रभ इकीआं नाल दे के आया निशानी, त्रिबैणी आपणा चरण छुहाईआ। गोदावरी कहे मैनूं आवे हानी, नेत्र अक्ख ना सकां खुल्हाईआ। मैं चुप चुपीती सुणदी रही बाणी, हरि जू की की हुक्म वरताईआ। सानूं प्रभू तरस आवे अन्दरे अन्दर रोवे मिशराणी, बाहरों हौसला रही वखाईआ। ओहनूं पिछली भुल्ली कहाणी, जो ब्रह्मण नाल मिली वड्याईआ। नथ्थ सुहाग सदा रहे ना बणी रहे ना राणी, घर महल ना सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जल विच्चों बोलया नीर, आपणा हाल सुणाईआ। मेरे अन्दर लग्गी पीड़, दुःख सके ना कोए मिटाईआ। मैं तीर्थ तट्टां उते होया दिलगीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। बिरहों विछोड़ा लग्गा तीर, प्रभू अणयाला दित्ता चलाईआ। तेरे कोल आया अखीर, दोए जोड़ लागां पाईंआ। मेरी बदल दे तकदीर, तदबीर हथ्थ तेरे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। नीर वेख रोई कड़ाही, दोहां कुंडयां हाल सुणाईआ। प्रभ मेरे वल ध्यान लगाईं, दर वास्ता रही पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीतयां तेरी आस तकाई, कलयुग अन्त खुशी मनाईआ। मेरे अन्दरों धो के दुरमति मैल छाही, ब्रह्मण कोलों साफ़ कराईआ। हरिसंगत देवे सच गवाही, शहादत इक्को वार भुगताईआ। मैं तपदी रही वांग अँगयार तत्ती रेत सीस गुर अर्जन पाई, सांत मैनूं कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों चरण कँवल दित्ता टिकाई, रविदास चुमारा लेखा रिहा लिखाईआ। पंजां सेवा इक लगाई, अमृत धार आप वहाईआ। पिछला लेखा चुक्कया मेरे माही, कलयुग खेड़ा देणा ढाहीआ। सतिजुग सच्चा राह वखाई, तेरे हथ्थ प्रभू वड्याईआ। चौहां होए ना अन्त जुदाई, सम्मत इक्की खुशीआं नाल लँघाईआ। तेरा ढोला गाईए चाईं चाईं, सो पुरख निरँजण तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा सति वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सुण अलख पुकार प्रभ ठाकर, आपणा ध्यान लगाईआ। हरि भगत ना रुढ़े कलयुग सागर, फड़ बाहों पार लँघाईआ। किरपा करे करीम कादर, करता होए सहाईआ। जन्म जन्म विच्चों देवे आदर, आदर्श आपणा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार सरनाईआ। सच सरनाई देवण आया, साहिब सुल्तान श्री भगवान। कूड़ी क्रिया डेरा ढाहया, सच झुल्लदा रहे निशान। साचा मन्दिर इक वखाया, जिस गृह वसे आप मेहरवान। दीवा बाती इक रुशनाया, जोती जोत जोत महान। शब्द नाद इक शनवाया, बत्ती दन्द ना कोई गान। धुर दा लेखा आप दृढ़ाया, ना कोई लिखे विच जहान। साचा मार्ग इक्को लाया, देवे धुर फ़रमाण। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा वखाया, नाल इशारे नौजवान। पहली चेत रुत्त सुहाया, हरि करता करे खेल महान। पंज पंज दा मेल मिलाया, दस दस होवे प्रधान। नारी पुरख इक्को रंग रंगाया, वड्डा छोटा

ना कोई जहान। सोहणा वस्त्र तन पहनाया, सेवा कर साहिब सुल्तान। दस्म दवारी रंग चढ़ाया, चिट्टी धार होया मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे श्री भगवान। श्री भगवान वेख के लेखा, दो जहान रहे जस गाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नेत्र तक्क के मिटे भुलेखा, भरम सके ना कोए जणाईआ। जिस जुग चौकड़ी पिछला रख्या चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार धर के वेसा, निराकार रूप वखाईआ। पंजां देवे इक संदेसा, वेद व्यासा नाल मिलाईआ। सुत्तयां खोल्लया आपे भेता, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। दसां दा इक्को नज़री आए नेता, नर निरँकार बेपरवाहीआ। जिस दी अन्तर आत्म सोहणी सेजा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। पूरब लेखा वेखो मुकदा, सो पुरख निरँजण आप मुकाईआ। अग्गे मार्ग पुरख अबिनाशी अचुत दा, चेतन सब नूं दए कराईआ। भगत भगवान नाता जुड़या प्यो पुत्त दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द गुरमुखां आ के पुछदा, अगला लेखा दए जणाईआ। गढ़ी वाला साका कदे ना लुक दा, पर्दा उपर ना कोए रखाईआ। कच्ची दीवार नालों उठ दा, टंक आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई सतिगुर पूरा, पूरे हथ्थ वड्याईआ। आपणा बचन करे पूरा, कीता कौल तोड़ निभाईआ। पंजां दे के सति सरूरा, सिदकीआं सिदक वखाईआ। जगत जहान दिसे कूड़ा, सच्चा मीत नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां चरण मस्तक लाई धूढ़ा, फ़तिह जैकार इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। ओह पंजां कीती इक अरदास, चरण ध्यान लगाईआ। गोबिन्द साडी अन्तिम ख्वाहिश, सद तेरी सेव कमाईआ। पुरख अकाल तेरे साथ, पिता पूत नज़री आईआ। जांदी वार चले आख, आख़र बेनन्ती तेरी झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम जिस वेले प्रगट होवें साख्यात, पुरख अकाल नाल खुशी मनाईआ। सदी बीसवीं साडी करीं याद, इकीवां हिस्सा तेरे नाल रलाईआ। जो इकीआं मिली दात, प्रभ दिती माण वड्याईआ। ओस वेले पुछीं वात, दर दोए जोड़ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। गुर गोबिन्द सच जणाउँदा ए। गढ़ी चमकौर भाग लगाउँदा ए। लग्गी आदि जुगादि तोड़ निभाउँदा ए। मैं वेखां कर के ग़ौर, जिस वेले कलयुग वेला अन्तिम आउँदा ए। पुरख अकाल तेरे नाल जावे बौहड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाउँदा ए। दो जहान वेखां अन्ध घोर, चोर यार ठग्ग मेल मिलाउँदा ए। जो तुहाढ़े नाल दित्ते तोर, अजीत जुझार जोड़ जुड़ाउँदा ए। ओन्हां सिर ते झुलणे चौर, सोहणी आपणी बणत बणाउँदा ए। जो नीहां थल्ले रख के उते खेल कीती होर, सो अवरी बणत बणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी

कार कमाउँदा ए। साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरी जोड़ी वेख ख़ुशी नाल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लैणा बुलाईआ। की आपणे कोल बुलावेंगा। पर्दा खोल्ह अहिवाल जणावेंगा। साचे कंडे तोल के तोल, तराज़ू इक्को इक वखावेंगा। आप बैठ सिँघासण अडोल, सृष्ट सबाई जगत डुलावेंगा। साडा पूरब लहिणा फोल, लेखा धुर दा झोली पावेंगा। कि मार के अन्तिम रोल, आपणे दर तों दूर दुरकावेंगा। असीं बच्चे तेरे अनभोल, की भुल्लयां गले लगावेंगा। गोबिन्द हस्स के कीता कौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साडी टुट्टी जोड़ जुड़ावेंगा। तुहाढ्ढी तुट्टी आपणे नाल जुड़ावांगा। बात करां धुर दी सुच्ची, घर मेला सच मिलावांगा। गंढु पवा के आपणी पुत्तीं, नाता धुर दा आप बणावांगा। आप खा के रुक्खी सुक्खी, तुहाढ्ढा सोहणा झट्ट लँघावांगा। जेहड़ी लालो घर लभ्भी नहीं पूरी लुची, नानक कोलों मंग मंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर ठांडे सोभा पावांगा। दर ठांडा अन्त सुहावांगा। कलयुग वेला वेख वखावांगा। बण सुहेला फेरा पावांगा। गुर चेला मेल मिलावांगा। सज्जण सुहेला इक अख्वांगा। वीह सौ वीह बिक्रमी अन्त, आपणा रंग रंगवांगा। इकीआं दी कोई ना जाणे गणत, दूआ एका जोड़ जुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां आपणे कोल मंगावांगा। पंजे मेरे कोल आओगे। पूरब पिछला पन्ध मुकाओगे। गुरमुख गुरसिख हो के मेरा नूर चन्द रुशनाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, घर सच्चे सोभा पाओगे। पंजे कहिण प्रभ तेरी ओट, दूजी सरन ना कोए तकाईआ। हुण मिलीए तेरी जोत, अन्तिम तेरा दीप करीए रुशनाईआ। बिन तेरे किसे दवारे ना माणीएं मौज, घर वेखण कोए ना पाईआ। तूं आपे करीं साडी खोज, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे लैणा बुलाईआ। दर ठांडे अन्त बुलावांगा। पूरब लहिणा मूल चुकावांगा । गुरमुख सच्चे आप प्रगटावांगा। मक्खण सिँघ वड वडयावांगा। सिँघ कपूर जोड़ जुड़ावांगा। अर्जन सिँघ अंग लगावांगा । जोगिन्दर सिँघ चन्द चमकावांगा। त्रलोचन इक अनन्द रखावांगा। पंजां पा के प्रेम प्यार दी गंढु, पिछला लहिणा मूल मुकावांग । साचा ढोला दस्स के छन्द, आत्म परमात्म भेव खुलावांगा। लेखा चुके हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा रंग दृढ़ावांगा। निहकर्मी हो के करां कम्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहवांगा। बेशक नज़र ना आवे पुरी अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटावांगा। मेरा नूर गुजरी चन्द, जिस दा नूर गुरमुखां उपर इक्को इक बरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी आपणी वंड वंडावांगा। सोहणी वंड वेख के चेत पहली, गुर अवतार ख़ुशी मनाईआ। परम पुरख लोकमात नहीं बणना वैली, वहिश्त

सब दी दए गंवाईआ। जिस नूं पीर पैगम्बर सजदा करे ऐली, इलाही इक्को नूर नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा नज़र ना आए कोई वैरी, दोखी दोख ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर पाए फेरी, जोती जाता पुरख बिधाता वेस वटाईआ। जिस ने पंजां डुब्बदी तारी बेड़ी, भार आपणे कंध उठाईआ। पूरब जन्म दी ढाह के ढेरी, साची बणत दिती बणाईआ। जिस दी सिफ्त करे क्या कोई केहड़ी केहड़ी, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों कूड़ी क्रिया जड़ जिस उखेड़ी, अग्गे धक्का दित्ता लाईआ। कोई ना कहे मेरी मेरी, माया ममता रिहा गंवाईआ। आत्म कहे परमात्म मैं तेरी चेरी, चेला गुरू शब्द सुरत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पंजां लहिणा दित्ता निवार, वेद व्यासा खुशी मनाइंदा। पंजां पैज दिती स्वार, पुरुष नारी रूप वखाइंदा। पंजां उत्तों पंजां उधार, दस दस जोड़ जुड़ाइंदा। चिट्टे वस्त्र कर त्यार, सोहणा रूप आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। चिट्टे वस्त्र मंगदे गए पोशाक, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे ध्यान लगाईआ। प्रभ नाल मिल के होईए प्रभू दी ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मढ़ी गोर ना रलीए ख़ाक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कूड़े विकीए ना किसे हाट, करता कीमत दए चुकाईआ। प्रभू चरण बंधाईए नात, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। घर मन्दिर खोल्हे ताक, मन्दिर शिवदुआले मड्ड लभ्भण कोए ना जाईआ। घर सरोवर देवे ताट, अठ सठ लेखा रहे ना राईआ। अन्दर वड़ के करे बात, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। गहर गम्भीर हो के देवे दात, बेनज़ीर वरताईआ। लेखा मंगे ना कोए हिसाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण के रंग चिट्टा सफेद, गुर अवतार रहे जस गाईआ। प्रभ साडे नाल पूरा कीता जो करया अहिद, अदालत आपणी सच वखाईआ। तेरे कोई ना बदले कानून कवाइद, बेकाइदगी विच कदे ना आईआ। लेखा मुकणा शरअ शरायत, शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी धुर दी कर इक हदाइत, हदीस इक्को इक समझाईआ। आपणा नाम कर अनाइत, दर ठांडे दे वरताईआ। असीं पूरा करीए फ़राइज़, बरदे ग़ुलाम बण के फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। कलयुग अन्त करीं ना कोई अज़माइश, पैमाने विच कोई ना आईआ। कलयुग जीव दिसण नालायक, ल्याकत बैठी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वाह वा दिती माण वड्याईआ। चिट्टे वस्त्र वेख ख़ुशीआं नाल नच्चण मलंग, मतैहरे मोढ्यां उते रखाईआ। सानूं पिछली भुल्ल गई पीती भंग, भंगढ़ा तेरे नाम दा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गई हंढ, आपणा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया विकार वेख्या गंद, आसा तृष्ना जगत हल्काईआ। तेरा गुरमुख तेरा भगत वेख्या नूरी चन्द, किरन किरन विच्चों रुशनाईआ।

गुर अवतार होए अनन्द, गीत सुहागी सोहणे गाईआ। साडी पूरी होई मंग, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, सजदा सीस झुकाईआ। तेरी किरपा परवरदगार, रहमत तेरी सरनाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। पूरब लेखा सर्ब निवार, अगले मार्ग पाईआ। उत्तम श्रेष्ट तेरा बिवहार, बिवहारी तेरी सच सरनाईआ। नेत्र वेख्या सोहणा जमाल, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। कन्नीं सुणया पूरब हाल, अहिवाल इक दृढ़ाईआ। जामा बदली विच्चों बदल के नार, नर नरायण खुशी वखाईआ। किरपा कर के पैज स्वार, पंजां पंजां होए सहाईआ। मुश्किल रही ना कोई दुश्वार, औखी घाटी ना कोए दरसाईआ। साची मंज़ल दित्ता चाढ़, फड़ बांहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वस्त्र चिट्टे वेख सतिजुग, होका दे के रिहा सुणाईआ। कलयुग औध गई पुग, कालख मिटी कूड़ी शाहीआ। किरपा करे प्रभ ठाकर मुझ, मुफ्त दया कमाईआ। रविदास दा लहिणा पिछला बुझ, पूरब लेख चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दसां वस्त्र दहि दिश धार, चार कुण्ट शनवाईआ। सतिजुग सति सति करे प्यार, सति सति समझाईआ। इक्को दरजा पुरख नार, परम पुरख दए वड्याईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख वेख जाण बलिहार, बलिहारी गुरू तेरी वड्याईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, निमस्कार हरिसंगत रहे समझाईआ। पिछला कर्जा लहिणा चुक्कया उधार, लेखा मूल रहिण ना पाईआ। परम पुरख दा दरस करो दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। जिस दा गुलशन हरिसंगत खिली गुलज़ार, पत्त डाली फुल महकाईआ। सो साहिब वेखण आया विच संसार, वड संसारी फेरा पाईआ। देवे वड्याई पुरख नार, हरि करता हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज पंज होए इकट्ठे, दस जोड़ जुड़ाईआ। प्रभ सरनाई सारे ढट्ठे, इक आवाज़ अल्लाईआ। पिछले प्रभू पाड़ पटे, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर रत्ते, रंग तेरा इक चढ़ाईआ। चाहे मंदे चाहे चंगे, सद तेरे ही अख्वाईआ। बेशक नेत्र नैणहीण अन्धे, अन्तर अन्तर बैठे ध्यान लगाईआ। किरपा कर सूरे सरबँगे, शहिनशाह तेरी शहिनशाहीआ। तुध बिन टुट्टी कोई ना गंढ्ढे, गंढ्ढणहार गोपाल स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं रविदास दे खा के सुक्के मण्डे, मण्डली घर विच दिती लगाईआ। उहदे चंगे लग्गे चार गंढ्ढे, चार युगां विच्चों उत्तम दित्ते बणाईआ। चार कहार तेरे नाल हंढ्ढे, जो चारे डोली डण्डे रहे उठाईआ। डोले वाली सवाणी मंग इक्को मंगे, घर सच्चे वास्ता पाईआ। कलयुग अन्त मेरा छुट ना जाए संगे, सोहणा संग वखाईआ। मैं राह तक्कां बैठी कन्ढे, कन्ढी वाट तेरा राह तकाईआ।

८१४ १६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी सरनाईआ। सच सरनाई देणी एकँकार, बेपरवाह दर तेरे मंग मंगाईआ। लहिणा देणा सर्ब निवार, चिन्ता रोग सोग मिटाईआ। बारां चेत जो विछड़न वाले हरिसंगत दे मीत मुरार, सज्जण संगी नज़री आईआ। कर किरपा ओन्हां कर उधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्की जीव करन पुकार, अन्दरे अन्दर रहे सुणाईआ। किसे दे दो किसे दे चार, किसे दे सत्त किसे दे अट्ठां तत्तां विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब लेखा दे मुकाईआ। प्रभ दी खेल वेख अजीब, हैरानी सब दे उते छाईआ। गुर अवतार आए करीब, पीर पैगम्बर नेरन नेरे डेरा लाईआ। परवरदिगार जुग चौकड़ी तेरी मन्न दे गए हदीस, तेरा हुक्म फ़रमाण आपणी झोली पाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर झूझ गए जुझार अजीत, निक्के बाले नीहां हेठ आसण लाईआ। गोबिन्द उह ना कीते सरजीत, सुत्तयां ना फेर उठाईआ। एह खेल दिसे अनडीठ, बिन अक्खां नज़री आईआ। कलयुग अन्त बेशक तेरी भगतां नाल प्रीत, जन भगत तेरा जस गाईआ। माण देवें ऊँच नीच, राउ रंक इक सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे भीख, ख़ाली झोली सर्ब भराईआ। नित नवित्त तेरी करदे सर्ब उडीक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। कलयुग अन्त अचरज चलावें रीत, रीतीवान तेरी समझ कोए ना आईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ । प्रेम प्यार दी गंढु पीच, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण तेरी अचरज लीला, समझ विच किसे ना आईआ। लाल कंचन सूहा चिटा वेख पीला, नीला काला सोभा पाईआ। शब्दी गुर बणाउँदे रहे सर्ब वसीला, लोकमात जोड़ जुड़ाईआ। भगत भगवान बणदा रिहा कबीला, सोहणी वंड वंडाईआ। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप आपणा कर के हीला, साचा मेला ल्या मिलाईआ। खुशीआं नाल कहे गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जिन्ना चिर चाहे ओनां चिर जी ला, जग जीवण दाता दया कमाईआ। नाम निधान बिन प्यासिउँ पी ला, रस आपणा इक चखाईआ। रविदास चुमारा गुरमुख रूप हो के जिन्हां बणया वसीला, वसल साचा दए कराईआ। चौकड़ी पिच्छों आया वीह सौ इक्की दा चेत महीना, चेतन सब नूं दए कराईआ। जन भगतो तुहाड्ढा ठांडा करे सीना, अमृत धार इक वहाईआ। परम पुरख प्रभ दाना बीना, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। एथे मिसाल नहीं कोई जल मीना, हाज़र हो के रहमत आप कमाईआ। चरणां हेठ दबाए लोक तीनां, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे अग्गे होए अधीना, अदने हो के सेव कमाईआ। गुरमुखो तपस्सया विच तप के किसे दा वगण ना देवे पसीना, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। परम पुरख परमात्मा कदे ना जाणो नाबीना, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शाह अस्वार बण के पाखरां पाओ

जीना, अस्व आपणे उते दित्ते चढ़ाईआ । आ के वेखो गुरमुख गुरसिख मेरा नगीना, जिस दी कीमत लोकमात ना कोए चुकाईआ। देवे वड्याई साहिब प्रबीना, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। आप बणया रहे मस्कीना, ग़रीबां विच्चों ग़रीब नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दूर दुराडे आ गए नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। चलो वेखीए जिथ्थे प्रभू दे लग्गे डेरे, जन भगतां संग निभाईआ। शेर हो के शेरां पाए घेरे, भबक आपणा नाम सुणाईआ। पिछले लेखे रिहा नबेड़े, जगत झेड़े रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। आ के अग्गे तक्कया खेल, ख़लक रहे जणाईआ। निरगुण दा निरगुण नाल होया मेल, सरगुण सरगुण ख़ुशी वखाईआ । परम पुरख प्रभ सज्जण सुहेल, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। इक्को रंग गुरु गुर चेल, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। पारब्रह्म प्रभ अचरज करया खेल, सतिजुग साची बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान लेखा दए दृढ़ाईआ । जन्म जन्म दा जावे खटका, पिछली खट्टी झोली पाईआ। भाग लगावे काया मटका, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। तेरा मुआफ़ कीता पिछला खाधा झटका, छुरी भुल्ल ना कोए टिकाईआ। तेरा लेखे लग्गा नीला बद्धा पटका, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। तेरा काया गठड़ी फोल के वेखे बसता, जिस अन्दर गोबिन्द प्रीती बंद कराईआ। गोबिन्द मेल नहीं जग सस्ता, बिन पुरख अकाल ना कोए कराईआ। अग्गे सोग रिहा ना हरखा, चिन्ता ग़म चुकाईआ। गुरमुख बिन कसवटीउँ गया परखा, पारखू इक्को बेपरवाहीआ। जिस दे हथ्थ धुर दा पर्चा, चौदां विद्या विच्चों समझ किसे ना आईआ। दर आया नूं अनमुल्ला दित्ता ख़र्चा, नाम भण्डारा झोली पाईआ। दर दर घर घर गली कूचे हुण साडा करदे चर्चा, उहला कोई रहिण ना पाईआ। चाली साल दा पूरा कीता हर्जा, ख़ज़ाना इक्को वार भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। खटका रहिण ना देवे हरि जू अन्दर गुरसिख, भगतां दए वड्याईआ। धुर दा लेखा देवे लिख, ना कोई सके मात मिटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दो जहानां पए दिस, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। अनमुलड़ी दौलत पाए भिख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। जो हिरदिउँ गोबिन्द दा बणया सिख, तिन्हां सिखां लए मिलाईआ। जो बेमुख हो के बैठे दे के पिठ, तिन्हां देवे दर दुरकाईआ। प्रभू दे हथ्थ अन्दर दी खिच, तार आपणी आप हिलाईआ। जे गुरमुख मिलण नूं होवे जिच, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। गुरमुख चौड़ी कर के फिर हिक, सतिगुर मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। वेख वड्याई मिलदी मात, भुल्ल रहे ना राईआ। जिन्हां दा लेखा लिख्या बिन कलम दवात, तिन्हां दी शहादत देवे गवाहीआ। साहिब सतिगुर प्रगट हो साख्यात, सच सिख्या इक

दृढ़ाईआ। एधर तक्को बेशक पंज पंज दे दस नारी ज़ात, नरायण एन्हां विच्चों नज़री आईआ। जिन्हां माणस जन्म विच्चों दिती आपणी दात, मानुख रूप वटाईआ। पूरब पूरी कीती आस, सोहणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान बेपरवाहीआ। जिस पिछला लेखे लाया पंडत, जन्म जन्म जन्म विच भवाईआ। सो लेखा जाणे जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जो गुरमुख इक वार मिल गया हरिसंगत, तिस अग्गे देवे ना कोए सज़ाईआ। साहिब सतिगुर चाढ़े आपणी रंगत, रंग रत्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा झोली पाईआ। रविदास ने मारया इक हनोरा, खुशीआं नाल जणाईआ। जे नाता जुड़या तोरा मोरा, होवे ना कोए जुदाईआ। बेशक एन्हां दा वक्त कहि गया थोड़ा, अग्गा नेड़े आईआ। प्रभू तेरे कोलों विछड़न नहीं देणा जोड़ा, जोड़ा जोड़ी जोड़ी तेरे चरणां रंग रंगाईआ। मेरे कोल अजे उह चिटा काग़ज़ कोरा, जो पिछले जन्म विच लेखा ल्या लिखाईआ। क्यों तरसाएं आपणा भण्डारा वरताएं भोरा भोरा, भुख्या ना कोए सवाईआ। जे हुण ना पावें मोड़ा, मुड़ के तेरा संग ना कदे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपाल ठाकर ठोकर दे लगाईआ। रविदास किहा मनाईए नाल ज़ोर, बल आपणा आप प्रगटाईआ। तेरे हथ्थ केहड़ी थोड़, देंदयां की घट जाईआ। एन्हां दी भैणां भरावां पुत्रां स्त्री सब नूं लोड़, हौके लै लै अन्दरे अन्दर सर्ब सुणाईआ। मैं कोटन कोटि टुट्टे छित्तर दित्ते जोड़, आर डोरी गंढु पवाईआ। पारब्रह्म तेरे दर केहड़ी थोड़, अतोट अतुट तेरी बेपरवाहीआ। एह निक्की जिही पई मैनूं लोड़, तैनूं रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देदे धुर दा वर, मेरा संग लैणा तराईआ।

* २ चेत २०२१ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

बीस इकीसा शाह सिक्दार, शहिनशाह दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण खोल्ह ठांडा दरबार, सति दवारा इक सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सार, एकँकार कार कमाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, जोती जाता नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता हो त्यार, श्री भगवान भेव चुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे ख़बरदार, ब्रह्म सोया आप उठाइंदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, हर घट वासी फेरा पाइंदा। मण्डल रासी खेल अपार, दो जहानां सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे विगसे वेखणहार, आदि जुगादि आपणा हुक्म वरताइंदा। लहिणा देणा दे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आसा पूर कराइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बीते संसार, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि अचरज खेल वखाइंदा।

बीस इकीसा हरि निरँकारा, देवणहार वड्याईआ। जन भगतां वखा इक दवारा, दर दरवाज़ा दए जणाईआ। पूरब जन्म दा लाहे उधारा, मकरूज कर्ज़ा आप चुकाईआ। साचा देवे इक प्यारा, प्रेम प्रीती सर्ब दृढ़ाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, कातब सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि देवणहार वड्याईआ। जुग चौकड़ी मुकया पन्ध, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा कर के कलम बंद, बंदगी लख चुरासी जीव जंत गए दृढ़ाईआ। ढोला गीत कलमा नबी रसूल गा के छन्द, कायनात करी पढ़ाईआ। भेव खुलाउँदे रहे हँ ब्रह्म, सो साहिब सिफ्त सुणाईआ। नाम जपाउँदे रहे दमा दम, पवण स्वासी स्वासां नाल मिलाईआ। नेत्र नीर वहाउँदे रहे छमा छम, बण वैरागी इक वैराग जणाईआ। नाम ख़ज़ाना देंदे रहे दौलत धन, अनमुलड़ी दात वरताईआ। भेव खुलाउँदे रहे फूकां मार के विच कन्न, नेत्र लोचण बंद जणाईआ। जोत निरँजण चाढ़दे रहे घर घर चन्न, नूरो नूर नूर समझाईआ। बण खेवट खेट बेड़ा चलाउँदे रहे जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी कर दे रहे बिवहार, बण बिवहारी फेरा पाईआ। लै के हुक्म सच्ची सरकार, साचा नूर रुशनाईआ। चाकर बण के तेई अवतार, लोकमात चरण कँवल ध्यान लगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मंगदे रहे धूढ़ी छार, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। नानक गोबिन्द दस्स दे रहे प्यार, चरण प्रीती इक जणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द नाअरा हक़ बोल जैकार, नादी शब्दी ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मंगदे रहे भिख़, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। शास्त्र सिमरत लेखा रहे लिख, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। बिन सतिगुर पूरे आत्म परमात्म किसे ना कीता हित, घर सज्जण ना कोए मिलाईआ। करवट लए ना जो सुत्ता दे कर पिठ, सनमुख हो ना दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। जुग चौकड़ी कैहन्दे गए बीस इकीस, इक्की सतिगुर इक्को पाईआ। प्रगट होवे हरि जगदीश, जगदीश्र दाता बेपरवाहीआ। जिस दी कोई ना करे रीस, सानी नज़र कोए ना आईआ। धुर फ़रमाणा देवे ठीक, ठीकर जुग चौकड़ी भन्न वखाईआ। जिस दी आदि जुगादि धार बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उस दी सारे करन उडीक, दो जहान राह तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां करे प्रीत, सच प्रीती इक लगाईआ। नाता तोड़ ऊँच नीच, राउ रंक दए सरनाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता मेटे लीक, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। भेव खुल्हाए लाशरीक, सिरकत सब दी दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो रुत्तड़ी रिहा सुहाईआ। सो साहिब सतिगुर आया एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। पूरब पूरा करे लेख, अगला लेखा

दए जणाईआ। भागां भरया महीना चेत, रुत्त बसन्ती इक महकाईआ। जन भगतां कर के हेत, प्रेम प्रीती इक दृढ़ाईआ। शब्द संदेसा धुर दा भेज, गुरमुख सोए रिहा उठाईआ। अन्तर आत्म माणे सेज, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतो वाट अग्गे निक्की, प्रभ पैंडा रिहा मुकाईआ। जिस दी धार दस्सदे रहे तिक्खी, सो दातारी आपणी कार कमाईआ। चार वरन दी साची सिक्खी, पुरख अकाल इक बणाईआ। जगत नेत्र किसे ना दिसी, निज नेत्र रिहा समझाईआ। ऐधर वेखो गोबिन्द पिछली लै के आया चिट्ठी, परवाना आपणा रिहा फड़ाईआ। प्रभू तेरी प्रीती लग्गे मिट्ठी, दूजा संग ना कोए निभाईआ। दर दरवेश खड़े कोटन कोटि मुनी ऋषी, तपी तपीश्र नैणां नीर वहाईआ। साडी किसे कम्म ना लग्गी पंज तत काया मिटी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा कोए ना पाईआ। जगत वासना वेखी फिकी, कूड़ी क्रिया मोह हल्काईआ। मन मति दुहागण आ के पिट्टी, खुल्ह्ड़े केस रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत सुहेले सुणो मित, मित्र प्यारा इक दृढ़ाईआ। एथे ओथे सतिगुर कदी ना देवे पिठ, साम्हणे हो के दरस दिखाईआ। धुर दा लेखा देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, झूठी करे ना कोए पढ़ाईआ। ज़ात पात दी नहीं कोई भिट, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म साचा हित, घर मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां प्रभू दृढ़ाउँदा ए। धुर दा भेव आप खुलाउँदा ए। निरगुण हो के सरगुण सेव कमाउँदा ए। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह पर्दा लौंहदा ए। सच दवारा इक खुल्हा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाउँदा ए। पतिपरमेश्वर बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाउँदा ए। गुर अवतार बणा गवाह, सोहणा हुक्म आप सुणाउँदा ए। जो साहिब सरनाई गया आ, लख चुरासी फंद कटाउँदा ए। राए धर्म ना दए सज़ा, चित्रगुप्त ना लेख वखाउँदा ए। लाड़ी मौत ना लए प्रना, स्वर्ग बहिश्त दोज़ख सब दा डेरा ढौंहदा ए। कोटन कोटि जन्म दे बख्श गुनाह, सिर आपणा हथ्थ रखाउँदा ए। आपे बण के पिता माँ, गुरमुख बाले गोद सुहाउँदा ए। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाउँदा ए। नथाव्याँ देवे थाँ, साची भूमिका इक वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराउँदा ए। हरिजन साचे आप तरावांगा। धुर दा लेखा झोली पावांगा। भरम भुलेखा दूर करावांगा। साचा नेता इक्को नज़री आवांगा। खेवट खेटा बण के बेड़ा आप चलावांगा। धुर संदेस इक्को भेजा, भाण्डा भरम भउ भंनावांगा। जन भगतां अन्दर वड़ के माणां सेजा, पलँघ रंगीला इक सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनमुलड़ी दात आप वरतावांगा। अनमुलड़ी दात प्रभू वरतावेगा। मेहरवान दया

कमावेगा। नौ दवारे वेख वखावेगा। सुखमन टेडी बंक पार करावेगा। ईड़ा पिंगल लहिणा देणा आप चुकावेगा। अमृत आत्म जाम प्यावेगा। अनहद नाद अनहद राग सुणावेगा। बजर कपाटी पड़दा आप उठावेगा। काया मन्दिर साची हाटी, सोहणी वस्त इक दरसावेगा। कर प्रकाश बिन तेल बाती, दीआ इक्को इक डगमगावेगा। सच सुहञ्जणा कमलापाती, सच सिँघासण सोभा पावेगा। मेल मिलावा दिवस राती, पिछला विछोड़ा दूर करावेगा। आत्म परमात्म बण के साथी, सोहणा संग आप हो जावेगा। मंज़ल मंज़ल पार करा के घाटी, साचे मन्दिर आप बहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगावेगा। जन भगतां रंग रंगाएगा। काया मन्दिर मृदंग वजाएगा। सच दवारे लँघ, पर्दा आप उठाएगा। किरपा कर सूरा सरबँग, सुहबत आपणी आप समझाएगा। कर प्रकाश अगम्मी चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाएगा। भेव चुके हँ ब्रह्म, सो आपणा राह वखावेगा। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म कांड डेरा ढाहेगा। भाग लगावे काया माटी चम्म, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाएगा। नाम दृढ़ाए दमा दम, अजपा जाप आप कराएगा। मन वासना मेटे मन, मन का मणका आप भवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप उठाएगा। जन भगतां प्रभू उठावेगा। निरगुण हो के दरस दिखावेगा। सरगुण पड़दा उहला आप चुकावेगा। बण विचोला वेख वखावेगा। सोहँ ढोला इक सुणावेगा। जन्म जन्म दा कर के भार हौला, तुरत आपणा रंग रंगावेगा। उलटा कर के नाभ कौला, बूँद स्वांती मुख चवावेगा। देवे वड्याई उपर धवला, सिर आपणा हथ्थ रखावेगा। नूर इलाही इक्को अवल्ला, आलमीन वेस वटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां गोद बहावेगा । जन भगतां मेला पुरख समरथ, प्रभू दए वड्याईआ। सब दी झोली पाए हक़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुखां अन्दर वड़ के गावे जस, सच नाम सिफ्त सालाहीआ। जिन्हां दे अन्दर रखे शक़, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। गुरमुखो आपणे मिलण दी खोल्हे अक्ख, जागत सोवत दरस दिखाईआ। लख चुरासी नालों कर के वक्ख, वक्खरी धार इक दृढ़ाईआ। दूर दुराडा आवे नट्ठ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सति सन्तोख धीरज देवे जत, ब्रह्म मति इक पढ़ाईआ। नाम जैकारा बोल अलख, अलख अलखना दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन सारे होए इकट्ठे, अन्तर आत्म रहे जणाईआ। परम पुरख प्रभ तेरे बच्चे, बचपन तेरी झोली पाईआ। नाता जोड़ भैण भाई सके, हरिसंगत इक्को रूप नज़री आईआ। तेरा दरस करदयां कोई ना अक्के, थकावट संग ना कोए रखाईआ। कोई रहे लोड़ ना मदीने मक्के, काया काअबा साचा हुजरा इक सुहाईआ। मुरीद मुर्शद बाहर जा कोई ना लभ्भे, घर दीदार देणा बेपरवाहीआ । परवरदिगार रहिणा सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे तेरी शरनाईआ। साडी तेरे हथ्थ

लज्जे, लज्जयावान नूर खुदाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर बद्धे, प्रीती प्रेम विच जुड़ाईआ। पीर पैगम्बर नबी रसूल कलम शाही सारे लेख छड्डे, झगड़ा मुकया जगत लोकाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर तेरी लँघ के वेखी हद्दे, घर सच्चा सोभा पाईआ। जिथ्थे विश्व इक्को यद्दे, ब्रह्म रूप नज़री आईआ। बोध अगाधा नाद वज्जे, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदा करदे अग्गे, सीस जगदीश झुकाईआ। सारे वेखे पैरी नंगे, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ । जन भगत कहिण प्रभ सच वखा हरी हरि मन्दिर, काया बंक मिले वड्याईआ। तेरा मेला होवे अन्दरे अन्दर, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। बजर कपाटी तोड़ जन्दर, नाम खण्डा इक खड़काईआ। मन वासना भवे ना बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। किसे दवारे ना जाईए मंगण, घर घर अलख ना कोए जगाईआ। तेरे प्रेम दी चढ़ जाए रंगण, जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। साचा दे दे परमानंदन, निजानंद तेरी रसाईआ। कोटन कोटि तेरे दर ते खड़े त्रिलोकी नंदन, राम कृष्न बैठे सीस झुकाईआ। तेरे चरणां हेठ कोटन कोटि दिसे ब्रह्मण्डन, ब्रह्मांड वज्जे तेरी वधाईआ। तेरा लेखा जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज तेरी सरनाईआ। कर किरपा मस्तक चरण धूढ़ी लावे चन्दन, टिक्का इक्को सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया दूई द्वैती ढाह दे कंधन, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। तेरे गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले तेरे नाल हंढुण, दूजा संगी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी इक वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ सुण लै ठाकर, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। कलयुग दिसे डूंग्घा सागर, सरगुण देवे कोई ना ढोईआ। निर्मल कर्म ना होए उजागर, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सच दुआर मिले ना आदर, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। जन भगत नेत्र नैण वहावण नीर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिरहों विछोड़ा लग्गी पीड़, तुध बिन सके ना कोए मिटाईआ। जगत बन्धन बंधप विच होए दिलगीर, धीरज सके ना कोए धराईआ। दीन मज़्हब शरअ वज्झा ज़ंजीर, कड़ी कड़ी सके ना कोए खुल्हाईआ। तेरा दरस दरस होवे बेनज़ीर, नज़रीआ नज़र दे बदलाईआ। अट्ठे पहर इक तस्वीर, बिन तसबी माला वेख वखाईआ। आदि जुगादी धुर दे पीर, पैगम्बर तेरी शरनाईआ। तेरा लेखा शाह हकीर, हज़रत तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। साची दया आप कमाउँदा ए। जन भगतां भेव खुल्हाउँदा ए। जुग चौकड़ी मेल मिलाउँदा ए। कलयुग अन्तिम रंग रंगाउँदा ए। निरगुण हो के वसे संग, सरगुण सोहणी बणत बणाउँदा ए। आत्म परमात्म दे अनन्द, रस इक्को इक वखाउँदा ए। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गावे छन्द, तिस आपणे

घर बहाउँदा ए। एथे ओथे पावे ठंड, अग्नी तत आप बुझाउँदा ए। सुरत सवाणी ना होवे रंड, कन्त सुहागी मेल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक दृढ़ाउँदा ए। सच्चा मार्ग इक दृढ़ाउँदा ए। सृष्ट सबाई आप समझाउँदा ए। नौ खण्ड पृथ्मी हुक्म वरताउँदा ए। सत्त दीप भेव खुल्हाउँदा ए। वड्ड देवी देव वेस वटाउँदा ए। निहचल धाम इक सुहाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म मनाउँदा ए। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर आपणी कार कमाउँदा ए। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग वेला अन्तिम आउँदा ए। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल फेरा पाउँदा ए। जल्वागर दए दीदार, दीद इक चन्द रुशनाउँदा ए। कूड़ी क्रिया मेट धूंआँधार, अन्ध अज्ञान आप गवाउँदा ए। आदि जुगादी सच जैकार, शब्दी जोती ढोला राग सुणाउँदा ए। अक्खरां नाल ना करे प्यार, निरअक्खर आप प्रगटाउँदा ए। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक आधार, आत्म परमात्म आपणी कार कमाउँदा ए। पंज तत काया चोला तन शृंगार, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाउँदा ए। त्रैगुण माया दे भण्डार, रजो तमो सतो आप वरताउँदा ए। कर खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा रंग वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच्चा राह चलाउँदा ए। सतिजुग राह सोहँ सो, सो साहिब करे पढ़ाईआ । आत्म परमात्म लग्गे मोह, घर मेला सहिज सुभाईआ। गृह मन्दिर करे लो, दीपक जोत इक रुशनाईआ। साचा ढोआ देवे ढो, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जन भगतां जोगा आपे हो, आपणे नाल करे कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया अन्दरों लवे खोह, दुरमति मैल दए धवाईआ। जगत प्यार नालों कर निरमोह, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। आत्म परमात्म जावे छोह, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलाईआ। जन भगतां मेल मिलावा करे आप, घर घर विच खेल खलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जप दे गए सोहँ जाप, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान आपणा वाधा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, ना कोई रोग ना संताप, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। बण वणजारा खोल्हे हाट, देवणहारा धुर दी दात, अलख अगोचर आप वरताइंदा। चरण प्रीती जोड़े नात, दरस दिखाए साख्यात, सखी सरवर फेरा पाइंदा। देवणहारा आबेहयात, वेखणहारा कायनात, दो जहानां पर्दा आप चुकाइंदा । भगत भगवन्त देवे साथ, सच सुणाए इक्को गाथ, ढोला आपणा राग अल्हाइंदा। तेरी मेरी इक्को ज़ात, आदि जुगादि ना होए वफ़ात, गुरमुख मढ़ी गोर ना कोए दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण रखाइंदा। जन भगतां माण रखाउँदा ए। श्री भगवान संग निभाउँदा ए। घर आत्म दे अनन्द, चन्द नूर जोत रुशनाउँदा ए। जुग जन्म दी टुटी गंढ, घर मेला सच मिलाउँदा ए। तूं मेरा मैं

तेरा छन्द, सोहणा वक्त आप सुहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक रखाउँदा ए। साची देवे धुर दी सिख्या, हरि मन्त्र नाम पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई जाणो मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जो गुरमुख गुरसिख सतिगुर हट्ट विकया, तिस कीमत दए चुकाईआ। माणस जन्म अनमुल्ला जितया, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दिलासा, जगत दलिद्दर दे मिटाईआ। अन्तिम पूरी कर दे आसा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। नाम भण्डारा भर दे कासा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। गुर अवतार तेरा देंदे गए भरवासा, लेखा लिख के कलम शाहीआ। तुध बिन पूरा करे कोई ना घाटा, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। अन्तिम नेड़े आई वाटा, पिछला पन्ध बैठे चुकाईआ। साडा लहिणा छुट्ट जाए तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नहावण कोए ना जाईआ। झगड़ा चुक्के मन्दिर मस्जिद माठा, सिल पूजस सीस ना कोए निवाईआ। घर विच घर कर जोत परकासा, अनहद नादी धुन दे शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरी ज़ाता, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। आत्म परमात्म पुछ आण के वाता, सनमुख हो के पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। मेहरवान क्यों बैठों चुप, घर घर विच डेरा लाईआ। भगतां कोलों क्यों रिहों लुक, अक्ख शरम क्यों शरमाईआ। असीं कबीर जुलाहे कोलों ल्या पुछ, घर मिले बेपरवाहीआ। सदा देवे ख़ज़ाना अतुट, नाम भण्डार आप वरताईआ। लोकमात दा बूटा पुट्ट, सचखण्ड आपे देवे लाईआ। आवण जावण ओसे वेले जाए छुट, जिस वेले आपणी दया कमाईआ। जे प्रेम कर के कहे आ मेरे पुत, पिता बण के गोद उठाईआ। फिर दो जहान गुरमुख तैनूं जावण झुक, अग्गे अक्ख ना कोए उठाईआ। जे तुहाढे नालों साहिब जावे रुस्स, घर सज्जण ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दे मुकाईआ। जन भगत उठ के रहे घूर, श्री भगवान रहे डराईआ। प्रभ साडा देदे सानूं नूर, क्यों बैठा बंद कराईआ। चार कुण्ट तैनूं करीए मशहूर, डंका तेरा नाम वजाईआ। साडे विच जे कोई कसूर, उह वी तेरी झोली पाईआ। तैनूं होण नहीं देणा मफ़रूर, भज्ज सके ना बेपरवाहीआ। पहली चेत पा के जूड़, काया अन्दर लैणा टिकाईआ। जिंना चिर काया चोली रंग ना चाढ़ें गूढ़, तेरी सेवा सानूं कदे ना भाईआ। प्रभू तूं साडा मज़दूर, जुग जुग सेव कमाईआ। जिंना चिर साख्यात नज़री आवें ना हाज़र हज़ूर, सारे बैठीए मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। अजे प्रभू तेरे नाल झगड़ा, जन भगत रहे जणाईआ। पाणी विच ठार के गुफा विच वड़ के साथों सहया ना जाए रगढ़ा, अट्ठे पहर तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। सम्मत इक्की तैनूं होण नहीं देणा वक्खरा, फ़रेबीआ तेरा फ़रेब देणा गंवाईआ। असीं

८२२
१६

कोई नहीं फोलणा चार युग दा पत्रा, तेरा नाम तेरा ज्ञान आपणे अन्दर बंद कराईआ। तेरे संग रल के सानूं कोई ना रहे ख़तरा, दो जहान भय ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तैथों मंगदे रहे इक्को कतरा, असीं झोलीआं लैणीआं भराईआ। तेरी भेंटा कोई नहीं देणा बक्करा छत्तरा, मुर्गा अग्गे ना कोए टिकाईआ। प्रभू साडे नाल लख चुरासी नालों हो के वक्खरा, कौल इकरार दे निभाईआ। बेपरवाह तेरा चल्लण नहीं देणा नख़रा, सारयां इक्को सलाह रखाईआ। भगतां कोलों प्रभ क्यों रहे अड्डरा, घर वक्खरा क्यों बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दे चुकाईआ। पर्दा उहला चुक भगवान, जन भगत रहे जणाईआ। चार युग तेरा लभ्भदे रहे निशान, तूं लुक्या रिहों बेपरवाहीआ। तेरा अक्खरां विच्चों हथ्थ ना आया किसे ज्ञान, अल्फ़ ये रही कुरलाईआ। आपणा दस्स इक ईमान, जिस विच रहमत नूर इलाहीआ। आ के दे संदेसा पैग़ाम, आपणी कर सच पढ़ाईआ । तूं साहिब वड अमाम, सही सलामत नज़री आईआ। दर बरदे हो के करीए सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। साडे अन्दरे अन्दर बदल दे नज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। कूड़ी क्रिया सानूं दिसे हराम, इक्को हुजरा तेरा सोभा पाईआ। नग़मा नाअरा तेरी सुण कलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन साचे रहे सुणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडा वेख बल, बल तेरा नज़री आईआ। हुण नहीं करन देणा वल छल, अछल छलधारी तेरी चले ना कोए चतुराईआ। निरगुण हो के साडे अन्दर रल, रल मिल सोहणी खुशी मनाईआ। दीपक हो के जोती बल, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। अमृत हो के बरख जल, अगम्मी धार वहाईआ। धुर संदेस आपणा घल्ल, बोध अगाध समझाईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ल, आत्म सेजा सोभा पाईआ। कर किरपा जे हो जाए साडे वल, सानूं होर लोड़ रहे ना राईआ। साडे नाल तूं प्रबल, बिन भगतां तेरा नाम ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जल थल, महीअल तेरी ओट तकाईआ।

* २ चेत २०२१ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर *

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, सति सतिवादी आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण खोलृ किवाड़, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। एकँकार हो त्यार, हरि करता सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, घर दीआ दीपक इक्को डगमगाइंदा । अबिनाशी करता पावे सार, भेव अभेदा आप खुलृाइंदा। श्री भगवान निरगुण धार, अनभव आपणी खेल रचाइंदा। पारब्रह्म बेअन्त बेऐब परवरदगार, नूरी जलवा डगमगाइंदा। मुकामे हक़ शाह सिक्दार, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। महल अटल उच्च मनार,

छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। रूप रंग रेख ना पावे कोई सार, पर्दा उहला आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड साचे साहिब डेरा, पुरख अकाल इक लगाईआ । दूर दुराडा नेरन नेरा, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। आदि जगादि जुग चौकड़ी करे हक़ नबेड़ा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाईआ। घर सच सुहाए सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे इक वधाईआ। पुरख अकाल श्री भगवन्त, शाहो भूप डेरा लाईआ। दो जहानां साचा कन्त, नर हरि नरायण इक अख्वाईआ । घर विच घर बणाए बणत, घाड़त अगम्म अथाह घड़ाईआ। आपणा लेखा रखे बेअन्त, सोच समझ ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। घाड़त घड़े अगम्म अथाह, अपरम्पर धार चलाइंदा। सचखण्ड निवासी बेपरवाह, पर्दानसीं नज़र किसे ना आइंदा। मुकामे हक़ सोभा पा, लाशरीक डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण आपणी वंड वंडा, साचा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड अन्दर थिर घर साचा दए सुहा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दीआ बाती कमलापाती जोत अगम्मी दए जगा, सच प्रकाश आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करे करतार, हरि करता बेपरवाहीआ। आदि पुरख प्रभ हो त्यार, आपणी करनी कार कमाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, संगी संग ना कोए रखाईआ। कर खेल सच्ची सरकार, साख्यात आपणी धार प्रगटाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण नार कन्त जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण मेला अपर अपार, घर घर विच खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण देवे साथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपणा जाणे खेल तमाश, रचना आपणी आप रचाईआ। सच दवारा खोल्हे ताक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर प्यारा, निरगुण सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। निरगुण पुरख निरगुण नारा, निरगुण पूत सपूता इक्को जाईआ। निरगुण महल सच मनारा, निरगुण बहि बहि खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर माण वड्याई देवे भगवन्त, हरि करता दया कमाइंदा। सुत दुलारे बणा बणत, शब्दी रूप आप समझाइंदा। तेरा लेखा आदि अन्त, मध तेरी धार वखाइंदा। तेरी महिमा सदा बेअन्त, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। तेरा नाउँ बोध अगाधा पंडत, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सुत दुलारे माण रखाइंदा। शब्दी सुत थिर घर वड़, सचखण्ड वेखे बेपरवाहीआ।

चरण कँवल सीस धर, निमस्कार इक कराईआ। साचा नाम रिहा पढ़, तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे लग्गा डेरा, डण्डौत आपणी इक वखाईआ। नित नवित्त आदि जुगादि जुग चौकड़ी बन्नणा बेड़ा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। पुरख सुल्तान श्री भगवान हरि मेहरवान सचखण्ड वसदा रहे तेरा खेड़ा, थिर घर मिले मोहे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा जणाईआ। साचा लेखा शब्दी सुत, घर साचे मंग मंगाइंदा। वेखां खेल अबिनाशी अचुत, मेहरवान तेरी आस रखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश प्रकाश मौले तेरी रुत्त, दो जहान तेरी फुल फुलवाड़ी वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उजल करां मुख, त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, साचा लेखा तेरे हथ्थ रखाइंदा। साचा लेखा प्रभ समरथ, तेरे हथ्थ वखाईआ। निरगुण हो के महिमां गावां अकथ, सोहणा ढोला राग सुणाईआ। साचे गृह मन्दिर घर जावां वस, चरण कँवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। देणी वड्याई पारब्रह्म, तेरी इक्को ओट तकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना जन्मां ना जावां मर, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। निरगुण सरगुण खेल कर, लख चुरासी बन्धन पाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज घाड़त घड़, चारे खाणी रंग रंगाईआ। चारे बाणी धुर दा ढोला लवां पढ़, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा नाउँ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग इक बंधावां साचे लड़, पल्लू धुर दी गंढु बंधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात जोत धर, पंज तत दयां माण वड्याईआ। शब्दी शब्द जैकार बोल नाअर, सोहणा राग अनाद सुणाईआ। जन भगतां दे के धुर दा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लवां फड़, अन्तर आत्म मेला सहिज सुभाईआ । गुरमुख गुरसिख चुकावां भय डर, भ्यानक रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, नित नवित्त साची सेव कमाईआ । नित नवित्त सेव करां संसार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाम जैकारा बोल अपार, धुर दा राग दयां दृढ़ाईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान भेव चुकाईआ। अञ्जील कुराना दे निशान, सच ईमान इक दृढ़ाईआ। कलमा नबी रसूल बोल ज़बान, अलिफ़ ये मेला सहिज सुभाईआ। खाणी बाणी कर परवान, नाम परवाना इक दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सदा स्वामी तेरी सेव कमाईआ। सदा सेव तेरी स्वामी, शब्दी शब्द आप कमाईआ। धुरदरगाही अगम्मी बाणी, लेखा लिखां कलम शाहीआ। हर घट बण के अन्तरजामी, वेख वखावां थाउँ थाईंआ। जन भगतां दे इक निशानी, सच निशाना दयां वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल महानी, महाबली सूरबीर तेरी वेख वखाईआ। नाम निधाना तेरा तीर कानी, चिला शस्त्र धनख टंक इक्को नज़री

आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बेअन्त तेरी सरनाईआ। बेअन्त बेपरवाह ठाकर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दो जहान डूंघा सागर, जीव जंत भेव ना पाईआ। जोद्धे सूरबीर बहादर, शाह सुल्तान तेरे हथ्थ सच्ची शहिनशाहीआ। धुरदरगाही करीम करते कादर, कुदरत तेरा नूर नज़री आईआ। पीर पैगम्बर मुल्लां शेख़ मसायक तेरे दर ते मंगदे आदर, आदर्श तेरा वेख वखाईआ। लोक परलोक चौदां तबक करना अदल, अदालत इक्को इक वखाईआ। लेखा जाणे मक्तूल, कातिल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। देणी वड्याई श्री भगवान, शब्दी सुत मंग मंगाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेव कमाइंदा। दर दरवेश बण के मंगण दान, ख़ाली झोली सर्ब डाहइंदा। तूं लेखा जाणे नौजवान, नईया नौका आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। तेरे दर इक अलख हरि करते सच जणाईआ। निरगुण सरगुण खेल समरथ, नित नवित्त रचन रचाईआ। बोध अगाध शब्द नाद बोल अकथ, खाणी बाणी वंड वंडाईआ। लख चुरासी जीव जंत चला रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जन भगतां खोल्ह अन्तर अक्ख, मेल मिलावा एका थाईंआ। शब्द अगम्मी मार सट्ट, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सच दृढ़ा सतिगुर मति, मनमति लेखा दए मुकाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत लेखे पाईआ। एथे ओथे रखें पत्त, दो जहानां इक सरनाईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, प्रगट आपणा खेल वखाईआ। सति धर्म दा खोल्ह हट्ट, चार वरनां दएं सरनाईआ। बरन अठारां वेखें नट्ठ नट्ठ, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। सच तेरी सरना, सो साहिब इक्को नज़री आईआ। पीर पैगम्बर करन दुआ, सजदा सीस इक झुकाईआ। हज़रत हाज़र हो के दरश दिखा, पर्दा उहला मेट मिटाईआ। मुख नक़ाब दे उठा, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। काया काअबा इक्को नज़री जाए आ, हुजरा हक़ हक़ सुहाईआ। नौबत वज्जे बेपरवाह, कलमा इक्को इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। गुर अवतार मंगण भिख, दर ठांडे सीस निवाईआ। श्री भगवान लेखा लिख, अलेख तेरी शरनाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार करना हित, नवित्त आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वखाईआ। घर साचा प्रभू इक वखाउणा, चारे युग मंग मंगाईआ। कलयुग वेला सच सुहाउणा, सोहणी बणत बणाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात डेरा ढौहणा, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। आत्म परमात्म ढोला सर्ब जणाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। फड़ फड़ हँस काग बणाउणा, माणक मोती चोग चुगाईआ। बंद किवाड़ी पर्दा उहला आप हटाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साचा दर इक वखाईआ। साचा दर वखाउणा प्रभ, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी मेटणी हद्द, पन्ध मुकाउणा थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घर ठांडे रहे सद्द, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम आउणा भज्ज, जोती जामा वेस वटाईआ। भगत भगवान सन्त सुहेले लैणे कढ्ढ, गुरमुख गुरसिख खोज खुजाईआ। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़, के वजाउणा नद, अनहद रागी राग सुणाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। लेखे लाउणा पवण स्वास, पवण उणंजा नैण शरमाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल चरणां हेठ वखाईआ। आत्म परमात्म देणा साथ, घर नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा देणा मुकाईआ। पूरब लेखा मुकाउणा मात, गुर अवतार पीर पैगम्बर मता तेरे नाल पकाईआ। पतिपरमेश्वर नूर इलाही तेरी वेखीए इक्को ज़ात, अजाति रूप ना कोए जणाईआ। तेरा कलमा ढोला नाद सुणीए कायनात, मख़लूक ख़ालक ख़लक तेरा नाम शनवाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तेरा दासी दास, सेवक इक्को रूप नज़री आईआ। पंज तत काया माटी त्रैगुण माया दिसे ख़ाक, ख़ाकी रूप सर्ब समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां पूरा करना भविक्ख्त वाक, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जन भगतां देणा अन्तर साथ, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। साची दस्सणी पूजा पाठ, इक्को मन्त्र देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देणा साचे घर गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। गृह मन्दिर आउणा जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। शाह पातशाह सूरे सरबग्ग, श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नौ दवारे कोई पार ना करे हद्द, साढे तिन्न हथ्थ महल अटल ना कोए सुहाईआ। घर साहिब स्वामी लए ना कोई सद्द, बजर कपाटी पड़दा ना कोए उठाईआ। विश्व नज़र ना आए कोई यद्द, दूई द्वैती माया ममता हउमें हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल तेरा दरस करे ना कोई रज्ज, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्ह्राईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार काया माटी विच्चों कोई ना सके कढ्ढ, सतिगुर खण्डा शब्द सके ना कोए चमकाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, साढे तिन्न करोड़ रोम रोम हरि का नाम ना कोए शनवाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर तेरी आत्म तैथों होई अलग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। हँस रूप होए कग्ग, कूड़ी क्रिया काग वांग कुरलाईआ। मन वासना सारे रहे नच्च, मन का मणका ना कोए भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो धुर दा मार्ग गए दस्स, कलयुग जीव बण के पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर रहे हस्स, जगत वासना संग निभाईआ। प्रभू तेरे मिलण दी किसे ना खुल्ही अक्ख, दोए लोचण जगत

नैण ना कोए शरमाईआ। बण वणजारा सच चलावे ना कोई हट्ट, सौदा सति ना कोए विकाईआ। नाड़ बहत्तर तिन्न सौ सट्ठ हाडी उबले रत, अमृत मेघ सांतक सति बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। दरस किसे ना मिले उपर शाह रग, साख्यात स्वच्छ सरूपी मिले मेल ना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे प्रभ इक्को मंग, शब्दी सुत सच जणाइंदा। सृष्ट सबाई किसे ना मिले अनन्द, निजानंद रस ना कोए वखाइंदा। कूड़ी क्रिया दूई द्वैती ढाहे कोई ना कंध, शरअ शरीअत भेव ना कोए चुकाइंदा। तेरा मेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म गाए कोए ना छन्द, धुर दा राग ना कोए अलाइंदा। जन्म कर्म दी टुट्टी तेरे नाल देवे कोई ना गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी तेरा मेल ना कोए मिलाइंदा। दीन दयाल साहिब हो बख्शंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, शब्दी सुत झोली डाहइंदा। शब्द सुत प्रभू तेरा दुलारा, पिता पुरख अकाल इक्को इक मनाईआ। दो जहानां दे हुलारा, चारों कुण्ट इक्को रंग रंगाईआ। कलयुग अन्तिम वेख किनारा, नईया डोले थाउँ थाईंआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकारा, गीता ज्ञान उच्ची कूक नाअरा रही सुणाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकारा, तीस बतीसा सार कोए ना पाईआ। खाणी बाणी भेव जाणे ना कोई विच संसारा, वड संसारी की की रचन रचाईआ। कागद कलम शाही नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नव नौ चार फिरी दरोही नव खण्ड सत्त दीप चौदां तबक ना कोई मीत मुरारा, हरि गोपाला नज़र ना आए नूर इलाहीआ। चौदां लोक सति श्लोक सुणाए ना कोई जैकारा, डंका फ़तिह ना कोए गजाईआ। महल अटल सोभावन्त सुहाए ना कोए मनारा, महिफल नाम ना कोए लगाईआ। भगत भगवान मिले मेल ना दर दवारा, दरवाज़ा खोल अन्दर लँघ बैठ पलँघ साची सेजा सोभा कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी बोल जैकारा, कलयुग अन्तिम दे सहारा, जीव जंतां गए दृढ़ाईआ। कल कल्की लै अवतारा, महाबली अगम्म अपारा, ना कोई जन्मे पिता माईआ। वसणहारा धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ दए सहारा, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दर ठांडा तेरा पारब्रह्म, लख चुरासी अग्नी अग्ग तपाईआ। निहकर्मी कर आपणा कर्म, कारण तेरे हथ्थ नज़री आईआ। सृष्ट सबाई साचा रिहा ना किसे धर्म, धीरज सति सन्तोख बैठा मुख छुपाईआ। झगड़ा प्या वरन बरन, चार अठारां करे लड़ाईआ। साध सन्त साची मंज़ल मूल ना चढ़न, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा पूजा पाठ करन, हिरदे तेरा नाउँ ना कोए वसाईआ। सीस निवें ना कोए सरनाई सरन, चरण चरणोदक मुख ना कोए चुआईआ। नेत्र खुल्हे ना हरन फरन, घर मिल्या मेल ना सच्चा

माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा दे वखाईआ। दर साचा प्रभू इक वखाल, व्याख्या नाल दे जणाईआ। जिथ्थे दीआ बाती जोती नूर जगे बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। सोहणा मन्दिर नज़री आए धर्मसाल, सचखण्ड दवारा दरगाह साची सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, राग नाद सके ना कोए समझाईआ। तेरा जलवा नूरी जलाल, ज़ाहर ज़हूर बेनज़ीर लातस्वीर सच महिबूब बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाल आपणा घर, दर वेखीए चाईं चाईंआ। घर वखा प्रभू प्रभ एक, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त जिस दी टेक, गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान बैठे ध्यान लगाईआ। त्रैगुण माया ना कोई सेक, पंज तत ना कोए भेख, लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। तेरा दर्शन लईए पेख, रूप रंग ना कोए रेख, मुच्छ दाढ़ी मूंड मुंडाया रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाल अगम्मी खेड, अगम्म अगम्मड़े आपणी कार जणाईआ। अगम्म अगम्मड़े हरि बेपरवाह, दर तेरा वेखण आईआ। गुर अवतार दे के गए सलाह, बिन पुरख अकाल साची धीर ना कोए धराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण अहिवाल, हालत तेरी रहे दृढ़ाईआ। तेरा जलवा बेमिसाल, तेरा नूरो नूर इक्को घर करे रुशनाईआ। तूं आदि जुगादी सदा दयाल, रहमत तेरे विच्चों नज़री आईआ। जुग चौकड़ी किरपा करें कृपाल, किरपन आपणे लेखे लाईआ। जन भगतां वखाएं सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक जणाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद तेरा बैठे राह तकाईआ। जुग चौकड़ी पूरी कर घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। दर तेरे प्रभू सीस जाए झुक, नमो नमो इक सरनाईआ। अगला पिछला पैंडा जाए मुक, पांधी पन्ध ना कोए वखाईआ। घर स्वामी ठाकर दरस दिखा आपणा मुख, मुखातब हो के दे जणाईआ। मेहरवान हो के गोदी चुक्क, फड़ बांहों गले लगाईआ। निरगुण हो के निरगुण धारों उठ, शब्दी शब्द आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां लोकमात आ के पुछ, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लै मिलाईआ। घर मिलण दा तेरा चाउ, गृह वज्जे इक वधाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साची दरगाह वेखीए अगम्मड़ा थाउँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। इक्को सिमरीए तेरा नाउँ, नाउँ निरँकारा ढोला गाईआ। कलयुग जीव अन्तिम हँस बणे काउँ, काग हँस रूप वटाईआ। सदा सुहेले इक इकेले तेरी माणीएं ठंडी छाउँ, दो जहान अग्नी तत ना लागे राईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। तेरा वेखीए सच न्याउँ, हक़ हकीकत दे दृढ़ाईआ। कोझे कमले भुल्ले राहों, साचे मार्ग देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को

देणा सच्चा वर, सति पुरख तेरी सरनाईआ। सति पुरख प्रभ आदि दर तेरे सीस निवाईआ। तेरा खेल वेखीए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड वज्जे तेरी वधाईआ। घर घर विच सुणीए नाद, अनहद राग आपणा राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साहिब सतिगुर सच्चा चन्द चमकाईआ। चरण कँवल प्रीती नाता जोड़ आपणे साथ, आप सगला संग निभाईआ। अजपा जाप दे पूजा पाठ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। मात गर्भ फेर ना होवे वास, दस दस मास अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ढांडा दे वखाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। धुर संदेस इक सुणाउँदा ए। लिख्या लेख आप वखाउँदा ए। निरगुण निरवैर निराकार वेस वटाउँदा ए। वसणहारा सचखण्ड देस, सम्बल आपणा डेरा लाउँदा ए। दो जहानां बण के नर नरेश, धुर फ़रमाणा इक सुणाउँदा ए। कलयुग अन्तिम वेखां खेड, बण खिलाड़ी रचन रचाउँदा ए। जन भगतां देवां भेत, बाकी हथ्थ किसे ना आउँदा ए। जोती जामा धरया वेस, शब्दी नाद डंक वजाउँदा ए। सच संदेसा देवे भेज, अन्दरे अन्दर आप सुणाउँदा ए। धुर मस्तक लावे मेख, पूरब लहिणा झोली पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे हेत, हितकारी मेल मिलाउँदा ए। जन भगतां मेल मिलाया ए। पुरख अबिनाशी खेल रचाया ए। जोत प्रकाशी नूरो नूर डगमगाया ए। किसे हथ्थ ना आवे पंडत कासी, मुल्लां शेख़ मसायक सर्ब कुरलाया ए। लभ्भदे फिरदे चारों कुण्ट जगत विद्वानी पाठी, ज्ञानी ध्यानी ध्यान लगाया ए। साचा मिल्या ना धुर दा साथी, सगला संग ना कोए जुड़ाया ए। रातीं दरस ना मिले इकांती, प्रभाती भेव ना कोए खुल्लाया ए। दीवा जोत ना जगे बाती, बिन तेल शमअ कोई ना डगमगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया ए। हरिजन साचे वेख वखाउँदा ए। दीन दयाल दया कमाउँदा ए। काया बंक सच्ची धर्मसाल, घर सज्जण डेरा लाउँदा ए। दीवा बाती इक्को बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, तुरिया राग इक सुणाउँदा ए। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, मार्ग पन्थ आप समझौदा ए। निरगुण सरगुण बण दलाल, गुरमुख गुर गुर वेख वखाउँदा ए। सन्त सुहेले सच्चे लाल, लालन आपणे रंग रंगाउँदा ए। नाता तोड़ काल महाकाल, महिबूब आपणे घर वसाउँदा ए। वसल देवे सच जुमाल, जुमला अक्खर आपणा नाम पढ़ाउँदा ए। लख चुरासी विच्चों कर के भाल, जम की फाँसी आप तुड़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव मिटाउँदा ए। जन भगतां लेखा जाणे हरि, लिख्त लेख ना कोए वड्याईआ। परम पुरख प्रभ किरपा कर, कृपाल होए सहाईआ। जुग जन्म दे विछड़े कट्ठे कर, घर साचे जोड़ जुड़ाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ। दरस दिखाए अन्दर वड़, घर घर विच मेल मिलाईआ। लहिणा

चुक्के चेतन जड़, हरि देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सच उठाईआ। हरिजन उठया कलयुग जगत, जगजीवण दाता होए सहाईआ। लेखे लाए बूँद रक्त, पंज तत वज्जे वधाईआ। सोहणा सुहञ्जणा सोहे वक्त, घड़ी पल खुशी मनाईआ। देवे वड्याई हरिजन भगत, भगवन मेहर नज़र उठाईआ। आत्म परमात्म धुर दी शक्ति, शख्सीयत विच्चों दए समझाईआ। साचे सन्तां नाल करे ना फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। लख चुरासी कर के तरक, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण हो के आया परत, प्रतिनिध बेपरवाहीआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। गुरमुखां उते कर के तरस, रहमत आपणी झोली पाईआ। प्रभ दर्शन को जो जन रहे भटक, तिन्हां भटकना दए बुझाईआ। सुखमन टेडी बंक जो रहे अटक, तिन्हां दस्म दवारी सहिज सुभाउ मेल मिलाईआ। पंच विकारा कोई ना चढ़े कटक, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। जगत तृष्ना जो जन रहे लटक, तिन्हां मंज़ल पन्ध देवे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लए लगाईआ। हरिजन मंगे इक्को मंग, प्रभ तेरे अग्गे अरज़ोईआ। अन्तर निभे तेरा संग, बाहर तेरी सरनाईआ। घर नाम निधान वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग शनवाईआ। जगत दवारे जाईए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। आत्म सेजा बैठा वेखीए उपर पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। जन भगत गावें छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा रूप ना कोए वखाईआ। घर स्वामी पौणी ठंड, अमृत मेघ इक बरखाईआ। तेरा प्रेम प्यार मिले सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा लेखा देणा चुकाईआ। घर ठाकर स्वामी मिलणा आप, जन भगत ध्यान लगाईआ। कर किरपा देणी दात, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। निरगुण निरवैर नूरी पाक, ख़ाकी ख़ाक ना कोए जणाईआ। पीर पैगम्बर जिस नूं सच रसूल मन्नदे गए साक, सज्जण यार इक्को इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा दस्सदे गए भविक्ख्त वाक, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अबिनाश, साचा पत्तण वेखणा घाट, खेवट खेटा आपणा रूप वटाईआ। नईया नौका तेरे कंधे दिसे जहाज़, भव सागर बेड़ा पार कराईआ। बिन तेरी किरपा किसे कम्म ना आए रोज़ा वुज़ू नमाज़, सजदा सीस धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। ज़ाहर बातन कर बात, बैतुल धाम मुकदस्स इक्को दे वखाईआ। तैनूं मिल के एथे ओथे मिले नजात, नछावर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सूफी बैठे ध्यान लगाईआ। सूफी बैठे मंगण दीद, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। तेरा जलवा गुफ़त शनीद, शायर मुशायरे नाल सके ना कोए गाईआ। तेरा कलमा तेरा नाम तेरा नज़ाम आदि जुगादि लोक परलोक ठीक,

ठोकर सके ना कोए लगाईआ। सदी चौधवीं परवरदगार तेरी इक तारीख़, ईसा मूसा मुहम्मद तरीके नाल गया समझाईआ। सो साहिब वेला वक्त आया नज़दीक, ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील भज्जण वाहो दाहीआ। चौदां तबक नक्क नाल कढ्ढ्ण लीक, अल्फ़ इक्को रहे वखाईआ। जिस दी धार दो जहान दिसे बारीक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ । सच स्वामी अन्तरजामी पिछले लेखे कर तस्दीक, मोहर आपणी हक़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। मुरीद मुर्शद मंगण मुराद, मुर्दा रूह नज़र कोए ना आईआ। उम्मत उम्मती हुन्दी दिसे बरबाद, बैवा रूप जगत लोकाईआ। साचे हुजरे उच्च महल्ले सुणे कोई ना सच बांग, हक़ आवाज़ ना कोए अल्लाईआ। तेरे मिलण दी वड अमाम रखी तांघ, तसबी माला बैठी ढेरीआं ढाहीआ। साहिब स्वांगी आपणा दस्स सच स्वांग, बाजीगर नटुआ आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाल धुर दा घर, जिस घर बहि के ख़ुशी मनाईआ। घर वखाल उह प्रभ, जिस दा नक्शा सके ना कोए बणाईआ। बिन तेरी किरपा किसे ना सके लभ्भ, कोटन कोटि फिर फिर थक्के पांधी राहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे आर पार ना दस्सी हद्द, किनारा सके ना कोए समझाईआ। जिस सिँघासण पुरख अबिनाशन निरगुण रूप बहें सज, जोती जोत कर रुशनाईआ। जिस गृह अगम्मी ताल वज्जे नद, तन्दी तन्द सतार ना कोए हिलाईआ । जिस दी घाड़त घड़ी आप समरथ, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। जित्थे ना कोई सूरज चन्द रवि ससि, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। ना कोई तक्के नेत्र नैण अक्ख, ना कोई रसना जिह्वा करे सिफ्त सालाहीआ। एह सब कुछ मेरे साहिब तेरे हथ्थ, जिस भावे देवें वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां पूरी कर आस, तृष्ना आपणी झोली पाईआ। सतिजुग सति धर्म दी दस्स दे जाच, धुर दी कर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर तेरा वेखीए चाईं चाईंआ। तेरा घर वेखण दा चाउ अवल्ला, जन भगत रहे सुणाईआ। जिस मन्दिर बैठें इक इकल्ला, निरगुण निरवैर डेरा लाईआ। जोती दीप हो के बला, दीवा बाती घृत संग ना कोए रखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां फड़ावें पल्ला, नाम पल्लू गंढु बंधाईआ। जिस घर सोभा पा के रचन रचाएं जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ज़िमीं असमान टिल्ले पर्बत चोटी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दे जणाईआ। साचा मन्दिर वेखीए रज्ज, घर ठांडे दर्शन पाईआ। बिन मक्के काअब्यो होए हज्ज, बिन मन्दिर शिवदुआले मठ तेरा रूप नज़री आईआ। तेरी चरण धूढ़ी नहाईए झट्ट, अठ सठ तीर्थ पन्ध मुकाईआ। घर जोत होवे प्रकाश, नूरो नूर नूर समाईआ। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म पूरी होवे आस, तृष्ना कूड़ी देणी गंवाईआ। हउँ बालक अनाथां अनाथ, तूं

बेअन्त बेपरवाह सच गोसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर देणा सुहाईआ। घर मन्दिर सतिगुर तेरे चरणां, जन भगत रहे जणाईआ। चरण कँवल सरनाई साची पड़ना, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सोहँ ढोला तेरा मेरा इक्को पढ़ना, शब्दी शब्द शब्द वंड वंडाईआ। ना जीउंणा ना कदे मरना, मर जीवत रूप वटाईआ। सच दवारे साचे खड़ना, सनमुख तेरा दर्शन पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर माणस जन्म मूल ना हरना, हरि जू तेरा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणा संग निभाईआ। जन भगत कहे नाल ज़ोर, प्रभ तैनूं सच सुणाईआ। जुग जुग असीं तेरी पूरी करीए लोड़, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। तूं ठाकर हो के जाएं बौहड़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलयुग अन्त तेरे हथ्थ डोर, अबिनाशी करते इक्को इक रखाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। कबीर जुलाहा दिसे कोल, दूर दुराडा नेड़े आईआ। परम पुरख प्रभ अन्तरजामी जाणा मौल, बिस्मिल आपणी धार वखाईआ। पिछला याद कर लै कौल, कीता इकरार भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आपणा लेखा रहे मंग मंगाईआ। साडा लेखा दे दे धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। कलयुग वेख बेड़ा रुढ़दा, तेरा इक ध्यान लगाईआ। किसे मन्त्र याद ना रिहा गुर दा, सतिगुर सिख्या गए सर्ब भुलाईआ। अन्तर आत्म अट्ठे पहर फुरना किसे ना फुरदा, मन्त्र इक्को ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म नाल मिल कोई ना तुरदा, बाहरों भज्जण वाहो दाहीआ। लेखा चुके ना अन्धेर घोर दा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सीस निवाया दर तेरे प्रभ, परम पुरख तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे हद्द, हद्द हदूद आपणे चरणां हेठ दबाईआ। भगत भगवान लैणे सद्द, सद्दा आपणा नाम जणाईआ। अमृत जाम पिआउणा धुर दी मदि, सच खुमारी इक वखाईआ। दरस दिखाउणा रज्ज रज्ज, पूरब जन्म दी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। लख चुरासी नालों कर के अड्ड, घर साचे लैणा बहाईआ। नाम निधान सुणाउणा नद, अनरागी राग अलाईआ। तेरा दरस करन भज्ज भज्ज, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जिस दरबार हरि करतार सो पुरख निरँजण बहें सज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। ओस नालों कदे ना करीं अलग, विछोड़ा भगत सह सके ना राईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जाणा बज्झ, डोरी तन्द ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर मेल मिलाईआ। जन भगत मिलाउणा भगती मीत, भगवन भाउ भाव समझाईआ। आदि जुगादि तेरी साची रीत, रीतीवान वड्डी वड्याईआ। काया काअबा वखाउणा सच मसीत, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जिस घर लहिणा देणा चुक्के ऊँच नीच, राउ रंक राज राजान ना कोए वड्याईआ। तिस दवारयों देणी भीख,

८३४ १६

भिच्छया भगत आपणा नाम वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग तेरी रखदे गए उडीक, छत्ती युग दा बन्धन पाईआ। तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस तैनूं दस्सदे रहे नज़दीक, दूर दुराडा नेरन नेर नज़री आईआ। सो वक्त सुहञ्जणा सोभावन्त होवे ठीक, ठाकर देणी इक सरनाईआ। तेरे सीस पीतम्बर सोहे पीत, पातशाह तेरी शरनाईआ। तूं आदि जुगादी लाशरीक, शिरकत साहिब कदे ना भाईआ। कलयुग मेट अन्धेरा तारीक, निरगुण चन्द कर रुशनाईआ। जन भगतां आपणा दरस कर बख्शीश, रहमत आप कमाईआ। तेरा कलमा नाम पढ़न हदीस, हज़रत ढोला इक्को गाईआ। चरण कँवल उपर धवल बन्न्ह प्रीत, नाता बिधाता आपणे नाल जुड़ाईआ। घर सज्जण मिलणा आ के मीत, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे होणा सहाईआ। घर साचा दिसे ऊँच अगम्म, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। श्री भगवान रहाए बिन थम्म, पौड़ा डण्डा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे प्रकाश ना सूरज चन्न, पुरी लोअ नज़र कोए ना आईआ। सच निवास श्री भगवन, हरि करता आप रखाईआ। जन भगतां उपर जाए मन, मनसा मोह मिटाईआ। भाग लगाए काया पंज तत तन, ततव आपणा दए समझाईआ। मेल मिलावा कर के आत्म अन्न्ह, परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन जन भगत कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न प्रभू तेरी शरनाईआ। एथे ओथे दो जहान कोई ना देवे डंन, लेखा मंगण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणा घर वखाईआ। जन भगत वखाए सच दरबारा, दरगाह सच्ची ताक खुल्हाईआ। जिस घर वसे परवरदिगारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सच सिँघासण सोभावन्त अपर अपारा, चारों कुण्ट इक्को रूप नज़री आईआ। दीआ बाती होए उज्यारा, कमलापाती करे रुशनाईआ। धुर दा साथी बोले जैकारा, अगम्म नाम जणाईआ। जिस दा हुक्म वरते जुग चारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा खेल विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत पसारा, लख चुरासी चारे खाणी घाड़त ल्या घड़ाईआ। जिस दा नाम निधान चारे बाणी इक जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। जिस दा रूप गुरू अवतारा, गुर पीर पैगम्बर अख्वाईआ। जिस दा सिफ्ती सच भण्डारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। जिस दा नाम हट्ट वणजारा, लोक परलोक आप वखाईआ। जिस दा सरगुण बणे लिखारा, बण के कातब कलम चलाईआ। जिस दा भगत दिसे मनारा, लोकमात सोभा पाईआ। जिस दा सन्त सच दुलारा, सुत नादी नाउँ धराईआ। जिस दा गुरमुख इक अधारा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। जिस दा गुरसिख करे प्यारा, प्रेम प्रीती चरण कँवल रखाईआ। जिस दा आदि जुगादि पसारा, नित नवित्त खेल कराईआ। सो साहिब पुरख अकाल निहकलंक नरायण नर अवतारा, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। जन भगतां वखाए ठांडा इक दरबारा, दर दरवाज़ा

ग़रीब निवाजा गहर गम्भीर आप खुल्हाईआ । जिस दा आदि अन्त सदा बेअन्त सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, जै जैकार ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान पुरी लोअ आकाश गगन गगनंतर मन्त्र इक्को इक गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा, आपणा लेखा लेखे विच्चों समझाईआ।

* ३ चेत २०२१ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर *

शाही कहे मेरी मेट शाही, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी बणी रही पांधी राही, नित नवित्त चलां वाहो दाहीआ। काग़ज़ां उते मेरी गवाही, शहादत गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे पाईआ। निरगुण सरगुण अक्खरां बणत बणाई, लेखा लिख लिख बेपरवाहीआ। सच दुआर मिली ना किते वड्याई, मेरा नाउँ ना कोए जणाईआ। बिन मेरे लेख पारब्रह्म तेरी चले ना कोए चतुराई, निशानी जगत ना कोए रखाईआ। नित नवित्त तेरे नाम दी लिखां कहाणी, सिफ्ती ढोला धुर दा गाईआ। तेरी महिमां जीवां जंतां बाणी, चार कुण्ट चार वरन बैठे ध्यान लगाईआ। मैं लिखणहारी अन्नी काणी, तेरी सार प्रभू ना आईआ। जन भगत कहिण तेरा पद निरबाणी, अगम्म अथाह अख्वाईआ। ओथे लेख ना कोए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरा लेखा दे समझाईआ। शाही कहे मैं कीते शाह, शहिनशाह जुग जुग लेख लिखाईआ। निरगुण सरगुण दस्सदी रही राह, रहिबर बण के जगत लोकाईआ। पतिपरमेश्वर तेरा दृढ़ाउँदी रही नाँ, अक्खरां वक्खरा मेल मिलाईआ। मेरी हां विच किसे ना मिलाई हां, हासा करे सर्ब लोकाईआ। बौहड़ी दरोही कोई मिले ना थाँ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चार कुण्ट चार युग दहि दिशा रही कुरला, कूक फ़रयाद सुणन वाला नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे वखाईआ। शाही कहे मैं पावां शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोर, जाबर तेरे हथ्थ वड्याईआ। धुर दी वस्त इक अनमोल, दर ठांडे मंग मंगाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरा लेखा लै वरोल, नाम मधाणा एका पाईआ। नित नवित्त आदि अन्त वसां तेरे कोल, तुध बिन संगी नज़र कोए ना आईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर काग़ज़ां उपर करां चोल्ह, अग्गे पिच्छे चलां वाहो दाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अगला दस्सां बोल, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। शाही कहे मैं मंगां मंग, दर तेरे सीस निवाईआ। धुर दरबार वेखां लँघ, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। नाम खुमारी चढ़े रंग, मस्ती इक्को इक नज़री आईआ। तेरी किरपा जन भगतां टुट्टी देवां गंढ, सोहणी आपणी सेव कमाईआ। तेरी महिमा

लिख के पावां ठंड, दूजा राग ना कोए अलाईआ। तेरे वैराग विच्चों लवां अनन्द, रस आपणी झोली पाईआ। गहर गम्भीर गा के तेरा छन्द, घर बैठां चाईं चाईंआ। अग्गे प्रीती तेरे नाल जाए हंढ, दूजा करे ना कोए कुड़माईआ। सदा सुहागण लोकमात ना होवां रंड, दुहागण कहि ना कोए बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दे वड्याईआ। शाही कहे मैं कमावां जोग, जोगण हो के दर दर अलख जगाईआ। मेरा भगतां नाल कर संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी अमृत रस देवां साची चोग, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आवण जावण लिख संदेसा देवां कटां हउमे रोग, माया ममता मोह मिटाईआ। सच दवारा तेरा दसावां किला कोट, महल अटल इक्को नज़री आईआ। तेरे नाम दी बिन लिख्यां लावां चोट, सच निशाना तीर चलाईआ। जिस जोजन नूं कैहन्दे गए चार कोस, सो कोटन कोटि जोजन तेरे चरणां हेठां बैठण पन्ध मुकाईआ। मैं ओनां नाल मिल के माणां मौज, जो तेरा नाम बिन अक्खरां रहे गाईआ। साचा रस लवां भोग, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे दृढ़ाईआ। शाही कहे प्रभ मैं तेरा वेखां निरअक्खर, जिस दी बणत नज़र किसे ना आईआ। नेत्र नीर वहावां अथ्थर, रो रो दयां दुहाईआ। बौहड़ी मैं लिख लिख ओस धाम ना सकी अप्पड़, घर वेख ना खुशी मनाईआ। कोटन कोटि गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेरे लिखे पत्र, महिमां तेरी गणत गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा दे चुकाईआ। शाही कहे मेरा तुटा माण, मेरी लेखणी रही कुरलाईआ। पारब्रह्म तेरा अगम्म अगम्मड़ा वेख्या इक ज्ञान, जिस ज्ञान विच ध्यान तेरा नज़री आईआ। रसना जिह्वा ना कोई पढ़े ना कोई सुणे कान, ना कोई उच्ची कूक कूक अलाईआ। ना कोई दवात ना कलमदान, पाणी मेल ना कोए मिलाईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण आदि जुगादि तेरा चल्लदा रहे फ़रमाण, हुक्म इक्को वाहो दाहीआ। ओथे कोई लिखण वाला दिसे ना कोई विद्वान, कातब नज़र कोए ना आईआ। मैं कोझी कमली बैठी पिच्छे नादान, तेरा दर वेख ना खुशी मनाईआ। जुग जन्म दी बणी रही अणजाण, बाली बुध सुध समझ ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां वेख मेरे नैण सर्ब शरमाण, अक्ख सकां ना कोए उठाईआ। जिनां प्रभ ठाकर बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। एका ढोला दस्से आण, सोहला धुर दा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दे दे साचे दर, दर थक्की मांदी दए दुहाईआ। छाही कहे मैं की करां शुकर, शुकराना नज़र कोए ना आईआ। प्रभू तेरा लेख मैं नकर्मण किते ना लिख्या रविदास चुमारे घरों खाधा टुक्कर, जिस दा रस दो जहानां हथ्थ किसे ना आईआ। बिन लिख्यां पढ़यां पतिपरमेश्वर तूं आप ना ग्यों मुकर, मुफ्त आपणी कार कमाईआ। मेरी समझ ना आई किस दवारयों आएयों

उतर, कवण मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जन भगतां उजल करें मुखड़, मुख सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। शाही कहे सुण मेरे शाला, छहबर तेरी इक्को नज़री आईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरे नाम दा लिख लिख देंदी रही अहिवाला, जीवां जंतां जगत जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे दीन दयाला, दयानिध फेरी पाईआ। साचा मन्दिर सुहाए इक्को धर्मसाला, बंक दवारी सोभा पाईआ। दो जहान श्री भगवान बणे रखवाला, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। जन भगतां तन पहनाए अगम्मी माला, मन का मणका आप भवाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया तोड़े जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मार्ग ठांडा दस्से इक सुखाला, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरवैर होए सहाईआ। मैं लिख लिख लेख दस्सया अपार, सोहणी सेव कमाईआ। संगी रख गुरू अवतार, पीर पैगम्बर जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग अन्तिम कलयुग जीव मेरा लिख्या सारे गए विसार, तेरा संग ना कोए रखाईआ। एसे कारण आई तेरे दुआर, नेत्र रोवां नैणां नीर वहाईआ। मेरा नाता तोड़ प्रभू संसार, जगत मीत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लै मिलाईआ। मेरा लिख्या गए भुल्ल, जीव जंत जाग ना आईआ। सच दवारे प्या कोई ना मुल, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। कूड़ी माया अन्दर गई रुल्ल, दर दर घर घर कलयुग हट्ट विकाईआ। मेरा रस अन्तर गया डुल्ल, सच वस्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दे चुकाईआ। मैं भुल्ली लोकमात नभागण, भाग मेरा नज़र कोए ना आईआ। मेरा लिख्या सुण सुण कलयुग जीव मूल ना जागण, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। हँस बुद्धी होए कागण, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। दुरमति मैल धोवे कोई ना दागण, स्वच्छ सरूप ना कोए समाईआ। मिले मेल ना राज राजन, शाह पातशाह देवे ना कोए सरनाईआ। साचे बेड़े चढ़े ना कोए जहाज़न, नईया नौका नाम ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे दे इक वर, दर तेरे आस रखाईआ। शाही कहे मैं होई खुश, जन भगतां वेख वखाईआ। जिन्हां अन्दर वड़यों चुप, आप आपणा भेव जणाईआ। लिख्त पढ़त ना दिसे कुछ, काग़ज़ छाही जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जन्म कर्म दी लाह के भुक्ख, तृष्ना दिती गंवाईआ। उजल कर कर मात मुख, सच देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। तेरा प्रभू वेख प्रभाव, प्रफुलत नज़री आईआ। जिन्हा देवें आपणा नाम, बिन अक्खरां अक्ख खुल्हाईआ। कोई ना जाणे तेरा भाव, भेद सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा दे उठाईआ। तेरे भगत वेखे गाउँदे, अक्खरी करन ना कोए पढ़ाईआ। रातीं सुत्तयां दर्शन पाउँदे, दिने जागदयां खुशी मनाईआ। प्रेम

प्रीती तीर्थ नहाउँदे, सरोवर मजन चाईं चाईंआ। लख लख तेरा शुकर मनाउँदे, शहिनशाह इक सरनाईआ। जन्म जन्म दा पन्ध मुकाउँदे, भज्जण वाहो दाहीआ। सिध्धे सचखण्ड दा राह तकाउँदे, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। ओन्हां अग्गे मेरे नैण शरमाउँदे, मैं अक्ख ना सकां खुल्हाईआ। मेरा लिख्या लेख जो पढ़ पढ़ पारब्रह्म भुलाउँदे, तिन्हां दो जहानां मिले कोए ना थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे हो ना कोई बचाउँदे, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान अग्गे हो ना कोई छुडाउँदे, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। धन्न वड्याई पारब्रह्म जो गुरमुख तेरा दर्शन पाउँदे, तिन्हां मेरे लेख दी लोड़ रही ना राईआ। चरण कँवल उपर धवल बहि बहि सोभा पाउँदे, थान थनंतर मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सोहणा संग बणाईआ। वेखे भगत गहर गम्भीर, मकतब पढ़न कोए ना जाईआ । अन्तर ठांडा तत शरीर, मन ममता मोह मिटाईआ। तेरे नाम दा वज्जा अणयाला तीर, आर पार नज़री आईआ। शरअ मज़्ह्ब दा कट ज़ंजीर, छुरी चली ना जगत कसाईआ। नाता तोड़ पीर फ़कीर, बेनज़ीर रहे तकाईआ। चोटी मंज़ल चढ़ अख़ीर, तेरा दर्शन रहे पाईआ। मेरे वेंहदयां वेंहदयां बदल दिती तकदीर, तसबी माला परे सुटाईआ। मेरी लिखी लेखणी किसे कम्म ना आई लकीर, बिन लकीरों लायक नालायक दित्ते बणाईआ। मैं ओथे हारी जिथ्थे वसे पीरां दा पीर, बेऐब बेपरवाहीआ । ओथे लिखण पढ़न वालयां दी नहीं कोई भीड़, गुरमुख विरला नज़री आईआ। गुरमुख केहड़ा ना शाह ना फ़कीर, ना फ़िकरयां अक्खरां विच करे पढ़ाईआ। जिस दी किसे नज़र ना आवे तस्वीर, सो तसव्वर आपणा आप दए कराईआ। जन भगतां वेख मैं लिखणवाली होई दिलगीर, बैठी आपणा हौसला ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, हरि सज्जण गुरमुख गुरसिख वेखां थाउँ थाईंआ।

८३८

१६

* ३ चेत २०२१ बिक्रमी अजीत सिंघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर *

तेरा लेखा प्रभ सच्चा लेख, आदि जुगादि ना कोए मिटाईआ। इक्को वेख्या सचखण्ड देस, दूजे मण्डल नज़र कोए ना आईआ। तेरा निरअक्खर जन भगतां करे हेत, सन्तां मेल मिलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवें भेज, हुक्मे अन्दर हुक्म समझाईआ। मैं लिख लिख तेरा कोई ना पाया भेत, भेव सकी ना कोए समझाईआ। अन्त रख के तेरी टेक, माण ताण दित्ता मिटाईआ। तेरे हथ्थ सब दी रेख, लेखा तेरा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। तेरा लेखा बिन शाही कलम, कागज़ पेपर संग ना कोए रखाईआ। धुरदरगाही अगम्मी इलम, आलम

करे ना कोए पढ़ाईआ। मैनूं नज़री आए सृष्ट सबाई होई बेइलम, तेरी समझ समझ ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रस्ता दे समझाईआ। निरअक्खर वेख अगम्म, माण ताण रहिण ना पाईआ। पवण स्वास जपे ना कोई दम, रसना जिह्वा ना कोए सुणाईआ। बिन लेखिउँ चुक्कया हरख़ सोग ग़म, चिन्ता संग ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि सब दा बेड़ा रिहा बन्न्, तेरा हुक्म इक्को इक नज़री आईआ। मैं नेत्रहीण बैठी अन्न्, नैण सके ना कोए खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र पा मेहरवान, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ । मेरा चिटे काले उते मिटदा जाए निशान, निशाना भुल्लया सृष्ट सबाईआ। मिले मेल ना किसे श्री भगवान, लिख्या पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। जिउँ जिउँ पढ़दे अन्दर वड़या कूड़ शैतान, घर घर डंका रिहा वजाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, बग़ल कुरान बैठी दए दुहाईआ। तेरा नूर इस्म कोई ना सके पहचान, पड़दा मात ना कोए चुकाईआ। चारों कुण्ट दिसे हराम, धीरज जत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी तेरे अग्गे प्रणाम, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मेरा लिख्या लेख जो जन पढ़दा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द मेल मिलाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधा बिरहों अग्नी विच ना वेख्या सड़दा, माया ममता करी कुड़माईआ। तेरी मंज़ल परवरदिगार कोई ना चढ़दा, पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। तेरे कोलों कोई ना डरदा, भय सीस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देणा थाउँ थाईंआ। मेरा लेखा अक्खीं तक्क, वेख वेख थक्की सर्ब लोकाईआ। परम पुरख तेरे उते सब नूं पै गया शक़, शनाख़त विच किसे ना आईआ। जिध्धर वेखां ख़ाली दिसण हथ्थ, झोली नाम ना कोए भराईआ। जगत खेड़ा वेख्या भठ्ठ, कलयुग भठियाला अग्नी रिहा डाहीआ। लग्गी अग्ग पंज तत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर हो सहाईआ। लिखण पढ़न तों आवे डर, डरदी दयां दुहाईआ। किरपा कर नरायण नर, नर हरि तेरी इक सरनाईआ। पल्लू तेरा रही फड़, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। मैं वेक्खयां गुरमुख घर, हरिजन साचा सोभा पाईआ। जिन्हां आत्म परमात्म दित्ता वर, मेहर नज़र आप उठाईआ। तिन्हां भउ चुक्कया डर, भय नेड़ ना कोए आईआ। सो तेरा नाम निष्काम रहे पढ़, निरगुण निरगुण राग अल्हाईआ। साची मंज़ल उच्चे पौड़े जावण चढ़, घर बैठण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रख वड्याईआ। मैं लिखण वाली रही बोल, सच सच दृढ़ाईआ। कर किरपा जिन्हां आपणे रखे कोल, तिन्हां मेरी लोड़ रहे ना राईआ। मैं जगत जीव जहान संसारीआं सुणावणहारी ढोल, डंका तेरा नाम सुणाईआ। कर किरपा जिन्हां मिलें आप अडोल, दर ठांडे लएं बुलाईआ। ओन्हां दा पड़दा

८३६
१६

की किछ सकां फोल, कथनी कहिण कुछ ना पाईआ। मैं बैठी आप अनभोल, भेत तेरा ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दे वड्याईआ। श्री भगवान प्या हस्स, खुशीआं गीत जणाइंदा। आदि जुगादि मैं भगतां वस, गुरमुख आपणे घर बहाइंदा। मेरा लेख अगम्म लिखा बिन कलम शाही हथ्थ, काग़ज़ संग ना कोए रलाइंदा। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, साचा अक्खर इक पढ़ाइंदा। जो आदि जुगादि सब तों वक्ख, घर साचे सच टिकाइंदा। अन्दर वड़ के देवां दस्स, बाहरों बोल ना कोए प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाइंदा। छाही सुण सच संदेस, साहिब सुल्तान जणाईआ। मेरा लिख्या ना मेटे कोई लेख, तेरा लिख्या लेख काग़ज़ हट्टां विच विकाईआ। वड्डे छोटे बाले तेरे नाल रहे खेड, ठग्ग चोर यार तेरे नाल अंग लगाईआ। बिन भगतां मेरे लिखे दा कोई ना जाणे भेत, पाठशाला विच करे ना कोए पढ़ाईआ। समझा सके ना कोई मुल्लां शेख़, अल्फ़ ये सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। बिन लिख्या लेख जिस देवां दस्स, दहि दिशा होए रुशनाईआ। सो गुरमुख गुरसिख परम पुरख अकाल चरणी जाए ढह्, बिन चरणां सीस निवाईआ। दर्शन कर के आपणी अक्ख, बिन अक्खरां पढ़ पढ़ खुशी मनाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, घर वज्जे नाम वधाईआ। लहिणा चुक्के तत अह्, नौ दर पन्ध मुकाईआ। लिखण पढ़न दी हो जाए बस, बसता बन्न्ह काया मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर दए सुटाईआ। सतिगुर मिल के गुरमुख कहे मेरा मिल्या हक़, दूजी लोड़ रही ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो वड्डा गावणवाला जस, जिस जस विच्चों बेबस नज़री आए बेपरवाहीआ। ओथे कोटन कोटि कातब लिखारी चरण कँवल रहे ढह्, आपणा माण ताण मिटाईआ। प्रभू जे थोड़ा भेत देवें दस्स, फिर तेरी सिफ्त विच चले कलम छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कहे एह भगतां दी वथ, बिन गुरमुखां हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, अलख अलखना आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ।

* ३ चेत २०२१ बिक्रमी पशौरा सिंघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर *

पुरख अकाल करे प्रभ किरपा, आदि जुगादि दया कमाइंदा। जन भगतां मेटे कूड़ी बिपता, माया ममता मोह चुकाइंदा। नाता तोड़ स्वर्ग बहिश्ता, मार्ग इक्को इक दरसाइंदा। श्री भगवान साचा इष्टा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जन्म जन्म दी पूरब वेखणहारा लिख्ता, लेख अलेख आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच सरनाई जिन्हां धुर दा देवे निसचा, निहचल धाम इक

वखाइंदा। मेट मिटाए चिन्ता सोग हरखा, ग़मी रोग ना कोए वखाइंदा। माणस जन्म बणाए बणता, घाड़न घड़नहार वेख वखाइंदा। देवे वड्याई गुरमुख साचे सन्तां, सन्त सतिगुर सज्जण आपणा मेल मिलाइंदा। महिमा शब्द सुणाए अगणता, बोध अगाधा आप पढ़ाइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगता, हँ ब्रह्म इक दरसाइंदा। मेल मिलावा साची संगता, चार वरन ऊँच नीच इक्को घर बहाइंदा। कोई भेव ना पाए ज्ञानी ध्यानी वड पंडता, चौदां विद्या पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। किरपा करे पुरख अकाल, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी दीन दयाल, दीना नाथा होए सहाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख भाल, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा वजण इक वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर घर विच घर सच्ची धरमसाल, महल अटल करे रुशनाईआ। अमृत सोहे धुर दा ताल, सरोवर इक्को इक जणाईआ। अनहद शब्द नादी वज्जे ताल, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म पुच्छे हाल, मुर्शद मुरीद वेखे चाईं चाईंआ। नाता तोड़ काल महाकाल, मेहरवान होए सहाईआ। सच दवारा इक्को दए वखाल, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। दीवा जोती जगे इक महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तख्त निवासी नौजवान, सच सिँघासण साहिब डेरा लाईआ। नित नवित्त आदि अन्त जुगा जुगन्त देवणहार फ़रमाण, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त कलयुग अन्त करो ध्यान, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। हरि का मन्त्र नाम पढ़ो बिनां ज़बान, बत्ती दन्द चले ना कोए चतुराईआ। कलमा सिखो इक कलाम, हरफ़ हरूफ़ ना कोए जणाईआ। जन भगतां मुश्किल करे आसान, असलीयत आपणी दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन उपर मेहर नज़र टिकाईआ। किरपा करे परवरदिगार, बेअन्त बेपरवाह अख्वाइंदा। गुरमुख मेले सज्जण यार, जगत विछड़े अंग लगाइंदा। दूई द्वैती शरअ शरायती कर ख्वार, ख़ालस आपणा आप जणाइंदा। माया ममता मोह ना कोए प्यार, आत्म परमात्म साचा संग वखाइंदा। मंज़ल मंज़ल देवे चाढ़, महल अटल इक सुहाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, गुरमुख नाद इक सुणाइंदा। सन्त सुहेला पढ़न सुणन तों हो जाए बाहर, सुन्न समाध डेरा ढाइंदा। घर मन्दिर होए उज्यार, अन्दरे अन्दर करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा राह वखाइंदा। पूरा सतिगुर होए दयाल, गुरमुख वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। किरपा करे हरि ठाकर स्वामी, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी खाणी बाणी, दो जहान ढोला

जस रही गाईआ। सो जन भगतां देवे इक्को आपणा नाम निशानी, सच निशाना तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा देवे थाउँ थाईंआ। हरिजन उठो मारो झाक, हरि करता दया कमाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, अन्तर दृष्टी आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म मेला सज्जण साक, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ा दए जुड़ाईआ। लेखा चुक्के तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पन्ध दए मुकाईआ। सच वछाउणा देवे खाट, पलँघ रंगीला आत्म सेज वड्याईआ। अमृत रस निझर चाट, घर झिरना दए झिराईआ। लेखा चुक्के चौदां लोक हाट, चौदां तबक चरणां हेठ वखाईआ। जिस मन्दिर इक्को पुरख अगम्म दी गाओ गाथ, दूजी अवर ना करे पढ़ाईआ। कोटन कोटि खड़े त्रिलोकी नाथ, राम रामा सीस निवाईआ। पीर पैगम्बर बन्न्ही बैठे जमात, गल अल्फ़ी तन हंढाईआ। निरगुण सरगुण वेखो खेल तमाश, बेपरवाह धार चलाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां पूरी करे ख्वाहिश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। किरपा करे ठांडा सीत, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी जिस दी रीत, मन्दिर मसीत राह चलाइंदा। लख चुरासी वसणहारा ठीक, घट घट अन्दर सोभा पाइंदा। आदि जुगादी रखे धार बारीक, जगत नेत्र अक्ख ना कोए तकाइंदा। चिट्टे उपर काली मारी जाए लीक, लेखा लिख्त भविक्ख्त समझाइंदा। हर घट वसया भीतर भीत, निरगुण निरवैर आपणी कार कमाइंदा।
८४२ लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच फोल फुलाइंदा। जिस दे हथ्थ हार जीत, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। सो गुरमुखां काया ८४२
१६ करे ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाइंदा। नाम सुणाए धुर दा गीत, सोहँ ढोला आप अल्हाइंदा। करवट लै बदले पीठ, सनमुख १६
इक्को नज़री आइंदा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, रंगणहार सेव कमाइंदा। सदा स्वामी साहिब अतीत, त्रैगुण माया डेरा ढाइंदा। गुरमखां गुरसिखां कलयुग बख्शे सच प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाइंदा। लेखा जाणे बीस बीस, इकीस आपणा हुक्म वरताइंदा। एका छत्र झुल्ले साहिब सतिगुर जगदीश, दो जहानां शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। करे खेल आप अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। साचे सन्तां देवे भीख, भिच्छया आपणा नाम वरताइंदा। चार वरन साची सिख्या लैणी सीख, सोच समझ पिछली सर्ब चुकाइंदा। लेखा चुक्के ऊँच नीच, राउ रंक इक्को आत्म परमात्म नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खोज खुजाइंदा। किरपा करे श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख वेखे साचे सन्त, हरि सज्जण लए जगाईआ। मेल मिलावा नार कन्त, घर घर विच करे कुड़माईआ। नाम दरसाए इक्को मंत, मंतव आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। किरपा करे प्रभ बेपरवाह, बेपरवाही विच समाइंदा। जुग चौकड़ी गुरमुखां बण मलाह, बेड़ा दो जहानां पार कराइंदा। शब्दी देवे शब्द सलाह, गुर मन्त्र

नाम पढ़ाइंदा। जगत बसन्तर दए बुझा, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। आत्म ब्रह्म निरन्तर दए वखा, माया ब्रह्म डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी गोद सुहाइंदा। साची गोद साहिब सतिगुर, हरि करता इक जणाईआ। जिन्हां लेखा मस्तक धुर, तिन्हां मेले सहिज सुभाईआ। जो दूर दुराडे हरिसंगत नाल आवण तुर, तिन्हां लेखा लाए थाउँ थाईंआ। अन्तर अन्तर शब्द मिलावा सुरती सुर, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान होए आप सहाईआ। दयावान ठाकर एक, एकँकार हरि अख्वाइंदा। जन भगतां देवे धुर दी टेक, कूड़ा बन्धन ना कोए पाइंदा। घर विच घर खुल्हाए भेत, दर दर विच मेल मिलाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा । आत्म परमात्म दस्से खेड, सच खिलाड़ी आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचे जाणा उठ, सो सतिगुर आप उठाईआ। दीन दयाला जाए तुठ, पुरख अकाला होए सहाईआ । अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर धार वहाईआ। आवण जावण लख चुरासी जाए छुट्ट, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। लोकमात दा बूटा पुट, सचखण्ड दवारे दए लगाईआ। साहिब सतिगुर नाल गुरमुख कदी ना जाणा रुस्स, हरि जू रुस्सयां सदा मनाईआ । कबीर जुलाहे कोलों अग्गे जा के लैणा पुच्छ, जो उच्चे मन्दिर चढ़ के रिहा ढोला गाईआ। रविदास चुमारा लेखा लिखदा जाए कुछ, नाता जोड़ कलम छाहीआ। जिस गोबिन्द बणाया आपणा सुत, सो साहिब होए सहाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी कलयुग अन्तिम शब्दी मौले रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, जगत ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुखां उजल करे मुख, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म मिल के आवे सुख, जगत सुख संग ना कोए निभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा मिलाईआ। हरिजन मिलाए हरि जू आप, आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग जणाए साचा जाप, सोहँ ढोला राग अल्हाइंदा। कोटन कोटि जन्म दे मेट पाप, पुनीत पवित पतित आप कराइंदा। वस्त अमोलक दे के दात, ख़ाली भण्डारे तन भराइंदा। लहिणा मेट ज़ात पात, चारे वरन इक्को घर वसाइंदा । धूढ़ी मस्तक टिक्का लावे ख़ाक, जोत ललाटी डगमगाइंदा। अन्तर अन्तर नाता जोड़ धुर दा साक, सज्जण इक्को इक वेख वखाइंदा । बंद किवाड़ी खुल्हे ताक, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। अट्ठे पहर रहे प्रभात, संध्या रूप ना कोए वखाइंदा। मन वासना मेटे नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग वखाइंदा। किरपा करे प्रभ सज्जण सच्च, सति सति समझाईआ। काया माटी भाण्डा कच्च, थिर रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना सृष्टी रही नच्च, सतिगुर शब्द ना कोए कमाईआ। निज नेत्र खुल्ही किसे

ना अक्ख, दोए लोचण तक्कण सर्ब लोकाईआ। कूड़ी क्रिया रहे नट्ठ, माया ममता मोह हल्काईआ। अन्तर किसे ना मिले ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाह अलख अगोचर हरि-जू स्वामी, बेअन्त बेपरवाह अख्वाइंदा। जन भगतां वेखे गुण निधानी, गुणवन्ता भेव चुकाइंदा। अन्तर अन्तर हरि मन्त्र पढ़ो धुर दी बाणी, सच लेख आप समझाइंदा। घर बैठा ठाकर होवे जाण जाणी, जानणहारा आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाइंदा। सच करनी कार करदा आया, जुग करता वड वड्याईआ। जन भगतां सदा होए सहाया, सहायक आपणा नाउँ रखाईआ। त्रैगुण माया पड़दा दए उठाया, उहला रहिण कोए ना पाईआ। बण वचोला फेरा पाया, शब्दी ढोला राग सुणाईआ। साचा सोहला इक्को गाया, तन रबाब करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। हरिजन साचे जाणा समझ, साहिब दए वड्याईआ। गुर की धार अगम्मी रमज़, इशारे नाल समझाईआ। जिस दा लेखा जाणया तबरेज़ शमस, शमां आपणी दिती बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख इक्को राह दरसाईआ। गुरमुख राह वेखणा नेत्र दरस, हरि करता आप जणाइंदा। पुरख अकाल कर के तरस, रहमत सब दी झोली पाइंदा। किरपा करे मर्दाना मर्द, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। ग़रीब निमाणयां नाल वंडे दर्द, दर्दी हो के वेख वखाइंदा। पूरब जन्म दी फोल के वेखे फरद, जुग चौकड़ी भुल्ल कदे ना जाइंदा। जिन्हां सतिजुग त्रेता द्वापर प्रभ तेरे नाल मिलण दी कीती अर्ज़, तिन्हां आरज़ू आपणी झोली पाइंदा। अन्तिम निभावण आया आपणा फ़र्ज़, फ़ज़ल आपणे नाल रखाइंदा। एहो खेल प्रभू असचरज, जीव जंत समझ कोए ना पाइंदा। जिन्हां दी प्रभ नूं आपे पई ग़रज़, तिन्हां दूरों नेड़यों फड़ बांहों गले लगाइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दो जहान श्री भगवान सच जैकारा बोले कड़क, जैकारा इक्को इक सुणाइंदा। गुरमुख गुरसिख आपणी मंज़ल विच कोई ना जावे अटक, विष्न ब्रह्मा शिव अद्धविचकारे बैठा गुरमुख तेरा ध्यान लगाइंदा। कदी विचार ना लिऔणी स्वर्ग नरक, दोज़ख़ बहिश्त दोहां तों पार कराइंदा। लेखा चुका फर्श अर्श, आसा मनसा आपणे विच मिलाइंदा। कर किरपा जिन्हां उपर करे तरस, तिन्हां आपणे घर बहाइंदा। सच समझो श्री भगवान जन भगतां कदे होण ना देवे हरज़, पिछले हर्जाने छिन विच पूर कराइंदा। जिस दा राग नाद ताल किसे ना समझी तर्ज़, छत्ती राग सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। किरपा कर के चाढ़े रंग, अनडिठड़ा आप रंगाईआ। साहिब सतिगुर सूरा सरबँग, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। आत्म सेजा बैठ सच पलँघ, सच सिँघासण दए सुहाईआ। घर

विच घर देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। घर जोत चाढ़े चन्द, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे अनहद, अनहत मेला सहिज सुभाईआ । जन्म कर्म दी ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। कलयुग अन्त जिन्हां गुरमुखां सोहँ शब्द गाया छन्द, तिन्हां संसा सागर नज़र कोए ना आईआ। खुशी कर के बंद बंद, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों प्रभ होया आप बख्शंद, बख्शश लै के लोकमात फेरा पाईआ। गुरसिख खुशीआं नाल कहिण साडा अगला मुकया पन्ध, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। खहिड़ा छुटया पूजणा करीर जंड, मढ़ी गोर सीस ना कोए निवाईआ। गुर गोबिन्द पूरी आसा मनसा करी मंग, तृष्ना तृप्त रूप वखाईआ। नाता तुट्टया जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फेरा कोए ना पाईआ। अन्तिम वसणा उपर ब्रह्मण्ड, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। जिथ्थे मिले इक अनन्द, अनन्द इक्को इक वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी मिल के पए ठंड, सति सति सति इक्को इक नज़री आईआ। एथे ओथे सच प्रीती लईए गंढ, दिती गंढ ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी जन भगतां देवे अगम्मी वंड, वस्त अमोलक आप वरताईआ।

* ५ चेत २०२१ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर *

वेद व्यास लिख्या लेख अलेख, समझ कोए ना पाईआ। परम पुरख दा कोई ना जाणे भेस, वेस अवल्लड़ा कवण वटाईआ । थोड़ा थोड़ा सारे दे के गए संदेस, रसना जिह्वा बत्ती दन्द अक्खरां नाल समझाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह आदि जुगादी सति जोत प्रवेश, बेअन्त खेल खलाईआ। दो जहान श्री भगवान शाह सुल्ताना वड नरेश, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। नित नवित्त नर नरायण ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश लख चुरासी रिहा वेख, नेत्र अक्ख लोचण नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी सदा सदा सद निरगुण सरगुण करे हेत, निरवैर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, निराकार वड्डी वड्याईआ। वेद व्यास दिती दात, दाता दया कमाईआ। भेव खुल्हाया लोकमात, माण दिवाया कलम शाहीआ। प्रगट होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। निरगुण जोत धुर दी मात, पिता मात इक्को रंग समाईआ। कुँवार कन्या उस नूं गया आख, जिस दा कन्त बिनां बेअन्त नज़र किसे ना आईआ । सच दवारे रखे वास, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। जिस सम्बल इक्को दीपक जोत प्रकाश, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। सच समग्री धुर दी रास, पारब्रह्म प्रभ आप टिकाईआ। खेले खेल पुरख समराथ, महिमां अकथ आप जणाईआ। जिस दा लेख अलेख

किसे ना आवे हाथ, अन्त कहि ना कोए समझाईआ। शब्द इशारा जगत भविक्खत वाक, भाख्या भाषा विच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, सति सतिवादी सद वड्याईआ। वेद व्यास शब्दी दित्ता इक इशारा, तरह तरह समझाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, भेव अभेद आपणे विच रखाईआ। कलयुग अन्त होए उज्यारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, बंक इक्को इक वखाईआ। नाम निधान बोल जैकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दरवेश मंगणहारा, बैठण सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कारा, निउँ निउँ लागण पाईआ। भगवन देवे सच भण्डारा, भगवन वस्त अमोलक नाम वरताईआ। कलयुग वेखे विगसे वेखणहारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जानणहारा बिरध बाल जोबन अवस्था विच संसारा, रंग रत्ता इक अख्वाईआ। कागद कलम शाही ना पावे सारा, अन्त कहि ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि साध सन्त पढ़ पढ़ अन्तर आत्म करन विचारा, बिन परमात्म भेव ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां वाली मालक धुरदरगाहीआ। वेद व्यास बोल जैकार, जीव जगत जहान करी जणाईआ। कल कल्की कल लै अवतार, कल आपणी आप वरताईआ। खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी आत्म परमात्म होवे अन्तरजामी, पर्दा उहला आप उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए सच कहाणी, सति संदेसा धुर दा बोध अगाधा राग अलाईआ। जिस दी सिफ्त करे चारे बाणी, चारे खाणी जिस दा ध्यान लगाईआ। चार वेद जिस दी दस्सण निशानी, पुराण अठारां ढोले रहे सुणाईआ। अञ्जील कुरान जिस नूं कहे जाण जाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी सहिज सुखदाईआ। वेद व्यासा लिख के गया कलम, शाही काग़ज़ दए गवाहीआ। हरि के भेव दा किसे ना आए इलम, आलम उल्मा बैठण मुख भवाईआ। परम पुरख परमात्म मेहरवान हो के जन भगतां आए मिलण, जगदीश आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी चार कुण्ट जीव जंत सति धर्म तों सारे हिलण, सति सतिवादी रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। वेद व्यास लिख के एक, एका गया जणाईआ। सृष्ट सबाई साची टेक, श्री भगवान इष्ट देव मनाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता झूठा देस, सच देस नज़र किसे ना आईआ। हरिजन विरला काया मन्दिर अन्दर खेले सच्ची खेड, आत्म परमात्म मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। निरगुण जोती नूर सच प्रकाश मिले तेज, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। घर सुहञ्जणी सोभावन्त सुहाए सेज, पलँघ रंगीला नज़री आईआ। जो वेद व्यास नरंतर ल्या वेख, अन्तर ब्रह्म समझाईआ। सो दस्स के गया कलयुग बसन्तर कूड़ा ममता भेख, तन माटी ख़ाक जलाईआ।

पतिपरमेश्वर कोई ना करे हेत, जगत प्यार सर्ब लोकाईआ। बिन अक्खां नेत्र नैणां लोचणां लए वेख, वेखणहारा हर घट स्वामी सोभावन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेद व्यासा दे भरवासा, लेख लिखा पवण स्वासा, मण्डल रासा अनभव आपणा राह जणाईआ। वेद व्यासा लिख लिख गया थक्क, थकावट विच गया समझाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी प्रभ दा हट्ट, त्रैगुण माया पंज तत जगत वस्तू बिन कीमत करता आप विकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी वेखण नट्ट नट्ट, हुक्मे अन्दर जिन्हां रिहा भवाईआ। जो कुछ परम पुरख दस्सयां मैं ओहो रिहा दस्स, शहादत आपणी नाल भुगताईआ। कलयुग अन्त जो कुछ है सो प्रभ दे वस, करन करावणहार इक अख्वाईआ। जगत आयू कर देवे भट्ठ, बण भठियाला अग्नी अग्ग तपाईआ। करन करावणहार पुरख समरथ, साहिब दातार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल खेलणहारा इक्को नज़री आईआ। आओ दोवें अन्दर वड़ीए, घर आपणा वेखीए चाई चाईंआ। बिन अक्खरां तों निरअक्खर पढ़ीए, बिन नाम तों नाम मिले वड्याईआ। ओस प्रभू दा दर्शन करीए, जिस दा रूप रंग बाहरों नज़र किसे ना आईआ। बिन हथ्थां बाहवा ओहनूं फड़ीए, फड़ आपणे कोल बहाईआ। उस दे कोलों कदी ना डरीए, जो घर विच बैठा बेपरवाहीआ। जे ना मिले ते दिवस रैण लड़ीए, जे रुस्सया होवे फड़ चरणां लईए मनाईआ। उहदे पिच्छे जीवदयां जग मरीए, मर जीवत ओहो पाईआ। आपणा लेखा उहदी झोली धरीए, उह दा लेखा आपणे नाल रलाईआ। निरगुण जोत हो के निरगुण जोत मिलीए, मिल के इक्को रंग समाईआ। सच दवारे सचखण्ड ओस सज्जण दी गली विच फिरीए, जिथ्थे रोकणवाला नज़र कोए ना आईआ। जे भुल्ल जावे मार के छाल छाती उते चढ़ीए, हलूणे दे के लईए उठाईआ। बिरहों विछोड़े विच क्यों सड़ीए, घर सज्जण बैठा लईए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिले मेल बेपरवाहीआ। ओस प्रभू दा छोटा जिहा ढंग, वड्डी लोड़ रहे ना राईआ। हौली जिही अन्दरे अन्दर लओ मंग, देवणहारा बेपरवाहीआ। सहिज सुभाउ तुहाडी खोल्ह देवे गंढ, पर्दा बजर कपाटी परे हटाईआ। अमृत झिरना झिरा के पावे ठंड, कँवल कँवल मुख भवाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल सुणाए छन्द, अनहद राग अलाईआ। बिन मढ़ां मन्दिरां गुरदवारयां मसीतां आवे घरों अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मिल सज्जण चढ़े उह रंग, जेहड़ा उतर कदे जाईआ। सदा वसे आत्म सेज पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्से आपणे मिलण दा ढंग, कर्म कांड दा ढंगा दए तुड़ाईआ। कर्म कांड ने पाया ढंगा, डोरी नज़र किसे ना आईआ। कोई गोदावरी कोई जाए गंगा, जमना सुरस्ती कोई फेरा पाईआ। कोई तीर्थ तट्टां उते नहाउँदा जा जा

नंगा, अन्दर वड़ वड़ तारीआं लाईआ। कोई गुरदवारे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मङ्ग मंगे मंगां, आपणी झोली डाहीआ। सारयां नालों गुरमुख भगत उह चंगा, जो अन्दर बैठा ध्यान लगाईआ। ओथे साहिब सतिगुर परम पुरख पतिपरमेश्र भज्जा आवे पैरीं नंगा, वाहो दाही पन्ध मुकाईआ। हौली जिही अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के दस्म दवारी खड़ के आपणे मिलण दा दस्स जाए ढंगा, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। बिन बंदगीउँ बणा दए बंदा, बंदीखाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावणहारा आपणा घर, घर घर विच मेला मेल मिलाईआ।

* ५ चेत २०२१ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर *

पुरख अकाल सुण धुर दे बाप, प्रभू तेरी सरनाईआ। रविदास सपुत्री कहे मैनूं आया याद, पिछला लेख जणाईआ। तेरे प्रसाद दा अगम्म स्वाद, रस मिल्या बेपरवाहीआ। चरणी ढहि के अन्तिम गई आख, सच स्नेहड़ा इक सुणाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर पुछणी वात, मेहरवान निगह उठाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी दिसे रात, सति चन्द ना कोए चमकाईआ। पंजां बणदी दिसे जमात, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्मण खोल्ह के गठड़ी गाठ, लेखा रिहा वखाईआ। रविदास जुड़या तेरा नात, घर बिधाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा मुकाईआ। रविदास सपुत्री पा के रौला, सच गई समझाईआ। परम पुरख ना पर्दा कोई ओहला, ओढण सके ना कोए छुपाईआ। मेरा बाप तेरा जाप करदा रिहा गंढु के पौला, पानही साचा संग निभाईआ। तेरा पिछला भुल्लया अजे ना कौला, इकरार आपणी झोली पाईआ। वेख खुशी होई उपर धौला, धरनी रही जस गाईआ। लेखे लाए चार कहार चुक्कण वाले डोला, अन्तर लाड़ी सोभा पाईआ। पंजवें मित्र पर्दा फोला, भेव अभेदा रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। रविदास सपुत्री बाली निक्की, नंन्ही रही जणाईआ। मैं वेखी धार अगम्म चिट्ठी, रूप नज़री आया बेपरवाहीआ। जिस दे उते पंचम चेत लिखी मिती, बीस इकीस बिक्रमी खुशी मनाईआ। मैं खोल्ह के वेखी रविदास वाली पिछली चिट्ठी, जो आपणे कोल छुपाईआ। उस दी धार बड़ी सिधी, साधना रही दृढ़ाईआ। प्रभू खेल करना निजी, निज घर वेख वखाईआ। बिन रविदास किसे हथ्थ ना आवे बिधी, लख चुरासी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। सच वड्याई तेरे हथ्थ, देवणहार अख्वाइंदा। उठ खोल्ह प्रभू आपणी अक्ख, तेरा नैण इक्को सोभा पाइंदा। खुशीआं नाल

गीत गा के पवां हस्स, हँस मुख रूप वटाइंदा। पिछली पूरब पूरी कर आस, तृष्ना तृखा डेरा ढाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अज्ञान मुख छुपाइंदा। ब्रह्मण वेख आपणे पास, ब्रह्म लेखा तेरी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा तेरे दर नज़री आइंदा। रविदास सपुत्री सुण के बात, ब्रह्मण लए अंगड़ाईआ। चार कहार कहिण सानूं याद आया खाधा भात, पिछली अक्ख खुल्हाईआ। यार कहे मैं धुर दा वेख्या नात, सज्जण रविदास बैठा संग निभाईआ। ओधर खोते वाला घुम्यार रिहा आख, धुर दी धार जणाईआ। निरगुण निरवैर सारे वेखो साख्यात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी सेज सुहञ्जणी सोभावन्ती प्रभात, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। लहिणा चुकाए रविदास खाट, खटीआ आपणा रंग रंगाईआ। अगली पिछली कट के आया वाट, बण पांधी फेरा पाईआ। जो रस रसना दे के गया अगम्म अथाह स्वाद, प्रसाद इक्को इक वरताईआ। चरण चरणोदक दिती दाद, नाता नानक दादक दोहां गया तुड़ाईआ। जिस दा खेल जुगादि आदि, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जो वसे विच ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड सोभा पाईआ। जिस दा दो जहानां सुणे नाद, ढोला अगम्म अथाहीआ। जिस दा नाम कदे ना होवे बरबाद, नेसतो नाबूद ना कोए कराईआ। उह साहिब सब दी पूरी करे ख्वाहिश, ख़ालस आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लहिणा दए चुकाईआ। सुण के बात धुर दी हरि, वज्जी इक वधाईआ। भय भउ विच ब्रह्मण रिहा डर, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। हौली उठ के रविदास बांहों लए फड़, इशारे नाल जणाईआ। मेरा बन्न्हा धुर दा लड़, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मेरी पिछली विद्या गई हड़, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। मेरी हउमे हंगता माया ममता गई सड़, आसा तृष्ना बैठी मुख छुपाईआ। कूड़ कुड़यारा भुल्लया घर, दर वेखण कोए ना पाईआ। मैं जीवदयां जग्ग गया मर, मरने विच्चों जीवण नज़री आईआ। मेरा पूरब जन्म दा पूरा होया वर, लहिणा देणा देणा मुकाईआ। चालीआं दा भान चाली पैसे जो छड्डे घर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकाउणा धुर दर, दर इक्को नज़री आईआ। रविदास कहे सुण ब्रह्मण मित, मित्रा हाल सुणाईआ। करे खेल प्रभ नित नवित्त, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जन भगतां करे सच्चा हित, मनमुख देवे दर दुरकाईआ। करवट लै बदले पिठ, सनमुख आपणा रूप धराईआ। तेरा लहिणा देणा दर ठांडे लए नजिठ, मेहर नज़र नैण उठाईआ। आपणे अन्दर वेखीं रहिण ना देवीं विख, विख अमृत रूप बणाईआ। मेल मिलावां साचे पित, पतिपरमेश्वर जोड़ जुड़ाईआ। अन्तर आत्म मारे खिच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे मैनूं आया ख्याल, पिछली बात जणाईआ। मैं धुर दा बणया दलाल, वणज व्यपार इक वखाईआ। औह वेख तक्कण चार कहार, इशारयां नाल जणाईआ। साडा एहदे कोल

उधार, गिणती एसे हथ्थ रखाईआ। जिस दा लहिणा लए पुरख अकाल, दर तेरे दित्ता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर वेखे थाउँ थाईंआ। ब्रह्मण कहे मैं गया भुल्ल, पिछली याद किछ ना आईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता जन्म जन्म गया रुल, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। भाग ना लग्गा किसे कुल्ल, मात सुलखणी ना मिली वड्याईआ। मेरा कीमत प्या ना कोई मुल, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लेखा दए चुकाईआ। रविदास कहे दस्सां सच्च, तेरे अन्तर दयां समझाईआ। बाहरों काया माटी भाण्डा कच्च, सोहणा नज़री आईआ। अन्दर मन वासना रही नच्च, मुख घूँगट आप रखाईआ। करे खेल बाज़ीगर नट, बण स्वांगी स्वांग रचाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता खेड़ा कीता भट्ठ, हउमे हंगता अग्नी तत जलाईआ। धीरज रिहा ना कोई सति, सन्तोख अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। एसे कर के मैं गुरमुख हो के रिहा हस्स, अन्दरे अन्दर खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। ब्रह्मण कहे मैं बदलया जन्म, नव नौ गेड़ चुकाईआ। श्री भगवान मेटया भरम, भाण्डा भरम भंनाईआ। हरिसंगत मिल के मेरा उच्चा होया कर्म, कर्म कांड रहिण कोए ना पाईआ। रविदास तेरी किरपा मिली सरन, गुरमुख तेरा मेला सहिज सुभाईआ। मैं निमाणा डिगा चरण, बलहीण दयां दुहाईआ। जिस किरपा कर के मेरा पहलों बख्शया मरन, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। दूजे साथी मेरे नाल तरन, सोहणा जोड़ दित्ता जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए मुकाईआ। रविदास कहे प्रभू बड़ा गम्भीर, गहर गवर अख्वाइंदा। सृष्टी दिसे पंज तत शरीर, मोहे निरगुण निरवैर नज़री आइंदा। जिस दी मंज़ल चोटी इक अख़ीर, बिन कबीर चढ़ दरस कोए ना पाइंदा। रविदास कहे मेरा चोला वेख लीरो लीर, जिस दा सिँघासण पुरख अकाल इक वडियाइंदा। पंडत एहदे विच तेरी तकदीर, तदबीर हौली जिही समझाइंदा। तूं तक्क ला नाल नज़ीर, बेनज़ीर नज़री आइंदा। जिस ने मारी शब्द लकीर, कलम शाही संग ना कोए वखाइंदा। दर ठांडे हो अधीन, साहिब मस्कीन दया कमाइंदा। जलवा नूरी इक रंगीन, रहमत बख्शिश सच सच वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। रविदास सच्ची दस्सी गाथ, पिछला लेखा नाल रलाईआ। ओधर चार कहारां सुण लई बात, पंजवां यार लए अंगड़ाईआ। पंजे मिल के इक जमात, आपणा हाल सुणाईआ। रवी साडे वल झाक, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। साडा ब्रह्मण हिसाब ना कीता बेबाक, खाता साफ़ ना कोए वखाईआ। श्री भगवान तेरे घर बहि के गया आख, प्रेम नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लहिणा दए मुकाईआ। रविदास कहे सुणो मेरे बच्चे, बाली बुध जणाईआ। बेशक तुसीं सारे सच्चे, सच्चयां विच्चों सोहणे नज़री आईआ। परम पुरख दे बोल

कदे ना कच्चे, कूड़ी गंढु ना कोए वखाईआ। चालीआं विच्चों जो बीस बचे, सो लेखा लेखे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण कहाणी पिछली एक, रविदास सिँघासण रिहा सुणाईआ। ब्रह्मण पहलों करे बुध विवेक, अन्तर आत्म साफ़ कराईआ। फेर हरिसंगत लए वेख, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। दोए जोड़ कहे मैं बणया नेक, पिछली आदत दिती गंवाईआ। जूठा झूठा छड्डया भेख, कूड़ी क्रिया छड्डी कमाईआ। रविदास अन्दर वड़ के दस्स भेत, बाहरों दे जणाईआ। मैं वेखां सच्ची खेड, जिस खेल विच वसे बेपरवाहीआ। जिस तेरी सुहाई सेज, सोहणा आसण लाईआ। सो मेरा मन्दिर लए वेख, काया कन्दर फेरा पाईआ। मैनूं आवे उस दा हेत, बिरहों रोग लग्गा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पंज कहिण साडा लेखा अजे ना चुक्का, बाकी सारे रहे वखाईआ। नाले ब्रह्मण वल वखावण मुक्का, पंजे उंगलां बंद कराईआ। हुण जाण नहीं देणा सुक्का, फ़रेब छल रहिण कोए ना पाईआ। जिन्ना चिर साडे पुरख अकाल पिता दा बणे आप ना पुत्ता, पतिपरमेश्वर मंगे इक सरनाईआ। उधरों सिँघ तेजा सिँघ हथ्थ विच लै के आ गया हुक्का, होका दे के रिहा सुणाईआ। मैं उह घुम्यार नहीं हुण भुक्खा, जो बच्चयां रिहा रुवाईआ। मैं सोहणी सेजे सुत्ता, सच सिँघासण डेरा लाईआ। ब्राह्मणा ओथे ब्राह्मण कोई नहीं लुच्चा, पखण्डी नज़र कोए ना आईआ। वेख्या गुरमुख गुरसिख सोहणा सुच्चा, सच सुच्च विच समाईआ। मैनूं याद आया रविदास दवारयों खाधा टुक्कर रुक्खा, जिस उपर दृष्टी श्री भगवान पाईआ। मेरा उजल होया मुखा, सोहणा जोबन आपणा रंग वटाईआ। दीन दयाल साहिब तुठ्ठा, मेहरवान आपणी मेहर नज़र टिकाईआ। वेख नाता पिछला प्यो पुत्ता, कलयुग अन्तिम भाईआं विच्चों भाई नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह लेख अथाह, समझ कोए ना पाइंदा। रविदास नैण रिहा उठा, गुरमुख अक्ख आप खुल्हाइंदा। चारों कुण्ट ध्यान लगा, दहि दिशा पड़दा आप चुकाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार वेखे शहिनशाह, शाह पातशाह सच सिँघासण सोभा पाइंदा। पाटा चीथड़ जिस नूं रिहा सुहा, दो जहानां सोहणा रंग रंगाइंदा। वेख वेख गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशी रहे मना, खुशीआं अन्दर ख्वाहिश सब दी पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। चौथा कहार कहे मेरी याद इक, इक्को वार जणाईआ। रविदास जो लेखा दित्ता लिख, श्री भगवान आप दृढ़ाईआ। उह अक्खर अजे ना पए दिस, रूप रंग ना सके कोए प्रगटाईआ। दस्स रखे केहड़ी गुठ, चारे कुण्टां विच्चों दबाईआ। उधरों रविदास सपुत्री हस्स के कहे वीर मैनूं पुछ, मैं तैनूं दयां समझाईआ। ना पर्दा ना कोई लुक, भेव सके ना कोए छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

८५२
१६

कर, सच देवे माण वड्याईआ। आह वेख चिट्ठी उह अपार, बाली नंन्ही नढ्ढी रही जणाईआ। जिस विच लेख लिखाया हरि निरँकार, रविदास चुमार दए गवाहीआ। तुहाड्डा जामा बदलया नार, विच संसार मिली वड्याईआ। ओधर ब्रह्मण दा बाकी रिहा उधार, लेखा जाणे बेपरवाहीआ । समें विच्चों समां ल्या विचार, वक्त विच्चों आपणा वक्त साचे लेखे लाईआ। जिस दी समझ किसे ना आई जुग चार, चौकड़ी खोज ना कोए खुजाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा अज्ज, पंज चेत वज्जे वधाईआ। सच सिँघासण साहिब सज, पुरख अकाल खुशी वखाईआ। नौ जन्म दी ब्रह्मण मुक्की हद्द, गेड़ा गेड़ ना कोए वखाईआ। पिछली आदत दिती छड्ड, नाता छड्डया जगत लोकाईआ। मरन तों पहलों लेखे ला के हड्ड, हड्डीआं विच्चों हदीस इक्को झोली पाईआ। संगी साथी सारे सद्द, गुरमुख मेल मिलाईआ। दर दरवाज़ा आओ लँघ, सच बंक सुहाईआ। परम पुरख दा सोहे पलँघ, रविदास सेज मिले वड्याईआ। नाता तोड़ भुक्ख नंग, जगत वेस ग़रीबी डेरा ढाहीआ। सच देवण आया अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। चार कहारां पूरब करे पूरी मंग, पंजवां लेखा सहिज सुभाईआ। जो मन्दिर कोल बहि के गिणी आपणी गंढु, तिस दा हिस्सा रिहा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या सुण लै मिसर, मसला इक जणाईआ। पिछला लेखा जाए विसर, विसरे वस्त पराईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों उजल नूर आए नित्तर, स्वच्छ सरूप वखाईआ। परम पुरख घर मिले मित्र, मित्र प्यारा होए सहाईआ। रविदास दे हुण ना वेख टुट्टे छित्तर, शहिनशाह सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे कदे ना जाए विछड़, पिछले विछड़े रिहा मिलाईआ। गल लावे भरीआं चिक्कड़, कोझे कमले गोद उठाईआ। गुरमुखो तुहाड्डा पिछला करदा आया फ़िकर, नावें जन्म लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। सोहणा अग्गे चित्र देवे चित्र, सच तराश बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। ब्रह्मण कहे मैं केहड़ी पाई लुट्ट, प्यो दादे दी रीती तोड़ निभाईआ। की होया जे गंगा किनारे जा के चुली पी के इक घुट्ट, आपणे अन्दर अन्तर ल्या दसाईआ। बाहर आ के राहीआं पांधीआं ल्या पुच्छ, सिध्धे रसते दित्ता पाईआ। ओनां नूं भार ना चुक्कणा प्या कुछ, सब कुछ आपणी झोली लवां बंधाईआ। मार के थापीआं सब नूं देवां पुत्त, अक्खां नाल समझाईआ। जे कोई जजमान कोल बहे ओनूं कहां मेरे चरण घुट्ट, मेरे चरणां विच्चों चानण नज़री आईआ। जे कोई अगली गल्ल लए पुच्छ, कुण्डलीआं पा के रुपया सवा रोक उते टिकाईआ। जे किसे दा जोड़ा होवे दार नोक, अन्दर नीती नाल लवां चुराईआ। घर मिशराणी नाल माणां मौज, सोहणा संग निभाईआ। एहो जिहे जन्म फेर नहीं मिलणे रोज़, ब्रह्मणी गोद ना कोए सुहाईआ। बौहड़ी रविदास नाल मिल के मेरा पूरा ना होया शौक, मन आसा

पूर ना कोए कराईआ। जिस अन्दर वाड़ के प्रभ दी जगदी वखाई जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। मेरी पिछली भुल्ल गई सोच, बेसमझ दित्ता बणाईआ। अक्ख खुल्ही ते आई होश, नेत्र नैणां लई अंगड़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आया बैठा ख़ामोश, ख़ालश आपणा रूप धराईआ। सच प्रीती अन्दर होया मदहोश, मधुर रस इक्को इक जणाईआ। मेरे हिलणों हट गए होंट, जिह्वा सके ना कोए जणाईआ। मैं चार कुण्ट वेख के किहा मैं अजे निर्दोष, दोषी सके ना कोए ठहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे बेपरवाहीआ। रविदास कहे ब्रह्मण तेरी अन्तर जाणा गत, तैनूं दयां समझाईआ। हुण छड्ड दे पिछली मत्त, मतयां विच ना जन्म गंवाईआ। प्रभ मिलण दी खोल्ह अक्ख, दोंह अक्खां विच्चों अक्ख इक्को सोभा पाईआ। सति प्रेम दा लै रस, कूड़ी क्रिया होए जुदाईआ। पंजां दा दे दे पिछला हक़, जो बैठा आप दबाईआ। श्री भगवान लहिणा देवे किसे ना छड्ड, जुग चौकड़ी जन्म जन्म खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस इक सुणाईआ। चार कहार पंजवां यार करन सलाह, आपणा मत्ता पकाईआ। बीसां दा लेखा गया चुका, सच प्रसाद संगत वरताईआ। बीस बकाया गया रखा, रविदास चुमार गवाह बणाईआ। पंजवीं चेत साह सुधा, परविश्टा सच गया दृढ़ाईआ। दर दवारे जावां आ, आपणा भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हत्थ टिकाईआ। एधर ब्रह्मण अन्दर पवे हौल, बौहड़ी बौहड़ी कर रिहा कुरलाईआ। मैं काहनूं कर ल्या कौल, वेला अन्तिम गया आईआ। मैं मारया गया अनभोल, मेरी सोच समझ रही ना राईआ। पहलों मेरी गठड़ी फोल, इक्की पगड़ीआं सिखां दितीआं वरताईआ। फेर घुम्यार दी वज्जी चेते आई धौल, जो दोहर पिच्छे सीस टिकाईआ। उधरों रड़कण लग्गे रविदास दे खाधे चौल, जिन्नां श्री भगवान भोग लगाईआ। एधरों चार कहार पए बोल, धुर संदेसा रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा अन्दर बाहर वेख वखाईआ। ब्रह्मण कहे करां की, समझ विच किछ ना आईआ। ना पुत्त ना धी, बंस सरबंस ना कोए सुहाईआ। नौ जन्म केहड़ा फल ल्या बी, पत्त डाल्ही ना कोए महकाईआ। जन्म जन्म विच सति धर्म दी रखी कोई ना नींह, महल अटल ना कोए सुहाईआ। मेरी हड्डीं दर्द होया रीह, अट्ठे पहर रही सताईआ। इक ब्रह्मणी इक नकर्मण जीअ, जगत जहान विच नेत्र रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मंगे, एका हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मण कहे मेरी डुब्बदी जाए नईया, किनारा नज़र कोए ना आइंदा। हाए बौहड़ी मैं किस तरह कोलों कढ्ढ के देवां रुपय्या, देणा औखिउँ औखा नज़री आइंदा। मेरी किधर गई जजमानां वाली वहीआ, जिस दा हिसाब खाता सब वल बकाए विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप

रचाइंदा। ब्रह्मण अन्दरों होया दिलगीर, सहिम सहिम कुरलाईआ। मेरे नाल की होया अख़ीर, अक्खीं वेंहदयां वेंहदयां अक्खी गया बदलाईआ। मेरी बदलदी जाए तकदीर, तदबीर समझ कोए ना पाईआ। मेरी कवण कटे भीड़, दुखी दर्द वंडाईआ। नेत्र रोवे नीर, नैणां छहबर रिहा वखाईआ। सिँघासण उपर चोला वेख के लीरो लीर, हौसला आपणा फेर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास वेख ब्रह्मण विचार, इक्को वार समझाईआ। उठ ठग्गा हो ख़बरदार, साची ख़बर दयां सुणाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर सर्ब जीआं दा सांझा यार, दूई संग ना कोए रखाईआ। पतित पापी जुग चौकड़ी रिहा तार, जो चल आयण सरनाईआ। रोग सोग चिन्ता दु:ख दए निवार, माया ममता मोह मिटाईआ। दोए जोड़ दर कर निमस्कार, माण अभिमान दोवें दे गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेखे लए लगाईआ। ब्रह्मण कहे मैं किस बिध जावां उठ, आपणा बल धराईआ। ब्रह्मणी फोलण नहीं दिती उह गुठ, जिस विच जगत ख़ज़ाना ल्या लुकाईआ। मेरे हथ्थ विच नहीं कुछ, ख़ाली दयां दुहाईआ। ना धी ना कोई पुत्त, निशानी जगत ना कोए जणाईआ। बारां चेत औध जाणी सी मुक्क, पिच्छे याद ना कोए रखाईआ। रविदास तेरे जीऊँदे रहिण पुत्त, जिस मेरी फेर बणत बणाईआ। तेरे कहिणे नौ जन्म दा अपराधी गया छुट्ट, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। बाकी तिन्नां मांवां नूं होर मिल गए पुत्त, ख़ाली गोद भागांवन्त बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास कहे तूं की जाणें अणजाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। परम पुरख शैतानां विच्चों शैतान, शैतानी समझ किसे ना आईआ। मेहरवानां विच्चों मेहरवान, महिबूब दाता बेपरवाहीआ। काहनां विच्चों वड्डा काहन, लख चुरासी गोपी रिहा हंढ्ढाईआ। रामां विच्चों वड्डा राम, सीता सुरती सर्ब प्रनाईआ। गुरुआं विच्चों गुरू ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। महल्लां विच्चों अटल मकान, सच मनारा सोभा पाईआ। निशानां विच्चों उच्च निशान, शहिनशाह इक्को इक झुलाईआ। राज राजानां विच्चों इक राजान, वाली दो जहान अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रविदास कहे ब्रह्मण खोल्ह गंढु, तैनूं देवां सच जणाईआ। पिछला लेखा मुकयां पवे ठंड, अग्नी तत ना लागे राईआ। घर घर विच लै अनन्द, सुख सागर रूप समाईआ। तेरा जन्म जन्म दा मुक्कया पन्ध, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। खुशीआं नाल गाउणा छन्द, गीत गोबिन्द अलाईआ। तेरा लेखा मुक्के नाल पंज, पंजां वज्जे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। ब्रह्मण अन्दर आई विचार, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। पिछला लहिणा देवां उधार, कर्ज़ा सीस ना कोए टिकाईआ। मैनूं चारे दिसण उह कहार, पंजवां तेली रूप वटाईआ। लिखण वाला रविदास

चम्यार, गुरमुख सोहणा लेख लिखाईआ। वेखणहारा सिरजणहार, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। परखणहारा दो जहान, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। एधर ब्रह्मण गंढु नूं पाए हथ्थ, पंजां उंगलां नाल रलाईआ। सचखण्ड दवारयों सिँघ पाल आया नट्ठ, हौली जिही जणाईआ। ओ ब्रह्मणा तेरी ज़ात ब्रह्मण बदल के होई जट्ट, जट्टां घर वड़या बेपरवाहीआ। तूं जट्टां दा पुत्त इक वारी प्रभ दे अग्गे डट, आपणा हौसला दे वखाईआ। नहीं ते उठ के जा नट्ठ, दो जहान वेख चाईं चाईंआ। अग्गों घुम्यार दिस प्या ब्राह्मणा मेरे खोते दी लाह छट्ट, नहीं ते लोटा तेरा दयां भंनाईआ। ब्रह्मण इधर उधर मारन लग्गा हथ्थ, गठड़ी हथ्थ कोए ना आईआ। रविदास लिखदा लिखदा प्या हस्स, खुशीआं हाल सुणाईआ। मूर्खा सब नालों पहलों प्रभ दी चरणी ढठ्ठ, जिस दर मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रविदास सुण के इक संदेसा, सिँघ पाल खुशी मनाईआ। प्रभ दा पिछला नहीं हुण वेसा, अगली खेल रचाईआ। दो जहानां बण के नर नरेशा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। ब्राह्मणा नौ जन्म तूं चुक्की रख्या ठेका, एसे दे हुक्मे अन्दर फेरा पाईआ। हुण भुल्ल ना जावीं वेखी वेखा, तैनूं धुर दी कहाणी दयां दृढ़ाईआ। जिंना चिर तेरे अन्दर वड़ के दस्से ना भेता, ओनां चिर मन्नीं ना कोई रज़ाईआ। उधरों हुक्के वाला कहे पहलों मेरा साफ़ कर नेजा, सोहणी सेव कमाईआ । फेर तैनूं वी मिले मेरे वरगी सेजा, जिस सेज उते सुत्ता बेपरवाहीआ। मैनूं एसे कर के भेजा, जा के भगतां दे जगाईआ। माणस जन्म दी लख चुरासी विच्चों इक्को वार हथ्थ आवे खेडा, फेर ख़लारी खेल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। पाल सिँघ कहे ओ जट्टा खोल्ह पलक, तैनूं सच दयां दृढ़ाईआ। एह वाली दो जहान ख़ालक ख़लक, मख़लूक विच समाईआ। जिस मेरे नाल लाया तअलक, तलाक दो जहानां दित्ते तुड़ाईआ। मेरा वसेरा उपर फलक, फर्श वेखण आया चाईं चाईंआ। तेरा चरणां नाल रगढ़ देवे तिलक, तअल्लक आपणे नाल रखाईआ। लेखा चुक्के रोण विलक, कूक देवे ना कोए दुहाईआ। तन पहनाए साची ख़िलत, शहिनशाह शहिनशाह शहिनशाह शाह दए बणाईआ। तेरी पिछली मेटी सारी ज़िलत, ख्वारी आपणी झोली पाईआ। वेखीं फेर ना कदे करीं इलत, आदत साहिब सतिगुर दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। पाल सिँघ कहे गल पा पल्ला, पालकी वाला इक्को नज़री आईआ। पीर पैगम्बर जिस नूं कैहन्दे नूरी अल्ला, अल्ला नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच सिँघासण जिस ने मल्ला, सोभावन्त सोहणी सेज सुहाईआ। सचखण्ड दवारयों जिस लोकमात मैनूं घल्ला, खुशीआं नाल आपणा हुक्म मनाईआ। जा के दस्स ब्रह्मण फेर ना होवे झल्ला, झल्लया झलक देवे

बेपरवाहीआ। तेरे नाल तारया डल्ला, माँ जन्म कुक्ख ना फेर दिवाईआ। चौथे यार फड़ा के पल्ला, मुहम्मद दी शहादत दिती भुगताईआ। अजीत सिँघ नहीं इकल्ला, ग़रीब निमाणा निमाणयां विच्चों सच्चा संग बणाईआ। करया खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी धार वखाईआ। पिछला बदल गया ज़माना, ज़मानत देण वाला चम्यार इक्को नज़री आईआ। जिस दे कोल परम पुरख दा पैमाना, पैमाइश करे थाउँ थाईंआ। नाल रख गुण निधाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पाल सिँघ कहे मेरी मन्नो आखी, बिन अक्खरां दयां समझाईआ। ओथे वेख्या ऐथे तक्कया इक्को साथी, सगला संग निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ओथे पढ़दे साखी, एथे गुरमुख राग अल़ाईआ । दोहां दा मालक कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। इस दे कोलों खुल्ह़ा लओ ताकी, दरवाज़ा बंद फेर ना कोए कराईआ । वेख्यो भुल्ल ना जायो एह बंदा ख़ाकी, बंदा ख़ाकी नहीं नूर इलाहीआ। जे पीओ ते जाम देवे बण के साकी, साख्यात बेपरवाहीआ । मैं सुणावां बात साची, सच सच सच दयां दृढ़ाईआ। एह पंजां दसां दा अमृत पीवे राती, औदां जांदा नज़र किसे ना आईआ । एह उह अगम्मी साखी, जो पहली वार नानक अंगद दिती समझाईआ। एसे कारण मैं स्नेहड़ा लै के आया धुर दी पाती, पतिपरमेश्वर लेखा दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कमाईआ। पाल सिँघ कहे रविदास होया गुरमुख, साहिब सतिगुर खेल खलाईआ। ब्रह्मण संगी बण मिटा लै दुःख, दर्द जगत वंडाईआ। बेशक भाग नहीं लग्गा ब्राह्मणी कुक्ख, तेरा नाम ढोले गाए जगत लोकाईआ। क्यों, सतिगुर पूरे गोदी ल्या चुक्क, फड़ बांहों गले लगाईआ। इस तों वड्डा होर नहीं कोई सुख, कोटन कोटि राज राजान कोटन कोटि राणीआं महाराणीआं गए हंढ्ढाईआ। कोटन कोटि साध सन्त जल धारा बहि के चुप्प, अन्धेरे घुप्प अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। किसे नहीं किहा आ गुरसिख मेरे पुत्त, परम पुरख बच्चयां वांग आपणी उंगली लाईआ। बाहरों वेख ना भुल्लणा एह पंज तत मनुक्ख, मनुक्खां विच्चों माणस माणसां विच्चों मालक मालकां विच्चों ख़ालक ख़ालक विच्चों ख़लील बेपरवाहीआ। उपर ना वेखो चरणी वेखो झुक, जिथों मिले वड्याईआ। जिस खवाया रविदास दा सुक्का टुक्क, सो टुकड़यां गुरमुखां दे टोकरयां विच भराईआ। घर आ फेरा पा लए पुच्छ, हौली हौली उठाईआ। जे कुछ बच्चयो तुहानूं दुःख, मेरी झोली दयो पाईआ। मैं सब दा भार लवां चुक्क, चुक्क थक्क कदे ना जाईआ। जे किसे गल्लों गए रुस्स, रुस्सयां लवां मनाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों आ के किहा आओ मेरे पुत्त, पिता पूत गोदी लए सुहाईआ । ब्राह्मणा एस निशान्यौं कदे ना जाईं उक, वेला गया हथ्थ कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। पाल सिँघ कहे ओ ब्राह्मणा

अग्गे अड़, अड़िका दे वखाईआ। जिन्हां चिर मेरे अन्दर ना जावें चढ़, गुरमुखां घर घर दरस दिखाईआ। आत्म सेजा बहि के साडा नाम ना लएं पढ़, तेरी करे ना कोए वड्याईआ। साडे पिच्छे जे तूं ना जावें मर, अबिनाशी तेरी दिसे ना कोए चतुराईआ। असीं तेरे आए दर, तूं साडे वसिउँ घर, घर विच्चों घर तेरी झोली पाईआ। असीं नहीं जाणदे चेतन जड़, चेतन जड़ तेरी वस्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पाल सिँघ कहे मूल नहीं डरना, डरयां हथ्थ किसे ना आईआ। वेख्यो पाणी विच नहीं ठरना, ठरयां पार ना कोए लँघाईआ। लम्बू अग्नी कदे ना सड़ना, सड़यां संग ना कोए रखाईआ । मित्रो अट्ठे पहर कदे ना पढ़ना, पढ़यां रंग ना कोए वखाईआ। सच पुच्छो इके वार ढहि पओ सरना, सरन विच्चों चरण चरण विच्चों तरनी तरन नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच सच दए समझाईआ । पाल सिँघ कहे मैं आपणी दस्सां कहाणी, पिछली याद कराईआ। मैनूं अक्खरां विच दस्सण लग्गा बाणी, उंगलां रख रख आप पढ़ाईआ। मैनूं वखौण लग्गा चार खाणी, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज विच भवाईआ। मैनूं राजा बणा के दसौण लग्गा राणी, सोहणा हार श्रृंगार जणाईआ। मैनूं मित्र बण के पिऔण लग्गा ठंडा पाणी, भर कटोरा हथ्थ फड़ाईआ । मैनूं प्रेम कर के सवौण लग्गा उपर लेफ़ निहाली, वस्त्र सेज सुहाईआ। गुरमुखो मैं आपणी अक्ख बदला लई, एधर ध्यान ना कोए टिकाईआ । जिंना चिर पुरख अकाल आप ना मिले जोत अकाली, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। मेरे वासते दो जहान दिसण ख़ाली, ख़ालक नज़र कोए ना आईआ। नाले बण मालक नाले कर दलाली, फेर मर्ज़ी मेरी तेरे नाल चंगी तरह बण आईआ। श्री भगवान कहे तूं किथों एहो जिहा आ ग्यों सवाली, जिस मेरे अन्दरों मेरी मंग मंगाईआ। मैं ख़ुशी नाल वजा के ताली, ख़ुशीआं हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। पाल सिँघ कहे सुणो कहाणी, कहावत विच्चों कथा दयां समझाईआ। इस दी मंगो उह बाणी, जिस बाणी विच्चों बाण सब नूं रिहा लगाईआ । इस दी मंगो उह निशानी, जिस निशाने विच नछावर होया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार हब किछ अख्वाईआ। हब किछ दवंदड़ो, दयानिध दयाल। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो एह वेला कुछ मंग लओ, साहिब सतिगुर होए कृपाल। हुण दी मंगी मंग अग्गे अनन्द लओ, जन्म मरन दा चुक्के काण। डुब्बदा बेड़ा मात बन्न्ह लओ, तरना होए सुखाल । अंगीकार हो के अंग लाओ, एथे ओथे आपे करे संभाल। जे होर किछ नहीं इक्को सच्चा छन्द गाओ, तूं मेरा मैं तेरा लाल। पंडत जी आपणी गंढ खुल्हाओ, वीह रुपय्ये कढ्ढो बाहर। पंजे मित्र अग्गे हथ्थ उठाओ, चार चार आपणा पिछला लओ उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे

दीन दयाल। रविदास कहे गिणो चार, चवां भेत जणाईआ। इक इकल्ला एकँकार, दूजी कुदरत खेल वखाईआ। तीजे निरगुण सरगुण कर प्यार, चौथे जीवत जी तराईआ। चार चार दा इक प्यार, पंचम संग वखाईआ। पंचम लहिणा रविदास चुमार, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। रविदास नाल हरि निरँकार, करता पुरख बेपरवाहीआ। जेहड़ा विसर ना जाए कदी जुग चार, चौकड़ी आपणी खेल वखाईआ। ठग्गां विच्चों ठग्ग तरया बुरयार, पिछली ठगौरी दिती गंवाईआ। कहारां दी आसा नच्ची बण के नार, नर नरायण होए सहाईआ। रविदास दा मित्र रविदास सवाणी वल कर ख्याल, आपणा जामा आया बदलाईआ। पुरख अकाल सच्चे दा गुरमुखो अन्दर कोई ना करयो विचार, अन्तष्करन प्रभ सदा वेख वखाईआ। भगतां कोल कदे हस्स के ना करयो एहो जिहा बिवहार, भगतां आवाज़ भगवन आपणे विच टिकाईआ। एन्हां पिच्छे सारी संगत दए सुधार, सुध आत्मा आप कराईआ। प्रभ दा भाणा मन्नो विच संसार, मन वासना ना कोए कुरलाईआ। श्री भगवान इक्को जिहे रखे पुरख नार, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। ख़ाहिश अन्दर करे प्यार, तलाश अन्दर फिरे शौदाईआ। निरास वेख दए प्यार, रविदास सोहणा लेख लिखाईआ। पंडत जी अग्गे ना करना कोई विभचार, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। वीह वीह पिछला लाह उधार, चालीआं लेख चुकाईआ। चालीआं पैस्सयां पिच्छे तेरी तर जाए नार, माणस जन्म लेखे पाईआ। नौ जन्म भोगणे पए विच संसार, चौथे कहार इशारा दित्ता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। पंजे कहिण सानूं मिल गया लेखा, रकम पिछली हथ्थ आईआ। अग्गे पए ना कोए भुलेखा, भरम विच ना कोए भुलाईआ। जिस साहिब ने अग्गे रख्या चेता, लेखा दित्ता थाउँ थाईंआ। कर प्यार कीता हेता, हितकारी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद होए सहाईआ। पंजे कहिण खोल्हीए अक्ख, इक दूजे रहे जणाईआ। साहिब सतिगुर दरस पाईए प्रतख, पारखू बैठा बेपरवाहीआ। साहिब सतिगुर सब कुछ तेरे हथ्थ, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, सब कुछ तेरा तेरी भेंट चढ़ाईआ। तूं पिता पुरख समरथ, बापू इक्को नज़री आईआ। जे साडा लहिणा दित्ता झट्ट, पूरब झोली पाईआ। अग्गे साडे वीर जो पंज सानूं रहे छड्ड, नाता जगत तुड़ाईआ। साडे पिच्छे ओन्हां रख, एहो तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वड्याईआ। पंज कहिण साडा जामा नार, कन्या रूप नज़री आईआ। प्रभू भैणां दा भाईआं नाल प्यार, एह वी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिन्हां दा छुटण वाला संसार, मुख छुपा के आपणा आप लैण लुकाईआ। पिच्छों किन्हां करीए गिरयाज़ार, घर मिलण कोए ना आईआ। किसे दी माँ बुढड़ी रोवे ज़ारो ज़ार, किसे दी नार मुटयार दए दुहाईआ। किसे दे बच्चे करन पुकार, हौके लै लै रहे सुणाईआ। किसे दी गंढु

८५८
१६

नहीं पई संसार, इक इकल्ली जान कुरलाईआ। सब कुछ तेरे हथ्थ मेरे निरँकार, तूं दाता बेपरवाहीआ। जे ब्रह्मण कोलों साडा पिछला दित्ता उधार, कर्ज़ा झोली पाईआ। खुशीआं नाल अज्ज ओनृां तार, जिनृां दी नईया डुब्बण किनारे आईआ। तेरे बिनां देवे कौण सहार, फड़ बांहों पार लँघाईआ। पंजे उठ के करो अरदास, प्रभू एहो बेनन्ती ख़ास, सब नूं बख्श दे अग्गे होर स्वास, स्वास सवास्सयां नाल मिलाईआ। खुशी विच ग़मी ना होए प्रकाश, पंचम चेत एहो निशानी नज़री आईआ। सारे कहो लिख चम्यार रविदास, तेरी कलम छाही टुट्टयां गंढु वखाईआ। वेख तक्कण पृथ्मी आकाश, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। एधरों पाल सिँघ मारी आवाज़, हरिसंगत सुणो अन्तर ध्यान लगाईआ। सारे कहो प्रभू तूं साडा बाप, बख्श बच्चे चाईं चाईंआ। आओ तुहानूं वखावां जिनृां दा वड्डा प्रताप, जगदीश मनजीत उंगली लाईआ। गुरदयाल सिँघ लै के साथ, सवरन संगत बणाईआ। असीं वी पंजे बण के आए इक जमात, पंजां मिलीए चाईं चाईंआ। श्री भगवान नूं जाईए आख, गल पल्लू चरण ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल इक वार मापिआं बख्श जा दात, भाई भाईआं संग रखाईआ। तैनूं केहड़ा आवे घाट, एथे ओथे तेरी इक्को इक वड्याईआ। रविदास कहे मैं वी थोड़ी जिही दस्सां बात, जो मेरे प्रभू मैनूं दिती समझाईआ। छे चेत दी आवे रात, पंजे मिल के बेनन्ती करो ख़ास, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। अग्गे लेखा लिखे फेर ललाट, बिधना लेख दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। पंज कहिण साडे नाल तार पंज, पिछली लिख्त चेते आईआ। प्रभू साडे उते काहदा रंज, केहड़ी गल्लों मुख भवाईआ। जे पिछली पूरी कीती मंग, अग्गे झोली दे भराईआ। हरिसंगत खुशी बणया रहे संग, सोहणा बंस सरबंस सुहाईआ। जिस संगत विच बहि के ब्रह्मण छड्ड गया भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया गया तजाईआ। दीन दयाल हो के आप बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। धुर दा दे के इक अनन्द, सदा अनन्द चित समाईआ। उहदे पल्लउँ खोलृ के गंढु, पंजां दिती वरताईआ। कढ्ढे कर के सारयां पाई ठंड, अग्नी तत दित्ता बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, शहिनशाह तेरी इक शरनाईआ। शहिनशाह कहे मंगो मंगते, देवणहारा बेपरवाहीआ। एह मौका तुहानूं मिल्या संगते, लख चुरासी हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुख विरले चोली रंगदे, रंग अगम्मी इक चढ़ाईआ। घर ठांडे दर साचे लँघदे, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। रविदास कहे सुणो सिख्या, जो साहिब सतिगुर भाईआ। प्रभ दा लेख कदे ना मिटया, मेटणहारा नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई जाणो मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो जेहड़ी साख्यात तुहानूं मिलदी भिच्छया, विष्न ब्रह्मा शिव अग्गे डाह झोली ना किसे भराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर एसे दी कर

के गए इच्छया, आशा आपणी इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। रविदास कहे प्रभू पंज केहड़े, जिन्हां वक्त नेड़े आईआ। श्री भगवान कहे छड्ड झेड़े, एहो खेल मेरी वड्याईआ। कर किरपा जिस नूं चाढ़ां आपणे बेड़े, दो जहानां पार कराईआ। मेहर कर के जे एथे काया वसावां खेड़े, खिड़की कुण्डा अन्दरों लाहीआ। नज़री आवां नेरन नेरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिन्हां ढोले गाए तेरे मेरे, तिन्हां नाल मेरी कुड़माईआ। ऐथे ओथे ओहो बथेरे, जिन्हां आपणी गोद बिठाईआ। तिन्हां गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां परम पुरख नाल लै लए फेरे, फेरी आवण जावण मुकाईआ। उह खुशीआं नाल कहिण असीं परम पुरख दे चेरे, जिस घर गुरू चेले दोवें नैण तकाईआ। सानूं ऐथे ओथे चाउ घनेरे, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पाल सिंघ कहे एह गल्लां बातां विच दए वड्याई, खुशीआं नाल उच्चे रिहा कराईआ। गुरमुख गुरसिख जगत नालों कर के शौदाई, आपणे नाल लए मिलाईआ। जगत कहे डिगे डूंघी खाई, भगवन कहे सचखण्ड दवारे देवां बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। पाल सिंघ कहे प्रभू बड़ा चालाक, हेरा फेरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी जिन्हां बणाउँदा रिहा सज्जण साक, आपणा संग वखाईआ। कलयुग अन्तिम ओन्हां गुरुआं अवतारां दे के सर्ब तलाक,
८६० नाता भगतां नाल जुड़ाईआ। ओ गुरसिखो छोटी जिही सिखो जाच, हौली हौली दयां बताईआ। सब कुछ छड्ड के चरण ८६०
१६ कँवल बंधा लओ नात, नाता बिधाता सके ना फेर तुड़ाईआ। इक्को वार कहि दयो असीं तेरी ज़ात, तूं साडा बेपरवाहीआ। १६
फेर गुरमुख कोई ना रहे नार कमज़ात, घर घर सुहागण नज़री आईआ। सौहरे पेईए प्रभ दे के अगम्मी दात, घर ख़ज़ाना दए भराईआ। रंग वखाए पहली सुहाग रात, पिर पतिपरमेश्वर आपणा मेल मिलाईआ। पा गलवकड़ी करे अगम्मी बात, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। सेजे चढ़ के जाए आख, बिन अक्खरां लेख वखाईआ। उठ सवाणी मार झाक, झाकी झलक इक दरसाईआ। घर बैठा कमलापात, हरि कन्त बेपरवाहीआ। जिन पंजां कीता पाक, पंजां पतित रूप बणाईआ। जिस पंजां दिती दात, ब्रह्मण लेखा दित्ता मुकाईआ। अग्गे पंजां बख्शे फेर नजात, मरन तों पहलों लए तराईआ। एहो जिही अग्गे किसे नहीं दिती दात, दयावान हो के दया ना किसे कमाईआ। एह सब कुछ जन भगतां पिच्छे करे पुरख समराथ, समरथ बेपरवाहीआ। ओधर खुशीआं नाल रविदास दे चलण हथ्थ, गुरमुख कलम नच्चे चाईं चाईआ। छाही कहे मैं ओन्हां दे गावां जस, जिन्हां घर बैठा बेपरवाहीआ। बेपरवाह नूं वेख के मेरी खुल्ह गई अक्ख, नेत्रां लई अंगड़ाईआ। जां तक्कया हरिसंगत विच प्रगट, जोती नूर इलाहीआ। गुरमुख गुरसिख सारे बिन ढाहयों गए ढठ्ठ, माण अभिमान मिटाईआ। अन्दर वड़ के वेख्या प्रभू दा

खुल्ला सोहणा हट्ट, भण्डारा नाम अतोट अतुट वरताईआ। अमृत सोहणा रिहा झट्ट, छहबर इक्को इक लगाईआ। गुरसिख सारे होए बेवस, आपणा आप बैठे भुलाईआ। प्रभू कहे मैं वी एन्हां अन्दर गया वस, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। दोहां ने धुर दा लाहा ल्या खट्ट, घर साचे वज्जी वधाईआ। आओ रल मिल सारे खुशीआं विच लईए हस्स, हस्सदयां खेलंदयां लेखा रिहा मुकाईआ। ब्रह्मण नावें जन्म बदल गया जट्ट, तारा सिँघ तारा प्रभ दी छाती उते सोहणी चमक वखाईआ। रविदास चुमारा बणया साथ, संगी इक्को नज़री आईआ। चार कहारां खुल्ह गई अक्ख, पिछला लहिणा झोली पाईआ। पंजवां यार मिल्या झट्ट, पांधी आपणा पन्ध गंवाईआ। घुम्यार फोलण वाला छट्ट, तमाकू गंढु भेंट चढ़ाईआ। उस दी लाज लई रख, प्यो पुत्त भाई भाई रूप वटाईआ। पंजां नाल परमेश्वर मिला के हथ्थ, मरयां जींदयां सारयां रिहा तराईआ। दूजा नानक दे गया हक़, लालो हथ्थ फड़ाईआ। लालो खोल्ह के अक्ख, निज नेत्र दर्शन कर बिगसाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब सदा समरथ, दाता दातार वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, लेखा लेखे विच रखाईआ। तारा सिँघ कहे जट्ट ब्रह्मण केहड़ी ज़ात, मेरी समझ विच ना आईआ। अबिनाशी करता कहे दोवें मेरा रूप ख़ास, ख्वाहिश आपणी नाल प्रगटाईआ। जो चरण कँवल हो जाए दास, तिस आपणा दस्त मिलाईआ। सदा सुहेला हो के वसां पास, गुर चेला रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ । ब्रह्मण जट्ट ना होणा होछा, अच्छी तरह जणाईआ। नौ जन्म दा मिटया रोसा, रुख़सत दिती बेपरवाहीआ। पंजां सोहणा जुड़या मौका, हरिसंगत मेला सहिज सुभाईआ। अग्गे ब्राह्मणां लई कदे कोई साफ़ ना करे चौंका, परोहत घर ना कोए बिठाईआ। किसे पीर चढ़ाउणा नहीं परौंठा, सेवीआं थाल ना कोए पकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पार कराए लोक परलोका, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। पंज कहिण दोए जोड़ हथ्थ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। असीं नारी रूप पैणा बेगाने वस, लज पति तेरे हथ्थ रखाईआ। वेखीं चरणां नालों करीं ना अड्ड, हरिसंगत ना होए जुदाईआ। बिन सतिगुर प्यार ख़ाली दिसण हड्ड, काया माटी कम्म किसे ना आईआ। पिता पुरख रखणी पत्त, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ । सति सन्तोख धीरज देणा जत, सृष्ट सबाई नेत्र अक्ख तक्के भाई भाईआ। एह सब कुछ तेरे वस, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ही रखीं अक्ख, अक्ख खुल्हिआं होवे ना कदे जुदाईआ। साडी झोली पाउणा साडा हक़, दूजी लोड़ रहे ना राईआ । श्री भगवान किरपा निधान पुरख समरथ रखे सिर दे कर हथ्थ, सदा सदा सद संग निभाईआ। बच्चयो सदा गाउणा इक्को जस, गहर गम्भीर गुण बेपरवाहीआ। तुहाड्डी कदी ना बदले मति, बुध विवेकी रूप रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

हरिसंगत अन्दर बाहर तेरा सदा देवे साथ, विछोड़ा जगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख आपणे संग वखाईआ।

* ६ चेत २०२१ बिक्रमी आसा सिँघ, बलाका सिँघ, हज़ारा सिँघ, प्यारा सिँघ दे गृह बाबूपुरा ज़िला गुरदासपुर *

सूफ़ी कहिण असां संदेस पढ़या, उपरों नीचे ध्यान लगाईआ। नौ जन्म दा ब्रह्मण फड़या, प्रभ बेड़ा पार कराईआ। मनसूर कहे मैं तेरे प्यार अन्दर सूली चढ़या, ऐनलहक हक़ नाअरा लाईआ। मेरी वारी किथे वड़या, सनमुख नज़र कोए ना आईआ। अन्दरे अन्दर हू हू करया, काया तूम्बा तन रबाब वजाईआ। तेरे वैराग विछोड़े अन्दर मरया, तन ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। परवरदगार तूं तरस ज़रा ना करया, बेतरस की तेरी चतुराईआ। अर्श फर्श दोवें रोण ज़ारो ज़रया, नेत्र हन्झूआं हार बणाईआ। तूं सच सिँघासण गोडे उते चरण धरया, बैठा रिहों बेपरवाहीआ। मैं कलमा तेरा पढ़या, तेरी कलाम कम्म किसे ना आईआ। मैं राती तक्कदा रिहा तूं किथे खड़या, कवण दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दस्स इक गल्ल, गल्लां विच्चों इक्को मंग मंगाईआ। हस्स के कहे खुशीआं गीत मनसूर, मसला तेरा बेपरवाहीआ। मेरा दस्स की कसूर, किस पिच्छे सूली दित्ता चढ़ाईआ। की मैथों होइउँ मजबूर, की तेरा नाम ध्याईआ। मैं मूर्ख मुग्ध मूढ़, तेरा संग बण संगी ना कोए रखाईआ। इक्को तलब तेरी मंगी धूढ़, चरण सच सरनाईआ। इक्को अल्फ़ मैनूं होई मंज़ूर, जेहड़ी लिखी बिन कलम शाहीआ। उह मंज़ल वेखी ज़रूर, जिस घर बहि के डेरा लाईआ। तेरा भण्डारा बेअन्त भरपूर, अतोट अतुट अख्वाईआ। आपणी रज़ा विच बणें मज़दूर, साडी रज़ा विच हाज़र हज़ूर मुख शरमाईआ। तेरा अजब निराला दस्तूर, तेरा खेल बेसमझ दए बणाईआ। वड्डी खुशी तेरे पिच्छे मर के मरन होया मशहूर, मश्वरा देण वाला नेड़े कोए ना आईआ। पता नहीं की अन्दरों वज्जया तम्बुर, तोबा तोबा दिती कराईआ। मेरा नाता टुट्ट गया कूड़, खहिड़ा छुटया जगत लोकाईआ। मैं तैनूं लभ्भदा फिरया जेहड़ा बणया रिहा मफ़रूर, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की की खेल रचाईआ। मनसूर कहे मैं वेखी तेरी हालत, हालांकि वेखण वाला नज़र कोए ना आईआ। बेपरवाह हो के करें अदालत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन वुकला करें वकालत, बिन शहादतों शहादत दएं भुगताईआ। मैं होया हैरान पिछले जन्म रविदास ने जिन्हां दी दिती ज़मानत, साफ़ दित्ते छुडाईआ। नाले लेखा दिवाया जो सांभ के रखी अमानत, ख्यानत विच ना कोए कराईआ। संग लिख के अगम्मी इबारत, सोहणा लेख दित्ता बणाईआ। होर कुछ वेख्या

मेरे परवरदिगार सांझे यार आपणा करे तुआरफ़, बिन सफ़ारश मेल मिलाईआ। मनसूर कहे मैं एन्हां देण आया मुबारक, आदाब कर सीस निवाईआ। आओ वेखो करो ज्यारत, ज़रा ज़रा ज़रा विच्चों ओहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। मनसूर कहे मैं पढ़या रुक्का, बिन अक्खरां नज़री आईआ। मेरा ओथे पैंडा मुक्का, अगली पिछली सुध रही ना राईआ। जिस ने सच दवारे पार उतारे जो पींदे रहे हुक्का, हुक्म नाल लेखे लाईआ। जां वेख्या मेरे नालों उजल उह दा मुखा, जिन्हां गुरमुखां आपणी गोद बहाईआ। मैं रात सारी हौली हौली लैंदा रिहा पुच्छां, हाल दस्सो मेरे माहीआ। सारे कैहन्दे रहे उह जन भगतां अन्दर सुत्ता, छड्डी सर्ब लोकाईआ। खुशी माणे टुक्कर खा के रुक्खा, रुक्खे टुक्कर विच्चों रुख़सारे लाल रूप वटाईआ। फेर वी कहे ओन्हां आओ मेरे पुत्ता, पिता हो के गोद उठाईआ। जेहड़ा ब्रह्मण नौ जन्म रिहा रुस्सा, आपणा मुख वखाईआ। फेर वी उहदे उते नहीं कीता गुस्सा, फड़ बांहों ग़फ्लत दिती गंवाईआ। सुण के बचन वेखण लग्गे ईसा मूसा, कवण मुश्किल ढोले रिहा गाईआ। मनसूर किहा नहीं कोई उहला लुका, लोकमात इशारे नाल समझाईआ। वेखो की करे खेल अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। मेहरवान हो के मुहब्बत अन्दर तुठ्ठा, महिबूब बेपरवाहीआ। सुण संदेस सारे होए चुप्पा, नेत्र नैणां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खलाईआ। मनसूर कहे मैं वेखी मनसा, माणसां विच्चों भगतां अन्दर दिती बणाईआ। कागों रूप बणा के हँसा, हस्ती विच्चों हस्ती दिती उलटाईआ। बंस सुहा सोहणा सरबंसा, सच्चा संग वखाईआ। लेखा चुका बहिश्त जन्नता, सवरगां डेरा ढाहीआ। अन्तर फेर मन का मणका, ममता मोह गंवाईआ। लेखा जाण पंज तन का, ततव तत समझाईआ। लहिणा देणा चुकाए पिछले रविदास अन्न का, अनक कल आपणा खेल वखाईआ। पार कराया ब्रह्मण पंडता, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अग्गे किसे दर ना होवे मंगता, भण्डारा आपणा नाम भराईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगता, हँ ब्रह्म रूप दरसाईआ। लेखे लाया भुक्खा नंगता, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं वेख्या तक्कया ग़रीबां दर औणों कदे ना संगदा, संगल शरअ ज़ंजीर ना कोए रखाईआ। बिन ललारीउँ सब दे चोले रंगदा, रंग रतड़ा सच्चा शहिनशाहीआ। चरण धूढ़ करावे गंग दा, गंगा नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेख्या खेल अजब निराले ढंग दा, चार युग विच मिसल मिसाल ना कोए वखाईआ। लहिणा देणा देवे जो गुरमुख मूँहों मंगदा, अनमंगी दौलत वाधू झोली पाईआ। लेखा चुकाए लख चुरासी मेल वरभण्ड दा, जेरज अंड पन्ध मुकाईआ। प्रकाश कराए आपणे नूरी चन्द दा, सूरज चन्द दोवें मुख शरमाईआ। अमृत रस देवे अगम्मी अनन्द दा, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मैं सीतल फुहारा वेख्या धुर दी ठंड दा, गुरमुखां सांतक सति रिहा कराईआ।

८६३ १६

नाल रविदास चुमारा उहदयां टुट्टयां दी टुट्टी गंढुदा, गंढु इक्को वेर पाईआ। बटवारा जिस दे नाल प्रीती अन्दर हंढु दा, साची डोरी तन्द जुड़ाईआ। साहिब सतिगुर श्री भगवान करे खेल नंद चन्द दा, चन्द गुजरी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ। मनसूर कहे हल्ल हुन्दी वेखी मुश्किल, परवरदिगार दया कमाईआ। मुरीदां मुर्शद करे खुशदिल, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। अज़ीज़ प्यारा होया हर दिल, अज़मत आपणी नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी वक्त लँघाया गिण गिण, घड़ी पल वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मनसूर कहे मोहे आई हैरानी, हैबत मेरे उते छाईआ। प्रभू दी वेख अगम्मी निशानी, निशाने सारे बैठे मुख भवाईआ। रोंदी वेखी आदि शक्ति भवानी, भावना संग ना कोए रखाईआ। चतुर्भुज कहे मोहे आई हानी, हौके लै लै रिहा सुणाईआ। अल्ला कहे मैं बाली अञ्याणी, सोच समझ ज़रा ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण असीं हुक्मे अन्दर लिख के गए बाणी, सिफ्त सालाही राग सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं सेवक दर दर घर घर देवणहारा अन्न पाणी, चाकर रूप अख्वाईआ। ब्रह्मा कहे मेरी सेवा लग्गी चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज घाड़त दित्ता घड़ाईआ। शंकर कहे मैं सब दा लेखा करां फानी, फ़ैसला ततव तत मुकाईआ। भगत कहिण असीं मंगदे रहे चरण ध्यानी, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। सूफ़ी कहिण असीं कर गए आपणा आप कुरबानी, भेंटा परवरदिगार चढ़ाईआ। पर ऐहो जिहा महिबूब नहीं मिल्या जो घर आ के खाए महमानी, महिमा भगतां दए सुणाईआ। नाले देवे पद निरबाणी, फड़ बांहों गले लगाईआ। दो जहान एथे ओथे अग्गे पिच्छे ना आवे हानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाले लेख लिखावे कलम शाही कानी, कायनात विच्चों पार कराईआ। घर वखाए आलमे जावदानी, रहमत इक्को इक दरसाईआ। कूड़ी क्रिया जो कांग चढ़ी तुझानी, चरण नाल परे हटाईआ। गुरमुखां बण के आप बानी, रहिबर हो के रिहा समझाईआ। नाले पंडत नाल तारे उहदी मिशराणी, मिशराणी दी मुश्किल हल्ल कराईआ। मनसूर कहे मैं वेख्या जो पंजां दसां दा रातीं ठंडा पीवे पाणी, आबेहयात आपणे विच लुकाईआ। इस दी कोई कथा ना सके गा कहाणी, ना लेखा दए बणाईआ। पनिहारन दिसे चारे बाणी, चारे खाणी वणजारन रूप नज़री आईआ। मनसूर कहे मेरे मुसाइब तिन्नां ना देवे कोई ग़ुलामी, ग़ुलाम अवर ना किसे बणाईआ। एसे कर के मैं आपणा आप कीता कुरबानी, करबला विच डेरा कोए ना लाईआ। हद हदूद ना होया महिदूद, परेशानी नेड़ ना कोए रखाईआ। सच वेख्या ओसे तरह जन भगतां कीता महफूज़, सच फ़सील चार कुण्ट आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा चुकाईआ। मनसूर कहे वेखो रवी दी कार, करनी सच कमाईआ। टुट्टे चम्म गंढे चम्यार, चम्मां दा मालक

धुर दा ख़ालक चम्म बणावण वाला आपणे कोल बहाईआ। जिस दा लहिणा विच संसार, पंजां फड़ के देवे तार, ब्रह्मण दित्ता इक आधार, गुरमुख गुरसिख लेखे रिहा विचार, विचार आपणा नाल मिलाईआ। मैं कर के दरस दीदार, सोहणा सच करां इज़हार, अज्जो जा के पीर पैगम्बर गुर अवतार, बिन अक्खरां देवां इक इशतयार, जिस इशतयार उते इष्ट इक्को नज़री आईआ। चलो अज रात नूं चल के वेखीए विच लोकमात संसार, जन भगतां किवें संसे रिहा चुकाईआ। मुहब्बत करे बण के यार, रहमत करे बण के ग़मख़ार, ग़मी खुशी बैठा झोली पाईआ। सिफ्त सालाही हो के बाहर, ग्रिफ़त होया विच भगत प्यार, निसबत कोई कढ्ढ ना सके वड्डा वड्डा विद्वान, कसर इशारीए नाल मसला हल्ल ना कोए कराईआ। पैगम्बरां विच्चों पैगम्बर सरदार, नबीआं विच्चों नबी मेहरवान, रसूलां विच्चों रसूल कमाल, ईमानां विच्चों जिस दा ईमान, अलामत नज़र कोए ना आईआ । सच पुच्छो घर जा के दए पैग़ाम, मुरीदो मुर्शद सामृणे कदे करयो ना कोए हराम, हरामीआं मिले ना ढोई दोए ठाईंआ। चशम दीद मेरी करो पहचान, नाता चुक्के ईद जिहान, इज़त आबरू इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रुसवा हो के रस्ता रिहा जणाईआ। मनसूर कहे अल्ला माशा, महवे रबी लाउलतानी तेरी वड्याईआ । मैं वेख्या अजब तमाशा, ज़िमी असमान बैठे मुख शरमाईआ। मुर्शद मुरीदां भरे जाम साचे कांसा, प्याला इक्को इक वखाईआ । दिलबर हो के देवे दिलासा, भगवन हो के भाग लगाईआ। परवरदिगार हो के देवे भरवासा, सही सलामत हो के साचा नूर करे रुशनाईआ। निरगुण हो के अन्दर करे वासा, सरगुण लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। सिधी सरल साफ सुणाए भाषा, भाख्या देवे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए पवण स्वासा, साह साह आपणा आप विच टिकाईआ । मनसूर कहे मैं चढ़ के सूली, सुलहाकुल नाल सुलहा कराईआ। हुण की वेख्या जिन्हां सुणाई आपणी बोली, सच कहाणी आप दृढ़ाईआ। तिन्हां प्रेम प्रीती अन्तर आपणा आप घोल घोली, घोल घुमाई वेख वखाईआ। वणज व्यपार दी दुकान अगम्मी खोली, बण वणजारा हट्ट रिहा चलाईआ। साचे कंडे धुर दे तक्कड़ तोल रिहा तोली, धड़ी पसेरी संग ना कोए वखाईआ। अजब लील्हा रविदास वेले दी जिन्हां चुक्की डोली, नाल इट्ट प्यार रखाईआ। ओन्हां दी गठड़ी फेर फोली, काया कपड़ खोज खुजाईआ । नाल निक्की जिही नज़री आई विचोली, रविदास सपुत्री सवरन सोभा पाईआ। उच्ची कूक पावे रौली, पिछली चिट्ठी रही वखाईआ । जो बद्धी तन्द मौली, सुहागण कलीरे वाली कलीरा भेंट चढ़ाईआ। ओस कसीरे दी गंगा आपणी प्रेम प्यार दुकान खोल्ही, सोहणी वस्त वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मनसूर कहे वेखो यारो होई हद्द, हज़रत अचरज खेल रचाईआ। बिन जाणयां बुज्झयां पिछले विछड़े

लए सद्द, जोग अभिमास नमाज़ वुज़ू पूजा पाठ ना कोए दृढ़ाईआ। सनमुख हो के काअबे दे मालक आपणा कराया हज्ज, हाजत अगली पिछली पूर कराईआ। महिबूब हो के मुहब्बतखाने अन्दर लँघ, सदा साची बांग सुणाईआ। बिन तन्द रबाब वजा नद, धुन आत्मक राग अलाईआ। आबेहयात प्या बुझाई अग्ग, अमृत रस मुख चुआईआ। मरन तों पहलों वड्याई दे के जग्ग, जीवण आपणी झोली पाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े पता नहीं किथों लए लभ्भ, किस बिध आपणा मेल मिलाईआ। जो सज्जण साक सैण भाई भैण छड्ड, नाता इक्को घर रखाईआ। ओनां पिच्छे निरगुण निरवैर निरँकार आया भज्ज, परवरदिगार मेरा बेपरवाहीआ। उच्चा लम्मां किसे ना लभ्भे कद्द, मुसव्वर तसव्वर तस्वीरां विच्चों सके ना कोए कराईआ। जे वेखो ते सब तों अलग, जे तक्को तुहाडे अन्दर डेरा लाईआ। बजवाड़े कोलों पुच्छे बैठा उपर पलँघ, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। मनसूर कहे एह मैनूं नहीं लभ्भा रंग, सूली चढ़ के लालन लाल लाल रंग वखाईआ। मैं एसे कर के कट के आया पन्ध, जा के वेखां बेपरवाहीआ। जिस ने ढोला इक्को सुणाया छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्तां अन्दर पाउँदे डण्ड, डंके ला ला जगत रहे जगाईआ। समझो बांहों फड़ के अग्गे हो कोई ना मिलावे निशंग, निशाने सारे रहे जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग एह किसे हथ्थ नहीं आया अनन्द, अनन्द पुरी वाला अनन्द आपणी झोली पाईआ। एह गुजरी दा गुजरया नहीं चन्द, गोझ भेव रिहा खुल्हाईआ। जिस दा लेखा किसे कदे ना कीता कलम बंद, कागज़ां उपर नुकते नाल समझाईआ। जिस दा खेल कोटन कोटि कोट कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मा विष्न शिव दिवस रैण सेव कमाईआ। सो साहिब सतिगुर दो जहानां लँघ, निक्का वड्डा लम्मां छोटा हो के, खोटे खरे रिहा बणाईआ। कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धो के, हरिजन साचे दए वड्याईआ। जन भगतां सच सिँघासण आत्म सेजा सौं के, आप आपणा घर वसाईआ। पिच्छे पिच्छे कदे कोई नहीं आया भौं के, सचखण्ड निवासी साहिब सतिगुर रूप वटाईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार पीर पैगम्बर गए गौं के, लेखा जीव जंत जगत जहान समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। मनसूर वेख कहे तबरेज़ शमस, ओ मैं आपणी शमां दिती बुझाईआ। मेरे महिबूब नूं मेरी मुहब्बत विच ना आया तरस, कातिलगाह विच आपणा कातिला दित्ता चलाईआ। खलड़ी लाह के डिगा फ़र्श, अर्श मिल्या बेपरवाहीआ। फिर वी थोड़ा जिहा विच रह गया फ़र्क, मरन तों पहलों मैनूं साख्यात नज़र ना आईआ। जिस वेले मेरा तन माटी ख़ाकी होण लग्गा ग़रक, आपणी ग़रज़ बदले फिर दित्ता दरस दिखाईआ। मैं ओसे वेले काया चोला कीता तरक, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। सबर अन्दर नहीं हरख, सोग संग ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार अन्दर निभाया आपणा फ़र्ज़, फ़ज़ल रहमत रहमान आपे दए

वखाईआ। मनसूर मैं वी वेख के होया असचरज, अचरज लीला की वरताईआ। सूरबीर योद्धा बण के मर्दाना मर्द, मदद करे आप गोसाईंआ। कोझयां कमल्यां ग़रीबां निमाणयां नाल वंडदा दर्द, दुखियां दुःख आपणे विच लुकाईआ। फिर वी एहदा कुछ नहीं हुन्दा हर्ज, हर्जाने सब दे पूरे रिहा कराईआ। जन भगतां मिलण दी एनूं धुर दी पै गई मर्ज़, कोई तबीब सके ना मात हटाईआ। अग्गे हो के कोई ना सके वर्ज, बांहों फड़ ना पिच्छे हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान साची खेल रचाईआ। बोल कहे तबरेज शमस, सच सच दृढ़ाईआ। मैं वेखी इस दी अनोखी रमज़, इशारयां नाल जणाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख बेसमझ, सुरती आपणे संग रलाईआ। बौहड़ी दरोही खुदा दी होया ग़ज़ब, ग़रज आपणी इक वधाईआ। ब्रह्मण तरदा वेख मैं होया तअजब, हैरानी उते छाईआ। इस दा लहिणा देणा तअलक किसे नाल नहीं मज़्हब, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। पता नहीं किथों पिछली कढु लई फ़रद, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। पंजां मन्न के मंज़ूर कीती अर्ज, आरज़ू आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। शमस कहे इक खेल अवर, सुणन मेरे विच आईआ। किरपा करे गहर गवर, गम्भीर बेपरवाहीआ। जिन्हां पंजां नूं उडीके कबर, तिन्हां नूं तसवर आपे रिहा कराईआ। इस दे कोलों दो जहान डरदे इस दा नाँ सिँघ शेर बब्बर, भबक इक्को इक जणाईआ। निके निके बाले नढ्ढे गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव इस दा टब्बर, देवणहारा रिज़क राजक रहीम आप अख्वाईआ। मैं वेखां ते उते अम्बर, तक्कां ख़ाक उते सोभा पाईआ। सोहणा जन भगतां रचया सुअम्बर, खुशीआं रंग वखाईआ। सीस सोहे पीत पीतम्बर, छहबर आपणा नाम लगाईआ। भाग लगा के काया कन्दर, घर नूर करे रुशनाईआ। जुग जन्म दा वज्जा जन्दर, बिन कुंजीउँ दए खुल्हाईआ। ठग्ग चोर यार पिछला तारे पंडत, ब्रह्मण लेख मुकाईआ। अग्गे माण देवे साची संगत, सोहणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। शमस कहे मेरी गई अक्ल, असलीयत इक्को नज़री आईआ। पीर पैगम्बर वेख्या इक मुअक्कल, मुकम्मल नूर बेपरवाहीआ। जिस दी बिन सूफीआं भगतां नज़र किसे ना आए शकल, ज़हूर विच ना कोए रुशनाईआ। उस दा ओहो धाम मुकदस बैतल, जिस उपर चरण टिकाईआ। अन्तर आत्म करे अनाइतुल, बख्शश झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। शमस कहे मैं वेख्या ब्रह्मण, पिछली गई शरम हय्या नज़र कोए ना आईआ। पतिपरमेश्वर बदल दित्ता कर्म, निहकर्मण आपणे लेखे लाईआ। नौ जन्म दा मिटया जन्म, जरम आपणे घर दिवाईआ। पूरब लहिणा मुकया भरम, भाण्डा कूड़ तुड़ाईआ। हरिसंगत विच बहिणा मिल्या वड़न, गुरमुखां संग सोभा पाईआ। क्यों, लालो

वेले डूम दे सिर उते नानक दा आया चरण, जो मंजी हेठां सिर लुकाईआ। एसे कारण अग्गे लेखा चुक्कया मरन, लख चुरासी जून ना कोए भवाईआ। साहिब सतिगुर बख्शी इक सरन, सरनगति इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरबान पीरन पीर नूर खुदाईआ। शमस कहे मैनूं याद आई अग्गे पंज, बिन पंज निमाज़ रिहा तराईआ। जिन्हां घर सोग होण वाला रंज, चिन्ता बैठी पीड़ा डाहीआ। लाड़ी मौत नाल चढ़न वाली जंज, राए धर्म साह रिहा सुधाईआ। चित्रगुप्त पंडत पांधा गया मन्न, आपणी पत्री रिहा वखाईआ। दस वसाख तों पहलों सब दे काचे भाण्डे देणे भन्न, माटी ख़ाक मिलाईआ। एधरों पंजां पाई डण्ड, जो माणस तों नारी रूप बैठे वटाईआ। प्रभ साडी इक्को मंग, पंजां नाल पंजे दे छुडाईआ। जे चढ़न ते तेरे प्रेम दी घोड़ी अगम्मी जंज, लाड़ी मौत नेड़ ना आईआ। असीं भैणां बण के ढोले गाईए छन्द, वाग गुंद आपणी खुशी मनाईआ। जे मुक्के ते तेरे घर दा पन्ध, दूजे घर चरण ना कोए टिकाईआ। दीन दयाल साहिब तूं बख्शंद, बख्शश तेरे विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत पा के जाणी ठंड, टुट्टी गंढु जोड़ जुड़ाईआ। एहो जिहा फेर नहीं लभ्भणा अनन्द, क्यों अनन्द विच्चों अनन्द रिहा छुडाईआ। अग्गे तेरा सदा संग, एह गुरमुख एथे मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, लेखा लेखे लाए भागां मंद, नकर्मण कर्मां वालयां नालों उच्चे दए बणाईआ।

८६८
१६

* ६ चेत २०२१ बिक्रमी सन्त सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर *

पुरख अकाल इक समरथ, हरि सज्जण वड अख्वाइंदा। गुर अवतारां देवे वथ, नित नवित्त आप वरताइंदा। जन भगतां खोल्ह के नेत्र अक्ख, पर्दा उहला आप मिटाइंदा। सन्तां नाम जणाए सच्च, सच विद्या इक पढ़ाइंदा। गुरमुखां झोली पाए हक़, पूरब लहिणा फोल फुलाइंदा। गुरसिखां मार्ग देवे दस्स, मंज़ल इक्को राह जणाइंदा। सच बाज़ार खोल्ह हट्ट, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। धुर दी विद्या ब्रह्म मति, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। मेल मिलावा नस्स नस्स, दूर दुराडा पन्ध चुकाइंदा। भाग लगा काया छप्पर छत्त, बंक दुआर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। पुरख अकाल सच सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतारां निगहबान, वेख वखाणे बेपरवाहीआ। भगतां देवे साचा दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सन्तां जणाए सच निशान, धर्म निशाना इक वखाईआ। गुरमुखां भेव अभेद गोझ खोल्हे आण, पर्दा उहला दए चुकाईआ। गुरसिखां बख्शे चरण ध्यान, सच्ची सरन दए सरनाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण

हो प्रधान, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त बेअन्त आपणी कल वरताईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां होए दयाल, मेहर नज़र नैण अक्ख उठाईआ। जन भगतां वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक दृढ़ाईआ। साचे सन्तां लए उठाल, आलस निंद्रा दूर कराईआ। गुरमुख गोदी लए बहाल, शाह कंगाल ना वंड वंडाईआ। गुरसिखां चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। मुरीद मुर्शद दे जलाल, नूरी जलवा इक रुशनाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाल, लाशरीक खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, घर मेला आप मिलाईआ। दीपक दीआ इक्को बाल, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सतिगुर सच्चा श्री भगवन्त, भगवन आपणी खेल कराइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाइंदा। जन भगत मिलावा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। सच्चे सन्तां गढ़ तोड़ हउमें हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। गुरमुखां दे वड्याई विच्चों जीव जंत, जागरत जोत इक जगाइंदा। गुरसिखां सुणाए साचा छंत, ढोला सोहला राग समझाईआ। माणस जन्म बणाए बणत, घाड़त आपणा आप घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि रघुराईआ। लेखा जाणे पुरख अगम्म, अगम्मड़ी खेल खलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बेड़ा बन्न्ह, भगतां नईया आप चलाइंदा। सन्तां सज्जण दे के नाम दान, गुरमुख गुर गुर वेख वखाइंदा। गुरसिख चाढ़ साचे चन्न, फ़लक जोत नूर रुशनाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट वासना मन, मनसा आसा आपणे नाल वखाइंदा। धुर दा राग सुणाए कन्न, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। भाग लगाए काया तन, ततव तत खोज खुजाइंदा। पंच विकारा दे डंन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल वखाए ख़ालक, सूफ़ी बैठे ध्यान लगाईआ। आदि जुगादी बण के पालक, प्रितपाले हर घट थाईंआ। निरगुण सरगुण बण के सालस, साचा लेखा दए मुकाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख वेखे आप ख़ालस, जिन्हां ख़ास आपणा संग वखाईआ। लहिणा देणा चुका निंद्रा आलस, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। सन्त सुहेले बणा बालक, बाली बुध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। हरिजन वेखे चाउ घनेरा, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। भगत भगवान लग्गे डेरा, घर सुहञ्जणा सोभा पाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सच सुहञ्जणा होए खेड़ा, महिफ़ल लग्गे बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया चुक्के झेड़ा, ममता मोह ना करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे रिहा लगाईआ। लेखा लावे साहिब एक, परम पुरख दया कमाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जिस दी टेक, टिक्का मस्तक सोभा पाइंदा। भगत भगवान

जुग चौकड़ी जो रिहा भेज, भजन बंदगी नाम समझाइंदा। सन्तां दे के धुर दा तेज, जोती नूर डगमगाइंदा। गुरमुखां माण सुहञ्जणी सेज, सोभावन्त आप सोभा पाइंदा। गुरसिखां लिख के धुर दा लेख, पूरब लहिणा मेट मिटाइंदा। रुत सुहञ्जणी मौले चेत, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। निरगुण सरगुण करे हेत, हितकारी आपणा रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम खेलण आया खेड, साची खेल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच्चा लेखा हरि निरँकार, एका आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे पुकार, भगत भगवान रहे जस गाईआ। सन्त सज्जण करन विचार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। गुरमुख वाजां रहे मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । गुरसिख खोल्ह बंद किवाड़, नेत्र नैण रहे उठाईआ। धन सो वेला आवे परवरदिगार, बेपरवाह फेरा पाईआ। सूफ़ी मंगण इक दीदार, दीद चन्द करे रुशनाईआ। दर बरदे बणीए मुहताज, साची वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सूफ़ी कहिण घोली सदके, बलिहार तेरी सरनाईआ। तेरा दर्शन करीए रज्ज के, रजूह तेरे नाल मिलाईआ। ढोले गाईए बण मलंग नच्च के, सेली टोपी सीस टिकाईआ। कदम धरीए संभल संभल बच के, कांटा चुभ कोए ना जाईआ। तेरी प्रेम प्रीती अन्दर जाईए हस्स के, सोहणा खुशीआं राग अल्हाईआ। तेरी छत्र छाया हेठ प्रभू वस के, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। तेरा नाम अगम्मी रट के, रट्टा मेटीए कलम शाहीआ। तेरे मन्दिर साचे वस के, कूड़ा डेरा दईए तजाईआ। जलवा नूर तेरा तक्क के, तकवा इक्को इक रखाईआ। दूर दुराडे पांधी आए नस्स के, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सूफ़ी कहिण सुफना नहीं एह ख्वाब, महाबली दए वड्याईआ। हकीकत विच्चों नज़री आए जनाब, जुबा अवस्था बेपरवाहीआ। साची हस्ती करो आदाब, मस्ती देवे नाम चढ़ाईआ। शाह ग़फ़ूर मन्नो नवाब, महिबूब बेपरवाहीआ। जिस दे अग्गे सारे लाजबाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। दर दरवेश बणे मुहताज, गल अल्फ़ी कफ़नी चोली पाईआ। जिस दी तन्द सतार वज्जे रबाब, अहिबाब करे शनवाईआ । महल अटल सुहाए महिराब, हुजरा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। सूफ़ी कहिण खुल्ही सुरत, सुत्ती सवाणी आप जगाईआ। नाद सुणया अगम्मी तूरत, तुरिया नैण शरमाईआ। नज़री आया अकाल मूर्त, अकल कल बेपरवाहीआ। आसा मनसा सब दी पूरत, इच्छया पूरी रिहा कराईआ। लेखा जाणे मूर्ख मूढ़त, चतुर सुघड़ खोज खुजाईआ। जन भगतां देण आया चरण धूढ़त, टिक्का इक्को मस्तक लाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। मरन तों पहलों जन्म विच्चों जन्म दी करे महूरत, मुख वाक आपणा नाम सुणाईआ । एसे साहिब दी सदा

ज़रूरत, जिस साहिब नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान अख्वाईआ। सूफ़ी कहिण वेखो मलक, मालक नूर खुदाईआ। जलवा नूरानी जिस दी झलक, सोभा दो जहान पाईआ। ब्रह्मण दा पिछला लाह के कूड़ा तिलक, तुअल्लक आपणे नाल बणाईआ। पूरब जन्म जो विछड़े रहे विलक, नेत्र रो रो देण दुहाईआ। प्रभ ओनां दी सुण के किलक, कल कल्की फेरा पाईआ। कलयुग चिकड़ भरी गली गुरमुख ना जाए तिलक, फड़ बांहों गोद उठाईआ। अन्दर वड़ के शैतान करे ना कोई इलत, ज़िलत ख्वारी दूर कराईआ। साची सिख्या दे कर धुर दी मिलत, मेल मिलाया धुरदरगाहीआ। रही लोड़ ना स्वर्ग बहिश्त, स्वर्ग बहिश्त दोहां डेरा ढाहीआ। सूफ़ी कहिण जिन्हां नूं साफ मिल गया परवरदिगार इष्ट, तिस अग्गे रामा वशिष्ट बैठे सीस झुकाईआ। ओनां गुरमुखां दी सदा खुल्ही समझो दृष्ट, जिन्हां सुत्तयां जागदयां दरस कराईआ। वड्डे भाग जिन्हां दी प्रभ आप कराई लिख्त, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। एहो गुरू अवतार पीर पैगम्बर वाक कहि के गए भविक्ख्त, पारब्रह्म प्रभ जन भगतां देवे माण वड्याईआ। आप होए सदा निरिच्छत, इच्छया सब दी पूर कराईआ। तुहाडे सामणे ब्रह्मण कोलों पिछली दवाई किशत, लहिणा देणा बेबाक दित्ता कराईआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट लेखा विच सृष्ट, जिन्हां सतिगुर साहिब पूरा मिल्या बेपरवाहीआ। ओनां लोड़ रहे ना किसे जागीर मिलख, राज जोग दोवें देण तजाईआ। आपणी फलवाड़ी वेखण सदा परफुलत, पत्त टहिणी रही महकाईआ। जन भगतां दो जहानां उते आपणा वसाया मुल्क, जिस दा मालक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सदा होए सहाईआ।

८७१ १६

* ६ चेत २०२१ बिक्रमी किशन सिंघ दे गृह अलड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर *

फ़रीद कहे मैं वेख्या आज, अजब खेल कराइंदा। जिस दे पिच्छे कांवां खाधा मास, तन माटी जगत सुकाइंदा। नेत्र नैण ना बुझी प्यास, दर्शन दर ना आप वखाइंदा। उस दी सुण अगम्मी बात, मेरा बातन खुशी मनाइंदा। कलयुग अन्त जन भगतां देवे आपणी दात, दाता हो के हरि वरताइंदा। ना कोई मुशक़त दस्से पूजा पाठ, जंगल जूह ना कोए फिराईआ। नाता तोड़ तीर्थ ताट, टिल्ले पर्बत पन्ध मुकाईआ। ना छड्डणी पए खाट, घर बार ना कोए तजाईआ। नार कन्त ना टुट्टे साक, पुत्तर धी ना होए जुदाईआ। तन रमौणी पए ना ख़ाक, धूनी अग्न ना कोए तपाईआ। डूंघी कन्दर ना लैणा झाक, समुंद खाई ना कोए फिराईआ। झगड़ा रहे ना किसे समाज, समग्री मंगण कोए ना जाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, दीन दयाल

होए सहाईआ। घर सज्जण मिले साच, सति दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फ़रीद कहे ना गलीआं चिकड़, खोजत खोज ना कोए खुजाईआ। तन वस्त्र माटी ख़ाक ना जाए लिबड़, मूँह दे भार ना कोए सुटाईआ। वेसवा दवारे ना कोई फ़िकर, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। मुर्शद मिल्या धुर दा मित्र, बेपरवाह होए सहाईआ। फड़ चोटी चाढ़े सिखर, सच घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। फ़रीद कहे ना कीमत नेत्र अक्ख, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। ना भठियाला बण के झोकणा पए भट्ठ, सेवा जगत ना कोए वखाईआ। ना यूसफ़ बण के कीमत पौणी पए अट्ट, सुलेमान तख़्त ना कोए सुहाईआ। ना ज़िकरीआ बण के लगाउणा पए घाउ फट्ट, तिक्खी धार धार जणाईआ। ना फिरना पए अठसठ, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जन भगतां खोल्ह के अन्तर अक्ख, अक्खर आपणे दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। फ़रीद कहे ना पए फिरना, बन खोजण कोए ना जाईआ। महल चोटी पर्बत चढ़ पए ना गिरना, डूंग्घी कन्दर ना कोए सुटाईआ। चिन्ता रोग ना कोई मरना, सोग ग़म नेड़ ना आईआ। कर किरपा प्रभ अमृत मेघ बरसे किरना, किरन बूँद स्वांती आप टपकाईआ। घर सच खुल्हाया झिरना, रमक रमक धार वहाईआ। कँवल नाभी फुल खिड़ना, पंखड़ी आपणा रंग वखाईआ। साचा गेड़ अगम्मी गिढ़ना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फ़रीद कहे ना ढूंडो जग, मैं सच दयां दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, सके ना कोए बुझाईआ। मैं वेख्या खेल पुरख समरथ, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। निरगुण जोत कर प्रगट, दवारा बंक गुरमुख रिहा सुहाईआ। सन्त सुहेले कर इकट्ठ, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। सच सरनाई मार्ग दस्स, चरण चरणोदक मुख चुआईआ। प्रेम प्यार अन्दर कर के वस, वसल इक्को इक जणाईआ। दयाल ठाकर हो के गावे जस, ढोला राग सुणाईआ। नाम अमोलक दे के दात, झोली सच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साहिब गोसाईंआ। फ़रीद कहे ना होणा पए मुर्दा, मढ़ी गोर डेरा कोए ना लाईआ। मैं श्री भगवान निरगुण सरगुण हो के वेख्या फिरदा तुरदा, आवे जावे आपणा खेल कराईआ। जिस दा फुरना आदि जुगादि इक्को फुरदा, फुरने विच रखे सर्ब लोकाईआ। जो भेव अभेद दस्से साचे गुरु गुर दा, पर्दा उहला दए उठाईआ। उह ठाकर जन भगत दवारयों कदे ना मुड़दा, पिच्छा परत ना मुख भवाईआ। खेल अनोखा हरि सन्तां संग आपे जुड़दा, जोड़ी सोहणी जगत बणाईआ। संजोगी मेल मिलाए धुर दा, वजोग रहिण कोए ना पाईआ। जिस वेले जन भगतां बेड़ा वेखे रुढ़दा, फड़ बांहों पार कढ्ढाईआ। वर

घर देवे जेहो जिहा लोड़ दा, आसा मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। फ़रीद कहे ना रोटी खाणी पए काठ, कठनता नज़र कोए ना आईआ। जंगल बेले कटणी पए ना वाट, पांधी बण ना पन्ध मुकाईआ। रात बहि बहि उठ उठ वेखणा पए ना झाक, नेत्र लोचण नैण ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त किरपा कर पुरख अबिनाश, मेहरवान दया कमाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा चल के आवे ख़ास, ख्वाहिश भगतां वेख वखाईआ। दर्शन दे के विच ख्वाब, ख़बर आपणी जाए समझाईआ। गुरमुख मेरा नूर चन्द महताब, आफ्ताब करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। फ़रीद कहे ना फिरना पए जंगल, जूह विच ना डेरा लाईआ। ना लटकणा पए नाल संगल, उलटा आपणा आप कराईआ। गुरमुखो तुहाढे घर विच लग्गा मंगल, मंगता बणया बेपरवाहीआ। सदा सुहेला हो के रखे अंगण, आपणी गोद उठाईआ। मेरे वेंहदयां बरी कीता जिस ब्रह्मण चुराया कंगण, गंगा मइया नाल ठग्गी कमाईआ। उधरों उह वी आई कुछ मंगण, लहिंगा स्वार सूत के आपणा घूँगट रही उठाईआ। दोए जोड़ करे बन्दन, बंदगी डण्डावत कर कर खुशी मनाईआ। मैं वेखां किवें प्रभू कटे फंदन, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। जमना कहे नीं मैं लग्गदा वेख्या चन्दन, सुरस्ती कहे मैं घोली घोल घुमाईआ। गोदावरी कहे मेरा प्रभू पड़दा पाए जो बैठे नंगण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। खुशीआं नाल गीत गाउँदी आई जिस दे हथ्थ कोट शकंगण, आपणा जोबन रूप वखाईआ। मैं वेखां उह जिस भगतां बणाया संगन, सोहणा संग बणाईआ। जिस गोबिन्द दिती चण्ड प्रचण्डन, खण्डा खड़ग चण्डी इक चमकाईआ। उह अनाथां दा नाथ अनन्दां दा अनन्दन, त्रिलोकी दा त्रिलोक श्लोक सोहला इक सुणाईआ। चरणां हेठां दब्ब के मुक्ती मोख, मुफ्त जन भगतां पार कराईआ। आदि जुगादि एहनूं गुरमुख पार उतारन दा शौक, शौकीन बणया बेपरवाहीआ। इस दी नज़म नग़मा क्या कोई गाए ज़ौक, कोटन कोटि ज़ौक बैठे सीस निवाईआ। इस दी मंज़ल कोई ना सके पहुंच, अन्दर वड़ खुशी ना कोए मनाईआ। जिस दे दर्शन आदि जुगादि सारे रहे लोच, दूर दुराडा तक्कण माहीआ। इस दी शहादत कोई दे ना सके पुनूं सस्सी बलोच, रांझा हीर ना कोए वड्याईआ। सोहणी महीवाल ना खोजी खोज, लेला मजनूं मज़ल ना पन्ध मुकाईआ। शीरीं फ़रहाद पत्थरां उते लाउँदे रहे चोट, सच नगारा नाम ना कोए वजाईआ। फ़रीद कहे एहदा लेख वेख मैं होया मदहोश, मधुर रस इक्को नज़री आईआ। जिस ने मेरा तन सुकाया पोश, फेर पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। बारां साल रिहा ख़मोश, इक वार बोल ना खुशी मनाईआ। जिस नूं तक्कदे लोक परलोक, दो जहान अक्ख खुल्हाईआ। गुरमुखो उह तुहानूं दर्शन देवे रोज़, बिन रोजिआं बिन फ़ाकयां फ़िकर तुहाढा आपणी झोली पाईआ। तुहानूं अग्गे कोई नहीं रही सोच, सोचण वाला इक्को

बेपरवाहीआ। जिस ने पापी पतित कीते निर्दोष, दोषीआं उते दोष ना कोए लगाईआ। आहलणयों डिगे उठाए बोट, सच घौंसले विच टिकाईआ। घौंसला नहीं उह धुर दा किला कोट, जिस नूं पंछी पंखी तिनके नाल ना कोए जुड़ाईआ। ओथे खाण पीण नूं मिले कोई ना रोट, खीर कड़ाह अग्गे ना कोए टिकाईआ। ओथे इक्को प्रभ दर्शन दी मौज, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी कार कमाईआ। फ़रीद कहे मैं वेखी सच तौफीक, तोहफा देवे मेरा गोसाईंआ। साथी सज्जण बणो रफीक, फरीक नज़र कोए ना आईआ। सच दुलारे बणो अज़ीज़, प्रेम प्रीती इक वधाईआ। गुरमुख गुरमुखां करो तमीज़, तमां हिंसा सर्ब मिटाईआ। माया ममता कदे ना बणो मरीज़, कूड़ा नाता देणा जगत छुडाईआ। परम पुरख परमात्म सदा वेखो करीब, घर बैठा डेरा लाईआ। जिस दा नज़ारा अजब अजीब, उजाला नूर करे रुशनाईआ। जो रविदास नूं लिख के पिच्छे दे गया रसीद, काग़ज़ टुक्कड़ा हथ्थ फड़ाईआ। कलयुग अन्त ओसे दी उडीक, राह तक्के सर्ब लोकाईआ। जिस दी धार सदा बारीक, कदम सके ना कोए रखाईआ। जिस नूं कैहन्दे लाशरीक, शिरकत विच ना करे लड़ाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल सिधी करे प्रीत, सुधासर वाला आपणे नाल रलाईआ। खुशीआं नाल माणस जन्म जाओ जीत, जगत जीव मिले वड्याईआ। मंगयां किसे दर तों एह ना मिले भीख, जो साहिब मेरा वरताईआ। वेखो कबाबां वांगू भुंन के उते चाढ़े सीख, खल्ल हड्डीआं नालों दूर कराईआ। मनसूर दी इक्को वज्जी चीक, ऐनलहक रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडा लहिणा देणा लेखे लाए ठीक, ठाकर आया नूर खुदाईआ।

८७४ १६

* ६ चेत २०२१ बिक्रमी मेला सिंघ बाबूपुरा ज़िला गुरदासपुर *

लहिणे वाल्यो चुक्कया लहिणा, कादर करता आप चुकाइंदा। अक्खीआं नाल वखाए नैणां, नेत्रां नाल दरसाइंदा। पिछला दु:ख कोए ना रहिणा, विछोड़ा विछड़यां मेल मिलाइंदा। सब नूं कट्ठा मिल्या बहिणा, घर इक्को इक वडियाइंदा। कूड़ी क्रिया कदे ना वहिणा, साचा मेला आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। लहिणे वाल्यो लहिणा गया चुक्क, चुक्की चूक लोकाईआ। पिछला लेखा गया मुक्क, अग्गे मेल बेपरवाहीआ। चुरासी विच्चों एहो सुख, सुख सागर रूप समाईआ। प्रभ सज्जण मेटी भुक्ख, दुखियां दर्द वंडाईआ। अग्गे ब्रह्मण ठग्गी करे ना कुछ, चोरी गंढ ना कोए खुल्ह्लाईआ। कहारां वांग सतिगुर पास अन्दर ख़ाहिश बाहरों कहे ना कोई मुख, अन्तर बाहर वेखणहारा लेखा देवे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लहिणे वाल्यो लै

लओ आपणी वस्त, प्रभ देवणहार झोली पाईआ। नाम खुमारी नाल हो जाओ मस्त, अन्तर सोहणा रंग चढ़ाईआ। हथ्थ नाल मिलाओ दस्त, दस्तगीर मिले बेपरवाहीआ। एस प्रभू दी आदि जुगादि किसे ना कीती परख, परख विच कदे ना आईआ। जे तारे ते करे तरस, तरस विच्चों आपणा तुरंग दौड़ाईआ। ओस उते काहदा हरख, जो हाकम दो जहानां हुक्म मनाईआ। पिछला लेखा जो भगतां नाल ला के गया शर्त, धुर दी गंढु पवाईआ। ओस विच पैण नहीं दित्ता फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। ब्रह्मण होण नहीं दित्ता ग़रक, कहारां वेख्या आण परत, यार यारां नाल रलाईआ। कर खेल प्रभू असचरज, अग्गे जन्म मरन तों सारे दित्ते वर्ज, दस दस मास अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सब दी पुठी सिधी कीती नरद, पाप खंढे नाल तिक्खी धार करद बण मर्द मर्दानगी दिती वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रिहा मुकाईआ। लेखे विच्चों रुपय्ये बोलण चार, चार चारों कुण्ट देण दुहाईआ। चार युग दा जगत विहार, चारे वेद नैण शरमाईआ । चारे वरन रोवण ज़ारो ज़ार, चार यारी रही कुरलाईआ। एह चौंह दा पिछला उधार, लेखा वेखे बेपरवाहीआ। चार चार दा चक्क कर त्यार, कोहलू चरखा आप भवाईआ। पंखी उड उड वेखण विच संसार, चारों कुण्ट नट्ठण वाहो दाहीआ। पंजां दे के इक प्यार, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों जणाईआ । चार कहिण सानूं आया चज्ज, प्रभू चंगी तरह समझाईआ। पिछला पूरब मिल्या हक़, लेखा दित्ता बेपरवाहीआ। इस दे नाल चौथे घर जाईए वस, वास्ता इक्को घर रखाईआ। साडे ख़ाली कदी ना होवण हथ्थ, दुःख दर्द ना लागे राईआ। चारों कुण्ट खुल्ल्ही रहे अक्ख, दर्शन पाईए धुरदरगाहीआ। चार चौफेरे गाईए जस, धुर दा राग अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे धुर दा वर, साडा सच्चा संग निभाईआ। चार कहिण असीं तक्कया नाल गौर, आपणा ध्यान लगाईआ। प्रभ दे हथ्थ सब दी डोर, लख चुरासी बन्धन पाईआ। जिस नूं चाहे उस नूं देवे छोड़, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां रखे लोड़, वेख वखावे बेपरवाहीआ। निमस्कार निमस्कार नमो नमो हथ्थ जोड़, सजदा सीस निवाईआ। ठग्ग ठग्ग रिहा ना चोर, पुरख अबिनाशी गया बौहड़, घुम्यार दी लेखे लग्गी दोहर, दोहरा जन्म दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा देणा सर्ब चुकाईआ। लहिणा चुकाया लहिणेदार, वहीखाता नज़र कोए ना आईआ। हरिसंगत बख्श के सच प्यार, प्रेम प्रीती इक जुड़ाईआ। पिछला लेखा सर्ब नवार, भरम भुलेखा दूर कराईआ। गुरमुख अग्गे एहो जिहा कोई ना करे पेशा विच संसार, श्री भगवान लेखा देवणहारा थाउँ थाईंआ। की होया जे ब्रह्मण दित्ता तार, मेहर नज़र इक उठाईआ। एह ब्रह्मण नहीं ब्रह्म दी कार, जो पारब्रह्म आपणे

लेख बदले मात कराईआ। एसे कर के पिछला केस आया विच दरबार, दस दस्मेस वेखे चोरी अक्ख उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जावण बलिहार, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। तूं सज्जणा दा सज्जण यारां दा यार, दुखियां दा दुःख दर्द वंडें थाउँ थाईंआ। पंजां दा ब्रह्मण कोलों चुक्कया उधार, चार चार सब दी झोली पाईआ। एह चार नहीं चौथे घर दा प्यार, चौथे युग दा मालक इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा पुत्रां वांग सब नाल करे प्यार, पाल पलोस आपणी गोद बहाईआ। हरिसंगत दे के इक आधार, साची सिख्या झोली पाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलो जैकार, तुहाडु अग्गे लेखा मंगण वाला नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण कहे मैनूं दयो वधाई, वादा सतिगुर पूर कराईआ। अग्गे कदे ना मंगां वच्छा गाईं, झोली अड्ड ना कोए वखाईआ। धन्न भाग रविदास ने दे के गवाही, मेरी फाही दिती कटाईआ। नाले मुख तों लथ्थी शाही, नाले मिली माण वड्याईआ। ब्रह्मणी दी होण ना दिती जुदाई, नथ्थ नक्क सुहाग ओहो लए हंढ्ढाईआ। मैं डरदा डरदा ओनूं वेखां चाईं चाईं, नेत्र अक्ख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दित्ता मुकाईआ। ब्राह्मण कहे मैनूं दयो थपकी, हौसला इक वधाईआ। मैनूं लोड़ रही ना तप दी, जप दस्सया बेपरवाहीआ। मिलणी होई पुरख समरथ दी, घर सज्जण जोड़ जुड़ाईआ। हुण लोड़ नहीं तीसरी अक्ख दी, अक्खां वाला मालक मिल्या बेपरवाहीआ। एथे लोड़ नहीं सिफ्त जस दी, बिन अक्खरां रिहा समझाईआ। मेरी अन्दरों आत्म हस्स दी, जन भगतां सच सच दस्सदी, उच्ची कूके दए दुहाईआ। मैं सवाणी ओस प्रभू नाल वसदी, जिस दा रंडेपा नज़र कदे ना आईआ। मेरे पिच्छे ब्रह्मणी वेखो नस्स दी, भज्जे वाहो दाहीआ। दर्शन कर के दरस विच्चों नफा खटदी, खट्टी पिछली दिती रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सज्जणो मैनूं कहो चंगा, ब्रह्मण रिहा सुणाईआ। मेरा आउणा जाणा मुक्कया गंगा, गंगा वरगी सोहणी नार मैं अक्ख थल्ले कदी ना लिआईआ। मैनूं वेला आया याद जिस वेले मुट्टयार आपणी बांह नालों लाह के कंगण मेरे वल कीता नंगा, अक्ख इशारे नाल समझाईआ। ओस वेले मैं किहा मैं एसे नाल हंढ्ढां, करां जगत कुड़माईआ। जे ना मिले ते चंगा रंडा, ब्रह्मणी कम्म किसे ना आईआ। हथ्थों सुट्ट देवां कुत्तयां हटावण वाला डण्डा, बग़ली कंधे नालों परां हटाईआ। एहदा सोहणा बणावां पलँघा, पीड़ा रंगला इक सुहाईआ। जे मेरा एहदे नाल होए कारज अनन्दा, अनन्द इक्को नज़री आईआ। अन्दर मार के वेख्या ध्यान मैं जन्म कर्म दा गंदा, ओने चिर नूं गंगा गई मुख छुपाईआ। नावें जन्म पिच्छों फेर बणया बंदा, प्रभू बंदगी आपणी इक समझाईआ। गुरसिखो तुहाडु दर्शन कर के होया ठंडा, मेरा अग्नी तत गंवाईआ। मैनूं पंजां दा अजे वी दिसदा उह डण्डा, जेहड़ा श्री भगवान हथ्थ फड़ाईआ।

मैं बिनां प्रभ दी किरपा बणया रिहा अन्धा, मेरी अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। जे रविदास ना पाउँदा गंढ्ढा, नाता तुटा कवण जुड़ाईआ। हरिसंगत कोलों एहो मंग मंगां, गुरमुख गुरमुख मिलणा चाईं चाईंआ। पुरख अकाल दा गाउणा छन्दा, सोहँ ढोला राग इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दित्ता मुकाईआ। लहिणा मुक्कया मेरे मुख ते चढ़ी लाली, मस्तक डलक इक लगाईआ। लेखे लग्गी घाल घाली, पुरख अबिनाशी होया सहाईआ। बण विचोला मंगी ना कोए दलाली, बिन पैसे टक्यों बेड़ा पार कराईआ। चार चार दे पंज सवाली, वीहां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकाया साचे हरि, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मण कहे सारे गाओ गीत, खुशीआं हाल जणाईआ। प्रभ मेरे वांग सब उते करे बख्शीश, रहमत इक वरताईआ। हरि करता बण जगदीश, जगदीश्र होए सहाईआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, दो जहान मालक नज़री आईआ। ओस ने पंज मरन वाले कीते सरजीत, सुरती आपणे शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। पंजां नाल पंज तार, तार सतार रिहा हिलाईआ। आपणा कर के सच विहार, बिवहारी दए समझाईआ। खुशीआं नाल वक्त लैणा गुज़ार, फ़कत इक्को पुरख अकाल मनाईआ। नाता जोड़ फेर संसार, डोर दिती गंढु पवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी अपार, अपरम्पर होया आप सहाईआ। पंजां बख्श बख्शश बेड़ा लाए पार, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा दे इक सहार, सहारा बण के आपणा संग रखाईआ।

८७७
१६

* ७ चेत २०२१ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर *

करोड़ छिआनवें कहे साडा तुटा माण, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। लोकमात वेख्या मार ध्यान, अक्खां विच्चों अक्ख खुल्हाईआ। किरपा करे श्री भगवान, निरगुण निरँकार बेपरवाहीआ। गुरमुखां बख्श अन्तर ज्ञान, आत्म चोट लगाईआ। गीत सुहागी सोहले गान, खुशीआं रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर हन्झूआं नीर वहाण, मेरी छहबर कम्म किसे ना आईआ। देवत सुर सर्ब पछताण, हथ्थ मरोड़न सर सके ना कोए उठाईआ। गुरमुख गुरसिख वड्डे सोहणे चंगे बलवान, बल नालों बलधारी नज़री आईआ। जिन्हां अन्तर खेल करे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि रघुराईआ। इन्द्र कहे मैं चुकी धौण, सिर आपणा उपर उठाईआ। लोकमात दी वेख ठंडी पौण, सुगंधी मेरे अन्दर महकाईआ। मैं ओसे वेले लग्गा गौण, वाह वा तेरी बेपरवाहीआ। बेपरवाह रात नाम हुलारे विच ना देवे सौण, जागदयां नेत्र नैणां नीर वहाईआ।

एसे राग नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर गौण, गा गा खुशी मनाईआ। मैं पिछली कहाणी आया सुणौण, वीह सौ दस याद कराईआ। छोटे बच्चे बाले नढ्ढे मेरा लेखा आया मुकौण, अगला हुक्म सुणाईआ। ओन्हां नाल मिले कौण, जिन्हां साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। करोड़ छिआनवें मेघ माला, बरखा कणी कणी टपकाईआ। जन भगतां मिल्या हरि गोपाला, गोकल बिन्दराबन मण्डल रासी सर्ब शरमाईआ। चलदयां फिरदयां मार्ग दस्सया इक सुखाला, सुचज्जा राह समझाईआ। करे खेल हरि प्रीतम बाला, बाल्यां विच्चों बाले नाल मिलाईआ। अन्तर पुकार सुणे हाला, हालत वेख दया कमाईआ। सति पुरख निरँजण बण दलाला, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लेखा चुक्कया शाह कंगाला, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। अन्तर आत्म परमात्म जन भगतां पाई सोहँ माला, सोझी आपणी आप दृढ़ाईआ। गुरमुखो काया मन्दिर बैठे सच्ची धर्मसाला, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद लहिणा रिहा मुकाईआ। मेघ कहे मेरी धार अगम्म, जुग चौकड़ी खुशी वखाईआ। जन भगत कहिण साडा मेल श्री भगवन, अमृत आपणा रस मुख चुआईआ। दोहां दा निकले जन, शंका संसा रोग प्रभू हटाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर गुरमुखां लैणा मन्न, हुक्मे अन्दर इन्द्र सेव कमाईआ। गुरमुख सोहणा नूरी चन्न, दो जहान करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल हो कृपाल सति बेड़ा जाए बन्न्ह, सच चप्पू नाम लगाईआ। प्यारयो बच्चयो तुसीं कहो धन्न धन्न धन्न, धरनी उते मिली जगत वड्याईआ। नाले दर्शन नाले राग सुणाउँदा कन्न, अन्दर वड़ के सोहणी तन्द सतार हिलाईआ। कर वसेरा छपरी छन्न, महल अटल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेघ इक्को इक समझाईआ। सच्चा मेघ गुरमुख तेरा नेत्र नीर, नैणां विच्चों रंग चढ़ाईआ। बिरहों कटाकश लग्गे तीर, अणयाला आप चलाईआ। अमृत बख्श धुर दा सीर, सुख सांतक रूप वटाईआ। हरिसंगत भाई भाई भैणां नाल मिले वीर, वीरां संग गुणी गहीर नज़री आईआ। तुहाड्ढी घर आ के बदल जाए तकदीर, तदबीर आपणी आप बणाईआ। बेशक तुसीं जगत दिसो कंगाल फ़कीर, शहिनशाह वासते शहिनशाह नालों चंगे नज़री आईआ। ग़म विच ना होणा दिलगीर, दुःख विच ना रोग सताईआ। तुहाड्ढी कटण आया भीड़, भीड़ी गली अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पहरेदार प्रभू नाम खण्डा हथ्थ शमशीर, चारों कुण्ट वेखे चाईं चाईंआ। जेहड़ी चिट्टे उते काली खिच के जाए लकीर, लेखा अगला पिछला मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे नाल मिलाई तासीर, जोती जोत जोत कर रुशनाईआ। सारे खुशीआं नाल कहो प्रभू घत आपणी वहीर, असीं घर बहि के तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण जगत खेल, आत्म परमात्म विछड़ कदे ना जाईआ।

८७६

१६

* १२ चेत २०२१ बिक्रमी नाज़र सिँघ, अजीत सिँघ जेठूवाल दरबार विच *

कबीर कहे उठो भगत, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। परम पुरख प्रभ खेले खेल विच जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ । गुरमुखां मेटे पूरब जन्म दी हरस, चिन्ता रोग सोग चुकाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां कर तरस, मेहर नज़र इक उठाईआ । निरगुण निरवैर हो के गया परत, शाह पातशाह शहिनशाह फेरा पाईआ। निराकार निरँकार देवे दरस, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। अमृत मेघ धुर दा बरख, कूड़ी अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान होए सहाईआ। वेखो भगत जन आपणे नैण, लोचण सच मिले वड्याईआ। हरि की सिफ्त रसना कोई ना सके कहिण, कहि कहि अन्त ना कोए जणाईआ। गुरमुखां चुकाए लहिण देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। बेपरवाह बण के साक सज्जण सैण, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। सन्त सुहेले देवे देण, स्वास स्वासां झोली पाईआ। सच परविशटे पैण ना दित्ता वैण, नेत्र नैण नीर ना कोए वहाईआ। लाड़ी मौत ना खावे डैण, काल गरास ना कोए कराईआ। सच दुआर बख़्शया बहिण, बेअन्त हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। कबीर कहे वेखी अजब लीला, रसना जिह्वा कहिण ना पाईआ। पुरख अकाल निरगुण धार बणया आप वसीला, सच सरूपी फेरा पाईआ। आदि जुगादि, जुग चौकड़ी जो किसे विच ना आए दलीला, सोच समझ मन मति बुध भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। कबीर कहे मैं होया हैरान, हैरानी मेरे उते छाईआ। करया की खेल भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। जिस दा नित नवित्त गाउँदे रहे गान, ढोला सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ । जिस दे दर दरवेश भिखारी बण के मंगदे रहे दान, जुग चौकड़ी अलख जगाईआ। सो करता पुरख आपणी करनी अन्दर हो मेहरवान, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कबीर कहे उठ लओ तक्क, इशारे नाल जणाइंदा। वेखो कलयुग मिलदा हक़, हरि जू हरि भगतां झोली पाइंदा। धुर दा लेखा रख हथ्थ, महिमा अकथ आप दृढ़ाइंदा। हो सहाई साहिब समरथ, पुरख अकाल गंढु पवाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा सहारा गए दस्स, सो सुल्तान शहिनशाह मेहर नज़र उठाइंदा। सन्त सुहेला आवे नस्स, गुर चेला वेख वखाइंदा। सति सतिवादी दे के अगम्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। लेखे ला के पंज तत काया रत, ततव तत गंढु पवाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत जहान तोड़ के नात, सज्जण साक सैण इक्को आप अख्वाइंदा। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। अमृत बख़्श बूँद स्वांत, सच प्याला मुख लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा । कबीर

कहे की करे हरि, हरि जू आपणी खेल वखाईआ। प्रगट हो नरायण नर, नर धुर दा हुक्म वरताईआ। काल महाकाल चुका भय डर, भ्यानक लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख आपे फड़, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। लेखे ला काया धड़, धरनी धरत रंग रंगाईआ। लोकमात उखड़न ना देवे जड़, पत्त डाली फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जगत मरनी गुरमुख कदे ना जाए मर, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल देवणहारा वर, वस्त अमोलक काया गोलक पवण स्वासां संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जन भगत कहिण एह की होया, होका दे दे रहे सुणाईआ। चारां विच्चों कोई ना मोया, संदेसा दे ना कोए समझाईआ। जगत कुटम्ब नेत्र नैण कोए ना रोया, हन्झू अक्ख ना कोए वहाईआ। गुरमुख वेख्या नवां नरोया, घर साचे सच ध्यान टिकाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म श्री भगवान लै के आया ढोआ, साची करनी कार कमाईआ। कर प्रकाश साची लोआ, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कबीर कहे जन भगत कदे ना मरदा, लाड़ी मौत ना मात प्रनाईआ। सतिगुर पौड़े साचे चढ़दा, घर मन्दिर वेख वखाईआ। निर्भय हो कदे ना डरदा, भय भउ सर्ब चुकाईआ। धुर दा मन्त्र इक्को पढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल किरपा करदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले ठांडा करे हिरदा, हिरदे आपणा डेरा लाईआ। मेल मिलाए नाता धिर दा, धुर दा लेखा आप समझाईआ। एहो खेल अगम्मी पिर दा, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। दो जहानां अन्दर फिरदा, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। नित नवित्त जिस वेले जन भगतां वेखे बेड़ा रुढ़दा, फड़ बांहों आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। जन भगत कहिण की एह सच्च, सच दे समझाईआ। कबीर जुलाहा प्या हस्स, खुशीआं विच दृढ़ाईआ। उठो वेखो श्री भगवान भगतां वस, भगवन आपणा आप मिटाईआ। कलयुग अन्त गुरमुखां देवे धुर दा रस, रसीया रस आपणा मुख चुआईआ। सिफ्ती सिफ्त सालाही करें जस, ढोला इक्को राग सुणाईआ। लोकमात गया नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान कर इकट्ठ, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल रचाईआ। जन भगत कहिण असीं रहे सोच, आपणा अन्तर ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी की खेल करे मातलोक, परलोक आपणी धार बंधाईआ। आपणा भाणा आपे रोक, आपे वेखे चाईं चाईंआ। आपणा दस्से सच श्लोक, सोहँ ढोला इक दृढ़ाईआ। जींवदयां जग दे के मोख, मुक्ती मुफ्त गुरमुखां चरणां हेठ दबाईआ। चार युग किसे ना कीती आपणी पहुंच, हुक्मे अन्दर फिर फिर गए वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त

प्रगट निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को इक अख्वाईआ। जिस दे हथ्थ काल महाकाल जन्म कर्म दी मौत, मरना जीणा इक्को खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। जन भगत कहिण खेल अगम्म, पुरख अकाल आप कराइंदा। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्न्, बन्न्णहारा सेव कमाइंदा। साडा सिकवा शक ना रिहा जन, भरम भुलेखा नज़र कोए ना आइंदा। जिस पंज तत काया माटी दित्ता तन, मन मति बुध जोड़ जुड़ाइंदा। सो सन्त सुहेले गुरमुख चाढ़े चन्न, धुर दा चन्द नूर चमकाइंदा। कलयुग अन्त इक्को राग सुणाया कन्न, करनी करता आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाता वेख वखाइंदा। कबीर कहे आओ नज़दीक, नेरन नेर दयां वखाईआ। जिस नूं कैहन्दे लाशरीक, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। उस दी धार सदा बरीक, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदे रहे उडीक, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला प्रभ जन भगतां दस्से इक प्रीत, नाता चरण कँवल जुड़ाईआ। अन्तर आत्म करे सुरजीत, परमात्म आपणे घर वसाईआ। अनमंगी दर तों पाए भीख, भिच्छया सच नाम वरताईआ। सन्त सुहेले कर अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। काया चोला ठांडा सीत, सीतल धार इक वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लेखा दए मुकाईआ। कबीर कहे नहीं वेला लुक्कदा, पर्दा उहला नज़र कोए ना आईआ। दीन दयाल दयावान हो के पुछदा, गुरमुख गुरसिख आप उठाईआ। नाता जुड़या पिता पुत्त दा, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। परवरदिगार कदे ना रुस्सदा, जुग रुस्सयां लए मनाईआ। जिस वेले गुरमुख सच तारा वेखे टुट्टदा, कर किरपा जोड़ जुड़ाईआ। अन जल पाणी वेखे मुक्कदा, सच भण्डारा झोली देवे पाईआ। लेखा जाणे आपणी कुख्ख दा, माता जन्म पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। जन भगत कहिण की लग्गे दम, करता कीमत किस बिध पाईआ। निरगुण निरवैर बण के जननी जन, पूत सपूत गोद उठाईआ। भाग लगा के काया तन, तत आपणा दए समझाईआ। जो प्रेम प्रीती अन्दर गए मन्न, तिन्हां मनसा आसा आपणी झोली पाईआ। पंज तत काया भाण्डा हुक्मे अन्दर भन्न, शब्दी मेला जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। कबीर कहे प्रभ दा खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। जिस दा लेखा अन्त ना पारावार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के सारे शुकर मनाईआ। जिस दा लेखा लेख सदा जुग चार, चौकड़ी हुक्मे अन्दर भवाईआ। सो करनी करनहार करतार, कादर करता इक अख्वाईआ। मरन तों पहलों ज्वाले आपे चार, चारां विच्चों चौथा यार नज़री आईआ। जिस दा गोबिन्द नाल उधार, सो गोबिन्द पूरब वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा रविदास चुमार, तिस

झोली आप भराईआ। जिस दी मंग द्वापर रो के ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चवां मंगया इक दीदार, हज़रत मिले बेपरवाहीआ। मुनसफ़ बण के परवरदिगार, निरगुण वेखणा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा झोली पाईआ। लहिणा देणा पूरब जाण, हरि करता दया कमाइंदा। जुग जन्म दा खेल महान, मेहरवान झोली पाइंदा। सच प्रीती बख्श दान, दाता दानी वेख वखाइंदा। जन भगत किसे घर ना आई मुकाण, काया मकान ख़ाली ना कोए कराइंदा। निगह मार श्री भगवान, भेव अभेदा आप जणाइंदा। पिछले लहिणे पिच्छे अग्गे बख्श जान, जानणहारा जाणकारी आप कराइंदा। गुरमुख भुल्लणा नहीं नादान, बाली बुध सच समझाइंदा। पंज जैकारे नित नवित्त लौणे, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवान आपणा भाग भगतां झोली पाइंदा।

* २१ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरायण दे गृह मुसल्ला पुर हाट पटणा बिहार *

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, हरि पुरख निरँजण आप लगाइंदा। एकँकार हो त्यार, आदि निरँजण जोती नूर नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता पावे सार, श्री भगवान भेव खुल्हाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर प्यार, ब्रह्म पर्दा आप चुकाइंदा। सचखण्ड निवासी शाह सुल्तान, शहिनशाह इक्को हुक्म सुणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त खेल महान, श्री भगवन्त आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर निरँकार नर हरि आपणी खेल खलाइंदा। नर हरि खेल करे नरायण, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो आपणे नैण, अक्ख प्रतख इक खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण बणया सज्जण सैण, बन्धन आपणा आप पवाईआ। जन भगत चुकाए लहिण देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई श्री भगवन्त, हरि करता दया कमाइंदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। मेल मिलावा साचे सन्त, भगत भगवन्त अंग लगाइंदा। दे वड्याई विच्चों जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार चलाईआ। कर प्रकाश निरगुण जोती चन्न, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ देवणहारा आपणा नाम धन, वस्त इक्को इक वरताईआ। मेटणहारा वासना मन, मन ममता

मोह चुकाईआ। लेखे लावणहारा जननी जन, भगत सुहेले आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जाओ उठ, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लोकमात करया रुख़, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाइंदा। हरिजन भगत सुहेले वेखे आपणे सुत, पिता आपणी कार कमाइंदा। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी ना कोए रखाइंदा। जन भगतां उजल करे मुख, दुरमति मैल धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप समझाइंदा। धुर दी खेल दस्से समरथ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन नैणां खोल्हे अक्ख, निज नेत्र आप जणाईआ। भगत भगवान मेला वेखो हस्स हस्स, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। सच दवारे जाणा नट्ठ, जोती जामा वेस वटाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत किसे ना आवे हथ्थ, खोज खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, हरि करता आप जणाईआ। भगत वछल श्री भगवान, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां देवे दान, दाता दानी इक हो जाईआ। सुरती शब्दी वेख गोपी काहन, घर बंसुरी नाम निधान सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लैण अंगड़ाई, करवट आपणी आप बदलाईआ। इक दूजे नाल करन सलाही, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे खेल बेपरवाही, भेव अभेदा समझ कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान दए गवाही, शहादत इक्को इक दए भुगताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा ध्यान लए लगाई, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो साहिब समरथ कूड़ी क्रिया कलयुग मेटणहारा शाही, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां साचे सन्तां करे रुशनाई, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। इक्की चेत कर के हेत राज नरायण नैण अक्ख इक खुलाई, बेपरवाह बेपरवाह बेपरवाह नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। पीर पैगम्बर रहे आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जन भगत वेखो साख्यात, जिस भगवन मिल्या चाईं चाईंआ। जिस चरण कँवल बंधाया नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। साचे शब्द मिलाया घाट, तट किनारा इक जणाईआ। जन्म जन्म दी मिटी वाट, कर्म कर्म दा गेड़ चुकाईआ। आत्म सेजा वेख सुहञ्जणी खाट, सच सिँघासण दए सुहाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूरी जोत करे रुशनाईआ। परमात्म पुछे वात, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे देवणहार इक हो जाईआ। गुर अवतार रहे बोल, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। निरगुण वेखो तोले तोल, निरगुण कंडा तराज़ू हथ्थ

उठाईआ । जन भगत रखाए अडोल, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। घट आत्म अन्तर जाए मौल, पूरब जन्म दा पूरा कीता कौल, इकरार विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि इक्को खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे पैण हस्स, खुशीआं राग अलाईआ। वेख खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह आपणी धार चलाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाउँदे जस, ढोला इक्को नाद सुणाईआ। सो जन भगतां देवणहारा अमोलक वथ, नाम ख़ज़ाना आप वरताईआ। लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, घर मेला सहिज सुभाईआ। सच दुआर खोल्ह हट्ट, मन्दिर इक्को इक करे रुशनाईआ। निरगुण जोत जगे लट लट, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे चाईं चाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, मता इक दूजे नाल पकाईआ। चलो वेखीए बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कैहन्दे नूर अलाह, जलवा नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं राम रमईया कहि के सीस रहे झुका, सो रहमत आपणी रिहा कमाईआ। जिस नूं काहना कृष्ना कहि कहि मण्डल रास रहे रचा, बंसुरी इक्को नाम सुणाईआ । जिस नूं सजदा सीस रहे झुका, चारों कुण्ट आपणी धार चलाईआ। मन्त्र ढोला नाम निधान रहे गा, गीत गोबिन्द इक अलाईआ । सो जन भगतां मेला रिहा मिला, जुग विछड़े अंग लगाईआ। राज नरायण राजयां विच्चों राजा पुरख अबिनाशी दित्ता बणा, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूरब जन्म दा रिहा ना कोई गुनाह, जन्म कर्म दा लेखा आपणी झोली पाईआ। दिने जागदयां राती सुत्तयां दरस देवे दिखा, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां इक्को रंग वखा, दूजी प्रीत ना कोए जणाईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माँ, बालक आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी इक रघराईआ। भगत वेखो रघनाथ, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म दे के साथ, सगला संग निभाइंदा। सति नरायण नरायण पढ़ाए गाथ, निरअक्खर आप पढ़ाइंदा। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द कराए पाठ, अजपा जाप आप समझाइंदा। अन्दर वड़ के पुछे वात, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। बंद किवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। अमृत बूँद देवे स्वांत, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म सेज सुहाए खाट, साची खटीआ डेरा लाइंदा। शब्द अगम्म दे के दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सच्चा चन्द नूर चमकाइंदा। घर मन्दिर वखाए इक्को घाट, महल अटल इक रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे उठ, आपणा बल धराईआ। वेखो खेल करे सच मुच, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो रिहा लुक, निरगुण आपणा मुख छुपाईआ। गुर

अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां भगतां कैहन्दा रिहा आपणे सुत, सुत नादी नाउँ धराईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान जन भगतां आपे रिहा पुच्छ, फेरा घर घर दर दर इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खलाईआ । पीर पैगम्बर करन त्यारी, आपणा बल धराईआ। चौदां तबक ना कोए विचारी, सोच समझ ना कोए रखाईआ। गुर अवतार होका देवण वारो वारी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चौदां लोक करन ख़बरदारी, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखण चारों कुण्ट नैण उग्घाड़ी, नेत्र आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कवण धाम कवण राम कवण वेस वटाईआ। कवण वेस वटाए अवल्ला, समझ विच किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल इक इकल्ला, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जां तक्कण वेखण घर राज नरायण पुर मुसल्ला, मिसाल मिसल आपणी रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सच वड्याई देवे आप, जुग जुग दया कमाइंदा। जन भगतां बण के माई बाप, पिता पुरख गोद उठाइंदा । जन भगतां बिन पढ़यां देवे जाप, कलम शाही वंड ना कोए वंडाइंदा। अन्दर वड़ के सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनादी जाए आख, आदि जुगादी हुक्म वरताइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप दृढ़ाइंदा। साचा लेखा अन्तर एक, हरि करता आप जणाईआ। भगत भगवान बख्शे टेक, चरण कँवल सरनाईआ। जो जन करे सच विवेक, विवेकी बुध रखाईआ । त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत ना करे कुड़माईआ। निज नेत्र हरि सज्जण लए पेख, घर इक्को नज़री आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे साचा हेत, हितकारी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, घर साचे होए सहाईआ। घर साचा मन्दिर वेख हट्ट, गृह पर्दा दए उठाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, घर जोती नूर करे रुशनाईआ। सति सतिवादी निरन्तर ब्रह्म दस्से सच, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक सुणाईआ। सच संदेसा देवे जगत, हरि भगवन दया कमाइंदा । लेखे लाए बूँद रक्त, पंज तत लहिणा मूल चुकाइंदा। आपणे मिलण दा आपे जाणे वक्त, थित वार ना भेत खुलाइंदा। पूरब जन्म जो रिहा फ़र्क, कलयुग अन्तिम लेखा आपणी झोली पाइंदा। भेव चुकाए अर्श फ़र्श, काया काअबा खोज खुजाइंदा। रहमान हो के करे तरस, रहमत आपणी इक कमाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती मुख चवाइंदा। अगला लेखा खेल असचरज, अचरज आपणी धार बंधाइंदा। साहिब सतिगुर जुग चौकड़ी पूरा करे आपणा फ़र्ज़, बण सेवक सेवक सेव कमाइंदा । जो गोबिन्द अग्गे नरायण हो के कीती अर्ज़, सो आरजू आपणे लेखे लाइंदा। भेव

खुल्हाए मर्दाना मर्द, सच मर्दानगी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच दर, दर दवारा इक्को इक वडियाइंदा।

* २२ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरायण दे गृह पटणा साहिब मुसल्ला पुर हाट बिहार *

गुर अवतार करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर चरण ध्यान, सजदा जगदीश सीस इक रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण नैण उग्घाड़, अक्ख प्रतख इक खुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण भिखार, दर ठांडे अलख जगाईआ। भगत सूफ़ी करन दीदार, लोचण आपणा नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जस गावण वारो वार, गीता ज्ञान भेव गोझ समझाईआ। खाणी बाणी बोल जैकार, अञ्जील कुरान कलमा हक़ पढ़ाईआ। तसबी माला बण पनहार, दर सेवक रूप वटाईआ। तीर्थ तट मजन सरोवर नीर रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वेख खेल परवरदगार, बेपरवाह आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन इशारा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। वेखो खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर इक वखाईआ। जिस दी सिफ्त करदे रहे जुग चारा, रसना जिह्वा कर पढ़ाईआ। जिस दी महिमां लेख लिखदे बण लिखारा, कातब बण के कलम चलाईआ। जिस दे नाम दा बोलदे रहे जैकारा, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। जिस दा मन्दिर दस्सदे सचखण्ड दवारा, दो जहानां करे रुशनाईआ। जिस दा लख चुरासी कैहन्दे रहे पसारा, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव आधारा, त्रै पंज सच समझाईआ। जिस दा निरगुण सरगुण बणया अखाड़ा, ततव तत खेल रचाईआ। जिस दा अगम्म अथाह महल उच्च मनारा, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। जिस दा नूर ज़हूर इक उज्यारा, जल्वागर सच खुदाईआ। जो धुर संदेसा देवणहारा वारो वारा, नित नवित्त आपणा फ़रमाण सुणाईआ। जो भगतां करे सच प्यारा, भगवन आपणी गोद उठाईआ। जो सन्तां देवे नाम हुलारा, आत्म अन्तर आपणा पर्दा लाहीआ। जो गुरमुखां खोल्हे बंद किवाड़ा, भेव अभेदा दए जणाईआ। जो गुरसिखां चरण धूढ़ी बख्शे छारा, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। जिस तेई अवतारां दे सहारा, भगत अठारां उंगली नाल फिराईआ। जिस ईसा मूसा मुहम्मद जणाया हक़ नाअरा, हकीकत आपणी आप समझाईआ। जिस नानक निरगुण जोत कीआ उज्यारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। सो परम पुरख हरि करनेहारा, करता करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जो सचखण्ड निवासी थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, भेव सके कोए ना पाईआ। जिस मन्दिर अन्दर वसाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार वेखण खेल, ख़ालक खलक आप

खलाईआ। शब्दी जोती मेल, शब्दी शब्द धार प्रगटाईआ। आदि जुगादी सज्जण सुहेल, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। वसणहारा धाम नवेल, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेल, चेला गुरू आपणा रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हस्सण, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। दो जहानां निरगुण धार नस्सण, सरगुण रूप ना कोए वखाईआ। प्रेम प्रीती धुर दी दस्सण, दरगाह सच सच पढ़ाईआ। सरन सरनाई इक्को ढट्ठण, पुरख अकाल नज़री आईआ। गीत गा खुशीआं विच नच्चण, ढोला राग अलाईआ। प्रेम प्रीती होए मग्न, मधसूदन वेख वखाईआ। साची वस्त अमोलक मंगण, दर ठांडे अलख जगाईआ। परम पुरख प्रभ रखीं अंगन, सच तेरी सरनाईआ। ओढण देवीं पड़दा ढकण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, खुशी आपणे अन्दर टिकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी लोचा रहे लोच, बिन लोचण नैण नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी जिस दी करदी खोज, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दा खेल दो जहान लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रंग रंगाईआ। जिस दे चरण कँवल सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग माणी मौज, मौजूदा हो के वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा दाता इक्को बहुत, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए झुक, दर ठांडे सीस निवाईआ। श्री भगवान साडा पैंडा गया मुक्क, मुक्की वाट पराईआ। सच दवारयों रहे पुच्छ, दर तेरे अलख जगाईआ। कवण वेला सुहञ्जणी रुत्त, रुतड़ी आप महकाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत, चेतन धार प्रगटाईआ। साची देवे इक्को सुच, सच वस्त वरताईआ। सफल कराए मात कुक्ख, हरिभगत आपणे रंग रंगाईआ। उजल करे जननी मुख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत जाम प्याए घुट, रस इक्को इक चुआईआ। दिखाए दरस जो बैठा लुक, पर्दा उहला रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण गोबिन्द पुरख अकाल तेरा पुत्त, पिता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण पिता पूत, पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। दहि दिशा वेख्या चारे कूट, ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। सृष्ट सबाई दिसे झूठ, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। ख़ाली दिसण काया ठूठ, नाम सति वस्त ना कोए टिकाईआ। तेरे दवारयों गए रूठ, प्रेम प्रीती नाता ना कोए जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गी भुक्ख, तृष्ना नाम ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सण हाल, हालत सारे रहे जणाईआ। नेत्र खोल्ह दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। सृष्ट सबाई कूड़ी क्रिया

घालन रही घाल, सति सरूप ना कोए समाईआ। त्रैगुण माया ना तोड़े कोए जंजाल, जागरत जोत ना करे रुशनाईआ। साध सन्त होए बेहाल, बेहबल हो के देण दुहाईआ। हल्ल होवे ना कोए सवाल, लेखा चुक्के ना थाउँ थाईंआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिम्मल रुक्ख रहे लहराईआ। तेरी चारों कुण्ट करदे भाल, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर खोजण नेत्र नैण नैण उठाईआ। सच स्वामी मिले ना कोए दलाल, वचोला हक़ ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, दोए जोड़ कर अरज़ोईआ। अबिनाशी करते चाढ़ रंग, एथे ओथे दो जहान मिले ढोईआ। नाम निधान वजा मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। आत्म परमात्म सुणा छन्द, लख चुरासी सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी गंढ, गंढुणहार स्वामी तेरी इक सरनाईआ। कर खेल सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा नूर नज़री आए अगम्मी चन्द, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ भूपन भूप, भूपत तेरी इक सरनाईआ। निरगुण तेरा सति सरूप, सति सतिवादी नज़री आईआ। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा खोज खुजाईआ। लेखा देवें आपणे पूत, सुत दुलारे गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला पर्दा दए मिटाईआ। पर्दा उहला चुक्क श्री भगवान, सच तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे रहे दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। काग़ज़ कलम शाही लिखदे रहे ब्यान, कलमा तेरा नाम पढ़ाईआ। दस्सदे रहे धुर फ़रमाण, सच संदेसा जगत सुणाईआ। अक्खरां नाल देंदे रहे ज्ञान, जीव जंत जगत समझाईआ। ढोला सुणाउँदे रहे कान, रसना जिह्वा कर कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चुका थाउँ थाईंआ। गुर अवतार कहिण आख़र, इक्को इक जणाईआ। तेरा लेखा पाहन पाथर, जल थल महीअल तेरी ओट तकाईआ। परम पुरख प्रभ बण साथन, संगी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण अख़ीरी, इक आवाज़ उठाईआ। परम पुरख तेरे हथ्थ पीरी, पीरन पीर बेपरवाहीआ। शरअ शरीअत दीन मज़्ब कट ज़ंजीरी, लाशरीक तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल बेनज़ीरी, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त चारों कुण्ट होई दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। रखें लज्जया जिउँ प्रहिलाद कीड़ी, अग्नी थमां तत बुझाईआ। तेरे हथ्थ सच असीरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को वार पए बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। सच वस्त प्रभ तेरे कोल, अतोट अतुट नज़री आईआ। धुर

भण्डारा इक्को खोल्ह, पर्दा उहला दे चुकाईआ। निरवैर हो के तोल तोल, साचा तक्कड़ नाम चलाईआ। तेरे नाम दा वजा के गए सारे ढोल, होका दे दे जगत लोकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां आवे कोल, साचे सन्तां लए जगाईआ। आत्म परमात्म पड़दा लए फोल, मन्दिर अन्दर वड़ के घर घर विच खेल खलाईआ। सच प्रीती करे चोल्ह, प्रेम आपणा रंग वखाईआ। हरिजन रहे ना कोए अनभोल, सुत्यां आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई दे दे एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। गोबिन्द वेखे तेरी खेड, भेव अभेदा दए जणाईआ। जिस कारण करते दित्ता भेज, हुक्मे अन्दर हुक्म मनाईआ। तेरे मन्दिर तेरी माणी सेज, सिँघासण सुहञ्जणा इक्को वेख वखाईआ। तेरा जोती जलवा नूरी वेख्या तेज, अनभव तेरा रूप बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा वेख गोबिन्द, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। दाते दानी वड बख्शिंद, बेअन्त तेरी वड्याईआ। दर तेरे मंगण विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। तूं सूरबीर वड मरगिंद, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। तेरा लेखा दो जहान साहिब नरिंद, तेरा हुक्म चले थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दए समझाईआ। पूरब लहिणा गोबिन्द धार, प्रभ भेव अभेद जणाईआ। वेखो खेल अगम्म अपार, अपरम्पर आपणा इक वखाईआ। जिस दा लेखा लिख्या मिले ना विच संसार, कलम शाही शहादत देण कोए ना आईआ। जिस दा हुक्म रहे जुग चार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग इक्को धार बंधाईआ। सो खेल करे आप निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच्चों छोटा सुत लए उठाल, गोबिन्द आपणी गोद उठाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर करे प्यार, साची रीती मात चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक विहार, दूजी धार ना कोए बंधाईआ। सत्थर हंढाउणा इक्को यार, सेज सुहञ्जणी दे वखाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। संदेसा दे के गया इक्को वार, एकँकार हुक्म मनाईआ। कल कल्की लै अवतार, जोती जामा वेस वटाईआ। सम्बल नगर पावे सार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तेरा लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सुण संदेसा पुरख अकाल, गोबिन्द खुशी मनाईआ। पैगम्बरां विच्चों मेरा सुणया हाल, पीरां विच्चों मेरी पीड़ मिटाईआ। अवतारां विच्चों मेरे उते होया दयाल, गुरुआं विच्चों गुर गोबिन्द दिती वड्याईआ। मन्दिर विच्चों धर्मसाल, मसीतां विच्चों महिराब इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुण संदेस गोबिन्द लाल, बिन रसना जिह्वा रिहा जणाईआ। उठ वेख दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ।

जुग चौकड़ी बीते काल, कोटन कोटि काल विहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तैनूं मन्नदे रहे दलाल, शब्द वचोला बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम वेख हाल, मुरीद नेत्र रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दए चुकाईआ। गोबिन्द कहे मैं तेरा बच्चा, परम पुरख तेरी सरनाईआ। सच दवारे बणया सच्चा, सिख्या सच दृढ़ाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कीता अच्छा, सीस जगदीश निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती अन्दर रत्ता, रत्ती रत्त दे सुकाईआ। रत्ती रत्त तेरे लेखे, रचना तेरी वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मिटे भरम भुलेखे, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जन्म जन्म दी मेट रेखे, कर्म कांड दे गंवाईआ। जिस ख़ातर लोकमात भेजे, तिस ख़ातर हुक्म सुणाईआ। सो खेल तेरे घर विच खेडे, ख़ालक वेखण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लहिणा देणा चुकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, अन्तर अन्तर धार जणाईआ। तेरा मेरा इक निशान, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं सुत दुलारा वड बलवान, बल धारी नज़री आईआ। तेरा लेखा जाणा बाल अञ्याण, बाली बुध मिले वड्याईआ। तेरा मेला राज राजान, शहिनशाह तेरा इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। गोबिन्द कहे मेरी पिछली याद, बाल अवस्था रिहा जणाईआ। जिस घर मिली धुर दी दाद, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। ओस दा फेर ना लभ्भा स्वाद, दो जहानां खोज खुजाईआ। किरपा कर ग़रीब निवाज, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल कहे स्वाद केहड़ा, सच सच दे जणाईआ। जिस दे पिच्छे पाया फेरा, झगड़ा मेरे नाल रखाईआ। मैं तेरा लहिणा देणा बथेरा, सब कुछ हथ्थीं रिहा वरताईआ। मैं वेखां तेरे प्रेम वाला डेरा, कवण खेड़ा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। गोबिन्द कहे मेरे शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। जिस दा भेव ना पाया किसे विद्वानी, ज्ञानी समझ कोए ना आईआ। जिस दी सार ना पाई चारे खाणी, चारे बाणी गीत ना कोए अल्हाईआ। जिस दा रूप समझे ना तीर्थ तट पाणी, अठ सठ ना कोए वड्याईआ। जिस दा लेख लिख के बणाए ना कोई निशानी, निशाना जगत ना कोए बणाईआ। मैं ओस दी दस्सां कहाणी, कहि कहि आपणी ख़ुशी मनाईआ। जिन्हां नूं सद्दे राजा राणी, रय्यत पटने विच रखाईआ। तिन्हां दा लेखा बिन लिख्तों मेरे नाल बणा दो जहानी, लोक परलोक इक्को रंग नज़री आईआ। तिस दवारयों होए पीणा ठंडा पाणी, कोटन कोटि अमृत जल बैठण नैण शरमाईआ। चार जुग जिस दी रहे तेरे नाम दी सच कहाणी, कथा सृष्ट सबाई आपणा राग सुणाईआ। सिफ्तां विच सिफ्त सालाहे धुर दी बाणी, बाणी आपणा भेव चुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे जगाई अलख, अलख अगोचर इक्को मंग मंगाइंदा। सच दुआर हो प्रतख, निरगुण सरगुण आपणा रूप जणाइंदा। मैनूं आपणी गोदी जिस ल्या चुक्क, कर प्यार वांग पुत्रां जोड़ जुड़ाइंदा। एनां दा लहिणा देण आया हक़, हकीकत तेरे विच्चों बाहर कराइंदा। तेरे उते किसे दा ना रहे शक़, शिकवा सब दा मेट मिटाइंदा। अन्दर वड़ के काया मन्दिर चढ़ के आपणा नूर ज़हूर देणा दस्स, अन्ध अन्धेर कोई रहिण ना पाइंदा। अन्तर आत्म निझर देणा रस, सरोवर इक्को इक नज़री आइंदा। आपणे मिलण दी खोल्ह के जाणा अक्ख, आख़र तेरे अग्गे इक्को वास्ता पाइंदा। तेरा मेल मिल्या मेरे पुरख समरथ, नाता दो जहान ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, पूरब लेखा जन्म जन्म विच झोली पाइंदा।

*** २२ चेत २०२१ बिक्रमी पटणा साहिब गोबिन्द घाट बिहार ***

रवीदास वेख पिछला हिसाब, बेपरवाह रिहा जणाईआ। जिस दा लेखा मिले ना विच किताब, कलम शाही ना वंड वंडाईआ। नेत्र खोल्ह दे जवाब, पारब्रह्म प्रभ सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि रघराईआ। रविदास वेख औह माई गंगा, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जिस नूं कसीरा लग्गा चंगा, ब्रह्मण भेंट चढ़ाईआ। कर खेल सूरा सरबँगा, भेव खुलाए चाईं चाईंआ। नौ जन्म दा तार मुशटंडा, मुश्किल हल्ल कराईआ। फेर वेखे घाट कन्ढा, तट किनारा सोभा पाईआ। भेव चुकाए गुजरी चन्दा, नंद अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। रविदास वेख गंगा माई, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उच्ची कूक कूक रही सुणाई, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। धन्न भाग प्रभ मिल्या माही, जिस रविदास दिती वड्याईआ। सच कसीरा भेंट चढ़ाई, कंगण वंड वंडाईआ। उस कंगण अन्दर लिख्या लेख बेपरवाही, जिस दी लिख्त पढ़न विच किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। कसीरे पिच्छे वटया कंगण, करनी करता खेल कराइंदा। रविदास चाढ़ी हरि हरि रंगण, अंगण आपणे आप बहाइंदा। नाम निधान इक वजाए मृदंगन, सोहणा राग अल्हाइंदा। सच प्रीती पा के बन्धन, बंदगी इक समझाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को छन्दन, साचा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। रविदास कहे बोल चम्यार, नीच कुल सीस निवाईआ। वाह वा मेरे साहिब निरँकार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गंगा मइया कंगण दित्ता उतार, भेंटा आपणी सेव कमाईआ। जिस दा खेल अपर अपार, इक दो मेला

सहिज सुभाईआ। उस दे अन्दर निरगुण लेख लिख्या निरँकार, निरअक्खर नाल बणत बणाईआ। गंगा सुण कर विचार, गंगोतरी भेव चुकाईआ। तेरा होया मात उधार, लहिणा देणा देवे बेपरवाहीआ। तेरा खाली दिसे श्रृंगार, जोबन नैण अक्ख शरमाईआ। ओसे वेले नेत्र रोई धाहां मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर मेरे करतार, करता पुरख तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान अगम्म अथाह, शब्दी नाद सुणाइंदा। सच सवाणी तकणा राह, नेत्र नैण अक्ख खुल्लाइंदा। तेरा लहिणा देणा दयां मुका, पूरब लेखा झोली पाइंदा। निरगुण नूरी जोत कर रुशना, शब्दी सुत पंज तत वडियाइंदा। गोबिन्द सूरा नाउँ रखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पिछला कर्जा दए मुका, बाकी हक़ आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप दृढ़ाइंदा। साचा लेखा दस्से भगवान, रविदास चुमारे नाल रलाईआ । लेखा चुक्के विच्चों जहान, दो जहानां वाली आप मुकाईआ। इक कंगण कर परवान, दूजा शकंगण रविदास तेरी वड्याईआ। दोहां अन्दर खेल महान, हरि करता आप वखाईआ। जिस उपर लेख लिख्या सो पुरख निरँजण मेहरवान, हरि हरि जू वेस वटाईआ। बाली अवस्था बाल अञ्याण, गोबिन्द गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी बेपरवाहीआ।
८६२ गोबिन्द कंगण पिछला कड़ा, गंगा झोली पाईआ। जिस दा अक्खर किसे ना पढ़ा, जगत विद्या ना कोए समझाईआ। ओसे ८६२
१६ घाट किनारे खड़ा, जिस तट किनारे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा १६
मुकाईआ। इक नाल दूजा सुट्ट, रविदास गंगा दोहां लेख मुकाईआ। आपणे कोल ना दस्से कुछ, बण दाता धुर दा बेपरवाहीआ। जे कोई अग्गों लए पुच्छ, हस्स के दए वखाईआ। मैं निक्का बाला गुजरी पुत्त, बाला रूप वटाईआ। ब्रह्मण वेख अन्दर सुच्च, सच दए समझाईआ। साची धारों निरगुण उठ, सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द कंगण गंगा आई मंगण, पिछला लहिणा आपणी झोली पाईआ । कंगण दे के गंगा हथ्थ, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। तेरा लेखा अन्त पुरख समरथ, धुर अनादी शब्द सुणाइंदा। कलयुग अन्त होए प्रगट, जोती जामा वेस वटाइंदा। जन्म कर्म ब्रह्मण दा कट, तट किनारा फेर वेख वखाइंदा। रविदास चुमारा नाल रख, आप आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। तेरे नक्क वेख सुहाग नथ्थ, सोहणी आपणी बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द कंगण गंगा हथ्थ फड़ाइंदा। गंगा कहे मोहे चढ़या चा, घर वज्जी इक वधाईआ । पिछला लेखा दित्ता मुका, अग्गे आपणा राह वखाईआ। जिध्धर वेखां निरगुण धार गोबिन्द दिसे मलाह, सरगुण बेड़े रिहा तराईआ । रूप अनेक कोट

सरूप वटा, सति असति दए समझाईआ। जिस दा भेव अभेद कोए जाणे ना, लेखा लिख्त ना कोए वखाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल हो कृपाल साचे तट किनारे वेखे आ, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गोबिन्द घाट बिन घाटिउँ घाटा पिछला लेखे लाईआ।

* २२ चेत २०२१ बिक्रमी पटणा साहिब गुरू का बाग़ बिहार *

सति द्रोपती कृष्न ध्याया, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अन्तर आत्म ध्यान लगाया, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। किरपा कर हरि रघुराया, बेअन्त तेरी वड्याईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। पंजे पांडो माण गंवाया, सिर सके ना कोए उठाईआ। दर्योध्न हँकारी हुक्म सुणाया, दोसासन नाल मिलाईआ। सभापती उह वेख वखाया, बलधारी लए अंगड़ाईआ। तुध बिन कोई नज़र ना आया, जो होवे अन्त सहाईआ। निरगुण तेरा राह तकाया, सरगुण ओट जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव दए समझाईआ। द्रोपती सुण हाहाकार, श्री भगवान दया कमाइंदा। भगत वछल गिरवर गिरधार, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण खेल कराइंदा। कूड़ी माया कर पसार, पसर पसारी रंग रंगाइंदा। राज राजान नेत्र अक्ख कोई ना सके उग्घाड़, प्रतख रूप ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुण पुकार दया कमाइंदा। सुणी पुकार ठाकर स्वामी, अन्तर वेख वखाईआ। लेखा जाणे अन्तरजामी, भेव अभेद खुल्हाईआ। रखे पत्त दो जहानी, लोकमात होए सहाईआ। माया रूप खेल शैतानी, शैतानां माण गंवाईआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हथ्थ ना लाए कोई दूत चतुर सुघड़ सुचज्जी सवाणी, ओढण आपणा एको पाईआ। नेत्र अक्ख होई हैरानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल अगम्म अथाहीआ। माया रूप कपड़ कोट, जगत नेत्र नज़री आईआ। फिरी दुहाई विच लोक, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। साचा ढोला इक श्लोक, धुर दा रहे गाईआ। धन्न वड्याई निर्मल जोत, प्रकाश रूप समाईआ। जिस दी ज्ञानी ध्यानी कोई ना कढ्ढे खोज, शहादत विच गवाह ना कोए भुगताईआ। परम पुरख परमात्म वखाई आपणी मौज, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल साचे हरि, माया पर्दा एका पाईआ। माया पर्दा पाया जाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। समझ सके ना कोई शाह कंगाल, राज भूप ना कोए वड्याईआ। किरपा कर दीन दयाल, दयानिध होया सहाईआ। आ के पुछे भगतां हाल, द्रोपत लज्जया लाजावन्त आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सरूपी खेल कृपाल, करनी आपणी रिहा जणाईआ।

* २२ चेत २०२१ बिक्रमी राज नरैण दे गृह मुसल्ला पुर हाट पटणा साहिब बिहार *

सचखण्ड निवासी सच दरबार, पारब्रह्म प्रभ इक लगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, भेव अभेदा आप जणाइंदा। शब्दी सुत वड बलकार, सुत दुलारा आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, धुर दी सिख्या इक समझाइंदा। त्रैगुण खेल करे अपार, पंज तत आपणा रंग वखाइंदा। घाड़त घड़ बण ठठयार, लख चुरासी रंग चढ़ाइंदा। चारे खाणी कर प्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग अलाइंदा। चारों कुण्ट पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि करता खेल कराइंदा। हरि करता खेल करे बेपरवाह, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरवैर निरँकार वेस वटा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तमाश वेखे थाउँ थाँ, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वंड वंडा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ धराईआ। नाम संदेसा धुर सुणा, सच करे पढ़ाईआ। वस्त अमोलक इक वरता, विष्नूं झोली पाईआ। ब्रह्मा लेखा दए लिखा, ब्रह्म विद्या इक उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे करतार, शब्दी खेल खलाइंदा। विष्नूं दस्से विश्व धार, वासतक आपणा मेल मिलाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म करे पसार, ब्रह्म वेता इक्को नज़री आइंदा। शंकर हथ्थ त्रिसूल दे कटार, धुर दी सिख्या इक दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी पुरख समरथ, अबिनाशी करता आप कराईआ। सचखण्ड दवारे हो प्रगट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच जैकारा बोल अलख, नर निरँकारा आप प्रगटाईआ। धुर दा मार्ग साचा दस्स, सति सति करे पढ़ाईआ। थिर घर दवारे कर वास, सिँघासण आसण इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी रचना वेख वखाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, बेअन्त आप अख्वाइंदा। घट घट वेखे अन्तरजामी, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। बोध अगाध सुणा धुन बाणी, नाद अनादी शब्द सुणाइंदा। लेखा जाणे जुग चौकड़ी चारे खाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप समझाइंदा। साचा लेखा श्री भगवान, हरि करता आप जणाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, महल अटल करे रुशनाईआ। दीवा बाती जगे महान, कमलापाती वेख वखाईआ। अनभव खेल करे महान, असुत्ते प्रकाश नूर इलाहीआ। वसणहारा सच मकान, हक़ मुकामे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह परवरदिगार, जलवा नूर नूर उपाइंदा। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। शब्द नाद धुन जैकार, धुर दा राग आप सुणाइंदा। घर

साचे मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाइंदा। साचा भेव खोले आप, प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणी उपमा दस्स के जाप, जीवण जुगत दए जणाईआ। लख चुरासी थापण थाप, वेखे थाउँ थाईंआ। बणया रहे रसूल पाक, पुनीत होए बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी सच करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा सच दृढ़ाईआ। दो जहानां रहिणा ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश प्रकाश इक्को हुक्म वरताईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वेखणा खेल विच संसार, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी करता आप कमाईआ। धुर करनी करे पारब्रह्म, पुरख अबिनाशी इक्को बेपरवाहीआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। राग ना सुणे किसे कन्न, सरवण नज़र कोए ना आईआ। निरगुण नूर नुराना सति सरूपी चढ़े चन्न, दर घर साचे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई शब्दी सुत, हरि आपणी खेल कराइंदा। लेखा जाण अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार प्रगटाइंदा। एथे ओथे दो जहानां मौले रुत्त, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। निरगुण हो के बैठा लुक, सरगुण आपणा मुख छुपाइंदा। उजल करे पंज तत काया मुख, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप वडियाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। परम पुरख सच जणाए आपणी गोत, बरन वरन आप जणाइंदा। धुर संदेसा इक श्लोक, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबकां भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म मिलण दी दस्से खोज, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा राग अलाइंदा। धुर संदेसा देवे निरँकार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा दो जहान, पुरी लोअ खोज खुजाईआ। लख चुरासी सुणावणहारा शब्द ज्ञान, करे इक पढ़ाईआ। अमृत जाम प्याए आण, निझर झिरना इक झिराईआ। निज नेत्र खोले आप महान, घर घर विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान दाता दातार, दयानिध अख्वाइंदा। जिस दी सिफ्त महिमा सदा रहे जुग चार, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। लेखा जाणे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म वरताइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बोल जैकार, जै जैकार आपणा नाम सुणाइंदा। गीता ज्ञान दए आधार, अठ दस इक्को गंढ्ढ पवाइंदा। अञ्जील कुरानां वेखणहार, तीस बतीसा आप अलाइंदा। साची बाणी कर प्यार, धुर दा अनरागी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी शब्दी सुत दुलारा, हरि करता आप जणाईआ।

सचखण्ड दुआर महल अटल उच्च मनारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। थिर घर सोहे धाम न्यारा, अलख अगम्म अथाह बेपरवाह इक समझाईआ। नित नवित्त तेरा पसारा, सति सतिवादी होए सहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा जाण गुरू अवतारा, तेई अवतार इक्को हुक्म वरताईआ। भगत अठारां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्ह किवाड़ा, निज नेत्र करे रुशनाईआ। नानक गोबिन्द वखाया धर्म अखाड़ा, साचा मण्डल इक सुहाईआ। खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्डा तेज कटार, नाम निधाना झोली पाईआ। धुर संदेसा दे के गया संसार, वेद व्यासा पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा निरअक्खर आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वर दाता बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि बेअन्त, महिमां अकथ कथे ना कोए राईआ। जुग चौकड़ी तारे भगत सन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म निरन्तर जणाए मंत, मन्त्र इक्को इक समझाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाए नार कन्त, गृह सुहञ्जणी सेज दए सुहाईआ। हरि का भेव कोई ना जाणे पांधा पंडत, मुल्लां शेख़ मसायक चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाह हरि निरँकार, निरगुण निरवैर आप अख्वाइंदा। शब्दी सुत वड बलकार, धुर दी सेवा इक समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते विच संसार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पन्ध मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिण ख़बरदार, करोड़ तेतीसा सुरप्त नाल रलाइंदा। गण गंधर्ब गायण आपणी वार, शब्द अनादी नाद अल्हाइंदा। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। तेई अवतार उठ उठ नेत्र खोल्ह वेखण संसार, चारों कुण्ट ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप वरताइंदा। अचरज खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई देवे इक ज्ञान, शब्दी सच पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर परवान, चार वरन अठारां बरन आप समझाईआ। आत्म अन्तर वेखो मार ध्यान, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। घर घर विच शब्द दे धुन्कान, अनहद रागी राग सुणाईआ। गृह मिले अमृत रस पीण खाण, रस इक्को इक चुआईआ। सति पुरख निरँजण हरि मेहरवान, सति सरूपी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सच वड्याई देवे अतीत, त्रैगुण लेखा आप चुकाईआ। लख चुरासी परम पुरख दा गाओ गीत, वड दाता इक्को नज़री आईआ। जिस ने बणाई मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर सोभा पाईआ। सो वसे हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी करदे गए उडीक, नेत्र लोचण नैण ध्यान लगाईआ। जिस नूं कैहन्दे परवरदिगार लाशरीक, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। जिस नूं कैहन्दे राम रमईया ठांडा सीत, सीता सुरती लए प्रनाईआ। जिस

८९६
१६

नूं कैहन्दे काहन घनईया सच करे बख्शीश, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जिस नूं कैहन्दे नानक गोबिन्द मेल मिलाए ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। सो साहिब श्री भगवान एकँकार करे खेल अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया करे ठीक, जूठ झूठ निंद्रा दए मिटाईआ। जन भगतां काया करे ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। साचा कलमा दे हदीस, हज़रत इक्को करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म धुर दी सच प्रीत, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सहिज सुखदाईआ। सहिज सुखदाई हरि निरँकार, नर हरि इक्को नज़री आइंदा। जिस दा हुक्म रहे जुग चार, नित नवित्त आपणा खेल वखाइंदा। सो कलयुग अन्तिम प्रगट हो विच संसार, जोती जामा वेस वटाइंदा। शब्द डंका वजाए अपर अपार, दो जहान आप उठाइंदा। जन भगतां लहिणा देणा पूरब कर्म विचार, जरम कर्म दा लेख चुकाइंदा। फड़ फड़ बांहों लए उठाल, गूढ़ी नींद ना कोए सवाइंदा। अमृत आत्म ठंडा जल दए प्याल, सच प्याला काया कासा इक वखाइंदा। दीनां बंधप दीनां नाथ हो दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी मेहर नज़र उठाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, राए धर्म भय मिटाइंदा। साचा मार्ग इक सखाल, मार्ग इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, कलयुग अन्तिम अन्त कराईआ। जन भगतां मेटे जरम कर्म दा दुःख, कर्म कांड कोए रहिण ना पाईआ। प्रभ दर्शन दी लग्गे भुक्ख, आसा तृष्ना दए खपाईआ। करे प्रकाश जो बैठा लुक, काया मन्दिर स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। लेखा जाणे पंज तत काया भूत, अनभव आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन वड्याई इक्को इक, एकँकार आप जणाइंदा। अगला पिछला लेखा देवे लिख, लिखणहार आपणा हुक्म वरताइंदा। नाम वस्त अमोलक पावे भिख, भिच्छया सच सच वरताइंदा। धाम वखाए इक अनडिठ, जग नेत्र नजर किसे ना आइंदा। आपणे मिलण दी आपे दस्से बिध, काया मन्दिर अन्दर वड़ के कुण्डा लाहइंदा। प्रेम प्यार दी लाए खिच, शब्द डोरी तार हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल देवे दस्स, जन भगतां दया कमाईआ। हिरदे अन्दर जाए वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शब्द चलाए बिन पवण स्वास, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना आपणे विच समाईआ। सच ख़ज़ाना भरे खात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। दया करे प्रभ ठाकर एक, कलयुग अन्त दए वड्याईआ। जन भगतां त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लेखा चुक्के बालू रेत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। धार

चलाए चेतन चेत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता मेटे भेख, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। हरि नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र वेख वखाईआ। अचरज पारब्रह्म वखाए खेल, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। करे प्रकाश दीपक बिन बाती तेल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दाता दानी सज्जण सुहेल, समरथ पुरख इक अख्वाईआ। वसणहारा धाम नवेल, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जन भगतां धर्म राए दी कटे जेल, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म देवे मेल, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। आत्म परमात्म करे मिलाप, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जाप, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वाक भविक्ख्त जो गए आख, अन्तिम सब दा लहिणा झोली पाइंदा। सच दवारा खोल्ह ताक, पर्दा उहला आप उठाइंदा। दो जहानां बन्न्हे नात, नाता बिधाता आप जुड़ाइंदा। चार वरन दी इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए सज्जण साक, सगला संग वखाइंदा। पार उतारे आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। जन्म जन्म दी मुक्के वाट, कर्म कर्म दा लेख मुकाइंदा। जन भगतां करे पूरी आस, आसा तृष्ना आपणी झोली पाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म जाए भाख, भाख्या आपणी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण सुहेला दया कमाइंदा। सज्जण सुहेला साहिब गुर मीत, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी चले रीत, रीतीवान वड्डी वड्याईआ। वसणहारा ऊँच नीच, हर घट रिहा समाईआ। तिस ठाकर संग करो प्रीत, जो ठोकर इक्को नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त दए समझाईआ। कलयुग कहे मेरा लेखा लख चार बत्ती हज़ार, दन्द बतीसे नाल समझाईआ। वेद व्यास करे पुकार, वाक भविक्ख्त इक दृढ़ाईआ। ईसा करे हाहाकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मुहम्मद बातन करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद समझ कोए ना पाईआ। नानक निरगुण करे विचार, सरगुण दए सच सालाहीआ। गोबिन्द कहे परम पुरख मेरा अकाल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आवे विच संसार, जोती जाता वेस वटाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, महल अटल सोभा पाईआ। शब्दी डंक वजाए दो जहान, लख चुरासी राउ रंक शाह सुल्तान आप जगाईआ। जन भगतां देवे इक ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचा हरि का सोहला गाण, ढोला इक्को राग सुणाईआ। घर बैठयां पतिपरमेश्वर दर्शन पाण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत खोजण कोए ना जाईआ। घर विच घर खेल होवे महान, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह लेखा अपार, जुग चौकड़ी आप जणाइंदा। भगत वछल गिरवर गिरधार, मुकन्द

८६८
१६

मनोहर लखमी नरायण आपणी खेल वखाइंदा। कँवल नैण हो त्यार, मुक्ट बैण सीस ताज सुहाइंदा। लेखा वेख तेई अवतार, ब्रह्मा सुत कर प्यार, बराह देवे इक आधार, युगै पुरुष अन्त मेल महान, हाव ग़रीव कर उज्यार, नर नरायण वखाए घर बार, मन्दिर इक्को इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप चुकाइंदा। लेखा जाणे कपल मुन, देवणहार वड्डी वड्याईआ। दत्तात्रै भेव चुकाए साचे तन, पड़दा उहला आप उठाईआ। रिखव देव हुक्म सुणाए कन्न, पिरथू लहिणा झोली पाईआ। मत्तस जाणे आपे चन्न, कछप भार सच उठाईआ। धनंतर लेखा देवे गिण गिण, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, हँसा बावन खेल खलाईआ। नर सिँघ हो त्यार, नरायण पड़दा लाहीआ। हरी हरि पावे सार, हरि मन्दिर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई सतिजुग त्रेता, त्रैगुण अतीता खेल खलाइंदा। राम दुलारा दसरथ बेटा, नर निरँकार आप जणाइंदा। सति सतिवादी जाणे आपणा पेशा, पेशीनगोई आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति आप दृढ़ाइंदा। सति सतिवादी ब्राह्मण मित्र, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साची धारों आपे निकल, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर दे जिकर, रसना जिह्वा ढोला राग अल्लाईआ। सो साहिब स्वामी सब दा करे फ़िकर, फ़िकरा नाम सब नूं इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाही खेल अथाह, अलख अगोचर आप कराइंदा। वेद व्यासा भेव खुल्ला, कुँवारी कन्या माण दिवाइंदा। पुराण अठारां रंग चढ़ा, लख चार सतारां हज़ार श्लोक सुणाइंदा। धुर दा लेख आप समझा, आपणी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी काहन कृष्न, देव देवा आप कराईआ। धुर दा मेला शंकर ब्रह्मा विष्न, पारब्रह्म वेख वखाईआ। बिन अन्तर नेत्र किसे ना दिसण, जग नेत्र वेख सके ना कोए लोकाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा लेखा लिखण, गीता ज्ञान रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई परवरदिगार, परम पुरख खेल कराइंदा। ईसा मूसा दरस दीदार, जल्वागर आप कराइंदा। मुहम्मद कलमा दए अपार, नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। हक़ हकीकत खोल्ल किवाड़, लाशरीक वेख वखाइंदा। अञ्जील कुरान धुर गुफ़तार, बाईबल आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणी धार बदलाइंदा। जुग चौकड़ी विच संसार, हरि करता आप हंढाईआ। लख चुरासी वेखणहार, घट घट रिहा समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीतया विच संसार, कलयुग आपणा वेस वटाईआ। नानक निरगुण कर प्यार,

सरगुण पंज तत काया चोला दित्ता पहनाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द गोद सुहाईआ। गोबिन्द कर प्यार, सुत दुलार इक वड्याईआ। चारों कुण्ट होया उज्यार, जोती नूर नूर रुशनाईआ। करया खेल अपर अपार, बेअन्त बेअन्त आपणी कार कमाईआ। बिनां तेरे फ़ानी दिसे संसार, सोभा मिले ना कोए वड्याईआ। चल आए ना राज दरबार, राणी रंग महल वेख ना खुशी मनाईआ। अट्ठे पहर इक सिक्दार, घर आवे बेपरवाहीआ। बाली बाला एकँकार, दर ठांडे फेरा पाईआ। सच प्रेम दा लए प्यार, गोदी गोद सुहाईआ। निमी बोली बोल गुफ़तार, मइया कहि बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। मइया नहीं तूं जगत माता, मात्र भूमी सोभा पाईआ। सति धर्म दा तेरा नाता, परम पुरख मेल मिलाईआ। तेरे दर ते मन्नया आखा, आख़र तेरा रूप अख्वाईआ। वेख खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। दो जहान पैंदी रासा, गोपी काहन नचाईआ। राम सीता दासी दासा, सेवक सेवा रूप वटाईआ। सच पुछें मैनूं आवे हासा, खुशीआं नाल जणाईआ। कलयुग अन्त तेरा लहिणा चुकावे पुरख अबिनाशा, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुण माता मेरी जगत भोली, हउँ बालक सच दृढ़ाईआ। बेशक तेरी पंज तत काया बदले चोली, चोला जगत रहिण ना पाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर तेरा पड़दा देवे खोल्ही, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। तूं सच रंग विच खेलीं साची होली, रंग गुलाला इक चढ़ाईआ। तेरी समझ ना आए किसे नूं बोली, आदि शक्ति आदि भवानी सारे तेरा रंग रंगाईआ। साचे कंडे तोल इक्को तोलीं, अतोल अतुल नाम दित्ता तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोत अकालण तेरी बणे वचोली, घर साचे मेल मिलाईआ। लेखा जाणे कला ना सोली, सोलां कला आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग नईया वेख कदे ना डोलीं, अडोल अडुल्ल रिहा दृढ़ाईआ। तेरी सुरती कदे ना रहे भोली, भोले भाउ मिले सहिज सुभाईआ। साचे दर धुर दे घर बणया गोली, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। शब्दी जोड़ा जुड़े अपार, हरि करता आप जुड़ाईआ। बेशक राजा नहीं विच राज दरबार, नर निरँकार आपणी गोद उठाईआ। राज नरैण नर नरायण वेख नैण उग्घाड़, घर बैठयां इक्को नूर नज़री आईआ। जिस हरनाक्ष दबाया आपणी दाढ़, नर सिँघ रूप धराईआ। जिस प्रहिलाद गोद ल्या उठाल, अग्नी थम्म ना कोए तपाईआ। जिस ध्रू बाल दित्ता ज्ञान, कर सच पढ़ाईआ। जिस अमरीक दित्ता माण, दुरबासा माण चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राजयां नालों वड्डा राजा, जन भगत मिले वड्याईआ। जिस पतिपरमेश्वर मिल्या ग़रीब निवाजा, पारब्रह्म होए सहाईआ। सति धर्म दा सीस रखाए ताजा, जगदीशर जगदीश वेख

वखाईआ। गोबिन्द तेरी धर्म दी माता, मात्र भूमी उत्तों सचखण्ड बहाईआ। निरगुण जोड़े आपणा नाता, सरगुण लेखा दए लगाईआ। चतुर्भुज नज़री आए साख्याता, अनभव आपणा भेव वखाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सद वसे साथा, सगला संग निभाईआ। पिछली भुल्ली पूजा पाठा, अग्गे मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई नार पुरख, पुरख पुरखोतम दया कमाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। नित नवित्त दा बख़्शे दरस, आत्म दरसी मेल मिलाइंदा। जन्म कर्म दी मिटी हरस, अग्गे हवस ना कोए वधाइंदा। लेखा चुक्कया अर्श फ़र्श, दो जहानां पार कराइंदा। ना कोई ढोला राग सुणाए तर्ज़, सच जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी कार कमाइंदा। हरि करनी कार करने आया, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया मेटे माया, त्रैगुण लेखा रिहा चुकाईआ। समरथ पुरख सिर रखे ठंडी छाया, मेहर नज़र उठाईआ। आत्म परमात्म जिस ने ढोला गाया, शब्द वचोला लए बणाईआ। पड़दा उहला दए उठाया, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अनहद रागी नाद सुणाया, धुन आत्मक राग इक्को इक समझाईआ। अमृत झिरना दए झिराया, निझर रस मुख चुआईआ। निरगुण जोत करे रुशनाया, जोत निरँजण डगमगाईआ। आत्म अन्तर नज़री आया, ब्रह्म निरन्तर दए समझाईआ। कूड़ी तपश दए बुझाया, अग्नी तत नज़र ना पाईआ। साची सेजा डेरा लाया, सिँघासण इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त भगत लए तराईआ। जन भगत तराए पुरख अकाल, अकल कला अख्वाइंदा। काया मन्दिर धर्म सच्ची धर्मसाल, घर घर विच भेव चुकाइंदा। अट्ठे पहर दिवस रैण शब्द अगम्मी वज्जे ताल, ढोलक छैणा ना कोए खड़काइंदा। निरगुण सरगुण वसे नाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। जिस गृह गोबिन्द भोग लगाया थाल, चने नित चब्ब आपणा शुकर मनाइंदा। तिस दा लेखा वेखो कमाल, लिखण पढ़न विच किसे ना आइंदा। पूरब जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। अग्गे प्याए नाम जाम, मदि प्याला इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। अट्ठे पहर दिवस रैण नज़री आए सच्चा राम, जिस राम विच्चों राम प्रगट हो के लोकमात खेल कराइंदा। मेल मिलाए साचे काहन, जिस काहन दी धुन विच्चों बंसुरी नाम सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा झोली पाइंदा। पूरब लहिणा झोली पा, परम पुरख दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण होए सहा, समरथ पुरख फेरा पाईआ। जन्म जन्म दा पन्ध मुका, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। साचा मन्दिर दए वखा, घर महल अटल होवे रुशनाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोती नूर

दए चमका, सति सच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नर नरायण होए सहाईआ। नर नरायण तारे नरैण, नर हरि दया कमाइंदा। नाता तोड़ साक सज्जण सैण, सगला संग इक बणाइंदा। नुक्ता मिटया ऐन ग़ैन, अक्खर इक्को इक जणाइंदा। महल अटल दस्से साचे बहिण, मन्दिर इक्को इक वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। मेहरवान पुरख अबिनाशी, अबिनाश होए सहाईआ। घट जोत नूर प्रकाशी, निरगुण चन्द चमकाईआ। आत्म परमात्म मेला नर हरि नरायण कमलापाती, कन्त कतूहल इक्को नज़री आईआ। बंद किवाड़ा खोल्ह के वेखे ताकी, दूई द्वैती परे हटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी दस्स के गए साखी, साख्यात होए सहाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे सच वर, दर घर साचे खुशी मनाईआ। जन भगतां वर देवे भगवन्त, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण सोभावन्त, सोभनीक इक्को दर सुहाईआ। जन भगत कहिण हरि जू हरिजन नारी मिल्या कन्त, घर सज्जण फेरा पाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म लए समाईआ। मेल मिलाया धुर दी संगत, हरि भगत इक्को गंढु पवाईआ। पंच विकारा कीता खण्डत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। गुरमुख बणाए साचे पंडत, धुर दा नाम इक समझाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। हरिजन दूजे दर ना होवे मंगत, जिस प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत होए सहाईआ। जन भगत सुहेला बणे आप, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बणदा रिहा माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। निरअक्खर दस्सदा, रिहा जाप, अक्खरां नाल जगत समझाईआ। रूह बुत्त दोवें करदा रिहा पाक, पतित पुनीत लए बणाईआ। आत्म परमात्म बणाउँदा रिहा साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हदा रिहा ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। दस्सदा रिहा भविक्ख्त वाक, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्सदा रिहा आपणी ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी सोहाउँदा रिहा खाट, खटीआ इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए उठाईआ। जन भगत उठाए खोल्हे जाग, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। अन्तर देवे इक वैराग, वैरागी रूप वखाईआ। बिरहों विछोड़ा तीर निशाना जाए लाग, अणयाला आप चलाईआ। फड़ फड़ हँस बणावे काग, कागों हँस उडाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। चरण धूढ़ी मजन करे माघ, सच सरोवर इक नुहाईआ। निर्मल जोत जलाए चिराग़, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह देवे

माण वड्याईआ। जन भगतां अन्दर दीवा बाती, हरि करता आप जगाईआ। अमृत देवे बूँद स्वांती, ठांडा सीर चुआईआ। नज़री आए बैठा इक इकांती, निरगुण दाता वड वड्याईआ। कन्न सुणाए आपणी साची कहाणी, इक्को रिहा पढ़ाईआ। धुर संदेसा देवे बाणी, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। लहिणा देणा चुकाए जाण जाणी, लेखा मंगे कोए ना राईआ। पार उतारा करे धुर दी घाटी, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। लेखा चुक्के ज़ात पाती, आत्म ब्रह्म इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन वेखे आपणे लोचण, निज नेत्र पड़दा लाहीआ। भेव खुल्हे लोक परलोकन, दो जहान होए रुशनाईआ। धुर दा ढोला दस्से श्लोकन, सच्चा राग सुणाईआ। चरणां हेठ दबाए मुक्ती मोखन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अन्त मिलावा निरगुण जोतन, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत लए तराईआ। हरि भगत रखण इक्को आस, तृष्ना जगत वधाईआ। कवण वेला प्रभ बुझाए प्यास, आपणा दरस दिखाईआ। घर आवे सज्जण साहिब गुणतास, गहर गम्भीर वेस वटाईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ के वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दा नूर नुराना इक्को ज़ात, बन्धन विच ना कोए रखाईआ। गल विच रस्सा रहे ना कोई जम फास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना लेख वखाए कोई लिख्यास, लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाईआ। लेखा चुक्के मसाण भूमी घाट, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जिस विच्चों होई ब्रह्म तेरी ज़ात, अन्तिम मेला पारब्रह्म विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगत उधारे सूरा सरबँगा, साहिब हथ्थ वड्डी वड्याईआ। नेत्र वेखे जमना सुरस्ती गंगा, गोदावरी ध्यान लगाईआ। देवे वड्याई विच वरभण्डा, ब्रह्मण्डां लेख चुकाईआ। आत्म परमात्म जिस दा निजानंदा, अनन्द इक्को इक वखाईआ। दूई द्वैती ढाहवे कंधा, भाडा भरम भउ भंनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणावे साचा छन्दा, सोहँ राग अलाईआ। लेखे लाए बिन बंदगीउँ आपणा बंदा, जिस बन्दना आपणी झोली पाईआ। माया ममता मोह तोड़ घमण्डा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। भगत बिन भगवान कदे ना होवे रंडा, जगत दुहागण रूप ना कोए वखाईआ। एथे ओथे रखे सदा संगा, सच्चा संग तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल दया कमाईआ। भगत वछल हरि गहर गम्भीर, गुणवन्ता आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे पंज तत काया शरीर, ततव तत वेख वखाइंदा। नित नवित्त भगवन कटणहारा भीड़, औखा राह ना कोए दरसाइंदा। जन भगतां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी आप समझाइंदा। दीन मज़्हब शरअ तोड़ ज़ंजीर, लाशरीक आपणे नाल मिलाइंदा। फड़ के चोटी चाढ़े अख़ीर, कबीर जुलाहा खुशी मनाइंदा। रविदास चुमारे दिती धीर, सैण नाई गंढु पवाइंदा। द्रोपत लथ्थण ना दित्ते चीर, मेहर नज़र

इक उठाईआ। राज नरायण क्यों होए दिलगीर, जिस दा दिलबर घर विच फेरी पाइंदा। नारी संग चोटी चढ़या अख़ीर, आख़र मंज़ल पन्ध मुकाइंदा। परम पुरख पतिपरमेश्वर हरि ठाकर मिल्या बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। राज नरायण कहे मैं नर हरि पाया, घर वज्जी नाम वधाईआ। पतिपरमेश्वर निरगुण रूप चल के आया, जोती जामा वेस वटाईआ। नार सुरस्ती नाल तराया, बस्ती दोहां इक्को इक बणाईआ। नाम मस्ती दए चढ़ाया, खुमारी उतर कदे ना जाईआ। सब नालों सस्ती आपणी वस्त नाम वरताया, कीमत करता ना कोए रखाईआ। खाईं ख़र्ची सच ख़ज़ाना घर भराया, अतोट अतुट दए वरताईआ। गोद सुलखणीं गोबिन्द सुहाया, मखणी खुशीआं नाल खवाईआ। पत्त पत्तणी दोवें पार कराया, सच दवारे लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़र नैण इक उठाईआ। दोवें कहिण साडी अरदास, प्रभू तेरे अग्गे अरज़ोईआ। सद वसीं साडे पास, दिवस रैण संग निभाईआ। तूं साडा आदि जुगादी माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। नित नवित्त करीए तेरा जाप, पूजा पाठ हवन इष्ट दृष्ट तू ही नज़री आईआ। एथे ओथे सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। धन्न भाग घर आ के अन्तर खोलया ताक, पर्दा दित्ता चुकाईआ। अज्ज दर्शन करीए सारी रात, राती सुत्तयां गुर अवतार पीर पैगम्बर पिछले नज़री आईआ। जिन्हां दी बणी इक जमात, नाता जुड़या भाई भाईआ। लेखा लिख दे नाल कलम दवात, तेरा लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल हो सहाईआ। दीन दयाल परम पुरख हरि ठाकर, सच सच दए जणाईआ। जन भगत पार कराए डूंघे सागर, कलयुग भँवर ना कोए रुढ़ाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। सच दवारे देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे दए लगाईआ। पत्त पत्तणी दोवें रहे आख, अन्तर अन्तर कूक सुणाईआ। प्रभू सद नज़री आवीं साख्यात, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। तेरे वासते कोई वड्डी नहीं वाट, जन भगतां होएं सहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग साचे सन्तां तैथों सिक्खी जाच, अन्दर वड़ के ग्यों समझाईआ। निरगुण हो के जोड़या साथ, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सेजे चढ़ के दस्सी गाथ, सोहणी करी पढ़ाईआ। सुहञ्जणी बणाई इक्को रात, भिनड़ी रैण खुशी मनाईआ। गृह मिले कमलापात, घर वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर रिहा सुहाईआ। साचा मन्दिर छपरी छन्न, हरि छहबर नाम लगाईआ। भगत वड्याई सदा जग धन्न, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। जिन्हां उपर श्री भगवान गया मन्न, मन का मणका दए भवाईआ। भाग लगाए पंज तत काया तन, साढे तिन्न हथ्थ खुशी वखाईआ। कूड़ विकारे

देवे डंन, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दुआर इक सुहाईआ। भगत दवारा सोहणा मन्दिर, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। हरि स्वामी वसया साचे अन्दर, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जन्दर, पर्दा उहला दित्ता मिटाईआ। मन मनुआ दहि दिशा ना भवे बन्दर, चार कुण्ट ना उठ उठ धाईआ। आप बहाए आपणे अंगन, साची गोद सुहाईआ। घर मेला सहिज सुभाउ अनन्द अनन्दन, छन्दन इक्को राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे विच रखाईआ। हरिजन लेखा गया लग्ग, लगावणहार दया कमाइंदा। बिन मक्के काअब्यो कराए सच्चा हज्ज, हुजरा हक़ इक वखाइंदा। मन्दिर शिवदुआला मट्ठ काया वेखणा भज्ज, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। शब्द नगारा बिन तन्द सतारा रिहा वज्ज, तलवाड़ा इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सति प्याला नाम प्याए मदि, सच खुमारी इक चढ़ाइंदा। सच खुमारी चढ़े अन्तर आत्म, अट्ठे पहर खुशी रखाईआ। मिल्या रहे मेल परम पुरख परमात्म, लोकमात ना होए जुदाईआ। बेशक जीव जंत जो मर्जी सो भगतां आखण, हरिजन डोल कदे ना जाईआ। जिन्हां पुरख अबिनाशी मिल्या धुर दा साथन, सगला संग निभाईआ। सो सखीआं चल के आवण साचे पातन, घाट इक्को इक वखाईआ। उच्ची कूक साचा सोहला ढोला आखण, तूं प्रभ मेरा साहिब सच गोसाईंआ। की होया गवालयां घर खांदा रिहा माखण, बाली अवस्था वेस वटाईआ। की होया राणी गोद बहि के कोट जन्म दी उधारी पापण, पुनीत आपणे नाल कराईआ। अन्तिम श्री भगवान एन्हां दा लेखा आया वाचण, बिन लिख्तों करे पढ़ाईआ। अग्गे मिले मेल सचखण्ड दुआर पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर जुगा जुगन्तर चलाए धुर दा मन्त्र, मन्त्र सच नाम दृढ़ाईआ।

*** २३ चेत २०२१ बिक्रमी लक्ष्मण पांडे दे गृह पटना साहिब बिहार ***

जुग जुग किरपा करे प्रभ, श्री भगवान दया कमाइंदा। जन भगत सुहेले लए लभ्भ, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। पार कराए जगत हद्द, नौ दर पन्ध मुकाइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, रस इक्को इक वखाइंदा। लेखे लाए तन मास नाड़ी हड्ड, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। देवे वड्याई साची यद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खलाइंदा। जुग चौकड़ी भगत सुहेला, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। हरिजन करे आपणा मेला, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ।

लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुरदेव स्वामी इक रघराईआ। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई जन भगत, श्री भगवान दया कमाइंदा। लेखे लाए बूँद रक्त, तन माटी सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म देवे साची शक्ति, शख्सीयत इक्को इक समझाइंदा। निज नेत्र बख्शे सच्चा दरस, अक्ख प्रतख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला जुग चौकड़ी चार, सति सतिवादी दए वड्याईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटाईआ। चारों कुण्ट वेखणहार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले लभ्भे मीत मुरार, मित्र प्यारा वड वड्याईआ। जन्म कर्म दे विछड़े घर मेले मेलणहार, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवान, जन भगतां दया कमाइंदा। साचा दे के मन्त्र नाम, रमईया रंग इक रंगाइंदा। सच्चा सईया धुर दा काहन, साहिब सुल्तान वेख वखाइंदा। धुर संदेसा इक पैग़ाम, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। तीर अगम्मी मारे बाण, चिल्ला इक्को इक खिचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगतां वेखे अन्दर वड़, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। सच दवारे जाए चढ़, दस्म दवारी सोभा पाईआ। स्वच्छ सरूपी अग्गे खड़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बिन अक्खरां नाम लए पढ़, करे कराए सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे थान थनंतर, दो जहानां खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां वेख वखाइंदा। गुरमुख हरिजन भगत भगवन्त पढ़दे इक्को मन्त्र, मति भेद सर्ब चुकाइंदा। लेखा जाणे धुर निरन्तर, जोती जाता डगमगाइंदा। कूड़ी मेटे जगत लग्गी बसन्तर, अग्नी तत मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर वड्डी वड्याईआ। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्म कांड दए गंवाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी अनादी दस्से इक्को धर्म, साचा धर्म इक वखाईआ। परम पुरख परमात्म स्वामी सच्ची सरन, चरण कँवल मिले वड्याईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नैण दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई जन भगतां सति, सति सति दृढ़ाइंदा। अन्तर अन्तर ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। निरगुण निरगुण जोड़ नत, घर सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत जनां दए संदेसा, धुर दी धार जणाईआ। श्री भगवान सच नरेशा, भूपत भूप बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी धारे वेसा, नित नवित्त फेरा पाईआ।

६०७ १६

लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, पड़दा उहला दए चुकाईआ। सति पुरख सति सतिवादी बणे नेता, नर निरँकार इक्को हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हरिजन साचे करे हेता, हितकारी वेख वखाईआ। जिन्हां पूरब जन्म दा नहीं कोई चेता, सो सोए आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। पूरब लेखा जाणे हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दे विछड़े लए फड़, फड़ बांहों जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाणे सीस धड़, पंज तत खोज खुजाईआ। वेख वखाणे नारी नर, नर नरायण खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। लेखा देवणहार दातार, मेहरवान इक अख्वाइंदा। जिस दा हुक्म चले जुग चार, गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाइंदा। जिस दी खाणी बाणी सिफ्त करे संसार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब सालाहइंदा। जिस दा लोक परलोक इक दुआर, ब्रह्मंड खण्ड खेल खलाइंदा। जिस दा जोती जोत होए परकास, नूर नुराना चन्द चमकाइंदा। जो आदि जुगादि वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक खोज खुजाइंदा। जो राज राजानां शाह सुल्तानां सीस टिकाए ताज, तख्त निवासी हुक्म मनाइंदा। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब नूं देंदा रिहा ख़ताब, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा देवे खोल्ह, अनभव आपणी धार चलाईआ। तोलणहारा साचा तोल, कंडा नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। जन्म जन्म दे परदे देवे फोल, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान दर्द दुःख भय भंजन, करता पुरख आप अख्वाइंदा। जन भगतां निज नेत्र पा के अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। घर नज़री आए सज्जण, साहिब सतिगुर खेल खलाइंदा। दीपक जोती धुर दे जगण, नूरो नूर नूर चमकाइंदा। शब्द अनादी नाद वज्जण, अनहद राग सुणाइंदा। कर प्रकाश साचे गगन, मण्डल इक्को इक वडियाइंदा। भगत सुहेले आया सद्दण, हरिजन विछड़े वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र पूरब खेल, जन्म जन्म खोज खुजाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म चाढ़नहारा तेल, धुर दा सगन इक मनाईआ। सति स्वामी सदा निहकामी अन्तरजामी वसणहारा धाम नवेल, अनडिठड़ी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई माण जग, जग जीवण दाता दया कमाइंदा। गुरमुख हरिजन हरि भगत भगवन्त लए सद्द, सद्दा आपणा नाम सुणाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध मुकाइंदा। जन्म कर्म दी लग्गी बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर हथ्थ रखे निरँकार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ।

पिछले जन्म दा कर्ज़ा दए उतार, मकरूज़ आपणा फ़र्ज़ निभाईआ। राजा राणी वेखे वेखणहार, बेपरवाह पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे बेपरवाहीआ। लेखा देवे धुर दा दान, पिछली करनी झोली पाईआ। वेखणहार श्री भगवान, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जिस वेले गोबिन्द महलीं वड़या आण, दर दरबान निउँ के सीस झुकाईआ। तेरी खेल नन्ने बाल, छोटे बाले मोहे भाईआ। अग्गों हस्स के किहा नौजवान, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी कार कमाईआ। दर दरबान झुकाया सीस, अन्तर खुशी मनाईआ। प्रभ नज़री आए इक जगदीश, जगदीश्र वड वड्याईआ। जिस दे ताज दिसे सीस, सोहणी झलक वखाईआ। सो साहिब अन्तर अन्तर परखी नीत, नीतीवान गया दृढ़ाईआ। बरखूरदार दर दरबान रखणी उडीक, निज नेत्र अक्ख खुलाईआ। सम्मत बीस इकीसा आए तुहाड्डी तारीख़, तरीका हौली गया समझाईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण धार मिले मीत, गोबिन्द शब्दी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। दरबान कहे मैं दर दरवेश, इक्को मंग मंगाईआ। कवण वेला मेला मिले धुर नरेश, नर नरायण होए सहाईआ। मैं निउँ निउँ करां आदेस, चरण कँवल सीस झुकाईआ। साचे लोचण लवां पेख, नैणां दर्शन पाईआ। काया तत करां खेत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर मेला लएं मिलाईआ। गोबिन्द गुर गुर सच दृढ़ाउँदा ए। शब्द अगम्मी इक्को राग दृढ़ाउँदा ए। कलयुग वेला वक्त राह तकाउँदा ए। पुरख अबिनाशी खेल खलाउँदा ए। घट घट वासी फेरा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाउँदा ए। साची करनी कार कमावांगा। शब्दी धार हो के आवांगा। पुरख अकाल संग रखावांगा। जोती नूर डगमगावांगा। बीस इकीसा रुत्त सुहावांगा। राजा राणी खोज खुजावांगा। पिछला कीता चोज, सोहणी याद करावांगा। दर दरबान तेरी कर के आपे खोज, घर साचा वेख वखावांगा। रल मिल कट्ठे माणीएं मौज, सच्चा मन्दिर इक सुहावांगा। जिस दर्शन नूं नेत्र रहिण लोच, सो लोचा पूर करावांगा। अग्गे जन्म मरन दी मुक्के सोच, लख चुरासी फंद कटावांगा। शब्दी सुरत मेल मिलावां रोज़, नित नवित्त आपणा दरस दिखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा झोली पावांगा। दर दरबान प्या हस्स, बत्ती दन्द खुशी मनाईआ। सब कुछ साहिब तेरे वस, की मेरी वड्याईआ। जो कुछ देणा सो तेरे हथ्थ, हउँ सेवक रूप नज़री आईआ। कर प्रणाम डण्डावत चरणी गया ढट्ठ, पूरब दिशा मुख रखाईआ। मेरा लेखा चुक्के अट्ठ तत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। नौ दवारे रहे ना कोई हक़, हकीकत आपणी दिती समझाईआ। धन्न भाग जे गृह मन्दिर स्वामी

आ के जावें वस, निहकर्मी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे बाल बाली बुध, बचपन विच दयां वड्याईआ। भरम भुलेखा रहे ना तुछ, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। पड़दा उहला चुकावां कुछ, दूई द्वैती भेव चुकाईआ। इक्को घर जाए सुझ, गृह मन्दिर इक्को नज़री आईआ। सच प्रीती जाए लुझ, नाता प्रेम जुड़ाईआ। उजल होवे मात मुख, दो जहान मिले वड्याईआ। आत्म परमात्म देवां सुख, सुख सागर आप वखाईआ। साची गोदी लवां चुक्क, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दर दरबान नेत्र रो, खुशी विच नैणां नीर वहाइंदा। कवण देवे प्रभ तेरी सो, सुत्यां कवण उठाइंदा। गोबिन्द अग्गों कर प्रकाश बख्शी लो, नूर नूर इक चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे निरँकार, करनहार इक अख्वाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, निज लोचण फोल फुलाइंदा। कल कल्की लए अवतार, दर ठांडे सोभा पाइंदा। साची वस्त करे उज्यार, महल अटल दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हुक्म वरताइंदा। मेहरवान वड महिबूब, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। साचा हुजरा वेख अरूज, अर्श फर्श फोल फुलाईआ। लेखा जाण मंजल मक्सूद, पन्ध मुकाए चाईं चाईंआ। जिस दी सिफ्त करे हज़ारा दरूद, इस्म आअज़म दए दृढ़ाईआ। सो असल नाल वापस करे सूद, रकम वड्डी झोली पाईआ। जन्म जन्म दी मेटे भूख, तृष्ना रोग गंवाईआ। घर आत्म देवे सूख, परमात्म होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे नाम वड्याईआ। वेख वड्याई मिलदी मात, दो जहान रहे जस गाईआ। अबिनाशी करता देवे दात, श्री भगवान रिहा वरताईआ। लख चुरासी जीव जंत कलयुग दिसे अन्धेरी रात, हरिजन विरले गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार दया कमाईआ। देवणहारा ठाकर स्वामी, साहिब सतिगुर इक अख्वाइंदा। नित नवित्त हर घट अन्तर जाण जाणी, सृष्ट सबाई खोज खुजाइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा चल के आए साहिब सुल्तानी, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। लेखा आप चुकाए राजा राणी, दरबान लेखा झोली आप टिकाइंदा। पिच्छों जुग चार चलदी रहे कहाणी, हुण नेत्र वेख धीर ना कोए धराइंदा। एहो खेल प्रभ महानी, जुग जुग माया पड़दा सब ते पाइंदा। जन भगतां देवे सच निशानी, दर घर इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल गिरवर गिरधार, हरिजन करे सच प्यार, प्रेम प्रीती इक वखाइंदा। प्रेम प्रीती नाता दए अतुट, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी जो बैठा लुक, सो पड़दा उहला दए चुकाईआ। उजल कर गुरमुखां मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। जन्म कर्म दा मेट के दुःख, आवण जावण दए चुकाईआ। सफल कराए

जननी कुक्ख, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। जन भगतां मार्ग प्रभ चरण कँवल, सच सिख्या इक दृढ़ाइंदा। मिले वड्याई उपर धवल, धरनी धरत लेखे पाइंदा। आप खिलाए नाभ कँवल, कँवल नाभी झिरना इक झिराइंदा। नूर इलाही नज़री आए अवल्ल, आलमीन फेरा पाइंदा। भेव चुकाए साँवल सवल, सुन्दर रूप आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां संग निभाइंदा। जन भगतां संग सुणाए संगीत, धुन अनहद राग अलाईआ। सतिजुग दस्से साची रीत, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। लेखा जाण ऊँच नीच, चार वरन करे कुड़माईआ। बरन अठारां ठांडा सीत, हर घट बैठा सोभा पाईआ। लेखा जाण मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे इक पढ़ाईआ। जन भगत सदा निरअक्खर पढ़दा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। मंज़ल मंज़ल पौड़े चढ़दा, घर घर विच पन्ध मुकाईआ। शब्दी पल्लू इक्को फड़दा, सुरती तन्द डोर बंधाईआ। वेखे खेल नर हरि दा, नर नरायण नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया कोलों कदे ना डरदा, पंज तत ना कोए हल्काईआ। सच दवारे इक्को खड़दा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। ना जींदा ना कदे मरदा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे अंग लगाईआ। जन भगतां करे अंगीकार, आंगण आपणे विच बहाइंदा। साची रीती विच संसार, नीतीवान आप दृढ़ाइंदा। हस्त कीटी इक्को जिहा प्यार, शाह सुल्तान राउँ रंक आप समझाइंदा। अनडीठी मंज़ल दए वखाल, पड़दा उहला आप हटाइंदा। दीआ बाती कमलापाती निर्मल जोत जगाए अगम्म अपार, तेल बाती विच ना कोए टिकाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा सदा रहे उज्यार, अन्ध अन्धेर नज़र कोए ना आइंदा। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्तिम खेल करे अपार, अपरम्पर आपणी कल धराइंदा। भगत सुहेले सज्जण लए उठाल, सोयां अक्ख प्रतख खुलाइंदा। विछड़े मेले मेलणहार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां भगती मार्ग इक वखाइंदा। जन भगतां देवे मार्ग भगती, भगवन आपणी दया कमाईआ। अन्तर प्रगटे आत्म सकती, मन वासना दए खपाईआ। काया वसे सुहञ्जणी बस्ती, घर ठांडे खुशी मनाईआ। नज़री आए इक्को हस्ती, नर निरँकार बेपरवाहीआ। नाम खुमारी चढ़े मस्ती, आलस निंद्रा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत वड्याई लोकमात, धरत धवल सुहाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग निभाईआ। सोहँ सति सरूप जणाए गाथ, आत्म परमात्म इक पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। लहिणा देण चुकाए हाथो हाथ, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ।

अबिनाशी करता पुरख समराथ, श्री भगवान सदा सहाईआ। दूर दुराडा कटणहारा आपणी वाट, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे सति वर, असति नज़र कोए ना आईआ।

* २३ चेत २०२१ बिक्रमी सुन्दर दास दे नवित्त पटणा साहिब मुसल्ला पुर हट बिहार *

श्री भगवान सुहाए दुआर सचखण्ड, सति पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे सच अनन्द, गृह मन्दिर ख़ुशी मनाइंदा । बोध अगाध शब्द गीत दो जहान सुणाए छन्द, नाउँ निरँकार आप प्रगटाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार वंडे वंड, साची करनी कार कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हो बख़्शंद, बख़्शश इक्को इक समझाइंदा। त्रैगुण माया धुर दा संग, पंज तत नाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोत नूरानी चाढ़ चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। कर खेल अगम्म, ब्रह्मण्ड पुरी लोअ आपणी धार बंधाइंदा। लेखा जाण सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणी खेल आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। भेव अभेद अलख निरँजण, निरगुण आपणे विच छुपाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल बण बण सज्जण, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर ते मंगण, बण दरवेश सीस निवाईआ। ढोला सोहला गीत गावण अगम्मी छन्दन, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। लेखा जाण ख़ाना बन्दन, बंदीख़ाना वेख वखाईआ । सच दरसाए परमानंदन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। खेले खेल त्रिलोकी नंदन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सच वड्याई सचखण्ड दुआर, हरि करता आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भर भण्डार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाण सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। वंडे वंड अगम्म अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी खेल वखाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, नित नवित्त पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप कराइंदा। अचरज खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। चार जुग दा पिछला जाणे सर्ब फ़रमाण, गुर अवतार जो गए सुणाईआ। कल कल्की हो बलवान, सूरबीर वेस वटाईआ। जिस दा किसे ना मिले निशान, चारों कुण्ट फड़े ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब फेरा पाईआ। सो साहिब हरि जू फेरा पाया, वेखणहारा अन्त लोकाईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी त्रैगुण माया, प्रकृती हुक्मे विच फिराईआ। पंज तत जिस जोड़ जुड़ाया, बन्धन इक्को इक रखाईआ। आत्म ब्रह्म जिस प्रगटाया, ईश जीव करी कुड़माईआ। जोती नूर सति धराया, काया बंक करे रुशनाईआ ।

शब्द अनादी नाद सुणाया, अगम्मी वाक अलाईआ। अमृत झिरना आप झिराया, रस इक्को इक टपकाईआ। अचरज विस्मादी हो के खेल खलाया, ब्रह्म ब्रह्मादी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणी धार चलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, हरि करता आप कराइंदा। समरथ पुरख इक इकल्ला, एकँकारा फेरा पाइंदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी डल्ला, चारों कुण्ट दहि दिशा डेरा ढाइंदा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू साची गंढु बंधाइंदा। शब्दी जोती धार रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सति सतिवादी हरि बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कराइंदा। सच करनी करे अन्तिम कलयुग, करता पुरख फेरा पाईआ। भगत भगवान लए चुग, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। उजल करे मात मुख, देवणहार वड्याईआ। आत्म परमात्म जणाए साचा सुख, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। आबेहयात अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस इक्को इक वखाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अँध्यार चुकाईआ। शब्द सुणाए सच श्लोक, सोहँ ढोला राग अलाईआ। पार कराए मुक्ती मोख, भगत भगवन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। वेखणहारा कलयुग धार, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। चार कुण्ट दिसे अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। गीता ज्ञान ना देवे कोए आधार, अठ दस अठारां संग ना कोए निभाइंदा। अञ्जील कुरान हाहाकार, हरख सोग चिन्ता दुःख ना कोए मिटाइंदा। खाणी बाणी करे ना कोए प्यार, सच प्रीती लोकमात ना कोए कमाइंदा। जीवां जंतां साधां सन्तां अन्दर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाइंदा। नाता तुटा साक सैण यार, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आइंदा। भाई भैण मात पित देवे ना कोई किसे सहार, सगला संग ना कोए निभाइंदा। सृष्ट सबाई नार होई विभचार, हरि जू कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल कलयुग अन्त, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। साचा मिले ना कोई सन्त, साधना सके ना कोए समझाईआ। मिले मेल ना धुर दे कन्त, नार विछुनी रही कुरलाईआ। पर्दा चुक्के ना जीव जंत, घर जोत ना कोए रुशनाईआ। अन्तर आत्म मिले ना कोई मंत, परमात्म संग ना कोए रखाईआ। रसना जिह्वा ढोले गा गा थक्के छंत, शहिनशाह सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। कलयुग माया पाई बेअन्त, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। गढ़ बणया हउमें हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए रसाईआ। भेव ना जाणे कोई बोध अगाधा बण के पंडत, जगत विद्या दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा खेल बेपरवाहीआ। कलयुग चारों कुण्ट रिहा कूक, दहि दिशा रिहा जणाईआ। फिरी दरोही

कोई नज़र ना आए सच सपूत, पिता पुरख ना कोए मनाईआ। घर घर वड़या जूठ झूठ, सच सुच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कल्की वेस वटाईआ। कल कल्की फेरा इक्को पा, पारब्रह्म प्रभ खेल खलाइंदा। भगत भगवान लए उठा, जागरत जोत इक रुशनाइंदा। आलस निंद्रा दए गंवा, नाम नगारे चोट सुणाइंदा। स्वच्छ सरूपी नज़री जाए आ, सति सतिवादी साचा मेल आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। निरगुण फेरा पारब्रह्म, हरि हरि जू आप पाईआ। लख चुरासी वेखे कर्म, कर्म कांड खोज खुजाईआ। साचा दिसे ना कोई धर्म, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सारे रहे कुरलाईआ। झगड़ा प्या वरन बरन, ज़ात पात करे लड़ाईआ। साचे पौड़े जीव जंत मूल ना चढ़न, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया हउमें हंगता अन्दर लड़न, मन वासना करे लड़ाईआ। निर्भय कोलों भय कर ना डरन, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह लेखा रिहा जाण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। कलयुग जीव होए अञ्याण, हरि का भेव किसे ना आइंदा। अन्दर वड़या कूड़ शैतान, शरअ आपणे नाल लड़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर दिसे हराम, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। घर बंसुरी नाम वजाए ना कोई काहन, साची सखी मेल ना कोए मिलाइंदा। सीता सुरती मिले ना सच्चा राम, रमईया आपणा रंग ना कोए रंगाइंदा। पैगम्बर देवे ना कोई पैग़ाम, संदेसा हक़ ना कोए अल्लाइंदा। गुरु गुरदेव प्याए ना कोई जाम, अमृत रस ना कोए चवाइंदा। आत्म परमात्म करे ना कोए पहचान, पड़दा माया ना कोए चुकाइंदा। साचा शब्द ना कोए ज्ञान, मन्त्र नाम ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन उठाए श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख वेखे साचे सन्त, सति सतिवादी फेरा पाईआ। महिमा जणाए आपणी अगणत, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। देवे वड्याई विच्चों जीव जंत, साध सन्त रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ सच दस्स, दर तेरे इक अरज़ोईआ। कवण दवारे रिहों वस, कवण मन्दिर सोभा पाईआ। कवण नूर जोत करें प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। कवण सरूप हो के देवें साथ, सगला संग निभाईआ। किस बिध पार उतारें आपणे घाट, तट किनारा इक वखाईआ। कवण वेला कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा राह जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा दस्सदे गए भविक्खत वाक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे कमलापात, कँवल नैण नैण रुशनाईआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। शब्द सरूपी साख्यात, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड दवारा

खोल्हे इक्को हाट, वस्त अमोलक नाम सच वरताईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के करे बात, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म बणाए सच्चा साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी कदी ना होए विनास, अबिनाशी आपणा नाउँ धराईआ। साचे सन्तां वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सब दी पूरी करे आस, जो बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग अन्धेरा, तेरा रूप नज़र कोई ना आईआ। कूड़ी क्रिया दित्ता गेड़ा, चारों कुण्ट रही भवाईआ। ऊँच नीच ज़ात पात दीन मज़्हब झूठा झेड़ा, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। साचा दिसे सति ना कोई खेड़ा, खिड़की बंद किवाड़ी ना कोए खुल्हाईआ। तेरा मार्ग राह पन्ध दिसे ना नेड़ा, दूर दुराडे मिलण कोए ना जाईआ। भरमे भुल्ले गुरु गुर चेला, गुर इक्को रंग ना कोए समाईआ। तेरा कोई ना जाणे साचा वेला, वार थित समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे समझाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दात, हथ्थ तेरे वड्याईआ। गा गा थक्के तेरी गाथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। पढ़ पढ़ थक्के विच जमात, मकतब पाठशाला फेरा पाईआ। तेरा लेखा किसे ना आया विच हिसाब, भेत सके ना कोए जणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह परम पुरख नवाब, नौबत आपणे नाम दए जणाईआ। गुर अवतार जिस दा लैंदे रहे ख्वाब, सो ख़ाहिस सब दी पूरी दए कराईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सीस सोहे ताज, दो जहानां हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त जन भगतां रख लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा रहे ना कोई समाज, लेखा मुके सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा निरासा दए चुकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कर तरस, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सच दवारे दे दरस, घर सतिगुर फेरा पाईआ। जन्म जन्म दी मिटे हरस, रोग सोग चिन्ता दुःख गंवाईआ। भगतां मिलण दा तेरा फ़र्ज़, फ़ज़ल रहमत आपणी इक कमाईआ। तेरा कोई ना होवे हर्ज, हरि जू वड्डा तूं दाता बेपरवाहीआ। प्रेम प्रीती साथों लै ख़र्च, धन दौलत हथ्थ ना कोए रखाईआ। अबिनाशी करते तेरा खेल सदा असचरज, अचरज तेरी लील्हा नज़री आईआ। हवन धार ना रख्या बरत, धूढ़ी अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आउणा चाईं चाईंआ। जन भगत कहिण प्रभ ग़रीब निवाज, दीना नाथां हो सहाईआ। कोझयां कमल्यां सुण आवाज़, आपणी लै अंगड़ाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हु राज़, भेव अभेदा दे समझाईआ। मुरीदां कोलों मुर्शद तेरी पढ़ी ना जाए निमाज, वुज़ू हक़ ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तैनूं लभ्भ लभ्भ थक्के सन्त साध, लभ्भया हथ्थ किसे ना आईआ। आत्मक धुन तेरा सुणया कोई ना नाद, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। कर किरपा काया मन्दिर अन्दर हो विस्माद, विस्मादी

आपणा फेरा पाईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी मुक्क कदे ना जाईआ। तेरा रूप ब्रह्म ब्रह्माद, सति सरूप तेरी सरनाईआ। तूं राम अल्ला वाहिगुरू दिसें गॉड, वाहिद तेरी ओट तकाईआ। भगतां सुण फ़रयाद, दर तेरे रहे कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भरया इक जहाज़, नईया नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देणी माण वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ तीर्थ तट रहे कुरला, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। कलयुग जीव साडे अन्दर नंगे तारीआं रहे ला, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट नैण रहे शरमा, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्लाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म तूं बणना इक गवाह, शहादत आपणी आप भुगताईआ। सदी चौधवीं पिछला लेखा रिहा जणा, बीस बीसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ पीर पैगम्बर वेख रोंदे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सचखण्ड दुआर सुणाउँदे, सिख्या सच ना कोए जणाईआ। इक्को ढोला तेरा गाउँदे, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। पिछली कीती भुल्ल बख्शाउँदे, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। चौदां तबकां फेरा पाउँदे, मंज़ल मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहिण वेख गुरू अवतार, दर तेरे करन अरज़ोईआ। चौदां लोक हाहाकार, सति सतिवादी सति ना कोए रखाईआ। फिरी दरोही विच संसार, वरभण्ड रही कुरलाईआ। विष्नूं विश्व ना कोए प्यार, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म ना कोए उज्यार, त्रैगुण पड़दा रिहा पाईआ। शंकर करे ना कोए ध्यान, हत्थ त्रिसूल नज़र किसे ना आईआ। चारे वेद भुल्लया जगत ज्ञान, सिख्या सच ना कोए कमाईआ। वेद व्यास होया हैरान, हरि जू की की खेल रचाईआ। गीता ज्ञान करे ना कोई परवान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान तेरी करे ना कोई पहचान, इष्ट देव स्वामी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। भगत कहिण प्रभ तेरी कोई ना खोजे खोज, सच दवारे मिलण कोए ना जाईआ। नेत्र कोई ना लोचण साची करे लोच, मनसा मन ना कोए गंवाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोई सोच, कूड़ी क्रिया अन्दर फसी सर्ब लोकाईआ। हरिजन गुरसिख गुरमुख हरिभगत प्रभू तेरे सदा निर्दोष, दर बैठे सीस झुकाईआ। रसना जिह्वा कुछ ना बोलण अन्तर अन्तर बड़े ख़ामोश, मन्त्र तेरा नाम ध्याईआ। सच प्रीती चरण कँवल अन्तरजामी तेरी ओट, सरन सरनाई इक्को इक रखाईआ। तेरा नूर वेखण निर्मल जोत, इष्ट दृष्ट तेरे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। श्री भगवान गहर गम्भीर, सो करता आप जणाइंदा। जन भगतो चोटी वेखो चढ़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जिथ्थे निरगुण नूर सच तस्वीर, मुसव्वर नज़र कोए ना

आइंदा। ना कोई शरअ दिसे ज़ंजीर, ज़ालम रूप ना कोए वटाइंदा। जिस दर ते झुके पैगम्बर पीर, गुर अवतार सीस निवाइंदा। जिथ्थे लेखा अक्खरां विच ना होए मार लकीर, पत्थरां उते भेव ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। जन भगतो वेखो हरि का राह, हरि रहिबर आप जणाईआ। सति सरूप बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। शब्द गुरु गुर देव स्वामी दए सलाह, अन्तरजामी हुक्म वरताईआ। कोट जन्म दे बख्शे आप गुनाह, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। पकड़ उठाए गोदी जिउँ पुत्तर माँ, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। सच्चा सिमरो ओस दा नाँ, जिस दा ना कोई पिता ना कोई माईआ । होए सहाई दो जहां, एथे ओथे सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, जुग विछड़यां आपणा संग रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ। जन भगतो उठो लओ तक्क, हरि तकवा इक वखाइंदा । सब दी झोली पाए हकीकत हक़, पूरब लेखा आप वखाइंदा। घर मेल मिलावा कमलापति, पतिपरमेश्वर नज़री आइंदा। निज नेत्र खोल्हे अक्ख, दिब्ब आपणा पर्दा लाहइंदा। सति सरूप वेखो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेरा दूर कराइंदा। जन भगतो उठो खोल्हो अक्ख, सो साहिब आप समझाईआ। आत्म परमात्म मिल के पैणा हस्स, खुशीआं राग अल्हाईआ। कूड़ कुड़यारा जगत विकारा जाए नस्स, मन वासना दूर कराईआ। सिर रखे साहिब हथ्थ, समरथ दए वड्याईआ। धीरज सन्तोख देवे जत, हठ काम वासना मेट मिटाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। जन भगतो अन्दर मारो झाकी, दोए लोचण बंद कराईआ। तन मन्दिर अन्दर मिले पुरख अबिनाशी, घर बैठा डेरा लाईआ। सदा सुहेला सच प्याला जाम प्याए साकी, रस आपणा नाम चखाईआ। पार उतारे डूंघी घाटी, औझड़ राह पन्ध मुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणे साथी, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा समझाईआ। जन भगत कहिण प्रभ सच केहड़ा खेड़ा, घर मन्दिर दे जणाईआ। जिथ्थे चुक्के झूठा झेड़ा, झगड़ा कोए रहिण ना पाईआ। रूप नज़री आए तेरा मेरा, मेरा तेरा नूर इक रुशनाईआ। अठ्ठे पहर रहे चाउ घनेरा, खुशीआं रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारे लग्गे डेरा, सिँघासण इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर देणा वखाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत बच्चे, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। भाग लगावां माटी भाण्डे कच्चे, ततव तत खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म दोवें सच्चे, सच दुआर सहिज समझाईआ। प्रेम प्रीती आवण मज़े, रस इक्को इक चखाईआ। सच दवारा गुरमुख लँघे, हरिजन आपणे घर

फेरा पाईआ। निज आत्म देवे परमानंदे, निजानंद करे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा चरण, सति सतिवादी साचा नज़री आईआ। जिस मस्तक लाइआं खुल्हे हरन फरन, निज नेत्र होए रुशनाईआ। जिस दी धूढ़ रुलदयां चुक्के मरन डरन, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा देणा मुकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत सुहेले, सच सहिज गुण सर्ब समझाईआ। कोटन कोटां विच्चों विरले होवण मेले, जिस पूरब लेखा नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट लभ्भदे फिरदे गुरु गुर चेले, चेले गुरुआं हथ्थ किसे ना आईआ। पारब्रह्म अचरज खेल नित नवित्त सदा सदा खेले, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा मन्दिर सच, सच मिले सरनाईआ। ओस दवारे जाईए वस, जिथ्थे मिले ना कोए सज़ाईआ। राए धर्म ना उठाए आपणी अक्ख, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। इक्को मिले पुरख समरथ, दूजी आस ना कोए तकाईआ। जन्म मरन आवण जावण लख चुरासी गेड़ा देणा कट, मात गर्भ ना फेर भवाईआ। लेखे लौणी भगतां रत्त, रत्ती रत्त तेरी भेंट चढ़ाईआ। आपणी किरपा देणी ब्रह्म मति, मनमति परे हटाईआ। कलयुग अन्त तेरे मिलण विच रहे ना कोई शक़, संसा रोग ना कोए सताईआ। जन भगतां देणा अगला पिछला हक़, देवणहार इक अख्वाईआ। सृष्ट सबाई देण छड्ड, खहिड़ा छुट्टे मात लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग होणा आप सहाईआ। कलयुग वेखो कूड़ो कूड़, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई होई मूर्ख मूढ़, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। पुरख अबिनाशी कोलों होए दूर, घर घर विच दरस कोए ना पाइंदा। साचा मिले ना किसे नूर, दीवा बत्ती मन्दिर शिवदुआले मड्ड सर्ब जगाइंदा। विद्या कारण होए मशहूर, पंडत पांधा मुल्लां शेख मसायक ढोला गाइंदा। परम पुरख दी वड़े ना कोए हदूद, साची मंज़ल वेख ना जोत जगाइंदा। श्री भगवान दा देवे ना कोई सबूत, साचा भेव ना कोए खुल्हाइंदा। रसना जिह्वा सारे कहिण मिल्या महिबूब, मुहब्बत करन वाला नज़र कोए ना आइंदा। माया ममता घर घर लग्गी भूख, जगत तृष्ना ना कोए मिटाइंदा। हउमें हंगता लग्गा दूख, सुख आत्म नज़र किसे ना आइंदा। मिले मेल ना अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती ना कोए कराइंदा। साची मौले ना कोई रुत्त, बसन्त बहार ना कोए वखाइंदा। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के दस्म दवारी कोई ना लए बुझ, नौ दवारे पन्ध ना कोए चुकाइंदा। सीस जगदीश सच किसे ना जाए झुक, चरण कँवल ध्यान ना कोए रखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किसे ना कहे आ मेरे लाडले पुत्त, बिन भगतां अंग ना किसे लगाइंदा। हर घट अन्दर बैठा चुप्प, बिन साचे सन्तां आपणा राग ना किसे सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

कलयुग अन्तिम खेल खलाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल खेले ख़ालक, मखलूक वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण बण के सालस, साहिब सतिगुर वेखे चाईं चाईंआ। सृष्ट सबाई गूढ़ी निंद्रा सुती आलस, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। नौ खण्ड करे ना कोए सफ़ारश, गुर अवतार साचा संग ना कोए निभाईआ। कलम छाही नाल काग़ज़ां उते लिखी पढ़न इबारत, निरअक्खर समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार वड्याईआ। जन भगत इक्को अक्खर पढ़ना, जिस विच मिले वड्याईआ। लहिणा चुके जम्मणा मरना, मर जीवत रूप वटाईआ। परम पुरख दी मिले सरना, सरनगति इक दरसाईआ। सच दवारे सचखण्ड चढ़ना, पौड़ी पौड़ी पन्ध मुकाईआ। परम पुरख अबिनाशी करते दर्शन करना, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई कवण भगत, हरि जू कवण दया कमाइंदा। अन्तर आत्म देवे शक्ति, साची बस्ती विच टिकाइंदा। सोग मिटाए चिन्ता हरख़, ग़म नेड़ कोए ना आइंदा। निरगुण हो के वेख्या परत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा घर वखाइंदा। निज दरसी देवे साचा दरस, पड़दा उहला आप हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे पिछले यार, यारी यारां नाल निभाईआ। जिस ने तेरे नाल कीता प्यार, मुहब्बत सच इक वखाईआ। इस दा लहिणा देणा आपणी झोली लवे डार, कर्म कांड कोई रहिण ना पाईआ। बेशक घविंड नूं छड्ड के वसें विच बिहार, पटणे विच रहाईआ। राज नरैण नाल यार, यारी यारां नाल निभाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। डुब्बदे पाथर लए तार, पाहन आपणा चरण छुहाईआ। एहो राम एहो कृष्न मुरार, गुर अवतार इक्को रूप अनूप दरसाईआ। जिस दी महिमां शास्त्र सिमरत वेद करदे रहे जुग चार, लेखा लिख लिख जगत सुणाईआ। सर्ब जीआं दा पालणहार, परम पुरख परमात्म, वड दाता सहिज सुखदाईआ। जिस दा साचा जाणे ना कोई धर्म सनातन, सति सतिवादी भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत ओस दी आत्म, परमात्म इक्को नज़री आईआ। जिन्हां किरपा करी भेव खोल्लया बातन, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जीव जंत सारे आखण, बिन भगतां अन्दर वड़ के दरस कोए ना पाईआ। गुरमुख उतरे साचे घाटन, घाटा पिछला पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। बेशक छड्डया पिच्छे घविंड, घनकपुर वासी भुल्ल कदे ना जाइंदा। जिस दा लेखा लोक परलोक दो जहान सागर सिन्ध, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश नव नौ चार खोज खुजाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर करोड़ तेतीसा सुरप्त राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी कार कमाइंदा। जिस दी धार डूंघी सागर सिन्ध, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां जाम प्याइंदा। जिस दी गुर अवतार

पीर पैगम्बर शब्द अनादी बिंद, सो सति सतिवादी साचा हुक्म वरताइंदा। जिस दा नाम निधान नित नवित्त घर घर वज्जे साची किंग, किंगरे किंगरे मृदंग इक्को नाम सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार कराइंदा। पार कराए अन्दर प्यार, प्रीती सतिगुर सच्चे भाईआ। राज नरायण इक दो लेखा तिन्न चार, चौहां खेल इक्को घर वखाईआ। जिस मंज़ल बैठे आप निरँकार, तिस मन्दिर देवे माण वड्याईआ। घर दीवा बाती जगे इक अपार, नूर करे रुशनाईआ। साचा साथी हरि जू मिल्या मददगार, लोकमात दया कमाईआ। पिच्छे बणया रिहा बाढी दा यार, अग्गे पुरख अकाल हो के होए सहाईआ। खेले खेल अवल्लड़ी चाल, जीव जंत समझ सके कोए ना राईआ। राज नरायण बणया विच दलाल, सौदा साचे हट्ट कराईआ। अग्गे वेखणा खेल कमाल, हरि करता आपणा भेव दए जणाईआ। भगत जन वेखे साचे लाल, लालन आपणी गोद उठाईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म दे विछड़े भाल, वरन बरन विच्चों बाहर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत वछल इक रघुराईआ। भगत वछल इक रघुपत रघुनाथ, अनाथां दया कमाइंदा। साची सखीआं देवे साथ, काहन आपणी सेव कमाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे गले लगाइंदा। अन्तर बाहर पुछे वात, वातावरन सब दा वेख वखाइंदा। जन भगतां सञ्झ सवेर इक्को इक वखाए प्रभात, प्रभाती आपणा रंग रंगाइंदा। घर मेला कमलापात, पतिपरमेश्वर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दी दात, नाम निरँकार झोली पाइंदा। नाम निधाना गाउणा एक, अकल कलधारी आप समझाईआ। पतिपरमेश्वर साची टेक, जन भगतां इक्को इक समझाईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, पंज तत ना होए हल्काईआ। अन्दर वड़ के दस्से भेत, काया मन्दिर चढ़ के खुशी वखाईआ। आत्म सुहाए सुहञ्जणी सेज, खटीआ इक्को इक वड्याईआ। दरस दिखाए नेतन नेत, निज नेत्र नज़री आईआ। रुत्त बसन्ती मौले गुरमुख तेरी चेत, सुरती चेतन आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सज्जणां मित्रां देवे आप ज्ञान, अज्ञानता विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

* २४ चेत २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश *

ऐराप्त कहे मोहे मिल्या आराम, अगली पिछली मुक्की जुदाईआ। रतनां विच्चों रतन होया परवान, परवानगी दिती बेपरवाहीआ। चरण छोह श्री भगवान, नेत्र नैण खुशी मनाईआ। दरस कर शाह सुल्तान, संसा रोग ल्या मिटाईआ। नर हरि मिल्या नौजवान,

निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। नज़री आया वाली दो जहान, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। मेरा पूरब लेखा कर परवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गज कहे मेरी आसा पूर, पतिपरमेश्वर होया सहाईआ। जन्म जन्म दा पैंडा मुकया दूर, पन्ध रहिण कोए ना पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दिस्सया हाज़र हज़ूर, हज़रत इक्को नूरो नूर खुदाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता गढ़ तुटा ग़रूर, साची रीती पतित पुनीती चरण प्रीती इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फ़ील कहे मोहे चढ़या चाउ, गृह वज्जी सच वधाईआ। दरस पाया अगम्म अथाहो, बेपरवाह नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा दो जहान पसाओ, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा रंग रंगाईआ। निहचल देवणहारा साचा थाउँ, महल अटल इक्को इक वखाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल चरण कँवल सीस जगदीश धरया पाउं, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला जलवा नूर इक ख़ुदाईआ। नित नवित्त नरायण करनहार सच न्याउँ, शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस मेरे चरण छुहाईआ। चरण सोहया उपर सीस, नेत्र नैण अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। मिल्या मेल प्रभ जगदीश, जगदीश्र रंग वखाईआ। जुग चौकड़ी रखदा रिहा उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। कवण वेला परम पुरख परमेश्वर बख्शे इक प्रीत, साची रीत दए जणाईआ। पंज तत काया माटी करे ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई पुरख समरथ, आदि जुगादि दया कमाइंदा। झोली पाए हकीकत हक़, लाशरीक वेख वखाइंदा। अन्तर देवे ब्रह्म मति, विद्या सति सति पढ़ाइंदा। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक वखाइंदा। दर घर साचा वेख्या अगम्म, अन्तर वज्जी वधाईआ। साहिब सतिगुर बेड़ा दित्ता बन्न्ह, डुब्बदा पाथर पार कराईआ । घर प्रकाश कराया चन्न, निरगुण नूर चन्द रुशनाईआ। जग नेत्र होए अन्न्ह, लोचन इक्को मिली वड्याईआ। पूरी मनसा होई मन, ममता मोह चुकाईआ। कर निमस्कार करां धन्न धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हथ्थ टिकाए साहिब सुल्तान, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं मिलयां उपजे इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाईआ। सति धर्म दा दस्से सच निशान, निशाना आपणे हथ्थ झुलाईआ। जिस नूं सजदा करे ज़िमीं असमान, लोक परलोक चौदां तबक बैठे नैण शरमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी मन्नण आण, सीस सके ना कोए उठाईआ । ओस प्रभू पूरब लेखा वेख्या आण, अनभव आपणी

धार बंधाईआ। मैं बाली बुध अंजाण, समझ सोच रखां ना राईआ। मस्ती विच हो हैरान, पंज तत सेवा सच्ची कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। फ़ील कहे मैं मस्त हाथी, हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दी ज़ात किसे ना जाती, जानणहारा इक्को इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा बणे साथी, पतिपरमेश्वर नाउँ धराइंदा। निरगुण सरगुण मिले कमलापाती, आत्म परमात्म आप प्रनाइंदा । निर्धन सरधन देवे दाती, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे गुरदेव, सच स्वामी वड वड्याईआ। दाता दानी अलख अभेव, अगम्म अथाह सार कोए ना पाईआ। कथनी कथ ना सके कोई रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। जन्म कर्म दा लेखा देवे अगम्मी मेव, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ऐराप्त कहे मोहे आई याद, याददाशत आपणी फेर बणाईआ। किस कारण सुणी मेरी फ़रयाद, मेहरवान दया कमाईआ। मेरे अन्तर वज्जा नाद, धुन राग समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई धुरदरगाही, दर साचे दया कमाइंदा। निरवैर हो के बणया जगत मलाही, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। साची अनभव दए सलाही, सोहणी गुफ़तार नाल समझाइंदा। निउँ निउँ लागो इस दे पाईं, चरण कँवल इक वखाइंदा। जिस दा खेल जल थल अस्गाही, महीअल आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहीं, निर्धन साची गोद उठाइंदा । जन भगतां देवे सिर ते छाईं, समरथ आपणी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म जिस ने खेल रचाई, लख चुरासी अन्दर प्रभ डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। गज कहे नमो देव स्वामी, साहिब सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जिस दी जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर कथनी कथ गौण कहाणी, धुर संदेसा राग सुणाईआ। जिस दी सिफ्त करे चारे खाणी, चारे बाणी मेल मिलाईआ। सो ठाकर स्वामी घट घट बणया जाण जाणी, भेव अभेदा अछल अछेदा रिहा खुल्हाईआ। सच सिँघासण प्रभ अबिनाशन बैठा शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस देवे पद निरबाणी, घर इक्को इक वखाईआ। घर वेख्या पारब्रह्म, वज्जे सच वधाईआ। ना कोई कांड ना कोई कर्म, निहकर्मी आपणी खेल खलाईआ। ना कोई मरन ना कोई जन्म, मात गर्भ ना कोए टिकाईआ। ना कोई संसा ना कोई भरम, रोग सोग नेड़ कोए ना आईआ। इक्को बख्शे साची सरन, सरनगति इक अख्वाईआ। सच महिराबे आया चढ़न, नाम खुमारी कोल रखाईआ। सन्त सुहेले आया वरन, बेअन्त आपणा वेस वटाईआ । दो जहान जिस दा नाम निधान ढोला पढ़न, बिन रसना जिह्वा राग अल्हाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी सरनी पढ़न, मस्तक टिक्का धूढ़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फील कहे मेरी वेखो चर्चा, जुग चौकड़ी समझ किसे ना पाईआ। गुरमुख मारया मस्तक बरछा, पिछली कहाणी अक्खां अग्गे नज़री आईआ। ना कोई रोग ना कोई हरखा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। बरछा लग्गा तिक्खा घाउ, गोबिन्द ध्यान लगाईआ। नमो कर चरण कँवल वेख्या इक्को थाउँ, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। तूं दाता बेपरवाहो, बेअन्त तेरी वड्याईआ। आदि जुगादी पिता माउँ, मेहरवान अख्वाईआ। एथे ओथे करें सच न्याउँ, अदालत इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा इक वर, सच तेरी सरनाईआ। घाउ खा के करे ध्यान, अन्तर मंग मंगाईआ। तूं दाता दानी मेहरवान, सूरबीर अख्वाईआ। मैं बलहीण नादान, हँकार रूप वटाईआ। मदि मस्ती विच शैतान, शरअ नाल लड़ाईआ। तुध बिन सहाई कोई ना दिसे विच जहान, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। फ़ील मंगी अन्तर मंग, बिन रसना जिह्वा बोल सुणाईआ। गोबिन्द सूरा चढ़ तुरंग, वेखे चाईं चाईंआ। तेरी अन्तिम पूरी होए उमंग, आसा तेरे नाल रखाईआ। मेरे नाल होवे मेरा साहिब सरबँग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। तेरी नंगी होण ना देवे कंड, चरण कँवल उपर लए टिकाईआ। अन्तर आत्म देवे इक अनन्द, पुरी अनन्द वाला सच्चा माहीआ। जुग जन्म दी पिछली अग्गे लवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। दिवस रैण चलदयां फिरदयां देवे ठंड, सांतक सति सति वरताईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत वेखणे नूरी चन्द, जिन्हां अन्दर निरगुण जोत करी रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहान भगत भगवान बणया संग, नाता सके कोए तुड़ाईआ। मिले वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खुशीआं गीत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फ़ील कहे मेरी गई हउमे, ममता मूल रहिण ना पाईआ। एह लेख लिखाया सतिगुर नौवें, गोबिन्द लेखा दए जणाईआ। धुर दा लेखा जाणे कवणे, अगम्म अथाह बेपरवाह समझ ना किसे जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत भरमे फिरदे अवणे गवणे, अण्डज जेरज सेत्ज उत्भुज फेरा पाईआ। लेख चुकाया दुष्ट दमने, दामनगीर हो के दया कमाईआ। लहिणा देणा मुकाया हरिसंगत साम्हणे, समझ आपणे नाल मिलाईआ। कोई भेव ना पावे मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत ब्राह्मणे, ग्रन्थी पन्थी धार हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। चुका लेखा विच मात, सच दुआर मिले वड्याईआ। लेखा लिख्या कलम दवात, छाह शहादत दए भुगताईआ। साहिब सतिगुर दर्शन पाया साख्यात, सखी सरवर इक्को नज़री

आईआ। अग्गे वासते जन्म मरन विच्चों होया आज़ाद, जूनी जून ना कोए भवाईआ। खेड़ा वसया तन होया बरबाद, अन्तर आत्म घर महकाईआ। चरण कँवल लग्ग धुर दा आया इक स्वाद, रसना रस समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दित्ता मुकाईआ। फ़ील कहे मेरे सच स्वामी, दर तेरे सच अरज़ोईआ। लख चुरासी घट घट अन्तरजामी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। भगत वछल साहिब सुल्तानी, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तेरी लोकमात दिसण निशानी, निशाना तेरा नाउँ हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। फ़ील कहे तूं साहिब फ़ाज़ल, रहमत तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दा आदल, अदालत इक्को इक वखाईआ। जन्म कर्म करें तबादल, बदली आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरे संग पार कराउणा मेरा महावत, जिसदी अदावत गोबिन्द नाल नज़री आईआ। दर दरबार अग्गे हो के देवे विच ज़मानत, सफ़ारश तेरा नाम रखाईआ। तूं साहिब सतिगुर सही सलामत, आदि पुरख तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होणा सहाईआ। साहिब सतिगुर निरगुण धार तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। जुग चौकड़ी आदि जुगादि नित नवित्त वेखे सच सुच, घट घट अन्तर बाहर खोज खुजाइंदा। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के सुरती शब्दी लए पुच्छ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। सजदा सीस झुकाया चरण कँवल झुक, नेत्र नैण नैण ध्यान लगाइंदा। तेरा पैंडा गया मुक्क, संगी साथी पार कराइंदा। धन्न वड्याई साचे गुरमुख गुरसिख, जो तेरा पिछला मेल कराइंदा। लहिणा देणा मातलोक विच्चों गया चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्कया जग्ग, जग जीवणदाता आप मुकाईआ। जन्म कर्म दी तृष्ना मिटी अग्ग, ततव तत ना कोए तपाईआ। आवण जावण पार किनारा पन्ध मुकाया हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फ़ील कहे मैं तोड़ां फ़सील, फ़ैसला हुक्मे अन्दर रसाईआ। अन्दरों मेरी गोबिन्द नाल दलील, बाहरों कूड़ करां लड़ाईआ। हुण बणया इक वकील, वकालत साची विच फ़ैसला हक़ सुणाईआ। चौथे जुग मेरी अन्तिम इक अपील, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, दर ठांडा नज़री आईआ। गज कहे मेरे सुहाए पैर, चौथे जुग चौंह मिली वड्याईआ। जिस दी कोई ना जाणे लहर, लहर विच्चों धार नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण सच सिँघासण बहि के दो जहानां करी सैर, लोकमात आपणी खेल वखाईआ। जन भगतां गुरमुखां गुरसिखां उते करी मेहर, आसण सिँघासण सोहणा आप सुहाईआ। दूर दुराडा चल के आया नेरन नेर, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आर पार किनारा आपणा पन्ध मुकाईआ।

पूरब लहिणा पिछला लेखा मेरा दित्ता नबेड़, झगड़ा झेड़ा अग्गे ना कोए जणाईआ। अन्दरे अन्दर चरण कँवल मैं ढहि ढहि होया ढेर, ढेरी आपणी ख़ाक जणाईआ। शरन तक्की शहिनशाह इक्को शेर, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। जिस जुग चौकड़ी गेड़ा दित्ता गेड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्मे विच फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि लहिणा देणा देवे थाउँ थाईआ।

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी बाल्मीक दी कुटीआ उते बिठूर कानपुर उतर प्रदेश *

पंडत कवण साचा चरणामित, मित्र श्री भगवान मिलाईआ। निरन्तर ब्रह्म करे हित, माया पर्दा परे हटाईआ। दिब नेत्र आए दिस, निरगुण निरँकार निराकार जोत रुशनाईआ। बाल्मीक जो लगावे खिच, धुन आत्मक राग सुणाईआ। धाम वखाए अवल्लड़ा अनडिठ, जग नेत्र नज़र ना आईआ। सति विद्या किथों लई सिख, कवण करे पढ़ाईआ। कवण कहे कलम छाही काग़ज़ लेख लिख, धुर दा हुक्म फ़रमाण इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरणामित इक्को दर रखाईआ। चरणामित कवण सति, शंकर पिण्डी कवण वड्याईआ। किस बिध उपजे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या सच पढ़ाईआ। लेखा मुके ततव तत, वासतक वस्तू इक्को नज़री आईआ। मिले मेल पुरख समरथ, श्री भगवान जोड़ जुड़ाईआ। बाल्मीक जिस दी चरणी गया ढट्ठ, सीस जगदीश झुकाईआ। सो भूमका अस्थान साचा गृह देणा दस्स, मन्दिर कवण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण चरणोदक कवण रूप वटाईआ। चरण चरणोदक किसे हथ्थ ना आवे पंडत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार कुण्ट चारे खाणी ध्यान लगाईआ। कोटां विच्चों भगत भगवान दर बणे मंगत, आपणी इच्छया झोली अग्गे डाहीआ। किरपा करे साहिब सूरा सरबँगत, सति सतिवादी दया कमाईआ। निरगुण निरँकार सरगुण अंगीकार कार अंगत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज तत काया चोली नाम निधान चाढ़ रंगत, अमृत रस अन्तर जाम प्याईआ। मानुष मानुख मानव बणाए बणतर, घर सच देवे वड्याईआ। सच चरणोदक चरणामित निज घर प्याए आप निरन्तर, झिरना इक्को इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चरणामित इक वखाईआ। चरणामित नज़र ना आवे जगत कटोरे, गढ़वा खुशी ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां श्री भगवान आप वरताए भोरे भोरे, थोड़ा थोड़ा मुख अन्तर जाम प्याईआ। जिन्हां पीता तिन्नां आपे बौहड़े, काया मन्दिर अन्दर साढे तिन्न हथ्थ खुशी मनाईआ। बाल्मीक बटवारा वर इक्को लोड़े, नेत्र नैण अक्ख ध्यान लगाईआ। अन्त काल कल काती कोई ना बौहड़े, सगला संग ना कोए निभाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरणामित चरणोदक आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा चरणामित पंडत जी देणा दस्स, कवण सच सच वरताईआ। जिस दे पीत्तयां मन वासना होवे वस, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। काया मन्दिर अन्दर निरगुण जोत होवे प्रकाश, जोत निरँजण डगमगाईआ। जन्म कर्म दी पूरब पूरी होवे आस, तृष्ना कूड़ी दए चुकाईआ। जिस दवारे बाल्मीक होया दासी दास, बजवाड़ा आपणा सीस निवाईआ। सो जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभ वेखणहार प्रभास, डूंग्घी कन्दर खोज खुजाईआ। लेखा जाणे चोटी पर्बत उते कैलाश, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप चुकाईआ। विष्न हो के विश्व करे तलाश, चार कुण्ट दहि दिशा दो जहानां खोज खुजाईआ। हरि का चरणामित कोई प्याए ना विच ग्लास, कटोरा नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा जिन्हां आप देवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी रूप दए बणाईआ। इक चरणामित पीण दी सभनां रखी आस, बिन भगतां लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। साची पूंजी धुर दी रास, परम पुरख पुरखोतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सद आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरणामित आपणा आप बणाईआ। पंडत जी दस्सो की अमृत रस, चरणामित कवण वड्याईआ। कवण मार्ग देवे दस्स, राह साचा इक समझाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, महिमा अकथ दए दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान गुर अवतार जिस दा गाउँदे जस, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। सो साहिब सुल्तान श्री भगवान दूर दुराडा नेरन नेरा घर साचे आवे नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गल्लां बातां दी नहीं कोई गाथ, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। अन्दर वड़ के वेखो मार झात, की अमृत रस तुहाढ्ढे निझर झिरना झिर झिर आपणा इष्ट पकाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह के वेखो ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। पढ़यां उह ना आवे स्वाद, अन्दर वड़यां सति सरूप समाईआ। सो पंडत जो पारब्रह्म विच होए विस्माद, ब्रह्म विस्मादी रूप समाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि, नाद अनादी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत साचा इक्को इक मंग मंगाईआ। पंडत जी की तुसां अमृत पीता, चुल्ली हथ्थां उते टिकाईआ। तन मन होया ठांडा सीता, पंज तत अग्ग ना कोए जलाईआ। की आया ज्ञान बिन पढ़यां अठारां ध्याए गीता, राम कृष्ना सनमुख नज़री आईआ। की मिठ्ठा होया कौड़ा रीठा, सच मिठास इक्को तत भराईआ। की लेखा चुक्कया नीचां ऊँचां, ज़ात अज़ात लेखा दित्ता गंवाईआ। जिस अमृत रस नाम निधान सच दवारयों पीता, सो पतित पापी पुनीत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग चरणामित धुर दा आप वरताईआ। पंडत जी अमृत वस्तू की, कवण देवे वरताईआ। जिस नाल निर्मल होवे जी, जीव आत्मा भेव रहिण कोए ना पाईआ। लेखा चुके साढे तिन्न हथ्थ

सीं, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। बटवारा बजवाड़ा बाल्मीक फेर ओसे दा अधीन, जिस मस्कीन दित्ता बणाईआ। धुर दे पंडत कोलों पढ़ो ताअलीम, विद्या इक्को दए समझाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह दो जहानां वाली वखाए आपणा निरगुण नूर सच सीन, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जिस दा फ़रमाण हुक्म चौदां लोक त्रैभवन चले लख चुरासी जीव जंत अधीन, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरणामित चुली दिसे अनमुल्ली, जिस दी कीमत किसे ना पाईआ। पंडत जी चरणामित किस नूं वरताया, पीवणहार कवण अख्वाईआ। जे अन्तर अक्ख है वेखो खोल्ह नज़ारा, की कुछ साम्हणे नजरी आईआ। जिस दे पिच्छे बाल्मीक रुल्लया विच उजाड़ां, सो ठोकर नाम लगाईआ। जिस राम दा नाम कीता उज्यारा, लेखा लिख के शहादत दिती गवाहीआ। तिस राम दा अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल न्यारा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। चारे वेदां दए सहारा, पुराण अठारां करे उज्यारा, गीता ज्ञान अठ्ठ दस जोड़ जुड़ाईआ। साची सखीआं वेख आखाड़ा, दो जहानां मंगलाचारा, मण्डल रास इक रचाईआ। वेखणहारा गंगा किनारा, बख्शणहारा चरणामित साचा ठंडी ठारा, रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। पंडत जी गढ़वी करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादी तीर्थ तट सरोवर धुर दा सच भण्डार, गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी धार चलाईआ। सो करता पुरख करनेहारा खेल करे करतार, काहन घनईया राम रमईया निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। साचा जाम मीत प्यार पिलावणहार, रस इक्को इक वखाईआ। तिस दा नेत्र नैण अक्ख करो दरस दीदार, सनमुख हो के रिहा समझाईआ। जगत विद्या वसे बाहर, भगत विद्या इक समझाईआ। जिस धार विच्चों निरअक्खर साचे कर प्यार, बाल्मीक आपणी कलम चलाईआ। सो बाल्मीक कलयुग विच करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। एह मेरा ओहो यार, जो जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ओसे दा सच्चा भण्डार, जिस नूं कोटन कोटि पंडत पांधे रहे वरताईआ। पर अब ना कोई पीवणहार, अमृत पी अमर रूप ना कोए वटाईआ। शंकर नैण रिहा उग्घाड़, आपणी त्रिशूल हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चरणामित इक्को घर वखाईआ। चरणामित अन्दर वसे भगवान, जल साचा रिहा सुणाईआ। इस दी करो पछाण, पंडत जी आपणा ध्यान लगाईआ। फेर देवो फ़रमाण, हुक्म संदेसा इक सुणाईआ। धुर दा वेख खेल महान, महाबली आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा सच दर, जिस घर बहि के अमृत जल जन भगत पीवण चाईं चाईंआ।

६२७
१६

साची सीता वखाई सुरती, साचे राम नाल प्रनाईआ। जिस दा रूप अकाल मूर्ती, सति सरूप समाईआ। आसा मनसा सर्ब पूरती, भरतम्बर वेख वखाईआ। वास चुके नेड़ दूरती, गंगा आर पार किनारा इक्को घाट नज़री आईआ। ओस दी साचा राम करे सच महूरती, मुश्किल पिछली हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। सीता मन्दिर देणा वखाल, जिस अन्तर इक्को जोत होवे रुशनाईआ। एहदे नाल राम वसे दीन दयाल, सोहणा आपणा जोड़ जुड़ाईआ। बेशक बाहरों कटदा फिरे बनबास, पंज तत काया माटी दुखदाई नज़री आईआ। अन्दरों करे साची संभाल, बण प्रीतम बेपरवाहीआ। क्या कोई समझे लव कुश किस दे बाल, बाल्मीक बजवाड़ा दए गवाहीआ। कवण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कवण जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रखे संभाल, आपणी गोद उठाईआ। किस बिध अमृत सति जाम दए प्याल, सोहणा रंग रंगाईआ। सो पंडत जी मन्दिर देणा वखाल, जिस अन्दर सीता सोहणा रूप वटाईआ। सीता नज़री आए सति, सति सतिवाद विच बैठी आसण लाईआ। इक्को राम रही जप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। नाले बनबास नाले तप, दोवें रंग वखाईआ। नाले बाल्मीक सिर उते रखे हथ्थ, सगला संग निभाईआ। नाल प्रभ मिलण दी खोल्ही अक्ख, अन्तर दर्शन पाईआ। बाहरों सारे रहे दस्स, साचा भेव ना कोए खुल्हाईआ। उह सीता मइया सब दे अन्दर रही वस, जेहड़ी सीता साचे राम प्रनाईआ। उस दा लेखा कदे ना मुक्के तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश साचा जोड़ जुड़ाईआ। सो मन्दिर खुशीआं नाल देणा दस्स, वेखीए चाईं चाईंआ। मन्दिर उह ना दस्सणा जिस विच्चों सीता जाए नट्ठ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दे पिच्छे राम होवे बेबस, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस रावण सत्थर दित्ता घत्त, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर वेखे बेपरवाहीआ। सीता मन्दिर वखाउणा सोहणा, सोहणी बणत बणाईआ। जिथ्थे ना हस्सणा ना रोणा, खुशी ग़म ना कोए रखाईआ। ना बिस्तर ना सेजे सौणा, आलस निंद्रा ना कोए वड्याईआ। ना गीत ना छन्द गाउणा, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। जिस मन्दिर अन्दर परम पुरख परमात्म अन्तर दरस पाउणा, सीता खुशीआं रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखण आया उह दा, जिस घर सीता सवाणी बहि बहि खुशी मनाईआ। सीता मन्दिर किडा चंगा, पंडत जी कवण दए वखाईआ। जिस दे वैराग अन्दर रोंदी फिर दी गंगा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिस दा राम छड्डया संगा, नाता तुट्टया संगी लोकाईआ। बिन राम सीता उह ना आवे अनन्दा, जो अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस घर बिन तेल बाती दीआ जगाए अगम्मी चन्दा, अट्ठे पहर होए रुशनाईआ। कूड़े किरकट नाल कदी ना होवे गंदा, जगत वासना अन्दर वेखण कोए ना पाईआ। ओथे ना

कोई सिँघासण ना कोई पलँघ ना कोई खटीआ ना कोई मंजा, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। शब्द अनाद धुन वज्जे मृदंगा, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। जिस मन्दिर नूं कोटन कोटि लभ्भदे फिरदे विच ब्रह्मण्डा, जीव जंत साध सन्त बैठे ध्यान लगाईआ। सो मन्दिर वखाउणा जिथ्थे वड़दयां कोई ना आवे संगा, सनमुख साख्यात सीता राम दोवें नज़री आईआ। बाल्मीक अन्दरों रिहा गा, खुशीआं गीत सुणाईआ। प्रभू कीता कौल रिहा निभा, पूरब लेखा भुल्ल ना जाईआ। एनूं कोलों मैनूं भगत ल्या बणा, आपणी गोद उठाईआ। रविदास नाल जोड़ जुड़ा, देवे माण वड्याईआ। पिछला चेता दए करा, चेतन रूप वखाईआ। एसे कारण करता गया आ, गृह मन्दिर घर वेखे नैण उठाईआ। जिस दी आसा रख चरण भरवासा गया तका, सो साहिब होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बाल्मीक तेरी करे भाल, पाल सिँघ सरन रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ एथों दूर, फ़ासला सच रिहा समझाईआ। कलयुग विच साढे तिन्न हथ्थ एसे कारण होया मंज़ूर, मजदूरी पिछली झोली पाईआ। जिस सिँघासण उपर साहिब हाज़र हज़ूर, ढाई बालिशत इस तों पिच्छे दए वड्याईआ। इस धाम ते ढाई गिट्टां अग्गे झुक के अक्खां विच्चों नीर वहाए नूर, बिहबल हो के अन्तर कुरलाईआ। मेरी जोदड़ी करनी मंज़ूर, चरण कँवल बख्शणी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रविदास संग पूरी कीती आस, आसा विच्चों साढे तिन्न हथ्थ दी रविदास चुमारा दए गवाहीआ।

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी सतवन्त कौर दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश *

जन भगत कहे मैं आराध्या इक, एकँकार ध्यान लगाईआ। जिस आपणा लेखा मेरे अन्तर दित्ता लिख, काग़ज़ कलम छाही संग ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण ओहो रूप आए दिस, सति सरूप नज़री आईआ। आत्म परमात्म करे साचा हित, प्रीती इक्को इक वखाईआ। जन्म कर्म भरम भउ कूड़ी क्रिया लेखा लए नजिठ, वड दाता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत जो सुता दे कर पिठ, गुरमुखां सनमुख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रिहा तराईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी साची मस्ती, नाम खुमारी इक्को नज़री आईआ। सदा सदा सद नज़री आए तेरी हस्ती, घट घट आपणा डेरा लाईआ। आदि जुगादि चढ़ी रहे मस्ती, सच मतिवाला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी इक वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरा नगारा, घर नव निध वज्जे वधाईआ। नाता छुट्टे सर्ब संसारा, सगली चिन्त गंवाईआ। निज नेत्र नैण दीदारा, दरस हरस सर्ब गंवाईआ।

गृह दीपक जोत उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सति मिलण दा सच प्यारा, प्रीतम प्रीती इक दृढ़ाईआ। मन्दिर सुहाए महल मनारा, निहचल नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवणहार आप अख्वाईआ। जन भगत कहे की तेरी सिफ्त, सच सालाही कहिण कुछ ना पाईआ। कोई ना जाणे तेरी निसबत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी समझ ना कोए रखाईआ। तेरा लेखा सदा सदा इलबत्त, लोक परलोक तेरा नूर नज़री आईआ। सच स्वामी जन भगतां करे इक मुहब्बत, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे हर घट, गृह गृह झोली पाईआ। हरी भगत कहे मेरे भगवन्त, तेरी भगती समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी कर कर थक्के साध सन्त, जीव जंत भज्जण वाहो दाहीआ। किसे हथ्थ ना आवे मणीआ मंत, मन्त्र सति ना कोए समझाईआ। रूप अनूप तेरे वेख अनन्त, अगणत सके ना कोए गणाईआ। भरमे भुल्ला जगत संसार कुकर्मी जंत, निहकर्मी तेरा नेहों ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दिती दृढ़ाईआ। श्री भगवान भेव खोल्ह, जन भगत दए समझाईआ। जुग चौकड़ी तोलां साचा तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। साचे सन्तां सज्जण बण के वसां कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। अन्दर वड़ वजावां ढोल, सुत्तयां आप उठाईआ। अमृत रस प्यावां पौहल, जाम नाम हथ्थ उठाईआ। उलटा कर के नाभ कौल, झिरना इक्को सति झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवे आप सहाईआ। जन भगत कहे तेरा अमृत पीवे कौण, समझ विच किसे ना आईआ। साध सन्त चार कुण्ट दहि दिशा भौण, दिवस रैण मन वासना नाल रलाईआ। तीर्थ तट किनार जो जा जा नहौण, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मिंगशाला जो सेजे सौण, धूढ़ी तन तपाईआ । सीस भस्म जो फड़ फड़ पौण, ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। रागां नादां अन्दर जो गाण, ताल तलवाड़े जो रहे वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा संग सके ना कोए निभाईआ। पारब्रह्म कहे मेरा लेखा सच्च, सति सति समझाईआ। जन भगतां मिलां हस्स हस्स, नित नवित्त फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी देवां वथ, नाम अमोलक इक वरताईआ। हिरदे अन्दर आपे वस, हस्ती आपणे नाल रखाईआ। अमृत आत्म साचा झट्ट, सच सरोवर दयां भराईआ । सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, नाम वणजारा वंड वंडाईआ। आत्म सेजा बैठ सुहञ्जणी खाट, सिँघासण इक्को रंग रंगाईआ। भाग लगा काया माट, काची माटी दयां वड्याईआ। सदा सुहेला बण के वसां साथ, सगला संग निभाईआ। जिन्हां सुणावां आपणी गाथ, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। तिन्हां एथे ओथे बणां माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। पकड़ चढ़ावां साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणे मिलण दी अन्तर आपे दरसां जाच, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। साची

सेजा कर के भोग बिलास, नारी कन्त रूप वटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी आस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे संग रखाईआ। जन भगत कहे की तेरा रंग, जग नेत्र नज़र नहीं आइंदा। कवण सेजा सोहे पलँघ, सच सिँघासण कवण डेरा लाइंदा। कवण नाम वज्जे मृदंग, कवण नाद अल्ल़ाइंदा। कवण प्रेम दए अनन्द, कवण आपणा संग वखाइंदा। कवण ढोला गाए छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर भिखक मंग मंगाइंदा। मेरा ढोला सोहँ सो, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां आप जणाईआ। सृष्ट सबाई नालों करे निरमोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ । कूड़ी क्रिया लवे खोह, सच सुच झोली दए भराईआ। कर प्रकाश अन्तर लो, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। धुर दा ढोआ देवे ढो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए उठाईआ। जन भगत कहे की तेरा गीत, मेरी समझ विच ना आईआ। मैं सुण सुण थक्का मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ दर दर फेरा पाईआ। तेरी कोई ना जाणे अचरज रीत, रीतीवान पड़दा ना कोए उठाईआ। सारे कहिण प्रभ दा खेल सदा अनडीठ, वेखण विच कदे ना आईआ। जो जन करे चरण प्रीत, तिस देवे माण वड्याईआ। कर किरपा स्वामी बख्शे इक हदीस, हज़रत सच कर पढ़ाईआ। हउँ बाल याणा नीकन नीक, नीचों नीच रिहा वखाईआ। काया चोली चाढ़ रंग मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मेरी नंगी ना होवे पीठ, पुश्त पनाह तेरा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन तेरी तकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत सरन लैणी तक्क, ओट इक्को इक रखाईआ। सब दी झोली पावां हक़, हकीकत विच्चों खोज खुजाईआ। झूठी प्रीत ला ना जाणा नस्स, भज्जयां मार्ग हथ्थ ना कोए आईआ। किरपा करे पुरख समरथ, दो जहान दए वड्याईआ। आपणे मिलण दी खोल्ल़ के अक्ख, घर दरस सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मिल के गाउँदे एहो जस, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा नूर आपणा नूर दरसाईआ। जन भगत कहे वड्डा छोटा एह तेरा कम्म, मेरी समझ विच ना आईआ। तेरी वड्याई तूं हैं प्रभू धन्न, धन्न तेरी शरनाईआ। मैं बाला नढ्ढा नूरी तेरा चन्न, तूं चांदना बेपरवाहीआ। मैं नित नवित्त तेरा भाणा रिहा मन्न, तूं सद आपणे भाणे विच समाईआ। मेरा वसेरा छप्परी छन्न, तेरा महल अटल सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। तूं मेरा जननी जन, हउँ पूत सपूत दर ठांडा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। तूं पूत सपूत मेरा जग, श्री भगवान सच समझाइंदा। मैं वसां उपर शाह रग, घर साचे डेरा लाइंदा। तेरा गुरमुख कर के हज्ज, आपणी हाजत पूर कराइंदा। जगत दुआर सारे तज, तख्त तेरा इक वडियाइंदा । मैं दर्शन करां रज्ज,

नित लोचण तेरे नाल मिलाइंदा। तेरे अन्दर आपणा पर्दा कज, पंज तत काया ओढण इक सुहाइंदा। तुध बिन मेरा देवे ना कोई साथ, संगी संग ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। भगत कहे तूं मेरा बाप, पिता इक्को इक अख्वाईआ। बिन रसना जिह्वा करां जाप, बिन पढ़यां होवे पढ़ाईआ। निज नेत्र वेखां तेरा प्रताप, अगम्म अथाह तेरा नूर नज़री आईआ। संसा रोग ना कोए संताप, चिन्ता दु:ख ना कोए जणाईआ। धन्न वड्याई जागे मेरे भाग, पूरब लहिणा झोली पाईआ। नाम अमोलक दिती दात, वस्त आपणी आप वरताईआ। चरण प्रीत बद्धा नात, बिधाता आपणा संग वखाईआ। तूं बैठा रहें इकांत, मैं वेखां चाईं चाईंआ। बिन तेरी किरपा तेरी समझ आए किसे ना बात, सोच सके कोई ना राईआ। जिन्हां बख्शें आप नजात, समरथ पुरख हो सहाईआ। तिन्हां गुरमुखां पूरी होवे आस, आस असल नाल मिलाईआ। कोटन कोटि कोटां विच्चों हरिजन विरले नाल करें मिलाप, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणाएं सज्जण साक, नाता सगला जगत तुड़ाईआ। महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रख डूंघा खात, जुग चौकड़ी खाते आपणे विच समाईआ।

६३१ ६३१

१६ १६

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी बीबी भगवन्ती दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश *

जन भगत कहे मेरा इष्ट भगवान, दूजा देव ना कोए मनाईआ। जो अन्तर आत्म देवे सच ज्ञान, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। निर्मल दीआ जोत जगाए महान, तेल बाती ना कोए रखाईआ। अमृत रस प्याए जाम, निझर झिरना इक झिराईआ। कूड़ी क्रिया मेटे शैतान, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। सच मन्दिर सुहाए मकान, घर घर विच सोभा पाईआ। स्वच्छ सरूपी दर्शन देवे आण, सति स्वामी नज़री आईआ। धुर दा शब्द सुणाए नाद धुन्कान, अनहद रागी राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे मेरा भगत प्यार, लख चुरासी समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी पावां सार, नित नवित्त वेख वखाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, धुर दा नाम करां पढ़ाईआ। दीना बंधप हो के दीन दयाल, दर घर साचा वेख वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। जन भगत कहे मेरा भगवन्त, बिन भगवन दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म सति सतिवादी धुर दा कन्त, नर हरि नरायण इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत बणाए बणत, साध सन्त दए समझाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद महिमा सुणाए अगणत, खाणी बाणी आपणा

राग अलाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़े हउमें हंगत, सच सुच इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे होए सहाईआ। श्री भगवान कहे मेरा भगत सज्जण, दो जहानां विच्चों इक्को नज़री आइंदा। चरण धूढ़ी करे सच्चा मजन, सच सरोवर इक्को नहा नहा खुशी रखाइंदा। दिवस रैण अट्ठे पहर रहे मग्न, अन्तर आत्म सच ध्यान लगाइंदा। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के सच दवारयों मैनूं आवे सद्दण, उच्ची कूक कूक साचा नाम अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां संग समाइंदा। जन भगत कहे मेरा ठाकर स्वामी, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी घट घट होए अन्तरजामी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। शब्दी शब्द जो गाए अगम्मी बाणी, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला भेव खुलाए पद निरबाणी, घर साचा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवन्त कहे मेरा भगत संग, साथी दो जहान नज़री आइंदा। जिस अन्दर मैनूं मिले अनन्द, घर विच घर बहि खुशी मनाइंदा। आपणा नूरी जोत चाढ़ चन्द, साचा नूर इक रुशनाइंदा। सतिवादी गा छन्द, सोहला ढोला राग अलाइंदा। आसा मनसा मेरी पूरी करे मंग, हरिजन आपणा आप भेंट चढ़ाइंदा। जिस मिलयां सदा सद पए ठंड, सो भगत साहिब सतिगुर सच्चे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख खुशी मनाइंदा। जन भगत कहे मेरा भगवान अगम्म, अलख अगोचर वड वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। हरख सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। पवण स्वास ना कोए दम, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दो जहान जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी साचा कर्म कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भंनणहार खेल खलाईआ। वस्त अमोलक नाम निधान देवे धन, घट घट अन्दर झोली आप भराईआ। रवि ससि चमकावणहारा चन्न, चाननी आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत निउँ निउँ लागे पाईंआ। श्री भगवान कहे भगत अपार, लख चुरासी विच्चों नज़री आईआ। जो नित नवित्त मंगे इक दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। नाता तोड़ कूड़ संसार, इष्ट इक्को इक मनाईआ। दृष्ट खोलू आप करतार, घर वेखे चाईं चाईंआ। मेल मिलावा ठांडे दरबार, महल अटल मिले वड्याईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा यार, मित्र प्यारा बणे बेपरवाहीआ। आवण जावण जन्म मरन दा गेड़ निवार, लख चुरासी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होवे आप सहाईआ। जन भगत कहे श्री भगवान मेरा मित्र, मात्र भूमी दए वड्याईआ। जोती धारों जोत आए निकल, शब्दी शब्द नाद वजाईआ। ना मुलम्मां

ना पित्तल, सच स्वर्ण पारस रूप वखाईआ। एका धार रहे बिस्मिल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे मेरा भगत अनोखा, कोटां विच्चों नज़री आईआ। जिस अन्दर निरगुण नूर जगे जोता, अज्ञान अन्धेर बैठा मुख छुपाईआ। सो साहिब सुल्तान नाम जपे सौखा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। चरण प्रीती रखे धुर दी ओटा, सीस उपर ना कोए उठाईआ। मन वासना मन ना होए खोटा, कूड़ी क्रिया दए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। जन भगत कहे मेरा भगवान वचोला, मेला आपणा आपे आप कराईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां गोला, जुग जुग सेव कमाईआ। भगत कहे मैं गावां ढोला, निरगुण तेरा नाम ध्याईआ। भगवान कहे मैं भगतां अन्दर मौला, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच्चा शहिनशाहीआ। भगत भगवान इक्को रंग, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सेज इक पलँघ, इक्को सिँघासण सोभा पाईआ। इक्को प्रेम इक अनन्द, रस इक्को इक रखाईआ। इक्को गीत इक्को छन्द, ढोला इक्को इक सुणाईआ। इक्को मंज़ल इक्को पन्ध, पांधी इक्को रूप वटाईआ। इक्को तुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार इक हो जाईआ। इक्को सच दुआर जाए लँघ, इक्को एक एकँकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान मेल मिलाईआ। भगत भगवान होए मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। दोवें मिल के इक दूजे दा करन जाप, प्रेम प्रीती अन्दर साचा नाद वजाइंदा। नाता जुड़ाए पिता पूत बाप, पुरख अकाल खेल खलाइंदा। आत्म परमात्म बण सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे मार झात, पर्दा उहला आप उठाइंदा। सच दवारे सच प्रीती साचा बन्ने नात, एथे ओथे दो जहान ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान सोहण इक्को घाट, पत्तण साहिब सतिगुर इक वखाइंदा। भगत भगवान सच महल्ला, सति सतिवादी इक वसाईआ। इक दूजे दा फड़या पल्ला, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जोती शब्दी धार रला, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जरम कर्म दा मेट सल्ला, आवण जावण डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वसाईआ। भगत भगवान घर वसे एक, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सच दवारे मिले टेक, सति सतिवादी होए सहाईआ। अगला पिछला चुक्के लेख, कलम शाही कागज़ दए गवाहीआ। निरगुण आत्म निरगुण परमात्म दोहां बणया हेत, हितकारी आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां संग जुग जुग खेडे खेड, बण खिलाड़ी आपणा खेल रचाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्नां दस्से आत्म अन्तर आपणा भेत, अनभव प्रकाश पुरख अबिनाश इक्को वार कराईआ।

*** २५ चेत २०२१ बिक्रमी किरपा सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश ***

जन भगत कहे वेख मातलोक, प्रभ आपणा ध्यान लगाईआ। तेरी कोई ना रखे ओट, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां विच्चों पढ़ के श्लोक, रसना जिह्वा रहे गाईआ। मन वासना मंगदे मोख, मुफ्त झोली अग्गे डाहीआ। तेरा नूर तक्के ना कोई निर्मल जोत, साध सन्त अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तूं बैठा रिहों ख़ामोश, गुंग मुख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। जन भगत कहिण उठ वेख तक्क, ताकतवर आपणी लै अंगड़ाईआ। चार कुण्ट नव खण्ड सत्त दीप सब ते प्या शक़, विष्न ब्रह्मा शिव शंकर बैठा अक्ख चुराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दवारे आए नट्ठ, लोकमात नाता जगत तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग लिख के आए दस्स, अक्खरां हरफ़ां नाल समझाईआ। अन्तिम सारे कर के बस, बसते आपणे बैठे बंधाईआ। किसे दा चले ना कोई वस, वास्ता सारे रहे पाईआ। सिख्या दे दे गए थक्क, थकावट सब दे उते छाईआ। तेरा मिले ना नाम रस, रस्ता हक़ हकीकत विच्चों ना कोए दरसाईआ । सति दवारा नज़र ना आए हट्ट, वणजारे घर घर बहि बहि कूड़ा वणज रहे कराईआ। फिरी दरोही मनमति, गुरमति ना कोए रखाईआ। बिन तेरे पारब्रह्म कोई ना रखे पत, सच सहाई नज़र कोए ना आईआ। नेत्र खोल्ह अगम्मी अक्ख, लोचण आपणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ । जन भगत कहिण उठ प्रभ जाग, जागण वेला आईआ। सृष्ट सबाई होई काग, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। घर घर लग्गी कूड़ी आग, अग्नी तत जलाईआ । अन्तर उपजे ना किसे राग, गीत अनाद ना कोए सुणाईआ। कन्त मिले ना कोए सुहाग, नार दुहागण दए दुहाईआ। सच सरनाई कोई ना जाए लाग, चरण कँवल ना कोए वड्याईआ। तेरे नालों बिन भगतां सब ने कीता त्याग, नाता तोड़ बैठे मुख भवाईआ। दीपक जोत ना जगे चिराग़, शमा सच ना कोए चमकाईआ । सच दवारयों दूर दुराडे रहे भाग, नेरन नेरा हो के नेत्र दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए लाजवाब, लेखा तेरी झोली रहे सुटाईआ। परम पुरख सुल्तान श्री भगवान जन भगत तेरे मुहताज, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। सीस जगदीश सोहे ताज, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। सच स्वामी कारज कर रास, करता पुरख कुदरत तेरा रूप तेरे विच्चों तेरी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा घर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ हो दलेर, बल आपणा आप धराईआ। पिछला छड्ड दे हेर फेर, अग्गे साचा राह चलाईआ । लेखा चुक्के ज़बर ज़ेर, हमज़ा हरफ़ ना कोए पढ़ाईआ। दूर दुराडे वेख नेरन नेर, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया लहिणा देणा

दे नबेड़, शिरकत मिटे जगत लोकाईआ। दो जहानां वाली धुर दे शेर, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा वेस वटाईआ। जन भगत कहिण श्री भगवान, दो जहानां वाली दोज़ख़ बहिश्त तेरा राह तकाईआ । निरगुण सरगुण बण पाली, प्रितपालक हो सहाईआ। लख चुरासी जीव जंत बण अयाली, मूर्ख मुग्ध पार कराईआ। सति दवारा होया ख़ाली, साचा नाम झोली विच ना कोए टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण माया भुल्ल करन दलाली, वणज हक़ ना कोए कराईआ। तेरा नूर नज़र ना आए जोत अकाली, अकल कलधारी तेरा भय सिर ना कोए टिकाईआ। फल दिसे ना किसे डाली, पतझड़ बैठी रूप वटाईआ। मन वासना मति होई मतिवाली, मतलब आपणा अग्गे सब नूं रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख अग्नी तत तपे कुठाली, सांतक सति सति ना कोए कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल बेमिसाल, मिसल आपणी अगली दे समझाईआ।

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी गुरदित्त सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश *

६३५

१६

सच दवारा वेख्या चढ़, जन भगत रहे जणाईआ। पुरख अकाल मिल्या अग्गे खड़, सति सरूपी नज़री आईआ। जिन्हां लोकमात मिल्या वर, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जगत पंज तत काया कहे गया मर, भगत आत्म कहे परमात्म विच समाईआ। जन्म कर्म दा चुक्कया डर, आवण जावण पन्ध रिहा ना राईआ। सच भूमिका मिल्या अस्थान घर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस घर वसे पुरख अकाल नरायण नर, नर हरि आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा रिहा चुकाईआ। भगत कहे मैं वेख्या उह, जो आदि जुगादि बणत बणाइंदा । कलयुग अन्त कहिण पंज तत नाता छड्डुया छब्बी पोह, जोती जोत समाइंदा। अन्तिम भगतां जोगा गया हो, भगवन भगतां अन्दर डेरा लाइंदा। जिस आत्म नाल परमात्म बण के गया छोह, तिस शहिनशाह आपणे घर वसाइंदा। सति प्रकाश दी दे के लो, लोआं पुरीआं पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर वसाइंदा। जन भगत कहे पाया महल अपार, महिमा गणत गणी ना जाईआ। दीआ दीपक जोती होए उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदे करन निमस्कार, निउँ निउँ बहिण ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दवारे दस्स भिखार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। भगत जन उच्ची कूक कूक बोलण जैकार, तूं मेरा सच गोसाईंआ। तेरे पिच्छे नाता छोड़ सर्ब संसार, प्रीती प्रीतम इक्को इक निभाईआ। मंज़ल मिली सच दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे घर वसाईआ।

६३५

१६

जन भगत कहे घर पाया सच्च, वज्जी सच नाम वधाईआ। जोती अन्दर जोत रूप हो के गया रच, रचना वेखी बेपरवाहीआ। प्रेम प्यार दा अनोखा आया रस, बिन रसना जिह्वा दित्ता चखाईआ। बिन बत्ती दन्दां प्या हस्स, हँस मुख आपणा राग अलाईआ। मैं वेख होया बेबस, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। परम पुरख परमात्म वेख निरगुण धार विरला चरणां उते गया ढट्ठ, चरण उह जिस दा रूप रंग ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमात्म बण स्वामी सिर उते रख्या हथ्थ, दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत रिहा पार कराईआ। भगत कहे घर पाया सच अनन्द, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। कोटन जन्म दा मेट के पन्ध, मंज़ल बैठा आसण लाईआ। लेखा चुक्कया नार दुहागण रंड, कन्त सुहागी इक प्रनाईआ। अग्गे लोड़ ना रही की मंगां मंग, अनमंगी दौलत प्रभ ने झोली पाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़ के रंग, रंगत इक्को दिती वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरे संग, जन भगत होए ना कदे जुदाईआ। वेख हैरान दूर दुराडे देवत सुर पावण डण्ड, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा तराईआ। जन भगत कहिण रोवण देवत सुर, बिहबल हो के देण दुहाईआ। वेखो जन भगतां मेला मिल्या धुर, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। चढ़ के आए साचे घोड़, घोड़ा अस्व श्री भगवान आपणा इक वखाईआ। नेत्र शरमाया चन्न चकोर, दोवें बैठे मुख भवाईआ। प्रभ अचरज खेल करी होर, होड़ा सस्से उपर लगाईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़, निहकर्मी कर्म कांड दित्ता मुकाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े लए जोड़, जोड़ी आपणे नाल मिलाईआ। फड़ आत्म परमात्म चाढ़ी तोड़, तुरत आपणा संग रखाईआ। तिस साहिब अग्गे नहीं कोई ज़ोर, जो चाहे सो करे कराए करनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां सच दवारे सचखण्ड दए वड्याईआ।

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी गोबिन्द सरन श्रीवासतव *

धूप दीप आरती कहे घृत, बाती सुगंधी रही कुरलाईआ। प्रभू दर वेख्या तेरा फिरत फिरत, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। तूं खोलणहारा सुरत निरत, नर नरायण इक अख्वाईआ। चिन्ता सोग गंवा हरख, जगत आसा पूर कराईआ। मात गर्भ बख्श उलटा बिरख, फुल फलवाड़ी जगत महकाईआ। जिस वस्तू नूं रहे तरस, सो अनमुलड़ी दात झोली पाईआ। करे अरज़ोई नार मर्द, स्त्री पुरुष ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाता जगत रखाईआ। धूप दीप संग कहे फूलन माला, महक आपणी सच महकाईआ। हे दीना बंधप दीन दयाला, दयानिध तेरी वड्याईआ। सचखण्ड

दुआर तेरी सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण बहि बहि खुशी मनाईआ। तेरे दर मंगण शाह कंगाला, दो जहान झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण बणदा रिहों प्रितपाला, प्रितपालक इक अख्वाईआ। बख्शश विच्चों बख्शश करदे पंज तत दा बच्चा बाला, बालक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेड़ा दे वसाईआ। फूल कहे सुण दीप घृत जोती, अग्नी हवन समझाईआ। मैं सच सच्ची इक्को सोची, सच समझ नाल समझाईआ। जिस दे नाल रविदास चुमारा मोची, मुश्किल सब दी हल्ल कराईआ। तुहाढ्ढी मंज़ल रहिण ना देवे औखी, औखेरी सौखी दए बणाईआ। नाता जुड़ाए पुत्त पोती, पिता पूत होए सहाईआ। मात सोहे साची गोदी, घर खुशीआं रंग वखाईआ। सिर चोटी ना रखणी ना बोदी, बोध ज्ञान इक्को वार दए दृढ़ाईआ। बेशक ताअने देवण लोकीं, लोक लज्जया परे हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सुगंधी कहे मैं सच खुशबू, गुलशन विच्चों महक महकाईआ। प्रभ देवणहारा सति सरूपी बख्शश रूह, रहमत आपणी आप कमाईआ। जन भगतां वस्त अमोलक देवे जो ध्यान लगायण तू ही तू, तेरा मेरा इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। घृत कहे मैनूं आवे घिरना, सच सच समझाईआ। प्रभ नूं मिल के दूजे दर फेर ना फिरना, पूरी आसा इक्को दए कराईआ। सच दवारयों सति दा होवे निरना, नर नरायण आप दृढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत जिस दी जोती किरना, सो किरन तुहाढ्ढे अन्दर दए टिकाईआ। जिस दा भेव हरिजन जाणे विरला, दूजे समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सदा वड्याईआ। फूल कहे मैं माला मणका, तन सोभा सच सुहाईआ। मेरा शृंगार पंज तत तन का, ततव रंग रंगाईआ। मेरा भगवान मालक जननी जन का, जन जणेंदी वेख वखाईआ। आपे घड़े आपे भंनदा, घड़न भंनणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जो भगत एहदे नाल प्रेम प्रीती अन्दर मन्नदा, तिस मनसा पूर कराईआ। घर प्रकाश चाढ़े सुत दुलारे चन्न दा, चन्न नूर वांग रुशनाईआ। एहो खेल श्री भगवान दा, भगतां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धूप दीप घृत हवन पवन फूल माला मनसा आसा सब दी पूर कराईआ।

* २५ चेत २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर उतर प्रदेश *

साहिब सुल्तान पुरख समरथ, सति सतिवादी तेरी सरनाईआ। हरि पुरख निरँजण सिर दे कर रखणा हथ्थ, दो जहान तेरी वड्याईआ। एकँकार देणी ब्रह्म मति, धुर दी धार सच पढ़ाईआ। आदि निरँजण निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अज्ञान

अन्धेर चुकाईआ। अबिनाशी करते साचे मण्डल वखौणी रास, हरि गोपी काहन नचाईआ। श्री भगवान भाग लगाउणा रसन स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सर्ब गुण तास, दीन दयाल तेरी ओट तकाईआ। परमात्म आत्म देणा सच्चा साथ, धुर दा संग निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ करन अरदास, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। परवरदिगार तेरी आस, शाह सुल्तान तेरी ओट तकाईआ। मुकामे हक़ तेरा खेल तमाश, जलवा नूर ज़हूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सच वड्याई दए भगवन्त, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे मंगत, दर दरवेश अलख जगाईआ। तेरा भेव कोई ना जाणे पांधा पंडत, मुल्लां शेख़ ना कोए चतुराईआ। सृष्ट सबाई नव नौ चार गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख चुकाउणा बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे झुक, दरगाह साची सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धारों उठ, सचखण्ड साचे तेरी जोत रुशनाईआ। जन भगतां उपर आ के तुठ, मेहर नज़र नैण उठाईआ। कलयुग वेख जूठ झूठ, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। साचा दिसे ना कोई पूत, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पड़दा दए चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, दर घर साचे झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबँग, सति सतिवादी तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। नौ खण्ड पृथमी भेख पखण्ड, सत्त दीप कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। रसना जिह्वा गाउँदे सारे बत्ती दन्द, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। माया ममता रसना जिह्वा लाउँदे गंद, अमृत जाम रस ना कोए चखाईआ। निज आत्म परमात्म मिले ना किसे अनन्द, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जन्म कर्म दी टुटी पाए कोई ना गंढ, नाता बिधाता संग ना कोए रखाईआ। सच स्वामी काया मन्दिर अन्दर पाए कोई ना ठंड, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सुरत सवाणी होई रंड, शब्द हाणी मेल ना कोए मिलाईआ। साची सेज आत्म चढ़े ना कोए पलँघ, लख चुरासी नार कन्त बैठे रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर वेखणा थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन उडीक, निज नेत्र लोचण ध्यान लगाईआ। परम पुरख परमात्म पूरब लेखा वेख तारीख़, वार थित आपणी आप जणाईआ। लहिणा देणा चुका लाशरीक, सिरकत मेट जगत ख़ुदाईआ। साचा कलमा नबी रसूल दे हदीस, हज़रत इक्को कर पढ़ाईआ। चरण कँवल बख़्श प्रीत, प्रीतम तेरी ओट रखाईआ। नाम भण्डारा दे बख़्शीश, बख़्शश रहमत आपणी आप वरताईआ। लहिणा देणा चुका ऊँच नीच, राउ रंक मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म सच सुणा धुर दा गीत, मन्दिर मसीत काया काअबा नज़री आईआ। मन वासना

६३८
१६

लै जीत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नज़री आए हस्त कीट, हर घट बैठा बेपरवाहीआ। दर ठांडे मंगीए भीख, अलख इक्को इक जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, अन्तर कूक कूक सुणाईआ। परम पुरख प्रभ वेख आपणे नैण, निज लोचण इक खुल्हाईआ। कलयुग सृष्ट सबाई डुब्बी डूंग्घे वहिण, पार किनारा नज़र ना कोए रखाईआ। जन्म कर्म दा मुकाए ना कोई लहिण देण, झगड़ा झूठ ना कोए मिटाईआ। नाता तुटा भाई भैण, साक सज्जण सैण संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन अरदास, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा प्या वरन बरन दीन मज़्हब गोत कूड़ी जमात, साची करे ना कोए पढ़ाईआ। सरगुण हो के जो लोकमात आए आख, आख़र तेरा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा दर, दर दरवाज़ा जगत खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। कूड़ी क्रिया कट निसंग, कसुंभड़ा रूप नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत दे अनन्द, घर साचे मिले वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले जन भगत तेरा दवारा वेखण लँघ, कूड़ी मंज़ल पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म मिल के गावण छन्द, साचा ढोला इक सुणाईआ। सुरत सवाणी रहे ना रंड, शब्दी कन्त इक हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए तअजब, हैरानी कलयुग अन्तिम छाईआ। हरि जू खेल तेरा अजब, निराली धार बेपरवाहीआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब, ज़ात पात करे लड़ाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ ना कोई अदब, धीआं भैणां रहे तकाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोई कदम, साचा राह नज़र किसे ना आईआ। शाह सुल्तान राज राजान करे ना कोई अदल, अदालत हक़ ना कोए वखाईआ। किरपा कर के कूड़ी क्रिया कलयुग बदल, सच्चा मार्ग इक वखाईआ। जन भगतां मिले आपणी मंज़ल, पांधी हो के पन्ध मुकाईआ। नाम निधान श्री भगवान नग़मा सुणा साची ग़ज़ल, अनरागी आपणा राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी ढठ्ठ, पुरख अकाल रहे जणाईआ। साडे रिहा नहीं कुछ वस, वास्ता तेरे नाल जणाईआ। तेरी झोली सौंपया तेरा हक़, हकीकत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। साडे भाण्डे होए सक्खणे, वस्त नज़र कोए ना आईआ। जो वक्त वेला सुहञ्जणा आए दस्स, बीस बीसा दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मारी सब दी मति, बुध विवेक ना कोए रखाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वड्याईआ।

तेरे मिलण दी किसे ना खुल्ही अक्ख, निज नेत्र करे ना कोए रुशनाईआ। मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा नौ दुआर रहे नट्ठ, अट्ठे पहर होए हल्काईआ । साचे मन्दिर उच्च महल्ले घर स्वामी कोई ना जावे वस, मेला सच ना कोए मिलाईआ। सब दे ख़ाली दिसण हथ्थ, पापां भरी लोकाईआ। ख़ाली गठड़ी खोल्ह के वेख गट्ठ, लीरो लीर नज़री आईआ। फिरी दरोही तीर्थ तट, जगत काअबा रिहा कुरलाईआ । साचा नज़र ना आए हट्ट, वणज नाम ना कोए कराईआ। साधां सन्तां जीआं जंतां साबत रिहा ना किसे जत, धीरज सन्तोख सति संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी रहे ढट्ठ, दर ठांडे सीस निवाईआ। लेखा वेख तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध फोल फुलाईआ । नव नौ चार जुग चौकड़ी गई लँघ, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। नाम निधान वजा मृदंग, ताल तलवाड़ा इक रखाईआ । सन्त सुहेले जन भगतां पा ठंड, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जन्म कर्म दी टुटी गंढ, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। गीत सुहागी गाओ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। अंगीकार हो के लगा अंग, साची गोदी गोद उठाईआ। निज आत्म दे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। भेव खुल्हा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा लाहीआ । पवण स्वास तेरा दम, रसना जिह्वा जगत महकाईआ। हरख सोग मिटा ग़म, खुशी इक्को इक प्रगटाईआ। भाण्डा भरम भउ दे भन्न, सच सुच घर साचे दे वसाईआ। निरगुण जोत चाढ़ चन्न, महल अटल होए रुशनाईआ। साचा राग सुणा कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। मन वासना मेट मन, मन का मणका आप भवाईआ । भाग लगा साढे तिन्न हथ्थ तन, ततव तत दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़, चरण कँवल सीस टिकाईआ । करते पुरख कल आपे बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। तुध बिन किसे हथ्थ ना दिसे डोर, शाहसवारा रहिण कोए ना पाईआ । जन भगतां तेरी साची लोड़, गुरमुख गुरसिख हरिसन्त बैठे ध्यान लगाईआ। आपणा मन्त्र फुरना दस्स फोर, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, जोत निरँजण डगमगाईआ। बाहर कढु पंजे चोर, धाड़वी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलकाती वेख वखाईआ। कलकाती वेख करतार, कुदरत कादर तेरी नजरी आईआ । चारों कुण्ट दिसे अँध्यार, सच सुच ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपस विच करन गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा हाल सुणाईआ। दर मंगण बण भिखार, धुर दी अलख सुणाईआ। किरपा कर परवरदिगार, मेहरवान वेस वटाईआ । जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। कागज़ कलम शाही लिख लिख गई हार, बिन हरि तेरे सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। लख चुरासी हुन्दी

६४० १६

दिसे ख्वार, ख़ालक ख़लक मेल ना कोए मिलाईआ। तअल्लुक टुट्टा परवरदिगार, फ़लक दिसे ना कोए ख़ुदाईआ। दरस मिले ना दीद दीदार, नूर ज़हूर ना कोए चमकाईआ। ग़फ्लत विच सुत्ता संसार, आलस निंद्रा परे ना कोए हटाईआ। मजलस करे ना हक़ प्यार, महिबूब दर ना कोए मिलाईआ। निरगुण मिल्या ना हरि निरँकार, निरवैर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के दे धुर दा वर, सच स्नेहड़ा इक समझाईआ। सच स्नेहड़ा दे जा, आगमन तेरा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा राह रहे तका, तकवा तेरे उते रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान बणे गवाह, शहादत सारे रहे भुगताईआ। परम पुरख परमात्म आत्म बणना सच मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कलयुग जीव माया भरमे भुल्ले आपणा राह, रहिबर नज़र कोए ना आईआ फड़ बांहों गले लगा, डुब्बदे पाथर पार कराईआ। नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हा, नूरो नूर कर रुशना, जलवा वखा सच खुदा, खुदी सब दी दे मिटाईआ। जो तैथों होए जुदा, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख साचा दर, दर दरवेश वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मारन ताअना, सच श्लोक इक जणाईआ। किरपा कर श्री भगवाना, भगवन तेरी ओट रखाईआ। तेरा लेखा दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी शरनाईआ। नाउँ निरँकार अगम्म अथाह तेरा गाणा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर तेरा मकाना, थिर घर तेरा चरण कँवल सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी तेरा धुर फ़रमाणा, नाम संदेसा इक्को इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा बाल याणा, दर दरवेश निउँ निउँ लागण पाईंआ। पंज तत काया चोला तेरे हुक्मे अन्दर पहरया बाणा, लोकमात जुग जुग सेव कमाईआ। अन्तिम सारे मन्न के गए भाणा, सद भाणे विच समाईआ। तेरा दरस्स के गए सच निशाना, नछावर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, घर मन्दिर वेख वखाईआ। घर मन्दिर वेख आ के ठाकर, साहिब सतिगुर दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया डूंघा सागर, भँवरी रूप भँवर रही वटाईआ। जन भगतां मिले ना कोई आदर, सच आदर्श ना कोए जणाईआ। किरपा कर करीम कादर, तेरी कुदरत रही कुरलाईआ। साचा वणज करा बण सौदागर, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। पिछली बदल कूड़ी आदत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण आ प्रभ नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख झेड़े, झगड़ा प्या जगत लोकाईआ। कूड़ी क्रिया पाए घेरे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। माया ममता लाए डेरे, दर दर घर घर बैठी सोभा पाईआ। हकीकत हक़ करे ना कोए नबेड़े, सच फ़रमाण ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, लहिणा देणा दए मुकाईआ। लहिणा देणा मुका जग, जग जीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं लग्गी अग्ग, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। साचे काअबे ना कोई हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए वखाईआ। धुन नाद ना वज्जे नद, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। तेरे नालों तेरे होए अलग, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। दर्शन मिले ना उपर शाह रग, नौ दुआर पन्ध ना कोए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया काया अन्दरों देवे ना कोई कढ्ढ, सच सुच ना कोए समाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, पंज तत ओढण नज़री आईआ। धुर दा मार्ग सारे गए छड्ड, भगती भगत ना कोए कमाईआ। तेरे मिलण दी खुल्हे ना किसे अक्ख, प्रतख नज़र कोए ना पाईआ। चार कुण्ट वांग सवान मन वासना रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। मिले मेल ना कमलापति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, पुरख अबिनाशी हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण आ के वेख आपणा वेला, थित वार समझ किसे ना आईआ। झगड़ा करे गुरु गुर चेला, चेला गुर ना कोए समझाईआ। साहिब सतिगुर मिले ना सज्जण सुहेला, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोत निरँजण चाढ़े ना कोई तेला, घर सगन ना कोए मनाईआ। तेरा समझ सके ना कोई खेला, अचरज प्रभ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख आपणी जगत लोकाईआ। जगत लोकाई वेख लुक, पर्दा उहला इक रखाईआ। सन्त सुहेले जन भगत अन्तर रोवण कर के मुख, लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरे विछोड़े दा लग्गा दुःख, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। तेरे मिलण दी लग्गी भुक्ख, प्रेम प्यास ना कोए बुझाईआ। सतिगुर हो के गोदी चुक्क, भगवन हो के सेव कमाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चतुर्भुज तेरे हथ्थ वड्याईआ। बिरहों वैराग सन्त सुहेले गए सुक्क, रत्ती रत्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। वेख समरथ प्रभ आपणी कार, करते तुध बिन नज़र किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा चलदा रिहा विवहार, विवहारी तेरी समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण लिखार, कातब बण के कलम चलाईआ। उच्ची कूक कूक गाउँदे गए वार, वारता तेरा नाम सुणाईआ। अक्खरां विच करदे गए इज़हार, हरफ़ां नाल कर पढ़ाईआ। कुतबख़ाने खोल्ह संसार, जगत विद्या कर रुशनाईआ। कलयुग अन्त सारे होए ख्वार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नाता रिहा ना चार यार, मुर्शद मुरीद ना कोए मनाईआ। ख़ाली दिसण गुरुदुआर, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे कुरलाईआ। तट किनारे रोवण ज़ारो ज़ार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पूजा पाठ हवन कर देवे ना कोई आधार, सुगंधी पवण ना कोए समाईआ। साची गुलशन ना कोए बहार, पत्त डाली फूल ना कोए महकाईआ। मिले मेल ना विछुंने यार, प्रेम प्रीत

ना कोए निभाईआ। नार दुहागण दिसे संसार, विभचार भरी लोकाईआ । जन भगत अन्तर करन तेरी पुकार, मन्त्र तेरा नाम ध्याईआ। बसन्तर लग्गी वेख रोवण हाहाकार, चारों कुण्ट कटुम्ब कुरलाईआ । उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण तेरा किसे ना मिले दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र खोल्ह नैण अक्ख उठाईआ। नेत्र खोल्ह प्रभू प्रभ अक्ख, आख़र तेरे अग्गे अरज़ोईआ। यारड़े वेख आपणा सथ, सत्थर तेरा सोभा पाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी गए ढह्, दोए जोड़ सीस निवाईआ। सदी बीसवीं साडी होई बस, बसते पिछले बन्न्ह वखाईआ। अग्गे सब कुछ तेरे हथ्थ, दस्तगीर तेरी सरनाईआ । जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, रक्षया करीं थाउँ थाईंआ। निरगुण सरगुण पौणी नथ्थ, नाम डोरी तन्द उठाईआ। कलयुग खेड़ा हुन्दा दिसे भह्, कूड़ी क्रिया बण भठयारा अग्नी डाहीआ। नज़र ना आए ब्रह्म मति, चौदां विद्या रही कुरलाईआ । चौदां लोक रहे नच्च, सांतक सति ना कोए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोई ना देवे रस, सच्चा जाम ना कोए प्याईआ । सब दा हक़ होया फक्क, फैसला प्रभू इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह इक रघराईआ। शाह पातशाह हरि निरँकारा, तख्त निवासी इक्को नज़री आइंदा । विष्न ब्रह्मा शिव जिस दा पसारा, शब्दी धार रूप प्रगटाइंदा। लख चुरासी घड़नहारा, घट घट मन्दिर सोभा पाइंदा। त्रै पंज रच अखाड़ा, सोहणी बणत आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग लेखा वेख वखाइंदा। कलयुग लेखा वेख वखावेगा। परम पुरख प्रभ आपणा वेस वटावेगा। जोती जामा वेस रखावेगा। शब्द नाद इक वजावेगा। निहकर्मी कर्म कमावेगा। दो जहानां सरन इक रखावेगा। आत्म परमात्म जो जन ढोला पढ़न, तिन फड़ बांहों आपणे रंग रंगावेगा। मंज़ल पौड़े साचे चढ़न, महल अटल इक सुहावेगा। लेखा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी गेड़ कटावेगा। सति सरूपी देवे दर्शन, सति सतिवादी इक्को नज़री आवेगा। लेखा चुक्के ज़ात पात बरन, वरन गोत ना कोए रखावेगा। नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नेत्र नूर चमकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बरां साचा संग रखावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, हरि करता सच जणाईआ। जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी करया खेल महान, महिमा अकथ कथ पढ़ाईआ। सो साहिब सतिगुर लेखा जाणे दीन दयाल, दीना बंधप बेपरवाहीआ। जो जुग चौकड़ी करे संभाल, नौ खण्ड सत्त दीप खोजे थाउँ थाईंआ। शाह सलतानां राज राजानां वेखे मार ध्यान, राउ रंकां पड़दा आप उठाईआ। शब्द अगम्मी साचा खण्डा कमाल, चिल्ला इक्को इक उठाईआ । तरकश

रखे हथ्थ महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखो आस, आहिस्ता आहिस्ता हरि जू रिहा जणाईआ। जो कुछ लेखा लिख्या वेद व्यास, पूरब पूरा दए कराईआ। जो मुहम्मद ईसा गया आख, आख़र वेखे चाईं चाईंआ। जिस नूं नानक कर के गया याद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। जिस नूं गोबिन्द कहि के गया बाप, पिता पुरख अकाल वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई वेखे आप, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। जो भगत भगवन्त करदे रहे जाप, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। तिन्नां बणे सज्जण साक, सगला संग रखाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। अमृत बूँद प्याए स्वांत, रस इक्को इक चखाईआ। नज़री आए हरि इकात, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जन भगतां पुच्छे हरि जू वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुहाए वेला, सुहञ्जणी रुत्त दए वड्याईआ। परम पुरख प्रभ फेरा पावे इक इकेला, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा गोबिन्द बणया चेला, घर साचे खुशी मनाईआ। सो लख चुरासी नालों हो के वेहला, हरिजन साचे लए उठाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां आत्म परमात्म करे मेला, दूई द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर खोज खुजाए थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणो श्लोक, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी रखी ओट, सीस जगदीश सच झुकाईआ। सो साहिब सुल्तान श्री भगवान सन्त सुहेले लए खोज, लख चुरासी अन्तर वेख वखाईआ। आत्म परमात्म साचे नाम दी देवे मौज, मौजूदा हो के झोली पाईआ। लहिणा चुकाए लोक परलोक, दो जहानां डेरा ढाहीआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, प्रकाश प्रकाश विच रखाईआ। आसा मनसा पूरी करे लोच, निज लोचण मेल मिलाईआ। अग्गे समझ दी रहे ना कोई सोच, सोच समझ आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत वडयाए लोकमात, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। नाम निधाना बख्शे अगम्मी दात, घर सज्जण सच वरताइंदा। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द इक चमकाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ दस्से साची गाथ, साचा ढोला जीव जंत आप पढ़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणाए इक जमात, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म पुरख अकाल दीन दयाल परवरदगार बंधाए नात, नाता आपणे संग जोड़ जुड़ाइंदा। चारे वेद पूरी करे ख्वाहिश, पुराण अठारां गंढु पवाइंदा। अठारां ध्याए पैंदी वेखे रास, मण्डल मण्डप गोपी काहन नचाइंदा। अञ्जील कुरानां कहे शाबाश, शहिनशाह मेहर नज़र टिकाइंदा। खाणी बाणी सिमरन पूजा जोग अभ्यास वेखे पाठ,

हवन घृत धूप दीप सुगंध फूलन खोज खुजाइंदा। जन भगतां अन्दर वड़ के करे अगम्मी बात, बातन आपणा मेल मिलाइंदा। निरगुण हो के वसे पास, सरगुण आपणा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण आपणी धार चलाइंदा। नर नरायण चलाए धार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जिस दा लेखा मिले ना विच संसार, सो भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जिस दी सिफ्त करदे रहे जुग चार, खाणी बाणी राग अल्हाईआ। जिस दे दर ते मंगदे रहे गुरू अवतार, बण भिखक झोली डाहीआ। जिस नूं सजदा करे निउँ निउँ निमस्कार, सो जगदीश जगदीश्र रूप वटाईआ। जिस दा अन्त पावे ना पारावार, अन्त कहिण विच ना आईआ। जिस दी मजलस धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा तख्त अगम्म अपार, पावा चूल ना कोए रखाईआ। जिस दा नूर जोत उज्यार, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। जिस दा रूप रंग रेख नज़र ना आवे विच संसार, चक्र चिहन् ना कोए समझाईआ। सो साहिब करता पुरख करनी करे करनेहार, कातिल मक्तूल दोवे वेख वखाईआ। जिस दा चारे खाणी चारे बाणी देंदी रही इशतयार, लोकमात लिख लिख लेख पुचाईआ। सो खेल करे परवरदिगार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। मुरीद मुर्शद लए उठाल, गुरमुख सूफी रंग रंगाईआ। महिबूब मुहब्बत करे सांझा यार, मुहब्बत देवे जगत लोकाईआ। श्री भगवान होए ख़बरदार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शब्द संदेसा नाम सुणाईआ। रंग रलीआं माणे भगत दुआर, मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। हरिजन वेखे चाउ घनेरा, वज्जे सति सति वधाईआ। श्री भगवान जन भगत कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे काया मन्दिर मेरा लग्गा डेरा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सुहञ्जणा होया खेड़ा, रुत्त रुत्तड़ी नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगत तरावणहारा एक, एकँकार आप अख्वाइंदा। सतिजुग साचे देवे टेक, कलयुग अन्तिम मूल झोली पाइंदा। ग़रीब निमाणयां कमल्यां करे बुध विवेक, विवेकी आपणी धार समझाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंच विकार मोह मिटाइंदा। दरस दिखावे नेतन नेत, निज घर साचे नज़री आइंदा। सच प्रीती दस्से हेत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। अगम्म अथाह खोल्हे भेत, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया हरि करता वेख वखाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। समरथ पुरख जन भगतां ढोआं देवे ढो, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। धुर दरबार दी देवे साची सो, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। हँ ब्रह्म करे लो, प्रकाश इक्को नूर रुशनाईआ। अन्तर आत्म निझर झिरना देवे चो, रस सच्चा सच टपकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जाए छोह,

धुर दा मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे गोद उठाईआ। हरिजन गोदी चुके आप, श्री भगवान दया कमाइंदा। करे प्यार जिउँ पिता पुत्तर बाप, गोद सुहञ्जणी लाड लडाइंदा। अन्दर वड़ काया मन्दिर चढ़ दस्म दवारी खोल्ह के दस्से जाप, अजपा जाप आप समझाइंदा। कूड़ी शाही मेटे पाप, तृष्ना तृप्त आप कराइंदा। हो सहाई अनाथां नाथ, मेहर नज़र इक उठाइंदा। किरपा कर रसूल पाक, पतित पापी वेख वखाइंदा। लहिणा देणा चुका ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक इक्को रंग रंगाइंदा। कूड़ कुड़यारा जन भगतां कदे करे ना घात, घाउ डूंघा ना कदे लगाइंदा। सतिगुर पूरा शब्दी सूरा सदा वसे पास, निरगुण सरगुण विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। नर हरि कार करे करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, गुरमुख गुर गुर भेव चुकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा हट्ट चलाईआ। एथे ओथे दो जहान जींवदयां मरयां सदा करे संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची दरगाह सचखण्ड दवारे दए बहाल, घर देवे माण वड्याईआ। राए धर्म चित्रगुप्त लाड़ी मौत नेड़ ना आए विच जहान, दूर दुराडा दए दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन साचे जाणा जाग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। लख चुरासी विच्चों तेरा भाग, श्री भगवान आप वंडाइंदा। दुरमति मैल धो के दाग़, स्वच्छ सरूपी रूप वखाइंदा। हँस बणाए काग, कागों हँस उडाइंदा। घर दीआ बाती जगे चिराग़, घर कमलापाती डगमगाइंदा। घर मेला कन्त सुहाग, नार विछुंनी जोड़ जुड़ाइंदा। किरपा करे गुरू महाराज, महिबूब मुहब्बत सच कमाइंदा। जन भगत मिलण दा सदा रहे मुहताज, मुरीद मुर्शद आपणे घर वसाइंदा। करे खेल ग़रीब निवाज, ग़रीब निमाणे गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग विथ्या वेख वखाइंदा। कलयुग विथ्या वेखे नरायण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण कुछ ना पाईआ। सृष्ट सबाई डुब्बी डूंघे वहिण, मझधार मझधार पार ना कोए कराईआ। नुक्ता किसे समझ ना आया ग़ैन, ऐन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अल्फ़ रो रो पावे वैण, ये युगती ना सच्ची सकी समझाईआ। परवरदिगार होया तरफ़ैन, बैठा मुख भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो बणदे रहे चिट्ठी रसाइण, हल्कारे हो के हुक्म वजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सदी चौधवीं कोई ना आए लैण, तअल्लक सारे बैठे तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पीर पैगम्बर वेख अन्धेरा घुप्प, कलयुग अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। चन्द चांदनी विच गए छुप्प, पर्दा उहला इक जणाईआ। उम्मत उम्मती नाता गया तुट, साचा बन्धन ना कोए रखाईआ। अगला पैंडा गया मुक्क, पिछली चले ना

कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक जणाईआ। धुर संदेसा देवे भगवन्त, दो जहान जणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त आप समझाइंदा। पुरख अकाल अगम्मी मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। जिस दी आदि जुगादि महिमा अगणत, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। कोई समझ ना सके पांधा पंडत, जगत विद्या हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक दरसाइंदा। साचा मार्ग दस्से भगवान, भगवन दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन ध्यान, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी इक ज्ञान, आत्म परमात्म धुर पढ़ाईआ। अनहद नाद सच्ची धुन कान, अनहद नादी राग सुणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, सच सरोवर दए नुहाईआ। निर्मल दीआ जोती जगे महान, घर बाती इक रुशनाईआ। साचा साकी बणे नौजवान, नाम प्याला जाम प्याईआ। काया मन्दिर भाग लगाए सच मकान, महल अटल सोभा पाईआ। आत्म सेजा सोहे श्री भगवान, सच सिँघासण डेरा लाईआ। धुर संदेसा देवे आण, इक्को इक करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान जिस दा देवे फ़रमाण, धुर दी धार समझाईआ। सो परम पुरख परमात्म आत्म वेखे आण, निरन्तर ब्रह्म खोज खुजाईआ । सन्त सुहेले भगत भगवन्त गोदी चुक्के आण, सेवक चाकर हो के सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआर बहि के खुशी मनाण, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन दिवावे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। गुरमुख गुर गुर वेखे चन्द, नूर नुराना नूर रुशनाइंदा। खुशी कराए बंद बंद, बंदगी आपणा नाम समझाइंदा। कूड़ी क्रिया अन्दरों कढ्ढ, सच सुच वरताइंदा। नौ दवारे पार हद्द, घर दसवें वेख वखाइंदा। विश्व बणाए साची यद्द, यदप इक्को रंग चढ़ाइंदा। सच निरबाण देवे चौथा पद, घर साचा सोभा पाइंदा। जन भगत वेखे अन्दर लँघ, सच पलँघ डेरा लाइंदा। कर निमस्कार दर ठांडे लए मंग, मांगत भिखक आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबँग, वरभण्ड खोज खुजाइंदा। वरभण्ड खोजे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर वड वड्याईआ। जन भगतां मेटे कूड़ा भरम, माया ममता मोह चुकाईआ। लेखा जाणे पूरब जन्म, जन्म कर्म दए वड्याईआ। नाता तोड़ वरन बरन, बख्शे इक सरनाईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ । जो गुरमुख गुरसिख लागे चरण, तिन्हां चार जुग सुत्तयां फेर ना कोए उठाईआ । दरगाह साची सचखण्ड दवारे वड़न, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरनी सीस धरन, मस्तक टिक्का धूढ़ ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगत तरावणहारा प्रभ, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ।

कोटां विच्चों थोड़े लभ्भ, मदि जाम नाम प्याईआ। लेखे लाए काया माटी नाड़ी मास चम्म हड्ड, ततव तत खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गोद बहाईआ। सन्त सुहेले चुक्के गोद, मेहरवान दया कमाइंदा। अन्तर हिरदा देवे सोध, शुधी आपणा नाम वखाइंदा। सचखण्ड दवारे बख्शे मौज, सोहणा घर सुहाइंदा। सच प्रीतम करे चोज, चोजी आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले संग निभाइंदा। सन्त सुहेला गुरमुख रूप, लोकमात मिले वड्याईआ। होए सहाई भूपन भूप, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। किरपा करे सति सरूप, सति सतिवादी आपणे सति विच मिलाईआ। नाता छुट्टे चारे कूट, दहि दिशा तन्द तुड़ाईआ। सचखण्ड दुआर बणाए सच सपूत, पिता पुरख अकाल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लोकमात कराए कूच, दरगाह साची कूचा गली इक सुहाईआ। गुरसिख कहे मोहे मिल्या गुरदेव, सच स्वामी नज़री आईआ। जो लेखे लाए सेव, सेवक आपणे नाल मिलाईआ। किरपा करे अलख अभेव, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सिफ्त करे ना रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए चतुराईआ। सद वसे धाम इक निहकेव, निहचल डेरा लाईआ। जन भगतां देवे अगम्मी मेव, चौदां रतन नैण शरमाईआ। मस्तक लाए साचा थेव, चरण धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बेड़ा पार कराईआ। गुरसिख बेड़ा होवे पार, नईया नौका नाम चढ़ाइंदा। गुरमुख वेखे सच दरबार, जिस गृह दीआ बाती इक रुशनाइंदा। सन्त सुहेला वसे धाम न्यार, जिस गृह स्वामी सतिगुर सोभा पाइंदा। भगत बोले भगवन जैकार, भगवान भगत नाम सालाहइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। कोटन कोटि भेज गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सेव लगाइंदा। हुक्मे अन्दर खेल करे निरँकार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचे भगतां दए आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरिच्छत दोज़ख़ बहिश्त स्वर्ग नरक दोहां तों कर दए पार।

६४८
१६

* २६ चेत २०२१ बिक्रमी दिल्ली दरबार पहाड़ गंज *

परवरदिगार दए पैग़ाम, पेशीनगोई जणाईआ। शाह रूम कहे मैं सुणया एलान, आलमगीर करे पढ़ाईआ। उम्मत नबी रसूल दिसे महमान, चौदां तबक देण दुहाईआ। सदी चौधवीं होए हैरान, अमाम आपणा हुक्म वरताईआ। ख़ालक ख़लक बदले नज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। चोटी मुंने बण के आप हजाम, कलधारी आपणी कल धराईआ। पीर पैगम्बर करन

सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। लख चुरासी किसे ना आए पहचान, बेपहचान बेपरवाहीआ। नूरी कलमा वेखे इक मैदान, दो जहानां खोज खुजाईआ। मुश्किल भगतां करे आसान, रहमान रहमत इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शाह रूम कहे मैं होया महिरूम, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। बरदा दर बणा ममनून, सजदा सीस झुकाईआ। परवरदिगार दा पढ़या ना किसे हक़ मज़मून, मजलस सच ना कोए कमाईआ। शाह सुल्तानां लेखा चुक्के वांग फ़रऊन, फर्श अर्श दए दुहाईआ। नुक्ता नजर ना आए नून, ऐन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया मिटण वाला हजूम, हज़रत हुक्म सच वरताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा किसे ना लाया नजूम, भेव सके कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शाह रूम कहे वेख्या शाहकार, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। बिन अस्व बणया शाहसवार, लोक परलोक दो जहान चरणां हेठ रखाईआ। बिन काग़ज़ कलम लेख लिखे अगम्म अपार, शाही शकल ना कोए जणाईआ। नग़मा नज़म सुणाए धुर दी धार, नाद धुन वजाईआ। मैं वेख होया हैरान, नेत्र नैण शरमाईआ। जिस दी सिफ्त करे अञ्जील कुरान, परवरदिगार नूरो नूर नूर खुदाईआ। सो ख़ालक खेल करे महान, महिबूब आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ । शाह रूम कहे पीर पैगम्बर देण शहादत, पिछला लेखा अग्गे रखाईआ। अग्गे मुक्के जगत इबादत, मकतब नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार बेपरवाह बदले सब दी आदत, अदना आहला इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। शाह रूम कहे मैं सूफ़ीआं वेखी टोपी, पैगम्बरां सेली नज़री आईआ। काहनां नाल नच्चदी वेखी गोपी, सीता राम सति लई प्रनाईआ। गुर अवतारां हथ्थ फड़ाई वेखी सोटी, शब्दी धार जणाईआ। जन भगतां आत्मा चढ़दी वेखी चोटी, सच महल्ले सोभा पाईआ। साचे सन्तां जगदी वेखी जोती, निरगुण सरगुण करे इक रुशनाईआ। गुरमुख गाउँदे वेखे श्लोकी, साचा ढोला राग अल्हाईआ। गुरसिख मेल मिलाया वेख्या शौंकी, शहिनशाह आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक वरताईआ। रूम कहे मैं वेख्या रहीम, राज़क दाता बेपरवाहीआ। जिस दी अजब निराली ताअलीम, तुलबा गुर अवतार पीर पैगम्बर लए बणाईआ। जिस दा महल अटल आलीशान अज़ीम, अजब अजीब निराला नूर करे रुशनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी गहर गम्भीर ग़नीम, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। जिस दा रूप ना नर ना मदीन, जोती जाता परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस दी एथे ओथे दो जहानां करे ना कोए तक्सीम, लोक परलोक वंड ना कोए वंडाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल आपणी धार रखे महीन, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। शाह

पातशाह होए शहिनशाह दर बरदा बणे मस्कीन, गुलाम आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघराईआ। शाह रूम कहे मैनूं याद आया जेठ नौ, पिछला लेखा समझाईआ। नव नौ चार वेख्या भौं, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। दहि दिशा माणस वेखे बणे काउँ, हँस काग रूप वटाईआ । जननी जन जणेंदी नज़र ना आई माउँ, पिता गोद ना कोए पूत सुहाईआ। सति सतिवादी पकड़े कोई ना बांहों, फड़ गले ना कोए लगाईआ। सिर रखे ना ठंडी छाउँ, समरथ देवे ना कोए वड्याईआ। सिर झुके ना साचे पाउँ, चरण कँवल ना कोए सरनाईआ। अदालत सच ना करे कोए न्याउँ, जगत मुख़ालफ़त विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। शाह रूम कहे मैं मिटावां शक़, शख़सीयत सब नूं दयां समझाईआ। जिस दी हकीकत आदि जुगादी हक़, सो हाकम बेपरवाहीआ। मैं जलवा नूर ज़हूर ल्या तक्क, दाता दानी नज़री आईआ। वसणहारा घट घट, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा समाईआ। पीर पैगम्बरां सच सनुहुड़ा रिहा दस्स, दस्तावेज़ दस्त पिछला लेख फड़ाईआ। नेत्र खोल् वेखो अक्ख, वेला आख़र दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मरान आपणा हुक्म वरताईआ । हुक्मरान बणे महिबूब, मुजरा दो जहान वेख वखाइंदा। खेले खेल बहि के सच अरूज, ज़िमीं असमान फोल फुलाइंदा। चढ़ हक़ मंज़ल मक्सूद, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाइंदा।
९५० चौदां तबक वेख हदूद, हज़रत आपणा फेरा पाइंदा। कवण जन होए महफ़ूज़, मेहर नज़र कवण उठाइंदा। जोती जोत सरूप ९५०
१६ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आप दृढ़ाइंदा । शाह रूम कहे मैं वेख्या शायर, शरीअत १६
विच्चों बाहर नज़री आईआ। अगम्म अथाह बेमुकाम जिस दी सैर, सैरगाह दो जहानां कोलों बाहर रखाईआ। जिथ्थे कोई ना वड़े ऐर ग़ैर, हैबत सब दे उते छाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बरदे मंगदे मेहर, चरण सरन सरन चरण सीस झुकाईआ। नूर नुरानी शाह सुल्तानी तेरी लहर, आदि जुगादि इक्को धार वहाईआ । सच पैगम्बर दर दुआर मंगदे ख़ैर, ख़ैरीयत तेरे कोलों झोली पाईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान मिल के बण के मुशायर, मुशायरा तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। शाह रूम कहे मैं तक्कया अक्ख, अक्खीआं वालयां दयां जणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। बेपरवाह आया नट्ठ, पड़दानशीं पर्दा रिहा चुकाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, धुर दी करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया खेड़ा भट्ठ, सति सच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। शाह रूम कहे मैनूं याद आए पिछले हार, जो मस्तक सीस उते टिकाईआ। जिस दी जन भगत खिड़ी गुलज़ार, गुलशन सच नाम महकाईआ। तिस दी सुण सच्ची गफ़तार, गुफ़त

शुनीद खुशी मनाईआ। मुहब्बत करे बण के सांझा यार, रहमत विच्चों रहमत आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा लगाईआ। शाह रूम कहे मैं तक्कया उह नज़ारा, आपणी नज़र उठाईआ। जोती चमके नूर उज्यारा, सच करे रुशनाईआ। दो जहानां वेखणहारा आर पार किनारा, मझधार आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, पीर पैगम्बरां हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर स्वामी परवरदिगारा, पारब्रह्म बेअन्त अगम्म अथाह अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। शाह रूम कहे सब रहिणा शाद, शाकर सब नूं आप कराइंदा। कूड़ी क्रिया करे बरबाद, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। भगत भगवान सच दवारे करे आबाद, साची बस्ती नाम वसाइंदा। सति धर्म दे चाढ़ जहाज़, कूड़ी क्रिया पार कराइंदा। सदी चौधवीं सुण फ़रयाद, फाँसी सब दे गल लटकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद धुर दी सुणन आवाज़, हौली हौली आप जणाइंदा। कर किरपा जन भगतां खोल्हे राज़, पड़दा उहला आप उठाइंदा। सम्मत इकीसे सब दी अक्ल भुल्ले निमाज़, निमाज़ी नज़र कोए ना आइंदा। वेखो करनेहारा किवें करे फ़साद, फ़ैसला आपणे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, पिछला लेखा कराया याद, नव जेठ दिती दाद, शाह रूम मौलाना मुग़ालते विच कदे ना आइंदा।

* पहली वसाख २०२१ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच *

निरगुण सरगुण हो के सिफ़रा, बीस दए वड्याईआ। सरगुण निरगुण एका बणया फ़िकरा, फ़िकर आदि जुगादि चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा वेख ना सके शजरा, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार वसे वक्खरा, अगम्म अथाह सच सिँघासण डेरा लाईआ। नित नवित्त जुग चौकड़ी मर्द मर्दाना सब तों तकड़ा, बलधारी इक अख्वाईआ। जोत उजाला हरि गोपाला शब्द सरूपी बणया रिहा मकरा, फ़रेबी आपणा फ़रेब कराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भेंटा चढ़ाउँदा रिहा छत्रा बकरा, छुरी जगत हथ्थ फड़ाईआ। धुर संदेस नर नरेश निरगुण निरवैर इक्को रखे करड़ा, नित नवित्त आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी बाणी जिस ने पाया झगड़ा, लख चुरासी मन मति बुध करे लड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस ने लिखाया पत्रा, पाती आपणा नाम जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा जिस दा मन्ने ख़तरा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण होया ज़ीरो, ज़ाहर ज़हूर नज़र किसे

ना आईआ । जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं मन्नदे गए हीरो, हरि जू आपणा खेल अचरज रिहा वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त जिस दी मन्नदे रहे तदबीरो, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। रूप रंग रेख जिस दी समझ ना सके कोई तस्वीरो, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहीरो, बेअन्त नाउँ रखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी दाता वड पीरन पीरो, पैगम्बरो इक्को नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण मेला इक, एकँकार खेल रचाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म जित, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाए नित नवित्त, नर नरायण फेरा पाईआ। गुर अवतार जिस नूं पुरख अकाल कैहन्दे गए पित, पतिपरमेश्वर मन्न के सीस निवाईआ। सो करे खेल अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। निरगुण सरगुण सिफ़रा मेला, मिलणी जगदीश कराइंदा। जिस दी धार समझ सके ना कोई गुरु गुर चेला, चेला गुर इक्को नज़री आइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर बणया सज्जण सुहेला, धुर दा संग आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप दृढ़ाइंदा। दूआ सिफ़रा दूआ एका, बीस इकीस खुशी मनाईआ। जिस दी सारे रखदे गए टेका, सो टिक्का मस्तक रिहा वखाईआ। जोत नुरानी धरया भेखा, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। जिस दे हत्थ दो जहाना लेखा, लिख्त नज़र कोए ना पाईआ। जिस दी गोदी अन्दर गोबिन्द लेटा, घर साचे डेरा लाईआ। सो साहिब दीन दयाल पुरख अकाल पिछला करया चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दो जहानां बण के साचा नेता, नर नरायण हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर आपणे हत्थ रखे वड्याईआ। बीस इकीस पाए शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे हत्थ दे के डोर, तन्दी तेरे नाल बंधाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग प्रभ बणया रिहों चोर, चोरी चोरी आपणी खेल रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्लदा रिहों बांके छोहर, नढ्ढे आपणी सेवा लाईआ। हुक्मे अन्दर वखाउँदा रिहों ज़ोर, जाबर आपणा नाउँ धराईआ। आपणा मन्त्र दस्सदा रिहों फुरना फोर, रसना जिह्वा कर पढ़ाईआ। सारे कैहन्दे गए तेरी अन्तिम पए लोड़, लख चुरासी तेरी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दे चुकाईआ। बीस इकीस पाए डण्ड, डंका तेरा नाम लगाईआ। पिछली कीती सब दी गई हंढु, अगली कहाणी दे समझाईआ। तेरा गा गा सारे थक्के छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। तेरा नज़र ना आया पुरी अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द चन्द नूर कर रुशनाईआ। सच स्वामी आपणी खोल्ह के वेख गंढु, पड़दे विच्चों पड़दा लै फोलाईआ।

जिस दी सिफ्त ना करे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा राग ना कोए सुणाईआ। जेहड़ा लेखा बिन लिखिउँ कीता बंद, बिन बंदगीउँ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी सच सच वड्याईआ। वीह सौ इक्की कहे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पूरब लेखा दे वखाल, जो रख्या प्रभ छुपाईआ। मंग मंगे तेरा गोबिन्द बाल, बाली बुध ध्यान लगाईआ। इक सत्त पंज छे दा दे अहिवाल, हालत पिछली रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार दे समझाईआ। बीस इकीस कहे प्रभ पड़दा खोलू, खोलूण वेला नेड़े आईआ। हुण क्यों बैठा निरगुण बण अडोल, सचखण्ड निवासी सच दवारे डेरा लाईआ। दरगाह साची तोलणहारे धुर दा तोल, लोकमात कंडा लै उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मारदा रिहों रोल, अछल छलधारी आपणा छल जणाईआ। वेला रख याद जिस वेले पहलों गोबिन्द अमृत दिती पौहल, धुर दा जाम सच प्याईआ। पुरख अकाल बिन गोबिन्द दूजा कोई ना तेरे कोल, शहादत वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरा बिन कलम शाही लिख्या लेख फरोल, जिस दा हिंसा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। बीस इकीस कहे तेरा पिछला पत्र, पतित पावन तेरी याद कराईआ। जिस तेरा हंढ्ढाया सत्थर, यारड़ा इक मनाईआ। जगत हित ना वरोलया अथ्थर, हन्झू हार ना कोए बणाईआ। वीह सौ इक्की उस दा लेखा तूं लिख्या बिनां अक्खर, अक्खरां विच्चों साची सत्तर तेरा नूर नज़री आईआ। अज तेरी मेरी प्रेम प्यार दी होणी पकड़, सच अखाड़े विच वज्जे नाम वधाईआ। मैं गुरसिखां पिच्छे तेरे नाल लौणी टक्कर, तूं भगतां पिच्छे मेरा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा मोहे दे समझाईआ। बीस इकीस कहे मैं पावां रौला, रौणक तेरा नाम जणाईआ। मेरा भार करदे हौला, हौली हौली रिहा सुणाईआ। इक सत्त पंज छे दा याद रख कौला, कीता इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल हो हैरान, पूरब ध्यान लगाईआ। बीस इकीसा देवे सच ब्यान, गोबिन्द इशारे नाल समझाईआ। हुण बाला नढ्ढा नहीं नादान, माता गुजरी कुक्ख ना कोए रखाईआ। शब्दी सुत बण बलवान, बलधारी वेस वटाईआ। सच धर्म दा लै निशान, निशाना दो जहान झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द कहे शब्द नधड़क, धड़कण विच ना कोए रखाईआ। मेरा वेख खण्डा उह खड़ग, जेहड़ी बिन लोहार तरखाण घड़यां हथ्थ फड़ाईआ। मेरी सचखण्ड दवारे वेख मटक, बिन पैरां चलां चाईं चाईंआ। मेरी पिछली फोल फ़रद, सतारां सौ छपंजा बिक्रमी याद कराईआ। तेरे अग्गे कीती इक्को अर्ज़, आरज़ू तेरी झोली पाईआ। मैं तेरा तूं मेरा दोहां दा इक्को फ़र्ज़, फ़र्क कोए रहिण ना पाईआ।

तैनूं धोखा देण दी मर्ज़, अछल अछल्ल आपणा नाउँ रखाईआ। मैं अग्गे एस रीत तों देणा वर्ज, फड़ बांहों लैणा मनाईआ। करां खेल तेरे नाल असचरज, अचरज तेरे विच समाईआ। तूं मेरा सदा देणा कर्ज़, सिर तेरे एहसान चढ़ाईआ। तेरी छुरी मेरा सीस तेरी प्रेम करद, कत्लगाह तेरा नूर नज़री आईआ। तेरे नाल बिन अक्खरां करी लिख्त पढ़त, मिसल फ़ाईल विच बंद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर देणा वखाईआ। वीह सौ इक्की कहे कुझ, हौली हौली जणाईआ। निरगुण सरगुण ज़ीरो नूं बुझ, सिफ़रा तू ही नज़री आईआ। बिन सरगुण तेरा मूल ना कुछ, तेरी कीमत कोए ना पाईआ। तूं निरगुण बिन गोबिन्द तेरा नज़र ना आए पुत्त, पुत्त किस नूं कहि के पिता जगत मात अख्वाईआ। हुण मैं नहीं बहिणा चुप्प, हक़ मंगां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दे वखाईआ। पुरख अकाल रिहा सोच, पिच्छे ध्यान लगाईआ। सच मैं रिहा सचखण्ड ख़ामोश, आपणा आप रूप नज़र ना किसे दसाईआ। जुग चौकड़ी आसा कर कर रहे लोच, लोचण नैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल फोल के पड़दा, आपणा ध्यान लगाईआ। किस बिध गोबिन्द मेरे नाल लड़दा, झगड़ा खुशीआं नाल वखाईआ। पुत्त हो के पिता अग्गे अड़दा, अचरज खेल जणाईआ। ख़िदमतगार हो के भाणा जरदा, सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा दरसाईआ। पुरख अकाल कहे की गोबिन्द मंगे, पिछली बीती याद कराईआ। मेरे पिच्छे छड्ड के पुरी अनन्दे, लेखा सरसा विच रुढ़ाईआ। पार उतरया साचे कन्ढे, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। बाल दो दो चार कर के वंडे, चारे कुण्ट चौथे युग खेह उडाईआ। अमृत धार दे के ठंडे, गुरमुख गुरसिख गुर गुर गया प्रगटाईआ। आत्म परमात्म दे अनन्दे, अनन्द इक्को इक जणाईआ। सच सुणा धुर दा छन्दे, वाहिगुरू फ़तिह इक दृढ़ाईआ। मेरी प्रीती ओसे नाल हंढे, जो सब दी बणत बणाईआ। सैभं सूरा सरबँगे, सवै शक्ती नज़री आईआ। दो जहान आपे लँघे, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। पुरख अकाल हो हैरान, हरि जू आपणी खुशी मनाईआ। गोबिन्द पिछला की कुझ मंगे आण, चौथे युग समझ किसे ना आईआ। जिस दा काग़ज़ां उते कलम ना लिख्या ब्यान, छाही शहादत दे ना कोए समझाईआ। जिस दा खेल बेपहचान, नेत्र नैण वेखण कोए ना पाईआ। सो सतिगुर बण बलवान, शब्दी शब्द झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ खोल्ह ताकी, ताकतवर तेरी वड्याईआ। मेरे लेखे उते मार झाकी, बिन नेत्रां नैणां वेख वखाईआ। इक सत्त पंज छे दी याद आए साखी, साख्यात रूप वटाईआ। पुरख अकाल मैं

तेरी मन्नी आखी, तूं आखर मेरा संग निभाईआ। जिस विच स्नेहड़ा धुर दी रखी पाती, पत्रका मेरी मेरे हथ्थ दे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल आपणा लेखा रिहा फोल, बिन वरक्यों वरके रिहा उलटाईआ। जिस वेले गोबिन्द दे लै के आया कोल, कौल कीता अक्खां बिन अक्खां नज़री आईआ। जिस नूं आपणे प्रेम दी दिती पौहल, चरणामित इक्को जाम प्याईआ। उस दा लेखा सदा अडोल, अडुल कदे ना जाईआ। सो मंगण आया मेरे कोल, निरगुण हो के निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा देणा झोली रिहा पाईआ। पुरख अकाल लेखा वेख्या सच अदालत, बण अदली अदल कमाईआ। जिस विच बिन अक्खरां लिख्या ख़ालश, ख़ालश आपणा रूप दरसाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम बणना सालस, लोकमात वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लग्गी तोड़ निभाईआ। पुरख अकाल कहे लेखा लिख्या अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जिस विच अक्खर ना दो ना चार, गणती गणत ना कोए गंवाईआ। बेअन्त बेशुमार, शुमार सके ना कोए समझाईआ। सच इबारत कीती त्यार, लेखा लिख्या बिन कलम छाहीआ। काग़ज़ कलम नज़र ना आए विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द लेखा लिख्या महफ़ूज़, घर साचे नज़री आईआ। महल अटल वखाया अरूज, अर्श कुर्श दोवें पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार दए सबूत, जोती जाता खेल वखाईआ। सो साहिब हो मौजूद, मुफ्त आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा रिहा उठाईआ। साचा लिख्या श्री भगवान, धुर दा आप वखाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, जग नेत्र समझ कोए ना पाईआ। गोबिन्द वेखे मार ध्यान, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। सो वेला वक्त पहुँचया आण, जिस थित वार दी समझ किसे ना आईआ। सो निरअक्खर होए प्रधान, निरगुण निरवैर निरँकार दए वड्याईआ। जिस दा लेखा आपे लिख्या हो मेहरवान, मश्वरा देण वाला नज़र कोए ना आईआ। सरगुण दूआ विच जहान, अन्तिम सिफ़र रूप वटाईआ। दोहां मिल के बीस अंक बणे महान, जिस विच राउ रंक डेरा लाईआ। सिफ़रे तों निरगुण सरगुण गोबिन्द होए बलवान, दूआ आपणा रंग प्रगटाईआ। दूए अन्दर इक निशान, निरगुण निरवैर निरँकार एकँकार इक्को एका दए समझाईआ। दूआ एका मिल के खेल करे महान, इक्की साचा जोड़ जुड़ाईआ। बीस इकीस दोवें मिल के चारे ख़ुशी मनाण, घर साचे ढोला गाईआ। एन्हां चौहां विच्चों वाहिगुरू अक्खर कीता प्रधान, जिस दी सिफ्त कहि के गुरू गुरू समझाईआ। उस दे अन्दर लेखा होर महान, दीन दयाल ल्या छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। गोबिन्द वेख्या

९५५
१६

प्रभ लेख छुपाउँदा, आपणी करे चतुराईआ। सुत दुलारा खुशी नाल मुसकराउँदा, अन्तर अन्तर रंग चढ़ाईआ। प्रेम प्यार नाल चरण सीस रखाउँदा, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। वांग बाल्यां बच्चयां वांग पुरख अकाल नूं आप भरमाउँदा, नंन्ही नंन्ही निक्की निक्की गुफ़तार सुणाईआ। मार छाल गोदी विच आसण लाउँदा, सीस सीने नाल लगाईआ। बिन हथ्थां दोवें हथ्थ अग्गे डौंहदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे पुरख अकाल धुर दे बापू क्यों मेरी वस्त उते पड़दा पाउँदा, हक़ दूज्जयां आपणे विच छुपाईआ। मैनूं लारयां नाल वरचाउँदा, इशारयां नाल परे हटाईआ। मैं वेख्या चार युग दा गुर अवतार पछताउँदा, तेरी छाती उते बहि के खुशी ना कोए मनाईआ। मैं कर अरज़ोई दर तेरे वास्ता पाउँदा, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। उह पिता कंजूस जेहड़ा बच्चयां कोलों आपणा धन बचाउँदा, फिर चोरां दए लुटाईआ। मैं तेरा पुत्त हो के तैनूं आख सुणाउँदा, मेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। श्री भगवान ओसे वेले पड़दा चुक्क के उह अक्खर वखाउँदा, जिस दा लेखा नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द निउँ निउँ सीस झुकाउँदा, आपणा आप भेंट कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को रूप नज़री आउँदा, बेनज़ीर तेरी सरनाईआ। मैं एहो वस्त अमोलक दर तेरे तों चाहुंदा, चार युग जेहड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। फड़ चरणां बन्दन खुशीआं नाल मनाउँदा, ख्वाहिश आपणी तेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल कहे एह धुर दा उहला, आदि जुगादि ना किसे वखाईआ। गोबिन्द एसे विच्चों गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवां चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। सच नाम दा धुर संदेसा एसे अक्खर विच्चों सुणावां ढोला, सच्चा राग नाद जणाईआ। खाणी बाणी जिस दा गाए बोला, अनबोलत इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान रिहा समझाईआ। गोबिन्द कहे की तेरी वड्याई, क्यों प्रभ बैठा माण वधाईआ। प्यो पुत्त दी इक्को वस्त नज़री आई, दूजी वंड ना कोए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां मिल के वज्जे वधाई, इकल्ला कम्म किसे ना आईआ। तूं मेरी लिख्त मैनूं दिती वखाई, मैं वेख वेख खुशी मनाईआ। उस विच्चों इक्को निरगुण निरवैर तेरी धार नज़री आई, नर निरँकार सच सच दित्ता समझाईआ। कलयुग अन्त किरपा कर श्री भगवन्त गोबिन्द तेरा बण के पांधी राही, साचा मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार धुर दी वस्त अमोलक आप वरताईआ। अमोलक वस्त अनमुलड़ी दात, सच तेरी झोली पाईआ। चौथे युग दी पूरी ख़ाहिश, तेरे नाल कराईआ। चार वरन दा सच्चा साथ, तेरा संग वखाईआ। आदि जुगादी धुर दा पाठ, पुरख अकाल दृढ़ाईआ। सच सरोवर तीर्थ ताट, तट किनारा इक प्रगटाईआ। दे वड्याई लोकमात, मात्र भूमी करे रुशनाईआ। बरन अठारां इक जमात, सच्चा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म जोड़ नात, घर मेला सहिज सुभाईआ।

निरगुण निरवैर निरँकार इक्को नाम जाए आख, सति सच करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मेट अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द चमकाईआ। गोबिन्द सुत कहे शाबाश, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अक्खर इक्को दित्ता वखाईआ। साचा अक्खर वखाया ख़ालक, मख़लूक समझ कोए ना पाईआ। जिस विच लिख्या वीह सौ इक्की बिक्रमी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगत बणाए ख़ालसा ख़ालस, ख़ालस आपणे नाम रंग विच रंगाईआ। जिन्हां दी दो जहान दूजा करे ना कोई अदालत, मुलज़म सके ना कोए बणाईआ श्री भगवान हो मेहरवान बेड़ा पार कराए बिन सफ़ारश, हस्ती आपणे नाल मिलाईआ। बेशक गोबिन्द लिखी नहीं इबारत, तुआरफ़ आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ ख़ालस ख़ालसा केहड़ा, कवण रूप वखाईआ। परम पुरख किहा जिन्हां दा मैं आपे बन्न्हां बेड़ा, फड़ आपणे कंध उठाईआ। गोबिन्द किहा मेरा एथे मुक गया झेड़ा, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। तूं पिता पुरख अकाल मेरा, मैं गुरसिखां आपणी गोद बहाईआ। तूं गुरू मैं तेरा चेरा, ओस वेले गुर गोबिन्द दित्ता सुणाईआ। पुरख अकाल हो के नेड़ा, नेरन नेरा इक्को नूर नज़री आईआ। मेरा नाम शब्दी धार जोत अकाल सिँघ शेरा, भबक तेरा रूप नज़री आईआ। तेरे अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के घर सोहणे लावां डेरा, सच सिँघासण इक विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ ख़ालस ख़ालसा तेरा रूप, मेरे तेरे नाल वड्याईआ। वीह सौ इक्की गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कर जाण कूच, गली कूचा ख़ाली नज़री आईआ। सृष्ट सबाई दिसे झूठ, तेरा नाम तेरे बिनां सके ना कोए वरताईआ। बेशक मेरे बाले तेरे प्रेम विच जावण झूज, नीहां विच पै पै ख़ुशी मनाईआ। मैं तेरा वेखां इक अरूज, जिस नूं अर्श फर्श बैठण सीस निवाईआ। तेरे भगत ओथे महफ़ूज़, मुहब्बत तेरे नाल लगाईआ। मैं वी नाल होवां मौजूद, वजूद विच्चों सच सबूत शब्दी दयां समझाईआ। तेरी किरपा मेरी मेहर गुरमुखां आवे सूझ, बिन गुरसिखां समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लैणा बुलाईआ। चिट्ठी कहे मैं सच सफ़ैद, कोरा रूप वटाईआ। ना कोई कानून ना कोई काइदा ना कवाइद, हुक्म हाकम बिन प्रभ दे अवर ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी सारे मन्नदे गए हदाइत, निउँ निउँ सजदा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। चिट्ठी कहे मैं धुर दा चिठा, चार युग भेव खुल्हाईआ। बिन गोबिन्द मेरा अक्खर किसे ना डिठा, लख चुरासी नेत्र कम्म किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कलयुग जीवां देवे पिच्छा, सनमुख दरस कोए ना पाईआ। कोटन कोटां विच्चों जन भगतां करे रिच्छा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द

प्रेम प्यार दी पावे भिच्छा, ख़ाली झोली दए भराईआ। सतिगुर कहे गुरमुख साचे सिखा, सच तेरी मात वड्याईआ। जिन्हां पुरख अकाल मिल्या पिता, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। सो गुरमुख उतरे पार भावें वड्डा भावें निक्का, बिरध बाल जोबन अवस्था इक्को रंग वखाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी मितीआं विच्चों बदल के मित्र मिलाए मिता, मीत प्यारा बेपरवाहीआ। जिस दा एथे ओथे दो जहान हुक्मी चले सिका, मोहर आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। चिट्ठी कहे धुरदरगाही मसला, मुसरत्त खुशीआं रूप वटाईआ। जिस विच्चों जन भगतां दा नज़री आवे असला, असलीयत प्रभ दे नाल मिलाईआ। जिन्हां मार्ग दस्से वक्खरा, रहिबर बण के सेव कमाईआ। लेखा याद कराए बिनां अक्खरां, आखर पर्दा लाहीआ। जिस यारड़े हंढाया सत्थरा, साथी साचा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर हो सहाईआ। सो लेखा जो लिख्या बिन कलम, कायनात रूप ना कोए वटाईआ। जिस दा किसे समझ ना आया इलम, आलम करे ना कोए पढ़ाईआ। जिस हरूफ़ हरफ़ दा किसे ना समझया जन्म, लेखा जाणे ना पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करे खेल अगम्म अथाहीआ। बीस इकीस कहे मेरी आई वारी, मिले जगत वड्याईआ। गोबिन्द पुरख अकाल नाल लगाई यारी, मिल्या मेल बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द बोल जैकारी, नाअरा इक्को नाम सुणाईआ। वणज कराए बण व्यपारी, निरगुण सरगुण हट्ट चलाईआ। वस्त अमोलक देवे थारी, घर ठांडे नाम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे दए लगाईआ। लेखे विच्चों लेखा लभ्भ, पूरब रिहा समझाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी पिछली हद्द, जो जुग चौकड़ी गए मंग मंगाईआ। अन्तिम लेखा लहिणा देणा मात गए छड्ड, छड्डया खहिड़ा जगत लोकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात विच जो बैठे रहे अड्ड, थाउँ थाईं हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम इकट्ठे हो के लँघे इक्को हद्द, घर साचे फेरा पाईआ। इक दूजे नूं मिल के गावण छन्द, साचा ढोला राग अल्हाईआ। पिछला साडा मुक्कया पन्ध, अग्गे हुक्म बेपरवाहीआ। जगत सियासत कूड़ी क्रिया माया अखाड़ा वेखो जंग, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक वरताईआ। वीह सौ इक्की कहे मेरा अक्खर निराला, निरगुण निरवैर आप बणाईआ। श्री भगवान जन भगतां मार्ग दित्ता सुखाला, साचा राह इक्को इक वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, मट्ठ दवारा सच दए वड्याईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उजाला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाम प्याला साचा रस दए दीन दयाला, दयानिध दया कमाईआ। लेख चुकाए काल महाकाला, पुरख अकाल आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वीह सौ इक्की कहे मैं साची इकी, इकीआं विच्चों नज़री आईआ। जेहड़ी गोबिन्द पुरख अकाल सांझी लिखी चिट्ठी, बिन चिट्ठी रसाइण दो जहान चले वाहो दाहीआ। ओहो लेखा जो सतारां सौ छपंजा बिक्रमी मिती वसाखी, वसाख पहली मिले वड्याईआ। पिछली खेल अज्ज नजिठी, कर्ज़ा मकरूज़ दित्ता चुकाईआ। गुरमुखो तुहाड्डी धार रखी चिट्टी, कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धोती छाहीआ। प्रेम प्रीती आत्म परमात्म आपणे नाल गंढु पीची, दो जहान सके ना कोए खुल्हाईआ । लख चुरासी विच्चों बेशक एह छोटी जिही बाग़ीची, बाग़बान साचे माली धुर दे बूटे आप लगाईआ। जिन्हां दी परखी अन्दर वड़ के नीती, बाहरों करी ना कोए पढ़ाईआ। प्रेम प्यार दी मदि प्याई भर प्याला साची शीशी, शीशा आईना अक्ख इक खुल्हाईआ। दो जहान मनावण खुशीआं प्रभ दी चली साची रीती, मार्ग इक्को दित्ता वखाईआ। सचखण्ड निवासी बण के गोबिन्द नाल लाई प्रीती, गोबिन्द गुरमुखां आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रहमत रिहा कमाईआ। वीह सौ इक्की कहे मैं भागां भरी धौल, प्रभ अज्ज दिती माण वड्याईआ। पूरब लेख पूरा कीता कौल, इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जगत जीव जहान तुहानूं करन मखौल, कूड़ी जिह्वा बोल सुणाईआ। जन भगतो तुसीं तुले पूरे तोल, जिस दा तोला बणया बेपरवाहीआ। सच दवारे सच धर्म दा वज्जा ढोल, घड़ी सुहञ्जणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचा हथ्थ टिकाईआ । वेख घड़ी सुहञ्जणी गुर अवतारां चढ़ी खुशी, पीर पैगम्बर ढोला गाईआ। लोकमात सब दी बदली रुची, दूर दुराडे वेखण चाईं चाईंआ। गोबिन्द पुरख अकाल दोहां मिल के चार वरन दी सिक्खी बणाई सुच्ची, इष्ट पुरख अकाल दृढ़ाईआ। गोबिन्द भाग लगाया पुती, पोतरे गुरमुख गोदी विच लिटाईआ। जिस दे पिच्छे माछूवाड़े नंगी पैरीं छाले पाए लाह के झूठी जुत्ती, जोड़ी आपणी जोड़े नाल जुड़ाईआ। उस दी वस्त किसे ना लुट्टी, वेखो देवे चाईं चाईंआ। गुरमुख फुलवाड़ी साची फुटी, पत्त टहिणी आपणी महक नाल महकाईआ। गुरसिखो अग्गे लोड़ रही ना विच वड़न दी त्रिकुटी, दस्म दुआर दी सिधी दिती छुट्टी, राह विच ना कोए अटकाईआ। मन वासना तुहाड्डे कोल ना आवे कुती, कूकर सूकर परे दए भजाईआ। मन ममता नार कमज़ात कोल रहे ना लुच्ची, कुलखणी रूप ना कोए वखाईआ। गोबिन्द नाल मिल के ता दयो मुछीं, मुश्किल पुरख अकाल हल्ल कराईआ। माणस जन्म चोग ना किसे निखुटी, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। भाग लगाया मांवां कुखीं, जो गुरमुख जण जण आपणा सीर दित्ता पिलाईआ। एथे ओथे ओन्हां रखां सुखी, जिन्हां मुखी आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा वखाईआ। वीह सौ इक्की कहे गुर अवतार पैगम्बरो गाओ गीत, गहर गम्भीर खुशी वखाईआ। रल मिल इक्को करो

प्रीत, दूजा राह ना कोए जणाईआ। सुण आवाज़ सारयां इक्को मारी चीक, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। परवरदिगार पतिपरमेश्वर तेरी कर दे गए उडीक, नेत्र लोचण ध्यान लगाईआ। तेरा वेला वक्त वेख्या ठीक, ठाकर आएयों बेपरवाहीआ। साडी पिछली गई हदीस, दर तेरे सीस निवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे नाम दी अग्गे कोई ना लए फ़ीस, जीवां जंतां जुरमाना कर देवे ना कोए सज़ाईआ। जे कोई तेरा नाउँ पढ़े कर के तेरे भगतां नाल प्रीत, कीमत विच तेरी ग़नीमत सके ना कोए लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, शाह पातशाह शहिनशाह तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे दूर, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। सजदा कर हो मशकूर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अबिनाशी करता खेल करे ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर फेरा पाईआ। जन भगतां दर बणे मज़दूर, सेवक बण बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण एक, एकँकार तेरी वड्याईआ। वीह सौ इक्की सारे दे के आए टेक, सच तेरी कहाणी मात समझाईआ। अगला कोई ना जाणे भेत, रमज़ नाल रमज़ ना कोए रखाईआ। करते की कुछ खेलें खेड, ख़ालक ख़लक की वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा जणाईआ। साचा लेखा की जणाएंगा। वीह सौ इक्की अन्त मुकाएंगा। पिछली लिखी पूर कराएंगा। साची सिक्खी किवें प्रगटाएंगा। धुर दी चिट्ठी नौ खण्ड पृथ्मी किवें सुणाएंगा। तेरी धार निक्कीउँ निक्की, वड्डीउँ वड्डी किवें बणाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, की करनी कार कमावेंगा। सच करनी कार कमावांगा। जोती जोत नूर रुशनावांगा। शब्दी शब्द चोट लगावांगा। लोक परलोक दो जहान आप सुणावांगा। सोहला धुर दा इक श्लोक, राग अगम्मी साचा इक जणावांगा। जेहड़ा किसे दी आवे विच ना सोच, सो सच सच कार वरतावांगा। पिच्छे बैठा रिहा ख़ामोश, अग्गे आपणी कल धरावांगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, दीआ बाती इक डगमगावांगा। जन भगतां कट के हउमे रोग, हँ ब्रह्म इक समझावांगा। चिन्ता चुका के कूड़ा सोग, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहवांगा। आत्म परमात्म दे के साची मौज, मुहब्बत आपणे नाल रखावांगा। लख चुरासी कर के खोज, गुरमुख साचे मेल मिलावांगा। चोजी प्रीतम बण के करां चोज, चोला काया वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरतावांगा। की हुक्म प्रभू वरताएंगा। लख चुरासी किवें समझाएंगा। घर घर फेरा किस बिध पाएंगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग डेरा किवें ढाएंगा। नौ खण्ड पृथ्मी आपे पुज, पांधी हो के पन्ध किवें मुकाएंगा। जन भगत तैनूं किवें लैण बुझ, बुझारत केहड़ी ओनां अग्गे रखाएंगा। तेरे कोल नहीं कुछ, की ख़ाली हत्थीं फेरा पाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साची करनी की कराएंगा। साची करनी इक कमावांगा। वरनी बरनी वेख वखावांगा। साची सरनी सच दृढ़ावांगा। गुरमुख तार के आपणी तरनी, तारनहार इक बण जावांगा। लहिणा चुका वरनी बरनी, आत्म परमात्म इक्को इक समझावांगा। साची पौड़ी क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को चढ़नी, साचे डण्डे हथ्थ पवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हावांगा। सच पौड़ा की दरसाएंगा। लम्मां चौड़ा की वखाएंगा। अन्ध घोरा किवें हटाएंगा। मन्त्र फोरा किवें सुणाएंगा। काग़ज़ कोरा किवें वखाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, पर्दा उहला किवें चुकाएंगा। पर्दा उहला आप चुकावांगा। साचा लेखा लेख समझावांगा। देस देसन्तर खोज खुजावांगा। धुर दा मन्त्र नाम पढ़ावांगा। कर वसेरा साचे अन्तर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। लग्गी बुझावां जगत बसन्तर, अमृत मेघ इक बरसावांगा। वीह सौ वीह बिक्रमी कूके सर्ब गगन गगनतर, ब्रह्मण्ड खण्ड आप दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी पिच्छों आई भज्जी, हौके लै लै रही सुणाईआ। मैनूं याद आई गोबिन्द वाली सदी, वीह सौ इक्की आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा लेखा किसे ना आवे विच वदी सुदी, वाधा आपणे नाल मिलाईआ। जां वेख्या गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी ख़ाली दिसी गद्दी, गदागर फेरा पा होका ना कोए सुणाईआ। सारे कूकदे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे हुक्मे अन्दर लख चुरासी बद्धी, कलयुग सके ना कोए छुडाईआ। सब दी मिटी ख़ाक विच रल गई हड्डी, हड्ड मास नाड़ी तन नज़र कोए ना आईआ। तेरी खेल नित नवित्त चंगी, चारों कुण्ट खुशी मनाईआ। इक्को सूरा नज़री आए तेरा सुत दुलारा जंगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बिन गोबिन्द प्रभू तेरे कोलों मंग किसे ना मंगी, ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख उपर ना कोए उठाईआ। जां वेख्या अल्ला राणी रंडी, ख़ावंद नज़र कोए ना आईआ। भज्जी फिरदी औझड़ फिरे डण्डी, उच्ची कूके दए दुहाईआ। चन्द चढ़या किधर चौधवीं चन्दी, नव चन्दा नूर रुशनाईआ। मैं बंदीख़ाने विच्चों निकल के उहदी बंदी, बन्दना इक दृढ़ाईआ। चाहे मंदी चाहे चंगी, चारों कुण्ट फिर फिर आपणा आप गंवाईआ। सच पुच्छो मैं नेत्रां होई अन्धी, कन्ढी लभ्भया ना बेपरवाहीआ। नक्क सुहाग ना रह गई कन्नां तों हो गई ख़ाली बिनां डण्डी, झुमके वाली चमक ना कोए वखाईआ। उम्मत नबी रसूलां पै गई ख़ंदक ख़ंदी, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट वेसवा रूप आपणे जोबन दी ला के बैठी मण्डी, कलयुग जीव काम व्यपारी भज्जण वाहो दाहीआ। मेरी कूक कूक बहि गई संघी, ढोले गा गा आपणा आप मिटाईआ। मैं सुहागण पैरीं फिरदी नंगी, संगी अन्त छल्लयां नाल आपणा रूप गए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, दर तेरे सरनाईआ। वीह सौ इक्की कहे वेख अल्ला,

नूर इलाही इक्को नज़री आइंदा। कमलीए एस दा फड़ लै पल्ला, बेपरवाह टुट्टी गंढु पवाइंदा। जिस दा नूरी जलवा जला थला, महीअल आपणी खेल कराइंदा। इस दे नाल मिल के हो जा बिसमिल्ला, बिस्मिल तेरी धार बणाइंदा। कलमा कोई ना रहे इललिल्ला, हू हू नाअरा ना फेर सुणाइंदा। जिस दे लेखे लग्गे बूरा कक्का बिल्ला, ईसा मूसा मुहम्मद आपणयां चरणां हेठ रखाइंदा। अगला जीवण सुखणा नाल जी ला, जीवण जुगत इक समझाइंदा। नाम निधान प्रेम प्रीती प्याला धुर दा पी ला, परम पुरख जाम प्याइंदा। जिहड़ा गोबिन्द संग भगतां बणया वसीला, घर साचे वसल आपणी सेज कराइंदा। पिछला छड्ड दे हुण कबीला, गुरमुख अगले आप दरसाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर छैल छबीला, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। तारा चन्द जिस दीआं देवण चरणां विच दलीला, सो दिलबर आपणी कार कमाइंदा। एहो वक्त अन्त अख़ीरला, आख़र आपणा खेल वखाइंदा। लेखा चुक्के पैगम्बर पीरना, पीर पीरां प्रभ रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा। उधरों उठो गुर अवतार, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। औह सारे वेखो की एहदी ओहो नुहार, जिस दा हुलीआ तस्दीक सके ना कोए कराईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी साडे नाल करदा रिहा गुफ़तार, बिन शकलों हुक्म सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण बौहड़ी दरोही एहो साडा यार, यारी यारां नाल रखाईआ। गोबिन्द कहे नहीं एह पुरख अकाल, मैं मेरा पिता माईआ। मैं ना जाणां क्यों होया दयाल, दूरों चल के नेड़े आईआ। आपणा लेखा रिहा वखाल, पड़दा दित्ता उठाईआ। जन भगतो वेला लओ संभाल, गया वक्त हथ्थ ना आईआ। बेशक पुरख अकाल नूं कहो कंगाल, एह कंगालां विच्चों कंगाल नज़री आईआ। गुरसिखो तुहानूं मोइआं नूं लए ज्वाल, मुरदे जिंदा रूह लए बणाईआ। बेशक गोबिन्द हथ्थ विच रखी नहीं ढाल, खण्डा कटार तन ना कोए लटकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा मेला रिहा मिलाईआ। जुग जन्म दे विछड़े भाल, धुर दा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इक्की रिहा पाईआ। इक्की कहे मैं पाया इक्को, इक्को सब विच नज़री आईआ। जन भगतो साची सिख्या सिखो, धुर दी करे नाम पढ़ाईआ। जे कोई भरम भुलेखा सनमुख हो के पुच्छो, पड़दा उहला रहिण कोए ना पाईआ। पुत्त बण के पिता कोलों कदे ना लुको, जो मंगणा सो मंगो चाईं चाईंआ। भरम भुलेखे विच कदे ना रुसो, जे रुस्सो ते रुस्सयां लए मनाईआ। जे तुसीं मेरा नाम ध्याउणा चाहुंदे नहीं मुखों, मैं तुहाढे सोहले देवां गाईआ। प्यार नाल कहां आओ मेरे लाडले पुत्तो, बिनां पुत्रां पिता सोभा कोए ना पाईआ। पुरख अकाल इक्को झुको, दूजे सीस ना कोए निवाईआ । परमेश्वर नूं साम्हणे हो के लुट्टो, लुट्टयां एहदा घट कुछ ना जाईआ। आवण जावण लख चुरासी विच्चों छुट्टो, कर दर्शन जगत जंजाला तन्द तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। चिट्ठी कहे मेरा लेख दस्स, दस्मेस तेरे नाल जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अकाल तेरे वस, दीन दयाल तेरा सहाईआ। गोबिन्द शब्दी धार खोल्ह के अक्ख, प्रतख रिहा दृढ़ाईआ। मैं प्रेम प्रीती विकया हट्ट, मेरी कीमत गुरमुखां लैणी पाईआ। पिच्छे गया नहीं नट्ठ, अग्गे संग ना कोए तुड़ाईआ। पहलों पैगम्बरां दी कर के चट्ठ, फेर गुरमुखां गोद उठाईआ। जेहड़े वीह सौ इक्की ताईं बैठे रहे कर के हठ, सिदक सबूरी नाल ध्यान लगाईआ। ओनां दा लेखा गुर अवतार पीर पैगम्बर उते रहे रट, थल्लउँ समझ कोए ना पाईआ । जेहड़े पिच्छे गए नट्ठ, अन्त ओनां नाल मिलाईआ। जिने चाहे ओने लए रख, वाधू संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल ख़ालक नूर इलाहीआ। ख़ालक ख़लक नूर इलाही जलवा, ज़ाहर ज़हूर इक दरसाइंदा। मुरीद मुर्शद अग्गे खाणा मिले किसे ना हलवा, न्याज़ भेंटा ना कोए चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी दीन दयाल साहिब स्वामी लेखा जाणे अरबां खरबां, बिन ज़रबां हिनसे अंक जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची इक्की वेख वखाइंदा । इक्की कहे बौहड़ी वेखे नीले वस्त्र, नीले वाला बेपरवाहीआ। जिस दी धार अगम्मी शस्त्र, शहिनशाह जोड़ जुड़ाईआ। सति सरूपी नज़री आया अस्त्र, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। नीले वस्त्र पहन के चोले, जूनी सब दी रिहा बदलाईआ। पीर पैगम्बर जिस दे गोले, बरदे बैठे सेव कमाईआ। रसूल गावण जिस दे ढोले, नाअरा कूक अल्हाईआ। सो साहिब करे खेल पड़दे ओहले, जोती नूर कर रुशनाईआ। वाक भविक्खत बोल जो बणदे गए वचोले, सालस सारे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। नीले वस्त्र पाए परवरदिगार, ततव तत दए वड्याईआ। जलवा नूर दे दीदार, साचा चन्द इक चमकाईआ। सच वखाए इक बहार, महिबूब आपणा नाम महकाईआ। गुलशन वेखे शहिनशाह निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। नीले वस्त्र धार अवल्ली, अवल्ल अल्ला नूर इलाहीआ। जोत अकालण करे खेल इकल्ली, अकल कल वड्डी वड्याईआ। होका देवे गलीओ गली, कूचे कूचे रही सुणाईआ। वेखो गोबिन्द जोत इक्को बली, बलि बलिवान करे रुशनाईआ। जिस दी फुल्ल फुलवाड़ी फली, पत डाहण रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां आपणा खेल वरताईआ। दो जहानां खेल करे ख़ालक, ख़ासतगार इक्को नज़री आइंदा। सृष्ट सबाई वेख के हालत, हाज़र हो के फेरा पाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे जहालत, माया ममता डेरा ढाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे कोई ना करे किसे दी मुख़ालफ़त, मुख़बर हो के मुख़बरी सके ना कोए

लगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी लगाए इक अदालत, अदली हो के अदल सच कमाईआ। इक्को गोबिन्द दी मंज़ूर करे ज़मानत, बाकी सब दा लेखा दए चुकाईआ। वेखो वीह सौ इक्की पिच्छों सब दी आए शामत, शाम्याने सब दे दए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत पिछली सांभ के रखी अमानत, अमल आपणे विच लिआईआ।

* २ वसाख २०२१ बिक्रमी बूड़ सिघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर *

पुरख अकाल करे अदल, अदालत सचखण्ड दुआर सुहाईआ। चार जुग दे पिछले कर मुअत्तल, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। मन मति बुध चतुराई चले ना कोई अक्ल, सोच समझ सके कोई ना राईआ। निरगुण साहिब सुल्तान तेरी नज़र ना आए शकल, शहिनशाह रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। लेखा चुक्कया दीन मज़्हब ज़ात पात शरीअत कत्ल, मक्तूल रहिण कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी जन भगतां पिछला फेर वखाए वतन, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। सच अमोलक अगम्मी रतन, रत्ती रत्त रंग नाम रंगाईआ। सच किनारे बेड़ा लाए पत्तण, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि करदे रहे यतन, बलधारी आपणा बल वधाईआ। गोपी काहन लोकमात भूमी भूमका पंज तत काया नच्चण, पग उठावण चाईं चाईंआ। सरगुण निरगुण शब्द संदेसे सुण सुण हस्सण, खुशीआं राग अल्लाईआ। घनय्ये बण बण खांदे रहे मक्खण, मदन मूर्त रूप वटाईआ। अन्तिम सब दे लेखे कीते सक्खण, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चारों कुण्ट उठ उठ नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। कलयुग रैण अन्धेरी वेख मस्सण, चन्द चौधवीं नूर ना कोए चमकाईआ। जलवा नूर ज़हूर ना दरसाए कोई बातन, जगत विद्या रसना जिह्वा कथनी कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बैठा उच्च अरूज, सचखण्ड निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी पिछली कर मनसूख, धुर संदेसा इक समझाईआ। वेख वखाणे लख चुरासी जीव जंत पंज तत भूत, तन माटी ख़ाकी खोज खुजाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले घर साचे मेले जन्म जन्म दी चुक्के चूक, आवण जावण दए मुकाईआ। नाम फुंकारा धुर दी मारे इक्को फूक, सति संदेसा साहिब सतिगुर इक सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़े गूढ़ी नींद जो सुत्ते घूक, फड़ बांहों लए उठाईआ। भगत भगवान हो मेहरवान बणाए सच सपूत, पुरख अकाल पिता आपणी गोद उठाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बख्शे इक रसूख़, सुल्लाकुल सच समझाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार भगत

भगवान मंगण इक महिबूब, मेहरवान नौजवान श्री भगवान नज़री आईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार किरपा धार जो रखे आप महफ़ूज़, समरथ महिमा अकथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा नाम संदेसा दे के गए ख़तूत, सो मुख़ातब हो के तुआकब आपणे वल कराईआ। किसे हथ्थ ना आए मशरक मग़रब शिमाल जनूब, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेखे सर्ब लोकाईआ। एथे ओथे दो जहान चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या लभ्भ ना सकी हदूद, आर पार किनारा वेखण ना कोए पाईआ। जो आया सो उठ के धाया कर के गया कूच, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हर घट थाईंआ। हर घट थाईं वसे भगवन्त, भगवन आपणी खेल खलाइंदा। धार बंधाए जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाइंदा। आदि जुगादि नित नवित्त नाम फुरना शब्द दस्से अगम्मी मंत, मनतव आपणा हल्ल कराइंदा। बोध अगाधा बण के दो जहानां पंडत, साची विद्या साची सिख्या पाए भिच्छया विद्या इक्को इक प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, दरगाह साची सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, समझ आपणी आपणे नाल मिलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निराधार लोकमात जन भगतां वखाए साची मौज, मौजूदा हो के बेहूदा वक्त कूड़ी क्रिया डूंघे सागर हरिजन साचे दिती रुढ़ाईआ। लेख चुका लोक परलोक, नाम सुणाया सच श्लोक, धुर दी दिती इक्को मोख, मुफ्त आपणी दात वरताईआ। नाम नगारा तन लगाए चोट, माया ममता हउमें हंगता कढ्ढे कूड़ा खोट, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। नाम प्याला दीन दयाला प्याए इक मदहोश, मधुर रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना सचखण्ड मकाना दरगाह साची सोभा पाईआ। साचा अदल करे निरँकार, निरगुण आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। जिस दी समझ किसे ना आई जुग चार, कोटन कोटि काल बिताईआ। लोकमात सच संदेसा देंदे रहे शास्त्र सिमरत वेद पुराण बोल जैकार, जै जैकारा इक्को नाअरा धुर दा राग सुणाईआ। नमो नमो निमस्कार करदे रहे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित्त किसे अन्त ना पाया पारावार, बेअन्त कहि कहि आपणा आप लेखे लाईआ। सो खेल करे करनेहार, कुदरत कादर वेखे नैण उग्घाड़, निज नेत्र लोचण नूर नूर करे रुशनाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत चोटी समुंद सागर डूंघी खाई ख़ालक ख़लक वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नूर नूर रुशनाईआ । सच अदालत अदलगाह, बेनज़ीर आप कराइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, सिफ्ती देवे सिफ्त सालाह,

६६५ १६

साची सिख्या सति सति आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेला दए मिला, गुर चेला एका घर बहा, मन्दिर महल उच्च अटल सोभावन्त आप सुहाइंदा । सति स्वामी अन्तरजामी निहकर्मी जन भगतां दस्से इक्को राह, रहिबर नूर खुदाई नज़री आइंदा। जाम प्याला मदि प्या, आबेहयात मुख चवा, आसा तृष्ना माया ममता मोह कूड़ी क्रिया पार कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर अदालत करे अदली, एकँकार वड्डी वड्याईआ। कलयुग सतिजुग सचखण्ड दवारयों होवे बदली, माबदौलत आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दी धार वड्डीउँ वड्डी पतलीउँ पतली, नज़र ना आए पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा फ़रमाणा इक्को इक समझाईआ। अदालत कहे मैं वेख्या बिन आदम, बेअन्त रूप नज़री आईआ। दो जहान जिस दे ख़ादम, लोक परलोक सीस निवाईआ। सो साहिब सतिगुर कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया मेटे तसादम, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन भगतां किसे दी देवे ना कोई ज़मानत, ज़ामनी सच ना कोए भराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सन्त सुहेले जो सांभ के रखी आपणी अमानत, सच दवारयों बाहर लए कढ्ढाईआ। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया नाल अबलीस पाए लाअनत, तोबा तोबा कर के रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी इक रघुराईआ। अदल विच्चों मिले इन्साफ़, हरि करता सच जणाइंदा। परम पुरख पतिपरमेश्वर कर के आपणा वड प्रताप, हरि प्रतापी वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार वरन जो जपदे गए जाप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा । मन वासना कूड़ी क्रिया तत हँकारी जो करदे रहे पाप, पतित पापी हरि पुनीत खोज खुजाइंदा। सन्त सुहेले भगत भगवान गुर चेले लभ्भे धुर दे साक, जन्म कर्म दे विछड़े आपणे रंग रंगाइंदा। दीनां नाथ होए सहाई आप रघुनाथ, एथे ओथे देवे साथ, निरगुण सरगुण सगला संग निभाइंदा। चार वरन इक्को सरन आत्म परमात्म दस्से धुर दी ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे रसूल पाक, परवरदिगार जलवा नूर ज़हूर इक रुशनाइंदा। वेख अदल गुरु गुर पीर, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। वेखो सज्जणो अन्त होया अख़ीर, आख़र सब नूं रिहा समझाईआ। परवरदिगार ला तस्वीर, तसव्वर आपणा आप कर के मुरीद मुशर्दां रिहा समझाईआ । कूड़ा कट शरअ ज़ंजीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं बदल तकदीर, तदबीर अगली दए वखाईआ। जिस नूं सजदा कर के मुहम्मद नक्क नाल कढ्ढ के गया लकीर, नेत्र नैणां हन्झूआं हार बणाईआ। जिस दे पिच्छे दर दरवेश बरदा बण फ़कीर, मूसा ईसा तन अल्फ़ी चोली जगत हंढ्ढाईआ। जिस दी अल्ला राणी किसे नज़र ना

आई तासीर, तसबी माला मणका गल गानी सर्ब लटकाईआ। सो दाता गहर गम्भीर, गुणवन्ता बेअन्ता धुर दा कन्ता इक्को खेल करे निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि शहिनशाह शहिनशाहीआ। गुर अवतार तक्क के खेल, ख़ालक सर्ब रहे जणाईआ। कलयुग जीवो वेखो जन भगतां भगवन्त संग हुन्दा मेल, मिलणी हरि जगदीश आपणी आप कराईआ। बिन तेल बाती कमलापाती दीपक जोत जगाए सज्जण सुहेल, साचे मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार नाम वड्याईआ। अदालत वेख पिछले भगत, कबीर जुलाहे रहे उठाईआ। उठ वेख रविदास दा आया वक्त, रवी रव हरि आपणे रंग रंगाईआ। जिस दी आदि भवानी धुर दी शक्ति, चतुर्भुज जिस दा रूप अनूप वखाईआ। सो श्री भगवान हो मेहरवान निरगुण नूर जोती जामा धरे फ़कत, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी जोती जाता आया परत, प्रतिनिध हो के आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे रहिण ना देवे कोई फ़र्क, फ़िरकाप्रसती मेटे थाउँ थाईंआ। कूड़ी क्रिया करे ग़रक, शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल नाल लाई शर्त, सुगंध मुकन्द मनोहर लखमी नरायण इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस दी सिफ्त करे कोई ना रसना जिह्वा बत्ती दन्द, काग़ज़ कलम लेखा लिखे ना कोए शाहीआ। सो श्री भगवान सूरा सरबँग, जन भगतां देवे इक अनन्द, अन्तर आत्म आपणा रस चखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। फ़कीर फ़िकरा कहिण सूफ़ी, सिफ्त सालाह इक दृढ़ाइंदा । वेखो काया तन रबाब वजदी तूम्बी, तोबा तोबा हू हू बुत रूह सर्ब कुरलाइंदा। ख़ंदक खाई नज़री आए डूंघी, पार किनारा फड़ बांहों पार ना कोए लँघाइंदा। सब दी कँवल नाभी होई मूधी, बिन सतिगुर पूरे हाज़र हज़ूरे शब्दी धार ना कोए उलटाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर करता करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सूफ़ी कहिण वेखो पिछला सफना, सोहणी तरह समझाईआ। सच दवारे उच्च महल्ले लगाया मुजरा, महिफल दिसे बेपरवाहीआ। परवरदिगार मुकामे हक़ सुहाया हुजरा, जोती जलवा नूर रुशनाईआ। बीस इकीस अगला खेल करे सजरा, बीती कहाणी आपणी झोली पाईआ। जन भगतां जगत जुग जन्म दा चुकावण आया बदला, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दो जहानां पन्ध मुकावे मज़ला, मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। सच सिँघासण आत्म सेजा पलँघ वखाए रंगला, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ । घर विच घर बणाया सोहणा बंगला, बण बाढी साची घड़त आप घड़ाईआ। जिस विच रख्या परमानंदला, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। जिस गृह जोती नूर अगम्मी चन्दना, साची सच करे रुशनाईआ। ओस गृह भगत भगवान इक दूजे नूं दोवें करन बन्दना, बंदा ख़ाकी तन नज़र कोए ना आईआ।

लेखा चुक्के कोटन कोटि ब्रह्मण्डना, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। दीन दयाल पुरख अकाल सद बख्शंदना, बख्शश रहमत घर सच्चे आप वरताईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो अन्तिम ओसे घर लँघणा, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। जगत कूट किसे ना मंगणा, देवणहारा दाता दानी इक्को झोली रिहा भराईआ। आवण जावण लेखा चुक्के लोकमात वरभण्डना, कूड़ी भंडी देवे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सूफ़ी कहिण जलवा नूर, इक्को इक जणाईआ। भगत कहिण नाद तूर, तुरिया पार सुणाईआ। पैगम्बर कहिण सच महिबूब, मुहब्बत हक़ हक़ लगाईआ। गुर अवतार कहिण साक जोड़े पिता पूत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी आप कमाईआ। करनी वेख अदल हस्सया, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो मार्ग दस्सया, माणस मानुख मानव गए भुलाईआ। साचे रंग कोई ना रंगया, तन माटी ख़ाक कूड़ी ख़ाक रहे रमाईआ। किसे नाता तुटा ना भेख पखंडया, जूठ झूठ ना डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म होया रंडया, नर हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। मन वासना पंज तत हँकारी होया गंदया, अमृत रस जाम सच प्याला मुख ना कोए लगाईआ। सच दुआर सतिगुर मन्दिर गुरमुख विरला कोटां विच्चों लँघया, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म कर्म दा विछड़या पल्लू फड़ के गंढया, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। देवे वड्याई भुक्ख्यां नंगयां, शहिनशाह ख़ाक विच रलाईआ। गुरमुख चंगयां नालों करे चंगयां, चंगयाईआं आपणा नाम इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता पुरख आपणी खेल वखाईआ। वेख अदल शिव कहे पुकार, शंकर भोला नाथ दए दुहाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, नमो नमो सीस निवाईआ। तेरी करनी अपर अपार, तूं करता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वेंहदे रहे विच संसार, निरगुण तेरा सरगुण रूप वेख्या विच लोक खुदाईआ। कलयुग अन्त करे खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी धार जणाईआ। जोती जामा लै अवतार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। हँ ब्रह्म दए आधार, सन्त सुहेले कर प्यार, गुरमुख गुर गुर मेल मिलाईआ। मेरी त्रिसूल गई हार, इक्को मंगे तेरा सहार, बलहीण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचे हथ्थ रखाईआ। अदल वेख उठया ब्रह्मा, पारब्रह्म सीस निवाईआ। तेरा खेल पुरख अकाल अगम्मा, समझ सके कोए ना राईआ। लख चुरासी जीव जंत तेरे हुक्म अन्दर जो जम्मां, जन जननी पिता मात तूं ही नज़री आईआ। पवण स्वास सब दा बेड़ा बन्ना, घर घर आपणा डेरा लाईआ। कोटन कोटां विच्चों जन भगत बणाए आपणा चन्ना, साचे सन्त साची बूझ बुझाईआ। जीव जहान बाकी दिसे अन्ना, निज नेत्र नैण तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

लेखा सब दा दए चुकाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या वसाल, विश्वधारी नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी घालदे रहे घाल, कीती घाल आपणे लेखे लाईआ। जन भगतां बण दलाल, सचखण्ड दुआर वखाए इक्को धर्मसाल, पर्दा उहला दए उठाईआ। साची चले अवल्लड़ी चाल, गुरमुख सज्जण लए संभाल, सोई सुरती आपणे शब्द नाल मिलाईआ। मरयां फेर लए ज्वाल, जींवदयां आपणी गोद बिठाल, एथे ओथे देवे माण वड्याईआ। लाड़ी मौत ना आवे खाण, चित्रगुप्त लेखा मंगे कोई ना आण, राए धर्म बैठा नैण शरमाईआ। शंकर कहे मैं होया हैरान, ब्रह्मा कहे पारब्रह्म प्रभ मिल्या आण, विष्नूं कहे वास्ता आपणे नाल रखाईआ। धरनी धरत धवल कहे धन्न भाग मेरे उते चरण रखे भगवान, सरन देवे माण वड्याईआ। जिस दी करे ना कोई पहचान, बेपहचान आपणा खेल खलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण असीं देंदे आए अहिवाल, हालत सब नूं सच जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर निरँकार लै अवतार, कल कल्की फेरा पाईआ। जेहड़ा वसे सम्बल धाम न्यार, दीआ बाती कमलापाती इक करे उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता साचा मन्दिर इक सुहाईआ। जन भगतां बणे धुर दा राखा, लेख चुकाए मस्तक माथा, नाम सुणाए धुर दी गाथा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। वणज कराए इक्को हाटा, जोत जगाए नूर ललाटा, जाम प्याए अमृत बाटा, काया कासा इक्को इक वखाईआ। सच वड्याई जन भगतां पूरा करे घाटा, घाटिउँ वाधा दए वखाईआ। जिन्हां दा गोबिन्द पिता पुरख अकाल दादा, सो गुरमुख ना मरे ना जाईआ। साध सन्त दूजा बणाउणा कोई ना चाचा, चाचा कम्म किसे ना आईआ। गुरमुख नूर साचा हीरा लाल अनमुलड़ा सतिगुर घर ना कदे गवाचा, जुग जन्म दा विछड़या चारे कूटां विच्चों फोल फुलाईआ। धीरज नाल दए दिलासा, प्रेम नाल करे हासा, शब्द धार बणे राखा, दो जहानां होए सहाईआ। गुरसिख गुर दा मन्ने आखा, लेखा चुक्के पूजा पाठा, पार उतारे आपणे घाटा, पत्तण इक्को इक वखाईआ। चरण कँवल जुड़ाए नाता, गोद उठाए बण के पिता माता, साचा सज्जण इक्को इक हरि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। वेख अदालत हुन्दी, हौसला सारे रहे ढाहीआ। लाड़ी मौत कहे मेरी मींढी रह गई गुंदी, सीस श्रृंगार वखाईआ। राए धर्म कहे मेरा मसूल मिल्या ना उते चुंगी, लेखा हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। चित्रगुप्त कहे मेरे हथ्थों खुस गई कुंजी, कुफल सक्या ना कोए खुल्ह्लाईआ। जन भगतां दी प्रभ आपणे हथ्थ रखी पूंजी, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। चार युग अन्दर वड़ के किसे ना ढूंडी, बाहरों इशारयां नाल समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण निरगुण सरगुण हो के हथ्थ विच फड़े खूंडी, खुड्डे काया फोले चाईं चाईंआ। जिस दी औध वेखे पुगी, ओस दी फेर वसाए झुग्गी, मन्दिर आपणा नाल जणाईआ।

एह धार किसे ना बुझी, जुग चौकड़ी रही गुज्झी, पड़दा सके ना कोए हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ दया कमाईआ। वेख अदल गुर अवतार पीर पैगम्बर गए झुक, झाकी प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जन भगत वड्याई उजल करे मुख, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। दर घर आ के स्वामी लए पुच्छ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण इक्को दरस दरसाईआ। रवि ससि सूरज चन्द करन हासा, खुशीआं राग अलाईआ। उठो मण्डल मण्डप सारे वेखो तमाशा, गगन गगनंतर आपणी अक्ख खुलाईआ। चौदां लोक चौदां तबक सारे मन्नो आखा, माण अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। जिस दीआं चार युग करदे रहे बातां, अक्खरां नाल सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। सो निरगुण निरवैर निरँकार जन भगतां होया राखा, रक्षया करे चाईं चाईंआ। जे बाहरों वेखण अन्ना अन्दरों सदा सुजाखा, सोहणी आपणी खेल रचाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त सच सुणाए अगम्मी भाषा, धुर संदेसा नाम दृढ़ाईआ। जन भगतां अन्दर कर के वासा, वसल सच्चो सच इक समझाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन होए ना कोए नरासा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक टिकाईआ। लख चुरासी आवण जावण जन्म मरन करे बंद खुलासा, बंदगी इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए तराईआ। दो जहान वेखो डरदा, भय विच समाईआ। चौदां लोक कलमा पढ़दा, चौदां तबक विद्या चौदां पन्ध मुकाईआ। चन्द चौधवीं सजदा करदा, निउँ निउँ लागे पाईंआ। इक चार दा लेखा काया माटी पंज तत धड़दा, सीस जगदीश आपे बैठा सोभा पाईआ। मंज़ल पौड़े धुरदे चढ़दा, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण निरगुण धार इक इकल्ला एकँकार अकल कल आपणा खेल रचाईआ। अदल कहे मैं वेख्या हक़, हकीकत विच्चों आप प्रगटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा निकलया शक़, संसा रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे सब दी हो गई बस्स, वस्त्र बन्न के बैठे नज़री आईआ। उच्ची कूक पुकार रसना कहिण तूं पुरख समरथ, श्री भगवान तेरी वड्याईआ। बिन ढाहयों परवरदिगार तेरी चरणी गए ढठ्ठ, माण अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दा जो चलाया हट्ट, बण हटवाणे सेव कमाईआ। कलमा कलाम रसना जिह्वा बत्ती दन्द मणका मणका ल्या रट, ढोला सोहला गीत गोबिन्द अलाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां वेद कतेबां मार्ग आए दस्स, लेखा लिख के कलम छाहीआ। कलयुग अन्त करे खेल सूरा सरबँग, समरथ आपणी दया कमाईआ। जन भगतां वस उपर शाह रग, त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। बिन मकक्यों काअब्यो कराए हज्ज, बिन तन्द सतार वजाए नद, अनहद राग राग अलाईआ। फड़ के हँस बणाए कग्ग, माणक

मोती सोहँ साची चोग चुगाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकारे विच्चों कढ्ढ, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म करे सच कुड़माईआ। जो सरसे कन्ढे गए छड्ड, तिन्हां दे लेखे लाए माटी हड्ड, ओन्हां विच्चों इक एह वी नज़री आईआ। कर किरपा ल्या रख, सत्तरां दी एहदे वल अक्ख, किरपा कर पुरख समरथ, कक्खों लख दे बणाईआ। तेरा बिरद प्रभ कदी ना जाए पिच्छे नट्ठ, जुग जुग आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद होए सहाईआ। सदा सदा प्रभ तेरा सदका, हउँ घोली वारी घोल घुमाईआ। भगत भगवान प्रभ दिसे तेरा तबका, तेरा नूर नज़री आईआ। जद पढ़न तद तेरा सबका, दूजी करन ना कोए पढ़ाईआ। इक्को सिखण अगम्मी हरफ़ा, जिस दी धार तेरे विच्चों नज़री आईआ। हरिजन कदी ना होए दो तरफ़ा, यक्क तरफ़ इक्को इक नज़री आईआ। जिस दा ना कोई सोग ना कोई हरखा, चिन्ता ग़म संग ना कोए लिआईआ। जद करे रहमत जन भगतां उते तरसा, गुरमुख गुर गुर वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी मिटे हरसा, हिवस हवस अवर ना कोए वधाईआ। जिस दा माणस जन्म स्वासां दा मुक्कण वाला ख़र्चा, तिस पल्लू गंढु पवाईआ। घर घर होण ना दिती चर्चा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। वेखो धुर दा धर्म राए वखाए पर्चा, बौहड़ी बौहड़ी रिहा कुरलाईआ। तूं किथों आ ग्यों वसणवाला उते अर्शा, लोकमात फेरा पाईआ। तूं पहलों मेरा बद्धा धड़ता, धड़वाई ला के ग्यों समझाईआ। मेरे हुक्म बिनां अग्गे कोई ना लँघदा, जमदूत फड़ फड़ देण सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा झोली पाईआ। वेख अदल उठे चारे जुग, आपणी आपणी लैण अंगड़ाईआ। कलयुग कहे मेरी औध रही पुग, सतिजुग कहे मेरी वारी नेड़े आईआ। त्रेता कहे मैं अजे बहिणा लुक्क, द्वापर कहे गूढ़ी नींद सौं के खुशी मनाईआ। जन भगतां आसा कहे तुसीं सारे रहो चुप्प, सो भली जो साहिब सतिगुर भाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे भाणे अन्दर खुश, खुशीआं रंग रंगाईआ। चलो रल मिल सारे उस दे कोलों लईए पुच्छ, गल पल्लू वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देवे इक्को वर, अगला भेव खुल्हाईआ। चलो रल मिल सारे संगी, सोहणा संग बणाईआ। जेहड़ा खेल करे वरभण्डी, ब्रह्मण्डी जोत जगाईआ। जो भगतां देवे वस्त अनमंगी, अनडिठड़ी दात वरताईआ। गुरमुखां लाए कार अंगी, अंगण आपणे विच बहाईआ। पिठ होण ना देवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाता तोड़ ख़ानाबंदी, बंदा बंदे विच्चों आपणा फेर प्रगटाईआ। एहो साहिब सतिगुर खेल लग्गी चंगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दाता दातार दयावान होए सहाईआ। चार युग वेख उठे, चारे खाणी खुशी मनाईआ। चारे बाणी ढोले रटे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे छक्के, सोहला राग अल्हाईआ। विष्न

६७१
१६

ब्रह्मा शिव दूर दुराडे रहे तक्के, नेत्र नैणां अक्ख खुल्हाईआ। जिस पिछले लेख दे मनसूख कीते पटे, इक्को अग्गे हुक्म सुणाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच दे अग्गे ना रहिणे रट्टे, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। जिउँ धन्ने प्रगट होए दरस दिखाया विच्चों वट्टे, हुण बिनां वट्टउँ नज़री आईआ। जिस नामे भोग लगाया दुध कटोरे छन्ने, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। भगत सुहेला हो के श्री भगवान आपे मन्ने, मनसा आपणी आप गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धर्म संदेसा नर नरेशा इक्को इक सुणाईआ। सुणो संदेसा भगत जन मीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी बदले रीत, रीतीवान हुक्म वरताइंदा। सतिजुग साचे लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ नजर कोए ना आइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई नाम कलमा दस्से इक हदीस, हज़रत साचा सच पढ़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जग जाइण जीत, जीवण जुगत इक वखाइंदा। झगड़ा मुक्के ऊँच नीच, राउ रंक इक्को घर वसाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावे ठीक, कूड़ा ठीकर कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे सच प्रीत, प्रीतीवान इक हो जाइंदा। सच प्रीत करो हरि स्वामी, दो जहान मिले वड्याईआ। पुरख अकाल दी पढ़ो अगम्मी बाणी, नित नवित्त जो आदि जुगादि सुणाईआ। अमृत आत्म रस पीओ ठंडा पाणी, निझर झिरना इक झिराईआ। तख्त निवासी शाह सुल्तानी शहिनशाह सुणाए सच कहाणी, कहावत रूप ना कोए वटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सुरती बाली नढ्ढी इक अंजाणी, सोच समझ सके कुछ ना राईआ। जिस किरपा करे सच महिबूब हरि सुल्तानी, सुल्हाकुल सुल्हा आपणे नाल कराईआ। सो सूफ़ी भगत रूह आत्म कदे ना होए फ़ानी, फ़नाह दिसे सर्ब लोकाईआ। परवरदिगार सांझा यार मिल्या जानी, अन्जाणत अन्जाण आपणी गोद बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक पद निरबानी, जो पद पद चलयां हथ्थ किसे ना आईआ।

* ३ वसाख २०२१ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर *

पीर पैगम्बर करन इज़हार, धुर दे ढोले गीत सुणाईआ। वेख खेल परवरदिगार, खुशीआं रंग घर रंगाईआ। गुर अवतार बोल जैकार, सच संदेसा रहे सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा यार, सच्चा साची कार कमाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। चार युग दा लेखा वेखे आप निरँकार, भविक्ख्त पड़दा आप चुकाईआ। पढ़न

६७२ १६

सुणन दी जाण गुफ़तार, गुफ़त शनीद दए समझाईआ। लोकमात हो उज्यार, पर्दा आपणा आप चुकाईआ। हरिजन सन्त श्री भगवन्त लए उठाल, अट्ठ तत वेखे चाईं चाईंआ। सच दवारा सति सच्ची धर्मसाल, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी कार सच कमाईआ। पीर पैगम्बर कहिण मोहे मंज़ूर, मनसा तेरे विच समाईआ। तेरा जलवा उपर कोहतूर, नूर नूराना नज़री आईआ। तेरे बरदे होए मशकूर, सजदा सीस निवाईआ। लोकमात बण मज़दूर, चाकर तेरी सेव कमाईआ। कलयुग अन्त मच्चया वेख फ़तूर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मन वासना कूड़ ग़रूर, गुरबत घर घर डेरा लाईआ। कोई ना मंगे प्रभू तेरे चरण धूढ़, मस्तक टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। माया ममता होई मशहूर, मश्वरा घर घर देवे चाईं चाईंआ। साध सन्त करन कसूर, बेवफ़ा नज़री आईआ। जिन्हां दी महिमां सिफ्त करे मनसूर, नेत्र वेख राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्हां देवे सच वड्याईआ। सच वड्याई देवण योग, हरि जोगीशर दया कमाइंदा। सेज अगम्मड़ी भोगे भोग, भस्मड़ रूप आप वटाइंदा। लेखा जाण आपणे लोक, परलोक पर्दा आप चुकाइंदा। मेल मिलावा निरगुण जोत, सरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त आप वरताइंदा। पीर पैगम्बर कहिण संदेसा, सदा नाम जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सच नरेशा, नर नरायण खेल खलाईआ। हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्म महेषा, शंकर लए जगाईआ। गुर अवतार वटाए वेसा, पीर पैगम्बर ख़ाकी तन हंढाईआ। अन्त भगवन्त निरगुण धारे जोती भेसा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। पुरख अकाल हो के खेले खेडा, ख़ालक हो के ख़लक रिहा भुलाईआ। शब्द निशाना मारे नेज़ा, तीर अंदाज़ बणया बेपरवाहीआ। आदि जुगादि वसणहारा सचखण्ड धाम हमेशा, हर घट बैठा सोभा पाईआ। जन भगतां लाए धुर दा लेखा, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। भरम चुकाए मुल्लां शेख़ा, मसायक बैठण मुख भवाईआ। जिन्हां भगतां पिच्छे आपणी पंज तत काया कीती भेंटा, हड्ड मास नाड़ी अग्नी तत तपाईआ। तिन्हां गुरमुखां बण के आया खेवट खेटा, सच मलाह रूप वटाईआ। नाता जोड़ पिता बेटा, पूत सपूत लए उठाईआ। जुग जन्म दा पिछला याद रखे चेता, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार मारन नाअरा, शब्दी ढोला इक्को गाईआ। चारों कुण्ट वेख पसारा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। आदि जुगादी इक अवतारा, पुरख अकाल वेस वटाईआ। नित नवित्त रहे जुग चारा, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। सरगुण देवणहार सहारा, समरथ पुरख महिमा अकथ इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहिबर बण के दए समझाईआ। रहिबर बणे आप खुदा, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जो सूफ़ी सुहेले होए जुदा, जुज़ आपणे नाल

मिलाईआ । मार्ग धुर दा दस्स के सिध्धा, सहिजे सहिजे लए उठाईआ। मिल सखीआं पावण गिध्धा, दो हथ्थां ताल वजाईआ। प्रभ मिलण दी मिल गई बिधा, आत्म परमात्म होई कुड़माईआ। सच सिँघासण प्रभ जू दित्ता निग्घा, निगाह आपणी उते टिकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर भिज्जा, भिन्नड़ा रूप वटाईआ। प्रेम प्यार अन्दर सिजा, छहबर नाम वखाईआ। सच दरबार जन भगतां कढ्ढुया हिस्सा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। पूरब जन्म दा वेखणहारा चिठा, काग़ज़ आपणे कोलों फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण प्रभ काबल, कायनात दए समझाईआ । सृष्ट सबाई बण के बाबल, बाबत आपणी फेरा पाईआ। बाहरों दिसे तन ख़ाकी पागल, अन्दर साबत सूरत बैठा बेपरवाहीआ । सच दवारे करे आदल, असलीयत आपणी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण ढोला, हरि हरि नाम जणाईआ। वेखो पारब्रह्म प्रभ बणया गोला, सेवक आपणा नाउँ धराईआ। शब्द सरूपी हो वचोला, विछड़े आपणे घर वसाईआ। बदलणहारा काया चोला, चोली इक्को इक हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सूफ़ी कहिण तेरी सदाकत, साहिब तेरी वड्याईआ। दरगाह साची सच अदालत, अदली नूर खुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख बग़ावत, बेपरवाह फेरा पाईआ। रहमत नाम करे सख़ावत, अनडिठड़ी दात वरताईआ। जन भगतां दए ज़मानत, ज़ामन इक्को नज़री आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल खलाईआ। गुर अवतार कहिण वेख्या हक़, हरि हाकम बेपरवाहीआ। प्रगट हो पुरख समरथ, सच साची कार कमाईआ। सन्त सुहेले लए रख, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ । निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, दोह अक्खां विच्चों प्रतख कराईआ। आत्म परमात्म सुणा के जस, ढोला इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। पीर पैगम्बर कहिण वेखो नज़ारा, नाज़रीन आप जणाइंदा । जिस दा लेख दरूद हज़ारा, इस्म आअज़म जो समझाइंदा। जिस दा दरगाह साची सच मनारा, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा । जिस दा मुल्ला शेख़ पीर पैगम्बर लए सहारा, सो साहिब वेस वटाइंदा। जिस दा मंज़ल पन्ध आदि जुगादि दिस्सया ना पार किनारा, सो विच संसारा रूप धराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लभ्भया किसे ना ज़ाहरा, गुप्त गुप्ती रूप वटाइंदा । जन भगतां मिल के लावे सच अखाड़ा, सोहणी मण्डल रास रचाइंदा। पिछला लेखा बिन लेखिउँ पाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साची कार कमाइंदा। पिछला लेखा दस्स भगवन्त, सच सच समझाईआ। किस बिध मिलावा कीता बणा बणत, करी नाम कुड़माईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हरि मन्दिर दित्ता वसाईआ। लेखा चुक्कया बहिश्त जंनत,

६७४ १६

स्वर्ग सवरगां डेरा ढाहीआ। होए मिलावा तेरा अन्त, दाअवा इक्को इक रखाईआ। तूं स्वामी नेता कन्त, पतिपरमेश्वर तेरी शरनाईआ। हउँ याचक सेवक दर मंगत, नार सुलखणी सोभा पाईआ। तेरा नाउँ गीत गावां मणीआ मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। कोई भेव ना पावे पांधा पंडत, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। पिछला जन्म दस्स ज़रूर, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। जन्म कर्म दा की कसूर, खा के कसम मंग मंगाईआ। किस बिध होया दर तों दूर, दुराडा बहि के डेरा लाईआ। कवण अन्तर करे मजबूर, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैं बरदा तेरा मशकूर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरी आसा मनसा पूर, तृष्ना रोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दे दृढ़ाईआ। साचा लेखा पिछला सुण, सो साहिब आप सुणाईआ। गोबिन्द वेले कीता गुण, गुण अवगुण रूप वटाईआ। बिन पुरख अकाल जाणे कवण, दूसर समझ किसे ना आईआ। देवे संदेसा धुर दा पवण, पवण पवणां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेदा दस्से आप, हरि करता दया कमाईआ। तेरे कोलों लै के कलम दवात, काग़ज़ टुक्कड़ा मंग मंगाईआ। माझे वालयां लिख्या साफ़, बेदाअवा दे के खुशी मनाईआ। ओस लेख पिच्छों तैनूं आई जाग, क्यों काग़ज़ कलम दवात फड़ाईआ। उधरों आई इक आवाज़, बिन रसना मुख सुणाईआ। इस विच मेरा राज़, लेखा बेपरवाहीआ। अग्गों बोल हटवाणा कहे ग़रीब निवाज़, दर ठांडे मंग मंगाईआ। मेरे साहिब मेरी रखणी लाज, भुल्ल आपणी झोली पाईआ। गोबिन्द किहा रखणा याद, सच स्नेहड़ा इक जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे मेरा बाप, पुरख अकाल फेरा पाईआ। मैं बणां ओस दा साक, सज्जण रूप वखाईआ। तूं भुल्ला भटकदा फिरें विच संताप, संस्सयां विच भवाईआ। तेरा लेखा पिछला वेख पाक, पतित पुनीत लए कराईआ। लहिणा मुकाए नाल कलम दवात, लेखा लिखे सच्ची छाहीआ। पिछले कर्म सुट्ट के डूंघे खात, उत्तों चरणां नाल दबाईआ। गुरसिख तेरी फेर बणाए ज़ात, जमात भगतां विच रलाईआ। करनैल सिँघ कर्मां दा पूरा कर के घाट, लेखा रखे बेपरवाहीआ।

*** ३ वसाख २०२१ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर ***

टिल्ले पर्बत छड्डी आवण सिध, साधक सनकादक आपणा राह तकाईआ। पत्थरां उते रगढ़दे आवण ढिड्ड, इबादत लेखे किसे ना पाईआ। खुशी ग़मी विच गए गिझ, सुखी सुख ना कोए जणाईआ। दोहरे प्यार विच गए भिज, इक रंग ना कोए रंगाईआ। दरस ना पाया नेत्र दिब, दोए लोचण वेखण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सच करनी कार कमाईआ। सिध समाधी अन्दर आवण दौड़, भज्जण वाहो दाहीआ। साडा कारज जाए सौर, अग्गे मिले माण वड्याईआ। नेत्र वेखीए कर के गौर, गहर गम्भीर हरि गोसाईंआ। जिस दे कोल वस्त अनमोल, अगम्म अथाह वरताईआ। चल के सुणीए उहदा बोल, जो भगतां रिहा सुणाईआ। प्रेम प्यार अन्दर जाईए मौल, आपणा आप मिटाईआ। गोरख दा गोरख वाला कौल, पिछला याद आईआ। मछन्दर दस्स के गया धौल, धरनी नाल रखाईआ। बैठे रहिणा अडोल, आसण सोभा पाईआ। नानक नाल जो कीता मखौल, उस दा लहिणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेरवाहीआ। सिधां वेख भज्जे नाथ, आपणा पन्ध मुकाईआ। दर्शन करीए पुरख समराथ, हरि दाता वड वड्याईआ। जा के सुणीए अगम्मी गाथ, जो भगतां रिहा सुणाईआ। नूर वेखीए लोकमात, कायनात करे रुशनाईआ। हरिजन बणाए सच जमात, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। जिस दी होए ना कदे वफ़ात, मरनी मरन मर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा पाईआ। नाथ कहिण वेखीए अक्ख, नेत्र नैण उठाईआ। राह तक्कदे गए थक्क, टिल्ले पर्बत डेरा लाईआ। दर ते मंगीए आपणा हक़, कन्न पाटे कूक सुणाईआ। गोरख अन्दर वड़ के गया दस्स, मछन्दर इशारे नाल जणाईआ। इक्को नाम बोल अलख, अलख निरँजण गया दृढ़ाईआ। साहिब सुल्तान दी रखयो आस, आसा आपणी नाल वधाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो के सद्दे आपणे पास, चरण कँवल कँवल लए बुलाईआ। तुहाडी पूरी करे ख्वाहिश, आसा तृष्ना वेख वखाईआ। वेख्यो उहदे अग्गे उडिओ ना विच आकाश, सिध्धो चले ना कोए चतुराईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी वड प्रताप, एथे ओथे होए सहाईआ। जिस नूं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मन्नया आपणा बाप, पिता पुरख अकाल कहि कहि खुशी रखाईआ। जिस दा माला मणकयां नाल करदे जाप, धूढ़ी तपस्सया रूप वटाईआ। उस दे दर्शन करने साख्यात, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्शे सति सरनाईआ। नाथ सिध होए इकट्ठे, घर इक्को नज़री आईआ। प्रभ सरनाई साचे ढट्ठे, मस्तक टिक्का धूढ़ रमाईआ। पुरख अबिनाशी तेरे बच्चे, बचपन तेरी झोली पाईआ। टिल्लयां पर्बतां उते बैठे रहे बण के कच्चे, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। वड्याईआं अन्दर वड्डे हो हो नच्चे, चतुराईआं विच आपणे चलितर दए वखाईआ। तुध बिन पर्दा कोई ना कज्जे, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। सब दे वेख दोवें हथ्थ बद्धे, बन्दना डण्डौत कर कर सीस निवाईआ। गलवीं खुल्हे लम्मे झग्गे, खपरी हथ्थों हथ्थ नज़री आईआ। कुण्डल पा वाल टेडे कीते छब्बे, शकल बेशकल दिती कराईआ। कन्न पाड़ मुन्दरां पा तेरा दर फेर ना लभ्भे, उठ उठ वेखी सर्ब लोकाईआ। गोरख मछन्दर कहि के गए साडा स्वामी साथों अग्गे, अग्गे बैठा डेरा लाईआ।

जिस वेले कलयुग वा तत्ती वगे, दूर दुराडा चल के आईआ। दीपक जोती नूर नुराना जगे, जगमग जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द सूरा उहदे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे आपणा हुक्म वरताईआ। पीर पैगम्बर जिस हुक्मे अन्दर बद्धे, गुर अवतार बैठण सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फिरन भज्जे, पन्ध मुकावण वाहो दाहीआ। कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर जिस दी चरणी लग्गे, दर ठांडे सीस टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दे देंदे पते, धुर संदेसा राग सुणाईआ। जिस दे पिच्छे सिधो नाथो आपणे घर छड्डे, उह घर दा मालक बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर सारे बद्धे, बद्धी जगत लोकाईआ। तन भबूत रमा ख़ाकी पिण्डे कीते वांग गधे, गदागर हो के घर घर फेरी पाईआ। जिस वेले ओस साहिब दी चरणी जा के लग्गे, देवे माण वड्याईआ। अगले पिछले सारे मुक्क जाण रट्टे, रट्टा अगला दए चुकाईआ। मुख रहे लोड़ ना लौण दी घट्टे, तूम्बी हथ्थ ना कोए आईआ। मृगशाला उस दे चरण चट्टे, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। तुसां दर्शन करना प्रेम दी अक्खे, परमेश्वर आपणा मेल मिलाईआ । चाहे माढ़े चाहे अच्छे, अच्छे बुरे आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तों लाह के टोपी सेली रस्से, रस्ता सिध्धा दए वखाईआ। सिधो नाथो सुणयो जोग, जुगत इक्को इक जणाईआ। जिस वेले आपणे प्रेम प्यार दी देवे चोग, काया चोगा दए बदलाईआ। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता दुःख डेरा ढाहीआ। ओस दवारे वेख्यो उह मौज, जेहड़ी मौज भगतां नाल रखाईआ। नाथ सिध सारे पै गए विच सोच, अन्तर अन्तर आपणा वेख वखाईआ। किस कूटे करीए कूच, कवण घर बैठा बेपरवाहीआ। गोरख कहे उह दाता मेहरवान अलख निरँजण निर्मल जोत, घट जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सिध नाथ आए दवारे, दूर दुराडे सीस झुकाईआ। दर तेरे बणे पनहारे, पत्तण इक्को वेख वखाईआ। किरपा कर हरि निरँकारे, निरगुण तेरी सच सरनाईआ । टिल्ले पर्बत छड्डे जंगल जूह उजाड़ पहाड़े, डूंघी कन्दर संग तजाईआ। जन भगत वेखे दर सोंहदे तेरे लाड़े, सोहणा रूप वटाईआ। कर किरपा मेल आपणे प्यारे, प्यार प्रीतम आपणे विच्चों प्रगटाईआ। तेरा दरस कर लेखा चुक्के सच दवारे, दवारा इक्को सोभा पाईआ। वक्त लँघाया तेरे औण दे सुण सुण लारे, लारयां नाल आसा आसा इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण तेरे हथ्थ वड्याईआ।

* ३ वसाख २०२१ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर *

टिल्ले आसण पिछले छड्डे, धूणी तेरा नाम रमाईआ। शब्दी हुक्म तेरा कढ्ढे, बल आपणा आप वखाईआ। दर ठांडा वेख आए भज्जे, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। कर अरदास तेरे अग्गे, प्रभ बख्श सच सरनाईआ। साडे पैर वेख नंगे, छाले दिसण देण दुहाईआ। साडे पाटे चीथड़ झग्गे, चोला सच ना कोए हंढाईआ। साडे नंगे होए हड्डे, चम्म माटी पड़दा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे हो सहाईआ। आसण छड्डे टिल्ले पर्बत, चोटीआं राह तजाईआ। माण अभिमान मिटी गुरबत, ग़रूर नज़र कोए ना आईआ। गोरख मछन्दर कोलों मिली रुख़सत, बंदीख़ाना बंद खुल्हाईआ। साडे मिलण दी जन भगतां विच्चों कढ्ढ फ़ुरसत, वार थित घड़ी वेख वखाईआ। ज़ाहर ज़हूर नज़री आए अगम्मी मुर्शद , मुरीद आपणे लएं बणाईआ। तन भबूती मैल धो दुरमति, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म दे गुरमति, सिख्या सति सति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग सच्चा दे वखाईआ। आसण छड्डे उच्चे टिल्ले, पर्बत डेरा ढाहीआ। अन्तर धीरज सब दे हिले, सति नज़र कोए ना आईआ। पिछले मुक्के चालीए छिले, चिला अवर नज़र कोए ना आईआ। माण वड्याई विच बैठे रहे ढिले, सिध उडारी सिधीआं विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे वरताईआ। टिल्ले पर्बत छड्ड के आए दौड़, सिंगी नाद संग ना कोए लिआईआ । दर वेख ब्रह्मण गौड़, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तेरा लेखा गहर गम्भीर गवर गौर, बेअन्त रूप वटाईआ। साडे फूड़ीआं उते घस गए मौर, करवट बदल मिल्या ना सच्चा माहीआ। तेरे नाल काहदा ज़ोर, जाबर तेरी सच सरनाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घोर, साडी धीरज बैठी डेरा ढाहीआ। चारों कुण्ट नज़री आया ठग्ग चोर, साध साधना सके ना कोए कमाईआ । तेरे नाल करदे सारे खोर, प्रेम प्रीत ना कोए वधाईआ। जन भगतां पूरी करदा वेख लोड़, आसा साडी सानूं ल्या उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दे वड्याईआ। टिल्ले पर्बत छड्ड के चोटी, तेरा राह तकाईआ । विच्चों कढ्ढ वासना खोटी, खोटे खरे लै बणाईआ। तूं बेपरवाह तारनहारा रविदास चुमारा मोची, मुफ्त आपणा नाम वरताईआ। बेशक साडी मति होछी, होछयां गले लगाईआ। सानूं सिधीआं अन्दर देंदा रिहों रोटी, बोटी बोटी सब दे मुख विच पाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी अग्गे सच ना आई सोझी, समझ सकी ना कोए समझाईआ। बणी रही कमली कोझी, कूड़ी क्रिया रंग रंगाईआ। सिर ते रख निक्की बोदी, वड्डा छत्रधारी दित्ता भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। आसण छड्डे छड्डया दर, घर तेरे अलख जगाईआ। सच स्वामी दे दे वर, पूरब आसा पूर कराईआ । पुरख

अबिनाशी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। जन भगतां अन्दर जाणा रल, हरिसंगत चरणां जोड़े सेव कमाईआ। सोहँ ढोला लैणा पढ़, तेरा मेरा राग सुणाईआ। दरस करना सनमुख खड़, स्वच्छ सरूपी वेख वखाईआ। सरन सरनाई डिगणा दड़, नधड़क सीस झुकाईआ। निरगुण पल्लू लैणा फड़, निरगुण निरगुण लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवे आप सहाईआ। सिध कहिण सानूं दे दे सिदक, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। तेरा नज़री आए इष्ट, जोती नूर रुशनाईआ। साडी भरमी खोल्ह दृष्ट, अनदृष्ट आपणा राह जणाईआ। साडे कोल पिछली लिख्त, जो नानक गया फड़ाईआ। उस दे उते लेख लिख्या भविक्ख्त, अक्खर नौ नज़री आईआ। जिस दा खेल टांक जिसत, चौथे युग सच दए वड्याईआ। तुहाडा लेखा चुक्के उलटा बिरछ, लहिणा लहिणे विच्चों आप वरताईआ। पुरख अकाल दस्से इक आदर्श, सति सतिवादी आपणा आप प्रगटाईआ। पूरब कर्मां मेट हरस, अमृत बरख मेघ बरसाईआ। किरपा निधान कर के तरस, हरिसंगत लए मिलाईआ। गुरमुख वेख होण असचरज, प्रभ एह की खेल रचाईआ। ना एह नारी ना एह मर्द, बुड्ढा बाल बिरध जवान रूप नज़र कोए ना आईआ। सीस उते फिरी करद, पैरां विच होवे दर्द, अंग अंग आपणी लए अंगड़ाईआ। हौकयां विच पीला होया ज़रद, लाली लालन लाल ना कोए वखाईआ। गोरख कर के आपणा फ़र्ज़, सच गया समझाईआ। दर दवारे करयो जा के अर्ज़, आरज़ू आपणी अग्गे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवे मात सहाईआ। सिध नाथ नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। चरण कँवल तेरे जाईए छोह, शहिनशाह मिले वड्याईआ। तेरे जोगे जाईए हो, होका दे दे रहे सुणाईआ। कर प्रकाश आपणी लो, दीपक इक जगाईआ। टिल्ले पर्बत छुटया मोह, मुहब्बत तेरे नाल वधाईआ। दूर दुराडे आए चल के जन भगतां सुण के सो, सोभावन्त घर साचे डेरा लाईआ। सब दी वस्त सब दे कोलों जिस ने लई खोह, ख़ाली हथ्थ दित्ते वखाईआ। बिन ओस दर तों किसे ना मिले ढो, ढोआ लै के भेंट ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचा हथ्थ टिकाईआ। हथ्थ टिक्का दे साचे सिर, सिर सर तेरी भेंट चढ़ाईआ। जिवें भगतां बणयो धिर, मालक धुर अख्वाईआ। साडे नालों ना जाईं फिर, फिरत फिरत प्रभ तेरा घर इक्को वेख्या चाईं चाईंआ। तूं भगतां अक्खर दस्सें निर, निरँकार करें पढ़ाईआ। तेरा वेखीए घर थिर, जिस घर शब्दी रूप वटाईआ। तूं बण के साचा पिर, प्रीतम आपणी उंगली लाईआ। वेख सानूं विछड़यां नूं होया किन्नां चिर, चिरी विछुने क्यों ना गोद बहाईआ। तेरा सोहणा सुहञ्जणा लग्गे पिड़, हरिजन बैठे डेरा लाईआ। फुल फलवाड़ी रही खिल, गुलशन सच रिहा महकाईआ। प्रेम प्यार कर के प्रभ ठाकर साहिब मिल, मिलणी आपणे नाल कराईआ। तूं साडा वेख दिल, दिलगीर हो के दए दुहाईआ। जेहड़ा

गोरख आपणी हथ्थीं ला के गया किल, सो किल किलक कूक मार के रिहा सुणाईआ । चोटी पर्बत सारे गए हिल, हलूणा तेरा इक्को नज़री आईआ। की गेड़ा गया गिढ़, समझ विच्चों समझ ना कोए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा संग बणाईआ। आ के डिगे तेरी चरणी, चरण मिले सरनाईआ। अग्गे मरे जगत मरनी, मरनी विच्चों मरनी दे समझाईआ। सच सरनाई तेरी तरनी, तारनहारे पार कराईआ। मृगशाला दी खल्ल अन्दर पुकार करे हरनी, हिरन आपणी आवाज़ लगाईआ। एस प्रभू दी लग्गो सरनी, जिस सरन विच्चों सरनगति मिले वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची घाड़त अग्गे घड़नी, पिछली घाड़त आपणे विच छुपाईआ।

* ३ वसाख २०२१ बिक्रमी मसा सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदासपुर *

पुरख अकाल खोल्ह गठड़ी, निरगुण निरवैर गंढु खुल्हाईआ। साचा लेख जणा बिन अक्खरी, आखर आपणा पर्दा लाहीआ । जुग चौकड़ी जो रखी वक्खरी, दर ठांडे सच टिकाईआ। जिस दा भेव पंडत पांधा खोल्ह दस्से ना कोई पत्री, हिसाब किताब ना कोए जणाईआ। नेत्र वेख ना पाए शूद्र वैश ब्रह्मण क्षत्री, चारे युग समझ किसे ना आईआ। सच प्रेम प्यार नाल रत्तड़ी, रंग रत्ते आप रंगाईआ। जिस दा तोल वज़न तोले कोए ना तक्कड़ी, तराज़ू विच ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक दरसाईआ। भेव अभेदा खोल्ह भगवान, हरि करते तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल महान, ख़ालक ख़लक आप कराईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, मर्द मर्दाने तेरी शरनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान तेरा भेव ना सके जाण, अनभव तेरा रूप नजर किसे ना आईआ। बिन अक्खरां वक्खरा देवें ज्ञान, बोध अगाध करें पढ़ाईआ। इक सत्त दा देवणहारा दान, पंज छे बख्शणहारा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । सतारां सौ छपंजा बिक्रमी पुरख अबिनाशी गोबिन्द दित्ता इक फ़रमाण, सच संदेसा धुर अल्हाईआ। मैं तेरा तूं मेरा बाला नढ्ढा इक नधान, पूत सपूता नज़री आईआ। तेरा लेखा विच जहान, लोकमात करी कुड़माईआ। पंज तत सृष्ट सबाई कर पहचान, आत्म अन्तर निरगुण नज़री आईआ। मन मति बुध नौ दर खेल महान, काया तन माटी रचन रचाईआ। बिन सतिगुर किरपा साचा मन्दिर वेखे ना कोए मकान, घर घर जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सर्ब कुरलाण, दीन मज़्ह्ब करे लड़ाईआ। निरन्तर ब्रह्म सके ना कोए पहचान, कूड़ी क्रिया होई बेईमान,

साचा जलवा नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। कागद कलम लिख लिख दे के गए ब्यान, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के गए ज्ञान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सोहला ढोला राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि निरँकार, निरगुण निरवैर इक अख्वाइंदा । वसणहारा सचखण्ड दुआर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी नौजवान रूप रंग रेख भेख वेख, जगत ना कोए समझाइंदा । वसणहारा अगम्मड़े देस, अलख अगोचर आपणी कार कमाइंदा। दो जहानां बण नरेश, ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं आपणा हुक्म वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते भेज, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। गोबिन्द तेरा कर प्यार अन्तर आत्म माणे तेरी सेज, सोभावन्त आपणा आसण लाइंदा। जोती जलवा नूरी दे के तेज, शब्दी ढोला राग सुणाइंदा। सति स्वामी सदा निहकामी अन्तरजामी पुरख अकाल लैणा पेख, बिन अक्खां नज़री आइंदा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी बदले रेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए जणाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त रहे हमेश, मरन जमण विच कदे ना आइंदा। सेवा लाए विष्न ब्रह्म महेष, शंकर आपणी कार कमाइंदा । उस दा लेखा कोई ना सके वेख, गठड़ी खोल्ह हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा आप जणाइंदा। पारब्रह्म हरि करता करतार, करनहार वड्डी वड्याईआ। सच दवारा खोल्ह किवाड़, पड़दा उहला आप चुकाईआ। इशारे नाल दए वखाल, गोबिन्द आप जगाईआ। उठ लाडले धुर दे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारा वेख सच्ची धर्मसाल, थिर घर तेरा आसण इक सुहाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलां तेरे नाल, नित नवित्त सगला संग बणाईआ। उठ वेख मुरीदां मुर्शद लिख्या हाल, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे तेरा लेख अनडिठ, प्रभ नज़र किसे ना आईआ। कोई ना जाणे तेरा भेत, अभेव तेरी वड्याईआ। धन्न भाग तूं मेरा कीता हेत, हउँ बालक तेरी गोद सुहाईआ। जिउँ भावे तिउँ खेलें खेड, ख़ालक ख़लक सच ख़लारी आपणा रूप वटाईआ। हुक्मे अन्दर सब नूं देवें भेज, भय भउ आपणा सिर रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण गोबिन्द सच्चे, सच दयां दृढ़ाईआ। उठ लाडले मेरे बच्चे, तेरा बचपन इक बणाईआ। लख चुरासी भाण्डे कच्चे, तन माटी ख़ाक रलाईआ । मन वासना नव नौ चार नच्चे, मन मति बुध आपणी कार कमाईआ। गुर गोबिन्द दोवें इक घर वसे, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ । सूरज चन्द ना कोई रवि ससि, मण्डल मण्डप रूप ना कोए वटाईआ। इक्को जोत जोत प्रकाशे, प्रकाशवान नूर खुदाईआ। साचा

लेख लिखे पुरख अबिनाशे, ना कोई रखे कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। कलम शाही ना कोए कातब, लेखा लिख्त विच ना आईआ। समझ ना सके सरगुण ताकत, निरगुण आपणा पर्दा पाईआ। परम पुरख परमात्म जुग चौकड़ी आपणी आपे जाणे आदत, अदालत दरगाह साची हक़ कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सही सलामत, साहिब दाता वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द उठ वेख नुक्ता, बिन अक्खां दयां वखाईआ। जिस दा लेख कदे ना मुक्कदा, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। जिस दा भाणा कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा सरोवर कदे ना सुक्कदा, कोटन कोटि समुंद सागर बैठे मुख शरमाईआ। जिस दे कोलों गुर अवतार पीर पैगम्बर धुर दी सिख्या पुछदा, करनहार सच पढ़ाईआ। ओस तेरे नाल नाता जोड़या पिउँ पुत्त दा, पतिपरमेश्वर सज्जण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द कहे की इक सत्त, अंक अंक नाल जुड़ाईआ। पंज छे दा भेव दस्स, किस बिध होवे कुड़माईआ। चौथे युग चारों कर इकट्ठ, सच्चा बन्धन पाईआ। विच्चों दूई द्वैत कट, इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। इक कहे मेरा खेल एकँकार, सति कहे सति सतिवादी नज़री आईआ। पंज कहे मेरा पंच आधार, पंचम पंच देवे वड्याईआ। छे कहे मेरा सच्चा घर बार, छे घर गुर गुर बूझ बुझाईआ। इक सत्त पंज छे कर त्यार, सतारां सौ छपंजा बिक्रमी वार थित इक रखाईआ। जिस थित अन्दर पुरख अकाल गोबिन्द कीता प्यार, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। उठ दुलारे कर ध्यान, नेत्र लोचण लैणां अक्ख खुल्हाईआ। चार वरन रोवण ज़ारो ज़ार, बरन अठारां रहे कुरलाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां कोई ना सके उठाल, शाह सुल्तान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। शब्द दुलारे बण दलाल, लोकमात साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैं की जाणां, प्रभू की तेरी वड्याईआ। बाला नढ्ढा तेरा अञाणा, सद हुक्मे विच समाईआ। प्रेम प्यार तेरा पीणा खाणा, दूजी तृष्ना ना कोए वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाणा गाणा, इक्को ढोला रिहा गाईआ। तूं साहिब सतिगुर बीना दाना, दातार तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सद तेरा संग रखाईआ। श्री भगवान कहे मैं करां प्यार, सच सच दृढ़ाईआ। तेरे नाल कौल इकरार, इकरारनामा आपणी हथ्थीं दित्ता लिखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सज्जण कर त्यार, पंज तत तन वड्याईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, रोग सोग मिटाईआ। चार वरनां दे आधार, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। पंच शब्द नाद धुनकार, घर वज्जे नाम वधाईआ।

९८३
१६

तेरा लेखा अगम्म अपार, अलख अगोचर दए समझाईआ। बूटा लाउणा इक करतार, माली तेरा रूप बणाईआ। पाली बण के वेखे सिरजणहार, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, पुरख अकाल बूझ बुझाईआ। चार वरनां कर परवान, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। अमृत आत्म प्या जाम, रस इक्को इक वखाईआ। लोकमात दे पैग़ाम, सच संदेसा इक सुणाईआ। जीव जंत रहे ना कोए अंजाण, भरम भुलेखा आप कढ्ढाईआ। ख़ालस ख़ालसा झुल्ले निशान, धुरदरगाही हथ्थ फड़ाईआ। वाहिगुरू आप करे परवान, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। फ़तिह डंका वज्जे विच जहान, दो जहान करे शनवाईआ। सच संदेसा तेरा इक फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी गोबिन्द आखे, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। मैं सुणी तेरी अगम्मी बाते, जो बातन दिती जणाईआ। तेरा लेख अगम्मी साचे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरा तन माटी काचे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पिच्छे आ के सारे गए भागे, लोकमात आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे समझाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मात आया, पंज तत रहिण किसे ना पाईआ। अन्तिम तेरे विच समाया, जोती जोत डेरा लाईआ। जगत निशाना नज़र ना आया, धुर दा संग सगला रूप ना कोए वखाईआ। दर ठांडे इक्को मंग मंगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। ठांडे दर मंगां मंग, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं साहिब सूरा सरबँग, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। तेरा दवारा वेख्या लँघ, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाईआ। तूं साहिब सुल्तान पुरख अबिनाशी सचखण्ड दवारे बैठों आपणे विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड ब्रह्मण्ड विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं बणा के गुजरी चन्द, लोकमात पंज तत चोला दित्ता पहनाईआ। अग्गे वासते मेरी नंगी होण ना देवीं कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नित नवित्त तेरे नाल जावां हंढु, सच्चा संग सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद आपणा मेल मिलाईआ। साचा प्रभू मेल मिलाया, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अख्वाया, दूजा संग ना कोए रखाईआ। तूं जननी जन बण दाई दाया, हउँ बालक गोद उठाईआ। त्रैगुण पोह सके ना माया, पंज तत तेरी भेंट चढ़ाईआ। पंज तत चोला देणा तजाया, तन माटी ख़ाकी ख़ाक समाईआ। तेरा नाद तेरा शब्द तेरा रूप नज़री आया, तू ही तू दित्ता जणाईआ। तेरे नाल कौल इकरार करन इक्को आया, घर ठांडे दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तेरा भविक्ख्त तेरी किरपा मैनूं नज़री आया, मेहरवान दित्ता समझाईआ। नौ सौ चुरानवे

९८३
१६

चौकड़ी युग तेरा बैठे ध्यान लगाया, कलयुग अन्तिम राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। प्रभू जुग चौकड़ी ध्यान लगाउँदे ने। नेत्र नैण राह तकाउँदे ने। गुर अवतार पीर पैगम्बर वास्ता पाउँदे ने। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण हाल जणाउँदे ने। भगत भगवान तेरा कर ध्यान, नेत्र नैणां नीर वहाउँदे ने। सन्त सुहेले मंगण दान, ख़ाली झोली अग्गे डौंहदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, दर स्वामी घर इक्को सोभा पाउँदे ने। गोबिन्द कहे मैनूं भविक्ख्त नज़री आउँदा ए। जिस दा भेव कोए ना पाउँदा ए। कलयुग अन्त तेरा राह तकाउँदा ए। दोए जोड़ वास्ता पा, चरण सीस निवाउँदा ए। ईसा मूसा मुहम्मद नैण रिहा शरमा, नेत्र अक्ख ना कोए उठाउँदा ए। तेई अवतार चरणी डिगे मारन धाह, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाउँदा ए। शास्त्र सिमरत बण गवाह, शहादत इक्को वार भुगताउँदा ए। लख चुरासी भुल्ले तेरा नाँ, साध सन्त साबत नज़र कोए ना आउँदा ए। माणस मानुख हँस बणे दिसण काँ, काग बुद्धी वांग सर्ब कुरलाउँदा ए। पुत्तर मल्लण सेजा माँ, कलयुग आपणा रंग चढ़ाउँदा ए। नाता बणे भैण भ्रा, नार कन्त ना कोए हंढ्ढाउँदा ए। गुरू चेला झगड़ा रिहा पा, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाउँदा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण नेत्र नैणां नीर रहे वहा, सच ज्ञान अन्तर ना कोए वखाउँदा ए। रसना जिह्वा ढोले कूड़े रहे गा, हिरदे हरि ना कोए वसाउँदा ए। पीर पैगम्बर करन दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाउँदा ए। कलमा कायनात गए भुला, रसूल तेरा गीत ना कोए अलाउँदा ए। तोबा तोबा सारे रहे सुणा, सिर सीस जगदीश ना कोए झुकाउँदा ए। चारों कुण्ट होए वैरान, वैरी घर घर आप वखाउँदा ए। लेखा चुक्के अञ्जील कुरान, सदी चौधवीं चौदां तबक हाहाकार मचाउँदा ए। बीस इकीसा मैनूं नज़री रिहा आ, जिस वेले कलयुग आपणा लेखा तेरी झोली पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, दर तेरे मंग मंगाउँदा ए। दर तेरे मंग मंगावांगा। जो वेख्या हाल सुणावांगा। अनडिठड़ी कार कमावांगा। तेरी गठड़ी फोल वखावांगा। जो धुर दी लिखी पत्री, बिन अक्खरां अक्ख लगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा इक वर, दर ठांडा वेख वखावांगा। मैनूं भविक्ख्त नज़री आउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ तेरे अग्गे सर्ब कुरलाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव वास्ता पाउँदा ए। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द हाहाकार सुणाउँदा ए। आदि शक्ति आदि भवानी, चतुर्भुज माण अभिमान सर्ब मिटाउँदा ए। परवरदिगार पीर पैगम्बर सजदा कर शुकर मनाउँदा ए। चारों कुण्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाउँदा ए। सृष्ट सबाई हुन्दी दिसे ख्वार, धीरज धीर ना कोए रखाउँदा ए। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ धूंआँधार, हाहाकार नारी नर सर्ब सुणाउँदा ए। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मसायक दिसण

बेईमान, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाउँदा ए। भरमे भुल्ले विद्वान, चौदां विद्या जगत राह चलाउँदा ए। तेरा नज़र ना आए किसे निशान, निशाना तीर ना कोए लगाउँदा ए। मैं वेख के होया हैरान, हरि जू की की खेल वरताउँदा ए। एसे कर के तेरे अग्गे देवां ब्यान, आपणी आसा तेरी झोली पाउँदा ए। मैनूं अन्त दिसदा तूं निहकलंक प्रगटें बली बलवान, तेरा अन्त किसे ना आउँदा ए। रूप रंग ना दिसे कोए निशान, मात गर्भ ना डेरा लाउँदा ए। मेरे नाल कर इकरार, तेरा मेरा सच प्यार, सच संदेसा इक सुणाउँदा ए। जिस वेले आवें विच संसार, मेरा प्रेम ना देवीं विसार, विछोड़ा तेरा ना मोहे भाउँदा ए। तूं पिता पुरख अकाल आदि जुगादी दीन दयाल, सदा दीनन गले लगाउँदा ए। मैं तेरे हुक्मे अन्दर सतारां सौ छपंजा बिक्रमी गुरमुख बूटे देवां ला तूं आपे करनी पाल, प्रितपालक तेरी सेवा इक समझाउँदा ए। जिस वेले वेखें आ के हाल, निरगुण आपणा फेरा पाउँदा ए। आपणे बच्चे नूं रखीं नाल, तेरा विछोड़ा सह ना संग तुड़ाउँदा ए। पुरख अबिनाशी हो दयाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। गोबिन्द तैनूं वचोला विच रखां दलाल, बण वणजारा हट्ट चलाउँदा ए। तूं आपणे गुरसिख गुरमुख लवें भाल, तेरे विछड़े फेर मिलाउँदा ए। बीस इकीसे करया इक ख्याल, दलील दलील नाल दृढ़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाउँदा ए। सच करनी कार कमावांगा। निहकलंक नूर उज्यार, निरगुण नूर जोत रुशनावांगा। किला कोट बंक सुहावांगा। सम्बल सच्चा डेरा लावांगा। शब्द चोट नगारे इक लगावांगा। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्हब विच किसे ना आवांगा। ना कोई पुत्त कहे ना पोतरा ना कोई ओत पोत, जोती धार चमकावांगा। गोबिन्द तेरा पूरा कर के शौक, शहिनशाह तेरा खेल वखावांगा। तेरा मेला नित नवित्त रोज़, घड़ी पल विछोड़ा वंड ना कोई वंडावांगा। मेरा लेखा किसे ना आवे सोच, समझ विच ना किसे दृढ़ावांगा। जिस आसा नूं रिहा लोच, सो लोचा पूर करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कर वखावांगा। गोबिन्द बीस इकीसा वक्त सुहाएगा। जगत जगदीशा वेख वखाएगा। छत्र सीसा इक झुलाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बरां धुर हदीसा, इक पढ़ाएगा। शाह सुल्तानां ख़ाली खीसा, राज राजानां ख़ाक मिलाएगा। वेख वखाए शास्त्र सिमरत वेद पुराण अठारां ध्याए गीता, तीस बतीसा अञ्जील कुराना पर्दा फोल फुलावेगा। ख़ाणी बाणी बण के मीता, मित्र प्यारा पर्दा लाहवेगा। लहिणा देणा चुकाए ऊँचां नीचां, राउ रंकां इक्को घर वसावेगा। लेखा जाणे हस्त कीटा, अनडिठा आपणा रूप धरावेगा। गोबिन्द तेरा वेख बाग़ीचा, गुरमुख साचे फूल महकावेगा। चरण प्रीता बख्श करे ठांडा सीता, सीतल धार इक वहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावेगा। प्रभ करनी की कमाएंगा। किस बिध आपणा खेल रचाएंगा। सन्त सुहेले

किवें उठाएंगा। गुरमुख चेले किस बिध आप मिलाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, की करते कार कमाएंगा। कलयुग वेले अन्तिम आवांगा। आपणी खेल खलावांगा। गोबिन्द तेरा शब्दी रूप वटावांगा। सच संदेसा इक सुणावांगा। घर घर अन्दर तैनूं वाड़, गुरमुख सोए आप उठावांगा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती डगमगावांगा। अन्तर आत्म कर प्यार, परमात्म मेल मिलावांगा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, दस्म दवारी वेख वखावांगा। फड़ बाहों मात उठाल, साची सेज आप सुहावांगा। नाता तोड़ काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकावांगा। वेखीं लाडले लाल, गुरमुख लाल तेरी गोद बहावांगा। तूं आपे लईं संभाल, सम्बल तेरा घर वसावांगा। एहो तेरे नाल इकरार, तेरे कीते तेरे नाल मिलावांगा। विसर ना जावां विच संसार, वड संसारी हो के संसा रोग मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण विचोला सेव कमावांगा। वचोला बण के आवांगा। ढोला इक सुणावांगा। पड़दा उहला आप उठावांगा। पंज तत काया चोला भाग लगावांगा। कूड़ी क्रिया पाए ना रौला, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आपणा घर वखावांगा। नाता तोड़ तृष्ना तम, काया माटी चम्म रंग चढ़ावांगा। ना कोई हरख़ सोग ना ग़म, ख़ुशी आपणी इक जणावांगा। लेख चुका के जाप दमां दम, दे दरस पार करावांगा। अग्गे देवे कोई ना डंन, राए धर्म डेरा ढाहवांगा। घर वखा छप्परी छन्न, बंक दवारा इक सुहावांगा। तेरा कहिणा मन्न, जन भगतां मनसा पूर करावांगा। थोड़ा थोड़ा अन्दर रख के जन, शंकया विच्चों संसे होर वधावांगा। तू आदि जुगादी मेरा चन्न, गुजरी चन्न इक सत छे पंज उलटी गंग वहावांगा। निरगुण सरगुण ज़ीरो ज़ीरो ज़ीरो ज़ाहर ज़हूर तेरी धार चलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप सति सरूप लेखा जाणे शाहो भूप, शहिनशाह तेरा हुक्म इक वरतावेंगा। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी धुर दा कौल, हरि करता आप निभाईआ। अन्तिम लेखा उपर धौल, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। लख चुरासी सुत्ती वेख अनभोल, गुरमुख गुरसिख सज्जण लए उठाईआ। रातीं सुत्तयां आवे कोल, गोबिन्द पंज तत रूप विच्चों अनूप नज़री आईआ। जिस दा पड़दा सके कोई ना फोल, सो हरिजन साचे आपणा पड़दा रिहा उठाईआ। प्रेम प्रीती प्यार अन्दर मौल, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। लख चुरासी विच्चों आप वरोल, सन्त सुहेले बाहर कढ्ढाईआ। बेशक सृष्ट सबाई करे मख़ौल, मालक मख़लूक आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द तेरा कौल याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ। कलयुग अन्त सुणे फ़रयाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। लाशरीक वाहिद धुर दा गॉड, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण करे लाड, पूत सपूते गोद उठाईआ। नेत्र खोल्ह जाग, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस रचना रची

आदि, सो वेखे चाईं चाईंआ। गोबिन्द कहे इक मेरी अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। तूं पूरा करीं फ़र्ज़, फ़ैसला हक़ हक़ समझाईआ। जन भगतां उते करना तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। ना सोग रहे ना हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। सिधे जो तैनूं मिलण नधड़क, मैं वेख के खुशीआं रंग चढ़ाईआ। लाल अमोलक हीरे मोती गुरमुख साचे तेरी जड़त, साहिब तेरा नूर नूर रुशनाईआ। मेरी याद रखीं लिखी लिख्त पढ़त, पढ़न वाला तू ही नज़री आईआ। इस विच पैण ना देवीं फ़र्क, फ़िरकयां विच्चों देणा बाहर कढ्ढाईआ। प्रभू तेरा खेल असचरज, अचरज तेरी वड वड्याईआ। तूं मर्द मर्दाना मर्द, मर्दानगी तेरी मोहे भाईआ। बीस इकीस गुरमुखां दा पिछला लौहणा कर्ज़, कीती घाल झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल कहे मैं होया दीन, अनाथी रूप वटाईआ। बरदा ग़ुलाम बणया मस्कीन, निरगुण निरमाणता विच समाईआ। शब्दी धार अगम्मी रखां महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द वाचक कोई ना सके चीन, भेव सके ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव सब दा लेखा पहलों छीन, पूरब पूरब झोली पाईआ। फिर गोबिन्द इक्को तेरे उते रख यकीन, यक्क तरफ़ा हुक्म सुणाईआ। लख चुरासी वेखां नर मदीन, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पड़दा लाहवां लोक तीन, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ बैठण सीस निवाईआ। कोटन

९८७ कोटि राम पढ़न ओथे ताअलीम, कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद अल्फ़ सिख सिख अल्फ़ी तन रहे गंवाईआ। परम पुरख ९८७

१६ परमात्म करे खेल आप नाबीन, नाबीना हो के देवणहार रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा १६

जाणे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर खोज, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। परम पुरख प्रभ जाणे आपणी मौज, मौजूदा हो के भेव चुकाइंदा। गोबिन्द तेरे अगम्मी चोज, प्रीतम चोजी रंग रंगाइंदा। साची बख्शे भगतां सोच, समझ समझ नाल समझाइंदा। नेत्र खोल्ह आपणा लोच, लोचण आपणे नूर चमकाइंदा। नाम प्याला प्या करें मदहोश, मदिरा जाम इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। तन नगारे लाए चोट, शब्द रबाब सतार आप हिलाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता कढ्ढे खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना डेरा ढाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा डूंघी कन्दर आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। हुक्मे अन्दर सारे करन बस्स, बसते लोकमात बंधाईआ। चरण कँवल सच सरनाई जावण ढह्ह, मस्तक टिक्का धूढ़ी खाक रमाईआ। रसना जिह्वा बिन कहिण तूं समरथ, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त साडा चले ना कोई वस, चारों कुण्ट फिर फिर थक्के वाहो दाहीआ। जीव जंत दूर दुराडे तैथों गए नस्स, सच स्वामी तैनूं मिलण कोए

ना आईआ। तेरे मिलण दी खुल्ली किसे ना अक्ख, जूठे झूठे साध सन्त कूड़ी क्रिया कर कर जगत ढोले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर कर पुरख समरथ, समरथ तेरी ओट तकाईआ। तेरी ओट तक्कया सहारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम वेख किनारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, साक सज्जण सैण पल्लू रहे छुडाईआ। आपणा लेख कर उज्यारा, जो लिख्या बिन कलम शाहीआ। मेरयां गुरसिखां दे ओह नज़ारा, जिस नज़ारे विच्चों तेरा मुज़ाहरा नज़री आईआ।, मुज़ाहरे विच्चों प्रगट होवे तेरा इशारा, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। तूं मेरा परवरदिगारा, तेरा ठांडा सच दरबारा, महल अटल उच्च तेरी रुशनाईआ। हरिजन हरिभगत दर दरवेश करे पुकारा, नेत्र रोवे नीर वहाए हाहाकारा, तुध बिन पार ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दे सरनाईआ। साहिब श्री भगवान, पुरख अकाल आप जणाउँदा ए। दीना बन्धन बंधप हो दयाल, बन्धन पिछले सर्ब कटाउँदा ए। आपे वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणी मेहर वरताउँदा ए। त्रैगुण कूड़ा तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक रुशनाउँदा ए। निरगुण निरवैर बण दलाल, धुर दा मेला मेल मिलाउँदा ए। जो गुरमुख गुरसिख पूरब घालन आए घाल, कीती घाल थाएँ पाउँदा ए। गोबिंद हल्ल करे सवाल, हरि जू सोहणी बणत बणाउँदा ए। कूड़ी क्रिया फल रहिण ना देवे किसे डाल, पतझड़ आप वखाउँदा ए। जन भगतां वसे सदा नाल, जुग बिछरत मेल मिलाउँदा ए। वीह सौ इक्की बिक्रमी वजाए उह ताल, जिस ताल विच्चों पुरख अकाल राग अलाउँदा ए। जन भगतां वखाए सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआर आप सुहाउँदा ए। मरन तों पहलों लए ज्वाल, एह गोबिन्द इकरार पूर कराउँदा ए। जो सतिगुर घर जन्मे लाल, सो जन्म मरन विच कदे ना आउँदा ए। एह मार्ग नहीं सुखाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर एहो राह समझाउँदा ए। जिन्हां भगतां श्री भगवान आपणी गोदी लए उठाल, तिन्हां विष्न ब्रह्मा शिव चरण ध्यान निउँ निउँ सीस निवाउँदा ए। उह मंज़ल मंज़ल मंज़ल चढ़े महान, जिस मंज़ल साहिब डेरा लाउँदा ए। ओथे ना ज़िमी असमान, सूरज चन्द ना कोए चमकाउँदा ए। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़े ज्ञान, चारे खाणी चारे बाणी वंड ना कोए वंडाउँदा ए। निरगुण नूर जोत जगे महान, पुरख अकाल इक्को नज़री आउँदा ए। जिस नानक कबीर जुलाहा करया परवान, गोबिन्द हुक्म हक़ सुणाउँदा ए। सो साहिब स्वामी सब दा जाणी जाण, जानणहार दया कमौदा ए। कौल इकरार दा पूरा करे ब्यान, बिन लिख्या लेख लिख्त विच प्रगटाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल श्री भगवान, भाग सब दा वंड वंडाउँदा ए।

* ४ वसाख २०२१ बिक्रमी अमराउ सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदासपुर *

भगत उधारन को प्रभ एका, जुग चौकड़ी दया कमाइंदा। चरण कँवल जन देवे टेका, सच सरनाई इक वखाइंदा। पूरब जन्म दा जाणे लेखा, कर्म कांड खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। भगत उधारन हरि प्रभ स्वामी, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, जुग जुग वेख वखाईआ। शब्द सुणाए धुर दी बाणी, धुन अनादी नाद वजाईआ। पकड़ उठाए सोई सवाणी, सुरती शब्द जगाईआ। अमृत बख्शे ठंडा पाणी, निझर धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलाईआ। भगत मेलण को एको दाता, हरि करता आप अख्वाइंदा। नित नवित्त बन्ने नाता, जुग जुग जोड़ जुड़ाइंदा। सच नाम दी दस्से गाथा, विद्या इक्को इक सुणाइंदा। जन्म कर्म दा बण के राखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत उधारी दया कमाइंदा। भगत उधारन को हरि ठाकर, सो पुरख निरँजण दए वड्याईआ। पार उतारे डूंघे सागर, साची नईया नाम चढ़ाईआ। चरण कँवल दर देवे आदर, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। मेहरवान हरि करता कादर, रहमत बख्शश झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। भगत उधारन को प्रभ मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। तन मन काया करे ठांडा सीता, अग्नी तत गवाइंदा। लेख चुकाए हस्त कीटा, ऊँच नीच डेरा ढाइंदा। सच जणाए धुर दी रीता, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। भगत उधारन आदि निरँजण पुरख, सो साहिब वड्डी वड्याईआ। मेट मिटाए चिन्ता सोग हरख, हिंसा रहिण कोए ना पाईआ। सच दवारे दए दरस, घर प्रगट रूप इलाहीआ। रहमत विच कमावे तरस, रहीम होए सहाईआ। खेल वखाए साचे अर्श, अर्शी प्रीतम वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाईआ। भगत उधारन हरि गोबिन्द, श्री भगवान दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, कर्म कर्म दा रोग गवाइंदा। अमृत धार बख्श सागर सिन्ध, बूँद स्वांती मुख चवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत उधारन श्री भगवन्त, सहिज सुख दाता इक्को इक अख्वाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, चौकड़ी आपणा पड़दा लाहीआ। नाम दृढ़ाए धुर दा मंत, मंतव साचा हल्ल कराईआ। नाउँ धराए धुर दे सन्त, सतिगुर शब्दी खेल वखाईआ। चोली चाढ़ रंग बसन्त, काया माटी आप लगाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल वखाईआ। तारन को हरि पुरख अगम्म, भगत उधारी इक अख्वाइंदा। हरख सोग ना कोई ग़म, चिन्ता मेल ना कोए

मिलाइंदा। भाग लगाए काया चम्म, तन माटी ख़ाकी ख़ाक रुशनाइंदा। निरगुण सरगुण बेड़ा बन्न, फड़ आपणे कंध उठाइंदा। वस्त अमोलक दे के धन, दौलत ख़ज़ीना आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। भगत उधारी साहिब करतार, अछल अछल्ल वड्डी वड्याईआ। दाता दानी देवणहार, दयानिध अख्वाईआ। सच भण्डार सदा जुग चार, वरन चार वरताईआ। भगत भगवन्त कर प्यार, प्रीती प्रीतम इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। भगत उधारी हरि नरायण, नर हरि वड्डी वड्याईआ। दरस दिखाए आपणे नैण, निज नेत्र आप खुलाईआ। रसना जिह्वा कोई ना सके कहिण, कहि कहि लेख ना कोए बणाईआ। कर किरपा जिस दा बणे सैण, सज्जण इक्को नज़री आईआ। नुक्ता मिटाए आप ऐन, अक्ख प्रतख रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ। तारन को प्रभ पुरख अथाह, अलख अगोचर आप अख्वाइंदा। साचे भाणे रिहा चला, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। साचे सन्तां बण मलाह, सागर भँवरी पार कराइंदा। टिल्ले पर्बत जल थल वेख अस्गाह, जंगल जूह डेरा ढाइंदा। अन्ध अन्धेरा दए गंवा, साचा चन्द नूर चमकाइंदा। रहिबर बण के दस्से राह, रस्ता धुर दा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाइंदा। भगत उधारन हरि गहर गम्भीर, बेपरवाह अख्वाईआ। शब्द अणयाला मारे तीर, निराला आप चलाईआ। कूड़ी क्रिया कट ज़ंजीर, शरअ संगल दए तुड़ाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीर, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जलवा दे बेनज़ीर, नज़र आपणे नाल मिलाईआ। दरस करा सच तस्वीर, इष्ट देव स्वामी दृष्ट दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। भगत उधारी श्री भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, सच विद्या करे पढ़ाईआ। वखावणहारा सति निशान, सच दवारे दए झुलाईआ। प्यावणहारा अमृत जाम, रस इक्को इक वखाईआ। मिटावणहारा आवण जाण, लख चुरासी फंद तुड़ाईआ। बहावणहारा सच मकान, सच दुआर इक सुहाईआ। जपावणहार आपणा नाम, साचा मन्त्र दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। भगत उधारी भगती संग, भगवन मेल मिलाइंदा। सच दवारा गुरमुख लँघ, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। नाम निधान वजाए मृदंग, धुर दा राग अल्हाइंदा। दे वड्याई साचे चन्द, नूरी जोत रुशनाइंदा। मंज़ल मुक्के पिछला पन्ध, पांधी घर साचा इक वखाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, घर साचा मेला इक कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत उधारी दया कमाइंदा। भगत उधारी बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। त्रैगुण कूड़ी मेटे छाया, शहिनशाह होए सहाईआ। साचा ढोला जिस जन गाया, सोहँ राग अल्हाईआ। तिन्हां

फड़ के पार कराया, मझधार ना कोए डुबाईआ। आवण जावण गेड़ चुकाया, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच महल इक वखाया, दीपक जोत करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी ताल वजाया, अट्ठे पहर राग अलाईआ। सच सिँघासण इक सुहाया, सोभावन्त सुहाईआ। पुरख अबिनाशी डेरा लाया, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। भगत भगवन्त वेख वखाया, बिन अक्खां अक्ख जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगत उधारनहार सुहेला, सज्जण इक अख्वाइंदा। शब्द गुरु गुर कर के मेला, साचा जोड़ जुड़ाइंदा। बन्धन पा गुरु गुर चेला, बंदगी आपणा नाम समझाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, घर घर साचा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल आप अख्वाइंदा। भगत उधारन को हरि इका, एकँकार आप अख्वाईआ। आदि जुगादी नीकन नीको निक्का, वड वड्डा ऊँचो ऊँच अख्वाईआ। परम पुरख स्वामी बण के सब दा पिता, अकाल दयाल काल आपणा हुक्म वरताईआ। सच नाम चलाए सिक्का, जुग जुग मोहर लगाईआ। धुर संदेस दे के चिठा, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर लेख लिखा, लिख्त भविक्ख्त आप समझाईआ। मुरीद मुर्शद करे रिच्छा, रखशश बेपरवाहीआ। नाम भण्डार पाए भिच्छा, भिख्या इक वरताईआ। जन भगतां सब तों वखरा रख्या हिस्सा, हरि जू आपणे हथ्थ वखाईआ। रस अमोलक नाम देवे मिट्ठा, मिठास सच प्रेम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन दान आपणा आप वरताईआ।

* ४ वसाख २०२१ बिक्रमी सड़क उते *

किरपा करे सतिगुर पूरा, पुरख अकाल सदा सहाईआ। जन भगतां सदा हाज़र हज़ूरा, नित नवित्त दया कमाईआ। आत्म जोती देवे नूरा, निज नेत्र करे रुशनाईआ। अमृत जाम प्याए चाढ़े सच सरूरा, नाम खुमारी इक रखाईआ। माया ममता हउमें हंगता तोड़े गढ़ ग़रूरा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। आसा मनसा करे पूरा, संसा रोग चुकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। किरपा करे हरि गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। साचे सन्तां देवे नाम धीर, सति सन्तोख झोली पाईआ। शब्द निराला अणयाला मारे तीर, बजर कपाटी पार कराईआ। अंमिउँ रस अमृत देवे ठंडा सीर, निझर झिरना इक झिराईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म दी बदल तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। दरस कराए बेनज़ीर, नज़र नज़रीआ इक उठाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ।

किरपा करे श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन वेखे जुगा जुगन्त, जुग करता निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाइंदा। बोध अगाध आत्म परमात्म नाम निधान देवे बण के साचा पंडत, धुर दी सिख्या इक दृढ़ाइंदा। दे वड्याई लख चुरासी विच्चों जीव जंत, साचे सन्त पार कराइंदा। एथे ओथे दो जहान बणाए बणत, घड़न भंनणहार समरथ स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लेखे लाइंदा। किरपा करनहार समरथ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले लोकमात लए रख, रच्छा करे बेपरवाहीआ। आपणे मिलण दी देवे अक्ख, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। शब्द अनाद वजाए सट्ट, धुन आत्मक राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया काया मन्दिर अन्दर विच्चों जाए नट्ठ, सतिगुर पूरा भय भ्यानक रूप आपणा इक वटाईआ। आत्म परमात्म शब्दी धार सुणाए जस, तूं मेरा मैं तेरा नाता सच्चा जोड़ जुड़ाईआ। पूरब जन्म विछड़यां पूरी करे आस, आसा तृष्ना आपणी झोली पाईआ। वगदा जल ना बुझाए किसे प्यास, बिन सतिगुर पूरे तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। सदा सुहेला इक इकेला जन भगतां सदा दासी दास, सेवक आपणा रूप वटाईआ। गुरमुख गुरसिख लोकमात कदे ना होए उदास, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। किरपा करे सतिगुरु गुर गुरदेव, सच स्वामी वेख वखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल निहकेव, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेद अभेव, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। जन भगतां वेखे पूरब जन्म दी सेव, लहिणा देणा सब दी झोली पाइंदा। अमृत आत्म रस देवे साचा मेव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। किरपा करे हरि सतिगुर मीत, मित्र प्यारा दया कमाईआ। गुरमुखां काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। चरण कँवल उपर धवल बख्शे इक प्रीत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सच महल अटल वखाए ठीक, जिस घर ठाकर स्वामी बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद देवणहार वड्याईआ। साहिब सतिगुर रखे याद, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। सचखण्ड निवासी सुणे फ़रयाद, दो जहानां दया कमाइंदा। जन भगतां बणया रहे माई बाप, पिता पुरख अकाल आपणी गोद उठाइंदा। घर वड़ के मन्दिर चढ़के गृह वजाए नाद, धुन अगम्मी राग सुणाइंदा। शब्दी शब्द मार आवाज़, सोई सुरती आप उठाइंदा। भगत भगवान मिल के करे काज, करनी करता आपणी आप समझाइंदा। जिन्हां गुरमुखां खोल्हे पड़दा जणाए आपणा राज़, सो गुरमुख गुर गुर आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक इकेला समरथ स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। रखे याद हरि भगवन्त, भगवन भुल्ल कदे ना जाईआ। दाता दानी

गुणां गुणवन्त, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। जुग विछड़े मेले सन्त, सज्जण आपणा घर दरसाईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि जुग चौकड़ी बेअन्त, गुर अवतार पीर पैगम्बर कहि कहि गए सुणाईआ। सुहञ्जणा धाम सोभावन्त, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठा डेरा लाईआ। सो साहिब सुल्तान जन भगतां देवे नाम निधान मणीआ मंत, मन मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद लेखा लेखे विच रखाईआ।

* ४ वसाख २०२१ बिक्रमी कृपाल सिँघ नाल अमृतसर *

सन्त सतिगुर सति सरूप, निरगुण निरवैर नूर रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी वसे चारे कूट, दहि दिशा रिहा समाईआ। वसणहारा काया पंज तत भूत, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर आप अख्वाईआ। सन्त सतिगुर हरि निरँकार, निराकार आप अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, नित नवित्त वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी धुर जैकार, बोध अगाधा नाद सुणाइंदा। पंज तत काया कर प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खलाइंदा। त्रैगुण माया दे आधार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। करे खेल अपर अपार, परमात्म आत्म वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर आपणी कल वखाइंदा। सन्त सतिगुर पुरख करतार, हरि करता वड वड्याईआ। सदा सदा रहे जुग चार, चौकड़ी आपणी खेल वखाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी कर प्यार, घट घट करे रुशनाईआ। दीआ बाती कमलापाती इक उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अमृत बूँद स्वांती भर भण्डार, निझर झिरना आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सतिगुर आप अख्वाईआ। सन्त सतिगुर हरि गहर गम्भीर, गुणवन्ता इक अख्वाइंदा। लेखा जाणे पंज तत शरीर, ततव तत खोज खुजाइंदा। नित नवित्त गुर अवतार बणे पैगम्बर पीर, शब्दी शब्द हुक्म वरताइंदा। दो जहानां पन्ध पैंडा चीर, लोकमात वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सतिगुर आपणा रंग वखाइंदा। सन्त सतिगुर हरि हरि रंग, रंग राता आप जणाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। सच सिँघासण सुहाए पलँघ, निरगुण पावा चूल ना कोए बणाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपे लँघ, दर घर साचे सोभा पाईआ। शब्द अनाद बोध अगाध धुन वजाए मृदंग, सुर ताल समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्ड, सच सुच इक समझाईआ। जीव जंत आत्म परमात्म देवे धुर अनन्द, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सतिगुर

आपणा नूर करे रुशनाईआ। सन्त सतिगुर पुरख अकाला, अकल कला अख्वाईआ। सन्त सतिगुर दीन दयाला, दीन दुनिया वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा तोड़नहारा त्रैगुण माया जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ । सन्त सतिगुर वखावणहारा काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, मक्का काअबा इक्को नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सतिगुर शब्द स्वामी, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा । शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी गाए कहाणी, सिफ्ती सिफ्त सर्ब वडियाइंदा। लेखा जाणे जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी, चारे बाणी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सन्त सतिगुर आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सन्त सतिगुर पुरख अगम्म, निराकार इक अख्वाईआ । ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। ना पवण स्वासी लए दम, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ। निरगुण हो के सरगुण जाणे कम्म, करनी करता आप अख्वाईआ। लख चुरासी जीवां जंतां बेड़ा देवे बन्नृ, नाम चप्पू इक वखाईआ। साचा राग सुणाए बिन कन्न, धुन आत्मक राग अलाईआ। मन वासना मेटे मन, मन का मणका आप भवाईआ। घर प्रकाश निरगुण जोत करे चन्न, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाईआ। मेल मिलाए इक्को घर, सुंञी सेज ना कोए वखाईआ। भाग लगाए बिन छप्पर छन्न, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर सदा सदा दए वड्याईआ ।

* १४ वसाख २०२१ बिक्रमी डाक्टर पाल सिँघ दे गृह पिण्ड भलाईपुर डोगराँ ज़िला अमृतसर *

त्रेते तेरा धर्मी कौल, कमलापति तोड़ निभाइंदा। जुग चौकड़ी पर्दा फोल, लेख अलेख वेख वखाइंदा। होवे सहाई उपर धौल, धरनी धरत वडियाइंदा। शब्द स्वामी अन्तर मौल, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। जिस दा लेखा कोई समझ ना सके पंडत पांधा रौल, शास्त्र सिमरत भेव ना कोए खुलाइंदा। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल करे खेल अडोल, अडुल आपणी धार चलाइंदा। भगत भगवन्त माणक मोती अनमोल, अलमुलड़े हीरे वेख वखाइंदा। सति चित वसणहारा सदा कोल, अनन्त कल आपणी खेल खलाइंदा। लाड़ी मौत नाल होण ना देवे घोल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। त्रेता वखाए आपणा भविक्ख्त, भाव भावनी विच्चों प्रगटाईआ। राम रहीम रामा इष्ट, वशिष्ट ना कोए वड्याईआ। नेत्र खोल्ह दिब दृष्ट, दुतया भेव चुकाईआ। सच समझाया इक आदर्श, आदेस आदेस कर कर सीस निवाईआ। लेख चुकाया अर्श फ़र्श, फ़ैसला हक़ समझाईआ। जन भगतां उपर कर तरस, रहमत आप कमाईआ।

पूरब लेखा फोल फ़रद, पिछला वरका दित्ता उलटाईआ। आत्म परमात्म लाई शर्त, शरअ सके ना कोए समझाईआ। कुदरत करता कादर पैण ना देवे फ़र्क, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। त्रेता कहे मेरा वेख पर्दा, उहला तेरे विच्चों नज़री आईआ। तूं लेखा जाणें घर घर दा, दर दर आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू तेरा फड़दा, सच सरन मांगे इक सरनाईआ। बाल्मीक बजवाड़ा चरण कँवल सीस धरदा, नमो नमो निमख निमख ध्याईआ। मैं तेरा अक्खर इक्को पढ़दा, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। मंज़ल मंज़ल पौड़े तेरे चढ़दा, बिन कदमां कदम उठाईआ। सच दुआर वेख थिर घर दा, घर मेरे वज्जे वधाईआ। दर दरवेश हो के बरदा, बरखुरदार सीस निवाईआ। तेरा भाणा तेरे हुक्म अन्दर जरदा, जर जोबन दित्ता लुटाईआ। जिन्हां पिच्छे रिहा ठग्गदा, साक सज्जण नारी बंधप पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दे जणाईआ। त्रेता कहे पिछली वेख किताब, कुतबख़ाना तेरा नज़र किसे ना आईआ। तेरा लेखा बेहिसाब, गणती गणत ना कोए गणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे अग्गे लाजवाब, दर ठांडे सीस निवाईआ। तूं साहिब सुल्तान देवणहारा वड ख़िताब, ख़ता मुआफ़ आप कराईआ। परवरदगार धुर नवाब, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी ग़रीब निवाज, कोझे कमले लएं उठाईआ। जलवा नूरी दे महताब, महिबूब करें रुशनाईआ। सच महल्ला उच्च महिराब, महिफल आपणा नाम लगाईआ। बोध अगाध नाद धुन अगम्मी तेरी आवाज़, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाईआ। जिस अन्दर डूंग्घा राज़, अन्तर वेख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति दे दृढ़ाईआ। त्रेता वेख त्रैलोक, त्रैभवन धनी तेरी ओट तकाईआ। मैनूं पिछला याद आया श्लोक, सोहणा बिन अक्खरां दित्ता गाईआ। भगत सुहेला हो के देवें मोख, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। तेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगमग जगे जोत, जोती जोत नूर रुशनाईआ। महल अटल उच्च मनारा किला कोट, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। नित नवित्त भगत भगवान दर्शन रहे लोच, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। साहिब सुल्तान तूं किसे ना आवें विच सोच, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। कोटन कोटि तेरी कढ्ढणे रहे खोज, खोजत खोजत सृष्ट सबाई होई हल्काईआ। हरि प्रीतम पतिपरमेश्वर तेरा इक्को चोज, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। त्रेता कहे सति तेरी उडीक, शहिनशाह सरनाईआ। बजवाड़ा वेख बाल्मीक, बालम दे समझाईआ। सिरकत करे ना कोए शरीक, लाशरीक हो सहाईआ। दूर दुराडे अन्दर वड़ नज़दीक, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। सच निशाना दस्स ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। आत्म परमात्म दस्स प्रीत, प्रीतीवान मेल मिलाईआ।

बिन सख़ीआँ गावे गीत, बिन सज्जणां ढोला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। त्रेता कहे होवां ज़ामन, ज़ामनी आपणी इक रखाईआ। तूं भगतां पूरा करे कामन, आसा तृष्ना वेख वखाईआ। दामनगीर फड़ाउणा दामन, दस्तगीर तेरी शरनाईआ। मुश्किल हल्ल होवे आसानन, एहसान उपर ना कोए टिकाईआ। लेखा चुक्के क्षत्री ब्राह्मण, शूद्र वैश पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। त्रेता कहे हथ्थ तेरे डोर, श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। लेखा वेख ना ठग्ग चोर, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। मन्त्र फुरना दे नाम फोर, सच सति इक समझाईआ। साचे मार्ग आपणे तोर, तुरत आपणा रंग वखाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सदा सदा सद तेरी लोड़, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। त्रेता कहे साहिब सतिगुर तुठ, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरा भण्डारा सदा अतुट, तोट रहिण कोए ना पाईआ। बंदीख़ान्यों बन्धन जाण छुट, छुटे नाता जगत लोकाईआ। ठग्ग चोर शब्द धार नाल कुट्ट, अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। कर प्यार बण मात पित साचे पुत्त, सुत आपणी गोद उठाईआ। तेरे घर मौले धुर दी रुत्त, रुत्त बसन्ती नैण शरमाईआ। भगत भगवान हो के पुच्छ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी सच सरनाईआ। त्रेता कहे मोहे तेरी आस, इक ध्यान लगाईआ। धूंआँधार पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ना कोए रुशनाईआ। भगत भगवान तेरी शाख़, शनाख़त आपणी दएं कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। सच वड्याई दे भगवन्त, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा लेखा आदि अन्त, जुगा जुगन्त तेरी बेपरवाहीआ। पकड़ उठावें साचे सन्त, भगतन आपणा रंग रंगाईआ। मेल मिला नार कन्त, घर सुरती शब्द करें कुड़माईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दएं समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दी विद्या करें पढ़ाईआ। दर दरवेश बणया मंगत, घर साचे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। सुण त्रेते कहे भगवान, हरि करता आप जणाईआ। तेरी इच्छया मेरा दान, भिच्छया बेपरवाहीआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, नर नरेशा इक दृढ़ाईआ। ठग्ग चोर वेखां कर ध्यान, मेहर नज़र उठाईआ। बाल्मीक दे ज्ञान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। साचा लेखा लेख महान, भविक्ख्त दए दृढ़ाईआ। मेल मिलावा धुर दे राम, रमया राम आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। बाल्मीक अन्तरगत, हरि करता वेख वखाईआ। मति विच्चों बदली मति, मनसा विच्चों मनसा दिती उलटाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त वेख वखाईआ। सति सन्तोख दे के सति, धीरज इक्को इक बंधाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख,

निज नेत्र करी रुशनाईआ। सच प्रविष्टा इक्को दस्स, थित वार सोभा पाईआ। नौ जेठ मिल्या जस, हस्स हस्स खुशी मनाईआ। चरण सरन कँवल सरनाई ढह्व, बाल्मीक झोली डाहीआ। साहिब सुल्तान देणा हक़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। बाल्मीक करे अरदास, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। पंज तत काया तेरी रास, पवण स्वास तेरी वड्याईआ। हउँ ग़रीब निमाणा अनाथां अनाथ, सेवक चाकर ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। सच प्रीती बख्शणा नात, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। पिछला लेखा लहिणा करना मुआफ़, गुस्ताख़ आपणे नैण शरमाईआ। धन्न भाग तूं मिल्या बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। तेरे घर जन्म के पिछला मुक्कया साक, दर मिल्या बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बख्शी साथ, सगला संग निभाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी वेखा रास, मण्डल मण्डप गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, घर साचा सच दरसाईआ। श्री भगवन्त हो मेहरवान, पुरख अकाल दया कमाइंदा। जन्म विच्चों जन्म दान, जून अजूनी वेख वखाइंदा। सच संदेसा नौजवान, धुर फ़ुरमाणा इक समझाइंदा। त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे महान, हरि ख़ालक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाइंदा। बाल्मीक करे अरज़ोई, आरज़ू आपणी इक सुणाइंदा। तुध बिन मिले कोई ना ढोई, घर नज़र कोए ना आइंदा। सुरती सच उठाए ना कोए सोई, सुहागण रूप ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर घर तेरे मंग मंगाइंदा। दर घर मंगां धुर दी मंग, वस्त अमोलक देणी इक वरताईआ। प्रेम प्यार दा बख्श अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरी सेवा विच चमकां नूरी चन्द, नूर ज़हूर तेरा रुशनाईआ। दीन दयाल तूं साहिब सदा बख्शंद, बख्शश आपणी दे वरताईआ। माणस जन्म पए ठंड, मानव मानुख सांतक सति कराईआ। जुग चौकड़ी आपणे नाल गंढु, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सदा सदा सद वसां तेरे संग, धुर दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लहिणे लैणा लगाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी आप सुणाइंदा। मेहरवान हो कृपाल, पर्दा उहला आप चुकाइंदा। सुण लाडले मेरे लाल, लालन आपणा भेव जणाइंदा। सच परविश्टा रखणा याद, नव जेठ वंड वंडाइंदा। जिस वेले दिती दाद, वस्त अमोलक आपणा नाम झोली पाइंदा। भेव खोलू ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा रंग वखाइंदा। धुन आत्मक वजा नाद, अगम्मी राग अलाइंदा। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आया स्वाद, रस मीठा अनडीठा इक्को भाइंदा। प्रेम प्रीती अन्तर होया विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा सुण बाल्मीक, हरि करता आप जणाईआ। जन्म विच्चों जन्म मिल्या

तैनूं ठीक, कर्म धर्म वरन बरन पिछला दित्ता बदलाईआ। दूर दुराडे हो नज़दीक, नेरन नेरे दया कमाईआ। मार्ग दस्स इक अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। दे वड्याई तैनूं नीच, ऊँचों ऊँच लए बणाईआ। चरण प्रीती धुर दी प्रीत, पतित पावण इक समझाईआ । तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा गीत, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। कलयुग रखणी अन्त उडीक, कल काती वेख वखाईआ। लेख चुकाए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बाल्मीक खुल्ही जाग, नेत्र नैण उठाईआ। हिरदे आया इक वैराग, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कवण धोवे मेरा दाग़, दुरमति मैल साफ़ कराईआ। कौण जगाए घर चिराग़, दीपक जोत करे रुशनाईआ। कौण वखाए अगम्म स्वाद, रस फीका सर्ब मिटाईआ। कौण बणाए हँस काग, सोहँ हँसा साची चोग चुगाईआ। कौण सुणाए अगम्मी अवाज़, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। गृह मन्दिर खोज भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा । पकड़ उठाए साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। नाम निधान मणीआ मंत, साचा मन्त्र इक पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा लेखा साहिब समरथ, अभेव अभेद छुपाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही वेस वटाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, सच सुच करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त कर के वक्ख, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। धुर संदेसा इक्को दस्स, बाल्मीक दित्ता समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रभू खेल करे हो प्रगट, जोती जाता वेस वटाईआ। सच दवारा खोल्हे हट्ट, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। तेरा लेखा देवे हक़, हकीकत आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। बाल्मीक लैणा सुण, शब्द अगम्मी धार जणाइंदा। लेखा जाणे गुण अवगुण, करता करनी कार कमाइंदा। आपणा मन्त्र जाणे फुन, फुरना सब दा बंद वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों चुण, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक जणाइंदा। धुर संदेसा कलयुग धार, करता पुरख समझाईआ। तेरा मेला विच संसार, वड संसारी आप कराईआ । सच प्रीती दे प्यार, प्रेम बन्धन इक वखाईआ। अन्तर अन्तर करे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद सच पढ़ाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड निवासी हरि सच्चा सच गोसाईआ। निरगुण सरगुण ज़ीरो सिफ़रा दिसे संसार, बीस अंक जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण दूआ इक करे प्यार, इक इकल्ला मेल मिलाईआ। दूआ एका कर के ख़बरदार, एका इक्की गंढु रखाईआ। वीह सौ इक्की तेरा कर्ज़ा दए उतार, नव जेठ मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच देवे वड्याईआ। बाल्मीक कहे नौ जेठ की, मेरी

९९८
१६

समझ कुछ ना आईआ। मैं बाल अञ्याणा निक्का जीअ, आत्म ब्रह्म रूप वटाईआ। शब्द अनादी तेरा बी, पिता पुरख अकाल मनाईआ। नाम निधान अमृत रस ल्या पी, नाता तुटा सर्ब लोकाईआ। चरण बलिहार गया थी, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्श सच सच सरनाईआ। श्री भगवान किहा हस्स, खुशीआं नाल जणाइंदा। अगला लेखा देवां दस्स, दर्दी हो के दर्द वंडाइंदा। कलयुग अन्त खेल पुरख समरथ, समरथ साची कार कमाइंदा। नव जेठ तेरा जन्म मनुष होणा बस्स, बसता पिछला फोल वखाइंदा। हकीकत विच्चों देवे हक़, हाकम आपणा कर्म कमाइंदा। लोकमात जाणा छड्ड, सचखण्ड सच दुआर सुहाइंदा। निरगुण निरगुण धार होण ना देवे अड्ड, सच मकान इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। बाल्मीक कहे नहीं मंज़ूर, सच कहाणी दयां जणाईआ। जे तूं मेरे पिछले बख़्शे कसूर, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। कलयुग अन्त मैं हो जावां मजबूर, मजबूरी आपणी तेरे अग्गे टिकाईआ। जे मातलोक तूं रहे ज़रूर, तेरा विछोड़ा सह ना सकां राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, मैं आपणा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। लेखा आपणा दस्सां सच्च, प्रभ तेरे अग्गे सीस निवाईआ। जिउँ भाग लगाया काया माटी कच्च, ततव तत वड्याईआ। दूर दुराडा आएयों नस्स, बण पांधी फेरा पाईआ। अन्तर आत्म आपे वस, प्रेम प्यार वधाईआ। सच नेत्र खोल्ह के अक्ख, आपणा आगमन दित्ता जणाईआ। मैं तेरा गावां जस, धुर आगमन ढोला दित्ता पढ़ाईआ। डाके मारनों गया हट, तेरी वथ आपणे विच रखाईआ। तूं मेरा देणा साथ, साचा संग निभाईआ। सब कुछ तेरे हाथ, जिउँ भावे लैणा चलाईआ। कलयुग अन्त मैं मंगां इक्को दात, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। आपणे भगतां नालों मेरी टुट्टण ना देवीं जमात, पट्टी अक्खर इक्को देणा सुणाईआ। त्रेते वाला भविक्ख्त वाक, भाख्या भाषा सके ना कोए समझाईआ। जे पंज तत चोला होवण वाला नास, नव जेठ राह तकाईआ। मेरी याद रखीं पिछली प्रीती नाल रविदास, रवी तेरा ध्यान लगाईआ। उहदे पिच्छे बख़्श मेरे स्वास, स्वास तेरी भेंट चढ़ाईआ। जन्म विच्चों जन्म दे के बण माई बाप, पिता पुरख अकाल आप अख्वाईआ। नौ जेठ तेरा धुर दा जुड़े नात, नाता इक्को नज़री आईआ। दरस दिखाउणा साख्यात, पर्दा उहला दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे लैणा तराईआ। नव जेठ ना होए विछोड़ा, विछड़यां मेल मिलाईआ। त्रेता कहे मेरा लेख नहीं कोरा, लिख्या लेख भविक्ख्त रिहा जणाईआ। जिस ने तारे ठग्ग चोरा, बुध विवेक आप कराईआ। सो साहिब सुल्तान शब्द अगम्मी वेखे चढ़ के घोड़ा, दो जहान फेरा पाईआ। बेशक पूरब जन्म बटवारा वक्त रह गया थोड़ा, पाल सिँघ पल्लू गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे बेपरवाहीआ। त्रेता कहे मैं ताबिआदार, सेवक साचा नज़री आईआ। पिछले विछड़यां करां ख़बरदार, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जन भगतो तुहानूं नहीं सार, समझ सके ना कोए समझाईआ। जिस दा लेखा लहिणा कलम दवात, छाही शहादत ना कोए वखाईआ। सो निहकर्मी नर नरायण अवतार, अवतारी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। त्रेता कहे सुणो पिछला लेखा, बिन लिख्तों रिहा दृढ़ाईआ। जन भगत ना रहे कोई भुलेखा, भाण्डा भरम भंनाईआ। जुग चौकड़ी प्रभू कदे ना भुल्ले चेता, चेतन हो के खेल खलाईआ। जोती जामा धार वेसा, अवल्लड़ा रूप वटाईआ। दो जहानां बण के नेता, सच फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। त्रेता कहे मैं दयां दलील, आपणा आप जणाईआ। जन भगतो तुहाड्डी जन्म जन्म जन्म दी सुणे अपील, अपरम्पर बेपरवाहीआ। लोड़ रहे ना किसे वकील, वुकला सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। त्रेता कहे मैं वेख्या लेख बंद, अन्दर वड़ के ध्यान लगाईआ। जिस दे उते लिख्या इक्को छन्द, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। आपणी किरपा नाल टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। जन भगतां देवे अनन्द, सोहणा रस चखाईआ। पंज तत काया चोला रिहा हंढु, वाहो दाही
१००० आपणा पन्ध मुकाईआ। नव जेठ होणा खण्ड खण्ड, अंग अंग साथ ना कोए रखाईआ । जगत नारी दिसे रंड, कन्त सुहाग १०००
१६ होए जुदाईआ। त्रेता कहे मेरी अन्तिम मंग, रो रो नैणां नीर वहाईआ। दूर दुराडा कट के आया पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ। १६
आपणा कीता कौल इकरार वेख नसंग, नछावर हो के रिहा समझाईआ। भगत भगवान तेरा चन्द, चन्द नूर महताब आफ़्ताब रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। त्रेता कहे प्रभू कर ध्यान, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। मैं हाज़र हो के देवां ब्यान, घर ठांडे फेरा पाईआ। जिस जन्म विच्चों जन्म दित्ता ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। जिस बाल्मीक बटवारा बजवाड़ा कीता परवान, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, मेहर नज़र टिकाईआ। बेशक नौ जेठ मिटण वाला निशान, पंज तत होए जुदाईआ। पर तेरा लेखा मैं भुल्ल नहीं गया बण नादान, बालक हो के तेरी सेव कमाईआ। तूं लेख लिख्या बिनां कलम शाही बिनां ज़बान, लेखा पढ़ ना कोए दृढ़ाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के आपणी बख्शिश विच्चों बख्शिश कर दान, बख्शीश तेरी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सति सतिवादी तेरी सति सरनाईआ। नौ जेठ अक्खां रिहा खोल्ह, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर त्रेते युग दा पूरा करे कौल, कीता कौल तोड़ निभाईआ।

सृष्ट सबाई सुती लोकमात अनभोल, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साचे कंडे तोले तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख गुरसिख उठाए अडोल, अन्दरे अन्दर आप हिलाईआ। बाल्मीक नाल जो बोलया बोल, अनबोलत आप सुणाईआ। सो लेखा पर्दा पूरब ल्या फोल, अक्खर अक्खरां विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। पिछला लेखा हरि जू पढ़, साची खुशी मनाइंदा। जन्म विच्चों जन्म दे के फेर लावे जड़्ह, बूटा आपणा आप लहराइंदा। मरन तों पहलों भगत जन जावे मर, मरनी सतिगुर इक समझाइंदा। जो सन्त सति सतिवादी सीस चरणी देवे धर, सो धरत धवल सोभा पाइंदा। साचे मन्दिर जावे चढ़, महल अटल इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल आपणी दया कमाइंदा। त्रेता कहे मैं तेरा युग, युगती आपणी दयां जणाईआ। बेशक मेरी औध गई मुक्क, मेरी आसा सके ना कोए मिटाईआ। मैं तेरा दर्शन करां लुक लुक, वेखां चाईं चाईंआ। बाल्मीक ख्वाहिश मैथों रही पुछ, हौली हौली आवाज़ लगाईआ । मैं अग्गों किहा बुक्क, सच सच दित्ता दृढ़ाईआ। नौ जेठ पंज तत नाता जाणा छुट्ट, छुटे सर्ब लोकाईआ। एसे कारण मैं पिछला खाता लयांदा पुट्ट, जो डूंघे अन्दर दित्ता दबाईआ। उस विच प्रभ ने लेख लिख्या कुछ, अनभव आपणा आप वेख वखाईआ । जन्म विच्चों जन्म दे के फेर बणावां आपणा पुत्त, पिता पूत गोद उठाईआ। उजल करां मात मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ । एसे कारण हरि करता आया चुप्प, चार कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा काया चोला जाणा सी छुट्ट, तिस छुटकी लिव फेर लगाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान मरन तों पहलां ल्या पुछ, पिछला लहिणा झोली पाईआ।

* पहली जेठ २०२१ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

हरि हरि खेल अगम्म अपार, निरगुण निरवैर धार चलाइंदा। सचखण्ड निवासी साची कार, करता पुरख आप कराइंदा । सति दवारा खोल्ह किवाड़, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जोती जाता नूरी डगमगाइंदा। महल अटल उच्च मनार, छप्पर छन्न अथाह सुहाइंदा। साचा सज्जण बण मीत मुरार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि करनी कार कमाइंदा। हरि करनी करे निरँकार, निरगुण निरवैर वड्डी वड्याईआ । आदि जुगादी भेव न्यार, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हो त्यार, निराकार निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि बेपरवाहीआ। बेपरवाही बेपरवाह परवरदिगार, नूरी जलवा नूर चमकाइंदा। सच महल्ले हो उज्यार, हक़ मुकामे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, धुर फुरमाणा इक अल्हाइंदा। शाह पातशाह बण राज राजान, भूपत भूप नाम वडियाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा वेस आप वटाइंदा। साचा वेस वटाए अवल्ला, अकल कलधारी आपणी चाल चलाईआ। सच दवारा वेख उच्च महल्ला, महल अटल करे रुशनाईआ। निरगुण नूरी जोती दीपक सच प्रकाश आपे बला, दीवा बाती संग ना कोए रखाईआ। निराकार निरँकार निरगुण आपणा फड़े आपे पल्ला, बन्धन आपणा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे पुरख अगम्म, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निहकर्मी जाणे आपणा कम्म, दूजा संग नज़र कोए ना आईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी साचा बेड़ा आपे बन्न्ह, सति पुरख निरँजण आपणे कंध उठाईआ। आपणी इच्छया आपे मंन, मनसा आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाह खेल प्रभ करदा, निरभउ भय सर ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दवारे आपे वड़दा, रूप रंग रेख नजर किसे ना आइंदा। सति प्रकाश आपे धरदा, जोती जाता डगमगाइंदा। निरगुण निरगुण नारी कन्त आपे वरदा, पतिपरमेश्वर आपणी सेव कमाइंदा। साची सेजा आपे चढ़दा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। दाई दाया हो के खेल करदा, बेअन्त बेपरवाह नज़र किसे ना आइंदा। सुत दुलारा इक्को जणदा, शब्दी नाउँ रखाइंदा। मात पित आपे बणदा, गोद सुहञ्जणी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे भगवन्त, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार सोभावन्त, सति सतिवादी साचे आसण डेरा लाईआ। भूपत भूप राज राजान हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। लेखा जाण बोध अगाध, शब्द धुन अगम्मी तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जानणहारा, दूजा संग ना कोए रलाईआ। ना कोई संग ना कोई साथ, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आइंदा। इक इकल्ला पुरख अबिनाश, हरि करता खेल रचाइंदा। मेल मिलावा साचा नात, सुत दुलारे जोड़ जुड़ाइंदा। आपणी दे के आपे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सच सुच समझा ज़ात, मेल मिलावा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा आपे खोल्ह, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साचे कंडे तोले तोल, तोलणहारा बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचे मन्दिर रहे अडोल, डुल्ल कदे ना जाईआ।

सच दवारा हरि निरँकारा सचखण्ड दवारा इक्को खोल्, थिर घर चरण कँवल देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे दर, दर दरवाज़ा इक खुल्ाईआ। दर दरवाज़ा निरगुण निरवैर, शब्दी सुत आप खुल्ाइंदा। पिता पूत दोवें करन सैर, सति दवारा इक वडियाइंदा। तीजा वड़े ना कोई ग़ैर, नज़री नज़र ना कोए मिलाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल इक इकल्ले आपणा अगम्म अथाह रचया एका शहर, शहिनशाह आपणा डेरा लाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना होवे कोई कहर, सांतक सति सति आपणी धार चलाइंदा। बख़्शश रहमत करे आपणी मेहर, मुहब्बत आपणे नाल प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, एकँकार आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। ना कोई सूरत ना कोई इष्ट, ना कोई दरस दरसाईआ। ना कोई अर्श ना कोई फ़र्श, दीन दुनी ना कोए वखाईआ। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, काग़ज़ कलम ना कोए शाहीआ। ना कोई नारी ना कोई मर्द, ज़ात अजाति रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई संसा रोग ना मर्ज़, हउमें गढ़ ना कोए बणाईआ। इक्को खेल करे असचरज, अचरज लील्ा आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सुत दुलारा शब्दी संग निभाईआ। शब्द सुत सुत दुलारा, हरि सति सतिवादी आप रखाइंदा।
१००३ जुग चौकड़ी आदि जुगादि इक्को कारा, करनी करता आप कमाइंदा। पिता पूत करे प्यारा, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाइंदा। १००३
१६ सति स्वामी सदा निहकामी देवां आपणा इक सहारा, दूसर सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। सचखण्ड जिस दा महल अटल उच्च मनारा, दीआ बाती कमलापाती जोती जाता डगमगाइंदा। इक्को सति सुणाया साचा नाअरा, जिस दा आदि अन्त भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड अन्दर थिर घर खोल् किवाड़ा, सुत शब्द दए हुलारा, साचा हट्ट इक जणाइंदा। बिन हथ्थां बिन बांहवां दित्ता इशारा, बिन रसना बिन जिह्वा बिन बत्ती दन्द आप समझाइंदा। उठ वेख चार कुण्ट दहि दिशा ना कोई दूजा मित्र प्यारा, सांझीवाल संग ना कोए बणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा अधारा, घर इक्को सोभा पाइंदा। सुत शब्द सच बोल जैकारा, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। छोटा नढ्ढा बाल अञ्याण करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। तेरा हुक्म मन्नां बण के फ़रमांबरदारा, ख़ादम तेरी सेव कमाइंदा। सच दस्स मेरे परवरदिगारा, दर इक्को मंग मंगाइंदा। तेरा जलवा नूर मेरा नज़ारा, बेनज़ीर नज़र किते ना आइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल दित्ता इक इशारा, साची सिख्या आप समझाइंदा। पिता पुत्त कहे तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को हट्ट इक्को वणजारा, वस्त इक्को इक विकाइंदा। सब तों पहलों सब तों उत्तम सब तों श्रेष्ट सोहँ सति सरूप बणाई धारा, जोती शब्दी रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी करनी कर, सच

करनी कार कमाइंदा। सुत शब्द सुण संदेस, थिर घर खुशी मनाईआ। मेरा पिता पुरख अकाल रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जिस दा नित नवित्त सच्चा इक संदेस, सोहणा ढोला राग अलाईआ। महल अटल वसदा रहे देस, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। तख्त निवासी नज़री आए इक नरेश, नर निरँकारा रूप वटाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। रूप रंग ना दिसे रेख, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। आपे जाणे अवल्लड़ा वेस, वेसाधारी बेपरवाहीआ। साची मंज़ल खेले आपणी खेड, खेलणहारा इक्को इक अख्वाईआ। मैं उस दे चरण कँवलां माणां साची सेज, धूढ़ी ख़ाक मस्तक इक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण सच दित्ता सुणाईआ। पुरख अकाल किहा आदि, शब्द सुत समझाईआ। लाल दुलारे मेरे जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मेरी इच्छया तेरा नाद, तेरा नाद मेरा नाम प्रगटाईआ। तेरा प्रेम मेरा विस्माद, घर साचे खुशी वखाईआ। लेखा लेख जणावां जुगादि, पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द दुलारा बाला छोटा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। परम पुरख मैं तेरी जोता, तेरा नूर रुशनाईआ। धन्न भाग थिर घर मैनूं बख्शया कोठा, चार दीवारी बणत ना कोए बणाईआ। तेरे दर इक्को मैनूं मिल्या

१००४ मौका, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई एथे सोचण वाला सोचा, सोच समझ ना कोए चतुराईआ। इक्को दर्शन तेरा १००४

लोचा, लोचा मेरी पूर कराईआ। सच दस्स तेरे घर कौण जम्में पोता, पुत्तर कवण देवें वड्याईआ। श्री भगवान हस्स के

१६ किहा सुत दुलारे माण मौजां, पिता तेरा बेपरवाहीआ। भेव खुल्हावां गोझा, बिन तेरे मेरे दूजा समझ सके ना राईआ। जोती १६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुत शब्द कहे प्रभ मेरी अरदास, दोए जोड़ सरनाईआ। बेशक मैं वसां तेरे चरणां पास, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। सचखण्ड तेरा नूर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। इक्को वेखां सच्ची रास, आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे दे इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। शब्द सुत कहे मैं तेरा पुत्त, निरगुण धार नज़री आईआ। तूं सचखण्ड मैं थिर घर बैठा रहां चुप्प, दोहां दी चले ना कोए वड्याईआ। हुण तैथों पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरे स्वामी इक्को इच्छया रिहा पुच्छ, जो साहिब मेरे विच आप प्रगटाईआ। मैनूं भिच्छया दे दे कुछ, मेहर नजर इक उठाईआ। मेरी मौले साची रुत्त, रुत्तड़ी तेरे नाल महकाईआ। श्री भगवान अग्गों तुट्ठ, धुर दा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा जणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे लाल, लालन दयां वड्याईआ। सचखण्ड वेख मेरी धर्मसाल, थिर घर तेरा घर वसाईआ। दोहां मिल के बणे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक वखाईआ। आदि तेरा नूर कीता बहाल, अन्तिम तेरा रंग आप समझाईआ । जुग चौकड़ी बीते

काल, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। तेरे घर पुत्त जन्मे सरगुण सोहणा बाल, हरि करता आप प्रगटाईआ। इक्को संदेसा रखणा याद, धुरदरगाही आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवणहार वड्याईआ। सुत दुलारा मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। सच दस्स मेरे भगवान, की रमज़ अगम्मी इक लगाईआ। पुत्त पोतरे की निशान, कवण रंग वखाईआ। किस बिध होए सच पहचान, बेपहचान दे जणाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, फड़ बांहों गल लगाईआ। मैं तेरा तूं मेरा काहन, दोहां इक्को रूप जणाईआ। निरगुण तों सरगुण होए प्रधान, सरगुण तों निरगुण रूप समाईआ। निरगुण सरगुण दूआ बणे जहान, निरगुण एका अंक आपणा अग्गे दए लगाईआ। दूए तों सिफ़रा बणे निशान, ज़ीरो आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति संदेसा दित्ता जणाईआ। सच संदेसा सुण रमज़, हरि जू इशारे नाल जणाईआ। शब्द कहे मैं गया समझ, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। सच दस्स की वेस वटाएं नार मर्द, तत कवण हंढ्ढाईआ। श्री भगवान कहे मेरा खेल अचरज, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। बिन अक्खरां बिन कलम छाही लिख के देवां फ़रद, सोहणी बणत बणाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी सुत शब्द तेरा होण ना देवां हरज, आदि दा लिख्या अन्त पूर कराईआ। ना नार ना दिसां मर्द, मर्द मर्दाना बणां बेपरवाहीआ। तेरी धार बणावां करद, खण्डा इक्को इक वखाईआ। सुण के हुक्म शब्द सुत दुलारा होया नधड़क, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। सच वड्याई देणा माण, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। अगला लेखा दस्स मेहरवान, की हुक्मी हुक्म जणाईआ। परम पुरख देवे दान, अगम्मी दात वरताईआ। सति सतिवादी सच निशान, घर साचे इक झुलाईआ। शब्दी सुत तेरा अंस बंस कर परवान, विष्न ब्रह्मा शिव करे कुड़माईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंज तत जोड़ जुड़ाईआ। पंज दस खेल महान, आपणा रंग दए रंगाईआ । इच्छया भिच्छया ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप दए सुहाईआ। गगन गगनंतर कर परवान, किरन किरन नूर रुशनाईआ। चन्द सतार चमकावे भान, नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। पवण पवणां कर परवान, सच सुगंधी विच समाईआ। धुरदरगाही बण के हुक्मरान, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। विष्न वेख मार ध्यान, विश्व करे पढ़ाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म इक समझाईआ । शंकर संसा मेट करे कल्याण, धुर संदेसा इक वखाईआ। धरनी धरत धवल कर परवान, जल थल महीअल डेरा लाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा दे ज्ञान, ब्रह्म वेता करे पढ़ाईआ। चारे खाणी कर बलवान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा बंस सुहाईआ। चारे बाणी बोल ज़बान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाद धुन शनवाईआ। ब्रह्मा वेता धुर दा नेता कर परवान, सच संदेसा इक सुणाईआ। चारे वेदां दे ज्ञान, चारे कुण्ट करे रुशनाईआ। चारे युग कर कल्याण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग

आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण होए प्रधान, जोती जाता बेपरवाहीआ। आत्म ब्रह्म करे पहचान पारब्रह्म भेव खुल्हाईआ। जगत दुआर वेख दुकान, नव नौ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पुरख अकाल, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध ठाकर आपणा नाउँ धराइंदा। हुक्मे अन्दर काल महाकाल, आपणी करनी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया तेरी झोली रखे संभाल, राए धर्म चित्रगुप्त लाड़ी मौत अंग लगाइंदा। सब दा हल्ल करे सवाल, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे काल, घड़ी पल खोज खुजाइंदा। साचा लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण हुक्म वरताइंदा। जोती जाता हो प्रधान, पुरख बिधाता वेस वटाइंदा। गुर अवतार बण बलवान, सच संदेसा हुक्म जणाइंदा। शास्त्र सिमरत लिख ज्ञान, कलम छाही रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तेरा पुत्त इक्को बंस वडियाइंदा। लख चुरासी तेरा पुत्त, पोतरा प्रभ दा नज़री आईआ। सरगुण निरगुण अन्दर माणे आपणी रुत्त, रुत्तड़ी तेरे नाल महकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत काया चोले अन्दर लुक, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए वड्याईआ। सति सरूप आपणा उजल करे मुख, शाहो भूप हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई देवां लोकमात, हरि करता आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखां खेल तमाश, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। गुर अवतार प्रगटावां शाख़, पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। कोटन कोटि सिफ्ती चलावां जाप, आपणा नाम ना किसे समझाइंदा। जिस किरपा कर के दस्सां आपणा आप, तिस बिन रसना जिह्वा आपणा जाप जपाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, कर्म कांड ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे जाण आख, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाइंदा। थोड़ा थोड़ा बोल भविक्खत वाक, तेरी सिफ्त सर्ब सुणाइंदा। सारे मन्नण रसूल पाक, पाकां विच्चों पाकीज़ा इक्को नज़री आइंदा। जिस दा तन माटी ना होवे ख़ाक, जलवा नूरी नूर रुशनाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कदे ना होवे बंद ताक, पर्दा उहला ना कोए जणाइंदा। कर किरपा जन भगतां देवां दर्शन साख्यात, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। मेहरवान हो के अट्ठे पहर रखां प्रभात, संध्यां रूप ना कोए जणाइंदा। जे कोई मेरा दस्से सच हालात, दस्सण वाला नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरे नाम दी सुण के सिफ्ती बात, जीवां जंतां सर्ब दृढ़ाइंदा। मैं वसां इक इकांत, मेरा आसण शब्द सुत बिन तेरे वेखण कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच आप समझाइंदा। शब्द सुत बणया सच्च, प्रभू सच तेरी वड्याईआ। सति पुरख तेरा खेल सच्च, घर साचे नज़री

आईआ। नूरी नूर तेरा नूर सच्च, ज़हूर तेरा बेपरवाहीआ। लख चुरासी भाण्डा कच्च, काची गगरीआ वेखी सर्ब लोकाईआ। जो कुछ सब तेरे हथ्थ, समरथ बेपरवाहीआ। मैं तेरा तूं मेरे वस, वसल इक्को इक नज़री आईआ। दोवें रल मिल गाईए सच्चा जस, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। वेला वक्त ओह दस्स, जिस दी समझ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान कोई ना सके रट, रटिउँ परे बैठा डेरा लाईआ। किस नेत्र नैण लोचण तक्कीए धुर दी अक्ख, लोचण इक्को इक खुल्हाईआ। बेशक तूं वसें वक्ख, वखरा रह के तेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं हर घट रह के वेखां तेरा रस, घट घट रिहा समाईआ। तेरा नाता तत अट्ठ, मेरी अंस सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ। सुत शब्द सच समझाउँदा हां। आदि आपणा हुक्म वरताउँदा हां। शब्द नाद तेरा वजाउँदा हां। ब्रह्म ब्रह्माद ब्रह्मांड आप सुणाउँदा हां। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आप प्रगटाउँदा हां। धुर दा लेखा बोध अगाध, अगम्म अथाह रखाउँदा हां। सति सतिवादी इक आवाज़, बिन कन्नां राग जणाउँदा हां। सच दवारे सच्चा राज, शहिनशाह हो के आप कमाउँदा हां। गुर अवतार प्रगटा के शाख़, आपणा हुक्म मनाउँदा हां। पीर पैगम्बरां दे के दात, कलमा हक़ पढ़ाउँदा हां। जुग चौकड़ी मेट अन्धेरी रात, साचा शब्दी चन्द चमकाउँदा हां। चरण प्रीती बन्न्ह के नात, धुर दा मेल मिलाउँदा हां। सच दवारा दस्स के साच, सच आप सिफ्त सलौंहदा हां। नित नवित्त कर के घात, आपणी कीती आप उलटाउँदा हां। गुर अवतारां दे के साथ, निरगुण सरगुण संग निभाउँदा हां। पीर पैगम्बरां पूरी कर के आस, आसा तृष्ना मेट मिटाउँदा हां। गोपी काहन बण के पावां रास, सीता राम रंग रंगाउँदा हां। दीन मज़्हब बण के ज़ात, झगड़ा दूई द्वैत वधाउँदा हां। सज्जण सैण बण के साक, बंधप आपणे नाल मिलाउँदा हां। नटुआ बण के करां नाच, स्वांगी हो के स्वांग वखाउँदा हां। सति पुरख निरँजण हो के दस्सां आपणा प्रताप, परम पुरख हो के भेव खुल्हाउँदा हां। सति सतिवादी दस्स के जाप, जग जीवण दाता नाउँ धराउँदा हां। कोटन कोटि मेट के पाप, पतित पापी रूप वखाउँदा हां। निरगुण सरगुण प्रगट हो के साख्यात, सोहणी बणत बणाउँदा हां। सिफ्त सालाही कलम दवात, लेखा धुर दा आप लिखाउँदा हां। अन्दर वड़ के सब दे मारां झाक, घट घट डेरा लाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सुत दुलारे तैनूं इक दृढ़ाउँदा हां। सुत दुलारे तैनूं सच समझाउँदा हां। बोध अगाध भेव खुलाउँदा हां। जुग चौकड़ी पिछली कीती, तेरे नैण वखाउँदा हां। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चली रीती, पीर पैगम्बर गुर अवतार साची सेवा लाउँदा हां। धुरदरगाही जो दिती चिट्ठी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान नाम धराउँदा हां। मेरी धार सदा सद चिटी, जिस दे उते अक्खर कोई ना पाउँदा हां।

गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नेत्र अक्ख दिती निक्की, निक्यों वड्डे आप कराउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भेव आप समझाउँदा हां। अगला भेव सच समझाउँदा हां। पड़दा उहला आप खुल्हाउँदा हां। धुर दा मौला रूप वटाउँदा हां। कीता कौला तोड़ निभाउँदा हां। धरनी धरत धवल सुहाउँदा हां। नूर इलाही अवल्ल डगमगाउँदा हां। लख चुरासी मवल, नूरी धार विच मिलाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा इक वखाउँदा हां। तेरा लेखा इक वखाउँदा हां। सच संदेस सुणाउँदा हां। पिछला पन्ध आप मुकाउँदा हां। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो गाया अगम्मी छन्द, तिस दा राग आप दृढ़ाउँदा हां। जिस नूं कलम नाल कीता बंद, छाही शंकयां विच फसाउँदा हां। उस दा कोई ना जाणे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों आप प्रगटाउँदा हां। उठ मेरे लाडले चन्द, सुत शब्द तैनूं वडयाउँदा हां। औह वेख विष्न ब्रह्मा शिव पाउँदे डण्ड, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाउँदा हां। तेरे बिन होण अन्ध, रस्ता मार्ग ना किसे जणाउँदा हां। पंज तत भागां मंद, घर भाग ना किसे लगाउँदा हां। गुर अवतार कहिण साडी चार युग दी पिछली गई हंढु, पीर पैगम्बर बंद कीते बत्ती दन्द, कलमा ज़बान ना कोए पढ़ाउँदा हां। अल्ला राणी दिसे रंड, ख़ावंद रूप ना कोए वखाउँदा हां। चारों कुण्ट सृष्टी होई नंग, पड़दा सीस ना कोए टिकाउँदा हां। सरगुण निरगुण कोई ना पावे गंढु, टुट्टी गंढुणहार गोपाल इक्को इक जणाउँदा हां। जिस नूं मिलयां पवे ठंड, अग्नी तत बुझाउँदा हां। लेखा चुके जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त आप सुहाउँदा हां। शब्द सुत, साचा वक्त सुहाउँदा हां। उठ वेख आई रुत्त, रुत्त तेरे नाल मिलाउँदा हां। पिछला पैंडा सब दा गया मुक्क, पांधी फड़ के थाउँ थाईं रखाउँदा हां। बिन हुक्मे कोई ना सके उठ, मंज़ल सब दी आपणे हथ्थ जणाउँदा हां। सच दवारे आ के पुछ, भेव अभेदा आप खुलाउँदा हां। मेरे पोतरे वेख साचे पुत्त, जिन्हां सिर ते हथ्थ टिकाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दा राग इक अलाउँदा हां। सुण संदेसा शब्दी धार, आपणी लए अंगड़ाईआ। उठो वेखो विच संसार, प्रभ अचरज खेल रचाईआ। मैनूं पिछली कीती आई याद, जिस वेले मेरी रचन रचाईआ। सति सतिवादी मार आवाज़, वीह सौ इक्की दिती जणाईआ। निरगुण निरवैर हो के सुणे फ़रयाद, परम पुरख प्रभ फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो जिस दी याद विच होए विस्माद, आप आपणा बैठे गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द सुत खुशीआं विच आया हासा, हस्ती प्रभ दी वेख वखाइंदा। पारब्रह्म तेरा अचरज तमाशा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए समझाइंदा। तेरी कोई ना जाणे अगम्मी रासा, कोटन कोटि गोपी काहन तेरा नटुआ रूप

वटाइंदा। कलयुग अन्त मेरी पूरी करीं आसा, आसा आपणी नाल मिलाइंदा। सति सतिवादी दे धरवासा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाइंदा। शब्द कहे मैं वेखां सच दरबार, हरि करता आप लगाईआ। जिस दर विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखार, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। गुर अवतार करन पुकार, तूं ही तूं राग अलाईआ। पीर पैगम्बर बरदे बण ग़ुलाम, बरखुरदार रूप वटाईआ। झुक झुक सजदा करन सलाम, सही सलामत इक मनाईआ। सच संदेसा तेरा पैग़ाम, यामबीन तेरी सरनाईआ। सच्चा पीर सच रहमान, रहमत तेरी वड्याईआ। धुरदरगाही इक अमाम, आमल इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सुत शब्द कहे मैं वेखां किनारा, नज़र तेरे नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा लग्गा सोहणा इक दवारा, जिस दर दरवेश नज़र कोए ना आइंदा। लख चुरासी जीव जंत मिले सहारा, सिर सब दे हथ्थ टिकाइंदा। जां उठ के वेखां नेत्र तक्कां कलयुग रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साडा चुक्कया सहारा, साहिब इक्को हुक्म मनाइंदा। वाक भविक्खत जिस दा लिखदे गए बण लिखारा, सो भिखक आपणी धार आप जणाइंदा। जिस दा गोबिन्द सुत दुलारा, शब्दी रूप वटाइंदा। मंज़ल मंज़ल पन्ध नवारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। शब्द सुत उठ बोले जै, जैकारा इक्को नाम लगाईआ। पतिपरमेश्वर मेरा होका दए, सुणे सर्ब लोकाईआ। दीन मज़ब ज़ात पात दा करे खै, ख़ालक ख़लक वेखे थाउँ थाईंआ। पुत्त पोतरा इक्को रहे, जिस देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी होवे लै, सब दी सफा उठाईआ। कूड़ी क्रिया किसे दी रहिण ना देवे मैं, निवण सो अक्खर इक समझाईआ। प्रभ दा खेल वेख कलयुग जीव कहिण हैं, एह की रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सुत कहे सुणो गुर अवतार, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। आओ जलवा तको सांझे यार, परवरदिगार नज़री आईआ। जिस दे बणे रहे ख़िदमतगार, जुग जुग सेव कमाईआ। सो प्रगट हो के विच संसार, लहिणा सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे तक्क, ताकत आपणी प्रभ दी झोली पाईआ। तेरे हथ्थ हकीकत हक़, हकूक सब दा दे समझाईआ। कलयुग अन्तिम साडी लवे ना कोई मति, मन मति घर घर डेरा लाईआ। शरअ शरीअत चुक्की अत्त, चौदां तबक करे लड़ाईआ। सति धर्म सब दे विच्चों गया नट्ठ, साध सन्त धीरज धीर ना कोए रखाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरे मिलण दी खोल्हे कोई ना अक्ख, दोए लोचण धीआं भैणां रहे तकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा गाउँदे जस, अन्दर वड़के मिल मिल दरस कोए

ना पाईआ। सब नूं कैहन्दे सच रब्ब, रब्ब कोलों बैठे आपणा मुख छुपाईआ। कोई ना लँघे सति हद्द, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। पंजां शब्दां अन्दर गए फस, सार शब्द सार किसे ना राईआ। अमृत रस विच्चों पींदे रस, हरि का रस दूर दुराडा हथ्थ किसे ना आईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अन्दर वड़ के करन जप, जपण वाला सब तों बाहर बैठा बेपरवाहीआ। कोटां विच्चों आपणा गुरमुख आपे लभ्भ, जोतां विच्चों जोत करे रुशनाईआ। बाकी सब दे नकेल पई नक्क, काम क्रोध लोभ मोह हँकार खिच खिच धक्का लाईआ। वेखो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर उते साधां पै गया शक़, शिकवा सके ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरी हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्द सुत तेरा लेखा शुरु, शहिनशाह जणाइंदा। बिन तेरे दूजा दिसे कोई ना गुरू, जो पंज तत गुरू सो मढ़ी गोर दबाइंदा। मेरा मन्त्र इक्को फुरू, दो जहानां फुरना बंद वखाइंदा। सतिगुर दाता गहर गम्भीर बिन शरीर दे दो जहानां फिरू तुरू, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए अटकाइंदा। किसे दे मोड़यां अग्गे पिच्छे कदे ना मुड़ू, जो करनी कर वखाइंदा। किसे दे भोरयां कदे ना भुरू, आपणी वंड ना कोए वंडाइंदा। वड्याई विच ना आ के तिड़ू, साहिब सतिगुर नीचां विच सुहाइंदा। जन भगतां गुरमुखां गुरसिखां सन्तां दे अन्दर वड़ के खिड़ू, कँवल नाभी आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। शब्द गुरु गुर सच्चा, बच्चा पुरख अकाल बणाईआ। जिस दा नकली बणावे कोई ना संचा, घाड़त दे ना कोए समझाईआ। गुरू नहीं कोई गाँ घर वच्छा, फड़के ममां सीर मुख ना कोए लगाईआ। सो गुरू जो सतिगुर हो के हर घट अन्दर रचा, शब्दी नाउँ धराईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण किसे ना दित्ता सच्चा पता, थोड़े थोड़े इशारे कहि कहि रहे जणाईआ। जिस दे दवारे अन्दर कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर नच्चा, पंज तत काया चोला जगत हंढाईआ। सो सतिगुर शब्द सदा पक्का, अडोल अडुल बेपवाहीआ। सब दा देवे सच्चा हक़ा, हकीकत वेखे थाईं थाईंआ। बिन लत्तां बांहवां पैरां फिरे नड्डा, बिन रसना जिह्वा आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, साचे शब्द मेल मिलाईआ। साचे शब्द तेरा मिलावा, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। जन भगतां उजल कर के नावां, नयामत नाम झोली पाइंदा। जिस वेले गोबिन्द लिख्या पाढ़या बेदाअवा, वेद शास्त्र सर्ब सीस निवाइंदा। महा सिँघ दा अन्तिम निकलया हावा, हौका हक़ विच मिलाइंदा। हथ्थ रख के मोढे उते बांहवां, गोबिन्द आपणी गोद बहाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां मांवां, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी खेल वखाइंदा। महा सिँघ दिती दलील, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। शब्द गुरू मेरी अपील, तेरी झोली पाईआ। एथे ओथे बणना वकील, शहादत आपणी देणी भुगताईआ।

तेरे वस्त्र वेख नील, नीले वाल्या खुशी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्द देईं वड्याईआ। महा सिँघ हथ्थ रख के सज्जे मोढे, आसा इक तकाईआ। पुरख अकाल दे बच्चे अजे छोटे, गोबिन्द तेरा बूटा नज़री आईआ। तेरा सुण के सच श्लोके, मेरा अन्तर खुशी मनाईआ। साचे मिल्यों आ के मौके, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। एथे ओथे सानूं अग्गे कोई ना रोके, दर घर साचे ना होए जुदाईआ। साडे पिछले जाण दे रोसे, रुस्से आपणे गले लगाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा मेरे गए गुस्से, गुस्सयां विच्चों खुशीआं प्रगटाईआ। जिस वेले भाग लगावें मुड़ के पंज तत काया जुसे, ततव तत सोभा पाईआ। ओसे वेले नीला इक्को वार हिणके टप्पे, उच्ची कूक दए सुणाईआ। तेरे गुरमुखां मस्तक लग्गे टिक्के, जोती नूर होए रुशनाईआ। जो तेरे प्रेम प्यार अन्दर विके, कीमत करते घर पवाईआ। गोबिन्द किहा मैं धुर दे देवां हक़े, हक़ सब दी झोली पाईआ। नीला रंग धार के आवे बग्गे, चिटा अस्व रूप वटाईआ। साध संगत हरिसंगत इस दी सेवा करे वाल पक्खे, पख पिछला दए जणाईआ। महा सिँघ तेरा बचन चेते रखे, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। पुष्कर जा के जिस ने हाल दस्से, सिँघ बिशन नाल मिलाईआ। ओसे कारण महा सिँघ गुरमुखां दी चोट आपणे मोढे रखे, पिच्छा दे ना मुख भवाईआ। जे ओदों बाल छोटे, हुण छोटिउँ वड्डे दित्ते बणाईआ। सारे वसावे थिर घर तेरे कोठे, छप्पर छन्न ना कोए जणाईआ। दूसर कोई ना ओथे पहुंचे, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। बेशक प्रभ मिलण नूं लख चुरासी लोचे, अट्ठे पहर नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द गुरू कहे मैं दाता गम्भीर, प्रभ साचे मात बणाया। मेरा घर मन्दिर इक अख़ीर, बिन मज़लों आपणा पन्ध मुकाया। जिथ्थे ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, मज़्हबी वंड ना कोए वंडाया। ना कोई मणका ना कोई तसबी ना कोई तस्वीर, इष्ट रूप ना कोए दृढ़ाया। ना कोई तत ना शरीर, मन मति बुध ना कोए सुहाया। ना कोई कलम छाही काग़ज़ उते खिच्चे लकीर, कातब लेख ना कोए लिखाया। ना कोई तकदीर ना तदबीर, ना कोई नग़मा नज़म सुणाया। जिस मंज़ल गृह चढ़ के बैठा अख़ीर, आख़र निरगुण डेरा लाया। ओथे इक्को अगम्म अथाह बेपरवाह धुर दा पीर, हरि हरिजू सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा हुक्म इक वरताया। साचा हुक्म वरते वरतंत, वारता आपणी नाल मिलाईआ। कर खेल श्री भगवन्त, भगवन भगतां दए वड्याईआ। सो गुरमुख गुरसिख साचे सन्त, कोटां विच्चों नज़री आईआ। जिन्हां अन्तर मिल्या कन्त, घर नारी लए प्रनाईआ। नाता तोड़ विच्चों जीव जंत, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई सच रब्ब, रब्बी उलसानी दया कमाइंदा। जगत किनारा पार हद्द, हदूद

इक्को इक वखाइंदा। सति प्रकाश दीपक रिहा जग, नूरी नूर रुशनाइंदा। सब तों न्यारा हो अलग, वक्खरी कार कमाइंदा। नाउँ धर सूरा सरबग्ग, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। राम हो के रम्यां जग, घट घट डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे सच्च, हरि सच्चा वड्ड वड्याईआ। लख चुरासी रिहा रच, साढे तिन्न करोड़ करे रुशनाईआ। नव नौ चार रिहा नच्च, घर घर राग अलाईआ। अग्नी माया ममता रिहा मच्च, भस्मड़ रूप वटाईआ। सच दवारे रिहा लँघ, मंजल पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां वेख सेज पलँघ, सोभावन्त डेरा इक लगाईआ। अन्तर आत्म देवे इक अनन्द, परमानंद विच समाईआ। शब्द सुणाए धुर दा छन्द, ढोला राग अलाईआ। जोत निरँजण चाढ़ चन्द, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। लेखा चुक्के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म समाईआ। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्म कांड गंवाईआ। जन भगतां गुरमुखां रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सतिगुर शब्द जो जन साची लए सरन, सरनगति इक वखाईआ। नेत्र खुल्हे हरन फरन, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। साचे पौड़े सज्जण हो के चढ़न, मजन करन बेपरवाहीआ। जोद्धे सूरबीर हो के गज्जण, भय भउ परे हटाईआ। सति सरूप हो के मग्न, सति पुरख निरँजण विच डेरा लाईआ। प्रकाश हो के प्रकाशमान विच जगण, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवे वड्याईआ। शब्द कहे सच सति, सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। जिस दी आदि जुगादि ब्रह्म मति, विद्या पारब्रह्म पढ़ाइंदा। जिस दी नित नवित्त इक्को अक्ख, नैण नैणां विच्चों प्रगटाइंदा। जो माया प्रकृती अग्न विच्चों लए रख, ततव तत ना कोए जलाइंदा। धीरज सति सन्तोख देवे जत, गुरमति इक दृढ़ाइंदा। अन्दर वड़ के आपणा मार्ग जावे दस्स, सुरती शब्द नाल मिलाइंदा। प्रेम प्यार दा दे के रस, जगत तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। सच दवारे हो के वस, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। गुरमुख खेड़ा होण ना देवे भट्ठ, भठियाला अग्न ना कोए तपाइंदा। सहायक नायक हो के लवे रख, रक्षक आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां मिले हो अनझक्क, सिध्धा आपणा पन्ध मुकाइंदा। जे गुरमुख दिने जागदयां सतिगुर कोलों जावण अक्क, रातीं सुत्तयां घर घर वेख वखाइंदा। सब तों चोरी हौली हौली गुरसिख अन्दर जाए लँघ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। वड्डा निक्का हो के आत्म सेजा सोया पलँघ, सोहणा वस्त्र आप विछाइंदा। बिन पुरी अनन्द तों आपणा देवे उह अनन्द, जिस विच्चों पुरी लोअ ब्रह्म ब्रह्मांड वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुरू इक वखाइंदा। शब्द गुरू तेरा नाता जग, हरि करता आप बणाईआ। तेरा वसेरा उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध चुकाईआ। तेरा मक्का काअबा हुजरा हज्ज, महिराब इक्को नूर रुशनाईआ। तेरा ढोला राग अगम्मी छद, छन्द तत नाल मिलाइंदा। तूं सब दा पर्दा लैणा

कज्ज, कज्जल धार इक्को नेत्र पाइंदा। आपणे मिलण दा दस्सणा चज्ज, सुचज्जी गुरमुख नारी इक प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वेखे चाईं चाईंआ। शब्द कहे मोहे चाउ घनेरा, घर वज्जे इक वधाईआ। परम पुरख प्रभ नेरन नेरा, दूर दुराडा नज़री आईआ। कलयुग अन्त हो बेअन्त गुरमुखां बन्ने बेड़ा, झेड़ा झूठा मेट लोकाईआ। सच वसाए इक्को खेड़ा, काया खिड़की कुण्डा आप खुल्हाईआ। जिस घर गुरमुख सन्त सच्चा लावे डेरा, सो घर विच घर करे रुशनाईआ। ओथे कदे ना होवे अन्धेरा, बत्ती लो ना कोए जणाईआ। नाता तुटे तेरा मेरा, तूं मैं इक्को रूप समाईआ। धन्न भाग प्रभ ठाकर स्वामी जन भगतां अन्दर लाया आपणा डेरा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। साची सखीआं मिल के पाया घेरा, चारों कुण्ट खुशी मनाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर शब्दी रूप धारया शेरा, सिंघ इक्को भबक सुणाईआ। दो जहानां खुल्ला वेखे वेहड़ा, भीड़ी गली सुखमन नाड़ी घर घर दए दुहाईआ। पंच विकार कहिण साडा टुट्टा झेड़ा, माया ममता ना कोए हल्काईआ। सतिगुर पूरे हाज़र हज़ूरे गुरमुखां बद्धा बेड़ा, नाम जहाज़ उपर चढ़ाईआ। ओहनूं अग्गे रोके केहड़ा, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। जिस ने नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों निरगुण हो के पाया फेरा, जोती जामा वेस वटाईआ। ओस प्रभू दा वड वड्डा जेरा, जिस सबर विच्चों गुर अवतार पीर पैगम्बर लए प्रगटाईआ। चारों कुण्ट निक्कीआं निक्कीआं सारे छेड़दे फिरन छेड़ां, छेकड़ हथ्थ किसे ना आईआ। कलयुग जीव ख़च्चर गध्यां वौहण वाले रेड़्हा, शब्द अस्व हो अस्वार, दो जहान ना कोए दौड़ाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द भेड़ भेड़ा, मन मनसा करे लड़ाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख प्रभ आपे जाणे केहड़ा, जिस दी खिड़की कुण्डा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुरू इक अख्वाईआ। शब्द गुरू प्रभ दा बेटा, पुत्तर इक अख्वाइंदा। दो जहानां रंग रंगेटा, रंगत आपणी इक चढ़ाइंदा। ततव तत खेवट खेटा, मलाह सच अख्वाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मण्डां खण्डां बणे नेता, धुर दा हुक्म सुणाइंदा। जे कोई सतिगुर शब्द दी रीस करे वेखो वेखा, जगत माण वधाइंदा। अन्तिम तिस दी दिसे ना कोए रेखा, लेखा हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। दीन दयाल जुग जुग धारे शब्दी भेसा, काया चोला तत हंढाइंदा। कदी ना लवे आपणे हथ्थ त्रिलोकी ठेका, ठेकेदार गुर अवतार आप बणाइंदा। थोड़ा थोड़ा दस्स के आपणा भेता, पंज भूतक रूप समझाइंदा। जे कोई हाल दस्सण लग्गे वड विशेषा, विष्नूं हो के आपणा खेल रचाइंदा। जे कोई पुच्छण लग्गे पेशा, ब्रह्मा हो के आपणी वंड वंडाइंदा। जे कोई लभ्भण लग्गे नेज़ा, शंकर हो के हथ्थ त्रिसूल वखाइंदा। जे कोई पुच्छण लग्गे सेजा, सांगोपांग आप हंढाइंदा। जे कोई जानण लग्गे भेखा, हर घट रविआ आपे नज़री आइंदा। जे कोई देवण लग्गे आदेसा, साहिब सुल्तान हो के सचखण्ड सोभा पाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगत आप प्रगटाइंदा। कोटां विच्चों उपजाए भगत, देवे माण वड्याईआ। नेत्री वखाए सारे जगत, लेखा लिख के कलम शाहीआ। जिन्नां पिच्छे आया फ़कत, फ़िकरे नवें रिहा सुणाईआ। साधो सन्तो पिछला गया वक्त, अग्गे बखत सब नूं रिहा वखाईआ। किसे कोल रहिण ना देवे बरकत, बंदीख़ाना दए समझाईआ। बेशक गुस्से विच आ के सारे करदे हरकत, मन दी करन लड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ किसे नाल ना करे शिरकत, लाशरीक इक अख्वाईआ। श्री भगवान गुरमुखां अन्दर वड़ के आपणा माणे ऐशो इशर्त, ऐशगाह गुरमुख काया लई बणाईआ। जुग जन्म दे मेले बिछरत, आपणी दया कमाईआ। याद विच्चों याद ना जाए विसरत, लेखा देवणहारा आपणी याद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन वेखे जागदे, लगा मात भाग। गुर अवतार आखदे, उच्ची कूक आवाज़। एह गुरमुख सच्चे साध जे, जिन्नां मिल्या ग़रीब निवाज़। एह सदा सदा सद सति विच विस्माद जे, जो बिन जिह्वा रहे आराध। एन्नां प्रभू संवारे काज जे, जो हरि सरनाई गए लाग। सच पुछो बिन करनीउँ बिन कमाईउँ बिन नाम बिन शब्द बिन किरत आपणे हथ्थ विच पकड़ी वाग, चारों कुण्ट आप फिराईआ। मेहर नज़र नाल दुरमति मैल धोता दाग़, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के दवारे खड़ के मारे आवाज़, सुत्तयां लए जगाईआ। आओ मिलो वेखो गुरू महाराज, जिस दा शास्त्र सिमरत रहे जस गाईआ। जिस दा ईसा मूसा मुहम्मद कलमा पढ़दे नमाज़, हज़रत आया बेपरवाहीआ। जिस दा बेड़ा इक जहाज़, चार वरनां रिहा चढ़ाईआ। लेखा दे के विच महीने माघ, रविदास चुमारा नाल मिलाईआ। लालो होण ना दित्ता उदास, नानक निरगुण सेव कमाईआ। सति धर्म दी बख्श के दात, सति सतिवादी खुशी जणाईआ। जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो उसे दा अमृत वेले काज, जिस दा कर्जा रविदास कोलों चुकाईआ। सारे पैगम्बर पढ़न ओस वेले नमाज़, काअबे वलों आपणा मुख भवाईआ। फेर चारों कुण्ट उठे जहाद, जलवा आपणा दए वखाईआ। गुरमुखो तुहाडा खेड़ा करे आबाद, उजड़े आप वसाईआ। कदे ना होवे बरबाद, बरबाद हुन्दी वेखे जगत लोकाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां आपणे अन्दर सुणन नाद, साहिब सतिगुर आप वजाईआ। जे मन कर के जाओ भाज, सुरत कर के शब्द लए मिलाईआ। शब्द गुरू दा एहो स्वाद, बिन रसना रस वखाईआ। सतिगुर गुरसिखो तुहाडे चढ़या जहाज़, तुहाडा जहाज़ डुब्बदा बेड़ा लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिसंगत हिरदे हरिजू डेरा लाईआ।

*** २ जेठ २०२१ हरि भगत दुआर जेठूवाल ***

वेख खेल साचे घर दा, पीर पैगम्बर सीस निवाइंदा। परवरदिगार की कुछ करदा, साची करनी कार कमाइंदा। मुरीद मुर्शद किवें फड़दा, दर दवारे मेल मिलाइंदा। पूरब लेखा किवें पढ़दा, बिन अक्खरां राग सुणाइंदा। लेखा जाणे सीस धड़ दा, पंज तत खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। पीर पैगम्बर पढ़न कलमा, इक ध्यान लगाईआ। जिस दी अल्फ़ समझ ना आई किसे उल्मा, आलम चले ना कोए चतुराईआ। तिस दा लेखा होए ना कदे गिणवां, गणती गणत ना कोए जणाईआ। जिस दा हिसाब ना होए मिणवां, धड़ी वट्टा तोल ना कोए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ। पीर पैगम्बर रहे तक्क, बेनज़ीर वेख वखाईआ। शाह
१०१५ सिक्दार देवे हक़, हकीकत झोली पाईआ। मेहरवान हो पुरख समरथ, दयानिध दया कमाईआ। सच दवारा खोल्ह हट्ट, वणज कराए सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। पीर पैगम्बर इक दूजे नूं करन इशारा, बिन अक्खां रहे समझाईआ। वेख खेल परवरदगारा, यामबीन भेव चुकाईआ। साची मंजल खोल्लया इक दवारा, दरगाह साची रूप वटाईआ। करे खेल अपर अपारा, भरम भुलेखा रिहा चुकाईआ। चार वरन दी इक्को धारा, सति सतिवादी आप समझाईआ। चार कुण्ट दा इक हुलारा, इक्को वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण वेखो हदूद, हरि करते वड वड्याईआ। घर सज्जण बण महिबूब, मुहब्बत इक्को इक बंधाईआ। तन मन्दिर वेख अरूज, अर्श कुर्श पन्ध मुकाईआ। मुर्शद मुरीदां कर महफूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिछला अग्गे दे हकूक, हक़ साचा झोली पाईआ। जिस दा कोई ना देवे सबूत, सति सके ना कोए दृढ़ाईआ। मेल मिलावा पंज तत करे कलबूत, रूह बुत्त संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान नूर इलाहीआ। पीर पैगम्बर कहिण तन माटी बुत्त होया पाक, रसूल पाक देवणहार वड्याईआ। साडी सदी चौधवीं पुन्नी आस, तृष्ना बैठी मुख छुपाईआ। चल के वेखीए मस्जिद उह ख़ास, जिस दा सतून नज़र किसे ना आईआ। जिस दी अगम्मी होए महिराब, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। जिस दा सजदा इक आदाब, कलमा इक जणाईआ। उस दी सुण के सच आवाज़, अन्तर अन्तर लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पीर पैगम्बर कहिण चलो वेखीए रीती, हरि करता आप कराइंदा। जिस खहिड़ा छुडाया मन्दिर मसीती, साचा दर इक वडियाइंदा। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल मन्नदे गए नीती, सो नीतीवान वेस वटाइंदा। जिस दी प्रेम धार सदा जीती, मरन विच

कदे ना आइंदा। साची बख्शे इक प्रीती, चरण कँवल जोड़ जुड़ाइंदा। ओस दवारे लेखा चुके हस्त कीटी, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप विच्चों जन भगत दुआर लाई इक बाग़ीची, बाग़बान आपे वेख वखाइंदा। जिस दी धार सदा नीकी, नीकन नीका राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। पीर पैगम्बर कहिण चलो सुणीए फ़रमाण, हरि करता आप सुणाईआ। जिस दा करदे रहे ध्यान, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। सो आया मेहरवान, निराकार रूप वटाईआ। माणस मानुख मनुष देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। चार वरनां कर पछाण, बरन अठारां डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म मेल करे भगवान, परवरदगार मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण वेखो खेल धुर दा, बेपरवाह आप कराईआ। जिस पिछला लेखा कीता मुर्दा, शरअ ज़ब्ह कीती आपणी शमशीर हथ्थ उठाईआ। अग्गे खेल करे अगम्म अवर दा, गहर गवर बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जिस प्याला पीता सबर दा, बेसबरे सारे रिहा वखाईआ। मेल मिलाए जन भगत सुहेले साचे टब्बर दा, जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखाईआ। सहारा देवे शेर बब्बर दा, होए सहाई थाउँ थाईंआ। ओथे लेखा चुक्के चौदां लोक उपर अम्बर दा, तबक तबकां विच्चों नैण शरमाईआ। हुण वेला आया मंगण दा, चलो चलीए चाईं चाईंआ। काया माटी चीथड़ वक्त सुहाउणा रंगण दा, रंग अगम्मड़ा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुकाए ब्राह्मण पिछले कंगण दा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। पीरां विच्चों बोलया पीर, परा परा कूक सुणाईआ। चलो जिस शरअ कटी ज़ंजीर, अशाइत करे नूर खुदाईआ। जिस रवीदास दिती धीर, धीरज धीर बंधाईआ। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र आपणी रिहा छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा रिहा चुकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण चलो वेखीए दर, दरगाह साची रूप वटाइंदा। पीआ प्रीतम हो के रिहा फड़, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। बाहरों वेखो पंज तत धड़, अन्दर नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। एह पैगम्बर नहीं जो जावे सड़, गोर विच ना डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। पीरां विच्चों पीर कलमा, शब्दी नाउँ धराईआ। मेरा प्रीतम ओह बलमा, बालम इक्को फेरा पाईआ। जिस दी समझ आई ना किसे इलमा, आलम देवे ना कोए वड्याईआ। हुक्के भन्न सुट्टे चिलमां, चारों कुण्ट धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नूर खुदाईआ। नूर खुदाई वेखो जलवा, जल्वागर आप जणाइंदा। पीर पैगम्बरो उस दा खावण जाओ हलवा, दर साची सोहणी बणत बणाइंदा। जिस नूं नित नवित्त जुग चौकड़ी लख चुरासी कैहन्दी कमला, सो कमली वाला फेरा पाइंदा। जिस नूं निरगुण नूर खुदाई

मन्नया अवल्ला, सो आलमीन आपणा रंग रंगाइंदा। जिस दा लेखा कदे ना आवे अरबां ख़रबां विच पदमां, गणती गणत ना कोए गणाइंदा। अज ओस ने सब नूं दित्ता सदमा, सिर उपर ना कोए उठाइंदा। चल के बोसा लईए उते कदमां, कदम कुदरत कादर विच्चों आप प्रगटाइंदा। जिस दा लेखा आदि जुगादि अदमा, अदना आहला इक्को नज़री आइंदा। सच दवारे जिस दे सजणा, सोहणा धाम सुहाइंदा। ओथे इक्को वार होवे मंगणा, दूजा सगन ना कोए वखाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर करे कारज अनन्दना, अनन्द आपणे गंढु रखाइंदा। जिस दा हुक्म एथे ओथे किसे ना भंनणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जिस दा मुरीद गुरमुख बूटा चन्नणा, सुगंधी दो जहान वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। पीर पैगम्बर करन सच सलाह, मता इक्को इक पकाईआ। वेखो सदी चौधवीं बणे गवाह, हज़रत पैगम्बर गया समझाईआ। प्रगट होवे बेपरवाह, जलवा नूर रुशनाईआ। जिस नूं असमानां उते ईसा मूसा मन्नदे रहे खुदा, खालक आपणी कार कमाईआ। सो दाता दानी बेपरवाह, पर्दानशीं आपणा मुख वखाईआ। जिस नूं रहिबर बण के पुछदे रहे राह, रहमत धुर दी मंग मंगाईआ। ओस दा हकीकी वेखीए नकाह, नक़ाबपोश आपणा राह वखाईआ। सज्जणो मित्रो अग्गे नहीं कोई विसाह, लुक्या फेर हथ्थ ना किसे आईआ। रविदास चुमारा जिस बणाया गवाह, नौ जन्म दा पंडत नाल रलाईआ। चौथे कहार हौली जिही दित्ता समझा, शब्द इशारा इक दृढ़ाईआ। तेरा लहिणा हथ्थ बेपरवाह, नाता तुटे कूड़ी जगत माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। रविदास कहे मैं कलम दब्बां, पिछला लेख मुकाईआ। ब्राह्मण कहे मैं सज्जण लभ्भां, जिन्हां दिती पल्लउँ गंढु खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे मैं काया चोली रंगां, रंग आपणा नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। वड्याई विच्चों देवे माण, अभिमान ना कोए रखाइंदा। पिछला लेखा जाणी जाण, जाणनहारा आप दृढ़ाइंदा। पूरब कर्म लए पछाण, भरम भुल्लेखा दूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। करनीआं विच्चों करे करनी, हरि करता वड वड्याईआ। मरनीआं विच्चों देवे मरनी, मर जीवत रूप वटाईआ। सरनाई विच्चों देवे सरनी, सरनगति रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्शे इक्को तरनी, तारनहारा डूंग्घी भँवर लेखा दए चुकाईआ। डूंग्घी भँवरी कलयुग सागर, घुमण घेर रूप वटाईआ। जगत कहार मिल्या आदर, मेहर नज़र उठाईआ। रविदास लिखाया इक्को काग़ज़, बिन अक्खरां आप समझाईआ। सांभ के रखणा नाल हिफ़ाज़त, दर साचे बंद कराईआ। जिस दे विच मेरे नाम दी इक्को इबादत, कलमा अवर ना कोए पढ़ाईआ। सुल्तान हो के करां सख़ावत, वस्त अगम्म आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया विच ना

रहे मिलावट, ममता मोह ना कोए समझाईआ। सच बणावां इक बणावट, बंदगी आपणा नाम कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखे अन्दर पूरब विचार, हरि करता आप जणाइंदा। किरपा कर चौथे कहार, मेहर नज़र उठाइंदा। इक जाणे रवीदास चुमार, दूजा भेव कोए ना पाइंदा। जन्म जन्म दा लहिणा देणा कर्ज़ उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज़ पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा लेखा रखे हथ्थ, हरि करता वड वड्याईआ। पीर पैगम्बर वेखण हस्स, हस्ती विच्चों हस्ती नज़री आईआ। जिस दा गाउँदे आए जस, सिफ्त सालाही राग अल्हाईआ। सो भगतां देवे हक़, मुर्शद बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों वक्ख, फड़ बांहों आप कराईआ। नाम बबाणे चाढ़े रथ, शब्द इशारे नाल उडाईआ। कूड़ी क्रिया खेड़ा भट्ठ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सति सन्तोख धीरज दे के सत, सति सतिवादी होए सहाईआ। हुक्मे अन्दर आपे सद्द, साची बणत बणाईआ। शब्द नगारे रहे वज्ज, दो जहान होए शनवाईआ। भगत सुहेले रहे भज्ज, सेवा करन चाईं चाईंआ। गुरमुख सज्जण बैठे सज, सोहणा आसण लाईआ। रविदास वचोला कारज अनन्द करे अज्ज, पिछला लेखा पूर कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पीर पैगम्बरां नाल गुरमुखां दा पूरा कीता हज्ज, हाजत होर रहे ना राईआ।

* २ जेठ २०२१ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल *

शब्द सुत कहे सुण मेरे बाप, पुरख अकाल तेरी वड वड्याईआ। क्यों जपावें मेरा जाप, आपणा भेव छुपाईआ। साची थापणा आपे थाप, थपक थपक गोदी विच बहाईआ। आपणा संदेसा आपे आख, सच दित्ता समझाईआ। चरण कँवल बख्श निवास, थिर घर सोभा पाईआ। मेरे गृह कर प्रकाश, सच मन्दिर करी रुशनाईआ। निरगुण हो के वसें आस पास, धुर दा संग निभाईआ। हुक्मरान हो के जावें आख, आपणा हुक्म वरताईआ। अन्तर अन्तर जोड़ नात, साचा मेल मिलाईआ। आपणे विच्चों प्रगट मेरी ज़ात, सोहणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की अचरज खेल रचाईआ। सुत कहे मेरे भगवान, प्रभ तेरी की वड्याईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा नादान, भेव सका ना कोए पाईआ। दर दरवेश मंगण वाला दान, अलख दवारे आपणी अलख जगाईआ। चरण कँवल रखण वाला ध्यान, साचा नेत्र इक खुल्हाईआ। तूं तख्त निवासी नौजवान, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। किस बिध मैनूं दित्ता माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं तेरा गावां गान, तूं मेरी करें वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे समझाईआ। शब्दी सुत कहे

मेरे भगवन्त, हरि तेरी इक सरनाईआ। तेरी महिमां सदा अगणत, लेखा लिख ना कोए जणाईआ। तेरा कोई ना पावे आदि अन्त, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए उठाईआ। शब्द सुत कहे मेरे साहिब सुल्तान, हरि करते तेरी ओट रखाईआ। साची सिख्या तेरा ज्ञान, अन्तर मेरे करे रुशनाईआ। मैं दरवेश मंगणहारा दान, तूं दाता बेपरवाहीआ। तूं साहिब हुक्मरान, हउँ चाकर रूप वखाईआ। तूं पिता पुरख मेहरवान, हउँ बालक रूप सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दे उठाईआ। शब्द सुत कहे क्यों देवें माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा खेल वेख प्रभू महान, मेरा नैण रिहा शरमाईआ। मैं तेरा वणजारा चलावणहार दुकान, हट्ट हटवाणा हो के सेव कमाईआ। तूं खेल करें महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे समझाईआ। सच दरस मेरे पुरख अगम्म, क्यों अगम्मड़ी कार कमाइंदा। मैं तेरी धारों प्या जम्म, मात पिता ना कोए बणाइंदा। मैं तेरा नढ्ढा बाला चन्न, तेरे नूर नाल रुशनाइंदा। तूं देवणहारा अनमुलड़ा धन, सच ख़ज़ीना आप लुटाइंदा। तूं बेड़ा दित्ता बन्नृ, खेवट आपणी कार कमाइंदा। मैं मंगणहारा मंग, तूं अतोट अतुट वरताइंदा। तूं देवणहारा अनन्द, मैं रस विच समाइंदा। तूं लावणहारा अंग, मैं गोदी बहि बहि खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१०१६ किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। शब्द सुत कहे मेरे साहिब पुरख पुरखोतम, तेरी वड वड्याईआ। १०१६

१६ मैं बाल अञ्याणा कमला कोझा मूर्ख, सब तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी किरपा वज्जे मेरा नाद तूरत, सुर ताल ना कोए रखाईआ। १६

मैं दर्शन करां अकाल मूर्त, तेरा नूर जोत रुशनाईआ। सति सरूप तूं आसा पूरत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे लेखा दे जणाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरे पुत्तर, पतिपरमेश्वर आप जणाइंदा। तूं मेरी धारों आएयों उतर, माता कुक्ख ना कोए सुहाइंदा। तूं मेरा करें शुकर, मैं मेहरवान हो के साची दया कमाइंदा। गोदी चुक्कां आपणे कुच्छड़, खुशीआं नाल खिडाइंदा। प्रेम प्यार दा दे के टुक्कड़, धीरज धीर तेरी बंधाइंदा। मेरे दवारे कोई ना सके उपड़, इक्को तेरा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अलाइंदा। श्री भगवान कहे सुण मेरे बच्चे, बचपन तेरा मोहे भाईआ। तूं निकलिउं पारब्रह्म दे साचे सच्चे, सच तेरी वड्याईआ। तेरा तत ना माटी कच्चे, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। जोती धार अन्दर रचे, हरि रचना वेख वखाईआ। महल अटल प्रभ चरण दवारे वसें, थिर घर डेरा लाईआ। करे दरस खुशीआं विच हस्सें, सोहणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तैनूं देवे वड्याईआ। सुण शब्द मेरे सच्चे लाल, हरि लालन दया कमाइंदा। तेरा दवारा इक धर्मसाल,

धुरदरगाही आप उपाइंदा। जिस दा लेखा बेमिसाल, मिसल दूजी ना कोए वखाइंदा। दीआ बाती कमलापाती जोती नूर इक्को बाल, निरगुण निरवैर डगमगाइंदा। निरगुण हो के वसें नाल, सोहणा संग निभाइंदा। सदा सुहेला बण के पुछें हाल, अहिवाल आपणा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। शब्द सुत सुण मेरे नन्हे, सच दयां दृढ़ाईआ। मेरी सरनाई धुर दे बन्हे, हद्द हदूद ना कोए वखाईआ। बिन तेरे जुग चौकड़ी सारे रहिण अन्हे, नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाईआ। तेरा मेरा खेल सच दुआर कहे श्री भगवने, भगवन आपणी कार कमाईआ। तूं मेरा कहिणा मन्नें, मैं तैनूं दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। शब्द सुत सुण मेरे बालक, हरि करता आप जणाईआ। मैं तेरा बणां प्रितपालक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच दवारे ना निंद्रा ना कोई आलस, खुशी ग़मी ना कोए रखाईआ। मैं तेरा बणां सालस, सोहणी वंड वंडाईआ। तूं आपणी दस्सीं हालत, हाल सच देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। शब्द सुत कहे मेरे बाप, पिता पुरख तेरी सरनाईआ। मैं तेरा करां जाप, तेरी इच्छया नाम ध्याईआ। तूं मेरा देणा साथ, सगला संग निभाईआ। दोहां मिल के बण जाए गाथ, ढोला नाद शनवाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते मोहे भाईआ। तेरा खेल अगम्म तमाश, सोहणी रास रचाईआ। तेरा जलवा नूर प्रकाश, जोत जोत विच्चों रुशनाईआ। मैं सेवक तेरा दास, बालक इक्को इक अख्वाईआ। मैनूं भेव दस्स ख़ास, किस कारण ल्या प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए समझाईआ। श्री भगवान कहे सुण शब्दी रंग, सुत दुलारे दयां दृढ़ाईआ। आपणे विच्चों कढ्ढ के तन्द, तेरी धार बणाईआ। निरगुण हो के वसां संग, साचा संग निभाईआ। प्रीतम हो के देवां अनन्द, रस इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दयां समझाईआ। सुण शब्द दस्से निरगुण जोत, आदि पुरख समझाईआ। मेरा लेखा किसे ना आवे विच सोच, समझ सके कोई ना राईआ। इक्को मेरे दर ते तूं माणे सच्ची मौज, मौजूदा हो के दर्शन पाईआ। तैनूं वखावां आपणा चोज, चोजी हो के पड़दा लाहीआ। बच्चू तेरे अन्दर रखां आपणी मौज, मौज विच्चों आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भाव रिहा दरसाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगवान, जोती जाता इक अख्वाइंदा। तूं मेरा बाल अञ्याण, वांग बाल्यां गोद सुहाइंदा। तैनूं दे के धुर दा दान, दाता हो के मस्तक टिक्का लाइंदा। तेरे उत्तों मेरा शुरु होवे ब्यान, साचा हुक्म इक वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। शब्द सुत तेरे उते मेरा लेखा शुरु, शहिनशाह समझाईआ। मैं पुरख अकाल तूं बणना गुरू, गुरदेव स्वामी तेरी

धार चलाईआ। मेरा हुक्म तेरे विच्चों कदे ना मुड़्, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरी फलवाड़ी दो जहान खिड़्, सच सच समझाईआ। तेरी धार विच्चों विष्न बालक हो के रिड़्, आपणा बल ना कोए जणाईआ। मैं खुशीआं अन्दर तेरे मन्दिर फिरू, वेखां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक लगाईआ। शब्द सुत तूं बण जा गुर, हरि करता सच दृढ़ाइंदा। तेरा नाता जोड़ां धुर, साची जोत नाल मिलाइंदा । तेरा बेड़ा ना जावे रुढ़, साचे कंध आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा । शब्द कहे प्रभू तूं मेरा जणदा, मात पित अख्वाईआ। मैं की जाणां किवें गुरु गुर बणदा, आपणा हुक्म वरताईआ। मैं तेरा संदेसा इक्को सुणदा, जो शहिनशाह जणाईआ। मैनूं पता नहीं अग्गे पिच्छे हुण दा, हौका लै के सीस निवाईआ। श्री भगवान कहे मैं तैनूं आपणे हुक्मे नाल चुणदा, सोहणी चोण कराईआ। कोई भेव ना जाणे मेरे गुण दा, एह दिती तैनूं वड्याईआ । मेरा खेल अगम्म फुन दा, फुरना तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा काज आप रचाईआ । पुरख अकाल कहे मैं तैनूं गुरू देवां थाप, सतिगुर आपणा नाउँ रखाईआ। तेरा जगत जपावां जाप, आपणा प्रताप तैनूं दयां वखाईआ। तूं सति दवारा वेखणा झाक, अगम्म अथाह नज़री आईआ। मैं जुग चौकड़ी तैनूं हौली जिही देवां आख, धुर संदेसा इक सुणाईआ। तूं कोटन कोटि मेरे सिफ्ती नाम रख के दस्सणा जाप, रसना जिह्वा नाल समझाईआ। मैं वेखां खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहड़ा इक सुणाईआ। सच स्नेहड़ा देवण योग, युगती इक्को इक समझाइंदा । तेरा मेरा सच संजोग, धुर दा मेला आप मिलाइंदा। सच दवारे रस लैणा भोग, अनरस रूप ना कोए वटाइंदा। तूं मेरी वेखणी मौज, मैं तेरे नाल मजलस दो जहान लगाइंदा। तेरे हथ्थ विच दे के आपणी खोज, आप ओहले हो के सचखण्ड डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक समझाइंदा । शब्द कहे की प्रभू मैं बणया, गुरू गुरु गुर मेरा नाउँ धराईआ। तूं जननी बण के साचे गृह जणया, जिस दी छप्पर छन्न नज़र किसे ना आईआ। मैं तेरा हुक्म इक्को मन्नया, चलया सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दित्ता वखाईआ। प्रभू कहे शब्दी लाल, सच सच दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी घाल, नित नवित्त सेव लगाईआ । लख चुरासी बणावां दलाल, सति हुक्म वरताईआ। तेरे हथ्थ फड़ावां आपणी भाल, पड़दा उहला नाल मिलाईआ। तूं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेरा नाम देईं सिखाल, साचा हुक्म जणाईआ। किरपा करे हो दयाल, दयानिध होए सहाईआ। जुग चौकड़ी चल्ले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली बांकी इक्को मोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची सेवा इक लगाईआ।

शब्द सुत गुरू बणना नहीं सौखा, तैनूं इक्को वार समझाइंदा। मेरे दर ते साचा मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताइंदा। किसे नाल नहीं करना धोखा, कूड़ा रंग ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी इक कमाइंदा। शब्द सुत गुरू बणना एक, एकँकार जणाईआ। तूं रखणी मेरी टेक, तेरी टेक सर्ब लोकाईआ। नित नवित्त तेरा वटावां भेख, भेखी हो के वेस वखाईआ। जुग चौकड़ी खेलां खेड, बण खिलाड़ी फेरा पाईआ। तेरा हुक्म संदेसा इक भेज, भजन बंदगी नाउँ धराईआ। तेरा रखां निराला देस, घर घर विच छुपाईआ। तूं सब नूं लैणा वेख, तैनूं वेखण वाला नज़र कोए ना आईआ। तूं सदा रहिणा हमेश, जीवत रूप वटाईआ। मैं बिन कलम शाही लिखणहारा लेख, धुर दी टेक बणाईआ। तेरा वसे थिर घर देस, सचखण्ड साहिब बैठा बेपरवाहीआ। मैं भगवन्त नर नरेश, हरि कन्त इक हो जाईआ। तूं मेरा देणा सदा संदेस, गुर गुर हो के सेव कमाईआ। नौ दवारे तेरा किसे ना लभ्भे भेत, दसवें गंढु रखाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों तेरा रूप धर के दस दस्मेस, गोबिन्द आपणा पड़दा लाहीआ। पंज तत काया चोला खेल के खेड, अन्तिम आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरवैर निराकार फेर तैनूं देवे भेज, सुत दुलारे तेरा शब्दी रूप प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण हो के लए वेख, वक्खरा हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान सदा दया कमाईआ। शब्द कहे प्रभू की गुरू चंगा, सच दे समझाईआ। श्री भगवान कहे शब्द गुरू जिस वेले बणे पंज तत ख़ाकी बंदा, तेरी बंदगी दए जणाईआ। लख चुरासी विच मेरा धन्दा, साची करनी कर वखाईआ। लेखा जाण जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। सति चमका नूरी चन्दा, करे इक रुशनाईआ। मैं वसां अंग संगा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब होए सहाईआ। शब्द कहे मैं भाग लगावां तन माटी ख़ाकी, ख़ालक तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। सच दवारे खोल्ह के ताकी, पर्दा इक उठाईआ। बातन हो के दस्सां बाती, बैतल धाम इक सुहाईआ। तेरी मिलावां तेरे नाल जाति, ज़ात ज़ात विच्चों खोज खुजाईआ। तेरा दस्सां निर्मल नूर साख्याती, सति सतिवादी भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा देणा बणाईआ। प्रभ कहे मेरे सच्चे पारस, तेरे हथ्थ दयां तेरी वड्याईआ। तेरी सिफ्त अन्दर जगत विद्या बणावां आरफ़, अल्फ़ ये कर पढ़ाईआ। तेरा तत्तां नाल करां तुआरफ़, मतां नाल समझाईआ। हथ्थां नाल लिखां इबारत, नाता जोड़ कलम शाहीआ। सिफ्तां विच करां सफ़ारश, साचा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर देवां माण वड्याईआ। शब्द कहे मैं गुरू बण के, सच तेरी सेव कमाईआ। दो जहानां आपणा ताणा तण के, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान बण के, हुक्म इक वरताईआ। लख

चुरासी भाण्डा घड़ के, घट घट वस्त टिकाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा ढोला पढ़ के, सोहणा राग सुणाईआ। तत माया जोड़ जड़ के, प्रकृती करां कुड़माईआ। सच दवारा वेखां खड़ के, खिड़की इक खुल्हाईआ। मन्दिर पौड़े आपे चढ़ के, सोहणा डेरा लाईआ। भेव जाणां घर घर के, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साची सेव कमाईआ। मैं गुरू शब्द सरूप अख्वावांगा। तेरा लेखा जिथों हुन्दा शुरु, उस तों अग्गे गुर अवतारां पीर पैगम्बरां फेर पढ़ावांगा। तेरा मार्ग जिस दवारयों तुरू, उस नूं तुरिया राग सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, सच करनी कार कमावांगा। गुरू बण के गावां गहर गम्भीर, सेवा सच कमाईआ। नाता जोड़ तत शरीर, साची वंड वंडाईआ। चोटी चढ़ इक अख़ीर, आख़र मंज़ल महिबूब नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। मैं गुरू हो के कमावां सेव, सेवक रूप वटाईआ। तूं दाता अलख अभेव, अगोचर इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड दुआर वसें निहकेव, निहचल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच इक्को मंग मंगाईआ। मैं गुरू तूं साहिब भगवान, दोहां मिल के खेल रचाईआ। सच दस्स मेरे मेहरवान, दर तेरे मंग मंगाईआ। कवण वेला दोवें रल के कट्ठे वसीए विच जहान, गृह मिल के खुशी मनाईआ। अबिनाशी करते हो मेहरवान, सच दित्ता सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करां महान, महिमां अकथ कथ ना सके कोए राईआ। तूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के मंगदा रहें दान, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। काग़ज़ कलम शाही नाल लिखदा रहें ब्यान, वाक भविक्ख्त इक समझाईआ। लख चुरासी देंदा रहें ज्ञान, धुर संदेसा इक सुणाईआ। आसा तक्कदा रहें मेरा आवे भगवान, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। किरपा करे हरि सुल्तान, सुत दुलारे वेख वखाईआ। मेरा नूर जोत महान, तेरा शब्दी रूप वटाईआ। दोहां मिल के बणे इक विधान, जिस विधान दी धारा समझ किसे ना आईआ। गुरुआं लेखा चुक्के जहान, पुरख अकाल हथ्थ रखे वड्याईआ। ओस वेले चार युग दे पीरां पैगम्बरां कोलों लै के ब्यान, तेरा कर के आप ध्यान, वेख वखाए थाउँ थाईंआ। तूं गुरू हो के कहीं सतिगुरू मेरा बलवान, सतिगुर कहे मैं धुर दा श्री भगवान, जिस दा झुलदा रहे निशान, एथे ओथे ना कोए मिटाईआ। ओस वेले किसे दी कम्म ना आवे ज़बान, ज़िब्हा करे थाउँ थाईंआ। ना कोई चिला फड़े तीर कमान, शस्त्र अस्त्र वस्त्र ना कोए वखाईआ। ना कोई कलमा नबी रसूल देवे पैग़ाम, पैगम्बर करे ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई दीन मज़्हब इस्लाम, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। जिस दी इक्को इक कलाम, दो जहान रहे जस गाईआ। शब्द गुरु गुर कलम्यां विच्चों मैनूं मन्नीं अमाम, अमामां विच्चों मेरा नूर रुशनाईआ। तूं सजदा

करें सलाम, अलैकम मुड़ के तेरी झोली पाईआ। बेशक तूं गुरू मेरे वासते बाल नादान, बच्चयां वांग आपणी गोद विच रखाईआ। जिस वेले वसां सचखण्ड विच मैदान, माधव आपणा रूप धराईआ। उस वेले गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त भगत भगवन्त मैनूं मन्नण काहन, मैं लख चुरासी गोपी आप हंढाईआ। एहो मेरा धुर फ़रमाण, जेहड़ा किसे ना बोलया जाए विच ज़बान कलम बंद ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अज्जे हौली हौली थोड़ा थोड़ा जो दस्से ब्यान, बाकी आपणे विच छुपाईआ।

* ५ जेठ २०२१ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जुमाल ज़िला फ़िरोजपुर *

सुत शब्द कहे प्रभ तेरा बेटा, थिर घर मिली माण वड्याईआ। सति सतिवादी आदि जुगादी धुर दा खेवट खेटा, निरगुण निरवैर निराकार सेव कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश धुरदरगाही बण के नेता, दो जहानां हुक्म मनाईआ। पंज तत काया लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बरां करां हेता, नित नवित्त आपणा मेल मिलाईआ। नव नौ चार निरगुण सरगुण खेलां खेडा, रूप अनूप शाहो भूप आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सुत शब्द कहे प्रभ मेरे ठाकर, दीन दयाल तेरी वड्याईआ। गहर गम्भीर डूंघे सागर, भेव अभेद तेरा कोए ना जाणे राईआ। बाले नढु देवें आदर, आदर्श इष्ट इक्को इक वखाईआ। कुदरत बख्शें करते कादर, करीम तेरी सरनाईआ। निर्मल निरवैर कीआ उजागर, निराकार धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिती सच माण वड्याईआ। शब्द सुत कहे मेरे साहिब सुल्तान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर कीता राज राजान, शहिनशाह हो के शाही इक समझाईआ। दाता हो के दित्ता दान, वस्त अमोलक अगम्म अथाह बेपरवाह दिती इक वरताईआ। मेहरवान हो के दित्ता माण, चरण कँवल थिर घर बख्शी सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द सुत कहे मोहे बणाया लाल, हरि करते दया कमाईआ। आपणी धारों आप उठाल, निरगुण निराकार साची कार जणाईआ। जननी जन बण दीन दयाल, मात पित आप अख्वाईआ। सच सुहञ्जणी गोद उठाल, महल अटल दित्ता बहाईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक जणाईआ। दूजा कोई ना दिसे नाल, संगी संग ना कोए निभाईआ। रूप नज़र ना आए काल महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सुत शब्द कहे प्रभ बेनज़ीर, लाशरीक तेरी शरनाईआ। तेरा जलवा नूर अगम्म लातस्वीर, मुसव्वर सके ना कोए बणाईआ। तेरी मंज़ल चोटी इक अख़ीर, रहिबर पन्ध ना कोए मुकाईआ। बेअन्त बेपरवाह

१०२५ १६ १०२५ १६

तेरी तदबीर, तजवीज़ हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा नूर नुराना बेनज़ीर, नेत्र नैण ना कोए तकाईआ। तेरी धार अगम्मी इक लकीर, लेखा जाणे ना कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती माण वड्याईआ। शब्द कहे मेरे परवरदिगार, बेऐब बेपरवाहीआ। साची मंज़ल दिती वखाल, जिस गृह वसे नूर अलाहीआ। मुकामे हक़ जलवा बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। आदि जुगादि ना आए ज़वाल, नित नवित्त इक्को रंग वखाईआ। महल अटल इक दयाल, दीनन सच दित्ता दृढ़ाईआ। दरगाह साची धाम बहाल, महल करे रुशनाईआ। दीआ बाती धुर दा बाल, जोती नूर डगमगाईआ। मेहरवान मिहबान मैं होया हैरान, बेसमझ तेरी समझ पावे ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दित्ता चुकाईआ। शब्द कहे मैं कलमा तेरा नूर, सद सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। ज़ाहर बातन तेरा ज़हूर, जल्वागर इक्को इक दरसाईआ। नित नवित्त सदा सदा सद रहां हाज़र हज़ूर, हज़रत दर ते सीस झुकाईआ। तेरा भण्डारा वेख भरपूर, ख़ाली झोली इक वखाईआ। मेरी अर्ज़ आरज़ू ख़ाहिश कर मंज़ूर, मकसद आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा संग इक निभाईआ। साचा संग रख भगवन्त, दर तेरे अलख जगाईआ। प्रेम प्रीती दे दे मणीआं मंत, नाम निधाना इक समझाईआ। मैं सिफ्ती ढोला गावां अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। तेरा खेल वेखां आदि अन्त, जुग चौकड़ी नैण उठाईआ। तेरा नाता वेखां नार कन्त, निरगुण निरगुण करें कुड़माईआ। तेरी सति सतिवादी वेखां बणत, किस बिध घाड़त लएं घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दित्ता चुकाईआ। शब्द सुत कहे मेरे पिता पुरख अकाल, अकल कलधारी इक अख्वाइंदा। मैं नंन्हा बाला नढ्ढा तेरा लाल, गोदड़ी सोहणी इक सुहाइंदा। तन माटी ना कोई खाल, पंज तत चोला ना कोए हंढ्ढाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए धर्मसाल, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। सज्जण मीत ना कोए नाल, मित्र प्यारा ना कोए अख्वाइंदा। प्रभ निरगुण निरगुण तेरी वेखां इक अवल्लड़ी चाल, जिस अन्तर आपणी खेल खलाइंदा। आपणी धारों उपज्या इक्को लाल, जिस विच लालच तमां ना कोए रखाइंदा। इक्को बख़्शें चरण प्यार, सच प्रीती साचे घर बंधाइंदा। सचखण्ड वेख तेरा धर्मसाल, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। तेरी किरपा अन्दर सेवा करां महान, सेवक आपणा रूप वखाइंदा। तेरा सुण हुक्म फ़रमाण, धुर दी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। सुत शब्द जगाए अलख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पतिपरमेश्वर मार्ग दस्स, रहिबर बण के दे समझाईआ। वस्त अमोलक झोली पा हक़, आपणी हकीकत दए दृढ़ाईआ । आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, नित नवित्त रहे रुशनाईआ। नाता जोड़ सच्चो सच्च, दो जहान तुट कदे ना जाईआ।

प्रेम प्रीती अन्दर रच, रचना आपणी दे समझाईआ। सगल विसूरे जाइण लथ्थ, दुबिधा रूप ना कोए वखाईआ। मेहरवान हो के सीस जगदीश रख हथ्थ, समरथ तेरी सरनाईआ। सच दवारा खोल्हां हट्ट, बण हटवाणा तेरा हुक्म आपणे अन्दर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्द सुत रिहा दृढ़ाईआ। शब्द सुत मेरे अगम्म, अगम्म दयां वड्याईआ। मेरी धारों प्या जम्म, ना कोई पिता ना कोई माईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार दस्से कम्म, करता साची करनी इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा वजूद ना कोई तन, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए बणाईआ। ना कोई घड़े ना सके भन्न, घाड़त रूप ना कोए जणाईआ। ना कोई आदि जुगादि देवे डंन, भय भउ ना कोए वखाईआ। मैं तेरा बेड़ा देवां बन्न्ह, बण खेवट आपणे कंध उठाईआ। तूं पिता पुरख अकाल इक्को लैणा मन्न, दूसर सीस ना किसे निवाईआ। तेरे घर अनोखा चाढ़ां चन्न, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए समझाईआ। शब्द सुत सुण राज भूप, परम पुरख प्रभ आप दृढ़ाइंदा। दहि दिशा वेख चारे कूट, बिन निरगुण नज़र कोए ना आइंदा। ताणा पेटा ना कोए सूत, सूत्रधारी रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई आवे ना कोई जावे कर के कूच, पांधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। तत ना दिसे कोए पंज भूत, त्रै त्रै जोड़
१०२६ ना कोए जुड़ाइंदा। तेरे उपर दीन दयाल हो के जावां तुठ, मेहर नज़र इक उठाइंदा। शब्द तेरे गृह जन्मे विष्नूं सुत, विष्नूं १०२६
१६ अन्दर ब्रह्मा ब्रह्म रूप वटाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन तेरी धार रखाइंदा। आपे वेखे ओहले लुक, सचखण्ड १६
साचे सोभा पाइंदा। दए भण्डार इक अतुट, नाम अमोलक वस्त हरि वरताइंदा। निरगुण हो के लए पुछ, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। सच संदेसा गहर गम्भीर, हरि करता आप जणाईआ। सुत लाडले चोटी चढ़ वेख अख़ीर, आख़र मंज़ल इक समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोत सरूपी बिन तत शरीर, सति सतिवादी सोभा पाईआ। चिन्ता दुःख हरख़ सोग ना कोई पीड़, माया ममता लोभ मोह ना कोए रखाईआ। वड्डा छोटा ना कोए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। इक इकल्ला एकँकार नर हरि आपणा बण के बैठा मीत, सज्जण आपणा आप नाल प्रगटाईआ। सुत दुलारे दस्से रीत, शब्दी शब्द आप समझाईआ। मेरे प्रेम प्यार दी मार चीक, तेरे अन्दरों बिरहों धार दए प्रगटाईआ। तेरा मेरा रूप सोहँ ठीक, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। थिर घर गाउणा इक्को गीत, सचखण्ड होए शनवाईआ। सदा सदा सद रखी इक उडीक, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। मैं दूर दुराडा सद वसणहार नज़दीक, नेरन नेरा आपणा नाउँ रखाईआ। शब्द दुलारे साची वस्त पावां भीख, अगम्म अथाह

आप वरताईआ। नित नवित्त रखीं उडीक, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह सुल्तान रिहा समझाईआ। शाह सुल्तान शहिनशाह शाह पातशाह, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह, पदानसीं पर्दा उठाइंदा। बेऐब परवरदिगार नूरी खुदा, जलवा इक्को इक दृढ़ाइंदा। सति सतिवादी बण मलाह, साचा मार्ग इक लगाइंदा। सुत दुलारे आप समझा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। तेरा मेला लए मिला, मेल मिलावा इक्को इक वडियाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा संग रखा, साचा संगल आपणा नाम पाइंदा। अन्तर हो के मंगल गा, शब्द गोबिन्द जणाइंदा। सति सतिवादी सोहणा मन्दिर दए सुहा, साची कन्दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा राह इक उपाइंदा। सुत दुलारे सुण मेरे सुत, आदि पुरख आप समझाईआ। तेरी सुहावां सुहञ्जणी रुत्त, रुत्तड़ी आपणे नाल महकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी धारों जावण उठ, त्रैगुण माया करां कुड़माईआ। पंज तत कर प्रकाश होवां खुश, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण दे भण्डार अतुट, लख चुरासी वंड वंडाईआ। भाग लगावां काया माटी बुत्त, निरगुण सरगुण करां रुशनाईआ। देवां वड्याई मन मति बुध, मनसा मनसा विच्चों प्रगटाईआ। नाउँ रखा अबिनाशी अचुत, घर घर चेतन सता दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१०२७ किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्दी शब्द भेव खुल्हाईआ। शब्दी भेव खोल्हे अपार, अपरम्पर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। १०२७

१६ नाम जैकारा बोल जै जैकार, सच संदेसा इक सुणाईआ। चारे खाणी करां ख़बरदार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप उठाईआ। १६

चारे बाणी दयां आधार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाद सुणाईआ। चारे कुण्ट करां ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। चारे युग करां त्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सुत दुलारे भेव खुल्हाईआ। सुत दुलारे रखणा याद, हरि करता आप जणाइंदा। तेरी रचना रच के आदि, जुग चौकड़ी जुगादि तेरे नाल रखाइंदा। आपे विच रहे विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण देवे दाद, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। गृह मन्दिर घर घर वजावे नाद, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। अमृत आत्म देवे स्वाद, निझर झिरना इक झिराइंदा। दीपक जोती बाल गृह मन्दिर करे आबाद, रुत्त बसन्ती वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्दी तेरा हुक्म वरताइंदा। शब्द सुत वेख नौजवान, तेरा जोबन इक वखाईआ। दो जहानां कर के हुक्मरान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड धरत धवल आकाश प्रकाश देणा फ़रमाण, सच स्नेहड़ा इक घलाईआ। ततव तत तेरा दास, त्रै पंज होए कुड़माईआ। काया मण्डल तेरी रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन रूप

वटाईआ। गुरू अवतार पीर पैगम्बर तेरी शाख़, लोकमात पत्त टहिणी आप महकाईआ। मेरी सिफ्त दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गाए गाथ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म तेरा साक, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा रूप नज़री आईआ। तूं दो जहानां वेखणा मार झाक, महल अटल बहि बहि खुशी मनाईआ। तेरी सदा सदा सद रहे प्रभात, दिवस रैण सूरज चन्द घड़ी पल पहर तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्दी शब्द तेरा राह वखाईआ । शब्द सुत गया झुक, दर साचे सीस निवाइंदा। धन्न भाग प्रभ ग्यों तुठ, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। मैनूं बणा के आपणा पुत्त, लख चुरासी मेरी झोली पाइंदा। मैं सेवा कर के खुश, चाकर आपणा नाउँ वटाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण खेल वेखां लुक, ज़ाहर गुप्त आपणी कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पैंडा जाए मुक्क, थिर रहिण कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर उजल करां मुख, मुख सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। जननी भाग लगावां कुक्ख, सुत दुलारा इक वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दित्ता इक वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। सुत दुलारा कहे मेरे जगदीश, जगदीश्र तेरी वड वड्याईआ। मैं छत्र
१०२८ वेखां तेरे सीस, सचखण्ड निवासी तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी साचा कलमा नाम देवां हदीस, गुर अवतारां पीर १०२८
पैगम्बरां कर पढ़ाईआ। चिटे उते काली खिच लकीर, अल्फ़ ये कातब कलम दयां समझाईआ। आप बण के लाशरीक, शिरकत
१६ सब दी मेट मिटाईआ। तेरी किरपा आपणे हथ्थ रखां इक तौफ़ीक, रहमत धुर दी नाल मिलाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां १६
दस्सां धार बारीक, सूफ़ीआं सुफन सखोपत जागरत तुरिया भेव खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणा हो के वसां नीचां नीच, ऊँचो ऊँच तेरे नाम करां वड्याईआ। जन भगतां दस्सां सच प्रीत, सन्त सज्जण मेल मिलाईआ। गुरमुखां रखां सदा उडीक, गुरसिखां राह तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एथे ओथे दो जहान सोहँ ढोला गावां गीत, जिस दा आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे नाम दी बणा के मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ गुरदर जगत राह वखाईआ। शब्द कहे मैं दूल्हो दूल्हा, महाबली इक अख्वाईआ। तेरी किरपा फलया फूला, लख चुरासी पत्त डाली मात महकाईआ। दो जहानां अवण गवण त्रैभवन मेरा झूला, ब्रह्मण्ड खण्ड उणंजा पवन मेरी सुगंधी रही वखाईआ। कोई ना जाणे मेरा आदि मूला, अन्त कहिण कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला शंकर हथ्थ फड़ाई त्रसूला, त्रैगुण सगला संग निभाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत भूला, सच सुच तेरा नाम इक्को नज़री आईआ। तूं साहिब सुल्तान श्री भगवान सर्ब जीआं कन्त कन्तूला, सति सतिवादी नज़री आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा

इक घर, जिस घर वज्जे सति वधाईआ। श्री भगवान सर्ब गुणवन्ता, सति सच सच दृढ़ाइंदा। सुत शब्द वेख बणाई बणता, घड़न भंनणहार खेल खलाइंदा। जुग चौकड़ी अगणत अगणता, गिणती गणत ना कोए गणाइंदा। सेवा लगाए गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्तां, भगत भगवन्त खेल वखाइंदा। वेस वटाए जुगा जुगन्ता, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। गढ़ तोड़े आत्म परमात्म हउमें हंगता, ब्रह्म विद्या इक समझाइंदा। दर दरवेश अलख निरँजण जन भगत दवारे होए मंगता, निर्धन सरधन आपणा रूप वटाइंदा। बोध अगाधा शब्द अनादा खाणी बाणी बणे धुर दा पंडता, साची सिख्या इक समझाइंदा। लेखा जाणे जीव जंता, जागरत जोत नूर रुशनाइंदा। पड़दा लाहे जेरज अंडता, उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। शब्द सुत कहे प्रभ तेरी करनी, हरि ठाकर मोहे भाईआ। हउँ सेवक ख़ाक ढहि प्या चरणी, चरण चरणोदक मुख चुआईआ। सच दस्स कवण वेला बण सुहेला बांह फड़नी, निरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। कवण मन्दिर कवण धाम कवण पौड़ी चढ़नी, कवण मंज़ल पन्ध मुकाईआ। कवण नाद धुन कवण अक्खरी बाणी पढ़नी, कवण शब्द करे शनवाईआ। कवण लेखा चुकाए वरनी बरनी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दे खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्ह करतार, करता पुरख तेरी सरनाईआ। कवण वेला करें प्यार, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। कवण वक्त लएं उठाल, निरगुण सरगुण आप जगाईआ। कवण मन्दिर दीपक देवें बाल, निरगुण जोत करें रुशनाईआ। कवण सरोवर अमृत जाम दएं प्याल, सच प्याला इक उठाईआ। कवण गृह होएं दयाल, घर स्वामी वेख वखाईआ। कवण रूप भाग लगाएं सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल दस्से बोल, धुर दी धार जणाईआ। शब्द सुत रहिणा अडोल, अडुल रिहा दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त खेल अनमोल, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तोले तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत मौल, मौला आपणा नाम प्रगटाईआ। कलयुग अन्त निरगुण निरवैर प्रगटे उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। गुर अवतार जो कर के जावण कौल, वाक भविक्ख्त लिख्त विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द दित्ता समझाईआ। सुत शब्द कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण होए मेहरवान, एकँकार दए वड्याईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, अबिनाशी करता करे रुशनाईआ। श्री भगवान नौजवान, पारब्रह्म लए अंगड़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। पीर पैगम्बरां पूरा करे ब्यान, जो लिख लिख

गए समझाईआ। साचे मन्दिर वसे मकान, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। सम्बल बैठ करे कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। दरगाह साची बण अमाम, आमल आपणा अमल वखाईआ। सम्बल नगर देवे माण, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द खण्डा तीर कमान, साचा चिला इक उठाईआ । कागज़ कलम होए हैरान, शाही नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख नैण शरमाण, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निउँ निउँ सीस झुकाण, नमो नमो कहि कहि ढोला गाईआ। प्रगट होया शब्द सुत बलवान, सूरबीर इक अख्वाईआ। शहिनशाह बणया हुक्मरान, श्री भगवान तख्त निवासी आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा देवे धुर पैग़ाम, सच नाम करे शनवाईआ। जिस नूं मन्नदा गया राम, जिस ने कृष्न धार लोकमात प्रगटाईआ। जिस ने तेई अवतारां दित्ता दान, ईसा मूसा मुहम्मद इशारे नाल चलाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द दहि दिशा करे प्रणाम, निउँ निउँ लागे पाईंआ। जिस नूं भगत अठारां कहिण मेहरवान, हरि वड्डा वड गोसाईंआ। जिस नूं सन्त कहिण गुण निधान, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। जिस नूं गुरमुख गुरसिख कहिण सतिगुरू बलवान, शब्दी रूप जणाईआ । जिस नूं सूफ़ी कहिण बिन पढ़यां दए कलाम, बिन कल्मयों करे पढ़ाईआ। बिन रसना बोले ज़बान, बिन शरअ दए समझाईआ । बिन मस्जिद दए पैग़ाम, सच संदेसा इक अल्लाईआ। सो परवरदिगार इक अमाम, अमाम अमामां विच्चों नूर खुदाईआ। जिस दा दो जहान चौदां लोक चौदां तबक सच्चा इंतजाम, चारों कुण्ट हुक्म खुदाईआ । कोटन कोटि मनमुख जीव जिस नूं करन बदनाम, सो सिफ्त भरया बेपरवाहीआ। उस दी खेल मुश्किल करे आसान, एहसान सके ना कोए चढ़ाईआ । जिस बूँद रक्त तों कीते इन्सान, इन्सानां अन्दर मेहरवान हो के डेरा लाईआ। सो साहिब सतिगुर शब्दी शब्द बेपहचान, बिन सतिगुर नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त दर्शन पाण, घर बैठयां खुशी मनाईआ। लभ्भयां चार कुण्ट दहि दिशा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत किसे हथ्थ ना आए श्री भगवान, भगवन भगतां अन्तर सोभा पाईआ। घर विच घर मेल मिलावा करे आण, दूर दुराडा दूरन दूर पन्ध मुकाईआ। गुरसिख गुर मिल के इक रूप सति सरूप सोहँ ढोला गाण, तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण होवे ना कदे जुदाईआ। एहो शब्द गुरू बलवान, जिस जुग चौकड़ी खेल रचाईआ। एहो गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। एहो शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिखे कुरान, खाणी बाणी दए वड्याईआ। एहो मक्का काअबा दस्से ईमान, सजदा सजदा रिहा कराईआ। एहो निरगुण सति सरूप भगवान, एहो इष्ट देव सृष्ट रही समझाईआ। एहो राम रहीम रहमान, रहमत सब ते रिहा कमाईआ। एहो निरगुण सरगुण नानक गोबिन्द जोती जोत जगे महान, दीवा बाती कमलापाती इक्को इक्को

टिकाईआ । एहो शब्द गुर सदा सदा प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। सो जाणे जिस अन्तर मिले आण, बाहरों समझ किसे ना आईआ । किसे ना विके हट्ट बाज़ार दुकान, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत दर दुआर मंगदे दान, माण अभिमान मोह मिटाईआ। तिन्नां जागत सोवत दर्शन देवे आण, दीद ईद चन्द करे रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा सच्चा वर, शब्द गुरदेव स्वामी इक्को घर करता पुरख करनेहारा, निरगुण सरगुण बन्ने धारा, सरगुण निरगुण इक्को रूप जणाईआ।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी मुंडी जमाल बाग़ीचा सिँघ दे गृह ज़िला फिरोज़पुर *

सुत शब्द हरि साचा सोहला, सो पुरख निरँजण इक जणाईआ। तेरा मेरा अगम्मी ढोला, दो जहान वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण बोला, बिन रसना जिह्वा गाईआ। सच दवारा निरगुण निरवैर सति सतिवादी खोल्ला, सच सुच दए समझाईआ। पतिपरमेश्वर हो के वसे कोला, दूरन दूर पन्ध मुकाईआ। भेव चुकाए पर्दा उहला, सनमुख आपणा रंग वखाईआ।
१०३१ भाग लगाए उपर धवला, धरनी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड वड्याईआ। १०३१
सुत दुलारे तेरा रंग, हरि करता आप रंगाईआ। चार कुण्ट वज्जे मृदंग, दहि दिशा खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म मिले अनन्द, गृह मंगल हरि गुण गाईआ। जगत तृष्ना पाए ठंड, अमृत मेघ बरसाईआ। आत्म परमात्म देवे गंढ, धुर दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे संग, सगला संग निभाईआ। घर मन्दिर वज्जे मृदंग, सोहणा नाद इक्को इक समझाईआ। मिले वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खुशी वखाईआ। भेव खुल्लाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप समझाईआ। सिफ्त चुकाए बत्ती दन्द, बिन रसना जिह्वा धुर दी धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा बेपरवाहीआ। सुत दुलारे तेरा घर, गृह मन्दिर हरि उपाइंदा। सच दवारे बैठे वड़, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ततव तत ना मेल मिलाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमाइंदा । निरवैर हो के बन्ने लड़, पल्लू आपणी गंढु वखाइंदा। साची मंज़ल जाए चढ़, महल अटल सोभा पाइंदा। निर्मल नूर जोत इक्को धर, सच उजाला आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। सुत दुलारे राजन राज, पारब्रह्म दए वड्याईआ। सति सतिवादी तेरा काज, करनी देवणहार आपणी इच्छया झोली पाईआ। कलयुग अन्त साजण साज, सच सुच दए समझाईआ। जगत जगदीशा नर नरायण सीस रख ताज, तख्त निवासी हुक्म मनाईआ। घर सुहञ्जणे लग्गे

भाग, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जन भगतां देवे इक वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया जगत तृष्ना जाइण भाग, माया ममता मोह चुकाईआ। सुरती शब्दी गाए राग, आत्म परमात्म ढोला इक सुणाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे आवाज़, सुर ताल ना कोए रखाईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोल्हे राज़, बजर कपाटी पर्दा परे हटाईआ। सच सरोवर अमृत दे बुझाए प्यास, निझर झिरना इक झिराईआ। घर विच घर कराए वास, अस्थान भूमका इक्को इक वखाईआ। जिस मन्दिर अट्ठे पहर होवे प्रकाश, सूरज चन्न नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निराकार निरवैर मिले पुरख अबिनाश, श्री भगवान मेल मिलाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। शब्द शब्दी होए वास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेहरवान दया कमाईआ। शब्द सुत सुण धुर दे मीत, हरि मित्र प्यारा आप दृढ़ाइंदा। अचरज चलाई तेरी रीत, रीतीवान खेल खलाइंदा। तेरा वासा हस्त कीट, लख चुरासी विच टिकाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा गावां गीत, धुर दा सोहला राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द वडियाइंदा।

१०३२ शब्द सुत तेरा वसेरा एक, एकँकार दए दृढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे साची टेक, थिर घर महल अटल दए सुहाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वटावें भेख, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाउँ रखाईआ। बोध अगाध खाणी बाणी लिखें लेख, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नाउँ धराईआ। आत्म परमात्म करें हेत, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। दिवस रैण रहें नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दो जहानां बण के खेवट खेट, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जन भगतां देवें साचा भेत, पर्दा उहला अन्दरों दएं उठाईआ। निज नेत्र निरगुण सरूप लैण वेख, सरगुण मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता दया कमाईआ। शब्द सुत तेरा मन्दिर अनोखा, घर घर विच आप बणाइंदा। जिस दर कदे ना होवे धोखा, कूड़ा रंग ना कोए रंगाइंदा। जिस दा दरवाज़ा हथ्थ ना आवे कोटी कोटा, कोटन कोटि पांधी बण बण पन्ध ना कोए मुकाइंदा। तेरा मार्ग सतिगुर साहिब दस्से सौखा, प्रेम प्रीती नाल समझाइंदा। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म इक्को मौका, जुग जन्म विछड़े आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोता, अज्ञान अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के शब्दी धुन सुणाए होका, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाइंदा। भेव खुल्हाए लोक परलोका, चौदां तबकां डेरा ढाइंदा। पीर पैगम्बर गुरू अवतार जिस दी रखदे गए ओटा, सो साहिब सतिगुर दीन दयाल शब्दी रूप आप प्रगटाइंदा। तन नगारे पंज तत लगाए चोटा, सच रबाब इक वजाइंदा। कूड़ कुड़यार तन हँकार रहिण ना देवे खोटा, मन मति बुध आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्दी शब्दी सिफ्त सालाहइंदा।

शब्द गुरू शब्द स्वामी, हरि शब्द वड्डा वड वड्याईआ। शब्द बोध अगाध घट अन्तरजामी, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। शब्द बोध अगाध धुर दी बाणी, सति सतिवादी करे शनवाईआ। शब्द विष्न ब्रह्मा शिव रचे चारे खाणी, त्रैगुण माया पंज तत करे कुड़माईआ। शब्द अमृत रस ठंडा पाणी, जल थल महीअल रिहा समाईआ। शब्द आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अकथ कहाणी, कहि कहि अन्त कोए ना पाईआ। शब्द नाद धुन खेल महानी, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द शब्द पहरे बाणा, पंज तत आपणा वेस वटाईआ। शब्द भूप शब्द राणा, राजन राज आप अख्वाईआ। शब्द हुक्म सच हुक्मराना, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हरि शब्दी वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग अन्त नर हरि नरायण करे खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी अगम्मी पहरे बाणा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। सच संदेसा नर नरेशा देवे दो जहानां, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरू सदा मेहरवाना, बिन अक्खां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, एका शब्द नाम निहकाम दए समझाईआ।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फिरोज़पुर *

सुत शब्द सच खेल करदा, निहकर्मी साची कार कमाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड आपे फिरदा, निरगुण निरवैर नज़र किसे ना आईआ। महल अटल उच्च मनार आपे खड़दा, धाम भूमका इक सुहाईआ। नाद धुन जैकार साची करदा, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। बिन अक्खरां आपे पढ़दा, करे हक़ पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी वेस धरदा, निरगुण सरगुण नाम धराईआ। लेखा जाणे पंज तत काया घर दा, घर घर विच सोभा पाईआ। ना जीउदा ना कदे मरदा, मर जीवत रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घाड़न घड़दा, काया माटी आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सुत शब्द खेल अपारा, जुग चौकड़ी आप कराइंदा। लख चुरासी वेखणहारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाइंदा। शब्दी शब्द बोल जैकारा, तन नगारा रबाब वजाइंदा। नाउँ रख गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहइंदा। निरअक्खर अक्खर बण लिखारा, कागज़ कलम शाही वंड वंडाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण वणजारा, अञ्जील कुरान गीता ज्ञान सोभा पाइंदा। सिफ्ती नाम खोल्ह भण्डारा, कोटन कोटि रसना जिह्वा गाइंदा। सति सरूप हो के वसे बाहरा, शाहो भूप हो के घट घट डेरा लाइंदा। हुक्मे अन्दर हुक्म वरतारा, सच संदेसा इक समझाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी धार आप वखाइंदा। शब्दी धार वखाए स्वामी, हरि करता वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी अन्तरजामी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। शब्द अनाद बोल बाणी, अगम्म अथाह दए दृढ़ाईआ। सच सरोवर अमृत पाणी, ठंडी धार इक वहाईआ। लेखा जाणे चारे खाणी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। चार युग दी समरथ कहाणी, महिमा अकथ आप वखाईआ। सुरती शब्दी खेल महानी, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बख्शणहारा सच ध्यानी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड दी सच निशानी, सच दवारे इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द भेव चुकाईआ। सच शब्द सतिगुर रूप, बेपरवाह आप प्रगटाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डेरा लाइंदा। मेट मिटावे जूठ झूठ, सच सुच इक समझाइंदा। दयाल हो के जाए तुठ, काल हो के सर्ब मुकाइंदा। जन्म कर्म पूरब जो गए रुठ्ठ, माणस मानुख मानुष आपणे रंग रंगाइंदा। जन भगतां करे प्यार जिउँ मांवां पुत्त, पिता पूत गोद सुहाइंदा। आसा तृष्ना माया ममता कूड़ी क्रिया मेटे भुक्ख, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। जन्म मरन दा चुक्के दुःख, लख चुरासी फंद कटाइंदा। आपणी गोदी लए चुक्क, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। उजल करे मात मुख, दुरमति मैल धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्द सिफ्त सालाहइंदा। हरि शब्द साची सेव, पुरख अगम्म अथाह कराइंदा। लेखा जाणे वड देवी देव, देवत सुर हुक्म मनाइंदा। पारब्रह्म अलख अभेव, अगोचर आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे साचा मेव, रस अमृत इक चखाइंदा। नाम जपाए बिन रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के खोल्ले भेव, पड़दा उहला आप उठाइंदा। मेल मिलाए इक निहकेव, निहचल आपणा घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा। मेहर नज़र करे गुर शब्द अपार, अपरम्पर दए जणाईआ। तन काया माटी खोल्ल किवाड़, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, घर साचे करे रुशनाईआ। नाता तोड़ पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। वेखणहारा गुप्त ज़ाहर, गहर गम्भीर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सुखमन टेडी बंक पावे सार, ईड़ा पिंगल बैठे सीस निवाईआ। जन भगतां गुरमुखां अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना इक झिराईआ। अनहद शब्द सच्ची धुनकार, आत्मक राग इक्को इक दृढ़ाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। दीपक जोत कर प्रकाश, साचा नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म भोग बिलास, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। दूसर ना कोई दिसे पास, सगला संग आप अख्वाईआ। गुरमुख लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर चरणां हेठ दबाईआ। इक्को सिमरन पूजा पाठ, जोग अभ्यास दए समझाईआ। इक सरोवर तीर्थ ताट, जल

१०३४
१६

थल महीअल दए वखाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर मिल्या पुरख समराथ, शब्दी धार धार विच्चों जणाईआ। तिन्हां जन्म जन्म दी पूरी करे आस, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। दिवस रैण घड़ी पल अट्ठे पहर बण के दासी दास, सतिगुर सेवक हो के सेव कमाईआ। अन्तर आत्म मिलण दी रखे ख्वाहिश, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। साचे घर साचे गृह साचे मन्दिर महल अटल करे निवास, निज घर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, शब्दी साची कार कमाईआ। शब्द गुरु गुर साहिब सच्चा, सति पुरख निरँजण आप वडियाइंदा। भाग लगाए काया माटी कच्चा, पंज तत निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। मेल मिलाए कमलापता, कन्त कन्तूहल आपणा रंग वखाइंदा। आत्म परमात्म नाता जोड़े पक्का, दो जहान ना कोए तुड़ाइंदा। भगत भगवान बणाए बच्चा, बचपन आपणे नाल मिलाइंदा। लूं लूं अन्दर आपे रचा, साढे तिन्न करोड़ सोभा पाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण हो के फिरे नट्ठा, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। कर प्रकाश काया मट्ठा, जोती नूर डगमगाइंदा। लेख चुकाए चौदां हट्टां, चौदां तबकां वेख वखाइंदा। मनमति दा रहे ना रट्टा, बुध विवेक आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर देवे इक्को रसा, रस फीके सर्ब मिटाइंदा। साचा रस अमृत धार, गुर गुर गुरमुख जाम प्याईआ। पी प्याला होए ग़मख़ार, ग़मी खुशी इक्को रंग रंगाईआ। रोग सोग चिन्ता दु:ख निवार, माया ममता मोह तजाईआ। अन्तर आत्म ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। लेखा चुक्के चार कुण्ट दहि दिशा तीर्थ तट अठ सठ किनार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ जोड़ करन निमस्कार, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। भगत भगवान करन जैकार, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला राग सुणाईआ। सन्त सज्जण चरण धूढ़ी मंगण छार, मस्तक टिक्का इक रमाईआ। गुरमुख गुरसिख उच्ची कूक कूक करन पुकार, बिरहों रोग ना लागे राईआ। नित नवित्त जुग जुग हरि करते तेरी साची कार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द गुरू गुरू बलिहार, बलिहारी आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जिस विछड़यां दुखी दिसे संसार, सुख सागर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करता आपणा भेव उठाईआ। आपणा भेव खोल्हे प्रभ, पारब्रह्म बेपरवाह अख्वाइंदा। शब्द सुहेला सच्चा सद्द, सदा आपणा नाम सुणाइंदा । दो जहानां वेख हद्द, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड साचा राह जणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी वेख हड्ड, मास नाड़ी खोज खुजाइंदा। आत्म परमात्म विछड़ जो होए अड्ड, तिन्हां इक्को हुक्म वरत । निरगुण निरवैर हो के भज्ज, पांधी हो के पन्ध मुकाइंदा। शब्द सरूप हो के गज्ज, जै जैकारा इक्को नाम वजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मक्के काअबे मन्दिर

मस्जिद शिवदुआले मड्ड तेरा कर के गए हज्ज, गुरुदुआर तेरा राह तकाइंदा। जिस गृह जावें सज, सो थान भूमका आसण सोभा पाइंदा। कोटन कोटि रिख मुन जोगी जती जंगम सनयासी तैनूं रहे लभ्भ, मुल्ला शेख़ मसायक पीर तेरा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच शब्द तेरा लेखा इक्को घर वखाइंदा। शब्द कहे मोहे चाउ घनेरा, प्रभू तेरी सिफ्त सालाहीआ। धन्न भाग तूं बणया मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख समरथ तेरा सचखण्ड दुआर डेरा, मेरा थिर घर आसण दित्ता बणाईआ। जुग चौकड़ी नित दर्शन करां हो के नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दो जहान खुल्ल्हा वेहड़ा, जिस विच कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रिहा वसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मेरा चेरा, त्रैगुण माया पंज तत करी कुड़माईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वसाया खेड़ा, पंज तत ब्रह्म मति दिती समझाईआ। साचा हुक्म संदेसा दित्ता कर के मेहरा, बोध अगाध करी पढ़ाईआ। भेव अभेदा मेरा जाणे केहड़ा, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। चौदां विद्या देवे गेड़ा, चौदां तबक वेखां थाउँ थाईंआ। बिन साहिब सतिगुर पुरख अकाल कोई ना जाणे आर पार किनारा मेरा, बेड़ा वहिण वहे लख चुरासी जीव जंत धार आपणी विच रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सच्चा मस्तक लेख बणाईआ। शब्द कहे प्रभ मेरे ठाकर, स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई तेरा सागर, भवजल तेरी धार बणाईआ। तूं करीम करता धुर दा कादर, कुदरत तेरा रस नज़री आईआ। मैं वणजारा शब्द सौदागर, साचा हट्ट खुल्ह्लाईआ। तूं बैठा रहें निर्मल जोत इकागर, सति सरूप सोभा पाईआ। तूं साहिब सुल्तान योद्धा सूरबीर बहादर, शहिनशाह सीस जगदीश ताज टिकाईआ। मैं निउँ निउँ चरण कँवल सीस झुका करां नवाज़श, नमो नमो तेरा ध्यान लगाईआ। तुध बिन मेरी करे ना कोई हिफ़ाज़त, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सच दुआर सति सतिवादी पारब्रह्म तेरी वेखी इक अदालत, अदल इक्को नज़री आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात कर के गए बग़ावत, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। सच नाम साची देवे ना कोए सख़ावत, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। प्रेम प्यार अन्दर देवे ना कोई दावत, मुहब्बतख़ाने विच महिबूब मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे इक नयामत, तोहफ़ा सच तौफ़ीक खुदाए आपणी रहमत झोली पाईआ। रहमत रहम करे खुदा, ख़ालक ख़ालक रूप वटाईआ। नित नवित्त जो रहे जुदा, जुज़ आपणा दए समझाईआ। जो मुरीद मुर्शद उत्तों होवे फ़िदा, फ़ितरत आपणी दए चुकाईआ। तिस मार्ग रहिबर देवे राह सिध्धा, पर्दा उहला आप उठाईआ। सूफ़ीआं अन्दर रख्या आपणा हिस्सा, सोहणी वंड वंडाईआ। भगतां सच दवारयों इक्को दिसा, दहि दिशा ढूंडण कोए ना जाईआ। सन्त कहिण परम पुरख प्रभ साचा

पिता, घट घट रिहा समाईआ । गुरमुख कहिण करे निरगुण सरगुण हिता, हितकारी वेख वखाईआ। गुरसिख कहिण कदे ना देवे पिच्छा, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। श्री भगवान कहे शब्द गुरु गुर सदा करे रिच्छा, रिछक आपणा नाउँ प्रगटाईआ। हरिजन पावे धुर दी भिच्छा, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। नाम रस अंमिउँ देवे मिट्ठा, रसना रस ना जाणे राईआ। एहो खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे अनडिठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पिच्छों शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी प्रभू सतिगुरू दा संदेस पढ़दे चिठा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवान आपे फड़, किला तोड़ हँकारी गढ़, पंच विकारा सुट्टे दड़, लेखा जाणे चोटी जड़, घर गृह मेला सहिज सुभाईआ।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी साईं फ़ैज मुहम्मद तों पुछ गिछ तखाणवध ज़िला फिरोज़पुर *

शरबत कहे मेरा रंग गुलाबी, गुलशन इक्को नज़री आईआ। नदर करे ते वेखां उच्च महिराबी, साचा रूप बेपरवाहीआ । ओथे जगे ना कोई महताबी, नूरो नूर नूर खुदाईआ। सच प्याला देवे आबेहयात शताबी, हयाती विच्चों हयाती दए बदलाईआ । जलवा देवे इलाही आफ्ताबी, महिबूब मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शरबत वेख वखाईआ । शरबत कहे मेरा रंग गुलाल, गहर गम्भीर आप बणाईआ। परवरदगार बणे दलाल, धुरदरगाही इक खुदाईआ। जलवा देवे हक़ जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। मुर्शद वेखे मुरीद लाल, लाल अमोलक इक प्रगटाईआ। जिस दा कलम शाही देवे ना कोई अहिवाल, काग़ज़ सके ना कोए समझाईआ। उह साहिब बेमिसाल, जिस दी मिसल ना किसे बणाईआ। सो सदा सदा कृपाल, कृपानिध अख्वाईआ। कोटन कोटि जीव जंत साध सन्त सूफ़ी फ़कीर जिस दी करदे भाल, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शरबत वेख वखाईआ। शरबत कहे मेरा रंग दस्से इक महिबूब, मुहब्बत जिस दे नाल लगाईआ। उस दा सोहणा इक अरूज, अर्श कुर्श दोवें वेख वखाईआ। जिस दी मंज़ल सच मक्सूद, महकमा बेपरवाहीआ। उह दूर दुराडा नेरन नेरा कर के आवे कूच, बण के पांधी राहीआ। सच प्याला देवे इक्को घूट, रस रसक रसक वखाईआ। जिस उपर मुर्शद जाए तुठ, मुरीद खुशी मनाईआ। साईं गोसाईं वेखे अन्दर लुक, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। मुहब्बत अन्दर लए पुच्छ, प्यार अन्दर सदा बांग सुणाईआ। रोजिआं विच ना रहे चुप्प, राजक रहीम आप अख्वाईआ। सच नमाज़ पढ़े बिन काया बुत्त, कलमा इक्को इक सुणाईआ। जिस दे नालों नाता गया

छुट्ट, फिर ओसे नाल जुड़ाईआ। दोज़ख़ बहिश्त दोहां पैंडा जाए मुक्क, मिले मेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शरबत विच्चों शरअ दए बदलाईआ। शरबत कहे मेरी शरअ लाशरीक, सिरकत विच कदे ना आईआ। मेरे महिबूब दी वड तौफ़ीक, तोहफ़ा घर घर दए पुचाईआ। उह सज्जण सच रफ़ीक, रहमत इक कमाईआ। जिस दी करदे रहे उडीक, सो आया शहिनशाहीआ। उस दे बणो बरदे अज़ीज़, आलीशान मकान बेमुकाम दए वखाईआ। अन्दर वड़ के वेखो नज़दीक, घर हुजरा रिहा सुहाईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, सो मजलस रिहा लगाईआ। सूफ़ीआं दी इक्को ईद, ईदगाह इक्को इक समझाईआ। जिस मंज़ल चढ़ के मिले सच रसीद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शरबत विच्चों साख्यात रिहा समझाईआ। शरबत कहे मेरा सच प्यार, प्रीती इक्को इक जणाईआ। जिस दी मजलस उच्च मनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। मुकामे हक़ जिस दा उज्यार, जलवा नूरो नूर रुशनाईआ। उह सज्जणां दा सज्जण उह यारां दा यार, दुखियां दर्द वंडाईआ। ग़फ्लत विच्चों होए बेदार, नेत्र नैण इक खुल्हाईआ। उस दी सिफ्त करे जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। बिन मुर्शद हथ्थ ना आवे विच संसार, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ। साचा वसल देवे असल रूप अपार, बेमिसाल करे ना कदे जुदाईआ। सच शरबत जिस नूं दए प्याल, प्रीती इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। शरबत कहे मेरा प्रेम प्यार अज़ीज़, हज़रत इक्को इक जणाईआ। जिस नूं अन्दर बाहर बख्शे तमीज़, तमां तुहमत ना कोए लगाईआ। सो हाफ़ज़ होए हफ़ीज़, बिन हरफ़ां करे पढ़ाईआ। सो लुतफ़ वेखे इक लतीफ़, तोहफ़ा कहाणी नग़मा ना कोए सुणाईआ। जिस उपर मुर्शद करे बख्शीश, मुरीद रहमत झोली भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शरबत विच्चों सोहणा रंग वखाईआ। शरबत कहे दस्सो साईं, सच सईया मंग मंगाईआ। किस दवारे मिले गोसाईं, घर दाता बेपरवाहीआ। गले लगाए चाईं चाईं, फड़ बांहों आप उठाईआ। नयामत बख्शे जाम प्याए बेपरवाही, पर्दा उहला आप चुकाईआ। सिर रख हथ्थ समरथ देवे ठंडीआं छाईं, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। चौदां विद्या देण दुहाई, चौदां तबक सीस झुकाईआ। जिस दा लेखा बेअन्त कोई लिखे ना कलम शाही, अल्फ़ ये अन्त कोए ना पाईआ। ऐन ग़ैन कहे मेरा महिबूब माही, ज़ेर ज़बर ना कोए वड्याईआ। नुक्ता नून ना देवे कोए गवाही, शहादत हमज़ा ना सके भुगताईआ। बसता बन्न्ह मकतब ना कोए वखाई, पट्टी पे ना कोए पढ़ाईआ। तख्ता ज़िमीं असमानां रिहा उलटाई, साबत आपणा नूर करे रुशनाईआ। सो साहिब सच मुकाम हज़रत वसे एका थाईं, दरगाह साची मुकामे हक़ आपणा आसण लाईआ। सानूं थोड़ा जिहा विच प्या शक़, घुंडी गुंझल खोल्हो उह जिस विच पीर पीरां बैठा

मुख शरमाईआ। पीर पीरां बैठा छुप, छप्पर छन्न वेख वखाइंदा। पड़दा उहला चुक्को अन्धेरा घुप्प, चन्द नूर ज़हूर नज़री आइंदा। उह कलमा बोले मुख, जिस कलमे विच्चों कायनात कातब बण के लेख लिखाइंदा। जिस नूं पीर पैगम्बर सयद्द औलीए रहे झुक, गुर अवतार निउँ निउँ धूढ़ी मस्तक टिक्का ख़ाक रमाइंदा। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा कदे ना जाए मुक्क, देवणहारा इक अख्वाइंदा । चलो उस दे कोलों रल मिल लईए पुच्छ, किस धाम किस मुकाम किस सिँघासण सोभा पाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर सच दवारे जाईए जुट, घोल दंगल इक्को वेख वखाइंदा। तुसीं केहड़ी मंज़ल गए पुज्ज, राह विच कवण ग़ज़ल नग़मा नाम सुणाइंदा। की वस्त अग्गे देवे कुछ, की ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। की दाढ़ी रखे मुच्छ, कि सीस कटा मूंड मुंडाया नज़री आइंदा। की काया कि की बुत्त, की ततव तत सुहाइंदा। चलो चल के वेखीए उठ, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर की की रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साईं गोसाईं तेरे अन्तरों वेख वखाइंदा। शरबत कहे मेरा रंग वांग शराब, मदि मदिर नाम धराईआ। जिस दा रस बणे नाल कबाब, अग्नी तत तपाईआ। मिल के दोहां मेल वजूद बणे अहिबाब, रबाब सच सतार हिलाईआ। किस हुजरे मिले जनाब, बैठा सोभा पाईआ। किस हथ्थ नाल करो आदाब, सजदा सीस झुकाईआ । की अग्गों देवे ख़ताब, मुख़ातब हो के दए समझाईआ। ओस मंज़ल की रवाज, कवण रंग रलीआं रिहा मनाईआ। मुशर्दां वाली मुशर्दां कोल करीए बात, बातन ज़ाहर नूर खुदाईआ। सारा दिन आवण जावण पी के जाण शरबत ग्लास, साचा जाम मंग ना कोए मंगाईआ। चलो वेखीए उह प्रकाश, जिस प्रकाश विच्चों प्रगटया आप इलाहीआ। फेर इक दूजे नूं कहीए शाबाश, घर साचे वज्जे वधाईआ। सच दवारे होए इक इतफ़ाक, निफ़ाक कोए रहिण ना पाईआ। मुरीद मुशर्दां सदा मुशताक, प्रेम प्यार अन्दर समाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं गए आख, आखर प्रगटे नूर खुदाईआ। उस दा भेव खोल्हीए नाल वज़ाहत, वज़्हा धुर दी दए समझाईआ। जिस दा लेखा जाणे ना कोई लुग़ात, कलम्यां नाल ना कोए वड्याईआ। जो सदा सदा सद देवणहार नजात, निज घर बैठा सोभा पाईआ। सोहणा बाग़ीचा वेख बाग़ात, गुलाबी रंग खुशी मनाईआ। गुलाबी बाग़ वाले लै के आए साथ, अन्तर आत्मा खुशी मनाईआ। अन्दर वेखीए मार झात, किस कोने गोशे लुक्या बेपरवाहीआ। जिस दी कदे ना होए वफ़ात, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। उस दी गवाही देवे ग्लास, जो आपणे अन्दर साचा जाम बैठा टिकाईआ। जिस दी अट्ठे पहर रहे प्रभात, संध्या सरघी वेला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा उह घर, जिस घर इक्को इक नूरो नूर नूर खुदाईआ। शरबत कहे मैं जन्म दा पाणी, कर्मां नाल मिट्ठा नाल मिलाईआ। एहो खेल मुर्शद महानी, जो मुरीदां दए समझाईआ। जिस वेले

आपणी करे मेहरवानी, वस्त अमोलक आपणे कोलों दए वरताईआ। फेर मुश्किल करे आसानी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। लेखा चुक्के जगत फ़ानी, आलमे जाबदानी इक्को घर वखाईआ। जिस नूं रहिबर मिले रुहानी, अग्गे पिच्छे भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। कूड़ क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार कोई ना रोड़े तुझानी, शौह दरया ना कोए सुटाईआ। पार कराए दो जहानी, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। तिस मुर्शद उत्तों मुरीद जावण कुरबानी, जो काया काअबे विच्चों महिबूब दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शरबत विच्चों सरीअत रिहा वखाईआ। बख्शश करो कर के रहमत, रहमान मंग मंगाइंदा। मुरीद मुशर्दां होवे सहिमत, सगला संग वखाइंदा। कोई ना जाणे तेड़ बन्ने तहिमत, वेस अनेका आपणा खेल वखाइंदा। अन्दर वड़ के मारे इक्को सैनत, शब्द इशारे नाल उठाइंदा। धाम वखाए इक्को बैतुल, मुकदस्स आप वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट अन्तर खोज खुजाइंदा। शरबत कहे मुर्शद जाणे तदबीर, तबा सब दी दए बदलाईआ। मेहर नज़र बदले तकदीर, तकसीर आपणी विच मिलाईआ। दूई द्वैती शरअ कट ज़ंजीर, लाशरीक दए वखाईआ। जिस दी जग नेत्र नज़र ना आए किसे तस्वीर, निज नेत्र करे रुशनाईआ। जिस दी मंज़ल चोटी इक अख़ीर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो आदि जुगादि कदे ना होवे दिलगीर, हिरस हवस ना कोए वधाईआ। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा जाम इक दृढ़ाईआ। शरबत कहे मेरा जाम अनोखा, अकल कल अख्वाइंदा। जिस दे विच कदे ना धोखा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। मेरे पीत्तयां मन रहे ना खोटा, दुरमति मैल परे हटाइंदा। जे मुर्शद हथ्थ विच फड़ लए अगम्मी सोटा, अन्दर बाहर भय जणाइंदा। साहिब सुल्तान साचा दस्सया इक्को रोज़ा, जिस रोज़े विच जूठ झूठ रसना कोए ना लाइंदा। उस रोज़े विच सदा मौजां, मौजूदा हो के दरस दिखाइंदा। उस दी खोजे ना कोई खोजा, भरमे भरमी सर्ब भुलाइंदा। उस नूं मिलयां लेखा चुके एका दूजा, नूर इलाही इक्को नज़री आइंदा। एहो भेव मुशर्दां कोल गूझा, बिन किरपा बंद ताकी ना कोए खुल्हाइंदा। अल्ला हू अन्ना हू आलमीन मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही जिस नूं पुजा, पूजनीक इक्को नज़री आइंदा। सच दवारा तिस नूं सुझा, गृह मन्दिर इक वखाइंदा। ओन्हां सज्जणां पैंडा मुक्का, तसबी माला परे सुटाइंदा। उह सूफ़ी सदा सुच्चा, सुचयां विचों सही सलामत वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शरबत विच्चों वेखे रस मिट्ठा, मिट्ठत विच्चों सच मिठास मिठास विच्चों आस आस विच्चों रख निवास निवास विच्चों दास नज़री आइंदा। ग्लास कहे मेरी ख़ातर, ख़ातमा कूड़ी क्रिया दयो कराईआ। आपणे आप ना बणे कोई चातर, जगत चतुराई कम्म किसे ना आईआ। जिस नूं धुर दा स्नेहड़ा आवे पात्र, सच संदेसा इक खुदाईआ।

सो मंज़ल वेखे आख़र, अख़ीर आपणा पन्ध मुकाईआ। जलवा दस्सो अन्तर बातन, गल्लां बातां नाल ना कोए वड्याईआ। किस किनारे बैठे पातण, कवण मलाह नज़री आईआ। जिस नूं पदानसीं सारे आखण, मुख नक़ाब रिहा टिकाईआ। उह किस मंज़ल जा के बणे साथन, सोहणा संग निभाईआ। केहड़ा कलमा गावे गाथन, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। केहड़ा कमली वाला सच प्रीती जोड़े नातन, पल्लू आपणे गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक घर जिस मन्दिर विच्चों मांदरी मन्त्र रिहा सिखाईआ। करो इशारा नाल अश, आशक माअशूक दोवें रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा साचा जस, कलम शाही सिफ्त सालाहीआ। प्रेम प्रीती अन्दर जाणा वस, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जेहड़ा किसे ना आवे हथ्थ, सनमुख बैठा बेपरवाहीआ। परवरदिगार महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जो अन्दर वड़ के रिहा दस्स, सो बाहरों करे पढ़ाईआ। पहलों मुर्शद नाल मिलाए हथ्थ, हथ्थां विच्चों हस्ती दिती जणाईआ। हुण मिलो ते खुल्ल जाए अक्ख, जिस अक्ख विच्चों नज़री आए नूर खुदाईआ। नहीं ते अग्गे हो जाए बस, बसता सब दा रिहा बंधाईआ। एस ग्लास दा अगम्मी रस, जिस विच्चों लाल रंग आपणा रंग वखाईआ। जल नाल मिल के लाहा रिहा खट्ट, मिली माण वड्याईआ। मुर्शद किरपा जे मुरीद पीवे गट गट, पींदयां गुटका पोथी पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। घर प्रकाश जोत होवे लट लट, शब्द नाद धुन अनहद करे शनवाईआ। एह रस जो लवे चट, चेटक मुक्के जगत लोकाईआ। अग्गे सोहणा दिसे हट्ट, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साईं किस मंज़ल मिले गोसाईं गुसल वसल असल विच्चों कराईआ। असल वसल विच कवण वजूद, रंग सच कवण रंगाइंदा। कवण सेजा रखे महफूज़, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। आओ वेखीए उह महिबूब, जो मुहब्बत विच्चों प्रेम प्रीती इक प्रगटाइंदा। जिस दा असल जे कोई समझे नाल आपे रल जाए सूद, शरअ विच ल्या के कुलज़र रूप वखाइंदा। फ़कीर फ़कीरां लैण बूझ, बुझारत इक्को नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़िकरा हक़ हकीकत विच्चों सुणना चाहइंदा। अन्दरों हूंगर निकले हूं, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ताल वजाईआ। जे साहिब मिलें तूं, तू ही तू राग अलाईआ। उजल होवे मूँह, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। एह काया माटी झूठा दिसे खूह, हँकार विकार इस दे विच भराईआ। जिन्हां दा पाक होया रूह, रसूल घर मिले चाईं चाईंआ। उह वेखण उहदी जूह, जंगल उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर डेरा ढाहीआ। उह ओन्हां नाल हौली हौली जावे कू, सच संदेसा इक सुणाईआ। जे मेरी किसे नूं मिल जाए सच्ची सूह, सो सुहबत नाल सोभा पाईआ। जगत जिज्ञासू जगत वासना करदे फूं फूं, हउमें भरी लोकाईआ। जो सतिगुर पूरे नाल जाए छूह, सोना कंचन पारस पारस

नालों उपर आपणे रंग नाल रंगाईआ । खुशी करे साढे तिन्न करोड़ लूं लूं, अन्दर वड़ के तन्दी तन्द सतार वजाईआ। ओथे ना कोई हां ना कोई हूं, तूं मैं मैं तूं इक्को राग सुणाईआ। जो दरवेश बण के बैठे बरूंह, सच दवारे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इशारे नाल इशारे रिहा मिलाईआ।

*** ६ जेठ २०२१ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह निधांवाली ज़िला फिरोज़पुर ***

फ़कीरां फ़िकरा हक़ ना पढ़या, सुणी कलाम ना धुरदरगाहीआ। हुजरे अन्दर हज्ज ना करया, मिल्या मेल ना बेपरवाहीआ । सच महिराबे मूल ना खड़या, सोहणा रूप वटाईआ। जीवत रूप कोए ना मरया, काया गोर ना सोभा पाईआ। सच प्याला जाम किसे ना भरया, ख़ाली दिसे तत सुराहीआ। दर दरवेश ना बणया दरया, सच अलख ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा इक अख्वाईआ। फ़कीरां फ़िकरा ना जाता हक़, हकीकत बैठी मुख भवाईआ । जगत खुदाई रहे तक्क, तकवा देवे ना बेपरवाहीआ। लभ्भ लभ्भ सारे गए थक्क, अन्दर बाहर खोज खुजाईआ। कौडी पल्ले ना किसे कक्ख, कीमत सके ना कोए पवाईआ। सजदा सीस ना झुकया नक्क, लकीर तकदीर ना कोए मिटाईआ। जगत जीवण दिसे भट्ठ, अग्नी भठियाला इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि रघुराईआ । फ़कीर फ़िकरा ना जाणे, पर्दा उहला ना कोए उठाईआ। रंग महिबूब कोए ना माणे, सुंञीं सेज देण दुहाईआ। रातीं सुत्तयां रैण विहाणे, बांहों फड़ गले ना कोए लगाईआ। बाली बुध बणे बाल अञ्याणे, मनमति देवे जगत गवाहीआ। कूड़ी क्रिया बैठी सव़ाणे, सोहणा वेस श्रृंगार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। फ़कीरां मिली ना सच फ़कीरी, फ़ज़ल फ़ाज़ल रहम ना कोए कमाईआ। तुटी तन ना शरअ ज़ंजीरी, शरीअत पन्ध ना कोए मुकाईआ। तसबी मिली ना बेनज़ीरी, मन का मणका दए भवाईआ। दूई द्वैत ना मिटी पीड़ी, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। चोटी चढ़े ना कोए अख़ीरी, गृह वेखे चाईं चाईंआ। लेखा चुके ना शाह हकीरी, हकीर हकीरां विच बैठा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला रिहा सुणाईआ। फ़कीरां फ़िकरां अन्दर आया फ़ाका, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। किसे नज़र ना आया साचा आका, अक्ल विच्चों असल शकल ना कोए समझाइंदा। बंद किवाड़ ना खुल्ल्हा ताका, पर्दा दूई ना कोए चुकाइंदा। आबेहयात ना मिल्या बाटा, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। सेज सुहञ्जणी ना सुत्ता खाटा, प्रेम गलवकड़ी प्रीतम आपणी ना कोए वखाइंदा। डूंग्घा दिसे इक्को खाता, ख़तरा जिस विच्चों नज़री आइंदा। जिथ्थे लेखा

१०४२ १६

१०४२ १६

मंगे बाका, बाकी नवीस आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाइंदा। फ़कीरां चुकयां ना फ़िकर मौत, सहिम वहिम ना कोए मिटाईआ। जगत पीहड़ी जांदी दिसे औंत, मुरीद मुर्शद गोद ना कोए उठाईआ। अन्दर वड़ के सारे रहे सोच, समझ सके कोई ना राईआ। परवरदगार मिल्या ना धुर दा ख़ौंत, ख़ावंद बीवी ना होई कुड़माईआ। ओथे किसे ना दिसे कोई पहुंच, मिलावे मेल ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़कीरां फ़तया रिहा पढ़ाईआ। फ़कीरां उते इक्को फ़िकरे लाया फ़तवा, हुक्म सादर इक कराईआ। किसे पीर दा चढ़े ना कोई हलवा, न्याज़ रूप ना कोए वटाईआ। कबाब मिले ना किसे तलवां, भुंन सीख ना कोए चढ़ाईआ। भटके मन ना वासना मनुआ, मन का मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप मुकाईआ। फ़कीरां करे दारख़बर, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। सब दे हथ्थों कासा टुट्टा प्याला सबर, सबूरी संग ना कोए निभाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जो इस्लामी बणाया टब्बर, शरअ नाल जोड़ जुड़ाईआ। तिन्नां वेखणहारा शेर बब्बर, शहिनशाह इक्को फेरा पाईआ। अन्त वेला कोई ना सके संभल, कदम कदम सके ना कोए टिकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण होया ग़ज़ब, ग़रज़ पूरी ना कोए वखाईआ। फ़कीर हकीर होवण तअजब, हैरानी सभ दे सिर ते छाईआ। जिस लेखा चुकाउणा दीन मज़्हब, ला मज़्हब फेरा पाईआ। उम्मत उम्मती सारे करो अदब, आदाब इक्को सीस झुकाईआ। सब दा हल्ल करे मतलब, मुतालया कर के वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सच फ़कीर बणाए गुरमुख, जिस फ़िकरा हक़ पढ़ाइंदा। प्रेम प्रीती कर बणाए सुत, पिता पूत गोद उठाइंदा। कलयुग अन्तिम लए पुछ, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। जन भगतां झोली पाए सब कुछ, आपणा ख़ाली हथ्थ रखाइंदा। एथे ओथे दो जहान पैंडा जाए मुक्क, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सन्त सुहेला बूटा कदे ना जाए सुक्क, पत्त टहिणी आप महकाइंदा। शब्दी धारों आपे उठ, जोती जाता वेख वखाइंदा। प्रेम प्यार सच प्रीती अन्दर लुक, आत्म सेजा सुहञ्जणी डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़कीर इक वखाइंदा। सच फ़कीर जन भगत, जन्म जन्म दा भेव चुकाईआ। लेखे लाए बूँद रक्त, पंज तत काया माटी दए वड्याईआ। आत्म परमात्म पाए साची शक्ति, शख़सीयत आपणे नाल रखाईआ। आपे जाणे वेला वक्त, थित वार सके ना कोए समझाईआ। गुरमुखां उते कर के तरस, रहमत आपणी रिहा वरताईआ। जुग जन्म जो रहे भटक, दे दरस भटकना दए गंवाईआ। अद्धविचकार कोई ना जाए लटक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुरमुख फ़कीर कोटां विच्चों फ़कत, जिस फ़िकरा पढ़या सोहँ ढोला गाईआ।

तिस आत्म विछड़ी फेर मिलावे परत, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। नेत्र दीदार अक्ख अक्खीआं कर के दरस, दर्शन आपणा इक दृढ़ाईआ। एहो खेल प्रभू असचरज, अचरज लील्हा रिहा वखाईआ। छुरी शरअ फेर करद, ज़ब्हा ज़ालम रिहा वखाईआ। दुखियां दीनां वंडे दर्द, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे मेले सहिज सुभाईआ।

* ८ जेठ २०२१ बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर *

किरपा करे प्रभ अन्तरजामी, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता वेख वखाइंदा। लेखा जाणे दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ खोज खुजाइंदा। जन भगतां उपर करे मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाइंदा। बोध अगाध शब्द सुणाए अगम्मी बाणी, धुर दा राग आप अलाइंदा। अमृत आत्म निझर रस देवे ठंडा पाणी, अग्नी तत बुझाइंदा। चरण कँवल बख़्शे सच ध्यानी, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। लेखा चुकाए आवण जाणी, लख चुरासी फंद कटाइंदा। सच दवारे बख़्शिश करे माणी, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सुरत मिलावे शब्द हाणी, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा भेव आप चुकाइंदा। सतिगुर पूरा सच स्वामी, सच सन्त दए वड्याईआ। नित नवित्त सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कमाईआ। प्रेम प्यार अगम्म अथाह शब्द अनाद सुणाए कहाणी, चौदां विद्या ना कोए वड्याईआ। साचा मन्दिर महल अटल वखाए इक लासानी, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। मन वासना कूड़ क्रिया मेटे शैतानी, शरअ मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। किरपा करे साहिब सुल्तानी गुण निधानी, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। साहिब सतिगुर सद बेअन्त, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाइंदा। नाम निधान देवे मणीआं मंत, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। दे वड्याई विच्चों जीव जंत, पड़दा उहला आप उठाइंदा। घर मिलावा साचे कन्त, गृह नारी सोभा पाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। साहिब सतिगुर लेखा जाणे गुरसिख, गुरू गुरदेव वड्डी वड्याईआ। नाम वस्त पावे भिख, अमोलक इक वरताईआ। बिन अक्खां आवे दिस, निज नेत्र करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म करे हित, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। करवट लै बदले पिठ, सनमुख आपणा रूप रुशनाईआ। प्रेम प्यारा बण के मात पित, प्रीतम आपणी गोद उठाईआ। वेखणहारा नित नवित्त, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर

कलयुग आपणी धारों उठ, जोती शब्दी खेल खलाईआ। गुरमुख सज्जण लए पुच्छ, घर विच घर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक समझाईआ। साहिब सतिगुर साची सिख्या देवे एक, एका करे नाम पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े भेख, भाडा भरम भउ भंनाईआ। सच सरनाई दस्से धुर दी टेक, इष्ट देव इक्को इक समझाईआ। मन मति बुध करे विवेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत शैतान शरअ ना कोए लड़ाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा हो के लए पेख, आप आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख मेले सहिज सुभाईआ। साहिब सतिगुर करे मिलाप, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी परे हटाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, जोती नूर चन्द इक चमकाइंदा। माया ममता मोह विकार हँकार देवे काट, सच सुच इक्को घर वखाइंदा। आत्म सेजा सुहञ्जणी सुहाए खाट, सिँघासण आसण डेरा लाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए बात, बातन आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण निरगुण बन्न्हे नात, सरगुण लेखा मूल चुकाइंदा। सच भण्डार वखाए डूंघा खात, गहर गम्भीर भेव खुल्हाइंदा। कर किरपा गुरमुखां बुझाए आपणी ज़ात, ज़ात विच्चों हरिजन आपणा नूर चमकाइंदा। दूजा ना कोई दिसे साथ, करता पुरख करनी आप कमाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता
१०४५ ज्ञान जिस दी गावे गाथ, सो साहिब सतिगुर आपणा हुक्म वरताइंदा। जोग अभ्यास जप तप संजम जिस दा पूजा पाठ, १०४५
१६ सो पुरख अकाल जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां सच प्रीती देवे दात, दाता दानी आप वरताइंदा। जोती जोत १६
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरदेव स्वामी आपणा पड़दा लाहइंदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, हरि सज्जण इक अख्वाइंदा। करे खेल बिन शरीर, पंज तत नज़र किसे ना आइंदा। दो जहानां योद्धा सूरबीर, बलधारी इक अख्वाइंदा। मेहरवान मिहबान वड पीरन पीर, हज़रत आपणा रंग रंगाइंदा। चोटी चढ़ के बैठे इक अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताइंदा। मुरीदां मुर्शद होण ना देवे दिलगीर, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, हकीकत विच्चों हक़ हकूक खोज खुजाइंदा। आपणे हथ्थ रखे तौफ़ीक, तोहफ़ा कलमा नग़मा नाम इक सुणाइंदा। साहिब सुल्तान सज्जण बण रफ़ीक, फ़रीक कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। आपणा मार्ग दस्स इक बारीक, रहिबर हो के नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे लाशरीक, शिरकत विच कदे ना आइंदा। भगत सुहेला बण के मीत, मित्र प्यारा वेख वखाइंदा। अन्दर वड़ के काया मन्दिर चढ़ के दस्से सोहणा गीत, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप सुणाइंदा। ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआला मट्ठ नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई कलम शाही ना कोई अक्खर मारे लीक, हरफ़ हरूफ़ ना

कोए वखाइंदा। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेर नज़दीक, निज घर बैठा सोभा पाइंदा। ओथे ना कोई हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान वेस ना कोए वटाइंदा। करे खेल धाम अनडीठ, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाइंदा। जन भगतां बख्शिश कर के चरण प्रीत, प्रीतीवान प्रीतम आपणे रंग रंगाइंदा। काया माटी ठांडी करे सीतल सीत, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। गुरसिखां समझाए जिस घर वसेरा सच वसनीक, गृह मन्दिर इक्को इक रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। नित नवित्त जुग चौकड़ी करनहार पहचान, बेनज़ीर आपणी नज़र लए बदलाईआ। गुरमुखां देवे सच ज्ञान, गुरसिखां करे नाम पढ़ाईआ। साचे सन्तां बख्श आत्म परमात्म इक ध्यान, भगतां भगवन्त मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी हुक्मी कार, हरि करता आप कमाइंदा। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर खेल खलाइंदा। शास्त्र सिमरत बोल जैकार, अक्खर वक्खर राह वखाइंदा। सर सरोवर तीर्थ तट किनार, जल थल महीअल रूप वटाइंदा। लेखा जाण जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। गुरमुख सज्जण आप उठाल, सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा। भगत वछल दीन दयाल, भगती आपणी सच समझाइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, जिस घर स्वामी नित नवित्त सदा सदा सद आपणा डेरा लाइंदा। जिथ्थे पोह ना सके काल, महाकाल मुख शरमाइंदा। जिथ्थे छुरी करे ना कोई हलाल, ज़ब्हा रूप ना कोए वटाइंदा। जिथ्थे त्रैगुण माया ना कोए जंजाल, माया मोह ना कोए भरमाइंदा। तिस दवारे साहिब सतिगुर मिले आण, शब्द सरूपी आपणा वेस वटाइंदा। सच प्रीती देवे दान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। मेल मिलावा गोपी काहन, सखी सहेली वेख वखाइंदा। एहो खेल श्री भगवान, जुग जुग जन भगतां आप कराइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, जोती जामा वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले वेखे आण, गुरसिख गुर गुर गोद उठाइंदा। चरण प्रीती दे के माण, नाता इक्को घर बंधाइंदा। रोग सोग चिन्ता दु:ख सर्ब मिट जाण, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवन्त इक्को सोहला ढोला गाण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। एथे ओथे दो जहानां खुशी मनाण, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि सीस निवाण, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द अक्ख ना कोए उठाइंदा। गण गंधर्ब फूल बरसाण, सोहणा वेला वक्त सुहाइंदा। धन्न वड्याई जिन्हां जुग जुग मिल्या निरगुण सरगुण हो श्री भगवान, भगवन आपणा वेस वटाईआ। तिन्हां सखीआं सच स्वामी विछड़ ना जाए काहन, साची रास धुर दे मण्डल आप वखाईआ।

सो जन होए परवान, जिन्हां परम पुरख परमात्म आत्म मेल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरला मिले माण, जिस महाबली देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरिसन्त सतिगुर रूप जोती शब्दी मेल मिलाईआ।

* ८ जेठ २०२१ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह गुमानपुरा ज़िला अमृतसर *

भगत नरैण मिल्या नरायण, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी सज्जण सैण, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। भगत वछल चुकाए लहिण देण, पूरब लहिणा झोली पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोई ना सके कहिण, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। सच दवारे भगत भगवन्त इकट्ठे रहिण, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। इक दूजे नूं वेखण आपणे नैण, जग नेत्र नाता दित्ता तुड़ाईआ। नुक्ता मिल्या पिछली ग़ैन, ऐन अक्ख करी रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कढुया डूंघे वहिण, वही खाता शौह दरयाए रुढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा देण, देंदयां अतोट अतुट आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत काया करे रसाइण, सच कसवट्टी नाम चढ़ाईआ। भगत नरैण नरायण प्रभ ठाकर, पारब्रह्म बेअन्त अख्वाइंदा। वेखणहारा कलयुग डूंघा सागर, भँवर भँवरी खोज खुजाइंदा। वणज व्यपारी बण सौदागर, करता कीमत आपे पाइंदा। कर्मां
१०४७ विच्चों कर्म उजागर, जन्मां विच्चों जन्म वडियाइंदा। सच दवारे दे के आदर, अदल आपणा इक समझाइंदा। जोती जोत १०४७
१६ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेखे लाइंदा। नरैण भगत नरायण भगवन्त, घर वज्जे इक वधाईआ। नरैण १६
नारी नरायण कन्त, घर खुशीआं मंगल गाईआ। नरैण प्रेम नरायण रुत्त बसन्त, नरायण गुलशन पत्त डाली आप महकाईआ। नरैण माया नरायण बेअन्त, नरायण ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नरैण विद्यार्थी नरायण पंडत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। नरायण निरगुण नरायण निरवैर, सरगुण आपणी खेल खलाइंदा। नरैण खेड़ा नरायण करदा सैर, गोशां कोना कुण्ट वेख वखाइंदा। नरैण मांगत नरायण मेहर, मुहब्बत आपणे नाल रखाइंदा। नरैण मेला लख चुरासी विच्चों इक्को वेर, नरायण मिलयां नरायण विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गम्भीर गहर, गवर आपणी दया कमाइंदा।

* ८ जेठ २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड काउँ के ज़िला अमृतसर *

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, हरि करता आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण बेऐब परवरदिगार, अलख अगोचर अगम्म

अथाह आपणी कार कमाइंदा। एकँकार निरवैर निराकार, अकल कलधारी आपणी कल धराइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोती जलवा डगमगाइंदा। अबिनाशी करता शाह सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। श्री भगवान वेखणहार, रूप अनूप नज़र कोए ना आइंदा। पारब्रह्म दर दरवेश बण भिखार, अलख निरँजण इक्को अलख जगाइंदा। पुरख अकाल पावे सार, परवरदगार खोज खुजाइंदा। महल अटल कर उज्यार, दीआ बाती कमलापाती इक्को डगमगाइंदा। सच सिँघासण सोभावन्त कर त्यार, सच दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा खोल्ह किवाड़, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। भूपत भूप बण राज राजान, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी हरि भगवन्त, करता पुरख आप कमाईआ। आपे आदि आपे अन्त, आपणा खेल आप रचाईआ। आपे नार आपे कन्त, कन्त कन्तूहल आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक सुहाईआ। सच दुआर सुहञ्जणा, करनी करता आप कमाइंदा। आदि जुगादी पुरख निरँजणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच दवारे बण भिखारी आपे मंगणा, दरवेश आपणा नाउँ धराइंदा। दाता दानी दर्द दु:ख भय हो भंजना, वस्त अमोलक आपणी आप वरताइंदा। सच दवारे मित्र मीत प्यारा बणे सज्जणा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। ना घड़या ना अन्त भज्जणा, घड़न भंनणहार आपणी कार कमाइंदा। भेव अभेदा आपणा खोल्ह आपे दस्सणा, दूजा वेस ना कोए वटाइंदा। सचखण्ड दुआर तख्त निवासी बहि आपे सजणा, सच जगदीश सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, करनी करता आप कमाइंदा। करनी करता करे समरथ, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण जोत कर प्रगट, जोती जाता करे रुशनाईआ। सति दवारा खोल्ह हट्ट, वस्त अगम्म विच टिकाईआ। देवणहारा आपणे हथ्थ, सदा सुहेला आप वरताईआ। सच स्वामी बण के मित, प्रीतम आपणी प्रीत जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण हो के करे हित, हितकारी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सच सिँघासण आसण लाईआ। सच दवारा सचखण्ड, सति सतिवादी डेरा लाइंदा। आदि जुगादी इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वडियाइंदा। ना कोई ब्रह्मण्ड ना खण्ड, जेरज अंड वंड ना कोए वंडाइंदा। छप्पर छन्न चार दीवार ना कोई कंध, मन्दिर रूप ना कोए वटाइंदा। दर दरवेश ना कोई मंगे मंग, झोली खाली अग्गे ना कोए रखाइंदा। ना कोई गीत सुणाए छन्द, रसना जिह्वा राग ना कोए अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वडियाइंदा। सच दवारा सचखण्ड वड्डा, हरि वड्डा दए वड्याईआ। जिथ्थे वसे आपे नढ्ढा, बाल जवानी बिरध रूप ना

१०४८ १६

कोए वखाईआ। आर पार मध जाणे आपणी हद्दा, किनारा सके ना कोए समझाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन अबिनाशी आप सजा, जगत दुआर ना कोए वड्याईआ। आपणे हुक्म अन्दर आपे बज्झा, दूजा हुक्म ना कोए सुणाईआ। आपणी प्रेम प्रीती अन्दर आपे रज्जा, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखाईआ। आपे सति प्याला पीता मधा, रस आपणे विच्चों प्रगटाईआ। आपे जोत प्रकाश निरगुण दीपक जगा, नूर उजाला इक वखाईआ। आपे सति सतिवादी सति पुरख निरँजण फिरे भज्जा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। आपे आपणी धारों जननी जन हो के जणया बच्चा, सुत दुलारा शब्दी नाउँ रखाईआ। बिन पुरख अकाल दूजे किसे ना कोई पता, अन्त कहे कोई ना राईआ। सच दुआर इक्को वसा, निहचल धाम दए वड्याईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर साचा रखा, चरण कँवल इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी प्रगटाया पूत, मात पित नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिशा ना कोई कूट, हिस्सा वंड ना कोए वखाईआ। ना कोई तत ना कोई कलबूत, रूह बुत्त ना मेल मिलाईआ। ना कोई तागा ताणा पेटा सूत, टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। ना कोई महल अटल अरूज, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई शस्त्र वस्त्र करे महफूज़, मेहरवान आपणी मेहर आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच गृह खुशी मनाईआ। सच गृह वसे दवारा, मिले माण वड्याईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण निरवैर खेल वखाईआ। शब्दी सुत इक दुलारा, शाह पातशाह आप उपजाईआ। चरण प्रीती दे प्यारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। महल अटल इक उसारा, थिर घर नाउँ रखाईआ। दीवा बाती आपे बाला, जोती जोत करे रुशनाईआ। साचा मन्त्र इक सुखाला, सिख्या दे करी पढ़ाईआ। सचखण्ड मेरी सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तेरा मेरा खेल निराला, आदि जुगादि कोई समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द दए समझाईआ। सुत शब्द चढ़या चाउ घनेरा, थिर घर वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल बणया पिता मेरा, जननी जणे ना कोई माईआ। जिस दा इक्को सचखण्ड खेड़ा, दूजा दर ना कोए खुलाईआ। जिस दा उच्चा लम्मां कोई ना जाणे वेहड़ा, पार किनारा पार ना कोए रखाईआ। ओथे नाता जुड़या तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान अबिनाशी करता करे आपणी मेहरा, मेहरवान होए सहाईआ। समरथ पुरख किहा इक्को सुत शब्द बथेरा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जिस नाल थिर घर वसे खेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता आप कमाईआ। थिर घर वसया सच महल्ल, हरि करता आप वसाइंदा। नाउँ रखाया उच्च अटल, भेव कोए ना पाइंदा।

अगम्मी दीपक रिहा बल, तेल बाती विच ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड निवासी वसाया निहचल धाम अचल्ल, अचल्ल मूर्त आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवाना, महिबूब इक्को राह तकाईआ। एकँकारा वड बलवाना, लेखा जाणे नूर खुदाईआ। आदि निरँजण जोत महाना, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। अबिनाशी करता नौजवाना, परवरदिगार ना मरे ना जाईआ। श्री भगवान लेखा जाणे सच मकाना, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। पारब्रह्म मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी इक कमाईआ। तख्त निवासी राज राजाना, शहिनशाह अख्वाईआ। सुत दुलारे देवे दाना, धुर दी दात वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा खेल महाना, त्रैगुण माया पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी तेरा नूर नुराना, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। नौ सत बद्धा गाना, सोहणा सगन वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे माणा, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। शब्द अगम्मी बोल तराना, धुर दा राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर प्रधाना, लोकमात पंज तत आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। शास्त्र सिमरत भेव खुल्हाए अञ्जील कुराना, गीता ज्ञान इक दृढ़ाईआ। खाणी बाणी दए

१०५० परवाना, परम पुरख सच संदेसा इक सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग खेले खेल महाना, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। १०५०

धुर संदेसा देवे इक ज्ञाना, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। भगतां बख्शे चरण ध्याना, श्री भगवान भेव खुल्हाईआ। सन्तां

१६ देवे नाम निधाना, निरन्तर ब्रह्म दए समझाईआ। गुरमुखां देवे चरण धूढ़ इश्नाना, दुरमति मैल धवाईआ। गुरसिखां होए मेहरवाना, १६

मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए समझाईआ। शब्द सुत सुण धुर दी आवाज़, बिन रसना जिह्वा हरि सुणाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा राज, रहमत कर के आप खुल्हाइंदा। कोटन कोटि सिफ्ती नाम करन जहाद, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड डंका इक्को इक वजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा साजण साज, पंज तत काया चोला इक वखाइंदा। वस्त अमोलक धुर दी दे के दात, लोकमात खेल कराइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द दस्स के पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक वखाइंदा। अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के शब्द अगम्मी खोल्हां राज़, भेव अभेदा आप समझाइंदा। साचा कलमा दे निमाज़, नबी रसूल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करता पुरख आपणी कार कमाइंदा। शब्द सुत सुण कर ध्यान, हरि करता आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी जगत ज्ञान, चौदां विद्या करे पढ़ाईआ। गुरमुख विरले देवे पहचान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। अन्तर आत्म देवे दान, परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। साचा राग सुणाए धुर दे कान, अनादी नाद

वजाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले वेखे आण, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। कलम शाही काग़ज़ लिख लिख दे ना सके कोई ब्यान, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। बेअन्त बेपरवाह परवरदिगार नौजवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मरान, सचखण्ड निवासी साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करन ध्यान, इष्ट देव स्वामी इक्को इक मनाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम लोकमात होए प्रधान, जोती जलवा नूर नूर करे रुशनाईआ। साची मंज़ल महिबूब वेखे आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ मसायक होण हैरान, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जिस दा काग़ज़ां उते देंदे गए ब्यान, कातब बण के करी लिखाईआ। सो लेखा जाणे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, भेव अभेदा जाणे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सुत शब्द इक्को इक उठाईआ। शब्द सुत उठाए प्रभ, हरि देवे माण वड्याईआ। दो जहान निरगुण धार वेख झब्ब, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। नव सत पार कर हद्द, ब्रह्मांड तेरी ओट तकाईआ। विश्व वेख साची यद्द, विष्नूं पल्लू रिहा फड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा बिन लत्तां उठ के भज्ज,
१०५१ आपणा पन्ध मुकाईआ। सच नगारा हो के वज्ज, दो जहान कर शनवाईआ। सच दवारे कर इकट्ठ, महल अटल सोभा पाईआ। १०५१
तेई अवतारां इक संदेसा दस्स, धुर फ़रमाण सुणाईआ। भगत अठारां औण नट्ठ, बण के पांधी राहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद
१६ कदम जाइण ढट्ठ, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। गुर दस होवण वस, दर बैठण सीस झुकाईआ। त्रैगुण माया रोवे भट्ठ, पंज १६
तत आपणा मुख भवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी करनी देण दस्स, सच संदेसा इक सुणाईआ। वेखणहार पुरख समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत रिहा दृढ़ाईआ। शब्द सुत उठ जाग, हरि करता आप जगाइंदा। सृष्ट सबाई अन्धेरी दिसे रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लिख के गए भविक्ख्त वाक, वाक्य ओहो नज़री आइंदा। बजर कपाटी किसे ना खुल्ल्हा ताक, दीआ बाती घर जोत ना कोए रुशनाइंदा। साचे पत्तण कोई ना आया घाट, घाटा पूर ना कोए कराइंदा। मन वासना करन बात, ममता मोह ना कोए चुकाइंदा। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब सच्चा रंग ना कोए वखाइंदा। चारों कुण्ट डूंघा दिसे खात, मंज़ल पन्ध पार ना कोए मुकाइंदा। आत्मक धुन कोई ना सुणे आवाज़, साचा राग ना कोए अलाइंदा। साचा कलमा पढ़े ना कोए निमाज़, वुज़ू हक़ ना कोए कराइंदा। आत्म परमात्म करे ना कोई अरदास, सीस जगदीश ना कोए झुकाइंदा। सुरती शब्दी गोपी काहन कोई ना पाए रास, मण्डल मण्डप रंग ना कोए वखाइंदा। सीता सुरती वसे ना राम पास, सखी सहेली अंग

ना कोए लगाइंदा। फिरी दरोही पृथ्मी आकाश, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। पीर पैगम्बर सारे होए उदास, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। चौदां तबक पूरी करे ना कोई आस, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जिस दे विच्चों उपजी लख चुरासी शाख़, सो शनाख़त करनेहारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे शब्द आप समझाइंदा। सुत शब्द करे त्यारी, आपणा बल प्रगटाईआ। हुक्म मिल्या एकँकारी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। थिर घर वेखां वसदी इक अटारी, महल अटल रुशनाईआ। निर्मल जोत जगे अपारी, दीवा बत्ती ना कोए वखाईआ। जिस घर वसे शहिनशाह सिक्दारी, राजन राज आप हो जाईआ। उस दी नज़र ना आए चार दीवारी, किला कोट बंक ना कोए वखाईआ। सो हर घट अन्दर कर कर बैठा पसारी, निज घर आपणा डेरा लाईआ। शब्द नाद सच्ची धुनकारी, गृह मन्दिर नाद सुणाईआ। निरगुण जोत कर उज्यारी, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत रस सच खुमारी, निझर झिरना दए झिराईआ। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकारी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पकड़ उठाए सुरती लाड़ी, शब्दी कन्त लए प्रनाईआ। लेखा चुके जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी कन्दर खोज खुजाईआ। चरण
१०५२ प्रीती दए प्यारी, प्रेम प्यार इक सिखाईआ। सो शब्द गुरू आदि जुगादि इक इकल्ला सब दा मेलणहारी, जुग विछड़े रिहा १०५२
मिलाईआ। जन्म कर्म दी कटे बीमारी, हउमें रोग रहिण ना पाईआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी, एथे ओथे होए सहाईआ।
१६ लेखा जाण बहत्तर नाड़ी, हाडी हाडी सोभा पाईआ। बूँद रक्त करे वणजारी, सोहणा हट्ट खुल्हाईआ। लेखा जाणे सच दरबारी १६
दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत रिहा उठाईआ। शब्दी सुत उठ उठ दौड़, हरि करता हुक्म सुणाइंदा। वेद व्यासा लिख के गया ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता भेव कोए ना पाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद कहे जाए बौहड़, जो अर्शां उते अर्शी डेरा लाइंदा। नानक निरगुण कहे खेल करे अवर का और, बोध अगाधा आप जणाइंदा। गोबिन्द कहे वेखणा कर के ग़ौर, गहर गम्भीर सम्बल डेरा लाइंदा। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी रस ना मिट्ठा ना कौड़, अनरस आपणी धार चलाइंदा। जिस अग्गे किसे ना चले ज़ोर, सो ज़ाबर आपणा हुक्म वरताइंदा। सचखण्ड दवारा देवे खोल्ह, सति सतिवादी राह वखाइंदा। लेखा जाणे उपर धरनी धरत धौल, ज़िमीं असमानां पड़दा लाहइंदा। बिस्मिल हो के जाए मौल, मौला हो के वेख वखाइंदा। करता हो के पूरा करे कौल, करनी आपणे हथ्थ वडियाइंदा। सति पुरख निरँजण हो के रहे अडोल, लख चुरासी जीव जंत आप डुलाइंदा। सुत शब्द कलयुग जीव रहे ना कोई अनभोल, आलस निंद्रा नेत्र अक्ख खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाइंदा। सच दवारा सोहणा

लग्गा, शब्दी सुत सीस झुकाईआ। हुक्मे अन्दर फिरे भज्जा, गुर अवतारां रिहा उठाईआ। पीर पैगम्बरां देवे सद्दा, सच संदेस सुणाईआ। जन भगतो वेखो आपणा अग्गा, अगला लेखा प्रभू दए वड्याईआ। साचे सन्तो अन्तर जाणो आपणा मज़ा, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। गुरमुखो वेखो लूं लूं विच रचा, ज़ात आपणी तुहाड्डी ज़ात विच छुपाईआ। गुरसिख वेखो पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा राम सच्चा, रमया इक्को बेपरवाहीआ। जिस गोबिन्द बणाया आपणा बच्चा, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। कलयुग अन्त बीस इकीसा हुक्मे अन्दर करे सर्ब इकट्ठा, इकत्तरता इक्को घर वखाईआ। चौथे युग सब दा पिछला पाड़या पटा, जगत मुणयाद दिती मुकाईआ। अग्गे खेल करे पुरख समरथा, समरथ आपणी कार कमाईआ। सचखण्ड दवारे जो निरगुण हो के वसा, सरगुण देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच्चा घर, जिस गृह गुर अवतार पीर पैगम्बर डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोलृण अक्ख, बिन नैणां नैण उठाईआ। पतिपरमेश्वर नज़र आए प्रतख, जिस दा पिता ना कोई माईआ। सरन सरनाई चरण कँवल सच जगदीश जावण ढट्ठ, निउँ निउँ लागण पाईंआ। परवरदिगार साडी बस, पीर पैगम्बर बसते रहे बन्नृाईआ । अल्फ़ ये रिहा ना कोई रस, मकतब सच ना कोइ पढ़ाईआ । ऐन खुल्ही ना कोई अक्ख, नुक्ता नून ना कोए मिटाईआ। गुरु गुरदेव कहिण तेरा भुल्लया सब नूं जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण दुहाईआ । वस्त अमोलक किसे ना आवे हत्थ, कूड़ी क्रिया जगत लोकाईआ। त्रैगुण माया सृष्टी रही मच, पंज तत जलन ना कोए बुझाईआ। नौ दवारे रहे नच्च, मन नटुआ स्वांग वखाईआ। सरन सरनाई प्रभ ठाकर तेरी गए ढट्ठ, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर लए कट, धुर दी सेव कमाईआ। अन्तिम सारे आए छड्ड, नाता अग्गे ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, हरि ठाकर तेरी ओट रखाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सजदा, दर ठांडे सीस निवाईआ। दर दरवेश होए बरदा, बंदीख़ाना दे तुड़ाईआ। तेरा रूप नरायण नर दा, नर हरि तेरी सरनाईआ। तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, सब बैठे सीस निवाईआ। नित नवित्त सब तेरा कलमा पढ़दा, नाम तेरे वड्याईआ। वेख्या खेल तेरा थिर घर दा, जिथ्थे शब्द गुरू बैठा आसण लाईआ। ना जीउदा ना कदे मरदा, इक्को रंग समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करदा, सोहँ राग अलृाईआ। सदी चौधवीं सब नूं फड़दा, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। कलमा जाणे घर घर दा, कायनात खोज खुजाईआ। शरअ विच कदे ना वड़दा, लाशरीक दिसे नूर खुदाईआ । राज राजानां कोलों कदे ना हरदा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। महल अटल उच्च मनारे चढ़दा, सूफीआं भगतां लए उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१०५३
१६

१०५४
१६

कर, इक्को देणा साचा वर, कलयुग अन्तिम मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर डाहवण झोली, तन ख़ाकी नज़र कोए ना आईआ। हउँ दरवेश दर ठांडे बणे गोली, गहर गम्भीर तेरी सेव कमाईआ। पंज तत काया लोकमात छड्डी चोली, जोती जोत जोत समाईआ। शब्द अगम्म तेरी सब तों वक्खरी बोली, अनबोलत दएं समझाईआ। निरगुण निरवैर साडी प्रेम प्रीती अन्दर चुक्की डोली, सच दवारे दित्ता वसाईआ। एथे दूजा कोई ना पावे रौली, इक्को तेरा हुक्म वरते बेपरवाहीआ। ना कोई दिसे तन्द मौली, मैंहदी रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर अलख अलख निरजंण, गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि मंगण, निउँ निउँ लागण पाईंआ। उच्ची कूक पुकारन तूं दाता दर्द दुःख भय भंजन, भावना सब दी आपणे विच टिकाईआ। अकाल मूर्त इक्को मदन, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण तेरा रूप बेपरवाहीआ। चरण कँवल सच दुआर कराएं मजन, मजलस आपणी लएं बहाईआ। जिथ्थे नाद नगारे अगम्मी वज्जण, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। सच प्रेम प्रीती आवे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। मस्तक टिक्का नाम लगावें चन्दन, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। दीन मज़्हब शरअ कोई ना रहे बन्धन, बंदगी इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे आस लगाईआ। दर तेरे रखी आस, आशा तेरे नाल मिलाईआ। जुग जुग दी मिटे प्यास, तृष्ना दे गंवाईआ। गोपी काहन बण के पाई तेरी रास, सख़ीआँ नाल नाच नचाईआ। पीर पैगम्बर हो के सुणी सुणाई तेरी आवाज़, ढोला राग अल्ह़ाईआ। सरगुण हो के निरगुण तेरा वेख्या खेल तमाश, ख़ालक ख़लक अन्दर डेरा लाईआ। कलयुग अन्त पूरा कर भविक्ख्त वाक, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख खुशी मनाईआ। तुध बिन तेरा कोई ना जाणे राज़, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। सच बेनन्ती इक अरदास, दोए जोड़ डण्डौत इक कराईआ। पारब्रह्म प्रभ वसणा भगतां पास, भगवन आपणा रंग वखाईआ। आत्म परमात्म दस्सणा धुर दा पूजा पाठ, हवन इक्को वार कराईआ। कूड़ी क्रिया नेड़ ना आए कोई बदमाश, मनमति ना कोए लड़ाईआ। घर विच घर वखाउणा सच प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जो गुरमुख गुरसिख बण गए तेरे दास, दासी दास बण के ओन्हां सेव कमाईआ। अन्दर वड़ के डूंघी कन्दर वसीं पास, जगत दवारे पन्ध मुकाईआ। जागत सोवत मारीं इक आवाज़, इन्द्रा निंद्रा आलस परे हटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करीं ख्वाहिश, आसा आपणी झोली पाईआ। साहिब सतिगुर साचे दर तों जाए ना कोए निरास, निरासा आसा विच बदलाईआ। दरस वखाउणा साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्को देणा धुर दा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेल मिलाउणा जग, सतिगुर

तेरी इक सरनाईआ। त्रैगुण बुझौणी अग्ग, ममता मोह मिटाईआ। दरस देणा उपर शाह रग, घर सच होए रुशनाईआ। बिन मक्के काअब्यो होए हज्ज, हुजरा हक़ देणा वखाईआ। मेल मिलाउणा बिन मन्दिर मट्ठ, शिवदुआला इक्को इक समझाईआ। साची देणी ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या धुर पढ़ाईआ। आपणे मिलण दी खोल्हणी अक्ख, दिब नेत्र कर रुशनाईआ। जगत विकारयों कर के वख, वक्खरा आपणा घर जणाईआ। जिस मन्दिर प्रभ रिहों वस, तिस खेड़े लैणा बहाईआ। तेरी किरपा आईए नट्ठ, जग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। सच सरनाई जाईए ढट्ठ, चरण धूढ़ी ख़ाक लगाईआ। सिर हत्थ देणा रख, रक्षया करनी थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे रिहा दृढ़ाईआ। सतिगुर पूरा दया कमाउँदा ए। गुरमुखां आप समझाउँदा ए। जगत सुत्तयां आप उठाउँदा ए। जुग रुट्ठयां फड़ मनाउँदा ए। बिन पुछयां दात वरताउँदा ए। रातीं सुत्तयां मेल मिलाउँदा ए। जगत विकारे कोलों छुडाउँदा ए। सच दवारे आप बहाउँदा ए। शब्द नगारे नाद वजाउँदा ए। अमृत ताल सुहावे आप नुहाउँदा ए। जोत निरँजण दीपक डगमगाउँदा ए। अमृत रस रस चखाउँदा ए। जन भगतां हो के वस, घर घर फेरी पाउँदा ए। प्रेम प्यार दा दे के रस, रस रसीया वंड वंडाउँदा ए।
१०५५ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन्म कर्म दे विछड़े लए फड़, बिछरत आपणा मेल मिलाउँदा १०५५
ए। लेखा जाणे चोटी जड़, सीस धड़ काया कंचन गढ़ अन्दर वड़, महल अटल सोभा पाउँदा ए। कन्त सुहागी हो के लए
१६ वर, शब्द अनादी हो के लए फड़, ब्रह्म ब्रह्मादी हो के खोज खुजाउँदा ए। जो जन सरन सरनाई गए पड़, तिन्हां तुटा हँकारी १६
गढ़, निवण सो अक्खर इक पढ़ाउँदा ए। पुरख अबिनाशी किरपा कर, भगत सुहेला देवे वर, वारता आपणी जन भगतां नाल बणाउँदा ए। गुरमुखो गुरसिखो मुड़ के जाओ आपणे घर, जिथ्थे आवे ना कोई डर, सतिगुर स्वामी बन्न्हे आपणे लड़, नाता इक्को घर बणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए उह घर, जिस दरवाज़े अन्दर आपे वड़ के निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल सोभा पाउँदा ए।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी अवतार सिँघ दे खूह उते काउँके ज़िला अमृतसर *

सतिगुर किरपा सच सुख, सुख आत्म आप वखाइंदा। सतिगुर किरपा मन वासना मिटे दुःख, ममता मोह ना कोए सताइंदा। सतिगुर किरपा चुक्के भुक्ख, सच भण्डार झोली पाइंदा। सतिगुर किरपा उजल मुख, कूड़ी क्रिया दूर कराइंदा। सतिगुर किरपा धरनी धरत धवल आकाश पाताल होवण खुश, खुशीआं राग सुणाइंदा। सतिगुर किरपा साचा रस मिले घुट्ट, अमृत धार वहाइंदाउ।

सतिगुर किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिगुर किरपा कारज रास, दुःख सुख विच बदलाईआ। जिउँ सतिगुर मिल गुरमुख मिटे प्यास, तिउँ धरनी धरत जल पाणी रही बिल्लाईआ। बिन नीर कोई ना उपजे शाख़, पत्त टहिणी ना कोए महकाईआ। पंखड़ी सोहे ना कोई फुल गुलाब, गुलशन रंग ना कोए रंगाईआ। बिन आब ना कोए सवाब, सुख शांत ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जल कहे मैं धरती रस, रसां विच्चों रस नज़री आइंदा। प्रभ दी करनी एहदे अन्दर रिहा वस, खेड़ा अड्ड ना कोए बणाइंदा। किरपा करी पुरख समरथ, मेरी सोहणी वंड वंडाइंदा। प्रेम प्यार नाल अन्दरों झट्ट, कतरा कतरा बूँद बूँद बरसाइंदा। मेरा इक अगम्मी रस, पंजां तत्तां विच सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। धरनी कहे मेरी डूंघी धार, समझ किसे ना आईआ। किरपा करी आप निंरकार, जल पाणी ख़ाक मिलाईआ। मेरे अन्दरों आवे बाहर, आपणा रूप बदलाईआ। सेवा करे विच संसार, सोहणी कार कमाईआ। जन भगतां कारज दए स्वार, जिउँ धन्ने जट्ट मिल्या गोसाईंआ। गुरमुख कदे ना आवे हार, मेहरवान होए सहाईआ। ठंडे जल वगदी रहे नसार, सोहणा रंग बणाईआ। खेड़ा वसदा रहे अवतार, प्यार बणया बेपरवाहीआ। यारां विच्चों यारां दा यार, विहारां विच नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सदा सद होए सहाईआ।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी हाज़ारा सिँघ दे गृह काउँके ज़िला अमृतसर *

पुरख अकाल सदा समरथ, सतिगुर सूरबीर अख्वाइंदा। सच दवारे आपे वस, हर घट आपणा नूर धराइंदा। बोध अगाध शब्दी दस्स, धुर दा ढोला आप सुणाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर हो के वस, वास्ता निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। नर नरायण निज नेत्र खोल् अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जुग जुग जन भगत सुहेले सज्जण सद, सदा आपणा नाम सुणाइंदा। गृह मन्दिर कराए आपणा हज्ज, काया काअबा इक वखाइंदा। ढोला राग सुणाए छन्द, सोहणा ताल वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक सुहाईआ। जुग चौकड़ी हरिजन वेखे आपणे लाल, लालण लख चुरासी खोज खुजाईआ। पूरब जन्म जो घालण आए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। बिन मंगयां देवे दान, बिन खोज्यां घर घर पर्दा दए उठाईआ। सति प्रीती देवे चरण कँवल ध्यान, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। आत्म ब्रह्म उपजे इक ज्ञान, निरअक्खर दए समझाईआ। शास्त्र

सिमरत वेद पुराण जिस नूं गाण, सिफ्त सालाही राग अलाईआ। जो परम पुरख शाह सुल्तान, शहिनशाह जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, सति प्रधानगी इक अख्वाईआ। लख चुरासी धुर दा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा समझाईआ। पुरख अकाल सर्ब गुणवन्त, गहर गम्भीर हरि अख्वाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। नाम प्रगटाए साचा मंत, मन्त्र इक्को इक वखाइंदा। जन भगत सुहेले प्रगटाए विच्चों जंत, जीवण जुगत इक वखाइंदा। घर मिलावा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी मेल मिलाइंदा। शब्द अनादी बण के पंडत, धुर दी विद्या आप सिखाइंदा। दूजे दर ना जाए मंगत, दरवेश हो ना अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा खेल वखाइंदा। पुरख अकाल सर्ब गुण ठाकर, शाह पातशाह आप अख्वाइंदा। सृष्ट सबाई वेखणहारा डूंघा सागर, नव नौ चार खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे करीम करता कादर, कुदरत विच आपणी धार चलाइंदा। जन भगतां दर घर साचे देवे आदर, अदने आहला आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पुरख अकाल हरि सज्जण मीत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी नित नवित्त अगम्मी रीत, लोकमात सके ना कोए समझाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर सखीआं बण के गावण गीत, सोहणा सोहला राग सुणाईआ। सो ठाकर स्वामी बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। किसे हथ्थ ना आवे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ देण दुहाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म सुणे चीक, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के वेख वखाईआ। जिन्हां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिलण दी रखी उडीक, तिन्हां मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक वखाईआ। पुरख अकाल वड गुणवन्ता, रसना जिह्वा कहिण किछ ना पाईआ। देवे वड्याई साचे सन्तां, सतिगुर आपणा भेव चुकाईआ। संग रखाए जिउँ नार कन्ता, जोड़ी धुर दी जोड़ जुड़ाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगता, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए साची संगता, हरिसंगत आपणा नूर दरसाईआ। लेखा चुक्के भुक्खा नंगता, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। काया चोली सच्ची रंगदा, नाम मजीठी रंग चढ़ाईआ। लेखा चुक्के ख़ाने बंद दा, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ । मेल मिलाए गुजरी चन्द दा, शब्दी जोती धार समाईआ। लहिणा देणा चुक्के भेख पखण्ड दा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नाम निधान अगम्म अथाह दौलत आपे वंडदा, देवणहारा चाईं चाईंआ। सच दवारे काया मन्दिर आपे लँघदा, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ । रस माणे आत्म सेज सच्ची पलँघ दा, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। अमृत जाम प्याए सच्ची गंग दा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी नैण शरमाईआ। करे प्रकाश धुर दे चन्द दा, जोती जाता डगमगाईआ। नित नवित्त जन भगतां संग सदा हंढुदा, एथे ओथे होए सहाईआ। नाता

१०५७ १६

तोड़ नार दुहागण रंड दा, घर सुहागण दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मिलाए सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल धुर दा सज्जण, हरि करता आप अख्वाईआ। जन भगत कराए धूढ़ी मजन, दुरमति मैल धवाईआ। गढ़ हँकारी कूड़े भज्जण, भाण्डा भरम भउ रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेले आवे सद्दण, अन्दर वड़ के लए उठाईआ। जन भगतां होवे पड़दे कज्जण, ओढण इक्को सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण सच गोसाईंआ। हरि सज्जण प्रभू सच गोसाईं, गहर गम्भीर इक अख्वाइंदा। जुग जन्म विछड़े पकड़े बांहीं, फड़ बांहों गले लगाइंदा। सच दवारे करे सच नयाईं, अदालत हक़ो हक़ वखाइंदा। सन्त सुहेला बण के देवे ठंडीआं छाईं, गुर चेला आपणे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन लहिणा देणा झोली पाइंदा। हरिजन लहिणा देणा दए ज़रूर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। प्रगट होए जोती नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द अनाद अगम्मी तूर, तुरिया तुरत हुक्म सुणाइंदा। अमृत आत्म देवे सति सरूर, मधुर रस इक चखाइंदा। डूंघी कन्दर हाज़र हो हज़ूर, हज़रत आपणा मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दे बख्शे आप कसूर, पाप अपराध दुरमति मैल डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर आप जगाइंदा। पुरख अकाल साहिब सतिगुर सच्चा, सच सच्ची वड्याईआ। सन्त सुहेला वेखे बच्चा, बचपन आपणी गोद टिकाईआ। काया माटी भाग लगाए तन कच्चा, पंज तत मेला सहिज सुभाईआ। जोत प्रकाश सच्चा रखा, धुन नाद शनवाईआ। निरगुण हो के फिरे नट्ठा, सरगुण खोज खुजाईआ। लेखा जाणे तत अट्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पड़दा दए चुकाईआ। आवण जावण कर किरपा मेटे रट्टा, लख चुरासी बन्धन बंध कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख लए उठाईआ। पुरख अकाल जाए तुठ, दीनन दया कमाइंदा। गुरसिख सज्जण वेखे लुक, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाइंदा। दयाल हो के लए पुछ, शब्दी शब्दी आवाज़ लगाइंदा। उठ लाडले धुर दे सुत, सति सतिवादी आप जगाइंदा। पिछला पैंडा गया मुक्क, अग्गे आपणा पन्ध दरसाइंदा। जो गुरमुख गुरसिख साहिब सतिगुर पूरे जावण झुक, तिन्हां झाकी आपणा नाम सति सरूप वखाइंदा। एथे ओथे अग्गे पिच्छे पैंडा जाए मुक्क, मुकम्मल आपणे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जाम प्याए अगम्मी घुट्ट, रस बिन रसना आप चखाइंदा।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह लेलीआं ज़िला अमृतसर *

गुर अवतार करन अरदास, सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। तेरी वस्त प्रभ तेरे पास, पुरख अकाल दिती टिकाईआ। साडे वेख ख़ाली हाथ, चारों कुण्ट जणाईआ। शब्द संदेसा तेरा नाम निधान अक्खरां विच लिख के आए आख, भविक्ख्त वाक इक दृढ़ाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म सर्ब जीआं दा माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। नित नवित्त जुग चौकड़ी जिस दा जाप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। सदा सुहेला मेटणहार अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भरम भुलेखा दूर कराए ज़ात पात, दीन मज़्ह्ब इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पीर पैगम्बर रहे झुक, सजदा परवरदिगार कराईआ। नूर खुदाई साडा पैंडा गया मुक्क, पांधी पन्ध ना कोए चलाईआ। तेरे कदमां सीस बैठे सुट्ट, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबकां पई लुट्ट, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। प्रेम प्यार ना मात पुत्त, पिता पूत ना संग निभाईआ। उजल दिसे ना किसे मुख, कूड़ी क्रिया लग्गी शाहीआ। शेख़ मसायक भोगण दुःख, हस्ती सच ना कोए मिलाईआ। साची दरगाह गए रुट्ठ, सनमुख नज़र कोए ना आईआ। चौथे युग औध रही पुग, लेखा चुक्के थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१०५६ साचा दे दे इक वर, शहिनशाह तेरी शरनाईआ। जन भगत रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सति स्वामी तेरी देवे कोई १०५६
१६ ना सो, साचा राह रहिबर ना कोए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म प्रेम प्रीती बैठे खोह, कूड़ी क्रिया घर घर करे लड़ाईआ। अमृत रस निझर कोई ना देवे चो, चोर यार ठग्ग बणी लोकाईआ। सच प्रकाश निर्मल जोत ना देवे कोई लो, लोक परलोक पर्दा ना कोए उठाईआ। हउमें हंगता ना कोई तुड़ाए माया मोह, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। आत्म परमात्म घर विच घर ना जाए छोह, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। अबिनाशी करते प्रतख स्वामी प्रगट हो, निरगुण निरगुण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर ठांडा मंग मंगाईआ। सन्त सुहेले रहे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए हार, गीता ज्ञान पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अञ्जील कुरान होए ख्वार, तीस बतीसा साचा नाअरा नग़मा हक़ ना कोए अलाईआ। दीद दरस ना कोई परवरदिगार, ईद चन्द ना कोए रुशनाईआ। रफ़ीक मिले ना सांझा यार, धुर मेल ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट दिसे ख्वार, घर घर पई लड़ाईआ। जीव जंत बणे दुहागण नार, कन्त सुहाग नर हरि नरायण ना कोए हंढाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण तेरी ओट तकाईआ। जल थल महीअल पा सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत खोज

खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दे वड्याईआ। गुरसिख गुरमुख मारन धाह, नाअरा इक्को इक लगाईआ। किरपा कर बेपरवाह, बेअन्त तेरी शरनाईआ। साचा भुल्ले सर्ब राह, मार्ग नज़र किसे ना आईआ। गूढ़ी निन्दर ग़फ़लत सुत्ते अक्ख ना सके कोई खुल्हा, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। साचा मन्दिर काया सके ना कोए सुहा, चार कुण्ट उठ उठ भज्जण वाहो दाहीआ। घर दीपक सच प्रकाश ना सके कोई जगा, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। अमृत आत्म जाम सके ना कोई प्या, अठसठ तीर्थ वेखण थाउँ थाईंआ। निज नेत्र दर्शन सके ना कोई पा, दोए लोचण जगत वेख वेख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। गुर अवतार करन बेनन्ती, दोए जोड़ सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण साडी मिटी हस्ती, हस्ती तेरे विच समाईआ। भगत कहिण भगवान तुध बिन देवे ना कोई मस्ती, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। सन्त कहिण तेरा मेल होवे उपर अर्शी, अर्श फर्श दोवें तेरी सरनाईआ । गुरमुख कहिण तूं पतिपरमेश्वर कृपानिधान हो के परतीं, लोकमात फेरा पाईआ। गुरसिख कहिण धन्न भाग सुहौणी सुहञ्जणी धरती, चरण कँवल उपर धवल आप टिकाईआ। हरिजन आसा कदे ना मरदी, मर जीवत रूप वटाईआ । सतिगुर सरनाई मिल भवजल तरदी, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। सच दुआर अगम्मी मंज़ल चढ़दी, पौड़ी डण्डा हत्थ ना कोए फड़ाईआ। गीत संगीत इक्को पढ़दी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला राग अलाईआ। दर दरवेश बणे बरदी, सेवक हो के सेव कमाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे अग्गे सब दी इक्को अर्ज़ी, आरज़ू सब दी इक सुणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत खेल दिसे फ़र्ज़ी, फ़ैसला तेरे हत्थ जिउँ भावे लैणा चलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे अग्गे चले ना किसे कोए मर्ज़ी, मर्ज़ अलामत कूड़ी देणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा देणा वखाईआ । गुर अवतार पिछली फोलण फ़रद, पर्दा उहला आप चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण तूं साहिब वेख दर्द, दर्दी हो के दया कमाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को तेरे हत्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो करदे गए लिख्त पढ़त, माण दे के काग़ज़ कलम शाहीआ। अन्तिम तेरी पूरी होई शर्त, संसा छक्क रिहा ना राईआ। पिछला रहिण ना देणा फ़र्क, फ़िकरा इक्को इक सुणाईआ। अगला लेखा असीं कीता तरक, तेरा हुक्म सुण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, साहिब सुल्तान तेरे हत्थ वड्याईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर हो ख़ामोश, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरे मिलण दी सच्ची लोच, लोचण बैठे ध्यान लगाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल सच दवारे आपे पहुंच, निरगुण बण के पांधी राहीआ। हरिजन सन्त सुहेले वेख निर्दोष, दोषां भरी सर्ब लोकाईआ। बिन तेरे चरण सच मिले ना

कोई मौज, मुहब्बत हक़ ना कोए वखाईआ। तूं सतिगुर साहिब स्वामी इक्को बहुत, बहुते गुरू ना कोए वड्याईआ। तेरे सन्तां तेरे भगतां नेड़ ना आवे लाड़ी मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। तूं पतिपरमेश्वर परवरदिगार साचा ख़ौंत, नार कन्त आप प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, कलयुग अन्तिम कूक कूक दए दुहाईआ। सच दवारा वेख्या लँघ, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी सचखण्ड सुत्ता इक पलँघ, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। थिर घर वज्जे नाम मृदंग, सुर ताल समझ सके कोए ना राईआ। ना कोई रसना जिह्वा गाए बत्ती दन्द, पंज तत ना कोए वड्याईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। इक्को बैठा सूरा सरबँग, योद्धा सूर हरि शब्दी नाउँ धराईआ। जो गुर अवतार पीर पैगम्बरां लावे अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जन भगतां वसे सदा संग, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। साचे सन्तां देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गुरमुख चाढ़े सति सतिवादी चन्द, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां टुट्टी देवे गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। भेव खुल्हाए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म समझाईआ। लहिणा देणा मुकाए जन्म
१०६१ कर्म, कर्म कांड कोए रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज १०६१
नैण करे रुशनाईआ। लेख चुकाए मरन डरन, लख चुरासी शरअ ज़ंजीर तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१६ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुहञ्जणा वेला इक वखाईआ। सच सुहञ्जणा होए वेला, हरि करता आप कराइंदा। १६
मेल मिलाए गुरु गुर चेला, चेला गुर आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेला, साचा जोड़ जुड़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी खेल खेला, बण नटुआ स्वांगी स्वांग रचाइंदा। आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखे आपणा वेला, वार थित ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाइंदा। करनी करता करे समरथ, महिमा अकथ वड वड्याईआ। जो किछ सो आपणे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ सर्ब लोकाईआ। मेहरवान हो के देवे वथ, मिहबान हो के मुहब्बत नाता जोड़ जुड़ाईआ। दीन दयाल हो के खोल्हे अक्ख, निज नेत्र करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वाक भविक्ख्त जो आया दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव खुल्हाईआ। सो कलयुग अन्तिम वेखे हस्स हस्स, हस्ती विच्चों आपणी हस्ती आप प्रगटाईआ। जन भगतां देवे धुर दा रस, रस आत्मक आप चखाईआ। जन सन्त दवारे जाए नट्ठ, पांधी बण के फेरा पाईआ। गुरमुखां दस्से रविआ घट, हर घट डेरा लाईआ। गुरसिखां वखाए खेल सच्च, सच सुच आप समझाईआ। सृष्ट सबाई कलयुग अन्त त्रैगुण अग्नी रही मच्च, पंज तत करे लड़ाईआ। नौ दवारे रही नच्च,

जगत वासना मेल मिलाईआ। साची मंजल किसे ना मुक्कया पन्ध, मन्दिर घर ना वेख वखाईआ। जो गुरमुख गुरसिख सतिगुर सरनाई गए ढह्ठ, तिन्हां लेखा दए चुकाईआ। साची देवे ब्रह्म मति, गुरमति इक समझाईआ। तत वरोले साचे मट्ठ, भठियाला आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दए संदेस, सदा धुर दा नाम सुणाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, हरि करता बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया पंज तत खेली खेड, लख चुरासी चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे बाणी शब्द संदेसा भेज, चारों कुण्ट करी शनवाईआ। कलम शाही काग़ज़ बिन कुतब लिख्या लेख, कातब हो के कर्म कमाईआ। सच स्नेहड़ा इक्को भेज, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। जोती जलवा दे के तेज, आत्म ब्रह्म करी रुशनाईआ। घर मन्दिर माणी अगम्मी सेज, सिँघासण सोहणे डेरा लाईआ। कलयुग अन्त पिछली मेटे रेख, लेखा अगला दए दृढ़ाईआ। दो जहानां खोल्हे आपणा भेत, अभेव आप समझाईआ। जन भगतां रुत्त बसन्ती मौले चेत, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। निरगुण सरगुण करे हेत, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। तत्ती वा ना लग्गे महीना जेठ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले रिहा तराईआ। सन्त सुहेले सो कहीए सिख, जिस सतिगुर दया कमाइंदा। नाम पदार्थ पाए भिख, भिच्छया इक्को इक वरताइंदा। बिन दोहां अक्खां पए दिस, निज नेत्र नज़री आइंदा। सच प्रीती करे हित, प्रेम प्यार नाता जोड़ जुड़ाइंदा। करवट लै बदले पिठ, सनमुख स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। अबिनाशी करता हो के वसे चित, चितवित ठगौरी कोए ना पाइंदा। पतिपरमेश्वर हो के लेखा जाणे मात पित, पिता पूत गोद उठाइंदा। जन्म कर्म दा लहिणा देणा घर आ के जाए नजिठ, अगला पिछला पन्ध मुकाइंदा। सो गुरमुख सन्त सुहेला कहीए सिख, जिस साख्यात काया मन्दिर अन्दर निज नेत्र सतिगुर जोती नूरी नज़री आइंदा। निहकर्मी हो के अगला लेखा दए लिख, पिछला लेख आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत भगवन्त लए वर, घर मन्दिर काया अन्दर इक सुहाइंदा।

* ६ जेठ २०२१ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर *

शब्द अगम्मी धुर दी लिख्त, जगत विद्या समझ किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण भेव चुकाए भविक्ख्त, धुर संदेसा राग सुणाईआ। जुग चौकड़ी सच प्रीती लग्गा इश्क, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सतिजुग सति सतिवादी खोल्हणहारा दृष्ट,

इष्ट आपणा इक समझाईआ। त्रेता कहे पतिपरमेश्वर मेरी पूरी होए तृप्त, आसा मनसा विच समाईआ। बाल्मीक कहे मैनूं दित्ता सिदक, साची सिख्या इक समझाईआ। सच दुआर वखाया आदर्श, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया कोलों दित्ता वर्ज, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। किरपा कर मर्दाने मर्द, सच मर्दानगी दिती समझाईआ। दोए जोड़ चरण कँवल आरज़ू कीती अर्ज़, बेनन्ती इक्को इक सुणाईआ। पारब्रह्म तूं नित नवित्त वंडें दर्द, दुखियां दीनां अनाथां होएं सहाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, अचरज लील्हा आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। त्रेता कहे मेरी मिटी तृखा, तृष्ना मूल रहिण ना पाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल इक्को दिसा, चारों कुण्ट दहि दिशा करे रुशनाईआ। जन भगतां वंडे साचा हिस्सा, मेहर नज़र इक उठाईआ। गिरवर गिरधार बण के धुर दा पिता, पूत सपूते गोद उठाईआ। कोई ना जाणे कद्द वड्डा निक्का, बाल बिरध जवान समझ किसे ना आईआ । करे खेल अबिनाशी अचुता, चेतन आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। त्रेता कहे मेरा मिटया सोग, चिन्ता दुःख रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करते सुणाया इक श्लोक, सोहणा ढोला राग अल्हाईआ । कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अँध्यार दित्ता मिटाईआ। भेव खुल्हाया लोक परलोक, दो जहानां वज्जे वधाईआ। सच सरनाई बख्श ओट,

१०६३ चरण कँवल मिले वड्याईआ। अन्तर आत्म परमात्म दस्सी गोत, ज़ात अजाति रूप ना कोए वटाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर हो १०६३

१६ के मोहत, मुहब्बत इक्को इक लगाईआ। जिस दी कोई सोच ना सके सोच, समझ विच ना कोए चतुराईआ। सो ठाकर १६

हो के जाए पहुंच, बेपरवाह हो के फेरा पाईआ। जन भगतां देवे साची मोख, मुफ्त आपणा नाम वरताईआ। घर वखाए काया बंक साचा कोट, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। सच नगारे लावे चोट, अनहद नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ। त्रेता कहे मेरी तृखा होई दूर, मनसा मोह ना कोए सताईआ । तुटा माण जगत ग़रूर, हउमे गढ़ ना कोए लड़ाईआ। अग्नी तत ना कोए तन्दूर, सांतक सति मेघ बरसाईआ। दर्शन पाया हाज़र हज़ूर, हज़रत मिल्या बेपरवाहीआ। कोट जन्म दे बख्शणहार कसूर, दुरमति मैल रिहा धवाईआ। जुग चौकड़ी जो लेखा जाणे गुर अवतार पीर पैगम्बर ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। बख्शणहारा जोती नूर, नूर ज़हूर इक समझाईआ । तोड़नहारा नाता कूड़ो कूड़, सच सुच इक वखाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, निर्धन सरधन इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। त्रेता कहे भगत वछल, श्री भगवान आप अख्वाइंदा । जिस दा लेखा आदि जुगादी अछल, वल छलधारी आपणी कार कमाइंदा। निरगुण हो के सरगुण दस्से बचन, शब्द संदेसा आप

प्रगटाइंदा। भाग लगाए काया माटी कंचन, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाइंदा। कर प्रकाश जोत निरँजण, नर हरि आपणी धार चलाइंदा। दर दरवेश विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि मंगण, भिच्छया इच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग आप निभाइंदा। त्रेता कहे प्रभ वेख्या संग, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगतां देणा सच अनन्द, अनन्द आत्म इक प्रगटाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग जाए लँघ, अन्तिम वेखणा चाईं चाईंआ। प्रगट हो सूरे सरबँग, साची करनी लैणी कमाईआ। पूरब लेखा याद रखणा छन्द, जो बाल्मीक दित्ता दृढ़ाईआ। घर स्वामी पौणी ठंड, कूड़ी क्रिया अग्न बुझाईआ। करवट लै बदलणी कंड, सनमुख आपणा दरस दिखाईआ। मरन तों पहलों कर्म दी टुटी लैणी गंढु, जन्म दा लेखा आपणी झोली पाईआ। तेरी सिफ्त कोई गा ना सके बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सार कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रेता कहे तेरा भगत प्यार, भगती विच्चों नज़री आईआ। तूं साहिब सतिगुर सिरजणहार, वड दाता गहर गम्भीर अख्वाईआ। तेरा लेखा सदा रहे जुग चार, नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे दर ते मंगदे रहिण भिखार, भिक्खक आपणी झोली डाहीआ। तूं दाता दानी शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। तेरा बोध अगाध शब्द नाम जैकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान तेरा जस गाईआ। तूं अगम्म अथाह बेऐब खुदाई परगवरदिगार, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। तूं मुकामे हक़ वसणहारा ठांडे दरबार, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कोटन कोटि गुर अवतार, पंज तत काया चोला जगत हंढ्ढाईआ। सिख्या दे दे विच संसार, साची जगत करन पढ़ाईआ। तेरा कोई ना जाणे अन्त पारावार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि कहि खुशी मनाईआ। तेरे अग्गे मिन्नत एकँकार, दोए जोड़ सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा इक वर, घर सच अलख जगाईआ। त्रेता कहे मेरे साचे नेता, नेत्र तेरा इक्को नज़री आईआ। भगत उधारन तेरा पेशा, पेशीनगोई सर्ब सुणाईआ। पूरब परम पुरख रखें चेता, अभुल्ल भुल कदे ना जाईआ। वेखें वसें सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची डेरा लाईआ। कोई ना जाणे तेरा लेखा, काग़ज़ कलम शाही बैठी मुख भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत काया तेरी चाढ़्न भेंटा, निरगुण नूर तेरे विच समाईआ। तेरा प्रेम प्यार विच्चों सन्त सुहेला प्रगटे बेटा, जिस दा इक्को इक पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रेता कहे औह वेख पुत्तर, पतिपरमेश्वर, तेरी गोद सुहाईआ। तेरा शब्द तेरी धारों आए उतर, ना कोई जन्मे पिता माईआ। साची गोद सति स्वामी बहे तेरे कुच्छड़, अमृत सीर इक्को मुख चुआईआ। सति सतिवादी ब्रह्म पारब्रह्म तेरा खा के धुर दा टुक्कर, आदि जुगादि शुकर मनाईआ। कर के कौल इकरार

कदे ना जाणा मुक्कर, मुख सके ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा देणा चुकाईआ। साचा पड़दा चुक्क भगवन्त, दर तेरे अरज़ोईआ। तूं मालक जीव जंत, लख चुरासी तेरा रूप इक्को होईआ। धुर दा नाम मणीआ मंत, देवें साची ढोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रीती अन्तर लैणा मोहीआ। त्रेता कहे दे तृप्तास, तृखा जगत बुझाईआ। सच स्वामी पूरी कर आस, मनसा विच मिलाईआ। पूरब रखणा याद, याददाशत इक दृढ़ाईआ। जो बातन बाल्मीक नाल कीती बात, लेखा लिखे कोए ना कलम शाहीआ। ओस दा देणा सच्चा इक जवाब, शब्द तराना राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। बाल्मीक कहे सुण मेरे बाप, तेरी वड वड्याईआ। इक्को अक्खर दित्ता आख, आखर कर पढ़ाईआ। निरगुण हो के दस्सया जाप, तूं मेरा मैं तेरा इक्को हुक्म वरताईआ। सच सरनाई गया लाग, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं किरपा कर के ल्या झाक, मेहर नज़र उठाईआ। नाता तुट्टया कूड़े साक, सज्जण रहिण कोए ना पाईआ। बंद किवाड़ी खुल्ल्ह्या ताक, घर घर विच होई रुशनाईआ। मन्दिर दिस्सया इक्को साच, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दित्ता जणाईआ। साचा लेखा दस्सया एक, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। प्रेम प्यार अन्दर पेख, मेरी मेरे विच्चों गंवाईआ। नेत्र खुल्ह्याया नेत नेत, निज नैण करी रुशनाईआ। सच दवारे खोल्लया भेत, पड़दा आप उठाईआ। दुआर वखाया अगम्मी देस, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। नज़री आया नर नरेश, शहिनशाह इक्को बेपरवाहीआ। दो जहानां रिहा वेख, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। गुर अवतारां रिहा भेज, पंज तत देवे माण वड्याईआ। आपे जाणे आपणी रेख, रूप रंग समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा दृढ़ाईआ। साची करनी तेरी भगवान, तेरे विच्चों नज़री आईआ। तेरा हुक्म धुर फ़रमाण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लेखा लिख्या गुण निधान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह्याईआ। भेव अभेदा देवां खोल्ह, हरि करता आप जणाइंदा। तेरे अन्तर वसां कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। तेरे हथ्थ भण्डार दे अनतोल, अनमुलड़ी वस्त वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। मेहर नज़र गई उठ, नेत्र नैण नैण निहालया। कर प्यार भगत भगवान जिउँ माँ पुत्त, साचा मार्ग इक सुखालया। लोकमात ना कोई लुक, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटा ल्या। सच सुहञ्जणी मौले रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखा ल्या। पंज तत काया जन्मे ततव पुत्त, सति सरूपी बणत बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, राम धारों राम पए उठ, राम रंग राम वेखणहार होए खुशहालया। सुण संदेसा धुर दा एक, बटवारा खुशी मनाईआ।

तेरे हथ्थ मेरा भेत, भेव आपणा देणा जणाईआ। तेरी सरनाई मेरा हेत, तेरी वड्याई मेरी सिफ्त सालाहीआ। दर्शन सदा लवां पेख, नेरन नेरा घर साचे नज़री आईआ। निउँ निउँ बन्दना करां आदेश, डण्डावत प्रणाम इक्को मोहे भाईआ। सो रुत्त महीना नौ जेठ, जिस वेले बाल्मीक प्रभ जगत अन्धेरा तारीक दिती मिटाईआ। मिटया अन्धेरा चढ़या चन्द, होई सच रुशनाईआ। अमृत रस इक अनन्द, निझर दित्ता चुआईआ। प्रेम प्रीती अन्दर गाए छन्द, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया होई खण्ड खण्ड, घर ब्रह्मण्ड वज्जी वधाईआ। नाता तुटा जगत रंड, सुहागण हो के खुशी मनाईआ। दोए जोड़ इक्को मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रभ तेरा मिले सदा संग, नाता सके ना कोए छुडाईआ। जिस वेले आवें विच वरभण्ड, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। मेरे नाल आपणा पल्लू लैणा गंढु, कन्नी कन्नी नाल जुड़ाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा वज्जे सच्चा तन्द, सतार काया रबाब हिलाईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के बहिणा सच पलँघ, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देणा थाउँ थाईंआ। श्री भगवान हो दयाल, शब्दी शब्द जणाइंदा। उठ लाडले मेरे लाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग जुग दी तेरी वेखे घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। सतिगुर मिल के जो कीता सवाल, सो इच्छया तेरी भिच्छया नाल मिलाइंदा। किरपा करे हो कृपाल, कृपानिधान वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त करे परवान, सच परवाना नाम फड़ाइंदा। जिस वेले तेरा नेड़े आवे काल, वेला वक्त जगत पन्ध मुकाइंदा। ओस वेले करे फेर संभाल, मेहर नज़र अक्ख उठाइंदा। घर जा के बांहों फड़ आप उठाल, पिछला लेखा याद कराइंदा। मुर्शद हो के पुच्छे हाल, मुरीद आपणे गले लगाइंदा। कूड़ी क्रिया वहिण ना देवे ताल, तलवाड़ा आपणे नाम सुणाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक रुशनाइंदा। सद्दा दे होवे खुशहाल, खुशीआं रंग रंगाइंदा। यारां विच्चों लभ्भे यार, याराना पिछला वेख वखाइंदा। बाल्मीक दा मित्र सरदार, ठग्गां विच्चों ठग्ग इक्को इक वडियाइंदा। जिस दा विछोड़ा होया पिछली रात, दूजे दिन मेल ना कोए मिलाइंदा। उस दी कोझी कमली ज़ात, कुलहीण अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। कुलहीण ज़ात कुलाल, नीचां विच्चों नीच नज़री आईआ। बाल्मीक दा प्रेम प्यार, सज्जण सज्जणां दा संग निभाईआ। जिस वेले साहिब होया कृपाल, मेहर नज़र उठाईआ। सुरती सुरत दिती संभाल, मूर्त अकाल इक्को इक दरसाईआ। सच बेनन्ती मन्न सवाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई विच्चों आकाश, धुन नाद इक्को इक समझाईआ। लेखा लिख नाल कलम दवात, मेल मिलाउणा पाणी शाहीआ। जिस नाल तेरी उपजे शाख़, शहिनशाह आपणा हुक्म समझाईआ। बाल्मीक हौली जिही दित्ता आख, आपणे दोस्त दित्ता बताईआ। तूं मेरा

देणा साथ, मददगीर हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। साची करनी नव जेठ, त्रेता युग मिले वड्याईआ। परम पुरख प्रभ करया हेत, हितकारी फेरा पाईआ। वेख वखाए सज्जण आपणे देस, दिशा कोना वंड वंडाईआ। जिस नाल अगला लिखणा लेख, लेखा चुकाउणा जगत जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। बाल्मीक दा मित्र यार, इक्को संगी नज़री आइंदा। जिस नाल कौल कीता इकरार, बिन अक्खरां लेख प्रगटाइंदा। उठ सज्जण जा बाज़ार, साचा राह इक समझाइंदा। कर के आ वणज व्यपार, सौदा हट्ट वखाइंदा। इक लै के आ कलम दवात, शाही सोहणी बणत बणाइंदा। ढाई घड़ी तेरे उते रहे विश्वाश, धीरज तेरे नाल बंधाइंदा। जे मेरी पूरी करें आस, आसा तेरी अग्गे वधाइंदा। मैनूं परमेश्वर मिल्या ख़ास, जो ख़ालस निरगुण नज़री आइंदा। उहदे नाल तेरा बणावां साथ, जो सगला संग निभाइंदा। तेरी नीचों उच्ची करे ज़ात, ज़ात आपणी आप दरसाइंदा। ओसे वेले कुलाल हथ्थ नाल मिलाया हाथ, बाल्मीक दस्त बदस्त आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाइंदा। धुर दा लेखा कलम शाही, कागज़ दए वड्याईआ। जिस नाल शहादत पाई धुर दी गवाही, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सज्जण तेरा मेला शहिनशाही, आपणे नाल दयां कराईआ। कलयुग अन्तिम दस्स के गया गोसाईं, होवे सच सहाईआ। मरन तों पहलां इक वेरां लवां बचाई, जीवण विच्चों जीवण आप बदलाईआ। त्रेते लिख्या लेख कोई मेट ना सके राई, रहमत आपणी आप कमाईआ। तेरे दवारे मेरे प्रेम दी वज्जे वधाई, प्रीतम ढोला राग सुणाईआ। तैनूं मैनूं दोहां समझ रहे ना काई, काया मन्दिर अन्दर वेखणहारा चाईं चाईंआ। निरगुण बण के आवे पांधी राही, जोती शब्दी वेस वटाईआ। पूरब जन्म दे सज्जण मित्र दोवें लए मिलाई, विछोड़ा पिछला आप चुकाईआ। सच सुहेला आपणी गोद लए उठाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर आपणा हथ्थ टिकावे ठाकर, दो जहानां वेख वखाइंदा। योद्धा सूरबीर वड बहादर, महाबली रूप वटाइंदा। करता करीम होए कादर, कायनात खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के मरन विच्चों आपणा मरन जणाइंदा। मरन विच्चों ना होवे मुर्दा, मुर्शद देवे माण वड्याईआ। जिस दा मन्त्र इक्को फुरदा, फुरने सारे बंद कराईआ। उह लेखा जाणे धुर दा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस वेले जन भगतां बेड़ा वेखे रुढ़दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा फेरा पाईआ। एहो खेल साचे गुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। वेखो मेल किवें जुड़दा, त्रेता युग दए गवाहीआ। परम पुरख दा लेख कदे ना खुरदा, ना कोई अक्खर सके बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल्मीक

दए वड्याईआ। बाल्मीक सुण अगले पिछले बाल, हरि बालम आप जणाईआ। निरगुण तेरा बण दलाल, सरगुण होए सहाईआ। पिछला लेखा चुक्कया काल, अग्गे जंजाल ना कोए जणाईआ। साचा मन्दिर सच्ची धर्मसाल, घर ठाकर दए वखाईआ। तेरा मित्र प्यारा पिछला भाल, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। दोहां वेख होए निहाल, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता इक अख्वाईआ। वड दाता हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर अख्वाइंदा। जन्म जन्म दी मेट के चिन्द, चिन्ता चिखा रोग सर्ब मिटाइंदा। दाता दानी बण के गुणी गहिंद, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। भगत भगवान बणा अनादी बिंद, सुत दुलारे गोद उठाइंदा। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी विच त्रेते जंगल, जूह पहाड़ दए वड्याईआ। बाल्मीक दा मित्र सिँघ मंगल, नीचां विच्चों नीच नज़री आईआ। जिस नूं प्रेम प्यार दा प्या सच्चा संगल, द्वापर कलयुग सक्या ना कोए तुड़ाईआ। जिस दे विच कोई ना गुंझल, घुंडी बंद ना कोए वखाईआ। प्रभ आपणी लगा के आपे उंगल, हौली हौली रिहा चलाईआ। जगत अन्धेरा मेट के धुंदल, सच चन्द करे रुशनाईआ। काया मन्दिर अन्दर खोल्ह के कूड़ी बुक्कल, बुरका

माया दए हटाईआ। करे प्यार जिउँ प्यो पुत्तर, पिता पूत गोद उठाईआ। सज्जणां नाल सज्जण मिल के कहिण शुकर, शुकरीया तेरा नाम नज़री आईआ। पुरख अकाल कीता कौल ना गया मुक्कर, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। निरगुण धारों आपे उतर, सरगुण वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। नव जेठ कहे मेरी मौली रुत्त, घड़ी सुहञ्जणी खुशी मनाईआ। श्री भगवान पूरब लेखा ल्या पुच्छ, पड़दा उहला आप उठाईआ। भगतां भगती पैंडा गया मुक्क, अग्गे करे ना कोए पढ़ाईआ। याद कराए पिछली तुक, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी धार ओसे दा सुत, अबिनाशी अचुत वेख वखाईआ। सुफल कराए जननी कुक्ख, देवे वड्याई धन्न जणेंदी माईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देवे पुट्ट, सति सच सुच दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। हरिजन साचा कहे मेरे पुरख अगम्म, अगम्म तेरी वड्याईआ। किस बिध बेड़ा रिहों बन्न्ह, सच सुच दे समझाईआ। करें प्यार बण के जननी जन, धुर दी गोदी आप उठाईआ। साचा राग सुणाएं कन्न, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जगत वासना मेट के मन, मन का मणका दित्ता भवाईआ। नाता तुट्टया कूड़े तन, तन दा मालक इक्को नज़री आईआ। जिस नूं मिलयां कोई ना देवे डंन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक अख्वाईआ। भगत सुहेला एकँकार, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। लेखा जाणे जुग चौकड़ी चार, नौ सौ चुरानवे युग आपणा

हुक्म वरताइंदा। हुक्मे अन्दर गुर अवतार, पीर पैगम्बर नाम ध्याइंदा। हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव कर के ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत खाणी बाणी बोल जैकार, अञ्जील कुराना तीस बतीसा कलमा नबी पढ़ाइंदा। लोक परलोक दो जहान चौदां तबक पावे सार, चौदां विद्या मूल समझाइंदा। मुल्लां शेख़ मसायक दे हुलार, आलम उल्मा खोज खुजाइंदा। सच दुआर खोल्ह किवाड़, ठाकर स्वामी फेरा पाइंदा। त्रेते युग दा कीता उधार, कलयुग अन्तिम मकरूज आपणा कर्ज़ा लाहइंदा। पाल सिँघ दा पल पल प्यार, बलि बलि बलिहारी जा ख़ुशी मनाइंदा। मंगल सिँघ दा पिछला यार, यारां विच्चों याराना इक्को सच समझाइंदा। जिस विच मिले आप निरँकार, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। दिने जागदयां रातीं सुत्तयां दए दीदार, दरस अदरश इक्को इक वखाइंदा। सद रुत्त सुहञ्जणी मौली रहे बहार, गुलशन धुर दा इक महकाइंदा। नव जेठ वार थित आप विचार, परविश्टा आपणे रंग रंगाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज खाणी बाणी माया तत विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गण गंधर्ब गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, नमो नमो नमो सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा।

१०६६ १०६६

१६ १६

* १० जेठ २०२१ बिक्रमी गुरबख़्श सिँघ नवतेज सिँघ नाल प्रीत लड़ी ज़िला अमृतसर *

गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ दे बच्चे, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। पंज तत काया ढाले संचे, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी मार्ग दस्से, धुर संदेसा इक सुणाईआ। प्रेम प्रीती रंग अगम्मड़े रत्ते, रंग रंगीला वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई जणाए इक्को मत्ते, बुध विवेक दए कराईआ। माणस मानुख बख़्शे हक़े, हकीकत आपणी इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नित नवित्त आपणी खेल वखाईआ। नित नवित्त खेल करे करतार, हरि करता कुदरत वेख वखाइंदा। लेखा जाणे जुग चौकड़ी चार, चारे खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। सच संदेसा दे दे वारो वार, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। साची सिख्या पाए भिच्छया कातब बण के बणे लिखार, नाता जोड़े काग़ज़ कलम शाहीआ। मति बुध करे विचार, मन ममता डेरा ढाहीआ। सर्ब जीआं दा इक प्यार, आत्म परमात्म दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वखाईआ। साचा हुक्म श्री भगवान, हरि करता आप जणाईआ। साचे पुरुषां साचा दान, दाता दानी झोली पाईआ। सृष्ट सबाई रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाण, ढोला इक्को राग अल्लाईआ। सति सतिवादी

दस्सण इक निशान, रहिबर बण के राह देण दरसाईआ। सति सतिवादी बख्शे सच ज्ञान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पतिपरमेश्वर इन्सानां विच्चों इन्सान नादानां विच्चों नादान, मेहरवानां विच्चों मेहरवान अख्वाईआ। उस दा कलमा सच कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। दीन मज़्हब दस्से ईमान, साची सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए बरदा, बंदीख़ाना पंज तत चोला इक समझाईआ। कर प्रकाश नूर चढ़ाए अगम्मी चन्दा, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। लेखा जाणे कोटन कोटि ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी आकाश प्रकाश आपणा खेल वखाईआ। शब्द नाद धुन सच सुणाए छन्दा, धुर दा गीत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी धार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान रहे जस गाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ उच्ची कूकण करन पुकार, हाहाकार रहे सुणाईआ। बिन सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी साचा करे ना कोए प्यार, प्रेम प्रीती नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा सृष्ट सबाई गई हार, सच विचार नज़र किसे ना आईआ। सच्चे गुरमुख कर त्यार, जिन्हां अन्दर इक अधार, दूई द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। साची सिख्या सच सिखाल, काया मन्दिर अन्दर नज़री आए धर्मसाल, इट्टां पत्थर पाहन पूजण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मानुखता दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा करदे रहे जुग, नित नवित्त वेस वटाईआ। अन्तिम सब दी औध गई पुग, थिर रहिण कोए ना पाईआ। काया माटी लोकमात गए सुट्ट, पंज तत काया मढ़ी गोर दबाईआ। सच प्यार दी मौली रही रुत्त, जो सच फुलवाड़ी गए लगाईआ। साचे कर्मां पिच्छे करनी दी होवे पुच्छ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वज्जणा ढोल, ना कोई सके मात बचाईआ। सति वस्त ना किसे कोल, जूठ झूठ घर घर डेरा लाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सारे वेखणे फोल, वस्त अमोलक हट्ट ना कोए वरताईआ। माया ममता होवे घोल, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा पड़दा आप चुकाईआ। साचा पड़दा चुक्के मात, उहला रहिण कोए ना पाईआ। चार वरनां नज़री आए इक्को ज़ात, दीन मज़्हब शरअ ना कोए लड़ाईआ। मन वासना मिटे नार कमज़ात, कुलखणी आपणा रूप छुपाईआ। माणस माणस देवे साथ, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को रंग रूप इक्को मंज़ल पन्ध बैठे मुकाईआ। सच नगारा वज्जे चारे कूट, दहि दिशा होए शनवाईआ।

१०७० १६

सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत बणन सच्चे पूत, सपूत धरनी धरत धवल गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी मार्ग इक समझाईआ। सति सतिवादी मार्ग लग्गे जग, नव नौ चार खुशी मनाईआ। सृष्ट सबाई बुझे अग्ग, हउमें हंगता रोग चुकाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अन्दर सारे जावण बज्झ, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। ऊँच नीच वेखण दी मिट जाए अक्ख, प्रतख सब नूं इक्को रूप नज़री आईआ। जो जन्मया तिस दा इक्को जिहा हक़, छोटा वड्डा दीन दुनी रही बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेला वक्त सुहञ्जणा दए सुहाईआ। वेला वक्त होए सुहञ्जणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई मिले इक्को मजना, घर सरोवर सति नुहाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा सब दा भज्जणा, भय भरम भउ दए चुकाईआ। सच प्रेम अन्दर कर मघना, प्रीती धुर दी इक बंधाईआ। लेखा चुके आहला अदना, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सब दा पड़दा इक्को जिहा कज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। तेरी सरना गुर अवतार, नित नवित्त सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी बुद्धिवान बण लिखार, कागज़ कलम लेखा लिख्या शाहीआ। सदी चौधवीं सच गुफ़तार, गुफ़त शुनीद रहे शनवाईआ। लेखा लिखे सांझा यार, दिवस रैण आपणी कार कमाईआ। जगत अन्दर जगत प्यार, प्यार विच्चों

१०७१

१६

प्यार अन्दर रिहा छुपाईआ। जिस प्यार विच्चों मिले सांझा यार, सब दा मीत गोसाईंआ। सो छप्पर छन्नां वसया बाहर, महल अटल कोठी मन्दिर डेरा कोए ना लाईआ। जिस दी रसना जिह्वा बत्ती दन्द करन गुफ़तार, जिह्वा आपणा नाम नाल नाद मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी इक्को कार कमाईआ। सच प्रीती प्रीत लड़ी, लड़ी लड़ी विच्चों प्रगटाईआ। कवण विद्या लोकमात पढ़ी, कवण अक्खर रहे समझाईआ। कवण मंजल अन्तर आत्म चढ़ी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कवण प्रेमण अग्गे खड़ी, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कवण कहे सुलखणी घड़ी, चारों कुण्ट खुशी मनाईआ। कवण मन वासना बन्न्हे अड़ी, सच सुच ना कोए दृढ़ाईआ। कवण कहे सति सरूप ना कोए हरी, नर नरायण ना कोए शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रीत लड़ी सच प्रीत, कवण धारों लई प्रगटाईआ। कवण मार्ग कवण रीत, कवण रहिबर राह रही वखाईआ। कवण अमृत कवण करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। कवण मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ नाता तुटे मसीत, मसला इक्को इक समझाईआ। कवण सच करे बख्शीश, गुरबख्श बख्शश इक्को देणी दृढ़ाईआ। कवण नवतेज नाचीज़, सच दहिलीज़ पड़दा देणा उठाईआ। कवण बरखुरदार बणे अज़ीज़, सेवक सेवा सति कमाईआ। कवण रखे वड तौफ़ीक, रहमत आपणी आप जणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला वेखे चाईं चाईंआ। प्रीत लड़ी कवण मिलाप, मेला कवण कवण जणाइंदा। कवण सज्जण कवण साथ, सगला संग कवण निभाइंदा। कवण संदेसा देवे आख, कवण नरेशा हुक्म मनाइंदा। कवण लहिणा देणा चुकाए ज़ात पात, कवण दीन मज़्हब पड़दा आप मिटाइंदा। कवण वखाए रूह बुत्त पाक, ख़ाकी ख़ाक सोभा कवण पाइंदा। कवण करे बुध विवेक पिछला लेखा करे बेबाक, हिसाब अगला इक दरसाइंदा। कवण सोहणी सुहञ्जणी होए कताब, मुखातब हो के कवण समझाइंदा। कवण सजदा करे आदाब, सीस जगदीश कवण झुकाइंदा। कवण मंज़ल कवण महिराब, महिबूब कवण सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मित्र इक्को इक बणाइंदा। सच्चा मित्र सो सज्जण मीत, चार वरन दए वड्याईआ। जिस दा लेखा चुक्कया मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ बैठा पन्ध मुकाईआ। इक्को रंग समझे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। सति सच दा बोले गीत, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। प्रेम प्यार दी मंगे देवे भीख, दो जहानां विच्चों आपा आपणे नाल मिलाईआ। सच पुरुषां दी साची रीत, सदा सदा सद सच संदेस सुणाईआ। साची सिख्या लईए सीख, सति विद्या देणी पढ़ाईआ। पढ़यां विच्चों उत्तम श्रेष्ट मिले प्रीत, प्रीत लड़ी विच्चों लड़ी लड़ी नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
१०७२ थोड़ा जिहा जगत संदेसा जागत विच्चों जणाईआ। करया प्यार अन्दर गुरबख्श, सिँघ नाम वज्जे वधाईआ। जिस दे हिरदे अन्दर सब दा उच्चा आदर्श, सर्ब देवे वड्याईआ। एहो माणस जन्म दा सच्चा फ़र्ज़, सभना मिले चाईं चाईंआ। निमाणयां हो के होवे ना किसे दा हरज, वड्डा हो के निक्कयां लए उठाईआ। दर्दी हो के वंडे दर्द, दुखियां दु:ख आपणी झोली पाईआ। सो सूरबीर वड्डा मर्द, मर्दानगी इक्को इक वखाईआ। किसे दे सीस चलण ना देवे छुरी करद, ज़ुल्म ज़ालम सके ना कोए वखाईआ। हउमे हंगता कूड़ कूड़यारी कढ्ढे मर्ज़, सच विद्या सति इक समझाईआ। एहो खेल प्रेम प्यार प्रीती दा असचरज, जो प्रीत लड़ी विच्चों लड़ी लड़ी आपणे नाल बंधाईआ। नवतेज लेख लिखे हो नधड़क, सोहणी कलम कातब बण के हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म दी कोई खोल्ह ना वेखे फ़रद, उहला सके ना कोए चुकाईआ। मेल मिल के मिटी हरस, हवस विच्चों हवस दिती गंवाईआ। सब दे उते सांझा करना तरस, रहमत रंग रंगाईआ। सुहञ्जणा वेला सज्जणां होया दरस, नेत्र नैण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार प्रेमीआं विच्चों इक्को वस्त झोली पाईआ।

* १० जेठ २०२१ बिक्रमी सविन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर *

शब्द गुरू वड बलवान, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, जोबन रत्ता वेस वटाइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वेखे मार ध्यान, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त देवे ज्ञान, नाम संदेसा इक सुणाइंदा। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया मिटे निशान, सच सुच इक वखाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए घर प्रकाश करे जोती महान, कूड़ कुड़यारा अन्ध अँध्यारा दूर कराइंदा। साचा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ वखाए मकान, महल अटल इक्को इक सुहाइंदा। अमृत रस प्यावे आण, निझर झिरना सच झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाइंदा। शब्द गुरु गुर दाता सूर, हरि वड्डा वड वडियाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी हाज़र हज़ूर, नित नवित्त आपणा खेल खलाइंदा। सच भण्डारा सदा भरपूर, अतोट अतुट आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे ज़रूर, ज़ाहरा आपणी कल वरताइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा साचे गृह बणे मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। शब्द गुरू सच्चा शहिनशाह, पातशाह इक्को इक अख्वाईआ।
१०७३ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दस्सदा रिहा राह, रहिबर हो बणत बणाईआ। बोध अगाध सुणौदा रिहा नाँ, निरगुण सरगुण कर १०७३
पढ़ाईआ। सच महल वसाउँदा रिहा मकान, शिवदुआले मट्ठ मन्दिर मसीत गुर गुर गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गुर शब्द सच देवण योग, युगती आपणे हथ्थ रखाइंदा । निरवैर स्वामी खोजे खोज, अन्तरजामी भेव चुकाइंदा। सति सतिवादी सच कराए धुर संजोग, साचा मेला मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म देवे साची मौज, मौजूदा हो के वेख वखाइंदा। आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचण नेत्र नैण अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म सतिगुर परवान, परवाना आपणा नाम जणाईआ। शास्त्र सिमरत लेखा लिख वेद पुराण, काग़ज़ कलम दए वड्याईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाण, मन मति बुध धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। कोटन कोटि जगत नेत्र दर्शन पाण, निज नेत्र करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द गुरू प्रभ बणाए एक, एकँकार दए वड्याईआ। जिस दे हथ्थ फड़ाई टेक, दो जहानां वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण सरगुण हो के खेले खेड, लख चुरासी वंड वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे भेज, नाम संदेसा इक सुणाईआ। भगतां सुहाए सुहञ्जणी सेज, आत्म अन्तर डेरा लाईआ। साचे सन्तां लए वेख, जीवां जंतां विच्चों खोज खुजाईआ। गुरमुखां अन्दर वड़ के देवे भेत, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। गुरसिखां वखाए अगम्मड़ा देस,

जिस घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। शब्द गुरू वेस अवल्लड़ा, जुग जुग आप कराइंदा। सदा सदा सद सच फड़ाए पलड़ा, डोरी आपणे तन्द बंधाइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड वेखे इक इकल्लड़ा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अवल्लड़ा, महल अटल सोभा पाइंदा। सच सिँघासण इक्को मलड़ा, घर घर विच डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। शब्द गुरू गुर सांझा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी रीत, रीतीवान इक्को नज़री आइंदा। शब्द नाद धुन जिस दा गाउँदे गीत, गोबिन्द आपणी खेल खलाइंदा। पतित पापी जो करे पुनीत, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। मिट्ठा करे जो कौड़ा रीठ, अमृत रस विच भराइंदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच भेव ना कोए बणाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठ, सच दवारे सोभा पाइंदा। जिस दा राह तक्के मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ अक्ख उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो शब्द गुरू दस्से सच प्रीत, प्रीतीवान इक्को इक अख्वाइंदा। शब्द गुरू घट घट स्वामी, बैठा इक्को नज़री आईआ। जिस दी सिफत करे चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रही जस गाईआ। जिस दी सेवा करे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चाकर रूप वटाईआ। जिस दा नीर वरोले अठ सठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी नेत्र शरमाईआ। जिस दा एथे ओथे दो जहान कोए ना सानी, लातस्वीर नज़र किसे ना आईआ। जिस दा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण वेखे चाईं चाईंआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सदे गए निशानी, अर्शां उत्तों अर्शी अर्शी प्रीतम नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ। शब्द गुरू उच्च अगम्म, अथाह आपणी खेल कराइंदा। ना मरे ना पए जम, मात गर्भ ना डेरा लाइंदा। ना कोई घड़े ना लए भन्न, ठीकर रूप ना कोए वखाइंदा। ना कोई माया माटी काया तन, पंज तत चोला ना कोए हंढ्ढाइंदा। ना कोई बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरया ना कोए लँघाइंदा। ना कोई रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणनहारा कन्न, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। ना कोई जननी ना कोई जन, मात पित ना कोए बणाइंदा। ना कोई दौलत ना कोई धन, जगत ख़ज़ाना हथ्थ ना कोए रखाइंदा। ना कोई देवणहारा डंन, भय भउ ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुरू इक्को इक प्रगटाइंदा। शब्द गुरू प्रगटे हर घट, घट घट आपणा डेरा लाईआ। वेखणहारा चौदां लोक चौदां तबक नट्ठ नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। दस्सणहारा सच्चा मार्ग हस्स हस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। प्यावणहारा धुर दा रस, आबेहयात सच प्याला इक्को इक हथ्थ

उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द गुरू तेरी सदा उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त ध्यान लगाईआ । तुध बिन लख चुरासी लिखे ना कोए तारीख, तरीका सच ना कोए दृढ़ाईआ। मित्र प्यारा बणे ना कोई मीत, सज्जण रूप ना कोए वटाईआ। श्री भगवान गाए कोई ना गीत, नाम निधान ना कोए शनवाईआ। सच सुच चलाए ना कोए रीत, रीतीवान ना कोए अख्वाईआ। लेखा समझे ना कोए हस्त कीट, ऊँच नीच ना मेल मिलाईआ। लख चुरासी पीसण रिहा पीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। शब्द गुरू तेरा आउणा जग, जग जीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। पैगम्बर फ़कीर भगत सन्त गुरमुख सज्जण रहे लभ्भ, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। आर पार किनारा तेरी नजर ना आई हद्द, खोजत खोजत थक्की सर्ब लोकाईआ। हर घट रमया सब तों बैठों अड्ड, तेरी सार किसे ना पाईआ। कोई लेखा ना जाणे पंज तत काया माटी हड्ड, नाड़ बहत्तर अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। पढ़ पढ़ सृष्ट सबाई गई थक्क, तेरा सिफ्ती ढोला गाईआ। किसे दी झोली प्या ना कोई हक़, ख़ाली दर कूकण देण दुहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, महिमा तेरी अकथ, सके ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ । शब्द गुरू कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर पृथमी आकाश, गगन मण्डल रवि ससि सूरज चन्द सेव कमाईआ। तेरे हुक्म अन्दर गोपी काहन जुग जुग पा गए रास, लील्ा आपणी मात रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जिह्वा गाउँदे गए स्वास स्वास, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर तेरे कदमां विच मंगदे गए निवास, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। शब्द गुरू तेरा कलमा कायनात, महिबूब तेरी वड्याईआ। तेरा प्रेम प्याला आबेहयात, हयाती सब दी दए बदलाईआ। पीर पैगम्बर तेरा लैंदे गए ख्वाब, ख्वाहिश तेरे नाल मिलाईआ। सजदा कर कर करदे गए आदाब, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कर किरपा आपणा खोल्ह आग़ाज़, ग़रज़ सब दी पूर कराईआ। असीं ममनून तेरे मुहताज, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। सदी चौधवीं आपणा वेख समाज, उम्मत उम्मती रही कुरलाईआ। साचा वुज़ू ना कोए निमाज़, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। हकीकत विच्चों मिले ना कोई रास, रहमत सके ना कोए कमाईआ। चारों कुण्ट दिसे उदास, हैरानी सब दे उते छाईआ। जिस नूं कैहन्दे वसे उते आकाश, जलवा नूर खुदाईआ। ओस पैगम्बर दी सारे रख के बैठे आस, आसा आपणी इक वधाईआ। किरपा कर रसूल पाक, पाकीज़ा रूह दे वखाईआ। तेरा नाउँ पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते आपणी कार कमाईआ। तेरे दर होवे ना कोई नरास, आसा भरी लोकाईआ। सच दवारे करना वास, मक्का

काअबा सच महिराब होवे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द गुरू सच आउणा दौड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। वेद व्यासा लिख के गया लेखा ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता सके ना कोए समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दोए मंगदे रहे जोड़, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभ खेल करे अवर का और, गहर गम्भीर आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेला भगत वछल जन भगतां जाए बौहड़, गुरमुख गुरसिख गोद उठाईआ। लख चुरासी विच्चों रीठा वेखे मिट्ठा कौड़, घट घट अन्दर फोल फोलाईआ। तिस साहिब सुल्तान अग्गे किसे दा चले ना कोई ज़ोर, जोरू ज़र दोवें नैण शरमाईआ । जिस दा मन्त्र फुरना चले फोर, फुन आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। शब्द गुरू तेरा सच समाज, दीन मज़्हब नज़र कोए ना आइंदा। धुरदरगाही इक आवाज़, लख चुरासी पाक रूह बणाइंदा। ग़रीबां निमाणयां राजयां राणयां इक्को जिहा देवे ख़िताब, वड्डा छोटा संग ना कोए जणाइंदा। घर दीपक दीआ जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेरा मेट मिटाइंदा। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वासां विच्चों आपणा नाम चलाइंदा । मन मति कूड़ी क्रिया गुरमुखां कोल रहिण ना देवे रास, जूठ झूठ तन माटी विच्चों परे हटाइंदा। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला आप बणाए पारजात, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण नरायण अक्ख इक्को इक खुलाइंदा। घर विच घर दरस दिखाए साख्यात, सति सरूपी पर्दा लाहइंदा। बातन ज़ाहर करे बात, बेऐब आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा सतिगुर शब्दी इक्को इक प्रगटाइंदा। शब्द गुरू वड देवी देवा, देवत सुर ध्यान लगाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी करन सेवा, जुग चौकड़ी चाकर रूप वटाईआ। तिस दा खेल अलख अभेवा, अगम्म अथाह समझ कोए ना पाईआ। सो वसणहारा साचे धाम निहचल निहकेवा, निहकर्मी आपणा कर्म जणाईआ। जन भगतां अमृत फल देवे धुर दा मेवा, रस इक्को इक वखाईआ। कौस्तक मणीआं मस्तक लावे थेवा, जोत ललाट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द गुरू सर्ब दा प्यारा, प्रेम प्रीती इक वखाइंदा। ज़ात पात तों रहे न्यारा, शरअ विच कदे ना आइंदा। चार वरन दा इक आधारा, बरन अठारां आप समझाइंदा। सति पुरख दा इक जैकारा, नाअरा इक्को इक अलाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर आए तेई अवतारा, भगत अठारां जोत रुशनाइंदा। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद करे निमस्कारा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। जिस नूं नानक गोबिन्द कहे पिता पुरख अकाल हमारा, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। सो सर्ब जीआं दा सिरजणहारा, घर घर रिज़क पुचाइंदा। लख चुरासी जीव जंत जागरत जोत करे उज्यारा, निरगुण दीआ बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। शब्द

नाद सच्ची धुनकारा, घर आत्मक राग सुणाइंदा। गुरमुख सखीआं मंगलचारा, गीत गोबिन्द अलाइंदा। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरला कर वणजारा, नाम हट्ट वस्त अमोलक इक वरताइंदा। सृष्ट सबाई जीव जंत लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। घर घर दिसे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, माया ममता नाल मिलाइंदा। साचे सतिगुर बिन उतरे ना कोई पार किनारा, मझधारा बेड़ा पार ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी आप कमाइंदा। शब्द गुरू करे सच करनी, करामात ना कोए जणाईआ। सन्त सुहेले रखे सरनी, गुर गुर चरण गुरमुख लए मिलाईआ। नेत्र खोले हरनी फरनी, निज नैण करे रुशनाईआ। नाता तोड़े मरनी डरनी, भय भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ। साचे सन्तां पट्टी इक्को पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा संग ना कोए रखाईआ। मंज़ल पौड़ी इक्को चढ़नी, घर विच आपणा पन्ध मुकाईआ। साची डोरी इक्को फड़नी, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर दए वखाईआ। शब्द गुरू सच देवे दात, दयावान दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सच भान प्रकाश इक्को डगमगाइंदा। ज़ात विच्चों वखाए आपणी ज़ात, अजाति रूप ना कोए जणाइंदा। अन्दर

१०७७ वड़ के देवे साथ, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। साची दस्से धुर दी गाथ, ढोला इक्को इक पढ़ाइंदा। मेल मिलावे कमलापात, १०७७

पतिपरमेश्वर नज़री आइंदा। सच प्रीती बज्झे नात, दो जहान ना कोए तुड़ाइंदा। सचखण्ड निवासी सच दवारे करे निवास,

१६ हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर उपर घर मन्दिर सोहणा इक वखाइंदा। सदा स्वामी १६

हो के वसे पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आपणी झोली पाइंदा। शब्द गुरू सच्चा मात पित, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जन भगतां करे सच्चा हित, हितकारी नाउँ धराईआ। निरगुण हो के वसे चित, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। बिन अक्खां आवे दिस, निज नेत्र नूर रुशनाईआ। भेव खुलाए धाम अनडिठ, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। ओथे रस ना कोई फिक, अमृत इक्को इक चखाईआ। सो गुरमुख गुरसिख माणस जन्म जावण जित, लख चुरासी नाता तोड़ तुड़ाईआ। जिन्हां दरस दिखाए करवट बदल आपणी पिठ, सनमुख इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। शब्द गुरू सद गहर गम्भीर, गवर आपणी कार कमाइंदा। मेल मिलाए काया पंज तत शरीर, शरीकत दूजी परे हटाइंदा। जिस दे सहारे चलदे पीर फ़कीर, सो बेनज़ीर तकदीर सर्ब बदलाइंदा। चोटी चढ़ के बैठे अख़ीर, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाइंदा। सूफ़ी होए ना कोए दिलगीर, रहमत हक़ो हक़ कमाइंदा। जिस दे हथ्थ सच्ची शमशीर, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। सो शरअ दी कटणहार ज़ंजीर, शरीअत विच वंड ना कोए वंडाइंदा।

जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, नूर नुराना नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। शब्द गुरू हुक्म वरते जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नित नवित्त वेखे विगसे वेखणहार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, खाणी बाणी आप जगाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए उठाल, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, काअबा इक्को दए समझाईआ। जिस विच जलवा नूरी दिसे जलाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अट्ठे पहर शब्द वज्जे धुन कान, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत रस मिले पीण खाण, दूजी तृखा ना कोए लगाईआ। घर स्वामी मिले आण, अन्तरजामी फेरा पाईआ। जिस दी गुर गुरबाणी करे पहचान, पड़दा ओहला इक उठाईआ। उस दा रूप अनूप सदा महान, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख विरले दर्शन पाण, जिन्हां घर विच घर आप आपणा भेव दए खुल्हाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे होण हैरान, मन वासना रहे कुरलाईआ। पढ़यां किसे ना आवे ज्ञान, नहातयां दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जिंना चिर सतिगुर शब्द ना होवे मेहरवान, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। नौ दवारे साढे तिन्न हथ्थ कूड़ी दिसे दुकान, मन वणजारा जगत हट्ट चलाईआ। गुरमुख गुरसिख साची वस्त ओथे मंगण आण, जिथ्थे साहिब सतिगुर निरगुण सरगुण आपणी धार चलाईआ। बिन कीमतों करता पावे झोली दान, वस्त अमोलक इक वखाईआ। जिस दी जगत बाणीआं कराए ना कोई पहचान, सुन्यार कसवटी ना कोए लगाईआ। गुरमुख पूरे सोई लैण जाण, जिन्हां अन्जाणत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। शब्द गुरू तेरी कोई ना करे परख, परीख्या विच कदे ना आईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड विष्न ब्रह्मा शिव तेरी किरपा नूं रहे तरस, अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। कवण वेला वक्त सुहञ्जणा अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। बिन तेरी किरपा कोटन कोटि साध सन्त जोगी अभ्यासी अद्धविचकार रहे अटक, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरा पैंडा औझड़ सख़्त, अग्गे पिच्छे अन्धेरा इक्को नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जगत विकारे चढ़या कटक, बिन सतिगुर पूरे सके ना कोए बचाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी किसे कोलों लभ्भे नाहीं सच्ची मर्ज़, मतलब हल्ल ना कोए कराईआ। फ़र्ज़ी गुरू पूरा कोई कर ना सके फ़र्ज़, पार किनारा ना कोए जणाईआ। एहो खेल तेरा असचरज, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सन्त साध सृष्ट सबाई सारे गए वर्ज, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर निगह इक उठाईआ। शब्द गुरू तेरी सदा ओट, ओट अकाल जणाईआ। तेरे नाम दी लग्गे चोट, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म

१०७८ १६

नाल होवे मोहत, घर विच घर नारी कन्त रूप वटाईआ। बिन तेरे दूजी समझे कोई ना सोच, सोचयां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। बिन तेरे चरणां साची मिले किते ना मौज, मुफलस वेखी जगत लोकाईआ। तेरा सुण के सच श्लोक, सोहणा ढोला अन्तर इक वैराग उपजाईआ। लेखा मुके लोक परलोक, निरगुण जोत जोत विच समाईआ। जन भगतां लोड़ नहीं किसे मुक्ती मोख, मुक्ती गुरमुख चरणां हेठां रहे दबाईआ। जिन्हां मिल्या परम पुरख परमात्म सो मिल गए ओसे जोत, जिस जोत विच्चों नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दवारा मिले धुर दा कोट, किला बंक इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणे लैणा पाईआ। शब्द गुरू सदा देवे लहिणा, गुरमुख लहिणेदार अख्वाइंदा। दरस कराए निज नेत्र नैणां, लोचण आपणा इक प्रगटाइंदा। हुक्मे अन्दर जिस मन्नया कहिणा, तिस आपणा रंग रंगाइंदा। सच दवारे मन्दिर चढ़ के बहिणा, जिथ्थे दूजा नज़र कोए ना आइंदा। तूं मेरा मैं तेरा शब्द श्लोक ढोला इक्को कहिणा, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। शब्द गुरू होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आत्म मेले विछड़ी भगवान, परमात्म विच समाईआ। निरगुण निरगुण कर परवान, पंज तत काया माटी मढ़ी गोर दबाईआ। अक्खरां नाल करे ज्ञान, निरअक्खर निरगुण इक्को इक समझाईआ। जिस दे पिच्छे गुर अवतारां पीर पैगम्बरां खाणी बाणी रिहा निशान, निशाना साचा गए जणाईआ। सो जुग चौकड़ी पतिपरमेश्वर जन भगतां घर आए बण महमान, धू्र प्रहिलाद गए जणाईआ। चारों कुण्ट सृष्ट सबाई दिसे वैरान, वैरी घर घर डेरा रहे जमाईआ। पंज तत क्रिया वेखो शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। जिस सुरत सवाणी शब्द गुरू सच्चा हाणी मिल्या आण, सो रल मिल खुशीआं संग निभाईआ। लेखा चुक्के पवण पाणी पौण मसाण, बसन्तर नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे बहि के गुरमुख गुरसिख दर्शन पाण, साची तृष्ना तृखा बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए वर, गुर शब्द जणा एका घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ।

१०७६ १६

* १० जेठ २०२१ बिक्रमी अर्जन सिँघ दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर *

सतिगुर शब्द मिले वड भाग, वड भागी सतिगुर पाइंदा। सतिगुर पूरा अन्तर आत्म देवे इक वैराग, वैरागी आपणी धार जणाइंदा। कूड़ी क्रिया करे त्याग, माया ममता मोह मिटाइंदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, हउमें हंगता दूर कराइंदा। सच दीपक जोत जगाए चिराग़, अन्ध अन्धेरा डेरा ढाइंदा। फड़ के हँस बणाए काग, माणक मोती आपणा नाम चोग चुगाइंदा।

नेत्र नैण खुल्रावे जाग, आलस निंद्रा दूर कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। शब्द गुरू जन खोल्हे अक्ख, आखर आपणा मेल मिलाईआ। नज़री आए इक प्रतख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। करे प्रकाश लट लट, नाद धुन करे शनवाईआ। सच दवारा खोल्ह हट्ट, वस्त इक्को नाम वरताईआ। साची सिख्या देवे ब्रह्म मति, मनमति रहिण ना पाईआ। सति सन्तोख बख्शे धीरज जत, बहत्तर नाड़ी रत्त ततव तत ना कोए तपाईआ। काया खेड़ा ना होवे भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। सतिगुर पूरा देवे प्रतीत, प्रतिज्ञा आपणे नाल रखाइंदा। काया मन्दिर वखाए मसीत, मसला इक्को हल्ल कराइंदा। त्रैगुण दाता नज़री आए इक अतीत, त्रैभवन धनी आपणा पड़दा लाहइंदा। मन आत्मा परमात्मा करे ठांडा सीत, बुध विवेकी रूप वटाइंदा। घर स्वामी ढोला सुणाए सच्चा गीत, राग नाद धुन इक्को इक उपजाइंदा। दिवस रैण अट्ठे पहर वसे चीत, आप आपणा मेल मिलाइंदा। दर घर आ के नाम निधान पाए भीख, भिच्छया इच्छया झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा मूल चुकाइंदा। सतिगुर पूरा भरे झोली, नाम भण्डारा इक वरताईआ। आत्म परमात्म दस्से बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। काया गठड़ी जिस ने खोल्ही, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढ वाहो दाहीआ। सुरत सवाणी साची रुत्त जाए मौली, मौला आपणा रंग वखाईआ। पन्ध मुकाए हौली हौली, दूर दुराडा नेड़े आईआ। काया रंगण रंगे चोली, रंग मजीठी इक्को चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद आपणा घर वखाईआ। गुर सतिगुर वखाए घर एक, इक्को दए वड्याईआ। जिस गृह मिले टेक, समरथ होए सहाईआ। बुध होए विवेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लागे सेक, पंज तत ना करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म खोल्हे भेत, पारब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। मिल सखीआं लए खेड, सोहणा मंगल गाईआ। प्रेम प्यार दी माणे सेज, नार कन्त मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर इक्को दए बुझाईआ। गुरमुख बुज्झे इक्को देह, निरगुण सरगुण कार कमाइंदा। परम पुरख प्रभ लग्गे नेंह, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। अमृत अगम्मी बरसे मेंह, मेघला इक्को धार वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा मूल चुकाइंदा। हरिजन लेखा मूल जाए चुक्क, चुकावणहारा इक अख्वाइंदा। जो अन्दर वड़ के बैठा लुक, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जिस वेले पूरब कर्मां लहिणा देणा देवणवाला होवे खुश, खुशीआं आपणे रंग रंगाइंदा। सो साहिब सतिगुर उजल करे मुख, मुख मुखड़ा आप वखाइंदा। प्रगट होवे बिन जननी कुक्ख, शब्द शब्दी आपणी कार कमाइंदा। जन सन्तां साचे भगतां लए

१०८० १६

पुछ, दूर दुराडा नेड़े आइंदा। वेखणहारा साचे सुत, साहिब सतिगुर आपणी गोद उठाइंदा। जन्म कर्म कर के जो गए रुट्ठ, फड़ बांहों गले लगाइंदा। प्रीतम प्रेम प्यार अन्दर साची गोदी लए चुक्क, बिन हथ्थां बांहवां साची सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग वखाए गूढ़, लालन लाल आप रंगाईआ। जिस जन बख्शे चरण धूढ़, टिक्का लावे नूर खुदाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तर बख्शे धुर दा नूर, जल्वागर करे रुशनाईआ। कोट जन्म दे मुआफ़ करे कसूर, पतित पापी पुनीत दए वखाईआ। दरस दिखाए होए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग नित नवित्त कर हित, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन सच्चे वेखणहारा, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी लै अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। लख चुरासी पावे सारा, जीव जंत खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे जल थल महीअल डूंग्घी गारा, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा। सन्त सुहेले मेले विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, करता करनी आप कमाइंदा। साची सखीआं लावे इक अखाड़ा मंगल गीत सुहागी आप सुणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला काया काअबा इक जणाइंदा। जिस घर वसे सदा सदा सद हरि निरँकारा, निरगुण आपणा डेरा लाइंदा। दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल करे ख़बरदारा, सच संदेसा इक सुणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा प्यारा, आत्म परमात्म धुर दा मेल आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सन्त साजन साहिब सतिगुर इक अख्वाइंदा। साहिब सतिगुर सच्चा प्रभ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी हरि भगत प्यारे लए लभ्भ, बिन अक्खां वेख वखाईआ। घर सुणाए धुर दा नद, अनादी नाद सुणाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, साचे मन्दिर दए वसाईआ। भाग लगावे सच्ची यद, याददाशत पिछली भुल्ल कदे ना जाईआ। मंज़ल दवारा बण के पांधी जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। गीत सुहागी मन्दिर वड़ के सुणावे छन्द, सोहणा राग अलाईआ। उठ लाडले मेरे चन्द, तेरा चन्द नूर रुशनाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी दया कमाईआ। दीन दयाल होया बख्शंद, बख्शश रहमत आपणी इक दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रेम प्रीती नज़री आईआ। दोहां मिल के सच दुआर पए ठंड, जिस घर बार गुर चेला बैठा सोभा पाईआ। ना कोई भेख ना पखण्ड, कूड़ी क्रिया ना संग निभाईआ। जगत विकार ना पावे डण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना करे लड़ाईआ। सच प्रेम अन्तर चोली देवे रंग, जगत बसन्तर बाहर बुझाईआ। जागत सोवत इक्को जिहा संग, अगला पिछला विछोड़ा मुकावे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१०८१ १६

आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, दूई द्वैत भरमां ढाह के कंध , कूड़ी क्रिया कढु के गंद, काया मन्दिर अन्दर निर्मल जोत करे रुशनाईआ।

✻ १० जेठ २०२१ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह मानांवाला ज़िला अमृतसर ✻

सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, आदि जुगादि दया कमाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ खोज खुजाइंदा। लख चुरासी जीव जंत वेखे मार ध्यान, साध सन्त पड़दा उहला आप फुलाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा दान, निरगुण वस्त अमोलक इक वरताइंदा। शब्द सरूपी बण के सच्चा काहन, गृह मन्दिर घट आपणी रास वरताइंदा। नाम संदेसा देवणहारा पैग़ाम, कलमा हक़ नबी पढ़ाइंदा। मूर्त सच वखाए राम, रहमत आपणी इक कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। शब्द गुरू सदा सद संग, विछड़ कदे ना जाइंदा। नित नवित्त जन भगतां पूरी करे मंग, भगत वछल आप अख्वाइंदा। अन्तर आत्म देवे इक अनन्द, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। निरगुण जोत
१०८२ चाढ़े चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए छन्द, धुन आत्मक राग अलाइंदा। जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढु, १०८२
१६ गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता करे खण्ड खण्ड, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। लेखा जाणे रसना जिह्वा बत्ती दन्द, पवण स्वासा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिगुरू शब्द सच्चा सच स्वामी, नित नवित्त वेख वखाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद जिस दी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। जिस दा खेल वरते चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। जिस दा नाद अगम्मी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाईआ। जिस दा लख चुरासी मेला दो जहानी, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जिस दा मन्दिर इक लासानी, उच्च अगम्म अथाह आप बणाईआ। जिस गृह दीपक जोत जगे महानी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा लेखा कातब बण के लिखे कोई ना कानी, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोए विद्वानी, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। सो पतिपरमेश्वर सर्ब जीआं दा जाण जाणी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। नित नवित्त जुगा जुगन्तर खेले खेल जगत जहानी, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा रूप वखाईआ। साची सच सुणाए कहाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शब्द गुरू वड्डा बलकार, बलधारी इक अख्वाइंदा। जिस दा हुक्म वरते जुग चार, दो जहान ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर सूरज चन्न रवि ससि नढुण वारो वार,

दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जिस दी मंज़ल अगम्म अथाह उच्च दरबार, दरगाह साची भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण खेल विच संसार, सति सरूपी धार चलाईआ। पंज तत काया चोला कर उज्यार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, नित नवित्त वेस वटाईआ। घर घर वेखे वेखणहार, गृह गृह खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, भगत भगवान लए जगाईआ। त्रैगुण माया देवे साड़, अग्नी तत बुझाईआ। पंज तत करे ख़बरदार, आलस निंद्रा परे हटाईआ। प्रेम प्याला अमृत देवे ठंडी ठार, निझर झिरना इक झिराईआ। सच प्रीती बख्शे दरस दीदार, निज नेत्र कर रुशनाईआ। महल अटल घर विच घर दए वखाल, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। शब्द अनादी वज्जे ताल, तुरिया आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। सतिगुर पूरा शब्द गुरदेव, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी करदे सेव, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवक सेव कमाइंदा। जिस दा लेखा अलख अभेव, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। जिस दी सिफ्त करे ना कोई रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए वडियाइंदा। सो वसे निहचल धाम निहकेव, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। शब्द गुरु गुर करता देवे भेव, कलमा नबी रसूल आप समझाइंदा। जन भगतां निरगुण माणे सुहञ्जणी सेज, सोभावन्त आसण लाइंदा। जोती जलवा देवे नूरी तेज, अन्ध अज्ञान अन्धेर आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे भगवन्त, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों वरोले गुरमुख सन्त, सन्त साजन लए मिलाईआ। नाम दृढ़ाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। लेख चुकाए भुक्ख नंगत, नाम दोशाला तन पहनाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दी विद्या दए समझाईआ। दर दरवेश दूजे दर ना जाए मंगत, अलख निरँजण घर साचे इक्को अलख जगाईआ। नाता तोड़े जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। हरिजन साचे पार जाणा लँघ, सतिगुर आप लँघाइंदा। अन्तर आत्म दे अनन्द, रस इक्को इक वखाइंदा। सुरती शब्दी जोड़ी गंढ, धुर दा मेला मेल मिलाइंदा। दूई द्वैती भरमां ढाहे कंध, माया ममता मोह चुकाइंदा। प्रेम प्रीती काया चोली देवे रंग, अन्दर बाहर दुरमति मैल धवाइंदा। नार दुहागण नाता तोड़े रंड, सुहागण रूप घर घर आप वखाइंदा। अंगीकार बण के लाए अंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुर गुर वेख वखाइंदा। गुरमुख मंग इक अपार, अपरम्पर दए वड्याईआ। जिस दा लेखा नज़र ना आए विच संसार, नव नौ चार भेव कोए ना पाईआ। देवणहारा दयावान इक दातार, दाता दानी बेपरवाहीआ। अतोट अतुट भरे रहिण भण्डार, चारे खाणी झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या धुर दी भिच्छया इक्को झोली पाईआ। साची सिख्या गुरमुख लए सिख, गुर शब्दी शब्द जणाइंदा। घर स्वामी ठाकर आए दिस, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर वेखण कोए ना जाइंदा। आत्म परमात्म करे हित, प्रीतम प्यारा आपणा रंग वखाइंदा। निज नेत्र दर्शन करे नित, लोचण नैण आप खुल्हाइंदा। करवट लै बदले पिठ, सनमुख आपणा मुख प्रगटाइंदा। अबिनाशी हो के वसे चित, चितवित ठगौरी ना कोए वखाइंदा। सज्जण स्वामी हो के बणे मित, मित्र प्यारा इक्को नज़री आइंदा। मेहरवान हो के गोद उठाए गुरमुख गुरसिख, सच्चा पुत्त सपूत आपणे घर वसाइंदा। अग्गे पिच्छे आवण जावण लख चुरासी पैंडा जाए मुक्क, चित्रगुप्त लेख ना कोए वखाइंदा। राए धर्म ना मारे मार ना सके कुट्ट, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाइंदा। साहिब सतिगुर शब्द स्वामी आपणी गोदी लए चुक्क, चुक्कणहारा नज़र किसे ना आइंदा।
१०८४ जुग जुग जन भगतां साचे सन्तां लए पुछ, दूर दुराडा नेरन नेरा बण के पांधी राही पन्ध मुकाइंदा। हरिजन बूटा कदे ना जाए सुक्क, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। जो गृह गृह बैठा लुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे भगवान, जन भगत दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले आण, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। धर्म वखाए इक निशान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नाता तोड़ दीन मज़्हब ईमान, शरअ शरीअत शौह दरया रुढ़ाईआ। साची मंज़ल वखाए इक्को आण, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। नाम संदेसा देवे धुर फ़रमाण, जगत अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के देवे ज्ञान, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। मन वासना मेटे आप शैतान, बुध विवेक दए कराईआ। इक्को राग सुणाए कान, धुर दी धार आप जणाईआ। काया हट्ट ना होए वैरान, वस्त अमोलक इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सदा सदा सदा संग आपणा आप रखाईआ। सतिगुर पूरा देवे तार, तारनहार इक अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। सुरत सवाणी करे ख़बरदार, शब्द हाणी आप जगाइंदा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, घर घर विच डेरा लाइंदा। नाम निधान अगम्मी बोल जैकार, अनरागी राग सुणाइंदा। सच महल्ले दे आधार, उच्च अटले सोभा पाइंदा। ग़ुलशन विच्चों खिड़ी दिसे गुलज़ार, कली कली आप महकाइंदा। महिबूब मुहब्बत करे अपार, महिराब इक्को इक सुहाइंदा। कलमा रोज़ा ना कोए निमाज़, सजदा सीस ना कोए झुकाइंदा। कातब

१०८४
१६

दिसे ना कोए लिखार, कलम शाही ना वंड वंडाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए जैकार, बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। इक्को निरअक्खर दस्से सच दरबार, जिस विच्चों कोटन कोटि विद्या बाहर कढ्ढाइंदा। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेला विरला पढ़नेहार, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा झोली पाइंदा। लहिणा देणा झोली पाउँदा ए। सतिगुर पूरा दया कमाउँदा ए। आदि जुगादी वेस वटाउँदा ए। नर नरेश इक अख्वाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउँदा ए। सचखण्ड वसे साचे देस, थिर घर शब्दी वंड वंडाउँदा ए। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र ना आउँदा ए। नित नवित्त रहे हमेश, शब्द गुरू अख्वाउँदा ए। पंज तत काया चोला करे हेत, तेई अवतार अठारां भगत ईसा मूसा मुहम्मद गुर दस जोत जगाउँदा ए। एहो करे अगम्मी खेड, खेलणहारा नज़र किसे ना आउँदा ए। जन भगतां लए वेख, निज नेत्र इक खुल्हाउँदा ए। ना कोई रूप रंग ना रेख, सब दी रेखा आप बणाउँदा ए। निरगुण सरगुण कर के हेत, हितकारी फेरा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्से नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाउँदा ए। निज घर साचा इक सुहाउँदा ए। घर घर विच आसण लाउँदा हे। सति स्वामी नाम धराउँदा ए। अन्तरजामी भेव चुकाउँदा ए। शब्द बाणी राग सुणाउँदा ए। सुरती हाणी मेल मिलाउँदा ए। अकथ कहाणी आप जणाउँदा ए। अमृत जाम ठंडा पाणी रस पलाउँदा ए। गुरमुख वेख बाल अञ्याण, सतिगुर पूरा गोद उठाउँदा ए। एथे ओथे देवे माण, दो जहानां संग निभाउँदा ए। नेड़ ना आए मन शैतान, बुद्धी विवेक आप कराउँदा ए। तूं मेरा मैं तेरा दोहां देवे इक ज्ञान, साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा ए। साचा मेला मन्दिर मकान, साढे तिन्न हथ्थ बंक वडयाउँदा ए। जिस दी बाढी घाड़त घड़े ना कोई तरखाण, लोहार नज़र कोए ना आउँदा ए। जिस दे अन्दर पवण पाणी मसाण, रूह बुत्त मेल मिलाउँदा ए। जन भगतां मुश्किल करे आसान, दीनां नाथ हो के दर्दीआं दर्द वंडाउँदा ए। साचा राग सुणाए कान, अगम्मी राग अलाउँदा ए। तू ही तू ही ढोला सारे गाण, जिन्हां आपणी रमज़ सुणाउँदा ए। सो मुरीद मुर्शद मिलण आण, जिस मसला हक़ सुणाउँदा ए। नाता छुट्टे अञ्जील कुरान, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाउँदा ए। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला देवे इक पैग़ाम, धुर संदेसा आप सुणाउँदा ए। मेल मिलाए इक अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन हरि हरि पार कराउँदा ए। हरिजन सच्चा उतरे पार, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना कोए सज़ाईआ। मात गर्भ ना कोए आधार, जूनी जून ना कोए भवाईआ। दस दस मास ना अग्न अँगयार, उलटा बिरख ना कोए लटकाईआ। जिन्हां सतिगुर शब्द निरगुण हो के मिल्या आण, सरगुण लए जगाईआ।

१०८५ १६

सच दवारे बख्शश कर के माण, बख्शीश साची झोली पाईआ। श्री भगवान प्रीती सच ईमान, धर्म इक्को इक दृढ़ाईआ। पंज तत काया जगत दिसे महमान, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर का शब्द सदा सच्चा ज्ञान, अक्खरां विच्चों अक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दए उठाईआ। साचा पर्दा जाए खुल्ह, दूई द्वैती परे हटाइंदा। भाग लगाए गुरमुख कुल, कुलवन्ता वेख वखाइंदा। नाम जणाए वस्त अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाइंदा। पूरब जन्म जो गए भुल्ल, जन्म कर्म कर के मेल मिलाइंदा। सच प्रीती गुरमुख जाए घुल, घोली वारी लेखे लाइंदा। फुल फलवाड़ी जाए फुल, पत्त डाल्ही आप महकाइंदा। सन्त सुहेला कदी ना जाए रुल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेड़ा आप वसाइंदा। सच वसाए हरिजू खेड़ा, देवे माण वड्याईआ। पंच विकारा चुके झेड़ा, ततव तत ना कोए लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरा, सच सुच करे रुशनाईआ। हकीकत विच्चों हक़ नबेड़ा, इक्को इक वखाईआ। जन्म कर्म दा मुक्के गेड़ा, आवण जावण रहे ना राईआ। साहिब सतिगुर नाता जोड़े तूं मेरा मैं तेरा, दोहां इक्को रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भूमका दए वखाईआ। सच भूमका धुर अस्थान, हरि करता आप जणाइंदा। गुरमुख विरले दर्शन पाण, निज नेत्र नैण खुल्हाइंदा। सच बबाणे चाढ़े आण, शब्दी शब्द उडाइंदा। नाता तोड़ जीव जहान, घर साचे मेल मिलाइंदा। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सोहँ ढोला गाण, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। दरगाह साची मिले माण, सचखण्ड दवारे आप बहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, गुर अवतार खुशी वखाइंदा। घर सज्जण मिले आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाइंदा। हरिजन मेला सच दुआर, दरगाह वज्जी वधाईआ। जिस घर वसे इक निरँकार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। दीआ दीपक जोती जगदा रहे जुग चार, आदि जुगादि ना कोए बुझाईआ। शाहो भूप बैठा रहे सिक्दार, शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। हुक्म संदेसा देंदा रहे वारो वार, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। सो साहिब सतिगुर पावे सार, पुरख अकाल वेस वटाईआ। जन भगतां हो दयाल, आपणे रंग रंगाईआ। काया मन्दिर वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक समझाईआ। अमृत भरया सुहञ्जणा ताल, घर निझर झिरना दए जणाईआ। शब्द वज्जे अनादी ताल, अनहद राग सुणाईआ। कोटन कोटि ब्रह्म वखाए ब्रह्माद, ब्रह्मांड पड़दा लाहीआ। सो सन्त सुहेला जाए जाग, जिस जागरत जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण अग्नी माया लग्गी आग, पंज तत रिहा तपाईआ। किसे ना मिल्या कन्त सुहाग, घर घर सुहञ्जणी सेज नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे चाईं चाईंआ। गुरमुख वेखे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर दया कमाइंदा। जन

भगत मिलावा जिस दा कम्म, दूजी कार ना कोए कमाइंदा। साचे सन्तां बेड़ा देवे बन्न, जुग जुग कंध उठाइंदा। गुरमुख चाढ़े धुर दा चन्न, जोती जोत डगमगाइंदा। गढ़ हँकारी देवे भन्न, निवण सो अक्खर राह वखाइंदा। भाग लगाए माटी तन, ख़ाकी ख़ाक सोभा पाइंदा। भगत वछल बण के जननी जन, साची गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेले अन्तिम कल, कर करता वेख वखाईआ। लख चुरासी करे अछल छल, वल छलधारी भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दवारा बैठा मल्ल, थिर घर शब्दी डेरा लाईआ। वेखणहारा जल थल, महीअल रूप वटाईआ। जोती शब्दी गया रल, निरगुण आपणा रूप रंग ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी धार जिस ने दित्ते घल्ल, सदा इक्को नाम सुणाईआ। सो बैठा रहे अटल महल्ल, अचल अचल्ल करे रुशनाईआ। गुरमुख बूटे ओसे दा फल, अमृत रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक दृढ़ाईआ। साचा मन्त्र देवे चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाइंदा। करता पुरख हरि करनी करन, करनहार इक हो आइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नेत्र दया कमाइंदा। मंज़ल पौड़े साचे चढ़न, घर घर विच पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी अग्नी कदे ना सड़न, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। माया मौत कदे ना मरन, मोह ममता डेरा ढाइंदा। सच दवारे सन्त सुहेले खड़न, घर मन्दिर इक वखाइंदा। धुर दा ढोला इक्को पढ़न, सोहँ सच्चा नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। सोहँ शब्द अनादी गीत, पुरख अकाल आप प्रगटाईआ। शब्दी गुर चलाई रीत, थिर घर वज्जी इक वधाईआ। ततव तत रहे अतीत, त्रैगुण विच ना कोए फसाईआ। भगतां बणे धुर दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच रिहा समाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। सच दवारयों बख्शे भीख, भिच्छया आपणा नाम वरताईआ। सो गुरमुख गुरसिख माणस जन्म जाए जीत, लख चुरासी फंद कटाईआ। सच निशाना मिले ठीक, श्री भगवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरण प्रीत, साचा नाता लए जुड़ाईआ। साचा नाता जोड़े आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां दे अगम्मा जाप, बिन रसना जिह्वा शब्द पढ़ाइंदा। कोटन कोटि जन्म उतारे पाप, दुरमति मैल धवाइंदा। आत्म सेज सुहञ्जणी खाट, सच सिँघासण इक विछाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, जोती चन्द इक चमकाइंदा। अन्दर वड़ के पुछे बात, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। तूं मेरा मैं तेरा सज्जण साक, धुर दा नाता आप समझाइंदा। माणस जन्म लख चुरासी विच्चों पूरी करे आस, आसा तृष्ना आपणी झोली पाइंदा। जन भगतां लेखे लाए स्वास स्वास, पवणां विच्चों पवण पवण आपणे विच टिकाइंदा। सच दवारे दए निवास,

अस्थान भूमका इक्को इक वडियाइंदा। जिस घर बिन तेल बाती होए प्रकाश, सूरज चन्न ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत फड़ाए शब्दी लड़, पल्लू साचे गंढु बंधाइंदा। नाम पल्लू शब्दी डोरी, हरि सतिगुर तन्द फड़ाईआ। गुरमुख विरला चढ़े तोड़ी, गहर गम्भीर होए सहाईआ। आत्म परमात्म मिलदी वेखे जोड़ी, मिलणी जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि हरि लए तराईआ।

* ११ जेठ २०२१ बिक्रमी चरण सिँघ दे गृह मानांवाला ज़िला अमृतसर *

आदि जुगादि समरथ पुरख प्रभ इक, पतिपरमेश्वर नाम धराइंदा। जुग चौकड़ी नित नवित्त लेखा रिहा लिख, शब्दी धार सति वरताइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पाए भिख, आत्म परमात्म झोली आप भराइंदा। गृह गृह घर घर ठाकर स्वामी हो के आए दिस, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। एथे ओथे दो जहानां सज्जण साक बणे पित, पूत सपूते गोद उठाइंदा। हरिजन गुरमुख गुरसिख जाणे गति मित, मित्र प्यारा आपणा मेल मिलाइंदा। लेखे लावणहारा बूँद रित, रक्त आपणी गंढु पवाइंदा। जगत वासना लए जित, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। जन भगतां देवे साचा हिस, हिस्सेदार आप बणाइंदा।
१०८८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी इक अख्वाइंदा। सच स्वामी समरथ करतार, करनहार अख्वाइंदा। १०८८
१६ निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे अपार, जोती जाता शब्दी दाता नाम धराइंदा। गुरमुख गुरसिख गुर गुर बणे वेखणहार, १६
नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। सच भण्डारा नाम निधान बण वरतार, अतोट अतुट अथाह इक्को नज़री आइंदा। सन्त सज्जण लए उभार, मजन धूढ़ी इक कराइंदा। परदे कज्जण सिरजणहार, सिर सिर हथ्थ टिकाइंदा। दुखियां दुःख दए निवार, दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ स्वामी इक अख्वाइंदा। समरथ स्वामी दाता एक, एकँकार वड वड्याईआ। जिस दा कोई ना मेटे लेख, लिख्त सके ना कोए छुपाईआ। लख चुरासी बख्शे टेक, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां करे बुध विवेक, विवेकी आप जणाईआ। मेल मिलाए धुर दे साचे देस, दिशा आपणी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद समरथ अकथ कहाणी आप जणाईआ।

* ११ जेठ २०२१ बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड छीने जसतरवाल ज़िला अमृतसर *

पुरख अकाल धुर नरेशा, निरँकार हरि समझाइंदा। सुत शब्द सच दे संदेसा, विष्न ब्रह्मा शिव राह तकाइंदा। दो जहानां

वेख लेखा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश नेत्र नैण उठाइंदा। लोकमात वेख जगत वेसा, नव नौ सत्त तेरा राह तकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वेख लेखा, वाक भविक्खत जो समझाइंदा। आदि पुरख अबिनाशी करते दा रख चेता, चेतन धार आप जणाइंदा। निरगुण होवे सरगुण नेता, भूपत भूप नाउँ वडियाइंदा। लख चुरासी अन्दर खेले खेडा, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। सेज सुहञ्जणी माणे सेजा, आसण सिँघासण इक वडियाइंदा। जोती जलवा नूरी देवे तेजा, अनभव आपणा खेल वखाइंदा। जन्म कर्म बणाए रेखा, सच धर्म इक उपाइंदा। डूंघी भँवरी काया कवरी वड़ के खोल्हे भेता, पड़दा उहला आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म पुरख अकाल, हरि करता आप समझाइंदा। सुत शब्द उठ साचे लाल, हरि सतिगुर सेवा लाइंदा। दो जहान वेख आपणी धर्मसाल, सच दवारा तेरा इक वडियाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सुण हाल, हालत सब दी तेरे अग्गे रखाइंदा। नव नौ चार कूड़ी क्रिया दिसे जंजाल, जागरत रूप ना कोए वखाइंदा। फिरी दरोही शाह कंगाल, शहिनशाह सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। साची घालण कोई ना सके घाल, कूड़ी क्रिया जीव जंत साध सन्त सर्ब भरमाइंदा। हकीकत जाणे ना कोए हलाल, हक़ हक़ ना कोए वखाइंदा। जगत अवल्लड़ी दिसे चाल, मित्र प्यारा मीत ना कोए बणाइंदा। बिन तेरे पंज तत बणे ना कोए दलाल, सच वचोला नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए सवाल, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला राग सर्ब सुणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे काल, हरि करता वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन्त, हरि करता आप जणाईआ। शब्द दुलारे साचा दस्स इक्को मंत, दो जहान करनी पढ़ाईआ। बोध अगाधा बण पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सर्ब नैण शरमाईआ। तेरे दर लख चुरासी जीव जंत होण मंगत, देवणहार इक हो जाईआ। तेरा लेखा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज तेरा खेल खलाईआ। सच प्रीती चाढ़ इक्को रंगत, दुरमति मैल धवाईआ। ऊँच नीच राउ रंक सच बणा पंगत, संगत इक्को घर वखाईआ। नाता तोड़ भुक्ख नंगत, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। लेखा चुक्के दोज़ख़ बहिश्त जंनत, स्वर्ग समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे रिहा जगाईआ। पुरख अकाल देवे फ़रमाण, हरि करता आप जणाईआ। उठ सुत नौजवान, घर सच लै अंगड़ाईआ। थिर घर तेरा सोहे मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख मार ध्यान, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। देवत सुर तेरा राह तकाण, चारों कुण्ट वेखण चाईं चाईंआ। निरगुण हो के बण हुक्मरान, सरगुण साची कारे लाईआ। कलयुग अन्त जीव जंत साध सन्त इक्को भुल्लया श्री भगवान, दीन मज़्हब ज़ात पात घर घर करे लड़ाईआ। सति धर्म दिसे ना कोए

निशान, वरन बरन लेखा ना कोए चुकाईआ। सच सति दिसे ना कोए ईमान, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। भुल्ली शरीअत जगत कुरान, सही सलामत नज़र किसे ना आईआ। मुल्ला शेख़ मसायक होए बेईमान, कुतब ग़ौंस रोवण देण दुहाईआ। मक्का काअबा दो दो आबा दिसे वैरान, हुजरा हक़ महिराब जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। फ़तवा लग्गा उपर जहान, तक्कवा रखे ना कोए जवान, जोबन कूड़ा सारे रहे हंढ्ढाईआ। ख़ावंद बीवी करे ना कोए प्रणाम, साचा दिसे ना कोए इस्लाम, इस्म आअज़म सके ना कोए समझाईआ। साचा कलमा दे पैग़ाम, पीर पैगम्बर होण हैरान, कूड़ी शरअ मिटे शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। चौदां तबक पढ़न इक्को सबक, अल्फ़ ये बैठे मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहड़ा रिहा जणाईआ। सच स्नेहड़ा देवे परवरदिगार, वड महिबूब दया कमाइंदा। मुकामे हक़ होए ख़बरदार, लाशरीक हुक्म वरताइंदा। सदी चौधवीं चौदां तबकां करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाइंदा। साचा कलमा कूक कूक सुणा पुकार, नाअरा इक्को इक जणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा यार, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सच महल्ले उच्च अटले मनारे मंज़ल दे पैग़ाम, हरफ़ दो हरफ़ इक्को इक समझाइंदा। कूड़ी क्रिया उते ला इल्ज़ाम, बेईमान नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाणा देवे राम, रहमत आपणी सच कमाईआ। सुत दुलारे शब्दी बाल अञ्याण, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जगत दुनिया वेख लख चुरासी मकान, घर घर आपणा फेरा पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लड़े शैतान, हउमें हंगता गढ़ बणाईआ। सतिगुर शब्द जाणे ना कोई ज़बान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द दिवस रैण ढोले रही गाईआ। साचा मन्दिर मिले ना किसे मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ कोटन देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक जणाए साचा दर, धुर दरबारी दया कमाईआ। श्री भगवन्त कहे सुण साचे पूत, पिता देवणहार वड्याईआ। कलयुग वेख चारे कूट, दहि दिशा खोज खुजाईआ। लेखा जाण पंज तत काया भूत, भविक्ख्त लहिणा दे मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर गए कूच, थिर रहिण कोए ना पाईआ। तेरा नाम संदेसा दे के गए सूच, सूचना इक्को इक जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शब्दी शब्द भेज धुर दा दूत, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। भेव चुकाए जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच सुच सुहावे रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। लेखा जाणे काया माटी ख़ाकी बुत्त, रूह पाकी पाक समाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सूफ़ी सन्त गोदी लए चुक्क, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक समझाईआ। साची सेवा कर जग, हरि करता आप जणाइंदा सृष्ट सबाई लग्गी अग्ग, बिन शब्द ना कोए

बुझाइंदा। शाह सुल्तान रहे भज्ज, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। साध सन्त रहे नच्च, स्वांगी स्वांग ना कोए वखाइंदा। मक्के काअबे कर कर थक्के हज्ज, महिबूब नज़र किसे ना आइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ टेके मथ्थ, मस्तक रेख ना कोए मिटाइंदा। निज नेत्र लोचण सके ना कोए तक्क, जलवा हरि ना कोए वखाइंदा। पढ़ पढ़ विद्या गए अक्क, चौदां विद्या भेव कोए ना आइंदा। आत्म परमात्म मिल्या किसे ना रस, अठसठ तीर्थ जगत खोज खुजाइंदा। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। त्रैगुण माया अग्नी रहे मच, ततव तत भेव ना कोए खुल्ह़ाइंदा। नौ खण्ड नौ दुआर रहे नच्च, दसवें मेल ना कोए मिलाइंदा। जन भगतां जा के दे धुर दा हक़, श्री भगवान इक समझाइंदा। सच मिलण दी खोल्ह़ अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। शब्द सुत उठ वेख लोकमात, मात्र भूमी दए दुहाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, सच्चा चन्द ना कोए चमकाईआ। शिवदुआले मट्ठ ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधे करदे पाठ, सुरती शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ ताट, सरोवर सच्चा नहावण ना कोए नहाईआ। दुरमति मैल ना देवे कोई काट, कंचन रूप ना कोए वखाईआ। नाम अमोलक वस्त देवे ना कोई दात, दयावान दया ना कोए कमाईआ। मनमति नार होई कमज़ात, हरि कन्त ना कोए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया नाता जुड़या सज्जण साक, पुरख बिधाता मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोई ना जाणे भविक्खत वाक, सृष्ट सबाई भरमे भुल्ली जगत लोकाईआ। हउमें हंगता घर घर करे नाच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सुत शब्द उठ चल ज़रूर, हरि करता आप जणाइंदा। जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, ऐनलहक नाअरा इक लगाइंदा। सो वेखणहारा सर्ब कसूर, लख चुरासी बचया नज़र कोए ना आइंदा। सदी चौधवीं चारे कुण्ट होई मजबूर, मुश्किल हल्ल ना कोए कराइंदा। नेत्र रोवे ग़रीब निमाणा मज़दूर, सीस हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जगत विकारा शाह सुल्तानां भरया ग़रूर, ग़ुरबत मेट ना कोए मिटाइंदा। चारों कुण्ट डंका वज्जा कूड़ो कूड़, सच सुच निशाना नज़र कोए ना आइंदा। किसे गुरमुख सच्ची मिले ना कोए धूढ़, टिक्का नाम ना कोए लगाइंदा। साचा नाम लोकमात विच्चों होया मफ़रूर, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहड़ा इक समझाइंदा। सुत शब्द उठ वेख जा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द वेद व्यासा बणे गवाह, शहादत तेरे नाल भुगताईआ। वक्त सुहेला रिहा आ, थित वार बैठी राह तकाईआ। चौदां तबक नैण रहे उठा, सदी चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण वेला नेत्र खोल्ह़े बेपरवाह, परवरदिगार फेरा पाईआ। पर्दा उहला दए चुका, मुख नक़ाब ना कोए टिकाईआ।

१०६१ १६

साचा सजदा दए वखा, सीस जगदीश इक निवाईआ। लेखा जाणे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। मुर्शद मुरीदां पकड़े बांह, फड़ बांहों गले लगाईआ। सो कलमा देणा पढ़ा, जिस कलमे विच्चों कायनात उस दा नूर नज़री आईआ। शरअ शरीअत तों बाहर वसे खुदा, खुदी तकबरी साहिब सच्चे कदे ना भाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्सणा सिध्धा, सिदक सबूरी तेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक समझाईआ। धुर संदेसा लै जा जग, जगजीवण दाता आप दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई बुझे अग्ग, अग्नी तत आप मिटाइंदा। जन भगतां मेल मिलाउणा उपर शाह रग, शहिनशाह इक्को घर वखाइंदा। बिन मक्के काअब्यो कराउणा हज्ज, हुजरा हक़ इक वडियाइंदा। साचा दीपक हो के जाणा जग, अज्ञान अन्धेर दूर कराइंदा। अमृत जाम पिआउणा रज्ज, निझर झिरना इक वखाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर लैणा सद्द, सद्दा होका आपणा नाम सुणाइंदा। विश्व बणौणी साची यद, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। दीन मज़्हब रहे कोई ना अड्ड, ज़ात पात डेरा ढाइंदा। पिछली रीती सारे जावण छड्ड, अग्गे तेरा हुक्म मनाइंदा। धर्म संदेस वजाउणा नद, नौबत तेरा नाम सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी एका वार, एकँकार दए जणाईआ। लेखा चुक्के जुग चार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी बैठी पन्ध मुकाईआ। वेला वक्त सुहाए

१०६२ सांझा यार, परवरदिगार नूर खुदाईआ। खुशी मनावण गुर अवतार, पीर पैगम्बर ढोला गाईआ। वाह वा साडा लेखा कर्ज़ा १०६२

१६ मुके उधार, मकरूज आपणा फ़र्ज पूरा रिहा कराईआ। जो लेखा लिख के आए विच संसार, नाता जोड़ काग़ज़ कलम शाहीआ। १६

तिस नूं वेखे आपे वेखणहार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर ख़बरदार, पुरी लोअ आकाश धरनी धरत दे हिलाईआ। निरगुण सरगुण बण सिक्दार, धुर संदेसा हुक्म मनाईआ। साचे भगतां दे दीदार, सन्त साजन लै उठाईआ। शब्द संदेसा बोल जैकार, साचा नाम इक समझाईआ। तेरा मेरा इक दरबार, तख्त निवासी रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द वेख जगत हुलारा, जगजीवण दाता आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी करना पार किनारा, तेरी सेवा इक समझाइंदा। गुर अवतार जो दे के गए लारा, सो लेखा तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तूं योद्धा सूरबीर बलकारा, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। तेरा महल अटल उच्च मनारा, थिर घर सोभा पाइंदा। तूं नित नवित्त लएं अवतारा, निरगुण सरगुण खेल खलाइंदा। तेरा नाम सच जैकारा, खाणी बाणी तेरी सिफ्त सालाहइंदा। तूं शहिनशाह सिक्दारा, दो जहानां राज कमाइंदा। तूं आवण जावण खेल करें बण वणजारा, चौदां लोक चौदां तबक हट्ट चलाइंदा। तूं चौदां विद्या देवणहार भण्डारा, रसना

जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ाइंदा। तूं कातब बण के लेखा लिखे लिखारा, साची करनी कार कमाइंदा। तूं मेटणहारा अन्ध अँध्यारा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। तूं वखावणहारा मंज़ल मन्दिर उच्च मनारा, जिस घर निरगुण निरवैर बैठा नज़री आइंदा। तूं जानणहारा आर पार मझधार किनारा, पर्दा उहला आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी सेवा इक लगाइंदा। तेरी सेवा लगाई अगम्म, अलख अगोचर दए वड्याईआ। लोकमात बेड़ा बन्न, रुढ़दी दिसे जगत लोकाईआ। सच संदेस सुणा कन्न, धुर दा राग अलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट वासना मन, मन मणका दे भवाईआ। भाग लगा ख़ाकी तन, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। जलवा वखा अन्धेरे अन्न, निरगुण नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं जा के खोज, खोजत खोजत तेरी तेरे विच वड्याईआ। जो प्रभ दर्शन रहे लोच, तिन्नां गुरमुखां लै उठाईआ। देणा माण लोक परलोक, दो जहानां ख़ुशी वखाईआ। सच सुहञ्जणा दस्सणा श्लोक, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। पर्दा उहला उठाउणा काया बंक दवारे कोट, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। आत्म

१०६३ तन परमात्म लगौणी चोट, धुन अनादी नाद सुणाईआ। जूठी झूठी क्रिया कढ्ढणी खोट, सच सुच वस्त इक वरताईआ। प्रेम प्यार प्रीती अन्दर होणा मोहत, मुहब्बत साचे घर वखाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक बणौणी गोत, ज़ात पात राउ रंक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक समझाईआ। साचा लेखा लैणा समझ, हरि करता आप जणाइंदा। शब्दी शब्द लगौणी रमज़, रहीम रहमान वेख वखाइंदा। दूई द्वैती कढ्ढणी मर्ज़, तबीब तेरा नाउँ धराइंदा। भगत उधारन तेरा फ़र्ज़, साची सेवा इक समझाइंदा। सन्तां मिलाउणा तेरी ग़रज़, ज़रूरत आपणे नाल रखाइंदा। एहो खेल सदा असचरज, मन मति बुध समझ कोए ना पाइंदा। छुरी जगत सीस चले ना कोए करद, ज़ब्हा रूप ना कोए वटाइंदा। दीनां अनाथां वंडणा दर्द, दयावान आप समझाइंदा। सूफ़ीआं सन्तां सुणनी अर्ज़, आसरा तेरा इक रखाइंदा। मज़लूमां उपर करना तरस, मासूमां तेरी झोली पाइंदा। योद्धा सूरबीर बणना मर्द, मर्दानगी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा नाम धुर दा खण्डा खड़ग, दो जहान भय भउ सर्ब रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाइंदा। साचा खेल वखाए ख़ालक, हरि करता दए वड्याईआ। शब्द सुत तैनूं निंद्रा ना कोई आलस, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी बणदा रिहों सालस, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम गुरमुख गुरसिख कढ्ढ ख़ालस, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। श्री भगवान वेखे सच अदालत, अदली बैठा बेपरवाहीआ। जिन्नां दी गुर अवतार पीर पैगम्बर देण ज़मानत, दूजा ज़ामनी सके ना कोए भराईआ। ग़ैर औण दी ना कोई ममानत, जो कोई आवे

प्रभ दर सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान सच महिबूब मिले सही सलामत, शाह पातशाह श्री भगवान इक रघराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुत शब्द उठ वेख जाग, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग जीव होए काग, बुद्धि काग वांग कुरलाईआ। दुरमति मैल कोई ना धोवे दाग़, निर्मल रूप ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गी आग, अमृत मेघ सीतल सति ना कोए वरताईआ। शौह दरयाए डुब्बदा दिसे जहाज़, खेवट खेटा बेड़ा पार ना कोए कराईआ। अन्दर वड़ के कोई ना खोल्हे राज़, पड़दा सके ना कोए चुकाईआ। जिस दा कलमा पढ़दे निमाज़, कर वुज़ू कन्नां विच उंगलां रहे पाईआ। उस दा अन्तर आत्म किसे ना आया स्वाद, मन कर के ज़ब्हा छुरी हक़ हलाल हथ्थ ना किसे उठाईआ। मिल्या मेल ना सच महिराब, महिबूब मुहब्बत ना कोए लगाईआ। अन्तिम सब तों लए ख़राज, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धंदे रिहा लगाईआ। शब्द सुत उठ लग जा धंदे, धुँदूकार दे मिटाईआ। लख चुरासी विच्चों वेख ख़ाकी बंदे, जो बंदगी साची रहे कमाईआ। पकड़ वरोल मन वासना गंदे, गंदगी विच बैठे आपणा आप डुबाईआ। चढ़या चन्द ना किसे नव चन्दे, अमावस रूप बैठे नज़री आईआ। त्रैगुण माया पाए फंदे, पंज विकार बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। साची मंज़ल पन्ध ना मुकया आए ना धुर दे कन्ढे, अग्गे समझ किसे ना आईआ। तन माटी सीने किसे ना होए ठंडे, आबेहयात प्याला मुख ना कोए लगाईआ। सिरों पैरों दिसदे नंगे, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। साची धार मिली ना खण्डे, अमृत रस ना कोए चखाईआ। बिन प्रीतम प्यारे होए रंडे, दुहागण रूप रहे वटाईआ। जन्म जन्म दी टुटी कोई ना गंढे, पल्लू गंढ ना कोए वखाईआ। साचा सज्जण चुक्के कोई ना कंधे, सीस भार ना कोए उठाईआ। जगत दवारा कोई ना लँघे, बिन मुर्शद मुरीदां मिले ना बेपरवाहीआ। घर घर बण के बैठे चंगे, काया माटी पोच पुचाईआ। प्रभ मिलण नूं सारे अन्धे, निज नेत्र अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, सच करनी रिहा दृढ़ाईआ। शब्द सुत वेख कर विचार, बिन समझ लै अंगड़ाईआ। भगत सन्त लै उठाल, सच इशारा इक लगाईआ। गुरमुख गुरसिख वेख लाल, बच्चयां बचपन दे जणाईआ। नाता तोड़ना शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। काया मन्दिर अन्दर वेखणी सच्ची धर्मसाल, काअबा इक्को नूर खुदाईआ। अमृत सुहाए सुहञ्जणा ताल, रस आपणा नाम भराईआ। दीआ बाती देणा बाल, कमलापाती होए सहाईआ। साचा मन्दिर देणा वखाल, नव दर पन्ध चुकाईआ। बजर कपाटी देणी पाड़, पर्दा उहला रहे कोए ना राईआ। सेज सुहञ्जणी देणा सवाल, बिन पावा चूल खुशी मनाईआ। इक्को बख़्शणा धुर जलाल, जल्वागर आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, शब्दी शब्द लए वड्याईआ। शब्द वेख सच मुरीद, मुहब्बत इक जणाईआ। जिन्हां प्यारयां मेरी दीद, तिन्हां देवां माण वड्याईआ। पावां सार नीचों नीच, नीकन नीका रूप वटाईआ। कलयुग औध रही बीत, सतिजुग सच लए अंगड़ाईआ। जिस विच माणस मानुख मानुष चले इक्को रीत, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। हस्त कीट सच प्रीत, नव नव चार देणी बंधाईआ। चार अठारां गावे इक्को गीत, अठ दस शब्द पढ़ाईआ। नव नौ चार बणे मीत, सज्जण सच्चा इक्को नज़री आईआ। इक्को मन्दिर शिवदुआला मट्ठ सच्ची मसीत, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जन भगतां नज़र आए नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस नूं कैहन्दे लाशरीक, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। ओसे विच सच तौफ़ीक, तोहफ़ा घर घर रिहा पुचाईआ। जन भगत बच्चे वेखे अज़ीज़, नन्न्हे आपणी गोद उठाईआ। साचे सन्तां बख्श प्रीत, परम पुरख होए सहाईआ। गुरमुखां काया कर के ठांडी सीत, अमृत देणा इक बरसाईआ। गुरसिख सदा सदा जग जाए जीत, जग जीवण दाता सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा नाउँ बीठलो बीठ, बेअन्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द राह चलाईआ।

१०६५

१६

शब्दी राह चलाउणा एक, एकँकार समझाइंदा। दृष्ट इष्ट इक्को टेक, दूजा रूप ना कोए वटाइंदा। सति पुरख दा साचा भेख, बिन रूप रंग रेख वखाइंदा। पुरख अकाल दा इक्को हेत, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। जिस आदि जुगादि रचना रच के खेली खेड, सो ख़ालक ख़लक विच सोभा पाइंदा। ओस साहिब करो आदेस, जिस दा देस सचखण्ड इक्को नज़री आइंदा। ओथे ना कोई मुल्लां मसायक पीर पैगम्बर शेख़, पंडत पांधा ग्रन्थी पन्थी गुर अवतार इक्को जोत रूप नज़री आइंदा। ओस स्वामी नाल करो हेत, जिस दा प्यार दो जहान ना कोए मुकाइंदा। सो अन्दर वड़ के खोल्हे आपणा भेत, दूई द्वैती डेरा ढाइंदा। अग्नी अग्ग ना लागे जेठ, तत्ती वा ना तत तपाइंदा। सो सन्त सुहेला गुर चेला शब्द गुरू स्वामी लए वेख, जिस अन्तरजामी आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपे जाणे आपणा वेस, नर नरेश आपणी करनी धुर दी कार कमाइंदा।

* ११ जेठ २०२१ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड जसराऊर ज़िला अमृतसर *

अगम्मी मर्ज़ी पुरख अकाल, निरगुण निरवैर आप प्रगटाईआ। साची इच्छया कर त्यार, सो पुरख निरँजण खेल रचाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, एकँकार भेव खुल्हाईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो दयाल, श्री भगवान दए वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे साची कार, करता पुरख करनी आप कमाईआ। सच

दवारा रच सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, महल अटल आप उपाईआ। निरगुण दीआ इक्को बाल, सच नूर करे रुशनाईआ। मुकामे हक़ हो के ख़बरदार, परवरदिगार खेल खलाईआ। आपणी मर्ज़ी कर प्यार, प्रेम प्रीती इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघराईआ। साची मर्ज़ी श्री भगवान, आदि अन्ता आप जणाइंदा। सच दवारा वखाए इक निशान, दूजा निशाना नज़र कोए ना आइंदा। जिस घर स्वामी वसे इक्को आण, निहकामी अन्तरजामी डेरा लाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। नित नवित्त आदि जुगादि करे खेल महान, बेअन्त आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। आपणी मर्ज़ी कर हरि पुरख, अवल्लड़ी खेल खलाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। सच दवारे आपणा आपे करे दरस, आदर्श आपणा आप जणाईआ। ना कोई ज़िमीं असमान ना फ़र्श, ख़ाकी रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई नार कन्त ना दिसे मर्द, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मर्ज़ी आप प्रगटाईआ। साची मर्ज़ी गहर गम्भीर, हरि करता आप प्रगटाइंदा। मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। योद्धा सूर बण के वड्डा बीर, जोबन आपणा इक हंढाइंदा। रूप रंग रेख ना कोए तस्वीर, ज़हूर आपणा आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा। साची मर्ज़ी करे भगवन्त, हरि करता वड वड्याईआ। आपे बण के नार कन्त, सच दवारे सेज सुहाईआ। निरगुण हो के निरगुण बणावे बणत, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण खेले खेल आदि अन्त, इक इकल्ला आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। आपणी रचना मर्ज़ी अन्दर, हरि करता आप उपाईआ। सचखण्ड दवारे खोल्ह मन्दिर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई डूंघी कन्दर, समुंद सागर नज़र कोए ना आईआ। नाद गीत ना कोए मंगल, धुनी धुन ना कोए शनवाईआ। शरअ शरीअत ना कोए संगल, मज़्ब रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। आपणी मर्ज़ी हरि करतार, आदि पुरख प्रगटाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह हुक्म वरताईआ। जननी जन बण अगम्म अपार, अलख अगोचर खेल वखाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ रखाईआ। थिर घर साचे देवे वाड़, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, बाडी बणत ना कोए बणाईआ। सूरज चन्द ना कोई उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मर्ज़ी आप प्रगटाईआ। साची मर्ज़ी शब्दी धार, हरि करता कार कमाइंदा। शब्दी सुत कर प्यार, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। भेव अभेदा खोल्ह

१०९६ १६

कवाड़, अनभव आपणी कार जणाइंदा। तेरा मन्दिर अगम्म अपार, दीवा बाती इक रुशनाइंदा। कमलापाती मीत मुरार, हरि सज्जण इक अख्वाइंदा। साची मर्ज़ी सच विहारा कर निरगुण त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप दृढ़ाइंदा। साची मर्ज़ी एकँकार एक, इक इकल्ला आप जणाईआ। शब्द स्वामी तेरी टेक, गुर गुर रूप वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खेडण खेड, हरि करता इक्को संदेसा रिहा जणाईआ। त्रैगुण माया तेरा लेख, पंज तत करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी मर्ज़ी अन्दर बणत बणाईआ। साची मर्ज़ी सुणाए हरि करतार, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, साची सिख्या इक समझाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, चारे खाणी वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए आधार, लख चुरासी रूप वखाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, घर घर नाद सुणाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। साची मर्ज़ी करे प्रभ ठाकर, करनहार अख्वाइंदा। दो जहान वेखे गहर गम्भीर डूंघा सागर, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। जगत वणजारा बण सौदागर,

१०६७ निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पंज तत काया देवे आदर, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। करता पुरख बण करीम कादर, कुदरत १०६७

आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मर्ज़ी इक्को इक वखाइंदा। साची मर्ज़ी करे गहर

१६ गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। देवे माण पंज तत शरीर, ततव तत इक बुझाईआ। चोटी चढ़ के बैठे आप अख़ीर, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। मारनहारा अणयाला इक्को तीर, तीर निराला आप चलाईआ। प्यावणहारा जाम ठंडा सीर, अमृत धार इक वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए बणाईआ। साचा लेखा बणाए आप, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी थापण थाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाइंदा। निरगुण हो के सरगुण जाए आख, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, जीवण जुगत इक समझाइंदा। नूर खुदाई नजरी आए पाक, पवित आपणी धार बणाइंदा। भाग लगाए काया माटी ख़ाक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। मर्ज़ी अन्दर रचे संसार, लख चुरासी जीव जंत उपाईआ। मर्ज़ी अन्दर रवि ससि कर उज्यार, मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। मर्ज़ी अन्दर पृथ्मी आकाश दए आधार, पुरी लोअ सोभा पाईआ। मर्ज़ी अन्दर बोल सच जैकार, नाउँ निरँकार दए सुणाईआ। मर्ज़ी अन्दर खेल करे अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। मर्ज़ी अन्दर साचा हुक्म करे वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मर्ज़ी अन्दर भेजे तेई अवतार, लोकमात सेव लगाईआ। मर्ज़ी अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद करे ख़बरदार,

कलमा हक़ रसूल पढ़ाईआ। मर्ज़ी अन्दर जन भगतां दए अधार, भेव अभेदा आप खुलाईआ। मर्ज़ी अन्दर गुर गुर रूप धरे आप निरँकार, दहि दिशा खोज खुजाईआ। मर्ज़ी अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे त्यार, सिफ्ती ढोला राग सुणाईआ। मर्ज़ी अन्दर अठ दस गीता ज्ञान लाए अखाड़, भगत भगवान साचा भेव चुकाईआ। मर्ज़ी अन्दर आवे जावे जुग चौकड़ी चार, नित नवित्त वेस वटाईआ। मर्ज़ी अन्दर देवे दीदार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मर्ज़ी अन्दर साचे सन्त लए उठाल, मन मन्त्र इक समझाईआ। मर्ज़ी अन्दर गुरमुख गुरसिख गोदी लए बहाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। मर्ज़ी अन्दर सतिगुर बणे दयाल, दीनां नाथां होए सहाईआ। मर्ज़ी अन्दर रूप वटाए काल, लख चुरासी आपे खाईआ। मर्ज़ी अन्दर पावणहारा त्रैगुण माया जंजाल, मर्ज़ी अन्दर साची सिख्या दए समआईआ। मर्ज़ी अन्दर अन्दर आत्म वजाए अनादी ताल, शब्द राग इक सुणाईआ। मर्ज़ी अन्दर सुरत सवाणी करे बेहाल, बिहबल हो के दए दुहाईआ। मर्ज़ी अन्दर काया मन्दिर धर्म दुआर दए वखाल, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। मर्ज़ी अन्दर पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। मर्ज़ी अन्दर घालन रिहा घाल, गुर गुर आपणा भेव चुकाईआ। मर्ज़ी अन्दर गुर चेले वेखे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। मर्ज़ी अन्दर सब दा हल्ल करे सवाल, जहालत कोए रहिण ना पाईआ। मर्ज़ी अन्दर शब्द गुरू बण के होए दलाल, दो जहानां बेड़ा पार कराईआ। मर्ज़ी अन्दर लख चुरासी वेखे पत्त डाल, फुल टहिणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मर्ज़ी विच आदि जुगादि खेल खलाईआ। मर्ज़ी अन्दर खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण धाम सुहाए निहचल इक अटला, सच दवारे डेरा लाइंदा। एकँकार सच सिँघासण धुर दा मल्ला, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। आदि निरँजण सच प्रकाश दीपक बला, दो जहानां डगमगाइंदा। अबिनाशी करते सति संदेस सच्चा घल्ला, निरअक्खर आप पढ़ाइंदा। श्री भगवान सच निशान इक्को झुल्ला, झलक आपणे नाम दृढ़ाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू इक्को गंढु बंधाइंदा। साची मर्ज़ी अन्दर वेखे जलां थलां, डूंग्घे सागर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। मर्ज़ी अन्दर देवे दात, विष्न ब्रह्मा शिव झोली आप भराईआ। मर्ज़ी अन्दर होवे साथ, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। मर्ज़ी अन्दर जणाए गाथ, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। मर्ज़ी अन्दर मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। मर्ज़ी अन्दर बणे पिता मात, पूत सपूत गोद उठाईआ। मर्ज़ी अन्दर निज नेत्र खोले आख, हरि सन्तां लए जगाईआ। मर्ज़ी अन्दर प्रगट होए साख्यात, ज़ाहर ज़हूर रूप दरसाईआ। मर्ज़ी अन्दर हरिजन बणाए पारजात, मेहर नज़र इक उठाईआ। मर्ज़ी अन्दर लेखा लिख के गया कलम दवात, वाक भविक्खत इक सुणाईआ। मर्ज़ी

अन्दर वरन बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेखे ज़ात पात, दीन मज़्ब खोज खुजाईआ। मर्ज़ी अन्दर होवे दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी सब ने रखणी याद, भुल्ले जीव ना कोए लोकाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणाउँदे रहे आवाज़, रसना जिह्वा कूक अल्ह़ाईआ। जिस दा कलमा पढ़दे रहे निमाज़, सजदा इक्को घर वखाईआ। उस दी मर्ज़ी अन्दर लख चुरासी तन वज्जे रबाब, सतार नज़र किसे ना आईआ। सो मर्ज़ी अन्दर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां गया आख, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेखां खेल तमाश, निरगुण नूर रूप प्रगटाईआ। मेरी समझ ना आवे किसे ज़ात, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं करां वफ़ात, फ़ातया सब दा पढ़ां थाउँ थाईंआ। बीस बीसा वेखां हालात, हरि जगदीशा नाउँ धराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मन वासना करे नाच, बुध विवेक ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। प्रभ दी मर्ज़ी कहे सुणो जग मीत, हरि करता सच दृढ़ाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो रीत, सच सुच नज़र कोए ना आइंदा। झगड़ा प्या मन्दिर मसीत, गुर दर शिवदुआला मड्ड सर्ब कुरलाइंदा। आत्म दिसे ना कोई ठंडी सीत, मणका मन ना कोए भवाइंदा। मिले वड्याई ना कोई ऊँच नीच, अगम्म अथाह ध्यान ना कोए लगाइंदा। सच दवारे मिले ना कोए भीख, भिच्छया नाम ना कोए वरताइंदा। उम्मत उम्मती साचा कलमा भुल्लया हदीस, हज़रत मेल ना कोए मिलाइंदा। नेत्र खोल्ह़ वेखो ठीक, गुर का शब्द नज़र किसे ना आइंदा। घर स्वामी सुत्ता दे कर पीठ, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्ह़ाइंदा। दूर दुराडा वसणहार नज़दीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। प्रभ दी मर्ज़ी कहे उठो जीव जंत जग, कलयुग अन्त अन्धेरा छाईआ। आपणे अन्दरों आपा लओ लभ्भ, क्यों बैठे मुख भवाईआ। नौ दवारे पन्ध मुकाओ हद्द, नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। साचा मन्दिर वेखो लँघ, बण के पांधी राहीआ। घर स्वामी सुणो छन्द, अट्ठे पहर रिहा जस गाईआ। निज आत्म लओ इक अनन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। नूरी तेज चमके चन्द, चन्द सूरज दोवें नैण शरमाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी नाल आपणी मर्ज़ी लओ गंढ, आत्म परमात्म घर घर वज्जे वधाईआ। काया चोली नाम मजीठी लओ रंग, दुरमति मैल धवाईआ। पुरख अकाल नूं मिलण दी नहीं कोई संग, पड़दा उहला जन भगतां रिहा चुकाईआ। लेखा चुके जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अमृत धार मुख चुआईआ। आत्म सेज सुहाए इक पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। प्रभ दी मर्ज़ी सब नूं मारे ताअना, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग जीव एह देस बेगाना, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नेत्र खोल्ह़ो अन्तर अक्ख महाना, पड़दा उहला जगत चुकाईआ। दरस

करो श्री भगवाना, जो आदि जुगादी सच्चा माहीआ। अन्दरे अन्दर सुणो नाम तराना, अनहद रागी राग सुणाईआ। एथे ओथे मिले माणा, दो जहान होए सहाईआ। वेला गया सर्ब पछताणा, जुग जुग पश्चाताप करे लोकाईआ। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म इक महाना, जिस विच मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। प्रभ दी मर्ज़ी नाल मिल्या इक कबीर, जगत काअबा दित्ता तजाईआ। नाता तुटा तत शरीर, ब्रह्म मति इक्को पाईआ। मेहरवान बदल दिती तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। जल धार कट ज़ंजीर, शब्द डोरी तन्द वखाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी नाल मिल के चोटी चढ़ गया अख़ीर, जिस घर वसे शहिनशाहीआ। जलवा तक्क बेनज़ीर, आपणी नज़र नज़र नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी मेटे मर्ज़, हउमें रोग चुकाईआ। जन भगतो तुहाडी सदा ग़रज़, अबिनाशी करता आप रखाईआ। दीन दयाल हो के वंडे दर्द, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। एहो खेल जुगो जुग अचरज, हरि का भेव कोई समझ सके ना राईआ। लेखा जाणे प्रगट हो के योद्धा सूरबीर वड मर्द, मर्द मर्दाना आपणा नाउँ धराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करी मंज़ूर अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे लाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा करन आया फ़र्ज़, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। हरिजन साचे होण ना देवे हर्ज, अगला पिछला पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मर्ज़ी अन्दर इक्को मज़ा नाम चखाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी चंगा मज़ा, मरीज़ रहिण कोए ना पाईआ। राए धर्म ना देवे सज़ा, चित्रगुप्त लेख ना कोए जणाईआ। नेड़ ना आवे लाड़ी मौत कज़ा, जूनी जून ना कोए भवाईआ। श्री भगवान जुग जुग जन भगतां पिच्छे फिरे भज्जा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे वेखणहारा बेपरवाहीआ। प्रभ दी मर्ज़ी वेखे कलयुग मर्ज़ी, मर्ज़ी मर्ज़ी विच्चों प्रगटाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल कोई ना दिसे तेरा दर्दी, तेरी लोड़ नज़र ना आईआ। बेशक रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा नाउँ पढ़दी, अन्दर तेरा रूप वेखण कोए ना जाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ कलयुग जीव जांदे फ़र्ज़ी, फ़रमांबरदार ना कोए अख्वाईआ। साची सिख्या बुध विवेक कोए ना पढ़दी, मनमति घर घर बैठी डेरा लाईआ। जगत वासना अग्गे हो के खड़दी, सोहणा सुहञ्जणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ। कलयुग मर्ज़ी कहे मैं बड़ी चालाक, कलयुग जीवां दित्ता भुलाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह सके ना कोए ताक, बजर कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। पारब्रह्म तेरी मिले ना कोई ज़ात, आपणा आप ना कोए मिटाईआ। बंदे ख़ाकी कीते ख़ाक, कूड़ी क्रिया विच रुलाईआ। जग नेत्र काम वासना रहे झाक, दिब नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। लोभ मोह हँकार दित्ता

साथ, अट्ठे पहर करे लड़ाईआ। नाता तुट्टया पिता पूत बाप, सच्चा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ। कलयुग मर्ज़ी कहे मैं वड्डी सोहणी, सोहणी रूप वटाईआ। लख चुरासी जिस ने कोहणी, सिर सके ना कोए उठाईआ। मेरा नाउँ रख्या आदि जुगादी होणी, जिस दे हौके मरे सर्ब लोकाईआ। मैं चौदां लोक चौदां तबकां चौदां विद्या करनी बौहणी, लख चुरासी आपणे विच टिकाईआ। मेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना भरी दोहणी, ख़ाली कासा रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी उठाईआ। जीवां मर्ज़ी कहे मिले जग माया, ममता सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया संग निभाया, सच सुच ना कोए वड्याईआ। नार कन्त सेज बसन्त ना कोए हंढाया, सुंञीं रैण दए दुहाईआ। अंगीकार करता अंग ना कोए लगाया, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जगत रंडेपा नज़री आया, सुहागण रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा रिहा चुकाईआ। जगत मर्ज़ी विच्चों भगतां मर्ज़ी गई जाग, कलयुग विच आपणी अक्ख खुल्हाईआ। प्रभू नाम दा उपजे वैराग, बण वैरागण दए दुहाईआ। नाता तुटे सज्जण साक, बंधप नज़र कोए ना आईआ। कमली कोझी हो के रही झाक, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ मिले आप, आपणा फेरा पाईआ। आपणी मर्ज़ी दा दस्स के जाप, मेरी मर्ज़ी दए बदलाईआ। पिछला मेटे रोग संताप, अग्गे दुःख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचा हथ्थ टिकाईआ। भगतां मर्ज़ी बोले बोल, सोहणा राग सुणाईआ। साहिब सतिगुर तेरे वसां कोल, दूजा थान ना कोए सुहाईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर जावां मौल, बिस्मिल हो के सेव कमाईआ। गुर अवतारां नाल जो कीता कौल, पूरा कर के दे वखाईआ। तेरे नाम दा डंका वज्जे ढोल, दो जहान तेरा नाम ध्याईआ। सच दवारा देणा खोल्ह, कलयुग जीवां मर्ज़ी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होणा सहाईआ। भगतां मर्ज़ी करे पुकार, वाह वा वज्जे नाम वधाईआ। कलयुग जीवां मर्ज़ी लै उठाल, शब्द हुलारा इक लगाईआ। तेरी मर्ज़ी दीन दयाल, दर्द दुःख भंजन इक्को भाईआ। तिन्नां मर्ज़ी मिल के तेरा सोहे बंक दुआर, जिस घर वज्जे सच शनवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवी चौकड़ी युग उतरे पार, नित नवित्त आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे वखाईआ। भगतां मर्ज़ी रही कूक, दरोही तेरा नाम ख़ुदाईआ। वज्जे नग़ारा चारे कूट, दहि दिशा नाद सुणाईआ। कलयुग नाता तोड़ जूठ झूठ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। हरि भगत उपा साचे पूत, पिता आपणी गोद सुहाईआ। उजल कर इन्हां मुख, जो बैठे तेरा नाम भुलाईआ। जन्म मरन दा कट दुःख, लख चुरासी तन्द कटाईआ। घर आत्म परमात्म

दे सुख, ब्रह्म पारब्रह्म हो सहाईआ। बेशक कलयुग जीव भुल्ले बण मनुख, माणस हो के तेरी सार ना पाईआ। आपणी मर्ज़ी एन्नां गोदी चुक्क, एन्नां दी मर्ज़ी शौह दरया दे रुढ़ाईआ। तेरी मर्ज़ी नाल अपराधी सच्चे बणन सुत, पतित पुनीत दे कराईआ। तेरी मर्ज़ी अन्दर सब कुछ, दो जहान भज्जण वाहो दाहीआ। कलयुग जीवां पिछली मर्ज़ी जाए मुक्क, अगला हुक्म दे दृढ़ाईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना गावण मुख, सोहणा नाद सुणाईआ। सीस जगदीश सजदा करन झुक, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुहब्बत दे सखाईआ। सच मुहब्बत दे दलील, दर तेरे अरज़ोईआ। तुध बिन सच्चा दिसे ना कोए वकील, वुकला नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी माणस करन अपील, बरीख़ाना दे वखाईआ। तूं दाता छैल छबील, शहिनशाह इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दे मुकाईआ। तेरी मर्ज़ी करे इनकशाफ़, खोजे थाउँ थाईंआ। कलयुग मर्ज़ी होई ख़लाफ, वादा पूर ना कोए कराईआ। तुध बिन मेटे ना कोई इख़तलाफ़, दूई द्वैत ना कोए चुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा पत्तण तेरा घाट, तेरी नईया नौका नाम नज़री आईआ। तेरा नाम तेरा शब्द तेरी दात, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, जन ढहि पए सरनाईआ। ढहि पए सरना, सोच समझ ना कोए रखाईआ। साडी मर्ज़ी बख्श गुनाह, मर्ज़ी आपणी नाल मिलाईआ। बिन तेरे होए फ़नाह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अग्गे मिले ना कोई राह, रहिबर पन्ध ना कोए चुकाईआ। किरपा कर नूरी खुदा, ख़ैरख़ाह हो के मेहर नज़र उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो सहा, सहायता करनी चाईं चाईंआ। सच मर्ज़ी अन्दर मंगीए इक दुआ, असीस तेरे दर ते नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, धुर दी मर्ज़ी नाल हरिजन लैणे आप चलाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी जपणा नाम, सच्ची किरत समझाइंदा। अमृत आत्म पीणा जाम, मध प्याला इक वखाइंदा। मन ममता तोड़ना माण अभिमान, निवण सो अक्खर इक पढ़ाइंदा। घर ठाकर स्वामी लैणा पहचान, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। कलयुग जीव ना भुल्ल अञ्याण, अबिनाशी करता खेल खलाइंदा। जिस दी मर्ज़ी अन्दर चले दो जहान, सूरज चन्द सेव कमाइंदा। सो साहिब सतिगुर देवणहारा दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रातीं सुत्यां मिले आण, दिने जागदयां खुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुशीआं अन्दर देवे वर, घर घर विच सोभा पाइंदा। घर विच सोभा सुभाएमान, सच दए वड्याईआ। प्रभ दी मर्ज़ी को विरला गुरमुख जाणे विच जहान, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। जगत मर्ज़ी भरम भुल्ले शैतान, दिवस रैण अट्ठे पहर दुहाईआ। सतिगुर मर्ज़ी गुरमुख मिले माण, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, मर्ज़ी अन्दर देवे दान, चरण धूढ़ बख्श इश्नान, अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, नाद धुन करे सच सच सच शनवाईआ।

* १३ जेठ २०२१ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर *

विद्या कहे मैं कलमां नाल गई विधी, सच विद्याला नजर कोए ना आइंदा। अक्खरां विच्चों लभ्भदे तेरे मिलण दी बिधी, सति तेरा ध्यान ना कोए लगाइंदा। लेखां विच्चों लेख प्रभू तेरी कहाणी वड्डी किडी, जे खोजां ते निक्यों निक्का तेरा रूप नज़री आइंदा। इलमां वाले बण गए ज़िदी, नेत्र नाल अक्ख ना कोए मिलाइंदा। मज़्ब पगडण्डी तेरी धार मिले ना सिधी, बिन कदमां पन्ध ना कोए मुकाइंदा। किसे समझ ना आए मुनी ऋषी, जोग अभ्यास अन्दर सर्ब कुरलाइंदा। तेरे प्रेम प्यार दी कोई ना पावे इकी, दूआ हो के एका रूप समाइंदा। की दस्सां कहाणी बीती, पिछला लेखा समझ कोए ना पाइंदा। रसना पढ़ के तैनूं लभ्भदे मन्दिर मसीती, साचा मन्दिर खोज ना कोए खोजाइंदा। शरअ वाले मैनूं रहे घसीटी, मीत प्यारा मेल ना कोए मिलाइंदा। बेशक मैं लिखदी रही दस्सदी रही वस्त मिले पूरब कीती, करनी तेरी समझ कोए ना पाइंदा। ऐहो जेही मैं कदे ना वेखी रीती, जो बिन पढ़यां बिन गाया बिन अक्खरां आपणे लेखे पाइंदा। हैरानी विच्चों होई ठंडी सीती, अग्नी विच्चों अमृत नज़री आइंदा। सच फुलवाड़ी तेरी धर्म बाग़ीची, गुरमुख सज्जण सोभा पाइंदा। किरपा कर के अग्गे सब नूं दस्स एहो सच्ची रीती, जिस रीती दा लेख लिख्त विच ना कोए बणाइंदा। मैं बख्शावां पिछली भुल्ल कीती, अभुल्ल इक तू ही नज़री आइंदा। सज्जण बण के साहिब हो के सतिगुर अख्वा के क्यों अन्दर बाहर खेडणी लुकण मीटी, लुकयां तेरे हथ्थ की आइंदा। बिन उंगली चीची अग्गों हट्टा दे परां गीटी, जिस गीटी पिच्छे आपणा आप छुपाइंदा। ओथे कलम शाही ना कोई रीती, लेखा लेख ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, जिस वर विच्चों अक्खर नज़र कोए ना आइंदा। विद्या कहे मेरे विधाते, विध सोहणी दिती बणाईआ। मैं जुग जुग गई जगत समझा के, काग़ज़ शाही मेल मिलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों लिखवा के, शहादत गवाही दिती भुगताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरू ग्रन्थ वडया के, सोहणा सोहणा सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग अन्तिम आपणे नैण बैठी शरमा के, अक्ख सकां ना कोए उठाईआ। विद्या पढ़न वाले बैठे आपणा आप गुआ के, तेरी सार किसे ना पाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ बाहरों बहिण नहा धो के, अन्दर करे ना कोए सफ़ाईआ। मैं सारयां दुआरयां विच्चों निकली अन्तिम

११०३ १६

रो के, उच्ची कूकां कूक कूक सुणाईआ। दाता साहिब मिले प्रभ उह आ के, जिस मेरी बणत बणाईआ। किसे अनपढ़ गुरसिख किहा कमलीए चरणी डिग उहदी जा के, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। तेरा लेखा बणावे फेर मिटा के, मिटी ख़ाक नाल रला के दए वड्याईआ। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा हिसाब मुका के, मुकम्मल आपणा हुक्म मनाईआ। उह दयावान आपणी दया कमा के, दर्दीआं दर्द दुःख वंडाईआ। इक वेरां वेख बिन लिख्यां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गा के, गाहक तेरा इक्को नज़री आईआ। एह थोड़ी जेही रमज़ चलया आप सुणा के, अग्गे चौदां विद्या लेखा सारा दए खुल्हाईआ।

✱ १३ जेठ २०२१ बिक्रमी मैंहगा सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ✱

बिन सद्दउँ आया सद्दे, सधना मूल चुकाइंदा। पूरब प्रेम बचन बद्धे, बदला लहिणा झोली पाइंदा। छुरी हलाल वेखे कज़े, काज़ी मुल्लां भेव मिटाइंदा। खाण पकवान दे जाणे मज़े, लज़त सच्ची इक दृढ़ाइंदा। भगत सुहेला हो के आपे भज्जे, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। नज़र पई उस पट्ट सज्जे, जिस दा दुःख ना कोए वंडाइंदा। हौके लै लै मैं मैं कर के गज्जे, तूंही तूं तूं सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। पूरब लेखा चुकाए बिन सद्दयां, सधने लहिणा देण मिटाईआ। लभ्भयां हथ्थ ना आवे भज्जयां, फड़यां कोल ना कोए रखाईआ। जिस ने पूरब पड़दा कज्जया, सो वेखणहार गोसाईंआ। कीते कौल दी पाले लज्जया, इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। नित नवित्त इस ठाकर भगतां खहिड़ा कदे ना छड्डया, वेख वखाणे थाउँ थाईंआ। जगत दूर कर के पार हद्दया, सच दुआर डेरा लाईआ। प्रेम प्रीती सच खुमारी अन्दर मध्या, मस्ती इक्को इक चढ़ाईआ। जिस ने रस चख्या नाड़ी हड्डया, हड्डां विच्चों अड्ड इक्को नूर खुदाईआ। ओनां दा लेखा मुक्के पिच्छों सदीआं, सदाकत देण वाला दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सद्दे वाला इक्को सादक, साहिब सतिगुर हरि अख्वाइंदा। भगत उधारन जिस दी आदत, आदि अन्त खोज खुजाइंदा। साचा नाम दे समझावे इबादत, अदल आदल इक कमाइंदा। बख्शिश रहम करे सख़ावत, अमोलक वस्त अनमोल वरताइंदा। पूरब जन्म दी वेखणहार अलामत, पड़दा उहला आप उठाइंदा। बेपरवाह बण सही सलामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा मूल चुकाइंदा। पिछली याद विच लए सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। बाकी हिस्सा रह गया अद्ध, अद्धा सभनां झोली पाईआ। नेत्र रो किहा होई हद्द, वाह वा तेरी एह वड्याईआ। ज़ब्हा कीत्यां

बिनां मैनूं दित्ता छड्ड , छुरी जगत रूप कसाईआ। नेत्र रोवण तड़फण हड्ड, नाड़ी नाड़ी दए दुहाईआ। बिरहों सताए अग्नी अग्ग, अगला भेव ना कोए जणाईआ। बेज़बान तेरे कदमां सिर रिहा सट्ट, मिहबान तेरी ओट तकाईआ। जे मेरा मेरा देनों कट, तेरा तेरी झोली वखाईआ। धड़ी सेर वकेंदा हट्ट, कीमत घर घर साईं चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। बेज़बान करी पुकार, इक्को कूक सुणाईआ। तेरी शरअ ख़बरदार, शरअ तेरे विच्चों नज़री आईआ। सभनां दे सांझे यार, लाशरीक नूर खुदाईआ। ग़फ्लत विच सुतों आपणा आप पसार, बेदार अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। उठ वेख मेरा हाल, बेहाल रिहा कुरलाईआ। आपणी छुरी नाल करदों हलाल, कसाईआं हथ्थ क्यों मेरी खल्ल फड़ाईआ। तूं मेरा मालक तूं मेरा ईमान, रहमान तू ही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। बेज़बान मारया नाअरा, हकीकत हक़ जणाईआ। वेख खुदाई परवरदिगारा, बेवफ़ा मैनूं नज़री आईआ। जगत जहान तेरा दवारा, माणस विच्चों माणस दिती वड्याईआ। पंज तत कीआ आधारा, त्रैगुण सोभा पाईआ। मन मति बुध ला अखाड़ा, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान क्यों बैठा मुख भवाईआ। बेज़बान बक्करा कहे मैं नहीं मेरा, मेरा तेरा नजर कुछ ना आईआ। बेसबर हो के क्यों कीता वड्डा जेरा, ज़ेर ज़बर तेरी समझ किसे ना आईआ। साढे तिन्न अमृत वेला, वार थित सोहणी खुशी रही जणाईआ। दुःखां पाया घेरा, सुखां रैण विहाईआ। सुखां पिच्छे दुक्खां चुक्कया मेरा बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। जे प्रभू कसाई उते करें मेहरा, उहदा अन्तर दएं जणाईआ। सहाई होवें हो के नेरन नेरा, घर साचे फेरा पाईआ। भाग लग्गे साचे मन्दिर डेरा, वज्जे सति वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वड्याईआ। सुण फ़रयाद साहिब गुणवन्त, अन्दरे अन्दर सतार हिलाईआ। तेरी पुकार बे ज़बान सन्त, साहिब सतिगुर सच्चे भाईआ। दोहां जणा इक जीव इक जंत, जागरत विच्चों जागरत करे रुशनाईआ। सच संदेसा धुर दा मंत, बिन अक्खरां दयां पढ़ाईआ। तेरी मंग तेरी मिन्नत, मेहरवान झोली पाईआ। हुक्मे अन्दर बख़्शां हिम्मत, सधना दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र उठाए इक, इक इकल्ला दया कमाइंदा। दोहां दा लेखा दित्ता लिख, वेखणहारा नज़र कोए ना आइंदा। बेज़बान मारी निछ, कूड़ा मैला बाहर कढ्ढइंदा। उस दे विच्चों इक्को वरका गया डिग, जिस उपर परम पुरख आपणा नाम लिखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा हित, दूजा संग ना कोए निभाइंदा। करवट लै बदलां पिठ, सनमुख नज़री आइंदा। स्वामी हो के वसां चित, घर घर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। वरके उते लेख अपार, इक्को इक जणाईआ।

सधने करां ख़बरदार, तैनूं दयां वड्याईआ। दोहां वचोला सिरजणहार, इक्को कार कमाईआ। जिस दी छुरी ओसे दी धार, जिस दी गर्दन ओसे आप कटाईआ। की होया जे मेरा पट्ट दित्ता पाड़, दुखी होए दर्द ना कोए वंडाईआ। एसे दुःख पिच्छे तूं कीती पुकार, अन्तर रो रो दित्ता सुणाईआ। मैं सुणनहार निरँकार, निरगुण वेखां थाउँ थाईंआ। मेहर करां विच संसार, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होवे सदा सहाईआ। बक्करे किहा किहा की, सुणन विच कुछ ना आईआ। मैं निमाणा नकर्मण जीअ, जग जीवण दाते तेरी की वड्याईआ। सद बलिहारी तैथों थी, आपणा आप मिटाईआ। प्रेम प्यार दी रखां नींह, कूड़ी क्रिया कंध डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। बक्करे किहा तेरी रहमत, परवरदगार मोहे भाईआ। तूं मेरे दुःख नाल होइउँ सहिमत, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। मैं मूर्ख अञ्याणा अहिमक, भेव अभेद समझ सका ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद लेखा देणा मुकाईआ। श्री भगवान किहा हस्स, ख़ुशीआं नाल जणाईआ। दुखी दुख्यारे कर बस्स, दुक्खां विच्चों प्रेम नज़री आईआ। हौली जेही निरगुण बिन हथ्थां फेरया उते हथ्थ, कंड उते आपणी दया कमाईआ। उसे वेले चरण ढट्ठ,
११०६ नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उधरो सदने सुत्ते पए वज्जी सट्ट, शब्द अगम्मी चोट लगाईआ। आपणा आप रिहा कट, छुरी ११०६
हथ्थ फड़ कसाईआ। जिस वेले आपणे पट्ट उते लग्गा फट्ट, अग्गो बक्करा उहो नज़री आईआ। जेहड़ा हो के बेवस, तड़फ
१६ प्रभ नूं रिहा ध्याईआ। आपणी कहाणी रिहा दस्स, बेवस हो के रिहा गाईआ। तेरे घर की एहो जिहा हक़, हकीकत बैठी १६
मुख छुपाईआ। अबिनाशी करते हौली जेही दित्ता दस्स, रमज़ नाल रमज़ दिती मिलाईआ। मैं हुण लोकमात विच्चों जाणा नट्ठ, तेरा लेखा दयां मुकाईआ। सदने दे के इक्को मति, छुरी हथ्थों दयां सुटाईआ। नीहां हेठां रख, चार दिवारी दयां कढ्ढाईआ। चार दवारी रो रो सत्थर बहे घत्त, आपणा हाल सुणाईआ। जिन्ना चिर किरपा करे ना पुरख समरथ, तेरी मात ना कोई वड्याईआ। मैं वेखणी तुहाढ्ढे प्रेम प्यार दी रत, इट्ट गारा कम्म किसे ना आईआ। ओसे वेले श्री भगवान प्या हस्स, ख़ुशीआं नाल सुणाईआ। गोबिन्द बेटे तेरीआं नीहां हेठां रख, उते तेरी बणत बणाईआ। फिर निरगुण हो के भगतां गावां जस, सोहणा राग सुणाईआ। जिउँ मैं मेरी दे हो के वस, आप गया तजाईआ। जिस दी दुःख लग्गा चौथी लत्त, अट्ठे पहर रिहा कुरलाईआ। सिर रख के ओस दे हथ्थ, हथ्थां नाल देणा दबाईआ। तेरी फिर खोल्ह अक्ख, अक्खां विच्चों अक्ख तेरे नाल मिलाईआ। प्रेम प्यार दा दे के हक़, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। तेरा मास महिंगा विकया अज्ज हट्ट, फिर महिंगा रख दयां नाम वड्याईआ। एह खेल पुरख समरथ, जुग जुग लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। सदने दा लेखा अग्गे बाकी हक़, इक्की सावण राह तकाईआ।

बिन सदृया सदा देवण वाला सहिजे सहिजे रिहा दस्स, गुरमुख गुरमुख आप उठाईआ। की होया जे पिच्छे निरगुण हो के भज्ज, हुण निरगुण सरगुण विच्चों निरगुण नज़री आईआ। आपे आपणे मिलण दा दस्से चज्ज, आपे मेल मिलाए चाईं चाईंआ। छुरी कटार सीने किसे ना जाए वज्ज, ज़बा कर सीस ना कोई कटाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अन्दर रख, साची रीती नीती दए बताईआ । एथे किसे दा नहीं कुछ वस, कुछ करन वाला नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब पिछले लहिणे अन्दर हो के वस, वास्ता गुरमुखां रिहा जुड़ाईआ।

* १३ जेठ २०२१ बिक्रमी चेला सिँघ दे घर जम्मू शहर वज़ारत रोड *

शब्द शब्द प्रभ उठाया बेटा, निरगुण दया कमाईआ। पूरब लेखा सब दा वेखा, नव नौ चार खोज खुजाईआ। सरगुण कराया आपणा चेता, अनभुल दित्ता समझाईआ। परम पुरख प्रभ वेखो नेता, नर नरायण बेपरवाहीआ। नित नवित्त जिस दी खेडा, दो जहानां रचन रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस ने भेजा, धुर फ़रमाण हुक्म मनाईआ। लख चुरासी घट घट अन्तर माणे सेजा, सति सतिवादी डेरा लाईआ। नाम निधाना देवे धुर संदेसा, अनरागी राग सुणाईआ। नित नवित्त वटा के वेसा, रूप अनूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल कराईआ। शब्द कहे प्रभ दित्ता माण, सिर साहिब हथ्थ टिकाईआ। धुर संदेस सच फ़रमाण, फ़रमाबरदार रिहा जणाईआ। उठ लाल मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई वेख शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। मन वासना जीव बेईमान, बेवा बणी सर्ब लोकाईआ। गुर का शब्द ना कोए ज्ञान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चारों कुण्ट दिसे हराम, धीरज जत ना कोई रखाईआ। मुश्किल हल्ल ना होवे किसे आसान, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म दित्ता समझाईआ। शब्द कहे प्रभ किरपा रिहा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हुक्मे अन्दर वखाए घर घर, गृह गृह आपणा पर्दा लाहीआ। सिर हथ्थ टिकाए नरायण नर, नर हरि इक्को इक अख्वाईआ। साचे मन्दिर वेखणा चढ़, महल अटल डेरा लाईआ। भेव चुकाउणा सीस धड़, जीव जंत खोज खुजाईआ। लहिणा चुकाउणा चोटी जड़, मध आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ बख्श दात, दयावान दया कमाईआ। सीस जगदीश रख के हाथ, मेहर नज़र उठाईआ। बंद किवाड़ी खोल्ह ताक, पर्दा दित्ता उठाईआ। उठ लाडले मार झाक, दहि दिशा वेख वखाईआ। चुक पिछली वेख किताब, जो बिन अक्खरां दिती

बणाईआ। जिस दा समझ ना सके कोई हिसाब, लेखा लिख्त ना कोई गिणाईआ। गुर अवतार सामणे रख के बैठे भविक्ख्त वाक, वाक्य आपणा रहे जणाईआ। वेला वक्त सुहञ्जणा प्रभ देणा सच्चा साथ, सोहणी वंड वंडाईआ। निरवैर पुरख साडी पूरी करनी आस, तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे प्रभ दित्ता हुलारा, मेहरवान दया कमाईआ। अन्तर अन्तर जणाया इक इशारा, सच सच समझाईआ। कलयुग वेख अन्त किनारा, नईया डोले थाउँ थाईंआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोई रुशनाईआ। सज्जण मिले ना मीत मुरारा, प्रेमी प्रेम ना कोए रखाईआ। कागज़ कलम करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसारा, पढ़या हथ्थ किसे ना आईआ। चौदां विद्या चौदां लोक चौदां तबका दित्ता इक्को लारा, अगला लेखा कोई समझ सके ना राईआ। एसे करके गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए पुकारा, सृष्ट सबाई कूक सुणाईआ। सब दा लेखा देवे वारो वारा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सुणाए इक जैकारा, जै जैकार दो जहान शनवाईआ। जिस दा उच्च अगम्म अथाह लग्गे इक अखाड़ा, कोटन कोटि गोपी काहन बिन तत चोले नाच नचाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल निरगुण निरवैर वेखणहारा, कल अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र

१११०८ रखाईआ। निरगुण निरगुण करे जाप, सरगुण सरगुण सोभा पाईआ। दोहां विचोला बणया आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। १११०८

१६ अन्दर वड़के रिहा आख, बाहरों करे ना कोई पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। आदि जुगादी १६

तेरी मेरी इक्को ज़ात, वरन गोत वंड ना कोई वंडाईआ। तेरा पड़दा पंज तत माटी खाक, मेरा उहला दो जहानां नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेल रिहा खिलाईआ। शब्द कहे प्रभ बख्शिश कीती, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग वेख कूड़ी रीती, रीतीवान रिहा समझाईआ। झेड़ा प्या मन्दिर मसीती, गुरुदुआर शिवदुआले मद्दु रहे कुरलाईआ। अन्तर आत्म होए पुनीती, वासना मैल ना कोई धवाईआ। अगम्मी अग्ग ना ठांडी सीती, मेघ सच ना कोई बरसाईआ। लेखा चुक्के ना हस्त कीटी, ऊँच नीच ज़ात पात ना कोई वड्याईआ। कूड़ी क्रिया गंड पीची, लोकमात सके ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार करन उडीकी, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। परवरदिगार सच लाशरीकी, शरकत सब दी दए गंवाईआ। वेखे हक़ हकीकी, हकीकत विच्चों खोज खुजाईआ। उस दी सिफ्त वड तारीफी, तारीफां विच ना कोई सुणाईआ। उस दा प्रेम प्यार दस्से इक अज़ीज़ी, शब्द दुलारे रिहा उठाईआ। आत्म करन इक्को प्रीती, धुर दा ढोला राग गाईआ। तेरी धार इक अतीती, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग रिहा जणाईआ।

शब्द कहे प्रभ हुक्म सुणाया, बिन मेरे समझ कोए ना पाइंदा। दो जहानां राह वखाया, बिन अक्खां अक्ख वडियाइंदा। बिन चरणां दूर दुराडा पन्ध मुकाया, कदम कदम ना कोए टिकाइंदा । बिन नेत्र लोचण वेख वखाया, पर्दा उहला सर्ब रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। शब्द कहे प्रभ बख्शिश करनी, सच दिती वड्याईआ। आत्म परमात्म कदे ना मरनी, मर जीवत रूप वटाईआ। जन भगतां दस्स प्रभ दी सरनी, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। साची सिख्या इक्को पढ़नी, बाकी अवर ना कोई पढ़ाईआ। मंजल पौड़ी इक्को चढ़नी, घर साचे फेरा पाईआ। लेख चुकाउणा वरनी बरनी, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग रिहा वखाईआ। शब्द कहे प्रभ दए संदेसा, इक्को हुक्म वरताईआ। लाल लालन तेरा पेशा, पेशतर दए वखाईआ। हुक्म वरता विष्न ब्रह्मा शिव गनेशा, सुरप्त सोया रहिण कोए ना पाईआ । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिछला मुका ठेका, हिस्सेदार ना कोए सुणाईआ। दो जहानां अगला भेव चुका बीता, पड़दा आप उठाईआ। सब नूं नज़री आए इक्को नेता, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। लहिणा चुके मुल्लां शेखा मुसायक देण दुहाईआ । आत्म परमात्म इक्को नज़री आए सौहरा पेका, पेईए सौहरे इक रंग वखाईआ। मिल सखीआं सोहणा मिले खेडन खेडा, वज्जे नाम वधाईआ। एसे कारण निरगुण धार तैनूं भेजा, पंज तत ना कोए वखाईआ। जन भगतां अन्दर सहौणी सेजा, सोहणा आसण लाईआ। जोती बख्शना नूरी तेजा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। अमृत बरसना ठांडा मेघा, निझर धार वहाईआ। खण्डा वखाउणा नाम तेगा, छत्रू कूड़े मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। शब्द कहे प्रभ होया दयाल, मेहरवान होए सहाईआ। साची सिख्या दिती सखाल, धुर दी कर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई वेख मार ध्यान, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। अक्खरां लेखा वेख महान, पत्थरां विच्चों खोदयां पड़दा दए उठाईआ। कलम वेख बोलया ज़बान, ढोला सोहला राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं देवणहार वड्याईआ । शब्द कहे प्रभ सुणाया गीत, इक्को राग अल्लाईआ। जेहड़ा वसे हर घट चीत, घर घर डेरा लाईआ। मेल मिलाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। लख चुरासी रिहा जीत, मानस मेला सहिज सबाईआ। चरण कँवल दस्से प्रीत, सरन वड वड्याईआ। कलमा दस्से हदीस, धुर दी करे पढ़ाईआ। नाम करे इक बख्शीश, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सतिजुग दस्से अगम्मी रीत, रीतीवान रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहिबर इक्को इक अख्वाईआ । शब्द कहे प्रभ देवे राह, रस्ता इक जणाईआ। लख चुरासी बण मलाह, ज़ात पात वरन गोत ना कोई रखाईआ। आत्म दस्से धुर सलाह, परमात्म वेख वखाईआ। चार युग दी खाणी बाणी नाल

बणा गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी बणत रिहा बणाईआ। शब्द सुत कहे मैं होवां दलेर, हरि देवणहार वड्याईआ । मेरा रूप अगम्मी शेर, रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। दो जहानां निरगुण हो के रिहा घेर, सरगुण आपणा फेरा पाईआ । जुग जन्म दा लहिणा दयां निबेड़, लेखा मंगां थाउँ थाईंआ। कूड़ी क्रिया मुके झेड़, झगड़ा रहे ना जगत लोकाईआ। भाग लगा के मन्दिर खेड़, काया खिड़की इक खुल्हाईआ। मन सहिसा ना कोई भेड़, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। मुहब्बत करके करां मेहर, मुहब्बत इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। शब्द कहे प्रभ किरपा करी ठाकर, सहिसा सर्ब चुकाईआ। कलयुग वखाया काया सागर, भँवरी पई लोकाईआ। एथे ओथे मिले किसे ना आदर, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। नाता तुटा करीम कादर, परवरदगार गोद ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा रिहा जणाईआ। मैं भगतां माणा सेज, साचे सन्तां करां कुड़माईआ। गुरमुख लवां पेख, गुरसिख गोद सुहाईआ। सच वखावां धुर दा देस, सचखण्ड पर्दा आप उठाईआ। जिस घर सदा वसे एक, एका एकँकार डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर छोटे बच्चे नन्हे रहे खेड, इधर उधर भज्जण वाहो दाहीआ। चरण कँवल सच सहारा इक्को रहे पेख, नेत्र नैण नैण नैण उठाईआ। लोकमात पिच्छे छड्ड के गए देस, अग्गे बहि के खुशी मनाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर लिख के गए लेख, नाता जोड़ कलम छाहीआ। लहिणा देणा दे के गया आप दस्मेस, दहि दिशा गया सुणाईआ। परम पुरख परमात्म वटाए भेस, जिस दा पिता ना कोई माईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोए मूंड मुंडाईआ । आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। सच सुहञ्जणा वसाए देस, सम्बल डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी धुर दी बणत बणाईआ। शब्द कहे प्रभ बणाई बणत, घड़ण भंनणहार इक अख्वाईआ। आदि जुगादि महिमा सदा अगणत, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। थोड़ा थोड़ा भेव गुरमुख विरले दित्ता सन्त, भगत भगवान इशारे नाल उठाईआ। लख चुरासी भरमे भुल्ले जीव जंत, जीव जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। नाता तुट्टया नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। जिस नाल गढ़ तुटे हउमें हंगत, हँ ब्रह्म नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द स्वामी इक समझाईआ। शब्द कहे मैं बणया स्वामी, प्रभ सच दिती वड्याईआ। अवाज़ मार अन्तरजामी, अन्तष्करन वेख वखाईआ। पंज तत दी छड्डी गुलामी, निरगुण हो के हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दी साची बाणी, सच संदेसा इक सुणाईआ। जिस दी सिफ्त सदा लासानी, सो आसानी रिहा बणाईआ। सतिगुर दे घर सुत दुलारा हो के खावां महमानी,

आपणा पेट भराईआ । बहुत खुशीआं नाल दसाई अगली कहाणी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे शैतानी, शरअ ना कोई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभ देवे माण, दो जहानां हुक्म वरताईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान रिहा जस गाईआ। जिस दे पिच्छे शिवदुआले मट्ठ बणाए मकान, तीर्थ तट मन्दिरां नाल सुहाईआ। जिस दी विद्या अक्खरां नाल मीजान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ । जिस दा मिले ना किते निशान, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। जिस नूं कैहन्दे श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए सहाईआ । सो मेरा बणया मेहरवान, शब्दी सुत रिहा दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड विष्न ब्रह्मा रवि ससि सूर्या चन्द सेव कमान, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। मण्डल मण्डप खेल वेखे ज़िमीं असमान, जल थल महीअल आपणा रूप जणाईआ । सो दाता दानी सूरबीर बलवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुहब्बत विच दित्ता दान, वस्त अगम्म दी झोली पाईआ। शाहो भूप मार ध्यान, सतिगुर सच्चा हुक्म सुणाईआ। बिन शब्द दूजा दिसे ना कोई निशान, निशाना इक्को इक हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, सच सच्चा इक अख्वाईआ। शब्द कहे मैं सब दा ठाकर, घर घर ठोकर लाइंदा। पंज तत काया दे के आदर, गुर अवतार पीर पैगम्बर गोद सुहाइंदा। सूरबीर योद्धा बण बहादर, दो जहानां वंड खण्ड खण्ड आप कराइंदा। लख चुरासी विच्चों जिन्हां भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाइंदा । नाम वणजारा बण सौदागर, चौदां लोक हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा । शब्द कहे मैं सेवादार, धुर दी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी लै अवतार, निरगुण सरगुण खेल वखाईआ। अन्दरे अन्दर बोल जैकार, करां अगम्म पढ़ाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर पुकार, सच सति समझाईआ। गुफ्त शनीद करां गुफ़तार, राग अनाद वजाईआ। दर दरवेश बणां भिखार, अलख निरँजण हो के अलख जगाईआ। कातब हो के बणा लिखार, मेल मिलावां काग़ज़ कलम छाहीआ। मुखातब हो के देवा दीदार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। इबादत विच हो के बणा मददगार, धुर दा संग निभाईआ। सफ़ारश करके बेड़ा करावां पार, शौह दरया ना कोई रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। शब्द कहे मैं सच राम, राम रामां विच्चों नज़री आईआ। प्रीती विच बणां गुलाम, मुर्शद हो के मुरीदां लवां उठाईआ। बरदा हो के करां सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पैगम्बर हो के दयां पैग़ाम, कलमा इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। शब्द कहे मेरा रंग अनोखा, आदि जुगादि सदा रंगाईआ। चार वरन करके धोखा, ज़ात पात डेरा

ढाहीआ। माण दवावां उपर लोका, परलोकां ख़ुशी वखाईआ। सच सुणावां इक श्लोका, आत्म परमात्म कर पढ़ाईआ। तन नग़ारे लगावां चोटा, सुरती शब्द ताल सुणाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढा खोटा, हउमें गढ़ तुड़ाईआ। जगत अन्धेर जगावां जोता, नूर नूर नूर रुशनाईआ। किसे विच ना आवां सोचां, मन मति बुध मेरी सार किसे ना पाईआ। जन भगतां प्रीती नित नित लोचां, साचे सन्तां वेख ख़ुशी मनाईआ। पकड़ उठावां विच्चों कोटां, गुरमुख विरले गले लगाईआ। सन्त सुहेला इक्को बेटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। शब्द कहे मेरी सोहणी कार, हरि करते आप जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखां चार, सतिजुग त्रेता द्वापर फेरा पाईआ। कलयुग खेल करां अपार, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लेखा लिख के गए बण लिखार, भविक्ख्त जगत जुगत आप जणाईआ। तिन्नां पैज दयां संवार, सवार्थी हो के दया कमाईआ। निरगुण निरवैर लै अवतार, जोती शब्दी धार प्रगटाईआ। महाबली खेल अपार, वली छली वेस वटाईआ। धाम अनोखा दिसे अगम्म दुआर, सम्बल समझ कोए ना आईआ। साचा नाम बोल इक जैकार, धुर दी करे इक पढ़ाईआ। आत्म परमात्म लख चुरासी इक विहार, बिवहारी रिहा समझाईआ। करनी कर विच संसार, सगल सृष्टी रिहा उठाईआ। भगत सुहेले रखे नाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, सहिज सुभाओ करे पढ़ाईआ। दीना बंधप दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। काया मन्दिर अन्दर सोहणी सुहञ्जणी धर्मसाल, पुरख अबिनाशी कमलापाती दीआ बाती इक जगाईआ। जिस दी मंज़ल सदा सुखाल, घर विच घर पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वर घर दाता इक्को इक अख्वाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, शब्द सरूप शाह सुल्तान, महिमा अनूप बाहर ब्यान, नित नवित्त वेखे आण, सन्त सज्जण कर पहचान, गुरमुख गुर गुर देवे दान, गुरसिख चरण कँवल बख्श ध्यान, ध्यान आपणे विच रखाईआ।

शब्द कहे मैं बणया सुहेला, अनभव खेल खिलाइंदा। भगत भगवन्त कर कर मेला, गृह गृह ख़ुशी वखाइंदा। इक्को घर वसा गुरु गुर चेला, चेला गुर रंग रंगाइंदा। धुर दा धाम दस्स नवेला, निराकार आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक वखाइंदा। शब्द कहे मैं बणावां बणत, घड़न भंनणहार अख्वाइंदा। लेख जणावां जीव जंत, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। नाम देवां निराला धुर दा मंत, मन्त्र इक प्रगटाइंदा। रूप वखावां नार कन्त, घर सज्जण सच वडियाइंदा। महिमा समझावां सदा अगणत, लेखा लिख्त वडियाइंदा। वेख वखावां आदि अन्त, जुग चौकड़ी

फेरा पाइंदा। बोध अगाध बणा के पंडत, धुर दा साचा नाम सुणाइंदा। कर प्रवेश जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज भरम चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। शब्द कहे मैं आया दौड़, धुरदरगाही फेरा पाईआ। जिन्हां सज्जणा गया बौहड़, तिन्हां पूरब लेखा नज़री आईआ। कोई दस्स के गया ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता दए वड्याईआ। जगत प्यासा होए बुझाए औड़, तृष्ना तृप्त पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उस दे हथ्थ डोर, बन्नृ शब्दी तन्द उठाईआ। भगत कहे मोहे मेरा गया बौहड़, दूर दुराडा नज़री आईआ। चढ़ के मंज़ल वेखे पौड़, घर मन्दिर सोभा पाईआ। ओथे खेल अवर का और, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल सोहणी बणत बणाईआ। शब्द कहे मैं बणके सच्चा, साहिब सतिगुर नज़री आईआ। जन भगत उठावां आपणा बच्चा, बचपन आपणे नाल मिलाईआ। चार जुग धुर संदेस जो गुर अवतारां दस्सां, पीर पैगम्बरां इशारा दित्ता जणाईआ। उसे मन्दिर अन्दर वसां, जिस दी साढे तिन्न हथ्थ करे वड्याईआ। ओसे प्रेम प्यार अन्दर नच्चां, निरगुण हो के भज्जां वाहो दाहीआ। उसे ताल नग़ारे हो के वज्जां, जिस दी धुन नाद समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म दित्ता बेपरवाहीआ। शब्द कहे मैं आया गुरदेव, सब दा मित्र नज़री आईआ। जिस दी जुग चौकड़ी करदे रहे सेव, सेवक बणके सीस निवाईआ। सो देवणहारा अगम्मी मेव, रस अमृत इक चखाईआ। जिस दी सिफ्त जाणे कोई ना जेहव, बत्ती दन्द ना कोई वड्याईआ। जन भगतां खोल्ह आपणा भेव, पड़दा उहला दित्ता उठाईआ। धाम वखाया इक नेहकेव, नेहचल बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दिती समझाईआ। शब्द कहे मैं आया नट्ठा, बणके पांधी राहीआ। सन्त सुहेला कीता अकट्ठा, पूरब मेल मिलाईआ। जन्म कर्म दा मेट के रट्टा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोग अभ्यास कोई ना दस्सा, पूजा पाठ ना कोए पढ़ाईआ। सर सरोवर ना बणाया कोई तट्टा, तीर्थ रूप ना कोई वखाईआ। प्रेम प्यार अन्दर हिरदे वसा, घर घर विच डेरा लाईआ। सच संदेस सुणाया जसा, सोहँ ढोला राग अलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रह गया हक़ा बक्का, हैरानी सब दे उपर छाईआ। करे खेल खेल पुरख समरथा, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। सच देवे निझर रसा, अमृत धार मुख चुआईआ। त्रैगुण माया जगत ख्याल कदे ना फसा, फाँसी सब दी रिहा तुड़ाईआ। अग्नी तत ना कोए तपाया भट्ठा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ला पर्बत दिसे वट्टा, डूंघी कन्दर निज घर आपे वेख वखाईआ। सति धर्म सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी लै के मत्ता, मता आपणे नाल पकाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथा, कथनी कथ ना सके राईआ। सो साहिब सज्जण मीत मुरारा घर स्वामी बणया सका, कूड़ कुड़यारा नाता तोड़ तुड़ाईआ।

अक्खां नाल मिलाके अक्खां, आखर आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे मैं आया लाड़ा, धुर दी बणत बणाईआ। बण कन्त बणाई नारा, निरगुण निरवैर लए प्रनाईआ। साचे मन्दिर अन्दर इक अखाड़ा, गोपी काहन नाच नचाईआ। तूं मेरा मैं तेरी सांझी गावण वारा, ढोला राग इक्को सुणाईआ। अगम्म अथाह बोल जैकारा, करे सच पढ़ाईआ। महल अटल उच्च मनारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। कागद कालम ना लिखणहारा, वेद कतेब समझ ना पाईआ। थोड़ा थोड़ा सारे दे के गए इशारा, इशारयां विच्चों बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची खेल आप वखाईआ। शब्द कहे मैं आया खेल करन, करते दिती वड्याईआ। सन्त सुहेले आया फड़न, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जीवदयां जग आया मरन, मरन जीवण विच बदलाईआ। दो जहानां आया तरन, सगला साथ नाल तराईआ। उच्चे टिल्ले आया चढ़न, साचे पौड़े सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा वखाईआ। शब्द कहे मैं आया उधारन, पतित पापी पार कराइंदा। जन भगतां पैज संवारन, स्वार्थी स्वार्थ आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी विच्चों आया उभारन, फड़ बाहों पार लगाइंदा। एह वड्डा धुर दा कारण, बिन करनीउँ लेखे लाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान एसे दी सिफ्त उच्चारन, जो सिफ्तां वाला हरि भगत सिफ्ती रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाइंदा। शब्द कहे मैं आया करता, कुदरत वेख वखाईआ। ना जम्मदा ना कदे मरदा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ । निरभउ हो कदे ना डरदा, भय विच कदे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेस अगम्मा धरदा, धरनी धरत धवल सुहाईआ । सन्त सुहेले गुर चेले गुरमुख विच्चों फड़दा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। नार सुहागण बण वैरागण आत्म परमात्म आपे वरदा, वर दाता बेपरवाहीआ। लेखा जाणां जीव जंत साध सन्त घर घर दा, दर दर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह फेरा पाईआ। शब्द कहे प्रभ लेखा बेपरवाह, बेपरवाही दिती जणाईआ। धुर दा बण इक मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। रहिबर हो के सच खुदा, नूरी जलवा दयां जणाईआ। धुर दा नादी नाद सुणा, अनराग रागां विच्चों दयां प्रगटाईआ। बोध अगाध मन्त्र दृढ़ा, करां सच पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जो पूरब भविक्ख्त गए लिखा, सो लेखा वेखां थाउँ थाईंआ। लख चुरासी जानणहारा गुनाह, सिफ्तां भरया इक्को इक नज़री आईआ । सन्त सुहेले लवां जगा, गुर चेले मेल मिलाईआ। जन भगतां पकड़ बांह, सुत्ते सुत्तयां विच्चों जगाईआ। नाता जोड़ पिता माँ, पूत सपूत गोद उठाईआ। साची सिख्या इक दृढ़ा, दृष्टी आपणे विच टिकाईआ।

जिन्हां गुरमुखां इक वार हां विच कीती हां, हउमे रोग चुकाईआ। ओन्हां सच दवारा बख़्शा सच्चा थाँ, जिस दी भूमका जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सच महल्ले दयां वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ढोला रहे गा, गवण अवण दोवें दित्ते मिटाईआ।

* १४ जेठ २०२१ बिक्रमी बीबी अमरो देवी, सधरो देवी दे गृह जम्मू *

शब्द कहे मैं सद अमर, अमरापद समाइंदा। गुर अवतारां दे दे ख़बर, बेख़बर आप सुणाइंदा। जाम प्याला देवां मधुर, रस इक्को इक प्रगटाइंदा। पीर पैगम्बर बणा टब्बर, कुंनबा इक्को इक वडियाइंदा। सति सतिवादी देवां सबर, साबत आपणा आप वखाइंदा। खेलां खेल बाहर अन्दर, गुप्त ज़ाहर नूर चमकाइंदा। तोड़ तुड़ावां कूड़ा जन्दर, सच हथौड़ा हथ्थ रखाइंदा। कदे विच ना आवां मढ़ी गोर कबर, ख़ाकी ख़ाक ना कदे समाइंदा। नित नवित्त आपणा रूप लवां बदल, वेस अनेका आप वटाइंदा। सच दवारे बहि के करां अदल, अदालत इक्को इक लगाइंदा। कत्लगाह विच मैनूं कोए ना करे कत्ल, मक्तूल रूप ना कोए वखाइंदा। मेरा धाम मुक्दस बैतुल, सच दवारा इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१११५ साची खेल मोहे समझाइंदा। शब्द कहे मैं सच अमराओ, उलफत इक्को इक वड्याईआ। वसां निहचल धाम अगम्म अथाहो, १११५
१६ महल अटल डेरा लाईआ। सच संदेसा गावण दा सदा चाउ, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करां पढ़ाईआ । निरगुण हो के सरगुण पकड़ां बांहों, निर्धन सरधन दयां वड्याईआ। जुग जुग फड़ फड़ हँस बणावां काउँ, काग हँस रूप वखाईआ। जन भगतां देवां ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भुल्लयां भटकयां पावां राहो, मार्ग इक्को इक धुर दा दयां वखाईआ। सच मन्त्र जपावां नाउँ, नाउँ निरँकारा इक इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा दिती लगाईआ। शब्द कहे मैं उच्च अगम्म, प्रभ देवणहार वड्याईआ। ना मरां ना पवां जम्म, जीवण जुगत समझ किसे ना आईआ। हथ्थ मूँह नक्क ना कोए कन्न, अक्खां दृष्ट ना कोए जणाईआ। पंज तत ना कोई तन, माया वंड ना कोए वंडाईआ। मन्दिर मस्जिद मकान ना कोई छप्पर छन्न, झौंपड़ी नज़र किसे ना आईआ। शाह पातशाह राज राजान देवे कोई ना डंन, बंदीख़ाने ना कोए सुटाईआ। साचे हुक्म अन्दर बण हाकम सब नूं रिहा बन्नू, बन्धन इक्को इक जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दित्ता चुकाईआ। शब्द कहे मेरा धाम अपारा, हरि जू सोहणी बणत बणाईआ। निरगुण हो के वसां न्यारा, निराकार हो के सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी खेल करां विच संसारा, बण संसारी वेस वटाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी आत्म परमात्म खोल्ह किवाड़ा, साचा मार्ग इक्को इक जणाईआ। नित नवित्त गोपी काहन लगावां अखाड़ा, साची सखीआं मण्डल रास रचाईआ। सदा सदा सद सच वजावां ताड़ा, धुर दा राग नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी मोहे दिती जणाईआ। शब्द कहे मैं सब दा आलम, इलमां विच्चों नज़र किसे ना आईआ। हुक्म वासते सब तों जालम, हकीकत विच्चों हक़ दयां बुझाईआ। लेखां विच्चों अगम्म अथाह वड्डा कातब कालम, कलम्यां विच्चों कलमा नबी पढ़ाईआ। रूपां विच्चों रूप सति सरूप मेरा सालम, सही सलामत आप अख्वाईआ। नग़म्यां विच्चों नग़मा दयां पैग़ामन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाईआ। ईमानां विच्चों सच दृढ़ावां ईमानन, इष्ट देव स्वामी बेपरवाहीआ। जुग जुग जन भगतां बणदा रिहा ज़ामन, धुर दी ज़ामनी तोड़ निभाईआ। एहो जेहा समां कदे ना मिल्या जो भगत भगवन्त बैठण आमणो सामण, सम्मत सम्मती ख़ुशी मनाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर कृष्ना राम गावण, राम राम राम रूप इक्को नज़री आईआ। जिस दा जुग चौकड़ी करदे रहे आगमन, आज्ञा विच सर्ब लोकाईआ। सुणदे रहे कलाम धुर कलामण, आलमीन करे पढ़ाईआ। सो साहिब सतिगुर शब्दी शब्द पकड़या दामन, दस्तगीर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा चुकाए दो जहानन, एका दूआ तत सरूप आपणे विच मिलाईआ।

११९६ १६

*** १४ जेठ २०२१ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ***

हुक्म अन्दर बणां हाकम, शब्दी शब्द ख़ुशी मनाइंदा। भेव चुकावां परमात्म आत्म, पड़दा उहला आप उठाइंदा। खेल करावां ज़ाहर बातन, गुफ़त शुनीद रंग रंगाइंदा। बिन रसना जिह्वा करां बातन, धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। पीआ प्रीतम हो के बणां साथन, सगला संग निभाइंदा। साचा ढोला सुणावां गाथन, गीत गोबिन्द अलाइंदा। साचे मण्डल पावां रासन, गोपी काहन नचाइंदा। साची जोत करां परकासन, निरगुण नूर नूर नूर डगमगाइंदा। सच भूमका सुहावां अगम्मड़ा आसण, सेज सुहञ्जणी डेरा लाइंदा। मेल मिलावां चरण प्रीती साचा नातन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप दृढ़ाइंदा। हुक्मे अन्दर वेखां हकीकत, हक़ बहक़ खोज खुजाईआ। मेट मिटावां कूड़ शरीकत, लाशरीक नाउँ वड्याईआ। सच दसावां इक अकीदत, अकीदा इक्को घर जमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो कर के गए वसीअत, मिसल सब दी दयां वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत शास्त्र सिमरत वेद पुराण जो करन नसीहत, अल्फ़ ये करे पढ़ाईआ।

मेहरवान हो के सब दी बदल देवां तबीयत, तबअ तमअ इक्को रंग वखाईआ। मेहरवान हो के देवां इक काबलीयत, इलम आलम ना कोए वड्याईआ। हिरदे विच्चों दस्सां इक असलीयत, असल आपणा रूप वखाईआ। वस्त अमोलक दस्सां मलकीयत, नाम पदार्थ इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। हाकम बण के बोलां जैकारा, इक्को नाद सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सच प्यारा, पीआ प्रीतम दयां दृढ़ाईआ। सति सतिवादी सति मनारा, महल अटल दयां वखाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, निरगुण नूर नूर करां रुशनाईआ। आत्म परमात्म खेल न्यारा, घर मन्दिर दयां वखाईआ। सुरती शब्दी सच अखाड़ा, गोपी काहन रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा इक चुकाईआ। हाकम बण के देवां संदेसा, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। परम पुरख प्रभ इक नरेशा, दो जहानां शाह अख्वाईआ। नित नवित्त मेरा धारे अगम्मी वेसा, वेस अवल्लड़ा आप प्रगटाईआ। सति धर्म चलाए पेशा, पेशतर सब नूं आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करनहारा हेता, प्रीतीवान प्रीतम दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी अगला पिछला जाणे लेखा, पड़दा उहला दए उठाईआ। अन्दर वड़ के काया मन्दिर चढ़ के साचा खोल्हे भेता, अनभव आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

हाकम हो के बदलां तकदीर साची करनी किरत कमाईआ। प्रेम प्यार दी दस्स तदबीर, मन का मणका दयां भवाईआ। मंज़ल वेखां चढ़ अख़ीर, चोटी बहि बहि सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट ज़ंजीर, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। गहर गम्भीर बण वड पीरन पीर, ज़मीर सब दी दयां बदलाईआ। सच वखावां इक तस्वीर, जोती जलवा नूर रुशनाईआ। मुरीद होण ना देवां कोई दिलगीर, मुर्शद हो के होवां सहाईआ। भगवन हो के कटां भीड़, जन भगतां गोद उठाईआ। सतिगुर हो के अमृत जाम प्याला प्यावां सीर, सांतक सति सति वरताईआ। नेत्र लोचण अक्ख खोल्हां बेनज़ीर, नज़र आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। हाकम हो के खेल खलावां, ख़ालक ख़लक दयां समझाईआ। सन्त सुहेले मात उठावां, लख चुरासी खोज खुजाईआ। प्रेमी हो के पकड़ां बांहवां, भुजां आपणे नाल मिलाईआ। मन्त्र सच जपावां धुर दा नावां, नाउँ निरँकारा इक उपाईआ। हँस बणावां फड़ फड़ कांवां, कागों हँस उडाईआ। भुल्ले भटके पावां राहवां, रहिबर बण के नूर खुदाईआ। पिछला लेखा सर्ब जणावां, पीर पैगम्बरां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलां खेल हो के बेपरवाहीआ। शब्द हाकम हुक्म एक, एकँकारा आप दृढ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना लिख्या लेख, काग़ज़ कलम शाही विद्या नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार

पीर पैगम्बर जिस दा लभ्भदे गए भेत, लभ्भयां अन्त कोए ना पाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण अवल्लड़ा वेस, रूप रंग रेख समझ किसे ना आईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश लख चुरासी अन्दर वड़ के रिहा खेड, निरवैर निराकार निरँकार रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। शब्द हाकम कहे मेरी धुर दी टेक, सदा सदा सद दयां वड्याईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों खोल्हां भेत, पर्दा उहला आप उठाईआ। भगत भगवन्त हो के लवां वेख, सन्त सतिगुर रूप समाईआ। गुरसिखां गुरमुखां सरनाई देवां एक, चरण कँवल मिले वड्याईआ। मस्तक लावां धुर दी मेख, टिक्का इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। हाकम हो के शब्द गुरू बलकार, एका हुक्म वरताईआ। जिस नूं सीस झुकाउँदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सजदा सच कराईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस दी रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त करे जुग चार, ढोला राग अक्खरां विच सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादि अन्त ना पारावार, बेअन्त नाउँ धराईआ। जिस नूं साध सन्त मन्नदे गए कन्त भतार, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा जीव जंत आधार, लख चुरासी रिहा समाईआ। जिस नूं ब्रह्मण्ड खण्ड करन निमस्कार, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जिस दा रवि ससि करे उज्यार, दिवस रैण सेव कमाईआ। तिस दा लेखा चले अपर अपार, भरम भुलेखा दूर कराईआ। सो साहिब बणया सिक्दार, हुक्म इक्को इक जणाईआ। शब्द गुरू महाबली बलकार, योद्धा जगत रूप वटाईआ। कल कल्की लै अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सम्बल बहि के धाम न्यार, महल अटल करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। लेख चुकाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। काया वखाए अगम्मी धर्मसाल, सच दवारा इक प्रगटाईआ। दीआ बाती कमलापाती आपे बाल, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी वज्जे ताल, धुन आत्मक राग सुणाईआ। पुच्छण आया मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जिस दे अग्गे करदे गए सवाल, नित नवित्त झोलीआं डाहीआ। सो देवणहारा दान, दाता दानी वेख वखाईआ। जिस नूं अक्खरां विच कैहन्दे राम, बिन अक्खरां राम रमया घट घट रिहा समाईआ। जिस नूं पीर पैगम्बर करदे गए सलाम, सो नूर खुदाई जलवा नूर करे रुशनाईआ। सच संदेसा देवणहार पैग़ाम, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणे हथ्थ लै इंतज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। जिस दा इक्को कलमा इक्को नाम, इक हदीस इक्को दए कलाम, कातब हो के दूजी कलम ना कोए उठाईआ। इक्को मन्दिर इक्को मंज़ल इक्को महिबूब इक्को अमाम, परवरदिगार इक अख्वाईआ। इक्को बरदा दर दरवेश बणे गुलाम, इक्को बैठा डेरा लाईआ। इक्को नूर श्री भगवान, इक्को जोत नौजवान,

इक्को किला कोट देवणहार वड्याईआ। इक्को सचखण्ड मकान, इक्को दीआ बाती जगे महान, इक्को कमलापाती वेखे नौजवान, रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ। इक्को शब्द दाता योद्धा सूरबीर बलवान, ब्रह्मण्ड खण्ड रचनहारा पुरी लोअ जहान, विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत लख चुरासी घट घट आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी हुक्म हुक्म दृढ़ाईआ। शब्द संदेसा धुर दा हुक्म, हरि करता आप समझाइंदा। सन्त सुहेले कढ्ढे उत्तम, दृष्ट इष्ट नाल मिलाइंदा। शब्द अनादी बणाए तुख्म, तासीर आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार वखाइंदा। करनी कार अन्दर करतार, हरि करता दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेख संसार, नित नवित्त वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर ख़ुशी मनाईआ। पूरब लेखा मकरूज सब दा कर्ज़ा दए उतार, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां झोली पाईआ। सब नूं कर के दस्तबरदार, दस्तगीर आपणा रंग रंगाईआ। गृह मन्दिर हुक्म संदेसा करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर जणाईआ। कूड़ी क्रिया कल काती कढ्ढे बाहर, जगत हयाती दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। हयाती कहे मैं बदलां हदीस, हज़रत तेरी करां पढ़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद राह तक्कदे गए इकीस, एका अक्ख खुल्हाईआ। तेरा कलमा गावां गीत, इक्को राग अल्हाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी तेरी झोली पाईआ। मैं तेरे हुक्मे अन्दर बदलां रीत, रीतीवान तेरी सरनाईआ। मेरी हस्ती ना कोई मैं कीटन कीट, नीचां विच्चों नीच नज़री आईआ। परवरदिगार ना देईं पीठ, करवट लै ना मुख बदलाईआ। मेरा अन्तर करना ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लेखा चुक्के जगत मसीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ टिकाउणा खुदावंद करीम, कलमा तेरा नज़री आईआ। तेरी शान आली अज़ीम, अज़मत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरी कोई ना जाणे ताअलीम, तोबा तोबा करे खुदाईआ। तेरी किसे समझ ना आई तक्सीम, ज़ेर ज़बर रही कुरलाईआ। तेरा भेव ना जाणया अल्फ़ मीम, नुक्ता नून ना कोए मिटाईआ। तेरा पीर पैगम्बर पक्का बणया ना कोए मुनीम, सदा सदा सद साचा संग निभाईआ। जो आया बरदा बण अवल्लीन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। रसना कैहन्दा गया ग़मख़ार मस्कीन, मुश्किल तेरी झोली पाईआ। तेरी धार समझ महीन, सीस कदमां उते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, दर ठांडे मेल मिलाईआ। ठांडा दर परवरदिगार, घर इक्को नज़री आइंदा। जिस गृह बणें मददगार, धुर दा संग निभाइंदा। जिस दा अददां विच ना कोए शुमार, तशदद रूप ना कोए वटाइंदा। सो कुदरत अन्दर कादर हो के करे प्यार, जन भगतां

कदर आपणे हथ्थ रखाइंदा। किसे ग़दर विच ना आए फ़साद, फ़ैसला हुक्म विच मनाइंदा। कलयुग अन्तिम गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करन आया इमदाद, अमल आमल सब दा वेख वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति एतमाद विस्माद हो के बिस्मिल रूप आपणे उपर टिकाइंदा ।

* १५ जेठ २०२१ बिक्रमी लाल चन्द दे गृह जम्मू *

जुग चौकड़ी पिच्छों उठया सुत शब्द निरवैर, निरँकार दए वड्याईआ। प्रेम प्रीती प्यार अन्दर सति सरूपी करनी मेहर, मेहरवान हो के दया कमाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखणा शहर, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ । भेव चुकाउणा अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर गम्भीर गहर, पर्दा उहला रहिण कोए ना पाईआ। भगत उधारन पैज स्वारन कोई ना लौणी देर, दूर दुराडा नेरन नेरा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत काया माटी उलटा गेड़ना गेड़, चार कुण्ट दहि दिशा आप भवाईआ। कूड़ विकारा हउमे हँकारा माया ममता लैणी घेर, बलधारी हो सहाईआ। नित नवित्त जूठा झूठा झगड़ा देणा नबेड़, सालस आपणा रूप वटाईआ। आत्म परमात्म मिल मिल खलाउणा खेल, ख़ालक ख़लक विच्चों देणा जणाईआ। घर प्रकाश करना बिन बाती तेल, जोती जोत डगमगाईआ। मित्र प्यारा हो के मिलणा सज्जण सुहेल, धुर दा संगी संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों आया निरगुण धार, सूरा सतिगुर इक अख्वाईआ। पंज तत ना कोए आकार, मन मति बुध अक्ल संग ना कोए रखाईआ। दो जहानां निर्धन सरधन हो के पावे सार, महाबली बल आपणा इक प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी पूरब लेखा वेखे विगसे वेखणहार, बिन अक्खां नेत्र नैण इक खुल्हाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो जुग जुग दित्ता सिखाल, सो सिख्या लिख्या वेखे थाउँ थाईंआ । पीर पैगम्बरां जो देंदा रिहा जलाल, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। सो वेख वखावे साहिब गोसाईं परवरदिगार, बेपरवाह फेरा पाईआ। जिस दा कलमा काग़ज़ां उते करे पुकार, नग़मा रसना नाल सुणाईआ। सो मुरीदां मुर्शद करे प्यार, पोशीदा आपणा पर्दा लाहीआ। अकीदा इक्को दस्से सच दरबार, दरगाह साची मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। निरगुण निरवैर शब्द अगम्मी आया नट्ठ, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जगत आकार ना कोई तत्त, मूँह हथ्थ तन माटी ख़ाक ना रंग रंगाईआ। इष्ट देव स्वामी रसना जिह्वा किसे दा नाम ना लए रट, नीवां हो के सीस ना किसे निवाईआ। वेख वखाए सब किछ जाणे वसणहारा घट घट, गृह गृह लेखा खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रेम

प्रीती अन्दर जिस दा नाम गए रट, दिवस रैण अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। जिस दे पिच्छे सूलां उते सत्थर बैठे घत, यारड़ा इक्को इक मनाईआ। सो साहिब सुल्तान प्रेम प्रीती अन्दर हो के वस, जन भगतां वेखे चाईं चाईंआ। साचे मन्दिर वसल कराए हक़, असल विच्चों सच नसल समझाईआ। सच दुआर कर प्यार करे इकट्ठ, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड वड्डा इक्को इक अख्वाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जाता लै अवतार, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द दमामा वज्जे अगम्म अपार, कोटन कोटि रामा नैण उठाईआ। पीर पैगम्बर पैग़ामा सुणन हो के ख़बरदार, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आईआ। गुरू गुरु गुर करन निमस्कार, सीस जगदीश इक झुकाईआ। काग़ज़ कलम शाही करे हाहाकार, हौका लै लै रही सुणाईआ। चारे युग बण पनिहार दर दरवेश अलख जगाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा सुत लाडला बरखुरदार, शब्दी इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा हुक्म रिहा जुग चार, नित नवित्त वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण हो के पावे सार, महासार्थी आपणा खेल कराईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए उठाल, काया मन्दिर अन्दर वेख वखाईआ। पूरब जन्म दा लेखा जानण वाला हाल, हालत अगली दए दृढ़ाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल दया कमाईआ। सति धर्म दी सच्ची धर्मसाल, लख चुरासी जीव जंत रिहा जणाईआ। साढे तिन्न हत्थ हरि ठाकर बणाया मकान, घाड़त आपणा आप घड़ाईआ। जिस गृह बहि के खेल करे महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। निरगुण होए शब्द स्वामी, लोकमात वेस वटाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, अन्तर आत्मा खोज खुजाईआ। सच संदेसा धुर दी बाणी, तीर अणयाला इक चलाईआ। भूपत भूप बण शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा लेखा कोई ना जाणे कलम कानी, कायनात सके ना कोए समझाईआ। जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत काया कीती फ़ानी, फ़ैसला आपणा इक सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर हो के बणया इक्को बानी, बलधारी फेरा पाईआ। जन भगतां दस्से मार्ग सच आसानी, इन्सानीयत विच्चों अंस आपणी लए जगाईआ। पिछली पढ़े ना कोए कहानी, अगली गाथा रिहा दृढ़ाईआ। अमृत बख्शे ठंडा पाणी, प्रेम प्रीती धार वहाईआ। लेखा जाणे बिन ज़िबह होइआं कुरबानी, सीस धड़ अड्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। निरगुण धार आया भज्जा, शब्दी रूप वटाईआ। भगत सुहेला हो के पड़दा कज्जा, ओढण इक टिकाईआ। नाम निधान नगारा हो के वज्जा, अगम्मी राग सुणाईआ। आत्म

परमात्म देवे रसा, रसना जिह्वा समझ कोए ना पाईआ। महल अटल अन्दर वड़ के हस्सा, हस्ती मस्ती विच वखाईआ। सच दरबारी दे के धुर दा पता, पतिपरमेश्वर पड़दा लाहीआ। लोचण नैण खुल्हाए अक्खा, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। भाग लगावणहारा कुली कक्खां, महल अटल करे रुशनाईआ। सज्जण सुहेला बण के सका, सैण आपणा नाउँ धराईआ। सति सतिवादी धुर दी देवे मता, मनमति कूड़ी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। निरगुण हो के वेखण आया, शब्द स्वामी बेपरवाहीआ। जिस नूं कैहन्दे दाई दाया, आदि जुगादी सेव कमाईआ। जिस दी रचना त्रैगुण माया, लोक परलोक वेखे चाईं चाईंआ। जिस ने पंज तत खेल रचाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाया, हिस्सा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस ने शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेख लिखाया, खाणी बाणी नाद सुणाईआ। जिस ने गुर अवतार पीर पैगम्बर मात प्रगटाया, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। जिस ने साध सन्त गले लगाया, भगत भगवन्त नाउँ धराईआ। जिस ने सखीआं नाल बण बण कन्त सोहणा मंगल गाया, गीत अगम्म इलाहीआ। जिस ने जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाया, डूंघी कन्दर खोज खुजाईआ। जिस ने आदि जुगादि नित नवित्त दीन मज़्हब शरअ ज़ंजीर तन पहनाया, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सो साहिब सतिगुर निरगुण हो के जन भगत दवारे मंगण आया, दर दरवेशा अलख जगाईआ। जिस दा अनन्द अनन्दां विच्चों हथ्थ किसे ना आया, अनन्द कारज कर कर थक्की सर्ब लोकाईआ। तिस ने पिछला लेखा सब दा ख़ारज आपणी हथ्थीं दित्ता कराया, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। सब दा अरदासा दे भरवासा इक्को वार दए सोधाया, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। आसा मनसा मनसा आसा लेखे लाया, पृथ्मी आकाशा खोज खुजाईआ। जिस दा खुलासा खोल्ह ना किसे समझाया, इशारयां नाल गए दृढ़ाईआ। सो पुरख अबिनाशा वेस वटाईआ। शब्दी साथा जोड़ जुड़ाया, पूरब घाटा जन भगतां पूर कराया, अन्तिम नेड़े वाटा रिहा वखाईआ। सर्ब जीआं दा दाता नज़री इक्को आया, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। परम पुरख परमात्म आत्म मात पित आप हो जाया, गुरसिख गुर गुर गोदी गोद सुहाईआ। उत्तम श्रेष्ट सच प्रीती नाता आप जुड़ाया, एथे ओथे ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी रूप धर, सच धरवासा इक वखाया, प्रेम प्यार प्रीती अन्दर प्रीतम हो के विच समाया, समग्री आपणे हथ्थ रखाईआ।

* १५ जेठ २०२१ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेख़ सर ज़िला जम्मू *

गुर शब्द कहे मेरी धुर दी नौका, जन भगतां राह तकाईआ। जिस दा दो जहानां दित्ता होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । पड़दा उहला चुकाया चौदां लोका, चौदां तबक सबक दृढ़ाईआ। लख चुरासी जणाया अगम्मी मौका, सच आवाज़ लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार कमाईआ। शब्द कहे मैं लै के आया नईया, सोहणी बणत बणाईआ । मित्र प्यारा बण के आया सईया, सज्जण रूप वटाईआ। जिस दी याद विच यादव दस्सदा रिहा घनईया, गोपी काहन खेल खलाईआ। जिस दे ध्यान विच आदि शक्ति बैठी रही मइया, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। जिस दे भय अन्दर राए धर्म ना कढ्ढे वहीया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड लख चुरासी आत्म परमात्म बणाए सच्चा भय्या, प्रेम प्रीती इक बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग रिहा दृढ़ाईआ। गुर शब्द कहे मैं लै के आया नईया एक, एकँकार हुक्म जणाईआ। जो भगतां देवे टेक, सोहणी सेव कमाईआ। दूजा कोई ना लवे पेख, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले उपर चढ़ के लैण खेड, खुशीआं राग अलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैनूं दित्ता भेज, सोहणी सेव समझाईआ। मैं चल के आया अगम्मड़े देस, दसन्तर वेखां नैण उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत बणाईआ। शब्द कहे मेरी नईया रंगीली, रंग रत्ते आप रंगाईआ । जिस दी समझ ना आए दलीली, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। जिस दी धार कोई ना जाणे पीली नीली, सूहा रूप ना कोए जणाईआ। इस विच आदि जुगादी इक्को असीली, सन्त सुहेले लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी वंड वंडाईआ। शब्द कहे मेरी नईया दा अगम्मी नाप, घाड़त हरि जू आप घड़ाईआ। जिस उते बहि के कोट जन्म दे उतरन पाप, पतित पवित दए कराईआ। जिस उपर चढ़ के अन्दरे अन्दर चले अजपा जाप, सोहँ करे सच पढ़ाईआ । जिस दे मन्दिर वड़ के वेखे जोत प्रकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा कदे ना टुट्टे साथ, खेवट बणया बेपरवाहीआ । भगत सुहेला बण के जाए आख, अक्खर आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। शब्द कहे मेरी नौका अवल्ली सवारी, सेवा सब दी इक लगाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला करे त्यारी, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। उदम कर के चढ़े मार छाली, शहिनशाह शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। मेल मिले जोत निरँकारी, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। लख चुरासी माणस जन्म विच्चों एहो सच्ची तारी, तारनहारा आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। शब्द नईया नौका रही बोल, अनबोलत राग सुणाईआ ।

सच कूक वजावे ढोल, ढोलक इक खड़काईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों मैं आई भगतां कोल, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। हौली हौली आपणे विच बहावां अडोल, फड़ बांहों आप उठाईआ। मार्ग दस्स इक अनमोल, पांधी धुर दे दयां बणाईआ। सच दवारा अगम्मी खोल्ह, पड़दा उहला इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा सोहणी इक समझाईआ । शब्दी नईया कहे अख़ीर, बिन अक्खरां रही जणाईआ। जन भगत सुहेले उठ वीर, वेला वक्त खुशी मनाईआ । परम पुरख प्रभ आया पीर, पीरन पीरा नूर खुदाईआ। जिस दा खेल गहर गम्भीर, अगम्म अथाह अख्वाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीर, मधुर प्याला जाम वखाईआ। धाम वखाए बेनज़ीर, नज़र आपणी लए बदलाईआ। जन्म जन्म दी कटे दिलगीरी अग्गे होए ना कोए दिलगीर, सुख सागर विच समाईआ। आवण जावण चुक्के पीड़, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म बन्न्ह के बीड़, घर साचे दए बहाईआ। जिस मार्ग नूं लभ्भदे गए पीर फ़कीर, सन्त सज्जण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। नईया कहे जो मेरे उपर चढ़दा, आपणा आप मिटाईआ । सो धुर दा ढोला पढ़दा, सोहँ राग अलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करदा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। मंज़ल मंज़ल पौड़े चढ़दा आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखे खेल सच्चे थिर घर दा, जिथ्थे वज्जे शब्द वधाईआ। मिले मेल अगम्मी पिर दा, पीआ प्रीतम लए मिलाईआ। जगत विछोड़ा मिटे चिर दा, दूर दुराडा डेरा ढाहीआ। अग्गे गेड़ा अनोखा गिढ़दा, गेड़नहार इक अख्वाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों पारब्रह्म प्रभ आया फिरदा फिरदा, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। कन्ढी उते आ के आप घिरदा, भगतां डोरी तन्द ल्या बंधाईआ। माण तुट्टा अगम्मी शेर दा, मेहर विच आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। शब्द नईया कहे मैं आई खेड़े, खहिड़ा जगत छुडाईआ । साचे लग्गे पिछले डेरे, अगली ख़ुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी लँघाए कर कर वड्डे जेरे, आसा इक वधाईआ। कवण वेला प्रभ करे मेहरे, मेहर नज़र उठाईआ। मैं भगतां संग राग अलावां तेरे मेरे, मेरा तेरा नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। नईया कहे मैं चलां बिन पाणी, आब लोड़ रहे ना राईआ। एहो मेरी अकथ कहाणी, जो गुर अवतार पीर पैगम्बर गए गाईआ। सिफ्त अन्दर लिखी धुर दी बाणी, चारे खाणी जगत समझाईआ । मेरा खेल जाणे शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ । कलयुग अन्त मैं बण के आई निमाणी, आपणा आप मिटाईआ । जन भगत वेख धुर दे हाणी, सज्जण पेख गीत गावां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे दए लगाईआ। शब्द नईया कहे मेरी अनोखी बणत, घड़न भंनणहार आप बणाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला

चढ़े सन्त, जिस साहिब सतिगुर आप चढ़ाईआ। बाकी रोंदे फिरदे जगत विद्वानी पंडत, मुल्लां शेख़ हथ्थ किसे ना आईआ। मेरी धुर दी सेवा मैं विछड़े मिलावां नाल ओस कन्त, जिस दी रुत्त बसन्त इक्को नज़री आईआ। एसे कारण मैं भगतां करां मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुरमुखो उठो करो हिम्मत, आपणा आप मेरे विच लवो टिकाईआ। मेरे कोल कलयुग कोई ना करे इल्लत , दूर दुराडा दए दुहाईआ। अग्गे ख्वारी ना होए ज़िल्लत, सच अटारी दयां बहाईआ। ओथे मिजाज़ी हकीकी ना कोई इश्क, आशक माअशूक नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दोज़ख़ ना कोई बहिश्त, नरक स्वर्ग ना कोए वड्याईआ। ना कोई स्वामी ना कोई इष्ट, देव देवा ना कोए अख्वाईआ। ना कोई रामा ना वशिष्ट, बोध ज्ञान ना कोए समझाईआ। इक्को जोत परम पुरख प्रभ करे मिलत, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच्चा दए वखाईआ। शब्द नईया कहे मैं आई चढ़ौण, धुर दा हुक्म सीस टिकाईआ। मेरे साहिब दा हुक्म मोड़े कौण, बलधारी नज़र कोए ना आईआ। मेरे अन्दर सेवा करे उणंजा पौण, आपणा आप मिटाईआ। मेरे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गौण, तूही तूही राग अलाईआ। मेरे अन्दर जुग चौकड़ी भगत सुहेले विरले सौण, बाकी सेज नज़र किसे ना आईआ। उठो गुरमुखो मैं फड़ बांहों आई बहौण, रुठड़े जगत मिलाईआ। पूरब जन्म दा कर्ज़ा आई लौहण, जो लारा दे दे गई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। शब्द नईया कहे मैं दित्ता लारा, वेला वक्त समझाईआ। बिन गोबिन्द किसे याद ना सरसा किनारा, उधारा समझ कोए ना पाईआ। ओस वेले मैं कर के किहा निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस वेले शब्दी रूप आवें दोबारा, आपणा वेस वटाईआ। ओस वेले तेरे भगतां दयां सहारा, गुरमुख आपणी गोद बिठाईआ। तूं चप्पू लाउणा अपर अपारा, वञ्झ मुहाणा आपणे हथ्थ उठाईआ। दो जहानां बण के मददगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह खहिड़ा देणा वखाईआ। नईया कहे मैनूं आई याद, भुल्लया लेख ना बेपरवाहीआ । जिस दी साहिब सुणी फ़रयाद, बेअन्त बेअन्त दया कमाईआ। ओस हौली जेही मारी आवाज़, मेरी सुत्ती अक्ख खुलाईआ। मैनूं नज़री आया उते आकाश, प्रकाश करे नूर इलाहीआ। जिस दे हुक्मे अन्दर दो जहान आबाद, आबादी लख चुरासी बणाईआ। जिस मेरा साजण ल्या साज़, बिन घड़यां घाड़त दित्ता वखाईआ। अन्दर वड़ के खोलया राज़, पड़दा आप उठाईआ। हुक्म संदेसा दे के घल्लया लोकमात, मतलब आपणा ना कोए वखाईआ । जा के भगत सुहेले पेख ओनां निभाउणा धुर दा साथ, सगला संग बणाईआ। वेखीं फ़र्क ना पाईं ज़ात पात, ऊँच नीच ना ध्यान लगाईआ। जो गाउँदा होवे सोहँ धुर दी गाथ, तिस जा के सीस निवाईआ। ओनां अन्दर मेरी ज़ात, मेरी ज़ात विच वफ़ात कदे ना आईआ। एह लेखा लिखण वाला नहीं

कलम दवात, बिन अक्खरां रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ख्वाहिश पूर कराईआ। नईया कहे मैनूं घल्लया ओस, जो असल रूप समाईआ। नव नौ चार जो रिहा खामोश, निरगुण हो के मुख छुपाईआ। जिस दे दर्शन देवत सुर रहे लोच, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जिस दी गुर अवतार करदे गए सोच, सोच समझ आपणी नाल मिलाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल जन भगत वेख निर्दोष, निर्धन लए जगाईआ। दे सहारा आपणी जोत, दीदारा दर्दी रूप वखाईआ। सच मुहब्बत अन्तर हो के मोहत, प्रेम प्रीती इक जुड़ाईआ। जिस दी मैं करदी रही खोज, खोजत खोजत आपणा माण मिटाईआ। उस दे वेख नराले चोज, चरणी डिगी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैनूं समझ ना आया भेव गोझ, भेत सक्या ना कोए दृढ़ाईआ। मस्ती अन्दर हो बेहोश, मदहोश दयां दुहाईआ। तेरी सार ना आई चौदां लोक, श्लोक तेरा ना कोए पढ़ाईआ। लख चुरासी भरी कूड़ कुड़यारे खोट, सद्दा सच ना कोए सुणाईआ। जन भगत गावण तेरा श्लोक, धुर दा राग अलाईआ। ओस किनारे ओस कन्ढी पगडण्डी पै के मैं वी गई पहुंच, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दवारयों दर्दी मिले खौंत, ख़तरा मुक्के ख़ता भुल्ल दए बख्शाईआ। खुशीआं अन्दर मैनूं भगतां मिलण दा शौक, शहिनशाह मेरी आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। नईया कहे मेरा अन्दर साफ़, सोहणा विच्चों नज़री आईआ। जिस विच गुरमुखां वड़दयां पिछले कर्म होण मुआफ़, अगला जन्म दयां बदलाईआ। जो प्रेम प्रीती अन्दर होए गुस्ताख़, तिन्हां दा गुस्सा दयां मिटाईआ। जो गोबिन्द गया आख, सो आखर पूर कराईआ। मेरे अन्दर इक्को ताक, ताकत नाल सके ना कोए खुल्हाईआ। परम पुरख अकाल आपणे हथ्थ रखी जाच, कुंजी अवर ना कोए लगाईआ। जो अन्तर आत्म परमात्म सोहँ जपदे जाप, तिन्हां सदा सदा सद मेरे अन्दर बहाईआ। मैं मन्दिर रख्या ख़ास, जिस विच्चों ख़ालश इक नूर नज़री आईआ। कोटन कोटां विच्चों मैं जन भगत विरले कहां शाबाश, बिन रसना जिह्वा आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नईया नौका खुशी मनाईआ। नईया कहे मेरी नौका मंज़ूर, हौका अन्तर ना कोए वखाईआ। मैं भरना इक्को पूर, भगत सुहेले आप चढ़ाईआ। फिर जुग चौकड़ी रहिणा मशहूर, मशक आपणी इक समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी इंतज़ार करदे ज़रूर, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। पर मैं हुक्मे अन्दर बैठी रहिंदी दूर, दूर दुराडा डेरा लाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं आपणा दस्सदा सच दस्तूर, धुर दा हुक्म सुणाईआ। गहरी अक्ख नाल लैंदा घूर, भय भउ इक जणाईआ। ओस वेले मैं हो के मजबूर, मौजूदा हो के दरस दिखाईआ। जन भगत साचे सन्त लै के जावां ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। बाकी नाता दिसे कूड़, कूड़यां कोलों आपणा पल्लू छुडाईआ।

११२६
१६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर रिहा भवाईआ। हुक्मे अन्दर मैं सदा भाउँदी, भँवर जगत जहान वेख वखाईआ। फ़िकरां अन्दर कदे ना सौंदी, ग़फ्लत रूप ना कोए वटाईआ। दिवस रैण इक्को ढोला गाउँदी, तूंही तूं राग अलाईआ। जन भगतां वेख खुशी मनौंदी, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। वेख खेल अगम्मी शाहो दी, शुकरां विच ध्यान लगाईआ। एह धार बेपरवाहो दी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। नईया कहे मैं आई कन्ढी, कंडयां सूलां मेरी हालत दिती बदलाईआ। जिध्धर वेख्या पई भंडी, वरभण्डी रही कुरलाईआ। साफ़ सुथरी नजर ना आई डण्डी, राह हक़ ना कोए जणाईआ। गंदयां विच मिल के हो गई गंदी, सति सच रूप ना कोए समाईआ। जिस वेले आई आवाज़ मैं सुणया सोहँ छन्दी, मेरे अन्तर लई अंगड़ाईआ। मेरी जगत वाट टुट्टी बंदी, बंदीख़ाना रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं सच आई सुगंधी, जेहड़ी धार बेपरवाह आप प्रगटाईआ। मैं ओसे वेले वस्त इक मंगी, ख़ाली झोली आपणी अग्गे डाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं फिरदी पैरीं नंगी, भज्जां वाहो दाहीआ। बिन तेरे होई रंडी, सुहाग कन्त नज़र कोए ना आईआ। मैनूं कोई ना लावे अंगी, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। मींढी सीस ना कोए कंघी, कजल धार ना कोए बंधाईआ। अबिनाशी करते मैनूं मिले कोए ना संगी, जो धुर दा संग निभाईआ। मैं नेत्रां

११२७ होई अन्धी, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पाटे चीथड़ मेरी अंगी, लीरो लीर रूप वटाईआ। मेरी नईया नौका बिन पाणी ११२७

१६ धार पार कदे ना लँघी, चप्पू वञ्झ ना कोए सहाईआ। हुक्म दित्ता सूरे सरबँगी, सहिज सहिज समझाईआ। उठ तेरी कटां १६

तंगी, मेहर नज़र उठाईआ। तूं किनारा वेख उह कन्ढी, जिस कन्ढी विच्चों कन्ढे वाला नज़री आईआ। ओथे जन भगतां थान भूमका सुहाई चंगी, सोहणा आसण इक बणाईआ। तेरी पूरी मुराद होवे मंगी, तृष्ना आसा विच समाईआ। भगतां नाल भगत संगी, नाम वजावण इक मृदंगी, धुर दा ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कन्ढी आ के वेखां किनारा, तक्कां नैण उठाईआ। जिस वेले सुणया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, मेरी सुध रही ना राईआ। बिन झकोलिउँ आया हुलारा, बिन पवणों दित्ता हिलाईआ। गुरमुख मैनूं लग्गा प्यारा, जिस गुरसिख अन्दरों तेरा नाम जस रिहा सुणाईआ। मैं हस्स के किहा सोहणा लग्गा अखाड़ा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ सोभा पाईआ। जां तक्कया तकदीर बणौण वाला नज़री आया लाड़ा, तदबीर सच्ची रिहा समझाईआ। ओथे मैनूं भुल्ल गया अगला पिछला किनारा, इक्को चरण ध्यान लगाईआ। जिन्हां मिल्या एह सहारा, ओन्हां मेरी लोड़ रही ना राईआ। मैं मंगां चरण धूढ़ छारा, जो गुरमुख बैठे डेरा लाईआ। जे ओन्हां विच्चों इक तेज भान करे इशारा, मेरी शान दए बणाईआ। चरण

छुहाए नर निरँकारा, मेरी नईया आपणे नाल लए तराईआ। मैं नईया वेखां उह सईया, जिस सब दी पकड़ी बहीया, ऊँच नीच बणाए भैण भय्या, वहीया धर्म राए अग्गे ना किसे कढ्ढाईआ। ओस दी सरनी ओसे दर ते पईआ, जिस दीआं भगत सुहेले सज्जण साचे सखी रूप सईया, साहिब इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लहिणा देणा देवणहार दे दे खुशी मनाईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेखसर ज़िला जम्मू *

नईया कहे मैं नौका हो के तरदी, पुरख अकाल हुक्म सुणाईआ। जुग चौकड़ी रही डरदी, आपणा मुख छुपाईआ। कलयुग अन्त बण के दर्दी, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। भगत सुहेले साचे वरदी, वादा पिछला पूर कराईआ। वखावां खेल सच्चे नर हरि दी, नर नरायण दयां मिलाईआ। सदा कला रखां चढ़दी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वज्जे वधाईआ। मैं जगत जहान कदे ना मरदी, मुर्दा रूप ना कोए वटाईआ। सन्त जनां दी सदा बरदी, बण सेवक सेव कमाईआ। मेरा प्रीतम प्यारा इक्को अर्शी, जिस अरशों फर्श दित्ता वखाईआ। मैं चलां ओस दी मर्ज़ी, मनसा होर ना कोए वधाईआ। सच दवारे गोबिन्द दिती इक्को अर्ज़ी, आरज़ू आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिती वड्याईआ। नईया कहे मैं नौका हो के आई, आपणा रूप वटाईआ। मैनूं वेखणहारी आदि शक्ति माई, चतुर्भुज ध्यान लगाईआ। मेरा राह तक्के लक्ष्मी नैण उठाई, विष्नूं इशारे नाल समझाईआ। मैनूं वेख पार्वती कुरलाई, भोले नाथ रही जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मैं हथ्थ किसे ना आई, दूर दुराडी बैठी मुख छुपाईआ। कोटन कोटि पाउँदे गए दुहाई, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार बण के गए राही, पांधी हो के पन्ध मुकाईआ। लेखा लिखदे गए कलम शाही, शाकर हो के हुक्म मनाईआ। शहादत देंदे गए गवाही, आपणा संग निभाईआ। प्रभ पतिपरमेश्वर मैनूं हुक्म दित्ता ना सच्चे माही, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। मैं कदम ना चली राई, आपणी आप ना लई अंगड़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द बूटा पुटया काही, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। मैं चलां तेरी रजाई, रहमत तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी आसा दूर दुराडी नेड़े आई, आपणा हाल रही जणाईआ। सुण साहिब सच गोसाईं, गहर गम्भीर तेरी शरनाईआ। सच नईया देणी वखाई, जिस नौका दी घाड़त ना किसे घड़ाईआ। जो जुलाहे कबीर हथ्थ ना आई, गंगा धार रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होणा सदा आप सहाईआ। नईया कहे मैनूं लभ्भदे गए पीर फ़कीर, फ़िकरां विच मरी लोकाईआ। शाह सुल्तान हो दिलगीर, दिल दी

आसा पूर ना किसे कराईआ। मैं हथ्थ ना आई चार कुण्ट अख़ीर, दहि दिशा समझ किसे ना पाईआ। मैनूं तक्कदे रहे ला नज़ीर, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। मेरी नज़र ना आई तस्वीर, शनाख़त सके ना कोए कराईआ। कन्ढे मिल्या ना कोए माहीगीर, मुहब्बत ज़ंजीर लए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सोहणी खेल रचाईआ। नईया कहे मैं नौका होई, नव नौ चार वेख वखाईआ। सच दुआर सुणी अरज़ोई, गुर गुर नाद वजाईआ। आलस निंद्रा विच्चों उठी सोई, सोहणा रूप वटाईआ। मेरा भेव ना जाणे कोई, कहिण वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरा संदेसा कबीर ने इक वार दस्सया लोई, बिन लहिणउँ लहिणा दित्ता जणाईआ। जिस मेरा प्रभ किरपा कर के देवे दरगह ढोई, चरण कँवल बख़्शे इक सरनाईआ। तिन्हां जोगी धुर दी नईया होई, जिस उपर चढ़ के पिच्छे परत कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। नईया कहे मैं नौका एक, आदि जुगादि सेव कमाईआ। जन भगतां कीता धुर दा हेत, बण हितकारी फेरा पाईआ। मैनूं लभ्भदे गए मुल्लां शेख़, शेख़ी आपणे नाल रलाईआ। मेरा किसे ना आया भेत, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। मैं कदे ना चलां बालू रेत, सच सरोवर आपणी तारी लाईआ। कलयुग अन्तिम वेखण आई

११२६ खेड, सोहणा मन मोहणा रूप वटाईआ। मैनूं नाल लै के आया जिस खेल रचाया महीना जेठ, अग्नी तपश ना कोए तपाईआ। ११२६

मैं साया सच्ची बैठी हेठ, सुख सांतक रूप वटाईआ। जन भगतां वेखां लेख, जिन्हां लिखारा बणया बेपरवाहीआ। दरस

१६ दखाए नेतन नेत, निज नेत्र बैठा डेरा लाईआ। आत्म परमात्म कर के हेत, हित सोहणा रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप १६

हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। नईया कहे मेरा नौका नाउँ, नर निरँकार दए वड्याईआ। मैं जन भगतां पकड़ां बांहों, हरिजन साचे लवां उठाईआ। लभ्भदी फिरां घर घर ढूंडां गाउं गाउं, दर दर आपणी अलख जगाईआ। जिन्हां मिल्या मेरा साहिब सच्चा शहिनशाहो, शाह पातशाह बैठा सीस हथ्थ टिकाईआ। तिन्हां निउँ निउँ लागां पाओ, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सच्चा संग बणाईआ। नईया कहे मैनूं नौका कैहन्दे बेड़ी, बेड़ा भगतां पार कराईआ। मैं वेखण आई गुरमुख सखी केहड़ी, जो अन्तर हिरदे बैठी ध्यान लगाईआ। जिस दा नाता तुटणा पंज तत काया ढेरी, ख़ाकी ख़ाक ना कोए समाईआ। जिन्हां नाल श्री भगवान ना करनी हेरी फेरी, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जिन्हां उते कलयुग काल ना झुल्लणी अन्धेरी, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जिन्हां दी जड़ एथे ओथे ना किसे उखेड़ी, बूटा लाया बेपरवाहीआ। मैं ओन्हां दी बण के रहां चेरी, सेवक हो के सेव कमाईआ। उह गुरमुख कदे ना लावण देरी, सद बैठे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा धुर दा मेल मिलाईआ। नईया नौका

कहे मैं गावां ढोला, धुर दा राग अलाईआ। जन भगतां वेख्या चुक्कया पड़दा उहला, द्वैती रूप नज़र ना आईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल बणया विच वचोला, सौहरे पेईए इक्को घर बणाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर लग्गा साचा होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण बदले आपणा चोला, चोली इक्को रंग वखाईआ। दर दरवेश हो के बणया गोला, ठाकर सेवक रूप वटाईआ। आत्म सेज सुहाए सच खटोला, खटीआ नज़र किसे ना आईआ। ओथे कोई ना पावे रौला, रसना जिह्वा ना कोए दुहाईआ। साचा तोल इक्को तोला, तोलणहारे दया कमाईआ। सच किनारा इक अडोला, दो जहानां डुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, संगी साथी रिहा बणाईआ। नईया नौका कहे मैनूं चढ़या चाअ, घर वज्जी इक वधाईआ। सो वेला वक्त गया आ, थित वार खुशी मनाईआ। घड़ी घड़याल रही खड़का, खटका पिछला रही चुकाईआ। गुर अवतार बणन गवाह, पीर पैगम्बर शहादत देण भुगताईआ। पुरख अबिनाशी बण मलाह, बेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत भगवान लए चढ़ा, फड़ बांहों उपर टिकाईआ। साची सिख्या दए सुणा, धुर दा ढोला राग अलाईआ। शब्द अगम्मी जपणा नाँ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

११३० मेहर नज़र इक उठाईआ। नईया नौका कहे मैं गुरमुख वेखां चढ़दे, चरण कँवल इक उठाईआ। सोहँ ढोला वेखां पढ़दे, ११३०

पतिपरमेश्वर नाम अलाईआ। प्रेम प्रीती वेखां करदे, नाता जोड़ सच्चे माहीआ। कन्त सुहागी वेखां वरदे, सति सरूप फेरा

१६ पाईआ। जींवदयां जग वेखां मरदे, मर जीवत रूप वटाईआ। साची तरनी वेखां तरदे, तारनहारा जिन्हां इक्को नज़री आईआ। १६

सच दवारे वेखां खड़दे, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। साचे मन्दिर वेखां वड़दे, बंद किवाड़ी कुण्डा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। नईया नौका कहे मेरी सेवा अपार, अपरम्पर प्रभू आप लगाईआ। मैं सच दवारा देवां वखाल, वेख वेख खुशी मनाईआ। मैं पार उतारां शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सच दवारे दवां बहाल, जिस गृह वसे बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त पिछला देवां अहिवाल, हाल अगला आपणे नाल मिलाईआ। एहो गोबिन्द दा सवाल, सवाली हो के मंग मंगाईआ। किरपा करी दीन दयाल, दयानिध हो सहाईआ। भगत सुहेले लए उठाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची नईया दित्ते चढ़ाईआ। नईया नौका होई खुश, खुशीआं राग अलाईआ। पुरख अकाल माण दित्ता गोबिन्द पुत्त, गोबिन्द पुत्त गुरमुख मेरे नाल मिलाईआ। मेरी सोहणी सुहञ्जणी मौली रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी इक महकाईआ। मैं वाहो दाही चलां लोकमात चुप्प, मेरी आवाज़ सुणन किसे ना पाईआ। मझधार पार करावां अन्धेरा घुप्प, डूंग्घी भँवरी डेरा ढाहीआ। ओस दुआर दा करां रुख़, जिस दवारे मनुख नज़र

कोए ना आईआ। इक्को बैठा पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, सति सतिवादी सोभा पाईआ। उस दी गोदी गुरमुख साचे देवां सुट्ट, पूरब विछड़े मेल मिलाईआ। उह किरपा निधान गलवकड़ी पाए घुट्ट, पिछला दुखड़ा सर्ब गंवाईआ। निरगुण हो के लए पुच्छ, बिन रसना जिह्वा आपणा नाद जणाईआ। लोकमात क्यों बैठे रहे लुक, आपणा मुख छुपाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मिलण दी मैनूं भुक्ख, तृष्ना इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे लेखे पाईआ। नईया कहे मैं पार करावां पूर, नौका हो के सेव कमाईआ। जन भगतां परमात्म मिले हज़ूर, हज़रत हो के दरस दिखाईआ। एन्नां दोहां मिल के मैं होवां मशहूर, मेरे नाम मिले वड्याईआ। मेरे साहिब दा आदि जुगादी सच दस्तूर, हुक्मे अन्दर खेल खलाईआ। ओन्नां मिलदा आदि जुगादि ज़रूर, जो शरअ विच्चों आपणी शरअ बैठे बदलाईआ। कर किरपा पूरब बख्शे सर्ब कसूर, कसम नाल मैं निमाणी हो के रही सुणाईआ। जिन्नां मिलाए आपणे नूर, सो नूर ओहो नज़री आईआ। जिस नूर विच्चों झलक दिती कोहतूर, मूसा मूँह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे घर बहाईआ। नईया कहे मैं सुख़न सच्चा कहिणा, सुख़न वाली बात रही ना कोई सुणाईआ। जन भगतो प्रभ चरण कँवल सदा बहिणा, बैठयां होए ना कदे जुदाईआ। दर्शन वेखणा ओस दे नैणां, आपणे नैण ना कोए वड्याईआ। चरण कदमां कँवलां उते ढहिणा, माण अभिमान दोवें देणे तजाईआ। सच प्रेम प्यार प्रीती अन्दर सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब ने कहिणा, रसना कहिण नाल अगला पिछला पिछला अगला विचला लेखा दए चुकाईआ।

नईया कहे मैनूं मिली उह चिट्ठी, जिस दा अक्खर नज़र किसे ना आईआ। विच्चों हुक्म मिल्या बण के आवीं निक्की, धुर फ़रमाण इक समझाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख चढ़ौणे छोटी सिक्खी, सोहणी सेव कमाईआ। बिन गोबिन्द तों समझ ना सके इकी, एकँकार दए वड्याईआ। मैं अन्दरों बाहरों सच सफ़ैदी धार चिटी, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी सच सति दी बोली मिट्ठी, सति सतिवादी आप समझाईआ। मेरी खेल सदा अनडिठी, अनडिठड़ी कार कमाईआ। मैं चल के आई ओसे मिती, जिस दा हाल मित्र प्यारा गया लिखाईआ। मैं नेत्र वेख्या मैनूं ओहो धार दिसी, जो भगत आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। नौका कहे मैं पढ़या संदेस, मेरा अन्तर लए अंगड़ाईआ। हुक्म दित्ता इक नरेश, नर नरायण दित्ता समझाईआ। उठ आपणे नेत्र पेख, लोचण इक खुल्हाईआ। साचे सज्जणां नाल कर हेत, जिन्नां हितकारी दया कमाईआ। आपणा आप कर भेंट, माण अभिमान गंवाईआ। जगत जहान

बण के खेवट खेट, साची सेव कमाईआ। धन दौलत भरां ख़ज़ाना तेरी जेब, कीमत इक्को वार चुकाईआ। साचे सन्तां नाल ना करीं फ़रेब, फ़ैसला इक्को हक़ सुणाईआ। दर दरवाज़े जाणा बण नेक, नेकी आपणी झोली पाईआ। जिन्हां बख्शी साची टेक, तिन्हां लै के आउणा चाईं चाईंआ। चप्पू तेरे अन्दर वड़ के शब्दी लाए दस दस्मेश, दहि दिशा इक्को वार भवाईआ। मैं वेखां सदा हमेश, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। निक्की हो के आई निकम्मी, इक ध्यान लगाईआ। हुक्मे अन्दर घर साचे मन्नी, मनसा मोह मिटाईआ। डूंग्घी कन्दर आई भंनी, आपणा पन्ध मुकाईआ। किनारा वेखां छप्पर छन्नी, सोहणा रंग सुहाईआ। जगत नेत्र हो गई अन्न्हीं, भगती अक्ख खुल्हाईआ। गुरमुख वेखां वड्डा धनी, मेरा लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। नईया कहे मैं आई भज्ज, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भगत सुहेले रही सद्द, सद्दा होका इक जणाईआ। कोटन कोटि शाह सुल्तान एथों गए लद, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। सच दस्सां जिस वेले तन्दवे तार कट लज्जया रखी गज, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। ओस वेले साची धारा चरण कँवलां हेठां गई सज, आपणी सेव कमाईआ। निरगुण रूप उपर बैठ पुरख समरथ, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरी खोल्ह अगम्मी अक्ख, इक्को वार दित्ता समझाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा लहिणा देवां हक़, लेखा लेखे विच्चों पूर कराईआ। भगत सुहेले नाल रख, गुर चेले मेल मिलाईआ। तेरे उते बहि के मेरा ढोला गावण जस, सोहणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। नईया कहे मैं कोझी कमली, प्रभ सच्चे मेरी बणत बणाईआ। बुधहीण जगत निमाणी यमली, गहर गम्भीर साची सेव कमाईआ। मेरी कीमत जगत जहान कोई ना पावे दमड़ी, पैसा धेला सके ना कोए चुकाईआ। हड्ड मास ना कोए चमड़ी, काठ घाड़त ना कोए घड़ाईआ। मात पित ना कोई अमड़ी, भय्या भैण ना कोए वड्याईआ। शिवदुआले मट्ठ मसीत ना फिरां मन्दिरीं, गुरदुआर ना फेरा पाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ किसे टिल्ले मिलां ना कन्दरीं, तट किनारे रोवण देण दुहाईआ। किसे हथ्थ ना आई गोरख मछन्दरी, कन्न पाटे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कोई लभ्भ ना सक्या जगत प्याला पिऔणहारा अमली, ढूंड थक्की सर्ब लोकाईआ। आपणा कदम आपणा पैर प्रभ किरपा नाल संभली, डूंग्घे खात ना कोए टिकाईआ। जुग चौकड़ी वेखदी रही हुन्दी बदली, बदला मुकदा रिहा थाउँ थाईंआ। सच दस्सां एहो जेहा शहिनशाह जुग चौकड़ी कोई ना मिल्या अदली, जो सच अदालत इक्को इक लगाईआ। जन भगतां प्रेम प्यार दी पा के संगली, सगला संग तुड़ाईआ। जे सुणावे ते सुणावे कहाणी अगली, पिछली करे ना कोए पढ़ाईआ। हुक्म दे के सच दवारे सद्द लई, भज्जी आई वाहो दाहीआ। मैं इक्को पार

११३३ किनारा हद्द लभ्भ लई, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ । गुरमुखां सच संदेसे दे सद्द रही, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नईया कहे मैं निक्की वड्डी, वड्डी निक्की प्रभ ने आप बणाईआ। मैं भगत दुआरे आई सद्दी, सद के वारी घोली घोल घुमाईआ। गुरमुखां गुरसिखां भार उठावां आपणे सीस साढे तिन्न हथ्थ काया माटी हड्डी, धुर दी सेवक बण के सेव कमाईआ। जिन्हां प्रीत प्रीतम नाल लग्गी, लागत मंगां कोए ना राईआ। एस उडीक विच लँघदी जाए बीसवीं सदी, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सद्दा दित्ता चाईं चाईंआ। शाह सुल्तान श्री भगवान हुक्मे अन्दर जिस दे बद्धी, बन्दना कर सीस निवाईआ। जन भगतां रीत लग्गी चंगी, मन्दिर मसीत बैठे तजाईआ। श्री भगवान लाए अंगी, अंगीकार अख्वाईआ। ओन्हां पिठ ना दिसे नंगी, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। मैं आप नहीं आई कन्ढी, कन्ढी वाला हुक्मे अन्दर रिहा भुआईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी करे बहुरंगी, रंग रत्ता हो सहाईआ। अज्ज दी घड़ी सुलखणी वार थित चंगी, घड़ी पल खुशीआं नाल रलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां अन्तर आत्म कीती ठंडी, पूरब जन्म दी टुट्टी गंढी, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या सिक्खी विच्चों समझाईआ। ११३३

१६ ✻ १६ जेठ २०२१ बिक्रमी राम चन्द शेखसर जम्मू ✻ १६

हरिजन बोलण सच जैकारा, जै जै जैकार इक सुणाईआ। जगत जहान छुटे किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। लख चुरासी ना रहे प्यारा, मिले मेल बेपरवाहीआ। नाता तुटे कूड़ कुड़यारा, सच सुच इक्को नज़री आईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ मिले एकँकारा, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। एथे ओथे दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। भगत जन बोलण जैकार, धुर दा नाअरा इक लगाईआ। जगत नाता छुटे संसार, सगला संग तजाईआ। भगत वछल मिले गिरधार, गिरवर आपणी गोद टिकाईआ। जन्म कर्म प्रभ पावे सार, वेख वखावे चाईं चाईंआ। मानस जन्म दए अधार, अन्तर आत्म परमात्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद होए आप सहाईआ। जै जैकार गाया गीत, हरि करता आप जणाईआ। अचरज वेखी धुर दी रीत, रीतीवान रिहा समझाईआ। लहिणा देणा चुक्कया हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। पतिपरमेश्वर मिल्या इक अतीत, त्रैगुण लेखा रिहा मुकाईआ। सच सति बंधाए प्रीत, बख्शे इक सरनाईआ। धाम जणाए धर्म अनडीठ, निहकर्मी कर्म कमाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच जैकारा लगा सति, सतिगुर दए वड्याईआ। जन भगतां बख्शे ब्रह्म मति, विद्या ब्रह्म पढ़ाईआ। अन्तर आत्म प्रेम वस, वसल इक्को इक कराईआ। शब्द अगम्मी मार्ग दस्स, रहिबर बणया नूर खुदाईआ। सति प्रकाश कर समरथ, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला इक सुणाईआ। साचा सोहला सुणया जग, जुग चौथे वज्जे वधाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले रहे हस्स, भगवन खुशी मनाईआ। धर्म दुआरे धुर दा जस, सच स्वामी करी पढ़ाईआ। पिछला पन्ध मुक्कया नट्ठ नट्ठ, अगला लेखा लेखे विच्चों दित्ता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। सच जैकारा गहर गम्भीर, इक्को इक सुणाया। हरिजन लाउँदा रहे बिन शरीर, पंज तत नाता तोड़ तुड़ाया। जिस मन्दिर चढ़ कूके कबीर, गहर गम्भीर अल्लाया। सो साहिब बेनज़ीर, निरवैर वेस वटाया। जिस दी अजल सच तस्वीर, दस्तगीर नूर खुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाया। भगत जैकारा बोलया सच्च, सच मिली वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे तक्क, तकवा इक रखाईआ। गुर अवतार गाउँदे जस, सोहणा राग अल्लाईआ। पीर पैगम्बर कैहन्दे हक़, नाअरा हक़ प्रगटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखण रवि ससि, सूरज चन्द ध्यान लगाईआ। पुरी लोअ अकाश प्रकाश चरण कँवल टेकण मथ्थ, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अक्खरां नाल गावण जस, अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सच सरनाई रहे ढट्ठ, आपणा आप मिटाईआ। दो जहान अन्दर बाहर इक्को नाम रहे रट, रट्टा छड्डया जगत लोकाईआ। लोक परलोक चौदां खोल्ल हट्ट, चौदां तबक तबक इक समझाईआ। सारे कहिण उच्ची कूकण आदि जुगादि किसे दा चले ना कोई वस, बेवस बैठे ध्यान लगाईआ। जो किछ करे सो करे पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ऋषी मुनी जगत तपीश्र राह रहे तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। रिख मुन तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले आ, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। पिछला लहिणा रहे तका, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। दे वड्याई साहिब सतिगुर, जन भगत ध्यान लगाईआ। मेरा लेखा तेरे नाल धुर, धुर मस्तक खोज खुजाईआ। निरगुण हो के सरगुण जुड़, जोड़ी धुर दी लै बणाईआ। तेरा लेखा मन्त्र फुर, फुरना इक्को दे समझाईआ। आदि अन्त तेरी लोड़, सदा सदा सद तेरी आस रखाईआ। सच स्वामी चढ़ घोड़, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। निरगुण हो के निरवैर बौहड़, निराकार तेरी वड्याईआ। जगत अन्धेरा वेख घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे

११३४
१६

पाउँदे शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। दे वड्याई पिछले मीत, सति सतिवादी तेरी याद नज़री आईआ। तेरा गाउँदा रिहा गीत, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर बणया रिहा ठंडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरी मन्नदा रिहा रीत, हुक्म अन्दर सीस झुकाईआ। तूं साहिब कीती बख्शीश, बख्शिश मेरी झोली पाईआ। हथ्थ रख के पुश्त पनाह पीठ, धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेखे लाईआ। धुर दा लेखा लाउणा भरिंग, भरिंगू रिहा जणाईआ। तेरे नाम वजाई किंग, किंगरा किंगरा नाद सुणाईआ। तूं दाता दानी गहर गम्भीर सागर सिन्ध, बूँद स्वांती मेरे मुख चुआईआ। मैं समाधी अन्दर बणया तेरी बिंद, तन मन तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भरिंगू मारे अन्तर आवाज़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैनूं दस्स मेरे महाराज, महिबूब क्यों बैठा मुख छुपाईआ। ना उह पत्तण बेड़ा दिसे जहाज़, नईया नौका नज़र कोए ना आईआ। ना कोई भगतां दिसे समाज, सगला संग ना कोए वखाईआ। ना नाद सुणे सच रबाब, तन्दी तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सच दे दृढ़ाईआ। भरिंगू कहे मेरे ग़रीब निवाज, दर तेरे अरज़ोईआ। मेरे पूरब जन्म दा वेख काज, करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं आपणी किरपा दिती दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग अन्त तेरा साजण साज, साची सिख्या इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। भरिंग कहे मेरे भगवान, प्रभाती तेरी मोहे नज़री आईआ। बेशक तेरी किरपा मिल्या दान, दयावान झोली झलक नाल भराईआ। मैं कर ल्या परवान, मेहरवान तेरी तक्क सरनाईआ। तूं हौली चुपके फेर दित्ता फ़रमाण, सच संदेसा इक सुणाईआ। जन्म कर के आवे ना कोई पहचान, कर्म कर के मिले माण वड्याईआ। निरगुण हो के दर्शन देवां आण, सरगुण सनमुख बचन ना कोए सुणाईआ। धुर संदेसा दे फ़रमाण, तेरा पूरब नाता जोड़ जुड़ाईआ। तूं बणया रहें अन्जाण, बाली बुध अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया सृष्ट सबाई माण, बिन श्री भगवान अन्त होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म इक्को वरते अन्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नाता जुड़े जीव जंत, मानस मानुख सोभा पाईआ। नाम रखाए जवाहर पंडत, ब्रह्मणी गोद सुहाईआ। लेखा मुक्के ना किसे कोलों अन्त, अन्तष्करन खोज ना कोए खुजाईआ। एसे कर के नौ साल पहले बणाई बणत, लेखा तेरे घर पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद देवणहार वड्याईआ। भरिंगू रूह बणी जवाहर, मोती माणक विच्चों प्रगटाईआ। सृष्ट विच्चों गई हार, चारों कुण्ट दुहाईआ। तिन्नां

दिनां विच लभ्भया ना कोई यार, सज्जण संग ना कोए वखाईआ। आर पार ना दिसे किनार, मँझधार ना कोए लँघाईआ। राए धर्म संग चित्रगुप्त लेखा रिहा वखाल, पड़दा उहला आप उठाईआ। उथ्थे कंगालां विच्चों कंगाल, धन दौलत नज़र कोए ना आईआ। नेत्र पूंजण नूं लभ्भे ना कोई रुमाल, दुखियां दुःख ना कोए वंडाईआ। साचा करे ना कोए प्यार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट वेख रोई धाहां मार, ऊँची कूक काग वांग कुरलाईआ। फेर आई पिछली याद, जन्म भरिंगू वाला रिहा सताईआ। जिस ने खेल रचाया आदि, सो ब्रह्माद वेख वखाईआ। उधरों दूर दुराडा वेख सिँघ गुरदयाल आया भाज, सच संदेसा इक जणाईआ। मैं राजयां विच्चों राज, बल राजा रूप वटाईआ। जिस दा अन्त प्रभू सुआरया काज, घर साचे दे वड्याईआ। ओस बिना कवण रखे लाज, अग्गे पिच्छे लए तराईआ। जिस ने तेरा नाम लिख्या ओस विच किताब, जिहड़ी कुतबख़ाने ना विच बणाईआ। ओस दवारे मुकणा तेरा हिसाब, बेबाक लेखा दए कराईआ। निमाणा दरवेश हो मुमताज, ममनून हो के सीस निवाईआ। उस साहिब दा सदा खड़ा रहे जहाज़, डुब्बदे रुढ़दे लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। कहे आत्म मैनूं आई होश, हस्ती दिती समझाईआ। जो आदि जुगादि बैठा रिहा ख़ामोश, खुशीआं विच सच्चा आसण लाईआ। मेरा ओस नाल काहदा रोस, जो रुस्सयां रिहा मनाईआ। मैं छड्ड के

११३६ काया माटी तन पोश, सज्जणां नालों कीती जुदाईआ। एथे मेरी चले ना कोई सोच, समझ कम्म किसे ना आईआ। मैं ११३६

१६ कर कर थक्की खोज, चारों कुण्ट राह खहिड़ा सके ना कोए समझाईआ। जगत जहान कूड़ी दिसी मौज, अग्गे सूलां सेज १६

सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला होवे आप सहाईआ। आत्म कहे मैं भरिंगू पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड रूप वटाईआ। तूं दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। तेरी धार सागर सिन्ध, अमृत रूप वटाईआ। की होया मैं बणया रिहा वाली हिंद, हिंदवाइण अग्गे ना कोए सहाईआ। मैनूं पई अनोखी चिन्द, चिन्ता सके ना कोए गंवाईआ। तूं शहिनशाह नरिंद, बख्शंद बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। साहिब सतिगुर पूरब कर्म विचार, आपणा लेखा दए जणाईआ। जिस दा लेख कलम नाल लिख दित्ता रविदास चमार, धुर दा शब्द जोड़ जुड़ाईआ। तिस दी अन्त देवां पैज स्वार, फड़ बाहों गले लगाईआ। एसे कारण जन भगत दवारे नईया लै के खड़ा त्यार, सच सईया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणे विच्चों चुकाईआ। जिस दा लेख लिख्या गया प्रभ शब्दी धार, काग़ज़ शाही कलम मेल मिलाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत अन्तिम उतरन पार, पारब्रह्म प्रभ आपे होए सहाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो जिन्हां बोलयां सति जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ।

जिस दवारे अन्दर तुहानूं देवे वाड़, ओस दवारे दे दर ते शाह सुल्तानां दए बहाईआ। क्यों ओनां जगत नहीं करया प्यार, पिछली भगती नाल तराईआ। एह लेखा पहलों लिख के रख्या आप निरँकार, किरपा कर बेपरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां दए वखाल, वरका वरके नालों उलटाईआ।

* १७ जेठ २०२१ बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह शेखसर जम्मू *

परम पुरख परमात्म आदि जुगादि, निरगुण निरवैर निराकार अख्वाइंदा। सति सरूप सदा विस्माद, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सच दवारे हो आबाद, महल अटल इक सुहाइंदा। करता हो के रचे काज, करनी आपणी आप कमाइंदा। वेखणहारा खेल ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाइंदा। सुत दुलारा शब्दी नाद, अनादी आप प्रगटाइंदा। थिर घर बहि के करे काज, दूजा संग ना कोए वखाइंदा। सति सतिवादी देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी पारब्रह्म, परम पुरख आप कराईआ। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्म कांड समझ किसे ना आईआ। ना कोई जननी देवे जन्म, मात पित ना कोए बणाईआ। ना कोई वरन गोत ज़ात पात धर्म, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। ना कोई ठाकर स्वामी बख्शे शरन, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। ना कोई नेत्र हरन फरन, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ना कोई मंज़ल पौड़ी चढ़न, महल अटल ना कोए वड्याईआ। ना कोई अक्खर विद्या पढ़न, ना कोई हरूफ़ दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे भगवान, सो साहिब सतिगुर इक अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। दाता दानी देवणहारा दान, दयावान आप हो जाइंदा। योद्धा सूरबीर बलवान, सुत दुलारा इक उठाइंदा। हुक्मे अन्दर दे फ़रमाण, सच संदेसा इक सुणाइंदा। तेरा मेरा रूप महान, नूरो नूर नूर दरसाइंदा। साची इच्छया कर परवान, भिच्छया इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाइंदा। करनी करता करे करने योग, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे सच संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार बख्शे साची ओट, राम रहीम इक सरनाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। वसावणहारा साचा कोट, बंक दुआर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहरवान आपणा पड़दा आप उठाईआ। जोती धार प्रगटे शब्द, हरि करनी कार कमाइंदा। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्हब, ज़ात पात

ना कोए रखाइंदा। ना कोई हथ्थ पैर ना चुक्के कदम, पांधी बण ना पन्ध मुकाइंदा। ना कोई सजदा बन्दना करे अदब, ठाकर रूप ना कोए वखाइंदा। ना कोई तत प्रकृती ना कोई बदन, माया वेस ना कोए वटाइंदा। ना कोई मार्ग ना कोई मंज़ल, रहिबर रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खलाइंदा। साची खेल शब्दी सुत, हरि करता आप जणाईआ। हुक्म देवे अबिनाशी अचुत, धुर दा लेखा इक दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मौले तेरी रुत्त, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव कमाईआ। तेरी धारों त्रैगुण माया पए उठ, रजो तमो सतो घाड़त लैणा घड़ाईआ। घाड़त विच्चों मेल मिलणा कित, अनभव आपणी कार कमाईआ। अनभव विच्चों पंज तत सुहौण साची रुत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। सभना मेल करना सच सुच्च, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पंज तत होए मिलाप, निरगुण निरवैर दए वड्याईआ। पंज पंझी खेल तमाश, प्रकृती आपणा रंग वखाईआ। लेखा जाणे पुरख अकाल, दूजा समझ सके ना राईआ। जिस घाड़त घड़ी कमाल, ठठयार बण के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या पारब्रह्म, ब्रह्म वेता आप जणाइंदा। ब्रह्मे तेरा धुर दा कम्म, प्रकृती विच रखाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बेड़ा बन्न्ह, साचा

११३८ खेड़ा इक वसाइंदा। शंकर धूंआँधार देणा डंन, डंका तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। विष्न विश्व वेखणा मार ध्यान, नव नौ चार तेरा ११३८

१६ हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा अछल अछेदा सच स्वामी १६

आप खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कीते ख़बरदार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सच भण्डारा देवणहार, दातार दया कमाईआ। ब्रह्म वेता होया ख़बरदार, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। शंकर चरण कँवल करे निमस्कार, दोए दोए जोड़ लागे पाईंआ। त्रैगुण माया जाए बलिहार, बलिहारी बलिहार प्रभ तेरी वड वड्याईआ। पंज तत वेखण अखाड़, सोहणा बंक सुहाईआ। प्रकृती चले नाल नाल, दृष्टी प्रभू ने आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। त्रै पंज दा रच अखाड़ा, साचा वेस वेख वखाइंदा। ततव तत दे आधारा, माटी बुत्त बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप छुपाइंदा। पंज तत माटी काया कर त्यार, ततव तत दए वड्याईआ। प्रकृती अन्दर बाहर रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तेरा रूप अगम्म अथाह परवरदिगार, शाह पातशाह तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई मीत मुरार, सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। किरपा कर हरि निरँकार, निरवैर हो सहाईआ। दोए जोड़ करां

निमस्कार, नमो नमो आपणा सीस निवाईआ। तेरा घर ठांडा दरबार, सचखण्ड निवासी तेरी सरन सरनगति इक्को मोहे भाईआ। तूं विष्न ब्रह्मा शिव कीते त्यार, त्रैगुण माया पंज तत बणाया मीत मुरार, मेरा नाता प्रकृती विच्चों दृष्टी विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे इक अलख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। श्री भगवान हो प्रतख, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। मेरा देदे मैनूं हक़, ख़ाली झोली रही वखाईआ। मेहरवान हो पुरख समरथ, दीन दयाल दया कमाईआ। आपणा नाउँ परमात्म दस्स, परम पुरख समझाईआ। घट घट निरगुण जोत करां प्रकाश, आदि निरँजण हो के जोत निरँजण रूप वटाईआ। साची वस्त देवां ख़ास, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाईआ। जो आदि जुगादि ना होए विनाश, विनाशी रूप ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई हरि भगवन्त, करनी आप कमाइंदा। घर मेला नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढ्ढाइंदा। काया चोली बाहरों वेख बसन्त, रंग अगम्मड़े आप रंगाइंदा। अन्तर बख़्श जीव आत्मा जंत, परमात्मा आपणा नूर टिकाइंदा। जिस नूं कोटन कोटां विच्चों जाणे विरला सन्त, साख्यात जिस नूं आप दरसाइंदा। बाकी भरमे भुल्ली जीव जंत, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। जिस ने रचना रची आदि सो वेखणहारा अन्त, मध आपणी खेल खलाइंदा। तिस दी महिमा सदा बेअन्त,
११३८ शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान कहि ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ११३८
१६ खेल आप रचाइंदा। साचा खेल पंज तत काया चोला, सो साहिब आप कराईआ। परमात्म आत्म अन्दर रखे उहला, पर्दा सोहणा इक बणाईआ। मन वासना जगत पावे रौला, बुद्धि खोज खोज बिगसाईआ। जिंना चिर शब्द गुरू ना मिले विचोला, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। प्रकृती अन्दर पारब्रह्म ब्रह्म हो के मौला, मौला आपणी कार कमाईआ। सच दवारा जिस ने खोल्ह्ा, तन माटी ख़ुशी वखाईआ। सच संदेसा गाया ढोला, धुर दा राग अल्ह्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परमात्म आत्म आपणा रूप दरसाईआ। परमात्म कहे आत्म सच्च, हरि सच दिती वड्याईआ। काया माटी भाण्डा कच्च, प्रकृती सेव कमाईआ। मन मनुआ अन्दर रिहा नच्च, नौ दुआर भज्जे वाहो दाहीआ। बुद्धी जगत विहारा रही दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला अन्तर आत्म लए रस, निझर झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक सुहाईआ। प्रकृती तत बणाया मन्दिर, सोहणी बणत बणाईआ। आत्म रखी प्रभ ओसे अन्दर, घर घर विच डेरा दित्ता लगाईआ। त्रैधाती लाया जन्दर, ना सके कोए तुड़ाईआ। मन वासना कोई ना समझे डूंग्घी कन्दर, साची खोज ना कोए खुजाईआ। गुरमुख विरला प्रभ किरपा अन्दर लँघण, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ।

अनहद नाद सुणे मृदंगन, शब्दी राग अल्हाईआ। घर स्वामी आत्म परमात्म नज़री आए सज्जण, बैठा डेरा लाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सति सरूप होया मग्न, एका एक नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म अन्तर आपणा रंग वखाईआ। अन्तर आत्म रखी एक, एकँकार बणत बणाईआ। जिस आत्म पिच्छे तत प्रकृती धारन भेख, बिन आत्म प्रकृती कम्म किसे ना आईआ। काया माटी जगत जहान खेड, लख चुरासी वणज कराईआ। जिन्हां बख्शे आपणा तेज, जलवा नूर करे रुशनाईआ। सो भगत भगवान दी अन्तर आत्म मानण सेज, सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म दोहां मिल के खेल खलाईआ। आत्म कहे मेरा प्रकृती नाता, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। प्रकृती कहे मैं आत्म बण के राखा, सोहणी सेव कमाईआ। दोहां दा दाता पुरख समराथा, दीन दयाल इक अख्वाईआ। उस दा खेल किसे ना जाता, बुद्धी भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। आत्म कहे मैं प्रकृती साथ, सोहणा संग निभाईआ। प्रकृती कहे मैं हो के दास, दासी रूप वटाईआ। पंज तत कहिण वाहवा शाबाश, सोहणी बणत बणाईआ। त्रैगुण कहे मैं रही भाज, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सभनां मिल के तत शरीर बणया जहाज़, बेड़ा प्रभ जी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दे अन्दर ना कोई रसम ना रवाज, समाज समझ कोए ना पाईआ। जे कोई अन्दर वड़ के वेखे सति सरूप प्रकाश, विकाश इक्को इक वखाईआ। लेखा चुक्के धरनी धरत धवल आकाश, ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड अनाद इक्को रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। आत्म परमात्म प्रकृती वेखण विच अलग, करनी विच कट्ठे रूप वटाईआ। इक दूजे नाल गए बज्झ, धुर दी सोहणी डोरी तन्द बंधाईआ। जिंनी समझ ओना कोई दए दस्स, अगली कहाणी ना कोए दृढ़ाईआ। ओथे बुद्धी होवे बस, बेवस हो के मति मतिवाली रही कुरलाईआ। जिन्हां मिल गई पिछली वेखण वाली अक्ख, उह आखर मंज़ल चढ़ के देण समझाईआ। आत्म दा आपणे थाँ हक़, प्रकृती आपणे थाँ रही वस, तत आपणे थाँ रहे भज्ज, माया आपणे थाँ रही सज, साजण सब दा इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त सब दे पड़दे रिहा कज्ज, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर ख़ुदाईआ। तिस नूं कैहन्दे पुरख समरथ, बेअन्त बेपरवाह अथाह रूप वटाईआ। आत्म प्रकृती सब प्रभ दे हिस्से ओसे दी आस, रास मण्डल जगत जीव जहान रहे वखाईआ। बिन आत्म अन्तर ना होए प्रकाश, पवण चले ना कोए स्वास, ततव कम्म ना करन बण के दासी दास, मन मति बुध ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दोहां वचोला बेपरवाहीआ।

* १७ जेठ २०२१ बिक्रमी गुरदित्त सिँघ छम्ब शेख़सर ज़िला जम्मू *

वेख खेल अगम्मी हरि दा, हार मन्ने जगत लोकाईआ। लेख वेख अगम्मी घर दा, घर घर बैठे जगत भुलाईआ। भेव वेख अगम्मी नर दा, नर नारी नैण ना कोए उठाईआ। घाड़त वेख अगम्मी घड़दा, जगत बाढी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप कमाईआ। वेख खेल अगम्मी रब्ब दा, रहिबर बैठे मुख भवाईआ । उह लेखा जाणे सब दा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपे लभ्भदा, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। लेखा जाणे दो जहानां हद्द दा, आर पार किनारा वेखे चाईं चाईंआ। सच निशाना सति दवारे आपे गड्डदा, चार कुण्ट दहि दिशा आप झुलाईआ। लेखा जाणे नाड़ी मास हड्ड दा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। नशा जाणे प्रेम प्यार मदि दा, पीआ प्रीतम बेपरवाहीआ। नाद धुन वेखे वज्जदा, बिन तन्दी तन्द सतार हिलाईआ। सच प्रकाश दीपक वेखे जगदा, कवण दवारे होए रुशनाईआ। साहिब सतिगुर सरन कवण लग्गदा, पुरख अकाल कवण मनाईआ। चरण कँवल निमाणा हो कौण ढढ्ढदा, अभिमान मोह मिटाईआ। साचा नाम आत्म परमात्म कवण रटदा, सोहँ ढोला सच्चा गाईआ। पड़दा लाहे चौदां लोक चौदां तबक साचे हट्ट दा, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। मार्ग वेखे सति सतिवादी रथ दा, रथवाही बण के फेरा पाईआ। मेल मिलाप वेखे तीजी अक्ख दा, कवण इशारे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा दृढ़ाईआ। वेख खेल अगम्मी नूर, जगत नूर रहे शरमाईआ। नेत्र रो प्या मनसूर, नैणां नीर वहाईआ । मूसा धाह मार कोहतूर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ईसा हो के कहे मजबूर, तोबा तोबा बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे परवरदिगार बेकसूर, कसम खा के रिहा जणाईआ। जिस दा सच सच्चा ज़हूर, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जिस दे मसवरे नाल मसीर होए मसहूर, कुतब ग़ौंस मिली वड्याईआ। तिस दा सब तों वड्डा शऊर, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट हाज़र हज़ूर, हज़रत इक्को नज़री आईआ। मैं दर बरदा बण मज़दूर, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। वेख खेल अगम्मी हरि दा, चार कुण्ट लए अंगड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फिरे डरदा, सीस सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार मन्त्र फिरे पढ़दा, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। सति सति सति दिसे करदा, असति रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह वखाईआ । वेख खेल हरि जगत, जुग खुशी मनाइंदा। मिले वड्याई धुर दे भगत, भगवन आपणी दया कमाइंदा। निरवैर हो के वेखे परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। अगला पिछला कढ्ढ फरक, फ़ैसला इक्को वार सुणाइंदा। जन्म कर्म दा मेट हरख, संसा रोग सोग चुकाइंदा।

बिन कसवटीउँ ल्या परख, पारखू इक्को नज़री आइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां कर के तरस, रहमत आपणी नाल रखाइंदा। अन्तर आत्म मेघ बरस, जगत अग्नी तत बुझाइंदा। पूरब जन्म जो रहे तड़प, कर किरपा घर साचे मेल मिलाइंदा। मन वासना मिटे भटक, सांतक सति सति कराइंदा। मंज़ल मंज़ल सन्त सुहेला कोई ना जाए अटक, मार्ग इक्को इक वखाइंदा। पंच विकार दूई द्वैती परे हटाए कटक, खण्डा खड़ग नाम खड़काइंदा। हउमे हंगता देवे झटक, छुरी ज़ब्रा हथ्थ उठाइंदा। ठाकर हो के कृपानिधान देवे मदद, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगत बणाए इक तों अदद, अदल अदालत इक्को इक वखाइंदा। जिस घर दिसे ना कोई तशदद, दूजा रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई दीन ना कोई मज़्हब, मज़लूम नज़र कोए ना आइंदा। सब दा दाता सर्ब दा गुरू इक्को शब्द, गुरदेव स्वामी इक समझाइंदा। जुग चौकड़ी पिच्छों प्रभ एहो कीता ग़ज़ब, गहर गम्भीर आपणा नाम प्रगटाइंदा। ना रूप ना रेख ना तत ना मर्द, जोती जाता रूप अनूप धराइंदा। दीन हो के दुखियां वंडे दर्द, दर्द दुःख भय भंजन आपणी कार कमाइंदा। कूड़ी क्रिया रिहा वर्ज, सिर सिर हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले सच उठाइंदा। वेख खेल श्री भगवन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। खुशी मनावण गुरमुख सन्त, ढोला राग अलाईआ। धन्न भाग अबिनाशी करता मिले कन्त, नारी सोहणी सेज हंढाईआ। तन माटी चाढ़े रंग बसन्त, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। आत्म परमात्म देवे मंत, धुर दा ढोला इक सुणाईआ। मिले वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हरि मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे ना कोई मुल्ला शेख़ मसायक पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेख खेल साहिब सतिगुर, गृह गृह वज्जे वधाईआ। हरिजन मेल मिलावा मेला करे धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। मन्त्र फुरना इक्को दस्से जो रिहा फुर, फ़रमांबरदार हो के सेव कमाईआ। सच प्रीत पीआ प्रीतम जाए जुड़, जोड़ी आत्म परमात्म आप बणाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, जोती नूर करे रुशनाईआ। पकड़ पछाड़े पंज चोर, माया ममता मोह मिटाईआ। कूड़ी क्रिया ना पावे शोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक सुहाईआ। वेख मन्दिर घर स्वामी, हरिजन साचा खुशी मनाइंदा। जिस गृह शब्द अनादी सुणे बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। जिस दा लेखा कोई ना जाणे जगत विद्वानी, विद्या अन्दर हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दा लेख शाही लिखे ना कोए कानी, कातब कलम ना कोए चलाइंदा। जिस दा जलवा नूर नुरानी, ततव तत ना कोए वखाइंदा। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गए कहाणी, कहावत विच आपणा नाम प्रगटाइंदा। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल

करे मेहरवानी, मेहर नज़र नरायण इक उठाइंदा। जन भगतां आबे हयात अमृत बख्शे ठंडा पाणी, नीर सीर गहर गम्भीर मुख चवाइंदा। सच दरबार देवे पद निरबाणी, निरबाण पद चरण कँवल वखाइंदा। मंज़ल मकसद रहिबर राह दस्से आसानी, असल आपणा भेव चुकाइंदा। बिन करबल्यों मंज़ूर करे कुरबानी, बिन छुरीउँ ज़ब्ा आपणे लेखे लाइंदा। बिन मरन तों लहिणा देणा चुकाए फ़ानी, फ़ैसला आपणे हथ्थ वखाइंदा। बिन कत्लगाह कातिल मक्तूल वेखे मार ध्यानी, नेत्र नैण अक्ख खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे दर सुहाइंदा। वेख खेल साचे दुआर, दरगह वज्जी वधाईआ। परम पुरख प्रभ करे प्यार, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, नर नरायण नैण खुल्ाईआ। सन्त सुहेले गोद उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। लेखा चुक्के ओथे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। सच धर्म दी सच्ची धर्मसाल, सति सतिवादी दए वखाईआ। शब्दी दीपक इक्को बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कल वरताईआ। सच मुहब्बत प्यार प्रीती अन्दर परम पुरख कर परवान, प्रेमी आपणे घर वसाईआ। साचे दर साचे गृह साचे मन्दिर साचा ढोला गाण, गावत गीत गोबिन्द अलाईआ। इक दूजे दी करन पहचान बेपहचान
११४३ आपणा, पड़दा दए उठाईआ। जिध्धर वेखण निरगुण नूर जोत सरूप सति स्वामी नज़री आए श्री भगवान, सच सिँघासण ११४३
पुरख अबिनाशन बैठा डेरा लाईआ। भगत वछल दयानिध ठाकर स्वामी देवे इक फ़रमाण, धुर संदेसा अगम्म अथाह सुणाईआ।
१६ साचा महल अटल उच्च मकान, जन भगतो तुहाड्ढा हिस्सा दित्ता बणाईआ। खुशीआं नाल वसणा गीत गाउणा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवान दान धुर दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाड्ढे नाल रखे आपणा ईमान, आपणे ईमान नाल तुहाड्ढा धर्म दए बणाईआ। १६

* १७ जेठ २०२१ बिक्रमी गूढ़ा राम दे गृह शेख़सर जम्मू *

किरपा करे प्रभ सतिगुर पूरा, सति पुरख निरँजण दया कमाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ाइंदा। काया चोली रंग अगम्मड़ा चाढ़े गूढ़ा, एथे ओथे उतर कदे ना जाइंदा। सगला संग बणाए बण के सूरा, सूरबीर धुर दा मेल मिलाइंदा। माया ममता हउमें हंगता गढ़ ढाहे कूड़ा, सच सुच इक वखाइंदा। शब्द अनादी नाद वजाए तूरा, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। सच प्रकाश बख्शे नूरा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। सर्ब कला बण भरपूरा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां जन्म होण ना दए अधूरा, हरि जु आपणे लेखे लाइंदा। सतिगुर

पूरा सदा सहायक, आदि अन्त वड्याईआ। शब्द अगम्मी दए हदाइत, धुर दी करे पढ़ाईआ । नाम निधान बख्शश करे अनाइत, रहमत झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे शरायत, शरीअत साची विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे सदा हमायत, अहिमीयत आपणी दए दृढ़ाईआ। सतिगुर पूरा सदा सुहेला, संगी साथी इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी फिरे इकेला, दो जहानां निरगुण निरगुण निरगुण पन्ध मुकाईआ। आपणे हथ्थ रखाए वार थित वेला, घड़ी पल ना किसे समझाईआ। जन भगतां बण के सज्जण सुहेला, मेल मिलाए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर इक अख्वाइंदा। जन भगतां वखाए आपणा धर्म, सद धर्मी दया कमाइंदा। चरण प्रीती बख्श के सरन, सरनगति इक दृढ़ाइंदा। नेत्र खोलू हरन फरन, हिरदे आपणा रूप वसाइंदा। लहिणा देणा चुका मरन डरन, भय भ्यानक डेरा ढाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेला वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। जुग जन्म देवे पैज स्वार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा जाणे मूर्ख मुग्ध गंवार, बुधहीण दए वड्याईआ। साची सिख्या सिखाए अपर अपार, अपरम्पर करे पढ़ाईआ।
1144 मीत प्यारा बण के सज्जण यार, सुहेला हो के सदा दए लगाईआ। उठ गावत गीत गा इक मुरार, मुरली तन रबाब वजाईआ। 1144
मेरे अन्दरों निकले सच्ची धुनकार, अनहद नादी राग सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख
16 दए वड्याईआ। गुरमुख गा गीत सोहला, हरि सतिगुर आप समझाइंदा । तेरा चुक्के पर्दा उहला, मुख नक़ाब ना कोए टिकाइंदा। 16
सच नाम दा सोहणा बोला, अनबोलत आप सुणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा वचोला, मेलणहार इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। साचा रंग चाढ़ मजीठ, सोहणी बणत बणाईआ। धाम वखा इक अनडीठ, अगम्मड़ी रुत्त सुहाईआ। ठाकर हो के वस चीत, चेतन रूप वटाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, सोहणा बंक सुहाईआ। भगत भगवान धुर दी रीत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । हसदयां हसदयां माणस जन्म जाणा जीत, खुशी ग़मी इक्को घर दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची भीख, भिच्छया आपणा नाम झोली पाईआ। सतिगुर पूरा पाए भिच्छा, भिखक दया कमाइंदा। एथे ओथे करे रिच्छा, रच्छक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सति सतिवादी आत्म अन्तर सुणाए किसा, किस्मत काया विच्चों बदलाइंदा। रूप रंग वेखण नूं दिसे निक्का, वड्डया विच्चों वड्डा वड दाता इक्को नज़री आइंदा। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति धर्म दा चले सिका, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। सोहणा भागां वाला मस्तक लाए टिक्का, जिस दी रेख ना कोए मिटाइंदा। सचखण्ड दुआर वखाए जिथ्थे ना कोई लाए गारा इट्टां, जगत

मज़दूर सेव ना कोए कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सच प्रीती दा प्रीतम इक्को वार कढ्ढे सिट्टा, जिस दा अन्त कोए ना आइंदा। प्यार विच मित्र प्यारा मिता, प्रेम विच परम पुरख अख्वाइंदा। हितकार विच अन्दर बाहर करे हिता, हित विच्चों अबिनाशी अचुता नज़री आइंदा। अबिनाशी हो के खेल करे नित नवित्ता, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। जन भगतां साचे सन्तां बण के धुर दा पिता, पूत सपूत आपणी गोद उठाइंदा। रस अमृत देवे मिट्ठा, फिक्का रूप ना कोए जणाइंदा। एहो खेल सदा सदा सद अनडिठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी बिध, विध नाता आपणा आपणे नाल जुड़ाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शिश विच वड्डा दाता, रहमत विच रहीम नज़री आइंदा। जिन्हां गुरमुखां मन्नया शब्दी आखा, तिन्हां पदवी इक वखाइंदा। जिथ्थे ना कोई अन्न्हा ना सुजाखा, नेत्र अक्ख ना कोए मटकाइंदा। इक्को इक पुरख समराथा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जन भगतां मेल मिला के गावे खुशीआं गाथा, सोहँ राग सुणाइंदा। ओन्हां गुरमुखां काहदा घाटा, जिन्हां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरूप बणया राखा, प्रितपालक हो के बालकां उपर आपणी नज़र उठाइंदा।

११४५

१६

* १७ जेठ २०२१ बिक्रमी गुरा राम दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

मेहरवान हो के आया प्रभ आप, सो साहिब सतिगुर फेरा पाइंदा। दयावान हो के जपाए इक्को जाप, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। भगत वछल हो बख्शे अगम्मी दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। प्रकाशवान हो के मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा दूर कराइंदा। बोध अगाधा हो के दस्से सच्ची गाथ, सोहँ ढोला राग सुणाइंदा। पतिपरमेश्वर हो के बणे पित मात, भगत भगवन्त पूत सपूते गोद उठाइंदा। शाह पातशाह हो के चरण कँवल बंधाए नात, सरन सरनाई इक जणाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार हो के पारब्रह्म ब्रह्म दस्से सच्ची ज़ात, वरन गोत ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाइंदा। लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड वेख सच दुआर दसाए हाट, चौदां लोक चौदां तबक पढ़ाइंदा। गुप्त ज़ाहर बातन करे बात, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। सच किनारा पत्तण वेखे कन्ढी घाट, नईया नौका आपणा नाम जणाइंदा। दीन दयाल हो के पुछणहारा वात, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा। अनभव धारी हो के रिहा भाख, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गए आख, आखर सब दा लेखा झोली पाइंदा। करे खेल बण स्वांगी नटुआ नाट, मण्डल रासी रास रचाइंदा।

सेज सुहाए सुहञ्जणी बिन पावा चूल खाट, अन्तर आत्म सोभा पाइंदा। देवे वड्याई हरिजन गुरमुख वड वड भाग, रुत रुतड़ी आप सुहाइंदा। गृह मन्दिर घर दीपक जगे चिराग़, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सज्जण सुहेले आप मिलाइंदा। सज्जण सुहेले मिलावणहारा, पड़दा उहला आप चुकाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, दूर दुराडा नेरन नेरा रूप वटाईआ। अन्तर आत्म करनहार प्यारा, परमात्म प्रीतम हो के वेस वटाईआ। महल अटल देवणहार सहारा, साढे तिन्न हथ्थ काया बंक खोज खुजाईआ। नाम सौदागर बण वणजारा, शब्द अमोलक हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर आपणा रूप धराईआ। निरवैर हो के आया प्रभ, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले लए लभ्भ, जीव जंत खोज खुजाइंदा। घर स्वामी वजाए नद, धुर दा राग अल्लाइंदा। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, सच प्रीती जोड़ जुड़ाइंदा। कर प्रकाश काया हड्ड, जोती जाता डगमगाइंदा। अमृत जाम प्याए मध, बिन रसना रस चखाइंदा। साचे मन्दिर आपे लँघ, घर घर विच वेख वखाइंदा। आत्म सेज अगम्मी पलँघ, अबिनाशी करता डेरा लाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। एथे ओथे दए इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। किरपा कर सूरा सरबँग, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगतां चोली दए रंग, रंग रंगीला इक चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। भगत वछल आया भगवन्त, भगवन दया कमाईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि सिफ्त सुणौदे ग्रन्थ, शास्त्र सिमरत राग अल्लाईआ। जिस नूं दीन मज़्ब मन्नदे पन्थ, इष्ट देव स्वामी कहि कहि सीस निवाईआ। जिस दी ओट रखदे सन्त, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। जिस नूं गुरमुख कैहन्दे धुर दा कन्त, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं गुरसिख कैहन्दे बणावे बणत, घड़न भंनणहार वड्डी वड्याईआ। जिस दा लेखा लख चुरासी जीव जंत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। जिस दवारे विष्न ब्रह्मा शिव बणे मंगत, दर बैठे अलख जगाईआ। जिस दवारयों गुर अवतार पीर पैगम्बर बोध अगाधे बणन पंडत, धुर दा राग नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो स्वामी खेल कराईआ। सो स्वामी आया जग, जग जीवण दाता नाउँ धराइंदा। जन भगतां वासा कर उपर शाह रग, घर साचे मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दी बुझाए अग्ग, कर्म कर्म दा रोग गवाइंदा। नौ दवारे पार हद्द, घर मन्दिर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। भगत तारनहार प्रभ आप, निरगुण दया कमाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों परमात्म हो के बणे बाप, पिता हो के गोद सुहाईआ। निरगुण हो के दस्से जाप, सोहँ ढोला इक समझाईआ। दाता हो के बख्शे दात, दयावान झोली आप

भराईआ। साची नईया बेड़े चाढ़ जहाज़, निरगुण आपणे कंध उठाईआ। एथे ओथे रख लाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। हरिजन जगाए शब्दी धार, सहिज सहिज उठाईआ। अन्तर आत्म कर प्यार, परमात्म वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, निरवैर खेल खलाईआ। जीव जंत ना पावे सार, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला जिस बख्शे चरण कँवल उपर धवल इक प्यार, प्रीती नीती इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक वखाईआ। सच्चा मार्ग रिहा दस्स, दर्दी दर्द वंडाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, साहिब फेरा पाईआ। गुरमुखां खोल्ह आपणी अक्ख, आखर बूझ बुझाईआ। अमृत झिरना धुर दा रस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। सति सन्तोख धीरज जत, हठ रूप दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र करे पारब्रह्म, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जन भगतां लेखे लाए कर्म, निहकर्मी होए सहाईआ। सच जणावे इक्को धर्म, सति सतिवादी धुर दी बूझ बुझाईआ। लेखा चुक्के वरन बरन, चार अठारां वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल सब दी सरन, सरनगति इक अख्वाईआ। सन्त सुहेले पल्लू फड़न, गुर चेले मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वड्याई वड्डा देवणहारा, आदि जुगादी खेल कराइंदा। जिस दा अन्त ना पारावारा,
११४७ बेअन्त नाउँ धराइंदा। जो जुग चौकड़ी खेल वेखणहारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। जो नित ११४७
१६ नवित्त गुर अवतार पीर पैगम्बर लए अवतारा, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आप समझाइंदा। जो शब्द अनाद बोलणहार १६
जैकारा, सिफ्ती सिफ्ती नाउँ प्रगटाइंदा। जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणे लिखारा, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। जो वाक भविक्ख्त दस्सणहारा भेव न्यारा, अनभव आपणी कार कमाइंदा। जो जोती जाता पुरख बिधाता वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सो साहिब समरथ कलयुग अन्तिम खेल करे न्यारा, निराकार भेव अभेदा आपणा आप खुलाइंदा। भगतां देवे बिन भगती सहारा, आत्म शक्ती शख्सीयत आपणे नाल मिलाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर बण वणजारा, दर दर घर घर फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, करनहार दया कमाइंदा। भगत जनां सच प्रितपाल, प्रितपालक हो के सेव कमाइंदा। कोए ना जाणे आपणी घाल, बण दलाल मेल मिलाइंदा। अगला पिछला दस्स अहिवाल, हकीकत हक़ विच्चों प्रगटाइंदा। गोद उठा छोटे नन्न्हे निक्के बाल, बालक आपणी उंगली लाइंदा। सच वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक सुहाइंदा। मार्ग देवे धुर सुखाल, औझड़ राह ना कोए पाइंदा। जिस दी जुग चौकड़ी गुर अवतार करदे गए भाल, नेत्र नैण नैण सर्ब उठाइंदा। सो प्रगट हो के खेल करे दीन दयाल, दीनां

अनाथां नाथ हो के गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जन भगतां मेट कूड़ी चिन्द, चिन्ता चिखा दिती जलाईआ। शब्द अनादी बणा बिंद, सुत अपराधी लए उठाईआ। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। नाम सतार वजाए धुर दी किंग, तन्दी तन्द सतार नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गहर गम्भीर गुणी गहिंद, गवर आपणा हुक्म वरताईआ। गहर गम्भीर वड डूंघा सागर, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। सच सरोवर जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। एथे ओथे अग्गे पिच्छे निरगुण सरगुण देवे आदर, अदालत धुर दी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

भगवान कहे मैं सेवादार, जुग जुग जन भगतां सेव कमाइंदा। नित नवित्त लै अवतार, वेस अनेका रूप वटाइंदा। सति सतिवादी मार्ग सच सिखाल, सिख्या धुर दी इक पढ़ाइंदा। लख चुरासी जीव जंत विच्चों उठाल, पर्दा उहला मेट मिटाइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा हो के पुच्छां हाल, अन्तर आत्म खोज खुजाइंदा। बाल अञ्याणे फड़ उठावां सच वखावां सच्ची धर्मसाल, दर दवारा इक्को इक जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलां नाल नाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। भगवान कहे मैं भगतां जोगा, जग जीवण दाता नाउँ धराईआ। पंज तत काया चोला चोग़ा, चोली आपणी रंग वखाईआ। शब्दी हो के देवां होका, धुर दा नाउँ सुणाईआ। माण दवावां चौदां लोकां, परलोक दयां वड्याईआ। साची बख्शां चरण ओटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जीव जंत विच्चों वेखां खरा खोटा, नाम कसवटी उपर लगाईआ। नाम पदार्थ देवां बहुता, जगत धन ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक दृष्टाईआ। भगवान कहे मैं भगतां मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। पंज तत काया करां ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाइंदा। सच सुणावां सोहँ गीत, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। बण स्वामी वसां चीत, चेतन सुरती आप वखाइंदा। अचरज दस्सां धुर दी रीत, सच प्रीत इक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला दया कमाइंदा। भगत कहे प्रभ तेरी ओट, भगवन तेरी सरनाईआ। मेरा नूर नुरानी तेरी जोत, रूप अनूप तेरा नज़री आईआ। मेरा काया बंक तेरा कोट, घर मन्दिर दित्ता सुहाईआ। तेरा नाम मेरा श्लोक, सोहणा ढोला राग अलाईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर मोहत, मुहब्बत

तेरे नाल लगाईआ। तेरे चरण मिले मौज, मजलस होर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देणा जणाईआ। भगत कहे प्रभ तेरा सदका, हउँ वारी घोली घोल घुमाईआ । लेखा जाणे पूरब जन्म दा, कर्म आपणे लेखे पाईआ। लहिणा देणा चुकाए मरन का, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ । लहिणा देणा देवीं साची सरन का, शरनारथी आपणी गोद उठाईआ। मार्ग दस्सीं मंज़ल चढ़न का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भगत कहे मोहे तेरा भरवासा, सरनगति तेरी सरनाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर दे आसा, हउमं तृष्ना मेट मिटाईआ। दर दरवेश घर होए ना कोए निरासा, नर नरायण तेरी वड्डी वड्याईआ । वस्त अगम्म अथाह बेपरवाह प्रेम प्रीती बख्श दाता, दयावान दया कमाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर रसना जिह्वा बत्ती दन्द गावां तेरी गाथा, मन्त्र इक्को इक करां सच पढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा रूप ना किसे पछाता, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। सच सच तूंही पिता तूंही माता, हउँ बालक रूप सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्शी इक्को नाता, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। भगवान कहे मैं बणां संग, दूजा संगी ना कोए बणाईआ। भगत कहे मैं लागां अंग, अंगीकार इक्को इक अख्वाईआ। श्री भगवान कहे मैं वजावां मृदंग, धुन आत्मक राग अल्हाईआ । भगत कहे मैं माणां अनन्द, अनन्द अनन्द तेरे विच्चों नज़री आईआ।

११४६ १६

श्री भगवान कहे मैं टुट्टी देवां गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी नाउँ धराईआ। जन भगत कहे मैं गावां तेरा छन्द, तूं मेरा सच्चा माहीआ। श्री भगवान कहे मैं दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी इक वरताईआ। जन भगत कहे मैं दर दुआर मंगां धुर दी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। श्री भगवान कहे मैं लेख चुकावां खण्ड ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ अकाश पन्ध मुकाईआ। जन भगत कहे मैं सच दुआर तेरा वेखा लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। श्री भगवान कहे मेरा प्रकाश ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगत कहे मैं वेखां सुहञ्जणी ठंड, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण देणा थाउँ थाईंआ। जन भगत कहे मैं वेखां दरबारा, दरगाह तेरी फेरी पाईआ। श्री भगवान कहे मेरा ओथे इक उज्यारा, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहे मैं बोलां सच जैकारा, तूही तू राग अल्हाईआ। श्री भगवान कहे मैं करां सच प्यारा, फड़ बांहों गले लगाईआ। दोहां मिल के निरगुण रूप बणे निरँकारा, निरवैर आपणी खेल खलाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों लोकमात प्रभ करे आप बिवहारा, बिवहारी हो के फेरा पाईआ। आदि जुगादि जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवन्त लगाए लड़, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। भगत भगवान करे मिलाप, मेहरवान दया कमाइंदा। बिन भगतां

११४६ १६

सोहँ किसे ना जपया जाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अक्खरी नाम पढ़ाइंदा। किसे ना बुज्झया आपा आप, आपणे विच्चों वड प्रतापी नज़र किसे ना आइंदा। कोए ना मिल्या प्रभ दी ज़ात, पाकी पाक ना कोए अख्वाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिन्हां भगतां दित्ता धुर दा साथ, बण संगी सगला संग निभाइंदा। दूर दुराडा वेखण आया कन्ढी घाट, पाबंदी अग्गे ना कोए रखाइंदा। वड्डी छोटी निक्कीउँ निक्की सब तों चंगी उह ज़ात, जिस ज़ात विच आपणा नूर दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा सच बाग़ात, बाग़ीचा गुलशन गुरमुख गुरसिख वेख खुशी मनाइंदा।

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी बसो देवी दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

जन भगत कहे सुण भगवान, निरगुण आपणा ध्यान लगाईआ। हउँ बाली बुध अञ्याण, मूर्ख मुग्ध नज़री आईआ। किस बिध सानूं बख्शें माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कवण वस्त देवें दान, अमोलक इक वरताईआ। जगत नैण तैनूं ना सके पहचान, मन मति समझ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दस्सीए की, समझ विच कुछ ना आईआ। किस सहारे रहे जी, जीवत जीवण जन्म तेरे लेखे पाईआ। पूरब जन्म की बीज्या बी, फल कवण रिहा वखाईआ। किस बिध नाता जुड़या साढे तिन्न हथ्थ काया सीं, घर मन्दिर सोभा पाईआ। कवण प्रेम प्याला ल्या पी, मधुर रस इक चखाईआ। कवण प्रीती गए थी, आपणा आप लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ। सच दस्स पुरख अकाल, तेरे अग्गे अरज़ोईआ। किस बिध बणे तेरे लाल, नाता सच जुड़ाईआ। जगत ग़रीबी दिसीए कंगाल, वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। दौलत ख़ज़ाना ना धन माल, महल अटल ना कोए वड्याईआ। माला तसबी ना कोई मृगछाल, आसण सिँघासण ना कोए सुहाईआ। पूजा पाठ हवन ना कोए विचार, तिलक ललाट ना कोए लगाईआ। संख नाद ना कोए आवाज़, आरती रूप ना कोए वखाईआ। गेरू कपड़े ना कोई सन्त साध, मिट्टी ख़ाक ना कोए रमाईआ। सुबह शाम ना तेरी याद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किस बिध लहिणा रिहा चुकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ होई हैरानी, सोच समझ रही ना राईआ। घर घर दिसे कूड़ शैतानी, शरअ करे लड़ाईआ। सुरत सवाणी बाल नादानी, तेरी समझ ना पाईआ। अमृत मिल्या ना ठंडा पाणी, निझर रस ना कोए चखाईआ। भेव चुक्कया ना चारे खाणी, बाणी समझ

११५० १६

ना कोए समझाईआ। एसे कारण होई परेशानी, पश्चाताप रिहा सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, किस बिध मेला रिहा मिलाईआ। श्री भगवन्त हो खुशहाल, खुशीआं नाल जणाइंदा। सुण मेरे लाडले लाल, हरि लालन दया कमाइंदा, जिस उपर होवां आप कृपाल, मेहर नज़र उठाइंदा। आपणी बख्श देवां दौलत नाम सच्चा धन माल, प्रेम ख़ज़ीना इक भराइंदा। साची घालण लवां घाल , घोल घुमाई आपणा भेंट चढ़ाइंदा। अन्दर वड़ के वसां नाल, हरदम आपणा रंग रंगाइंदा। एहो मेरी अवल्लड़ी चाल, जन भगतां दया कमाइंदा। अठ सठ तीर्थ ना देवां नुहाल, जोग अभ्यास ना कोए कराइंदा। रसना जिह्वा ना पूजा पाठ, तसबी माला ना गल लटकाइंदा। आलस निंद्रा ना देवां रात, दिवस वंड ना कोए वंडाइंदा। जिस वल मेहर नज़र कर के लवां झाक, अगली पिछली झाकी आप जणाइंदा। बंद किवाड़ा खोल्ह के ताक, पड़दा दूई द्वैत उठाइंदा। बातन दस्सां आपणी बात, बीती कहाणी आप समझाइंदा। चरण प्रीती बख्श के दात, वड्डी भगती आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। साची भगती सतिगुर चरण, आदि जुगादि समझाईआ। साची विद्या गुरमुख पढ़न, इक्को नाम ध्याईआ। साची मंज़ल सन्त सुहेले चढ़न, आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां किरपा कर के पुरख अकाल लोकमात आवे खड़न, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात वरन बरन, साची सरन इक समझाईआ। जो गुरसिख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला पढ़न, तिन्हां मंज़ल पन्ध दो जहानां ल्या मुकाईआ।

११५१ १६

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी नानक चन्द दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

जन भगतो जुग जन्म दी पूरी होई भगती, श्री भगवान लेखे लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सम्मत इकीवें तक्कदे रहे बरसी, सदीआं विच सद्दा दे दे सर्ब सुणाइंदा। जिस वेले किरपा करे श्री भगवान दाता धुर दा अर्शी, अर्श कुर्श आपणे लेखे लाइंदा। रूप वटाए निरगुण निरवैर निराकार फ़र्शी, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाइंदा। माण दिवावे वड्डे वड कर नालों नरसी, साची हुंडी इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। दो जहानां पल्ले बन्न्हे ख़र्ची, ख़ैरख़ाह हो के पूरी ख्वाहिश वखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों थोड़यां गुरमुखां दी निकली पर्ची, बाकी पर्चा हल्ल ना कोए कराइंदा। दीना बंधू दीन दयाल हो के होया दर्दी, दर्दीआं दुःख वंडाइंदा। जिस दी वेद व्यास ईसा मुहम्मद गोबिन्द पा के गए अर्ज़ी, सो आरज़ू सुणनहार वेस वटाइंदा। आदि जुगादि चल के आया धुर दा कर्ज़ी, मकरूज जन भगतां लहिणा झोली आप टिकाइंदा। पुरख अकाल दीन

दयाल खेल कदे ना करे फ़र्ज़ी, हक़ हकीकत विच्चों आप वखाइंदा। जन भगतो बिन भगतीउँ तुहाढ्ढी पूरी कीती मर्ज़ी, जन्म मरन दी मर्ज गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगत तेरा चुक्कया झेड़ा, झगड़ा मुका लोकाईआ। उजड़या वसया तेरा खेड़ा, खिड़की बंद खुल्ह्राईआ। जिथ्थे नाता जुड़े तेरा मेरा, होवे ना कदे जुदाईआ। प्रेम प्यार दा सदा खुल्ल्हा वेहड़ा, चार दीवारी बंद ना कोए वखाईआ। ना कोई सञ्झ ना सवेरा, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई दूर ना कोई नेड़ा, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। कोहलू चक्की चक्क ना कोए गेड़ा, अवण गवण ना कोए भवाईआ। पुरख अकाल दयावान हो के करे मेहरां, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिध्धर वेखो नज़री आए श्री भगवान निरगुण निरवैर धुर दा शेरा, शेर दलेर आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। जन भगतो छुट्टा जग, लेखा मुकया जगत लोकाईआ। मिल्या मेल सूरे सरबग्ग, सर्ब कल दाता वेख वखाईआ। मात गर्भ फेर नहीं पैणा अग्ग, नौ अठारां कुण्ड ना कोए रखाईआ। जन्म कर्म दी मुक्की हद्द, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। लेखे लग्गा काया माटी हड्ड, जो जन नेत्र नैण दर्शन पाईआ। अग्गे रहिण ना देवे अड्ड, जगत विछोड़ा दए चुकाईआ। एसे कारण ग़रीब निमाणे रिहा सद्द, होका देवे बेपरवाहीआ। भगतां विच्चों भगती लई लभ्भ, बिन भगतीउँ भगत दित्ते तराईआ। एहो वड्याई रहे जग, जग जीवण दाता होए सहाईआ। बिन मक्के काबिउँ कराया हज्ज, बिन हुजरयों हक़ वखाईआ। बिन तन्द रबाब वजाया नद, अगम्मी राग सुणाईआ। गुरमुखो गुरसिखो साचे मन्दिर वड़ना भज्ज, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। मरन तों पिच्छों सृष्टी रोवे जग, गुरमुखां वज्जे वधाईआ। सच्चा दीपक जाए जग, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा रिहा चुकाईआ। जन भगत तेरा मुकया पन्ध, पुरख अकाल होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया नाता टुट्टा गंद, हउमे हंगता ना कोए लड़ाईआ। निरगुण मिल के सरगुण गाया छन्द, सोहँ ढोला राग अल्ह्राईआ। जिस विच्चों मिल्या परमानंद, निजानंद होए रसाईआ। बिन जल धारा पए ठंड, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जगत अन्धेरे चाढ्ढ के चन्द, साचा नूर कीता रुशनाईआ। घर सज्जण स्वामी आया लँघ, बंक दवारी लंका गढ़ तुड़ाईआ। जिस राम दी राम कर के गया मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल सेज सुहञ्जणी बैठ पलँघ, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगत तराए घर घर, घर विच घरेलू बण के फेरा पाईआ।

११५३ १६ ११५३ १६

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी राम लाल दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

जन भगत तेरी सोहे कुली, कुलवन्ता आप सुहाइंदा। जिथ्थे मार्ग लग्गी विछड़ी आत्मा रूह भुल्ली, दर साचा इक जणाइंदा । पंज तत काया अन्दर वड़ के सिम्मल वांग ना हुली, पत डाली फुल आप महकाइंदा। जगत अन्धेरी कूड़ी झुल्ली, चार कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। धन्न वड्याई तिन्हां जिस दवारयों प्रभ भोग लगाए रोटी सुक्की गुल्ली, रसना जिह्वा सति सालाहइंदा। सो फुल्ल फलवाड़ी लोकमात फुल्ली, बंस सरबंस आप सुहाइंदा। धुर दे तोल अगम्मी कंडे तुली, जगत तराजू हथ्थ ना कोए वखाइंदा । अग्गे वासते किरपा कर के जन भगतां छुट्टी दिती खुल्ली, राए धर्म अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां वखाए धुर दा घर, ओन्हां दी छुडौणी फेर पए ना चुली, अमृत अन्तर आपणा जाम प्याइंदा। कुली कहे मैं की दस्सां, दस्सण योग कहाणी समझ किसे ना आईआ। खुशीआं विच अन्दर बाहर हस्सां, धुर संजोग मिल्या बेपरवाहीआ । ओन्हां दे कदमां ढट्ठां, जिन्हां नूं अरबां विच्चों मिली वड्याईआ। नैण नेत्र वेखां अक्खां, लोचण आपणा आप खुल्हाईआ। वारी घोली निरमाणता विच टेकां मथ्था, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिन्हां नूं परम पुरख परमात्म पिता मिल्या सका, धुर दा नाता सच बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहे कुली तेरा वड्डा भाग, सोहणी बणत बणाईआ। जिस विच जगया उह चिराग़, जिस दा नूर इक्को इक रुशनाईआ। तेरे अन्दर वड़ के दुरमति मैल धो के जावे दाग़, सति सरूप रूप वटाईआ। ग़रीब निमाणयां पूरा करे काज, करता पुरख हो सहाईआ । जिन्हां नूं बेड़े चाढ़ के जाए जहाज़, मंज़ल अगला पन्ध मुकाईआ। एहो अज नहीं पिछला रवाज़, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। पर एहो जेही पिच्छे नहीं दिती दात, बिन भगतीउँ भगवान भगत लए बणाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों निरगुण आ के तोरया एह रवाज, रवाइत रयाइत गुरमुखां झोली पाईआ। अग्गे होण ना देवे किसे दे मुहताज, मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। सीस जगदीश रख के ताज, ताकत आपणी नाल रखाईआ। जो हरिजन साहिब दा होया दास, तिस दासी दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दे विछड़यां पूरी आस कराईआ।

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी बेलू राम दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू *

भगत कहे प्रभ दित्ता प्यार, अन्तर धार दिती प्रगटाईआ। साचा मन्दिर सुझया घर बार, गृह आपणा वेख वखाईआ । दीआ बाती होया उज्यार, अन्ध अन्धेर रिहा ना राईआ। साची सखीआं सुणया मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक अल्हाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा रिहा चुकाईआ। भगत कहे प्रभ दस्सया प्रेम, परम पुरख दया कमाईआ। मेल मिलाया जिस तपस्सया कीती हेम, कुण्ट इक्को खोज खुजाईआ। उस दे नाल मिल के पक्का होया नेम, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। दर्शन कर बिगसाए नैण, नेत्र खुशी मनाईआ। जिह्वा सिफ्त आई कहिण, साची सेवक बण के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती दिती समझाईआ। जन भगत कहे प्रभ दित्ता प्रेम रस, वड रसीए दया कमाईआ। मेरी पूरी कीती आस, आशा आपणे नाल रखाईआ। निज आत्म कर के वास, वसल सच्चा दित्ता वखाईआ। दूई द्वैती कर के नास, नालश कूड़ी दिती मिटाईआ। सच नूर कर प्रकाश, दीपक दीआ डगमगाईआ। अट्ठे पहर बख्शी प्रभात, संध्या नज़र कोए ना आईआ। साचे सन्तां बख्शी जमात, गुरमुखां संग रखाईआ। लेखा लिखा के नाल कलम दवात, बिन भगतीउँ भगत दित्ते बणाईआ। एहो जेही अग्गे किसे ना दस्सी जाच, याचक आपणे गले लगाईआ। इक्को ढोला पढ़ा के धुर दी गाथ, दर घर साचे मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन दे के साख्यात, सज्जण सुहेले लए तराईआ। जन भगत कहे प्रभ बख्शया नाता, आत्म परमात्म संग रखाईआ। निरगुण हो के बणया राखा, सरगुण देवे माण वड्याईआ। जिन्नां इक्को मन्नया शब्दी रूप आखा, आखर चोटी दए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा दाता, घाटा आपणे घर ना कोए वखाईआ।

✱ १८ जेठ २०२१ बिक्रमी नंदू राम दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू ✱

प्यार मुहब्बत नहीं एह कूक, आवाज़ां विच्चों आवाज़ इक इलाहीआ। जिस दा चार यारी दए सबूत, पीरां विच्चों पीर देण गवाहीआ। जिस नूं चलदयां फिरदयां मिल्या इक महिबूब, सच कलमा गया पढ़ाईआ। चरवाहे रखणा याद उच्च अरूज, सोहणी बणत बणाईआ। तेरी हद्द इक हदूद, बंदीख़ाना दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। चार यारी दे पिछले संगी, मुहम्मद वेख वखाईआ। जिस वेले आएयों पैरीं नंगी, तन ख़ाकी रूप वटाईआ। प्रेम प्यार अन्दर मंग इक्को मंगी, वसल मिले बेपरवाहीआ। तैनूं दरस दखाउणा उपर शाह रग जगत घंडी, घर आपणा इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी वड्याईआ। चार यारी दा पिछला साक, सज्जण इक्को अख्वाईआ। जिस दा पूरब नाम मुशताक, मुशकड़ीआं विच हस्स हस्स खुशी मनाईआ। इक दिन डुब्बण लग्गा सी आफ्ताब, रमज़ान महीना दए गवाहीआ। रोज़ा चौधवां पकड़या फुल गुलाब, खुशीआं महक महकाईआ।

उधरों आया हक़ जनाब, मुहम्मद फेरा पाईआ। नील कन्धे कीता आण आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। बांहों पकड़ ओस किहा शताब, हौली जेही उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। मुशताक किहा मैं मस्कीन, मस्कीनां विच्चों नज़री आईआ। मैं बरदा दर अधीन, बरखुरदार रूप वटाईआ। मैं पढ़ी अल्फ़ ये ना कोए सीन, नून नून गुने विच ना कोए बदलाईआ। इक्को कलमा पढ़या या अमीन, मेरा तूही तू खुदा खुदाईआ। मैं तेरे दर अधीन, आसरा तेरा इक तकाईआ। मैनूं साची कर तलकीन, तसबी माला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मैं कहां या आमीन, धुर दा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। सुण मुशताक एह नील कन्धा, जल धारा वहिण वहाईआ। नीली धारों अमृत मिले ठंडा, ठंडा रूप वटाईआ। तेरा अग्गे लेखा दस्सां चंगा, चंगी तरह समझाईआ। कलयुग अन्तिम होवें भुक्खा नंगा, भुख्यां विच्चों भुक्ख प्रभ नूं तेरी सच्ची भाईआ। जिस वेले मेरा परवरदिगार लोकमात लै के आए मृदंगा, तेरे नाल मिल के दए वजाईआ। तूं सभनां नालों चंगा, चंगी तरह देवां समझाईआ। बाहरों वेखण नूं जगत जहान लग्गें मंदा, दुनी दार तैथों मुख भवाईआ। जिस दवारे जा के मैं मंगां, सो देवणहारा मांगत हो के तेरे दर ते आईआ। जगत महताबी आफ्ताबी चढ़े चन्दा, महिराबी नूर रुशनाईआ। तेरा नाम होणा इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा परम पुरख नाल मिल के बणे छन्दा, सोहँ रूप वटाईआ। लेखे लाए बंदगीउँ बिनां बंदा, बन्धन अगला पिछला दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगला लेखा करे चंगा, पिछला दुःख पूरा पूरा पूरा रिहा चुकाईआ।

नंदू तेरी ग़रीबी विच सुख, प्रेम बैठा रूप वटाईआ। तेरी कुल्ली विच भुक्ख, प्रभ दा ध्यान लगाईआ। तेरी जुली नेत्र रही चुक्क, लोचण रही उठाईआ। तेरा प्रेम प्यार गलवकड़ी पाए घुट्ट, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। जींवदयां तेरी चुरासी गई छुट्ट, जन्म मरन दा झगड़ा दित्ता मुकाईआ। अग्गे एसे तरह गोदी लै जाए चुक्क, घर आ के पहलों दरस दिखाईआ। जे कोई आंढी गवांढी लए पुच्छ, साख्यात नज़री आउँदा देणा समझाईआ। मैं पिता तूं मेरा पुत्त, तेरे पुत्त पोतरे रूप वटाईआ। सोहणा दर्शन करना घर बैठयां चुप्प, राती सुत्यां होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखियां विच्चों तेरा कट के जावे दुःख, दलिद्र आपणी झोली पाईआ।

११५५
१६

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी बेला सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

जन भगत गाया साचा मंगल, हरि हिरदे नाम ध्याईआ। आवण जावण मुकया वक्त जगत जंगल, जूह उजाड़ ना कोए वखाईआ। मस्तक टिक्का लग्गा धुर दा चन्दन, जोत ललाट करे रुशनाईआ। अन्तर मिल्या परमानंदन, निज आत्म खुशी मनाईआ। सच दृढ़ौणी इक्को बन्दन, बंदगी प्रभू समझाईआ। ठाकर हो के रखे अंगण, आपणी गोद उठाईआ। दरवेश हो के आवे मंगण, दर ठांडे अलख जगाईआ। रोग सोग ज़रम कर्म कीता खण्डण, खण्डा खड़ग हथ्थ उठाईआ। प्रेम प्रीती आया वंडण, चार वरनां इक्को घर बहाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी आया गंढुण, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। साचा मार्ग इक्को आया दस्सण, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। हरि जू हो के हिरदे आया वसण, घर घर डेरा लाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख नाम मधाणे वरोले मक्खण, चारों कुण्ट वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन भगतां मेला करन आया, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। त्रैगुण कूड़ी मेटे माया, ममता मोह चुकाईआ। समरथ हो सिर हथ्थ टिकाया, धीरज धीर इक बंधाईआ। आत्म परमात्म साची गाथ पढ़ाया। सोहँ राग अनराग दए समझाईआ। अन्दर वड़ मन्दिर चढ़ साची सदा अलख सुणाया, अलख अगोचर खेल रचाईआ। हो प्रतख दरस वखाया, साख्यात नज़री आईआ। नेत्र लोचण नैण इक्को अक्ख खुल्हाया, पर्दा उहला दित्ता चुकाईआ। अनझक हो के फेरा पाया, लोक लाज परे हटाईआ। पारब्रह्म हो के ब्रह्म लए उठाया, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। निहकर्मी हो के कर्म कमाया, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दए वड्याईआ । जन भगत गाया साचा गुण, धुन आत्मक वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी पुकार लई सुण, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ । पन्ध मुका के आया फुन, वेस अवल्लड़ा रूप धराईआ। सन्त सुहेले लए चुण, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। माण दवाया वड रिख मुन, मुनीशरां विच्चों मुनीसर दित्ते बणाईआ। लेखा चुक्कया समाधी सुन, सुन्न समाध लोड़ रही ना राईआ । लहिणा चुक्कया नाद धुन, धुनी राग ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत लए तराईआ । जन भगतां गाया रसना जिह्वा, बत्ती दन्द नाद सुणाईआ। परम पुरख प्रभ अलख अभेवा, अगम्म अथाह वेख वखाईआ। हरिजन वेखे करदे साची सेवा, सेवकां विच्चों सेवक रूप वटाईआ। देवे वड्याई वड देवी देवा, देव आत्मा आपणे लेखे पाईआ । अमृत रस अगम्मी मेवा, बिन रसना दए चखाईआ। साचा धाम अटल वखाए निहकेवा, निहचल इक्को घर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां गाया ढोला सोहँ सो, सो साहिब दए वड्याईआ।

जन्म कर्म दा टुट्टा मोह, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। आसा तृष्ना अग्गे करे ना कोई धरोह, हउमें हंगता संग ना कोए रखाईआ। घर प्रकाश करे लो, नेत्र निज होवे रुशनाईआ। आत्म परमात्म गई छोह, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। श्री भगवान भगतां जोगा गया हो, होका दे दे आप उठाईआ। नाम निधाना लै के आया ढोआ ढो, घर घर वस्त रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां गाया रसना एक, एकँकार दए वड्याईआ। सति पुरख निरँजण हो के बख्शे टेक, चरण कँवल दए सरनाईआ। जगत बुद्धी ओन्हां करे विवेक, जिन्हां दस्सी आप पढ़ाईआ। त्रैगुण माया अग्नी ना लाए सेक, जगत तत ना कोए तपाईआ। धन्न गुरमुख गुरसिख जिन्हां आपणा आप कीता भेंट, काया माटी सतिगुर झोली पाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा शब्द दोशाले लए लपेट, एथे ओथे होए सहाईआ। खुशीआं नाल बालकां नाल खेलणहारा खेड, ख़ालक हो के ख़लक विच्चों मुरीद मुर्शद लए जगाईआ। जोती जलवा दे के तेज, शब्दी नाद करे शनवाईआ। जिस कारण करते लए भेज, सो करनी दए दृढ़ाईआ। आओ रल के पारब्रह्म दी माणो सेज, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तुहाड्डा लहिणा देणा लैण वेख, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। साहिब सतिगुर करे अगम्मड़ा हेत, हितकारी आपणा मेल मिलाईआ। बेशक लख चुरासी अग्नी लग्गी जेठ, गुरमुख ठंडा ठार रूप वटाईआ। प्रभ सरनाई जाणा लेट, खेवट खेट आपे लए तराईआ। नाता जुड़ गया बाप बेट, पिता पूत वेख खुशी मनाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े कीते नेक, नेकी आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सदा होए सहाईआ। गुरमुख गा गा होणा खुश, खुशीआं राग अल्हाईआ। अगला पिछला पैंडा रिहा मुक, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। दर्दी हो के दयावान लए चुक्क, बांहों पकड़ गले लगाईआ । धरत मात तुहाड्डी मंगदी रही सुख, वारी सदके घोली घोल घुमाईआ। नैणां नाल तक्के तुहाड्डा मुख, जो सोहँ ढोला रहे गाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे चाईं चाईंआ। गुरमुख कहिण गाया गोबिन्द, इक्को नाम ध्याईआ । परम पुरख कहे मैं मेटां चिन्द, चिन्ता सोग गंवाईआ। गुरसिख कहे मैं लेखे लाई जिंद, हउँ वारी आपा भेंट चढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सदा बख्शिंद, बख्शिश गुरमुखां झोली पाईआ। गुरसिख कहे मैं तेरी बिंद, धुर दा इक्को पिता माईआ। ठाकर कहे मैं गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। हरिजन कहे पंज तत जीउ तेरा पिण्ड, काया तेरे रंग रंगाईआ। दीन दयाल कहे मैं अमृत धार वहावां सिन्ध, सांतक सति सति रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। गुरमुख कहे मैं गाया नाद, हरि हरि नाम ध्याईआ। पिछला जन्म नहीं याद, पूरब समझ किसे ना आईआ। प्रेम प्रीती अन्दर हो विस्माद,

बिस्मिल रूप वटाईआ। कवण बिध प्रभ सुण फ़रयाद, मेहर नज़र उठाईआ। अन्दर वड़ के मारे आवाज़, सुत्ता ल्या जगाईआ। भरम भुलेखा खोल्ह के राज़, रहमत आपणी इक कमाईआ। प्रेम प्यार अन्दर हो के दास, दासी गुरमुख लए बणाईआ। साचा करे भोग बिलास, आत्म सेजा सोभा पाईआ। लहिणा चुका पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां उपर डेरा लाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, दीवा बाती इक्को डगमगाईआ। आपणी गोदी चुक्क के रखे साथ, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जिध्धर वेखां चारों कुण्ट दहि दिशा निरगुण दिसे पास, पतिपरमेश्वर आपणा संग निभाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले पूरी कीती आस, सास सास आपणी झोली पाईआ। बेशक भरमे भुल्ल के पहलों बणे रहे बदमाश, प्रभ नाल करदे रहे लड़ाईआ। एसे कारण जन्म जन्म हुन्दे रहे निरास, निरास्ता आपणा संग निभाईआ। कलयुग अन्तिम पूरी होई ख्वाहिश, ख्वाहिश विच्चों ख़ालश गुरमुख लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुरसिख कहे मैं गाया भगवन्त, दूजी टेक ना कोए रखाईआ। भगवन्त कहे मैं बण के कन्त, नारी नर नरायण हो प्रनाईआ। माण धराया धुर दा सन्त, सन्त साजण आप बणाईआ। जिस दी महिमा पिच्छों रहे चार जुग रसना गाए जीव जंत, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। आपणा खेल कर बेअन्त, बेपरवाह धार वखाईआ। साचा दे के मणीआं मंत, मन्त्र अन्तर करी इक पढ़ाईआ। गढ़ तोड़
११५८ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दित्ता समझाईआ। जो मिल गया हरि की संगत, तिन्हां विष्न ब्रह्मा शिव मिल मिल सेव कमाईआ। जोती ११५८
१६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग दित्ता लगाईआ। संगत मिल्या प्रभ दा संग, सगली सृष्ट तजाईआ। १६
एह ना मिलणा फेर रंग, रंगण वाला नौ सौ चुरानवी चौकड़ी युग पिच्छों फेरा पाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर गए हंढ, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। एसे दी याद अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिख के गए छन्द, अञ्जील कुरान सोहला ढोला गाईआ। एसे दी धार विच्चों चढ़दे रहे अगम्मी चन्द, जोती नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरिजन साचे समझणी बात, गुर सतिगुर आप दृढ़ाइंदा। अन्दर वेखो मार झात, झाकी आपणी आप जणाइंदा। सच पुछो जन भगतां दिती उह दात, जिस दात विच्चों दातार नज़री आइंदा। सालस बण के लेखा लिखावे नाल कलम दवात, जिस दा लेख जगत ना कोए मिटाइंदा। तत सरूप नहीं निरगुण जोत साख्यात, पंज भूतक भेव चुकाइंदा। नूरी चश्म तकणा दलील नहीं आफ्ताब, महिबूब महिराब अन्दरों नज़री आइंदा। अग्गे लेखा ना रिहा कोए हिसाब, पिछली कताब पाड़ पुस्तक चरणां हेठ दबाइंदा। तुहाथों मंगे ना कोए जवाब, राह विच ना कोए अटकाइंदा। एह सुफ़ना नहीं ख्वाब, ख़ालश आपणे नाल मिलाइंदा। एह मालक नहीं हिन्द पंजाब, दो जहानां वेख

वखाइंदा। जिस नूं पीर पैगम्बर कैहन्दे हक़ जनाब, जनाबेआली नाउँ धराइंदा। जिस नूं गुर अवतार मन्नदे गए सच्चा साहिब, शाह सुल्तान रूप वटाइंदा। जेहड़ा आदि जुगादि जुग चौकड़ी रिहा गायब, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। पीरां पैगम्बरां शाह हकीरां फ़कीरां कर दा रिहा हदाइत, कलमा शरअ नाल मिलाइंदा। तुहाढे उते बड़ी कीती रयाइत, रहीम हो के रहमत बरखा लाइंदा। इस तों वड्डी होर नहीं कोई किफ़ायत, बिन पढ़यां पार कराइंदा। एह वी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिच्छे कीती हमायत, हम दस्त हो के आपणा दस्त मिलाइंदा। दस्त बदस्त करे सच अनाइत, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जन भगतो तुहाढी ओथे करे रहाइश, जिस घर विच डेरा लाइंदा। जे कोई करन आए अज़माइश, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। इस दी किसे ना कीती पैमाइश, आर पार किनारा ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी पूरी कर के ख्वाहिश, ख्वाहिश भगतां आपणे विच समाइंदा। भगत कहे प्रभू करीं ना ठग्गी, ठग्ग चोर यार रूप वटाईआ। चारों कुण्ट वेख अग्ग लग्गी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सृष्ट सबाई फिरे भज्जी, राज राजान शाह सुल्तान फिरन वाहो दाहीआ। नेत्र नीर वहौदी वेखी चौधवीं सदी, बीसवीं मिल के कीरने रही पाईआ। किसे दी साबत दिसे ना गद्दी, गद्दीदार धीरज धीर ना कोए धराईआ। श्री भगवान तेरे पिच्छे सृष्टी सारी छड्डी, ताअने मेणे दए लोकाईआ। प्रेम प्यार तेरे दी बद्धी,

११५९ बन्दना इक्को सीस झुकाईआ। विश्व रूप तेरा असीं तेरी विश्व यद्दी, नाता तेरे नाल बंधाईआ। साडी लेखे लग्गे साढे तिन्न ११५९

१६ हथ्थ अन्दर तिन्न सौ सठ्ठ हड्डी, नाड़ बहत्तर तेरा नूर रुशनाईआ। बिरहों वैरागण सच प्रेमण हो के सुरती फिरे भज्जी, दिवस १६

रैण वाहो दाहीआ। धन्न भाग तेरे चरणां दी सरन लभ्भी, ओट इक्को घर रखाईआ। तूं दयाल हो के पड़दा कज्जीं, मेहरवान हो के सीस हथ्थ टिकाईआ। बेशक गुरमुख सवाणी कमली कोझी कुचज्जी, सुघड़ सवाणी आप लईं बणाईआ। दोए जोड़ दर दुआर करां हथ्थ बद्धी, बंदगी तेरी मोहे भाईआ। जिउँ भावे तिउँ आपणे संग रखीं, रक्षया करीं थाउँ थाईंआ। पर विछोड़ा ना देवीं मैं दर्शन करां अक्खीं, अक्खीआं विच्चों अक्ख तेरा रूप नज़री आईआ। मैं बणना नहीं कृष्न वाली सखी, जिस नूं विछोड़ा दे के कीती जुदाईआ। मैं तेरे प्रेम प्यार नाम दी पढ़ी पट्टी, पटणे वाला नाल हो के देवे गवाहीआ। मैं एहो खट्टी खट्टी, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। तेरे नाम अन्दर रत्ती, रत्त आपणी दिती मुकाईआ। एहो मंग मंगदा रिहा नानक बोल के गया जुग छत्ती, छत्तीआं रागां विच्चों तेरी समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाउँ गाउँदे रहे दन्द बत्ती, बत्तीआं विच्चों कमलापती आपणा भेव ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्को देणा सच्चा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी मिले सच सरनाईआ।

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी सेवा सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

भगत कहे प्रभ देईं ना लारा, तेरी पिछली याद चेते आईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहों इशारा, शब्दी सैनत नाल समझाईआ। गुर अवतार बणाउँदा रिहों लिखारा, रहिबर पैगम्बर कातब रूप वटाईआ। नाद धुन वजाउँदा रिहों नगारा, अनहद नाद सुणाईआ। जोती नूर बख्शदा रिहों चमत्कारा, घर घर कर रुशनाईआ। नाउँ दस्सदा रिहों परवरदिगारा, बेऐब नूर खुदाईआ। साचे मन्दिर चढ़ के लगाउँदा रिहों अखाड़ा, सोहणा वेस वटाईआ। वक्त सुहेला दस्सदा रिहों विच संसारा, कलयुग अन्तिम इक निशान जणाईआ। निरगुण हो के लवां मात अवतारा, निरवैर हो के खेल वखाईआ। जन भगतां कराए सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक बणाईआ। जल थल महीअल वेखां डूंघी गारा, समुंद सागर खोज खुजाईआ। पावां सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले वेखां चाईं चाईंआ। सच नाम दा दस्स इक जैकारा, जै जैकार दयां वखाईआ। भगत वछल हो गिरवर गिरधारा, चौगिर्द आपणी कार लगाईआ। खड़ग खण्डा हो कटारा, तरकश तीर कमान रूप वटाईआ। मेहरवान हो के मेल मिलावां धुर दरबारा, दरगह साची खुशी वखाईआ। सो वक्त सुहेला सुहञ्जणा नज़री आवे अपर अपारा, अपरम्पर देणी माण वड्याईआ। जगत जग जुग विच्चों चरण कँवल लभ्भया इक दवारा, दाअवा बन्न्ह के रहे सुणाईआ। साडा कर के जाईं पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। साडी मंज़ूर होवे निमस्कारा, डण्डौत बन्दना तेरी झोली पाईआ। सच मंज़ल देणा अगम्म नज़ारा, नज़र नैण कोए वेख ना सके राईआ। खुशीआं रंग वेखीए तेरे सच सच दरबारा, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। जोती नूर हो के उज्यारा, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। फेर पूरा होवे तूं मेरा मैं तेरा जैकारा, सोहँ रूप समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड तेरा घर बारा, ब्रह्मण्ड तेरी रचना नज़री आईआ।

* १८ जेठ २०२१ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

जन भगत होए बंद ख़लासी, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। माणस जन्म आवे रासी, जिस रस्ता आप समझाइंदा। चिन्ता ग़म हरख़ सोग मिटाए उदासी, झूठे वहिण ना कोए वहाइंदा। सच दवारे कर के दासी, सेवा इक्को इक वखाइंदा। राए धर्म दी कटे फाँसी, रस्से जम ना कोए लटकाइंदा। जिन्हां मिल्या घनकपुर वासी, घनईया नईया सच दी आप चढ़ाइंदा। ओन्हां सदा रहे प्रभाती, संध्या अन्धेर ना कोए बणाइंदा। मंज़ल दूर दुराडी चढ़न घाटी, मार्ग इक्को इक वखाइंदा। उह सति सन्तोख दे बणे पाठी, जिन्हां सोहँ आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। कट विछोड़ा कमलापाती, धुर दा जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। पिछला

लहिणा रहे ना बाकी, अग्गे खाता पूर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सच दुआर वसाइंदा। सच दुआर दस्स प्रभ, जन भगत रहे मंग मंगाईआ। किस बिध लोकमात लईए लभ्भ, कुण्ट चार खोज खुजाईआ। तेरी नज़र ना आवे हद्द, किनारा समझ कोए ना पाईआ। श्री भगवान मेहरवान हो के दित्ता दस्स, दीनां नाथां नाथ भेव खुल्हाईआ। जो सच सरनाई जाए ढठ्ठ, आप आपणा भेंट कराईआ। सो सचखण्ड दवारे जाए वस, मझधार सके ना कोए रुढ़ाईआ। ओथे मिले इक्को रस, जल पाणी लोड़ रहे ना राईआ। किरपा कर कन्ढी विच्चों कढ्ढ ओस दरगह आवे छड्ड, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ। रल मिल भगत भगवान सांझा गावण छन्द, सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत मुकावे चलण फिरन वाला पन्ध, दर साचे दए वड्याईआ।

११६१ १६ ११६१ १६

*** १८ जेठ २०२१ बिक्रमी खेमो देवी दे गृह धंगाली जम्मू ***

प्रभ तेरी किरपा निकले भँवर, हरिजन साची खुशी मनाइंदा। प्रेम प्याला पीता सबर, जगत तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। नाता छड्डया मढ़ी गोर कबर, इष्ट तेरा नज़री आइंदा। सहारा तक्कया शेर बब्बर, भय भ्यानक विच्चों पार कराइंदा। साचे भगत जिस दा टब्बर, दूजा संग ना कोए वखाइंदा। गुरमुखां पिच्छे फिरे मगर, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। आसा मनसा पूरी पिच्छे सधर, जगत कूड़ा रोग मिटाइंदा। मेहरवान हो के किस्मत देवे बदल, बदला अगला पिछला आप चुकाइंदा। तख्त निवासी हो के करे अदल, अदालत इक्को घर जणाइंदा। जिथ्थे शहादत परवान होवे बिन होइआं कत्ल, कत्लगाह रंग ना कोए रंगाइंदा। उह तारनहारा आया आपणे पतण, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। सन्त सुहेले गुर चेले आया रखण, जीवां जंतां विच्चों खोज खुजाइंदा। कोटन कोटि प्रभ मिलण दा करदे यतन, यथा योग सर्ब ध्यान लगाइंदा। बिन हरि किरपा कोई ना जाए मुड़ के आपणे वतन, जिस वतन विच्चों देस परदेस परदेसी हो के वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेले आया तक्कण, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाइंदा।

*** १८ जेठ २०२१ बिक्रमी वकील सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू ***

वाजां मारे जगत भगती, जन भगतां रही सुणाईआ। बिरहों विछोड़े अन्दर मरदी, मिल्या मेल ना बेपरवाहीआ। संगी दिसे ना कोई दर्दी, मेरा दुखड़ा दर्द वंडाईआ। मैनूं सार ना आए साचे घर दी, दर दर दयां दुहाईआ। ख़बर मिली ना

साचे नर दी, नर नरायण ना कोए मिलाईआ। मैं चारों कुण्ट फिरां डरदी, सीस उपर ना कोए उठाईआ। किस दवारे बणां बरदी, सेवक हो के सेव कमाईआ। मेरी मंज़ूर ना होवे अर्ज़ी, आरज़ू सुणन वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल दिती वरताईआ। जगत भगती मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच्चा मिले ना कोए मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। साची सिख्या देवे सलाह, करे इक पढ़ाईआ। मैं लभ्भ लभ्भ थक्की थाउँ थाँ, चारे कुण्ट खोज खुजाईआ। मेरी किसे ना पकड़ी बांह, उंगली नाल ना कोए बंधाईआ। सिर रखे ना ठंडी छाँ, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। बौहड़ी दरोही की होया मैथों गुनाह, भुल्ल सके ना कोए समझाईआ। भगत पल्लू गए छुडा, आपणी कन्नी मात कतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करनी रिहा कमाईआ। जगत भगती नैणा रोंदी, नेत्र नीर वहाईआ। सुखां नींद रात ना सौंदी, गटीआं गिण गिण वक्त लँघाईआ। मींढी सुहाग आपणी खोंहदी, खुलड़े केस दए दुहाईआ। चारों कुण्ट उच्ची कूक पाए डौंडी, होका दे के रही सुणाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त रही भाउँदी, भाउ आपणे नाल रखाईआ। गीत गोबिन्द रही गाउँदी, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
११६२ आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा चुकाईआ। जगत भगती कहे मैं होई छुटड़, संगी नजर कोए ना आईआ। पुरख ११६२
अकाल निरगुण धारों आया उतर, निराकार फेरा पाईआ। भगत सुहेले बणाए आपणे पुत्तर, पिता हो के गोद उठाईआ।
१६ उह सिधे ओसे दा करदे शुकर, मेरी सार कोए ना पाईआ। मेरे वलों होए नमुकर, अक्ख नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ । १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दित्ता दृढ़ाईआ। जगत भगती वहाए नीर, नैणां छहबर लाईआ। सच दिसे ना उह तस्वीर, जो बणाई बेपरवाहीआ। गल अल्फ़ी फिरां वांग फ़कीर, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी चोली लीरो लीर, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मेरी अन्तर होई दिलगीर, बसन्तर सके ना कोए बुझाईआ। कलयुग अन्तिम आई भीड़, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं नेत्र वेख के आई जन भगत इक दूजे दे भैण भाई सके बणे वीर, नाता धुर दा रहे जुड़ाईआ। लेखा मुका शरअ ज़ंजीर, मज़्हब ज़ात ना कोए वड्याईआ। ओनॄां दी बिनां मेरे बदल गई तकदीर, तदबीर प्रभू दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लए मिलाईआ। भगती कहे मेरी दरोही इक, खुदाए तेरे अग्गे अरज़ोईआ। सज्जण दिसे ना कोई मित, संगी रूप ना कोए वखाईआ। दोहथड़ां मार के रही पिट, खुल्ही मींढी रही कुरलाईआ। साचा करे ना कोई हित, प्रीती प्रेम ना कोए वखाईआ। सच स्वामी नज़र ना आए दिस, साख्यात रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। भगती कहे सुण मेरे सज्जण,

जन भगत तेरी ओट तकाईआ। तूं मेरा पर्दा आउणा कज्जण, मैं पिछली रीती दिती तजाईआ। तेरा अन्तर पारब्रह्म नाल होया मग्न, मेरी लग्न रही ना राईआ। मैं भगतां नाल प्रभ दा पैंदा वेख्या सगन, सोहणे घर होई कुड़माईआ। ओथे अगम्म अथाह मजीठी इक्को रंगण, कसुंभड़ा रूप ना कोए वटाईआ। जोत ललाटी चढ़दा वेख्या चन्दन, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मैं करन आई बन्दन, बंदगी कर कर सीस निवाईआ। मेरा लेखा होया खण्डन, प्रभ खण्डा खड़ग दित्ता चमकाईआ। मैं सुहागण होई रंडन, चारों कुण्ट रंडेपा नज़री आईआ। साची दात आई मंगण, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। साचे सन्तो मैनूं रखणा अंगन, अंगीकार कर के लहिणा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा वखाईआ। भगती कहे मैं कोझी कमली, पूरब रही ना कोए चतुराईआ। धरनी धरत धवल मात बण ना मैनूं जम्मदी, गोदी गोद ना कोए उठाईआ। मैं आस ना रखदी पंज तत काया तन दी, माटी ख़ाक ना ध्यान लगाईआ। आदि अन्त ओसे दा हुक्म मन्नदी, जो बणया बेपरवाहीआ। आपणा हँकार विकार भाण्डा भंनदी, निवण सो अक्खर रूप वटाईआ। मैं सार ना जाणी साचे भगत अगम्मी चन्न दी, जिस दी दो जहान रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल दिती बदलाईआ। जन भगती कहे मेरे नाल होया धोखा, पिछली कहाणी दयां सुणाईआ। बिनां मेरे प्रभ दे मिलण दा किसे ना मिल्या मौका, सतिजुग त्रेता द्वापर सब ने मेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण हो के मार्ग दस्सया सौखा, सोहणी बणत बणाईआ। चरण प्रीती दे के ओटा, चोट तन नगारे इक लगाईआ। कर प्रकाश अगम्मी जोता, जोती जोत कीती रुशनाईआ। सिध्धा आपणे नाम दा दस श्लोका, सिधी कीती इक पढ़ाईआ। लहिणा चुक्कया लोक परलोका, दो जहानां पन्ध बैठे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिती माण वड्याईआ। भगती कहे मेरा सुणो नाअरा, हक़ हक़ विचों लगाईआ। पिछले जुग दा अजे सहारा, थोड़ी ओट तुहाड्डे उते तकाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखदी रही पति परमेश्वर रिहा कुँवारा, लख चुरासी प्रना आपणा शुकर ना कोए मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां देंदा रिहा लारा, वाक भविक्ख्त इक दृढ़ाईआ। साधा सन्तां जीवां जंतां करदा रिहा इशारा, सैनत नाल समझाईआ। कलयुग अन्त खेल कीता अपर अपारा, मेरी समझ रही ना राईआ। प्रगट हो के निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। चल के आए भगत दवारा, सन्त सुहेले लए उठाईआ। बेशक बाहरों दिसदी कंडया वाड़ा, अन्दर लाल अमोलक हीरा रतन दित्ता टिकाईआ। जो सब तों सुचा उत्तम रूप जवाहरा, माणक मोती नाउं प्रगटाईआ। जिस घर सखीआं मंगल ला लाया अखाड़ा, प्रेम प्रीती नाच नचाईआ। उह सोहणा लग्गे दरबारा, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। मैं बण डूमणी मंगण

११६३
१६

आई वाड़ा, दूर दुराडी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा दए मुकाईआ। भगती कहे मैं होई दुहागण, आपणा माण मिटाईआ। भगत विछोड़े कीता वैरागण, बिरहों अग्न लगाईआ । रात निंद्रा ना दिने जागण, सोवत सुख ना कोए वखाईआ। अट्ठे पहर इक्को आगण, तत्ती वाउ रही जलाईआ। मैं जन भगत दवारे सुण के आई आवाज़न, ढोला गाए बेपरवाहीआ। सुण के होई विच विस्मादन, बिस्मिल आपणा आप कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी झोली ख़ाली वेख देणी भराईआ। जगत भगती कहे मैं होई गोली, साचे दर मिले ना ढोईआ। पिच्छे बणदी रही वचोली, घर घर आपणा फेरा पाईआ। सौहरे पेईए दस्सदी रही अगम्मी बोली, धुर दा राग जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी वस्त मेरे हथ्थों खोह ली, ख़ाली हथ्थ दित्ता कराईआ। मैं उठ के आपणी गठड़ी फोली, विच्चों वस्त नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिसी मैंहदी ना कोई मौली, सुहागी तन्द हथ्थ ना कोए फड़ाईआ । ना कोई पाणी केसर वाली लभ्भी कौली, तिलक ललाट मस्तक बिंदी ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दित्ता चुकाईआ। जगत भगती कहे मैं अन्तिम भुली, भरम भुलेखे विच समाईआ। मैं ना जाणा प्रभ भगतां फिरे अन्दर विच कुली, कमलापति वेस वटाईआ। जिस दी धार अमृत फुहार अगम्मों डुल्ली, सांतक सति सति रही वरताईआ। ओस प्याले विच्चों गुरमुख पीवण इक इक चुली, चलदयां फिरदयां मिले बेपरवाहीआ। जिन्हां रस लाया आपणी बुलीं, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। वस्त दिती प्रभ अनमुल्ली, करता कीमत कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। भगती कहे मेरा ख़ाली कासा, वस्तू नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान कीता अजब तमाशा, लील्हा अचरज आप रचाईआ। जन भगतां देवे आप दलासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूरब जन्म दी पूरी कर के आसा, जगत निरासा दए गंवाईआ। सज्जण सुहेला बण के करे हासा, सोहँ हँसा साचा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। भगती कहे मेरी किसे कम्म ना औणी पट्टी कंघी, सूहा वेस ना कोए वटाईआ। मेरा पाटा चीथड़ लीरो लीर अंगी, ओढण सच ना कोए सुहाईआ। मैं पैरां फिरां नंगी, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं वस्त कितों ना मिले मंगी, कलयुग ख़ाली हट्ट वखाईआ। मैं रोंदी वेखी गोदावरी जमना सुरस्ती गंगी, गल पलड़ू रही पाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड दए दुहाईआ। जगत वासना सृष्टी होई रंडी, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। कलयुग भगत दिसे पखण्डी, एसे कर के प्रभ ने मैनूं धक्का दित्ता लाईआ। एन्हां भगतां सिध्धा मार्ग दस्सया अगम्मी डण्डी, साचे पौड़े दित्ता चढ़ाईआ। इक्को दस्स के सोहँ छन्दी, तेरा मेरा मेरा तेरा लेखा दित्ता मुकाईआ । घर विच घर वखा परमानंदी,

निज घर डेरा दित्ता लगाईआ। किरपा कर के टुट्टी गंढ्ढी, सच प्रीती डोर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर रिहा वखाईआ। भगती कहे मैं पिछली वचोली, जन भगतां मेल मिलाईआ। जन भगत कहिण तूं होई गोली, काया गोलक मिले ना कोए वड्याईआ। हुण सिख तूं साथों अगली बोली, जिस नाल मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी रीती दिती समझाईआ। भगती कहे मैनूं दस्सो रीती, जन भगत दयो समझाईआ। मैं वड्डीओ होई नीकन नीकी, आपणा माण अभिमान मिटाईआ। मैं वेख के आई मन्दिर मसीती, शिवदुआले मट्ठ गुर दर नेत्र नैण ना कोए मिलाईआ। त्रैगुण माया तपे अंगीठी, कलयुग अग्नी रिहा डाहीआ। जन भगतां किहा उठ सवाणी आपणी वखा सब नूं उंगली निक्की चीची, जिस दे उत्ते कबीर चीरा गया लगाईआ । ओस वेले तूं सी इक्को वार कीती, हौका लै के दिती दुहाईआ। जुलाहे किहा तेरी अग्गे ना रही प्रीती, तूं दुःखां विच्चों दुःख दित्ता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा रिहा समझाईआ। भगती कहे मैं भुल्ली निमाणी, मैनूं समझ रही ना राईआ। भगतो दस्सो उह कहाणी, जो कबीर जुलाहे दिती सुणाईआ। जन भगत कहिण तूं सुण सवाणी, सच दईए समझाईआ। जिस वेले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कबीर दवारे वंडदा अमृत पाणी, बिन चुल्लीआं चुली रिहा भराईआ। तूं ओस वेले बण के चतुर सुघड़ सुचज्जी

११६५ राणी, गोशे बैठी रही ध्यान लगाईआ। करे खेल प्रभू महानी, मेहरवान खेल रचाईआ। कबीर जुलाहे जणाया जाण जाणी, ११६५

१६ जानणहार दया कमाईआ। ओस कंडयां दी खिती इक सूल लयांदी निशानी, जेहड़ी तेरी उंगली दिती चुभाईआ। अग्गे कलयुग १६

अन्त तूं बणें कोई ना राणी, आपणा हुक्म ना कोए वरताईआ। प्रभ जन भगतां सिध्धा आ के मिले जोत नूरानी, नूरो नूर नूर रूप वटाईआ। फड़ बाहों मार्ग दस्से आसानी, मंजल पन्ध मुकाईआ। तेरी हैरत हैबत प्रगटे विच हैरानी, हौका लै के दए दुहाईआ। उह भगत नहीं उह भगवन्त नहीं जो इक दूजे दी करन ना कुरबानी, कुरबानी विच्चों आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जिस वेले कंडयां दी वाड़ तेरी होवे निशानी, परम पुरख पतिपरमेश्वर जन भगतां विच्चों लए मिलाईआ। इस दा लेखा किसे ना लिखणा कागज़ कलम शाही कानी, विद्वान विद्या विच ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आप आपणी करे मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुश्किल कर आसानी, जन भगतां साचे सन्तां जगत संसार विच्चों आपणे नाल मिलाईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी फग्गा सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

भगती कहे मेरे ख़ाली हथ्थ, पंज दस नज़र किछ नहीं आइंदा। मैं पन्ध मुकाया नस्स नस्स, पैंडा कदमां विच आपणा सीस झुकाइंदा। अन्तिम तुटा माण हठ, सति नज़र कोए ना आइंदा। मैथों खोह ल्या प्रभ ने हक़, आप आपणी अक्ख भवाइंदा। जन भगतां हिरदे अन्दर गया वस, सिध्धा आपणा मेल मिलाइंदा। कोई ना वेखे प्रेम प्यार दी तक्क के अक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेल की वरताइंदा। भगती कहे मेरी गई बनावट, मसनूई शकल नज़र कोए ना आईआ। मेरे हड्डां लग्गी थकावट, भार सके ना कोए उठाईआ। कलयुग सन्तां मेरे नाल पाई बग़ावत, झूठी कीती लड़ाईआ। अबिनाशी करते ला के सच अदालत, धुर फ़रमाणा दित्ता सुणाईआ। जन भगतां बख़्शिश कर के आपणी सखावत, नाम झोली दित्ता पाईआ। मेरी किसे ना लई ज़मानत, चारों कुण्ट वेखां नैण उठाईआ। सन्त सुहेले प्रभ दी बणे अमानत, ईमानदारी इक्को घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। भगती कहे

११६६ मेरा छुटया लड़, डोरी तन्द ना कोए बंधाईआ। गुरमुख गुरसिख धुर दा ढोला गए पढ़, इक्को नाम ध्याईआ। जोग अभ्यास ना कोई रिहा कर, डूंघी कन्दर ना डेरा लाईआ। साची मंज़ल रहे चढ़, बिन पांधीउँ पन्ध मुकाईआ। दर्शन कर नरायण नर, निज नेत्र खुशी मनाईआ। पूरब जन्म दा पूरा होया वर, वर दित्ता बेपरवाहीआ। निहकर्मी हो के आया घर, कर्म कांड रिहा चुकाईआ। मैं दूर दुराडे वेखां खड़, आपणी अक्ख शरमाईआ। अबिनाशी करते जिन्हां वखाया धुर दा दर, दरगाह साची दित्ता खुल्हाईआ। सो हरिजन सहिज सुभाओ प्रभ सरनाई गए पड़, अगला पिछला लेख चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता धुर दा वर, घर साचा दित्ता वखाईआ। भगती कहे मेरा रोया नैण, छहबर इक लगाईआ। मैं अन्दरों आई कुछ कहिण, कहि ना सकां राईआ। जन भगतां प्रभू बणया सच्चा सैण, सज्जण रूप वटाईआ। हरिसंगत वेखी नाता भाई भैण, प्रेम प्रीती अन्दर बैठी आसण लाईआ। एथे चुक्कया पिछला लहिण देण, अग्गे लेखा बेपरवाहीआ। श्री भगवान जन भगतां आपे आया लैण, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। भगती कहे एथे काहदा रोसा, श्री भगवान रुस्सयां रिहा मनाईआ। जिस दा सचखण्ड दुआर धुर दा कोठा, छप्पर छन्न वेख दए वड्याईआ। ओथे सच प्रकाश निर्मल जोता, एथे जोती जोत करे रुशनाईआ। आप पछाणे खरा खोटा, लख चुरासी वेख वखाईआ। भेव चुका लोक परलोका, सच श्लोक रिहा सुणाईआ। जन भगतां नाल मिल के खुशीआं रंग माणे मौजां, मजलस आपणी इक लगाईआ। लेख चुकाए एका दूजा, दूआ एका इक्को रंग रंगाईआ। आपणा भेव खुल्हाया

गूझा, सति सच दित्ता समझाईआ। जिन्हां गुरमुखां हरी दुआर सूझा, सो चतुर सुघड़ सुजान रूप वटाईआ। भगती कहे ओथे मेरा कासा मूधा, पासा परत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दित्ता इक वर, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी चूहड़ सिँघ धंगाली जम्मू *

भगती कहे वड्डा गुरमुख, जिस गुर सतिगुर दए वड्याईआ। जन्म कर्म दा मिटया दुःख, आवण जावण दित्ता चुकाईआ। अन्तर उपज्या सच्चा सुख, बसन्तर अग्न बुझाईआ। उजल होवे मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। कूड़ विकारा कड्ढे कुट्ट, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। अन्तिम गोदी लए चुक्क, फड़ आपणे रंग रंगाईआ। सफल करा के मात कुक्ख, सच दवारे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां होए सहाईआ। गुरमुखां वेख दो जहान हस्सण, इक दूजे वल ध्यान लगाईआ। गुर अवतार कड्ढे हो के दस्सण, पीर पैगम्बर करन सलाहीआ। वेखो श्री भगवान ओन्हां दी पत आया रखण, जिन्हां अगला पिछला पता किछ ना राईआ। धुर दा मार्ग आया दस्सण, दर्दी हो के करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हिरदे आया वसण, जोती जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां वेख वण तृण मौले, पंखी पंछी खुशी रहे मनाईआ। श्री भगवान पूरा करे कौले, इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। प्रगट होए उपर धौले, धरनी धरत सोभा पाईआ। हरिजन आप उठाए हौले हौले, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धन्न गुरमुख जो सोहँ ढोला बोले, बिन वचोले पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आपणे गृह वसाईआ। गुरमुख वेख तरदा, चार कुण्ट नैण उठाईआ। गुरमुख वेख पढ़दा, चौदां लोक हैरानी छाईआ। गुरमुख वेख चढ़दा, टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। गुरमुख वेख साचे मन्दिर वड़दा, शिवदुआले कोटन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरमुख वेख प्रेम प्रीती करदा, आशक माअशूक दोवें बैठे मुख भवाईआ। गुरमुख वेख प्रभ साचे नाल मिलदा, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे खुशी मनाईआ। एह खेल अचरज अगम्मी दिलबर दिल दा, दलील विच्चों दलील दए बदलाईआ। पड़दा हटा के बजर कपाटी सिल दा, रातीं सुत्तयां दरस कराईआ। प्रीतम प्रभ प्यारा हो के मिलदा, प्रेम विच्चों प्रीती संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख मढ़ी गोर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

११६८
१६

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी देवा सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

दुनी दारी दा दुनिया झेड़ा, जुग जुग झगड़े विच लोकाईआ। नित नवित्त प्रभ गेड़दा रिहा गेड़ा, निरगुण सरगुण उलटी लट्ठ भवाईआ। घर घर अन्दर छेड़दा रिहा छेड़ा, मनमति करे लड़ाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरले बन्न्हदा रिहा बेड़ा, आप आपणे कंध उठाईआ। सच दुआर वसाउँदा रिहा खेड़ा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जगत लोकाई वेखे झेड़ा, झगड़ा दए दुहाईआ। जिन्हां प्रभ नूं मिल के किहा प्रभ मेरा, तिन्हां हो के दए वखाईआ। जन भगत मिलण ना लावण देरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। दुनियादार दुनिया विच बोलण बोल, जगत रसना नाल मिलाईआ। जन भगत सदा रहिण अडोल, ध्रू प्रहिलाद गया समझाईआ। साहिब स्वामी जिन्हां वसया कोल, सद घर बैठा डेरा लाईआ। उह सन्त सुहेले तुलण पूरे तोल, जगत तराज़ू नेड़ कोए ना आईआ। अबिनाशी करता मेहरवान हो के आपे अन्तर जाए मौल, साचा मन्त्र इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दुनी दोवें दए तजाईआ। दुनियादार दुनिया विच पावण शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जन भगतां प्रभ आपणे शब्दी बन्न्हे डोर, तन्दी तन्द नाल जुड़ाईआ। जगत वहिण दिसे अन्धेरा घोर, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। गुरमुखां गुर आत्म परमात्म नाता लए जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। साक सज्जण भाई भैण मित्र जाण छोड़, धीआ पुत्त नार कन्त होए जुदाईआ। ओथे साहिब साचे दी साची लोड़, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लेखा लाए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। दुनियादारी दुनिया रही डरा, कूड़ कूड़यारा भउ वखाईआ। जिन्हां मिल्या बेपरवाह, उह बैठे आपणा आप मिटाईआ। जगत समाज ना सके कोई छडा, सज्जण सज्जणां देवे ना कोए गवाहीआ। सब दे सिर ते कूके अन्त कज़ा, लख चुरासी रखी खाईआ। जन भगतां आवे उह मज़ा, जिस दा रस वेखण कोए ना पाईआ। दुनियादार धर्म राए तों सके ना कोई छुडा, शौह दरया पार ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां उपर दया रिहा कमा, तिन्हां जन्मां जन्मां जन्म दा लेख चुकाईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी रूड़ सिँघ दे नवित्त धंगाली जम्मू *

सतिगुर मिल्या धुर दा गुणीआ, गुणवन्ता नज़री आइंदा। जिस दी बाणी अगम्म सुणीआ, सरोत आपणी इक समझाइंदा। जिस दी किरपा नाल पिछली छुट्टी दुनिया, दुनिया विच्चों दीन परम पुरख आपणा इक वखाइंदा। एह मार्ग हथ्थ ना आया

ऋषीआं मुनीआं, साध सन्त सर्ब कुरलाइंदा। जिस भाग लगाए काया कुलीआ, ढट्ठा कुल्ला वेख वखाइंदा। उस दे नाम अन्दर जिन्हां दीआ पंज वार हिलीआं बुल्लीआं, बुल्हे नालों अगला राह वखाइंदा। जो सखीआं रहीआं भुल्लीआं, तिन्हां भुल्लयां मार्ग पाइंदा। उह दो जहान सच फलवाड़ी अन्दर फुलीआं, पत डाली आप महकाइंदा। धर्म तराज़ू कंडे तुलीआं, तोलणहारा इक्को नज़री आइंदा। लोकमात लख चुरासी विच ना रुलीआं, जम की फाँसी फंद कटाइंदा। सच दवारे छुटीआ दे के खुलीआं, घर मन्दिर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए रूहां उह अनमुल्लीआं, जिन्हां आपणे लेखे लाइंदा। दुनिया विच्चों मिल्या मिलाप, प्रभ दिती माण वड्याईआ। दस्स के आपणा अगला जाप, पिछली पिच्छे दिती खपाईआ। दुरमति मैल भरी कर के पाक, पतित पुनीत पवित रूप वटाईआ। सच पदार्थ दे के दात, ख़ाली झोली इक भराईआ। मैं छड्ड के झूठा जगत सज्जण साक, नाता कूड़ा ल्या तुड़ाईआ। अमृत वेले लै के इक्को वाक, वास्ता दोए जोड़ पाईआ। तूं साहिब मेरा साथ, सगला संग रखाईआ। शब्द अगम्मी आई आवाज़, धुर संदेसा दित्ता सुणाईआ। मैं बण के तेरा बाप, पिता हो के पूत गोद उठाईआ। तूं ओस पुरख दी अगम्मी शाख, जिस दी शनाख़त नज़र किसे ना आईआ। तेरा हो के तेरी पुछे वात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आत्म कहे मैं छड्डया जग, नाता तुट्टा लोकाईआ। सच प्रीती दर ठांडे गई लग्ग, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। हड्ड मास नाड़ी दित्ता तज्ज, माटी ख़ाक मेल रिहा ना राईआ। सच दवारे आई भज्ज, पैंडा पन्ध मुकाईआ। दूर दुराडी आई नस्स, दर वेखां चाईं चाईंआ। जिथ्थे पारब्रह्म दा जस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भगत सुहेले रहे वस, खुशीआं रंग रंगाईआ। मैं नेत्र खोल्ह दरस करां पुरख समरथ, अक्ख नैण चरणां भेंट चढ़ाईआ। सृष्टी नालों हो के वक्ख, वक्खरे मन्दिर बैठी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए मुकाईआ। मेरा लेखा मुके सतिगुर हट्ट, लहिणा आपणा झोली पाईआ । साक सज्जण पिच्छे आई छड्ड, झगड़ा मिटे लोकाईआ। मेरे किसे कम्म नहीं औणे हड्ड, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जिस दी वस्त ओसे दे हथ्थ, उह मालक बेपरवाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे जस, शास्त्र सिमरत बैठे राग अलाईआ। ओस दे कदमां चरणां गई ढट्ठ, अरबां खरबां विच्चों बच के घर साचे फेरा पाईआ। लख चुरासी नालों हो अलग, दर ठांडे ख़ुशी मनाईआ। मेरा प्रीतम हौली जेही एथे गया छड्ड, भार आपणे कंध उठाईआ। मैं भगतां वेख पई हस्स, सोहणी खुशी मनाईआ। उह इशारे नाल रहे दस्स, हौली हौली समझाईआ। तूं सोहँ गाया जस, एसे कारण एथे आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परम पुरख परमात्म समरथ, आत्म परमात्म हो के आपणे विच समाईआ ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी करम सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

आत्म कहे मैं होई हैरान, भगवन खेल बेपरवाही दा। सच दवारे ना मन्दिर ना कोई मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाई दा। ना ज़िमी ना असमान, मण्डल मण्डप नैण ना कोए उठाई दा। पंज तत ना कोए निशान, स्त्री मर्द रूप ना कोए वटाई दा। शास्त्र सिमरत ना कोई पुराण, रसना ज्ञान ना कोए दृढ़ाई दा। सरोवर जल ना पीण खाण, तीर्थ तट ना कोए वखाई दा। साक सज्जण ना कोई दिसे चतुर सुघड़ सुजान, बुद्धिवान भेव ना कोए खुल्हाई दा। मात पित ना बाल अञ्याण, नार कन्त ना जोड़ जुड़ाई दा। शरअ शरीअत दीन मज़्हब ना कोए ईमान, ऊँच नीच ना कोए वखाई दा। मढ़ी गोर ना कोए दफ़नाण, अग्नी तत ना कोए जलाई दा। इक्को नज़र आया जोत सरूप साहिब सच्चा श्री भगवान, जिस दा आदि जुगादि अक्खरां नाल जस गाई दा। उस दा चरण कँवल महान, जिस दा नक्शा मातलोक ना किसे समझाई दा। ना कोई रसना देवे ब्यान, कलम शाही ना लेख बणाई दा। वेख दुआर होई परेशान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग ना कोए अलाई दा। किरपा करी जिस वेले मेरे मेहरवान, मेहर मुहब्बत नाल आपणा भेव खुल्हाई दा। मैं दोए जोड़ चरण डिगी बण के बाल अञ्याण, नेत्र रो रो बिन अक्खां हाल सुणाई दा। ओसे वेले पुरख अकाल दीन दयाल आपणी जोत विच जोत मिलाया आण, जिस जोती विच्चों नज़र किसे ना आई दा। जोती जोत होया मेला, परम पुरख दिती वड्याईआ। जिस घर वसदा रिहा इकेला, ओसे घर दित्ता बहाईआ। इक्को रंग रंग के गुर चेला, चेला गुर आप हो जाईआ। सुहञ्जणा वक्त सुहाया वेला, रुत्त रुत्तड़ी नाल मिलाईआ। आपणा खेल आपे खेला, ख़ालक ख़लक समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे ल्या टिकाईआ। घर सच वसेरा गई टिक, टिकटिकी इक्को इक ध्यान लगाईआ। बिन कीमतों गई विक, विकरी होर ना किसे जणाईआ। इक्को सच प्यार प्रेम दी मार के खिच, खिच ल्या बेपरवाहीआ। जिस वेले वड़या मेरे विच, विचला भेव चुकाईआ। जिध्धर वेखां ओधर पए दिस, चारों कुण्ट नज़री आईआ। आत्मा कहे मैं परमात्मा कर के हित, हितकारी ल्या मनाईआ। मिल के मेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा रूप वटाईआ। बेशक छड्ड के आई काया बुत्त, बिन काया कपड़ परम पुरख परमात्म ल्या हंढाईआ। उस सहिज सुभाउ आपणे हथ्थां ल्या चुक्क, भुजां उपर टिकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर ल्या पुच्छ, पिछला भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दित्ता वखाईआ। आत्म कहे मैं वेख्या रंग, अनोखा दित्ता वखाईआ। परमात्म सोहणा सुहाया पलँघ, सुहञ्जणी सेज बणाईआ। नाम नग़ारा वज्जे मृदंग, ताल तलवाड़ा इक्को इक जणाईआ। जोती नूर चढ़े चन्द, रवि ससि ना कोए रुशनाईआ। मैनूं ओथे

११७० १६

आया उह अनन्द, जेहड़ा अनन्द भाई भैणां विच्चों हथ्थ ना आईआ। मेरी करनी मेरी मरनी प्रभ सरनी कदे ना होवे बंद, बंद ख़लासी बंदीख़ाना बन्धन दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी परमात्म आत्म अंग आपणे नाल मिलाईआ। आत्म कहे मैं होई निराली, निरगुण रूप वटाईआ। पिछली चुक्की रैण अन्धेरी काली, कलयुग लहिणा दित्ता मुकाईआ। जींवदयां जींवदयां जो सेवा कर के घाल घाली, सो सेवा लेखे लाईआ। पिच्छों कोटन कोटि दीपक जगदे रहिण दीवाली, आत्म शमा ना कोए रुशनाईआ। साक सज्जण सैण भाई मात पित दोस्त मित्र हथ्थ रखण ख़ाली, वस्त अमोलक हथ्थ किसे ना आईआ। पंडत पांधा मुल्लां शेख़ क्या कोई करे विच दलाली, आपणी सार समझ किसे ना पाईआ। हड्डीआं रोवण दर बणन सवाली, भिखक हो के अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म कहे मोहे होया विछोड़ा, नाता जगत तुड़ाईआ। श्री भगवान आपे बौहड़ा, पुरख अकाल फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी दे के घोड़ा, शाह सवार दित्ता सुहाईआ। जन भगतां मार्ग क्या कोई अटकावे रोड़ा, जगत रीती कम्म किसे ना आईआ। ओन्हां जन्म लैणा पए फेर दोहरा, जो भुल्ले बेपरवाहीआ। मात गर्भ विच भरया रहे फोड़ा, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। गुरमुख कहिण सानूं ओस प्रभू दी लोड़ा, जिस साडी बणत बणाईआ। राग गाया तोरा मोरा, सोहँ रूप समाईआ।
११७१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आत्म लए वर, परमात्म आपणे घर वसाईआ। ११७१

१६ १६

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी इन्द्र राम दे गृह धंगाली जम्मू *

जम की फाँसी टुटा रस्सा, निक्की खटीआ दए गवाहीआ। ज़िंदगी विच्चों ज़िंदा कीता बच्चा, बच्चयां विच्चों बच्चे दिती वड्याईआ। की किसे नूं याद पिछला पता, जो पत्रयां उते गया समझाईआ। एह वेला वक्त वेख अच्छा, अच्छी तरह दृढ़ाईआ। काया माटी भाण्डा कच्चा, भज्जणों टुट्टणों ल्या बचाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर वेख के सच्चा, सच्ची डोरी तन्द बंधाईआ। किसे प्यार ख़ातर किसे विहार ख़ातर फिरे नस्सा, विचार विच्चों विचार सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शिश आप कमाईआ। खटीआ कहे मैं की दस्सां हाल, की कुछ दयां जणाईआ। जिस दे सिर ते कूकण वाला सी काल, उस दी कालख दिती लाहीआ। दयाला विच्चों हो के दयाल, दीनां विच्चों दीनन लए उठाईआ। प्रितपालां विच्चों हो के प्रितपाल, बालक आपणी गोद सुहाईआ। गोदी विच रख अनमुलड़ा लाल, लालन दए वड्याईआ। एह जगत नहीं जीवण जंजाल, सतिगुर जुगत रिहा समझाईआ। पिछली प्रीती अग्गे निभी नाल, दोहां पन्ध मुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। खटीआ कहे मेरा टुट्टा अंग, अंग अंग दए दुहाईआ। जिस वेले साहिब सतिगुर सच दवारा गया लँघ, आपणा कदम उठाईआ। जन भगत मंगी उह मंग, घर आया बेपरवाहीआ। जिस दा वज्जे सदा मृदंग, मर्द मर्दाना हो के रिहा सुणाईआ। सो सुहाए सुहञ्जणी सेज पलँघ, आत्म अन्तर डेरा लाईआ। थोड़ा समां बहुती पावे ठंड, ठंड विच्चों टुट्टी गंढु वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हो बख्शंद, बख्शिश विच्चों कर बख्शीश बख्शीश विच्चों बख्शिश दिती वरताईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी मेला राम दे गृह धंगाली जम्मू *

जन भगत जग जाए जित, जिते सर्ब लोकाईआ। जो श्री भगवान दवारे गया विक, कीमत दूजे घर ना कोए रखाईआ। उस दी एथे ओथे कोई ना लावे पिठ, मुख सके ना कोए भवाईआ। आदि अन्त मिलण अन्तिम ओसे पित, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के रहे सुणाईआ। श्री भगवान पूरी करे सिक, आसा आसा नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख कहिण रसना जिह्वा, धुर दा राग अलाईआ। प्रभ पाया इक्को अलख अभेवा, जिस दी
१९७२ अचरज दिसी वड्याईआ। सच सति सुच्च ओस दी सेवा, दर दरबार इक्को सोभा पाईआ। जिस दा सच पदार्थ धुर दा १९७२
१६ मेवा, साध सन्त सदा सदा सद रहे खाईआ। उह वसे निहचल धाम सदा निहकेवा, अटल रूप वटाईआ। कर किरपा जिस १६
दे मस्तक सच लगावे थेवा, जोती जोत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अलख अभेवा, अभेद आपणा दए खुल्हाईआ। अभेद खोल्हे अन्तर बोले काया चोले, पड़दा दए चुकाईआ। सुणाए ढोले शब्द अनमोले वसे कोले, विछड़ कदे ना जाईआ। सुरती शब्दी मौले, अमृत भरे नाभ कौले, देवे वड्याई उपर धौले, धरनी वेख वेख खुशी मनाईआ। सृष्ट सबाई जन भगतां कहे एह कमले, कँवल नैण वाला कहे कामल पुरख नज़री आईआ। जिन्हां दे लोकमात चुकौणे बदले, पिछला लहिणा झोली पाईआ। घर वसौणे जा के अगले, जिथ्थे पिच्छा याद कोए ना आईआ। एह प्रेम प्यार प्रीती अन्दर होए पगले, आपणा आप गए भुलाईआ। एन्हां दे कारज पूरे होए सगले, संगी मिल्या बेपरवाहीआ। जिन्हां दे पाटे चीथड़ रंगले, सोहणा रंग चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाए सोहणे बंगले, दर दरवाज़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख नूर नूरानी चढ़े चन्दने, चन्दां विच्चों चन्द आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे अन्तर आत्म इक अनन्द दे, परमानंद विच अन्त मिलाईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी लक्ष्मण सिंघ दे गृह धंगाली जम्मू *

चार युग दा प्यार गुझा, उठ के आपणी लए अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट वेखे हो के उच्चा, चार दिशा ध्यान रखाईआ। कवण गृह होवे सुच्चा, सति सरूप नज़री आईआ। ओस दवारे जा के पुज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा नेत्र दए खुलाईआ। चार युग दा प्यार वेखे, नेत्र नैण उठाईआ। कवण लेखा लाए विच लेखे, लिखणहार दए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा प्या चेते, पिछली याद अक्खां अग्गे लिआईआ। अग्गे हो के कलयुग पाए भुलेखे, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। एह की खेल प्रभू प्रभ खेडे, खेलणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पर्दा दए चुकाईआ। चार युग दा प्यार तड़फे, रो रो दए दुहाईआ। मैनूं साध सन्त उठ के करदे रहे तड़के, अमृत वेला रुत्त सुहाईआ। मैनूं लभ्भदे रहे जल सरोवर पाणी ठर के, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तारीआं लाईआ। मैनूं वरदे रहे अग्नी सड़ के, जगत धूंणीआँ मात तपाईआ। मैनूं फड़दे रहे पहाड़ां चोटी चढ़ के, पर्बतां उते डेरा लाईआ। मैनूं सद्दे रहे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान उच्ची पढ़ के, रसना जिह्वा नाद सुणाईआ। मैनूं लभ्भदे हथ्थ छाती ते धर के, कन्नां विच उंगलां पाईआ। मैनूं सद्द दे धरनी उते मथ्था रख के, सजदा करन थाउँ थाईंआ। मैं सब तों लुक्या बच के, पर्दा उहला इक रखाईआ। कोटन कोटि लोकमात गए लद्द के, मेरी सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सोहणी धार चलाईआ। जगत प्यार कहे मेरा खेल अवल्ला, आदि जुगादी आप बणाइंदा। मैनूं लभ्भदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी डल्ला, खोज्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। मेरे अन्दर प्यार वैरागी लग्गा सल्ला, आर पार तीर निशान इक कराइंदा। मेरे प्यार अन्दर साध सन्त होया झल्ला, झलक विच्चों झलक ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी करनी इक दरसाइंदा। प्यार कहे मेरी करनी वक्ख, हरि करते आप बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त मार्ग दस्स, गुर अवतारां दित्ता दृढ़ाईआ। कोई लभ्भे मन्दिर मढ्ठ, कोई शिवदुआले नैण उठाईआ। कोई मक्के काअबे कर कर हज, मसीतां विच्चों खोज खुजाईआ। कोई गुरूदवारे रिहा भज्ज, अमृत वेले उठ के करे धाईआ। कोई गुफा अन्दर बैठा सज, जोग अभ्यास नाल रिहा मनाईआ। कोई नाअरा बोले हक़ हक़, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कोई जन्म जन्म विच गया थक्क, बण बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा इक बणाईआ। प्यार कहे मैं पड़दे ओहले, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। भाग लगावां काया चोले, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाइंदा। साध सन्त बणावां गोले, पीर फ़कीर दर दर आप फिराइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी साची खेल आप रचाइंदा। प्रेम कहे मेरी खेल सच्च, हरि साचे आप बणाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, गगरीआ इक्को इक सुहाईआ। धुर दा मार्ग अगम्मी दस्स, रस्ता इक्को दित्ता वखाईआ। जिस दवारे रिहा वस, उस दा कुण्डा ना कोए खुल्हाईआ। मैं बैठा कर के हठ, हौसला इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। प्यार कहे मैं रिहा लुक्या, आपणा मुख छुपाईआ। अन्तिम वेख्या आपणा पैंडा मुकया, नेत्र नैण खुल्हाईआ। अबिनाशी करता अन्दरे अन्दर तुठया, धुर फ़रमाणा दित्ता सुणाईआ। वेस वटाए अबिनाशी अचुतया, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कलयुग सुहाए साची रुत्तया, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। सिध्धा जन भगतां जा के पुच्छया, शब्द हलूणे नाल उठाईआ। पूरब जन्म दा जो पिच्छे रिहा रुट्ठया, फड़ बांहों लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। प्यार कहे मैं वेख्या प्यार, प्रीतम प्यारयां नाल रिहा कमाईआ। यारां नाल मिले हो के यार, सज्जणा नाल सज्जण नज़री आईआ। भगतां नाल भगत वछल गिरधार, भगवन दाता जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा वेला रिहा सुहाईआ। प्यार कहे मोहे होई हैरानी, प्रभ एह की खेल वरताईआ। जन भगतां मिल्या वाली दो जहानी, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। मेरे अन्तर होई परेशानी, मेरी पेशानी पसीना रही वहाईआ। मेरे नेत्र नैण करन कुरबानी, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। पिछली गाए कोए ना बाणी, प्रेम अणयाला तीर परम पुरख प्रभ इक्को आपणा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। प्रेम कहे मैं वेख्या तीर लग्गदा, हरि जू हरि भगतां आप लगाइंदा। लेखा चुक्के उपर शाह रग दा, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। गुरमुख सच प्रेम प्यार अन्दर भज्जदा, राह खहिड़ा नज़र कोए ना आइंदा। इक्को श्री भगवान चरण ढट्ठ दा, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। ओथे लहिणा रहे ना तीर्थ तट दा, गुरदर मन्दिर मस्जिद कीमत कोए ना पाइंदा। श्री भगवान जिस वेले चरण कँवल सीस उपर रखदा, रक्षयावान नज़री आइंदा। लहिणा चुक्के तीजी अक्ख दा, लोचण लोचण विच टिकाइंदा। गुरमुख होवे कक्खों लख दा, कीमत करता आप मुकाइंदा। उह वेला हक़ो हक़ दा, हकीकत विच्चों खोज खुजाइंदा। जगत प्यार दूर बैठा तक्क दा, भगत प्यार भगतां विच्चों नज़री आइंदा। हुण वेला नहीं शक़ दा, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। सतिगुर प्यार लक्ष्मण सिँघ विच वेखो टप्प दा, हौली हौली हिलाइंदा। एह प्रेम ओसे जप दा, जिस विच तेरा मेरा रूप नज़री आइंदा। सच दवारे मस्ती अन्दर मस्ताना हो के हस्सदा, सोहँ हँसा रूप वटाइंदा। जिस वेले परम पुरख परमात्म तीर निराला कसदा, अणयाला आप चलाइंदा। ओस प्यार अन्दर गुरमुख प्यारा ढट्ठ दा, माण अभिमान गवाइंदा। अन्दर बाहर इक्को नाम रट

दा, रट्टा जगत जहान चुकाइंदा। माणस जन्म एहो लाहा खट्ट दा, धुर दी खट्टी आपणी झोली पाइंदा। काया चोली रंग अगम्मड़े रंगदा, रंग मजीठी इक वखाइंदा। साचे मन्दिर उच्च मनार आपे लँघदा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जिस वेले दरस करे प्रेम प्रीतम सच पलँघ दा, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आइंदा। ओथे रस मिले धुर दे गाए छन्द दा, जिस छन्द विच्चों आपणा अनन्द प्रगटाइंदा। एहो वस्त गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग मंगदा, जो श्री भगवान जन भगतां झोली पाइंदा। ओथे लेखा चुक्के खण्ड ब्रह्मण्ड दा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाइंदा। कर प्रकाश आपणे चन्द दा, नूरी जलवा इक वखाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर प्रीतम हो के प्रीती गंढुदा, दो जहान ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। जगत प्यार कहे मैं वेख्या प्यार, बिन अक्खां नज़री आईआ। बिन रसना हुन्दी वेखी गुफ़तार, बिन दन्दां करे पढ़ाईआ। बिन तन काया करे जैकार, बिन तत्तां खेल रचाईआ। बिन कलम शाही बणे लखार, बिन हरफ़ां हरफ़ समझाईआ। बिन महल अटल करे उज्यार, दीवा बाती कर रुशनाईआ। बिन शाह पातशाह शहिनशाह होवे हुक्मरान, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। ओथे शास्त्र सिमरत ना वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी रूप ना कोए वटाईआ। प्रेम विच भगत भगत विच भगवान भगवान विच निशान, निशान विच्चों मिल्या बेपरवाहीआ। एहो मार्ग सब तों आसान, जो किरपा कर के रिहा तराईआ। एथे भगती बणी नादान, आपणा बैठी सीस निवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सोहणे ढोले गाण, गीत गोबिन्द सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाण, पुष्प बरखा रहे बरसाईआ। जिन्हां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन लभ्भयां मिल्या आण, बिन खोज्यां फेरा पाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच दवारे खुशी मनाण, खुशीआं अन्दर आपणा राग अल्हाईआ। होई पवित्र रसना जिह्वा उह ज़बान, जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रही ध्याईआ।

* १६ जेठ २०२१ बिक्रमी कुलवन्त सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू *

शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह सरन सरनाईआ। जुग चौकड़ी राह तक्कदे रहे सांझे यार, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। उच्ची कूक गाउँदे रहे वार, सदा ढोला नाम सुणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे रहे तकरार, अनबोलत बोल तेरा नाम सुणाईआ। मन मति बुध करदे रहे विचार, सोच समझ नाल मिलाईआ। राह दस्सदे रहे गुर अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ। भगत भगवन्त बोलदे रहे जैकार, सोहणा नाद वजाईआ। सन्त सज्जण धूढ़ी मंगदे गए छार, ख़ाकी ख़ाक

रूप वटाईआ। गुरमुख गुरसिख दर दरवेश बणदे रहे भिखार, निर्धन हो के अलख जगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दस्सदे गए विहार, विवहारी तेरा भेव खुल्हाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी नेत्र रही उग्घाड़, दहि दिशा वेखे चाईं चाईंआ। पत डाल्ही फल फुल तेरी लभ्भदे गए बहार, गुलशन गुंचा कली कली नैण उठाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर तेरा करदे गए प्यार, साची रीती मात वखाईआ। जगत निशान नज़री आए अपर अपार, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। आसा तृष्ना भेंटा हुन्दी रही आपा वार, मैं ममता मोह चुकाईआ। निरगुण सरगुण संदेसा देंदा रिहा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा कोई ना जाणे धुर दी सार, साची कार ना कोए कमाईआ। बोध अगाध बोल तेई अवतार, गुर दस कर के गए शनवाईआ। जन भगतां किहा मीत मुरार, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। सूफीआं किहा परवरदिगार, पैगम्बरां दस्सया नूर इलाहीआ। जिस दा मणका तसबी तन शृंगार, सोहणी बणत बणाईआ। सिफ्त सालाही वसे बाहर, रसना जिह्वा जगत ना कोए समझाईआ। ओस दा खेल अपर अपार, अपरम्पर हो के दए वखाईआ। जुग चौकड़ी दे विछड़े यार, कट्ठे करे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी करे इकट्ठे, एका आपणी दया कमाईआ। सच दवारे साहिब सद्दे, सद्दा होका नाम सुणाईआ। सन्त सुहेले आवण भज्जे, गुरमुख पन्ध मुकाईआ। पतिपरमेश्वर पर्दा कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एथे ओथे आपे सजे, लाजावन्त होए सहाईआ। दाता दातार हो के भेव गूझा दस्से, पर्दा आप चुकाईआ। कूड़ कूड़यारा दर तों नस्से, माया ममता मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई भगत प्यार, प्रेम प्रीत विच्चों प्रगटाईआ। साचा मन्दिर कर त्यार, अन्दरे अन्दर करे रुशनाईआ। मन का मणका फेर निरँकार, तन का तत भवाईआ। जन का जन करे ख़बरदार, डंका इक शनवाईआ। शंका रहे ना कोई संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र जाए उठ, नेत्र नैण नैण निहालया। भगत सुहेला जाए तुठ, परम पुरख दीन दयालया। भेव खुल्हाए अन्दर गुझ, दूई द्वैत डेरा ढाह ल्या। उजल कर के हरिजन मुख, सनमुख हो के दरस वखा ल्या। पिछली औध गई मुक्क, अग्गे जन्म इक बणा ल्या। सतिगुर घर छन्नयां पुत्त, गुरमुख नाउँ रखा ल्या। जाम प्यावे धुर दा घुट, रस अमृत इक चवा ल्या। आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी पन्ध मुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक वखालया। घर मन्दिर वखाए आप प्रभ, सच देवणहार वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरमुख लभ्भ, भगतन जोड़ जुड़ाईआ। नाम निधान सुणाए नद, अनरागी आपणा राग समझाईआ। जगत तृष्ना मिटे अग्ग, ततव तत बुझाईआ। भाग लग्गा के सच्ची यद, विश्व

रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सच वड्याई देवण योग, हरि करता इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी धुर संजोग, जन भगतां मेल मिलाइंदा। कर्म कर्म दा कट के रोग, चिन्ता दुःख मिटाइंदा। सच प्रीती बख्श ओट, चरण कँवल ध्यान वखाइंदा। कर प्रकाश अगम्मी जोत, जागरत रूप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाइंदा। साचा मार्ग दस्से पन्थ, प्रभ देवणहार वड्याईआ। जिस दी सिफ्त करन ग्रन्थ, शास्त्र रहे समझाईआ। जिस दा लहिणा आदि अन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जिस दा नाम धुर दा मंत, मन्त्र पढ़े लोकाईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे सन्त, ढूंडण थाउँ थाईंआ। जिस नूं नानक किहा कन्त, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी महिमा सदा बेअन्त, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जिस दा लेखा अगम्म अथाह अगणत, अंकड़यां विच ना कोए जणाईआ। सो खेल करे श्री भगवन्त, भगवन आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा वेखे एक, एकँकार ध्यान लगाइंदा। जिस दा कोई ना मेटे लेख, लिख्या लेख अवर ना कोए वखाइंदा। जिस दा सचखण्ड अगम्मड़ा देस, दीवा बाती नज़र कोए ना आइंदा। जिस दा जुग चौकड़ी वेस, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। जिस दा कोई ना जाणे भेत, अनभव आपणा खेल कराइंदा। सो साहिब बण दरवेश, दर ठांडे अलख जगाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर विष्नूं माणे बाशक सेज, सांगोपांग हंढाइंदा। जिस नूं मन्नदे नर नरेश, हरि करता खेल कराइंदा। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणन उपदेश, उपदेशक इक्को इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। सच करनी करे जग, सति सति दए वड्याईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। तत्तां विच्चों वरोल तत्त, ततव इक्को रंग रंगाईआ। सर्ब जीआं जाण मित गत, गति मित आपणी झोली पाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, महिमा अकथ रिहा दृढ़ाईआ। जो त्रेता मार्ग आया दस्स, त्रैगुण अतीता वेख वखाईआ। जो द्वापर दे के आया हथ्थ, लेखा आपणा रिहा चुकाईआ। जो कलयुग दित्ता दस्स, सो पड़दा रिहा उठाईआ। चारों युग बण पांधी रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। इक दूजे नूं कोई ना सके दस्स, रसना कहि ना कोए समझाईआ। आपणी करनी हो के बेवस, समझ सोच रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या श्री भगवान, धुर दी याद कराईआ। उठो वेखो सारे मार ध्यान, पूरब लेखा रिहा वखाईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, मर्द मर्दाना बेपरवाहीआ। थिर घर वेखे सुत बलवान, पूत सपूता आप उठाईआ। सुन अगम्म हो प्रधान, डंका आपणा नाम वजाईआ। भूपत भूप हो के बणे हुक्मरान, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तिन्नां मिल

के दित्ता इक ब्यान, अन्तर आपणी आवाज़ अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ। दे वड्याई प्रभ सच स्वामी, दर तेरे अरज़ोईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चरण कँवल कर ध्यानी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं आदि पुरख अन्तरजामी, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रखणा हथ्थ टिकाईआ। साहिब सतिगुर कर प्यार, एक टेक जणाईआ। तिन्नां अन्दर इक्को धार, रखी बेपरवाहीआ। मिल के गीत गाओ निरँकार, तू ही तू अलाईआ। मेरा उपजे सच प्यार, प्रेम रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तिन्ने कहिण तेरा प्रभ प्यार, अन्तर अन्तर नजरी आईआ। सदा बणया रहे जुग चार, नित नवित्त मेल मिलाईआ। टुट्ट ना जाए विच संसार, नाता अवर ना कोए बंधाईआ। मुक्क ना जाए अन्तिम वार, आपणा पन्ध मुकाईआ। दोए जोड़ करन निमस्कार, बैठे सीस नवाईआ। चरण कँवल तेरा आधार, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। मांगत खड़ के ठांडे दरबार, दरवेश अलख जगाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, शब्दी हुक्म समझाईआ। नेत्र खोल्ह करो ध्यान, त्रैभवन धनी दए समझाईआ। मेरा सच दा सच प्यार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ।
११७८ आदि जुगादि रहे जुग चार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। इक फ़रमाण रखणा याद, धुर दी धार रिहा जणाईआ। कलयुग ११७८
अन्त जन भगतां सुणन आवां फ़रयाद, निरगुण हो के फेरा पाईआ। भगत खेड़ा कर आबाद, सोहणा घर वसाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह राज़, पर्दा परे हटाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर मार के आवाज़, सोई सुरत जगाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के ख्वाहिश, आसा तृष्ना जगत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, हरि अगली ख़बर समझाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करां अपार, बेअन्त हो के दया कमाईआ। जन भगतां अन्दर हो के करां निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। झुकदा झुकदा वेख निरँकार, गुरमुख आपणे नैण शरमाईआ। अन्दरों मारे इक आवाज़, सोहणा राग सुणाईआ। घर ठाकर वेख जिस तेरा साजण दित्ता साज, काया माटी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जन भगत प्रेम कमाउणगे। प्रभ मिले वड्डा देवी देव, देवत सुर सीस नवाउणगे। अबिनाशी करता अलख अभेव, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर्शन पाउणगे। सचखण्ड निवासी सदा निहकेव, महल अटल इक रुशनाउणगे। सन्त सुहेले कर के सेव, घर साचे रंग चढ़ाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे ढोला गाउणगे। विष्न ब्रह्मा शिव गए झुक, आपणा सीस निवाईआ। प्रभ किस बिध वेखीए तेरे सुत, लोकमात कवण दवारे नज़री आईआ। किस गृह जा के लईए पुछ, कवण दवारा पन्ध मुकाईआ।

कवण नूर वेखीए मुख, उजल रूप कवण वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे दे इक वर, दर तेरे झोली डाहीआ। साची दस्से आप करतार, करता हरि जणाईआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते नव नौ चार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। निरगुण रूप लए अवतार, ना कोई जन्मे पिता माईआ। शब्दी डंक अगम्म अपार, दो जहानां दए वजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होणा ख़बरदार, सुत्तयां अक्ख खुल्हाईआ। चार कुण्ट वेखणा नैण उग्घाड़, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। प्रभ दी वक्खरी होवे धार, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। गुरमुखां अन्दर दे प्यार, सच प्रीती दए समझाईआ। जेहड़े गुरसिख हथ्थां विच लै के हार, हरी दवारे हरि का रूप समाईआ। उह सोहणा सुहञ्जणा वक्त लैणा विचार, आपणा ध्यान लगाईआ। ओस गृह घर वसे निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हार कहे मैं गया हार, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। किलीआं नाल टंग छड्डुया संसार, मूँह दे भार लटकाईआ। साधां सन्तां कोल करदे रहे ख्वार, मेरा माण ताण गंवाईआ। तन सुहाउँदे रहे कूड़यारे प्यार, कलयुग जीव अंग लगाईआ। रूप बणाउँदे रहे बिरध बाल जवान, जगत निशान वखाईआ। मेरे प्रेम प्यार दी किसे ना कीती पहचान, पर्दा सक्या ना कोए उठाईआ।
११७६ धेला टका मेरी कीमत पाण, हट्टो हट्ट विकाईआ। सब तों पहलों मैनूं लक्ष्मी कीता दान, विष्नूं भगवान तन शृंगार कराईआ। ११७६
ओहो जेही फेर कोई ना बणी नार रकान, जो सच्चा प्रीतम लए मनाईआ। एसे कर के प्रभ ने आपणा लेखा बदल जहान, साचा मार्ग दित्ता समझाईआ। बिनां भगतां श्री भगवन्त दूजे किसे ना मिले आण, नेत्र लोचण दरस ना किसे वखाईआ। अंगीकार ना करे परवान, साची सेज ना कोए सुहाईआ। जुग चौकड़ी सारे मंगदे गए दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देंदे गए ब्यान, शास्त्र सिमरत शहादत नाल रखाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे महाबली बलवान, कल कल्की फेरा पाईआ। दाता योद्धा सूरबीर नौजवान, शस्त्रधारी इक अख्वाईआ। दो जहानां बण के हुक्मरान, छत्रू मेटे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले कर परवान, नाम परवाने हथ्थ फड़ाईआ। धुर संदेसा दे के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व धार विच मिलाईआ। ओनां प्रेम प्यार दे हार करे परवान, परवानयां विच्चों परवाने बिन शमां तों शमां लए जगाईआ। एह खेल करे महान, जिस दी सिफ्त ना करे ज़बान, कलम ना लिखे निशान, नज़र ना तक्के जहान, मेहरवान आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां दरगाह साची मिले आण, बाल अञ्याणे बुध विवेक बणाईआ।

* २० जेठ २०२१ बिक्रमी बीबी प्रेमी देवी दे गृह धंगाली जम्मू *

जन्म विच्चों मिलदा जन्म, जरम रूप वटाइंदा। जिस जन मिलदी सतिगुर सरन, तिन्हां लेखा मूल चुकाइंदा। ओन्हां मिलदा मरन विच्चों मरन, मर जीवत रूप वटाइंदा। जीवत जी जगत जग तरन, जग दाता दया कमाइंदा। दया अन्दर ढोला पढ़न, धुर दा नाम सुणाइंदा। नाम अन्दर पौड़े चढ़न, साचा घर सुहाइंदा। घर अगम्मी हरि दे वड़न जिस मन्दिर डेरा लाइंदा। मन्दिर बहिण दर्शन करन, जिस सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव खुलाइंदा। जन्म विच्चों जन्म मिलदा, आदि जुगादि खेल खलाइंदा। हरिजन मेले घर साचा हिरदा, हिरदे हरि जू डेरा लाइंदा। उह गुरमुख गुरसिख कदे ना मुड़दा, जिस दा गुर गुर भेव खुल्हाइंदा। अगम्मे प्यार अन्दर जुड़दा, नकम्मे जगत विहार तजाइंदा। लेखा वेख आपणा धुर दा, मस्तक चरण सीस निवाइंदा। मन्त्र फुरना इक्को फुरदा, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। जग बेड़ा कदे ना रुढ़दा, साहिब सतिगुर आपणे कंध उठाइंदा। एह खेल अगम्मी गुर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दया कमाइंदा। जन्म कहे मैं उत्तम रूप वेख्या मनुख, लख चुरासी फिर फिर पन्ध मुकाईआ। एस अन्दर परम पुरख दा मिले सुख, आत्म विच्चों समझाईआ। आवण जावण दा मेटे दुःख, हउमें रोग चुकाईआ। अग्गनी अग्ग ना लग्गे

११८० कुक्ख, ततव तत ना कोए जलाईआ। लहिणा चुके अन्धेरा घुप्प, साचा नूर करे रुशनाईआ। कर किरपा जिन्हां सतिगुर शब्दी ११८०

१६ लए पुच्छ, पर्दा उहला आप उठाईआ। तिन्हां जन्म जन्म दा पैंडा जाए मुक, जरम जरम ना कोए भवाईआ। जो माणस हो १६

के बैठे रुढ्ढ, आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि रंग रंगाईआ। जरम कहे मेरा लेखा लग्गा, सतिगुर दिती वड्याईआ। पिछला पिच्छे सौरया अगला अग्गा, मिले माण वड्याईआ। प्रीतम गृह दीपक जगा, होए सच रुशनाईआ। जगत जहान चुक्क गई हद्दा, घर मिल्या बेपरवाहीआ। नाम निधान रस पीता आया सच्चा मज़ा, मंज़ल पन्ध दित्ता मुकाईआ। जिस दी ब्यान करे ना कोई वज़ा, वज़ाहत नाल ना कोए समझाईआ। सो साहिब श्री भगवान नेत्र नैण खुल्हाए अक्खां, आखर आपणा घर वखाईआ। ओसदा हाल केहड़ी सिफ्ते दस्सां, सिफ्तों बाहरा सिफ्त विच कदे ना आईआ। एहो बेनन्ती इक्को अरदास चरण कँवल ढह्वां, माण अभिमान मोह मिटाईआ। गुरमुखां विच बहि के वसां, धुर दा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल रिहा दरसाईआ। जरम कहे मैं सतिगुर लेखे, जिस लिख्या लेख दित्ता मिटाईआ। पिछले चुक्कण भरम भुलेखे, अग्गे मार्ग बेपरवाहीआ। जिस याद ना भुल्ली पिछले चेते, फड़ बांहों ल्या उठाईआ। ओस दी गोद गुरमुख क्यों ना खेडे, जो दो जहानां पिता माईआ।

आदि जुगादि कोटां विच्चों थोड़े लभ्भदे बेटे, जो पिता पूत समझ नाता गए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां जन्म आपे वेखे, पंडत पांधा सके ना कोए समझाईआ।

* २० जेठ २०२१ बिक्रमी फ़रंगी राम दे गृह तूतां वाली जम्मू *

सो पुरख निरँजण कीता तरस, दो जहान खुशी मनाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल करे असचरज, आपणी रचना आप रचाइंदा। एकँकार बण के वड्डा मर्द, मर्दानगी आप समझाइंदा। आदि निरँजण आरज़ू सुण के अरज, अलैहदा आपणा रूप वटाइंदा। अबिनाशी करता वंडणहारा दर्द, दर्द दुःख भय भंजन नाउँ धराइंदा। श्री भगवान लौहणहारा कर्ज़, पिछला लेखा मूल चुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ होण ना देवे हर्ज, हर्जाना आपणी झोली पाइंदा। करे खेल हो समरथ, शब्दी अकथ ढोला गाइंदा। लेख जाण अर्श फ़र्श, फ़ैसला इक्को हुक्म सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे के दरस, दीद ईद चन्द रुशनाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार मेहर नज़र कर जगत, जागरत जोत डगमगाइंदा। लख चुरासी विच्चों वेख भगत, भगवन आपणा मेल मिलाइंदा। धुर दी धारा अमृत बूँद रही टपक, रस इक्को इक चवाइंदा। जुग जन्म जो आत्म रही भटक, तिस दी तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। लख चुरासी विच जो रही अटक, तिस दा लहिणा देणा लेखे लाइंदा। वेला सुहाए सुहञ्जणा वक्त, थित वार आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा । सच प्रेम प्यार दी बरखे धार, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। करे खेल आप निरँकार, करता कुदरत वेख खुशी मनाईआ । खुशीआं विच कर गुर अवतार, पीर पैगम्बर रंग चढ़ाईआ। भगत भगवन्त आप उठाल, सुत्तयां अक्ख खुल्हाईआ। साचे सन्तां रिहा वखाल, नेत्र लोचण नैण रुशनाईआ। गुरमुखां मेट जगत जंजाल, जीवण जुगत रिहा समझाईआ। गुरसिख बणा के आपणे लाल, लालन गोदी गोद उठाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, धुर दी करे आप पढ़ाईआ। मेल मिला के शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर वसाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर दए वखाईआ। अनहद नाद सच्ची धुन्कान, घर आत्मक राग सुणाईआ। दीआ बाती इक्को बाल, जोत आपणी करे रुशनाईआ। आत्म सेजा दए सवाल, आसण सिँघासण इक वछाईआ। प्रीतम हो के वसे नाल, निरगुण निरवैर ना करे जुदाईआ। पूरब जन्म जो घालण आए घाल, तिन्हां घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गुरमुख घालण रही हस्स, खुशीआं रंग वखाईआ। चारों कुण्ट रही नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां सद्दा दे के रही दस्स, अगला हाल सुणाईआ। उठो नेत्र खोल्ह वेखो

अक्ख, नैण मूंद बेपरवाहीआ। रल मिल रसना जिह्वा गावो जस, हकीकी ढोला इक सुणाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, निरगुण सोहणी खेल रचाईआ। पूरब जिन्हां देवे हक़, हकीकत खोजे चाईं चाईंआ। जिस नूं मिलयां कोई ना जावे अक्क, थकावट कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। थकावट कहे मैं होवां दूर, जन भगतां नेड़ ना आईआ। अमृत प्रेम प्यार दी बरखे भूर, निमी निमी धार वहाईआ। आसा मनसा सब दी करे पूर, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। मेरा मिटा दर ग़रूर, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र रिहा उठाईआ। अभिमान कहे मैं होया निमाणा, आपणा आप मिटाईआ। दरस कर श्री भगवाना, हउमे हंगता रोग चुकाईआ। रंग वेख्या दो जहानां, खुशीआं रूप वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जुणाउँदे गाणा, सोहणा राग अल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण कँवल करन ध्याना, नेत्र नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। करोड़ तेतीसा कहे वाहवा वड मेहरवाना, तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र अन्दर टपकी बूँद, आपणा रूप वटाईआ। अग्गे पिच्छे दो जहान पाउँदी गूंज, निरगुण सरगुण ताल वजाईआ। भगत प्यार अन्दर रही झूझ, आपणा आप मिटाईआ। धरत धवल उते आ के पई सूझ, नेत्र अक्ख खुल्ली पराईआ। साहिब सतिगुर वेख्या साची कूट, दिशा बैठा डेरा लाईआ। भाग लग्गा काया चोला पंज भूत, जोती जोत करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां उपर तुठ, आत्म सुख रिहा उपजाईआ। कर के उजल मुख, दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। बूँद कहे मैं बूँद स्वांती, ठंडा ठार रूप वटाईआ। खेल कराए पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता हुक्म वरताईआ। मैं सेवक हो के दासी, भज्जां वाहो दाहीआ। चढ़ के जावां भगतां घाटी, आपणी पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे दिवस दी बणे राती, राती प्रभाती विच वटाईआ। मजलस गुरमुखां मिलां जमाती, आपणा नावां विच लगाईआ। हरिजन कर प्रेम प्यार मैनूं लगावण छाती, गलवकड़ी इक्को पाईआ। जिन्हां दे अन्दरों प्रभ नज़री आए कमलापाती, कँवल नैण बैठा डेरा लाईआ। सच प्याला मधुर रस देवे आबेहयाती, रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। बूँद कहे मेरा रस अनडिठा, जगत रसना समझ किसे ना पाईआ। ना कोई जाणे रंग सूहा पीला चिट्टा, लालन रूप ना कोए जणाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर मैनूं बख्शीं साचा हिता, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। मैं जन भगतां वेखां काया किता, बंक दवारा खोज खुजाईआ। जिथ्थे प्रेम विछाउणा विछा, सोहणा आसण नज़री आईआ। रस अगम्मी मिले मिठ्ठा, धुर दा जाम इक प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ।

बूँद कहे मैं कीती बदली, अर्श छड्ड के फर्श आईआ। परम पुरख प्रभ वेख्या अदली, अदालत इक्को रिहा लगाईआ। जिस दा पन्ध मुकावे ना कोए मज़ली, मंज़ल मंज़ल चल के थक्के पांधी राहीआ। मैं ओस दे दर निमाणी होई पगली, आपणा आप गंवाईआ। मैनूं ख़बर ना कोई अगली, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। मैं वेखां उजाड़ पहाड़ जूह जंगली, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। ओस दी खेल अगम्मी रंगली, रंग राता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सद होए सहाईआ। बूँद कहे मैं वेख्या रंग, मैं मेरी समझ सकी ना राईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण वसया भगतां संग, सोहणा संग बणाईआ। जिस दे अन्दर बाहर इक अनन्द, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। गीत सुणावे साचा छन्द, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। जिस नूं मिलयां पैंदी ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। जिस जुग जन्म दे विछड़यां टुट्टी दिती गंढ, डोरी आपणा नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। बूँद कहे मेरे नैण शरमाउँदे, नैण सकां ना उपर उठाईआ। जिस वेले वेखां निक्के वड्डे छोटे बाले गाउँदे धुर दा राग इक अलाईआ। खुशीआं नाल टप्पण सोहणा वक्त सुहाउँदे, रुतड़ी रुत नाल मिलाईआ। कर बेनन्ती पिछली भुल्ल बख्शाउँदे, अग्गे मिले माण वड्याईआ। चरण कँवल वेखे सीस नवाउँदे, निउँ निउँ लागण पाईंआ। कोटन इन्द्र इन्द्रासण बैठे बरखा लाउँदे, छहबर आपणी इक जणाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव वेखे फुल बरखाउँदे, खारी सीस इक उठाईआ। पवण उणंजा वेखी चवर झुलाउँदे, चारों कुण्ट हुलारा इक जणाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखे खुशी मनाउँदे, सोहणा ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन रिहा तराईआ । बूँद कहे मैं ठंडी ठार, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। जिन फ़र्शों अर्श दिती चाढ़, अरशों फर्श उते टपकाईआ। मैं वेख्या उपर चढ़ के प्रभू किस नाल करे प्यार, कवण आपणे रंग रंगाईआ। साख्यात नज़री आया विच जहान, लोकमात खुशी मनाईआ। जन भगतां दिसे धुर दा काहन, गुरमुख गोपी रूप वटाईआ। घनईया नईया चढ़ाए आण, साचा सईया पकड़े बांहींआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ना रोड़े कोई तूफान, डूंग्घी भँवर ना कोए भवाईआ। परम पुरख समरथ स्वामी दीन दयाल हो के मिल्या आण, अगला पिछला पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां खुशी वखाईआ। बूँद कहे मैं वेखे खुश, तन माटी अन्दर वज्जी वधाईआ। जिन्हां श्री भगवान बणाया आपणे सुत, सुत्तयां ल्या उठाईआ। ओन्हां कोलों की कोई लए पुच्छ, पुछयां दस्सण वाली बात समझ किसे ना आईआ। बाहरों चल्लदा फिरदा पंज तत काया माटी दिस दा बुत्त, अन्दर निरगुण बैठा आसण लाईआ। जिस दे हुक्म नाल जन भगत भगवान जाए झुक, मन मणका आप फिराईआ। ओथे अगला

११८३
१६

पिछला पैंडा जाए मुक, लख चुरासी फंद कटाईआ । जिन्नां प्रेम प्यार दा जाम प्याए घुट्ट, अमृत रस चखाईआ। सो गुरमुख कहिण सानूं दिने रात इक्को जेहा सुख, सुबह संध्या ना कोए वड्याईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तिन्नां उजल करे मुख, जो मुखड़े सोहँ ढोला रहे गाईआ।

* * * * *